भार्गव
आदर्श हिन्दी शब्दकोश
पाठक - बी. ए. एल. टी.
चौक, वाराणसी
ट. वाराणसी

भार्गव

आदर्श हिन्दी शब्दकोश

का

संक्षिप्त संस्करण

संस्कृत, हिन्दी साहित्य, अलंकार, भूगोल आदि के तथा विभिन्न
विषयों के नवीन शब्दों का संग्रह तथा स्वतंत्र भारत के
विविध संविधानों के वृहत् अंग्रेजी-हिन्दी शब्द-
संग्रह के साथ अनेक अनुक्रमणिकाओं सहित

सम्पादक

पण्डित रामचन्द्र पाठक, बी०ए०, एल० टी०

संकलनकर्ता—भार्गव सचित्र स्टैंडर्ड अंग्रेजी हिन्दी डिक्शनरी,
कान्साइज् अंग्रेजी हिन्दी डिक्शनरी, सचित्र
हिन्दी अंग्रेजी डिक्शनरी इत्यादि

प्रकाशक

भार्गव बुकडिपो, चौक, वाराणसी

प्रधान वितरक

श्री गंगा पुस्तकालय, त्रिलोचन, वाराणसी

संशोधित संस्करण

पुनर्मुद्रित, सितम्बर, १९९६ ई०

मूल्य	:	८०.००
लाइब्रेरी संस्करण	:	९०.००

मुद्रक

भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन, वाराणसी

भूमिका

हिन्दी भाषा का प्रचार भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में दिन-दिन बढ़ता जाता है तथा भिन्न-भिन्न विषयों की पुस्तकों के निर्माण होने के कारण इस जीवित भाषा की शब्दसंख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। हिन्दी राष्ट्रभाषा बन जाने पर आवश्यकतानुसार शब्दसंग्रह में भी यथेष्ट प्रयत्न किया गया है।

विद्यार्थियों की सहायता के लिये बड़े कोश के इस संक्षिप्त संस्करण का निर्माण हुआ है। इसमें बालकोपयोगी सभी प्रचलित शब्दों का समावेश यथासंभव किया गया है।

आशा है, इस कोश से सामान्य विद्यार्थी तथा पाठकगण पूरा लाभ उठावेंगे। इस कोश के अन्त में अनेक उपयोगी अनुक्रमणिकायें भी दी गई हैं।

सम्पादक

सांकेतिक अक्षरों का विवरण

अ०—अरबी	दे०—देशी।	वि०—विशेषण।
अव्य०—अव्यय	पा०—पाली भाषा।	व्या०—व्याकरण।
उप०—उपसर्ग	पुं०—पुंल्लिङ्ग	सं०—संस्कृत।
क्रि०—क्रिया	प्रत्य०—प्रत्यय।	सर्व०—सर्वनाम।
क्रि० वि०-क्रियाविशेषण	बहु०—बहुवचन।	स्त्री०—स्त्रीलिङ्ग।
ग्रा०—ग्रामीण	यौ०—यौगिक।	हि०—हिन्दी।

भार्गव

संक्षिप्त हिन्दी शब्दकोश

अ

अ–हिन्दी तथा संस्कृत के स्वर वर्ण का पहिला अक्षर; निषेध, अभाव तथा अल्प अर्थ में अव्यय की तरह इसका प्रयोग होता है, यथा–अकाल, अपापी। प्रणव का प्रथम अक्षर। (सं० पुं०) ब्रह्मा, सृष्टि।

अऊत–(हिं० वि०) निःसन्तान, अपुत्र।

अऊलना–(हिं० क्रि०) उष्ण होना, जलना।

अऋण, अऋणी–(हिं० वि०) जिसने ऋण न लिया हो, जो ऋणमुक्त हो।

अएरना–(हिं० क्रि०) स्वीकार करना।

अउघड़ (औघड़)–(हिं० पुं०) किनारामी पन्थ।

अंक–(सं० पुं०) चिह्न, नाटक का परिच्छेद, अक्षर, गोद, १ से ९ तक की संख्या।

अंकक–(सं० पुं०) गणित करनेवाला।

अंकगणित–(सं० पुं०) गणित जिसमें संख्याओं का प्रयोग होता है।

अँकटा–(हिं० पुं०) कंकड़ का चिकना टुकड़ा। **अँकटी**–(हिं० स्त्री०) छोटी कंकड़ी।

अँकड़ा–(हिं० पुं०) पत्थर का टुकड़ा, कंकड़। **अँकड़ी**–(हिं० स्त्री०) काँटी।

अँकना–(हिं० क्रि०) आँकना, कूतना।

अँकरोरी, अँकरौरी–(हिं० स्त्री०) अकटी।

अँकवाना–(हिं० क्रि०) जँचवाना, कूत करवाना।

अँकवार–(हिं० स्त्री०) गोद, छाती।

अँकवारना–(हिं० क्रि०) आलिंगन करना। **अँकवारी**–(हिं० स्त्री०) गोद।

अँकाई–(हिं० स्त्री०) कूत, अटकल, कृषिफल के बँटवारे का ठहराव।

अँकाना–(हिं० क्रि०) अँकवाना।

अँकाव–(हिं० पुं०) अँकाई, कुताई।

अंकविद्या–(सं० पुं०) अंकगणित।

अंकित–(सं० वि०) चिह्न लगाया हुआ।

अंकिल–(हिं० पुं०) दाग कर छोड़ा हुआ साँड़।

अँकुड़ा–(हिं० पुं०) मोड़कर गोल किया हुआ काँटा।

अँकुड़ी–(हिं० स्त्री०) मुड़ी हुई काँटी, हल की लकड़ी का वह भाग जिसमें फार जड़ा होता है।

अंकुर–(सं० पुं०) अँखुआ, कल्ला।

अँकुरना, अँकुराना–(हिं० क्रि०) अँखुवा फूटना, बीज जमना, उत्पन्न होना।

अंकुश–(सं० पुं०) हाथी हाँकने का लोहे का डंडा। **अंकुशग्राही**–महावत।

अँकुसी–(हिं० स्त्री०) लोहे की झुकी हुई कील जो किसी पदार्थ के लटकाने या

फँसाने के काम में आती है।
अँकोट–(हिं०पुं०) मुड़ी हुई कड़ी जिसमें रस्सी फँसाकर पानी में नाव खींची जाती है।
अँकोड़ा–(हिं०पुं०) बड़ा काँटा।
अँकोर–(हिं०पुं०) गोद, अंक, भेंट, घूसा।
अँकोरना–(हिं०क्रि०) भंजना, घूस देना।
अँकोरी–(हिं०स्त्री०) गोद, आलिंगन।
अँखड़ी–(हिं०स्त्री०) चक्षु, नेत्र, आँख।
अँखमिचौनी–(हिं०स्त्री०) देखो आँख-मिचौनी।
अँखिया–(हिं०पुं०) आँख, बीज का महीन अंकुर, कसेरे का ठप्पा।
अँखुआ–(हिं०पुं०) बीज में से निकला हुआ महीन अंकुर। **अँखुआना**–(हिं० क्रि०) अंकुर फूटना, बीज जमना।
अंग–(सं०पुं०) शरीर, अवयव।
अंगज–(सं०पुं०) पुत्र, रोग, मद।
अंगड़-खंगड़–(हिं० पुं०) टूटा फूटा, गिरा पड़ा हुआ अंश।
अँगड़ाई–(हिं०स्त्री०) आलस्य में जँभाई लेते हुए देह टूटना। **अँगड़ाना**–(हिं० क्रि०) अँगड़ाई लेना।
अंगत्राण–(सं०पुं०) शरीर ढाँपने का वस्त्र, कवच।
अंगद–(सं०पुं०) बाजूबन्द।
अँगना–(हिं०पुं०) अंगण, आँगन।
अँगनाई–(हिं०स्त्री०) अंगण, अँगना।
अंगभंग–(सं०पुं०) शरीर के किसी अवयव का टूटना। **अंगभंगी**–(सं० पुं०) स्त्रियों का हावभाव। **अंग-भूत**–(सं०वि०) अन्तर्गत।
अँगरखा–(हिं०पुं०) घुटने तक का लंबा अंगा।
अँगरा–(हिं०पुं०) अंगार, अँगारा।
अँगराई–(हिं०स्त्री०) देखो अँगड़ाई।
अंगराग–(हिं०पुं०) उबटन।
अँगराना–(हिं०क्रि०) अँगड़ाई लेना।
अंगलेट–(हिं०पुं०) अँगेठ, शरीर की गठन।
अँगवना–(हिं०क्रि०) स्वीकार करना।
अगवारा–(हिं० पुं०) गाँव के किसी अंश का स्वामी।
अंगविक्षेप–(सं० पुं०) चमकना, मट-कना।
अंगसिहारी–(हिं०स्त्री०) कंपकँपी, जड़ी।
अंगहीन–(सं०वि०) जिसमें कोई अंग न हो।
अंगाकड़ी–(हिं०स्त्री०) लिट्टी, बाटी।
अंगांगिभाव–(सं०पुं०) गौण और मुख्य भाव का संबंध।
अंगा–(हिं०पुं०) अँगरखा, चपकन।
अंगार–(हिं०पुं०) जलता हुआ कोयला।
अंगारा–(हिं०पुं०) देखो अंगार।
अँगारी–(हिं०स्त्री०) ऊख का ऊपर का भाग जो काटकर पशुओं को खिलाया जाता है।
अँगिया–(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की केवल स्तनों को ढाँपने की कुरती जो बन्दों से पीठ की ओर बाँधी जाती है।
अंगी–(सं०वि०) शरीरधारी।
अंगीकार–(सं०पुं०) स्वीकार।
अँगीठा–(हिं०पुं०) बड़ी अँगीठी।
अँगीठी–(हिं०स्त्री०) अग्नि रखने का छोटा पात्र।
अंगुर–(हिं०पुं०) अंगुल।
अँगुरिया–(हिं०वि०) अंगूर की लता या रंग के समान।
अँगुरी–(हिं०स्त्री०) अँगुली, उँगली।
अंगुल–(सं०पुं०) आठ जव की नाप।
अंगुली–(सं०स्त्री०) अँगुली, उँगली।
अंगुष्ठ–(सं० पुं०) अँगूठा।

अंगुसा–(हिं०पुं०) अँखुआ, अङ्कुर, मोटी अँगुली।
अँगूठा–(हिं०पुं०) हाथ या पैर की छोटी अँगुली।
अँगूठी–(हिं०स्त्री०) मुद्रिका, मुंदरी।
अंगेजना–(हिं० क्रि०) अपने ऊपर भार ले लेना।
अंगेठ–(हिं०पुं०) आकृति, शरीर-रचना।
अंगेरना–(हिं०क्रि०) देखो अंगेजना।
अंगौछा–(हिं०पुं०) अंग पोंछने का वस्त्र।
अंगौछी–(हिं०स्त्री०) छोटा अंगौछा।
अँघस–(हिं०पुं०) पाप, पातक।
अंघिया–(हिं०स्त्री०) महीन आटा चालने की चलनी।
अँचरा–(हिं०पुं०) स्त्रियों की धोती का अंचल।
अँचवन–(हिं०पुं०) आचमन। अँचवना–(हिं०क्रि०) आचमन करना।
अंजनसार–(हिं०वि०) आँखों में अंजन लगाया हुआ।
अंजरपंजर–(हिं०पुं०) शरीर की ठठरी।
अँजवाना–(हिं०क्रि०) आँख में काजल लगवाना।
अँजहा–(हिं०वि०) अन्न से बना हुआ।
अंजही–(हिं०स्त्री०) अन्न से बना हुआ, अनाजी।
अँजाना–(हिं०क्रि०) देखो अँजवाना।
अँजुरी, अँजुली–(हिं०स्त्री०) अँजुली।
अँजोर–(हिं०पुं०) प्रकाश। अँजोरना–(हिं०क्रि०) प्रकाश करना। अँजोरा–(हिं० पुं०) प्रकाश। अँजोरी–(हिं० स्त्री०) प्रकाश, चाँदनी।
अंझा–(हिं०क्रि०) अनध्याय, नागा।
अंटा–(हिं०पुं०) सूत लपेटने की गड़ारी।
अंटाचित–(हिं० वि०) पीठ के बल पड़ा हुआ।
अँटिया–(हिं० स्त्री०) छोटा पुलिन्दा, गँठिया। अँटियाना–(हिं०क्रि०) छिपा लेना, गठिया बनाना।
अंटी–(हिं०स्त्री०) लच्छी, गाँठ, अँगुली के बीच का स्थान।
अंड–(हिं०पुं०) अण्डा, अण्डकोष।
अंडस–(हिं०स्त्री०) असुविधा, अड़चन।
अंडा–(हिं०पुं०) अण्ड, कोई गोलाकार पदार्थ।
अंडी–(हिं०स्त्री०) रेंड़ी, रेशमी वस्त्र।
अँडुआ–(हिं०पुं०) बिना बधिया किया हुआ पशु।
अंडैल–(हिं०वि०) अंडेवाली।
अँतड़ी–(हिं० स्त्री०) अन्त्र, आँत।
अंतरा–(हिं० पुं०) अन्तर, गीत का दूसरा पद।
अंत्री–(हिं०वि०) आँतवाला।
अँदरसा–(हिं०पुं०) पीसे हुए चावल की मिठाई।
अँदुआ–(हिं०पुं०) हाथी के पिछले पैर में फँसाने की काँटेदार अँकुसी।
अंदोर–(हिं० पुं०) कोलाहल।
अंधकार–(सं०पुं०) अँधियारा।
अंधड़–(हिं०पुं०) धूलिपूर्ण तीव्र वायु, आँधी।
अँधरा–(हिं० पुं०) नेत्रहीन, अन्धा।
अंधा–(हिं०वि०) नेत्रहीन, अँधरा।
अंधाधुंध–(हिं०वि०) बड़ा अँधेरा, विचारहीनता; (क्रि० वि०) अतिशय, बहुत।
अंधार–(हिं०पुं०) अंधकार।
अँधियार, अँधियारा–(हिं०पुं०) अँधेरा, अन्धकार।
अंधेर–(हिं०पुं०) अत्याचार, अन्याय।
अँधेरा–(हिं०पुं०) अन्धकार, अँधियारा।
अँधेरिया–(हिं०स्त्री०) अँधेरी रात

अंबर–(हिं०स्त्री०) देखो अम्बर ।
अंबारी–(फा०पुं०) हाथी की पीठ पर रखने का मंडपदार हौदा ।
अंबिया–(हिं०स्त्री०) टिकोरा ।
अंश-(सं०पुं०) भाग, खण्ड, अवयव ।
अंशु–(सं०पुं०) सूर्य, किरण, ज्योति, वेग, अल्प मात्रा ।
अंशुक–(सं० पुं०) ओढ़ने का वस्त्र, डुपट्टा ।
अंस–(सं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा ।
अँसुआ, अँसुवा–(हिं०पुं०) अश्रु, आंसू ।
अकच–(सं०पुं०) खल्वाट, केतु ग्रह ।
अकच्छ–(सं०वि०) नंगा, व्यभिचारी ।
अकड़–(हिं०स्त्री०) ऐंठन, मरोड़ । **अकड़ना**–(हिं० क्रि०) सूखकर कड़ा हो जाना, हठ करना । **अकड़बाई**–(हिं०स्त्री०) शरीर की ऐंठन ।
अकड़ाव–(हिं०पुं०) खिचाव, ऐंठन ।
अकड़ैत–(हिं०पुं०) घमंडी, गर्वी ।
अकथ–(हिं०वि०) अवर्णनीय । **अकथनीय**–(सं०वि०) न कहने योग्य ।
अकधक–(हिं०पुं०) आगा-पीछा, शंका ।
अकबक–(हिं०पुं०) बकझक ; (वि०) भौचक्का ।
अकर–(सं०वि०) न किये जाने योग्य, विना हाथ का ।
अकरण–(सं०पुं०) कर्म का अभाव । अक**रणीय**–(सं०वि०) न करने योग्य ।
अकराल–(सं०वि०) सौम्य, रम्य, सुन्दर ।
अकरी–(हिं०स्त्री०) हल में बँधा हुआ वह पोला बाँस जिसमें से बोते समय बीज गिराया जाता है ।
अकरुण–(सं०वि०) करुणाहीन, कठोर ।
अकर्तव्य–(सं०वि०) न करने योग्य ।
अकर्ता–(सं० वि०) कार्य न करनेवाला ।
अकर्तृक–(सं० पुं०) बिना कर्त्ता का ।
अकर्म–(सं० पुं०) बुरा काम, कुकर्म, पाप, अपराध, अधर्म । **अकर्मक**–(सं०पुं०) व्याकरण में जिस क्रिया का कर्म न हो । **अकर्मण्य**–(सं०वि०) आलसी ।
अकर्मा–(हिं०वि०) काम न करनेवाला । **अकर्मी**–(हिं०पुं०) पापी ।
अकलंक–(सं०वि०) दोष-रहित, पाप-रहित । **अकलंकित**–(सं०वि०) कलंक-रहित, निर्दोष ।
अकल–(सं०वि०) अवयव-रहित, व्यर्थ, निष्फल ; (हिं० वि०) अखण्ड ।
अकल्पित–(सं० वि०) अकृत्रिम, सहज ।
अकल्मष–(सं०वि०) पापरहित, निर्दोष ।
अकल्याण–(हिं०पुं०) अशुभ, अमंगल ।
अकस–(हिं०पुं०) शत्रुता, द्वेष, विरोध ।
अकसना–(हिं०क्रि०) द्वेष करना ।
अकस्मात्–(सं०क्रि०वि०) अचानक, अनायास ।
अकह–(हिं०वि०) न कहने योग्य, बुरा ।
अकांड–(सं० अकाण्ड) बिना शाखा या डाली का ; (क्रि०वि०) अकस्मात्, हठात् ।
अकाज–(हिं०वि०) दुष्कर्म, कार्य की हानि, विघ्न । **अकाजी**–(हिं०वि०) विघ्न करनेवाला, बाधक ।
अकाण्ड–(सं०वि०) अवयव-रहित, बिना डाल और शाखा का, अनवसर ; (क्रि०वि०) सहसा, हठात् । **अकाण्डताण्डव**–(सं०पुं०) वृथा की उछल-कूद ।
अकाथ–(हिं०क्रि०वि०) व्यर्थ, अकारथ ।
अकाम–(हिं०वि०) कामनारहित, निस्पृह ; (क्रि०वि०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।
अकामी–(सं०वि०) कामनारहित, निस्पृह ।

अकाय–(सं०पुं०) देहशून्य, निराकार।
अकार–(सं०पुं०) आकृति, स्वरूप, रचना, चिह्न, 'अ' अक्षर।
अकारज–(हिं० पुं०) कार्य की हानि।
अकारण–(सं० वि०) कारणहीन, व्यर्थ।
अकारथ–(हिं०वि०) वृथा, निष्प्रयोजन।
अकारन–(हिं०वि०) बिना कारण के।
अकार्य–(सं० पुं०) हानि, दुष्कर्म।
अकाल–(सं०पुं०) कुसमय, दुर्भिक्ष ; (वि०) अनवसर।
अकाली–(सं०पुं०) सिक्खों का एक समुदाय।
अकास–(हिं० पुं०) आकाश, गगन।
अकिञ्चन–(सं० वि०) जिसके पास कुछ भी न हो, अति दरिद्र, कंगाल।
अकिंचित्कर–(सं०वि०) असमर्थ, अशक्त।
अकिल्विष–(सं० वि०) पापरहित।
अकीरति,अकीर्ति–(हिं०सं०स्त्री०)अपयश, दुर्नाम।
अकुटिल–(सं० वि०) जो टेढ़ा न हो, निष्कपट।
अकुताना–(हिं०क्रि०) घबड़ाना, ऊबना।
अकुल–(सं० वि०) परिवारहीन, जो अच्छे वंश का न हो।
अकुलाना–(हिं०क्रि०) घबड़ाना, व्याकुल होना।
अकुलीन–(सं०वि०) नीच वंश का, क्षुद्र।
अकुशल–(सं०पुं०) अमंगल, अशुभ ; (वि०) अनिपुण।
अकूत–(हिं०वि०) जो कूता न जा सके।
अकृच्छ्र–(सं० पं०) संकोचरहित, सुगम।
अकृत–(सं०वि०) बिना किया हुआ, बिगाड़ा हुआ।
अकृतार्थ–(सं०वि०) असफल।
अकृति, अकृती–(सं०स्त्री०) निकम्मा, पापी, अयोग्य।
अकृत्रिम–(सं०वि०) जो काल्पनिक न हो, स्वाभाविक।
अकृपण–(सं०वि०) मुक्तहस्त, उदार।
अकृपा–(सं०स्त्री०) क्रोध, अप्रसन्नता, रोष।
अकेल, अकेला–(हिं०वि०) एकाकी,अद्वितीय, अनुपम। अकेले–(हिं०क्रि०वि०) बिना साथी के।
अकेहरा–(हिं०वि०) जो दोहरा न हो एक परत का।
अकैया–(हिं०पुं०) खुरजी, गोन, कबाजा।
अकोतरसो–(हिं०वि०) एक सौ एक की संख्या।
अकोप–(हिं०पुं०) कोप का अभाव।
अकोरना–(हिं०क्रि०) भूनना, तलना।
अकोविद–(सं०वि०) मूर्ख, अज्ञानी।
अक्खड़–(हिं०वि०) हठी, उद्धत, मूर्ख, स्पष्टवक्ता।
अक्खर–(हिं०पुं०) अक्षर, वर्ण।
अक्खा–(हिं०पुं०) खुरजी, पाखड़ी।
अक्त–(सं०वि०) संयुक्त, सफल, रँगा हुआ, गीला, भरा हुआ। यह शब्द प्रत्यय की तरह शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है, यथा–रक्ताक्त, विषाक्त, इत्यादि।
अक्रम–(सं०वि०) विपरीत, क्रमरहित।
अक्रव्याद–(सं०स्त्री०) मांस न खानेवाला।
अक्रिय–(सं० वि०) क्रियारहित, निश्चेष्ट।
अक्रूर–(सं०वि०) जो क्रूर न हो, कोमल।
अक्रोध–(सं० पुं०) दया, क्षमा, सहिष्णुता।
अक्लान्त-(सं०वि०) ग्लानिरहित।
अक्लेश–(सं०पुं०) क्लेश का अभाव।
अक्लिष्ट–(सं०वि०) सरल, सुगम।

अक्ष–(सं०पुं०) आँख, जुआ खेलने का पासा, पासे का खेल, छकड़ा, गाड़ी का धुरा, पृथ्वी के भीतर की वह कल्पित रेखा जिस पर पृथ्वी घूमती है, रुद्राक्ष, आत्मा, सर्प, ग्रहों के भ्रमण करने का मार्ग।
अक्षक्रीड़ा–(सं०स्त्री०) पासे का खेल।
अक्षत–(सं०वि०) अखण्डित, जिसको घाव न लगे हों; (पुं०) गणित में पूर्णांक, बिना टूटे हुए चावल, लावा।
अक्षधूर्त–(सं०पुं०) पासे के खेल में चतुर।
अक्षपटल–(सं०पुं०) आँख की पलक।
अक्षम–(सं०वि०) क्षमारहित, असमर्थ।
अक्षय–(सं०पुं०) जिसका क्षय न हो।
अक्षर–(सं० पुं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु, मोक्ष, जल, धर्म, तपस्या, आकारादि वर्ण; (वि०) अविनाशी, नित्य। अक्षरजीवी–(सं०पुं०) लेखक।
अक्षरमाला–(सं०स्त्री०) वर्णमाला।
अक्षरमुख–(सं०पुं०) शिष्य, छात्र।
अक्षरशः–(सं०क्रि०वि०) अक्षर अक्षर करके; अक्षरौरी–(हिं० स्त्री०) वर्णमाला, अक्षरों के लिखने की रीति।
अक्षवार–(हिं०पुं०) अखाड़ा, द्यूतगृह।
अक्षांश–(सं०पुं०) पृथ्वी की धुरी, जिस अंश पर पृथ्वी घूमती है।
अक्षि–(सं० स्त्री०) नयन, नेत्र, आँख।
अक्षुण्ण–(सं०वि०) संपूर्ण, अविकृत।
अक्षौहिणी–(सं०स्त्री०) चतुरंगिणी सेना।
अखड़–(हिं०वि०) अशिष्ट, असभ्य।
अखड़ैत–(हिं० पुं०) बलवान् मनुष्य।
अखण्ड–(सं०वि०) बिना खण्ड या टुकड़े का, पूर्ण, पूरा।
अखय–(हिं०वि०) क्षय न होनेवाला।
अखरना–(हिं०क्रि०) बुरा लगना, अनुचित जान पड़ना, कष्ट होना।
अखाड़ा–(हिं०पुं०) मल्लयुद्ध करने का स्थान, साधुओं की मण्डली।
अखाद्य–(सं०वि०) जो खाने योग्य न हो।
अखिल–(सं०वि०) सम्पूर्ण, पूरा, सब।
अखूट–(हिं०वि०) अखण्ड, अक्षय।
अखेट–(हिं०पुं०) आखेट, मृगया। अखेटक–(हिं०पुं०) आखेट करनेवाला।
अख्याति–(सं० स्त्री०) अपकीर्ति, अयश।
अग–(सं०वि०) न चलनेवाला, स्थावर; (पुं०) सर्प, वृक्ष, पर्वत, सूर्य।
अगड़धत, अगड़धत्ता–(हिं०वि०) लंबा-चौड़ा, विशालकाय।
अगणित–(सं०वि०) असंख्य, अनगिनती।
अगण्य–(सं०वि०) न गिनने योग्य।
अगति–(सं०स्त्री०) अव्यवस्था, दुर्दशा, अकालमृत्यु।
अगत्या–(सं०क्रि०वि०) अकस्मात्।
अगद–(सं० पुं०) औषधि।
अगनित–(हिं०वि०) अगणित, अनगिनती।
अगम–(हिं०पुं०) दुर्गम, दुर्घट, अपार।
अगमानी–(हिं०स्त्री०) अतिथि आदि का आगे जाकर स्वागत करना; (पुं०) नेता, सरदार।
अगम्य–(सं०वि०) विकट, दुर्बोध, अज्ञेय, असंख्य।
अगम्या–(सं०स्त्री०) गमन न करने योग्य स्त्री। अगम्यागमन—अगम्या स्त्री के साथ सहवास।
अगर–(हिं०पुं०) एक सुगन्धित क्षुप।
अगरबत्ती–(हिं०स्त्री०) धूपबत्ती।
अगरी–(हिं०स्त्री०) अर्गला, सिटकिनी।
अगर्व–(सं०वि०) गर्वरहित।
अगर्हित–(सं०वि०) निंदा न किया हुआ।
अगला–(हिं०वि०) आगे का, पहिला।
अगवाई–(हिं०स्त्री०) स्वागत करने के लिये आगे जाना, अगवानी।

अगवाड़ा–(हिं०पुं०) घर के सामने का स्थान।
अगवान–(हिं०पुं०) अगवानी करनेवाला। अगवानी–(हिं०स्त्री०) आगे जाकर स्वागत, विवाह के समय कन्या पक्षवालों का वर पक्षवालों की अभ्यर्थना; (पुं०) अग्रसर, अगुआ।
अगवार–(हिं०पुं०) घर के सामने का स्थान, ओसाते समय जो हलका अन्न भूसे के साथ उड़कर आगे को चला जाता है।
अगवासी–(हिं०स्त्री०) हल की वह लकड़ी जिसमें फार जड़ा जाता है।
अगसारी–(हिं०वि०) अग्रसर,आगे का।
अगस्त्य–(सं०पुं०) एक वृक्ष।
अगह–(हिं०वि०) जो ग्रहण न किया जा सके।
अगहन–(हिं०पुं०) अग्रहायण, मार्गशीर्ष। अगहनियाँ–(हिं०वि०) अगहन सम्बन्धी।
अगहर–(हिं०वि०, क्रि०वि०) पहिला, आगे का।
अगहाट–(हिं०पुं०) वह भूमि जो बहुत दिनों से किसी के अधिकार में रही हो।
अगहुँण–(हिं०वि०)मुख्य, अगुआ, अग्रगामी।
अगाऊ–(हिं०वि०)अग्रिम; (क्रि०वि०) पहिले से।
अगाड़–(हिं०पुं०) आगे का भाग।
अगाड़ा–(हिं०पुं०) यात्री की पहिले से भेजी हुई सामग्री, कछार।
अगाड़ी, अगाड़–(हिं०क्रि०वि०)भविष्य में, सामने, पहिले; (स्त्री०) पदार्थ का अग्रभाग, घोड़े की गर्दन में बांधने की रस्सी।
अगात्र–(सं०वि०) बिना शरीर का।
अगाध–(सं०वि०) अथाह, असीम, बहुत गहरा, गंभीर।
अगार–(हिं०पुं०) आगार, घर।
अगाव–(हिं०पुं०) ऊख के पौधे का ऊपर का भाग।
अगास–(हिं०पुं०) आकाश, द्वार पर का चबूतरा।
अगासी–(हिं०स्त्री०) पगड़ी।
अगिआना–(हिं०क्रि०) गरम होना।
अगिन–(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग।
अगिनित–(हिं०वि०) अनगिनती।
अगिया–(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग।
अगिरों–(हिं०स्त्री०) घर के सामने का खुला स्थान।
अगिला–(हिं०वि०)पहिले का,सामने का।
अगिहाना–(हिं०पुं०) अग्नि रखने का स्थान, अँगीठी, भट्ठी।
अगीत-पछीत–(हिं०क्रि०वि०) आगे-पीछे, इधर-उधर।
अँगीठा–(हिं०पुं०)बड़ी अँगीठी, भट्ठा।
अगुआ–(हिं०पुं०) आगे जानेवाला।
अगुआई–(हिं० स्त्री०) पथप्रदर्शन का कार्य।
अगुआना–मार्ग दिखलाना, नेता या मुखिया बनना।
अगुण–(सं०पुं०, वि०) गुणरहित।
अगुणी–(हिं०वि०) गुणहीन, गँवार।
अगुरु–(सं०पुं०) अगुरुचन्दन; (वि०) जो गुरु न हो, गौरवहीन।
अगुवा–(हिं०वि०) मुखिया, नेता।
अगृह्य–(सं०वि०) न ग्रहण करने योग्य।
अगूढ़–(सं०वि०)अगुप्त, प्रकट, सरल।
अगेन्द्र–(सं०पुं०) हिमालय, सुमेरु।
अगेला–(हिं०पुं०) हाथ में सबसे आगे पहनने का आभूषण, भूसे के साथ उड़नेवाला हलका अन्न।

अगेह–(सं०वि०) जिसके पास घरबार न हो।
अगैरा–(हि०पुं०) कृषि का पहला अन्न।
अगोचर–(सं०वि०) अज्ञात, अप्रकट, अबोध्य, जो इन्द्रियों से न ज्ञात हो।
अगोट–(हि०स्त्री०) रोक, भीत, नींव।
अगोटना–(हि०क्रि०) रोकना, अटकाना।
अगोरदार–(हि०पुं०) पहरुआ, रक्षक।
अगोरना–(हि०क्रि०) पहरा देना, रखवाली करना, प्रतीक्षा करना। अगोरिया–(हि०पुं०) खेत की रखवाली करनेवाला मनुष्य।
अगौढ़–(हि०पुं०) अग्रिम, (पहिले) दिया जानेवाला द्रव्य।
अगौनी–(हि०स्त्री०) अगवानी, अभ्यर्थना
अग्नि–(सं०पुं०) वह्नि, अनल, आग।
अग्निकण–(सं०पुं०) चिनगारी। अग्निकर्म–(सं० पुं०) होम, चिता में आग लगाने का कार्य। अग्निकोण–(सं०पुं०) पूर्व और दक्षिण का कोण। अग्निक्रिया–(सं०स्त्री०) अन्त्येष्टि क्रिया। अग्निक्रीड़ा–(सं० स्त्री०) आग का खेल। अग्निमान्द्य–(सं० पुं०) पाचन-शक्ति में न्यूनता। अग्निमुख–(सं०पुं०) देवता, ब्राह्मण, भिलावाँ। अग्निवर्धक–(सं० वि०) भूख बढ़ानेवाली (दवा)।
अग्निशाला–(सं० स्त्री०) अग्नि रखने का स्थान।
अग्निशिखा–(सं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला। अग्निशुद्धि–(सं०स्त्री०) अग्नि द्वारा शुद्ध करने की विधि।
अग्निशेखर–(सं०पुं०) कुंकुम का वृक्ष, केसर का पौधा। अग्निसंस्कार–(सं० पुं०) दाह-क्रिया, शव-दाह।
अग्न्यस्त्र–(सं० पुं०) अग्निबाण, तोप, बन्दूक, बमगोला, तमञ्चा इत्यादि जो बारूद से चलाये जाते हैं।
अग्र–(सं०अव्य०) आदि में, सामने, पहिले।
अग्र–(सं०पुं०) ऊपरी भाग, शिखर, चोटी, नोक, अवलम्बन; (वि०) प्रधान, प्रथम, अगला। अग्रकर–(सं० पुं०) दाहिना हाथ। अग्रकाय–(सं०पुं०) शरीर का अगला भाग। अग्रगण्य–(सं०वि०) प्रथम, अगुआ, नेता, श्रेष्ठ।
अग्रगामी–(सं०वि०) आगे जानेवाला।
अग्रज–(सं० पुं०) बड़ा (जेठा) भाई।
अग्रजन्मा–(सं० पुं०) ज्येष्ठ भ्राता, ब्राह्मण। अग्रजात–(सं०पुं०) जेठा भाई, बड़ा भाई, ब्राह्मण।
अग्रयोधा–(सं०पुं०) सेना के आगे लड़नेवाला योद्धा। अग्रवर्ती–(सं०पुं०) आगे रहनेवाला, नेता, अगुआ।
अग्रवीर–(सं०पुं०) सेना का प्रधान योद्धा।
अग्रशोची–(सं०पुं०) दूरदर्शी।
अग्रसर–(सं०वि०) अग्रगामी, नेता।
अग्रहार–(सं०पुं०) खेत की उत्पत्ति का वह अन्न जो देवता या ब्राह्मण को अर्पण करने के लिये अलग कर दिया जावे।
अग्रांश–(सं०पुं०) अग्रभाग।
अग्राशन–(सं०पुं०) अग्राहार।
अग्राह्य–(सं०वि०) न ग्रहण करने योग्य।
अग्रिम–(सं०पुं०) श्रेष्ठ, प्रधान, पहिले का।
अघ–(सं०पुं०) अधर्म, पाप, दुःख।
अघट–(हि०वि०) अयोग्य, अनुपयुक्त।
अघटित–(हि०वि०) न होनेवाला।
अघन–(सं०वि०) जो गाढ़ा न हो।
अघमय–(सं०वि०) पापपूर्ण।
अघर्म–(सं०पुं०) शीतकाल, जिसमें शरीर में पसीना न हो।
अघवाना–(हि०क्रि०) पेटभर खिलाना।

अघाई–(हिं०स्त्री०) तृप्ति, सन्तोष, पेटभर खाने की अवस्था।
अघाना–(हिं० स्त्री०) प्रसन्न होना, मन भर जाना, पेट भरना।
अघारि–(सं०पुं०) पाप-नाशक, श्रीकृष्ण।
अघी–(हिं०वि०) कुकर्मी, पापी।
अघृण–(सं०वि०) दयारहित, क्रूर।
अघेरन–(हिं०पुं०) जव का मोटा आटा।
अघोर–(हिं०वि०) जो भयानक न हो, प्रिय; (पुं०) महादेव, शिव। अघोरपन्थी–(हिं० पुं०) अघोर मत को मानने-वाले, अघोरी। अघोरी–(सं०पुं०) अघोर मतावलम्बी।
अचक–(हिं०वि०) पूर्ण, पूरा; (पुं०) आश्चर्य, विस्मय; (अव्य०) अचानक, अकस्मात्।
अचका–(हिं०क्रि०वि०) अकस्मात्, बिना समझे बूझे।
अचकित–(सं०वि०) भयहीन, अतृप्त, स्थिर।
अचक्का–(हिं०पुं०) अपरिचित व्यक्ति।
अचक्षु–(सं०वि०) बिना आँख का।
अचञ्चल–(सं०वि०) जो चंचल न हो, स्थिर, गंभीर।
अचण्ड–(सं०वि०) शान्त, सुशील, सौम्य।
अचना–(हिं०क्रि०) आचमन करना, कुल्ला करना।
अचमन–(हिं०पुं०) देखो आचमन।
अचम्भा–(हिं०पुं०) अचरज, विस्मय।
अचम्भो–(हिं०पुं०) आश्चर्य, विस्मय।
अचर–(हिं०पुं०) स्थिर, अटल, स्थावर।
अचरज–(सं०पुं०) आश्चर्य, विस्मय।
अचरा–(हिं०स्त्री०) साड़ी का छोर, अंचल।
अचल–(सं०वि०) निश्चल, स्थिर, दृढ़; (पुं०) वृक्ष, पर्वत।
अचला–(सं० स्त्री०) न चलनेवाली, स्थिर।
अचवन–(हिं०पुं०) आचमन, भोजन के बाद हाथ-मुंह धोना तथा कुल्ली करना। अचवना–(हिं०क्रि०) आचमन करना। अचवाना–(हिं०क्रि०) भोजन के बाद हाथ-मुंह धुलवाना।
अचांचक, अचानक–(हिं० क्रि० वि०) अकस्मात्।
अचार–(हिं०पुं०) फल या तरकारियों में मसाला मिलाकर बना हुआ खाने का खट्टा पदार्थ, आचरण, व्यवहार।
अचारज–(हिं०पुं०) आचार्य।
अचारी–(हिं०वि०) आचार करनेवाला।
अचाल–(हिं०पुं०) न चलनेवाला।
अचिक्कण–(सं०वि०) रूखा, मैला।
अचिकित्स्य–(सं०वि०) जिसकी चिकित्सा न हो सके, असाध्य (रोगी)।
अचित्–(सं०पुं०) निर्जीव पदार्थ।
अचित्त–(सं०वि०) चेतनाहीन, बेसुध।
अचिन्त–(हिं०वि०) बिना चिन्ता का, निश्चिन्त।
अचिन्तित–(सं०वि०) बिना चिन्ता किया हुआ।
अचिर–(सं०वि०) थोड़े काल तक ठहरनेवाला; (क्रि०वि०) शीघ्र, तुरंत।
अचिराभा–(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
अचीता–(हिं०वि०) आकस्मिक।
अचूक–(हिं० वि०) न चूकनेवाला; (क्रि०वि०) बिना भूल किये हुए।
अचेत–(सं०वि०) चेतनाशून्य, मूर्छित, निर्बुद्धि; (पुं०) निर्जीव पदार्थ।
अचेतन–(सं०वि०) चेतनारहित।
अचेष्ट–(सं०वि०) ज्ञानशून्य।
अचैतन्य–(सं०वि०) चेतनाहीन, जड़।

अचेना–(हिं०पुं०) नेसुआ।
अचोना–(हिं०पुं०) आचमनी।
अच्छ–(सं०) स्वच्छ, निर्मल; (पुं०) भालू।
अच्छत–(हिं०पुं०) देखो अक्षत।
अच्छर–(हिं०पुं०) वर्ण, अक्षर।
अच्छरा–(हिं०स्त्री०)अप्सरा, देवाङ्गना।
अच्छा–(हिं०वि०) उत्तम, भला, रोगरहित, स्वस्थ ; (पुं०) श्रेष्ठ मनुष्य ; (क्रि०वि०)भली भाँति; (अव्य०)अस्तु।
अच्छाई, अच्छापन–(हिं०) उत्तमता।
अच्छोहिनी–(हिं०स्त्री०)देखो अक्षौहिणी
अछत्र–(हिं०पुं०)राज्यहीन,बिना छत्र का
अछना–(हिं०क्रि०) रहना।
अछय–(हिं०पुं०) अक्षय।
अछरा–(हिं०स्त्री०)अप्सरा, देवाङ्गना।
अछरौटी–(हिं०स्त्री०) वर्णमाला।
अछल–(हिं०वि०) निष्कपट, निश्छल।
अछवाना–(हिं०क्रि०) सुशोभित करना।
अछवानी–(हिं०स्त्री०) प्रसूता स्त्रियों को दिया जानेवाला एक पाकविशेष।
अछूत–(हिं०वि०) अस्पृश्य; (पुं०) अन्त्यज जाति। अछूता–(हिं०वि०) बिना छुआ हुआ, नया।
अछेव–(हिं०वि०) बिना छिद्र का।
अछेह–(हिं०वि०) अखण्डित, बहुत।
अछोभ–(हिं०वि०) क्षोभरहित, शान्त।
अज–(सं०पुं०) जिसका जन्म न हो, ईश्वर।
अजगुत–(हिं०पुं०) अद्‌भुत घटना।
अजटा–(सं०स्त्री०) बिना जटा का।
अजड़–(सं०वि०) सजीव वस्तु, चेतन व्यक्ति।
अजदहा–(फा०पुं०) बड़ा अजगर।
अजन्म, अजन्मा–(सं०पुं०) जिसका जन्म न हो, मोक्ष।
अजपाल–(सं०पुं०) गड़ेरिया।
अजमोद, अजमोदा–(सं०स्त्री०) अजवाइन।
अजय–(सं०स्त्री०) पराजय, हार।
अजसी–(हिं०वि०) अख्यात, यशहीन।
अजहूँ–(हिं०अव्य०) अब भी,आज तक भी।
अजागर–(हिं०वि०) न जागनेवाला।
अजाचक–(हिं०वि०) न माँगनेवाला।
अजाची–(हिं०पुं०) जो मनुष्य किसी से कुछ न माँगे।
अजात–(सं०वि०) जिसका जन्म न हुआ हो।
अजाति, अजाती–(सं०स्त्री०) जातिशून्य, पतित, त्याज्य।
अजान–(हिं०वि०)अज्ञात, अपरिचित; (पुं०) अज्ञानता।
अजापालक–(सं०वि०) गड़ेरिया।
अजाय–(हिं०वि०) अनुचित, अयोग्य।
अजिऔरा–(हिं०पुं०) आजी या दादी के पिता का घर।
अजित–(सं०वि०) अपराजित; (पुं०) शिव, विष्णु।
अजिन–(सं०पुं०) मृगचर्म, मृगछाला।
अजिर–(सं०पुं०) टीला, आँगन।
अजी–(हिं०अव्य०) सम्बोधनार्थक शब्द, अरे!
अजीरन–(हिं०पुं०) अपच, बहुतायत।
अजीर्ण–(हिं०पुं०) अपाक, अपच, बहुतायत।
अजीव–(सं०वि०) अचेतन, निर्जीव।
अजेय–(सं०वि०) न जीतने योग्य।
अजै–देखो अजय।
अजो–(हिं०क्रि०वि०) आज तक,अभी तक।
अजोग–(हिं०वि०) अयोग्य।
अजौं–(हिं०क्रि०वि०)अभीतक,आज भी
अज्झल–(हिं०पुं०) ढाल।

अज्ञ–(सं०वि०)ज्ञानशून्य, मूर्ख; (पुं०) मूर्ख मनुष्य। अज्ञता, अज्ञत्व–(सं०) मूर्खता।
अज्ञात–(सं०वि०)अपरिचित,अविदित।
अज्ञाति–(सं०पुं०) असम्बन्धी पुरुष।
अज्ञान–(सं०वि०) बिना ज्ञान का (पुं०) अविद्या, मोह, जड़ता।
अज्ञानी–(सं०वि०) अबोध, मूर्ख।
अज्येष्ठ–(सं०वि०)जो बड़ा या जेठा न हो।
अझर–(हिं०वि०) न झरने या बरसनेवाला।
अझोरी–(हिं०स्त्री०) थैली।
अटक, अटकन–(हिं०स्त्री०) प्रतिबन्ध, अवरोध, बाधा।
अटकना–(हिं०क्रि०) ठहरना, फँसना, उलझना, झगड़ा करना, प्रेम करना।
अटकर, अटकल–(हिं०स्त्री०)अनुमान।
अटका–(हिं०पुं०) जगन्नाथपुरी में नैवेद्य लगाया हुआ भोग जो सुखाकर अन्य देशों में प्रसाद रूप में भेजा जाता है।
अटकाना–(हिं०क्रि०) ठहराना, लगाना, फँसाना, उलझाना,अटकाव; (हिं०पुं०) अवरोध, रुकावट।
अटखली–(हिं०स्त्री०) खेलकूद, चंचलता।
अटट (ट्ट)–(हिं०वि०)पुष्ट, पोढ़ा, दृढ़।
अटन–(सं०पुं०)भ्रमण, घूमना फिरना।
अटना–(हिं०क्रि०) घूमना, भर जाना, पूर्ण होना, समाना।
अटनि, अटनी–(सं०स्त्री०) धनुष का वह भाग जहाँ रोदा चढ़ाया जाता है।
अटपट–(हिं०वि०) टेढ़ामेढ़ा, विकट, भयंकर। अटपटाना–(हिं०क्रि०) सकुचाना। अटपटी–(हिं०स्त्री०) तिरछी, बेढंगी।
अटब्बर–(हिं०पुं०) आडम्बर, अभिमान, वंश, कुटुम्ब।
अटम–(हिं०पुं०)ढेर, राशि, समुदाय
अटल–(हिं०वि०) निश्चल, स्थिर अवश्य होनेवाला।
अटवि, अटवी–(सं०स्त्री०) वन, जंगल।
अटहर–(हिं०पुं०) राशि, ढेर।
अटा–(सं०स्त्री०) पर्यटन, भ्रमण।
अटाउ, अटाव–(हिं०पुं०)लगाव, विद्वेष।
अटाटुट, अटाटूट–(हिं०वि०) दृढ़, पुष्ट, बहुत भारी।
अटारी–(हिं०स्त्री०) छत, घर के सबसे ऊपर के खण्ड की कोठरी।
अटाल–(हिं०पुं०) बहुत ऊंचा घर।
अटाला–(हिं०पुं०) ढेर, राशि।
अटिया–(हिं०स्त्री०) झोपड़ी, घास इत्यादि का बंधा हुआ मुट्ठा।
अटूट–(हिं०वि०) न टूटनेवाला, दृढ़।
अटेक–(हिं०वि०) उद्देश्य-रहित, बिना सहारे का।
अटेरन–(हिं०पुं०) सूत की आंटी बनाने का एक यन्त्र, ओयना।
अटोक–(हिं०वि०) बिना रोकटोक का।
अटम्बर–(हिं० पुं०)ढेर, राशि,समुदाय।
अट्ट–(सं०पुं०)अट्टालिका, हाट; (वि०) अधिक, बहुत ऊँचा।
अट्टहास–(सं०पुं०) ठहाके की हँसी।
अट्टा–(हिं०पुं०) अट्टालिका, अटारी।
अट्टाट्टहास-देखो अट्टहास।
अट्टाल–(सं०पुं०) घर में सबसे ऊपर की छत पर का कमरा।
अट्टालिका–(सं० स्त्री०) अटारी, राजगृह।
अट्टी–(हिं०स्त्री०) लच्छी, अटेरन में लिपटा हुआ धागा।
अट्ठा–(हिं०पुं०) ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की आठ बूटियाँ हों।

अट्ठाइस, अट्ठाईस–(हिं०वि०) बीस और आठ से बनी हुई संख्या २८।
अट्ठानबे-(हिं०वि०)नब्बे और आठ से बनी हुई संख्या ९८।
अट्ठावन–(हिं०वि०)पचास और आठ से बनी हुई संख्या ५८।
अट्ठासी–(हिं०वि०) अस्सी और आठ से बनी हुई संख्या ८८।
अठ–(हिं०वि०) आठ की संख्या ८।
अठइसी–(हिं०स्त्री०) एक सौ चालीस।
अठकौंसल–(हिं०स्त्री०) सभा,पंचायत।
अठखेली–(हिं०स्त्री०) खेलकूद, उछल-कूद।
अठत्तर–(हिं०वि०) सत्तर और आठ से बनी हुई संख्या ७८।
अठन्नी–(हिं०स्त्री०) आठ आने की चाँदी की मुद्रा।
अठपहला, अठपहलू–(हिं०क्रि०) आठ पहल का।
अठमासा–(हिं०वि०) आठ महीने का।
अठलाना–(हिं०क्रि०) क्रीड़ा या कौतुक करना, ऐंठन दिखलाना, चोंचला दिखाना।
अठवांस–(हिं० पुं०) आठ कोने का टुकड़ा; (वि०) अठपहल। अठवाँसा–(हिं० वि०)आठ महीने में जन्म लेने-वाला।
अठवारा–(हिं०पुं०)आठ दिन का काल।
अठहत्तर–(हिं० वि०) सत्तर और आठ से बनी संख्या ७८।
अठान–(हिं०पुं०) अनुचित कार्य, द्रोह।
अठारह, अट्ठारह–(हिं०वि०) दस और आठ से बनी हुई संख्या १८।
अठासी–(हिं०स्त्री०) अस्सी और आठ से बनी हुई संख्या।
अठिलाना–(हिं० क्रि०)देखो अठलाना।
अठै–(हिं०क्रि०वि०)यहां, इस स्थान पर।
अठोतरसो–(हिं०वि०)एक सौ आठ की संख्या १०८।
अठोतरी–(हिं० स्त्री०) एक सौ आठ दाने की जप करने की माला।
अड़–(हिं०स्त्री०) हठ, टेक।
अड़काना–(हिं० क्रि०) रोकना।
अड़ग–(हिं० वि०) दृढ़, पुष्ट, अचल।
अड़गोड़ा–(हिं०पुं०) लकड़ी का टुकड़ा जो नटखट पशु के गले में बाँध दिया जाता है, प्रतिबंध।
अड़ङ्गा–(हिं० पुं०) अवरोध, रुकावट।
अड़च–(हिं०स्त्री०) शत्रुता।
अड़चन–(हिं० स्त्री०) विघ्न, बाधा।
अडण्ड–(हिं०वि०) जिसको दण्ड न दिया गया हो, निर्भय।
अड़तल–(हिं०स्त्री०) आड़, ओट, अव-रोध।
अड़तालिस, अड़तालीस–(हिं० वि०) चालीस और आठ से बनी हुई संख्या ४८।
अड़तिस, अड़तीस–(हिं०वि०)तीस और आठ से बनी हुई संख्या ३८।
अड़दार–(हिं०वि०) अड़नेवाला, अड़ि-यल।
अड़ना–(हिं० क्रि०) रुकना, अटकना, हठ करना।
अड़बंग–(हिं०वि०) टेढ़ा, ऊँचा-नीचा।
अड़बल–(हिं० वि०) अड़नेवाला।
अड़सठ, अरसठ–(हिं०वि०) साठ और आठ से बनी हुई संख्या ६८।
अड़ाड़–(हिं०पुं०) पशुओं को बांधने का बाड़ा, ढेर, राशि।
अड़ान–(हिं० स्त्री०) विश्राम-स्थान, पड़ाव।
अड़ाना–(हिं०क्रि०) रोकना, टिकाना,

टेक लगाना, फँसाना; (पुं०) टेक, रोक।
अड़ानी–(हिं०पुं०) रोकने का साधन।
अड़ार–(हिं० पुं०) ढेर, राशि, लकड़ी की दूकान।
अड़ियल–(हिं०वि०) अड़कर जानेवाला, हठी।
अड़िया–(हिं०पुं०) साधुओं की टेककर बैठने की कुबड़ी।
अड़ी–(हिं०स्त्री०) रोक, हठ; (वि०) ठहरी हुई, रुकी हुई।
अडोल–(हिं० वि०) न डोलनेवाला।
अड़ोस पड़ोस–(हिं० पुं०) आस पास, समीप।
अड्डन–(सं० पुं०) ढाल।
अड्डा–(हिं०पुं०) डेरा, दुष्टों के इकट्ठा होने का स्थान, पक्षियों के बैठने का स्थान।
अढ़तिया–(हिं० पुं०) आढ़त का काम करनेवाला व्यापारी।
अढ़न–(हिं०स्त्री०) शिक्षा, उपदेश, वार्ता।
अढ़ाई–(हिं० वि०) पाँच का आधा।
अढ़िया–(हिं० स्त्री०) गारा ढोने की कढ़ैया।
अढ़क–(हिं० पुं०) चोट, ठोकर।
अढ़ुकना–(हिं० क्रि०) ठोकर लगाना, टेकना।
अढ़ुकि–(हिं०क्रि०वि०) आश्रय लेता हुआ।
अढ़ैया–(हिं०पुं०) अढ़ाई सेर की तौल।
अणि–(सं०पुं०, स्त्री०) पहिये की धुरी की कील, आरा, अग्रभाग, सीमा, किनारा।
अणिमा–(सं०पुं०) अति सूक्ष्म परिमाण।
अणी–(हिं० अव्य०) ए जी, अरी, ओ जी।
अणीय–(सं० वि०) अति सूक्ष्म।
अणु–(सं० वि०) सूक्ष्म, छोटा, थोड़ा; (पुं०) अतिसूक्ष्म कण; (वि०) अल्प परिमाण का।
अणुवीक्षण–(सं० पुं०) सूक्ष्म-दर्शक।
अतंक–(सं०पुं०) आतंक, कष्ट।
अतंत–देखो अत्यन्त।
अतः–(सं० अव्य०) इस कारण से, इसलिये।
अतएव–(सं० अव्य०) इस कारण से।
अतट–(सं०पुं०) टीला, ऊँचा स्थान।
अतथ्य–(सं०वि०) झूठा, मिथ्या, अन्यथा, असमान।
अतनु–(सं०पुं०) बिना देह का, अशरीर।
अतन्त्र–(सं० वि०) बिना कारण का।
अतन्द्र–(सं० वि०) निद्रा-रहित, सचेत।
अतप–(सं० वि०) शान्त, ठंढा।
अतप्त–(सं० वि०) बिना तपाया हुआ, ठंढा।
अतबान–(हिं० वि०) अत्यधिक, अत्यन्त।
अतर–(हिं०पुं०) पुष्पनिर्यास, फूलों का सुगन्धित सत्व।
अतरसों–(हिं० क्रि०वि०) परसों के आगे का या बाद का दिन।
अतरिख–(हिं० पुं०) अन्तरिक्ष, वायुमण्डल।
अतर्क–(सं०वि०) अहेतुक, बिना तर्क का।
अतल–(सं०वि०) बिना तल का, बहुत गहरा। अतलस्पर्श, अतलस्पर्शी–(सं० वि०) बहुत गहरा, अगाध।
अतस् (अतः)–(सं.अव्य) इस कारण से।
अतसी–(सं०स्त्री०) अलसी, तीसी।
अति–(सं०अव्य०) अतिशय, अधिक, प्रकर्षता, असम्भावना अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त होता है।
अतिकथा–(सं०स्त्री०) व्यर्थ का प्रलाप।
अतिकान्त–(सं० वि०) अति प्रिय।

अतिकाय–(सं०वि०) दीर्घकाय, स्थूल।
अतिकारक–(सं०वि०) निर्दयी।
अतिकाल–(सं०पुं०) कुसमय, विलम्ब।
अतिकृत–(सं०वि०) मर्यादा को उल्लंघन करके किया हुआ।
अतिक्रम, अतिक्रमण–(सं० पुं०) उल्लंघन।
अतिक्रान्त–(सं०वि०) लाँघा हुआ।
अतिग्राह–(सं०पुं०) मगर, घड़ियाल।
अतिघ–(सं०पुं०) शस्त्र, अस्त्र, क्रोध।
अतिचमू–(सं०वि०) सेनाको जीतनेवाला।
अतिचार–(सं० पुं०) व्यतिक्रम।
अतिजन–(सं०वि०) निर्जन, जनशून्य।
अतिजव–(सं० वि०) बहुत तीव्र चलनेवाला; (पुं०) वेगयुक्त गति।
अतिजीर्ण–(सं० वि०) बहुत पुराना।
अतितत–(सं० वि०) बहुत फैला हुआ।
अतितपस्वी–(सं० पुं०) बड़ी तपस्या करनेवाला।
अतितृष्णा–(सं०स्त्री०) बड़ी प्यास।
अतिथि–(सं०पुं०) अभ्यागत, पाहुन; अतिथिपरिचर्या, अतिथिपूजा–अतिथि-सत्कार, अतिथि का आदर।
अतिबरवै–(हिं०पुं०) हिन्दी का एक छन्द।
अतिबल–(सं० वि०) बड़ा बलवान्।
अतिबालक–(सं०पुं०) छोटा-सा बच्चा।
अतिबाहु–(सं०पुं०) अद्वितीय बाहुबल का मनुष्य।
अतिमर्याद–(सं० अव्य०) मर्यादा से बाहर; (वि०) अतिशय।
अतिमात्र–(सं०वि०) प्रमाण से अधिक।
अतिमान–(सं०पुं०) वृथा का अभिमान; (वि०) आवश्यकता से अधिक।
अतिमुक्त–(सं० वि०) मुक्ति प्राप्त किया हुआ।
अतिमृत्यु–(सं०पुं०) महामारी।
अतिरक्त–(सं०वि०) तीव्र लाल रंग का।
अतिरथ–(सं०पुं०) बड़ा योद्धा।
अतिरिक्त–(सं०वि०) अधिक, श्रेष्ठ, भिन्न।
अतिरेक–(सं०पुं०) विशेषता, अधिकता।
अतिरो(लो) मश–(सं० वि०) अत्यन्त रोवों से युक्त।
अतिवेला–(सं०स्त्री०) विलम्ब, असमय।
अतिव्याप्त–(सं०वि०) सब स्थानों में व्याप्त।
अतिशय–(सं०पुं०) अधिकता, बहुतायत।
अतिशयोक्ति–(सं०स्त्री०) बहुत बढ़ाकर कही हुई बात।
अतिशूद्र–(सं०पुं०) अन्त्यज।
अतिशोभन–(सं०वि०) बहुत सुन्दर।
अतिसन्धान–(सं०पुं०) विश्वासघात।
अतिसन्धित–(सं० वि०) ठगा हुआ।
अतिसर्ग–(सं०पुं०) उत्सर्ग, दान।
अतिसार–(सं०पुं०) उदर का एक रोग जिसमें आँव तथा रुधिर मिला हुआ शौच होता है।
अतिस्वप्न–(सं०पुं०) अधिक नींद आना।
अतीक्ष्ण–(सं०वि०) जो तीव्र न हो।
अतीत–(सं०वि०) अतिक्रान्त, बीता हुआ। अतीतना-(हिं०क्रि०) बीतना।
अतीथ–(हिं०पुं०) पाहुन, अतिथि।
अतीन्द्रिय–(सं०वि०) अगोचर, जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा न हो सके।
अतीव–(सं०अव्य०) अतिशय, अत्यन्त।
अतीव्र–(सं० वि०) जो तीव्र न हो।
अतुंग–(सं०वि०) जो ऊँचा न हो, बौना।
अतुराई–(हिं० स्त्री०) चंचलता।
अतुल–(सं०वि०) अनुपम, बहुत अधिक, असीम। अतुलनीय–(सं०वि०) अद्वितीय, अपरिमित। अतुलित–(सं०

वि०)अपरिमित, तुलना-रहित,असंख्य
अतुल्य–(सं० वि०) अनुपम, असदृश ।
अतुष–(सं०वि०) बिना भूसे या छिलके का ।
अतुष्टि–(सं०स्त्री०)असन्तोष,लालच ।
अतूथ–(हिं०वि०) बहुत ऊँचा, अपूर्व ।
अतूल–(हिं०वि०) अतुल्य, अनुपम ।
अतृप्त–(सं० वि०) असन्तुष्ट ।
अतृष्ण–(सं० वि०) बिना तृष्णा या लालसा का । अतृष्णा-(सं०स्त्री०) लालसा का अभाव।
अतेज–(सं० वि०) बिना चमक का, धुंधला ।
अतोल–(हिं० वि०) बिना तौल का, अनोखा ।
अतोषणीय–(सं० वि०) सन्तुष्ट न होने योग्य ।
अतौल–(हिं०वि०)बेतौल,बिना तौल का।
अत्यग्नि–(सं० पुं०) क्षुधा का अधिक लगना ।
अत्यद्भुत–(सं० वि०) बड़ा अनोखा ।
अत्यन्त–(सं०पुं०) बहुतायत; (वि०) अधिक, बहुत ।
अत्यय–(सं०पुं०) अभाव, नाश, दोष ।
अत्यर्थ–(सं० पुं०) अतिशय, बहुतायत; (अव्य०) बहुतायत से ।
अत्यल्प–(सं०पुं०)बहुत थोड़ा,बहुत कम
अत्याचार–(सं०पुं०) अन्याय, बुरा आचरण ।
अत्युक्त–(सं० वि०) बहुत बढ़कर कहा हुआ । अत्युक्ति–(सं० स्त्री०) बहुत बढ़कर वर्णन करने की रीति ।
अत्र–(सं० अव्य०) इस विषय में, इस स्थान में, यहाँ पर, यहाँ ।
अत्रप–(सं०वि०) निर्लज्ज ।
अत्वरा–(सं०स्त्री०)शीघ्रता का अभाव।
अथ–(सं० अव्य०) अब, इस समय, आरम्भ में ।
अथऊ–(हिं०पुं०) वह भोजन जो सन्ध्या होने से पहिले किया जाय ।
अथक–(हिं०वि०) न थकनेवाला,परिश्रमी।
अथच–(सं० अव्य०) फिर, और भी ।
अथमना–(हिं०क्रि०) न रुकना, न ठहरना
अथरा–(हिं०पुं०) मिट्टी की चौड़ी नाँद ।
अथरी–(हिं०स्त्री०) मिट्टीका खुले मुंह का छोटा पात्र ।
अथर्ववेद–(सं०पुं०) चतुर्थ वेद जो ब्रह्मा के उत्तर मुख से निकला था ।
अथवना–(हिं०क्रि०)अस्त होना, डूबना ।
अथवा–(सं० अव्य०) किंवा या पक्षान्तर में ।
अथाना–(हिं० क्रि०) अस्त होना, डूबना, गहराई नापना ।
अथापि–(सं०अव्य०) अब भी, इस तरह ।
अथाह–(हिं०वि०) अपार, अनन्त, अतिगूढ़, अगाध ।
अथिर–(हिं०वि०) अस्थिर, चलायमान ।
अथोर–(हिं०वि०) थोड़ा नहीं, अधिक ।
अदंक–(हिं०पुं०) आतंक, भय, डर ।
अदंड–(हिं०वि०)जो दण्ड के योग्य न हो।
अदक्ष–(सं०वि०) जो निपुण न हो ।
अदक्षिण–(सं० वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, बायाँ, अचतुर, गँवार ।
अदग–(हिं०वि०) निरपराध, स्वच्छ ।
अदग्ध–(सं०वि०) बिना जलाया हुआ ।
अदण्डय–(सं० वि०) जो दण्ड के योग्य न हो ।
अदन–(सं० पुं०) भोजन, भक्षणीय पदार्थ ।
अदनीय–(सं०वि०)भोजन करने योग्य ।
अदबदाकर–(हिं० क्रि० वि०) हठ से, टेक करके ।

अदभ्र–(सं० वि०) प्रचुर, अपार ।
अदय–(सं० वि०) दया-रहित, निष्ठुर ।
अदरक–(हिं० पुं०) आर्द्रक, अदरख ।
अदराना–(हिं० क्रि०) इतराना, अभिमानी बनना ।
अदर्शन–(सं० पुं०) लोप, असावधानी; (वि०) अगोचर ।
अदलबदल–(हिं०पुं०) उलटफेर, हेरफेर ।
अदली–(हिं० वि०) न्यायी, पत्रहीन ।
अदवाइन, अदवान–(हिं० स्त्री०) खाट की ओनचन ।
अदहन–(हिं०पुं०) पानी जो चावल या दाल उबालने के लिये आँच पर रक्खा जाता है ।
अदाक्षिण्य–(सं० पुं०) अकृपा, दयाहीनता ।
अदान्त–(सं० वि०) जिसकी इन्द्रियाँ वश में न हों, लम्पट ।
अदाय–(सं० वि०) पैतृक सम्पत्ति का अंश न पाने योग्य ।
अदार–(सं०पुं०) पत्नी-रहित ।
अदावँ–(हिं० पुं०) कठिनता, धोखा ।
अदिन–(हिं०पुं०) कुसमय, बुरा दिन ।
अदीक्षित–(सं० वि०) जिसको दीक्षा न मिली हो ।
अदीठ–(हिं० वि०) अदृष्ट, गुप्त ।
अदीन–(सं० वि०) धनी, उदार, अनम्र, दीनता-रहित, निडर ।
अदीपित–(सं० वि०) न जलाया हुआ ।
अदुंद–(हिं० वि०) बिना बाधा का, शान्त ।
अदुर्ग–(सं० वि०) जहाँ पहुँचना कठिन न हो ।
अदुर्वृत्त–(सं०वि०) शुद्ध आचरण का ।
अदूर–(सं० वि०) समीप का; (सं० पुं०) सामीप्य ।
अदृढ़–(सं० वि०) अस्थिर, ढीला ।
अदृश्य–(सं० वि०) अगोचर, लुप्त ।
अदृष्ट–(सं० वि०) अवीक्षित, लुप्त; (पुं०) भाग्य ।
अदृष्टाक्षर–(सं० पुं०) अक्षर जो लिखे हुए देख न पड़ें ।
अदेख–(हिं०वि०) न देखा हुआ, छिपा हुआ ।
अदेय–(सं० वि०) दान न देने योग्य ।
अदेव–(सं०पुं०) निशाचर, राक्षस ।
अदेश–(सं०पुं०) अयोग्य स्थान ।
अदेस–(हिं० पुं०) आज्ञा, आदेश ।
अदेह–(सं० वि०) शरीर-रहित ।
अदैव–(सं० वि०) दुर्भाग्ययुक्त ।
अदोख–(हिं० पुं०) अदोष, निरपराध ।
अदोस–(हिं० पुं०) देखो अदोष ।
अद्ध–(हिं० वि०) आधा—देखो अर्ध ।
अद्धा–(हिं० वि०) आधा टुकड़ा, आधे परिमाण का । अद्धी–(हिं० स्त्री०) आधी दमड़ी, महीन तंजेब ।
अद्‌भुत–(सं० वि०) विचित्र, विलक्षण, अनूठा ।
अद्य–(सं० अव्य०) आज, अभी, अब । अद्यतन–आज का, नया । अनद्यतनभूत–आज दिन से पहिले का काल; अद्यापि–(सं० अव्य०) अब भी, आज तक ।
अद्यावधि–(सं० पुं०) आज से आरंभ होने का काल ।
अद्रव–(सं० वि०) घना, गाढ़ा ।
अद्रव्य–(सं० पुं०) अयोग्य पात्र ।
अद्रि–(सं० पुं०) पर्वत, सूर्य ।
अद्विज–(सं०वि०) जो ब्राह्मण न हो ।
अद्वितीय–(सं० वि०) अकेला, अनुपम, प्रधान, विलक्षण ।
अद्वैत–(सं० पुं०) अतुल्य, अद्वितीय ।
अधः–(सं०अव्य०) नीचे का । अधःपतन–

अवनति, दुर्गति, दुर्दशा। अधःस्थित-नीचे खड़ा हुआ।
अध-(हिं०अव्य०) अर्ध, आधा, अनेक शब्दों में उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होता है, यथा-अधखिला, अधमरा इत्यादि।
अधघट-(हिं०वि०) जिसका अर्थ पूर्ण रूप से प्रकट न हो।
अधजर-(हिं०वि०) आधा जला हुआ।
अधन-(सं०वि०) धनहीन, निर्धन, कंगाल।
अधनिया-(हिं० वि०) आध आने या दो पैसे का।
अधन्ना-(हिं०पुं०) आध आने की मुद्रा।
अधन्य-(सं०पुं०) हतभाग्य, अभागा।
अधपई-(हिं०स्त्री०) दो छटाँक या आधे पाव का बाँट।
अधम-(सं० वि०) खोटा, नीच; **अधमई**-(हिं०स्त्री०) बुराई, नीचता।
अधमर्ण-(सं० वि०) ऋणी।
अधमाचार-(सं० वि०) बुरा व्यवहार।
अधमाधम-(सं० वि०) बुरे से बुरा।
अधमुआ-(हिं० वि०) अधमरा।
अधमुख-(हिं० वि०) अधोमुख, औंधा।
अधर-(हिं०पुं०) नीचे का ओष्ठ; (वि०) नीचे को झुका हुआ, नीच, बुरा।
अधरज-(हिं०स्त्री०) ओठों पर चढ़ी हुई पान की लाली।
अधरम-(हिं० पुं०) देखो अधर्म।
अधरीकृत, अधरीभूत-(सं० वि०) हराया हुआ।
अधरोंधा-(हिं०वि०) आधा खाया हुआ।
अधरोष्ठ-(सं०पुं०) नीचे का होंठ।
अधर्म-(सं० पुं०) श्रुति-स्मृति-विरुद्ध आचरण, अन्याय, पातक।
अधर्मिष्ठ-(सं० वि०) महापापी, अधर्मशील; **अधर्मी**-(हिं० पुं०) अधर्मात्मा।
अधसेरा, असेरा-(हिं०पुं०) आध सेर का बटखरा।
अधस्तल-(सं० पुं०) किसी वस्तु के नीचे का स्थान।
अधार-(हिं० पुं०) देखो आधार।
अधारिया-(हिं० पुं०) बैलगाड़ी का वह स्थान जहाँ पर हाँकनेवाला बैठता है।
अधारी-(हिं० स्त्री०) आधार, आश्रय, साधुओं का टेकने का पतला पीढ़ा जो डंडे के ऊपर जड़ा होता है, यात्रा की सामग्री रखने का झोला; (वि०) आश्रय देनेवाली।
अधार्य-(सं० वि०) जो धारण न किया जा सके।
अधावट, अधवट-(हिं०वि०) जो (दूध) खौलाकर आधा गाढ़ा हो जावे।
अधि-संस्कृत का शब्द जो "ऊपर, उस ओर, अधिक तथा प्रधान" अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होता है।
अधिक-(सं० वि०) अतिरिक्त, प्रधान, विशेष, अनेक। **अधिकतम**-(सं०वि०) सबसे अधिक। **अधिकतर**-(सं०वि०) दो पदार्थों में से एक से अधिक।
अधिकदन्त-(सं० पुं०) एक के ऊपर दूसरा चढ़ा हुआ दाँत।
अधिक मास-(सं० पुं०) मलमास, लवन का महीना।
अधिकरण-(सं० पुं०) आधार, सहारा, व्याकरण में कर्म और क्रिया का आधार जो अधिकरण कारक कहलाता है।
अधिकर्म-(सं० अव्य०) बड़ा काम।
अधिकांग-(हिं० वि०) किसी अंग का अधिक होना।
अधिकांश-(सं० पुं०) अधिक भाग या हिस्सा; (क्रि० वि०) प्रायः, बहुधा।
अधिकाई-(हिं०स्त्री०) अधिकता, महिमा।

अधिकाधिक–(सं०वि०) अधिक से अधिक।
अधिकार–(सं० पुं०) आधिपत्य, कार्य का भार, पद, विषय, प्रमाण, चेष्टा, प्राप्ति, योग्यता। अधिकारी–(सं०पुं०) प्रभु, स्वामी, उपयुक्त पात्र।
अधिकार्थ–(सं० वि०) एक से अधिक अर्थ वाला।
अधिकृत–(सं० पुं०) अध्यक्ष; (वि०) नियुक्त, अधिकार दिया हुआ।
अधिगत–(सं० वि०) विदित, स्वीकृत।
अधिगम–(सं०पुं०) ज्ञान, प्राप्ति, लाभ।
अधिजनन–(सं० पुं०) उत्पत्ति।
अधित्यका–(सं० स्त्री०) पर्वत के ऊपर की समतल भूमि।
अधिदेव–(सं० पुं०) परमेश्वर।
अधिनाथ, अधिनायक–(सं० पुं०) प्रभु, मुखिया।
अधिप–(सं०पुं०) राजा, स्वामी, ईश्वर। अधिपति–(सं०पुं०) प्रभु, स्वामी, पति, नायक। अधिभौतिक, आधिभौतिक–(सं० वि०) प्राकृतिक।
अधिमांस–(सं० वि०) वह रोग जिसमें शरीर में कहीं पर का मांस बढ़ जाता है।
अधियार–(हिं० पुं०) किसी सम्पत्ति का आधा भाग।
अधिरथ–(सं०पुं०) रथ पर चढ़ा हुआ योद्धा, सारथि।
अधिराज–(सं०पुं०) सम्राट्।
अधिराज्य–(सं०पुं०) साम्राज्य।
अधिरूढ़–(सं० वि०) चढ़ा हुआ।
अधिरोपण–(सं० पुं०) ऊपर को चढ़ाना या उठाना।
अधिलोक–(सं०पुं०) संसार।
अधिवाचन–(सं०पुं०) निर्वाचन, चुनाव।
अधिवास–(सं०पुं०) ठहरने का स्थान, निवास, सुगन्ध, दूसरे के घर में रहना।
अधिवासित–(सं० वि०) सुगन्धित।
अधिवेशन–(सं०पुं०) संघटन।
अधिश्रित–(सं० वि०) आग पर चढ़ाया हुआ।
अधिश्री–(सं० वि०) अत्यन्त शोभा।
अधिष्ठाता–(सं०वि०) अध्यक्ष, मुखिया, रक्षक, राजा।
अधिष्ठान–(सं० पुं०) रहने का स्थान, नगर, आश्रय, आधार, अधिकार।
अधिष्ठित–(सं० वि०) नियुक्त, स्थापित, निर्वाचित।
अधीत–(सं०वि०) अध्ययन किया हुआ।
अधीन–(सं०वि०) वशीभूत, आश्रित।
अधीर–(सं०वि०) अस्थिर, चंचल, असन्तुष्ट, व्याकुल।
अधीश, अधीश्वर–(सं०पुं०) अधिपति, प्रभु, अध्यक्ष, राजाधिराज।
अधुत, अधूत–(सं०वि०) बिना हिलाया हुआ।
अधुना–(सं० अव्य०) अभी, आजकल, इन दिनों।
अधूत–(देखो अधुत) निडर, धृष्ट, ढीठ।
अधूरा–(हिं०वि०) अपूर्ण, असमाप्त, आधा, अशिक्षित।
अधेड़–(हिं०वि०) उतरती युवावस्थाका।
अधेला–(सं० वि०) आधे पैसे की मुद्रा।
अधेली–(हिं०स्त्री०) आठ आने मूल्य की चाँदी की मुद्रा, अठन्नी।
अधैर्य–(सं०वि०) चंचलता, व्याकुलता।
अधोगत–(सं०वि०) नीचे की ओर पहुँचा हुआ; अधोगति–दुर्दशा। अधोगमन–(सं० पुं०) अवनति, पतन, दुर्दशा।
अधोगामी–(सं०वि०) नीचे को जाने-वाला, नरकगामी।
अधोरध–(हिं०क्रि०वि०) ऊपर नीचे।

अधोलम्ब–(सं०पुं०) साहुल, पानी की गहराई नापने का यन्त्र ।
अधोलोक–(सं०पुं०) पाताल । अधोवायु–(सं०पुं०) अपान वायु ।
अधोविन्दु–(सं०पुं०) आकाश में का वह स्थान जो हमारे पैर के ठीक नीचे है ।
अध्यक्ष–(सं० पुं०) प्रधान कार्यकर्त्ता, अधिष्ठाता, अधिकारी, सम्पादक ।
अध्ययन–(सं० पुं०) पठन ।
अध्ययनीय–(सं०वि०) पढ़ने योग्य ।
अध्यवसाय–(सं०पुं०) उत्साह, निश्चय
अध्यवसायी–(सं० वि०) उद्यमशील, उत्साही ।
अध्यात्म–(सं०पुं०) परब्रह्म, परमेश्वर ; (वि०) आत्मा या ब्रह्म सम्बन्धी ।
अध्यापक–(सं०पुं०) शिक्षक, गुरु, आचार्य, पढ़ानेवाला । अध्यापकी–(हिं०स्त्री०) अध्यापक का कार्य, पढ़ाने-लिखाने का काम । अध्यापन–(सं० पुं०) पढ़ाने-लिखाने का कार्य ।
अध्यापिका–(सं०स्त्री०) पढ़ाने-लिखाने-वाली स्त्री । अध्यापित–(सं० वि०) पढ़ाया-लिखाया हुआ ।
अध्याय–(सं०पुं०) ग्रन्थ-विभाग, सर्ग, अङ्क, परिच्छेद ।
अध्यारूढ़–(सं०वि०) समारूढ़, चढ़ा हुआ।
अध्यासीन–(सं०वि०) बैठा हुआ ।
अध्याहार–(सं०पुं०) तर्क वितर्क, असम्पूर्ण वाक्य को संपूर्ण करने के लिये कुछ शब्द जोड़ना ।
अध्रुव–(सं०वि०) अनिश्चित, चंचल ।
अध्वग–(सं०पुं०) यात्री, पथिक, ऊँट । अध्वगामी–(सं० पुं०) यात्रा करने-वाला ।
अध्वन्, अध्व–(सं०स्त्री०) पथ, भूमि, स्थान ।
अध्वर–(सं०पुं०) यज्ञ ।
अन्–(सं०अव्य०) निषेधार्थक अव्यय, नहीं ।
अनंश–(सं०वि०) बिना टुकड़े का ।
अनइस–(हिं०वि०) निकृष्ट, अधम ।
अनहिवात–(हिं०पुं०) वैधव्य, रँड़ापा ।
अनकनना–(हिं०क्रि०) सुनना, छिपकर सुनना ।
अनक्षर–(सं०) निन्दा, गाली ; (वि०) मूर्ख ।
अनख–(हिं०पुं०) क्रोध, ईर्ष्या, अन्याय ।
अनखी–(हिं०वि०) कोपान्वित, क्रोधी ।
अनगढ़–(हिं०वि०) भद्दा, बेडौल ।
अनगन–(हिं०वि०) अगणित, बहुत ।
अनगवना–(हिं०क्रि०) जान बूझकर देर करना ।
अनगिन, अनगिनत–(हिं०वि०) अनगिनती, असंख्य ।
अनगैरी–(हिं०वि०) अपरिचित, पराया।
अनघ–(सं०वि०) पापशून्य, निर्मल, शुद्ध ।
अनघरी–(हिं०स्त्री०) कुसमय, बुरा समय।
अनङ्ग–(सं०वि०,पुं०) बिना शरीर का, कामदेव, मन ।
अनङ्गी–(हिं०वि०) बिना शरीर का ।
अनचीन्हा–(हिं०वि०) अपरिचित ।
अनच्छ–(सं०वि०) जो स्वच्छ न हो ।
अनजान–(हिं०वि०) अनभिज्ञ, अज्ञान ।
अनजोखा–(हिं०वि०) बिना तौला हुआ ।
अनट–(हिं०पुं०) उपद्रव, अत्याचार ।
अनडीठ–(हिं०वि०) अदृष्ट, बिना देखा हुआ ।
अनत–(सं०वि०) सीधा, खड़ा, अभिमानी ।
अनत–(हिं० क्रि० वि०) अन्यत्र ।
अनतिक्रम–(सं०पुं०) सीमा से बाहर न जाना ।

अनद्यतन–(सं०वि०) जो आज का न हो। **अनद्यतन भविष्य**–आगामी आधीरात के बाद का समय। **अनद्यतनभूत**–आधीरात के पहिले का काल।

अनधिकार–(सं०पुं०) अयोग्यता; (वि०) अयोग्य, अधिकार-रहित।

अनधिकृत–(सं०वि०) अधिकार न किया हुआ।

अनधिगत–(सं०वि०) अज्ञात, बिना समझा-बूझा हुआ।

अनधिगम्य–(सं०वि०) प्राप्त न होने योग्य।

अनध्याय–(सं०पुं०) छुट्टी का दिन, जिस दिन शास्त्र के अनुसार लिखना पढ़ना निषिद्ध हो।

अननुज्ञात–(सं०वि०) असम्मत, बिना आज्ञा का।

अननुभूत–(सं०वि०) अनुभवहीन, अज्ञात।

अनन्त–(सं०पुं०) नारायण; (वि०) असीम।

अनन्तर–(सं०वि०) बिना अवकाश का, पिछला, पीछे, उपरान्त; (क्रि०वि०) सतत।

अनन्तराशि–(सं०पुं०) वह संख्या जिसका अन्त न हो। **अनन्तरूप**–(सं०पुं०) असंख्य रूपवाला, परमेश्वर।

अनन्द–(हिं०पुं०) आनन्द।

अनन्दी–(हिं०वि०) आनन्दी।

अनन्नास–(हिं०पुं०) एक फल जो खाने में खटमीठा होता है।

अनन्य–(सं०वि०) दूसरे से सम्बन्ध न रखनेवाला, समूचा, स्वतंत्र। **अनन्य-चित्त**–अपना चित्त एक ही विषय में लगानेवाला।

अनन्यभाव–(सं०वि०) केवल ईश्वर में ध्यान लगानेवाला। **अनन्यमनस्क**–(सं०वि०) अपना ध्यान किसी एक विषय में स्थिर करनेवाला। **अनन्याश्रित**–जो दूसरे के आश्रित न हो, स्वतंत्र।

अनन्वित–(सं०वि०) असम्बद्ध, पृथक्।

अनप–(सं०वि०) जल से शून्य।

अनपकार–(सं०पुं०) अपकार न करना, सीधापन, भोलापन।

अनपच–(हिं० पुं०) अपच, अजीर्ण।

अनपढ़–(हिं०वि०) अशिक्षित, बेपढ़ा।

अनपत्य–(सं०वि०) सन्तानहीन।

अनपायी–(सं०वि०) स्थिर, निश्चय।

अनपेक्ष–(सं०वि०) अपेक्षा न करनेवाला, पक्षपातरहित।

अनबिध, अनबिधा–(हिं०वि०) बिना बेधा या छेद किया हुआ।

अनबोल–(हिं०वि०) न बोलनेवाला, मौन।

अनभल–(हिं० पुं०) बुराई, अहित।

अनभाया, अनभावता–(हिं०वि०) अप्रिय।

अनभिज्ञ–(सं०वि०) अपरिचित।

अनहित–(सं०वि०) बिना सम्बन्ध का।

अनभीष्ट–(सं०वि०) अनिष्टकर, बुराई करनेवाला।

अनभो–(हिं०पुं०) आश्चर्य, अचम्भा, अनुभव; (वि०) अद्भुत, विचित्र।

अनमन, अनमना–(हिं०वि०) खिन्न, उदास, अस्वस्थ।

अनमापा–(हिं०वि०) बिना नपा हुआ।

अनमिख–(हिं०पुं०) बिना पलक गिराये, टकटकी बाँधे हुए।

अनमिल, अनमिलत–(हिं०वि०) सम्बन्ध-रहित, पृथक्।

अनमेल–(हिं०वि०) बिना मिलावट का, विशुद्ध।

अनमोल–(हिं०वि०) अमूल्य, अत्युत्तम, सुन्दर।
अनयस–(हिं०वि०) अनुत्तम, बुरा।
अनयास–(हिं०क्रि० वि०) देखो अनायास।
अनरथ–(हिं०वि०) देखो अनर्थ।
अनरना–(हिं०क्रि०) अनादर करना।
अनरस–(हिं०पुं०) रसहीनता, रुखाई, वैर, दुःख, कष्ट।
अनराता–(हिं०वि०) बिना किसी रंग से रँगा हुआ।
अनरीति–(हिं०स्त्री०) बुरी चाल, कुरीति।
अनरुचि–(हिं०स्त्री०) अरुचि, अग्निमान्द्य।
अनरूप–(हिं०वि०) कुरूप, भद्दा।
अनर्गल–(सं०वि०) प्रतिबन्ध-रहित, व्यर्थ।
अनर्घ–(सं०वि०) बहुमूल्य; (पुं०) कम मूल्य का।
अनर्थ–(सं०पुं०) प्रतिकूलता, आपत्ति।
अनर्थक–(सं०पुं०) निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
अनर्ह–(सं०वि०) अनुपयुक्त, भद्दा, अयोग्य।
अनल–(सं०पुं०) अग्नि, वायु। अनलचूर्ण–बारूद।
अनलस–(सं० वि०) आलस्य-रहित।
अनलेख–(हिं०वि०) जिसका वर्णन लिखा न जा सके।
अनल्प–(सं०वि०) प्रचुर, अधिक।
अनवकाश–(सं०पुं०) अवकाश न होना।
अनवगाह–(सं०वि०) बहुत गहरा, अथाह।
अनवच्छिन्न–(सं०वि०) संयुक्त, जुटा हुआ। अनवच्छिन्न संख्या–अखण्ड राशि।
अनवट–(हिं०पुं०) चाँदी का छल्ला जिसको स्त्रियाँ पैर के अँगूठे में पहिनती हैं।
अनवधान–(सं०पुं०) असावधानी।
अनवय–(हिं०) देखो अन्वय।
अनवरत–(सं०वि०) निरन्तर; (अव्य०) सर्वदा।
अनवलम्ब–(सं०वि०) निराश्रय।
अनवलम्बन–(सं० पुं०) आश्रय का अभाव।
अनवसर–(सं०वि०) कुसमय।
अनवस्था–(सं०स्त्री०) चंचलता, आतुरता। अनवस्थित–(सं०वि०) अस्थिर, चंचल, अशान्त।
अनवाँसना–(हिं०क्रि०) किसी नये पात्र को पहले-पहल काम में लाना।
अनवाँसा–(हिं० वि०) पहले-पहल काम में लाया हुआ।
अनवांसी–(हिं०स्त्री०) बिस्वांसी का बीसवाँ भाग।
अनवाद–(हिं०पुं०) कटु वचन।
अनशन–(सं०पुं०) उपवास, लंघन।
अनश्वर–(सं०वि०) नष्ट न होनेवाला, स्थायी, स्थिर, अटल।
अनसखरी–(हिं०वि०) केवल दूध तथा घी के संयोग से बना हुआ पक्वान्न।
अनसढ–(हिं०वि०) नीच, अधम।
अनसन–(हिं०वि०) उपवास, अनशन।
अनसमझा–(हिं०वि०) न समझा हुआ।
अनसाना–(हिं०क्रि०) चिढ़ाना।
अनसुना–(हिं०वि०) बिना सुना हुआ।
अनसुनी करना–आनाकानी करना।
अनसूया–(सं०स्त्री०) ईर्ष्या न करना।
अनहित–(हिं०पुं०) बुराई, अपकार।
अनहितू–(हिं०वि०) हित न चाहनेवाला।
अनहोता–(हिं०वि०) न होनवाला।
अनहोनी–(हिं०स्त्री०) न होनेवाली।

बात; (पुं०) अद्भुत घटना ।
अनाकानी–(हिं० स्त्री०) जान-बूझकर टालना ।
अनाकुल–(हिं०वि०) न घबड़ाया हुआ ।
अनाखर–(हिं०वि०) अक्षर न पहिचाननेवाला, मूर्ख ।
अनागत–(सं०वि०) न आया हुआ, अविदित, अप्राप्त ।
अनाचारी–(हिं०वि०) कुकर्मी ।
अनाज–(हिं०पुं०) अन्न, धान्य ।
अनाजी–(हिं० वि०) अन्न का, अन्न-निर्मित ।
अनाड़ी–(हिं०वि०) अज्ञानी, असभ्य, मूर्ख ।
अनाथ–(सं०वि०) प्रभुहीन, अशरण ।
अनाथालय, अनाथाश्रम–(सं०पुं०) दीन दुखियों को रखने का स्थान, पितृहीन बच्चों की रक्षा का स्थान ।
अनादर–(सं०पुं०) अपमान, अप्रतिष्ठा ।
अनादि–(सं०पुं०) जिसका आदि न हो, ब्रह्म, परमेश्वर ।
अनादृत–(सं० वि०) तिरस्कृत, अपमानित ।
अनाम–(सं०वि०) बिना नाम का, अविख्यात । अनामक–(सं०वि०) अप्रसिद्ध, बेनाम ।
अनामय–(सं०वि०) रोगरहित, आरोग्य ।
अनामा, अनामिका–(सं०स्त्री०) बिचली और कानी अँगुली के बीचवाली अँगुली ।
अनामिष–(सं०वि०) मांसरहित, निरर्थक ।
अनायास–(सं०वि०) बिना क्लेश या परिश्रम का; (अव्य०) सहज में ।
अनारी–(हिं०वि०) अनार के रंग का, अनाड़ी, मूर्ख ।
अनार्य–(सं०वि०) जो आर्य न हो, म्लेच्छ, असच्चरित्र, दुष्ट ।
अनावश्यक–(सं०वि०) बिना प्रयोजन का
अनावृष्टि–(सं०स्त्री०) वृष्टि का अभाव ।
अनाश्रय–(सं०वि०) निरवलम्ब, अनाथ, असहाय, दीन । अनाश्रित–(सं०वि०) आश्रयहीन, निरवलम्ब ।
अनास्था–(सं०स्त्री०) अपमान, अनादर, अश्रद्धा ।
अनाहत–(सं०वि०) चोट न लगा हुआ ।
अनाहार–(सं०पुं०) अनशन, उपवास; (वि०) भोजन न किया हुआ, निराहार ।
अनिच्छा–(सं०स्त्री०) अनभिलाष, अरुचि
अनित–(हिं०वि०) अनित्य, शून्य ।
अनित्य–(सं०वि०) सदा न रहनेवाला, क्षणभंगुर ।
अनिन्दनीय–(सं०वि०) अनिन्द्य, निर्दोष ।
अनिन्दित–(सं०वि०) निन्दा न किया हुआ ।
अनिप–(हिं०पुं०) सेनापति, सेनानायक ।
अनिमिख–(हिं०वि०) टकटकी लगाया हुआ; (क्रि०वि०) बिना पलक गिराये ।
अनियत–(सं०वि०) अनित्य, असीम ।
अनियन्त्रित–(सं०वि०) प्रतिबन्धहीन, अनिवारित, उच्छृंखल ।
अनियाउ–(हिं०पुं०) देखो अन्याय ।
अनियारा–(हिं०वि०) धारदार, तीक्ष्ण ।
अनिर्धारित–(सं०वि०) स्थिर न किया हुआ, अनिश्चित ।
अनिर्भर–(सं०वि०) थोड़ा, छोटा ।
अनिर्वचनीय–(सं०वि०) जिसका वर्णन न किया जा सके ।
अनिल–(सं०पुं०) वायु, हवा ।
अनिवारित–(सं०वि०) बिना रोक का. न हटाया हुआ ।

अनिवार्य–(सं०वि०) न हटाने योग्य।
अनिवेदित–(सं० वि०) अवर्णित, अ-कथित।
अनिश–(सं०वि०) निरन्तर, अविरत।
अनिष्ट–(सं० पुं०) अहित, अपकार, हानि, अमङ्गल।
अनी–(हिं०स्त्री०) नोक, कोर, खेद, ग्लानि।
अनीक–(सं०पुं०) सेना, युद्ध, कलह; (हिं०वि०) अनुत्तम, बुरा।
अनीठ–(हिं०वि०)अनिष्ट, अधम, बुरा।
अनीत, अनीति–(हिं०स्त्री०) अनीति, अन्याय।
अनीश–(सं०वि०) प्रभुशून्य, अनाथ।
अनीस–(हिं०पुं०) अनीश, अनाथ।
अनु–संस्कृत का एक उपसर्ग जो 'पीछे, साथ साथ, इधर-उधर, सदृश, पास, साथ तथा प्रत्येक' अर्थ में शब्दों के पहले लगाया जाता है।
अनुकथन–(सं०पुं०) वार्त्तालाप।
अनुकम्पा–(सं० स्त्री०) दया, कृपा, अनुग्रह।
अनुकरण–(सं० पुं०) सदृश करना।
अनुकूल–(सं० वि०) पक्षपाती, आश्रय देनेवाला।
अनुकृति–(सं०स्त्री०) अनुकरण।
अनुक्त–(सं०वि०) न कहा हुआ।
अनुक्ति–(सं०वि०)बिना कही हुई बात।
अनुक्रम–(सं०पुं०) पिछला क्रम।
अनुक्रमण–(सं०पुं०) पीछे को चलना।
अनुक्रमणिका–(सं०स्त्री०) सूचीपत्र।
अनुग–(सं० पुं०) सेवक, अनुयायी।
अनुगत–(सं०वि०) आश्रित, अधीन।
अनुगति–(सं०स्त्री०) अनुसरण।
अनुगृहीत–(सं०वि०) अनुग्रह किया हुआ, कृतज्ञ।
अनुग्रह–(सं०पुं०) दया, कृपा।
अनुचर–(सं०पुं०) सहचर, भृत्य, दास।
अनुचित–(सं०वि०) अयुक्त, अकर्त्तव्य।
अनुज–(सं०पुं०) छोटा भाई। अनु-जन्मा, अनुजा–(सं०स्त्री०) छोटी बहिन।
अनुजीवी–(सं०पुं०) आश्रित। सेवक।
अनुज्ञा–(सं०स्त्री०) आज्ञा, अनुमति।
अनुज्ञात–(सं०वि०) अनुमति-प्राप्त।
अनुज्ञापन–(सं०पुं०) आज्ञा, आदेश।
अनुत्तर–(सं० वि०) उत्तररहित, चुप, मौन।
अनुदिन, अनुदिवस–(सं०अव्य०) प्रति-दिन।
अनुद्यत–(सं०वि०) उद्यमहीन, आलसी।
अनुद्यम–(हिं०पुं०) उद्यमहीनता।
अनुध्यान–(सं० पुं०) पिछली चिन्ता।
अनुनय–(सं०पुं०) प्रार्थना, विनय।
अनुनासिक–(सं०वि०) नाक से बोला जानेवाला वर्ण यथा–ञ, म, ङ, ण, न।
अनुपतन–(सं०पुं०) गिराव, अंश, टुकड़ा।
अनुपपत्ति–(सं०स्त्री०) असङ्गति, अ-सिद्धि, अयुक्ति।
अनुपपन्न–(सं०वि०) अप्रबाधित, अस-म्भव।
अनुपम–(सं०वि०) उपमाविहीन, बहुत अच्छा।
अनुपस्थित–(सं०वि०) अविद्यमान, दूरस्थ।
अनुपात–(सं० पुं०) गणित की अनेक राशियों में सम्बन्ध दिखलाने की क्रिया, त्रैराशिक की वह क्रिया जिससे यह ज्ञात होता है कि एक राशि दूसरी से कितनी गुनी या कितने अंश की है।

अनुपान–(सं०पुं०) औषध के साथ मिलाकर अथवा पीछे से जो वस्तु खाई या पी जावे।

अनुप्रास–(सं०पुं०) एक अलंकार जिसमें किसी वाक्य में एक ही पद अथवा एक ही अक्षर का वारंवार प्रयोग किया जाता है।

अनुभव–(सं०पुं०) प्रयोगों से प्राप्त किया हुआ ज्ञान।

अनुभवी–(सं०पुं०, वि०) अनुभवप्राप्त।

अनुभूत–(सं०वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात, उपलब्ध।

अनुमत–(सं०वि०) प्रशंसा किया हुआ, प्रिय। **अनुमति**–(सं०स्त्री०) सम्मति, आज्ञा।

अनुमान–(सं०पुं०) न्याय में प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा अप्रत्यक्ष विषय का निश्चय।

अनुमोदक–(सं० त्रि०) स्वीकार करनेवाला। **अनुमोदन**–(सं० पुं०) स्वीकृति, समर्थन। **अनुमोदित**–(सं०वि०) सम्मति दिया हुआ, स्वीकार करने योग्य।

अनुयोग–(सं०पुं०) जिज्ञासा, पूछताछ।

अनुरक्त–(सं०वि०) प्रेमयुक्त, आसक्त।

अनुरंजक–(सं०वि०)प्रेम उत्पन्न करनेवाला।

अनुरंजन–(सं० पुं०) राग, प्रेम, प्यार।

अनुराग(सं०पुं०) आसक्ति, प्रेम, प्रीति।

अनुरूप–(सं०वि०)समान रूप का, सदृश।

अनुरोध–(सं० पुं०) अभीष्ट साधन की इच्छा, प्रेरणा, आग्रह।

अनुलोम–(सं०पुं०) अनुक्रम, ऊँचे से नीचे का क्रम; (अव्य०) क्रमानुसार।

अनुवा–(हिं०पुं०) जिस स्थान पर खड़े होकर कुवें से जल निकाला जाता है।

अनुवाद–(सं०पुं०)निन्दा,भाषान्तर; उलथा

अनुवृत्ति–(सं०स्त्री०) पीछे की गति व्याकरण में किसी पूर्व सूत्र के पद का आगे के सूत्र में नियोग।

अनुशासक–(सं०पुं०)नियोजक, शिक्षक, राज्य का प्रवन्धकर्ता। **अनुशासन**–(सं० पुं०) आदेश, शिक्षा, आज्ञा, कर्तव्यविधान।

अनुशीलन–(सं० पुं०) मनन, विचार, चिन्तन।

अनुषंग–(सं०पुं०) संबंध, दया, पहिले वाक्य में से आगे के वाक्य में कुछ शब्द जोड़ा जाना।

अनुष्टुप्–(सं०पुं०) आठ आठ अक्षर के चार पाद का छन्द।

अनुष्ठान–(सं०पुं०) कार्यारम्भ, शास्त्रविहित कर्म का आचरण, वांछित फल की आकांक्षा से देवता की आराधना।

अनुसन्धान–(सं० पुं०) चिन्ता, अन्वेषण, प्रयत्न।

अनुसरण–(सं० पुं०) अनुकरण।

अनुसार–(हिं०क्रि०वि०) समान, सदृश, अनुकूल।

अनुस्मरण–(सं० पुं०) पुनःस्मरण।

अनुस्वार–(सं०पुं०) अनुनासिक वर्ण जो दूसरे वर्ण के साथ मिलकर उच्चारित होता है, यह अक्षर के माथे परबिन्दु लगाकर लिखा जाता है।

अनुहार–(सं०पुं०) सादृश्य, समानता। **अनुहारि, अनुहारी**–(हिं०वि०) अनुकरण करनेवाला।

अनूठा–(हिं०वि०) अपूर्व, विलक्षण।

अनूढ़–(सं०वि०) बिना व्याहा हुआ, कुंवारा। **अनूढ़ा**–(सं०स्त्री०) अविवाहिता स्त्री।

अनूप–(सं०वि०) जल से परिपूर्ण;

(पुं०) वह स्थान जहाँ जल प्रचुर हो ।
अनृत–(सं०पुं०) असत्य, मिथ्या, झूठ ; (वि०) झूठ, अन्यथा ।
अनृशंस–(सं०वि०) दयावान् ।
अनेक–(सं०वि०) एक से अधिक, बहुसंख्यक ।
अनेकधा–(सं०अव्य०) प्रायः, बहुधा ।
अनेकवार–(सं०अव्य०) कई बार, बारंबार ।
अनेकविध–(सं० वि०) कई प्रकार का ।
अनेकशः–(सं०अव्य०) अनेक बार ।
अनेकाक्षर–(सं०वि०) जिसमें कई एक अक्षर मिले हों ।
अनेकार्थ–(सं०वि०) एक से अधिक अर्थवाला ।
अनेरा–(हिं० वि०) असत्य, झूठ, दुष्ट, क्रूर ।
अनैहा–(हिं०पुं०) उपद्रव, उत्पात ।
अनोकह–(सं०पुं०) वृक्ष, पादप, पेड़ ।
अनोखा–(हिं०वि०) अपूर्व, नया, विचित्र, सुन्दर ।
अन्त–(सं०पुं०) नाश, मृत्यु, सीमा, समाप्ति, प्रलय ।
अन्तःकरण–(सं०पुं०) मन, विचार, बुद्धि, विवेक ।
अन्तःकोष–(सं० पुं०) भण्डारघर का भीतरी कमरा । अन्तःपट–(सं०पुं०) वस्त्र विशेष जो विवाह के समय वर तथा कन्या के बीच में रक्खा जाता है । अन्तःपुर–(सं०पुं०) अन्तर्भवन ।
अन्तःसलिला–(सं०स्त्री०) वह नदी जिसका जल बालू के भीतर भरा रहता है ।
अन्तस्थ–(सं०वि०) अन्त का; संस्कृत व्याकरण में य, र, ल, व ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं ।
अन्तक–(हिं०पुं०) मृत्यु, अन्त, यम ; (वि०) अन्त या नाश करनेवाला ।
अन्तकर्म–(सं०पुं०) नाश, अन्त्येष्टि क्रिया ।
अन्तकाल–(सं०पुं०) मृत्यु, मरण ।
अन्तपाल–(सं०पुं०) द्वारपाल ।
अन्तर–(सं०पुं०) भेद, व्यवधान; (वि०) अन्य, दूसरा; (क्रि० वि०) भीतर ।
अन्तरङ्ग–(सं०वि०) आत्मीय, घनिष्ठ, रहस्य जाननेवाला ।
अन्तरजामी–(हिं०पुं०) देखो अंतर्यामी ।
अन्तरज्ञ–(सं०वि०) मर्मज्ञ, विशेषज्ञ ।
अन्तरदिशा–(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच की दिशा ।
अन्तरपट–(सं०पुं०) परदा, ओट ।
अन्तरस्थ–(सं०पुं०) बीच में रहनेवाला ।
अन्तरा–(सं०पुं०) अन्तर, कोना, एक दिन का अन्तर देकर आनेवाला ज्वर, गीत का दूसरा पद ।
अन्तरात्मा–(सं० पुं०) अन्तःकरण, जीवात्मा ।
अन्तराय–(सं० पुं०) प्रतिबन्ध, विघ्न, बाधा ।
अन्तराल–(सं० पुं०) मध्य भाग, घेरा, रिक्त स्थान ।
अन्तरिक्ष, अन्तरीक्ष–(सं०पुं०) आकाश, शून्य स्थान, स्वर्गलोक; (वि०) अप्रकट, गुप्त ।
अन्तरिख, अन्तरिछ–(हिं० पुं०) देखो अन्तरिक्ष ।
अन्तरीप–(सं० पुं०) भूमि का वह नुकीला भाग जो समुद्र के जल में घुसा हो, द्वीप, टापू ।

अन्तरे–(सं०अव्य०) मध्य में, बीच में।
अन्तर्गत–(सं० वि०) बीचवाला, गुप्त, सम्मिलित।
अन्तर्गृह–(सं० पुं०) घर के मध्य का स्थान।
अन्तर्गृही–(सं० स्त्री०) तीर्थस्थान के भीतर के प्रधान स्थानों की यात्रा।
अन्तर्जात–(सं० वि०) शरीर के भीतर उत्पन्न।
अन्तर्द्वार–(सं० पुं०) घर का गुप्त द्वार।
अन्तर्धान–(सं०वि०) छिपा हुआ, अदृश्य, गुप्त।
अन्तर्भाव–(सं० पुं०) चित्त की भावना, अभिप्राय।
अन्तर्भूत–(सं० वि०) मध्यस्थित।
अन्तर्यामी–(सं० पुं०) सबके अन्तःकरण में व्याप्त परमेश्वर ; (वि०) भीतर प्रवेश करनेवाला।
अन्तर्लापिका–(सं० स्त्री०) वह पहेली जिसका उत्तर उसी में वर्तमान हो।
अन्तर्लीन–(सं० वि०) निमग्न, डूबा हुआ।
अन्तर्हित–(सं० वि०) गुप्त, छिपा हुआ।
अन्तवासी–(सं० पुं०) शिष्य, चेला।
अन्तवेला–(सं० स्त्री०) मरण-काल।
अन्तस्थ–(सं० वि०) अन्त का ; (पुं०) य, र, ल, व, ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं।
अन्तस्सलिल–(सं०वि०) जिसके जल का प्रवाह गुप्त हो।
अन्तिम–(सं० वि०) अन्त का, पीछे का।
अन्तेवासी–(सं० पुं०) शिक्षा के निमित्त गुरु के पास रहनेवाला शिष्य, चांडाल।
अन्त्य–(सं० वि०) अन्तिम, छोटा।
अन्त्यकर्म–(सं०पुं०) अन्त्येष्टि क्रिया।
अन्त्यज–(सं० पुं०) शूद्र, चण्डाल।
अन्त्याक्षर–(सं० पुं०) किसी पद या शब्द का अन्तिम अक्षर। अन्त्याक्षरी–(सं० स्त्री०) किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होनेवाला दूसरा श्लोक।
अन्त्यानुप्रास–(सं० पुं०) एक शब्दालंकार जिसमें आदि स्वर के साथ स्वर, अनुस्वार अथवा विसर्ग-संयुक्त व्यञ्जन कई बार दोहराया जावे।
अन्त्येष्टि–(सं० स्त्री०) मृत्यु के बाद दाह-कर्म हो जाने पर के संस्कारों की क्रिया।
अन्त्र–(सं० पुं०) आँत, अँतड़ी।
अन्दरसा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की मिठाई।
अन्दोर–(हिं० पुं०) आन्दोलन।
अन्दोलन–(सं० स्त्री०) लहर का उठना और उतारना।
अन्ध–(सं०वि०) बिना आँख का, नेत्रहीन, असावधान।
अन्धकार–(सं० पुं०) तिमिर, अँधेरा।
अन्धड़–(हिं० पुं०) आँधी, धूल से भरी हुई प्रचण्ड वायु।
अन्धपरंपरा–(हिं०स्त्री०) बिना विचारे पुरानी प्रथा का अनुसरण।
अन्धविश्वास–(सं० पुं०) विवेक-रहित विश्वास।
अन्न–(सं० पुं०) अनाज, धान्य, खाद्य पदार्थ। अन्नकाल–भोजन का समय। अन्नछत्र–(सं० पुं०) भूखे कंगालों को भोजन बाँटने का स्थान। अन्नजल–(सं० पुं०) जीविका, खानपान।
अन्नदान–(हिं० पुं०) भोजन देना।
अन्नसत्र–(सं० पुं०) वह स्थान जहाँ

भूखों और कंगालों को भोजन बाँटा जाता है, अन्नक्षेत्र।
अन्ना–(हिं० स्त्री०) दूध पिलानेवाली धाय, दाई।
अन्य–(सं० वि०) भिन्न, दूसरा।
अन्यचित्त–(सं० पुं०) जिसका चित्त दूसरी ओर लगा हो।
अन्यच्च–(सं० क्रि० वि०) और भी।
अन्यजात–(सं० वि०) दूसरे कुल में उत्पन्न।
अन्यतः–(सं० क्रि० वि०) किसी दूसरे स्थान में।
अन्यत्र–(सं० अव्य०) अन्य स्थान में।
अन्यथा–(सं० अव्य०) अन्य प्रकार, विपरीत, उल्टा।
अन्यभृत्–(सं० स्त्री०) जिसका पालन-पोषण दूसरा कोई करे, कोकिल।
अन्यमनस्क–(सं० वि०) चंचलचित्त, उदास।
अन्याय–(सं० पुं०) अनीति, न्यायविरुद्ध आचरण, अत्याचार।
अन्यारा–(हिं० वि०) निराला, अनोखा।
अन्योक्ति–(सं० स्त्री०) वह बात जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से दूसरे पर घटाया जावे।
अन्योन्य–(सं० वि०) परस्पर।
अन्वय–(सं० पुं०) वंश, संबंध, सन्तान, पद्य के शब्दों को वाक्य-रचना के नियमानुसार अर्थात् कर्ता, कर्म और क्रिया के क्रम में रखना, अनुकूलता।
अन्वीक्षण–(सं० पुं०) खोज, विचार।
अन्वेषित–(सं० वि०) अनुसन्धान किया हुआ, खोजा हुआ।
अन्हवाना–(हिं० क्रि०) स्नान कराना।
अन्हाना–(हिं० क्रि०) स्नान करना।
अप्–(सं० स्त्री०) जल, पानी, अन्तरिक्ष।
अप–(सं० अव्य०) उपसर्ग की तरह यह शब्द "निषेध, अनादर, त्याग, वियोग, बुरा, अधिक तथा विरोध" अर्थ में व्यवहृत होता है; (हिं० सर्व०) 'आप' शब्द का संक्षिप्त रूप यथा–अपस्वारथी इ०। अपकरण–(सं० पुं०) दुराचार।
अपकर्ष–(सं० पुं०) घटाव, अपमान, निरादर, नीचे को खींचना।
अपकाजी–(हिं० वि०) अपस्वार्थी।
अपकार–(सं० पुं०) अनिष्ट, अहित।
अपकीरति–(हिं० स्त्री०) अपकीर्ति; (सं० स्त्री०) अपयश, निन्दा, अयश।
अपक्रम–(सं० पुं०) व्यतिक्रम।
अपगत–(सं० वि०) भागा हुआ, मृत।
अपगमन–(सं० पुं०) अपसरण, भाग जाना।
अपघात–(सं० पुं०) धोखा, अपमृत्यु, आत्महत्या।
अपच–(सं० पुं०) अजीर्ण।
अपचरित–(सं० पुं०) बुरा आचरण।
अपचाल–(हिं० पुं०) कुचाल, खोटाई।
अपजस–(हिं० पुं०) अपयश, दुर्नाम।
अपटन–(हिं० पुं०) उबटन।
अपटु–(सं० वि०) जो कार्यकुशल न हो।
अपठ–(हिं० वि०) निरक्षर, अपढ़।
अपडर–(हिं० पुं०) भय, शंका।
अपड़ाना–(हिं० क्रि०) राढ़ करना, झगड़ना।
अपढ़–(हिं० वि०) अशिक्षित।
अपण्डित–(सं० वि०) जो पण्डित न हो, मूर्ख।
अपत–(हिं० वि०) पत्रहीन, अधम, नीच, निर्लज्ज।
अपत्र–(सं० पुं०) बिना पंख का, बिना पत्ते का।

अपथ–(सं० पुं०) कुमार्ग, कुपथ।
अपथ्य–(सं० पुं०) अहितकर, स्वास्थ्य का नाश करनेवाला।
अपदिष्ट–(सं० वि०) प्रयुक्त, कहा हुआ।
अपदेखा–(हिं० वि०) स्वार्थी, घमण्डी।
अपदेश–(सं० पुं०) निमित्त, लक्ष्य, बहाना।
अपन–(हिं० सर्व०) अपना, हम।
अपनपौ–(हिं० पुं०) आत्मीयता, अपकार, अहंकार।
अपनय–(सं० पुं०) बुरी नीति, खण्डन।
अपना–(हिं० सर्व०) आत्मीय, स्वकीय।
अपनाना–(हिं० क्रि०) अपने पक्ष में लाना, अपने अनुकूल करना।
अपनाम–(हिं० पुं०) दुर्नाम, अपयश।
अपनायत–(हिं० स्त्री०) आत्मीयता।
अपभ्रंश–(सं० पुं०) बिगाड़, विकृति, बिगड़ा हुआ शब्द, (वि०) बिगड़ा हुआ।
अपमान–(सं० पुं०) अनादर, तिरस्कार, अवज्ञा।
अपमार्ग–(सं० पुं०) कुपथ, कुमार्ग।
अपमृत्यु–(सं० पुं०) अस्वाभाविक मृत्यु।
अपयश–(सं० पुं०) अपकीर्ति, लाञ्छन।
अपरंच–(सं० अव्य०) फिर भी, तो भी।
अपरम्पार–(हिं० वि०) अपार, असीम।
अपर–(सं० वि०) पहिला, दूसरा, पिछला। **अपरछन**–(हिं० वि०) जो ढँपा या छिपा न हो।
अपरबल–(सं० वि०) बलवान्।
अपरलोक–(सं० पुं०) स्वर्ग।
अपरवश–(हिं० वि०) पराधीन।
अपरस–(हिं० वि०) अस्पृश्य, जो छूने योग्य न हो।
अपराजिता–(सं० स्त्री०) दुर्गा, कोयल, कौवाठोठी का फूल, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
अपराध–(सं० पुं०) पाप, भूल, दोष।
अपराह्न–(सं० पुं०) तीसरा पहर।
अपरिचित–(सं० वि०) अज्ञात, बिना जान-पहिचान का।
अपरिमित–(सं० वि०) अगणित, असीम।
अपरिष्कृत–(सं० वि०) स्वच्छ न किया हुआ, मैला कुचैला।
अपरोक्ष–(सं० अव्य०) प्रत्यक्ष।
अपर्याप्त–(सं० वि०) अपूर्व, असमर्थ।
अपवर्ग–(सं० पुं०) मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण, त्याग।
अपवर्तक–(सं० पुं०) गणित में वह संख्या जिससे अन्य दो या अधिक संख्याओं को भाग देने पर कुछ शेष न रहे।
अपवर्त्य–(सं० पुं०) जिस संख्या को दूसरी किसी संख्या से भाग देने पर कुछ शेष न बचे–वह उस संख्या का अपवर्त्य कहलाता है।
अपवाद–(सं० पुं०) निन्दा, विरोध, अपकीर्ति, मिथ्या वार्ता।
अपवादी–(सं० पुं०) विरोधी, बुराई करनेवाला।
अपवित्र–(सं० वि०) अशुद्ध, दूषित, मलिन।
अपव्यय–(सं० पुं०) अपरिमित व्यय, दुष्कर्म में व्यय।
अपशकुन–(सं० पुं०) बुरा सगुन, कुसगुन।
अपशब्द–(सं० पुं०) अपभ्रंश शब्द, अर्थहीन शब्द, कुवाच्य, अपान वायु।
अपसगुन–(हिं० वि०) अपशकुन, असगुन।
अपसना–(हिं० क्रि०) भाग जाना, चल देना।
अपसव्य–(सं० पुं०) देह का दाहिना भाग, दक्षिण।

अपसौन–(हि० पुं०) अपशकुन, बुरा सगुन।
अपस्मार–(सं० पुं०) मिरगी रोग।
अपस्वार्थी–(हि० वि०) अपना स्वार्थ साधनेवाला।
अपहरना–(हि० क्रि०) चुराना, लूटना।
अपहर्ता–(सं०पुं०) चोर, लुटेरा, छिपानेवाला।
अपहृत–(सं० वि०) चुराया हुआ, छीना हुआ।
अपह्नुति–(सं० स्त्री०) छिपाव, बहाना, वह अर्थालंकार जिसमें प्रकृत पदार्थ का निषेध करके उस स्थान में वैसा ही दूसरा कोई पदार्थ स्थापित किया जाता है।
अपा–(हि० स्त्री०) अभिमान, अहंकार।
अपांग–(सं० पुं०) नेत्र का कोना। अपांग-दर्शन–कटाक्ष।
अपाङ्ग–(सं० पुं०) आँख का कोना, कटाक्ष; (वि०) अङ्गहीन।
अपात्र–(सं० वि०) असमर्थ, कुपात्र, मूर्ख।
अपादान–(सं० पुं०) विभाग, अलगाव, व्याकरण में वह कारक जिसमें विभागादि सूचित होता है, इस कारक में पञ्चमी विभक्ति लगती है।
अपान–(सं० पुं०) गुदस्थ वायु, अधोवायु।
अपार–(सं० वि०) असीम, असंख्य, अतिशय।
अपाव–(हि० पुं०) अन्याय, अत्याचार।
अपाहिज–(हि० वि०) अङ्गहीन, आलसी, काम करने के अयोग्य।
अपि–(सं० अव्य०) भी, ही, अवश्य, निश्चय। अपिच–(सं०वि०) और भी, तौ भी, परंच।
अपीच–(हि० वि०) सुन्दर, सुहावना।
अपुत्र, अपुत्रक–(सं० पुं०) पुत्रहीन, बिना बेटे का, निःसन्तान।
अपुनपो–(हि० पुं०) आत्मीयता, मेल-जोल।
अपुनीत–(सं० वि०) अपवित्र।
अपूठना–(हि० क्रि०) नाश करना, तोड़ना, मिटाना।
अपूठा–(हि० वि०) अपुष्ट, कच्चा, अनभिज्ञ।
अपूत–(सं०वि०) अपवित्र, अशुद्ध; (हि० वि०) पुत्रहीन; (हि० पुं०) अयोग्य पुत्र, कपूत।
अपूप–(सं० पुं०) गेहूँ या चावल के आटे की लिट्टी।
अपूर्ण–(सं० वि०) असमाप्त, अधूरा, न्यून, कम। अपूर्ण काल–जो उचित समय में समाप्त न हो, अधूरा।
अपूर्णभूत–(सं० पुं०) व्याकरण में क्रिया का वह भूतकाल जिसमें क्रिया की समाप्ति नहीं दिखलाई जाती।
अपूर्व–(सं० वि०) विचित्र, निराला, उत्तम, श्रेष्ठ।
अपृष्ट–(सं० वि०) बिना पूछा हुआ।
अपेक्षा–(सं० स्त्री०) आकांक्षा, इच्छा, किसी पद का दूसरे पद से अन्वय।
अपेच्छा–(हि० स्त्री०) अपेक्षा, आकांक्षा।
अपेय–(सं० वि०) पीने के अयोग्य।
अपेठ–(हि० वि०) पहुँच के बाहर, जहाँ पहुँच न सके।
अप्रकट, अप्रकटित–(सं० वि०) अप्रकाशित, गुप्त।
अप्रकृत–(सं० वि०) अस्वाभाविक, कृत्रिम।
अप्रचलित–(सं० वि०) जो व्यवहार में न आवे, अप्रयुक्त।

अप्रच्छन्न–(सं०वि०) न छिपा हुआ,स्पष्ट।
अपेच्छा–(हिं० स्त्री०) अपेक्षा, आकांक्षा।
अप्रतियोगी–(सं०वि०) अनुपम, अनोखा, जिसका कोई शत्रु न हो।
अप्रतिरूप–(सं० वि०) जिसकी आकृति का और कोई न मिले।
अप्रतिष्ठ–(सं०वि०) निष्फल, गौरवहीन।
अप्रतिष्ठा–(सं० स्त्री०) अनादर, अपयश। **अप्रतिष्ठित**–(सं० वि०) अपमानित।
अप्रत्यक्ष–(सं० अव्य०) अदृश्य, अज्ञात, परोक्ष, गुप्त।
अप्रधान–(सं० वि०) गौण, सामान्य।
अप्रमत्त–(सं० वि०) सावधान।
अप्रमाण–(सं० पु०) बिना प्रमाण का तथा असम्भव कथन।
अप्रयुक्त–(सं० वि०) व्यवहार में न लाया हुआ, अनियुक्त।
अप्रवर्तक–(सं०व्रि०) काम में न लगनेवाला।
अप्रवीण–(सं० वि०) अज्ञान, मूर्ख।
अप्रवृत्त–(सं० वि०) काम में न लगा हुआ।
अप्रसिद्ध–(सं०वि०) जो प्रसिद्ध न हो, अज्ञात।
अप्राकृत–(सं० वि०) अस्वाभाविक, असाधारण।
अप्राचीन–(सं० वि०) जो पुराना न हो, नया, नवीन।
अप्राज्ञ–(सं० वि०) अशिक्षित, जो पढ़ा-लिखा न हो।
अप्राण–(सं० वि०) प्राणहीन, मृत; **अप्राणी**–(सं० वि०) जिसमें प्राण न हो, निर्जीव।
अप्राप्त–(सं० वि०) अनुपस्थित, अलब्ध, परोक्ष।
अप्रामाणिक–(सं० वि०) प्रमाण-रहित, विश्वास न करने योग्य।
अप्रिय–(सं० वि०) अनभीष्ट, अरुचिकर, अच्छा न लगनेवाला।
अप्सरा–(सं० स्त्री०) स्वर्ग की वेश्या, परी, विद्याधरी, अलौकिक सुन्दरता की स्त्री।
अफरना–(हिं० क्रि०) खूब पेट भरकर खाना, पेट फूलना, ऊब जाना।
अफल–(सं० वि०) निष्फल, व्यर्थ, शक्तिहीन।
अब–(हिं० क्रि० वि०) इस समय, अभी, इस घड़ी।
अबटन–(हिं० पुं०) देखो उबटन।
अबद्ध–(सं० वि०) न बँधा हुआ।
अबर, अब्बर–(हिं० वि०) निर्बल।
अबरक(ख)–(हिं० पुं०) एक धातु जिसमें तहें होती हैं।
अबरन–(हिं० वि०) न वर्णन करने योग्य।
अबल–(सं० वि०) दुर्बल।
अबलग–(हिं० क्रि० वि०) इस समय तक।
अबला–(सं० स्त्री०) स्त्री।
अबाधा–(सं० स्त्री०) रेखागणित में त्रिकोण के आधार का अंश; (हिं० वि०) बाधारहित।
अबाध्य–(सं०वि०) अनिवार्य, जो रोका न जा सके।
अबार–(हिं० स्त्री०) विलम्ब, देर।
अबाल–(सं० वि०) जो बालक न हो, तरुण।
अबालेन्दु–(सं० पुं०) पूर्ण चन्द्र, पूरा चन्द्रमा।
अबिरल–(हिं० वि०) देखो अविरल।
अबुद्धि–(सं० स्त्री०) ज्ञान का अभाव; (वि०) बुद्धिहीन।

अबुध–(सं० पुं०) मूर्ख, गँवार।
अबूझ–(हिं० वि०) अबोध।
अबे–(हिं० अव्य०) ओ, अरे, क्यों रे।
अबेध–(हिं० वि०) अविद्ध, न छदा हुआ।
अबेर–(सं० स्त्री०) विलम्ब, देर।
अबोध–(सं० वि०) अज्ञान, मूर्ख; (पुं०) मूर्खता।
अबोल–(हिं०वि०) मौन, अवाक्, चुप।
अब्ज–(सं० पुं०) जल में उत्पन्न वस्तु, पद्म, कमल; (पुं०) शंख, कपूर, चन्द्रमा।
अब्द–(सं० पुं०) मेघ, बादल, आकाश, वर्ष।
अब्धि–(सं० पुं०) सरोवर, तालाब, समुद्र।
अब्रह्मण्य–(सं० पुं०) ब्राह्मण विरुद्ध, जो कार्य ब्राह्मण के करने योग्य न हो।
अभक्त–(सं० वि०) श्रद्धाहीन, विभाग-रहित, समूचा। अभक्ति (सं० स्त्री०) भक्ति का अभाव, अविश्वास।
अभगत–(हिं०वि०) अभक्त, श्रद्धाहीन।
अभय–(सं० पुं०) शांति, रक्षा; (वि०) भयशून्य, निर्भय।
अभर–(हिं० वि०) न उठाने योग्य, न ले चलने योग्य।
अभरन–(हिं० पुं०) आभरण; (वि०) तिरस्कृत, अपमानित।
अभरम–(हिं० वि०) भ्रमरहित, शंका-शून्य, भ्रम न करनेवाला, निडर।
अभव्य–(सं० पुं०) अमंगल, दुर्भाग्य; (वि०) अद्‌भुत, अशुभ, असभ्य, नीच।
अभाऊ–(हिं० वि०) न भानेवाला, जो सुहावना न हो।
अभाग–(सं० पुं०) अंश का अभाव, भाग-रहित, समूचा; (हिं० पुं०) अभाग्य। अभागा–(हिं० वि०) जिसका भाग्य बुरा हो। अभागी–(हिं० वि० स्त्री०) भाग्यहीन।
अभाग्य–(सं० पुं०) मन्दभाग्य।
अभाव–(सं० पुं०) सत्ता की शून्यता, अनवस्था, विरोध, दुर्भाव।
अभि–(सं० अव्य०) यह शब्द उपसर्ग की तरह नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होता है "और भीतर, वास्ते, लिये, से, पर, पास, सामने, समीप, अच्छी तरह"।
अभिजित–(सं०वि०) सामने होकर शत्रु को जीतनेवाला।
अभिज्ञ–(सं० वि०) निपुण, कुशल, बुद्धिमान्।
अभितोमुख–(सं० वि०) जिसका मुख चारों ओर रहे।
अभिद्रोह–(सं० पुं०) अपकार, अत्याचार।
अभिधा–(सं० स्त्री०) कथन, नाम।
अभिधान–(सं० पुं०) कथन, बातचीत, नाम, शब्दार्थ-प्रकाशक ग्रन्थ।
अभिधावक–(सं०वि०) आक्रमण करने-वाला।
अभिधावन–(सं०पुं०) आक्रमण, आखेट।
अभिधय–(सं० वि०) वाच्य, जिसके विषय में संकेत किया गया हो।
अभिनत–(सं० वि०) झुका हुआ।
अभिनन्दन–(सं० पुं०) आनन्द, संतोष, संतुष्ट करने के लिये प्रशंसा।
अभिनन्दनपत्र–किसी महान् व्यक्ति के आगमन पर सन्तोष तथा आनन्द प्रकट करने के निमित्त अर्पण किया हुआ मानपत्र।
अभिनय–(सं० पुं०) मन के भावों को प्रकाशित करनेवाली अंगों की चेष्टा, बनावटी हावभाव से किसी विषय का बनावटी यथार्थ अनुकरण करके दिखाना, स्वाँग, नाटक का खेल।

अभिनव–(सं० वि०) नवीन, नया, अनुभवहीन । **अभिनव यौवन**–नई जवानी ।
अभिनिविष्ट–(सं० वि०) गड़ा हुआ, चित्त लगाये हुए, चिन्ता से व्याकुल।
अभिनिवेश–(सं० पुं०) मनोयोग, दृढ़ संकल्प, तत्परता, मृत्यु ।
अभिनीत–(सं० वि०) समीप लाया हुआ, अलंकृत, उचित ।
अभिनेता–(सं० पुं०) अभिनय करनेवाला पुरुष । **अभिनेत्री**–(सं० स्त्री०) अभिनय दिखलानेवाली स्त्री ।
अभिन्न–(सं० वि०) अपृथक्, जो भिन्न न हो, सम्बद्ध, मिला हुआ, गणित में पूर्णांक ।
अभिप्राय–(सं० पुं०) आशय, तात्पर्य, अर्थ ।
अभिप्रेत–(सं० वि०) अभिलषित, इच्छा करने योग्य ।
अभिभव–(सं० पुं०) पराजय, अनादर, तिरस्कार ।
अभिभाषण–(सं०पुं०) सम्मुख बोलना ।
अभिभाषित–(सं० वि०) निवेदित, कहा हुआ ।
अभिमत–(सं० वि०) सम्मत, अभीष्ट, अभिलाषा, सम्मति ।
अभिमान–(सं० पुं०) अहंकार, गर्व ।
अभिमानी–(सं० वि०) गर्वयुक्त, अहंकारी ।
अभिमुख–(सं० क्रि० वि०) समक्ष, सम्मुख, सामने ।
अभियुक्त–(सं० वि०) आक्रमण किया हुआ, जिस पर अभियोग चलाया गया हो, प्रतिवादी । **अभियोक्ता, अभियोगकर्ता**–(सं० पुं०) वादी ।
अभियोग–(सं० पुं०) किसी के किये हुए अपकार के निवारण के लिये न्यायालय में प्रार्थना, दोषारोपण । **अभियोगी**–(सं०पुं०) अभियोगकर्ता, आक्रमण करनेवाला, आग्रही ।
अभिराम–(सं०वि०) सुन्दर, प्रिय, प्रसन्न करनेवाला ।
अभिरुचि, अभिरुची–(सं०स्त्री०) अत्यन्त रुचि ।
अभिलषित–(सं०वि०) इच्छित, वांछित ।
अभिलाख–(हिं० स्त्री०) अभिलाषा, वांछा । **अभिलाखा (षा)**–(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा ।
अभिलाषा–(सं० पुं०) इच्छा, मनोकामना, लोभ ।
अभिवन्दन–(सं०पुं०) प्रणाम, नमस्कार ।
अभिवन्दना–(सं० स्त्री०) अभिनन्दन ।
अभिवांछित–(सं० वि०) अभिलाषा किया हुआ ।
अभिवाद–(सं०पुं०) प्रणाम, नमस्कार ।
अभिवादक–प्रणाम करनेवाला ।
अभिव्यक्त–(सं० वि०) प्रकाशित, बतलाया हुआ । **अभिव्यक्ति**–(सं० स्त्री०) प्रकाशन, घोषणा ।
अभिशंका–(सं०स्त्री०) भ्रम, संशय ।
अभिशप्त–(सं० वि०) शाप दिया हुआ, निन्दित, अभियोग लगाया हुआ ।
अभिशाप–(सं० पुं०) मिथ्यापवाद, झूठा दोष ।
अभिषङ्ग–(सं० पुं०) शपथ, अभिशाप, पराजय, आसक्ति, आलिङ्गन ।
अभिषिक्त–(सं० वि०) अभिषेक किया हुआ ।
अभिषेक–(सं०पुं०) विधिपूर्वक सिंचन, मन्त्र से मार्जन ।
अभिष्यन्दी, अभिष्यन्द–(सं० पुं०) अति वृद्धि, बहाव ।

अभिसंधि–(सं०स्त्री०) वंचना, षड्यन्त्र।
अभिसन्धान–(सं०पुं०) अन्तिम आशय।
अभिसन्धि–(सं०पुं०) देखो अभिसन्धान।
अभिसर–(हिं० पुं०) अनुचर, भृत्य।
अभिसरण–(सं० पुं०) सन्मुख गमन।
अभिसरना–(हिं० क्रि०) गमन करना, जाना, निर्दिष्ट स्थान में पहुँचना।
अभिसार–(हिं० पुं०) युद्ध, आक्रमण, बल, सहाय।
अभिहत–(हिं० वि०) मारा पीटा हुआ, गणित में गुणन किया हुआ।
अभिहित–(हिं०वि०) भाषित, कहा हुआ।
अभी–(हिं०क्रि०वि०) इसी समय, तुरत।
अभीक–(हिं० वि०) निर्भीक, निडर।
अभीत–(हिं०वि०) निर्भर, भय-रहित।
अभीप्सित–(हिं० वि०) वांछित, इच्छा किया हुआ।
अभीर–(हिं० पुं०) ग्वाला, अहीर।
अभीरु–(हिं० वि०) निर्भय, निडर।
अभीष्ट–(हिं० वि०) वांछित, ईप्सित; (पुं०) मनोरथ।
अभुवाना–(हिं०क्रि०) अधीर होना, हाथ-पैर पटकना और सिर को धुनना।
अभुक्त–(हिं० वि०) अभक्षित, व्यवहार में न लाया हुआ।
अभूखन–(हिं० पुं०) आभूषण।
अभूत–(सं०वि०) अविद्यमान, विलक्षण, अपूर्व, वर्तमान, प्राणहीन।
अभूतपूर्व–(हिं० वि०) पहिले न होने-वाला, जो पहिले न हुआ हो।
अभेद्य–(सं०वि०) जो तोड़ा या छेदा न जा सके, जिसका विभाग न हो सके।
अभेरना–(हिं०क्रि०) भिड़ाना, मिलाना।
अभेरा–(हिं०पुं०) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई, मुठभेड़।
अभेव–(हिं० पुं०) अभेद।
अभोग्य–(सं० वि०) न भोगने योग्य।
अभौतिक–(सं०वि०) पंचभूत से सम्बन्ध न रखनेवाला।
अभ्यंग–(सं० पुं०) शरीर में तेल का मर्दन, लीपना-पोतना।
अभ्यंजन–(सं० पुं०) तेल का मर्दन, आँखों में सुरमा या काजल लगाना, आभूषण।
अभ्यन्तर–(सं० पुं०) बीच का स्थान, अन्तःकरण, हृदय; (वि०) भीतरी, मध्य का।
अभ्यर्थना–(सं० स्त्री०) सन्मुख प्रार्थना, अगवानी।
अभ्यसन–(सं०पुं०) अभ्यास, व्यायाम।
अभ्यसनीय–(सं० वि०) अभ्यास करने योग्य।
अभ्यसित, अभ्यस्त–(सं०वि०) अभ्यास किया हुआ, निपुण, शिक्षित।
अभ्यागत–(सं० वि०) सन्मुख आया हुआ; (पुं०) अतिथि, पाहुन।
अभ्याश–(सं० पुं०) निकट, पड़ोस।
अभ्यास–(सं० पुं०) पुनरावृत्ति, साधन, अनुशीलन, स्वभाव, आवृत्ति।
अभ्युत्थान–(सं०पुं०) किसी का आदर करने के लिये उठकर खड़े हो जाना, उठना, उद्भव, उच्च पद की प्राप्ति।
अभ्युदय–(सं० पुं०) मनोरथ की सिद्धि, उन्नति, बढ़ती, आनन्द, शुभ फल, आरम्भ, दैवगति, शुभ अवसर।
अभ्र–(सं० पुं०) अभ्रक धातु, बादल, आकाश।
अभ्रक–अबरख धातु।
अभ्रम–(सं० पुं०) सन्देह या भ्रम का न होना।

अमङ्गल–(सं०वि०) अशुभ, अकुशल; (पुं०) अकल्याण।
अमन्द–(सं० वि०) तीव्र, उद्योगी, श्रेष्ठ, उत्तम।
अमका–(हिं० पुं०) अमुक, ऐसा।
अमचूर–(हिं० पुं०) सूखे आम की बुकनी।
अमड़ा–(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसमें बेर के बराबर फल लगते हैं जो खट्टे होते हैं।
अमनिया–(हिं० वि०) शुद्ध, स्वच्छ, अछूता।
अमनोगत–(सं० वि०) ध्यान में लाया हुआ।
अमनोज्ञ–(सं० वि०) चित्त को न प्रसन्न करनेवाला।
अमन्द–(सं०वि०) तीव्र, उत्तम, अधिक।
अमर–(सं०वि०) न मरनेवाला, चिरस्थायी; (पुं०) देवता।
अमरख–(हिं०पुं०) क्रोध, रोष, अमर्ष।
अमरपख–(हिं० पुं०) पितृपक्ष।
अमरपद–(सं०पुं०) स्वर्ग, मोक्ष, मुक्ति।
अमरबेल–(हिं०स्त्री०) एक लता जो वृक्ष पर फैलती है।
अमरलोक–(सं०पुं०) देवलोक, स्वर्ग।
अमरवल्ली–(सं० स्त्री०) अमरबेल, आकाश-बँवर।
अमरस–(हिं० पुं०) अमावट।
अमरसरित–(सं०स्त्री०) जाह्नवी, गङ्गा।
अमरांगना–(सं० स्त्री०) इन्द्रपुरी की अप्सरा।
अमरी–(हिं०स्त्री०) देवपत्नी, देवता की स्त्री।
अमरूत, अमरूद–(हिं० पुं०) एक वृक्ष जिसका गोल गोल फल मीठा होता है।
अमर्ष–(सं०पुं०) क्रोध, रोष, सहनशीलता, साहस।
अमल–(सं०वि०) निर्मल, स्वच्छ, दोषरहित।
अमलपट्टा–(हिं०पुं०) वह अधिकारपत्र जो किसी कार्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाता है।
अमलबत–(हिं० पुं०) चूक, पालक।
अमलिन–(सं०वि०) निष्कलंक, निर्मल, स्वच्छ।
अमली–(हिं० स्त्री०) इमली।
अमहर–(हिं०पुं०) छीले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
अमांस–(सं० वि०) मांसहीन, दुर्बल।
अमातना–(हिं० क्रि०) निमन्त्रण देना, बुला भेजना।
अमात्य–(सं० पुं०) मन्त्री, सचिव।
अमाननीय–(सं० वि०) जो माननीय न हो।
अमाना–(हिं० क्रि०) पूरी तरह से भरा जाना, समाना, अटाना।
अमानी–(हिं० वि०) अभिमान-रहित, बिना गर्व का।
अमारग–(हिं० पुं०) देखो अमार्ग।
अमार्ग–(सं० पुं०) मार्ग का अभाव, कुमार्ग; (वि०) मार्ग-रहित।
अमार्जित–(सं०वि०) स्वच्छ न किया हुआ।
अमावट–(हिं०स्त्री०) आम का सूखा हुआ रस जो अनेक तहों में जमाया रहता है, अमरस।
अमावस–(हिं० स्त्री०) अमावस्या।
अमावस्या, अमावास्या–(सं० स्त्री०) किसी महीने की कृष्णपक्ष की पंद्रहवीं तिथि।
अमिट–(हिं० वि०) न मिटनेवाला, अटल।
अमित–(सं०वि०) असीम, अपरिमित।

अमित्र–(सं॰ पुं॰) वैरी, शत्रु; (वि॰) जिसका कोई शत्रु न हो ।
अमिय–(हिं॰पुं॰) अमृत । अमियमूरि–(हिं॰ स्त्री॰) संजीवनी बूटी ।
अमिरती–(हिं॰स्त्री॰) देखो इमरती ।
अमिली–(हिं॰ स्त्री॰) देखो इमली ।
अमिश्र राशि–(सं॰ पुं॰) गणित में एक से नव तक की संख्या ।
अमिश्रित–(सं॰ वि॰) बिना मिलावट का ।
अमिष–(सं॰ पुं॰) संसारी सुख, अकपट, सत्य; (वि॰) निश्छल ।
अमी–(हिं॰ पुं॰) अमृत । अमीकर-(हिं॰पुं॰) अमृत बरसानेवाला चन्द्रमा
अमीत–(हिं॰पुं॰) जो मित्र न हो, शत्रु ।
अमुक–(सं॰वि॰) जब किसी व्यक्ति या पदार्थ का नाम नहीं लिया जाता तब उसके स्थान में 'अमुक' शब्द का प्रयोग होता है, कोई ।
अमुक्त–(सं॰वि॰) सम्बद्ध, बँधा हुआ ।
अमूढ़–(सं॰ वि॰) बुद्धिमान् ।
अमूर्त–(सं॰वि॰) आकार-रहित; (पुं॰) परमेश्वर, आत्मा, आकाश, काल, वायु, दिशा । अमूर्ति-(सं॰ वि॰) मूर्त्ति-रहित, निराकार ।
अमूल–(सं॰ वि॰) मूल-रहित, बिना जड़ का ।
अमूल्य–(सं॰वि॰) मूल्य-रहित, बहुमूल्य, अनमोल ।
अमृत–(सं॰ वि॰) मरणशून्य, जो मरता न हो, प्रिय; (पुं॰) इन्द्र, जल, सुवर्ण, घी, दूध, अन्न, अति स्वादिष्ठ पदार्थ, रोगनाशक औषधि ।
अमृताशन–(सं॰ पुं॰) देवता ।
अमृषा–(सं॰अव्य॰) सचमुच, वस्तुतः ।
अमृष्य–(सं॰वि॰) न सहन करने योग्य ।
अमेघ–(सं॰ वि॰) मेघ-रहित ।
अमेजना–(हिं॰ क्रि॰) मिलावट होना, मिला देना ।
अमेठना–(हिं॰ क्रि॰) देखो उमेठना
अमेध्य–(हिं॰वि॰) अपवित्र, अशुद्ध ।
अमोघ–(सं॰वि॰) अव्यर्थ, सफल ।
अमोद–(हिं॰) देखो आमोद ।
अमोल–(हिं॰ वि॰) देखो अमूल्य ।
अमोला–(हिं॰पुं॰) आम का भूमि से निकला हुआ नया पौधा ।
अमोही–(हिं॰ वि॰) कठोरहृदय, दयाहीन ।
अमौलिक–(सं॰ वि॰) निर्मूल, मिथ्या, झूठा ।
अम्बर–(सं॰ पुं॰) आकाश, वस्त्र, अभ्रक ।
अम्बा, अम्बालिका–(सं॰स्त्री॰) माता, मा ।
अम्बु–(सं॰ पुं॰) जल, पानी ।
अम्बुवाह–(सं॰ पुं॰) पानी भरनेवाला ।
अम्बुद–(सं॰ पुं॰) मेघ, बादल ।
अम्बुधर–(सं॰ पुं॰) बादल, मेघ ।
अम्बुधि, अम्बुनिधि–(सं॰ पुं॰) समुद्र ।
अम्भ–(सं॰पुं॰) जल, पानी, आकाश ।
अम्भोज–(सं॰पुं॰) पद्म, कमल, चन्द्रमा ।
अम्भोद–(सं॰ पुं॰) बादल, मेघ ।
अम्भोधर–(सं॰ पुं॰) मेघ, बादल, समुद्र ।
अम्मा–(हिं॰स्त्री॰) माँ, माता, महतारी ।
अम्मारी–(हिं॰) देखो अम्बारी ।
अम्ल–(सं॰वि॰) खट्टा; (पुं॰) खटाई ।
अम्लाक्त–(सं॰वि॰) खट्टा किया हुआ ।
अम्लान–(सं॰ वि॰) जो कुम्हलाया न हो, प्रफुल्ल ।
अम्हौरी–(हिं॰ स्त्री॰) छोटी छोटी फुन्सियाँ जो ग्रीष्म ऋतु में शरीर पर सर्वत्र होती हैं, घमौरी ।
अय–(सं॰ पुं॰) पासा, लोहा ।

अय–(सं० सर्व०) यह, इसका ।
अयन–(सं० पुं०) गमन, गति, सूर्य तथा चन्द्रमा का दक्षिण से उत्तर तथा उत्तर से दक्षिण की ओर गमन ।
अयश–(सं० पुं०), अपयश, अपवाद, अकीर्ति ।
अयशस्कर–(सं० वि०) अपवादजनक ।
अयशस्वी, अयशी–(सं० वि०) अपवादित, दुर्नाम ।
अयस्काण्ड–(सं० पुं०) लोहे का तीर ।
अयस्कान्त–(सं० पुं०) चुम्बक लोहा ।
अयाचक–(सं० वि०) न माँगनेवाला ।
अयाची–(सं० वि०) न माँगनेवाला, सन्तुष्ट ।
अयान–(सं० पुं०) प्रकृति, स्वभाव ।
अयि–(सं० अव्य०) क्यों ! अरे ! यह शब्द संबोधन में प्रयुक्त होता है ।
अयुक्त–(सं०वि०) अनुचित, अयोग्य ।
अयुग्म–(सं० पुं०) विषम, तारू; (वि०) जो पूरा न हो ।
अयुत–(सं०वि०) असम्बद्ध, मिला हुआ; (पुं०) दस हजार की संख्या ।
अयोगू–(सं०वि०) लोहे का काम करनेवाला, लोहार ।
अयोग्य–(सं० वि०) जो योग्य न हो, अनुचित, अनुपयुक्त, निष्प्रयोजन ।
अयोजन–(सं० पुं०) वियोग ।
अरंड–(हिं०पुं०) एरंड, रेंड़, रेंड़ी ।
अरम्भ–(हिं० पुं०) आरम्भ, कोलाहल ।
अर–(हिं० पुं०) हठ, जिद ।
अरइल–(हिं० वि०) ठिठकनेवाला ।
अरकना–(हिं० क्रि०) टक्कर खाना ।
अरकला–(हिं० पुं०) अर्गला, रोक, सिकड़ी ।
अरकासार–(हिं०पुं०) तालाब, सरोवर ।
अरगट–(हिं० वि०) पृथक्, भिन्न, अलग ।
अरगनी–(हिं० स्त्री०) वस्त्र इत्यादि टाँगने की रस्सी या लकड़ी ।
अरगल–(हिं० पुं०) देखो अर्गल ।
अरघ–(हिं० पुं०) देखो अर्घ ।
अरघट्ट–(सं० पुं०) पानी खींचने का यन्त्र, रहट ।
अरघा–(हिं० पुं०) अर्घ देने का पात्र ।
अरचन–(हिं० पुं०) देखो अर्चन ।
अरचना–(हिं० क्रि०) पूजा करना ।
अरचल–(हिं०स्त्री०) अड़चन, झमेला ।
अरचा–(हिं० स्त्री०) पूजा ।
अरझना–(हिं०क्रि०) लिपटना, फँसना ।
अरण्य–(सं० पुं०) वन, जंगल ।
अरण्यरोदन–(सं० पुं०) निरर्थक रुलाई, निष्फल बात ।
अरत–(सं० वि०) मन्द, धीमा ।
अरति–(सं० स्त्री०) चिन्ता, अनिच्छा ।
अरतिस, अरतीस–(हिं० वि०) अड़तीस, ३८ की संख्या ।
अरथ–(सं० वि०) रथरहित, बिना रथ का; (हिं०) अर्थ, अभिप्राय ।
अरथाना–(हिं० क्रि०) अर्थ लगाना, व्याख्या करना ।
अरथी–(हिं० स्त्री०) शव ले जाने की टिकठी ।
अरद–(सं० वि०) दन्तहीन, पोपला ।
अरदना–(हिं० क्रि०) पैर से कुचलना, रौंदना ।
अरदास–(हिं०स्त्री०) प्रार्थनापत्र, निवेदन ।
अरध–(हिं०) देखो अर्ध ।
अरधंग–(हिं० पुं०) देखो अर्धाङ्ग ।
अरन–(हिं० पुं०) देखो अरण्य ।
अरपन–(हिं० पुं०) देखो अर्पण ।
अरपना–(हिं० क्रि०) अर्पण करना ।
अरब–(हिं० वि०) अर्बुद, सौ करोड़ की संख्या ।

अरभक–(हिं० पुं०) देखो अर्भक।
अरमणीयता–(सं० स्त्री०) अप्रियता।
अरर–(हिं०अव्य०)आश्चर्यसूचक शब्द।
अरराना–(हिं०क्रि०) शब्द के साथ गिर पड़ना, एकाएक गिर जाना, भहराना।
अरवा–(हिं० पुं०)बिना उबाले धान से निकाला हुआ चावल।
अरविन्द–(सं० पुं०) पद्म, कमल।
अरवी–(हिं० स्त्री०) एक कन्द विशेष जिसकी तरकारी बनाकर खाई जाती है।
अरस–(सं० वि०) बिना स्वाद का, नीरस।
अरसठ–(हिं०) देखो अड़सठ।
अरसाना–(हिं० क्रि०) अलसाना, नींद लगना।
अरसीला–(हिं० वि०) आलस्य से भरा हुआ।
अरहट–(हिं० पुं०) देखो रहट।
अरहन–(हिं० पुं०) बेसन या आटा जो तरकारी इत्यादि में डाला जाता है।
अरहर–(हिं० स्त्री०) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल खाई जाती है।
अराजक–(सं० वि०) बिना राजा का, राजशून्य। अराजकता–(सं० स्त्री०) शासन का अभाव, विप्लव, अशान्ति।
अराधन–(हिं०) देखो आराधन।
अरि–(सं० पुं०) शत्रु, वैरी। अरिघ्न–शत्रु को नाश करनेवाला।
अरिमर्दन–(सं० वि०) शत्रु को दमन करनेवाला।
अरियाना–(हिं० क्रि०) अरे, तू-तू कहकर बोलना।
अरिष्ट–(सं० पुं०) अशुभ चिह्न, विपत्ति; (वि०) अशुभ, अविनाशी।
अरिहा–(सं० वि०) शत्रु का नाश करनेवाला।

अरी–(हिं० अव्य०) स्त्रिय। के लिये सम्बोधन का शब्द।
अरीत–(हिं० स्त्री०)कुरीति, बुरीचाल।
अरु–(हिं० अव्य०) और।
अरुई–(हिं० स्त्री०) देखो अरवी।
अरुचि–(सं० स्त्री०)भोजन की अनिच्छा, घृणा।
अरुज–(सं० वि०) रोगशून्य, स्वस्थ।
अरुझना–(हिं०क्रि०)उलझना, झगड़ना।
अरुण–(सं० पुं०) लाल रंग, प्रातःकाल, तड़का।
अरुणशिखा–(सं० पुं०) कुक्कुट, मुर्गा।
अरुणिमा–(सं०स्त्री०) लाली, रक्तता।
अरुणोदय–(सं० पुं०) सूर्योदय से चार दण्ड पहिले का समय, तड़का।
अरुन–(हिं०) देखो अरुण। अरुनचूड़–(हिं० पुं०) कुक्कुट।
अरुनाई–(हिं०स्त्री०)अरुणाई, लालिमा।
अरुनोदय–(हिं० पुं०) देखो अरुणोदय।
अरुन्तुद–(सं० वि०) दुःखकर, मर्मवेधी।
अरूढ़–(हिं० वि०) देखो आरूढ़।
अरूझना–(हिं० क्रि०) झगड़ना।
अरूपक–(सं० वि०) अलंकाररहित।
अरे–(सं० अव्य०) ए! ओ! देख! आश्चर्य-सूचक अव्यय, नीच व्यक्ति के लिये संबोधन होता है।
अरेरना–(हिं०क्रि०) रगड़ना, घिसना।
अरेरे–(सं०अव्य०)आश्चर्यसूचक अव्यय।
अरोचक–(सं० वि०) अरुचिकर।
अरोहना–(हिं० क्रि०) चढ़ना।
अरोही–(हिं० पुं०) सवार।
अर्क–(सं० पुं०) सूर्य, क्वाथ, काढ़ा, रविवार; (हिं०) अरक, रस।
अर्गल–(सं० पुं०) किवाड़ के पीछे लगाने का डंडा, अगरी, ब्योंड़ा।
अर्गला–(सं० स्त्री०) किवाड़ बन्द करके

इसके पीछे अड़ाने की लकड़ी, ब्योंड़ा, अगरी।
अर्घ–(सं० पुं०) जलदान, भेंट, हाथ धोने के लिये जल देना।
अर्घा–(हिं० पुं०) अर्घ देने का पात्र, जलधरी।
अर्घ्य–(सं० वि०) पूजनीय, मूल्यवान्, उपहार देने योग्य; (पुं०) पूजा करने के लिये उपकरण।
अर्चक–(सं०वि०) पूजक, पूजा करनेवाला
अर्चन–(सं० पुं०) पूजन, पूजा, सत्कार।
अर्चि–(सं०स्त्री०) अग्नि की लपट, चमक
अर्चित–(सं०वि०) पूजित, आदर किया हुआ।
अर्जन–(सं० पुं०) उपार्जन, धरोहर।
अर्थ–(सं०पुं०) अभिप्राय, प्रयोजन, धन, निमित्त, फल, अभिलाषा, वस्तु। अर्थदण्ड–(सं० पुं०) वह धन जो अपराधी से दण्ड के रूप में लिया जावे।
अर्थना–(सं० स्त्री०) भिक्षा, भीख।
अर्थपति–(सं० पुं०) अधीश्वर, कुबेर।
अर्थपिशाच–(सं०पुं०) बहुत बड़ा कृपण।
अर्थभावना–धन की चिन्ता। अर्थमन्त्री–(सं०पुं०) देखो अर्थसचिव। अर्थलोभ–(सं० पुं०) धन की अभिलाषा।
अर्थशास्त्र–(सं० पुं०) अर्थनीति-विषयक शास्त्र। अर्थसचिव–(सं० पुं०) राज्य के आर्थिक विषयों की देखभाल करनेवाला मन्त्री।
अर्थात्–(सं० अव्य०) यह आशय है, वस्तुतः।
अर्थाना–(हिं० क्रि०) अर्थ लगाना, समझाना।
अर्थानुवाद–(सं०पुं०) अर्थ का अनुवाद।
अर्थान्तर–(सं० पुं०) दूसरा अर्थ या आशय। अर्थान्तरन्यास–(सं० पुं०) वह अलंकार जिसमें एक प्रकार के अर्थ द्वारा अन्य प्रकार के अर्थ का समर्थन करने का प्रयत्न होता है।
अर्थापत्ति–(सं० स्त्री०) वह अलंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात सिद्ध की जाती है।
अर्थालंकार–(सं० पुं०) वह अलंकार जिसमें अर्थ का गौरव दिखलाया जाता है।
अर्थी–(सं०वि०) याचक, माँगनेवाला।
अर्ध–(सं० वि०) दो समान टुकड़ों में से एक "आधा", अर्ध का उपसर्ग।
अर्धमागधी–(सं० स्त्री०) प्राकृत भाषा जो प्राचीन समय में मथुरा और पटना के बीच में बोली जाती थी। अर्धव्यास–(सं० पुं०) वृत्त की त्रिज्या।
अर्धसमवृत्ति–(सं० वि०) सोरठा।
अर्धांश–(सं० पुं०) अर्धभाग। अर्धाकार–(सं० पुं०) 'अ' अक्षर का आधा भाग (ऽ)
अर्धाङ्गिनी–(सं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
अर्धार्ध–(सं० पुं०) चौथाई भाग।
अर्पण–(सं० पुं०) दान, भेंट, स्थापन, त्याग।
अर्पित–(सं०वि०) दिया हुआ, स्थापित।
अर्बुद–(सं०पुं०) दस करोड़ की संख्या।
अर्भक–(सं० पुं०) बालक, बच्चा।
अर्वाचीन–(सं० वि०) आधुनिक, नूतन, नया।
अर्श–(सं० वि०) अश्लील; (पुं०) बवासीर रोग।
अर्ह–(वि०) योग्य, पूजनीय, मूल्यवान्।
अर्हण–(सं० पुं०) पूजा।
अर्हंत–(सं० वि०) पूजनीय, प्रसिद्ध, जिनदेव, जैनियों के देवता।
अर्हा–(सं० वि०) पूजा।

अलंग–(हिं०पुं०) पार्श्व, ओर, बगल में।
अलक–(सं० पुं०) मस्तक के लटकते हुए बाल, लट।
अलक्षता–(हिं० स्त्री०) उद्देश्यहीनता।
अलक्षित–(सं० वि०) अप्रकट, अदृश्य।
अलख–(हिं० वि०) अलक्ष्य, अदृश्य, अगोचर।
अलखित–(हिं० वि०) देखो अलक्षित।
अलग–(हिं० वि०) पृथक्।
अलगनी–(हिं० स्त्री०) कपड़ा टाँगने की डोरी।
अलगाना–(हिं० क्रि०) पृथक् करना।
अलगाव, अलगावा–(हिं०पुं०) वियोग।
अलंकार–(सं० पुं०) आभरण, भूषण, वाक्य का वह विशेष गुण जो सुनने में अच्छा लगे और हृदय को पुलकित करे।
अलता–(हिं० पुं०) लाल रंग जिसको स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं।
अलप–(हिं० वि०) अल्प, थोड़ा।
अलबेला–(हिं०वि०) अनुपम, अनोखा।
अलभ्य–(सं० वि०) अप्राप्य, दुर्लभ, अमूल्य।
अललाना–(हिं० क्रि०) चिल्लाना।
अलवाँती–(हिं० स्त्री०) जिस स्त्री ने बच्चा जना हो।
अलस–(सं० वि०) दीर्घसूत्री, आलसी।
अलसान–(हिं०स्त्री०)आलस्य,शिथिलता
अलसी–(हिं०स्त्री०) अतसी, तीसी।
अलसेट–(हिं० स्त्री०) विलम्ब, धोखा-धड़ी।
अलहन–(हिं० पुं०) बुरा समय।
अलान–(हिं० पुं०)हाथी बाँधने का खूंटा या सिक्कड़।
अलाप–(हिं०पुं०) देखो आलाप।
अलि–(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा, सखी, सहेली।
अलिजिह्वा, अलिजिह्विका–(सं०स्त्री०) गले के भीतर की घण्टी, कौवा।
अलिन्द–(सं० पुं०) घर के बाहरी द्वार का चबूतरा।
अली–(हि०स्त्री०)सखी,सहेली,पंक्ति,भौंरा
अलीक–(सं० पुं०) मिथ्या, झूठ।
अलुक् समास–(सं० पुं०) व्याकरण में वह समास जिसमें विभक्ति बनी रहती है।
अलूना–(हिं० वि०) बिना नमक मिला हुआ।
अलोकना–(हिं०क्रि०)देखना, ताकना।
अलोना–(हिं० वि०) अलवण, बिना नमक का।
अलौकिक–(सं० वि०) विलक्षण।
अल्प–(सं० वि०) छोटा, कम, थोड़ा। अल्पक्रीत–सस्ता। अल्पजीवी–अल्पायु।
अल्पज्ञ–(सं० वि०) थोड़े ज्ञानवाला।
अल्पतनु–(सं० वि०) वामन, बौना।
अल्पप्राण–(सं०पुं०) व्याकरण में व्यंजन वर्ण के प्रत्येक वर्ग का पहिला, तीसरा तथा पाँचवाँ अक्षर और य, र, ल, व तथा स्वर।
अल्ल–(हिं०पुं०)वंश का नाम, उपगोत्र।
अल्लाना–(हिं० क्रि०) गला फाड़कर चिल्लाना।
अव–(हिं०अव्य०) और; (सं० अव्य०) यह शब्द "अवश्य, तिरस्कार, बराबर तथा मेल" अर्थ में प्रयुक्त होता है।
अवकलन–(सं०पुं०)ज्ञान, समझ, दृष्टि
अवकाश–(सं० पुं०) अवसर, समय।
अवक्रम–(सं०पुं०)निम्नगति,नीचे जाना।
अवगारना–(हिं० क्रि०) जताना, समझाना, बुझाना।
अवगाह–(सं० पुं०) स्नान, अन्तःप्रवेश; (वि०) गहन, अथाह।

अवगाहन–(सं० पुं०) पानी में घुसकर स्नान, प्रवेश।
अवगुण–(सं०पुं०) दोष, अपराध बुराई।
अवघट–(सं० पुं०) पीसने का यन्त्र, जाँता; (वि०) कठिन, विकट।
अवचट–(हिं० पुं०) अंडस, कठिनाई; (क्रि० वि०) अकस्मात्।
अवच्छिन्न–(सं० पुं०) पृथक् किया हुआ, विशिष्ट अर्थ का।
अवच्छेद–(सं० पुं०) अलगाव, व्याप्ति, अन्वेषण, विभाग।
अवज्ञा–(सं० स्त्री०) अनादर, अपमान।
अवटना–(हिं०क्रि०) मथना, किसी द्रव पदार्थ को जलाकर गाढ़ा करना।
अवतंस–(सं०पुं०) किरीट, मुकुट, हार, माला।
अवतरना–(हिं० क्रि०) उपजना, प्रकट होना, जन्म लेना।
अवतार–(सं० पुं०) उतरना, जन्म, देवताओं का मनुष्यादि का शरीर धारण करना।
अवधारण–(सं०पुं०) निरूपण, निश्चय।
अवधारणीय–(सं०वि०) निरूपण करने योग्य।
अवधि–(सं०पुं०) सीमा, निर्धारित काल; (अव्य०) पर्यन्त, तक।
अवधूत–(सं०वि०) कम्पित, हिलाया हुआ।
अवनत–(सं० वि०) नीचा, झुका हुआ, नमस्कार किया हुआ।
अवनति–(सं० स्त्री०) विनय, न्यूनता, घाटा, अधोगति।
अवनि, अवनी–(सं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
अवयव–(सं० पुं०) अंश, भाग, टुकड़ा, शरीर का कोई भाग, वाक्य विशेष।
अवर–(सं०वि०) अधम, नया, पीछे रहनेवाला, दूसरा।
अवरज–(सं० पुं०) छोटा भाई, शूद्र।
अवरूढ़–(सं० वि०) उखाड़ा हुआ।
अवरेखना–(हिं०क्रि०) देखना-भालना, अनुमान करना।
अवरेब–(हिं० पुं०) वक्रचलन, तिरछी चाल, फन्दा।
अवरोध–(सं०पुं०) रोक, रुकावट, झगड़ा, घेरा।
अवरोह–(सं० पुं०) अवतरण, उतार, शाखा का अग्रभाग, वृक्ष के ऊपर चढ़नेवाली बेल।
अवर्ण–(सं०वि०) वर्णरहित, बिना रंग का, कुरूप, वर्णधर्म से रहित।
अवर्त–(सं०पुं०) पानी का भँवर, चक्कर।
अवलम्ब, अवलम्बन–(सं० पुं०) आश्रय, सहारा।
अवली–(हिं०स्त्री०) पंक्ति, समूह, झुण्ड।
अवलेप–(सं० पुं०) उबटन, भूषण, लेप, गर्व।
अवलेह–(सं०पुं०) चाटकर खाई जानेवाली औषधि, चटनी।
अवलोकित–(सं० वि०) देखा हुआ।
अवश–(सं० पुं०) पराधीन, विवश।
अवशिष्ट–(सं०वि०) अतिरिक्त, परिशिष्ट।
अवशेष–(सं० वि०) बचा हुआ, शेष; (पुं०) बची हुई वस्तु।
अवश्य–(सं० वि०) अनधीन, स्वतन्त्र रहनेवाला; (अव्य०) निश्चय, निःसन्देह।
अवस–(हिं० क्रि० वि०) अवश्य।
अवसर–(सं० पुं०) समय, काल।
अवसाद–(सं० पुं०) विषाद, क्षय, नाश, समाप्ति, थकावट।
अवसान–(सं० पुं०) विराम, समाप्ति।
अवसि–(हिं०क्रि०वि०) अवश्य, निश्चय।

अवसेचन–(सं० पुं०) सब दिशाओं में सिंचाई, पसीजना, पसीना निकलना।
अवसेर–(हिं० स्त्री०) विलम्ब, चिन्ता।
अवस्कन्द–(सं० पुं०) सेना के लड़ने का स्थान, शिविर।
अवस्था–(सं०स्त्री०) दशा, स्थिति, आयु, आकार।
अवस्थान–(सं० पुं०) स्थान, स्थिति, ठिकाना।
अवहेलना, अवहेला–(सं० स्त्री०) अनादर, अपमान, तिरस्कार; (हिं०क्रि०) बात न मानना, तिरस्कार करना।
अवाँ–(हिं० पुं०) देखो आवाँ।
अवाई–(हिं०स्त्री०) आगमन।
अवाक्–(सं० वि०) मौन, चुप, चकित।
अवान्तर–(सं० वि०) प्रसङ्ग के बीच का। **अवान्तर देश**–प्रान्त के बीच का प्रदेश।
अवाम–(सं० वि०) दक्षिण, दाहिना।
अवारण–(सं० वि०) बिना निषेध का।
अविकट–(सं० वि०) जो भयंकर न हो, अविस्तृत।
अविकच–(हिं०वि०) बिना खिला हुआ।
अविकल–(सं०वि०) चिन्ताशून्य, निश्चल, शान्त।
अविकल्प–(सं० पुं०) असन्दिग्ध।
अविगत–(सं० वि०) अज्ञात, अनिर्वचनीय, नित्य, जिसका नाश न हो।
अविचार–(सं० पुं०) अज्ञान, अन्याय, अत्याचार।
अविच्छिन्न–(सं०वि०) निरन्तर, सतत।
अविजित–(सं० वि०) अजेय।
अविज्ञ–(सं० वि०) अनिपुण।
अविद्ध–(सं० वि०) न बेधा हुआ, न छेदा हुआ।
अविद्य–(सं०पु०) मूर्ख, लंठ।
अविद्यमान–(सं०पुं०) अनुपस्थित, असत्, मिथ्या।
अविद्या–(सं० पुं०) ज्ञान का अभाव, मिथ्या ज्ञान, मोह।
अविद्वान्–(हिं० पुं०) मूर्ख, अपण्डित।
अविनिर्मोक–(सं० वि०) बिना छूट का।
अविनीत–(सं०वि०) दुष्ट, उद्धत, धृष्ट, ढीठ।
अविपश्चित्–(सं०वि०) अविवेकी, मूर्ख।
अविरति–(सं० स्त्री०) लीनता, विषयासक्ति; (वि०) विरामशून्य।
अविरल–(सं० वि०) सघन, निविड़।
अविवक्षित–(सं०वि०) असंबद्ध विषय का।
अविवर–(सं०वि०) घना, बिना छिद्र का।
अविवेक–(सं० पुं०) अविचार, अज्ञान, मूर्खता, अन्याय। **अविवेकत्व**–अज्ञानता, मूर्खता। **अविवेकी**–(सं० वि०) अज्ञानी, मूर्ख।
अविशेष–(सं० पुं०) भेद का अभाव; (वि०) तुल्य, समान, बराबर।
अविस्तर–(सं० वि०) संकुचित, न फैला हुआ।
अविस्तार–(सं० पुं०) विस्तार का अभाव।
अविस्तृत–(सं०वि०) संलग्न, मिला हुआ।
अविहित–(सं० वि०) निषिद्ध, न किया हुआ।
अविह्वल–(सं०वि०) जो व्याकुल न हो।
अवीक्षित–(सं० वि०) अदृष्ट, न देखा हुआ।
अवेज–(हिं० पुं०) प्रतीकार, बदला।
अवेस–(हिं० पुं०) देखो आवेश।
अवैतनिक–(सं० वि०) बिना वेतन का।
अवैध–(सं० वि०) विधिविहीन, निषिद्ध।
अव्यक्त–(सं० वि०) अज्ञात, अस्पष्ट। **अव्यक्तगणित**–बीजगणित। **अव्यक्तराशि**–बीजगणित में अज्ञात परिमाण।

अव्यय–(सं० पुं०) व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप विभक्तियों और वचनों में समान ही रहता है; (वि०) विकार-शून्य, नित्य, बिना आदि-अन्त का, व्ययहीन, अक्षय।
अव्ययीभाव–(सं० पुं०) व्याकरण में समास का एक भेद।
अव्यर्थ–(सं० पुं०) सार्थक, सफल; (वि०) अवश्य प्रभाव डालनेवाला।
अव्यलीक–(सं०वि०) प्रिय, सत्य, सच्चा।
अव्यवस्था–(सं० स्त्री०) शास्त्रादि के विरुद्ध व्यवस्था, मर्यादा न होना। अव्यवस्थित–(वि०) अस्थिर, चञ्चल।
अव्याज–(सं० पुं०) छल या कपट का अभाव।
अव्युत्पन्न–(सं० वि०) अनुभवशून्य, व्याकरण न जाननेवाला।
अशक्त–(सं० वि०) अयोग्य, असमर्थ।
अशङ्क–(सं० वि०) निर्भय, निडर।
अशठ–(सं०वि०) जो दुष्ट न हो, सज्जन।
अशन–(सं० पुं०) भोजन, आहार।
अशना–(सं० स्त्री०) भोजन की इच्छा।
अशनीय–(सं०वि०) भोजन करने योग्य।
अशिक्षित–(सं०वि०) बिना पढ़ा-लिखा, अनाड़ी, गँवार, मूर्ख।
अशित–(सं० वि०) भक्षित, खाया हुआ।
अशिष्ट–(सं० वि०) अविनीत।
अशुचि–(सं०वि०) अपवित्र, मैला-कुचैला
अशुद्ध–(सं० वि०) दोषयुक्त, अपवित्र।
अशुद्धि–(सं० स्त्री०) दोष।
अशुभ–(सं० पुं०) अमंगल, पाप, अपराध; (वि०) बुरा।
अशुभ्र–(सं०पुं०) कृष्ण, काला।
अशुष्क–(सं०वि०) जो सूखा न हो, हरा।
अशून्य–(सं० वि०) पूर्ण, भरा हुआ।
अशृङ्ग–(सं० वि०) बिना सींग का।
अशेष–(सं० वि०) समूचा, दोषरहित, पूरा, समाप्त।
अशोक–(सं० पुं०) एक प्रसिद्ध वृक्ष; (वि०) शोक-रहित।
अशोच–(सं० पुं०) शोक का न होना।
अशौच–(सं० पुं०) अशुद्धता, अपवित्रता।
अश्म–(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़, पत्थर।
अश्मरी–(सं० स्त्री०) मूत्रकृच्छ्र, पथरी नामक रोग।
अश्रु–(सं० पुं०) नेत्र-जल, आँसू।
अश्लील–(सं० वि०) भद्दा, कुत्सित।
अश्व–(सं० पुं०) घोटक, घोड़ा। अश्वचिकित्सक–(सं० पुं०) अश्ववैद्य, सलोतरी। अश्वतर–(सं०पुं०) खच्चर।
अश्वत्थ–(सं० पुं०) पीपल का वृक्ष।
अश्वमेध–(सं० पुं०) प्राचीन काल का एक प्रधान यज्ञ। अश्वयान–(सं० पुं०) घोड़े की सवारी।
अश्वशाला–(सं० स्त्री०) घुड़साल।
अश्वारूढ़–(सं० पुं०) घोड़े पर चढ़ा हुआ, घुड़सवार।
अष्ट–(सं० वि०) आठ की संख्या।
अष्टक–(सं० पुं०) आठ पदार्थों का संग्रह, आठ श्लोक का स्तोत्र या काव्य।
अष्टकोण–(सं०पुं०) आठ कोने का यन्त्र
अष्टधातु–(सं० पुं०) आठ धातु यथा– सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा, पारा।
अष्टपदी–(सं० स्त्री०) आठ पदवाला गीत।
अष्टपाद–(सं०पुं०) शरभ, टिड्डी, मकड़ी
अष्टम–(सं० वि०) आठवाँ।
अष्टमी–(सं० स्त्री०) किसी महीने के कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष की आठवीं तिथि।

अष्टसिद्धि–(सं० स्त्री०) आठ प्रकार की सिद्धि।
अष्टाङ्ग–(सं० पुं०) योग की क्रिया के आठ भेद; (वि०) आठ भाग का, अठपहल।
अष्टाध्यायी–(सं० स्त्री०) पाणिनि का बनाया हुआ व्याकरण का ग्रन्थ जिसमें आठ अध्याय हैं।
अस–(हिं० सर्व०) ऐसा, यह; (वि०) इस प्रकार का।
असंक–(हिं० वि०) अशंक, निडर।
असंस्कृत–(सं० वि०) संस्कार न किया हुआ, परिष्कार न किया हुआ।
असंस्तुत–(सं० वि०) स्तुति न किया हुआ।
असकताना–(हिं०क्रि०) आलस्य में पड़े रहना, ऊँघना, जँभाई लेना।
असकृत–(सं०अव्य०) अनेक बार, बारंबार।
असगोत्र–(सं० वि०) भिन्न गोत्र का, जो एक ही गोत्र का न हो।
असगुन–(हिं० पुं०) देखो अशकुन।
असंकीर्ण–(सं० वि०) विशुद्ध, बेमेल।
असंकुल–(सं०वि०) विस्तीर्ण, खुला हुआ।
असंख्य–(सं० वि०) अगणनीय, अनगिनती। असंख्यता–(सं० स्त्री०) अगणनीयता।
असंग–(सं०पुं०) संबंधशून्यता; (वि०) न्यारा। असंगत–(सं० वि०) असम्बद्ध, अनुचित। असंगति–(सं० स्त्री०) अनुपयुक्तता। असंगम–(सं० पुं०) सङ्गम का अभाव; (वि०) बिना मेल का।
असज्जन–(सं० वि०) दुर्जन, दुष्ट, खल।
असत्य–(सं०वि०) मिथ्या, झूठ; (पुं०) झूठी बात।
असनान–(हिं०पुं०) स्नान, नहाना।
असन्दिग्ध–(सं० वि०) सन्देह-रहित, प्रकट, स्पष्ट।
असभई–(हिं० वि०) अशिष्टता।
असभ्य–(सं० वि०) अशिष्ट, गँवार।
असम–(सं० वि०) अतुल्य, असदृश।
असमंजस–(सं० पुं०) अनुपयुक्त विषय; (वि०) असदश, अतुल्य; (पुं०) अड़चन, कठिनाई।
असमर्थ–(सं० वि०) अशक्त, दुर्बल, अयोग्य, सामर्थ्यहीन।
असमवायिकारण–(सं० पुं०) आकस्मिक हेतु।
असमीक्ष्य–(सं० अव्य०) बिना सोचे-विचारे।
असमीचीन–(सं०वि०) अनुचित, अयुक्त।
असम्पूर्ण–(सं० वि०) अधूरा।
असम–(सं० वि०) अतुल्य।
असम्भव–(सं० वि०) असङ्गत।
असम्मत–(सं० वि०) अस्वीकृत, विरुद्ध।
असरन–(हिं० पुं०) देखो अशरण।
असलील–(हिं० वि०) देखो अश्लील।
असलेउ–(हिं० वि०) असह्य।
असलोक–(हिं० पुं०) देखो श्लोक।
असवर्ण–(सं० वि०) विभिन्न वर्ण का।
असवार–(हिं० पुं०) देखो सवार।
असवारी–(हिं० स्त्री०) देखो सवारी।
असह–(सं०वि०) अक्षम, न सहने योग्य।
असहयोग–(सं० पुं०) मिलकर काम न करने का सिद्धान्त।
असहाय–(सं० वि०) निरवलम्ब, निःसहाय।
असहिष्णु–(सं० वि०) असहनशील।
असहा–(हिं० वि०) ईर्षालु।
असाँच–(हिं०वि०) असत्य, झूठा।
असा–(अ० पुं०) सोंटा, चाँदी या सोने के पत्र से मढ़ा हुआ डंडा।

असाढ़–(हिं०पुं०) आषाढ़ मास।
असाढ़ा–(हिं०पुं०) बटे हुए रेशम का तागा।
असाढ़ू–(हिं० पुं०) मोटी चट्टान, मोटा पत्थर।
असाध–(हिं०वि०) असाध्य।
असाधारण–(सं०वि०) असामान्य, विशेष
असाधु–(सं० वि०) दुर्जन, अशिष्ट। असाधुता, असाधुत्व–(सं०) दुष्टता।
असाध्य–(सं०वि०) कठिन, दुष्कर।
असामान्य–(सं०वि०) असाधारण, विशेष।
असामी–(हिं०पुं०) कृषक, ऋणी, अपराधी, देनदार।
असार–(सं०वि०) निःसार, तुच्छ।
असि–(सं०पुं०) खड्ग, तलवार।
असिधारा–(सं०स्त्री०) तलवार की धार।
असीम–(सं०वि०) अनन्त, अगाध, अपार।
असीस–(हिं०स्त्री०) देखो आशिस्।
असु–(सं०पुं०) प्राणवायु।
असुख–(सं०पुं०) दुःख, कष्ट।
असुखी–(सं०वि०) सुखरहित, दुःखी।
असुविधा–(सं०स्त्री०) कठिनाई, अड़चन।
असुभ–(हिं०वि०) देखो अशुभ।
असुर–(सं०पुं०) राक्षस, दैत्य, प्रेत।
असुराई–(हिं०स्त्री०) नीचता, दुष्टता।
असूया–(सं०स्त्री०) ईर्ष्या, शत्रुता, डाह।
असृक्–(सं०पुं०) रक्त, लोहू।
असेग–(हिं०वि०) असह्य, न सहने योग्य।
असो, असों–(हिं०क्रि०वि०) इस साल, वर्तमान वर्ष में।
असोक–(हिं० वि०) देखो अशोक।
असौच–(हिं०पुं०) देखो अशौच।
असौम्य–(सं०वि०) अप्रिय, डरावना।
अस्खलित–(सं०वि०) स्थायी, टिकाऊ।
अस्त–(सं०वि०) नष्ट, अदृश्य, डूबा हुआ, छिपा हुआ।
अस्तन–(हिं०पुं०) देखो स्तन।
अस्तव्यस्त–(सं०वि०) अव्यवस्थित।
अस्ताचल–(सं०पुं०) पश्चिमाचल पर्वत।
अस्तु–(सं०अव्य०) ऐसा ही हो, अच्छा, भला।
अस्तुति–(सं०स्त्री०) अपकीर्ति, निन्दा; (हिं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।
अस्तेय–(सं०पुं०) चोरी का न करना।
अस्त्र–(सं० पुं०) आयुध, तलवार, चिकित्सक का शस्त्र। अस्त्रशाला, (सं०स्त्री०) अस्त्रागार।
अस्थान–(सं०पुं०) बुरा स्थान; (हिं० पुं०) स्थान।
अस्थायी–(सं०वि०) अस्थिर, चंचल।
अस्थावर–(सं०वि०) जंगम।
अस्थि–(सं०पुं०) हाड़, हड्डी।
अस्थिति–(सं०स्त्री०) अस्थिरता।
अस्थिपंजर–(सं०पुं०) हड्डी की ठठरी।
अस्थिर–(सं०वि०) चंचल, अनिश्चित।
अस्थूल–(सं०वि०) सूक्ष्म, पतला; (हिं०) स्थूल।
अस्थैर्य–(सं०पुं०) चपलता, चंचलता।
अस्नान–(हिं०) देखो स्नान।
अस्निग्ध–(सं०वि०) कर्कश, निर्दय।
अस्पृह–(सं०वि०) विरक्त।
अस्फुट–(सं०वि०) अव्यक्त।
अस्रज–(सं० पुं०) मांस।
अस्रु–(सं० पुं०) चक्षुजल, आँसू।
अस्लील–(हिं०) देखो अश्लील।
अस्लोक–(हिं०) देखो श्लोक।
अस्वच्छ–(सं०वि०) कलुष, धुंधला।
अस्वतन्त्र–(सं०वि०) पराधीन।
अस्वस्थ–(सं०वि०) रुग्ण, रोगी।
अस्वीकार–(सं० पुं०) स्वीकार का अभाव। अस्वीकृत–(सं०पुं०) स्वीकार न किया हुआ।

अस्सी–(हिं०पुं०) सत्तर और दस की संख्या ।
अहं–(सं०सर्व०) मैं; (पुं०) अभिमान, अहंकार ।
अहंता–(हिं० स्त्री०) अभिमान, गर्व ।
अहंवाद–(सं० पुं०) धृष्टता ।
अहक–(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा ।
अहकना–(हिं०क्रि०) लालसा करना ।
अहंकार–(सं० पुं०) गर्व, घमंड ।
अहटाना–(हिं०क्रि०) आहट लेना, पता लगाना, ढूंढ़ना, खोजना ।
अहनिसि–(हिं०अव्य०) देखो अहर्निश ।
अहम्मति–(सं०स्त्री०) अहंकार, गर्व ।
अहर–(सं०पुं०) गणित में वह राशि जो बँट न सकती हो ।
अहरन–(हिं०स्त्री०) निहाई ।
अहरना–(हिं०क्रि०) लकड़ी को गढ़ना ।
अहरहः–(सं० क्रि० वि०) प्रतिदिन ।
अहरा–(हिं० पुं०) सुलगाये जानेवाले कण्डों का ढेर, ठहरने का स्थान ।
अहर्निश–(सं०अव्य०) दिनरात, सर्वदा ।
अहर्मुख–(सं० पुं०) प्रातःकाल, सबेरा ।
अहलाद–(हिं० पुं०) देखो आह्लाद ।
अहवात–(हिं०पुं०) सौभाग्य, सोहाग ।
अहह–(सं०अव्य०) क्लेश, शोक, आश्चर्य इत्यादि सूचक अव्यय; हाय ! अरे !
अहा–(हिं०अव्य०) प्रसन्नता-सूचक अव्यय।
अहान–(हिं० पुं०) आह्वान, पुकार ।
अहार–(हिं०) देखो आहार ।
अहाहा–(हिं०अव्य०) हर्ष-सूचक अव्यय ।
अहि–(सं०पुं०) सर्प, सूर्य, जल, बादल, पृथ्वी ।
अहिंसा–(सं०स्त्री०) अद्रोह, किसी प्राणी को किसी प्रकार का कष्ट न देना ।
अहित–(सं०पुं०) शत्रु, वैरी; (वि०) हानिकारक, प्रतिकूल ।
अहिनाह–(हिं०पुं०) शेषनाग ।
अहिर–(हिं०) देखो अहीर ।
अहिलव–(हिं०पुं०) अधिकता, बढ़ती ।
अहुठना–(हिं० क्रि०) निवृत्त होना, हट जाना, भागना ।
अहे–(हिं०अव्य०) अरे ! अहो !
अहेर–(हिं०पुं०) आखेट, मृगया ।
अहो–(सं०अव्य०) हाय, धिक्कार, अरे, वाहवाह, क्यों ।
अहोरात्र–(सं०पुं०) दिनरात; (अव्य०) सर्वदा, निरन्तर ।

आ

आ–हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर, यह 'अ' का दीर्घ रूप है ।
आँ–(हिं०पुं०) आश्चर्य-सूचक अव्यय ।
आँक–(हिं०पुं०) अंक, चिह्न, वर्ण, अक्षर ।
आँकड़ा–(हिं०पुं०) अंक, संख्या ।
आँकु-आँकुस–(हिं०पुं०) देखो अंकुश।
आँकू–(हिं०पुं०) कूतनेवाला ।
आँख–(हिं०स्त्री०) चक्षु, नेत्र, दृष्टि, ध्यान, विवेक, कृपा, सूई का छिद्र, ईख, आलू इत्यादि में वह स्थान जहाँ से अँखुआ निकलता है ।
आँखड़ा–(हिं०स्त्री०) आँख, नेत्र ।
आँख मिचौली, आँख मीचली, आँख मुचाई (मुंदाई)–(हिं०स्त्री०) लड़कों का एक खेल ।
आँखी–(हिं०स्त्री०) देखो आँख ।
आँगन–(हिं०पुं०) आँगन, घर के भीतर का चौक ।
आँगी–(हिं० स्त्री०) अङ्गिका, अँगिया ।
आँगुर–(हिं०पुं०) देखो अङ्गुल ।
आँच–(हिं०स्त्री०) अग्नि, ताप, तेज, संकट, विपत्ति, प्रेम ।
आँचर(ल)–(हिं०पुं०) अञ्चल ।

आँजन–(हिं॰पुं॰) देखो अञ्जन।
आँजना–(हिं॰क्रि॰) आँखों में अञ्जन लगाना।
आँट–(हिं॰स्त्री॰) हथेली में तर्जनी और अँगूठे के मध्य का स्थान, दाँव गाँठ।
आँटी–(हिं॰स्त्री॰) लंबी घास इत्यादि का छोटा गट्ठा, सूत का लच्छा, धोती की ऐंठन, टेंट।
आँठी–(हिं॰स्त्री॰)गाँठ, बीज, गुठली।
आँड़ू–(हिं॰पुं॰)अण्डकोशयुक्त(पशु)।
आँत–(हिं॰स्त्री॰) अन्त्र, अँतड़ी।
आँतर–(हिं॰ पुं॰) अन्तर।
आँदू–(हिं॰ पुं॰) बेड़ी, सिकड़ी।
आँधर, आँधरा–(हिं॰वि॰)अन्धा, नेत्र-हीन।
आँधी–(हिं॰ स्त्री॰) धूलिपूर्ण प्रचण्ड वायु।
आँयबाँय–(हिं॰पुं॰) असम्बद्ध प्रलाप।
आँव–(हिं॰पुं॰) अन्न न पचने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का चिकना लसदार मल।
आँवठ–(हिं॰पुं॰) किनारा, कपड़े का छोर।
आँवन–(हिं॰पुं॰) पहिये के मध्य भाग में जड़ी हुई लोहे की सामी जिसमें धुरे का डंडा घूमता है।
आँवल–(हिं॰स्त्री॰) खेंढ़ी, जिससे गर्भ में बच्चा लपेटा रहता है।
आँवला–(हिं॰ पुं॰) एक वृक्ष, जिसके गोल फल कसैलापन लिये कुछ खट्टे होते हैं।
आँवाँ–(हिं॰ पुं॰)गड्ढा जिसमें कुम्हार लोग मिट्टी के पात्र पकाते हैं।
आँस–(हिं॰स्त्री॰)सुतली, डोरी, रेशा।
आँसू–(हिं॰पुं॰) अश्रु, नेत्र से निकलने-वाला जल।

आँहाँ–(हिं॰अव्य॰) नहीं।
आ–(सं॰अव्य॰) यह, ईषत् (थोड़ा), मर्यादा, अभिव्याप्ति तथा अतिक्रमण अर्थ में प्रयुक्त होता है––यथा, आरक्त–थोड़ा लाल; आमरण–– जीवन पर्यन्त।
आइ–(हिं॰) देखो आयु।
आई–(हिं॰स्त्री॰) मृत्यु, आयुष्य।
आउ–(हिं॰पुं॰) आयुष्य, जीवन।
आकड़ा–(हिं॰) देखो आँक।
आकम्प, आकम्पन–(सं॰ पुं॰) थोड़ा कम्प, कँपकँपी।
आकर–(सं॰पुं॰) समूह, भाण्डार।
आकर्ष–(सं॰पुं॰) वितान, खिचाव, तनाव, चुंबक।
आकर्षण–(सं॰पुं॰) खिचाव।
आकर्षणशक्ति–(सं॰ स्त्री॰) भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिसके द्वारा वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींच लेते हैं।
आकर्षन–(हिं॰पुं॰) देखो आकर्षण।
आकलन–(सं॰ पुं॰) आशंका, सन्देह, संचय, गणना, अनुसन्धान, खोज।
आकस्मिक–(सं॰ वि॰) अचानक होने-वाला।
आकांक्षा–(सं॰स्त्री॰)इच्छा,अभिलाषा, अभिप्राय।
आका–(हिं॰ पुं॰) आकाय, भट्ठी, पैजावा, आँवाँ।
आकार–(सं॰ पुं॰) स्वरूप, आकृति, चेष्टा, अक्षर 'आ'।
आकाश–(सं॰ पुं॰) नभ, गगन, बहुत ऊँचा स्थान। आकाशकक्षा–(सं॰स्त्री॰) क्षितिज। आकाशकुसुम–(सं॰ पुं॰) असम्भव वार्ता। आकाशगंगा–(सं॰ स्त्री॰) मन्दाकिनी, अनेक छोटे छोटे तारों का मण्डल जो आकाश में उत्तर से

दक्षिण तक विस्तृत है। आकाश-चोटी–(हिं०स्त्री०) शीर्ष बिन्दु, सिर के ठीक ऊपर पड़नेवाला कल्पित बिन्दु।

आकाशमण्डल–(सं० पुं०) गगनमण्डल, खगोल। आकाशवृत्ति–(सं०स्त्री०) सन्दिग्ध जीविका।

आकाशी–(हिं०स्त्री०) वह चाँदनी जो आतप इत्यादि से बचने के लिये तानी जाती है।

आकाशीय–(सं०वि०)आकाश सम्बन्धी।

आकीर्ण–(सं०वि०)व्याप्त, फैला हुआ।

आकुंचन–(सं०पुं०) संकोचन, सञ्चय।

आकुंचित–(सं०वि०) सिकोड़ा हुआ, वक्र, टेढ़ा।

आकुण्ठन–(सं०पुं०) लज्जा।

आकुल–(सं०वि०) व्यग्र, विह्वल, उद्विग्न, व्याप्त।

आकूति–(हिं०स्त्री०)अभिप्राय, आशय।

आकृति–(सं०स्त्री०) आकार, लक्षण, मूर्ति, रूप, चेष्टा, व्यवहार।

आकृष्ट–(सं०वि०) खींचा हुआ।

आक्रन्द-आक्रन्दन–(सं०) चिल्लाहट-सहित रुलाई, पुकार, ललकार।

आक्रमण–(सं०पुं०) चढ़ाई, धावा।

आक्रान्त–(सं०वि०) विह्वल, व्याप्त।

आक्रान्ति–विवशता।

आक्रोश–(सं०पुं०) शाप, निन्दा, अप-वाद।

आक्षिप्त–(सं०वि०) फेंका या उछाला हुआ।

आक्षेप–(सं०पुं०) अपमान, अपवाद, भर्त्सना, गाली।

आखत–(हिं० पुं०) विवाहादि शुभ कार्य के समय परिजनों को दिया जानेवाला अन्न।

आखन–(हिं० क्रि० वि०) क्षणक्षण, बारबार।

आखना–(हिं०क्रि०) बर्णन करना।

आखर–(हिं०पुं०) अक्षर।

आखु–(सं०पुं०) मूषक, चूहा, चोर।

आखेट–(सं०पुं०) मृगया, अहेर।

आख्या–(सं०स्त्री०) नाम, संज्ञा।

आख्यात–(सं०वि०) कथित, प्रसिद्ध, प्रकाशित।

आख्याति–(सं०स्त्री०)कीर्ति,यश,कथन।

आख्यान–(सं०पुं०) कथन, वर्णन, बोली, कथा। आख्यानक–(सं० पुं०) कथा, छोटा किस्सा।

आख्यायिका–(सं०स्त्री०) गल्प, सच्ची कहानी।

आग–(हिं०स्त्री०) अग्नि, दाह, जलन।

आगत–(सं०वि०) उपस्थित, आया हुआ; (पुं०) आगमन।

आगन्तु, आगन्तुक–(सं० पुं०) अतिथि, पाहुन।

आगम–(सं० पुं०) आगमन, आय, उत्पत्ति, उपस्थिति, योग, जोड़, मार्ग, व्याकरण के शब्द-साधन में जो वर्ण बाहर से लाया जाय, वेद, शास्त्र, निकट जानेवाला। आगमजानी–भविष्य जाननेवाला।

आगमन–(सं० पुं०) अवाई, प्राप्ति।

आगमी–(सं० वि०) भविष्यवक्ता, ज्योतिषी।

आगर–(हिं०पुं०)आकर, खान,ढेर,कोष, निधि; (वि०) श्रेष्ठ, कुशल, चतुर।

आगल–(हिं० पुं०) अर्गल, ब्योंड़ा; (वि०) अर्गला।

आगवन–(हिं०पुं०) आगमन, आना।

आगा–(हिं०पुं०) अग्रभाग, सेना का अगला भाग।

आगापीछा–(हिं० पुं०) सोच-विचार, द्विविधा।
आगामी–(सं०वि०) आगे आनेवाला।
आगार–(सं० पुं०) घर, स्थान, कोष।
आगिल–(हिं०वि०) अगला, आगे होनेवाला।
आगी–(हिं० स्त्री०) अग्नि, आग।
आगू–(हिं०क्रि०वि०) आगे, आगे की ओर।
आगे–(हिं० क्रि० वि०) अग्रभाग में, बढ़कर, सम्मुख, भविष्य में, पीछे, जीवित अवस्था में।
आगौन–(हिं० पुं०) देखो आगमन।
आग्नेय–(सं०वि०) अग्नि से निकाला हुआ, आग लगने से शीघ्र जलनेवाला, अग्नि के समान।
आग्नेयी–(सं० स्त्री०) पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा।
आग्रह–(सं०पुं०) अनुरोध, अनुग्रह, हठ।
आग्रही–(सं०वि०) आग्रह करनेवाला, हठी।
आघात–(सं० पुं०) ठोकर, धक्का, क्षत, प्रहार, चोट, मार-पीट, आक्रमण।
आचमन–(सं० पुं०) भोजन के बाद मुंह धोना, पूजा के पूर्व दाहिने हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़कर पीना।
आचमनी–(हिं० स्त्री०) छोटे चम्मच के आकार का पात्र जिससे आचमन किया जाता है।
आचरण–(सं०पुं०) आचार, व्यवहार, लक्षण, आचार के नियम।
आचरन–(हिं० पुं०) देखो आचरण।
आचार–(सं० पुं०) आचरण, अनुष्ठान, नियम।
आचारज–(हिं० पुं०) देखो आचार्य।
आचारवान्–(सं०वि०) शुद्ध आचरण का।
आचारविचार–(सं० पुं०) शुद्ध आचरण, पवित्रता।
आचार्य–(सं० पुं०) गायत्री मन्त्र का उपदेश देनेवाला, वेद पढ़ानेवाला, यज्ञादि के क्रम का उपदेशक, अध्यापक, गुरु, पुरोहित, वेद का भाष्यकार।
आच्छन्न–(सं०वि०) ढपा, छिपा हुआ।
आच्छादन–(सं०वि०) वस्त्र, ओहार।
आच्छादित–(सं० वि०) आवृत, ढँपा हुआ।
आछत–(हिं०क्रि०वि०) रहते, होते हुए, सामने, अतिरिक्त, सिवाय।
आज–(हिं० क्रि० वि०) इस समय, वर्तमान काल में। आजकल–इन दिनों।
आजन्म–(सं०अव्य०) जन्मभर।
आजा–(हिं० पुं०) पितामह, दादा।
आजीवन–(सं० पुं०) वृत्ति का उपाय; (अव्य०) जीवन पर्यन्त।
आजु–(हिं०) देखो आज।
आज्ञप्त–(सं०वि०) आज्ञा दिया हुआ।
आज्ञप्ति–(सं० स्त्री०) आज्ञा।
आज्ञा–(सं०स्त्री०) आदेश, अनुमति।
आज्य–(सं०पुं०) घृत, घी।
आटना–(हिं०क्रि०) मूंदना, छिपाना।
आटा–(हिं० पुं०) अन्न का चूर्ण, पिसान।
आटी–(हिं० स्त्री०) रोक, अटक, पच्चड़।
आटोप–(सं० पुं०) विस्तार, फैलाव।
आठ–(हिं० वि०) अष्ट, चार की दूनी संख्या। आठो पहर–दिन-रात।
आठवाँ–(हिं०वि०) अष्टम।
आड़–(हिं०स्त्री०) परदा, रोक, रक्षा, अड़ान, थूनी।
आड़ना–(हिं० क्रि०) रोकना, छेंकना, बाँधना।

आडम्बर–(सं०पुं०) हर्ष, दर्प युद्ध की घोषणा, आरम्भ, मेघ का शब्द, हाथी की चिग्घाड़ ।
आड़ा–(हिं० पुं०) धारीदार वस्त्र ; (वि०) तिरछा ।
आड़ू–(हिं० पुं०) सताल ।
आढ़–(हिं०पुं०) आढक, चार सेर की तौल ।
आढ़त–(हिं०स्त्री०) किसी व्यापारी का माल बिक्री कराने का व्यापार; जो धन किसी के माल की बिक्री करा देने पर मिलता है । **आढ़तिया**–(हिं० पुं०) आढ़त का व्यवसाय करनेवाला ।
आढ्य–(सं० वि०) विशिष्ट, धनी, सम्पन्न ।
आणक–(सं०पुं०) एक रुपये का सोलहवाँ अंश, आना ।
आतङ्क–(सं० पुं०) रोग, सन्ताप, कष्ट, भय, ज्वर, वेग, उपद्रव ।
आततायी–(सं० वि०) जान मारने को उद्यत ।
आतप–(सं०पुं०) घाम, उष्णता ।
आतपत्र–(सं० पुं०) धूप से बचने का छाता ।
आतम–(हिं०) देखो आत्म ।
आतमा–(हिं०) देखो आत्मा ।
आतिथेय–(सं० पुं०) अतिथि की सेवा, जिसके यहाँ अतिथि आवे ।
आतिथ्य–(सं० पुं०) अतिथि की परिचर्या, पहुनई ।
आतुर–(सं०वि०) आहत, पीड़ित, व्याकुल, रोगी, अधीर, दुःखी, उत्सुक ।
आतुरी–(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट ।
आत्त–(सं०वि०) गृहीत, स्वीकृत ।
आत्म–(सं० वि०) अपना निजी, स्वकीय ।
आत्मगत–(सं०पुं०) स्वगत, आप ही आप । **आत्मघात**–(सं० पुं०) आत्महत्या ।
आत्मज–(सं० पुं०) पुत्र, बेटा । **आत्मजा**–(सं० स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्री ।
आत्मज्ञ–(सं०पुं०) ब्रह्मज्ञ, सिद्ध ।
आत्मज्ञान–(सं० पुं०) आत्मा का यथार्थ रूप से ज्ञान ।
आत्मत्याग–(सं० पुं०) स्वार्थत्याग ।
आत्मवत्–(सं०अव्य०) अपनी तरह ।
आत्मवध–(सं०) देखो आत्मघात ।
आत्मवश–(सं० वि०) स्वाधीन, जितेन्द्रिय ।
आत्मविक्रय–(सं० पुं०) स्वदेह-विक्रय; **आत्मविक्रयी, आत्मविक्रेता**–(सं०) अपने आपको बेचकर दास बननेवाला । **आत्मविज्ञान**–(सं० पुं०) योगाभ्यास द्वारा परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान । **आत्मविद्या**–(सं०स्त्री०) ब्रह्मविद्या, योगशास्त्र ।
आत्मसात्–(सं०अव्य०) सब प्रकार से अपने अधीन ।
आत्मा–(सं० पुं०) जीवात्मा, चित्त, मन, ब्रह्म ।
आत्मीय–(सं०वि०) आत्मा संबंधी, निजी; (पुं०) सम्बन्धी ।
आत्मेश्वर–(सं० वि०) अपने मन पर अधिकार रखनेवाला ।
आथना–(हिं०क्रि०) होना, रहना ।
आथि–(हिं०स्त्री०) पूंजी ।
आदरस–(हिं०) देखो आदर्श ।
आदर्य–(सं०वि०) आदरणीय ।
आदर्श–(सं० पुं०) दर्पण, प्रतिलिपि, टीका, अनुकरण करने योग्य पदार्थ ।
आदान–(सं० पुं०) ग्रहण, पकड़ ।
आदान-प्रदान–(सं०पुं०) लेन देन ।

आदि–(सं०पुं०) आरम्भ, प्रथम, मूल कारण; (वि०) पहले का, आरंभ का; (अव्य०) आदिक।
आदित–(हिं० पुं०) देखो आदित्य।
आदित्य–(सं०पुं०) देवता, सूर्य। आदित्य-वार–(सं० पुं०) रविवार।
आदिदेव–(सं० पुं०) नारायण, शिव, सूर्य।
आदिम–(सं० वि०) आदि में उत्पन्न, पहिला, अगला।
आदिविपुला–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का आर्या छन्द।
आदिशक्ति–(सं०स्त्री०) परमेश्वर की माया रूप शक्ति।
आदिष्ट–(सं०वि०) उपदेश किया हुआ।
आदी–(हिं० स्त्री०) अदरख।
आदृत–(सं०वि०) सम्मानित, पूजित।
आदेश–(सं० पुं०) उपदेश, आज्ञा।
आद्य–(सं०वि०) आदि में उत्पन्न, प्रधान।
आद्यन्त–आदि से अन्त तक।
आद्योपान्त–(सं०अव्य०) प्रथम से शेष तक
आध–(हिं०वि०) दो बराबर भागों में से एक, आधा, यौगिक शब्दों के आदि में प्रयुक्त होता है, यथा–आध सेर, आध मन। एकाध–थोड़ी संख्या में।
आधा–(हिं० वि०) अर्ध, दो बराबर भागों में से एक। आधेआध–दो बराबर भागों में से एक।
आधार–(सं० पुं०) आश्रय, अवलम्ब, थाला, सम्बन्ध।
आधारी–(सं०वि०) सहारा लेनेवाला; (हिं० स्त्री०) सहारा लेने की लकड़ी।
आधासीसी–(हिं० स्त्री०) अर्धकपाली।
आधि–(सं० स्त्री०) मानसिक व्यथा, चिन्ता, अधिष्ठान।
आधिक्य–(सं० पुं०) अधिकता, बहुतायत।
आधिपत्य–(सं० पुं०) स्वामित्व, प्रभुत्व।
आधिराज्य–(सं० पुं०) आधिपत्य।
आधी–(हिं०स्त्री०) देखो आधा।
आधीकृत–(सं०वि०) बन्धक रक्खा हुआ।
आधुनिक–(सं०वि०) वर्तमान समय का।
आधृष्ट–(सं० वि०) निवारित, रोका हुआ।
आधेक–(हिं० वि०) आधे के बराबर आधे से अधिक नहीं।
आधेय–(सं० वि०) दिया जानेवाला, रक्खा जानेवाला।
आध्यात्मिक–(सं०वि०) आत्मा या परमात्मा सम्बन्धी।
आन–(हिं०स्त्री०) सीमा, शपथ, भय।
आनक-दुन्दुभि–बड़ा नगाड़ा।
आनत–(सं०वि०) अधोमुख, मुख नीचा किये हुए।
आनद्ध–(सं०वि०) बद्ध, बँधा हुआ।
आनन–(सं० पुं०) मुँह, मुख, मुखड़ा।
आनना–(हिं०क्रि०) लाना, लिवा लाना।
आनन्द–(सं० पुं०) हर्ष, सुख, प्रसन्नता।
आनन्दना–(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना।
आनन्दित–(सं०वि०) हर्षयुक्त, प्रसन्न।
आनन्दी–(सं०वि०) प्रसन्न रहनेवाला।
आनबान–(हिं० स्त्री०) चमक-दमक, सज-धज।
आनमन–(सं० पुं०) विनय, झुकाव।
आना–(हिं०पुं०) एक रुपये का सोलहवाँ भाग; (हिं० क्रि०) आगमन करना, होना, बीतना, लौटना, आरंभ होना, पकना, पहुँचना, मिलना, फल-फूल लगना।
आनीत–(सं०वि०) गृहीत, लाया हुआ।

आनुपूर्वी–(सं०वि०) क्रमानुसार।
आनुषङ्गिक–(सं०वि०)अनुरूप, बराबर का, प्रासङ्गिक।
आन्त्रिक–(सं० वि०) अन्त्र सम्बन्धी।
आन्दोलक–(सं० पुं०) झुलानेवाला।
आन्दोलन–(सं० पुं०) झोंका, कम्प, अनुसन्धान, विप्लव, उपद्रव।
आप–(सं०पुं०) जल का समूह, समास के अन्त में इस शब्द का अर्थ 'पानेवाला' होता है, यथा–दुराप; (हिं० सर्व०) स्वयं।
आपगा–(सं० स्त्री०) नदी।
आपण–(सं० पुं०) हाट।
आपत्–देखो आपद्।
आपतन–(सं०पुं०) अवतरण, उतार, संकट।
आपत्ति–(सं०स्त्री०)विपत्ति, क्लेश,दुःख, कष्ट, दुर्घटना, संकट।
आपदा–(हिं०स्त्री०) क्लेश, कष्ट का समय। आपद्ग्रस्त–(सं०वि०)विपत्ति से पीड़ित।
आपद्धर्म–(सं० पुं०) विपत्ति के समय विधान करने का धर्म।
आपन, आपना–(हिं० सर्व०) अपना, निजी।
आपनिधि–(हिं०पुं०) समुद्र, जलनिधि।
आपरूप–(हिं०वि०) अपने रूप रंग का; (सर्व०)स्वयं, आप; (वि०)मूर्तिमान्, साक्षात।
आपस–(हिं० स्त्री०) आत्मीयता, मेलजोल। आपसी–(हिं०वि०) आत्मीय, सम्बन्धी।
आपा–(हिं० पुं०) अपना अस्तित्व, दर्प, घमंड। आपे में न रहना–अधिकार के बाहर होना, अति क्रोध दिखलाना।
आपाधापी–(हिं० स्त्री०) अपने अपने कार्य की चिन्ता।
आपान(-क)–(सं०पुं०) मद्य पीने का स्थान या दूकान।
आपूप–(सं०पुं०)टिकिया, रोटी, मालपूआ।
आपूर–(सं०वि०) व्याप्त, भरा-पूरा।
आपेक्षिक–(सं०वि०) तुलना द्वारा प्राप्त, निर्भर होनेवाला।
आप्त–(सं० वि०) प्राप्त, विश्वस्त, सामान्य रूप से प्रयोग में आनेवाला; (पुं०) योग्य पुरुष, मित्र।
आफुक–(सं०पुं०) अहिफेन, अफीम।
आबद्ध–(सं०वि०) प्रतिबद्ध, बँधा हुआ।
आभरण–(सं० पुं०) अलंकार, आभूषण, पालन-पोषण।
आभरन–(हिं० पुं०) आभरण।
आभा–(हिं०स्त्री०) दीप्ति, चमक, कान्ति, प्रतिबिम्ब, छाया।
आभास,(सं०पुं०) संकेत, झूठा दिखावा, मिथ्या ज्ञान।
आभूखन–(हिं०पुं०) अलंकार।
आम–(सं०वि०) अपक्व, कच्चा, जो पचा न हो; (हिं० पुं०) आम्र, रसाल, वृक्ष तथा फल दोनों के लिये व्यवहृत होता है।
आमक–(सं०पुं०) कूष्माण्ड, कुम्हड़ा।
आमड़ा–(हिं०पुं०)आम्रातक, एक बड़ा आम के बराबर का वृक्ष जिसके बेर के बराबर खट्टे फल होते हैं।
आमन्त्रण–(सं०पुं०) निमन्त्रण।
आमन्त्रित–(सं०वि०)न्योता पाया हुआ।
आमय–(सं०पुं०) आघात, चोट, रोग।
आमरख–(हिं० पुं०) देखो आमर्ष।
आमरण, आमरणान्त–(सं०वि०) मृत्युपर्यन्त।
आमर्द–(सं० पुं०) संकोचन, दबाव।

आमला–(हिं० पुं०) आँवला ।
आमाशय–(सं० पुं०) जठर, कोष्ठ, पेट ।
आमिख–(हिं० पुं०) देखो आमिष ।
आमिष–(सं० पुं०) मांस, भोजन, तृष्णा ।
आमी–(हिं० स्त्री०) छोटा कच्चा आम, गेहूँ, जव की भूनी हुई बाल ।
आमीलन–(सं० पुं०) नेत्रों का बन्द करना ।
आमुक्त–(सं० वि०) आबद्ध, विमुक्त ।
आमुख–(सं० पुं०) आरम्भ, प्रस्तावना ।
आमूल–(सं० अव्य०) मूल पर्यन्त ।
आमोद–(सं०पुं०) प्रसन्नता, भोग-विलास, राग-रंग ।
आम्र–(सं० पुं०) आम का वृक्ष या फल ।
आम्रेडित–(सं० वि०) बार बार कहा हुआ ।
आय–(सं० पुं०) लाभ, धनागम ।
आयत–(सं०वि०) विस्तृत, दीर्घ, विशाल; (पुं०) ज्यामिति का दीर्घ चतुरस्र आकार ।
आयतन–(सं० पुं०) आश्रय, विश्राम-स्थान ।
आयन्ती, पायन्ती–(हिं० स्त्री०) सिर-हाना, पैताना; (क्रि०वि०) ऊपर-नीचे ।
आयस–(सं०वि०) मोहमय; (पुं०) लोहा ।
आयसु–(हिं० पुं०) आज्ञा ।
आया–(हिं० क्रि०) उपस्थित हुआ, आ पहुँचा ।
आयात–(सं० वि०) आगत, आया हुआ ।
आयान–(सं० पुं०) आगमन, स्वभाव ।
आयाम–(सं० पुं०) विस्तार, लंबाई, नियम ।
आयास–(सं० पुं०) अति यत्न, परिश्रम ।
आयी, आई–(हिं० क्रि०) उपस्थित हुई, आ पहुँची ।
आयु–(सं० पुं०) आयुष्य ।
आयुत–(सं०वि०) आर्द्रीभूत, पिघला हुआ ।
आयुध–(सं० पुं०) शस्त्र । आयुधा-जीवी–(सं०पुं०) भट, योद्धा । आयुधा-गार–(सं० पुं०) शस्त्रालय ।
आयुर्दा–(हिं० स्त्री०) आयुष्य ।
आयुष्मान्–(सं० वि०) दीर्घजीवी, चिरं-जीवी ।
आयुष्य–(सं० पुं०) आयु ।
आयोजन–(सं० पुं०) प्रबंध, नियुक्ति, उद्योग ।
आयोधन–(सं० पुं०) रणक्षेत्र ।
आर–(सं० पुं०) प्रान्त, भाग, गमन, पीतल, कोना, पहिये का आरा; (स्त्री०) लोहे की कील, डंक, टेकुवा ।
आरक्त–(सं०वि०) कुछ लाल रङ्ग का ।
आरज–(हिं०पुं०) देखो आर्य ।
आरण्य–(सं० वि०) वनजात, जंगली ।
आरत–(सं०वि०) शान्त, सीधा; (हिं०) देखो आर्त ।
आरति–(सं० स्त्री०) निवृत्ति, ठहराव, देवता की प्रतिमा के चारों ओर दीपक घुमाना, आरती उतारने का पात्र, आरती के समय पढ़ने का स्तोत्र ।
आरती–(हिं० स्त्री०) देखो आरति ।
आरब्ध–(सं० वि०) आरंभ किया हुआ ।
आरम्भ–(सं० पुं०) उपक्रम, प्रस्तावना ।
आरसी–(हिं० स्त्री०) दर्पण जड़ी हुई अँगूठी जिसको स्त्रियां अँगूठे में पहिनती हैं ।
आरा–(हिं० पुं०) लकड़ी काटने की दाँतेदार लोहे की चौड़ी पट्टी, पहिये में बेलन से पुट्ठी तक जड़ी हुई लकड़ी की पटरी ।

आराधक–(सं० वि०) उपासना करनेवाला। आराधन–(सं० पुं०) उपासना, सेवा, पूजा।
आराम–(सं० पुं०) उपवन, फुलवाड़ी।
आरी–(हि० स्त्री०) छोटा आरा।
आरूढ़–(सं० वि०) चढ़नेवाला, चढ़ा हुआ, स्थिर, तत्पर।
आरोग–(हि०) देखो आरोग्य।
आरोग्य–(सं० पुं०) रोग-शून्यता; (वि०) स्वस्थ।
आरोप–(सं० पुं०) निवेशन, स्थापन।
आरोपण–(सं० पुं०) पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में बैठाना, स्थापित करना।
आरोह–(सं० पुं०) आक्रमण, नीचे से ऊपर को उठान।
आर्जव–(सं० पुं०) सरलता, सदाचार, सचाई।
आर्त–(सं०वि०)पीड़ित,दुःखित,अस्वस्थ।
आर्ति–(सं० स्त्री०) पीड़ा, मनोव्यथा।
आर्द्र–(सं० वि०) भीगा हुआ, ओदा।
आर्य–(सं० पुं०) कुलीन, सभ्य, सज्जन, पूज्य, श्रेष्ठ, वेदोक्त प्राचीन सभ्य जाति। आर्यता–(सं० स्त्री०) माननीय आचरण। आर्यपुत्र–(सं० पुं०) उपाध्याय का पुत्र, नाट्य भाषा में पति को पुकारने का शब्द।
आर्या–(सं०स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, सास, एक अर्धमात्रिक छन्द का नाम।
आर्यावर्त–(सं० पुं०) भारतवर्ष का उत्तरी भाग।
आर्ष–(सं० वि०) ऋषि सम्बन्धी।
आल–(सं० पुं०) मछली या मेढ़क का अंडा; (वि०) अधिक, भीगा।
आलकस–(हिं० पुं०) देखो आलस्य।
आलकसी–(हिं० वि०) आलसी।
आलन–(हिं० पुं०) पुआल, बिचाली।
आलना–(हिं०पुं०)पक्षीका स्थान,घोंसला।
आलपीन–(हिं० स्त्री०) पत्र आदि में लगाने की घुंडीदार सूई।
आलम्ब–(सं० पुं०) आश्रय, आधार।
आलय–(सं०पुं०)घर, आधार, स्थान।
आलवाल–(सं० पुं०)वृक्ष के चारों ओर का थाला।
आलस–(हिं० पुं०) आलस्य।
आलसी–(हिं० वि०) आलस्ययुक्त।
आलस्य–(सं०पुं०)काम करनेमें अनुत्साह।
आला–(हि०पुं०)ताखा, मोखा, अरवा।
आलान–(सं० पुं०) हाथी को बाँधने का खूँटा, गाँठ, बन्धन।
आलाप–(सं० पुं०) संभाषण, कथन, गणित के प्रश्न का निर्देश, संगीत में सातों स्वरों का रागसहित उच्चारण।
आलि–(सं०स्त्री०) सखी, सहेली, पंक्ति, सन्तति, नाला; (पुं०) बिच्छू, भौंरा।
आलिङ्ग, आलिङ्गन–(सं० पुं०) गले से गला लगाना, अँकवारी।
आलिञ्जर–(सं० पुं०) मिट्टी का जल रखने का बड़ा घड़ा।
आलिन्द–(सं० पुं०) घर के सामने का मञ्च।
आली–(सं० स्त्री०)सखी, सहेली, पंक्ति।
आलीन–(सं०वि०) गला हुआ, पिघला हुआ।
आलू–(हिं० पुं०) एक प्रकार का कन्द जो तरकारी बनाकर खाया जाता है।
आलेख–(सं० पुं०) लिखावट, लेख।
आलेख्य–(सं० पुं०) चित्र।
आलोक–(सं० पुं०) प्रकाश, चमक।
आलोचन–(सं० पुं०) दर्शन, विवेक।
आल्हा–(हिं० पुं०) एक विख्यात वीर जो पृथ्वीराज के समय महोबे में थे।

आव–(हिं० पुं०) आयुष्य।
आवआदर–(हिं०पुं०) आदर, सत्कार।
आवभाव–(हिं० पुं०) आदर, सत्कार।
आवरण–(सं० पुं०) वेष्टन, आवृत्ति।
आवरणपत्र–पुस्तक इत्यादि की रक्षा के लिये इस पर लपेटा हुआ पत्र।
आवर्जित–(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ।
आवर्त–(सं० पुं०) जल का भँवर, चक्कर, संशय; (वि०) घूमा हुआ, मुड़ा हुआ। आवर्तन–(सं० पुं०) चक्कर, घुमाव, वेष्टन, गुणन।
आवर्तनीय–(सं०वि०) गुणन करने योग्य, दोहराने योग्य। आवर्तित–(सं०वि०) अभ्यस्त; गुणा किया हुआ।
आवश्यक–(सं०वि०) नियत। आवश्यकता–(सं० स्त्री०) प्रयोजन, अपेक्षा।
आवाँ–(हिं० पुं०) वह गड्ढा जिसमें कुम्हार बर्तन पकाते हैं, पजावा।
आवागमन–(सं० पुं०) आना जाना, बार-बार जन्म लेना और मरना।
आवाजाही–(हिं० स्त्री०) आवागमन।
आवाल–(सं० पुं०) देखो आलवाल।
आवास–(सं० पुं०) वासस्थान।
आवाहन–(सं० पुं०) मन्त्र द्वारा देवता को बुलाना, निमन्त्रण।
आविद्ध–(सं० वि०) छेदा हुआ, फेंका हुआ।
आविर्भाव–(सं० पुं०) प्रकाश, संचार, उत्पत्ति। आविर्भूत–(सं० वि०) प्रकाशित, उत्पन्न।
आविष्कर्ता–(सं०वि०) प्रकाशक। आविष्कार–(सं० पुं०) प्रकाश, नई विधि।
आवृत–(सं० वि०) गुप्त, छिपा हुआ, घिरा हुआ, फैला हुआ, व्याप्त।
आवृत्ति–(सं० स्त्री०) बारंबार अभ्यास करना, दुहराना।
आवेग–(सं० पुं०) उत्कण्ठा-सहित मन का वेग, घबड़ाहट।
आवेश–(सं० पुं०) मन की प्रेरणा, अहंकार, क्रोध, गर्व, पहुँच।
आवेष्ट–(सं० पुं०) घेरा। आवेष्टन–(सं० पुं०) आवरण, लपेटने या ढापने की वस्तु।
आश–(सं०पुं०) भोजन, खाना खानेवाला।
आशंका–(सं० स्त्री०) भय, सन्देह, त्रास।
आशय–(सं० पुं०) अभिप्राय, आधार, इच्छा, तात्पर्य, आश्रय, गड्ढा।
आशा–(सं० स्त्री०) दिशा, किसी पदार्थ के मिलने की इच्छा।
आशीर्वाद–(सं० पुं०) मंगल-कामना-सूचक वाक्य।
आशीविष–(सं० पुं०) सर्प, साँप।
आशु–(सं० वि०) शीघ्र। आशुकवि–(सं० पुं०) वह कवि जो तत्क्षण कविता बनाता हो। आशुगामी–(सं० वि०) शीघ्र चलनेवाला। आशुतोष–(सं० पुं०) शिव; (वि०) शीघ्र प्रसन्न होनेवाला।
आश्चर्य–(सं० पुं०) विस्मय, अचंभा।
आश्रम–(सं० पुं०) ऋषि-मुनि का वासस्थान, तपोवन, मठ, विश्राम-स्थान, शास्त्रोक्त चार प्रकार का धर्म विशेष।
आश्रमी–(सं०वि०) आश्रम में रहनेवाला।
आश्रय–(सं० पुं०) अवलम्बन, सहारा, शरण, गृह, संबंध, संयोग, मूल, जीवनोपाय का हेतु।
आश्रित–(सं० वि०) आश्रयप्राप्त, शरणागत, सेवक, आधीन, अवलंबित।
आश्वास–(सं०पुं०) निवृत्ति, सान्त्वना।
आश्वासक–(सं०वि०) सान्त्वना देनेवाला
आश्विन–(सं०पुं०) क्वार का महीना।
आषाढ़–(सं० पुं०) आषाढ़ का महीना।

आषाढ़ी–(सं० स्त्री०) आषाढ़ मास की पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा ।
आस-(सं० पुं०) आसन, बैठक; (हिं० स्त्री०) आशा, भरोसा ।
आसकत–(हिं० पुं०) आलस्य ।
आसक्त–(सं० वि०) लिप्त, लीन ।
आसथा–(हिं० पुं०) देखो आस्था ।
आसन–(सं० पुं०) स्थिति, बैठने का ढंग, बैठक, बैठने की वस्तु ।
आसनी–(सं० स्त्री०) छोटा आसन ।
आसन्न–(सं० स्त्री०) निकटस्थ, समीप लगा हुआ ।
आसपास–(हिं०क्रि०वि०) समीप, इधर-उधर; (पुं०) पड़ोसी ।
आसमुद्र–(सं० अव्य०) समुद्र पर्यन्त ।
आसय–(हिं० पुं०) देखो आशय ।
आसरा–(हिं० पुं०) आशा, भरोसा, अवलम्ब ।
आसव–(सं० पुं०)फलों का मद्य, अरिष्ट ।
आसा–(हिं०स्त्री०) आशा, सोना-चाँदी मढ़ा हुआ डंडा जिसको चोबदार उत्सव में लेकर आगे आगे चलते हैं ।
आसादन–(सं० पुं०) प्राप्ति, स्थापन ।
आसिक्त–(सं० वि०) भिगाया हुआ, सींचा हुआ ।
आसीन–(सं० वि०)उपविष्ट, विराजमान
आसीस–(हिं० पुं०) आशीर्वाद ।
आसीसा–(हिं० पुं०) तकिया ।
आसु–(हिं० सर्व०) इसका; (क्रि०वि०) शीघ्र, जल्दी ।
आसुर–(सं०वि०)असुर संबंधी, पैशाची ।
आसुरी–(सं० वि०) असुर संबंधी, राक्षसी ।
आसुरीय–(सं० वि०) राक्षस संबंधी ।
आसेक–(सं० पुं०) वृक्षों को जल से थोड़ा सींचना ।
आसेध–(सं०पुं०) रोक रखना ।
आसेवित–(सं० वि०) बारंबार सेवा किया हुआ ।
आसौं–(हिं०क्रि०वि०) इस वर्ष,इस साल
आस्तिक–(सं० वि०) ईश्वर और परलोक का अस्तित्व माननेवाला, धार्मिक ।
आस्तीर्ण–(सं०वि०)विस्तीर्ण,फैला हुआ।
आस्था–(सं०स्त्री०) अवलम्बन, सहारा, श्रद्धा ।
आस्थायिका–(सं०स्त्री०) सभा ।
आस्थित–(सं० वि०) प्राप्त, आश्रित ।
आस्पद–(सं० पुं०) स्थान, पद, काम, प्रतिष्ठा, अवलम्बन ।
आस्य–(सं० पुं०) मुख, मुंह, आकृति ।
आस्वाद–(सं० पुं०) रस, स्वाद, रस का अनुभव ।
आह–(हिं०अव्य०)हाय; (स्त्री०)शोक, पीड़ा, दुःख, खेद ।
आहट–(हिं० स्त्री०) पैर की खटक, खटका, टोह, पता ।
आहत–(सं० वि०) चोट खाया हुआ ।
आहन–(हिं०पुं०) भीत उठाने के लिये मिट्टी और तृण का मिश्रण ।
आहरन–(हिं०स्त्री०)स्थूणी, लोहार या सोनार की निहाई ।
आहव–(सं०पुं०)युद्ध, लड़ाई, ललकार।
आहा–(हिं०अव्य०)हर्ष तथा आश्चर्य-सूचक शब्द ।
आहार–(सं० पुं०) भोजन द्रव्य, अन्न ।
आहुत–(सं० पुं०) आतिथ्य सत्कार ।
आहुति–(सं० स्त्री०)मन्त्र द्वारा अग्नि में घृतादि छोड़ना ।
आहूत–(सं० वि०)बुलाया हुआ, पुकारा हुआ ।
आहूति–(सं० स्त्री०) पुकार, बुलाहट, घृत, तिल इत्यादि से हवन ।

आहे–(हिं० क्रि०) है ।
आहृत–(सं० वि०) लाया हुआ ।
आह्निक–(सं०वि०)दैनिक, प्रतिदिन का।
आह्लाद–(सं० पुं०) आनन्द, प्रसन्नता।
आह्लादित (सं० वि०) आनन्दयुक्त।
आह्व–(सं० पुं०) नाम, संज्ञा, पुकारने का नाम ; आह्वान–(सं० पुं०)पुकार, बुलावा ।

इ

इ–हिन्दी वर्णमाला का तीसरा स्वर वर्ण, इसका स्थान तालु है। इसका दीर्घ रूप "ई" होता है। इन्द्र ।
इँगुरौटी–(हिं०स्त्री०) इँगुर रखने की डिबिया ।
इंचना-(हिं० क्रि०) आकर्षित होना, खिंचना ।
इंडुरी–(हिं० स्त्री०) गेंडुरी, कुँण्डली ।
इंडुवा–(हिं० पुं०) कपड़ा लपेटकर बनाई हुई गेंडुरी जिसको माथे पर रखकर इस पर लोग बोझ ले जाते हैं ।
इंदारा (इनारा)-(हिं०पुं०)कूप, कुआँ।
इक–(हिं० पुं०) एक संख्या, एक ।
इकंग–(हिं० वि०) एक ओर का ।
इकंगा–(हिं० वि०) अकेला, निर्जन ।
इकटक–(हिं० वि०) स्थिर, टकटकी लगाये हुए ।
इकट्ठा–(हिं०वि०)एकत्र, मिला हुआ; (क्रि०वि०) एक साथ मिलकर ।
इकता–(हिं० स्त्री०) देखो एकता ।
इकताई–(हिं० स्त्री०) अकेलापन ।
इकतान–(हिं० वि०) सदृश, अभिन्न ।
इकतार–(हिं० वि०) समान, बराबर।
इकतालीस–(हिं० वि०) चालीस और एक (की संख्या) ।
इकतीस (इकत्तिस)–(हिं०वि०) तीस और एक (की संख्या) ।
इकलड़ा–(हिं० वि०) एक ही डोरी में बँधा हुआ; (पुं०) एक लर का हार ।
इकला–(हिं० वि०) देखो अकेला ।
इकलाई–(हिं० स्त्री०)एक पाट की बनी हुई महीन वस्त्र की चादर ।
इकलौता-(हिं० वि०) अपने माँ-बाप का एक ही (पुत्र), अकेला ।
इकल्ला-(हिं० वि०) अकेला, एकहरा ।
इकसठ–(हिं० वि०) साठ और एक ।
इकसार–(हिं० वि०) समान, सदृश ।
इकहत्तर–(हिं० वि०) सत्तर और एक ।
इकहरा–(हिं० वि०)एक ही टुकड़े का ।
इकाई–(हिं० स्त्री०) एकाङ्क ।
इकान्त–(हिं०) देखो एकान्त ।
इकेला–(हिं० वि०) देखो अकेला ।
इकोतर–(हिं० वि०) एक अधिक ।
इकौता–(हिं० पुं०) अँगुलियों में होने-वाला फोड़ा ।
इक्कस–(हिं० पुं०) ईर्षा, डाह ।
इक्का-(हिं० वि०) अकेला, अनोखा, निराला; (पुं०) दुपहिया गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जुता रहता है, ताश का पत्ता जिसमें एक ही बूटी होती है ।
इक्कावन–(हिं० वि०) देखो इक्यावन ।
इक्कासी–(हिं० वि०) देखो इक्यासी ।
इक्की–(हिं० स्त्री०)एक बूटी का ताश ।
इक्कीस–(हिं० वि०) बीस और एक; (पुं०) बीस और एक की संख्या ।
इक्यानबे–(हिं० वि०) नब्बे और एक ।
इक्यावन–(हिं० वि०)पचास और एक ।
इक्यासी–(हिं० वि०)अस्सी और एक; (पुं०) अस्सी और एक की संख्या ।
इक्षु–(सं०पुं०) ईख, गन्ना ।
इखु–(हिं० पुं०) देखो इक्षु ।

इकट्ठा–(हिं०क्रि०वि०) एकत्र होकर, मलकर।
इङ्गित–(सं० पुं०) अभिप्राय का प्रकाशन, अन्वेषण, खोज; (वि०) संकेत किया हुआ।
इच्छुक–(सं० वि०) अभिलाषी।
इच्छा–(सं० स्त्री०) वांछा, लालसा, अभिलाषा।
इच्छाफल–(सं० पुं०) गणित में फल की उपपत्ति।
इच्छित–(सं० वि०) वांछित।
इच्छु–(हिं० पुं०) इक्षु, ईख।
इज्य–(सं० पुं०) पूजनीय व्यक्ति।
इठलाना–(हिं० क्रि०) इतराना, गर्व के साथ चलना, मटकना।
इड़ा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, गाय, स्तुति, सन्तोष।
इत–(हिं०क्रि०वि०) इस ओर, इधर, यहाँ।
इत-उत–(हिं० क्रि० वि०)इधर-उधर।
इतना–(हिं० वि०) एतावत।
इतर–(सं० वि०)अन्य, दूसरा, अवशेष; (हिं० पुं०) अतर।
इतराना–(हिं० क्रि०) अभिमान दिखलाना, इठलाना।
इतरेतर–(सं० वि०)अन्योन्य, परस्पर।
इतवार–(हिं० पुं०) आदित्यवार, रविवार।
इति–(सं० अव्य०) समाप्ति-सूचक अव्यय; (स्त्री०) पूर्णता, समाप्ति। इतिकर्तव्य–नियमानुसार। इतिकर्तव्यता–धर्म।
इतिमात्र–(सं० वि०)केवल, इतना ही।
इतिवृत्त–(सं० पुं०) कथा, कहानी।
इतिहास–(सं० पुं०) घटनाओं का कालक्रम के अनुसार वर्णन, प्राचीन आख्यान।
इतेक–(हिं० वि०) इतना ही।
इतो–(हिं०वि०) इतना, इस मात्रा में।
इत्ता–(हिं० वि०) देखो इतना।
इत्यादि–(सं० अव्य०) इसी प्रकार, यही, सब, अन्य। इत्यादिक–(सं०) इसी प्रकार से दूसरा।
इत्युक्त–(सं० वि०) ऐसा कहा हुआ।
इदं–(सं० सर्व०) यह।
इदानीं–(सं० अव्य०) अधुना, अभी, अब।
इद्ध–(सं० वि०) दग्ध, जला हुआ।
इधर–(हिं० क्रि०वि०) यहाँ, इस ओर, में, वहाँ, चारों ओर।
इन–(हिं० सर्व०) 'इस' का बहुवचन।
इनारा–(हिं० पुं०) कूप, कुआँ।
इनेगिने–(हिं० क्रि० वि०) अल्प, थोड़े।
इन्दिया–(हिं० पुं०) मत, अभिप्राय।
इन्दु–(सं० पुं०) चन्द्रमा, कर्पूर।
इन्द्र–(सं० पुं०) देवताओं के राजा। इन्द्रगोप–(सं० पुं०) बीरबहूटी नाम का कीड़ा। इन्द्रचाप–(सं० पुं०) इन्द्रधनुष। इन्द्रजाल–(सं० पुं०) छल, धोखा, माया, बाजीगरी। इन्द्रदमन–(सं० पुं०) नदी में बाढ़ आने पर इसका किसी निर्धारित स्थान पर पहुँचना। इन्द्रधनुष–(सं० पुं०) देखो इन्द्रचाप। इन्द्रवज्रा–(सं०स्त्री०)एक छन्द जिसमें चार पद होते हैं और प्रत्येक पद में ग्यारह अक्षर होते हैं।
इन्द्रवधू–(सं० स्त्री०) बीरबहूटी नाम का कीड़ा।
इन्द्रिय–(सं० पुं०) शारीरिक शक्ति, बल, शरीर के अवयव।
इन्द्री–(हिं० पुं०) देखो इंद्रिय।
इन्धन–(सं० पुं०) आग जलाने की लकड़ी, तृण इत्यादि।

इभ–(सं० पुं०) हाथी।
इमरती–(हिं० स्त्री०) उड़द की पीठी की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।
इमली–(हिं० स्त्री०) एक बड़ा वृक्ष जिसके फल और पत्तियाँ खट्टी होती हैं।
इमि–(हिं० क्रि० वि०) इस प्रकार से।
इरषा–(हिं० स्त्री०) देखो ईर्षा।
इरा–(हिं० स्त्री०) भूमि, रात्रि, जल।
इला–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, वाक्य, गाय।
इलाची–(हिं० स्त्री०) देखो इलायची।
इल्ला–(हिं० पुं०) त्वचा के ऊपर निकला हुआ मसा।
इव–(सं० अव्य०) सदृश, तरह, समान।
इषण–(हिं० स्त्री०) प्रबल इच्छा।
इषिका–(सं० स्त्री०) रंगसाज की बाल की बनी हुई कूँची।
इषु–(सं० पुं०) बाण, तीर।
इष्ट–(सं० वि०) अभिलषित, वांछित; (पुं०) इष्ट देवता, कुल देवता, पति।
इष्टक–(सं० पुं०) इंट। इष्टका–(सं० स्त्री०) छोटी इंट।
इष्टजन–(सं० पुं०) प्रिय व्यक्ति।
इष्टि–(सं० स्त्री०) यज्ञ, अभिलाषा, इच्छा, संग्रह। इष्टिका–(सं० स्त्री०) इंट।
इस–(हिं० वि०) 'यह' शब्द का रूप विशेष जो विभक्ति जुटने पर 'इस' हो जाता है।
इसीका–(हिं० सर्व०) 'यह' का संबंध कारक।
इसे–(हिं० वि०) इसको, इसके लिये।
इस्तिरी–(हिं० स्त्री०) कपड़े की तह जमाने का साधन; (हिं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
इहकाल–(सं० पुं०) वर्तमान समय।
इहलोक–(सं० पुं०) यह संसार।
इहाँ–(हिं० क्रि०) यहाँ, इस स्थान में।
इहागत–(सं० पुं०) यहाँ पर आया हुआ।

ई

ई–हिन्दी वर्णमाला का चौथा स्वर वर्ण, यह इकार का दीर्घ रूप है।
ईंगुर–(हिं० पुं०) सिन्दूर।
ईंघे–(हिं० क्रि० वि०) इस ओर।
ईंचना–(हिं० क्रि०) खींचना, ऐंठ लेना।
ईंट–(हिं० स्त्री०) साँचे में गीली मिट्टी को दबाकर बनाया हुआ टुकड़ा जो भीत इत्यादि बनाने के काम में आता है, ताश का एक रंग।
ईंटा–(हिं० पुं०) देखो ईंट।
ईंडवा–(हिं० पुं०) गेंडुरी जिसको सिर पर रखकर लोग बोझ उठाते हैं।
ईंडवी–(हिं० स्त्री०) पगड़ी।
ईंडरी, ईंडुरी-(हिं० स्त्री०) गेंडुरी।
ईंढ़–(हिं० वि०) सदृश, बराबर।
ईंदूर–(हिं० पुं०) चूहा, मूसा।
ईंधन–(हिं० पुं०) इन्धन, जलाने की लकड़ी।
ईकार–(सं० पुं०) चतुर्थ वर्ण "ई"।
ईक्षक–(सं० पुं०) देखनेवाला मनुष्य।
ईक्षण–(सं० पुं०) दर्शन, देखना, आँख, जाँच, विचार।
ईख–(हिं० स्त्री०) इक्षु, गन्ना, ऊख।
ईखना–(हिं० क्रि०) देखना।
ईछना–(हिं० क्रि०) इच्छा करना।
ईंछा–(हिं० स्त्री०) देखो इच्छा।
ईजति–(हिं० स्त्री०) मर्यादा, मान।
ईठ–(हिं० पुं०) इष्ट, मित्र। ईठना–(हिं० क्रि०) इच्छा करना।
ईठि–(हिं० स्त्री०) देखो इष्टि, प्रीति, चेष्टा, यत्न।

ईड़ा–(सं० स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।
ईढ़, ईढ़ा–(हिं० पुं०) हठ।
ईढ़ी–(हिं० वि०) हठी।
ईतर–(हिं० पुं०) इतरानेवाला।
ईति–(सं० स्त्री०) झगड़ा, छूत का रोग, खेती को हानि पहुँचानेवाली आपत्ति, पीड़ा, कष्ट, दुःख।
ईप्सा–(सं०स्त्री०) अभिलाषा, वांछा, इच्छा
ईप्सित–(सं० वि०) वांछित।
ईरषा–(हिं० स्त्री०) देखो ईर्षा।
ईरित–(सं० वि०) प्रेरित, कहा हुआ।
ईर्षा–(सं० स्त्री०) क्रोध, डाह। ईर्षालु-(सं० वि०) ईर्षा करनेवाला, डाह करनेवाला।
ईर्षी–(सं० वि०) डाह रखनेवाला।
ईश–(सं० वि०) अधिकारयुक्त, प्रधान, बड़ा; (पुं०) स्वामी, नेता, राजा।
ईशान–(सं० पुं०) प्रभु, पूरब और उत्तर के बीच की दिशा।
ईश्वर–(सं० पुं०) शिव, ब्रह्मा, स्वामी, मालिक।
ईश्वरी–(सं० स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती; (वि०) दैवी।
ईषणा–(सं० स्त्री०) त्वरा, शीघ्रता।
ईषत्–(सं० अव्य०) अल्प, किंचित्, थोड़ा।
ईषत्स्पृष्ट–(सं० वि०) थोड़ा छुआ हुआ; अर्धस्वर 'य, र, ल, व' के लिये प्रयुक्त होता है।
ईषदुष्ण–(सं० वि०) थोड़ा गरम, मन्दोष्ण
ईषद्धास–(सं० पुं०) मुसकुराहट।
ईषना–(हिं० स्त्री०) प्रबल इच्छा, एषणा।
ईस–(हिं० पुं०) ईश, ईश्वर।
ईसन–(हिं०) ईशान कोण।
ईसर–(सं० पुं०) ऐश्वर्य, महत्त्व।
ईहग–(सं० वि०) इच्छानुसार चलनेवाला।
ईहा–(सं० स्त्री०) उद्यम, व्यवसाय, वांछा, चेष्टा।
ईहित–(सं० वि०) अपेक्षित।

उ

उ–हिन्दी वर्णमाला का पांचवां स्वर वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है; (अव्य०) हां, ठीक भी; (पुं०) शिव, ब्रह्मा, मनुष्य।
उँ–(हिं० अव्य०) एक अव्यक्त उच्चारण जो मुख बन्द रहते ही किया जाता है, क्या, नहीं, अरे।
उँकोत–(हिं० वि०) वर्षाकाल में पैर के सड़ने का रोग।
उँगनी–(हिं० स्त्री०) गाड़ी के पहिये में तेल देने का काम।
उँगली–(हिं० स्त्री०) अँगुली।
उँघाई–(हिं० स्त्री०) निद्रा, झपकी।
उंचन–(हिं० पुं०) उदञ्चन, खाट की बिनावट कसने की डोरी, अदवाइन।
उंचना–(हिं० क्रि०) उंचन कसना, अदवाइन कसना।
उँचाई–(हिं० स्त्री०) उच्चता, विशिष्टता
उँचान–(हिं० पुं०) देखो उँचाई।
उँछ–(हिं० स्त्री०) कृषिफल काट लेने पर गिरे हुए दानों को बीनकर इकट्ठा करना।
उँजरिया–(हिं० स्त्री०) उँजेली, उँजियार; (हिं० पुं०) प्रकाश, उँजेला।
उँदर–(हिं० पुं०) चूहा।
उँह–(हिं० अव्य०) हाय, नहीं।
उअना–(हिं० क्रि०) उदय होना, निकलना।
उआना–(हिं० क्रि०) उठाना, जगाना।
उऋण–(हिं० वि०) ऋण-निर्मुक्त।

उकचना–(हिं० क्रि०) निकल जाना, अलग होना, दूर होना।
उकटना–(हिं० क्रि०) उखाड़ना, तोड़ना, ढूंढ़ना, भेद लेना।
उकटा–(हिं० वि०) बारम्बार उपकार को याद दिलानेवाला।
उकठना–(हिं० क्रि०) शुष्क होना, सूखना। उकठा–(हिं० वि०) शुष्क, सूखा हुआ।
उकड़ूँ–(हिं० पुं०) बैठने की एक मुद्रा।
उकताना–(हिं० क्रि०) उगताना, घबड़ाना।
उकति–(हिं० स्त्री०) देखो उक्ति।
उकलाना–(हिं० क्रि०) तह अलग होना, उचड़ना, उघड़ना।
उकवथ–(हिं० पुं०) उँकौत, एक प्रकार का चर्मरोग।
उकसना–(हिं० क्रि०) उछलना, फूलना, उभड़ना, निकलना।
उकसनि–(हिं० स्त्री०) उत्तेजना, घबड़ाहट।
उकसवाना–(हिं० क्रि०) निकलवा देना।
उकसाई–(हिं० क्रि०) निकसवाई, हटवाई।
उकसाना–(हिं० क्रि०) उभाड़ना, चढ़ाना, आगे बढ़ाना, सुलगाना, छेड़ना।
उकारान्त–(सं० वि०) जिस शब्द के अन्त में उकार हो।
उकारना–(हिं० क्रि०) देखो उकेलना।
उकासना–(हिं०क्रि०) उभाड़ना, खोलना।
उकीरना–(हिं०क्रि०) खोदना, उखाड़ना।
उकुति–(हिं० स्त्री०) देखो उक्ति।
उकुसना–(हिं० क्रि०) उजाड़ना, उधेड़ना।
उकेलना–(हिं० क्रि०) परत अलगाना; उधेड़ना।
उकेला–(हिं० पुं०) रस्से की ऐंठन, परत।
उकौना–(हिं० पुं०) गर्भिणी स्त्री की लालसा, दोहद।
उक्त–(सं० वि०) कथित, कहा हुआ।
उक्ति–(सं०स्त्री०) कथन, वचन, निर्देश।
उखड़ना–(हिं० क्रि०) निर्मूल होना, गिरना, रुकना, लड़खड़ाना, लुप्त होना, भागना, बेसुरा हो जाना।
उखम–(हिं०पुं०) उष्म, गरमी, ताप।
उखमज–(हिं०वि०) उष्मज, गरमी से उत्पन्न; (पुं०) उपद्रव।
उखली–(हिं०स्त्री०) पत्थर या लकड़ी का वह पात्र जिसमें अन्न डालकर मूसल से कूटकर इसकी भूसी अलगाई जाती है।
उखाड़–(हिं० पुं०) उखाड़ने का काम, छिन्न-भिन्न करना, अलग करना, भगाना, हटाना, नष्ट करना. भड़काना, असन्तुष्ट करना।
उगटना–(हिं०क्रि०) उधेड़ना, उपहास करना।
उगदना–(हिं०क्रि०) बोलना, कहना।
उगना–(हिं० क्रि०) प्रकट होना, देख पड़ना, जमना, उपजना।
उगलना–(हिं० क्रि०) गुप्त बात को प्रकट करना, वान्ति करना।
उगलाना–(हिं० क्रि०) मुंह से बाहर निकलवाना, दोष स्वीकार करवाना।
उगवाना–(हिं०क्रि०) उत्पन्न कराना।
उगाना–(हिं० क्रि०) उपजाना, प्रकट कराना।
उगार, उगाल–(हिं०पुं०) थूक, खखार।
उगाहना–(हिं० क्रि०) किसानों से अन्न-कर इत्यादि अलग-अलग लेकर इकट्ठा करना।
उगिलना, उगिलवाना–देखो उगलवाना।

उग्र–(सं०वि०) उत्कट, प्रचण्ड, गरम।
उग्रह–(सं० पुं०) उद्धार।
उघटना–(हिं०क्रि०) उद्घाटन करना, खोलना।
उघटा–(हिं० वि०) उद्घाटन करनेवाला, उपकार को बारंबार कहनेवाला।
उघड़ना–(हिं०क्रि०) खुलना, नंगा हो जाना, प्रकाशित होना।
उघाई–(हिं० स्त्री०) कर का संग्रह।
उघाड़ना–(हिं०क्रि०) खोलना, कपड़ा उतार देना।
उघाड़ी–(हिं०वि०) प्रकट, प्रकाशित।
उघाना–(हिं०क्रि०) कर संग्रह करना।
उघारना–(हिं०क्रि०) देखो उघाड़ना।
उघारा–(हिं०वि०) खुला हुआ, नंगा।
उङ्गल–(हिं० पुं०) देखो अंगुल।
उचकन–(हिं०पुं०) आड़, टेक, उठगन।
उचकना–(हिं० क्रि०) छीनना, ले भागना, कूदना, उछलना।
उचकाना–(हिं० क्रि०) पंजों के बल खड़ा करना, भागना, ऊपर की ओर करना।
उचक्का–(हिं०पुं०) धूर्त, वंचक, ठग।
उचटना–(हिं० क्रि०) अलग होना, गिरना, भड़कना, विरक्त होना।
उचटाना–(हिं० क्रि०) अलग करना, घुमाना, हताश करना, भड़काना।
उचड़ना–(हिं०क्रि०) सटी हुई वस्तु का अलग होना।
उचरना–(हिं०क्रि०) उच्चारण करना, बोलना।
उचराना–(हिं०क्रि०) कहलाना, उचड़वाना।
उचाट–(हिं० वि०) विरक्त, श्रान्त, खिन्न, हताश।
उचाटन–(हिं० पुं०) देखो उच्चाटन।
उचाटना–(हिं०क्रि०) उच्चाटन करना।
उचाड़ना–(हिं०क्रि०) उखाड़ना, नोचना
उचारक–(हिं०क्रि०) उच्चारण करनेवाला।
उचारन–(हिं० पुं०) देखो उच्चारण।
उचावा–(हिं० पुं०) स्वप्न में बकझक।
उचित–(सं०वि०) योग्य, कर्त्तव्य, व्यवस्थित।
उचेड़ना, उचेलना–देखो उचाटना।
उचौंहाँ–(हिं० वि०) उभड़ा हुआ।
उच्च–(सं०वि०) उन्नत, ऊँचा, श्रेष्ठ।
उच्चण्ड–(सं० वि०) तीव्र।
उच्चतम–(सं०वि०) सबसे ऊँचा।
उच्चतर–(सं०वि०) दो पदार्थों में ऊँचा।
उच्चरण–(सं० पुं०) बाहर आने का कार्य, कथन।
उच्चलित–(सं० वि०) ऊपर पहुँचा हुआ।
उच्चाट–(सं० वि०) देखो उच्चाटन।
उच्चाटन–(सं० पुं०) उखाड़, नोच-खसोट।
उच्चार–(सं० पुं०) उच्चारण, कथन।
उच्चारण–(सं०पुं०) कथन, शब्द प्रयोग।
उच्चावच–(सं० वि०) ऊँचनीच, भला-बुरा।
उच्छन्न–(सं०वि०) नष्ट, उजाड़ा हुआ।
उच्छलन–(सं० पुं०) उछाल।
उच्छव–(हिं०पुं०) देखो उत्सव, उत्साह।
उच्छास–(हिं०पुं०) देखो उच्छ्वास।
उच्छाह–(हिं०पुं०) देखो उत्साह।
उच्छिन्न–(सं०वि०) जड़ सहित उखाड़ा हुआ।
उच्छिष्ट–(सं०वि०) जूठा, दूसरे के व्यवहार में लाया हुआ; (पुं०) जूठा पदार्थ।
उच्छृंखल–(सं० वि०) निरंकुश, उद्दण्ड।

उच्छेद, उच्छेदन–(सं०पुं०) उत्पाटन, उखाड़।
उच्छ्वसित–(सं० वि०) विकसित, कम्पित, हाँफता हुआ।
उच्छ्वास–(सं० पुं०) ऊपर को खींची हुई श्वास, विकास, अध्याय।
उछंग–(हिं० पुं०) उत्सङ्ग, गोद, हृदय।
उछलना–(हिं० क्रि०) फलांग मारना, फाँदना।
उछार, उछाल–(हिं० स्त्री०) कूद-फाँद, उत्तेजना, क्रोध, उलटी, वमन।
उछालना–(हिं० क्रि०) ऊपर की ओर फेंकना।
उछाव–(हिं० पुं०) देखो उत्साह।
उछास–(हिं० पुं०) देखो उच्छ्वास।
उछाह–(हिं० पुं०) देखो उत्साह।
उजड–(हिं० वि०) देखो उजड्ड।
उजड़ना–(हिं०क्रि०) जड़ से उखड़ना, सूख जाना, नष्ट हो जाना, जनशून्य होना।
उजड़ा–(हिं० वि०) नष्ट, अधम।
उजड्ड–(हिं० वि०) असभ्य, अशिष्ट।
उजला–(हिं० वि०) उज्ज्वल, दीप्तिमान्।
उजागर–(हिं० वि०) दीप्तिमान्, प्रकाशित, विख्यात।
उजाड़–(हिं० वि०) निर्जन, जंगली; (पुं०) उजड़ा हुआ स्थान।
उजाड़ना–(हिं० क्रि०) उखाड़ना, नाश करना।
उजाला–(हिं० पुं०) प्रकाश, दिन।
उजेरा, उजेला–(हिं० पुं०) प्रकाश।
उज्जर, उज्जल–(हिं० वि०) उज्ज्वल, श्वेत।
उज्ज्वल–(सं० वि०) चमकीला, विमल।
उज्झड़–(हिं० वि०) नितान्त मूढ़।
उझलना–(हिं० क्रि०) एक पात्र से दूसरे पात्र में ऊपर से गिराना, बढ़ाना, उमड़ उठना।
उटकनाटक–(हिं०वि०) अद्भुत, अनोखा।
उटंग–(हिं० वि०) बुरी तरह से काटा-छाँटा हुआ।
उटज–(सं० पुं०) पर्णशाला, झोपड़ी।
उटँगन–(हिं० पुं०) आड़, टेक, थूनी।
उटँगना–(हिं० क्रि०) आश्रय लेना, टेकना।
उठंगल–(हिं० वि०) मन्द, मूर्ख।
उठती–(हिं० वि०) चढ़ती, बढ़ती, जोतने बोने योग्य।
उठना–(हिं० क्रि०) आरम्भ होना, निकलना, उगना, उभड़ आना, जागना, उबलना, देख पड़ना, फैलना, किराये पर दिया जाना, स्थापित होना, पूर्ण होना, छोड़ना, किसी प्रथा का दूर होना, व्यय होना, बिकना।
उठल्लू–(हिं० वि०) एक स्थान पर न रहनेवाला, बिना प्रयोजन इधर से उधर घूमनेवाला।
उठान–(हिं० पुं०) उभाड़, चढ़ाव, वृद्धि, यौवन की अवस्था, बनावट, आरंभ।
उठाना–(हिं० क्रि०) ऊँचा करना, स्थापित करना, चुनना, खोलना, सहना, लगाना, बन्द करना, भड़काना। उठा न रखना–कसर न छोड़ना।
उठाव–(हिं० पुं०) देखो उठान।
उठौवा–(हिं० वि०) उठाने योग्य।
उड़–(हिं० पुं०) तारा।
उड़द–(हिं० पुं०) माष, एक अन्न जिसकी दाल खाई जाती है।
उड़न–(हिं० स्त्री०) उड़ान, उड़न का कार्य। उड़नखटोला–(हिं०पुं०) वायुयान। उड़नगोला–(हिं० पुं०) उड़ने

वाला गोला। उड़नछू-(हिं० वि०) देख न पड़नेवाला।

उड़ना-(हिं० क्रि०) आकाश में पर की सहायता से चलना, हवा में ऊपर की ओर उठना, शीघ्र दौड़ना, भागना, समाप्त होना, बहाना करना, व्यय होना।

उड़वाना-(हिं० क्रि०) उड़ाने का काम दूसरे से कराना।

उड़सना-(हिं०क्रि०) ठूंसना, भरना।

उड़ांक-(हिं०) देखो उड़ाकू।

उड़ाऊ-(हिं० वि०) उड़नेवाला, अधिक व्यय करनेवाला।

उड़ाकू, उड़ाका-(हिं०वि०) उड़नेवाला; (पुं०) वायुयान चलानेवाला।

उड़ान-(हिं० पुं०) उड़ने का कार्य, छलांग।

उड़ाना-(हिं० क्रि०) उड़ने में प्रवृत्त करना, हवा में फैलना, भगा ले जाना, व्यय कर देना, हटाना, चुराना।

उडु-(सं० स्त्री०) नक्षत्र, तारा, पक्षी।

उडुपति-(सं० पुं०) चन्द्रमा, झगड़ा।

उड़ुस-(हिं० पुं०) मत्कुण, खटमल।

उढ़कन-(हिं० स्त्री०) आश्रय, सहारा।

उढ़री-(हिं० स्त्री०) उपपत्नी, रखनी।

उत-(हिं० क्रि० वि०) उधर, उस ओर, वहाँ।

उतंग-(हिं० वि०) ऊँचा, बड़ा।

उतन-(हिं०क्रि०वि०) उस ओर, उधर।

उतपन्न-(हिं० वि०) देखो उत्पन्न।

उतपात-(हिं० पुं०) उत्पात।

उतरंग-(हिं० पुं०) द्वार के ऊपरी ढाँचे पर रक्खी जानेवाली लकड़ी।

उतरन-(हिं० स्त्री०) वस्त्र जो पहिनते-पहिनते जीर्ण हो गया हो।

उतरना-(हिं०क्रि०) ऊँचे स्थान से नीचे को आना, नदी-नालापार करना, निगल जाना, घटना, कुम्हलाना, वृद्ध होना, समाप्त होना, शरीर के जोड़ का हटना, अवतार लेना।

उतरहा-(हिं०वि०) उत्तर संबंधी, उत्तरी।

उतरिन-(हिं०वि०) उतृण, ऋणमुक्त।

उतसाह-(हिं० पुं०) देखो उत्साह।

उतान-(हिं० वि०) औंधा, चित्त।

उतायल-(हिं० पुं०) त्वरा, शीघ्रता।

उतार-(हिं० पुं०) ऊपर से नीचे आने का कार्य, घटाव, मूल्य का कम होना, समुद्र का भाटा, पानी में हलकर पार करने का स्थान। **उतारन**- (हिं० पुं०) पहिना हुआ वस्त्र जो पुराना हो गया हो। **उतारना**-(हिं० क्रि०) ऊपर से नीचे को लाना, लिखना, अर्क खींचना, नदी पार ले जाना। **उतारा**-(हिं० पुं०) प्रेत-बाधा या ग्रह-शांति के लिये कुछ पदार्थ किसी के शरीर के चारों ओर घुमाकर चौराहे या नदी किनारे ले जाकर रखना।

उतारू-(हिं०वि०) उतरनेवाला, उद्यत।

उतावल-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता; (क्रि० वि०) शीघ्रता से। **उतावला**-(हिं० वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ। **उतावली**-(हिं० स्त्री०) शीघ्रता, व्यग्रता।

उतृण-(हिं० वि०) ऋणमुक्त।

उत-(हिं० क्रि० वि०) उधर, वहाँ पर।

उत्कट-(सं० वि०) तीव्र, व्यग्र, अधिक, विकट।

उत्कण्ठा-(सं० स्त्री०) उत्सुकता, तीव्र अभिलाषा।

उत्कर्ष-(सं० पुं०) श्रेष्ठता, वृद्धि, प्रशंसा, अधिकता।

उत्कीर्ण-(सं०वि०) लिखा हुआ, खोदा हुआ।

उत्कृष्ट–(सं० वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
उत्कोच–(सं० पुं०) उपायन, घूस।
उत्क्रम–(सं० पुं०) व्यतिक्रम, विपरीत भाव।
उत्क्रान्त–(सं०वि०) उभड़ा हुआ, लांघा हुआ।
उत्क्षिप्त–(सं० वि०) उछाला हुआ।
उत्तंस–(सं०पुं०) कान का एक आभूषण।
उत्तप्त–(सं०वि०) तपा हुआ, गरम।
उत्तम–(सं० वि०) उत्कृष्ट, श्रेष्ठ। उत्तम पद–(सं० पुं०) ऊँचा स्थान या पद। उत्तम पुरुष–(सं० पुं०) श्रेष्ठ मनुष्य, व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष के लिये प्रयुक्त होता है।
उत्तमर्ण–(सं०पुं०) ऋणदाता, महाजन।
उत्तमाङ्ग–(सं० पुं०) मस्तक, सिर।
उत्तमोत्तम–(सं०वि०) अच्छा से अच्छा।
उत्तर–(सं० पुं०) प्रतिवाक्य; (वि०) ऊँचा, बड़ा; (क्रि० वि०) पीछे, बाद में; (सं० स्त्री०) दक्षिण के सामने की दिशा।
उत्तरदाता–(सं० पुं०) जिसको किसी कार्य के बिगड़ने पर भले-बुरे का उत्तर देना पड़े। उत्तरदायित्व–(सं० पुं०) भारवाहिता। उत्तरदायी–(सं०वि०) भारवाहक।
उत्तराधिकार–(सं० पुं०) सम्पत्ति का क्रमिक स्वत्व, बपौती। उत्तरायण–(सं० पुं०) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन। उत्तरार्ध–(सं० पुं०) पीछे का आधा। उत्तरीय–(सं० पुं०) उपरना, ओढ़नी, चद्दर; (वि०) उत्तर दिशा संबंधी।
उत्तरोत्तर–(सं० वि०) एक के बाद दूसरा; (अव्य०) क्रम-क्रम से।
उत्ता–(हिं० वि०) देखो उतना।
उत्तान–(सं०वि०) मुँह ऊपर किया हुआ।
उत्ताप–(सं० पुं०) उष्णता, गरमी, तपन, उत्तेजना।
उत्तीर्ण–(सं० वि०) पार गया हुआ, लाँघा हुआ, निकला हुआ, परीक्षा में सफल।
उत्तू–(हिं० पुं०) चुन्नन।
उत्तेजक–(सं० वि०) प्रोत्साहक, उसकानेवाला। उत्तेजन, उत्तेजना–(सं० पुं० स्त्री०) प्रोत्साहन, भड़काव, बढ़ाव।
उत्तेजित–(सं०पुं०) प्रेरित, उभाड़ा हुआ।
उत्तोलन–(सं० पुं०) उठाव, चढ़ाव, तौलना।
उत्थान–(सं० पुं०) उन्नति, उठाव, निकास।
उत्थित–(सं० बि०) निकला हुआ, फैला हुआ।
उत्पत्ति–(सं० स्त्री०) जन्म, उपज, आरम्भ।
उत्पन्न–(सं०वि०) जन्मा हुआ, प्राप्त।
उत्पल–(सं० पुं०) पद्म, कमल।
उत्पात–(सं० पुं०) अशुभ-सूचक दैवी दुर्घटना, उपद्रव।
उत्पादन–(सं० पुं०) उत्पन्न करना।
उत्प्रेक्षा–(सं० स्त्री०) उपेक्षा, आरोप, उलटा विचार, एक काव्यालंकार जिसमें प्रस्तुत वस्तु में अन्य प्रकार की संभावना की जाती है।
उत्सङ्ग–(सं० पुं०) अंक, गोद, पहाड़ की चोटी, ऊपरी भाग, संगम, आलिंगन।
उत्सव–(सं०पुं०) आनन्दजनक व्यापार, पर्व, त्योहार।
उत्साह–(सं०पुं०) हर्ष, कल्याण, उमंग।

उत्सुक–(सं० वि०) उत्कंठित।
उत्सृष्ट–(सं० वि०) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।
उत्सेक–(सं० पुं०) अहंकार, बुद्धि।
उथल–(हिं० वि०) तुच्छ, छिछोरा।
उथल-पुथल–(हिं० स्त्री०) उलट-पुलट।
उदंत–(हिं० पुं०) वृत्तान्त।
उद–(सं० अव्य०) यह शब्द "ऊपर, अभाव, दोष, उत्कर्ष, आश्चर्य, प्रकाश, शक्ति, प्राधान्यादि" अर्थ में उपसर्ग की तरह संज्ञा या क्रिया के पहिले लगता है।
उदउ–(हिं० पुं०) देखो उदय।
उदक–(सं० पुं०) जल, पानी, हाथी।
उदकना–(हिं० क्रि०) निकलना, कूदना।
उदग्ग–(हिं० वि०) उदग्र, उद्धत।
उदग्र–(सं० वि०) विशाल, ऊँचा, उद्धत।
उदजन–अंग्रेजी हाइड्रोजन के लिये पर्याय।
उदधि–(सं० पुं०) समुद्र, झील।
उदबस–(हिं० वि०) शून्य, सूना, उजाड़।
उदबसना–(हिं० वि०) उजाड़ देना, भगा देना।
उदबासना–(हिं० क्रि०) उजाड़ना, भगा देना।
उदभट–(हिं० वि०) प्रबल, श्रेष्ठ।
उदभव–(हिं० पुं०) देखो उद्भव।
उदमाद–(हिं० पुं०) देखो उन्माद।
उदय–(सं० पुं०) मंगल, लाभ, उन्नति, वृद्धि।
उदर–(सं० पुं०) जठर, पेट। उदर-ज्वाला–जठराग्नि, भूख।
उदरना–(हिं० क्रि०) ओदरना, टुकड़े-टुकड़े होना। उदर-परायण–(सं० वि०) पेटू, भुक्खड़। उदर-पिशाच–(सं० वि०) सर्वान्न-भक्षक।
उदवेग–(हिं० पुं०) देखो उद्वेग।
उदात्त–(सं० वि०) ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ, दाता; (पुं०) मुख के अर्धभाग से उच्चारण किया हुआ स्वर।
उदायन–(हिं० पुं०) उद्यान, बगीचा।
उदार–(सं० वि०) दाता, श्रेष्ठ, सरल, सीधा, महात्मा, शिष्ट, अनोखा।
उदारना–(हिं० क्रि०) ओदारना, गिराना।
उदास–(सं० वि०) उदासीन, दुःखी, निरपेक्ष, तटस्थ।
उदासी–(सं० पुं०) विरक्त पुरुष, संन्यासी, त्यागी; (सं० वि०) वैरागी, तटस्थ, निष्पक्ष।
उदाहरण–(सं० पुं०) दृष्टान्त।
उदित–(सं० वि०) उन्नत, उठा हुआ।
उदीची–(सं० स्त्री०) उत्तर दिशा।
उदुम्बर–(सं० पुं०) गूलर, देहली, चौखट।
उदै, उदो–(हिं० पुं०) देखो उदय।
उद्गत–(सं० वि०) उत्पन्न, उदित, निकला हुआ।
उद्गम–(सं० पुं०) उत्थान, उत्पत्ति का स्थान, ऊर्ध्वगति।
उद्गार–(सं० पुं०) वमन, डकार, टपकाव, थूक, उच्चारण, बढ़ती।
उद्घटन–(सं० पुं०) आघात, रगड़। उद्घटित–(सं० वि०) उन्मुक्त, खुला हुआ। उद्घाट–(सं० पुं०) पहरा, चौकी, चुंगीघर। उद्घाटन–(सं० पुं०) प्रकाशन, खोलाई। उद्घाटित–(सं० वि०) प्रकाशित, खोला हुआ।
उद्दण्ड–(सं० वि०) प्रचण्ड, बखेड़िया, उद्धत।
उद्दाम–(सं० वि०) निरंकुश, उद्दण्ड, स्वतंत्र, बड़ा, असीम।
उद्दिष्ट–(सं० वि०) लक्ष्य किया हुआ।

उद्दीपक–(सं० वि०) उत्तेजक।
उद्दीपन–(सं० पुं०) उत्तेजन, बढ़ावा।
उद्देश–(सं० पुं०) लक्ष्य, अनुसन्धान, हेतु।
उद्देश्य–(सं० पुं०) उत्पत्ति, वृद्धि, जन्म।
उद्भास–(सं० वि०) प्रकाश, चमक, शोभा।
उद्भिज्, उद्भिज्ज–(सं० वि०) भूमि को भेदकर जन्म लेनेवाली, वनस्पति, वृक्ष, लता इत्यादि।
उद्भूत–(सं० वि०) ऊँचा देख पड़नेवाला
उद्भ्रान्त–(सं० वि०) व्याकुल, भौचक्का, हतबुद्धि।
उद्यत–(सं० वि०) प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ।
उद्यम–(सं० पुं०) उद्योग, प्रयत्न, उत्साह व्यवसाय। उद्यमी–(सं० वि०) उद्योगी तत्पर।
उद्यान–(सं० पुं०) बगीचा, उपवन।
उद्यापन–(सं० पुं०) आरंभ, किसी व्रत के समाप्त होने पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।
उद्योग–(सं० पुं०) प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, उद्यम।
उद्वर्तन–(सं० पुं०) विलेपन, उबटन।
उद्वाह–(सं० पुं०) विवाह।
उद्विग्न–(सं० वि०) व्याकुल, चिन्तित, व्यग्र।
उद्वेग–(सं० पुं०) चित्त की व्याकुलता, चिन्ता, भय।
उघड़ना–(हिं० क्रि०) उचड़ना, खुलना, उजड़ना, छट जाना, नष्ट होना।
उधर–(हिं० क्रि० वि०) वहाँ, उस ओर।
उधरना–(हिं० क्रि०) छूटना, अलग होना
उधार–(हिं० पुं०) ऋण, देन, मँगनी।
उधेड़ना–(हिं० क्रि०) खोलना, परत अलगाना।

उन–(हिं० सर्वं०) 'उस' का बहुवचन।
उनका–'उन' की षष्ठी का रूप।
उनचास–(हिं० वि०) चालीस और नव; (पुं०) चालीस और नव की संख्या ४९।
उनतीस–(हिं० वि०) एक कम तीस; (पुं०) बीस और नव की संख्या २९।
उनदा, उनदौंहाँ–(हिं० वि०) निंदाता हुआ
उनमद–(हिं० वि०) देखो उन्मत्त।
उनमाद–(हिं० पुं०) देखो उन्माद।
उनमान–(हिं० वि०) अटकल, सदृश, बराबर; (पुं०) नाप, तौल, बल, सामर्थ्य।
उनमेख–(हिं० पुं०) उन्मेष, आँख खुलना, फूल का खिलना।
उनसठ–(हिं० वि०) पचास और नव; (पुं०) पचास और नव की संख्या ५९।
उनहत्तर–(हिं० वि०) साठ और नव; (पु०) साठ और नव की संख्या ६९।
उनहार–(हिं० वि०) सदृश, समान, बराबर।
उनहारि–(हिं० स्त्री०) समानता, सादृश्य।
उनाना–(हिं० क्रि०) झुकाना, मोड़ना।
उनींदा–(हिं० वि०) उन्निद्र, ऊँघता हुआ।
उन्नइस–(हिं० वि०) देखो उन्नीस।
उन्नत–(सं० वि०) ऊँचा, उठा हुआ, बड़ा, उठाया हुआ। उन्नति–(सं० स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, ऊँचाई, उभाड़, प्रतिष्ठा, सौभाग्य।
उन्नतोदर–(सं० पुं०) चाप या वृत्तखण्ड का ऊपरी तल, वह वस्तु जिसका ऊपरी भाग उभड़ा हो।
उन्नमन–(सं० पुं०) उन्नति, उठाव।
उन्नासी–(हिं० वि०) सत्तर और नव; (पुं०) एक कम अस्सी की संख्या ७९।
उन्निद्र–(सं० वि०) निद्रारहित, जागता हुआ।

उन्नीस–(हिं० वि०) दस और नव; (पुं०) एक कम बीस की संख्या १९।
उन्मत्त–(सं०वि०) मदान्ध, मतवाला।
उन्माद–(सं०पुं०) उन्मत्तता, पागलपन।
उन्मान–(सं० पुं०) परिमाण, मूल्य।
उन्मीलन–(सं० पुं०) विकसित होना, खिलना।
उन्मूलन–(सं० पुं०) जड़ से उखाड़ना।
उप–(सं०अव्य०) संज्ञा तथा क्रिया में लगाने से अधिकता, समीपता, सादृश्य, सामर्थ्य, व्याप्ति, शक्ति, पूजा, मारण तथा उद्योग के अर्थ को प्रकाशित करता है
उपकण्ठ–(सं० वि०) निकट, पास।
उपकथा–(सं० स्त्री०) आख्यायिका, कहानी।
उपकरण–(सं०पुं०) सामग्री, सामान।
उपकार–(सं० पुं०) साहाय्य, अनुग्रह, लाभ।
उपक्रम–(सं० पुं०) कार्य का आरंभ, वृद्धि, भूमिका, उद्यम, परिस्थिति। उपक्रमणिका–(सं० स्त्री०) किसी पुस्तक की भूमिका।
उपचय–(सं०पुं०) वृद्धि, उन्नति, अधिकता, पुष्टि, संग्रह, समूह।
उपचर्या–(सं०स्त्री०) चिकित्सा, परिचर्या, सेवा।
उपचार–(सं० पुं०) चिकित्सा, सेवा, व्यवहार, प्रयोग।
उपज–(हिं०स्त्री०) उत्पत्ति, नई उक्ति।
उपजाऊ–(हिं० वि०) जिसमें अधिक उपज हो, उर्वरा।
उपजीवक–(सं० वि०) जीविका चलानेवाला, आश्रय देनेवाला।
उपटन–(हिं० पुं०) चिह्न,साट; देखो उबटन। उपटना–(हिं० क्रि०) उभड़ आना, बनना, हटना, नष्ट होना।
उपटा–(हिं० वि०) नष्ट भ्रष्ट; (पुं०) ठोकर, धक्का।
उपत्यका–(सं०स्त्री०) पहाड़ के नीचे की भूमि, घाटी।
उपदिशा–(सं० स्त्री०) दो दिशाओं के बीच की दिशा।
उपदिष्ट–(सं०वि०) कहा हुआ, प्रदर्शित।
उपदेश–(सं० पुं०) परामर्श, आदेश, दीक्षा, शिक्षा, हित की बात, सीख, मन्त्र, कथन। उपदेशक–(सं० पुं०) उपदेश देनेवाला, शिक्षक।
उपद्रव–(सं० पुं०) उत्पात, अत्याचार, ऊधम, आपत्ति।
उपद्वीप–(सं०पुं०) छोटा टापू, प्रायद्वीप।
उपधा–(सं०स्त्री०) छल, धोखा, उपाय, उपाधि, व्याकरण के अनुसार, अन्त्य वर्ण के पूर्व का वर्ण।
उपधातु–(सं०पुं०) आठ प्रधान धातुओं के समान अन्य धातु।
उपधान–(सं० पुं०) शिरोधान, तकिया।
उप नक्षत्र–(सं० पुं०) सत्ताइस नक्षत्रों के छोटे-छोटे तारे।
उपनत–(सं०वि०) नम्र, झुका हुआ।
उपनति–(सं० स्त्री०) झुकाव, उपस्थिति।
उपनना–(हिं० क्रि०) उपजना, पैदा होना।
उपनय–(सं० पुं०) समीप पहुँचाने का कार्य, बालक को गुरु के पास ले जाने का कार्य, उपनयन संस्कार।
उपनाम–(सं० पुं०) उपाधि, पदवी, प्यार का नाम।
उपनिबन्ध–(सं० पुं०) रचना, बनावट, गूथन।
उपनिविष्ट–(सं० वि०) नई आबादी में आकर बसा हुआ।

उपनिवेश–(सं० पुं०) दूर देश से आकर नये स्थान में बसना, नगर के पास की छोटी बस्ती।
उपनीत–(सं० वि०) पास लाया हुआ, प्राप्त, उपस्थित, पहुँचा हुआ।
उपनेत्र–(सं० पुं०) आँख में लगाने का चश्मा।
उपन्यास–(सं० पुं०) वाक्य का प्रयोग, वाक्य को आरंभ करना, प्रस्ताव, विचार, धरोहर, रोचक कहानी, किस्सा।
उपपति–(सं० पुं०) दूसरे की स्त्री से प्रेम किया जानेवाला पुरुष, जार, यार।
उपपत्ति–(सं०स्त्री०) युक्ति, संगति, उपाय, सिद्धि, प्राप्ति, गणित शास्त्र के अनुसार प्रमाण, कारण।
उपपद–(सं० पुं०) लेश, समीप में उच्चारण किया हुआ पद, उपाधि।
उपपन्न–(सं० वि०) संस्कार-युक्त, सम्पन्न, उत्पन्न, प्राप्त।
उपपादन–(सं० पुं०) सिद्ध करना, ठहराना, सम्पादन।
उपप्लव–(सं० पुं०) आकाश से तारा टूटना, विप्लव, विपत्ति।
उपभुक्त–(सं० वि०) व्यवहार में लाया हुआ, जूठा, उच्छिष्ट।
उपभोग–(सं० पुं०) व्यवहार, सुख की सामग्री, किसी पदार्थ के व्यवहार का सुख।
उपमा–(सं० स्त्री०) तुलना, अर्थालंकार का एक भेद जिसमें साधारण धर्म-विशिष्ट भिन्न जाति की तुलना दो वस्तुओं में दिखाई जाती है।
उपमाता–(सं० स्त्री०) धाय, बच्चे को दूध पिलानेवाली स्त्री।
उपमान–(सं० पुं०) सादृश्य, बराबरी।
उपमित–(सं० वि०) जिसकी उपमा दी गई हो। **उपमेय**–(सं०वि०) जिसकी उपमा दी जावे।
उपयुक्त–(सं० वि०) योग्य, उचित।
उपयोग–(सं० पुं०) व्यवहार, काम, योग्यता, आवश्यकता, प्रयोजन।
उपयोगी–(सं० वि०) योग्य, अनुकूल, उपकारी, लाभकारी।
उपरति–(सं० स्त्री०) विरति, त्याग, संन्यास, मृत्यु।
उपरत्न–(सं० पुं०) कम मूल्य के रत्न।
उपरना–(हिं० पुं०) ऊपरी वस्त्र, डुपट्टा, चादर; (क्रि०) उखड़ना।
उपरवार–(हिं० स्त्री०) उच्च भूमि।
उपराँठा–(हिं० पुं०) पराँठा, घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई रोटी।
उपरा–(हिं० पुं०) गोल उत्पल, उपला।
उपरान्त–(सं० अव्य०) अनन्तर, बाद, पीछे।
उपरी–(हिं० स्त्री०) छोटी गोल गोहरी, उपली; (वि०) ऊपरी।
उपरूपक–(सं० पुं०) एक छोटा नाटक।
उपरुक्त–(हिं० वि०) पहिले कहा हुआ।
उपरोध–(सं० पुं०) आवरण, ढपना, प्रतिबन्ध, रोक, अनुरोध।
उपरौंछा–(हिं०क्रि० वि०) ऊपर की ओर।
उपरौटा–(हिं० पुं०) ऊपरी भाग, ऊपरी पल्ला।
उपरौठा–(हिं० वि०) ऊपर का, ऊपरी।
उपर्युक्त–(हिं० वि०) ऊपर कहा हुआ।
उपल–(सं० पुं०) पत्थर, रत्न।
उपलब्ध–(सं० वि०) प्राप्त, मिला हुआ।
उपलब्धि–(सं० स्त्री०) ज्ञान, प्राप्ति; अनुमान।
उपला–(हिं० पुं०) गोहरा, कण्डा।
उपल्ला–(हिं० पुं०) ऊपरीभाग या तह।

उपवन–(सं० पुं०) छोटा जंगल, उद्यान, बगीचा।

उपवसथ–(सं० पुं०) ग्राम, गाँव।

उपवास–(सं० पुं०) भोजन का अभाव, अनशन, वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता।

उपविष–(सं० पुं०) हल्का विष।

उपविष्ट–(सं० वि०) बैठा हुआ।

उपवीत–(सं० पुं०) बायें कन्धे पर रक्खा हुआ यज्ञ-सूत्र, जनेऊ।

उपवेश–(सं० पुं०) स्थिति, बैठक।

उपशम–(सं० पुं०) निवृत्ति, छुटकारा।

उपशिष्य–(सं० पुं०) शिष्य का शिष्य।

उपस–(हिं० स्त्री०) दुर्गन्ध; उपासना–(हि० क्रि०) दुर्गन्धि होना, सड़ जाना।

उपसागर–(सं०पुं०) छोटा समुद्र, खाड़ी।

उपसाना–(हिं० क्रि०) बासी बनाना, सड़ाना।

उपस्थ–(सं० पुं०) नीचे का भाग, मेढ़, योनि, मलद्वार, अंक, गोद, पेड़ू, स्थिति।

उपस्थान–(सं० पुं०) उपस्थिति आगमन, उपासना, पूजा के निमित्त निकट आना।

उपस्थित–(सं० वि०) समीप का, पास आया हुआ, प्राप्त, वर्तमान, याद किया हुआ।

उपस्थिति–(सं० स्त्री०) उपस्थान, उपासना, स्मृति, पहुँच, वर्तमानता, याददाश्त।

उपहार–(सं० पुं०) भेंट, आहुति, सम्मान।

उपहास–(सं० पुं०) निन्दा-सूचक हास, हँसी, ठट्ठा।

उपही–(हिं० पुं०) अन्य देश का पुरुष, अपरिचित मनुष्य।

उपाय, उपाइ–(हिं० पुं०) देखो उपाय।

उपाकर्म–(सं० पुं०) संस्कारपूर्वक वेद-ग्रहण।

उपाख्यान–(सं० पुं०) पुरानी कथा, पूर्ववृत्तान्त, वर्णन, उपन्यास।

उपागत–(सं०वि०) उपस्थित, स्वीकृत।

उपाङ्ग–(सं० पुं०) तिलक, टीका।

उपाटना, उपाड़ना–देखो उखाड़ना।

उपादान–(सं० पुं०) प्राप्ति, वर्णन, इन्द्रियों का निग्रह, अभिप्राय, बोध।

उपाधि–(सं० पुं०) विशेषण, जाति, वंश इत्यादि को बतलानेवाले शब्द, उपद्रव, उत्पात।

उपाधी–(सं० वि०) उत्पाती, ऊधम मचानेवाला।

उपाध्याय–(सं०पुं०) वेद-वेदाङ्ग पढ़ानेवाला अध्यापक, ब्राह्मण की एक उपाधि।

उपान्त–(सं० पुं०) प्रान्त, भाग तीर, किनारा, कोना, अन्तिम अक्षर के पहिले का अक्षर।

उपाय–(सं०पुं०) समीप पहुँचना, निकट आना, साधन, युक्ति।

उपारना–(हिं०क्रि०) देखो उपाड़ना।

उपार्जन–(सं० पुं०) कमाई, लाभ, वाणिज्यादि से लाभ।

उपालम्भ–(सं०पुं०) निंदापूर्वक तिरस्कार, उलाहना।

उपाव–(हिं० पुं०) देखो उपाय।

उपास–(हिं० पुं०) देखो उपवास।

उपासक–(सं०वि०) सेवक, भक्त।

उपासना–(सं०स्त्री०) परिचर्या, आराधना।

उपासा–(हिं० पुं०) अन्न जल न ग्रहण करनेवाला।

उपेक्षक–(सं०वि०) उपेक्षा करनेवाला।

उपेक्षा–(सं०स्त्री०) उदासीनता, घृणा, तिरस्कार, अनादर।

उपेखना–(हिं० क्रि०) उपेक्षा करना।

उपेन्द्रवज्रा–(सं०स्त्री०) ग्यारह अक्षरों के चार पद का एक छन्द ।
उपैना–(हिं०वि०) नङ्गा, उघाड़ा, खुला हुआ ।
उपोद्घात–(सं०पुं०) उपक्रम, भूमिका ।
उपोष, उपोषण–(सं०पुं०) उपवास ।
उफनना–(हिं०क्रि०) फेन देना, झगड़ने के लिये उद्यत होना ।
उफान–(हिं०पुं०) फेन, उबाल, झाग ।
उफाल–(हिं० पुं०) लंबी डग ।
उबकना–(हिं० क्रि०) वमन करना, उगलना ।
उबकाई–(हिं०स्त्री०) ओकाई, मचली ।
उबट–(हिं० पुं०) कुमार्ग, ऊँची-नीची भूमि ।
उबटन–(हिं० पुं०) अभ्यंग, अंगराग ।
उबरना–(हिं० क्रि०) निस्तार पाना ।
उबराऊ–(हिं० पुं०) तल ।
उबलना–(हिं०क्रि०) उफनना, उमड़ना ।
उबहन–(हिं० स्त्री०) पानी खींचने का रस्सा ।
उबहना–(हिं० क्रि०) शस्त्र उठाना, उभड़ना, ऊपर की ओर उठना ।
उबहनी–(हिं० स्त्री०) रस्सी ।
उबाँत–(हिं० स्त्री०) वमन, कय, उलटी ।
उबाई–(हिं० स्त्री०) व्यग्रता ।
उबार–(हिं० पुं०) मोक्ष, उद्धार, निस्तार ।
उबाल–(हिं पुं०) आँच लगने पर फ़ेन के साथ ऊपर को उठना ।
उबासी–(हिं० स्त्री०) जृम्भा, जँभाई ।
उबाहना–(हिं० क्रि०) देखो उबहना ।
उबेना–(हिं० वि०) जूता न पहिने हुए, नंगे पर का ।
उभय–(सं० वि०) हर दो, दोनों ।
उभयचर–(सं० वि०) जल तथा स्थल दोनों में रहनेवाला ।
उभयतः–(सं०अव्य०) दोनों ओर, दोनों तरफ़ । **उभयतोमुख**–(सं०वि०) दो मुखवाला ।
उभरना–(हिं० क्रि०) उठना, बढ़ना, चले जाना, प्रकाशित होना, उतरना, खुलना, उत्पन्न होना ।
उभाड़–(हिं० क्रि०) उठान, ऊँचाई, वृद्धि । **उभाड़ना**–(हिं० क्रि०) उत्तेजित करना, उसकाना, बहकाना ।
उभाना–(हिं० क्रि०) सिर हिलाते हुए हाथ-पैर पटकना ।
उभार–(हिं० पुं०) उठान, ऊँचाई, वृद्धि ।
उमंग–(हिं० स्त्री०) आह्लाद, इच्छा, लहर, मौज, पूर्णता, अधिकता ।
उमड़–(हिं० स्त्री०) चढ़ाव, उठान, उभाड़, धावा, बढ़ाव, बाढ़, घिराव ।
उमड़ना–(हिं०क्रि०) चढ़ना, बह चलना, उठकर फैल जाना, चक्कर देना, फैलना, घेरना, आवेश में आ जाना ।
उमस–(हिं० स्त्री०) आन्तरिक उत्ताप ।
उमाह–(हिं० पुं०) उत्सुकता, उमंग ।
उमेठन–(हिं०स्त्री०) ऐंठन, वल, मरोड़ ।
उमेठवाँ–(हिं० वि०) ऐंठा हुआ ।
उर–(सं० पुं०) वक्षःस्थल, हृदय, छाती, मन, चित्त ।
उरक्षत–(सं० पुं०) छाती का घाव, क्षयरोग । **उरस्थल**–(सं०पुं०) हृदय, छाती ।
उरग–(सं०पुं०) सर्प, साँप ।
उरझना–हिं० क्रि०) उलझना, फँसना, गाँठ डालना ।
उरद–(हिं० पुं०) एक पौधा जिसकी फलियाँ दाल बनाने के काम में आती हैं । **उरदी**–(हिं०स्त्री०) माष, छोटी उड़द, सिपाहियों की पोशाक (वर्दी) ।

उरला–(हि० वि०) पिछला, जो आगे का न हो।
उरच्छद–(सं० पुं०) कवच।
उरसना–(हि० क्रि०) चंचल होना, हिलना, डोलना।
उरसिज–(सं० पुं०) स्तन, छाती।
उरहना–(हि० पुं०) ओलहना।
उरा–(हि० स्त्री०) उर्वी, पृथ्वी।
उराउ, उराऊ–(हि० पुं०) उत्साह।
उराना–(हि० क्रि०) चक जाना।
उरिण, उरिन–(हि० वि०) देखो उऋण।
उरुवा–(हि० पुं०) उलक, उल्लू।
उरे–(हि० क्रि० वि०) उस ओर, आग, दूर।
उलट–(हि०पुं०) परिवर्तन। **उलटना**–(हि० क्रि०) ऊपर का नीचे होना, पलटना, फेर देना, चित करना, बदल जाना, दुर्दिन आना, लौट जाना, बात काटना, आज्ञा भंग करना, विपरीत करना, टूट पड़ना।
उलटा–(हि०वि०) विपरीत, नीचे का ऊपर किया हुआ।
उलटी–(हि० स्त्री०) वमन, कलैया।
उलटे–(हि० क्रि०वि०) विरुद्ध क्रम से।
उलथना–(हि०क्रि०) ऊपर-नीचे करना।
उलथा–(हि० पुं०) अनुवाद।
उलंद–(हि०स्त्री०) वर्षा की झड़ी, उँडेल, गिराव।
उलरना–(हि०क्रि०) फाँदना, कूदना।
उललना–(हि०क्रि०) गिरना, पड़ना।
उलहना–(हि० क्रि०) अंकुरित होना, निकलना; (पुं०) निन्दा।
उलार–(हि०वि०) पीछे की ओर भार से दबी हुई (गाड़ी, इक्का, इत्यादि)।
उलिचना, उलीचना–(हि० क्रि०) हाथ से जल फेंकना।
उलूक–(सं० पुं०) उल्लू चिड़िया।
उलूखल–(सं० पुं०) ओखली।
उल्का–(सं० स्त्री०) ज्वाला, मशाल, आकाश से गिरी हुई अग्नि, टूटता तारा।
उल्था–(हि०पुं०) भाषान्तर, अनुवाद।
उल्लङ्घन–(सं० पुं०) अतिक्रमण, लाँघना, डाकना।
उल्लसित–(सं० वि०) फड़कनेवाला, उठा हुआ, आनन्दित।
उल्लास–(सं०पुं०) आनन्द, हर्ष, प्रकाश।
उल्लिखित–(सं० वि०) खोदा हुआ, छीला हुआ, चित्र बनाया हुआ, रँगा हुआ।
उल्लू–(हि०पुं०) उलूक; (वि०) मूर्ख।
उल्लेख–(सं०पुं०) लिखना, कथन, लेख, वर्णन। **उल्लेखनीय, उल्लेख्य**–(सं० वि०) लिखने योग्य।
उवना–(हि०क्रि०) उदित होना, निकल आना।
उवनि–(हि० स्त्री०) उदय, निकास, उठाव।
उशीर–(सं०पुं०) शीत मूलक, खस।
उष्ट्र–(सं० पुं०) ऊँट।
उष्ण–(सं०वि०) तप्त, गरम, तीव्र; (पुं०) आतप, धूप, गरमी की ऋतु।
उष्ण कटिबन्ध–(सं० पुं०) पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है।
उष्णीश–(सं० पुं०) पगड़ी, मुकुट।
उष्म–(सं० पुं०) ग्रीष्मकाल, उत्ताप, तीव्रता, क्रोध; श, ष, स, ह–ये चार वर्ण।
उष्मज–(सं० वि०) गरमी में उत्पन्न होनेवाला।
उस–(हि० सर्व०) 'वह' का रूप जो

विभक्ति लगने पर यह रूप धारण कर लेता है।
उसकन–(हिं० पुं०) उबसन, पात्र मांजने का घास-पात का मुट्ठा, उभाड़।
उसनना–(हिं० क्रि०) उबालना, पकाना।
उसमा–(हिं० पुं०) वमसा, उबटन।
उसरना–(हिं० क्रि०) सरकना, अलग होना।
उसारना–(हिं० क्रि०) नाश करना, मिटाना।
उसारा–(हिं० पुं०) छत्ता, ओसारा।
उसालना–(हिं० क्रि०) उखाड़ना, मिटाना।
उसांस–(हिं० स्त्री०) उच्छ्वास, साँस।
उसीसा–(हिं० पुं०) सिरहाना, तकिया।
उहवां, उहाँ–(हिं० क्रि० वि०) देखो वहाँ।
उहार–(हिं० पुं०) देखो ओहार।
उहि–(हिं० सर्व०) देखो वह।
उहै–(हिं० सर्व०) देखो वही।

ऊ

ऊ–संस्कृत तथा हिन्दी स्वर वर्ण का छठा अक्षर। यह 'उ' का दीर्घ रूप है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है; (पुं०) महादेव, इन्द्र, रक्षक; (अव्य०) ए, अरे, भी; (सर्व०) वह।
ऊँअना–(हिं० क्रि०) उदय होना, उगना।
ऊँघ–(हिं० स्त्री०) ऊँघाई, झपकी।
ऊँच, ऊँचा–(हिं० वि०) उच्च, ऊँचा।
ऊँचा–(हिं० वि०) उच्च, श्रेष्ठ, उन्नत, हानि-लाभ। **ऊँचा सुनना**–कुछ बहिरा होना। **ऊँचाई**–(हिं० स्त्री०) उच्चता, गौरव, बड़ाई।
ऊँचे–(हिं० क्रि० वि०) ऊपर को, ऊँची ओर। **ऊँचे नीचे पैर पड़ना**–बुरे काम में प्रवृत्त होना।
ऊँछना–(हिं० क्रि०) कंघी करना।
ऊँट–(हिं० पुं०) उष्ट्र।
ऊँहूँ–(हिं० अव्य०) नहीं, कभी नहीं, यह नहीं हो सकता।
ऊख–(हिं० स्त्री०) इक्षु, ईख, गन्ना; (पुं०) गरमी, गुमस; (वि०) गरमी से व्याकुल।
ऊखम–(हिं० वि०) देखो ऊष्म।
ऊखल–(हिं० पुं०) उलूखल, ओखली।
ऊगना–(हिं० क्रि०) जमना, अँखुआ निकलना।
ऊज–(हिं० पुं०) उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा।
ऊजड़–(हिं० वि०) जनशून्य, न बसा हुआ।
ऊजर, ऊजरा–(हिं० वि०) उजला, स्वच्छ।
ऊटकनाटक–(हिं० पुं०) वृथा का कार्य।
ऊटपटाँग–(हिं० वि०) बेढंगा, व्यर्थ, निरर्थक।
ऊड़ा–(हिं० पुं०) न्यूनता, कमी, घाटा, अकाल, विनाश।
ऊतला–(हिं० वि०) उतावला, चंचल।
ऊताताई–(हिं० वि०) उजड्ड, अव्यवस्थित।
ऊतिम–(हिं० वि०) देखो उत्तिम।
ऊदबत्ती–(हिं० स्त्री०) धूपबत्ती।
ऊदबिलाव–(हिं० पुं०) जल, स्थल दोनों में रहनेवाला नेवले के आकार का एक जन्तु।
ऊदा–(हिं० वि०) लाली मिला हुआ काले रंग का, बैगनी।
ऊधम–(हिं० पुं०) उत्पात, उपद्रव।
ऊन–(हिं० पुं०) भेड़-बकरी का कोमल रोवाँ, जिसके कम्बल और पहिनने के गरम कपड़े बुने जाते हैं।
ऊनी–(हिं० वि०) ऊन का बना हुआ।

ऊप–(हिं॰ पुं॰) अनाज का सूद, जो किसान महाजन से बोने के लिये अन्न लेने पर उसका सवाई देता है। ऊपना–(हिं॰ क्रि॰) सूद पर (सवाई) अन्न का ऋण देना।
ऊपर–(हिं॰वि॰) उपरि; (क्रि॰वि॰) ऊँचे स्थान में, आगे, अधिक, अतिरिक्त, किनारे पर। ऊपरी–(हिं॰ वि॰) बाहरी, बनावटी, दिखौवा।
ऊब–(हिं॰ स्त्री॰) व्यग्रता, उद्वेग।
ऊबट–(हिं॰ पुं॰) कठिन मार्ग; (वि॰) ऊँचा नीचा।
ऊबड़खाबड़–(हिं॰ वि॰) ऊँचा नीचा, असमतल।
ऊबना–(हिं॰ क्रि॰) उद्विग्न होना, अकुलाना।
ऊबर–(हिं॰ वि॰) अधिक।
ऊरबना–(हिं॰ क्रि॰) देखो उबरना।
ऊभ–(हिं॰वि॰) ऊँचा नीचा, उठा हुआ, उभड़ा हुआ; (स्त्री॰) व्याकुलता।
ऊरध–(हिं॰) देखो ऊर्ध्व।
ऊरू–(सं॰ पुं॰) जानु, जांघ।
ऊर्णपट–(सं॰ पुं॰) लूता, मकड़ी।
ऊर्ण–(सं॰ स्त्री॰) भेड़ या बकरी का बाल, ऊन।
ऊर्ध्व–(सं॰ वि॰) उच्च, ऊँचा, ऊपरी। उर्ध्वग–(सं॰ वि॰) स्वर्गगामी, ऊँचा जानेवाला। ऊर्ध्वगत–(सं॰ वि॰) ऊपर गया हुआ। ऊर्ध्वगति–(सं॰ स्त्री॰) चढ़ाई, स्वर्गारोहण, मुक्ति।
ऊर्ध्वगामी–(सं॰ वि॰) ऊपर जानेवाला। ऊर्ध्वलोक–(सं॰ पुं॰) स्वर्ग, वैकुण्ठ, आकाश। ऊर्ध्वशायी–(सं॰ वि॰) उतान सोनेवाला। ऊर्ध्वश्वास–(सं॰ पुं॰) लंबी साँस, मरते समय की श्वास।
ऊर्ध्वाङ्ग–(सं॰ पुं॰) मस्तक, सिर।
ऊर्मि–(सं॰ पुं॰) तरंग, लहर।
ऊर्वस्थि–(सं॰ पुं॰) जांघ की हड्डी।
ऊषर–(सं॰ पुं॰) नोनी भूमि, रेह की भूमि, ऊसर।
ऊषा–(सं॰ स्त्री॰) अरुणोदय, सबेरा।
ऊष्म–(सं॰ वि॰) गरमी, ग्रीष्मकाल। ऊष्म वर्ण–(सं॰ पुं॰) श, ष, स और ह–ये चार अक्षर व्याकरण में ऊष्म कहलाते हैं।
ऊष्मा–(सं॰स्त्री॰) गरमी, ग्रीष्मकाल।
ऊसर–(हिं॰ पुं॰) वह भूमि जो नोनी हो
ऊह–(हिं॰अव्य॰) क्लेश, विस्मय आदि सूचक शब्द।
ऊहित–(सं॰वि॰) अनुमान किया हुआ।
ऊहापोह–(सं॰ वि॰) तर्क द्वारा संशय मिटाया हुआ।

ऋ

ऋ–स्वर वर्ण का सातवाँ अक्षर, मूर्धा स्थान से इसका उच्चारण होता है; (सं॰ स्त्री॰) देवमाता, अदिति।
ऋक्–(सं॰स्त्री॰) ऋग्वेद, स्तुति, पूजा।
ऋक्ष–(सं॰ पुं॰) नक्षत्र, तारा, राशि, भालू।
ऋग्वेद–(सं॰ पुं॰) चारों वेदों में से पहिला वेद। ऋग्वेदी–(सं॰ वि॰) ऋग्वेद का पढ़नेवाला या जाननेवाला।
ऋचा–(सं॰स्त्री॰) वेदमन्त्र, स्तुति, पूजा।
ऋजु–(सं॰ वि॰) सीधा, सरल, अनुकूल, सुगम।
ऋण–(सं॰वि॰) उधार, गणित में क्षय राशि।
ऋत–(सं॰ पुं॰) सत्य, सच्चाई; (वि॰) सत्य, पूजित।

ऋति–(सं० स्त्री०) कल्याण, भलाई।
ऋतु–(सं०पुं०) कालविशेष,गरमी, बरसात या जाड़े का दिन। ऋतुचर्या–(सं० स्त्री०) ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार का आचरण।
ऋत्विक–(सं० पुं०) पुरोहित, वेद के मंत्रों से यज्ञ में कर्मकाण्ड करनेवाला।
ऋद्ध–(सं० वि०) सम्पन्न, समृद्ध।
ऋद्धि–(सं० पुं०) वृद्धि, बढ़ती, समृद्धि।
ऋनियाँ,ऋनी–(हिं०वि०) देखो ऋणी।
ऋषभ–(सं०पुं०) वृषभ, बैल, यह शब्द के पीछे लगने से श्रेष्ठता सूचित करता है।
ऋषि–(सं०पुं०) शास्त्रप्रणेता, वेद मंत्रों का प्रकाशक, ज्ञान द्वारा संसार पार करनेवाला।

ॠ

ॠ–हिन्दी तथा संस्कृत का आठवाँ अक्षर जिसका मूर्धा से उच्चारण होता है; (पुं०) वक्षःस्थल, छाती; (स्त्री०) देवमाता, स्मृति; (पुं०) भैरव, महादेव।

ऌ

ऌ–हिन्दी तथा संस्कृत स्वर का नवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है; (स्त्री०) देवमाता, भूमि।

ॡ

ॡ–स्वर वर्ण का दसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है, पाणिनि के अनुसार ऌकार का दीर्घ नहीं होता; (स्त्री०) देवनारी, माता, कामधेनु; (पुं०) शंकर, महादेव।

ए

ए–स्वर वर्ण का ग्यारहवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालु है; (पुं०) विष्णु; (हिं० सं० अव्य०) यह संबोधन या बुलाने में प्रयुक्त होता है।
एँच–(हिं० स्त्री०) न्यनता, विलम्ब।
एँचना–(हिं० क्रि०) लिखना, लकीर खींचना, निकालना, सुखाना।
एँचाताना–(हिं० वि०) तिरछा देखनेवाला। एँचातानी–(हिं० वि०) कठिनता, खींच खाँच, कलह, युद्ध।
एँड़ाबेंड़ा–(हिं०वि०) उलट-पुलट, अंडबंड, ऊँचा-नीचा।
एँड़ुवा–(हिं०पुं०) सिर पर बोझ के नीचे रखने की कपड़ की गद्दी, बिड़ुआ।
एक–(सं०वि०) प्रधान, अद्वितीय, समान, अकेला, अन्य, थोड़ा, कोई, अनुपम। एकाध–थोड़ा-सा। एक आँख से देखना–पक्षपात रखना। एक एक–प्रत्येक, हरएक। एकटक–टकटकी बाँधकर। एकतार–सदृश, समान, तुल्य। एक तो–पहिली बात तो यह है कि। एकदम–तुरत।
एकंग–(हिं० वि०) एकाकी, अकेला।
एकंत–(हिं० वि०) देखो एकान्त।
एकक–(सं० वि०) असहाय, अकेला।
एककालीन–(सं०वि०) समकालीन, एक ही समय उत्पन्न होनेवाला।
एकचित–(सं० वि०) अनन्यचेता, एक ही ओर ध्यान लगानेवाला।
एकछत्र–(सं०वि०) अभिन्न शासन का; (पुं०) अनन्य शासन।
एकज–(सं० वि०) अकेला उत्पन्न होनेवाला, निराला।

एकजात–(सं० वि०) सहोदर, एक ही माँ-बाप से उत्पन्न ।
एकज्या–(सं० स्त्री०) किसी वृत्त के व्यासार्ध का चिह्न।
एकटंगा–(हिं०वि०)एक पैर का,लँगड़ा।
एकटकी–(हिं० स्त्री०) निश्चल दृष्टि, टकटकी ।
एकट्ठा–(हिं०वि०) एकत्र, जमा किया हुआ ।
एकत–(हिं० क्रि० वि०) देखो एकत्र ।
एकता–(सं० स्त्री०) मेलजोल ।
एकतान–(हिं० वि०) एकाग्रचित्त।
एकतालीस–(हिं० वि०) चालीस और एक; (पुं०) चालीस और एक की संख्या ४१ ।
एकतीस–(हिं० वि०) तीस और एक; (पुं०) तीस और एक की संख्या ३१ ।
एकत्र–(सं० अव्य०) एक ही स्थान में, एक साथ ।
एकत्रित–(सं०वि०)इकट्ठा किया हुआ।
एकदा–(सं० अव्य०) एक बार, किसी दिन ।
एकधा–(सं० अव्य०) साधारण रूप से, एक बार, अकेले ।
एकनिष्ठ–(सं० वि०) एकासक्त, एक ही में लीन ।
एकपक्ष–(सं०वि०) पक्षपाती ।
एकपत्नी–(सं० स्त्री०) पतिव्रता स्त्री ।
एकपदी–(सं० स्त्री०) पगडंडी ।
एकपिण्ड–(सं०वि०) सपिण्ड,नातेदार ।
एकभाव–(सं०पुं०) समभाव, एकरूप ।
एकमत–(सं० वि०) समान मत का ।
एकरंग–(हिं० वि०) तुल्य, बराबर ।
एकरस–(हिं० वि०) एक ढंग का, समान ।
एकरूप–(सं०वि०) समान आकृति का, एक ही ढंग का ।
एकला–(हिं० वि०) अकेला, एकाकी ।
एकलौता–(हिं०वि०)अपने माता-पिता का एक (पुत्र) ।
एकवचन–(सं० पुं०) एक व्यक्ति का बोध करनेवाला व्याकरण का वचन ।
एकवाक्य–(सं० पुं०) एक अर्थ बोधक बातचीत ।
एकविध–(सं० वि०)एक ही प्रकार का, साधारण ।
एकसठ–(हिं० वि०) साठ और एक; (पुं०) साठ और एक की संख्या ।
एकसर–(हिं० वि०) अकेला, एकहरा।
एकहत्तर–(हिं० वि०)सत्तर और एक; (पुं०) सत्तर और एक की संख्या ।
एकहत्था–(हिं० वि०) एक ही हाथ से काम करनेवाला ।
एकहरा–(हिं० वि०) एक परत का।
एका–(हिं० पुं०) ऐक्य, मेलजोल ।
एकाई–(हिं० स्त्री०) एकत्व, एक का मान, नियमित मान, गणना में प्रथम स्थान या अंक ।
एकाएक, एकाएकी–(हिं० क्रि० वि०) अकस्मात्, अचानक ।
एकांश–(सं० पुं०)एक भाग या हिस्सा ।
एकाकार–(सं०वि०)एक ही आकृति का।
एकाकी–(सं० वि०)असहाय, अकेला ।
एकाक्ष–(सं० वि०)एक नेत्रवाला, काना ।
एकाक्षर–(सं० पुं०) एक स्वर वर्ण, ओंकार ।
एकाग्र–(सं० वि०) अनन्यचित्त, एक ही ओर मन लगाया हुआ ।
एकाग्रचित्त–(सं० वि०) स्थिरचित्त ।
एकादश–(सं० वि०)ग्यारह, ग्यारहवां ।
एकादशाह–(सं० पुं०) मरने के दिन से ग्यारहवें दिन पर किया जानेवाला कृत्य ।

एकादशी–(सं० स्त्री०) प्रत्येक चान्द्र मास के शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि।
एकादेश–(सं०पुं०) एक आज्ञा, व्याकरण में दो शब्दों या स्थान में एक ही आदेश।
एकाधिपति–(सं० पुं०) सम्राट्, बड़ा राजा।
एकान्त–(सं० पुं०) छिपा हुआ स्थान, अकेलापन; (वि०) अकेला, अत्यन्त।
एकार–(सं० पुं०) स्वर वर्ण का एग्यारहवां अक्षर 'ए'।
एकार्थ-एकार्थक–(सं० वि०) समानार्थक, एक ही अर्थ का।
एकाहार–(सं० पुं०) दिन में केवल एक बार भोजन।
एकीकरण–(सं० पुं०) इकट्ठा करने का काम।
एकीकृत–(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ।
एकक–(सं० वि०) एकाकी, अकेला।
एकोतरसो–(हिं० वि०) एक सौ एक।
एकोदर–(सं० पुं०) सहोदर।
एकोद्दिष्ट–(सं० पुं०) किसी एक मृत व्यक्ति के उद्देश्य से किया जानेवाला श्राद्ध।
एकौक्षा–(हिं० वि०) अकेला।
एक्का–(हिं० वि०) अकेला, एक से संबंध रखनेवाला; (पुं०) दुपहिया गाड़ी जिसको एक बैल या घोड़ा खींचता है, ताश का पत्ता जिसमें एक बूटी रहती है।
एक्की–(हिं० स्त्री०) एक बैल से खींची जानेवाली गाड़ी, ताश का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो।
एक्यानबे–(हिं० वि०) नब्बे और एक; (पुं०) नब्बे और एक की संख्या ९१।
एक्यावन–(हिं० वि०) पचास और एक; (पुं०) पचास और एक की संख्या ५१।
एक्यासी–(हिं० वि०) अस्सी और एक; (पुं०) अस्सी और एक की संख्या ८१।
एड़ी–(हिं० स्त्री०) पार्ष्णि, पैर के पंजे के पीछे का उभड़ा हुआ भाग।
एतदर्थ–(सं० अव्य०) इस निमित्त।
एतदवधि–(सं० अव्य०) यहाँ तक।
एतना–(हिं० क्रि० वि०) देखो इतना।
एतवार–देखो इतवार।
एता–(हिं०वि०) इस परिमाण का, इतना।
एतादृश–(सं०वि०) ऐसा, इसके सदृश।
एतावत्–(सं० वि०) इस परिमाण का।
एतीक–(हिं०वि०) इस परिमाण की, इतनी।
एरण्ड–(सं० पुं०) रेंड़, रेंड़ी।
एला–(सं० स्त्री०) इलायची।
एव–(सं० अव्य०) इसी प्रकार से, ऐसे ही, भी।
एवं–(सं० क्रि०वि०) इसी प्रकार से, ऐसेही
एवमस्तु–ऐसा ही हो; (अव्य०) ऐसे ही, और
एषणा–(हिं० स्त्री०) इच्छा।
एहो–(हिं० अव्य०) संबोधन का शब्द अरे, हे, ओ।

ऐ

ऐ–संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला का बारहवां अक्षर, इसका उच्चारण कण्ठ और तालु से होता है; (अव्य०) पुष्कर; (पुं०) महादेव।
ऐं–(हिं० अव्य०) किसी बात को भली भांति समझने के लिये प्रयुक्त होता है, एक आश्चर्य-सूचक अव्यय।
ऐंचना–(हिं० क्रि०) खींचना, तानना।
ऐंचाताना–(हिं० वि०) भेंगा देखनेवाला। **ऐंचातानी**–(हिं०स्त्री०) खींचा-खांची।

ऐंचीला–(हिं० वि०) लचीला ।
ऐंछना–(हिं० क्रि०) झाड़ना, बालों में कंघी करना ।
ऐंठ–(हिं० स्त्री०) लपेट, मरोड़, अभिमान, अकड़ ।
ऐंठन–(हिं० स्त्री०) पेंच, घुमाव, लपेट, खिचाव, तनाव ।
ऐंड़-(हिं० स्त्री०) अभिमान, तनाव, अकड़, पानी का भँवर; (वि०) घूमा हुआ, निकम्मा ।
ऐंड़दार–(हिं० वि०) अभिमानी, गर्वीला ।
ऐंड़ना–(हिं० क्रि०) अभिमान करना, इतराना, घुमाना ।
ऐंड़बेंड़–(हिं० वि०) तिरछा, बांका, बल खाया हुआ ।
ऐंड़ा–(हिं० वि०) ऐंठा हुआ, घुमौवा ।
ऐंड़ना–(हिं० क्रि०) अकड़ दिखलाना, नाक-भौंव चढ़ाना, शरीर तोड़ना, इठलाना ।
ऐकमत्य–(सं० पुं०) सम्मान, सम्मति ।
ऐकाहिक–(सं० वि०) एक दिन में होनेवाला ।
ऐक्य-(सं०पुं०) एकता, सादृश्य, बराबरी
ऐगुन–(हिं० पुं०) देखो अवगुण ।
ऐच्छिक-(सं० वि०) इच्छा के अनुसार ।
ऐतिहासिक–(सं०वि०) इतिहास संबंधी ।
ऐन्द्रजालिक–(सं० पुं०) इन्द्रजाल करनेवाला, मायावी ।
ऐन्द्रिय–(सं० वि०) इन्द्रिय संबंधी ।
ऐपन–(हिं० पुं०) हल्दी के साथ चावल को पीसकर बनाया हुआ लेप ।
ऐश्वर–(सं०वि०) शक्तिशाली, शिवसम्बन्धी ।
ऐश्वर्य–(सं० पुं०) धन, सम्पत्ति, आधिपत्य । ऐश्वर्यवान्–सम्पन्न, वैभवयुक्त ।
ऐसा–(हिं० क्रि० वि०) इस प्रकार से, इस तरह से; (वि०) इस ढंग का, इस प्रकार का । ऐसा-तैसा–तुच्छ, निकृष्ट ।
ऐसे–(हिं० क्रि० वि०) इस रीति या प्रकार से ।
ऐहिक–(सं० वि०) इस लोक से संबंध रखनेवाला, संसारी ।

ओ

ओ–संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ तथा ओष्ठ है; (सं० पुं०) ब्रह्मा; (अव्य०) विस्मय तथा आश्चर्यसूचक शब्द ।
ओं–(सं०अव्य०) ॐकार, प्रणव, तथास्तु, बहुत अच्छा ।
ओंकार–(सं० अव्य०) देखो ओं ।
ओंगना–(हिं० क्रि०) गाड़ी के पहिये के धुरे में चिकना लगाना जिसमें पहिया सहज में घूम सके ।
ओआ–(हिं०पुं०) हाथी फँसाने का गड्ढा ।
ओइँछना–(हिं० क्रि०) वारना, न्योछावर करना ।
ओकना–(हिं०क्रि०) वमन करना ।
ओकाई–(हिं०स्त्री०) वमन की इच्छा ।
ओकार–(सं० पुं०) 'ओ' अक्षर ।
ओकारान्त–(सं० वि०) जिस शब्द के अन्त में 'ओ' रहे ।
ओखद–(हिं० स्त्री०) औषधि, दवा ।
ओखरी, ओखली–देखो ओखली ।
ओखा–(हिं० पुं०) बहाना, मिस; (वि०) सूखा, टेढ़ा, दूषित, खोटा, विरल ।
ओग–(हिं० पुं०) कर, चंदा, लगान ।
ओगरना–(हिं० क्रि०) चूना, पसीजना ।
ओगल–(हिं०पुं०) ऊसर भूमि, परती भूमि ।

ओग–(सं० पुं०) समूह, ढेर, घनत्व, बाढ़, परम्परा।
ओङ्कार–(सं० पुं०) प्रणव, ॐ।
ओछा–(हिं० वि०) क्षुद्र, तुच्छ, छोटा, हलका, छिछला, शक्तिहीन।
ओछाई–(हिं० स्त्री०), ओछापन–(हिं० पुं०) क्षुद्रता, नीचता, हलकापन।
ओज–(सं० पुं०) बल, प्रताप, तेज।
ओजना–(हिं० क्रि०) रोकना, भार लेना।
ओजस्विता–(सं० स्त्री०) प्रकाश, चमक।
ओजस्वी–(सं० वि०) प्रतापी, प्रभावशाली।
ओझ–(हिं० पुं०) उदर, पेट, आँत।
ओझर–(हिं० पुं०) उदर, पेट, पेट की थैली।
ओझल–(हिं० स्त्री०) ओट, परदा, आड़; (वि०) छिपा हुआ।
ओझा–(हिं० पुं०) भूत-प्रेत उतारनेवाला।
ओझाई–(हिं० स्त्री०) ओझा की वृत्ति, झाड़-फूँक।
ओट–(हिं० स्त्री०) अवरोध, रोक, आड़, घूँघट।
ओटन–(हिं० स्त्री०) कपास के बिनौले अलग करने की चर्खी।
ओटना–(हिं० क्रि०) कपास के बिनौले अलगाना, बीच बीच में रोकना, अपनी ही बात कहते रहना।
ओठंगन–(हिं० पुं०) आधार।
ओठंगना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु के सहारे बैठना या लेटना।
ओड़न–(हिं० स्त्री०) अवरोध, रुकाव।
ओड़ना–(हिं० क्रि०) रोकना, फैलाना।
ओड़ा–(हिं० पुं०) टोकरा, खाँचा।
ओढ़न–(हिं० स्त्री०) ओढ़ने का वस्त्र।
ओढ़ना-(हिं० क्रि०) लपेटना, वस्त्र से शरीर को ढांपना, अपने ऊपर किसी कार्य का भार ले लेना; (पुं०) शरीर ढाँपने का वस्त्र, चादर।
ओढ़नी–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र, छोटी चादर।
ओढ़र–(हिं० पुं०) छल, धोखा, बहाना।
ओढ़ाना–(हिं० क्रि०) दूसरे के शरीर को वस्त्र से ढांपना।
ओढ़ौनी–(हिं० स्त्री०) देखो ओढ़नी।
ओत–(सं० वि०) भरा हुआ, बुना हुआ; (हिं० स्त्री०) सुख, विश्राम।
ओता-(हिं० वि०) उस परिमाण का, उतना।
ओद–(हिं० पुं०) तरी, गीलापन; (वि०) गीला, तर।
ओदन–(सं० पुं०) पका हुआ चावल, भात।
ओदरना–(हिं० क्रि०) छिन्न-भिन्न होना, फटना।
ओदा–(हिं० वि०) तर, गीला।
ओदारना–(हिं० क्रि०) छिन्न-भिन्न करना, फाड़ डालना।
ओनचन–(हिं० स्त्री०) खटिया के पायताने में कसने की रस्सी, अदवायन।
ओनचना–(हिं० क्रि०) अदवायन कसना।
ओना–(हिं० पुं०) गड्ढे, तालाब आदि का पानी निकालने का मार्ग।
ओनामासी–(हिं० स्त्री०) ओं नमः सिद्धम्–विद्यारम्भ समय का मांगलिक वाक्य आरंभ।
ओप–(हिं० स्त्री०) चमक, शोभा, रंग।
ओपना–(हिं० क्रि०) चमकाना।
ओम्–(सं० अव्य०) ईश्वर-वाचक शब्द, प्रणव।
ओबरी–(हिं० स्त्री०) छोटी कोठरी।
ओर–(हिं० स्त्री०) दिशा, पक्ष, अलंग; (पुं०) छोर, किनारा, अन्त, आरम्भ।
ओरमना–(हिं० क्रि०) सहारा लेना, लटकना।

ओरहना–(हिं० पुं०) देखो ओलहना।
ओरा–(हिं० पुं०) देखो ओला।
ओराना–(हिं० क्रि०) चुक जाना, अन्त होना।
ओरी–(हिं०स्त्री०) ओलती; (अव्य०) संबोधन का शब्द जो स्त्रियों के लिये प्रयुक्त होता है।
ओरौता–(हिं०वि०) अन्त का, चुकौता।
ओरौती–(हिं० स्त्री०) ओलती, छप्पर से बरसाती पानी गिरने का स्थान।
ओल–(सं० पुं०) सूरन; (हिं० स्त्री०) गोद, आड़, रक्षा, बहाना, शरण।
ओलती–(हिं०स्त्री०) छप्पर से बरसाती पानी गिरने का स्थान, ओरी।
ओलना–(हिं० क्रि०) छिपाना, आड़ लगाना, सहन करना, ऊपर लेना, भोंकना।
ओलरना–(हिं० क्रि०) लेट जाना।
ओलहना–(हिं० पुं०) देखो उरहना।
ओला–(हिं० पुं०) वर्षा के साथ गिरा हुआ हिम का टुकड़ा, मिश्री का बना हुआ लड्डू।
ओलाना–(हिं०क्रि०) भूनना, सेंकना।
ओली–(हिं० स्त्री०) क्रोड़, गोदी, अंचल।
ओल्यो–(हिं० पुं०) बहाना।
ओषध–(सं० पुं०) औषधि, वनस्पति।
ओषधि–(सं० स्त्री०) देखो औषधि।
ओष्ठ–(सं० पुं०) दन्तच्छद, होंठ।
ओष्ठ्य–(सं० वि०) ओष्ठ संबंधी, होंठ से उच्चारण किया जानेवाला।
ओस–(हिं० स्त्री०) रात्रि में आकाश से भूमि पर गिरनेवाला वाष्पीय जल।
ओसरा–(हिं० पुं०) अवसर, समय।
ओसाई–(हिं० स्त्री०) ओसाने का काम।
ओसाना–(हिं० क्रि०) दाँये हुए गल्ले को हवा में उड़ाकर भूसा और अन्न अलग करना।
ओसार–(हिं० पुं०) विस्तार, चौड़ाई।
ओसारा–(हिं० पुं०) दालान, छप्पर।
ओह–(हिं०अव्य०) दुःख अथवा आश्चर्य-सूचक अव्यय, अरे! हाय!
ओहका–(हिं० सर्व०) उसका।
ओहर–(हिं० अव्य०) उस ओर।
ओहरना–(हिं०क्रि०) ऊपर से नीचे की ओर आना, घट जाना।
ओहार–(हिं० पुं०) गाड़ी, पालकी इत्यादि के ऊपर ढाँपने का वस्त्र, परदा।
ओहो–(हिं०अव्य०) विस्मय तथा आनन्द प्रकट करने के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है, अरे! अहो! आहा!

औ

औ–संस्कृत स्वर वर्ण का चौदहवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कण्ठ है, अन्त, पृथ्वी; (हिं० अव्य०) और।
औंगना–(हिं० क्रि०) पहिये के धुरे में तेल देना।
औंगा–(हिं०वि०) मौन, गूंगा, चुपचाप।
औंघ–(हिं०स्त्री०) औंघाई, झपकी।
औंघना–(हिं० क्रि०) झपकी लेना।
औंघाई–(हिं०स्त्री०) ऊँघ, झपकी।
औंजना–(हिं०क्रि०) घबड़ाना, अकुलाना।
औंटन–(हिं०पुं०) पकाकर गाढ़ा होना।
औंटना–(हिं० क्रि०) उबलना।
औंटाना–(हिं० क्रि०) उबालना, पकाना।
औंधना–(हिं० क्रि०) उलट जाना, मुँह के बल पड़ना, उलटा कर देना।
औंधा–(हिं० वि०) उलटा, मुँह के बल पड़ा हुआ, टेढ़ा; (क्रि०वि०) उलटकर;

(पुं०) मूर्ख। औंधाना–(हिं० क्रि०) उलटाना।
औंनापौना–(हिं० वि०) चौथा हिस्सा कम।
औकास–(हिं० पुं०) देखो अवकाश।
औखद–(हिं० पुं०) देखो औषध।
औगढ़–(हिं० वि०) बेढंगी रीति से बनाया हुआ।
औगत–(हिं० स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा।
औगुन–(हिं० पुं०) देखो अवगुण।
औघट–(हिं० वि०) दुस्तर, कठिन, ढालुवाँ
औघड़–(हिं० वि०) फूहड़, अनाड़ी, उलटा-पुलटा।
औघर–(हिं० वि०) विपरीत, अद्भुत।
औचक–(हिं० क्रि० वि०) अचानक, धोखे से; (हिं० स्त्री०) कठिनता, संकट, संकुचित स्थान, फँसाव।
औचित्य–(सं० पुं०) उपयुक्तता, सत्य।
औझड़–(हिं० स्त्री०) प्रहार, धक्का; (क्रि० वि०) झटके के साथ, उछलकर।
औटन–(हिं० स्त्री०) गरम करने की स्थिति, उबाल। औटना–(हिं० क्रि०) उबालना, गरम करके गाढ़ा करना।
औटा–(हिं० वि०) खौलाया हुआ, उबाला हुआ। औटाई–(हिं० स्त्री०) औटाने का काम। औटाना–(हिं० क्रि०) पकाकर गाढ़ा करना।
औतार–(हिं० पुं०) देखो अवतार।
औत्सुक्य–(सं० पुं०) उत्कण्ठा, उत्सुकता, चिन्ता।
औदसा–(हि० स्त्री०) अवदशा, दुर्भाग्य।
औदार्य–(सं० पुं०) उदारता।
औदुम्बर–(सं० वि०) गूलर का बना हुआ।
औद्धत्य–(सं० पुं०) धृष्टता।
औद्योगिक–(सं० वि०) उद्योग से संबंध रखनेवाला।
औधारना–(हिं० क्रि०) देखो अवधारना।
औधि–(हिं० स्त्री०) देखो अवधि।
औनत–(हिं० वि०) देखो अवनत।
औनि–(हिं० स्त्री०) देखो अवनि।
औपचारिक–(सं० वि०) उपचार संबंधी।
औपटी–(हिं० वि०) विकट।
औपदेशिक–(सं० वि०) उपदेश से मिला हुआ।
औपन्यासिक–(सं० वि०) उपन्यास संबंधी।
औपनिवेशिक–(सं० वि०) उपनिवेश संबंधी।
औपसर्गिक–(सं० वि०) उपसर्ग संबंधी।
औपाधिक–(सं० वि०) उपाधि संबंधी।
और–(हिं० वि०) अन्य, दूसरा, केवल, अधिक किन्तु।
औरस–(सं० पुं०) समान जाति की विवाहित भार्या से उत्पन्न पुत्र।
औरेब–(हिं० पुं०) वक्रगति, उलटी चाल, फँसाव।
औशि–(हिं० अव्य०) देखो अवश्य।
औषध–(सं० पुं०) रोगनाशक द्रव्य।
औषधि–(सं० स्त्री०) दवा।
औसन–(हिं० स्त्री०) उष्णता, गरमी।
औसर–(हिं० पुं०) अवसर।
औहत–(हिं० स्त्री०) दुर्दशा, बुरा हाल।

क

क–हिन्दी वर्णमाला का प्रथम व्यंजन वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (सं० पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, किरण, मन, शरीर, काल, धन, प्रकाश, शब्द, अग्नि, वायु, मोर।
कइत–(हिं० स्त्री०) किनारा, कपित्थ।
कई–(हिं० वि०) कतिपय, अनेक, कितनेही।
कउर–(हिं० पुं०) देखो कवर।

कंकड़ (-र)–(हिं० पुं०) मिट्टी चूने के योग से बने हुए रोड़े जिनको फूंक-कर चूना बनता है, किसी वस्तु का पिसने योग्य छोटा टुकड़ा, पीने की सूखी तमाखू। कंकड़ी–(हिं० स्त्री०) छोटा कंकड़, छोटा टुकड़ा।

कंकड़ीला–(हिं० वि०) कंकड़ मिला हुआ

कंकाल–(हिं० पुं०) अस्थिपंजर।

कँखवारी, कँखौरी–(हिं० स्त्री०) काँख, काँख की फोड़िया।

कंगड़–(हिं० पुं०) लोहे का चक्र जिसको अकाली सिर पर बाँधते हैं, कंकण।

कंगन–(हिं० पुं०) कंकण।

कंगला–(हिं० वि०) देखो कंगाल।

कंगही–(हिं० स्त्री०) देखो कंघी।

कंगाल–(हिं० वि०) निर्धन, दरिद्र, भुक्खड़

कंगुरिया–(हिं० स्त्री०) सबसे छोटी अँगुली

कंगरा–(हिं० पुं०) प्रासाद की चोटी, शिखर, मुकुटमणि।

कंघा–(हिं० पुं०) बाल झारने की बड़ी कंघी। कंघी–(हिं० स्त्री०) छोटा कंघा, जुलाहे का एक यंत्र।

कंघेरा–(हिं० पुं०) कंघा बनानेवाला।

कंचुक–(हिं० पुं०) कवच, चोली।

कंचुकी–(हिं० स्त्री०) चोली, कचुली।

कंचेरा–(हिं० पुं०) काँच का काम करने-वाला।

कंजड़, कंजड़ा–(हिं० पुं०) एक घूमने-वाली जाति, डरपोक मनुष्य, भड़ुवा।

कंजा–(हिं० वि०) कंजई; (पुं०) कंजी आँखवाला मनुष्य।

कंजियाना–(हिं० क्रि०) धीमा पड़ना, मन्द होना।

कंजूस–(हिं० वि०) कृपण, सूम।

कंट, कंटक–काँटा, तीव्र वेदना, विघ्न।

कंटर–(हिं० पुं०) काँच का सुन्दर बोतल।

कँटिया–(हिं० स्त्री०) काँटी, छोटी कील, मछली फँसाने की अँकुसी, लोहे की अँकुसियों का गुच्छा जिससे कुवें में गिरे हुए गगरे, लोटे इत्यादि निकाले जाते हैं, सिर पर पहिनने का एक आभूषण।

कँटीला–(हिं० वि०) काँटेदार।

कंटोप–(हिं० पुं०) सिर तथा कानों को ढाँपने की एक प्रकार की टोपी।

कंठ–(हिं० पुं०) नरेटी, टेटुआ, ध्वनि, शब्द।

कंठला–(हिं० पुं०) बच्चों के गले में पहनाने का एक आभूषण।

कंठा–(हिं० पुं०) गले का चिह्न जो तोते के कंठ के चारों ओर पड़ जाता है, गले का एक आभूषण। कंठी–(हिं० स्त्री०) छोटे दाने का कंठा, तुलसी आदि की माला।

कंडा–(हिं० पुं०) गोबर का पाथा हुआ लंबा टुकड़ा।

कंडाल–(हिं० पुं०) सिंघा, तुरही, पानी रखने का बड़ा पात्र जिसका मुँह खुला होता है।

कंडी–(हिं० स्त्री०) छोटा कड़ा, गोहरी, टोकरी, एक प्रकार की टोकरी जिसमें पहाड़ी लोग बोझ ले जाते हैं।

कंडील–(हिं० स्त्री०) कन्दील, लालटेन।

कंडु–(हिं० पुं०) खुजली।

कंडेरा–(हिं० पुं०) धुनियाँ।

कंडौर, कंडौरा–(हिं० पुं०) कंडा पाथने का स्थान, कंडों का ढेर, गोहरौर।

कंत, कंथ–(हिं० पुं०) कान्त, प्रभु, मालिक, पति।

कंद–(हिं० पुं०) गदेदार जड़।

कंदन–(हिं० पुं०) नाश, विध्वंस करना।

कंदरा–(हिं० स्त्री०) गुहा, गुफा।

कंदा–(हिं० पुं०) शकरकन्द, घुइयाँ, अरुई।

कंदला, कंदेला–(हिं०वि०) मैला-कुचैला
कंदुक–(सं० पुं०) गेंद ।
कंध–(हिं० पुं०) स्कन्ध, कन्धा ।
कंधनी–(हिं० स्त्री०) किंकिणी, कमर में पहिनने का आभूषण ।
कंधर, कंधा–(हिं० पुं०) स्कंध, मोढ़ा ।
कंधियाना–(हिं० क्रि०) कन्धा देना, कंधे पर रखना ।
कंधेला–(हिं० पुं०) स्त्रियों के कंधे पर रहनेवाला ।
कँपकँपी–(हिं० स्त्री०) कम्प, थरथराहट।
कँपना–(हिं० क्रि०) थरथराना, कंपित होना ।
कंपा–(हिं०पुं०) लासा लगी हुई बाँस की लग्गी जिससे चिड़ीमार पक्षियों को फँसाकर पकड़ते हैं ।
कँपाना–(हिं० क्रि०) इधर-उधर चलना, हिलना, डराना, भय दिखाना ।
कंपू–(हिं० पुं०) शिविर, डेरा ।
कँवलगट्टा–(हिं० पुं०) कमल का बीज ।
कंस–(सं० पुं०) काँसा, प्याला, कसोरा ।
कंसकार–(सं० पुं०) कसेरा ।
कंसताल–(सं० पुं०) झाँझ, मजीरा ।
ककड़ी-री–(हिं०स्त्री०) भूमि पर फैलनेवाली एक लता जिसका लंबा फल खाया जाता है ।
ककनी–(हिं० स्त्री०) छोटा कंगन, इमली का छोटा फल।
ककराली–(हिं०स्त्री०) काँख का फोड़ा ।
ककहरा–(हिं० पुं०) वर्ण-समूह, 'क' से 'ह' तक अक्षर ।
ककही–(हिं० स्त्री०) कंघी ।
ककुद–(सं० पुं०) बैल के कंधे पर का कबड़, शिखर ।
ककुभ–(सं० स्त्री०) दिशा ।
कक्ष–(सं० पुं०) बाहुमूल, काँख ।
कक्षा–(सं० स्त्री०) काछ, लाँग ।
कखौरी–(हिं०स्त्री०) काँख की फोड़िया ।
कगर–(हिं० पुं०) ऊँचा किनारा, सीमा, मेड़; (क्रि०वि०) किनारे पर, अलग से ।
कगार–(हिं०पुं०) **कगरी**–(स्त्री०) ऊँचा किनारा, नदी का करारा, टीला ।
कङ्क–(सं०पुं०) बकुला, यमराज, पाखंडी, ब्राह्मण, चन्दन, क्षत्रिय, एक प्रकार का बड़ा आम, अज्ञातवास में युधिष्ठिर ने अपना नाम कङ्क रखा था ।
कङ्कण–(सं० पुं०) हाथ में पहिनने की चूड़ी, कंगन ।
कङ्कपत्र–(सं० पुं०) बाण, तीर ।
कङ्कमुख–(सं० पुं०) सँड़सी ।
कच–(सं० पुं०) केश, बाल, बन्धन, झुंड, शोभा; (हिं० वि०) कच्चा ।
कचक–(हिं० स्त्री०) दबने या कुचल जाने से उत्पन्न चोट ।
कचकच–(हिं० पुं०) बकझक । **कचकचाना**–(हिं० क्रि०) दाँत पीसना ।
कचकड़ (-ड़ा)–(हिं० पुं०) कछुवे की खोपड़ी ।
कचकना–(हिं० क्रि०) दबना, कुचलना ।
कचकोल–(हिं० पुं०) कपाल, खोपड़ी, खप्पर ।
कचट–(हिं० पुं०) टक्कर, ठेस ।
कचड़ा-रा–(हिं० पुं०) झाड़न, भूसीयुक्त अन्न ।
कचपच–(हिं० पुं०) भीड़भाड़ ।
कचर-पचर–(हिं०पुं०) कच्चा फल खाने पर मुख से निकलनेवाला शब्द ।
कचरकूट–(हिं० स्त्री०) मारपीट, पेट भरकर भोजन । **कचरघान**–(हिं०पुं०) भीड़भाड़, मारपीट ।
कचरना–(हिं० क्रि०) पैर से कुचलना, रौंदना, खूब पेट भर भोजन करना ।

कचलोन–(हिं०पुं०) कांच की भट्ठियों में जमे हुए क्षार से बना हुआ नमक।
कचवांसी–(हिं० स्त्री०) एक बिस्वे का बीसवां भाग।
कचाई–(हिं०स्त्री०) कच्चापन, अनुभव-हीनता।
कचाकची–(हिं०स्त्री०) विवाद, झगड़ा।
कचाना–(हिं० क्रि०) साहस हारना।
कचायँध–(हिं०स्त्री०) कच्चेपन की गन्ध।
कचायन–(हिं०स्त्री०) बकझक, कहा-सुनी।
कचार–(हिं०पुं०) नदी के किनारे का छिछला पानी।
कचारना–(हिं० क्रि०) कपड़ा धोना।
कचालू–(हिं० पुं०) घुइयाँ, अरुई, बंडा, एक प्रकार की चाट।
कचास–(हिं० स्त्री०) देखो कचाई।
कचियाना–(हिं० क्रि०) सकुचाना, लज्जा मानना।
कचमर–(हिं० पुं०) कुचला, कुचली हुई वस्तु।
कचोटना–(हिं०क्रि०) गड़ना, चुभना।
कचोड़ी, कचौड़ी, कचौरी–(हिं० स्त्री०) उड़द की पीठी आदि में मसाला मिलाकर आटे की लोई के भीतर भरकर घी या तेल में पकाई हुई पूरी।
कच्चा–(हिं० वि०) अपक्व, हरा, बिना रस का, अप्रस्तुत, अस्थायी, अयुक्त, न्यून, अपूर्ण, नियम-रहित, अनभ्यस्त, अदृढ़; (पुं०) दूर दूर की सियन, ढाँचा, दाढ़, ताँबे का छोटा सिक्का, सच्चा वृत्तान्त जिसको कच्चा चिट्ठा कहते हैं। **कच्चा करना**–झूठा साबित करना, डराना। **कच्चा टाँका**–राँगे का जोड़। **कच्चा तागा**–बिना बटा हुआ धागा। **कच्चा पड़ना**–झूठा ठहरना। **कच्चा बाना या माल**–झूठे गोटे का माल। **कच्ची पक्की**–दुर्वचन, गाली। **कच्ची जबान**–अश्लील वार्ता; **कच्चा चिट्ठा**–(हिं० पुं०) रहस्य, गुप्त भेद, सच्ची वार्ता।
कच्ची–(हिं०स्त्री०) न पकी हुई, घी या दूध में न पकी हुई रसोई। **कच्ची घड़ी**–(हिं०स्त्री०) चौबीस मिनट का काल। **कच्ची चीनी**–(हिं० स्त्री०) गलाकर स्वच्छ न की हुई चीनी। **कच्ची बही**–(हिं० स्त्री०) पूर्ण रूप से निश्चित न किये हुए हिसाब लिखने की व्यापारी की बही। **कच्ची मिति**–(हिं० स्त्री०) पक्की मिति से पहिले की या रुपया मिलने या चुकाने का दिन। **कच्ची रोकड़**–(हिं० स्त्री०) प्रतिदिन के आय-व्यय लिखने की बही, जिसमें ऐसा हिसाब लिखा जाता है जो पूर्ण रूप से स्थिर न हो। **कच्ची सड़क**–(हिं० स्त्री०) कंकड़ पत्थर से न पिटी हुई सड़क। **कच्ची सिलाई**–(हिं० स्त्री०) दूर-दूर पर टाँका लगाई हुई सिलाई।
कच्चे बच्चे–(हिं० पुं०) छोटे बच्चे।
कच्छ–(सं०पुं०) जल के पास की भूमि, कछार, अनूपदेश, वस्त्र का अञ्चल।
कच्छप–(सं०पुं०) कूर्म, कछुआ।
कच्छा–(हिं०स्त्री०) कई नावों को मिलाकर बना हुआ बेड़ा।
कच्छी–(हिं० वि०) कच्छ देशीय।
कच्छ–(हिं०पुं०) कच्छप, कछुवा, खुजली।
कछना–(हिं० पुं०) घुटने तक चढ़ाकर पहिनी हुई धोती। **कछनी**–(हिं०स्त्री०) छोटी धोती।
कछरा–(हिं०पुं०) चौड़े मुंह का घड़ा।
कछरी–(हिं० स्त्री०) छोटा कछरा, गगरी।

कछार–(हिं० पुं०) नदी या समुद्र के किनारे की नीची भूमि ।
कछु–(हिं० वि०) देखो कुछ ।
कछुआ–(हिं० पुं०) देखो कच्छप ।
कछुक–(हिं० वि०) कुछ, थोड़ा-सा ।
कछुवा–(हिं०पुं०) देखो कच्छप ।
कछू–(हिं०वि०) देखो कुछ ।
कछोंटा, कछौटा–(हिं०पुं०) काछ, कछनी, लाँग ।
कजरा–(हिं०पुं०) काजल, काली आँख का बैल; (वि०) जिसकी आँखें काजल लगी हुई देख पड़ें । कजराई–(हिं० स्त्री०) श्यामता, कालापन। कजरारा–(हिं० वि०) कज्जलयुक्त ।
कजरी–(हिं०स्त्री०) बरसात में गाने की एक रागिनी ।
कजरौटा–(हिं० पुं०) काजल रखने की डंडी लगी हुई डिबिया ।
कजली–(हिं०क्रि०) श्यामता, कालिख ।
कजलौटा–(हिं०पुं०) देखो कजरौटा ।
कञ्चुक–(सं० पुं०) साँप की केंचुली, चोली, अँगिया, कवच ।
कञ्चुकी–(सं० पुं०) राजा के अन्तःपुर का रक्षक, सर्प; (स्त्री०) चोली, अँगिया ।
कट–(सं० पुं०) नरकट की चटाई, घास फूस, टट्टी, अरथी, श्मशान ।
कटक–(सं०पुं०) पहाड़ के बीच का स्थान, चक्र, चूड़ी, सेना, शिविर, डेरा ।
कटकई–(हिं०स्त्री०) सेना ।
कटकट–(हिं०स्त्री०) दाँतों के कड़कड़ाने का शब्द ।
कटकार–(सं० पुं०) शिल्पकार, चटाईवाला ।
कटकुटी–(सं०स्त्री०) पर्णशाला, झोपड़ी ।
कटखना–(हिं०वि०) दाँत काटनेवाला ।
कटघरा–(हिं०पुं०) जंगले का बना हुआ काठ का घर, बड़ा पींजड़ा ।
कटती–(हिं०स्त्री०) बिक्री, माँग ।
कटना–(हिं० क्रि०) दो टुकड़े होना, घुसना, महीन चूर्ण होना, बीतना, समाप्त होना, छीजना, खपना, मिटना, नष्ट होना ।
कटनास–(हिं० पुं०) नीलकंठ पक्षी ।
कटनि–(हिं०स्त्री०) काटछाँट ।
कटनी–(हिं०स्त्री०) कतरनी, कटाई, दौड़ ।
कटरा–(हिं० पुं०) छोटा चौकोर हाट ।
कटवाँ–(हिं० वि०) कटा हुआ, काटकर बना हुआ ।
कटहर–(हिं० पुं०) देखो कटहल ।
कटहरा–(हिं० पुं०) कटघरा ।
कटहल–(हिं० पुं०) एक वृक्ष जिसमें हाथ भर लंबे काँटेदार मोटे फल लगते हैं, पनस ।
कटहा–(हिं० वि०) दाँत काटनेवाला ।
कटा–(हिं०वि०) टूटा-फूटा, कटा हुआ ।
कटाई–(हिं० स्त्री०) प्रहार, काटने का काम, अन्न का काटा जाना, काटने का शुल्क ।
कटाऊ–(हिं० वि०) काट-छाँट किया हुआ ।
कटाक्ष–(सं० पुं०) तिरछी चितवन, आक्षेप ।
कटान–(हिं०स्त्री०) काटने का कार्य ।
कटाना–(हिं०क्रि०) छेद कराना, काटने का काम दूसरे से कराना ।
कटार–(हिं०पुं०) दोनों ओर की धार का छोटा अस्त्र ।
कटारी–(हिं०स्त्री०) कटार, एक प्रकार का छोटा अस्त्र ।
कटाव–(हिं०पुं०) काट छाँट, बनावटी

बेलबूटे जो कपड़ा काटकर बनाये जाते हैं।
कटाह–(सं०पुं०) कछुवे की खोपड़ी, तेल या घी रखने का पात्र।
कटि–(सं० स्त्री०) कमर।
कटिबद्ध–(सं०वि०) उद्यत, तत्पर, तैयार।
कटिबन्ध–(सं० पुं०) कमरबन्द, पृथ्वी का वह भाग जो शीतलता और उष्णता के अनुसार निर्धारित होता है।
कटिया–(हिं० स्त्री०) पशुओं का चारा जो ज्वार, मकई इत्यादि के डंटलों को काटकर बनाया जाता है।
कटिसूत्र–(सं० पुं०) करधनी।
कटीला–(हिं०वि०) तीक्ष्ण, पैना, प्रभावशाली, हृदयग्राही, नोकदार।
कटु–(सं०वि०) कड़ुवा, अप्रिय, तीक्ष्ण, कुत्सित।
कटूक्ति–(सं० स्त्री०) अप्रिय वार्ता।
कटैया–(हिं० वि०) काटनेवाला।
कटोरा–(हिं०पुं०) चौड़ी पेंदी तथा खुले मुंह का बड़ा प्याला।
कटोरी–(हिं०स्त्री०) छोटा कटोरा।
कटौवा–(हिं०स्त्री०) कटने वाला।
कटौती–(हिं०स्त्री०) काटकर निकाली जानेवाली वस्तु।
कटौनी–(हिं०स्त्री०) अन्न काटने का काम
कट्टर–(हिं० वि०) हठी अन्धविश्वासी।
कट्टहा–(हिं०पुं) महाब्राह्मण, महापात्र।
कट्टा–(हिं० वि०) स्थूल, मोटा, पुष्ट।
कट्ठा–(हिं०पुं०) भूमि की एक नाप जो पाँच हाथ चार अंगुल होती है।
कठ–(हिं०पुं०) एक प्रकार का प्राचीन बाजा, समासादि में आने से इस शब्द का अर्थ 'काठ का बना हुआ' होता है जैसे कठपुतली।
कठफोड़वा–(हिं०पुं०) भूरे रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच लंबी होती है। यह पेड़ों की छाल को छेदती और इसमें के कीड़े मकोड़े खाती है।
कठबाप–(हिं०पुं०) सौतेला पिता।
कठबेल–(हिं०पुं०) कपित्थ, कैथ।
कठमस्त–(हिं० पुं०) हृष्टपुष्ट, हट्टा-कट्टा। कठमस्ती–(हिं० स्त्री०) गुण्डई।
कठमाटी–(हिं०स्त्री०) कीचड़ की मिट्टी जो सूखने पर बहुत कड़ी हो जाती है।
कठरा–(हिं०पुं०) काठ का बड़ा सन्दूक, काठ का पात्र, कठौता, कठघरा।
कठला–(हिं० पुं०) बच्चों के पहिनाने का गले का एक आभूषण।
कठवत–(हिं० पुं०) देखो कठौता।
कठारा–(हिं०पुं०) कछार।
कठारी–(हिं० स्त्री०) कमण्डलु।
कठिका–(सं०स्त्री०) खटिका, खड़िया।
कठिन–(सं० वि०) दृढ़, कड़ा, कठोर, निष्ठुर, तीक्ष्ण, दुःसह।
कठिनता, कठिनताई–(सं०स्त्री०) कठोरता, तीक्ष्णता, कड़ापन, निर्दयता।
कठिनाई–(हिं०स्त्री०) दृढ़ता, कड़ापन असुविधा।
कठिनी–(सं० स्त्री०) खटिका, खड़िया।
कठिया–(हिं० वि०) कड़े छिलकेवाला गेहूँ।
कठियाना–(हिं० क्रि०) कड़ा होना, सूखना।
कठुला–(सं० स्त्री०) बच्चों के गले में पहिनने की माला।
कठुवाना–(हिं० क्रि०) सूखकर कड़ा हो जाना, ठंढक से हाथ-पैर ठिठुरना।
कठोर–(सं० वि०) कठिन, कड़ा, निर्दय, दारुण, तीक्ष्ण।
कठौता–(हिं० पुं०) लकड़ी का बड़ा पात्र

कड़क–(हिं०स्त्री०) कठोर शब्द, तड़प, इन्द्रियों में दाह होने का एक रोग, कड़ापत्त ।
कड़कड़–(हिं० पुं०) दो वस्तुओं के परस्पर टकराने का शब्द, कठोर शब्द ।
कड़कड़ाना–(हिं० क्रि०) कड़कड़ शब्द होना । **कड़कड़ाहट**–(हिं० स्त्री०) कर्कश शब्द, गरज ।
कड़कना–(हिं० क्रि०) तड़पना, कड़कड़ाना, कड़ा शब्द बोलना, टूटना, फूटना, डाटना ।
कड़कनाल–(हिं० स्त्री०) चौड़े मुँह की तोप ।
कड़खा–(हिं० पुं०) युद्ध संगीत ।
कड़वा–(हिं० वि०) देखो कटु ।
कड़हन–(हिं०पुं०) जंगली धान ।
कड़ा–(हिं०पुं०) हाथ या पैर में पहिनने का कंगन; (वि०) रूखा, उग्र, दृढ़, तीक्ष्ण, दुष्कर, दुःसाध्य, प्रचण्ड, तीव्र, असह्य, कर्कश ।
कड़ाका–(हिं० पुं०) किसी कड़े पदार्थ के टूटने का शब्द, उपवास, लंघन ।
कड़ाबीन–(हिं० स्त्री०) छोटी बन्दूक, तमंचा ।
कड़ाहा–(हिं०पुं०) लोहे की बड़ी कड़ाही । **कड़ाही**–(हिं० स्त्री०) छोटा कड़ाहा ।
कड़ियाली–(हिं० स्त्री०) घोड़े की लगाम ।
कड़ी–(हिं० स्त्री०) छोटा छल्ला, अड़चन, संकट, दुःख, गीत का एक भाग; (वि०) कठोर ।
कड़ुआ–(हिं० वि०) स्वाद में तीखा, तीक्ष्ण प्रकृति का, क्रोधी, अप्रिय, कठिन, टेढ़ा ।
कड़ुआ तेल–(हिं० पुं०) सरसों का तेल ।
कड़ुआना–(हिं० क्रि०) कड़ुआ लगना, क्रोध करना, किरकिराना । **कड़ुआहट**–(हिं० पुं०) कटुता ।
कड़ुई–(हिं० वि०) कटु, चरपरी ।
कड़ू–(हिं० वि०) देखो कटु ।
कढ़ना–(हिं० क्रि०) निकलना, उदय होना, देख पड़ना, बढ़ जाना ।
कढ़नी–(हिं०स्त्री०) मथानी की रस्सी ।
कढ़ाई–(हिं०स्त्री०) निकालने का काम, सूई का काम, कसीदा, कड़ाही ।
कढ़ाना, कढ़वाना–(हिं० क्रि०) बाहर कराना, बाहर निकालना । **कढ़ाव**–(हिं० पुं०) कसीदे का काम ।
कढ़ी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सालन ।
कढ़ैया–(हिं० वि०) निकालनेवाला; (स्त्री०) कड़ाही ।
कण–(सं० पुं०) किनका, लेश, रवा, छोटा टुकड़ा, जलबिन्दु, चिनगारी, चावल का महीन टुकड़ा, परमाणु ।
कणिका–(सं० स्त्री०) अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु, कण, टुकड़ा, किनका ।
कण्ठ–(सं०पुं०) गरदन के सामने का भाग, नरेटी । **कण्ठगत**–(सं० वि०) गले तक पहुँचा हुआ । **कण्ठमाला**–(सं० स्त्री०) गले में पहिनने का आभूषण, कण्ठ में का बाहरी फोड़ा । **कण्ठस्थ**–(सं० वि०) याद किया हुआ ।
कत–(हिं० अव्य०) किस कारण से, किस लिये ।
कतना–(हिं० क्रि०) काता जाना; (क्रि० वि०) कितना ।
कतनी–(हिं० स्त्री०) सूत कातने की टेकुरी ।
कतरन–(हिं० स्त्री०) कपड़े-कागज इत्यादि का कटा हुआ रद्दी टुकड़ा ।
कतरना–(हिं० क्रि०) कैंची से काटना, छाँटना, टुकड़े करना । **कतरनी**–(हिं०

स्त्री०) बाल, कपड़े आदि काटने की कैंची।
कतरब्योंत–(हिं०पुं०) काटछाँट, उलट-पलट, युक्ति।
कतरा–(हिं०पुं०) खण्ड, अंश, टुकड़ा।
कतराई–(हिं०स्त्री०) कतरने का काम।
कतराना–(हिं० क्रि०) बचकर निकल कजाना।
कतला–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का पतला टुकड़ा।
कतली–(हिं० स्त्री०) चौकोर कटी हुई मिठाई।
कतवार–(हिं० पुं०) कूड़ा-करकट।
कतहुँ, कतहूँ–(हिं०अव्य०) किस ओर।
कताई–(हिं० स्त्री०) कातने का काम, कतौनी।
कति–(सं० वि०) कौन-सी संख्या का, कितना, बहुत से, अनगिनत।
कतिक–(हिं०वि०) किस परिमाण का, कितना, बहुत-सा, अनेक। कतिपय–(सं० वि०) कुछ, कई एक।
कतेक–(हिं० वि०) कितने, केतिक।
कतौनी–(हिं० स्त्री०) कातने की क्रिया, प्रतीक्षा।
कत्थ–(हिं० पुं०) देखो कत्था।
कत्थई–(हिं० वि०) खैर के रंग का।
कत्थक–(हिं० पुं०) एक जातिविशेष, ये लोग नाचते गाते हैं।
कत्था–(हिं० पुं०) खैर की लकड़ियों को उबालकर निकाला हुआ सत्व।
कथं–(सं० अव्य०) किस रीति से, किस प्रकार से, क्यों, कहाँ से।
कथक्कड़–(हिं० पुं०) किस्से कहानी कहनेवाला।
कथञ्चन–(सं०अव्य०) किसी प्रकार से।
कथञ्चित्–(सं०अव्य०) किसी प्रकार से।
कथन–(सं० पुं०) कथा, वाक्य।
कथना–(हिं० क्रि०) बोलना, कहना, निन्दा करना। कथनी–(हिं० पुं०) बातचीत, बकवाद।
कथमपि–(सं०अव्य०) किसी प्रकार से।
कथरी–(हिं०स्त्री०) पुराने चिथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना, गुदड़ी।
कथा–(सं० स्त्री०) किस्सा कहानी, वार्ता, प्रसंग, चर्चा, उपन्यास।
कथित–(सं०वि०) उच्चारित, कहा हुआ।
कथोद्घात–(सं०पुं०) नाटक की प्रस्तावना। कथोपकथन–(सं० पुं०) कथा पर कथा, विविध वार्ता, बातचीत।
कद–(हिं०स्त्री०) ईर्ष्या, द्वेष, हठ, अनबन; (अव्य०) कब, किस समय।
कदन–(सं० पुं०) पाप, युद्ध, लड़ाई।
कदन्न–(सं० पुं०) कुत्सित अन्न, मोटा अनाज।
कदम–(हिं० पुं०) कदम्ब वृक्ष।
कदरई–(हिं०स्त्री०) भीरुता, कायरता।
कदरज–(हिं० पुं०) कदर्य, कंजूस व्यक्ति।
कदरमस–(हिं० स्त्री०) मारपीट।
कदराना–(हिं० क्रि०) भयभीत होना, डरना।
कदर्थ–(सं०पुं०) कूड़ा-करकट; (वि०) निरर्थक।
कदली–(सं०स्त्री०) केला, रंभाफल, एक प्रकार का हिरन।
कदा–(सं० अव्य०) किस समय, किस वक्त पर।
कदाचन–(हिं० अव्य०) कदाचित्, कभी।
कदाचार–(सं०पुं०) कुत्सित व्यवहार।
कदाचित–(सं०अव्य०) एक बार, कभी।
कदापि–(सं०अव्य०) कभी कभी, जब तक।
कदुष्ण–(सं०वि०) थोड़ा गरम।
कधी–(हिं०क्रि०वि०) कभी, किसी समय।

कनक–(हिं० पुं०) सुवर्ण, सोना ।
कन–(हिं०पुं०) कण, बहुत छोटा टुकड़ा, अन्न के दाने का टुकड़ा, बूंद, चावल की धूल, कन्ना, यौगिक शब्दों में 'कन' से 'कर्ण' शब्द का बोध होता है, यथा कनटोप, कनफटा इत्यादि ।
कनई–(हिं० स्त्री०) कनखा, कोपल, कीचड़, गीली मिट्टी ।
कनउँगली–(हिं० स्त्री०) कानी अँगुली ।
कनऊड़–(हिं०वि०) कनौड़ा, काना, कृतज्ञ
कनऊड़ी–(हिं०स्त्री०) दासी ।
कनक–(सं० पुं०) सुवर्ण, सोना ।
कनकटा–(हिं०वि०) जिसका कान कटा हो, बूचा, कान काटनेवाला ।
कनकना–(हिं० वि०) भंगुर, चुनचुनाहट लानेवाला, असह्य, खाने में बुरा लगनेवाला, असहनशील ।
कनकी–(हिं०स्त्री०) चावल का महीन टुकड़ा ।
कनकैया–(हिं०स्त्री०) गुड्डी, पतंग ।
कनखजूरा–(हिं०पुं०) शतपदी, गोजर ।
कनखना–(हिं० स्त्री०) अप्रसन्न होना ।
कनखिया–(हिं०स्त्री०) कनखी, कटाक्ष ।
कनखी–(हिं०स्त्री०) कटाक्ष ।
कनटोप–(हिं० पुं०) दोनों कान को ढाँपने की बड़ी टोपी । **कनपट**–(हिं० पुं०) कनपटी, थप्पड़ । **कनपटी**–(हिं० स्त्री०) कान और आँख के बीच का स्थान । **कनफुसकी**–(हिं० स्त्री०) कान में धीरे धीरे बोलना । **कनफूल**–(हिं० पुं०) करनफूल ।
कनमनाना–(हिं० क्रि०) सोये हुए प्राणी का धीरे-धीरे सचेत होना और हिलना-डोलना ।
कनवई, कनवा–(हिं०स्त्री०) एक-छटांक का परिमाण ।
कनहार–(हिं० पुं०) कर्णधार, केवट ।
कनाई–(हिं० स्त्री०) कोंपल, शाखा, पतली डाल, टहनी ।
कनागत–(हिं० पुं०) पितृपक्ष ।
कनियाँ–(हिं०स्त्री०) क्रोड़, गोद, उत्संग ।
कनियाना–(हिं० क्रि०) साथ छोड़ना, आँख बचाकर भाग जाना ।
कनिष्ठा–(सं०वि०) अत्यन्त लघु वय का ।
कनिष्ठा, कनिष्ठिका–(सं० स्त्री०) कानी अँगुली ।
कनी–(हिं० स्त्री०) छोटा टुकड़ा, किनकी, हीरे का छोटा कण, चावल का मध्य भाग, विन्दु ।
कनीनिका–(सं०स्त्री०) आँख की पुतली, कन्या, गुड़िया, कठपुतली, कानी अँगुली ।
कने–(हिं०क्रि०वि०) निकट, पास, ओर ।
कनठी–(हिं० स्त्री०) कान उमेठने का दण्ड ।
कनौड़ा–(हिं० वि०) काना, कलंकित, निन्दित, लज्जित ।
कनौती–(हिं० स्त्री०) पशुओं के दोनों कानों का छोर, इनका घूमना-फिरना ।
कन्त–(हिं०पुं०) पति, स्वामी, मालिक ।
कन्था–(हिं० स्त्री०) कथरी, गुदड़ी ।
कन्द–(सं० पुं०) लाल मूली, गाजर, अनाज की जड़, फल न देनेवाले पौधे की जड़ ।
कन्दर–(सं० पुं०) हाथी का अंकुश, गुहा ।
कन्दरा–(सं०स्त्री०) गुहा, गुफा, खोह ।
कन्दर्प–(सं० पुं०) कामदेव, मन्मथ ।
कन्दली–(सं० स्त्री०) कदली, केला ।
कन्दुक–(सं० पुं०) गेंद ।
कन्ना–(हिं० पुं०) पतंग की डोरी का वह भाग जो इसके बीच में बँधा

होता है, किनारा, चावल की कनी।
कन्नी–(हिं० स्त्री०) पतंग को सीधी रखने के लिये इसके एक ओर बाँधी हुई वस्तु।
कन्यका–(सं०स्त्री०) कुमारी कन्या।
कन्या–(सं०स्त्री०) दस वर्ष की लड़की, अविवाहिता स्त्री, पुत्री, बेटी।
कन्हाई–(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण, कन्हैया, बड़ा सुन्दर लड़का।
कन्हैया–(हिं० पुं०) श्रीकृष्ण, प्रिय व्यक्ति, सुन्दर बालक।
कपट–(सं०पुं०) मिथ्या व्यवहार, धोखा।
कपटी–(सं०वि०) वञ्चक, धूर्त, छली।
कपड़कोट–(हिं० पुं०) शिविर। **कपड़छान**–(हिं० पुं०) किसी चूर्ण को कपड़े में छानने का काम। **कपड़मिट्टी**–(हिं० स्त्री०) कपड़ौटी।
कपड़ा–(हिं०पुं०) रूई, ऊन, रेशम या सन का बना हुआ वस्त्र।
कपर्द, कपर्दक–(सं० पुं०) कौड़ी।
कपर्दी, कपर्दि, कपर्दिका-(सं०स्त्री०) कौड़ी।
कपसा–(हिं० स्त्री०) चिकनी गीली मिट्टी।
कपाट–(सं०पुं०) किवाड़, द्वार।
कपार–(हिं०पुं०) देखो कपाल।
कपाल–(सं०पुं०) मस्तक, माथा, खप्पर, घड़े का टुकड़ा, भिक्षापात्र।
कपास–(हिं०पुं०) देखो कार्पास। **कपासी**–(हिं०वि०) कपास के फूल के रंग का, हलके पीले रंग का।
कपि–(सं० पुं०) बन्दर, हाथी, सूर्य।
कपिञ्जल–(सं०पुं०) चातक, पपीहा, तीतर।
कपिल–(सं०वि०) भूरा, तामड़ा, मटमैला।
कपिला–(सं०स्त्री०) शुभ्र वर्ण की गाय; (वि०) भूरे रंग का, मटमैला।
कपिश–(सं० पुं०) मटमैला रंग; (वि०) मटमैला, भूरे रंग का।
कपिस–(हिं० पुं०) रेशमी वस्त्र।
कपूर–(सं० पुं०) एक सफेद रंग का सुगन्धित द्रव्य जो हवा लगने से उड़ जाता है।
कपूरी–(हिं० वि०) कपूर के रंग का, हलके पीले रंग का।
कपोत–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, कबूतर; **कपोतव्रत**–(सं०वि०) दूसरे के अत्याचारों को चुपचाप सहन करनेवाला; (पुं०) मौन व्रत।
कपोती–(सं० स्त्री०) कबूतरी, पेडुकी।
कपोल–(सं० पुं०) गण्डस्थल, गाल। **कपोलकल्पना**–(सं० स्त्री०) अमूलक कल्पना, मनगढ़ंत। **कपोलकल्पित**–(सं० वि०) असत्य, झूठ।
कफ–(सं०पुं०) श्लेष्मा, शरीर के भीतर की एक धातु।
कफनखसोट–(हिं० वि०) कृपण, दरिद्र का धन हरनेवाला।
कफनी–(हिं० स्त्री०) साधु के पहिनने का बिना सिला हुआ वस्त्र जिसमें गला डालने के लिये एक छिद्र होता है।
कब–(हिं० क्रि० वि०) किस समय।
कबड्डी–(हिं० स्त्री०) बालकों का एक खेल जिसमें वे दो दल बनाकर खेलते हैं, काँपा, कम्पा।
कबन्ध–(सं० पुं०) जल, पानी; (पुं०) उदर, पेट, मेघ, बिना मस्तक का धड़।
कबरा–(हिं० वि०) कर्बुर, श्वेत वर्ण पर काले, लाल, पीले या दूसरे रंग के धब्बे।
कबाड़–(हिं० पुं०) कूड़ा-करकट।
कबाड़ा–(हिं० पुं०) निरर्थक व्यापार, झगड़ा, झंझट।

कबीला--(अ०स्त्री०)पत्नी,जोड़ू,समूह।
कबुलवाना, कबुलाना–(हिं० क्रि०) स्वीकार करवाना ।
कभी–(हिं० क्रि० वि०) किसी समय।
कभू–(हिं० क्रि० वि०) देखो कभी ।
कम-कम–(हिं०क्रि०वि०)थोड़ा-थोड़ा ।
कमङ्गर–(हिं० पुं०) कमान बनानेवाला, हड्डी बैठानेवाला, चित्रकार।
कमचा–(हिं०पुं०)छोटी कमान, सारंगी, लचीली डाल। **कमची**–(हिं० स्त्री०) बाँस की पतली डाल जिसकी टोकरियाँ बनती हैं ।
कमंचा–(सं० पुं०) बढ़ई का बरमा चलाने का डंडा ।
कमठ–(सं० पुं०) कछुवा, बाँस, तुम्बी या नारियल का पात्र।
कमंठा–(हिं० पुं०) चाप, कमान।
कमठी–(सं० स्त्री०) कछुई; (हिं० स्त्री०) बाँस या लकड़ी की लम्बी पतली पट्टी, फट्टी।
कमण्डल–(हिं० पुं०) देखो कमण्डलु ।
कमण्डलु–(सं० पुं०) काठ या नारियल का बना हुआ संन्यासियों का पात्र, तुम्बा ।
कमती–(हिं०स्त्री०) कम, अल्प, घटी ; (वि०) अल्प, थोड़ा।
कमनीय–(सं० वि०) मनोहर, रुचिकर, सुन्दर, प्रिय।
कमनंत–(हिं० पुं०) धनुर्धारी ।
कमरकोट, कमरकोठा–(हिं० पुं०) गढ़ के चारों ओर बनी हुई कँगूरेदार भीत जिसमें लक्ष्य लगाने के लिये छेद होते हैं, प्राकार ।
कमरख–(हिं ० पुं०) एक वृक्ष जिसके फाँकवाले लम्बे फल होते हैं। **कमरखी**–(हिं० वि०) फाँकदार।
कमरटूटा–(हिं०वि०)ढीली कमरवाला।
कमरा–(हिं० पुं०)कोष्ठ, कोठा, कोठरी।
कमरिया–(हिं० स्त्री०) छोटा कम्बल, कटि, कमर। **कमरी**–(हिं० वि०) छोटा कम्बल ।
कमल–(सं० पुं०) पद्म। **कमलगट्टा**–(हिं० पुं०) कमल का बीज ।
कमला–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, सुन्दर स्त्री, नारंगी। **कमलाकर**–(सं०पुं०) पद्मसमूह। **कमलाकान्त**–(सं०पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु ।
कमलासन–(सं० पुं०) ब्रह्मा, हठयोग का पद्मासन ।
कमलिनी–(सं०स्त्री०)छोटा कमल,कोईं।
कमली–(हिं०स्त्री०)छोटा कम्बलकमरी।
कमवाना–(हिं० क्रि०) दूसरे से कमाने का काम कराना ।
कमहा–(हिं० वि०) काम करनेवाला, श्रमी ।
कमाई–(हिं० स्त्री०) कमाया हुआ धन, कमाने का काम, उद्यम, व्यवसाय।
कमाऊ–(सं० वि०) कमानेवाला ।
कमाची–(हिं० स्त्री०)कमान की तरह झुकी हुई तीली ।
कमाना–(हिं० क्रि०) उपार्जन करना, परिश्रम करना, सुधारना, मल-मूत्र उठाना,बोने के लिये भूमि तैयार करना, परिश्रम करना ।
कमासुत–(हिं० वि०) धन कमानेवाला, उद्यमी ।
कमेरा–(हिं० पुं०) कर्मकार, खेत में काम करनेवाला ।
कमोरा–(हिं० पुं०)चौड़े मुंह का मिट्टी का घड़ा, कछरा। **कमोरी**–(हिं०स्त्री०) छोटा कमोरा, कछरी ।
कम्प–(सं०पुं०)स्फुरण,थरथरी,कपकँपी।

कम्पन–(सं० पुं०) कँपकँपी, हिलना।
कम्पा–(सं० स्त्री०) कम्पन, कँपकँपी।
कम्पा मारना–छल द्वारा फँसाना।
कम्पित, कम्पी–(सं०वि०)काँपनेवाला।
कम्बल–(सं० पुं०) भेड़ के ऊन की बनी ऊनी चादर।
कम्बु–(सं० पुं०) शंख, घोंघा, कौड़ी।
कम्बुक–(सं० पुं०) नीच पुरुष।
कम्बू–(सं० पुं०) तस्कर,चोर; (स्त्री०) शंख।
कम्मल–(हि० पुं०) देखो कम्बल।
कर–(सं० पुं०) हाथ, हाथी का सूँड़, काम, महसूल, छल, युक्ति, चौबीस अंगुल की नाप, संबंध कारक का चिह्न, प्रत्यय की तरह शब्द में प्रयुक्त होने से इसका अर्थ "करनेवाला" होता है; यथा–कष्टकर, सुखकर इत्यादि।
करइत–(हि०पुं०)एक प्रकार का कीड़ा, एक प्रकार का सर्प।
करंजा–(हि०पुं०) कंजा; (वि०) भूरी आँखवाला।
करंड–(हि०पुं०) पिटारा, कोष।
करंडी–(हि० स्त्री०) कच्चे रेशम की चादर, अंडी।
करक–(सं० पुं०) कमण्डल, करवा; (हि० स्त्री०) देखो कड़क।
करकट–(हि० पुं०) असार वस्तु, कूड़ा-कतवार।
करकण्टक–(सं० पुं०) नख।
करकना–(हि० क्रि०) चटचटाना, पीड़ा होना।
करकरा–(हि० क्रि०) खुरखुरा, गड़नेवाला, कठोर।
करकस–(हि०वि०) कर्कश, कड़ा।
करखा–(हि० पुं०) कलंक, काजल।
करगह–(हि० पुं०) कपड़ा बीनने का यन्त्र।
करगहना–(हि० पुं०)पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा जिसको द्वार या खिड़की के चौखट पर रखकर जोड़ाई करते हैं।
करग्रह–(सं० पं०) विवाह, कर लेने का काम।
करघा–(हि० पुं०) देखो करगह।
करट–(सं० पुं०) कौवा, दुष्ट मनुष्य।
करटक–(सं० पुं०) कौवा।
करटा–(सं० स्त्री०) दूध दुहाने में छटकनेवाली गाय।
करण–(सं० पुं०) व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है, तृतीया विभक्ति, इन्द्रिय, शरीर, कार्य, क्रिया, गणित में वह संख्या जिसका वर्गमूल पूरा-पूरा न निकल सके; (सं०स्त्री०) गणित में जिस संख्या का अति सूक्ष्म रूप से वर्गमूल नहीं निकाला जा सकता।
करणीय–(सं० वि०) करने योग्य।
करतब–(हि० पुं०)कर्तव्य, काम, कला।
करतल–(हि० पुं०) हथेली।
करता–(हि० पुं०) कर्ता, करनेवाला।
करतार–(हि० पुं०) कर्तार, विधाता।
करतारी–(हि०स्त्री०)हथेलियों से ताली बजाने का शब्द।
करताल–(सं० पुं०) झाँझ, मजीरा।
करती–(हि० स्त्री०) मरे बछड़े का चमड़ा जिसमें भूसा भरकर गाय को दिखाकर दूध दूहा जाता है।
करतूत, करतूति–(हि० स्त्री०) कर्तव्य, करनी, करतब।
करदा–(हि ० पुं०) गर्दा, कूड़ा, करकट, अन्न में मिली हुई मिट्टी इत्यादि।

करघनी–(हिं०स्त्री०) कमर में पहिनने का आभूषण ।
करघर–(हिं०पुं०) मेघ, बादल।
करधृत–(सं० वि०) हाथ से पकड़ा हुआ।
करन–(हिं० पुं०) देखो कर्ण। करनधार–(हिं० पुं०) देखो कर्णधार ।
करनफूल–(हिं० पुं०) कान का एक गहना।
करना–(हिं० क्रि०) समाप्ति पर लाना, निबटाना, बनाना, व्यवसाय चलाना, पति या पत्नी बनाना, भाड़े पर सवारी लेना, इस शब्द को किसी संज्ञा के अन्त में लगा देने से उस संज्ञा के अर्थ की क्रिया बन जाती है।
करनाल–(हिं० पुं०) नरसिंघा, भोंपा ।
करनी–(हिं०स्त्री०) कर्म, कार्य, करतब, अन्त्येष्टि क्रिया, राजगीर का वह अस्त्र जिससे वे मसाला उठाते और भीत पर लगाकर उसको चिकनाते हैं।
करपर–(हिं० पुं०) खोपड़ी; (वि०) कृपण।
करपल्लव–(सं० पुं०) अँगुली, हाथ ।
करपल्लवी–(सं० स्त्री०) हाथ के संकेत की बातचीत ।
करपाल–(सं० पुं०) खड्ग, तलवार ।
करपुट–(सं० पुं०) श्रद्धांजलि, अंजलि।
करप्रद–(सं० पुं०) कर देनेवाला ।
करप्राप्त–(सं०वि०) हाथ में आया हुआ।
करबाल–(सं०पुं०) नख, तलवार ।
करबी–(हिं० स्त्री०) चौपायों का खाना, चरी।
करभ, करभक–(सं० पुं०) करपृष्ठ, हथेली के पीछे का भाग, हाथी का बच्चा ।
करभीर–(सं० पुं०) सिंह।
करम–(हिं० पुं०) कर्म, काम, भाग्य ।
करमकल्ला–(हिं० पुं०) बन्दगोभी, पातगोभी ।
करमठ–(हिं० वि०) कर्मनिष्ठ ।
करमाल–(हिं० पुं०) कर्म, भाग्य ।
करमाली–(सं० पुं०) सूर्य ।
करमी–(हिं० वि०) कर्मकार, कर्मठ।
करमुंहा–(हिं० वि०) कलंकयुक्त ।
करमूल–(सं० पुं०) कलाई ।
कररना, करराना–(हिं० क्रि०) कर्कश शब्द करना, चरचराना ।
कररी–(हिं० स्त्री०) वनतुलसी।
कररुह–(सं० पुं०) नख, अँगुली, तलवार।
करवट–(हिं०स्त्री०) दहिने या बायें बल लेटने की स्थिति ।
करवत–(हिं० पुं०) करपत्र, आरा ।
करवा–(हिं० पुं०) धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा, गड़वा ।
करवाना–(हिं० क्रि०) कोई काम करने के लिये दूसरे को प्रवृत्त करना ।
करवारि, करवाल–(सं० पुं०) कृपाण, तलवार।
करवाली–(हिं० स्त्री०) छोटी तलवार, करौली ।
करवीर–(सं० पुं०) कृपाण, तरवार ।
करवैया–(हिं० वि०) कर्ता, करनेवाला।
करशाखा–(हिं० स्त्री०) अँगुली ।
करष–(हिं०स्त्री०) कर्ष, खिंचाव, तनाव।
करषना–(हिं० क्रि०) घसीटना, तानना।
करसना–(हिं०क्रि०) खींचना, घसीटना
करसान–(हिं० पुं०) कृषाण, किसान ।
करसायर, करसायल–(सं० पुं०) कृष्णसार, काला हिरन ।
करसी–(हिं० स्त्री०) कंडे का चूरचार, उपला, उपरी, गोहरी ।
करस्वन–(सं० पुं०) हस्तध्वनि, ताली ।

करहनी–(हिं० पुं०) एक अगहनो धान।
कराई–(हिं० स्त्री०) दाल का छिलका, श्यामता, कालापन।
करात–(हिं० पुं०) चार जव की तौल जो सोना-चाँदी तथा दवा तौलने में प्रयुक्त होती है।
कराना–(हिं० क्रि०) करवाना।
करारा–(हिं०पुं०) नदी का ऊँचा तट जो जल से काटे जाने पर बनता है, एक प्रकार की मिठाई; (वि०) कठोर, कड़ा, तीक्ष्ण।
कराल–(सं० वि०) भयंकर, डरावना, प्रशस्त।
कराह–(सं०पुं०) पीड़ा का शब्द, कड़ाह।
करि–(हिं० पुं०) करी, हाथी।
करिखा–(हिं० पुं०) कालिख, कलंक।
करिणी–(सं०स्त्री०) हस्तिनी, हथिनी।
करिन्द–(हिं० पुं०) देखो करीन्द्र।
करिया–(हिं० पुं०) पतवार, कर्णधार।
करियाई–(हिं०स्त्री०) नीलता, कालापन।
करियाद–(सं० पुं०) दरयायी घोड़ा।
करिल–(हिं० पुं०) कोंपल, कोमल पत्ता; (वि०) काला।
करिवर–(सं० पुं०) श्रेष्ठ (उत्तम) हाथी।
करिष्णु–(सं० पुं०) करनेवाला, करणशील।
करिष्यमाण–(सं०वि०) करने के लिये उद्यत।
करिहाँव–(हिं० पुं०) कटि, कमर।
करीष–(सं० पुं०) सूखा गोबर, जंगल में सूखा हुआ गोबर, कण्डा, अरना।
करुआ–(हिं० वि०) देखो कड़ुवा।
करुखी–(हिं० स्त्री०) कनखी।
करुणा–(सं० स्त्री०) दूसरे के दुःख हटाने की इच्छा, कृपा। करुणाकर–(सं० वि०) अत्यन्त दयालु। करुणानिधान, करुणानिधि–(सं० वि०) बड़ा दयालु।
करुना–(हिं०स्त्री०) देखो करुणा।
करुर, करुवा–(हिं० वि०) कटु, कड़ुवा।
करू–(हिं० वि०) कटु, कड़ुवा।
करेजा–(हिं० पुं०) यकृत्, कलेजा।
करेर–(हिं० वि०) कठोर, कड़ा।
करेला–(हिं०पुं०) कारवेल्ल, एक प्रकार की लता जिसमें हरे कड़वे फल लगते हैं जो तरकारी बनाने के काम में आते हैं।
करैत–(हिं० पुं०) एक काली जाति का बहुत विषैला सर्प।
करैल–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की काली मिट्टी जो गरमी के दिनों में तालाब के पानी सूखने पर निकलती है।
करैला–(हिं० पुं०) देखो करेला।
करोंट–(हिं० पुं०) करवट।
करोड़–(हिं०वि०) एक कोटि, सौ लाख की संख्या।
करोदना–(हिं०क्रि०) खुरचना, करोना।
करोध–(हिं० पुं०) देखो क्रोध।
करौंदा–(हिं० पुं०) करमर्द वृक्ष, एक कँटीला पौधा जिसके छोटे खट्टे फल अचार, चटनी इ० में प्रयुक्त होते हैं। करौंदिया–(हिं० वि०) करौंदे के रंग का।
करौली–(हिं०स्त्री०) नोकदार भोंकने की छुरी।
कर्कट–(सं०पुं०) केकड़ा, कमल की जड़, तुम्बी, लौकी।
कर्कर–(सं० पुं०) कंकड़, हथौड़ा, कुरुन पत्थर; (वि०) दृढ़, कड़ा, पुष्ट।
कर्कश–(सं०वि०) निर्दय, कठोर, कड़ा, काँटेदार, क्रूर। कर्कशा–(सं० स्त्री०) झगड़ालू स्त्री; (वि०) लड़ाकी।

कर्ण–(सं०पुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा, नाव का डाँड़ा। **कर्णक**–(सं० पुं०) वृक्ष को फोड़कर निकलनेवाला पत्ता, सन्निपात रोग का एक भेद, कर्णधार, माँझी।

कर्णकटु–(सं० वि०) अप्रिय, कान में कर्कश लगनेवाला।

कर्णकिट्ठ–(सं०पुं०) कान का खूंट।

कर्णकुहर–(सं० पुं०) कान का छेद।

कर्णगोचर–(सं० वि०) कान से सुन पड़नेवाला। **कर्णग्राह**–(सं० पुं०) कर्णधार, मल्लाह, माँझी। **कर्णधार**–(सं० पुं०) नाविक, मल्लाह।

कर्णपूर–(सं०पुं०) कान का आभूषण, करनफूल।

कर्णिका–(सं०स्त्री०) कान का एक आभूषण, हाथ की बीच की अँगुली।

कर्तन–(सं० पुं०) छेदन, काट-छाँट, सूत कातने का काम। **कर्तनी**–(सं० स्त्री०) कतरनी, कैंची।

कर्तरी–(सं० स्त्री०) कतरनी, कैंची, कटारी।

कर्तव्य–(सं० वि०) करने योग्य, किये जाने योग्य; (पुं०) करने योग्य कार्य, धर्म, उचित काम।

कर्ता–(सं० पुं०) ब्रह्मा, काम करनेवाला, बनानेवाला, ईश्वर, व्याकरण में वह कारक जो क्रिया को करता है।

कर्तार–(हिं० पुं०) विधाता, परमेश्वर।

कर्तित–(सं०वि०) काटा छाँटा हुआ।

कर्तृक–(सं०वि०) करनेवाला, प्रतिनिधि।

कर्तृका–(सं० स्त्री०) छोटी तलवार, कटारी।

कर्तृत्व–(सं० पुं०) कर्ता का धर्म।

कर्तृवाचक–(सं० वि०) व्याकरण में कर्ता का बोध करनेवाला। **कर्तृवाच्य**–(सं० पुं०) क्रियापद द्वारा कर्ता को सूचित करनेवाला वाक्य। **कर्तृवाच्य क्रिया**–वह क्रिया जिससे कर्ता का बोध स्पष्ट रूप से विदित हो।

कर्द–(सं० पुं०) कर्दम, कीचड़, चहला।

कर्पट–(सं०पुं०) पुराना कपड़ा, गूदड़।

कर्पटी–(सं० वि०) फटा पुराना वस्त्र पहिननेवाला भिक्षुक।

कर्पर–(सं० पुं०) कपाल, खोपड़ी, कपोल, गाल, शर्करा।

कर्पूर–(सं० पुं०) कपूर।

कर्बुर–(वि०) अनेक वर्ण का, चितकबरा।

कर्म–(सं०पुं०) कार्य, काम, प्रारब्ध, भाग्य, व्याकरण में वह शब्द जिस पर कर्ता की क्रिया का फल ठहरता है।

कर्मकाण्ड–(सं०पुं०) धर्म संबंधी कर्म।

कर्मकार–(सं०वि०) काम करनेवाला; (पुं०) लोहार। **कर्मचारी**–(सं०वि०) कार्य करनेवाला। **कर्मठ**–(सं०वि०) काम करने में निपुण।

कर्मधारय–(सं०पुं०) संस्कृत व्याकरण में वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण होता है।

कर्मपाक, कर्मफल–(सं० पुं०) धर्म या अधर्म करने से सुख दुःख मिलने का परिणाम।

कर्मरेखा–(सं०स्त्री०) भाग्य का लिखना।

कर्मवाच्य क्रिया–(सं०स्त्री०) जिस क्रिया में कर्म प्रधान होकर मुख्य रूप से कर्ता की तरह प्रयोग किया गया हो।

कर्मवान्–(सं०वि०) कर्मनिष्ठ।

कर्मशील–(सं० वि०) यत्न करनेवाला, परिश्रमी।

कर्मशूर–(सं० वि०) कार्यदक्ष, चतुर।

कर्महीन–(सं०वि०) मन्दभाग्य, अभागा।

कर्मिष्ठ–(सं०वि०) काम में लगा रहनेवाला, काम करने में चतुर।
कर्मेन्द्रिय–(सं० पुं०) कर्म करनेवाली पाँच इन्द्रियाँ यथा–हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ।
कलगी–(हि०स्त्री०) मुकुट में लगाने का पर।
कर्ष–(सं०पुं०)सोलह माशे का परिमाण, अस्सी रत्ती की तौल, खेती का काम।
कर्षक–(सं०वि०) हल जोतनेवाला।
कर्षन–(सं०पुं०) खिचान, आकर्षण।
कर्षना–(हि० क्रि०) खींचना।
कर्हिचित्–(सं०अव्य०) कभी न कभी।
कल–(हि०स्त्री०) सुख, चैन, आनेवाला या बीता हुआ दिन, बल, अंग, युक्ति, यन्त्र, विशेष्य की तरह इसका प्रयोग "काला" अर्थ में होता है यथा–कलमुँहा; (क्रि० वि०) भविष्य में, आज से पहिले के दिन, बीता हुआ दिन।
कलइया–(हि०स्त्री०)कलाबाजी,कलैया।
कलकण्ठ–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल; (वि०) मीठा शब्द निकालनेवाला।
कलकना–(हि० क्रि०) चिल्लाना।
कलकल–(सं०पु०) कोलाहल, पानी के झरने का शब्द, झगड़ा।
कलकान, कलकानि–(हि०स्त्री०)कोलाहल, कष्ट, दुःख।
कलंक–(सं०पुं०) चिह्न, धब्बा, दोष, लांछन।
कलछा–(हि०पुं०) बड़ा चम्मच, बड़ी डंडी की कछुल।
कलछी–(हि०स्त्री०)बड़ी डंडी का चम्मच।
कलजिब्भा–(हि० वि०) काली जीभवाला, जिसकी कही हुई अशुभ बात सत्य हो।
कलझँवा–(हि० वि०) श्याम वर्ण का साँवला।
कलत्र–(सं० पुं०) भार्या, पत्नी, स्त्री।
कलदार–(हि० वि०) पेंचदार; (पुं०) टकसाल का बना हुआ रुपया।
कलधौत–(सं० पुं०) सोना, चाँदी, मीठी बोली।
कलन–(सं० पुं०) चिह्न, दोष, ग्रहण, ग्रास,कवर, ज्ञान, आचरण, संबंध, गणित की एक क्रिया।
कलप–(हि०पुं०) देखो कल्प।
कलपना–(हि० क्रि०) विलाप करना, दुःख करना।
कलपाना–(हि०क्रि०)तरसाना,रुलाना।
कलफ–(हि० पुं०) माड़ी।
कलबल–(हि० पुं०) उद्योग, उपाय; (स्त्री०) कोलाहल।
कलबूत–(हि० पुं०) साँचा, ढाँचा।
कलभ–(सं०पुं०) हाथी, ऊँट।
कलमख–(हि० पुं०) देखो कल्मष।
कलमना–(हि० क्रि०) टुकड़े करना।
कलमस–(हि० पुं०) देखो कल्मष।
कलमलना–(हि० क्रि०) कुलबुलाना।
कलमुँहा–(हि० वि०) काले मुँहवाला, कलंकित।
कलरव–(हि० पुं०) कूजन, मधुर ध्वनि।
कलल–(सं० पुं०) गर्भ में लिपटी हुई झिल्ली, जरायु।
कलवरिया–(हि० स्त्री०) मद्यशाला।
कलवार–(हि० पुं०)वह जाति जो मद्य बनाती और बेचती है।
कलश–(सं० पुं०) घड़ा, गगरा, घरों के शिखर पर का कँगूरा। कलशा–(सं० स्त्री०) छोटा घड़ा, गगरी।
कलस–(सं० पुं०) देखो कलश; कलसा–(हि० पुं०) पानी रखने का घड़ा,

गगरा। कलसी-(हिं० स्त्री०) छोटी गगरी, छोटा कँगूरा।
कलह-(सं० पुं०) विवाद, झगड़ा, लड़ाई।
कलहंस-(सं०पुं०) राजहंस, जलकुक्कुट।
कलहकार, कलहकारक, कलहकारी-(सं० वि०) झगड़ालू, विवादप्रिय।
कलहप्रिय-(सं० पुं०) जिसको कलह बहुत अच्छा लगता हो; (वि०) झगड़े से प्रसन्न रहनेवाला।
कला-(सं०स्त्री०) सूद, व्याज, शिल्प, अंश, तीन काष्ठा का समय, वृत्त का १८०० वाँ भाग, लेश, अल्प समय, संख्या, सूर्य का बारहवाँ भाग, छटा, शोभा, युक्ति, ढंग।
कलाई-(हिं०स्त्री०) हथेली का ऊपरी जोड़, मणिबन्ध, गट्टा, पूला।
कलाधर-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा, शिव।
कलाप-(सं०पुं०) समूह, ढेर, मेखला, व्याकरण।
कलापिनी-(सं० स्त्री०) रात्रि, मयूरी।
कलापी-(सं०पुं०) मोर के पर फैलाकर नाचने का समय, मोर।
कलाबत्तू-(हिं०पुं०) रेशम पर लपेटा हुआ सोने-चांदी का तार जो धागे के समान पतला होता है।
कलाबाज-(हिं०वि०) नट क्रिया करनेवाला।
कलालाप-(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा।
कलावती-(सं० स्त्री०) गंगा; (वि०) शोभायुक्त।
कलासी-(हिं०स्त्री०) पत्थर या लकड़ी के जोड़ में की रेखा।
कलिका-(सं०स्त्री०) बिना खिला हुआ फूल, कली।
कलिकाल-(सं० पुं०) कलियुग।
कलित-(सं०वि०) गिना हुआ, समझा हुआ, कहा हुआ।
कलिमल-(सं० पुं०) पाप।
कलियाना-(हिं०क्रि०) कली निकलना।
कलियुग-(सं०पुं०) चौथा युग, वर्तमान युग।
कलिल-(सं०वि०) मिश्रित, मिला हुआ।
कली-(हिं० स्त्री०) बिना खिला हुआ फूल, कुरते इत्यादि में लगाने का तिकोना कटा हुआ कपड़ा।
कलुख-(हिं० पुं०) देखो कलुष।
कलुखाई-(हिं०स्त्री०) देखो कलुषता।
कलुखी-(हिं०) देखो कलुषी।
कलुष-(सं० पुं०) मलिनता, पाप; (वि०) मलिन, निन्दित।
कलुषता, कलुषाई-(सं० स्त्री०) मलिनता।
कलूटा-(हिं०वि०) बहुत काले रंग का।
कलेऊ-(हिं० पुं०) कलेवा।
कलेजा-(हिं०पुं०) छाती के भीतर का भाग, वक्षःस्थल, छाती।
कलेवर-(सं० पुं०) शरीर, देह, चोला।
कलेवा-(हिं० पुं०) प्रातराश, प्रातःकाल का लघु भोजन, जलपान।
कलेश-(हिं० पुं०) देखो क्लेश।
कलैया-(हिं० स्त्री०) नीचे सिर और ऊपर पैर करके उलट जाने की क्रिया।
कलोर-(हिं०वि०) जवान बछिया जो ब्याई या गाभिन न हुई हो।
कलोल-(हिं० पुं०) क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद।
कलौंजी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तरकारी जो परवल, करैला इत्यादि के फल को फाड़कर इसमें मसाला भरकर तैयार की जाती है।
कलौस-(हिं० वि०) कालापन, कलंक।

कल्क–(सं० पुं०) चूर्ण, बुकनी, पीठी।
कल्प–(सं० पुं०) विधान, विधि, रीति, चौदह मन्वन्तर का काल।
कल्पक–(सं०पुं०) ग्रन्थकर्ता; (वि०) बनानेवाला, लगानेवाला।
कल्पकार–(सं०पुं०) नापित; (वि०) केश बनानेवाला।
कल्पतरु, कल्पद्रुम–(सं० पुं०) मुँहमाँगी वस्तु देनेवाला।
कल्पना–(सं०स्त्री०) अनुमान, अटकल।
कल्पवास–(सं०पुं०) माघ मास में गंगा-तट पर संगम के समीप झोंपड़ी में रहना।
कल्पान्त–(सं० पुं०) प्रलय, उत्पत्ति।
कल्पित–(सं० पुं०) रचित, कल्पना किया हुआ, माना हुआ, ठीक किया हुआ, कृत्रिम।
कल्मष–(सं०पुं०) मलिनता, पाप।
कल्माष–(सं०वि०) काला, चितकबरा।
कल्याण–(सं०पुं०) शुभ, मंगल, भलाई।
कल्यान–(हिं० स्त्री०) देखो कल्याण।
कल्लर–(हिं० पुं०) काली मिट्टी, रेह।
कल्लांच–(हिं०वि०) दुष्ट, दरिद्र, कंगाल।
कल्ला–(हिं०पुं०) अंकुर, जबड़े के नीचे का गले का भाग।
कल्लोल–(सं०पुं०) बड़ी लहर, हर्ष, आनंद।
कल्ह–(हिं०) देखो कल।
कल्हर–(हिं० पुं०) वेग। कल्हरना–(हिं० क्रि०) पीड़ा का शब्द करना।
कल्हारना–(हिं०क्रि०) कड़ाही में थोड़ा तेल या घी डालकर भूनना।
कवच–(सं० पुं०) उरच्छद, आवरण।
कवन–(हिं० सर्व०) देखो कौन।
कवर–(हिं०पुं०) ग्रास, कौर।
कवरना–(हिं० क्रि०) देखो कौरना।
कवरा, कवरी–(हिं०स्त्री०) चोटी, जूड़ा।
कवर्ग–(सं० पुं०) ककारादि पाँच वर्णों का समूह।
कवल–(हिं० पुं०) ग्रास, कौर, किनारा।
कवाट–(सं० पुं०) कपाट, किवाड़ा।
कवि–(सं० पुं०) कविता गान इत्यादि का रचयिता, छन्द बनानेवाला, पंडित, सूर्य, ब्रह्मा।
कविता–(सं० स्त्री०) पद्यमय वर्णन, कवित्व।
कवित्त–(हिं० पुं०) दण्डक के अन्तर्गत चार पद का काव्य जिसके प्रत्येक चरण में इकतीस-इकतीस अक्षर होते हैं।
कवित्व–(सं० पुं०) कविता-रचना की शक्ति।
कविराज–(सं० पुं०) श्रेष्ठ कवि, बंग-देशीय वैद्य की उपाधि। कविराय–(हिं० पुं०) देखो कविराज, भाट, श्रेष्ठ कवि।
कविलास–(हिं० पुं०) कैलास, स्वर्ग।
कविवर–(सं० पुं०) श्रेष्ठ कवि।
कवोष्ण–(सं०वि०) थोड़ा मगर गुनगुना।
कव्य–(सं० पुं०) जो अन्न पितरों के निमित्त दिया जावे।
कशिक–(सं० पुं०) नकुल, नेवला।
कशेरु–(सं०पुं०) पीठ की रीढ़ की हड्डी, एक प्रकार की घास की जड़ जिसका ठोस भाग खाया जाता है।
कश्चित्–(सं०अव्य०) कोई, एक न एक।
कश्मल–(सं० वि०) मलिन, पापी।
कष–(सं० पुं०) कसौटी, सान।
कषा–(सं० स्त्री०) कशा, चाबुक।
कषाय–(सं० पुं०) कसैलापन, कल्क, काढ़ा, निर्यास।
कष्ट–(सं० पुं०) पीड़ा, व्यथा, क्लेश।

कष्टसह–(सं० वि०) कष्ट या दुःख सहन करनेवाला। कष्टसाध्य–(सं० वि०) कष्ट से आरोग्य होनेवाला, कठिनाई से होनेवाला।
कष–(सं० पुं०) कसौटी, जाँच, परीक्षा, अवरोध, सार, कसाव।
कसक–(हिं०स्त्री०) पीड़ा जो आघात पड़ने पर हलकी सी उठती है, पुराना वैर।
कसकुट–(हिं० पुं०) एक मिश्र धातु जो ताँबा और जस्ता बराबर भाग में मिलाकर बनता है, काँसा।
कसन–(हिं० स्त्री०) कसने की रस्सी, कसने की विधि।
कसना–(हिं० क्रि०) बाँधते समय रस्सी इत्यादि को कसकर खींचना, जकड़ना, दबाना, बंधन बैठाना, रगड़ना, लचकना, परीक्षा करना, कष्ट देना, भर जाना।
कसनि–(हिं०स्त्री०) बंधन, बँधाई।
कसनी–(हिं०स्त्री०) रस्सी, चोली, बेठन, कसौटी, परीक्षा।
कसबिन, कसबी–(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
कसमसाना–(हिं०क्रि०) ऊबना, हिचकना।
कसमसाहट, कसमसी–(हिं० स्त्री०) व्यग्रता।
कसरती–(हिं०वि०) व्यायाम करनेवाला।
कसाई–(हिं० पुं०) बधिक, घातक; (वि०) निष्ठुर, निर्दय, क्रूरहृदय।
कसाना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ में कसैलापन आ जाना, कसवाना।
कसार–(हिं० पुं०) घी में भुना हुआ तथा चीनी मिला हुआ आटा।
कसाला–(हिं०पुं०) क्लेश, कष्ट, परिश्रम।
कसाव–(हिं० पुं०) कसैलापन, खिंचाव।
कसीस–(हिं० पुं०) लोहे का एक प्रकार का मुरचा।
कसेरा–(हिं० पुं०) काँसे, फूल इत्यादि के पात्र बनानेवाला तथा बेचनेवाला बनिया।
कसेरू–(हिं० पुं०) एक प्रकार के मोथे की गठीली जड़ जो खाने में मीठी होती है।
कसोरा–(हिं०पुं०) मिट्टी का कटोरा।
कसौटी–(हिं० स्त्री०) काला पत्थर जिसपर सोना रगड़कर इसके रंग से सोने की परीक्षा की जाती है, परीक्षा, जाँच, परख।
कस्तूरा–(हिं०पुं०) कस्तूरी मृग।
कस्तूरी–(सं० स्त्री०) मृगनाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित द्रव्य।
कहँ–(हिं० पुं०) को; (क्रि० वि०) कहाँ।
कहगिल–(हिं० स्त्री०) भीत में लगाने की मिट्टी या गारा।
कहता–(हिं० वि०) कहनेवाला।
कहतूत–(हिं०स्त्री०) प्रसिद्ध वार्ता।
कहन–(हिं० पुं०) कथन, भाषण।
कहना–(हिं०क्रि०) वर्णन करना, उच्चारण करना, संवाद सुनाना, सूचना देना; (पुं०) अनुरोध, आज्ञा, कथन।
कहनूत–(हिं०स्त्री०) कहावत, दृष्टान्त।
कहरना–(हिं० क्रि०) देखो कराहना।
कहल–(हिं० पुं०) गरमी, उमस, ताप।
कहलाना–(हिं० क्रि०) पुकारा जाना, संदेश भेजना।
कहवाँ–(हिं० क्रि० वि०) कहाँ, किस स्थान पर।
कहवैया–(हिं० वि०) कहनेवाला।
कहा–(हिं० पुं०) कथन, बातचीत; (क्रि० वि०) कैसे, किस प्रकार से; (सर्व०) क्या; (वि०) कौन।

कहाँ–(हिं० क्रि० वि०) किस स्थान पर।
कहाना–(हिं० क्रि०) कहलाना, कहा जाना।
कहानी–(हिं० स्त्री०) कथा, मिथ्या वचन।
कहावत–(हिं०स्त्री०) लोकोक्ति।
कहिया–(हिं० क्रि० वि०) किस समय, कब।
कहीं–(हिं० क्रि० वि०) किसी अनिश्चित स्थान में, यदि, कदाचित्, अधिक।
काँइयाँ–(हिं०वि०) धूर्त, वंचक।
कहूँ–(हिं० क्रि० वि०) कहीं।
का–(हिं० प्रत्य०) षष्ठी का चिह्न।
काई–(हिं० स्त्री०) जल तथा तरी में होनेवाली एक घास, मल।
काईं–(हिं० अव्य०) क्यों, किसलिये; (सर्व०) किसका।
काँकर–(हिं०पुं०) कर्कर, कंकड़।
काँकरी–(हिं० स्त्री०) छोटा कंकड़।
कांक्षा–(सं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा।
काँख–(हिं० स्त्री०) बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, बगल।
काँखना–(हिं०क्रि०) पीड़ा की अवस्था में दुःखसूचक शब्द उच्चारण करना।
काँच–(हिं०स्त्री०) गुदा का भीतरी भाग जो कभी-कभी काँखने पर बाहर निकल आता है।
काँचरी–(हिं०स्त्री०) साँप की केंचुली।
काँचा–(हिं० वि०) देखो कच्चा।
काँछना–(हिं० क्रि०) लाँग बाँधना।
काँछा–(हिं० पुं०) कमर के पीछे खोंसने का धोती का भाग, लँगोट; (स्त्री०) आकांक्षा।
काँजी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का खट्टा किया हुआ जल, मट्ठा।
काँटा–(हिं०पुं०) कण्टक, लोहे की कील, लोहे की झुकी हुई कीलों का गुच्छा, कोई नुकीली वस्तु, सोना-चाँदी तौलने की छोटी तुला, नाक या कान का एक आभूषण, गणित में गुणनफल जाँचने की एक विधि, दुःखदायी मनुष्य।
काँटी–(हिं० स्त्री०) छोटा महीन काँटा।
काँड़ना–(हिं०क्रि०) रौंदना, लतियाना।
काँड़ी–(हिं०स्त्री०) ओखली का गड्ढा, बाँस या लकड़ी का लट्ठा।
कांत, कांता, कांति–(हिं०) देखो कान्त, कान्ता, कान्ति।
काँदना–(हिं० स्त्री०) चीख मारकर रोना।
काँदो–(हिं०पुं०) कर्दम, कीचड़।
काँध–(हिं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा, कोल्हू।
काँधना–(हिं० क्रि०) कन्धे पर रखना, उठाना, मानना, बोझ उठाना।
काँधा–(हिं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा, कृष्ण।
काँप–(हिं०स्त्री०) तीली, पतली छड़।
काँपना–(हिं० क्रि०) कम्पित होना।
काँवर–(हिं०स्त्री०) बहँगी।
काँवरा–(हिं०वि०) व्याकुल, उद्विग्न।
काँसा–(हिं०पुं०) काँस्य, ताँबे और जस्ते को मिलाकर बना हुआ धातु।
काक–(सं० पुं०) वायस, कौवा।
काकतालीय–(सं० पुं०) संयोगवश होनेवाला कार्य; (वि०) आकस्मिक।
काकपक्ष–(सं०पुं०) मस्तक के दोनों ओर के बालों की रचना, पट्टा।
काकपद–(सं० पुं०) एक चिह्नविशेष जो छूटे हुए शब्द का स्थान सूचित करने के लिये पंक्ति के नीचे लगाया जाता है।
काकबन्ध्या–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसको एक ही सन्तान उत्पन्न हुई हो।

काकरेजा–(हिं० पुं०) लाल काला मिले रंग का वस्त्र।
काका–(हिं० पुं०) पिता का भाई, चाचा।
काकाकौवा–(हिं० पुं०) बड़ा तोता।
काकी–(सं० स्त्री०) चाची।
काकु–(सं० स्त्री०) विरुद्ध अर्थ बोधक स्वर, व्यंग, ताना।
काग–(हिं० पुं०) देखो काक, (कार्क) बोतल में लगाने का डट्टा।
कागद–(हिं० पुं०) पत्र, कागज।
कागरी–(हिं० वि०) तुच्छ, ओछा।
कागारोल–(हिं० पुं०) काकरव, कोलाहल।
काच–(सं० पुं०) काला नमक, शीशा।
काचा–(हिं० वि०) कच्चा, भीरु, मृदु।
काछ–(हिं० पुं०) धोती की लाँग।
काछना–(हिं० क्रि०) धोती को कमर में खोंसना, तरल पदार्थ को हाथ से किसी पात्र के किनारे पर धरना।
काछनी–(हिं० स्त्री०) जाँघिये के ऊपर पहिनने का वस्त्र।
काज–(हिं० पुं०) कार्य, काम, व्यवसाय।
काजर, काजल–(हिं० पुं०) कज्जल।
काञ्चन–(सं० पुं०) सुवर्ण, सोना, केशर, धन, चमक।
काञ्ची–(सं० स्त्री०) मेखला, करधनी।
काट, काटन–(हिं० स्त्री०) छेदन, कटाई, छल, मल, कपट, घाव।
काटना–(हिं० क्रि०) तीखे शस्त्र से टुकड़े करना, पीसना, रगड़ना, बनाना, डँस लेना, तोड़ना, बिताना, नष्ट करना, गणित में एक संख्या से दूसरी संख्या को ऐसा भाग देना जिसमें शेष न बचे, कारावास में समय बिताना।
काठ–(हिं० पुं०) काष्ठ, लकड़ी, इन्धन।
काठड़ा–(हिं० पुं०) काठ की बनी हुई बड़ी परात, कठौता।
काठिन्य (सं० पुं०) कठिनता, कड़ापन।
काठी–(हिं० स्त्री०) घोड़े या ऊँट की पीठ पर रखने की खोगीर (गद्दी)।
काढ़ना–(हिं० क्रि०) खींचना, निकालना, सूई से बेल-बूटे बनाना, ऋण लेना।
काढ़ा–(हिं० पुं०) उबाली हुई औषधि।
काण्ड–(सं० पुं०) टुकड़ा, बाण, तीर, परिच्छेद, प्रस्ताव, विभाग।
कातना–(हिं० क्रि०) रूई को बटकर तागा बनाना, चरखा चलाना।
कातर–(सं० वि०) भयभीत, डरा हुआ।
कातरता–(सं० स्त्री०) व्याकुलता, भीरुता।
कातिक–(हिं० पुं०) कार्तिक का महीना।
कादम्बिनी–(सं० स्त्री०) मेघमाला, घटा।
कादर–(हिं० वि०) देखो कातर।
कान–(हिं० पुं०) सुनने की इन्द्रिय, कर्ण।
कानन–(सं० पुं०) वन, जंगल।
काना–(हिं० वि०) काण, एक आँख-वाला, कन्ना, टेढ़ा, तिरछा।
काना-(फुसकी)-फूसी–(हिं० स्त्री०) गुप्त बात, कान में धीरे से कही हुई बात।
कानी–(हिं० स्त्री०) एक आँखवाली स्त्री, सबसे छोटी हाथ की अँगुली।
कान्त–(सं० पुं०) स्वामी, पति।
कान्ता–(सं० स्त्री०) पत्नी, सुन्दर स्त्री, मोथा, रेणुका, बालू।
कान्ति–(सं० स्त्री०) दीप्ति, चमक, शोभा, कला।
कान्दू–(सं० पुं०) एक हिन्दू जाति, भूँजा।
कान्ह–(हिं० पुं०) श्रीकृष्ण।
कापड़–(हिं० पुं०) देखो कपड़ा।
कापथ–(सं० पुं०) विपथ, कुपथ, कुमार्ग।
कापर–(हिं० पुं०) कपड़ा, वस्त्र।
कापुरुष–(सं० पुं०) निन्दित पुरुष।
काबिस–(हिं० पुं०) एक रंग जिससे रंगकर मिट्टी के बर्तन पकाये जाते हैं।

काम–(सं० पुं०) यथेष्ट वार्ता, वाञ्छा, कामदेव, तृष्णा, सहवास की इच्छा, चार वर्गों में से एक; (हिं० पुं०) कार्य, कर्म, उद्देश्य, व्यवहार, व्यवसाय, रचना, प्रयोजन, नक्काशी।
कामचोर–(हिं० वि०) आलसी, सुस्त।
कामदानी–(हिं० स्त्री०) बादले के तार या सलमे सितारे का कपड़ों पर काम।
कामदार–(हिं० पुं०) राज्य का प्रबन्ध करनेवाला कारिन्दा; (वि०) कामदानी या कलाबत्तू के बेलबूटे बना हुआ।
कामदुघा, कामदुहा–(सं० स्त्री०) कामधेनु।
कामदेव–(सं० पुं०) मदन, अनंग।
कामधाम–(हिं० पुं०) कामकाज, धंधा।
कामना–(हिं० स्त्री०) मनोरथ, इच्छा।
कामरि, कामरी–(हिं० स्त्री०) कम्बल, कमरी, काँवर।
कामला–(सं० स्त्री०) पाण्डु रोग।
कामली–(सं० वि०) कामला रोग से पीड़ित।
कामातुर–(सं० वि०) काम के वेग से व्याकुल।
कामान्ध–(सं० वि०) काम के वेग से हिताहित का ध्यान न रखनेवाला।
कामिनी–(सं० स्त्री०) सुन्दरी, भीरु स्त्री।
कामी–(सं० पुं०) चकवा, कपोत, चन्द्रमा; (वि०) इच्छुक, अभिलाषी, प्रेमी; (हिं० स्त्री०) काँसे या अन्य धातु की ढली हुई छड़।
कामुक–(सं० वि०) कामी, इच्छुक, विषयी। कामुकता–(सं० स्त्री०) विषय-वासना।
काम्य–(सं० वि०) कमनीय, सुन्दर।
काय–(सं० पुं०) शरीर, देह, स्वभाव।
कायर–(हिं० वि०) भीरु, कातर, डरपोक। कायरता–(हिं० स्त्री०) भीरुता।
कायस्थ–(सं० पुं०) शरीर में रहनेवाला, एक जाति विशेष।
कायस्था–(सं० स्त्री०) बड़ी इलायची, तुलसी, आमला, हर।
काया–(सं० स्त्री०) तनु, शरीर। कायाकल्प–(हिं० पुं०) औषधियों के प्रभाव से वृद्ध शरीर को युवा बनाने की विधि।
कायापलट–(हिं० स्त्री०) बहुत बड़ा हेरफेर।
कायिक–(सं० वि०) शरीर संबंधी।
कार–(सं० पुं०) कार्य, क्रिया, करने या बनानेवाला, कोई कर्मपद पूर्व में रहने से 'कार' शब्द कर्ता के अर्थ में आता है, यथा–कर्मकार, सुवर्णकार, वर्णमाला के अक्षर के बाद जोड़ने से उस अक्षर का स्वतंत्र बोध करता है यथा–अकार, ककार इत्यादि।
कारक–(सं० वि०) करनेवाला, यथा–आनन्दकारक, हितकारक इत्यादि, व्याकरण में क्रिया के साथ संबंध प्रकट करनेवाले को कारक कहते हैं।
कारकर–(हिं० वि०) काम करनेवाला।
कारज–(हिं० पुं०) कार्य, काम।
कारण–(सं० पुं०) हेतु, निमित्त, जड़, आदि, कर्म, काम।
कारतूस–(हिं० पुं०) मोटे कागज की एक नली जिसमें गोली छर्रा, तथा बारूद भरी रहती है।
कारबारी–(हिं० वि०) कार्यकर्ता।
कारा–(सं० स्त्री०) कारागार, बन्धन।
कारागार, कारागृह–(सं० पुं०) बन्धनगृह।

कारावास–(सं० पुं०) कारावास में वन्द रहने की स्थिति।
कारिका–(सं०स्त्री०) अभिनेत्री, विवरण, विशिष्ट कविता, सीमा, किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या।
कारिख–(हिं० स्त्री०) कालिमा, कालापन, काजल, कलंक, धब्बा।
कारित–(सं० वि०) दूसरे के द्वारा कराया हुआ।
कारी–(हिं० वि०) करनेवाला, बनानेवाला।
कारु–(सं० पुं०) शिल्पी, शिल्पकार।
कारुण्य–(सं० पुं०) करुणा, दया।
कारो–(हिं० वि०) देखो काला।
कारोंछ–(हिं० स्त्री०) कालिमा, धुएँ की कारिख।
कार्तिक–(सं० पुं०) आश्विन और अगहन के बीच का महीना।
कार्पट–(सं० पुं०) पुराने वस्त्र का टुकड़ा, चिथड़ा।
कार्पण्य–(सं० पुं०) कृपणता, कंजूसी।
कार्पास–(सं० पुं०) रूई का पौधा।
कार्मार–(सं० पुं०) कर्मकार, लोहार।
कार्मिक–(सं० वि०) कर्म में नियुक्त, काम में लगा हुआ, निर्मित, बनाया हुआ।
कार्मुक–(सं० पुं०) धनुष, चाप।
कार्य–(सं० पुं०) कर्म, काम, कर्तव्य, व्यापार, धन्धा, हेतु, फल, प्रयोजन; (वि०) करने योग्य, लगाया जानेवाला। कार्यकर–काम चलानेवाला। कार्यकर्ता–(सं० पुं०) कार्यकारक, काम करनेवाला, कर्मचारी। कार्यकारण–(सं० पुं०) मिला हुआ कार्य और कारण।
कार्याध्यक्ष–(सं० पुं०) देखो कार्याधिकारी। कार्यार्थ–(सं० वि०) कार्य के लिये, काम के लिये।
काल–(सं० पुं०) समय, अवसर, दुर्भिक्ष, अन्तिम काल; (हिं० क्रि० वि०) कल।
कालकोठरी–(हिं० स्त्री०) बन्दीगृह की एक संकुचित और अँधेरी कोठरी।
कालक्रम–(सं० पुं०) समय का प्रवाह।
कालचक्र–(सं० पुं०) समय का उलटफेर।
कालज्ञ–(सं० पुं०) कुक्कुर, मुर्गा; (वि०) उचित समय को जाननेवाला; (पुं०) ज्योतिषी।
कालत्रय–(सं० पुं०) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल।
कालदण्ड–(सं० पुं०) मृत्युदण्ड।
कालधर्म–(सं० पुं०) समय का स्वभाव, मृत्यु।
कालनाग–(सं० पुं०) काला सर्प जिसके काटने से अवश्य मृत्यु होती है।
कालबूत–(हिं० पुं०) काठ का साँचा, जूता सीने का मोची का फर्मा।
कालयापन–(सं० पुं०) कालक्षेप, निर्वाह।
कालरात्रि–(सं०स्त्री०) प्रलयरात्रि।
कालरूप–(सं० वि०) मृत्यु के समान।
कालवाचक, कालवाची–(सं० वि०) समय बतलानेवाला।
कालसार–(सं० पुं०) काला हरिन।
कालसिर–(हिं० पुं०) नाव के मस्तूल का सिरा।
कालसूत्र–(सं० पुं०) फाँसी की रस्सी।
कालहानि–(सं० स्त्री०) समय को व्यर्थ बिताना।
काला–(हिं० वि०) कृष्ण, कोयले के रंग का, कलुषित।

काला-कलूटा–(हिं॰ वि॰) बहुत काले रंग का।
कालाग्नि-(सं॰ पुं॰) प्रलय काल की अग्नि।
काला चोर–(हिं॰ पुं॰) चतुर चोर, का पुरुष।
कालातिक्रम–(सं॰पुं॰)समय का उल्लंघन
कालातीत–(सं॰ पुं॰) कालातिक्रम, समय का टल जाना।
कालाध्यक्ष–(सं॰ पुं॰) सूर्य।
कालान्तक–(सं॰ पुं॰) यम।
कालान्तर–(सं॰ पुं॰) दूसरा समय।
कालाप–(सं॰ पुं॰)सर्प का फन,राक्षस।
काला पानी–(हिं॰ पुं॰) देश से निकाले जाने का दण्ड।
कालाभुजङ्ग–(हिं॰वि॰) अत्यन्त काले रंग का।
कालाभ्र–(सं॰ पुं॰) बरसनेवाला काला बादल।
कालि–(हिं॰ क्रि॰वि॰) आगामी दिन, कल।
कालिक–(सं॰ वि॰) समयोचित।
कालिका–(सं॰स्त्री॰)काली, चण्डिका।
कालिख–(हिं॰ स्त्री॰)कालिमा,कलौंछ।
कालिदास–(सं॰ पुं॰) भारत के अति प्रसिद्ध महाकवि का नाम।
कालिन्द–(सं॰ पुं॰) कालिङ्ग, तरबूज।
कालिन्दी–(सं॰ स्त्री॰) यमुना नदी।
कालिमा–(सं॰ स्त्री॰) कालापन, मल, कलंक, दोष, लांछन।
कालिय–(सं॰ पुं॰) एक सर्प जिसको श्रीकृष्ण ने अपने वश में किया था; (वि॰) काल संबंधी।
काली-(सं॰ स्त्री॰) दुर्गा, पार्वती, कालिका।
कालीन–(सं॰ वि॰) काल संबंधी, यह शब्द प्रत्यय की तरह इस अर्थ में प्रयुक्त होता है, यथा–पूर्वकालीन, उत्तर-कालीन, बहुकालीन इत्यादि।
कालौंछ–(हिं॰ स्त्री॰)कृष्ण वर्ण, कालापन, धुवें की कारिख, काला जाला।
काल्पनिक–(सं॰वि॰)कल्पना से उत्पन्न, कल्पित, माना हुआ।
काल्ह, काल्हि–(हिं॰) देखो काल।
कावर–(हिं॰ पुं॰) छोटा बरछा।
कावरी–(हिं॰ स्त्री॰) रस्से का फन्दा, मुद्धी।
काव्य–(सं॰ पुं॰) कविता, ग्रन्थ, रस-युक्त काव्य; (वि॰) कवि। काव्य-चौर–(सं॰पुं॰)दूसरे के रचे हुए काव्य को अपना बतलानेवाला। काव्यलिंग–(सं॰ पुं॰) एक अर्थालङ्कार।
काश–(सं॰ स्त्री॰)एक प्रकार की घास, कास, खाँसी का रोग।
काशी–(सं॰स्त्री॰)वाराणसी, बनारस।
काश्मीर–(हिं॰ पुं॰)मोटे ऊन से तैयार किया हुआ वस्त्र। काश्मीरी–(हिं॰ वि॰)कश्मीर देशवासी, कश्मीर देश संबंधी; (स्त्री॰) कश्मीर देश की भाषा।
काष्ठ–(सं॰ पुं॰) लकड़ी, काठ, ईंधन।
काष्ठा–(सं॰ स्त्री॰) स्थिति, अवधि, सीमा, उत्कर्ष, बड़ाई।
कास–(सं॰ पुं॰) खाँसी, कफ, काँस।
कासा–(हिं॰ पुं॰)दरियाई नारियल का पात्र जो भिक्षुक रखते हैं, कटोरा, प्याला।
कासार–(सं॰ पुं॰) बड़ा तालाब।
काह–(हिं॰ क्रि॰ वि॰) क्या, कौन-सी वस्तु।
काहि–(हिं॰ सर्व॰) किसको, किसे।
काही–(हिं॰ वि॰)घास के रंग का, काले

हरे रंग का। काहीं–(हिं० अव्य०) पास, द्वारा।
काहु, काहू–(हिं० सर्व०) किसी।
काहे–(हिं० क्रि० वि०) क्यों, किसलिये, किस निमित्त।
किं–(सं० अव्य०) क्या।
किंपुरुष–(सं० पुं०) किन्नर, नीच मनुष्य।
किंवदन्ती–(हिं० स्त्री०) जनप्रवाद।
किंवा–(सं० अव्य०) अर्थात्, अथवा।
किंशुक–(सं० पुं०) पलास का वृक्ष, ढाक।
किङ्कणी–(सं० स्त्री०) छोटा घुंघरू।
किङ्कर–(सं० पुं०) दास, नौकर, भृत्य।
किङ्करी–(सं० स्त्री०) दासी, नौकरानी।
किङ्कर्तव्यता–(सं० स्त्री०) यह चिन्ता कि क्या करना होगा। किङ्कर्तव्यविमूढ़–(सं० वि०) कर्तव्य निश्चय करने में असमर्थ, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
किङ्किणी–(सं० स्त्री०) कमर का आभूषण, करधनी।
किङ्किर–(सं० पुं०) भौंरा, कोयल।
किंकियाना–(हिं० क्रि०) रोना, चिल्लाना।
कि–(हिं० क्रि० वि०) कैसे, किस प्रकार, क्या, एक संयोजक शब्द जो क्रियाओं के बाद प्रयुक्त होता है, अथवा, या, तत्क्षण।
किकियाना–(हिं० क्रि०) कोलाहल करना।
किचकिच–(हिं० स्त्री०) झूठा झगड़ा।
किचपिच–(हिं० वि०) क्रम रहित, अस्पष्ट।
किचड़ाना–(हिं० क्रि०) आँखों में कीचड़ आना।
किछु–(हिं० वि०) कुछ।
किञ्चन–(सं० अव्य०) अल्प, थोड़ा।
किञ्चित्–(सं० अव्य०) अल्प, कम, थोड़ा-सा। किञ्चित्मात्र–(सं० वि०) अल्प, परिमित, थोड़ा-सा।
किटकिट–(हिं० पुं०) वाद-विवाद, झंझट।
किटकिना–(हिं० पुं०) वह लिखित पत्र जिसके द्वारा ठीकेदार अपना ठेका दूसरे के नाम पर कर देता है।
किट्ट–(सं० पुं०) धातु की मैल, मोरचा, तेल की काइट, कान का खूंट।
कित–(हिं० क्रि० वि०) कहाँ, किस ओर, किधर।
कितक–(हिं० क्रि० वि०) कितना, किसका।
कितना–(हिं० वि०) किस मात्रा का, किस परिणाम या संख्या का; (क्रि० वि०) कहाँ तक, बहुत अधिक।
कितव–(सं० पुं०) दुष्ट, वंचक, धूर्त।
कितिक, कितेक–(हिं० वि०) बहुत, असंख्य।
कितै–(हिं० क्रि० वि०) कहाँ।
कितो–(हिं० वि०) देखो कितना।
कित्ता–(हिं० वि०) कितना।
कित्ति–(हिं० स्त्री०) कीर्त्ति, बड़ाई, यश।
किधर–(हिं० क्रि० वि०) कहाँ, किस ओर।
किधौं–(हिं० अव्य०) अथवा, या, न जाने।
किन–(हिं० सर्व०) 'किस' शब्द का बहुवचन; (क्रि० वि०) क्या नहीं, अवश्य।
किनका–(हिं० पुं०) कण, अनाज का टुकड़ा।
किनहा–(हिं० वि०) कृमियुक्त।
किनारी–(हिं० स्त्री०) सुनहला या रुपहला गोटा, गोंट।
किनारे–(हिं० क्रि० वि०) कोर, सीमा या तट पर, पृथक् अवस्था में।

किन्तु–(सं० अव्य०) परन्तु, वरन् ।
किन्नर–(सं० पुं०) देवयोनि विशेष ।
किन्निमित्त–(सं० वि०) किस कारण से, किसलिये ।
किम्–(सं० अव्य०) क्या, कौन-सा ।
किमपि कोई भी ।
किमरिक–(हिं० पुं०) एक प्रकार का महीन चिकना वस्त्र ।
किमर्थम्–(सं० अव्य०) किस कारण, क्यों ।
किमि–(हिं० क्रि० वि०) किस ढंग से, कैसे ।
किमु–(सं० अव्य०) क्यों, किसलिये ।
किमुत–(सं० अव्य०) क्यों, अथवा, या, बहुत ।
किम्पुरुष–(सं० पुं०) किन्नर, बुरा आदमी ।
किम्मत–(हिं० स्त्री०) चातुरी ।
कियत्–(सं० क्रि० वि०) कितना ।
कियारी–(हिं० स्त्री०) खेतों या बगीचों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर दो छोटी-छोटी मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें बीज या पौधे बोये जाते हैं ।
किरंटा–(हिं० पुं०) किरानी ।
किरका–(हिं० पुं०) कंकड़, किरकिरी ।
किरकिरा–(हिं० वि०) कँकरीला ।
किरकिराना–(हिं० क्रि०) पीड़ा देना, दुखाना ।
किरकिरी–(हिं० स्त्री०) धूल या तिनके का छोटा टुकड़ा, अपमान, हेठी ।
किरच–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की पतली तलवार ।
किरची–(हिं० स्त्री०) रेशम का लच्छा ।
किरण–(सं० पुं०) सूर्य की रश्मि ।
किरन–(हिं० स्त्री०) किरण, प्रकाश की रेखा, झालर, ज्योति ।
किरपा–(हिं० स्त्री०) देखो कृपा ।
किरपान–(हिं० स्त्री०) देखो कृपाण ।
किरम–(हिं० पुं०) कृमि, कीड़ा ।
किरमई–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की लाह ।
किरमाल–(हिं० पुं०) खड्ग, तलवार ।
किरमिच–(हिं० पुं०) एक प्रकार का महीन टाट या मोटा कपड़ा ।
किराँची–(हिं० स्त्री०) अनाज, भूसा इत्यादि लादने की गाड़ी, रेलगाड़ी का माल लादने का पूरा डिब्बा ।
किरात–(सं० पुं०) एक प्राचीन जंगली जाति, व्याध, बहेलिया; (हिं० स्त्री०) रत्न इत्यादि तौलने का एक परिमाण जो चार जव के बराबर होता है ।
किराना–(हिं० पुं०) प्रतिदिन के उपयोग में आनेवाले मसाले जो पंसारियों की दूकान पर बिकते हैं ।
किरानी–(हिं० पुं०) किरंटा, दोगला यूरोपियन ।
किराव–(हिं० पुं०) मटर ।
किरिच–(हिं० स्त्री०) नोकदार टुकड़ा ।
किरिन–(हिं० स्त्री०) देखो किरण ।
किरिम–(हिं० स्त्री०) देखो कृमि ।
किरिया–(हिं० स्त्री०) शपथ, सौगन्ध, कर्तव्य, काम, मृतकर्म ।
किरीट–(सं० पुं०) एक प्रकार का सिर का आभूषण, मुकुट ।
किरोलना–(हिं० क्रि०) कतरना, खुरचना ।
किरोना–(हिं० पुं०) कृमि, कीड़ा ।
किर्च–(हिं० पुं०) देखो किरच ।
किलका–(हिं० स्त्री०) हर्षध्वनि ।
किलकना–(हिं० क्रि०) हर्षध्वनि करना ।
किलकार–(हिं० स्त्री०) हर्षध्वनि ।

किलकिल–(हि० स्त्री०) विवाद, झगड़ा।
किलकिलाना–(हि० क्रि०) कोलाहल करना, खुजलाना।
किलना–(हि० क्रि०) वश में लाया जाना, गति में रुकावट होना।
किलनी–(हि० स्त्री०) एक कीड़ा जो पशुओं के शरीर पर चिपका रहता है और इनका लोहू चूसता है।
किलबिलाना–(हि० क्रि०) कुलबुलाना।
किलवारी–(हि० स्त्री०) पतवार, छोटा डाँड़ा।
किलविष–(हि० पुं०) किल्बिष, पाप।
किलोल–(हि० पुं०) देखो कल्लोल।
किलौनी–(हि० स्त्री०) देखो किलनी।
किल्ला–(हि० पुं०) मेख, खूँटा, अंकुर।
किल्लाना–(हि० क्रि०) देखो किलकिलाना।
किल्ली–(हि० स्त्री०) कील, मेख, खूँटी।
किल्विष–(सं० पुं०) पाप, अपराध, रोग।
किवाड़–(हि० पुं०) कपाट, द्वार का पल्ला।
किशल, किशलय–(सं० पुं०) कोमल पत्ता।
किशोर–(सं० पुं०) तरुण अवस्था, शिशु, लड़का; (वि०) छोटे वय का।
किस–(हि० सर्व०) "कौन" का रूपान्तर जो विभक्ति लगने पर यह रूप धारण करता है।
किसनई–(हि० स्त्री०) कृषि, खती का काम।
किसल, किसलय–(हि० स्त्री०) देखो किशल।
किसानी–(हि० स्त्री०) खेती का काम; (वि०) कृषि संबंधी।
किसी–(हि० सर्व० वि०) "कोई" का वह रूपान्तर जो विभक्ति लगने से इसको प्राप्त होता है।
किसू–(हि० पुं०) देखो किसी।
की–(हि० प्रत्य०) 'का' का स्त्रीलिङ्ग का रूप; (क्रि०) 'क्रिया' का स्त्रीलिङ्ग का रूप; (अव्य०) क्या, अथवा।
कीक–(हि० स्त्री०) चीत्कार, चीख।
कीकना–(हि० क्रि०) किकियाना।
कीच–(हि० स्त्री०) कर्दम, कीचड़।
कीचड़–(हि० पुं०) कर्दम, पंक, आँख की मैल।
कीट–(सं० पुं०) कीड़ा, मकोड़ा, लोहे की मैल; (वि०) निष्ठुर; (हि० पुं०) तेल, घी इत्यादि के नीचे बैठा हुआ तलछट। कीटाणु-(सं० पुं०) अति सूक्ष्म कीड़ा जो आँख से देख नहीं पड़ता।
कीड़ा–(हि० पुं०) उड़ने या रेंगनेवाला कीट, कृमि, मकोड़ा।
कीदृश–(सं० वि०) किस प्रकार का, कैसा।
कीनना–(हि० क्रि०) मोल लेना।
कीप–(हि० स्त्री०) छोटे मुंह के पात्र में तरल पदार्थ भरने की छुच्छी, टीप।
कीर–(सं० पुं०) मास; (पुं०) शुक, तोता।
कीरति–(सं० स्त्री०) देखो कीर्ति।
कीर्ण–(सं० वि०) ढँका हुआ, फैला हुआ, छिपा हुआ, भरा हुआ।
कीर्तक–(सं० वि०) वर्णन करनेवाला।
कीर्तन–(सं० पुं०) प्रकाशन, गुण-कथन, भजन। कीर्तनिया-(हि० पुं०) भजन गानेवाला, कीर्तन करनेवाला। कीर्तनीय–(सं० वि०) वर्णन करने योग्य।
कीर्ति–(सं० स्त्री०) पुण्य, ख्याति, यश।

कीर्तिकर–(सं० वि०) यशकारक।
कीर्तित–(सं० वि०) कहा हुआ, प्रसिद्ध।
कीर्तिधर–(सं०वि०) कीर्तिमान्, प्रसिद्ध।
कीर्तिस्तम्भ–(सं० पुं०) किसी की कीर्ति स्मरण कराने के लिये बनाया हुआ स्तम्भ ।
कील–(सं० पुं०) खूंटी, परेग, स्तम्भ, खंभा, बहुत छोटा टुकड़ा; (हिं०स्त्री०) कुम्हार के चाक की खूंटी, नाक में पहिनने का एक आभूषण, फोड़े के ऊपर का भाग।
कीलन–(सं० पुं०) बन्धन, रुकावट।
कीलना–(हिं० क्रि०) कील लगाना, मेख ठोंकना।
कीला–(सं० स्त्री०) कील, मेख, बड़ी कील।
कीलित–(सं० वि०) मन्त्र से बँधा हुआ।
कीली–(हिं० स्त्री०) किसी चक्र के बीच में लगी हुई खूंटी, कील, किल्ली।
कीश, कीस–(हिं० पुं०) बन्दर, पक्षी, सूर्य।
कु–(सं० अव्य०) एक अव्यय जो संज्ञा के पूर्व जोड़ने से निन्दनीय, कुत्सित, नीच आदि का बोध करता है; (सं० स्त्री०) पृथ्वी। कुआशा–(हिं० स्त्री०) दुराशा।
कुँअर–(हिं० पुं०) राजकुमार, राजपुत्र।
कुँआरा–(हिं० वि०) अविवाहित।
कुँइयाँ–(हिं० स्त्री०) छोटा कुवाँ।
कुँई–(हिं० स्त्री०) कुमुदनी, कोईं।
कुंकुम–(हिं० पुं०) लाख का बना हुआ पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली पर लोग एक दूसरे पर फेंकते हैं।
कुंज–(हिं० पुं०) पौधों या लताओं से ढँपा हुआ स्थान।
कुंजगली–(हिं० स्त्री०) पौधों या लताओं से ढँपा हुआ मार्ग, पतली सँकरी गली।
कुँजड़ा–(हिं० पुं०) एक जाति जो फल और तरकारी बेचती है।
कुँड़–(हिं० पुं०) हल चलाने से पड़नेवाली खेत की गहरी लकीर।
कुँड़रा–(हिं० पुं०) कुंडा, बड़ा मटका।
कुंडलिया–(हिं० स्त्री०) एक छन्द विशेष जो दोहा और रोला छन्द के योग से बनता है।
कुंडा–(हिं० पुं०) चौड़े मुंह का जल इत्यादि रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र, द्वार में लगाने का कोहड़ा।
कुंडी–(हिं० स्त्री०) पत्थर या लकड़ी का छोटा पात्र, जंजीर की कड़ी।
कुंदन–(हिं० पुं०) परिष्कृत किये हुए सोने का महीन पत्र जो नगीना जड़ने के उपयोग में आता है।
कुंदरू–(हिं०स्त्री०) परवल के समान एक फल।
कुंदा–(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा टुकड़ा, बन्दूक का पिछला भाग, मूठ, बड़ी मुंगरी; (पुं०) रद्दा, घस्सा।
कुंदी–(हिं० स्त्री०) कपड़े की कुटाई जो इसके फूलने, सिकुड़ने तथा रुखाई दूर करने के लिये की जाती है, कड़ी मार।
कुंदेरना–(हिं० क्रि०) खुरचना, छीलना, खरादना।
कुंभिलाना–(हिं० क्रि०) मुरझाना।
कुँवर–(हिं० पुं०) देखो कुमार।
कुँआ–(हिं० पुं०) देखो कूप, इँदारा।
कुआर–(हिं० पुं०) आश्विन मास।
कुइयाँ–(हिं० पुं०) कूप, कुआँ।
कुकड़ना–(हिं० क्रि०) संकुचित होना।
कुकड़ी–(हिं० स्त्री०) अंटी, मुट्ठा, खुखड़ी
कुकर्म–(सं० पुं०) बुरा काम। कुकर्मी–(सं० वि०) कुत्सित काम करनेवाला।

कुकीर्ति–(सं० स्त्री०) अपमान, निन्दा।
कुक्कुर–(सं० पुं०) कुत्ता। कुक्कुरखाँसी–(हि० वि०) सूखी खाँसी जिसमें कफ नहीं निकलता। कुक्कुरमुत्ता–(हि० पुं०) छत्रक, एक प्रकार का तीव्र गन्ध का पौधा।
कुक्कुरी–(सं० स्त्री०) श्वानी, कुतिया।
कुक्रिय–(सं० वि०) कुकर्म करनेवाला।
कुक्रिया–(सं० स्त्री०) दुष्कार्य, बुरा काम।
कुक्षि–(सं० स्त्री०) जठर, पेट, कोख।
कुखेत–(हि० पुं०) बुरा स्थान, कुठाँव।
कुख्यात–(सं० वि०) निन्दित।
कुगति–(सं० स्त्री०) दुर्दशा, बुरी अवस्था।
कुगहनि–(हि० स्त्री०) अनुचित आग्रह, बुरी अड़।
कुघात–(हि०स्त्री०) अशुभ अवसर, छल, कपट।
कुंकुम–(सं० पुं०) केशर, रक्तचन्दन, रोली।
कुच–(सं० पुं०) स्तन, स्त्री की छाती।
कुचना–(हि० क्रि०) सिकुड़ना, छिदना।
कुचर–(सं० वि०) नीच कर्म करनेवाला।
कुचरा–(हि० पुं०) झाड़ू, बढ़नी।
कुचर्या–(सं० स्त्री०) निन्दनीय आचरण।
कुचलना–(हि० क्रि०) पैर से रौंदना, दबाना।
कुचाल–(हि० स्त्री०) बुरा अभ्यास।
कुचाली–(हि० वि०) कुमार्गी, दुष्ट।
कुचाह–(हि० स्त्री०) अशुभ विषय।
कुचेष्ट–(सं० वि०) निन्दित कार्य करनेवाला।
कुचैला–(हि०वि०) मलिन वस्त्रवाला।
कुच्छित–(हि० वि०) देखो कुत्सित।
कुछ–(हि०वि०) किंचित्, थोड़ा; (सर्व०) किंचित्, कोई; (क्रि० वि०) थोड़े परिमाण में, थोड़ा-सा।
कुजाति–(सं० स्त्री०) नीच जाति।
कुजिया–(हि०स्त्री०) छोटा पात्र, घरिया।
कुजन–(हि० स्त्री०) बुरा काल, अति काल।
कुञ्चित–(सं० वि०) सिकुड़ा हुआ, टेढ़ा।
कुञ्ज–(सं० पुं०) पेड़-पौधों से ढँपा हुआ पहाड़ी स्थान, हाथी का दाँत।
कुञ्जा–(हि०पुं०) मिट्टी का पुरवा, जमी हुई मिश्री की गोल डली।
कुट–(हि० पुं०) कलश, गगरा, कोट।
कुटका–(हि० स्त्री०) छोटा टुकड़ा।
कुटज–(सं० पुं०) कमल। कुटजगति–(सं०स्त्री०) तेरह अक्षर का एक छन्द।
कुटनई–(हि० स्त्री०) कुटनपन। कुटनपन–(हि० पुं०) दूती कर्म, झगड़ा लगाने का काम।
कुटनहारी–(हि०स्त्री०) धान कूटनेवाली स्त्री।
कुटना–(हि०पुं०) वंचक; (पुं०) कूटने-पीटने का यन्त्र; (क्रि०) कूटा जाना, मारा जाना।
कुटाई–(हि० स्त्री०) कूटने का काम, कूटने का वेतन।
कुटिया–(हि० स्त्री०) छोटा घर या झोपड़ी।
कुटिल–(सं०वि०) वक्र, टेढ़ा, दुष्ट, छली, कपटी।
कुटिहा–(हि०वि०) कटूक्ति बोलनेवाला।
कुटी–(हि० स्त्री०) घास-फूस की बनी हुई झोपड़ी, पर्णशाला।
कुटीचर–(सं० पुं०) एक प्रकार का संन्यासी; (हि० वि०) छली, कपटी, दुष्ट।

कुटीर–(सं० पुं०) देखो कुटी।
कुटुम्ब–(सं० पुं०) कुल, परिवार।
कुटुम्बी–(सं० वि०) गृही, परिवार-वाला; (पुं०) परिवार के लोग।
कुटुम–(हिं० पुं०) देखो कुटुम्ब।
कुटेक–(हिं० स्त्री०) बुरा हठ।
कुटेव–(हिं० स्त्री०) कुत्सित स्वभाव।
कुटौनी–(हिं० स्त्री०) कूटने का काम।
कुट्टा–(हिं० स्त्री०) परकटा कबूतर।
कुट्टित–(सं० वि०) चूर्ण किया हुआ।
कुट्टी–(हिं० स्त्री०) कटाई, कागद जिसके अनेक पदार्थ बनते हैं, मैत्री-भङ्ग (बालक इस अर्थ में प्रयोग करते हैं)।
कुठला–(हिं० पुं०) अन्न रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र।
कुठाँव–(हिं० पुं०) बुरा स्थान।
कुठार–(सं० पुं०) कुल्हाड़ी, फरसा, नाश करनेवाली वस्तु।
कुठारी–(सं० स्त्री०) कुल्हाड़ी, टाँगी; (वि०) नाश करनेवाली।
कुठौर–(हिं० पुं०) बुरा स्थान, बुरा अवसर।
कुड़कुड़–(हिं० पुं०) अव्यक्त शब्द।
कुड़कुड़ाना–(हिं० क्रि०) कुढ़ना, कुड़बुड़ाना।
कुड़री–(हिं० स्त्री०) गेंडुरी।
कुड़ाली–(हिं० स्त्री०) कुठारी, कुल्हाड़ी।
कुडौल–(हिं० वि०) कुढंगा, भद्दा।
कुढंग–(हिं० पुं०) बुरा आचरण, कुचाल; (वि०) बेढंगा, भद्दा। कुढंगी–(हिं० वि०) कुमार्गी।
कुढ़न–(हिं० स्त्री०) मन ही मन रहनेवाला क्रोध या दुःख, जिद।
कुढ़ाना–(हिं० क्रि०) क्रोध दिलाना, चिढ़ाना।
कुण्ठ–(सं० पुं०) अकर्मण्य, मूर्ख।
कुण्ठित–(सं० वि०) लज्जित, सकुचाया हुआ, अयोग्य।
कुण्ड–(सं० पुं०) जलाशय, जलपात्र, होम करने के लिये बनाया हुआ गड्ढा।
कुण्डल–(सं० पुं०) कान का एक अलंकार, मेखला, बदली में सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर देख पड़नेवाला प्रकाश का घेरा। कुण्डलिका–(सं० स्त्री०) मात्रिका छन्द विशेष, हिन्दी की कुण्डलिया।
कुण्डलाकार–(सं० वि०) वर्तुल, मण्डलाकार।
कुण्डली–(सं० पुं०) जन्मपत्रिका, सर्पिणी, सर्पवत् बैठने की मुद्रा।
कुण्डिका–(सं० स्त्री०) कमण्डलु, ताँबे का कुण्ड, स्थाली, हाँड़ी।
कुतना–(हिं० क्रि०) कूता जाना, आँका जाना।
कुतनु–(सं० वि०) बुरे शरीरवाला।
कुतप–(सं० पुं०) सूर्य, अतिथि, ब्राह्मण।
कुतरन–(हिं० पुं०) देखो कतरन।
कुतार–(हिं० पुं०) असुविधा, अड़चन।
कुतिया–(हिं० स्त्री०) कुक्कुरी, कुत्ते की मादा, कुत्सित स्त्री, बुरी स्त्री।
कुतूहल–(सं० स्त्री०) कौतुक, क्रीड़ा, खेल, आश्चर्य, अचम्भा।
कुत्ता–(हिं० पुं०) कुक्कुर, श्वान, यन्त्र में किसी घूमनेवाले भाग को रोकने का लगाया हुआ अवरोध, बंदूक का घोड़ा, तुच्छ, नीच मनुष्य।
कुत्र–(सं० अव्य०) कहाँ, किस अवस्था में। कुत्रचित्–(सं० अव्य०) किसी स्थान में। कुत्सित-(सं० वि०) निन्दित, गर्हित, अधम, नीच।

कुदक्का–(हिं० पुं०) उछलकूद, कूद-फाँद ।
कुदाँव–(हिं०पुं०)धोखा, विश्वासघात, भयंकर स्थान, मर्मस्थान ।
कुदान–(सं० पुं०) अयोग्य पुरुष को दिया जानेवाला दान; (हिं०स्त्री०) उछलकूद, कुदाई, छलाँग ।
कुदार–(सं०पुं०) भूमि खोदने का एक साधन, कुदाली ।
कुदिन–(सं० पुं०) बुरा दिन, आपत्ति ।
कुद्रव–(सं० पुं०) कोद्रव अन्न, कोदो ।
कुधान्य–(सं० पुं०) क्षुद्र धान्य, घास ।
कुधी–(सं० वि०) निर्बोध, निर्लज्ज ।
कुनकुना–(हिं० वि०) मन्दोष्ण, गुनगुना ।
कुनाई–(हिं० स्त्री०) बुरादा, बुकनी ।
कुनाम–(सं० पुं०) अपनाम, दुर्नाम ।
कुन्तल–(स० पुं०) केश, बाल ।
कुपढ़–(हिं०वि०)अशिक्षित, अनपढ़ा ।
कुपथ–(सं० पुं०) बुरा मार्ग, बुरा आचरण ।
कुपथ्य–(सं० पुं०) स्वास्थ्य बिगाड़नेवाला आहार-विहार ।
कुपना–(हिं० क्रि०) क्रोध करना ।
कुपात्र–(सं० वि०) अयोग्य, अनधिकारी ।
कुपित–(सं० वि०) क्रुद्ध, अप्रसन्न ।
कुपुत्र–(सं०पुं०) माता-पिता की आज्ञा न माननेवाला बेटा ।
कुप्पा–(हिं० पुं०) चमड़े का घी-तेल इत्यादि रखने का बड़ा पात्र ।
कुप्पी–(हिं० स्त्री०) तेल-फुलेल रखने का चमड़े का छोटा पात्र ।
कुप्रिय–(सं० वि०) अप्रिय ।
कुबजा–(हिं० वि०) देखो कुब्जा ।
कुबड़ा–(हिं०पुं०) वह मनुष्य जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई हो । कुबड़ी–(हिं० स्त्री०) कुब्जा, टेढ़ी पीठवाली स्त्री, झुकी हुई मूठ की छड़ी, टेढ़िया ।
कुबरी–(हिं०स्त्री०) कुब्जा, झुकी मूठ की छड़ी ।
कुबानि – (हिं० स्त्री०) बुरा अभ्यास ।
कुबुद्धि–(सं० वि०) मन्दबुद्धि, मूर्ख ।
कुबेला–(हिं० स्त्री०) बुरा अवसर, बुरा समय ।
कुबोलनी–(हिं०वि०) बुरी बात कहनेवाली ।
कुब्ज–(सं० वि०) टेढ़ी पीठवाला, कुबड़ा ।
कुमंठी–(हिं०स्त्री०) पतली लचनेवाली टहनी ।
कुमकुम–(हिं०पुं०) देखो कुंकुम । कुमकुमा–(हिं०पुं०)लाह का पीला गोला जिसमें गुलाल भरकर होली के त्योहार पर लोग एक दूसरे के ऊपर फेंकते हैं ।
कुमति–(सं० स्त्री०) मूर्खता; (वि०) बुद्धिहीन ।
कुमार–(सं०पुं०) पाँच वर्ष का बालक, पुत्र, युवराज ।
कुमारग–(हिं० पुं०) देखो कुमार्ग ।
कुमारलतिका–(सं०स्त्री०) सात मात्रा का एक छन्द ।
कुमारसम्भव–(सं०पुं०)महा कवि कालिदास कृत एक महाकाव्यका नाम ।
कुमारिका–(सं० स्त्री०) अविवाहिता कन्या, कुमारी, लड़की ।
कुमारी–(सं० स्त्री०) बारह वर्ष की कन्या ।
कुमार्ग–(सं० पुं०) नीतिविरुद्ध कार्य, कुपथ, अधर्म, बुरी चाल । कुमार्ग-

गामी, कुमार्गी–(सं० वि०) अधर्मी धर्मभ्रष्ट।
कुमुद–(सं० पुं०) कोईं, पद्म, कमल।
कुमुदिनी–(सं० स्त्री०) चाँदनी।
कुमुदिनीनायक–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
कुमैड़िया–(हिं० वि०) वंचक, छली।
कुम्भ–सं० पुं०) मिट्टी का घड़ा, हाथी के माथे का बिचला भाग। कुम्भकार–(सं० पुं०) कुम्हार जाति।
कुम्भीर–(सं० पुं०) घड़ियाल, नक्र।
कुम्मैत, कुम्मैद–(हिं० पुं०) कालापन।
कुम्हड़ा–(हिं० पुं०) एक फैलनेवाली लता जिसका फल बड़ा होता है और तरकारी के काम में आता है।
कुम्हलाना–(हिं० क्रि०) मुरझाना।
कुम्हार–(हिं० स्त्री०) कुम्भकार, मिट्टी के पात्र बनानेवाला।
कुरकुट–(हिं० पुं०) छोटा टुकड़ा।
कुरकुर–(हिं० पुं०) किसी खरी वस्तु के दबकर टूटने से उत्पन्न शब्द।
कुरकुरा–(हिं० वि०) कुरकुर शब्द करनेवाला, खरा और करारा।
कुरङ्ग–(सं० पुं०) हरिण, मृग, बरवै छन्द; (हिं० पुं०) अशुभ लक्षण; (वि०) बुरे रंग का।
कुरङ्गी–(सं० स्त्री०) हिरनी।
कुरती–(हिं० स्त्री०) पहिनने का एक वस्त्र।
कुररी–(सं० स्त्री०) मादा टिटिहरी।
कुरल–(सं० पुं०) कुन्तल, काकुल।
कुरवना–(हिं० क्रि०) ढेर लगाना।
कुरस–(सं० पुं०) बुरा रस, आसव, मदिरा।
कुराज्य–(सं० पुं०) निन्द्य राज्य।
कुराह–(हिं० स्त्री०) कुमार्ग, बुरा मार्ग।
कुराहर–(हिं० पुं०) देखो कोलाहल।
कुराही–(हिं० वि०) कुमार्गी।
कुरिया–(हिं० स्त्री०) मड़ई, झोपड़ी।
कुरियाल–(हिं० स्त्री०) पक्षियों का आनन्द से बैठकर पर खुजलाना।
कुरिल–(हिं० पुं०) चर्मकार, चमार।
कुरीति–(सं० स्त्री०) कुप्रथा, कुचाल।
कुरुई–(हिं० स्त्री०) मूंज की डलिया।
कुरुख–(हिं० वि०) क्रुद्ध, कुपित।
कुरूप–(सं० वि०) निन्द्यरूप, भद्दा।
कुरेदना–(हिं० क्रि०) खुरचना, खोदना।
कुरैत–(हिं० पुं०) साझी, हिस्सेदार।
कुरैया–(हिं० पुं०) राशि, ढेर।
कुरौना–(हिं० क्रि०) राशि, ढेरी।
कुर्मी–(हिं० पुं०) देखो कुनबी।
कुल–(सं० पुं०) वंश, जाति, समूह, झुण्ड।
कुलकना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना।
कुलकर्ता–(सं० पुं०) वंश संस्थापक।
कुलक्षण–(सं० पुं०) बुरा लक्षण, कुरीति।
कुलक्षय–(सं० पुं०) वंश का ध्वंस।
कुलगरिमा–(सं० स्त्री०) वंशगौरव।
कुलघ्न–(सं० वि०) वंश-नाशक।
कुलच्छन–(हिं० स्त्री०) देखो कुलक्षण।
कुलटा–(सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली।
कुलतारन–(हिं० वि०) वंश को पवित्र करनेवाला।
कुलतिलक–(सं० पुं०) वंश में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति।
कुलथी–(हिं० स्त्री०) उड़द के प्रकार का एक मोटा अन्न।
कुलदीप–(सं० वि०) कुलश्रेष्ठ।
कुलदूषण–(सं० वि०) वंश में दोष लगानेवाला।
कुलना–(हिं० क्रि०) पीड़ित होना, टीसना।

कुलपति–(सं० पुं०) वंश का स्वामी, विद्यार्थियों का भरण-पोषण करनेवाला तथा उनको शिक्षा देनेवाला गुरु ।
कुलपूज्य–(सं० वि०) जो परंपरा से वंश में पूजित चला आया हो ।
कुलफी–(हिं०स्त्री०) धातु का बना हुआ चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बरफ जमाया जाता है, पेंच ।
कुलबुल–(हिं० पुं०) छोटे-छोटे कीड़ों की गति का शब्द । कुलबुलाना–(हिं० क्रि०) धीरे-धीरे हिलना डोलना ।
कुलबोरन–(हिं० वि०) कुलकलंक ।
कुलवन्त–(सं० पुं०) कुलीन ।
कुलवधू–(सं० स्त्री०) भले घराने की स्त्री ।
कुलवान–(सं० वि०) कुलीन, अच्छे कुल का ।
कुलह–(हिं० स्त्री०) कुलाह, टोपी ।
कुलाँच–(हिं० स्त्री०) उछाल, छलाँग ।
कुलाचार–(सं० पुं०) वंश का उचित धर्म ।
कुलाचार्य–(सं० पुं०) कुलगुरु ।
कुलाल–(सं० पुं०) कुम्भकार, कुम्हार ।
कुलाहल–(हिं० पुं०) देखो कोलाहल ।
कुलि–(हिं० क्रि० वि०) सम्पूर्ण, सब ।
कुलिक–(सं० वि०) शिल्पकार ।
कुलिज–(सं० पुं०) नख, नहँ ।
कुलिश–(सं०पुं०) वज्र, बिजली, कुठार ।
कुली–(सं० पुं०) बोझ उठानेवाला मनुष्य, मुटिया ।
कुलीन–(सं० वि०) अच्छे वंश का ।
कुलीरक–(सं० पुं०) छोटा ककड़ा ।
कुलल–(हिं० स्त्री०) कल्लोल, खेलकूद ।
कुल्माष–(सं० पुं०) कुलथी, उड़द, बाँस ।
कुल्या–(सं० स्त्री०) नहर, परनाला, कुलस्त्री ।
कुल्ला–(हिं० पुं०) मुख में पानी भरकर तथा चारों ओर घुमाकर बाहर फेंकने का कार्य ।
कुल्हड़–(हिं० पुं०) पुरवा, चुक्कड़ ।
कुल्हाड़ा–(हिं० पुं०) लकड़ी चीरने-फाड़ने का एक अस्त्र, कुठार ।
कुल्हाड़ी–(हिं० स्त्री०) छोटा कुल्हाड़ा, टाँगी ।
कुल्हिया–(हिं० स्त्री०) छोटा पुरवा या कुल्हड़ ।
कुवाँ–(हिं० पुं०) कूप, कुआँ ।
कुवाद–(सं० पुं०) परिवाद, बुरी बात ।
कुवार–(हिं० पुं०) आश्विन का महीना ।
कुश–(सं० पुं०) काँस जाति की एक घास ।
कुशल–(सं० पुं०) कल्याण, मंगल, शिव; (वि०) चतुर, शिक्षित, प्रवीण ।
कुशलक्षेम–(सं० पुं०) राजीखुशी ।
कुशा–(हिं० पुं०) देखो कुश ।
कुशील–(सं० वि०) असभ्य ।
कुष्ठ–(सं० पुं०) कोढ़ रोग ।
कुष्माण्ड–(सं० पुं०) कुम्हड़ा ।
कुसङ्ग–(सं० पुं०) कुत्सित संग ।
कुसमय–(सं० पुं०) संकट का समय ।
कुसलई–(हिं० स्त्री०) क्षेम, निपुणता ।
कुसलक्षम–(हिं० स्त्री०) देखो कुशलक्षेम ।
कुसली–(हिं० स्त्री०) आम की गुठली ।
कुसहाय–(सं० पुं०) बुरा साथी ।
कुसाइत–(हिं० स्त्री०) कुसमय, कुमुहूर्त ।
कुसिया–(हिं० स्त्री०) बेल-बूटा बनाने की सूई ।

कुसुम–(सं० पुं०) पुष्प, फूल । कुसुम-रेणु–(सं० पुं०) फूल का पराग ।
कुसुमांजलि–(सं० पुं०) पुष्पांजलि ।
कुसुमाकर–(सं० पुं०) बगीचा, कुंज ।
कुसुमागम–(सं० पुं०) वसन्त काल ।
कुसुमायुध–(सं० पुं०) कन्दर्प, कामदेव ।
कुसुमावली–(सं०स्त्री०) फूलों का गुच्छा ।
कुसुमित–(सं०वि०) पुष्पित, फूला हुआ ।
कुसुम्भी–(हिं० वि०) लाल रंग का ।
कुस्सा–(सं० पुं०) कुदाल, कुदाली ।
कुहक–(सं०वि०) प्रतारक, ऐन्द्रजालिक ।
कुहकना–(हिं० क्रि०) मीठा बोलना, पिहिकना । कुहकी–(हिं० वि०) मायावी ।
कुहना–(हिं० क्रि०) मार मारकर कचूमर निकालना ।
कुहनी–(हिं० स्त्री०) हाथ और बाँह के जोड़ की हड्डी, टेढ़ी बनी हुई नली।
कुहप–(हिं० पुं०) रात्रिचर, राक्षस।
कुहर–(सं० पुं०) छिद्र, गड्ढा ।
कुहरा–(हिं० पुं०) जल का अत्यन्त सूक्ष्म कण जो ठण्डक पाकर वायु की भाफ में जम जाता है और धीरे-धीरे भूमि पर उतरता है ।
कुहराम–(हिं० पुं०) कोलाहल, उपद्रव ।
कुहाना–(हिं० क्रि०) मन ही मन क्रुद्ध होना, रूठना ।
कुहु–(सं० स्त्री०) कोयल की बोली ।
कुहुक–(हिं० पुं०) पक्षियों का मधुर कूजन ।
कुहू–(सं० स्त्री०) कोयल की ध्वनि । कुहूक, कुहूकण्ठ–(सं० पुं०) कोकिल, कोयल ।
कूईं–(हिं० स्त्री०) कुमुदनी, कोईं ।
कूकर–(हिं० पुं०) कुक्कुर, कुत्ता ।
कूख–(हिं० स्त्री०) कुक्षि, काँख ।
कूँखना–(हिं० क्रि०) पीड़ित अवस्था में करुणाजनक शब्द निकालना, काँखना ।
कूँचना–(हिं० क्रि०) तोड़ना, कुचलना, मारना, पीटना ।
कूँचा–(हिं० पुं०) झाड़ू, बुहारी । कूँची-(हिं० स्त्री०) छोटा कूँचा, छोटी झाड़, चित्रकार की रंग-पोतने की कलम ।
कूँचिका–(सं० स्त्री०) छोटी चाभी, चित्रकार की कूँची ।
कूँची–(सं०स्त्री०) चित्र बनानेकी लेखनी; (हिं० स्त्री०) छोटी झाड़ू ।
कूँड़–(हिं० पुं०) युद्ध में पहिनने की लोहे की टोपी, पानी भरने का लोहे या मिट्टी का गगरा, पात्र, कठौता, मोमबत्ती जलाने की घड़े के आकार की काँच की बड़ी हाँड़ी ।
कूँड़ा–(हिं० पुं०) गहरा तथा चौड़े मुँह का मिट्टी का पात्र ।
कूँड़ी–(हिं० स्त्री०) पथरी, छोटी नाँद ।
कूँथना–(हिं० क्रि०) कराहना, काँखना ।
कूज–(हिं० स्त्री०) ध्वनि, बोली ।
कूजन–(सं० पुं०) चिड़ियों की बोली ।
कूजना–(हिं० क्रि०) चहकना ।
कूजित–(सं० वि०) शब्द किया हुआ ।
कूट–(सं० पुं०) पहाड़ का शिखर, कँगूरा, मुकुट, अग्रभाग, समूह, मिथ्या, झूठ, छल, गूढ़ार्थ, व्यंग; (वि०) कृत्रिम, बनावटी । कूटकर्मा–(सं० पुं०) छली, कपटी । कूटकार–(सं० वि०) झूठी साक्षी देनेवाला । कूटता–(सं० स्त्री०) छल, कपट, झूठापन ।
कूटना–(हिं० क्रि०) ठोंकना, मारना, पीटना, टाँकी से छोटे-छोटे गड्ढे बनाना ।
कूटनीति–(सं० स्त्री०) कपटनीति, धोखे की चाल । कूटशासन–(सं० पुं०) मिथ्या शासन, धोखे का राज्य ।

कूटसाक्षी–(सं० पुं०) झूठ बोलनेवाला साक्षी।
कूटू–(हिं० पुं०) एक वृक्ष जिसके फल के बीजों का आटा पीसकर फलाहार में व्रत के दिन खाया जाता है।
कूड़ा–(हिं० पुं०) झाड़न, मल, कतवार।
कूढ़–(हिं० वि०) अज्ञान, मूर्ख।
कूत–(हिं० स्त्री०) अनुमान, अटकल।
कूतन–(हिं० क्रि०) अटकल से किसी वस्तु की मूल संख्या, परिमाण इत्यादि बतलाना।
कूद–(हिं०स्त्री०) कूदने की क्रिया, कुदाई। कूदना–(हिं० क्रि०) उछलना, फाँदना।
कूप–(सं० पुं०) कुआँ, इनारा, गर्त, छेद।
कूपकार–(सं० पुं०) कुआँ खोदनेवाला।
कूपज–(सं० पुं०) लोम, केश, बाल।
कूपदर्दुर–(सं० पुं०) कुवें का मेढक, अनुभवहीन मनुष्य।
कूपी–(सं० स्त्री०) नाभि, छोटा पात्र।
कूबड़–(हिं० पुं०) पीठ का टेढ़ापन।
कूबर–(हिं० पुं०) कूबड़।
कूबा–(हिं० पुं०) बड़ेरा रखने की टेढ़ी लकड़ी।
कूरा–(हिं० पुं०) राशि, ढेर, भाग, अंश।
कूर्च–(सं० पुं०) दोनों भौंहों के बीच का स्थान, दाढ़ी-मूंछ।
कूर्चिका–(सं० स्त्री०) चाभी, सुई, फूल की कली, चित्रकार की कलम।
कूर्म–(सं० पुं०) कच्छप, कछुवा, पृथ्वी।
कूल–(सं० पुं०) नदी का किनारा।
कूलिनी–(सं० स्त्री०) नदी।
कूली–(हिं० पुं०) देखो कुली।
कूल्हना–(हिं० क्रि०) काँखना, कराहना
कूल्हा–(हिं० पुं०) पैर के दोनों ओर की उभरी हुई हड्डी।
कूष्माण्ड–(सं०पुं०) कुम्हड़े की लता।
कूह–(हिं०स्त्री०) हाथी का चिग्घाड़।
कृकलास–(सं० पुं०) गिरगिट।
कृच्छ्–(सं० पुं०) दुःख, कष्ट, पाप।
कृत–(सं० वि०) सम्पादित किया हुआ, प्रस्तुत, प्राप्त, अभ्यस्त, पर्याप्त।
कृतकार्य–(सं० वि०) कार्य साधन करनेवाला।
कृतघ्न–(सं० वि०) पहिले किये हुए उपकार को भूल जानेवाला।
कृतज्ञ–(सं० वि०) किये हुए उपकार को माननेवाला। कृतज्ञता–(सं० स्त्री०) उपकार मानना।
कृतापराध–(सं० वि०) दोषी, अपराधी।
कृतार्थ–(सं० वि०) जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो, सन्तुष्ट।
कृति–(सं०स्त्री०) क्रिया, करनी, कार्य।
कृत्य–(सं० वि०) किया जानेवाला, कर्तव्य, बेदविहित आवश्यक कर्म।
कृत्या–(सं० स्त्री०) अभिचारादि कार्य, जादू-टोना।
कृत्रिम–(सं०वि०) बनावटी, मिथ्याभूत।
कृत्स्न–(सं० वि०) सम्पूर्ण, सब।
कृदन्त–(सं० पुं०) धातु में 'कृत' प्रत्यय लगाकर बना हुआ शब्द।
कृन्तन–(सं० पुं०) छेदन, काटछाँट।
कृपण–(सं०वि०) कंजूस, सूम, अदाता।
कृपनाई–(हिं० स्त्री०) कृपणता।
कृपया–(सं० अव्य०) कृपापूर्वक।
कृपा–(सं०स्त्री०) दया, अनुग्रह, क्षमा।
कृपाकर–(सं० वि०) दयालु।
कृपाण–(सं० पुं०) खड्ग, तलवार।
कृपानिधि–(सं० पुं०) अति दयावान्।
कृपापात्र–(सं० पुं०) दयाभाजन।
कृपायतन–(सं० पुं०) कृपानिधि।
कृपाल–(हिं० बि०) देखो कृपालु।

कृपालु–(सं० वि०) दयालु ।
कृपावान्–(सं०वि०) दया करनेवाला ।
कृपासिन्धु–(सं० पुं०) दयासागर ।
कृमि–(सं० पुं०) कीट, उड़नेवाला कोई कीड़ा ।
कृश–(सं०वि०) दुबला, पतला, दरिद्र, अधूरा ।
कृशरा–(सं० स्त्री०) खिचड़ी ।
कृशानु–(सं० पुं०) अग्नि, आग ।
कृशित–(सं०वि०) दुर्बल, दुबला-पतला ।
कृशोदरी–(सं० स्त्री०) पतली कमर-वाली स्त्री ।
कृषक–(सं० पुं०) किसान, खेतिहर ।
कृषि–(सं० स्त्री०) खेती, किसानी ।
कृषीवल–(सं० पुं०) किसान ।
कृष्ट–(सं०वि०) कर्षित, जोता हुआ ।
कृष्ण–(सं०वि०) काला, नीले रंग का; (पुं०) भगवान् का एक अवतार ।
कृष्णकाय–(सं० पुं०) भैंसा; (वि०) काले शरीर का ।
कृष्णपक्ष–(सं० पुं०) चन्द्रक्षय का पक्ष, अँधियारा पाख ।
कृष्णसार–(सं०पुं०) काला हिरन ।
कृष्णायस–(सं०पुं०) इस्पात, लोहा ।
केंकें–(हिं० स्त्री०) चिड़ियों का दुःख-सूचक शब्द, झगड़ की बोली ।
केंचुल–(हिं०स्त्री०) साँप की अपने आप गिर जानेवाली खाल ।
केंचुली–(हिं० स्त्री०) देखो केंचुल ।
केंचुवा–(हिं० पुं०) वर्षा ऋतु का एक कीड़ा, पेट में पड़ जानेवाला कीड़ा, जो केंचुवा के आकार का होता है ।
केउ–(हिं०सर्व०) कोई ।
केकड़ा–(हिं० पुं०) कर्कट, पानी में रहनवाला आठ टाँग और दो पंजेवाला एक कीड़ा ।
केका–(सं०स्त्री०) मोर की बोली ।
केकी–(सं० पुं०) मयूर, मोर ।
केचित्–(सं०अव्य०) कोई कोई ।
केड़वारी–(हिं०स्त्री०) शाक, फल आदि बोन का बगीचा ।
केड़ा–(हिं०पुं०) कोंपल, कल्ला, नया पौधा
केत–(सं०पुं०) घर, स्थान, बस्ती, ध्वजा ।
केतक–(सं० पुं०) केवड़ा; (हिं० वि०) कितने, बहुत, बहुत कुछ ।
केतकी–(सं० स्त्री०) केवड़ा ।
केतिक–(हिं० वि०) कितना ।
केतक–(हिं० वि०) कितना ।
केती–(हिं० वि०) कितना ।
केन्द्र–(सं० पुं०) वृत्त का मध्यस्थान । **केन्द्राभिकर्षिणी** शक्ति–वह शक्ति जिसके प्रभाव से द्रव्य केन्द्र की ओर आकर्षित होता है ।
केयूर–(सं० पुं०) बाँह में पहिनने का आभूषण, भुजबन्ध, अंगद ।
केर–(हिं०प्रत्य०) संबंधसूचक विभक्ति का प्रत्यय, का ।
केरा–(हिं० पुं०) देखो केला ।
केराना–(हिं०क्रि०) अन्न का छोटा बड़ा दाना सूप से अलगाना; (पुं०) हलदी, मिरचा, धनिया आदि मसाला ।
केरानी–(हिं० पुं०) युरेशियन, दोगला युरोपियन ।
केराव–(हिं० पुं०) मटर ।
केरी–(हिं० प्रत्य०) 'के' विभक्ति का स्त्रीलिंग का रूप ।
केला–(हिं० पुं०) कदली वृक्ष ।
केलि–(सं०स्त्री०) परिहास, हँसी-ठट्ठा, क्रीड़ा ।
केवट–(हिं० पुं०) मल्लाह ।
केवटीदाल–(हिं० स्त्री०) दो या अधिक प्रकार की एक में मिली हुई दाल ।

केवड़ई–(हिं०वि०)हलके पीले हरे रंग का
केवड़ा–(हिं०पुं०)श्वेत केतकी का पौधा, इस पौधे का फूल ।
केवल–(सं० वि०) एकमात्र, अकेला, श्रेष्ठ, उत्तम, उत्कृष्ट; (पुं०) भ्रान्ति-शून्य ज्ञान; (क्रि०वि०) सिर्फ, मात्र ।
केवाड़–(हिं० पुं०) किवाड़, कपाट ।
केश–(सं० पुं०) कुन्तल, सिर का बाल, किरण, रश्मि । केशकर्म–(सं० पुं०) बालों के सँवारने की कला, केशान्त कर्म संस्कार । केशकलाप–(सं०पुं०) बालों का गुच्छा । केशग्रह–(सं० पुं०) बल-पूर्वक झोंटा खींचना । केशपाश–(सं० पुं०) बालों की लट । केशमार्जनी–(सं० स्त्री०) कंघी ।
केशर–(सं०पुं०) फूलों के बीच के महीन रेशे, सिंह या घोड़े की गर्दन पर के बाल, कुङ्कुम, केसर ।
केशरी–(सं०पुं०) सिंह, घोड़ा ।
केशव–(सं० पुं०) परमात्मा, विष्णु ।
केशिनी–(सं० स्त्री०) बड़े-बड़े बालों-वाली स्त्री ।
केशी–(सं० पुं०) घोड़ा, सिंह; (वि०) बालदार, किरणयुक्त ।
केस–(हिं० पुं०) देखो केश ।
केसर–(सं० पुं०) फूलों के बीच के महीन तन्तु, कुङ्कुम, घोड़े या सिंह की गरदन पर के बाल । केसरिया–(हिं० वि०) पीला, जिसमें केसर मिली हो ।
केसरी–(सं०पुं०) सिंह, घोड़ा ।
केसारी–(हिं०स्त्री०) मटर की जातिका एक अन्न, लतरी, खेसारी ।
केसू–(हिं० पुं०) देखो टेसू ।
केहरी–(हिं० पुं०) केसरी, सिंह, घोड़ा ।
केहर–(हिं० पुं०) मयूर, मोर ।
केहि–(हिं० वि०) किस, किसको ।
केहूँ–(हिं०क्रि०वि०) किस प्रकार, कैसे ।
केहू–(हिं० सर्व०) कोई ।
कैंचा–(हिं०वि०) टेढ़ी आँखवाला, भेंगा, ऐंचा; (पुं०) बड़ी कैंची ।
कैंड़ा–(हिं० पुं०) ढंग, बनावट, चतुराई ।
कैं–(सं०वि०)कितने,कितना; (अव्य०) अथवा, वा; (अ०स्त्री०)वमन, उलटी ।
कैतव–(सं०पुं०) शठता, छल, धोखा; (वि०) जुआरी, शठ, दुष्ट ।
कैथ, कैथा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके गोल फल खट्टे होते हैं, कपित्थ ।
कैथी–(हिं० स्त्री०) एक प्राचीन लिपि जो नागरी से बहुत मिलती-जुलती है, इसमें अक्षरों पर माथा नहीं बांधा जाता, बिहार प्रान्त में इसका व्यवहार होता है ।
कैधौं–(हिं० अव्य०) वा, अथवा ।
कैया–(हिं० पुं०) राँगे से झलने का हथौड़ी के आकार का एक अस्त्र, आध पाव की नाप ।
कैरव–(सं० पुं०) शत्रु, जुआरी ।
कैलास–(सं० पुं०) हिमालय की एक चोटी का नाम ।
कैवर–(हिं० पुं०) तीर का फल ।
कैवर्त–(सं०पुं०) केवट जाति, मल्लाह ।
कैवल्य–(सं० पुं०) मुक्ति, निर्वाण, एकता, शुद्धता ।
कैसे–(हिं० क्रि० वि०)किस प्रकार से, किस कारण से, क्यों, किस लिये ।
कैसो–(हिं०) देखो कैसा ।
कोईं–(हिं० स्त्री०) देखो कुंइं ।
कोंचना–(हिं० क्रि०) छेदना, गड़ाना, चुभाना ।
कोंछ–(हिं०पुं०) स्त्रियों की ओढ़नी का

कोना। कोंछना–(हिं० क्रि०) साड़ी के अगले भाग को चुनना।
कोंथ–(हिं०पुं०) पुरानी भीत के छेदों में मिट्टी इत्यादि का भराव। कोंथना–(हिं० क्रि०) भीत के छेदों में सनी हुई मिट्टी भरना।
कोंपर, कोंपल–(हिं० स्त्री०) डाल का पका हुआ आम, बाँस का कोमल अंकुर।
कोंवर–(हिं० वि०) नरम, मुलायम, मृदु, कोमल।
कोंहड़ा–(हिं० पुं०) देखो कुम्हड़ा।
कोंहड़ौरी–(हिं०स्त्री०) पेठे को मिलाकर उड़द की बनी हुई बरी।
को–(हिं०सर्व०) कौन, कर्म तथा सम्प्रदान कारक का चिह्न।
कोआ–(हिं०पुं०) कोष, रेशम के कीड़े का घर, टसर का कीड़ा, महुवे का पका हुआ फल, कटहल के पके हुए फल का बीजकोष, आँख का ढेला।
कोइना–(हिं० पुं०) महुवे के फल की गुठली
कोइरी–(हिं० पुं०) काछी, कुरमी।
कोइली–(हिं० स्त्री०) आम की गुठली।
कोई–(हिं०सर्व०) अज्ञात, वस्तु विशेष, अविशेष, एक भी।
कोउ, कोऊ, कोऊक–(हिं० सर्व०) कोई एक, कुछ।
कोक–(सं०पुं०) चक्रवाक, चकवा, भेंड़ा।
कोकई–(हिं०वि०) गुलाबी, नीला रंग, कौड़ियाला।
कोकनद–(सं० पुं०) लाल पद्म।
कोकना–(हिं० क्रि०) कच्चा करना, बखिया करने के लिये सूई से दूर-दूर पर तागा डालना।
कोकाह–(सं० पुं०) श्वेत घोड़ा।
कोकिल–(सं० पुं०) कोयल, परभृत, जलता हुआ अंगारा, बेर का फल।
कोको–(हिं० स्त्री०) मादा कौवा; (पुं०) कौवे का शब्द।
कोख–(हिं० स्त्री०) पेट, उदर, पेट के दोनों ओर का स्थान, गर्भाशय।
कोचना–(हिं० क्रि०) चुभाना, गड़ाना। (पुं०) चुभाने का कोई साधन।
कोचवान–(हिं० पुं०) बग्घी हाँकनेवाला।
कोचा–(हिं० पुं०) तलवार इत्यादि का गड़ाव, चुभाव।
कोजागर–(सं० पुं०) आश्विन मास की पूर्णिमा, शरदपूर्णिमा, सरदपूनो।
कोट–(सं० पुं०) दुर्ग, गढ़; (हिं० पुं०) कोटि, अनेक।
कोटर–(सं० पुं०) पेड़ का खोखला भाग।
कोटि–(सं० स्त्री०) तलवार की धार, धनुष का अगला भाग, सौ लाख की संख्या, श्रेणी, समूह, जत्था।
कोटिक–(हिं० वि०) करोड़ों, अनगिनत।
कोटिज्या–(सं० स्त्री०) धनुष के आकार का क्षेत्र।
कोटिश–(सं० अव्य०) करोड़ों, अनेक प्रकार से।
कोठरी–(हिं० स्त्री०) भीत से चारों ओर घेरा हुआ छोटा कमरा।
कोठा–(हिं० पुं०) लंबी-चौड़ी कोठरी, भण्डारघर, अटारी। कोठार–(हिं० पुं०) भण्डारघर। कोठारी–(हिं० पुं०) भण्डारी।
कोठिला–(हिं० पुं०) देखो कुठला।
कोठी–(हिं० पुं०) पक्का बड़ा घर, बँगला, कारबार का स्थान, थोक बिक्री की दूकान, कुवें की दीवार, या पुल के खंभे

पर की ईंट या पत्थर की जुड़ाई जो पानी के भीतर चली जाती है, बाँस का मण्डलाकार समूह। **कोठीवाल**–(हिं० पुं०) महाजन, साहूकार। **कोठीवाली**–(हिं० स्त्री०) महाजनी, मुड़िया लिपि।

कोड़ना–(हिं० क्रि०) खेत की मिट्टी को गहरी खोदकर उलटना, गोड़ना।

कोड़ा–(हिं० पुं०) साटा, चाबुक।

कोड़ी–(हिं० स्त्री०) बीस वस्तुओं का समूह

कोढ़–(हिं० पुं०) कुष्ठ।

कोढ़ी–(हिं० वि०) कुष्ठ रोग ग्रस्त।

कोण–(सं० पुं०) नोक, कोना, दिशाओं के मध्य की दिशा, दो सीधी रेखाओं के परस्पर मिलने का स्थान।

कोतवाल–(हिं० पुं०) नगरपाल, प्रबन्धकारक, पंचायत सभा इत्यादि का निमन्त्रण देनेवाला। **कोतवाली**–(हिं० स्त्री०) कोतवाल के रहने का स्थान, कोतवाल का पद।

कोथला–(हिं० पुं०) थैला, उदर, पेट।

कोथली–(हिं० स्त्री०) लंबी थैली जिसमें रुपये-पैसे भरकर कमर में बाँध लेते हैं।

कोद–(हिं० स्त्री०) दिशा, ओर, कोना।

कोदई–(हिं० पुं०) देखो कोद्रव।

कोदण्ड–(सं० पुं०) धनुष, कमान, भौंह।

कोदो–(हिं० पुं०) कोद्रव, कदन्न।

कोन–(हिं० पुं०) कोण, कोना।

कोना–(हिं० पुं०) कोण, नोकीला किनारा, खूंट, पल्ला, लंबाई-चौड़ाई मिलने का स्थान।

कोनिया–(हिं० स्त्री०) लकड़ी या पत्थर की पटिया जो वस्तु रखने के लिये भीत के कोने पर बैठाई होती है।

कोप–(सं० पुं०) क्रोध, रोष। **कोपना**–(हिं० क्रि०) क्रोध करना, रोष करना।

कोपनीय–(सं० वि०) जिस पर क्रोध किया जावे। **कोपभवन**–(सं० पुं०) वह कोठरी जिसमें क्रोध में आकर कोई मनुष्य बैठता है।

कोपर–(हिं० पुं०) टपका, डाल का पका आम। **कोपल**–(हिं० स्त्री०) नई पत्ती जो किसी पौधे में से निकलती है।

कोपित–(सं० वि०) कुपित, क्रुद्ध।

कोपित–(हिं० वि०) कोप करनेवाला, क्रोधी।

कोपीन–(हिं० स्त्री०) देखो कौपीन।

कोबी–(हिं० स्त्री०) गोभी का फल।

कोमल–(सं० वि०) सुकुमार, सुन्दर, मनोहर।

कोय–(हिं० सर्व०) कोई।

कोयर–(हिं० पुं०) पशुओं को खिलाने का हरा चारा।

कोयल–(हिं० स्त्री०) कोकिल।

कोयला–(हिं० पुं०) जली हुई लकड़ी का वह भाग जो पूरी तरह से राख न हुआ हो परन्तु काला पड़ गया हो।

कोया–(हिं० पुं०) आँख का ढेला, आँख का कोवा, कटहल का गूदे से भरा हुआ बीज-कोष जो खाया जाता है।

कोरंजा–(हिं० पुं०) वेतन में दिया जानेवाला अन्न।

कोर–(हिं० स्त्री०) प्रान्त भाग, किनारा, द्वेष, नोक, धार, श्रेणी, वैमनस्य।

कोरहा–(हिं० वि०) किनारदार, नुकीला।

कोरा–(हिं० वि०) व्यवहार में न लाया हुआ, चिह्न-रहित, निरक्षर, नया, बिना धुला हुआ।

कोरि–(हिं०) देखो कोटि।

कोल–(सं० पुं०) बेड़ा, क्रोड़, गोद, आलिंगन।

कोलना–(हिं० क्रि०) छेदना, बीच में खोदकर पोला करना।
कोलाहल–(सं० पुं०) कलकल ध्वनि, चिल्लाहट।
कोलियाना–(हिं०क्रि०)छाती से लगाना।
कोल्हू–(हिं०पुं०) तेल या ऊख पेरने का यन्त्र।
कोविद–(सं० पुं०) पण्डित, विद्वान्।
कोविदार–(सं०पुं०) कचनार का वृक्ष।
कोश–(सं० पुं०) अण्ड, अंडा, फूल की बँधी हुई कली, तलवार की मियान, समूह, ढेर, आवरण, खोल, संचित धन, रेशम का कोया, अकारादि क्रम से लिखी हुई पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ दिये हों। **कोशकार**–(सं० पुं०) शब्दकोश बनानेवाला।
कोशपाल–(सं० पुं०) कोषाध्यक्ष।
कोशवान्–(सं० वि०) कोशयुक्त।
कोशवृद्धि–(सं० स्त्री०) अण्डकोष की वृद्धि।
कोशागार–(सं० पुं०) धनागार।
कोष–(सं० पुं०)कुड्मल, कली, तलवार की म्यान, अण्टा, पात्र, भाण्डार।
कोष्ठक–(सं० पुं०) घिरा हुआ स्थान, एक चिह्न जो लिखने में प्रयुक्त होता है जिसके भीतर अंक या वाक्य लिखे जाते हैं। **कोष्ठबद्ध**–(सं० पुं०) मल की रुकावट।
कोस–(हिं०पुं०)क्रोश,दो मील की दूरी।
कोसना–(हिं० क्रि०) अभिशाप देना, गाली देना।
कोसिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का छोटा पात्र।
कोसू–(हिं० पुं०) कोसनेवाला।
कोसों–(हिं० क्रि० वि०) कई कोस की दूरी पर।
कोहड़ौरी–(हिं० स्त्री०) कोहड़े और उड़द की बरी।
कोह–(हिं० पुं०) क्रोध।
कोहना–(हिं० क्रि०) रिसियाना।
कोहनी–(हिं० स्त्री०)देखो कुहनी।
कोहबर–(हिं० पुं०)वह स्थान जहाँ विवाह के समय कुलदेवता की स्थापना होती है।
कोहरा–(हिं० पुं०)धुवें के रूप में प्रातः-काल गिरनेवाली ओस।
कोहा–(हिं०पुं०)चौड़े मुंह का मिट्टी का बड़ा पात्र जो खप्पर के आकार का होता है।
कोहाना–(हिं०क्रि०)क्रुद्ध होना, रिसाना
कोही–(हिं० वि०) क्रोधी।
कौंध–(हिं० स्त्री०) बिजली की दूर की चमक। **कौंधना**–(हिं० क्रि०) दूर से बिजली चमकना।
कौआना–(हिं० क्रि०) अंडबंड बकना, भौचक्का होना।
कौट–(सं० पु०) कपट-साक्षी।
कौटिल्य–(सं० पुं०) कुटिलता, क्रूरता।
कौड़ा–(हिं० पुं०) बड़ी कौड़ी, जाड़े के दिनों में गड्ढे में जलाई हुई आग, अलाव।
कौड़िया–(हिं० वि०)कौड़ी के रंग का।
कौड़ियाला–(हिं० वि०) कोकई, हलका नीला जिसमें गुलाबी की कुछ आभा हो; (वि०) कृपण, कंजूस।
कौड़ियही–(हिं० स्त्री०) कौड़ियों में चुकाई जानेवाली मजदूरी।
कौड़ी–(हिं० स्त्री०) कपर्दिका, द्रव्य, रुपया, पसा, कर, आँख का ढेला, गिलटी जो काँख या जाँघ में होती है, छोटी हड्डी जो छाती के नीचे बीच में होती है, कटार की नोक।

कौतिग–(हिं० पुं०) देखो कौतुक ।
कौतुक–(सं० पुं०) आश्चर्य, अचंभा, आनन्द, विनोद । **कौतूहल**–(सं० पुं०) किसी नये या अपरिज्ञात विषय के जानने-सुनने या देखने का आग्रह ।
कौथ–(हिं० स्त्री०) कौन-सी तिथि, यह शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम की तरह प्रयुक्त होता है ।
कौथा–(हिं० वि०) किस संख्या का, किस स्थान का ।
कौन–(हिं० सर्व०) प्रश्नवाचक सर्वनाम जिसके द्वारा अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु पूछी जाती है, विभक्ति लगने से "कौन" का रूप "किस" हो जाता है, कैसा, किस प्रकार का ।
कौपीन–(सं० पुं०) काछा, कफनी ।
कौमार–(सं० पुं०) बचपन ।
कौमुदी–(सं० स्त्री०) ज्योत्स्ना, चाँदनी ।
कौर–(हिं० पुं०) कवल, ग्रास, कोना, चक्की में एक वार पिसने के लिए डाला जानेवाला अन्न ।
कौरना–(हिं० क्रि०) थोड़ा भूनना ।
कौरा–(हिं० पुं०) द्वार का दोनों ओर का पाख ।
कौरियाना–(हिं० क्रि०) दोनों हाथों से पकड़कर छाती में लगाना ।
कौरी–(हिं० स्त्री०) क्रोड, गोद, अँकवार ।
कौल–(सं० वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न ।
कौलिक–(सं० पुं०) जुलाहा ।
कौवा–(हिं० पुं०) वायस, काक, कण्ठ के भीतर का लटकता हुआ मांस का खण्ड, घाँटी । **कौवारोर**–बहुत कोलाहल ।
कौशल–(सं० पुं०) कुशलता, चातुरी ।
कौशेय–(सं० पुं०) रेशमी वस्त्र ।
कौसुम्भ–(सं० पुं०) जंगली कुसुम, कुसुम्भी ।
कौहा–(हिं० पुं०) बड़ेर की आड़ में लगाई जानेवाली लकड़ी ।
क्या–(हिं० सर्व०) प्रश्नवाचक शब्द, कौन वस्तु, इस शब्द द्वारा किसी विषय में प्रश्न किया जाता है, इसमें कोई विभक्ति नहीं लगती, कितना, ऐसा, कैसा, इतना, अनोखा, निराला, अच्छा; (क्रि० वि०) क्यों नहीं, काहे को ।
क्यारी–(हिं० स्त्री०) कियारी ।
क्यों–(हिं० क्रि० वि०) किस कारण, किस लिये, इस शब्द से किसी व्यापार या घटना का कारण व्यक्त होता है, कैसे, किस प्रकार । **क्योंकि**–(हिं० अव्य०) इसलिये कि । **क्योंकर**–किस प्रकार से । **क्यों नहीं**–ऐसा ही ठीक है ।
क्रकच–(सं० पुं०) आरा, केवड़ा ।
क्रकराट(सं० पुं०) भरद्वाज पक्षी ।
क्रतु–(सं० पुं०) यज्ञ ।
क्रन्द–(सं० पुं०) घोड़े की हिनहिनाहट, चीख । **क्रन्दन**–(सं० पुं०) रुलाई ।
क्रम–(सं० पुं०) अनुक्रम, शक्ति, प्रणाली, आक्रमण, पैर रखने का काम, आगे-पीछे रहने की स्थिति, चाल, परिपाटी ।
क्रमज्या–(सं० स्त्री०) गणित ज्योतिष में क्रान्तिज्या । **क्रमशः**–(सं० अव्य०) क्रम-क्रम से, धीरे-धीरे ।
क्रमागत–(सं० वि०) क्रम से प्राप्त, वंश-परंपरा क्रम से प्राप्त । **क्रमानुसार**–(सं० क्रि० वि०) क्रमानुकूल, क्रम से ।
क्रमिक–(सं० वि०) क्रमयुक्त, परंपरा-प्राप्त ।
क्रय–(सं० पुं०) मोल लेने का काम ।
क्रयविक्रय–(सं० पुं०) मोल लेने और बेचने का काम, वाणिज्य ।
क्रयी–(सं० वि०) क्रेता ।
क्रव्य–(सं० पुं०) मांस ।

क्रव्याद–(सं०पुं०) मांस खानेवाला जीव, राक्षस, सिंह, श्येन पक्षी, अग्नि।
क्रान्त–(सं० वि०) आक्रान्त,दबा हुआ।
क्रान्ति–(सं० स्त्री०) पाद-विक्षेप, नक्षत्र की गति, राशिचक्र की मध्यरेखा, विषुवत रेखा से उत्तर कर्कट क्रान्ति तक अथवा दक्षिण में मकर क्रान्ति तक सूर्य की दूरी, परिवर्तन, उलट-फेर।
क्रान्तिक्षेत्र–(सं० पुं०)नक्षत्र की गति जानने के लिये खींचा हुआ क्षेत्र।
क्रान्तिज्या–(सं० स्त्री०) क्रान्ति वृत्त क्षेत्र स्थित अक्षक्षेत्र का एक अवयव।
क्रान्तिपात–(सं० पुं०) विषुवत् रेखा तथा अयन मण्डल के मिलाप का स्थान जहाँ पर पृथ्वी के आने से दिन-रात बराबर होते हैं।
क्रान्तिमण्डल–(सं० पुं०) वह कल्पित वृत्त जिस पर पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ सूर्य दीख पड़ता है।
क्रान्तिवृत्त–(सं० पुं०) सूर्य का मार्ग।
क्रिमि–(सं० पुं०)घुन, कीड़ा। क्रिमिजा–(सं० स्त्री०) लाख, लाक्षा।
क्रियमाण–(सं० वि०) प्रस्तुत किया जानेवाला।
क्रिया–(सं० स्त्री०)अनुष्ठान,चिकित्सा, प्रयोग, श्राद्ध, प्रयत्न, गति, चेष्टा, हिलना, डोलना, व्याकरण में किसी व्यापार के होने या करने का अर्थसूचक शब्द। क्रियातिपत्ति–(सं० स्त्री०) काव्यालंकारमें अतिशयोक्ति का एकभेद।
क्रियानिष्ठ–(सं० वि०) सन्ध्या, तर्पण आदि नित्यकर्म करनेवाला। क्रियावान्–(सं०वि०)क्रियायुक्त,कामकाजी।
क्रियाविशेषण–(सं० पुं०) क्रिया का विशेषण, क्रिया का भाव प्रकाशित करनेवाला शब्द।
क्रिस्तान–ईसाई धर्मानुयायी।
क्रिस्तानी–(हिं० वि०) ईसाइयों का।
क्रीट–(हिं० पुं०) किरीट, मुकुट।
क्रीड़क–(सं० वि०) क्रीड़ा करनेवाला।
क्रीड़न–(सं० पुं०) क्रीड़ा।
क्रीड़ा–(सं० स्त्री०)आमोद-प्रमोद, खेल-कूद। क्रीड़ाकानन–उपवन, बगीचा। क्रीड़ाकौतुक–खेल-तमाशा।
क्रीत–(सं० वि०) मोल लिया हुआ।
क्रीतक–(सं० पुं०) क्रीत पुत्र।
क्रुद्ध–(सं० वि०) कोपयुक्त, कुपित।
क्रुष्ट–(सं० वि०) शाप दिया हुआ।
क्रूर–(सं० वि०) निर्दय, नृशंस, कठिन, कड़ा। क्रूरता–(सं० स्त्री०) निर्दयता, निष्ठुरता।
क्रूरात्मा–(सं० पुं०) निर्दय प्रकृतिवाला मनुष्य।
क्रेता–(सं० वि०) खरीदनेवाला।
क्रय–(सं० वि०) मोल लेने योग्य।
क्रोड़–(सं० पुं०)दोनों बाहु के बीच का भाग, अँकवार, गोद।
क्रोड़पत्र–(सं० पुं०) अतिरिक्त पत्र, पुस्तक या समाचार पत्र का वह अंश जो छूटे हुए भाग की पूर्ति के लिये जोड़ दिया जाता है। परिशिष्ट।
क्रोध–(सं० पुं०)कोप, रोष। क्रोधवश–(हिं० क्रि० वि०) क्रोध के कारण से।
क्रोधान्वित–(सं० वि०) क्रोधयुक्त।
क्रोधालु–(सं० वि०) क्रोधी।
क्रोधित–(सं०वि०) क्रुद्ध। क्रोधी–(सं० वि०) थोड़े में क्रुद्ध होनेवाला।
क्रोश–(सं० पुं०) रुलाई, कोस, ढोल।
क्लन्द–(सं० पुं०) रोदन, रुलाई।
क्लान्त–(सं०वि०)थका हुआ, मुरझाया हुआ। क्लान्ति–(सं० स्त्री०)परिश्रम, थकावट।

क्लिन्न–(सं० वि०) आर्द्र, तर, भीगा हुआ।
क्लिशित–(सं० वि०) क्लेशयुक्त।
क्लिष्ट–(सं० वि०) क्लेशयुक्त, दुखी, कठिन, कड़ा, कठिनाई से समझ में आनेवाला। **क्लिष्टता**–(सं० स्त्री०) कठिनाई।
क्लीब–(सं० पुं०) पुरुष तथा स्त्री से भिन्न, नपुंसक, षण्ढ।
क्लेद–(सं० पुं०) पसीना, गीलापन, कफ, मैल, सड़ाव।
क्लेश–(सं० पुं०) दुःख, कष्ट, पीड़ा, वेदना, कलह। **क्लेशकारी**–(सं० वि०) कष्ट देनेवाला।
क्लैव्य–(सं० पुं०) क्लीबता, नपुंसकता।
क्लोम–(सं० पुं०) फुस्फुस, दाहिना फेफड़ा।
क्वण–(सं० पुं०) वीणा का शब्द, कल-कल शब्द।
क्वचित्–(सं० अव्य०) कोई भी।
क्वथित–(सं० वि०) पकाया हुआ।
क्वाथ–(सं० पुं०) कषाय, काढ़ा।
क्वारपन–(हिं० पुं०) क्वाँरापन।
क्वारा–(हिं० वि०) अविवाहित।
क्षण–(सं० पुं०) बहुत छोटा समय, अवसर, प्रशस्त मुहूर्त।
क्षणभंगुर–(सं० वि०) अनित्य, क्षणभर में नष्ट हो जानेवाला।
क्षणिक–(सं० वि०) क्षणमात्र ठहरनेवाला, अनित्य, क्षणभंगुर।
क्षणिका–(सं० स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
क्षत–(सं० वि०) पीड़ित, घाव लगा हुआ; (पुं०) दुःख, पीड़ा, घाव, व्रण, फोड़ा।
क्षति–(सं० स्त्री०) हानि, घाटा, नाश।
क्षत्र–(सं० पुं०) क्षत्रिय, राष्ट्र, राज्य।
क्षत्रिय–(सं० पुं०) द्विजातियों के अन्तर्गत दूसरा वर्ण।
क्षत्रिया,क्षत्रियाणी–(सं० स्त्री०) क्षत्रिय की स्त्री।
क्षन्तव्य–(सं० वि०) क्षमा करने योग्य।
क्षन्ता–(सं० वि०) क्षमा करनेवाला।
क्षपा–(सं० स्त्री०) रात्रि, रात। **क्षपाकर**–(सं० पुं०) चन्द्रमा, कर्पूर।
क्षपाचर–(सं० पुं०) निशाचर, राक्षस।
क्षपाचरी–(सं० स्त्री०) राक्षसी, डाइन।
क्षम–(सं० वि०) उपयुक्त, योग्य, समर्थ।
क्षमा–(सं० स्त्री०) क्षान्ति, सहिष्णुता।
क्षमाई–(हिं० स्त्री०) क्षमा करने की क्रिया।
क्षमानत–(हिं० पुं०) क्षमा करने का अभ्यास।
क्षमावान्–(सं० वि०) क्षमायुक्त, सहिष्णु।
क्षमितव्य–(सं० वि०) क्षमा करने योग्य।
क्षमाशील–(सं० वि०) क्षमावान।
क्षमी–(सं० वि०) क्षमाशील, सहिष्णु।
क्षम्य–(सं० वि०) क्षमा किया जाने योग्य।
क्षय–(सं० पुं०) प्रलय, कल्पान्त, नाश, राजयक्ष्मा रोग, समाप्ति, अन्त।
क्षयित–(सं० वि०) बिगाड़ा या नाश किया हुआ।
क्षयी–(सं० वि०) नष्ट होनेवाला, यक्ष्मा का रोगी।
क्षर–(सं० वि०) नाश होनेवाला।
क्षरण–(सं० पुं०) टपकाव, चुआव, नाश।
क्षरित–(सं० वि०) चुआया हुआ, टपकाया हुआ।
क्षात्र–(सं० पुं०) क्षत्रियों का कर्म।
क्षान्त–(सं० वि०) क्षमाशील, सहिष्णु।
क्षान्ति–(सं० स्त्री०) तितिक्षा, सहनशीलता, क्षमा। **क्षान्तिमान**–(सं० पुं०) सहनशील पुरुष।

क्षाम–(सं० वि०) कृश, क्षीण।
क्षाम्य–(सं० वि०) क्षमा करने योग्य।
क्षार–(सं० पुं०) लवणरस।
क्षारित–(सं० वि०) दूषित, दुर्नाम।
क्षालन–(सं० पुं०) शुद्ध करने या धोने का कार्य।
क्षिति–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, रहने का ठौर।
क्षितिकम्प–(सं०पुं०) भूकम्प, भुइँडोल।
क्षितिज–(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर पृथ्वी और आकाश मिले हुए दीख पड़ते हैं।
क्षितिदेव–(सं० पुं०) भूदेव, ब्राह्मण।
क्षितिधर–(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़।
क्षितिरुह–(सं० पुं०) वृक्ष।
क्षितीश–(सं० पुं०) भूमिपति, विष्णु।
क्षिपक–(सं० वि०) फेंकनेवाला, क्षेपक।
क्षिप्त–(सं० वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, अपमानित, उगला हुआ, पतित।
क्षिप्र–(सं० वि०) द्रुत, फेंकनेवाला। क्षिप्रकारी–शीघ्र काम करनेवाला। क्षिप्रहस्त–शीघ्र हाथ चलानेवाला।
क्षीण–(सं० वि०) निर्बल, क्षयप्राप्त, घटा हुआ, दुबला-पतला।
क्षीर–(सं० पुं०) दूध, जल, पानी। क्षीरकण्ठ–दूध पीनेवाला बच्चा।
क्षीरोद–(सं० पुं०) दुग्धसमुद्र।
क्षीरोदधि–(सं० पुं०) क्षीरसमुद्र।
क्षीव–(सं० वि०) उन्मत्त, मतवाला।
क्षुण्ण–(सं०वि०) दलित, चोट खाया हुआ, टुकड़ा किया हुआ।
क्षुत्–(सं० स्त्री०) क्षुधा, भूख।
क्षुत्क्षाम–(सं० वि०) क्षुधा से पीड़ित।
क्षुद्र–(सं० वि०) कृपण, अधम, तुच्छ, अल्प, क्रूर, दरिद्र, खोटा, छोटा।
क्षुधा–(सं० स्त्री०) बुभुक्षा, भूख।
क्षुधातुर–(सं० वि०) क्षुधार्त, भूखा।
क्षुप–(सं०पुं०) छोटा वृक्ष, पौधा, झाड़ी।
क्षुब्ध–(सं० वि०) अधीर, व्याकुल, भयभीत।
क्षुभित–(सं० वि०) देखो क्षुब्ध।
क्षुर–(सं० पुं०) नापित का छुरा, पशु का खुर।
क्षुरिका–(सं०स्त्री०) पालकी, छुरी।
क्षुरी–(सं० स्त्री०) छुरी, चाकू।
क्षेत्र–(सं० पुं०) खेत, शरीर, अन्तःकरण, भूतल, भूमि, पत्नी, तीर्थ, रेखाओं से घिरा हुआ स्थान। क्षेत्रकर–(सं० वि०) खत तैयार करनेवाला। क्षेत्रकर्म–(सं० वि०) खेत का काम। क्षेत्रगणित–(सं० पुं०) वह गणित जिसके द्वारा क्षेत्रों की नाप इत्यादि की जाती है, क्षेत्रमिति। क्षेत्रफल–(सं० पुं०) क्षेत्रांन्तर्गत स्थान का परिमाण। क्षेत्रभूमि–(सं० स्त्री०) खेत। क्षत्रवित्–(सं० वि०) मर्म को जाननेवाला।
क्षेत्राधिप–(सं० पुं०) खेत का स्वामी।
क्षेत्री–(सं० पुं०) स्वामी, पति, कृषक।
क्षेप–(सं० पुं०) निन्दा, बुराई, ठोकर, पर्व, विलम्ब। क्षेपक–(सं० वि०) फेंकनेवाला, मिश्रित, निन्दनीय; (पुं०) किसी ग्रन्थ में ऊपर से मिलाया हुआ अंश, गुच्छा। क्षेपण–(सं०पुं०) लंघन, अपवाद, विक्षेप, फेंकान, मारण, रस्सी का बना हुआ सिकहर, परित्याग, फन्दा।
क्षेपणी–(सं०स्त्री०) बन्दूक की गोली।
क्षेपणीय–(सं०वि०) फेंकने योग्य।
क्षेम–(सं० पुं०) कुशल-मंगल, आनन्द।
क्षेमकर–(सं० वि०) मंगलकारक, भलाई करनेवाला।

क्षैण्य–(सं० पुं०) क्षीणता।
क्षोणि–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
क्षोणिप–(सं० पुं०) पृथ्वीपति, राजा।
क्षोणी–(सं० स्त्री०) देखो क्षोणि।
क्षोदित–(सं० वि०) खोदा हुआ, चूर्णित।
क्षोभ–(सं० पुं०) चित्त की चंचलता।
क्षोभित–(सं० वि०) व्याकुल।
क्षोभी–(सं० वि०) चंचल, उद्विग्न, व्याकुल।
क्षौर–(सं० पुं०) मुण्डन कर्म। क्षौरिक–(सं० पुं०) नापित, नाऊ।
क्ष्मा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती।

ख

ख- व्यञ्जन वर्ण का दूसरा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; सूर्य, आकाश, शून्य, बिन्दु, सुख, कर्म, कुवाँ, गड्ढा, स्वर्ग।
खंक-खंख–(हिं० वि०) खाली, पोला।
खंग–(हिं० पुं०) तलवार, खड्ग।
खंगड़–(हिं० वि०) झगड़ालू, गँवार; (पुं०) कूड़ा-करकट।
खँगना–(हिं० क्रि०) अड़ना, कम होना।
खँगालना-(हिं० क्रि०) केवल जल डालकर किसी पात्र को धोना, खाली करना।
खँगी–(हिं० स्त्री०) त्रुटि, कमी, घटी।
खँचना–(हिं० क्रि०) चिह्न पड़ना, खिच जाना, बनना।
खंजरी–(हिं० स्त्री०) डफली की तरह का एक छोटा बाजा।
खंडना–(हिं० क्रि०) तोड़ना, काटना।
खँडरा–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का बड़ा टुकड़ा।
खंडसार–(हिं० स्त्री०) शक्कर बनाने का स्थान।
खंडहर–(हिं० पुं०) टूटा-फूटा घर।
खंडौरा–(हिं० पुं०) शक्कर का बना हुआ लड्डू।
खंतरा–(हिं० पुं०) छेद, दरार, कोना।
खंदा–(हिं० पुं०) देखो खंदक।
खंभ–(हिं० पुं०) स्तम्भ, खंभा, सहारा।
खंभा–(हिं० पुं०) स्तम्भ, खड़े बल आधार के लिये लगाया हुआ पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा।
खंभार–(हिं० पुं०) चिन्ता, व्याकुलता।
खंभिया–(हिं० स्त्री०) छोटा पतला खंभा।
खई–(हिं० स्त्री०) क्षय, नाश।
खकक्षा–(सं० स्त्री०) आकाशमण्डल की परिधि।
खक्खा–(हिं० पुं०) अट्टहास।
खखरा–(हिं० वि०) छिद्रमय, सूखा।
खखरिया–(हिं० स्त्री०) बेसन या मैदे की पतली पूरी।
खखार–(हिं० पुं०) गाढ़ा कफ या थूक जो खखारने से मुख के बाहर निकलता है।
खखारना–(हिं० क्रि०) वेग से थूकना, या खाँसना।
खखोरना–(हिं० क्रि०) खुरचना, भली भाँति ढूंढ़ना।
खग–(सं० पुं०) सूर्य, ग्रह, चन्द्रमा, देवता, बाण, पक्षी, वायु; (वि०) आकाश में चलनेवाला।
खगङ्गा–(सं० स्त्री०) आकाशगङ्गा, मन्दाकिनी।
खगना–(हिं० क्रि०) धँसना, चुभना।
खगोल–(सं० पुं०) आकाशमण्डल, खगोल विद्या।
खग्ग–(हिं० पुं०) खड्ग, तलवार।
खगोलविद्या–(सं० स्त्री०) गणित ज्योतिष।
खग्रास–(सं० पुं०) सूर्य या चन्द्र का सम्पूर्ण ग्रहण।

खचन–(हिं० पुं०) अंकित करने, जोड़ने या बाँधने की क्रिया। **खचना**–(हिं० क्रि०) जड़ना, अंकित होना।

खचर–(सं०पुं०) मेघ, वायु, सूर्य, राक्षस, ग्रह, नक्षत्र, बाण, पक्षी; (वि०) आकाश में चलनेवाला।

खचरा–(हिं० वि०) दुष्ट, वर्णसंकर, दोगला। **खचाखच**–(हिं०क्रि० वि०) ठसाठस, बिलकुल भरा हुआ, वेग के साथ। **खचाना**–(हिं०क्रि०) खींचना, बनाना, लिखना।

खचारी–(सं० वि०) आकाशगामी।

खचावट–(हिं०स्त्री०) खींचने की क्रिया।

खचित–(सं०वि०) खींचा हुआ, चित्रित।

खचिया–(हिं० स्त्री०) छोटी टोकरी, दौरी।

खच्चर–(हिं० पुं०) गदहे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु।

खजल–(सं० पुं०) तुषार, पाला।

खजुरा–(हिं० पुं०) स्त्रियों की चोटी में बाँधने की डोरी।

खजुलाना–(हिं० क्रि०) खुजलाना।

खजुली–(हिं० स्त्री०) खाज, खुजली।

खजूर–(हिं० पुं०) ताड़ की जाति का एक वृक्ष जिसके फल छोहारे के आकार के होते हैं, एक प्रकार की मिठाई।

खज्योति–(सं० पुं०) खद्योत, जुगुनू।

खञ्ज–(सं०पुं०) लँगड़ा; (वि०) खंडित, टूटा हुआ।

खञ्जन–(सं० पुं०) खंजन पक्षी, ख़िड़रिच।

खट–(हिं० पुं०) दो पदार्थों के टकराने का शब्द; (हिं० वि०) अम्ल, खट्टा।

खटक–(हिं० स्त्री०) खटके का शब्द।

खटकना–(हिं० क्रि०) खटखट शब्द होना। **खटका**–(हिं० पुं०) आशंका, चिन्ता, सिटकनी, कोई पेंच जिसके दबाने से 'खट' शब्द होता है।

खटकीड़ा–(हिं० स्त्री०) खटमल।

खटखट–(हिं० स्त्री०) ठोंकने पीटने से उत्पन्न शब्द, झंझट, उलझन, बखेड़ा, झगड़ा। **खटखटाना**–(हिं० क्रि०) खटखट करना, खड़खड़ाना, चेताना।

खटना–(हिं० क्रि०) धन व्यय करना।

खटपट–(हिं० स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा, वादा-विवाद। **खटपटिया**–(हिं०वि०) झगड़ालू, लड़ाका।

खटपदी–(हिं० पुं०) देखो षट्पद।

खटपाटी–(हिं०स्त्री०) खटिया की पाटी।

खटबुना–(हिं० वि०) चारपाई बीननेवाला।

खटमल–(हिं० पुं०) एक चिपटा कीड़ा जो खाट इत्यादि में उत्पन्न हो जाता है।

खटमिट्ठा–(हिं०वि०) मधुराम्ल, खटाई और मिठाई दोनों का स्वाद रखनेवाला।

खटमुख–(हिं० पुं०) देखो षट्मुख।

खटबोग–(हिं० पुं०) झगड़ा, झंझट।

खटाई–(हिं०स्त्री०) अम्लता, खट्टापन।

खटाका–(हिं० पुं०) वेग का शब्द; (क्रि० वि०) खटके से।

खटाखट–(हिं० स्त्री०) ठोंकने-पीटने का निरन्तर शब्द; (हिं० क्रि०) खटखट करके, झटपट।

खटाना–(हिं० क्रि०) खटाई आना, निभना, ठहरना, निर्वाह होना।

खटापट, खटापटी–(हिं०स्त्री०) खटपट।

खटास–(हिं० स्त्री०) खटाई, खट्टापन।

खटिक–(हिं० पुं०) एक छोटी हिन्दू जाति जो प्रायः फल और तरकारी बेचते हैं; (स्त्री०) खटकिन।

खटिका–(सं० स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खटिया–(हिं० स्त्री०) चारपाई, छोटा खाट, खटोला।
खटोलना, खटोला–(हिं० पुं०) छोटी चारपाई या खटिया।
खट्टा–(हिं०वि०) अम्ल, जिसमें खटाई हो।
खट्वा–(सं०स्त्री०) पलंग, चारपाई, खटोला
खड़–(सं० पुं०) तृण, खर, कतवार।
खड़ंजा–(हिं० पुं०) खड़ी ईंटों की जोड़ाई जो भूमि पर की जाती है।
खड़क–(हिं०स्त्री०) खटक, धीमा शब्द; (हिं० पुं०) देखो खड्ग।
खड़का–(हिं० पुं०) देखो खटका।
खड़काना–(हिं०क्रि०) खटकाना, लड़ाना।
खड़किका–(सं० स्त्री०) खिड़की।
खड़खड़िया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की पालकी, पीनस।
खड़गी–(हिं०वि०) तलवार लिये हुए।
खड़बड़–(हिं०स्त्री०) खटपट, उत्तेजना।
खड़बड़ाना–(हिं० क्रि०) व्याकुल होना, उलट-पुलट होना, खटकाना।
खड़बिड़ा–(हिं० वि०) ऊँचा नीचा, जो समतल न हो।
खड़मंडल–(हिं० पुं०) व्यतिक्रम, गड़बड़ी।
खड़ा–(हिं० वि०) सीधा उठा हुआ, टिका हुआ, तैयार रक्खा हुआ, उपस्थित, समूचा, अचल, जो टूटा न हो, उद्यत।
खड़ाऊँ–(हिं० वि०) पादुका।
खड़ाका–(हिं० पुं०) खटका।
खड़िका–(सं० स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खड़िया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की श्वेत मिट्टी, खरिया।
खड़ी–(हिं०स्त्री०) खड़िया, खरी मिट्टी।
खड़ीबोली–(हिं० स्त्री०) पश्चिमी हिन्दी जो दिल्ली के आसपास बोली जाती है, जिस भाषा में आधुनिक गद्य लिखा जाता है।
खड्ग–(सं० पुं०) एक प्रकार की तलवार।
खड्गपत्र–(सं० पुं०) तलवार की धार।
खड्गपाणि–(सं०वि०) हाथ में तलवार लिये हुए।
खड्ड–(हिं० पुं०) खात, गड्ढा।
खड्ढा–(हिं० पुं०) खात, गड्ढा; शरीर में अधिक रगड़ से बना हुआ चिह्न।
खण्ड–(सं० पुं०) खाँड़, अंश, टुकड़ा, शर्करा; (वि०) टुकड़ा किया हुआ।
खण्डन–(सं० पुं०) काटछाँट, किसी सिद्धान्त को अप्रमाणित करने का काम, छेदन, चीर-फाड़ करना।
खण्डित–(सं० वि०) छिन्न, कटा हुआ।
खतखोट–(हिं०स्त्री०) घाव के ऊपर की पपड़ी।
खतरानी–(हिं० स्त्री०) खत्री जाति की स्त्री।
खतरेटा–(हिं० पुं०) खत्री जाति का युवा पुरुष।
खति–(हिं० स्त्री०) देखो क्षति।
खतियाना–(हिं०क्रि०) प्रतिदिन के आय-व्यय या क्रय-विक्रय के खाते को अलग अलग लिखना। खतियौनी–(हिं० स्त्री०) खाता, वह बही जिसमें धन-संख्या खतियाकर लिखी गई हो।
खत्ता–(हिं० पुं०) गर्त, गड्ढा।
खत्री–(हिं० पुं०) भारत की एक जाति, ये लोग अपने को क्षत्रिय वर्ण बतलाते हैं।
खदन–(सं० पुं०) भोजन, खाना।
खदबदाना–(हिं० क्रि०) उबलना, चुरना।
खदरा–(हिं० पुं०) गड्ढा; (वि०) व्यर्थ का।
खदान–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु को

खोदकर निकालने के लिये बना हुआ गड्ढा ।
खदिर–(सं० पुं०) खैर का वृक्ष, कत्था ।
खदुहा–(हिं० पुं०) खोटा मनुष्य ।
खदेरना–(हिं० क्रि०) भगाना, हटाना ।
खद्दड़, खद्दर–(हिं० पुं०) हाथ के कते हुए सूत का बिना हुआ कपड़ा, खादी ।
खद्योत–(सं०पुं०) जुगनू नामक कीड़ा, सूर्य ।
खन–(हिं० पुं०) क्षण, खण्ड (घर का), रुपये का शब्द ।
खनक–(हिं० पुं०) रुपये का शब्द ।
खनकना–(हिं० क्रि०) खनखन करना ।
खनकाना–(हिं० क्रि०) खनखन करना, बजाना ।
खनखना–(हिं० वि०) खनखन शब्द करनेवाला ।
खनखनाना–(हिं०क्रि०) खनखन होना, बजना ।
खनना–(हिं० क्रि०) खोदना, गोड़ना ।
खनि–(सं० स्त्री०) खान । खनिज–(सं० वि०) खान से उत्पन्न ।
खनित्र–(सं० पुं०) खन्ता, गैंता ।
खनिहाना–(हिं० क्रि०) खाली करना ।
खन्न–(हिं० पुं०) खनखन का शब्द ।
खपची–(हिं० स्त्री०) बांस की पतली तीली ।
खपटा–(हिं० वि०) वृद्ध, बुड्ढा, कुरूप ।
खपड़ा–(हिं० पुं०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मकान छाने के काम में आता है, खप्पर, ठिकड़ा ।
खपड़ी–(हिं० स्त्री०) खोपड़ी ।
खपड़ैल–(हिं० पुं०) खपड़े की छत या छाजन ।
खपत, खपती–(हिं० स्त्री०) समाई, विक्रय ।
खपना–(हिं० क्रि०) लगना, व्यय होना ।
खपरा–(हिं० पुं०) देखो खपड़ा ।
खपरैल–(हिं० पुं०) खपड़े से छाई हुई छत ।
खपाची–(हिं० स्त्री०) देखो खपची ।
खपाना–(हिं० क्रि०) व्यय करना, किसी काम में लाना, निर्वाह करना ।
खपुआ–(हिं० वि०) भीरु, डरपोक ।
खपुर–(सं० पुं०) गन्धर्व नगर ।
खपुष्प–(सं० पुं०) आकाश कुसुम, असम्भव बात ।
खप्पर–(हिं० पुं०) भीख लेने का पात्र ।
खब्भड़–(हिं० वि०) रूखा, जीर्ण ।
खभरना–(हिं० क्रि०) क्रम बिगाड़ना ।
खमा–(हिं० स्त्री०) देखो क्षमा ।
खय–(हिं० पुं०) देखो क्षय ।
खर–(सं० पुं०) गर्दभ, गदहा, खच्चर; (वि०) कठिन, कड़ा, तीक्ष्ण ।
खरकना–(हिं०क्रि०) खुरखुराना, दुखना ।
खरका–(हिं० पुं०) सींक या लकड़ी का पतला छोटा टुकड़ा ।
खरखरा–(हिं० वि०) खुरखुरा ।
खरग–(हिं० पुं०) देखो खड्ग ।
खरच–(हिं० पुं०) व्यय ।
खरतल–(हिं० वि०) उग्र, प्रचण्ड ।
खरब–(हिं० पुं०) सौ अरब की संख्या ।
खरबूजा–(हिं० पुं०) ककड़ी की जाति की एक लता जिसमें गोल मीठे फल गरमी के दिनों में फलते हैं, इसके फल का नाम ।
खरभर–(हिं० पुं०) खड़खड़ाहट ।
खरमिटाव–(हिं०पुं०) प्रातराश, कलेवा ।
खरल–(हिं० पुं०) औषधि इत्यादि घोंटने की पत्थर या लोहे की कुंड़ी ।
खरशब्द–(सं० पुं०) कर्कश शब्द ।
खरहरा–(हिं० पुं०) एक दांतेदार कंघी जिससे घोड़े के रोवें स्वच्छ किये जाते हैं ।
खरहा–(हिं० पुं०) शशक ।

खरा–(हि० वि०) तीखा, विशुद्ध, कुरकुरा, बिना मिलावट का, चिमड़ा, निश्छल।
खरांशु–(सं० पुं०) सूर्य, सूरज।
खराई–(हि० स्त्री०) खरापन, प्रातःकाल देर तक कुछ भोजन न करने से अस्वस्थ होना (पित्त बिगड़ना)।
खराद–(हि० पुं०) एक गोलाई में घूमनेवाला यन्त्र जिस पर चढ़ाकर काठ या धातु की वस्तु सुडौल और चिकनी बनाई जाती है, खरादने का काम, गढ़न, बनावट।
खरादी–(हि० वि०) खरादनेवाला।
खरापन–(हि० पुं०) सचाई, सत्यता।
खरायँध–(हि० स्त्री०) मूत्र या क्षार के समान दुर्गन्ध।
खरिया–(हि० स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खरियाना–(हि० स्त्री०) झोली या थैली में रखना, अपने अधिकार में ले लेना।
खरिहान–(हि० पुं०) कटे हुए अनाज का ढेर।
खरी–(हि० स्त्री०) खली, खड़िया मिट्टी; (वि०) खूब सिकी हुई, विशुद्ध, स्पष्ट।
खरोंच–(हि० स्त्री०) छिल जाने या रगड़ का चिह्न।
खरोंचना–(हि० क्रि०) छीलना, खुरचना।
खरोष्ट्र, खरोष्ठी–(सं० स्त्री०) फारसी की तरह लिखी जानेवाली एक लिपि जो प्राचीन काल में पश्चिमोत्तर प्रदेश में चलती थी।
खर्च–(हि० पुं०) व्यय, खपत, किसी काम में होनेवाला व्यय।
खजूर–(सं० पुं०) खजूर का वृक्ष या फल।
खपर–(सं० पुं०) भिक्षा माँगने का खप्पड़, मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ भाग।
खर्व–(सं० पुं०) सौ अरब की संख्या; (वि०) छोटा, बौना।
खर्वित–(सं० वि०) ह्रस्व, कटा हुआ।
खर्राच–(हि० पुं०) अमितव्ययी।
खर्रा–(हि० पुं०) लम्बा चिट्ठा।
खर्राटा–(हि० पुं०) निद्रा की अवस्था में नाक से निकलनेवाला शब्द।
खलखलाना–(हि० क्रि०) उबलना, खौलना।
खलड़ी–(हि० स्त्री०) त्वचा, छाल, चमड़ा।
खलता–(सं० स्त्री०) दुष्टता, दुर्जनता।
खलना–(हि० क्रि०) चुभना, बुरा लगना।
खलबल–(हि० पुं०) हलचल, गड़बड़ी, कोलाहल। खलबलाना–(हि० क्रि०) उबलना, खौलना।
खलबली–(हि० स्त्री०) व्यग्रता, हलचल, उबाल।
खलाना–(हि० क्रि०) खाली करना, खोदना।
खलार–(हि० वि०) गहरा, नीचा, खाली।
खलासी–(हि० पुं०) नाव या पोत पर काम करनेवाला मनुष्य।
खलित–(सं० वि०) चंचल, चलायमान।
खलियान–(हि० पुं०) अन्न काट कर रखने का स्थान, राशि, ढेर।
खलियाना–(हि० क्रि०) खाल खींचना।
खली–(हि० स्त्री०) तेल निकालकर बची हुई सीठी।
खलीता–(हि० पुं०) खरीता, जेब।
खलु–(सं० अव्य०) निश्चय करके, अब।
खल्लड़–(हि० पुं०) वह पुरुष जिसकी खाल लटक गई हो।
खल्व–(सं० पुं०) गंजापन।
खल्वाट–(हि० पुं०) गंजा।
खवाई–(हि० स्त्री०) खाने-पीने का काम।
खवाना–(हि० क्रि०) भोजन कराना।

खवैया–(हिं० पुं०) भोजन करनेवाला।
खसकंत–(हिं०स्त्री०) भाग जाने का कार्य।
खसकना–(हिं० क्रि०) सरकना, हटना।
खसखसा–(हिं० वि०) भुरभुरा।
खसखास–(हिं० पुं०) देखो खसखस।
खसरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की गीली खुजली।
खसी–(हिं० पुं०) बकरा।
खसोट, खसोटी–(हिं० स्त्री०) झटके से तोड़ना। **खसोटना**–(हिं० क्रि०) नोचना, उखाड़ना।
खस्सी–(हिं०पुं०) बकरा; (वि०) बधिया।
खह–(सं० पुं०) गणित में वह संख्या जिसका हर शून्य हो यथा $\frac{4}{0}$।
खाँई–(हिं० स्त्री०) किसी स्थान के चारों ओर खोदा हुआ गड्ढा।
खाँखर–(हिं० वि०) छिद्रयुक्त, पोला।
खाँग–(हिं० स्त्री०) तीतर आदि के पैर के काँटे के समान नख।
खाँगड़, खाँगड़ा–(हिं०वि०) खाँग रखनेवाला।
खाँगना–(हिं० क्रि०) लँगड़ाना, घटना।
खाँगी–(हिं०स्त्री०) त्रुटि, न्यूनता, कमी, घटी।
खाँच–(हिं० स्त्री०) गठन, बनावट।
खाँचा–(हिं० पुं०) झावा, बड़ा टोकरा।
खाँचना–(हिं० क्रि०) अंकित करना, खाँचना।
खाँड़–(हिं० स्त्री०) कच्ची शक्कर।
खाँड़ा–(हिं० पुं०) खड्ग, तलवार, छुरा।
खाँड़ना–(हिं० क्रि०) कूँचना, तोड़ना, चबाना।
खाँपना–(हिं०क्रि०) खोंसना, अटकाना।
खाँभना–(हिं० क्रि०) लिफाफे में बन्द करना।
खाँवाँ–(हिं० पुं०) खेत की चौड़ी मेड़।
खाँसना–(हिं० क्रि०) कफ निकालना, खखारना, खोंखना।
खाँसी–(हिं० स्त्री०) खाँसने का रोग या शब्द, कास रोग।
खाई–(हिं० स्त्री०) किसी स्थान की रक्षा के लिये इसके चारों ओर खोदा हुआ गड्ढा।
खाऊ–(हिं० वि०) मरभुख, पेटू।
खागना–(हिं० क्रि०) खाँगना, चुभना, गड़ना।
खाज–(हिं०स्त्री०) खुजली।
खाजा–(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई।
खाट–(सं० पुं०) चारपाई, खटिया।
खाड़ी–(हिं० स्त्री०) तीन ओर भूमि से घिरा हुआ समुद्र का भाग।
खात–(सं० पुं०) खोदाई, तालाब, कुँवा, गर्त, गड्ढा; (वि०) खोदा हुआ।
खाता–(हिं० पुं०) हिसाब-किताब की बही, अन्न रखने का गड्ढा, मद, विभाग।
खाद–(हिं० स्त्री०) खेतों में उपज बढ़ाने के लिये डाली हुई वस्तु, पाँस।
खादक–(सं० वि०) खानेवाला।
खादित–(सं० वि०) भक्षित, खाया हुआ।
खादी–(सं० वि०) भक्षक, खानेवाला, शत्रुओं की हिंसा करनेवाला; (हिं० स्त्री०) एक प्रकार का देशी मोटा वस्त्र।
खादुक–(सं० वि०) हिंसालु।
खाद्य–(सं०वि०) भक्षणीय, खाया जानेवाला; (पुं०) आहार, खाने की वस्तु।
खान–(हिं० स्त्री०) आकर, जिस स्थान को खोदकर पत्थर, धातु इत्यादि निकाले जाते हैं; (पुं०) भोजन, खाना।
खानपान–(सं० पुं०) खाना-पीना, खाने-पीने की रीति।

खाना–(हिं० क्रि०) भोजन करना, काटना, कुतरना, चबाना, बिगाड़ना, उड़ाना, व्यय करना, घूस लेना।
खानि–(हिं०स्त्री०) खान, ओर, प्रकार।
खापट–(हिं० स्त्री०) वह भूमि जिसमें रेह का भाग अधिक रहता है।
खाभा–(हिं०पुं०) चौड़े मुंह का मिट्टी का पात्र।
खामना–(हिं०क्रि०) लिफाफे में डालकर बन्द करना, गीली मिट्टी या आटे से किसी पात्र का मुंह बन्द करना।
खार–(हिं० पुं०) क्षार, नमक, सज्जी।
खारा–(हिं० पुं०) नमकीन, कड़ुवा, स्वाद में बुरा लगनेवाला।
खारी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का नोन; (वि०) खारा, नमकीन।
खारुव–(हिं० पुं०) एक प्रकार का लाल रंग जो मोटे कपड़ों के रँगने में प्रयुक्त होता है, इस रंग से रँगा हुआ मोटा कपड़ा।
खाल–(हिं० स्त्री०) त्वचा, चमड़ा, भाथी की धौंकनी, नीची भूमि, खाड़ी, गहराई, नाला।
खाला–(हिं० वि०) निम्न, नीचा।
खाव–(हिं० स्त्री०) शून्य स्थान, पोत में माल रखने की कोठरी।
खिचना–(हिं० स्त्री०) घसीटना, निकलना, तनना, चढ़ना, रुकना, अर्क निकलना, प्रवृत्त होना।
खिचड़वार–(हिं० पुं०) खिचड़ी दान करने का दिन, मकर-संक्रांति।
खिचड़ी–(हिं० स्त्री०) दाल और चावल मिलाकर पकाया हुआ भोजन।
खिच्चड़–(हिं० पुं०) देखो खिचड़ी।
खिजलाना–(हिं० क्रि०) चिढ़ाना, छेड़ना।
खिझना–(हिं० क्रि०) खीझना, चिढ़ना; (वि०) चिढ़नेवाला।
खिझाना–(हिं०क्रि०) चिढ़ाना, तंग करना।
खिड़कना–(हिं० क्रि०) खिसकना, सरकना।
खिड़की–(हिं० स्त्री०) छोटा गुप्त द्वार, झरोखा।
खिन्न–(सं० वि०) उदासीन, खेदयुक्त, अप्रसन्न, चिन्तित, असहाय।
खिपना–(हिं० क्रि०) लीन होना, खपना।
खियाना–(हिं० क्रि०) रगड़ खाना, मिटना
खिरनी–(हिं० स्त्री०) क्षीरिणी वृक्ष।
खिलखिलाना–(हिं०क्रि०) सशब्द हँसना
खिलना–(हिं० क्रि०) फूलना, विकसित होना, शोभित होना।
खिलवाड़–(हिं०पुं०) हँसी-खेल, ठट्ठा।
खिलवाना–(हिं०क्रि०) भोजन कराना।
खिलाई–(हिं०स्त्री०) भोजन की क्रिया।
खिलाड़ी–(हिं० पुं०) खेल करनेवाला।
खिलाना–(हिं० क्रि०) भोजन कराना, विकसित करना, खेल में लगाना।
खिलौना–(हिं० पुं०) क्रीड़ा-द्रव्य, लड़कों के खेलने का पदार्थ।
खिल्ली–(हिं० स्त्री०) हँसी, ठिठोली, पान का बीड़ा।
खिसकाना–(हिं०क्रि०) खसकना, हट जाना
खिसियाना–(हिं०क्रि०) लजाना; (वि०) लज्जित होना।
खिसी–(हिं० स्त्री०) लज्जा, ढिठाई।
खिसौहा–(हिं०वि०) लज्जित के सदृश।
खींच–(हिं० स्त्री०) आकर्षण, खिंचाव।
खींचतान–(हिं० स्त्री०) उलट-पलट।
खींचना–(हिं० क्रि०) घसीटना, निकालना, खोलना।
खीज–(हिं० स्त्री०) चिढ़, झुंझलाहट।
खीजना–(हिं० क्रि०) चिढ़ना, झुंझलाना।
खीझ–(हिं० स्त्री०) देखो खीज।

खीझना–(हिं० क्रि०) चिढ़ना, खिजलाना।
खीन–(हिं० वि०) देखो क्षीण।
खीर–(हिं० स्त्री०) एक खाद्य पदार्थ जो दूध में चावल पकाकर तथा चीनी डालकर बनता है।
खीरा–(हिं० पुं०) ककड़ी की जाति का एक फल।
खील–(सं० पुं०) कील, काँटा; (हिं० स्त्री०) लाई, लावा, एक प्रकार का गहना जो कान या नाक में पहिना जाता है।
खीलना–(हिं०क्रि०) खील लगाना, गाँठना
खीला–(हिं०पुं०) बड़ा काँटा या कीला।
खीली–(हिं० स्त्री०) पान का बीड़ा, गिलौरी।
खीवन–(हिं० स्त्री०) उन्मत्तता, पागलपन
खीवर–(हिं० पुं०) वीर पुरुष।
खीस–(हिं०वि०) नष्ट, उजाड़; (स्त्री०) चिढ़, क्रोध, बिगाड़, लज्जा।
खुक्ख–(हिं० वि०) खाली, छूछा।
खुखड़ी–(हिं०स्त्री०) कुकड़ी, नैपाली कटार
खुचुर–(हिं०स्त्री०) व्यर्थ का दोष लगाना।
खुजलाना–(हिं० क्रि०) रगड़ना, नख से घिसना, खजुली उठना।
खुटक–(हिं० स्त्री०) खटका, चिन्ता, आशंका।
खुटकना–(हिं० क्रि०) खटका होना।
खुटका–(हिं० पुं०) देखो खटका।
खुरचाल–(हिं० स्त्री०) बुरी चाल।
खुरचाली–(हिं० वि०) दुष्ट, उपद्रवी।
खुटना–(हिं० क्रि०) खुलना, अलग रहना, साथ छोड़ना।
खुटपन, खुटपना–(हिं० पुं०) खोटापन।
खुटाना–(हिं० क्रि०) समाप्त होना।
खुट्टी–(हिं०स्त्री०) रेवड़ी नामक मिठाई।
खुट्ठी–(हिं० स्त्री०) घाव पर जमी हुई पपड़ी।
खुड़क–(हिं० स्त्री०) खटक, खटका।
खुत्था–(हिं० पुं०) ठंठ, बोटा, पेड़ को काट डालने पर इसका भूमि के ऊपर का भाग। खुत्थी–(हिं०स्त्री०) ज्वार अरहर इत्यादि के पौधे का वह अंश जो पौधा कट जाने पर खेत में रह जाता है, खूँटी, रुपया रखने की थैली, सम्पत्ति, धन।
खुदना–(हिं० क्रि०) खोदा जाना।
खुदरा–(हिं० पुं०) क्षुद्र वस्तु, फुटकर पदार्थ।
खुदवाना–(हिं० क्रि०) खोदने का काम दूसरे से कराना। खुदवाई–(हिं०स्त्री०) खोदवाने का काम, खोदवाने का वेतन।
खुदाई–(हिं०स्त्री०) खोदने का काम या वेतन।
खुद्दी–(हिं०स्त्री०) अन्न के छोटे टुकड़े।
खुनखुना–(हिं० पुं०) बालकों का बजनेवाला खिलौना, झुनझुना, घुनघुना।
खुनस–(हिं०स्त्री०) क्रोध, बिगाड़, अनबन।
खुनसाना–(हिं० क्रि०) क्रुद्ध होना।
खुभना–(हिं० क्रि०) चुभना, धँसना।
खुर–(सं० पुं०) सींगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप।
खुरक–(हिं०स्त्री०) खटका, सोच-विचार।
खुरखुरा–(हिं० वि०) ऊँचा-नीचा।
खुराना–(हिं० क्रि०) खुरखुर करना।
खुरचन–(हिं० पुं०) खुरचकर निकाली हुई वस्तु। खुरचना–(हिं० क्रि०) किसी सूखी वस्तु को छुरी इत्यादि से अलगाना। खुरचनी–(हिं० स्त्री०) खुरचने का अस्त्र।
खुरचाल–(हिं० स्त्री०) बुरा आचरण।
खुरचाली–(हिं० वि०) उपद्रवी, बखेड़िया।
खुरजी–(हिं०स्त्री०) घोड़े, बैल आदि की पीठ पर सामग्री लादने का थैला।

खुरपा–(हिं० पुं०) घास छीलने की बड़ी खुरपी ।
खुरिया–(हिं० स्त्री०) कटोरी, छोटा प्याला ।
खुलना–(हिं० क्रि०) उद्घाटित होना, उधड़ना, फटना, चिरना, कटना, निकलना, अच्छा लगना, भेद कहना, कार्य आरम्भ होना ।
खुला–(हिं० वि०) अवरोध-हीन, स्पष्ट, प्रकट ।
खुल्लमखुल्ला–(हिं० क्रि० वि०) प्रकाश्य रूप से, सबके सामने ।
खूंट–(हिं० पुं०) प्रान्तभाग, कान की मैल; (स्त्री०) रोक-टोक ।
खूंटना–(हिं० क्रि०) टोकना, छेड़ना ।
खूंटा–(हिं० पुं०) मेख, पशु बाँधने के लिये भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी या बाँस का टुकड़ा । खूंटी–(हिं० स्त्री०) छोटा खूंटा, मेख, डंठल, गुल्ली ।
खूंदना–(हिं० क्रि०) पैर उठा-उठाकर उसी जगह पटकना ।
खूंझा–(हिं०पुं०) फल के भीतर का रेशेदार भाग ।
खूद, खूदड़, खूदर–(हिं०पुं०) मैल, तलछट
खृष्टान–(हिं० वि०) क्रिस्तान, ईसाई ।
खृष्टीय–(हिं० वि०) ईसाई संबंधी ।
खेचर–(सं० पुं०) सूर्य, पक्षी, वायु, देवता, बादल, राक्षस; (वि०) आकाशगामी ।
खेड़ा–(हिं०स्त्री०) छोटा गाँव ।
खेड़ी–(हिं०स्त्री०) मांस का टुकड़ा जो जरायुज शिशुओं की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है ।
खेत–(हिं० स्त्री०) क्षेत्र, जोतने-बोने की भूमि, स्थान, कृषिफल, तलवार का फल ।
खेतिहर–(हिं० पुं०) कृषक, किसान ।
खेती–(हिं० स्त्री०) कृषि, किसानी ।
खेतीबारी–(हिं० स्त्री०) कृषिकार्य, किसानी ।
खेद–(सं० पुं०) अप्रसन्नता, शोक ।
खेदना–(हिं० क्रि०) खदेरना, भगाना ।
खेना–(हिं० क्रि०) नाव चलाने के लिये डाँड़े को पानी में चलाना, निर्वाह करना ।
खेप–(हिं० स्त्री०) उतनी वस्तु जो एक बार ले जाई जाती है, दौड़, पहुँच ।
खेपना–(हिं० क्रि०) काटना, बिताना ।
खेल–(हिं० पुं०) क्रीड़ा, उछल-कूद । खिलवाड़, स्वाँग, अभिनय ।
खेलवाड़–(हिं० पुं०) हँसी, खेल-कूद । खेलवाड़ी–(हिं०वि०) बहुत खेल-कूद करनेवाला । खेलाई–(हिं० स्त्री०) क्रीड़ा, खेल-कूद । खेलाड़ी–(हिं०वि०) खेलनेवाला, जुआरी । खेलाना–(हिं० क्रि०) खेल में लगाना ।
खेवट–(हिं० पुं०) पटवारी का एक कागज जिसमें हर एक पट्टीदार की भूमि का हिसाब लिखा रहता है ।
खेवा–(हिं० पुं०) नाव का किराया, भरी हुई नाव ।
खेवाई–(हिं० स्त्री०) नाव चलाने का काम ।
खेसारी–(हिं०स्त्री०) दुबिया मटर, लतरी ।
खैचना–(हिं० क्रि०) खींचना ।
खैर–(हिं० पुं०) खदिर वृक्ष ।
खैरा–(हिं० वि०) खैर के रंग का, कत्थई ।
खोंगा–(हिं० पुं०) अवरोध, रुकावट ।
खोंचा–(हिं० स्त्री०) खरोंच ।
खोंची–(हिं० पुं०) खुरचन, फटन ।
खोंट–(हिं० स्त्री०) खरोंच ।
खोंटना–(हिं० क्रि०) फुनगी तोड़ लेना ।

खोड़र–(हिं० पुं०) वृक्ष के भीतर का पोला भाग ।
खोंड़ा–(हिं०वि०) जिसके आगे के दो-चार दाँत टूट गये हों ।
खोंता–(हिं०पुं०)नीड़,चिड़िया का घोंसला।
खोंप–(हिं० स्त्री०)पसूजन, सिलाई का लंबा टाँका, फटन ।
खोंपा–(हिं०पुं०)नारियल का आधा टुकड़ा।
खोंसना–(हिं० क्रि०)अटकाना, लगाना ।
खोआ–(हिं० पुं०) देखो खोया ।
खोई–(हिं० स्त्री०) रस निकाले हुए ऊख के छोटे छोटे टुकड़े, धान का लावा।
खोखर–(हिं० वि०) खोखला, पोला ।
खोखला–(हिं० वि०) पोला ।
खोखा–(हिं० पुं०) हुण्डी लिखा हुआ कागद, बालक ।
खोगीर–(हिं० स्त्री०) देखो खुगीर ।
खोज–(हिं० स्त्री०) अनुसन्धान, पता ।
खोजना–(हिं० क्रि०) पता लगाना ।
खोजी–(हिं०वि०)अनुसन्धान करनेवाला।
खोट–(हिं० स्त्री०) दूषण, बुराई ।
खोटा–(हिं० वि०) दूषित ।
खोटाई–(हिं०स्त्री०)दुष्टता, छल,कपट ।
खोटापन–(हिं० पुं०) ओछापन ।
खोड़रा–(हिं० पुं०) पुराने वृक्ष का खोखला भाग ।
खोदना–(हिं० क्रि०) गड्ढा करना, खनना, उसकाना, नकाशी करना, छेड़ना । खोदनी–(हिं० स्त्री०)खोदने का छोटा अस्त्र ।
खोदविनोद–(हिं० स्त्री०) छानबीन ।
खोनचा–(हिं० पुं०) थाल या परात जिसमें फेरीवाले मिठाई आदि रखकर बेचते हैं ।
खोना–(हिं०क्रि०)पासकी वस्तु गँवाना।
खोपड़ा–(हिं० पुं०) कपाल, सिर, नारियल की गरी । खोपड़ी–(हिं० स्त्री०)कपाल, सिर, मस्तक की हड्डी।
खोपा–(हिं० पुं०) छप्पर या घर का कोना, नारियल की गरी का गोला ।
खोभ–(हिं० पुं०) देखो क्षोभ ।
खोभार–(हिं० पुं०) कूड़ा-करकट फेंकने का गड्ढा ।
खोय–(हिं० स्त्री०) स्वभाव, टेव ।
खोया–(हिं० पुं०) खूब औटाया हुआ दूध जो पिण्ड-सा हो जाता है ।
खोर–(हिं० स्त्री०) सँकरी गली ।
खोरा–(हिं० पुं०) कटोरा, पानी पीने का पात्र ।
खोरिया–(हिं०स्त्री०)कटोरिया,प्याली।
खोल–(हिं० स्त्री०) आवरण, झूल, मोटे कपड़े की चादर ।
खोलना–(हिं० क्रि०)उघाड़ना, स्थापन करना, मुक्त करना, प्रकाशित करना, गूढ़ बात को प्रकट करना ।
खोली–(हिं० स्त्री०) आवरण ।
खोवा–(हिं० पुं०) देखो खोया ।
खोह–(हिं० स्त्री०) गुफा, कन्दरा ।
खौर–(हिं०स्त्री०) त्रिपुण्ड,चन्दन का टीका
खौरहा–(हिं०वि०) गंजा, जिसके सिर-के बाल उड़ गये हों ।
खौरा–(हिं०वि०)एक प्रकार की खुजली।
खौलना–(हिं०क्रि०) उबलना। खौलाना-(हिं०क्रि०) उबालना ।
खौहा–(हिं०वि०)पेटू, भुक्खड़,मरभुख ।
ख्यात–(सं० वि०) प्रसिद्ध। ख्याति–(सं० स्त्री०) प्रसिद्धि ।

ग

ग– कवर्ग का तीसरा व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है ।
ग–(सं०पं०)गीत, गणेश, गन्धर्व, गुरु;

(वि०) गानेवाला, जानेवाला।
गंगबरार–(हि०पुं०) गंगा या अन्य नदी की धारा या बाढ़ के हटने से निकली हुई भूमि।
गंजिया–(हि०.स्त्री०) घसियारे की घास भरने की जालीदार थैली।
गँजेड़ी–(हि० वि०) गाँजा पीनेवाला।
गँठकटा–(हि० पुं०) गिरहकट।
गँठबन्धन–(हि० पुं०) ग्रन्थिबन्धन, विवाह की एक रीति।
गँड़ासा–(हि०पुं०) चारा काटने का अस्त्र।
गँड़ेरी–(हि०स्त्री०) ऊख के छोटे-छोटे खंड।
गँदला–(हि० वि०) मलिन, अपवित्र।
गँधाना–(हि० क्रि०) दुर्गन्ध निकलना।
गँव–(हि० स्त्री०) अवसर, प्रयोजन।
गँवई–(हि० पुं०) छोटा गाँव।
गँवाना–(हि० क्रि०) खोना, विसारना।
गँवार–(हि० वि०) ग्रामीण, देहाती।
गँवारी–(हि० स्त्री०) गँवारपन, अज्ञानता, मूर्खता।
गँवारू–(हि०वि०) ग्रामीण, देहाती, बेढंगा।
गँस–(हि०स्त्री०) द्वेष, तीर की नोक।
गँसना–(हि० क्रि०) कसकर बाँधना।
गँसीला–(हि०वि०) नोकदार, चुभनेवाला।
गइया–(हि० स्त्री०) गौ, गाय।
गऊ–(हि० स्त्री०) गाय, गौ, गइया।
गकार–(सं०पुं०) 'ग' वर्ण, 'ग' अक्षर।
गगन–(सं० पुं०) आकाश, शून्य स्थान, अभ्रक धातु, मेघ। गगनगति–हवा में उड़नेवाला, देवता। गगनचर–आकाशगामी। गगनधूल–एक प्रकार का कुकुरमुत्ता, केवड़े के फूल की धूलि। गगनविहारी–आकाश में घूमनेवाला, पक्षी।
गगनाङ्गना–(सं० स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा।
गगनाम्बु–(सं० पुं०) बरसाती पानी।
गगनेचर–(सं० पुं०) देवता, सूर्यादि ग्रह।
गगरा–(हि० पुं०) कलश, कलसा, घड़ा।
गगरी–(हि०स्त्री०) कलसी, छोटा घड़ा।
गङ्गा–(सं० स्त्री०) भारतवर्ष की प्रसिद्ध नदी, भागीरथी, जाह्नवी, सुरनदी।
गङ्गाजमुनी–(हि० वि०) दोरंगा, मिला हुआ, सोने चाँदी अथवा पीतल ताँबे इन दो धातुओं का बना हुआ, काला तथा सफेद। गङ्गाजली–(स्त्री०) वह धातु की सुराही या पात्र जिसमें यात्री लोग गंगाजल भरकर ले जाते हैं।
गङ्गापुत्र–(हि०पुं०) घाटों पर दान लेनेवाले ब्राह्मण।
गङ्गाल–(हि०पुं०) पानी रखने का खुले मुँह का बड़ा पात्र। गङ्गासागर–(सं० पुं०) वह स्थान जहाँ गंगा समुद्र से मिलती है, यह तीर्थ माना जाता है।
गङ्गोदक–(सं०पुं०) गङ्गाजी का पानी।
गचना–(हि० वि०) किसी पात्र में कोई वस्तु कसकर भरना।
गचाका–(हि० पुं०) गिरने का शब्द।
गछना–(हि० वि०) चलना, चलाना।
गज–(सं० पुं०) हस्ति, हाथी।
गजकुम्भ–(हि० पुं०) हाथी के मस्तक पर का दोनों ओर का उभड़ा हुआ भाग। गजगमन–(सं० पुं०) हाथी की तरह मन्द गति। गजगामिनी–(सं० स्त्री०) हाथी के समान मन्द गति से चलनेवाली स्त्री। गजगाह–(हि० पुं०) हाथी की झल, पाखर। गजदान–(सं० पुं०) हाथी का मद। गजना–(हि० क्रि०) गरजना। गजपाल–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी तोप जो प्राचीन काल में हाथी से खींची जाती थी।
गजपुट–(सं० पुं०) एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा तथा एक हाथ गहरा

गड्ढा जिसमें कंडा जलाकर वैद्य लोग धातु का भस्म बनाते हैं। गजमणि–(सं० स्त्री०) गजमुक्ता, गजमोती। गजमुक्ता–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का मोती जो हाथी के मस्तक में पाया जाता है। गजमोती–(हिं० पुं०) देखो गजमुक्ता।

गजर–(हिं० पुं०) पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द, पारी। गजरदम–बड़े सबेरे, तड़के।

गजरवजर–(हिं०पुं०) अंड बंड, गोलमाल।

गजरा–(हिं० पुं०) फूलों की माला।

गजराज–(हिं० पुं०) बड़ा हाथी।

गजा–(हिं०पुं०) नगाड़ा बजाने का डंडा।

गज्जूह–(हिं० पुं०) हाथी का झुण्ड।

गञ्जन–(सं०पुं०) निन्दा, तिरस्कार।

गझिन–(हिं० वि०) सघन, घना।

गटकना–(हिं०क्रि०) खाना, निगलना।

गटपट–(हिं०स्त्री०) मेल, मिलावट, संयोग।

गटरमाला–(हिं० स्त्री०) बड़े बड़े दानों की माला।

गट्टा–(हिं० पुं०) कलाई, गाँठ, ग्रन्थि, एक प्रकार की मिठाई।

गट्ठर, गट्ठा–(हिं०पुं०) बड़ी गठरी, बोझा।

गठकटा–(हिं० पुं०) गाँठ काटकर रुपया चुरानेवाला।

गठन–(हिं० स्त्री०) बनावट।

गठना–(हिं० क्रि०) जुड़ना, सटना।

गठबन्धन–(हिं० पुं०) विवाह में दुलहा दुलहिन के वस्त्र के सिरे को मिलाकर बाँध देना।

गठरी–(हिं०स्त्री०) बड़ी पोटरी, बुगची।

गठवाना–(हिं०क्रि०) जुड़वाना, सिलवाना।

गठिया–(हिं० स्त्री०) बोरा जिसमें अन्न भरकर व्यापारी लोग बैल या घोड़े पर लादते हैं, पोटली, छोटी गठरी, वायुरोग जिसमें घुटने में सूजन और पीड़ा होती है।

गठियाना–(हिं० क्रि०) गाँठ बाँधना।

गठीला–(हिं० वि०) गाँठदार, सुडौल, गठा हुआ।

गठुरा–(हिं० पुं०) भूसे की गाँठ।

गठंत, गठौत–(हिं० स्त्री०) मित्रता, घनिष्ठता, मेलजोल।

गडन–(हिं० स्त्री०) गाड़ने का काम।

गड़बड़–(हिं० स्त्री०) बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द।

गड़गड़ा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का हुक्का।

गड़ना–(हिं०क्रि०) चुभना, धँसना, घुसना

गड़पना–(हिं०क्रि०) निगलना, खा जाना।

गड़प्पा–(हिं० पुं०) गड्ढा।

गड़बड़–(हिं० स्त्री०) ऊंचा, नीचा, आपत्ति, उपद्रव, दंगा; (पुं०) अव्यवस्था।

गड़बड़ाना–(हिं०क्रि०) भूल या भ्रम में पड़ना, भ्रम में डालना, क्रम भ्रष्ट होना।

गड़बड़िया–(हिं०वि०) उपद्रव करनेवाला

गड़बड़ी–(हिं० स्त्री०) अव्यवस्था, गोलमाल।

गड़रिया–(हिं० पुं०) एक जाति जो भेड़ पालती और उनके बाल के कम्बल आदि बनाती है।

गड़हा–(हिं० पुं०) गर्त, गड्ढा।

गड़ही–(हिं०स्त्री०) छोटा गड़हा।

गड़ा–(हिं०पुं०) ढेर, राशि, समुदाय।

गड़ाना–(हिं०क्रि०) धँसाना, चुभाना।

गड़ारी–(हिं० स्त्री०) वृत्त, घेरा, पास पास बनी हुई धारियाँ, घिरनी, कुवें में से पानी खींचने की चरखी।

गड़ुई–(हिं०स्त्री०) टोंटी लगा हुआ पानी पीने का छोटा पात्र, झारी।

गड़ुवा–(हिं०पुं०) टोंटी लगा हुआ लोटा।

गड़ेरिया–(हिं० पुं०) देखो गड़रिया।

गड्ड–(हिं०पुं०) वस्तुओं का ढेर जो एक

के ऊपर दूसरा रक्खा हो ।
गड्डी–(हि० स्त्री०) ढेर, पुंज, राशि ।
गड्ढा–(हि० पुं०) गर्त, गड़हा ।
गढ़ंत–(हि० स्त्री०) कल्पित वार्ता।
गढ़–(हि० पुं०) खाई, कोट।
गढ़न–(हि०स्त्री०)आकृति, गठन, बनावट
गढ़ना–(हि० क्रि०) सुडौल करना, बातें बनाना, ठोंकना, मारना, पीटना, कल्पना करना ।
गढ़पति, गढ़वै–(हि०पुं०)कोटाध्यक्ष, राजा।
गढ़ाई–(हि० स्त्री०) गढ़ने का काम, गढ़ने का वेतन ।
गढ़ाना–(हि० क्रि०) गढ़ने का काम दूसरे से कराना ।
गढ़िया–(हि० पुं०)किसी वस्तु को गढ़-कर बनानेवाला ।
गढ़ी–(हि० स्त्री०) छोटा गढ़ ।
गढ़ैया–(हि० वि०) गढ़नेवाला।
गण–(सं०पुं०) समूह, ढेर, श्रेणी, कोटि।
गणक–(सं० पुं०) ज्योतिषी। गणकार–(सं० वि०) गणना करनेवाला।
गणन–(सं० पुं०) गणना, गिनती, निश्चय। गणना–(सं० स्त्री०)गिनती, हिसाब, संख्या ।
गणनीय–(सं०वि०)गिनने योग्य, प्रसिद्ध।
गणपति–(सं०पुं०) गणेश, शिव ।
गणमुख–(सं० पुं०) गाँव के मुखिया।
गणराज्य–(सं० पुं०) चुने हुए मुखियों के द्वारा चलाया जानेवाला राज्य ।
गणिका–(सं० स्त्री०) वेश्या, रण्डी।
गणित–(सं० पुं०) गणन, गणना, अंकशास्त्र ।
गणेश–(सं० पुं०) पार्वतीनन्दन जिनका सिर हाथी का है।
गण्ड–(सं० पुं०) कपोल, गाल, हाथी की कनपटी, गैंड़ा। गण्डक–(सं० पुं० गैंड़ा, ग्रन्थि, स्फोटक रोग।
गण्य–(सं०वि०)गिनने योग्य, माननीय।
गत–(सं० वि०)गया हुआ, बीता हुआ, समाप्त, पाया हुआ, मरा हुआ; (स्त्री०) अवस्था, दशा ।
गतका–(हि०पुं०)लकड़ी खेलने का डंडा।
गति–(सं०स्त्री०)गमन, चाल, परिणाम, ज्ञान, मुक्ति, मोक्ष, दशा, स्थान।
गतिया–(हि० स्त्री०) बच्चों के गले में बाँधने का रूमाल ।
गत्ता–(हि०पुं०) कागज की कई परतों को साटकर बनी हुई दफ्ती, कुट ।
गत्तालखाता–(हि०पुं०) अप्राप्य ऋण, बट्टाखाता ।
गद–(हि० पुं०) रोग, मेघ का शब्द ।
गदका–(हि० पुं०) देखो गतका ।
गदगद–(हि० पुं०) पुलकित वचन ।
गदना–(हि० क्रि०) बोलना, कहना।
गदराना–(हि० क्रि०) पकने के समीप पहुँचना, जवानी में अंगों का भरना।
गदला–(फा० वि०) मटमैला, गन्दा।
गदहपचीसी–(हि० पुं०) सोलह वर्ष से पचीस वर्ष तक की अवस्था जब मनुष्य की बुद्धि अपरिपक्व रहती है।
गदहपन–(हि० स्त्री०) मूर्खता ।
गदहा–(हि० पुं०) गर्दभ ।
गदा–(सं० स्त्री०) एक प्राचीन अस्त्र जिसमें लोहे के डंडे के छोर पर एक लट्टू लगा होता था।
गदाधर–(सं० पुं०) विष्णु भगवान्।
गदाला–(हि० पुं०) मोटा ओढ़ना या बिछौना ।
गदेला–(हि० पुं०) रूई आदि से भरा हुआ बहुत मोटा बिछौना ।
गदोरी–(हि० स्त्री०) हाथ की हथेली।
गद्‌गद–(सं०पुं०)अस्पष्ट शब्द; (वि०)

प्रसन्न, आनन्दित, पुलकित ।
गद्द–(हिं० पुं०) कोमल वस्तु पर किसी पदार्थ के गिरने का शब्द, अजीर्ण ।
गद्दर–(हिं० वि०) अपक्व, अधपका ।
गद्दा–(हिं० पुं०) रूई आदि भरा हुआ मोटा बिछौना । गद्दी–(हिं० स्त्री०) छोटा गद्दा, हाथ या पैर की हथेली, व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान, किसी बड़े अधिकारी का पद, किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य की शिष्य-परम्परा ।
गद्य–(सं० वि०) कथनीय, कहने योग्य; (पुं०) छन्द-रहित वाक्य । गद्यात्मक–(सं० वि०) गद्य में रचा हुआ ।
गधा–(हिं० पुं०) गर्दभ, गदहा ।
गन–(हिं० पुं०) देखो गण ।
गनगनाना–(हिं० क्रि०) शीत से शरीर का काँपना या थरथराना ।
गनती–(हिं० स्त्री०) देखो गिनती ।
गनना–(हिं० क्रि०) गिनना ।
गनिका–(हिं० स्त्री०) गणिका, वेश्या ।
गन्ध–(सं० पुं०) घ्राणेन्द्रिय गुण, बास, सुगन्ध, लेश, कण, सम्बन्ध ।
गन्धक–(सं० पुं०) पीले रंग का एक उपधातु । गन्धकी–(हिं० वि०) गन्धक के रंग का ।
गन्धमृग–(सं० पुं०) कस्तूरीमृग । गन्धराज–(सं० पुं०) मोगरा, बेला, चन्दन, धूना ।
गन्धर्व–(सं० पुं०) देवयोनि विशेष, जो देवताओं की सभा में गाते, बजाते और नाचते हैं ।
गन्धवती–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, वसुन्धरा ।
गन्धी–(हिं० पुं०) इत्र और सुगन्धित तेल बेचनेवाला, अत्तार ।
गन्ना–(हिं० पुं०) ईख, ऊख ।
गप–(हिं० स्त्री०) झूठी सच्ची, इधर-उधर की बात, बकवाद, झूठा समाचार ।
गपकना–(हिं० क्रि०) चटपट निगलना ।
गपिया–(हिं० वि०) गप मारनेवाला ।
गपोड़, गपोड़ा–(हिं० पुं०) झूठी बात ।
गप्प–(हिं० पुं०) देखो गप ।
गप्पी–(हिं० वि०) बकवादी ।
गप्फा–(हिं० पुं०) बहुत बड़ा ग्रास, लाभ ।
गबदी–(हिं० वि०) सुस्त, मूर्ख, बुद्धिहीन ।
गभस्ति–(सं० पुं०) किरण, प्रकाश ।
गभीर–(सं० वि०) गहरा, गहन, घना ।
गभुआर–(हिं० वि०) जिस बालक का मुण्डन न हुआ हो ।
गम–(सं० पुं०) गमन, यात्रा, पहुँच ।
गमक–(हिं० स्त्री०) सुगन्ध । गमकना–(हिं० क्रि०) सुगंध निकलना; (हिं० वि०) सुगन्धित ।
गमन–(सं० पुं०) प्रस्थान, प्रयाण, यात्रा । गमनपत्र–वह पत्र जिसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने का अधिकार मिलता हो ।
गमाना–(हिं० क्रि०) गँवाना, खोना ।
गमार–(हिं० पुं०) गँवार, देहाती ।
गम्भीर–(सं० वि०) गहरा, घना, गूढ़, जटिल, कठिन, भारी, सौम्य प्रकृति का ।
गम्य–(सं० वि०) गमनीय, जानने योग्य ।
गयाल–(हिं० पुं०) वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो ।
गर–(सं० पुं०) विष; (हिं० पुं०) गरदन, गला; (प्रत्य०) बनानेवाला यथा–बाजीगर, हवाईगर इत्यादि ।
गरगज–(हिं० पुं०) गढ़ की भीत, तोप रखने का शिखर जो गढ़ की भीत पर बना रहता है, टीला, फाँसी की टिकठी
गरज–(हिं० स्त्री०) बहुत गंभीर शब्द ।
गरजना–(हिं० क्रि०) तड़पना, फूटना ।

गरदना-(हि० पुं०) मोटी गरदन, झटका या धौल जो गरदन पर पड़े।
गरदनियाँ-(हि०स्त्री०) गरदन पकड़कर किसी मनुष्य को बाहर निकालने की क्रिया।
गरनाल-(हि० स्त्री०) बहुत चौड़े मुँह की तोप।
गरब-(हि० पुं०) देखो गर्व।
गरबित-(हि० वि०) देखो गर्वित।
गरभ-(हि० पुं०) गर्भ।
गरमाना-(हि० क्रि०) गरम होना, आवेश में आना।
गरमाहट-(हि० क्रि०) उष्णता, गरमी।
गररा-(हि० पुं०) एक प्रकार का भूरे रंग का घोड़ा।
गरराना-(हि० क्रि०) गरजना।
गरल-(सं० पुं०) विष।
गरवा-(हि० वि०) भारी, विशाल।
गरसना-(हि० क्रि०) देखो ग्रसना।
गरहन-(हि० पुं०) ग्रहण।
गराँव-(हि० पुं०) चौपायों के गले में बाँधने का रस्सी का फन्दा।
गराड़ी-(हि० स्त्री०) घिरनी, चरखी।
गरारा-(हि० वि०) गर्वयुक्त, प्रबल, प्रचंड; (पुं०) कुल्ली।
गरास-(हि० पुं०) देखो ग्रास, कवर।
गरासना-(हि० क्रि०) कष्ट देना।
गरिमा-(सं० स्त्री०) गुरुता, गौरव, भारीपन, महिमा, भार, अहंकार।
गरियाना-(हि०क्रि०) दुर्वचन कहना।
गरियार-(हि०वि०) मट्ठर, आलसी।
गरिष्ठ-(सं०वि०) बहुत भारी, बहुत बड़ा, प्रतिष्ठित।
गरी-(हि०स्त्री०) नारियल के फल के भीतर का गूदा, बीज के भीतर का कोमल भाग, मींगी।
गरीयस-(सं०वि०) अत्यन्त भारी, प्रबल।
गरुआई-(हि० स्त्री०) गुरुता, भारीपन।
गरुआना-(हि० क्रि०) भारी होना।
गरू-(हि० वि०) गुरु, भारी।
गरेरना-(हि० क्रि०) घेरना, रोकना।
गरेरा-(हि० पुं०) घेरा।
गर्जन-(सं० पुं०) गरज, क्रोध, रोष।
गर्त-(सं०पुं०) भूमिका, छिद्र, दरार, गड्ढा।
गर्दन-(हि० स्त्री०) गरदन, ग्रीवा।
गर्दभ-(सं० पुं०) रासभ, खर, गदहा।
गर्भ-(सं०पुं०) पेट के भीतर का बच्चा, भ्रूण, गर्भाशय, उदर, पेट, भीतरी भाग। गर्भकेसर-(पुं०) फूलों में के बाल सरीखे पतले सूत। गर्भकोष-(सं०पुं०) गर्भाशय, बच्चेदानी। गर्भवती-(स्त्री०) वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो।
गर्भित-(सं०वि०) पूर्ण, पूरित, भरा हुआ
गर्भिणी-(हि०वि०) गर्भवती, गाभिन।
गर्व-(सं० पुं०) अहंकार, अभिमान।
गर्विष्ठ-(सं०वि०) गर्वयुक्त, अहंकारी।
गर्वी-(हि० वि०) अहंकारी, घमण्डी।
गर्वीला-(हि० वि०) अभिमान से भरा हुआ, घमंडी।
गर्हण-(सं० पुं०) निन्दा।
गर्हणीय-(सं० वि०) निन्दनीय।
गर्हा-(सं० स्त्री०) निन्दा।
गर्ही-(सं० वि०) निन्दा करनेवाला।
गल-(सं० पुं०) गला, कण्ठ। गलकंबल-(सं०पुं०) गाय के गले पर की लटकती हुई झालर।
गलंश-(हि०स्त्री०) वह सम्पत्ति जिसका स्वामी मर गया हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो।
गलका-(हि० पुं०) एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग में होता है।

गलगंजना-(हिं० क्रि०) कोलाहल करना।
गलगला-(हिं० वि०) आर्द्र, भींगा हुआ।
गलगलाना-(हिं० क्रि०) भिगाना ।
गलगाजना-(हिं० क्रि०) आनन्द से गरजना ।
गलगुच्छा-(हिं० पुं०) देखो गलमुच्छा।
गलग्राह-(सं० पुं०) मगर ।
गलछट-(हिं० स्त्री०) गलफड़ा।
गलतंग-(हिं० वि०) अचेत, बेसुध ।
गलतंस-(हिं० पुं०) ऐसा मनुष्य जो बिना सन्तति छोड़े मर गया हो ।
गलतकिया-(हिं० पुं०) गालों के नीचे रखने का कोमल गोल तकिया ।
गलतान-(हिं० वि०) जर्जर, फटा-पुराना।
गलथना-(हिं० पुं०) बकरियों की गर्दन की दोनों ओर लटकती हुई थैलियाँ।
गलथली-(हिं० स्त्री०) बन्दरों के गाल के नीचे की थैली जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं।
गलदेश-(सं० पुं०) ग्रीवा, गला, गरदन।
गलन-(सं० पुं०) गलकर गिरना, पतन।
गलना-(हिं० क्रि०) जीर्ण होना, शरीर का दुर्बल होना, ठंढक से हाथ-पैर ठिठुरना
गलफड़ा-(हिं० पुं०) जलजन्तुओं में पानी के भीतर साँस लेने का अवयव, गालों के दोनों जबड़े के बीच का मांस।
गलबल-(हिं० पुं०) कोलाहल, गड़बड़ी।
गलबाँही, गलबहियाँ-(हिं० स्त्री०) गले में प्रेम से बाँह डालना ।
गलमुच्छा-(हिं० पुं०) दोनों गालों पर बढ़ाये हुए बाल ।
गललग्न-(सं० वि०) गले में लिपटा हुआ।
गलवाना-(हिं० क्रि०) गलाने का काम दूसरे से कराना ।
गलसुअन-(हिं० पुं०) गाल के नीचे का भाग सूजने का एक रोग ।
गला-(हिं० स्त्री०) गरदन, कंठ, गले के भीतर की नाली जिसमें से शब्द निकलता है और आहार पेट के भीतर जाता है, गले का शब्द, पात्र का ऊपरी पतला भाग ।
गलाऊ-(हिं० वि०) गलानेवाला ।
गलाना-(हिं० क्रि०) द्रवित करना, कोमल करना, धन व्यय करना, धीरे-धीरे लुप्त करना ।
गलानि-(हिं० स्त्री०) खिन्नता, खेद, दुःख।
गलावट-(हिं० स्त्री०) गलने का भाव या क्रिया ।
गलित-(सं० वि०) भ्रष्ट, पतित, द्रवित, जीर्ण, खंडित ।
गलियारा-(हिं० पुं०) घर का संकीर्ण मार्ग ।
गली-(हिं० स्त्री०) पतला मार्ग जो दो घरों की पंक्तियों के बीच में रहता है।
गल्प-(हिं० स्त्री०) छोटी कहानी, डींग।
गल्ल-(हिं० पुं०) गाल।
गल्ला-(हिं० पुं०) कोलाहल, अन्न ।
गवँ-(हिं० स्त्री०) आशय, घात, अवसर।
गवन-(हिं० पुं०) प्रस्थान, चलना, जाना।
गवय-(सं० पुं०) नीलगाय ।
गवाक्ष-(सं० पुं०) झरोखा, छोटी खिड़की।
गवाँना-(हिं० क्रि०) नष्ट करना, खोना।
गवेषणा-(सं० स्त्री०) अन्वेषण, खोज ।
गवैया-(हिं० वि०) गायक, गानेवाला।
गवैहाँ-(हिं० वि०) ग्रामीण, देहाती ।
गव्य-(सं० वि०) गौ से प्राप्त, यथा-दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र आदि ।
गसना-(हिं० वि०) जकड़ना, गाँठना।
गसीला-(हिं० वि०) गुथा हुआ ।
गह-(हिं० स्त्री०)) पकड़ ।
गहना-(हिं० क्रि०) लालसा से पूर्ण होना, ललकना ।

गहगड्ड–(हिं० वि०) गहरा, भारी, घोर।
गहन–(सं० पुं०) वन, जंगल; (पुं०) गहराई; (त्रि०) दुर्गम, गहरा, घना, अथाह; (हिं० पुं०) ग्रहण, दोष, कलंक, कष्ट, विपत्ति।
गहना–(हिं० पुं०) आभूषण, बंधक; (क्रि०) पकड़ना, धरना।
गहनि–(हिं० स्त्री०) टेक, हठ, पकड़।
गहवर–(हिं० वि०) विषम, उद्विग्न, व्याकुल।
गहरना–(हिं० क्रि०) विलंब करना।
गहरा–(हिं० वि०) अधिक भारी, निम्न, दृढ़, गाढ़ा, कठिन।
गहराई–(हिं० स्त्री०) गंभीरपन, गहरापन। गहराना–(हिं० क्रि०) गहरा होना या करना।
गहराव–(हिं० पुं०) गहराई, गहरापन।
गहवा–(हिं० पुं०) सँड़सी। गहवाना–(हिं० क्रि०) पकड़ने का काम दूसरे से कराना।
गहाई–(हिं० स्त्री०) पकड़ने का काम।
गहाना–(हिं० क्रि०) पकड़ाना, धराना।
गहिराव–(हिं० पुं०) देखो गहराव।
गहिरी–(हिं० वि०) गहरा, गंभीर।
गहिला–(हिं० वि०) उन्मत्त, पागल।
गहोर–(हिं० वि०) गहरा।
गहोला–(हिं० वि०) अभिमानी।
गहुआ–(हिं० पुं०) छोटे मुख की सँड़सी।
गहेला–(हिं० वि०) हठी, अहंकारी।
गहैया–(हिं० वि०) पकड़नेवाला।
गह्वर–(सं० पुं०) बिल, कन्दरा; (वि०) दुर्गम, गुप्त, विषम।
गांछना–(हिं० क्रि०) गाँथना, गूँथना।
गांजना–(हिं० क्रि०) ढेर लगाना।
गांजा–(हिं० पुं०) एक पौधा जिसकी कली चिलम पर पी जाती है।
गाँठ–(हिं० स्त्री०) ग्रन्थि, गिरह, गठरी, शरीर के अंग का जोड़, पर्व, गट्ठा।
गाँठना–(हिं० क्रि०) गाँठ देना मिलाना, जोड़ना, वश में लाना।
गाँठी–(हिं० स्त्री०) देखो गाँठ।
गाँड़ा–(हिं० पुं०) ऊख की कटी हुई गड़ेरी जो कोल्हू में पेरने के लिये डाली जाती है।
गाँथना–(हिं० क्रि०) गूँथना, मिलाना।
गाँव–(हिं० पुं०) ग्राम, छोटी बस्ती।
गाँस–(हिं० स्त्री०) ग्रन्थन, बन्धन, वैर, ईर्षा।
गाँसना–(हिं० क्रि०) गूँथना, ठूसना, भरना।
गाँसी–(हिं० स्त्री०) किसी अस्त्र का अगला भाग, गाँठ, छल, कपट।
गाँहक–(हिं० पुं०) देखो ग्राहक।
गाइ, गाई–(हिं० स्त्री०) गाय।
गाउघप्प–(हिं० वि०) दूसरे की वस्तु को अपनानेवाला।
गागर–(हिं० स्त्री०) गगरी, छोटा घड़ा।
गागरी–(हिं० स्त्री०) घड़ा, गगरी।
गाच–(हिं० पुं०) महीन जालीदार कपड़ा।
गाछ–(हिं० पुं०) छोटा वृक्ष, पौधा।
गाज–(हिं० स्त्री०) गरज, बिजली।
गाजना–(हिं० क्रि०) गरजना, चिल्लाना।
गाजर–(हिं० पुं०) एक मीठे कन्द का पौधा।
गाड़–(हिं० स्त्री०) गड्ढा। गाड़ना–(हिं० क्रि०) पृथ्वी में ढाँपना, धँसाना, छिपाना।
गाड़ी–(हिं० स्त्री०) यान, शकट।
गाड़ीवान–(पुं०) गाड़ी हाँकनेवाला।
गाढ़–(सं० पुं०) अतिशय, दृढ़रूप; (वि०) घना, गाढ़ा, गहरा।
गाढ़ा–(हिं० पुं०) गहरा, विकट, कठिन (पुं०) खद्दर।

गाता-(हिं० पुं०) गानेवाला, गवैया।
गाती-(हिं० स्त्री०) गले में लपेटने का वस्त्र।
गात्र-(सं० पुं०) शरीर, देह, अंग।
गाथक-(सं० पुं०) गायक, गानेवाला।
गाथा-(सं० स्त्री०) स्तुति, गीत, प्राकृत भाषा।
गाद-(हिं पुं०) तलछट।
गादड़-(हिं० वि०) डरपोक; (पुं०) गीदड़, सियार।
गादर-(हिं० वि०) आलसी, भीरु, डरपोक।
गादा-(हिं० पुं०) खेत का कच्चा या अधपका अन्न।
गादी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पक्वान्न, देखो गद्दी।
गादुर-(हिं० पुं०) चमगादड़।
गाध-(सं० पुं०) लोभ, थाह; (वि०) अल्प, थोड़ा, छिछला।
गान-(सं० स्त्री०) गाने की क्रिया, संगीत।
गाना-(हिं० क्रि०) ताल सुर में मुख से मधुर ध्वनि निकालना, स्तुति करना; (पुं०) गाने की क्रिया, गान।
गाभ-(हिं० पुं०) पशुओं का गर्भ।
गाभा-(हिं० पुं०) हलके रंग का नया निकला हुआ पत्ता, कोंपल।
गाभिन, गाभिनी-(हिं० वि०) गर्भिणी।
गाम-(हिं० पुं०) गाँव, ग्राम।
गामी-(सं० वि०) चलनेवाला, जानेवाला।
गाय-(हिं० स्त्री०) गौ, बहुत सीधा-सादा मनुष्य।
गायक-(सं० वि०) गवैया, गानेवाला।
गायन-(सं० वि०) गाने का व्यवसाय।
गारना-(हिं० क्रि०) निचोड़ना, निकालना।
गारा-(हिं० पुं०) मिट्टी या चूना सुर्खी आदि में जल मिलाकर बनाया हुआ मसाला।
गारी-(हिं० स्त्री०) दुर्वचन, गाली।
गारुड़-(सं० पुं०) सर्प का विष उतारने का मंत्र। गारुड़िक, गारुड़ी-(सं० पुं०) सर्प का विष उतारनेवाला।
गारो-(हिं० पुं०) गर्व, अहंकार।
गार्हस्थ्य-(सं० पुं०) गृहस्थाश्रम।
गाल-(हिं० पुं०) कपोल, गण्ड।
गालन-(सं० पुं०) कपड़े में छानने का काम।
गाला-(हिं० पुं०) धुनी हुई रूई का गोला।
गालित-(सं० वि०) गलाया हुआ।
गाली-(हिं० स्त्री०) दुर्वचन, निन्दा, कलंक-सूचक वाक्य।
गालना-(हिं० क्रि०) बोलना, बात करना।
गावदी-(हिं० वि०) अबोध।
गावली-(हिं० स्त्री०) दलाली।
गाह-(हिं० पुं०) घात, पकड़।
गाहक-(हिं० पुं०) मोल लेनेवाला, आदर करनेवाला।
गाहन-(सं० पुं०) स्नान।
गाहना-(हिं० क्रि०) डुबकी लगाकर थाह लेना, मथना, हलचल मचाना।
गाहा-(हिं० स्त्री०) कथा, वर्णन।
गाही-(हिं० स्त्री०) पाँच वस्तुओं का समूह।
गिजना-(हिं० क्रि०) हाथ लगने या उलट जाने के कारण किसी वस्तु (कपड़े आदि) का नष्ट हो जाना या करना।
गिजाई-(हिं० स्त्री०) गिज जाने की क्रिया।
गिदौड़ा, गिदौरा-(हिं० पुं०) चीनी को ढालकर जमाई हुई मोटी रोटी।
गियान-(हिं० पुं०) ज्ञान।
गिटकिरी-(हिं० स्त्री०) तान लगाने में स्वर का काँपना।
गिट्टक-(हिं० स्त्री०) कंकड़ जो चिलम में छिद्र के ऊपर रक्खा जाता है।
गिट्टी-(हिं० स्त्री०) पत्थर या ईंट के छोटे टुकड़े जो छत पर फैलाकर पीटे जाते हैं।

गहगड्ड–(हिं० वि०) गहरा, भारी, घोर।
गहन–(सं० पुं०) वन, जंगल; (पुं०) गहराई; (त्रि०) दुर्गम, गहरा, घना, अथाह; (हिं० पुं०) ग्रहण, दोष, कलंक, कष्ट, विपत्ति ।
गहना–(हिं० पुं०) आभूषण, बंधक; (क्रि०) पकड़ना, धरना ।
गहनि–(हिं० स्त्री०) टेक, हठ, पकड़।
गहवर–(हिं० वि०) विषम, उद्विग्न, व्याकुल ।
गहरना–(हिं० क्रि०) विलंब करना ।
गहरा–(हिं० वि०) अधिक भारी, निम्न, दृढ़, गाढ़ा, कठिन ।
गहराई–(हिं० स्त्री०) गंभीरपन, गहरापन । गहराना–(हिं० क्रि०) गहरा होना या करना ।
गहराव–(हिं० पुं०) गहराई, गहरापन ।
गहवा–(हिं० पुं०) सँड़सी । गहवाना–(हिं० क्रि०) पकड़ने का काम दूसरे से कराना ।
गहाई–(हिं० स्त्री०) पकड़ने का काम ।
गहाना–(हिं० क्रि०) पकड़ाना, धराना ।
गहिराव–(हिं० पुं०) देखो गहराव ।
गहिरी–(हिं० वि०) गहरा, गंभीर ।
गहिला–(हिं० वि०) उन्मत्त, पागल ।
गहोर–(हिं० वि०) गहरा ।
गहोला–(हिं० वि०) अभिमानी ।
गहुआ–(हिं० पुं०) छोटे मुख की सँड़सी ।
गहेला–(हिं० वि०) हठी, अहंकारी ।
गहैया–(हिं० वि०) पकड़नेवाला ।
गह्वर–(सं० पुं०) बिल, कन्दरा; (त्रि०) दुर्गम, गुप्त, विषम ।
गांछना–(हिं० क्रि०) गाँथना, गूँथना ।
गांजना–(हिं० क्रि०) ढेर लगाना ।
गाँजा–(हिं० पुं०) एक पौधा जिसकी कली चिलम पर पी जाती है।
गाँठ–(हिं० स्त्री०) ग्रन्थि, गिरह, गठरी, शरीर के अंग का जोड़, पर्व, गट्ठा ।
गाँठना–(हिं० क्रि०) गाँठ देना मिलाना, जोड़ना, वश में लाना ।
गाँठी–(हिं० स्त्री०) देखो गाँठ।
गाँड़ा–(हिं० पुं०) ऊख की कटी हुई गड़ेरी जो कोल्हू में पेरने के लिये डाली जाती है ।
गाँथना–(हिं० क्रि०) गूँथना, मिलाना।
गाँव–(हिं० पुं०) ग्राम, छोटी बस्ती।
गाँस–(हिं० स्त्री०) ग्रन्थन, बन्धन, वैर, ईर्षा।
गाँसना–(हिं० क्रि०) गूँथना, ठूसना, भरना ।
गाँसी–(हिं० स्त्री०) किसी अस्त्र का अगला भाग, गाँठ, छल, कपट ।
गाँहक–(हिं० पुं०) देखो ग्राहक ।
गाइ, गाई–(हिं० स्त्री०) गाय ।
गाउघप्प–(हिं० वि०) दूसरे की वस्तु को अपनानेवाला ।
गागर–(हिं० स्त्री०) गगरी, छोटा घड़ा ।
गागरी–(हिं० स्त्री०) घड़ा, गगरी ।
गाच–(हिं० पुं०) महीन जालीदार कपड़ा।
गाछ–(हिं० पुं०) छोटा वृक्ष, पौधा ।
गाज–(हिं० स्त्री०) गरज, बिजली ।
गाजना–(हिं० क्रि०) गरजना, चिल्लाना।
गाजर–(हिं० पुं०) एक मीठे कन्द का पौधा ।
गाड़–(हिं० स्त्री०) गड्ढा । गाड़ना–(हिं० क्रि०) पृथ्वी में ढाँपना, धँसाना, छिपाना ।
गाड़ी–(हिं० स्त्री०) यान, शकट ।
गाड़ीवान–(पुं०) गाड़ी हाँकनेवाला ।
गाढ़–(सं० पुं०) अतिशय, दृढ़रूप; (वि०) घना, गाढ़ा, गहरा ।
गाढ़ा–(हिं० पुं०) गहरा, विकट, कठिन (पुं०) खद्दर।

गाता-(हिं० पुं०) गानेवाला, गवैया।
गाती-(हिं० स्त्री०) गले में लपेटने का वस्त्र।
गात्र-(सं० पुं०) शरीर, देह, अंग।
गाथक-(सं० पुं०) गायक, गानेवाला।
गाथा-(सं० स्त्री०) स्तुति, गीत, प्राकृत भाषा।
गाद-(हिं पुं०) तलछट।
गादड़-(हिं० वि०) डरपोक; (पुं०) गीदड़, सियार।
गादर-(हिं० वि०) आलसी, भीरु, डरपोक।
गादा-(हिं० पुं०) खेत का कच्चा या अधपका अन्न।
गादी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पक्वान्न, देखो गद्दी।
गादुर-(हिं० पुं०) चमगादड़।
गाध-(सं० पुं०) लोभ, थाह; (वि०) अल्प, थोड़ा, छिछला।
गान-(सं० स्त्री०) गाने की क्रिया, संगीत।
गाना-(हिं० क्रि०) ताल सुर में मुख से मधुर ध्वनि निकालना, स्तुति करना; (पुं०) गाने की क्रिया, गान।
गाभ-(हिं० पुं०) पशुओं का गर्भ।
गाभा-(हिं० पुं०) हलके रंग का नया निकला हुआ पत्ता, कोंपल।
गाभिन, गाभिनी-(हिं० वि०) गर्भिणी।
गाम-(हिं० पुं०) गाँव, ग्राम।
गामी-(सं० वि०) चलनेवाला, जानेवाला।
गाय-(हिं० स्त्री०) गौ, बहुत सीधा-सादा मनुष्य।
गायक-(सं० वि०) गवैया, गानेवाला।
गायन-(सं० वि०) गाने का व्यवसाय।
गारना-(हिं० क्रि०) निचोड़ना, निकालना।
गारा-(हिं० पुं०) मिट्टी या चूना सुर्खी आदि में जल मिलाकर बनाया हुआ मसाला।
गारी-(हिं० स्त्री०) दुर्वचन, गाली।
गारुड़-(सं० पुं०) सर्प का विष उतारने का मंत्र। गारुड़िक, गारुड़ी-(सं० पुं०) सर्प का विष उतारनेवाला।
गारो-(हिं० पुं०) गर्व, अहंकार।
गार्हस्थ्य-(सं० पुं०) गृहस्थाश्रम।
गाल-(हिं० पुं०) कपोल, गण्ड।
गालन-(सं० पुं०) कपड़े में छानने का काम।
गाला-(हिं० पुं०) धुनी हुई रूई का गोला।
गालित-(सं० वि०) गलाया हुआ।
गाली-(हिं० स्त्री०) दुर्वचन, निन्दा, कलंक-सूचक वाक्य।
गालना-(हिं० क्रि०) बोलना, बात करना।
गावदी-(हिं० वि०) अबोध।
गावली-(हिं० स्त्री०) दलाली।
गाह-(हिं० पुं०) घात, पकड़।
गाहक-(हिं० पुं०) मोल लेनेवाला, आदर करनेवाला।
गाहन-(सं० पुं०) स्नान।
गाहना-(हिं० क्रि०) डुबकी लगाकर थाह लेना, मथना, हलचल मचाना।
गाहा-(हिं० स्त्री०) कथा, वर्णन।
गाही-(हिं० स्त्री०) पाँच वस्तुओं का समूह।
गिजना-(हिं० क्रि०) हाथ लगने या उलट जाने के कारण किसी वस्तु (कपड़े आदि) का नष्ट हो जाना या करना।
गिजाई-(हिं० स्त्री०) गिज जाने की क्रिया।
गिदौड़ा, गिदौरा-(हिं० पुं०) चीनी को ढालकर जमाई हुई मोटी रोटी।
गियान-(हिं० पुं०) ज्ञान।
गिटकिरी-(हिं० स्त्री०) तान लगाने में स्वर का काँपना।
गिट्टक-(हिं० स्त्री०) कंकड़ जो चिलम में छिद्र के ऊपर रक्खा जाता है।
गिट्टी-(हिं० स्त्री०) पत्थर या ईंट के छोटे टुकड़े जो छत पर फैलाकर पीटे जाते हैं।

गिड़गिड़ाहट–(हिं०स्त्री०) प्रार्थना, विनती।
गिद्ध–(हिं० पुं०) गृध्र।
गिनगिनाना–(हिं०क्रि०) रोमांच होना।
गिनती–(हिं० स्त्री०) गणना, संख्या।
गिनना–(हिं० क्रि०) गणना करना, संख्या निश्चित करना।
गिर–(हिं० पुं०) गिरि, पर्वत, पहाड़।
गिरगिट–(हिं० पुं०) छिपकली के आकार का एक बित्ता लम्बा एक जन्तु जो अपना रङ्ग अनेक बार बदलता है।
गिरगिटान–(हिं० पुं०) देखो गिरगिट।
गिरजा (घर)–ईसाइयों का प्रार्थनागृह।
गिरधर, गिरधारी–(हिं० पुं०) कृष्ण, वासुदेव।
गिरना–(हिं० क्रि०) नीचे उतरना, पतित होना, स्थिरता न रखना, अवनति पर होना।
गिरवर–(हिं० पुं०) श्रेष्ठ पर्वत।
गिरवान–(हिं० पुं०) देवता, देव, सुर।
गिरवाना–(हिं० क्रि०) दूसरे के द्वारा गिरने का काम कराना।
गिरहर, गिरहरा–(हिं० वि०) गिरनेवाला
गिरही–(हिं० पुं०) गृहस्थ, घर, मकान।
गिरा–(सं० स्त्री०) वाणी, जिह्वा, वचन।
गिराना–(हिं० क्रि०) पृथ्वी पर डाल देना, घटाना।
गिराव–(हिं० पुं०) गिरने का कार्य।
गिरास–(हिं० पुं०) देखो ग्रास, कौर।
गिरासना–(हिं०क्रि०) ग्रसना, कष्ट देना।
गिरि–(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़।
गिरी–(हिं० स्त्री०) किसी बीज के भीतर का गूदा।
गिरेवान–(हिं० पुं०) गले में लपेटने का वस्त्र।
गिरेवा–(हिं० पुं०) छोटी पहाड़ी।
गिलट–(हिं० स्त्री०) किसी धातु पर सोना चढ़ाने का काम, एक सफेद चमकीला हलका कम मूल्य का धातु।
गिलटी–(हिं० स्त्री०) शरीर में सन्धि-स्थान की ग्रन्थि।
गिलना–(हिं०क्रि०) निगलना, मनमें रखना
गिलहरी–(हिं० स्त्री०) चूहे के आकार का एक चंचल जन्तु जो वृक्ष पर रहता है, चेखुरी।
गिलान–(हिं० स्त्री०) ग्लानि, घृणा।
गिलास–(हिं० पुं०) पानी पीने का गोल लंबा पात्र।
गिलौरी–(हिं० स्त्री०) पान का बीड़ा।
गिल्ली–(हिं० स्त्री०) देखो गुल्ली।
गींजना–(हिं० क्रि०) किसी कोमल पदार्थ को हाथों से इस प्रकार मलना कि वह भ्रष्ट हो जावे।
गी–(सं० स्त्री०) वाणी, बोलने की शक्ति।
गीत–(सं० पुं०) गान, गाना, प्रशंसा।
गीता–(सं० स्त्री०) गुरु तथा शिष्य की कल्पना करके कहा हुआ उपदेशात्मक ज्ञान, भगवद्गीता, वृत्तान्त।
गीति–(सं० स्त्री०) गान, गीत।
गीदड़–(हिं० पुं०) शृगाल, सियार; (वि०) भीरु, डरपोक।
गीध–(हिं० पुं०) गृध्र, गिद्ध।
गीर–(सं०स्त्री०) गिरा, वाणी।
गीर्वाण–(हिं० पुं०) देवता।
गीला–(हिं० वि०) भींगा हुआ, तर।
गुँगुआना–(हिं० क्रि०) अस्पष्ट बोलना, गूँगूँ करना।
गुंज–(हिं०स्त्री०) भौंरों की भनभनाहट।
गुंजना–(हिं० क्रि०) भनभनाना, गुनगुनाना। गुंजार–(हिं० वि०) गूंजता हुआ।
गुंडई–(हिं० स्त्री०) गुंडापन, नीचता।

गुंडली–(हिं॰ स्त्री॰) कुण्डली; गेंडुरी।
गुंडा–(हिं॰ वि॰) कुमार्गी, पापी, छैला।
गुंधना–(हिं॰स्त्री॰) जल मिलाकर आटा सानना।
गुंथना–(हिं॰क्रि॰) लड़ी बनाकर बांधना।
गुंधाई–(हिं॰ स्त्री॰) गूंधने का काम या गूंधने का शुल्क।
गुंभी–(हिं॰ स्त्री॰) अंकुर, गाभ।
गुइयां–(हिं॰पुं॰) साथी, सहचर, स्त्री।
गुच्ची–(हिं॰ स्त्री॰) लड़कों का गुल्ली-डंडा खेलते समय भूमि में खोदा हुआ छोटा गड्ढा; (वि॰) बहुत छोटी, नन्हीं।
गुच्छ, गुच्छक–(सं॰ पुं॰) एक में बँधे हुए फूल या पत्तों का समुदाय, गुच्छा।
गुजरी–(हिं॰ स्त्री॰) कलाई में पहिनने की एक प्रकार की पहुँची।
गुञ्ज–(सं॰ पुं॰) ध्वनि, शब्द।
गुञ्जा–(सं॰स्त्री॰) घुमची, एक रत्ती का परिमाण।
गुञ्जित–(सं॰वि॰) कलकल शब्द युक्त।
गुञ्झा–(हिं॰ पुं॰) बांस की कील, रेशेदार गुद्दा।
गुझिया–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का पक्वान्न।
गुटकना–(हिं॰ क्रि॰) कबूतर की तरह शब्द करना, निगल जाना।
गुटका–(हिं॰ पुं॰) छोटे आकार की पुस्तक।
गुटरगूं–(हिं॰ स्त्री॰) कबूतर की बोली।
गुटिका–(सं॰ स्त्री॰) वटिका, गोली।
गुट्ट–(हिं॰ पुं॰) समूह, झुंड, दल, जत्था।
गुडंबा–(हिं॰पुं॰) चीनी में पकाया हुआ आम का गूदा।
गुड़–(हिं॰ पुं॰) कड़ाहे में उबालकर गाढ़ा किया हुआ तथा जमाया हुआ ऊख का रस।
गुड़गुड़–(हिं॰ पुं॰) जल में नली आदि द्वारा वायु प्रवेश होने का शब्द।
गुड़गुड़ी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का हुक्का।
गुड़िया–(हिं॰ स्त्री॰) कपड़े की बनी हुई लड़कियों के खेलने की पुतली।
गुड़ुवा–(हिं॰पुं॰) कपड़े का बना हुआ पुतला।
गुड्डा–(हिं॰ पुं॰) बड़ा पतंग।
गुड्डी–(हिं॰ स्त्री॰) पतंग, कनकैया।
गुण–(सं॰ पुं॰) धनुष की प्रत्यंचा, रस्सी, धर्म, प्रकृति के सत्व, प्रवीणता, सद्‌वृत्ति, शील, बड़ाई, विशेषण, कला, विशषता, 'गुना' अर्थ का प्रत्यय यथा त्रिगुण इत्यादि। गुणक–(सं॰पुं॰) वह अंक जिससे किसी अंक में गुणा किया जावे। गुणकर–(वि॰) लाभदायक। गुणकार–(वि॰) रसोई बनानेवाला। गुणकारक, गुणकारी–(वि॰) लाभदायक।
गुणन–(पुं॰) मन्त्रणा, अभ्यास, एक अंक को दूसरे से गुणा करना, गुणा, सोचना। गुणनफल–(पुं॰) वह संख्या जो दो अंकों के गुणा करने से प्राप्त हो। गुणवाचक–(वि॰) गुण को प्रगट करनेवाला। गुणवान्–(वि॰) गुणी। गुणा–(हिं॰ पुं॰) गणित की एक क्रिया। गुणांक–(पुं॰) वह अंक जिसको गुणा करना हो। गुणाढ्य–(वि॰) गुणयुक्त। गुणानुवाद–(पुं॰) प्रशंसा, बड़ाई।
गुणित–(सं॰ वि॰) गुणन किया हुआ।
गुणी–(सं॰ वि॰) गुणवान्, निपुण।
गुण्ठन–(सं॰पुं॰) आवरण, परदा, घेरा।
गुण्ठित–(सं॰पुं॰) छिपा हुआ, घेरा हुआ।
गुण्य–(सं॰ वि॰) गुणयुक्त, वह अंक जिसको गुणा करना हो।

गुण्यांक–(सं० पुं०) वह अंक जो गुणा किया जावे।
गुत्थम, गुत्था–(हिं० पुं०) उलझाव, फँसाव।
गुत्थी–(हिं० स्त्री०) गिरह, उलझन।
गुथना–(हिं० क्रि०) गुथा जाना, टाँका लगाना।
गुदकार–(हिं० वि०) गुद्देदार, गुदारा।
गुदगुदा–(हिं० वि०) गुद्देदार, कोमल।
गुदगुदाना–(हिं० क्रि०) बच्चों को प्रसन्न करने के लिये उनकी काँख या पैर के तलवे, पेट आदि को सोहराना। गुदगुदाहट–गुदगुदी।
गुदड़िया–(हिं० पुं०) गुदड़ी पहिनने-ओढ़नेवाला।
गुदड़ी–(हिं० पुं०) फटे पुराने वस्त्र का बना हुआ ओढ़ना या बिछौना।
गुदना–(हिं० क्रि०) देखो गोदना।
गुदरना–(हिं० क्रि०) निवेदन करना।
गुदराना–(हिं० क्रि०) सूचित करना।
गुदरी–(हिं० स्त्री०) देखो गुदड़ी।
गुदा–(सं० स्त्री०) मलद्वार।
गुदाना–(हिं० क्रि०) गोदने की क्रिया करना
गुदाम–(हिं० क्रि०) अनेक पदार्थों के रखने का स्थान।
गुदार–(हिं० वि०) गुद्देदार।
गुद्दा–(हिं० पुं०) फल आदि के भीतर का गूदा।
गुन–(हिं० पुं०) देखो गुण।
गुनकारी–(हिं० वि०) गुणकारक।
गुनगुना–(हिं० वि०) थोड़ा गरम।
गुनगुनाना–(हिं० क्रि०) नाक से बोलना, अस्पष्ट स्वर से गाना।
गुनना–(हिं० क्रि०) मनन करना, सोचना, विचारना।
गुनवन्त–(हिं० वि०) जिसमें कोई गुण हो।
गुना–(हिं० पुं०) संख्या सूचित करने के लिये शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है जिसका अर्थ "उतनी बार" होता है, यथा–दस गुना, बीस गुना इत्यादि, गणित में गुणा करने की क्रिया।
गुनावन–(हिं० पुं०) विचार।
गुनिया–(हिं० वि०) गुणी, गुणवान्; (स्त्री०) कारीगर का समकोण नापने का यन्त्र।
गुनियाला–(हिं० वि०) गुणी।
गुनी–(हिं० वि०) देखो गुणी।
गुपचुप–(हिं० स्त्री०) एक तरह की मिठाई।
गुपुत–(हिं० वि०) देखो गुप्त।
गुप्त–(सं० वि०) गूढ़, रक्षित, छिपा हुआ।
गुप्ति–(सं० स्त्री०) रक्षण, आच्छादन, कन्दरा, गड्ढा।
गुप्ती–(हिं० स्त्री०) एक तरह की किरिच या तलवार जो छड़ी के भीतर बैठाई रहती है।
गुफा–(हिं० स्त्री०) गुहा, कन्दरा।
गुबरैला–(हिं० पुं०) गोबर में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
गुब्बाड़ा, गुब्बारा–(हिं० पुं०) वह गोल या लम्बी थैली जिसमें गरम वायु या किसी प्रकार की भाप भरकर आकाश में उड़ाई जाती है।
गुमना–(हिं० क्रि०) लुप्त हो जाना।
गुमाना–(हिं० क्रि०) देखो गँवाना।
गुमानी–(हिं० वि०) अहंकारी, घमण्डी।
गुमटी–(हिं० स्त्री०) घर की सबसे ऊपर की छत या सीढ़ी।
गुम्फ–(सं० पुं०) ग्रन्थि, गाँठ।
गुम्फित–(सं० वि०) ग्रन्थित, गुथा हुआ।
गुम्मा–(हिं० वि०) कम बोलनेवाला, चुप्पा।
गुर–(हिं० पुं०) मूलमन्त्र, युक्ति, भेद।

गुरगा–(हिं० पु०) अनुचर, भेदिया जासूस।
गुरची–(हिं० स्त्री०) सिकुड़न, बल, बटन।
गुरचों–(हिं० स्त्री०) कानाफूसी।
गुरमुख–(हिं० वि०) गुरु से मन्त्र की दीक्षा लिया हुआ।
गुरवी–(हिं० वि०) अहंकारी, घमण्डी।
गुरिया–(हिं० स्त्री०) माला या लड़ी का एक दाना, मनका।
गुरु–(सं० पुं०) देवताओं के गुरु बृहस्पति; (वि०) अधिक, भारी, पूजनीय, गंभीर, बलवान्; (पुं०) मंत्र का उपदेश देनेवाला, आचार्य, विद्या अथवा कला सिखलानेवाला अध्यापक।
गुरुआइन, गुरुआनी–(हिं० स्त्री०) गुरु की स्त्री, शिक्षा देनेवाली स्त्री।
गुरुआई–(हिं०स्त्री०) गुरु का धर्म या कार्य, धूर्तता। गुरुकुल–(सं० पुं०) गुरु का कुल, गुरु का वह स्थान जहाँ पर वे विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देते हैं। गुरुजन–(पुं०) आदरणीय मनुष्य। गुरुतम–(वि०) अधिक भारी। गुरुता–(स्त्री०) गुरुत्व, भारीपन, महत्त्व।
गुरुत्वकेन्द्र–(सं० पुं०) किसी पदार्थ के बीच का वह बिन्दु जिस पर यदि उस पदार्थ का संपूर्ण भार सिमटकर आ जावे तो आकषर्ण में भेद न हो।
गुरुत्वलम्ब–(सं०पुं०) किसी पदार्थ के गुरुत्व केन्द्र से सीधे नीचे की ओर खींची हुई रेखा। गुरुत्वाकर्षण–(सं० पुं०) पृथ्वी की आकर्षण शक्ति। गुरुदक्षिणा–(सं० स्त्री०) वह भेंट जो अध्ययन समाप्त होने पर गुरु को सन्तुष्ट करने के लिये चेला देता ह। गुरुद्वारा–(हिं० पं०) गुरु के रहने का स्थान, सिक्खों का मन्दिर। गुरुभाई–(हिं० स्त्री०) एक ही गुरु के चेले।
गुलाबी–(हिं० वि०) गुलाब के रंग का, थोड़ा हलका।
गुलिका–(सं० स्त्री०) गुटिका, गोली।
गुल्फ–(सं०पुं०) एँड़ी के ऊपर की गाँठ।
गुल्म–(सं० पुं०) प्लीहा रोग, वृक्ष जिसमें तना न हो।
गुल्लक–(हिं० पुं०) प्रतिदिन की आय रखने की थैली।
गुल्लर–(हिं० पुं०) देखो गूलर।
गुल्ली–(हिं० स्त्री०) गुठली, लंबोतरा छोटा टुकड़ा, लड़कों का डंडे से खेलने का काठ का छोटा टुकड़ा।
गुसाईं–(हिं० पुं०) गोसाईं, गोस्वामी।
गुस्सैल–(हिं० वि०) चिड़चिड़ा।
गुह–(हिं० पुं०) विष्ठा।
गुहना–(हिं० क्रि०) गूँथना।
गुहराना–(हिं० क्रि०) चिल्लाकर बुलाना।
गुहा–(सं० स्त्री०) गड्ढा, गुफा, कन्दरा।
गुहाई–(हिं० स्त्री०) गुथने की क्रिया, या वेतन।
गुहामुख–(सं० पुं०) कन्दरा का द्वार।
गुहार–(हिं०स्त्री०) रक्षा के लिये पुकार।
गुहाल–(हिं० पुं०) गोशाला।
गुह्य–(सं० वि०) गोपनीय, गूढ़।
गूँगा–(फा० वि०) जो बोल न सके, मूक।
गूँज–(हिं० स्त्री०) भौंरों के गूंजने का शब्द, प्रतिध्वनि, लट्टू की कील जिस पर वह घूमता है, बाली का पतला भाग जो इसमें लपेटा रहता है।
गूँजना–(हिं० क्रि०) भनभनाना, प्रतिध्वनित होना।
गू–(हिं० स्त्री०) विष्ठा, मल।
गूझा–(हिं०पुं०) फल के भीतर का तन्तु।

गूढ़–(सं० वि०) गुप्त, छिपा हुआ, जटिल, कठिन।
गूढ़चारी–(सं० वि०) गुप्तचारी, भेदिया।
गूढ़ोत्तर–(सं० पुं०) किसी गूढ़ अभिप्राय का उत्तर।
गूथना–(हिं० क्रि०) कई वस्तुओं को एक डोरे में पिरोना, गाँथना, भद्दी सिलाई करना
गूदड़–(हिं० पुं०) फटा पुराना वस्त्र।
गूदा–(हिं० पुं०) किसी फल के छिलके के नीचे का सार भाग, गरी, मींगी।
गून–(हिं० स्त्री०) नाव खींचने की रस्सी।
गूना–(हिं० पुं०) एक प्रकार का पक्वान्न।
गूलर–(हिं० पुं०) एक वृक्ष, पीपल और बरगद की जाति का एक बड़ा वृक्ष।
गूह–(हिं० पुं०) विष्ठा, मल।
गृध्रसी–(सं० स्त्री०) एक वात रोग जिसमें कमर, पीठ तथा जाँघ में पीड़ा रहती है।
गृह–(सं० पुं०) मिट्टी या ईंट का बना हुआ वासस्थान, घर, कुटुम्ब, वंश।
गृहयुद्ध–(सं० पुं०) देश के भीतर आपस में युद्ध होना।
गृहलक्ष्मी–(सं० स्त्री०) सच्चरित्र स्त्री।
गृहस्थ–(सं० पुं०) गृही, खेतिहर, किसान।
गृहस्थी–(हिं० स्त्री०) गृहस्थ का कर्तव्य, घरबार, कुटुम्ब, परिवार, खेती-बारी।
गृहिणी–(सं० स्त्री०) घर की मालकिन, भार्या, पत्नी।
गृही–(सं० पुं०) गृहस्थाश्रमी, गृहस्थ।
गृहीत–(सं० वि०) प्राप्त किया हुआ।
गेंड़–(हिं० पुं०) ऊख के ऊपर का पत्ता।
गेंड़ना–(हिं० क्रि०) खावें से खेत घेरना।
गेंड़ुली–(हिं० स्त्री०) कुण्डली, फेंटा, गेंड़ुरी।
गेंड़ुरीं–(हिं० स्त्री०) घड़ा रखने का मेड़रा, बिड़वा।
गेंद–(हिं० पुं०) कपड़े, रबर आदि का बना हुआ खेलने का गोला, कन्दुक।
गेंदा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का पीले रंग के फूल का पौधा।
गेंडुर–(हिं० पुं०) चमगादड़।
गेंडुवा–(हिं० पुं०) गड़ुवा, तकिया।
गेंड़ना–(हिं० क्रि०) लकीर से घेरना, परिक्रमा करना, चारों ओर घूमना।
गेदा–(हिं० पुं०) चिड़िया का छोटा बच्चा जिसको पर न निकले हों।
गेरना–(हिं० क्रि०) गिराना, डालना।
गेरुआ–(हिं० वि०) गेरू के रङ्ग का।
गेरुई–(हिं० स्त्री०) कृषिफल का एक रोग
गेरू–(हिं० स्त्री०) खान से निकलनेवाली एक प्रकार की लाल मिट्टी।
गेह–(सं० पुं०) गृह, घर।
गेहनी–(हिं० स्त्री०) गृहिणी, घरनी, भार्या।
गेहिनी–(सं० स्त्री०) गृहिणी, भार्या।
गेही–(हिं० पुं०) गृहस्थ।
गेहुअन–(हिं० पुं०) एक बड़ा विषैला भूरे रंग का सर्प, कृष्ण सर्प।
गेहुँआ–(हिं० वि०) गेहूँ के रंग का, बादामी।
गेहूँ–(हिं० पुं०) गोधूम, एक प्रसिद्ध अन्न जिसका आटा खाया जाता है।
गैंड़ा–(हिं० पुं०) भैंसे के आकार का एक पशु जिसकी नाक पर सींग होता है।
गैंता–(हिं० स्त्री०) भूमि खोदने का एक अस्त्र, कुदाल।
गैन–(हिं० पुं०) गैल, मार्ग।
गैया–(हिं० स्त्री०) गो, गाय, गऊ।
गैल–(हिं० स्त्री०) मार्ग, गली।
गोंइंटा–(हिं० पुं०) उपला, गोहरा।
गोंइँड़–(हिं० पुं०) गाँव की बस्ती के आसपास की भूमि, गाँव की सीमा।
गोंइयाँ–(हिं० पुं०) साथी, सहचर।
गोंठ–(हिं० स्त्री०) गोष्ठ, कमर पर की धोती की लपेट। गोंठना–(क्रि०) मोड़ना।
गोंड़रा–(हिं० पुं०) परिधि, घेरा।

गोंड़ा–(हिं०पु०) घेरा हुआ स्थान, बाड़ा।
गोंद–(हिं० पुं०) वृक्षों से निकलनेवाला लसदार पसेव।
गोंदरा–(हिं० पुं०) कोमल घास या पुआल की बनाई हुई मोटी चटाई।
गोंदा–(हिं० पुं०) गारा मिट्टी का खपसा।
गो–(सं० पुं०) गाय, पृथ्वी, जल, स्वर्ग, सूर्य, आँख, बाण, दिशा, किरण, इन्द्रिय, घोड़ा, आकाश, बिजली, जीभ, बैल, वज्र। गोकर्ण–(सं०पुं०) सर्प, खच्चर। गोकुल–(सं० पुं०) गोसमूह, गोशाला।
गोखरू–(हिं०पुं०) एक पौधा, गोटे तथा बादले गूथकर बनाया हुआ साज, पैर या हाथ के तलवे में निकलनेवाला एक रोग जिसमें रूखे कड़े दाने पड़ जाते हैं।
गोखा–(हिं० पुं०) मोखा, झरोखा।
गोगा–(हिं० पुं०) छोटा काँटा या मेख।
गोचना–(हिं० क्रि०) रोकना, छेंकना।
गोचनी–(हिं० स्त्री०) महीन छेद करने का यंत्र।
गोचर–(सं० पुं०) इन्द्रियों द्वारा ज्ञात विषय, ज्ञान, विषय।
गोजई–(हिं०स्त्री०) गेहूँ-जव मिश्रित अन्न
गोजर–(हिं० पुं०) कनखजूरा।
गोजी–(हिं० स्त्री०) बड़ी लाठी, लट्ठ।
गोटना–(हिं० स्त्री०) कपड़े के किनारे शोभा के लिये लगाई जानेवाली पट्टी, किनारी।
गोटा–(हिं० पुं०) बादले की बिनी हुई सुनहली या रुपहली पट्टी, सूखा हुआ मल।
गोटी–(हिं० स्त्री०) लड़कों के खेलने का गोल टुकड़ा या कंकड़, चौपड़ का मोहरा, उपाय।
गोठ–(हिं० स्त्री०) गोष्ठ, गोशाला।
गोड़–(हिं०पुं०) पैर, पाँव।
गोड़इत–(हिं० पुं०) गाँव का पहरेदार।
गोड़ा–(हिं०पुं०) पलंग आदि का पाया।
गोड़ाई–(हिं० स्त्री०) गोड़ने की क्रिया या शुल्क।
गोड़ाना–(हिं० क्रि०) गोड़ने का काम दूसरे से कराना।
गोड़ारी–(हिं० स्त्री०) पलंग का वह सिरा जिधर पैर रहता है।
गोड़ी–(हिं० स्त्री०) लाभ।
गोत–(हिं० पुं०) गोत्र, कुल।
गोता–(हिं० पुं०) जल आदि में डूबने की क्रिया, डुब्बी।
गोतिया, गोती–(हिं० वि०) अपने गोत्र का भाई-बन्धु।
गोतीत–(सं० वि०) जो इन्द्रियों से जाना जा सके।
गोत्र–(सं०पुं०) नाम, जंगल, क्षेत्र, मार्ग, समूह, धन, बन्धु, वंश, सन्तति, कुल।
गोद–(हिं० स्त्री०) उत्संग, वक्षस्थल।
गोदनहार–(हिं० पुं०) शीतला का टीका लगानेवाला। गोदनहारी–(हिं०स्त्री०) गोदना गोदनेवाली स्त्री।
गोदना–(हिं० क्रि०) गड़ाना, चुभाना।
गोदनी–(हिं०स्त्री०) गोदना गोदने की सूई।
गोदन्ती–(हिं० स्त्री०) एक रत्न।
गोदा–(हिं० पुं०) बड़, पीपल या पाकर का पका फल।
गोदाम–(हिं० पुं०) सामग्री सुरक्षित रखने का स्थान।
गोदी–(हिं० स्त्री०) देखो गोद।
गोधूम–(सं० पुं०) गेहूँ।
गोधूलि–(सं० स्त्री०) संध्या का समय।
गोन–(हिं० स्त्री०) बैलों की पीठ पर लादने के लिये अन्न भरने का बोरा।
गोनिया–(हिं० स्त्री०) भीत की सिधाई अथवा कोना नापने का एक यंत्र।

गोप–(सं० पुं०) ग्वाला, अहीर, गले में पहिनने का एक आभूषण।
गोपन–(सं० पुं०) छिपाव, रक्षा।
गोपाल–(सं० पुं०) गोरक्षक, श्रीकृष्ण, ग्वाला।
गोपी–(सं० स्त्री०) गोपपत्नी, अहिरिन।
गोपीचन्दन–(हिं० पुं०) एक प्रकार की पीली मिट्टी।
गोपुर–(सं० पुं०) गढ़ या नगर का फाटक, स्वर्ग।
गोफा–(हिं० पुं०) नया निकला हुआ पत्ता, गाभा।
गोबर–(हिं० पुं०) गौ की विष्ठा, गौ का मल। गोबरगणेश–(हिं० वि०) भद्दा, मूर्ख। गोबरी–(हिं० वि०) गोबर का लेप।
गोभी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तरकारी।
गोमण्डल–(सं० पुं०) भूमण्डल, किरण-समूह।
गोमय–(सं० पुं०) गोविष्ठा, गोबर।
गोमुखी–(सं० स्त्री०) माला रखकर जप करने की थैली।
गोमेध–(सं०पुं०) गो-यज्ञ, एक यज्ञ जिसमें गो-मांस का हवन होता था।
गोरखधंधा–(हिं० पुं०) अनेक तारों, कड़ियों या काठ के टुकड़ों का समूह, झगड़े या उलझन का कार्य।
गोरस–(सं० पुं०) गाय का दूध, दही, मठा, छाछ।
गोरसी–(सं० स्त्री०) दूध गरम करने की अँगीठी।
गोरा–(हिं० वि०) गौरवर्ण, श्वेत और स्वच्छ रंग का (मनुष्य), यूरोप, अमेरिका आदि का निवासी।
गोराई–(हिं०स्त्री०) गोरापन, सुन्दरता।
गोरू–(हिं०पुं०) सींगवाले पशु, चौपाया।
गोरोचन–(सं० पुं०) एक प्रकार का पीला द्रव्य जो गौ के पित्त में से निकलता है।
गोलंबर–(हिं० पुं०) गुंबद, गोलाई।
गोल–(सं० पुं०) वर्तुलाकार पदार्थ, गोलाध्याय नामक ग्रन्थ, वृत्त; (पुं०) गोलाकार पिण्ड, सब ओर वर्तुल।
गोलक–(सं० पुं०) गोल पिण्ड, आँख का ढेला, प्रतिदिन की आय का धन रखने की थैली, गुल्लक। गोलगप्पा–(हिं० पुं०) एक तरह का खान का पदार्थ जो खटाई के रस में डुबाकर खाया जाता है।
गोलमाल–(हिं०पुं०) अव्यवस्था, गड़बड़ी।
गोलयन्त्र–(सं० पुं०) ग्रह नक्षत्र आदि की गति जानने का यन्त्र विशेष।
गोला–(हिं० पुं०) किसी पदार्थ का वर्तुलाकार पिण्ड, तोप का गोला, नारियल की गरी, अन्न आदि रखने का गोदाम, घास का गट्ठर, किराने की मण्डी, छाजन करने का लंबा लट्ठा, सूत आदि की लपेटी हुई पिण्डी।
गोलार्ध–(सं० पुं०) पृथ्वी का आधा भाग जो उसको एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक बीचोबीच काटने से बनता है।
गोली–(हिं० स्त्री०) वटिका, बटिया, लड़कों के खेलने का काँच या मिट्टी का छोटा गोलाकार पिण्ड, बंदूक में भरकर छोड़ने का सीसे का ढला हुआ छोटा गोल पिण्ड।
गोलोक–(सं० पुं०) परमधाम।
गोलोचन–(हिं० पुं०) देखो गोरोचन।
गोविन्द–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
गोशाला–(सं० स्त्री०) गौ के रहने का स्थान।

गोष्ठ–(सं० पुं०) गोशाला, गोष्ठी, परामर्श, मण्डली ।
गोष्ठी–(सं० स्त्री०) सभा, वार्तालाप, परामर्श मण्डली ।
गोसाईं–(हिं० पुं०) गोस्वामी, जिसने इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया,हो, साधु, मालिक, प्रभु ।
गोसयाँ–(हिं०पुं०)मालिक, प्रभु, ईश्वर।
गोह–(हिं० स्त्री०) छिपकली की जाति का एक जंगली जन्तु।
गोहरा–(हिं० पुं०)सुखाया हुआ गोबर जो जलाने के काम में आता है।
गोहराना–(हिं०क्रि०)पुकारना, बुलाना।
गोहरौर–(हिं०पुं०)पथे हुए कंडों का ढेर।
गोहार–(हिं० स्त्री०) पुकार, दोहाई ।
गोहुवन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का विषधर सर्प, कृष्णसर्प।
गौं–(हिं० स्त्री०) सुयोग, दाँव, घात, प्रयोजन, ढंग, पक्ष ।
गों–(सं० स्त्री०) गाय, गैया ।
गौख–(हिं० स्त्री०) खिड़की, झरोखा ।
गौखा–(हिं०पुं०)झरोखा, अरवा,आला ।
गौखी–(हिं० स्त्री०) जूता ।
गौण–(सं० वि०) अप्रधान, अमुख ।
गौदुमा–(हिं० वि०) गाय की पूँछ के आकार का ।
गौन–(हिं० पुं०) देखो गमन ।
गौनहारिन, गौनहारी–(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका गाने का व्यवसाय हो ।
गौना–(हिं० पुं०) द्विरागमन ।
गौर–(सं० वि०) उज्ज्वल; (वि०) स्वच्छ, निर्मल ।
गौरता–(सं० स्त्री०) गोराई, गोरापन।
गौरव–(सं० पुं०) सम्मान, आदर ।
गौरवित–(सं० वि०) पूज्य, आदरणीय।
गौरांग–(सं० वि०)गोरे शरीरवाला ।

गौरिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का बना हुआ छोटा हुक्का ।
गौरी–(सं० स्त्री०) गोरी स्त्री, पार्वती, आठ वर्ष की कन्या ।
गौरैया–(हिं० स्त्री०) गौरिया, चटक ।
ग्यान–(हिं० पुं०) देखो ज्ञान ।
ग्यारस–(हिं० स्त्री०) एकादशी तिथि ।
ग्यारह–(हिं०वि०)दश और एक; (पुं०) दस और एक की संख्या, ११।
ग्रन्थ–(सं० पुं०) शास्त्र, पुस्तक, सिक्खों का धर्मशास्त्र ।
ग्रन्थालय–(सं० पुं०) पुस्तकालय ।
ग्रन्थि–(सं० स्त्री०) गाँठ, बन्धन ।
ग्रस–(हिं० पुं०) छल, छिद्र ।
ग्रसन–(सं० पुं०) भक्षण, निगलना, पकड़ । ग्रसना–(हिं० क्रि०) कष्ट देना, पकड़ना । ग्रस्त–(सं० वि०) भक्षित, पीड़ित, पकड़ा हुआ । ग्रस्तास्त–(सं० पुं०) ग्रहण लगने पर सूर्य या चन्द्रमा का बिना मोक्ष हुए अस्त होना । ग्रस्तोदय–(सं० पुं०) चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगा हुआ उदय होना।
ग्रह–(सं० पुं०)सूर्य की परिक्रमा करनेवाला तारा । ग्रहकक्षा–(स्त्री०) वह वृत्ताकार पथ जिस पर ग्रह भ्रमण करता है ।
ग्रहण–(सं० पुं०) स्वीकार, मंजूरी, ज्ञान, समझ, आदर, राहु द्वारा सूर्य या चन्द्र का आच्छादन ।
ग्रहणी–(सं० स्त्री०)एक प्रकार का रोग जिसमें खाया हुआ अन्न नहीं पचता ज्यों का त्यों निकल जाता है।
ग्रहदशा–(सं० पुं०) ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था, अभाग्य ।

ग्राम–(सं० पुं०) गाँव, छोटी बस्ती, ढेर, समूह, संगीत में सातों स्वरों का समूह,सप्तक। ग्रामीण–(हिं०वि०) देहाती, गँवार ।
ग्राम्य–(सं० वि०) ग्राम संबंधी, प्राकृत।
ग्रास–(सं० पुं०) कौर, पकड़, सूर्य या चन्द्र ग्रहण लगना, तृण, घास ।
ग्रासना–(हिं० क्रि०) पकड़ना, घेरना, निगलना, कष्ट देना ।
ग्राह–(सं० पुं०) ग्रहण, पकड़, मगर, घड़ियाल, आग्रह ।
ग्राहक–(सं० वि०) ग्रहण करनेवाला, मोल लेनेवाला, चाहनेवाला ।
ग्रीखम–(हिं० पुं०) देखो ग्रीष्म ।
ग्रीवा–(सं० स्त्री०)कन्धा, गरदन,गला।
ग्रीष्म–(सं०पुं०)गरमी का ऋतु, गरम।
ग्रैवेयक–(सं०पुं०) हार, माला, हँसुली।
ग्लपित–(सं० वि०) लज्जित, दग्ध ।
ग्लानि–(सं० स्त्री०) खिन्नता, अरुचि।
ग्वाल–(हिं०पुं०) गोप, ग्वाल, अहीर।

घ

घ–हिन्दी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चतुर्थ वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है ।
घँघोरना, घँघोलना–(हिं० क्रि०)हिला-कर घोलना ।
घंट–(हिं० पुं०)घड़ा, घंटा, मृतक-क्रिया के संबंध में जो घड़ा पीपल के वृक्ष में बाँधा जाता है ।
घंटा–(हिं० पुं०) अढ़ाई घड़ी का समय, बड़ी घंटी ।
घंटाघर–(हिं० पुं०)वह ऊँचा घर जिस पर चारों ओर से देख पड़नेवाली धरम घड़ी लगी हो जिसका घंटा दूर तक सुनाई पड़ता हो । घंटी–(हिं० स्त्री०) छोटा घंटा, लोटिया, जीभ की जड़ के पास लटकती हुई मांस की छोटी ग्रन्थि, कौवा ।
घ–(सं० पुं०) घण्टा, घर्घर शब्द, वर्ष, साल ।
घई–(हिं०स्त्री०)चक्कर; (वि०)अथाह।
घकार–(सं० पुं०) "घ" अक्षर ।
घघरा–(हिं० पुं०) स्त्रियों का लँहगा।
घट–(सं० पुं०)मिट्टी का पात्र, घड़ा।
घटक–(सं० पुं०) मध्यस्थ, बिचवई ।
घटकार–(सं० पुं०)कुम्भकार, कोंहार ।
घटती–(हिं० स्त्री०) न्यूनता, कमी ।
घटन–(सं० पुं०) योजना, सम्मेलन ।
घटना–(हिं० क्रि०) उपस्थित होना, ठीक से बैठना, मेल में होना, मेल में मिल जाना,कम होना, पर्याप्त न होना; (स्त्री०) अकस्मात् किसी बात का होना, दैवगति ।
घटवाई–(हिं० स्त्री०) कम करवाई ।
घटवार–(हिं०पुं०) घाट का कर लेने-वाला, मल्लाह ।
घटहा–(हिं०पुं०)घाट का ठेकेदार, एक पार से दूसरे पार जानेवाली नाव ।
घटा–(सं० स्त्री०) समूह, झुण्ड, उमड़ते हुए मेघों का समूह ।
घटाटोप–(सं० पुं०)आडम्बर, पाखण्ड, ओहार, चारों ओर से घिरी हुई बादलों की घटा ।
घटाना–(हिं० क्रि०) न्यून करना, कम करना। घटाव–(हिं०पुं०)न्यूनता,कमी।
घटिका यन्त्र–(सं० पुं०) समय बतलाने का यन्त्र ।
घटित–(सं० वि०) रचित, निर्मित ।
घटिया–(हिं० वि०) कम मूल्य का, सस्ता, तुच्छ, नीच, अधम ।

घटी–(सं० स्त्री०) घड़ी, चौबीस मिनट का काल, समय-सूचक यन्त्र, छोटा घड़ा, गगरी; (हिं० स्त्री०) न्यूनता, कमी, घाटा, हानि ।
घट्ठा–(हिं० पुं०)शरीर पर का उभड़ा हुआ चिह्न जो रगड़ लगने से पड़ जाता है ।
घड़घड़–(हिं० पुं०) घड़घड़ाहट, बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द ।
घड़घड़ाना–(हिं०क्रि०)घड़घड़ शब्द होना
घड़नैल–(हिं० पुं०)बाँस में घड़ा बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिस पर चढ़कर छोटी नदी पार हो सकती है ।
घड़ा–(हिं० पुं०) मिट्टी का गगरा, गगरी ।
घड़िया–(हिं० स्त्री०) सोना चाँदी गलाने का सुनार का पात्र, मिट्टी का छोटा पात्र ।
घड़ियाल–(हिं० पुं०) घण्टा, एक हिंस्र जलजन्तु, ग्राह ।
घड़ी–(हिं० स्त्री०)समय बतलानेवाला यन्त्र, समय, काल, अवसर, चौबीस मिनट का समय ।
घड़ौंची–(हिं० स्त्री०) भरा हुआ जल का घड़ा रखने की तिपाई ।
घतिया–(हिं० वि०) धोखा देनेवाला ।
घतियाना–(हिं० क्रि०) अपने दाँव या घात में लाना, चुराना, छिपाना ।
घन–(सं० पुं०) मेघ, समूह, विस्तार, लुहार का गरम लोहा पीटने का बड़ा हथौड़ा, काँसे का बाजा, पिण्ड, शरीर, तीन अंकों का गुणनफल, लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई का विस्तार; (वि०) ठोस, घना, गझिन, अधिक ।
घनकोदण्ड–(सं० पुं०) इन्द्रधनुष ।
घनकारा–(हिं० वि०) गरजनेवाला ।
घनक्षेत्र–(सं० पुं०) वह क्षेत्र जिसकी लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई बराबर हो।
घनघनाना–(हिं० क्रि०) घंटे के समान शब्द करना या होना ।
घनघनाहट–(हिं०स्त्री०)घनघन का शब्द ।
घनघोर–(हिं०पुं०) घनघनाहट; (वि०) बहुत घना । घनघोर घटा–काली-काली घटा ।
घनचक्कर–(हिं० पुं०) चंचल बुद्धि का मनुष्य, मूढ़, मूर्ख ।
घनतिमिर–(सं० पुं०)गहरा अन्धकार।
घननाद–(सं० पुं०) गरज ।
घनप्रिय–(सं० पुं०) मयूर, मोर ।
घनफल–(सं० पुं०) लंबाई, चौड़ाई और मोटाई, गहराई या ऊँचाई तीनों का गुणनफल, वह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो ।
घनमूल–(सं० पुं०)गणित में किसी घन राशि का मूल अंक यथा ६४ का घनमूल ४ है ।
घनवाही–(हिं०स्त्री०)तपे हुए लोहे को घन से पीटने का काम ।
घनश्याम–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण; (वि०) मेघ के समान काला ।
घना–(हिं० वि०) सघन, गझिन, घनिष्ठ, अधिक ।
घनात्मक–(सं० वि०) जिसकी लंबाई, चौड़ाई तथा मोटाई, ऊँचाई या गहराई समान हो ।
घनिष्ठ–(सं० वि०) घना, गाढ़ा, बहुत अधिक ।
घने–(हिं० वि०)अनेक, बहुत । घनेरा–अतिशय, बहुत, अगणित, अत्यन्त ।
घनोपल–(सं० पुं०) ओला, बिनौला ।
घपला–(हिं० पुं०) गड़बड़, गोलमाल ।

घबड़ाना, घबराना–(हि० क्रि०) व्यग्र होना, उद्विग्न होना ।
घबड़ाहट–(हि०स्त्री०) अशान्ति, उद्विग्नता
घमंका–(हि० पुं०) घूंसा, मुक्का ।
घमंड–(हि० पुं०) गर्व, अहंकार ।
घमंडी–(हि० वि० स्त्री० घमंडिन) अहंकारी, अभिमानी ।
घम–(हि० पुं०) कोमल वस्तु पर कड़ा आघात पड़ने का शब्द । घमकना–(हि० क्रि०) गंभीर शब्द होना, घूंसा मारना, गरजना ।
घमरौल–(हि०स्त्री०) ऊधम, उपद्रव ।
घमासान–(हि० पुं०) गहरी लड़ाई, भयंकर युद्ध; (वि०) प्रचण्ड, भयंकर ।
घर–(हि० पुं०) गृह, स्वदेश, जन्मभूमि, वंश, कार्यालय, छिद्र, छेद, गृहस्थी, उत्पादक ।
घरउ–(हि० वि०) निज का, अपना ।
घरघराना–(हि० क्रि०) घरघर्र शब्द करना; (पुं०) परिवार, कुटुम्ब, वंश ।
घरघराहट–घरघर शब्द ।
घरघाल, घरघालन–(हि० वि०) परिवार का नाश करनेवाला ।
घरजाया–(हि० स्त्री०) घर का दास ।
घरदासी–(हि० स्त्री०) गृहिणी, भार्या, पत्नी ।
घरद्वार–(हि०पुं०) ठौर, ठिकाना, गहस्थी ।
घरनी–(हि० स्त्री०) घरवाली, गृहिणी ।
घरपत्ती–(हि० स्त्री०) बेहरी, अंशदान ।
घरबारी–(हि० पुं०) गृहस्थ, कुटुम्बी ।
घराऊ–(हि०वि०) गृहसम्बन्धी, निजी ।
घराती–(हि० पुं०) विवाह में कन्या के पक्ष के मनुष्य ।
घराना–(हि० पुं०) वंश, कुल ।
घरिया–(हि० स्त्री०) देखो घड़िया ।
घरी–(हि० स्त्री०) घड़ी, तह, परत ।
घरीक–(हि० क्रि० वि०) घड़ी भर, थोड़ी देर तक ।
घरू–(हि०वि०) गृहस्थी, सम्बन्धी, घर का ।
घरेलू–(हि० वि०) घर में रहनेवाला, पलुआ, पालतू, घर का, निज का ।
घरौंदा-घरौंधा–(हि० पुं०) छोटे बच्चों के खेलने का कागज, मिट्टी, लकड़ी आदि का बना हुआ छोटा घर ।
घर्घर–(सं० पुं०) घरघराहट का शब्द ।
घर्म–(सं० पुं०) आतप, धूप, घाम । घर्मबिन्दु–पसीना । घर्मांशु–सूर्य ।
घर्राटा–(हि० पुं०) गहरी नींद में साँस लेने का शब्द ।
घर्षण–(सं० पुं०) रगड़, घिस्सा ।
घलना–(हि०क्रि०) फेंका जाना, गिरपड़ना
घलुआ–(हि० पुं०) परिमाण से अधिक वस्तु जो ग्राहक को (तौल से अधिक) दी जाय ।
घसकना–(हि० क्रि०) देखो खिसकना ।
घसना–(हि० क्रि०) रगड़ना, घिसना ।
घसिटना–(हि०क्रि०) रगड़ते हुए खींचना
घसियारा–(हि०पुं०, स्त्री० घसियारिन) घास छीलनवाला, घास बेचनेवाला ।
घसीट–(हि० स्त्री०) जल्दी लिखने का। काम, जल्दी में लिखा हुआ लेख ।
घसीटना–(हि० क्रि०) रगड़ खाते हुए खींचना, जल्दीसे लिखकर कामचालूकरना
घस्सा–(हि० पुं०) घिस्सा, रगड़ ।
घाँघरा–(हि० पुं०) घाघरा, लहँगा ।
घाँटी–(हि० स्त्री०) गले के भीतर की घंटी । (कौआ) ।
घाइँ–(हि०स्त्री०) ओर, सन्धि, बार ।
घाई–(हि० स्त्री०) चोट, छल, धोखा, आघात ।
घाऊघप–(हि०वि०) गुप्त रूप से किसी का धन हरण करनेवाला ।

घाए–(हि० अव्य०) ओर।
घाघ–(हि० पुं०) अति चतुर मनुष्य।
घाघरा–(हि० पुं०) स्त्रियों का लहँगा।
घाट–(हि० पुं०) नदी आदि का वह स्थान जहाँ लोग नहाते धोते या नाव पर चढ़ते हैं, पहाड़ी स्थान, दिशा, डीलडौल, रीति, तलवार की धार, बुराई, छल, कपट; (वि०) कम, थोड़ा; (हि० स्त्री०) हीनता, अप्रतिष्ठता।
घाटा–(हि० पुं०) हानि, घटी।
घाटिया–(हि० पुं०) घाटों पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण, गंगापुत्र।
घाटी–(हि० स्त्री०) पर्वतों के बीच की भूमि, पहाड़ का ढालुआ स्थान, दर्रा।
घात–(हि० पुं०) धक्का, प्रहार, चोट, गणित में गुणनफल, दाँव, ताक।
घातक–(सं० वि०) हत्यारा, शत्रु।
घातिक–(हि० पुं०) घातक, हत्यारा।
घाती–(सं० पुं०) मारनेवाला, घातक, हत्यारा, संहारक।
घान–(हि० पुं०) जितनी वस्तु एक बार कोल्हू या चक्की में डाली जाती है, अथवा पकाई जाती है।
घाना–(हि० क्रि०) मारना, नाश करना, पकड़ना।
घानी–(हि० स्त्री०) देखो घान, समूह, ढेर।
घाम–(हि० पुं०) आतप, धूप।
घामड़–(हि० वि०) मूर्ख, आलसी।
घाय–(हि० पुं०) देखो घाव।
घायक–(हि० वि०) नाश करनेवाला।
घालक–(हि० पुं०) नाश करनेवाला।
घालना–(हि० पुं०) गिराना, डालना, रखना, फेंकना, बिगाड़ना।
घालमेल–(हि० पुं०) अनेक प्रकार की वस्तुओं की एक साथ मिलावट।
घाव–(हि० पुं०) शरीर का वह स्थान जहाँ पर चोट लगी हो या कट गया हो, क्षत।
घास–(सं० स्त्री०) भूमि पर उगनेवाला छोटा तृण, पशुओं का चारा।
घिग्घी–(हि० स्त्री०) रोते-रोते साँस लेने में रुकावट होना, हिचकी। घिघियाना–(हि० क्रि०) गिड़गिड़ाना।
घिचपिच–(हि० क्रि०) स्थान की संकीर्णता; (वि०) अस्पष्ट।
घिन–(हि० स्त्री०) घृणा, अरुचि।
घिनाना–(हि० क्रि०) घृणा करना।
घिनौना, घिनावना–(हि० वि०) घृणित, घिनौना।
घिरत–(हि० पुं०) देखो घृत, घी।
घिरना–(हि० क्रि०) चारोंओरसे घेरा जाना
घिरनी–(हि० स्त्री०) गराड़ी, चक्कर।
घिराई–(हि० स्त्री०) घेरने की क्रिया।
घिराव–(हि० पुं०) घेरने का काम, घेरा।
घिरौंची–(हि० स्त्री०) देखो घिड़ौंची।
घिराना–(हि० क्रि०) घिसना, रगड़ना।
घिर्राना–(हि० क्रि०) घसीटना।
घिर्री–(हि० स्त्री०) देखो घिरनी।
घिसकना–(हि० क्रि०) सरकना, खसकना।
घिसघिस–(हि० स्त्री०) गड़बड़ी।
घिसटना–(हि० क्रि०) घसीटा जाना।
घिसन–(हि० स्त्री०) रगड़। घिसना–(हि० क्रि०) रगड़ना।
घिसपिस–(हि० स्त्री०) मेलजोल।
घिसवाना–(हि० क्रि०) रगड़वाना।
घिसाई–(हि० स्त्री०) घिसने की क्रिया।
घिस्सा–(हि० पुं०) रगड़, धक्का, ठोकर।
घींच–(हि० स्त्री०) घींचने का कार्य।
घी–(हि० पुं०) घृत, तपाया हुआ मक्खन।
घीकुवाँर–(हि० वि०) ग्वारपाठा।
घीसा–(हि० पुं०) देखो घिस्सा।
घुंघची–(हि० स्त्री०) गुञ्जा, गुंजिका।

घुंघनी–(हिं०स्त्री०)तेल या घी में तला हुआ, भिगाया हुआ अन्न।
घुंघरारे, घुंघराले–(हिं०वि०)घूंघरुवा, छल्लेदार (बल खाये हुए) बाल।
घुंघरू–(हिं० पुं०) धातु की बनी हुई पीली गुरिया जिसके परस्पर टकराने से घुनघुन शब्द होता है।
घुंडी–(हिं० स्त्री०)कपड़े का बना हुआ मटर के समान गोल बटन, बाजू।
घुग्घी–(हिं० स्त्री०) तिकोना लपेटा हुआ कम्बल जिसको किसान लोग जाड़ से बचने के लिये सिर से ओढ़ते हैं, घोघी।
घुग्घू, घुघुआ–(हिं० पुं०) उल्लू, घुग्घू।
घुघआना–(हिं०क्रि०)उल्लूकी तरह बोलना
घुघरी–(हिं० स्त्री०) देखो घुंघनी।
घुटकना–(हिं० क्रि०) निगल जाना।
घुटकी–(हिं० स्त्री०) गले की वह नली जिसके द्वारा पेट में खाना पानी जाता है।
घुटना–(हिं० पुं०) टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ, फँसना, रुकना, कड़ा पड़ना, रगड़कर चिकना करना, मित्रता होना।
घुटन्ना–(हिं०पुं०)घुटने तक का पायजामा।
घुटवाना–(हिं०क्रि०) बाल मुड़वाना।
घुटाई–(हिं० स्त्री०) घोटने या रगड़ने का काम।
घुट्टी–(हिं०स्त्री०)छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाई जानेवाली औषधि।
घुड़कना–(हिं० क्रि०) डाँटना, डपटना।
घुड़की–(हिं० स्त्री०) डाँट-डपट।
घुड़चढ़ा–(हिं०पुं०) अश्वारोही। घुड़दौड़–(हिं०स्त्री०)घोड़ों की दौड़,घोड़ा दौड़ने का स्थान। घुड़सुँहा–(हिं०पुं०) लम्बे मद्दे मुखवाला मनुष्य। घुड़साल–(हिं० स्त्री०) घोड़ों को बांधने का स्थान।
घुड़िया–(हिं० स्त्री०) देखो घोड़िया।
घुड़कना–(हिं० क्रि०) देखो घुड़कना।
घुण–(सं० पुं०) घुन।
घुन–(हिं० पुं०) छोटा कीड़ा जो अन्न, लकड़ी आदि में लगता है।
घुनघुना–(हिं० पुं०) देखो झुनझुना।
घुनना–(हिं० क्रि०) घुन से लकड़ी आदि का खाया जाना, भीतर ही भीतर क्षय होना।
घुन्ना–(हिं०वि०)मन में बुरा माननेवाला।
घन्नी–(हिं० वि०) नन्हीं, छोटी।
घुप–(हिं० वि०) गहरा (अन्धकार)।
घुमँडना–(हिं०क्रि०) बादलों का मँड़राना।
घुमची–(हिं० स्त्री०) गुञ्जा, घुंघची।
घुमटा–(हिं०पुं०)सिर में चक्कर आना।
घुमड़–(हिं० स्त्री०) बरसनेवाले बादलों का घेरना।
घुमना–(वि०) अधिक घूमनेवाला, घुमक्कड़।
घुमरी–(हिं०स्त्री०)भँवर, चक्कर, घुमड़ी।
घुमाना–(हिं०क्रि०)चक्कर देना,टहलना।
घुमाव–(हिं० पुं०) घूमने का कार्य।
घुरकना–(हिं० क्रि०) देखो घुड़कना।
घुरघुरा–(हिं० पुं०) झींगुर।
घुरघुराना–(हिं०क्रि०) कण्ठ से घुरघुर शब्द निकलना।
घुर्मित–(हिं० वि०) घूमता या चक्कर खाता हुआ।
घुलना–(हिं०क्रि०) तरल पदार्थ का किसी वस्तु से मिल जाना, गलना।
घुलाना–(हिं० क्रि०) गलाना, शरीर दुर्बल करना, मुख में रखकर रस चुभलाना, कोमल करना।
घुवा–(हिं० पुं०) देखो घूआ।
घुसना–(हिं० क्रि०) प्रवेश करना, चुभना, धँसना।

घूंघट–(हिं० पुं०) वस्त्र का वह भाग जिससे स्त्रियाँ अपना मुख ढाँप लेती हैं।
घूंघर–(हिं० पुं०) बालों में पड़े हुए मरोड़ या छल्ले।
घूंट–(हिं० पुं०) पानी, दूध इत्यादि द्रव पदार्थ का उतना अंश जो एक बार गले से नीचे उतारा जाय।
घूंटी–(हिं० स्त्री०) बच्चों का पाचन सुधारने की औषधि।
घूंस–(हिं० स्त्री०) उत्कोच, घूस।
घूंसा–(हिं०पुं०) बँधी हुई मुट्ठी, डुक।
घूआ–(हिं० पुं०) मूँज सरकंडे आदि का रूई की तरह का फल, एक प्रकार का कीड़ा, रोवाँ।
घूक–(हिं०पुं०) उल्लू पक्षी, रुरुवा।
घूघू–(हिं० पुं०) देखो घुग्घू।
घूटना–(हिं० क्रि०) साँस रोकना।
घूमना–(हिं० क्रि०) इधर उधर फिरना, चक्कर लगाना।
घूर–(हिं० पुं०) कूड़ा-करकट।
घूरना–(हिं० क्रि०) आँख गड़ाकर बार-बार बुरी दृष्टि से देखना।
घूस–(हिं०पुं०) उत्कोच।
घृत–(हिं० पुं०) घी, घीव।
घेंट–(हिं० पुं०) ग्रीवा, गरदन।
घेंटा–(हिं०पुं०) सुअर का छोटा बच्चा।
घेतल, घेतला–(हिं०पुं०) महाराष्ट्री जूता।
घेर–(हिं० पुं०) चारों ओर का फलाव।
घेरघार–(हिं० पुं०) विस्तार, अनुरोध।
घेरना–(हिं० क्रि०) चारों ओर से छेंकना, बाँधना, रोकना, विनय करना।
घेरा–(हिं० पुं०) चारों ओर की सीमा, फलाव, मण्डल, घिरा हुआ स्थान।
घेवर–(हिं० पुं०) एक प्रकार की मिठाई
घोंघा–(हिं०पुं०) शंख के आकार का एक कीड़ा जो जलाशयों में पाया जाता है।
घोंचवा, घोंचा–(हिं०पुं०) स्तबक, गुच्छा।
घोंट–(हिं० पुं०) घोंटने का काम।
घोंटना–(हिं० क्रि०) पानी दूध इत्यादि को थोड़ा थोड़ा करके गले के नीचे उतारना।
घोंपना–(हिं० क्रि०) गड़ाना, धँसाना।
घोंसला–(हिं०पुं०) नीड़, खोंता।
घोंकना–(हिं० क्रि०) पाठ को याद करने के लिये उसको बारंबार दोहराना।
घोट, घोटक–(सं० पुं०) अश्व, घोड़ा।
घोटना–(हिं०क्रि०) सिल पर बट्टे से रगड़ देना, चमकाना, अभ्यास करना, रटना, मूड़ना, गला मरोड़ना; (पुं०) घोंटने का औजार। घोटनी–(हिं०स्त्री०) घोंटने की कोई छोटी वस्तु।
घोटवाना–(हिं० क्रि०) रगड़वाना, सिर या दाढ़ी के बाल मुड़वाना।
घोटाई–(हिं० स्त्री०) घोंटने की क्रिया या शुल्क।
घोटाला–(हिं० पुं०) गड़बड़, उपद्रव।
घोटू–(हिं० वि०) घोटनेवाला।
घोड़चढ़ा, घोड़दौड़–देखो घुड़चढ़ा, घुड़दौड़।
घोड़ा–(हिं०पुं०) घोटक, अश्व, बंदूक में गोली चलाने का खटका, शतरंज का एक मोहरा।
घोड़िया–(हिं० पुं०) भीत में लगाई हुई खूंटी, बिराकट।
घोड़ी–(हिं० स्त्री०) मादा घोड़ा।
घोर–(सं० वि०) भयंकर, घना, कठिन, दुर्गम, अत्यन्त; (स्त्री०) गरज।
घोरी–(हिं० स्त्री०) घोड़ी।
घोल–(हिं० पुं०) घोलकर बनाया हुआ पदार्थ, मट्ठा। घोलना–(हिं० क्रि०) किसी द्रव पदार्थ में कोई वस्तु हिलाकर मिलाना।

घोष–(सं० पुं०) अहीरों की बस्ती, गोशाला ।
घोषणा–(सं०स्त्री०)ऊँचे स्वर से सूचना, मुनादी, डुग्गी, ध्वनि, आवाज ।
घोसी–(हिं० पुं०) अहीर, ग्वाला ।
घोद, घौर–(हिं० पुं०)फलों का गुच्छा ।
घ्राण–(सं० स्त्री०) सूंघने की शक्ति, सुगन्ध, नाक ।

ङ

ङ–व्यंजन वर्ण का पाँचवाँ तथा कवर्ग का अन्तिम वर्ण, इसका उच्चारण कण्ठ और नासिका से होता है ।
ङ–(सं०पुं०) घ्राण शक्ति, सुगन्ध, गौरव, महत्त्व, गन्ध ।

च

च–हिन्दी वर्णमाला का बाईसवाँ अक्षर तथा छठवाँ व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान तालु है ।
च–(सं० पुं०) कछुवा, चन्द्रमा ।
चंक–(हिं०वि०)पूर्ण, पूरा, समस्त, समूचा
चंक्रमण–(सं० पुं०) टहलना ।
चंग–(फा० स्त्री०) एक छोटा बाजा जो डफ के आकार का होता है ।
चंगना–(हिं० क्रि०) कष्ट देना ।
चंगा–(हिं० वि०) आरोग्य, स्वस्थ ।
चंगु, चंगुल–(हिं०पुं०) पकड़, पशुओं या पक्षियों का पंजा, अँगुलियों की पकड़ ।
चंगेर, चंगेरी–(हिं०स्त्री०)बाँस की बनी हुई छिछली चौड़ी टोकरी ।
चंचरी–(हिं० स्त्री०) पानी का भंवर, होली में गाने का एक गीत ।
चंचलताई, चंचलाई–(हिं० स्त्री०) चपलता, चंचलता ।
चंचा–(हिं० स्त्री०) पक्षियों के डरान के लिये खेतों में रक्खा हुआ पुतला ।
चँचोरना–(हिं० क्रि०) चूसना ।
चंट–(हिं० वि०) धूर्त, चतुर ।
चंटाई–(हिं० स्त्री०) शीघ्रता, अत्याचार ।
चंडाई–(हिं० स्त्री०) उतावलापन ।
चंडाल–(हिं० पुं०) श्वपच, डोम ।
चंडावल–(हिं० पुं०) सेना के पीछे का भाग, वीर योधा, पहरेदार, चौकीदार ।
चंडाह–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा वस्त्र ।
चंडू–(हिं० पुं०) एक मादक पदार्थ जो तमाखू की तरह चिलम पर रखकर पिया जाता है ।
चंदक–(हिं० पुं०) चन्द्रमा, चाँद, अर्धचन्द्राकार गहना जो माथे पर पहिना जाता है ।
चंदला–(हिं० वि०) खल्वाट, गंजा ।
चंदवा–(हिं० पुं०) सिंहासन या गद्दी के ऊपर लगाया हुआ छोटा मण्डप, गोलाकार चकती ।
चँदिया–(हिं० स्त्री०) कपाल का मध्य भाग, खोपड़ी ।
चंपई–(हिं०वि०)चंपा के रंग का पीला ।
चंपत–(हिं० वि०) अन्तर्धान ।
चँपना–(हिं० क्रि०) भार से दबना, लज्जित होना ।
चंपाकली–(हिं०स्त्री०) गले का एक आभूषण ।
चंबु–(हिं० पुं०) एक प्रकार का धान, टोंटीदार छोटा गड़ुआ, झारी ।
चँवर–(हिं० पुं०) चमर, घोड़े हाथी के सिर पर लगाने की कलँगी, फुँदना, झालर ।
चउ–(हिं०) उपसर्ग जो "चौ" के बदले अनेक शब्दों में प्रयुक्त होता है ।

चउहट–(हिं० पुं०) चौहट्टा, चौराहा।
चउतरा–(हिं० पुं०) देखो चबूतरा।
चक–(हिं० पुं०) चकई नाम का लड़कों का खिलौना, चकवा पक्षी, भूमि का बड़ा टुकड़ा, पट्टी, गाँव, अधिकार; (वि०) अधिक व्यग्र; (पुं०) चोटी में बाँधने का सोने का चक्र।
चकई–(हिं० स्त्री०) घिरनी के आकार का एक खिलौना।
चकचकाना–(हिं० क्रि०) किसी द्रव पदार्थ का रसकर बाहर निकलना।
चकचाल–(हिं० पुं०) चक्कर, भ्रमण।
चकचून–(हिं०वि०) चूर्ण किया हुआ।
चकचूरना–(हिं०क्रि०) चूर चूर करना।
चकचौंध–(हिं० पुं०) देखो चकाचौंध।
चकती-(हिं० स्त्री०) पट्टी, धज्जी।
चकत्ता–(हिं०पुं०) चमड़े के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन।
चकनाचूर–(हिं० वि०) टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, अति श्रान्त।
चकपक, चकबक–(हिं० वि०) चकित।
चकपकाना–(हिं०क्रि०) भौंचक्क होना।
चकरा–(हिं० वि०) फैला हुआ।
चकराना–(हिं० क्रि०) घूमना, चकित होना, भूलना, व्यग्र होना, घबड़ाना।
चकरानी–(हिं० स्त्री०) दासी।
चकरी–(हिं० स्त्री०) दाल दरने या आटा पीसने की चक्की।
चकला–(हिं० पुं०) पत्थर या काठ का गोल चिकना पटरा जिस पर रोटी बेली जाती है, चौका, जिला।
चकलेदार–(हिं० पुं०) किसी प्रान्त का अधिकारी।
चकवा–(हिं० पुं०) चक्रवाक पक्षी।
चका–(हिं०पुं०) चाक, पहिया, चक्का।
चकाचक–(हिं० स्त्री०) निरन्तर प्रहार का शब्द; (क्रि०वि०) भरपूर, पेट भर।
चकाचौंध–(हिं० स्त्री०) तीव्र प्रकाश के कारण आँखों का झिपना, तिलमिलाहट।
चकाना–(हिं० क्रि०) चकराना, चकपकाना।
चकार–(सं० पुं०) वर्णमाला का 'च' अक्षर।
चकित–(सं०वि०) विस्मित, आश्चर्ययुक्त।
चकोटना–(हिं०क्रि०) चुटकी से काटना।
चकोतरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का खटमीठा जंभीरी नीबू।
चकोता–(हिं० पुं०) देखो चकत्ता।
चकोर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर।
चकोरी–(हिं० स्त्री०) मादा चकोर।
चकोह–(हिं० पुं०) पानी में का भँवर।
चकौंध–(हिं० स्त्री०) देखो चकाचौंध।
चक्कर–(हिं० पुं०) गोल घेरा, पहिये का भ्रमण, घुमाव, पहिये का केन्द्र पर घूमना, जटिलता, सिर घूमना, पानी का भँवर, व्यग्रता।
चक्कव–(हिं०वि०) चक्रवर्ती (राजा)।
चक्का–(हिं०पुं०) पहिये के आकार की कोई वस्तु, ईंट या पत्थर का बड़ा चिपटा टुकड़ा। **चक्की**–(हिं० स्त्री०) दाल दरने या आटा पीसने का यन्त्र, जाँता, पैर के घुटने की गोल हड्डी।
चक्कू–(हिं० पुं०) देखो चाकू।
चक्र–(सं० पुं०) पहिया, जाँता, चाक, वर्तुलाकार कोई वस्तु, पहिये के आकार का लोहे का एक अस्त्र, जल का भँवर, बवंडर, मंडली, समूह, प्रदेश, राज्य, घेरा, घुमाव, चक्कर। **चक्रगोसा**–(हिं० पुं०) राज्यरक्षक, सेनापति।

चक्रदंष्ट्र–(सं० पुं०) शूकर, सुअर।
चक्रपाद–(सं० पुं०) गाड़ी, रथ।
चक्रपाल–(सं०पुं०) सूबेदार, चकलेदार।
चक्रवर्ती–(सं० वि०) सार्वभौम राजा।
चक्रवाक–(सं० पुं०) चकवा पक्षी।
चक्रवात–(सं० पुं०) चक्कर खानेवाली वेग की हवा, बवंडर।
चक्रवृद्धि–(सं० स्त्री०) ब्याज को मूल में जोड़कर उस पर सूद लगाना। **चक्रव्यूह**–(सं० पुं०) युद्ध के समय किसी व्यक्ति या वस्तु को सुरक्षित रखने के लिये उसके चारों ओर मण्डलाकार सेना स्थापित करना।
चक्रांश–(सं० पुं०) राशि-चक्र का ३६० वाँ अंश।
चक्राकार–(सं०वि०) मण्डलाकार, गोल।
चक्रित–(हिं० वि०) देखो चकित।
चक्षण–(सं० पुं०) कृपादृष्टि, अनुग्रह।
चक्षु–(सं०पुं०) देखने की इन्द्रिय, आँख।
चखचख–(हिं० पुं०) झगड़ा, कहासुनी।
चखचौंध–(हिं० स्त्री०) देखो चकचौंध।
चखना–(हिं० क्रि०) स्वाद लेते हुए खाना
चखाचखी–(हिं० स्त्री०) झगड़ा, विरोध, वैर।
चखाना–(हिं० क्रि०) स्वाद दिलाना।
चखु–(हिं० पुं०) चक्षु, आँख, नेत्र।
चगड़–(हिं० वि०) धूर्त, चतुर।
चचा–(हिं० पुं०) पिता का भाई, पितृव्य
चचिया–(हिं० वि०) चचा से संबंध रखनेवाला।
चची–(हिं० स्त्री०) चाचा की स्त्री।
चचेरा–(हिं० वि०) चाचा संबंधी।
चचोड़ना–(हिं० क्रि०) दाँतों से दबाकर चूसना।
चञ्चरीक–(सं० पुं०) भौंरा, भ्रमर।
चञ्चल–(सं० वि०) अस्थिर, अधीर, उद्विग्न, चुलबुला। **चञ्चलता**–(स्त्री०) चपलता।
चञ्चला–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, बिजली।
चञ्चु–(सं० पुं०) पक्षी की चोंच।
चट–(हिं० क्रि० वि०) शीघ्र, झटपट, तुरंत; (पुं०) धब्बा, कलंक, चटचट का शब्द; (वि०) चाट-पोंछकर कुल खाया हुआ।
चटक–(सं० पुं०) गौरैया पक्षी, चमक।
चटकदार-(हिं०वि०) चटकीला, भड़कीला
चटकन–(हिं० पुं०) टूटने-फूटने का शब्द।
चटकना–(हिं० क्रि०) हलकी चोट से टूट जाना, तड़कना, चिड़चिड़ाना, गरमी से लकड़ी आदि में दरार पड़ना, खटकना; (पुं०) थप्पड़।
चटकनी–(हिं० स्त्री०) किवाड़ बंद करने की सिटकिनी।
चटकमटक–(हिं०स्त्री०) आडम्बर, ठसक।
चटकवाही–(हिं० स्त्री०) शीघ्रता।
चटका–(हिं० पुं०) शीघ्रता, स्वाद।
चटकाना–(हिं० क्रि०) तोड़ना, अलग करना, चिढ़ाना।
चटकारा–(हिं०वि०) चमकीला, चटकीला
चटकी–(हिं०स्त्री०) चौड़े मुँह की गगरी।
चटकीला–(हिं० वि०) भड़कीला, चमकीला, चरपरा; (पुं०) आभा।
चटकीलापन–(हिं० पुं०) चमकीलापन, (स्त्री०) शीघ्रता, तीव्रता।
चटखनी–(हिं०स्त्री०) चटकिनी, सिटकिनी
चटचट–(हिं०पुं०) चटकने या टूटने का शब्द; (क्रि० वि०) जल्दी से।
चटचटाना–(हिं० क्रि०) चटचट शब्द करते हुए टूटना।
चटनी–(हिं० स्त्री०) चाटने की वस्तु, अवलेह।

चटपट–(हिं॰ क्रि॰ वि॰)शीघ्र, झटपट, तुरत । चटपटा–(हिं॰ वि॰) तीक्ष्ण स्वाद का । चटपटाना–(हिं॰ क्रि॰) शीघ्रता करना। चटपटी–(हिं॰ स्त्री॰) आतुरता, शीघ्रता, व्यग्रता, बेचैनी ।
चटशाला, चटसार–(हिं॰ स्त्री॰)बच्चों को पढ़ाने की पाठशाला ।
चटाई–(हिं॰ स्त्री॰) बाँस की फट्टी, ताड़ के पत्ते आदि का बना हुआ बिछावन, चाटने की क्रिया ।
चटाका–(हिं॰ पुं॰) लकड़ी या किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द ।
चटाचट–(हिं॰ स्त्री॰) किसी वस्तु के टूटने का शब्द ।
चटाना–(हिं॰ क्रि॰) चाटने का काम कराना,तलवार, छूरी आदि पर सान देना
चटापटी–(हिं॰ स्त्री॰) जल्दी, शीघ्रता ।
चटावन–(हिं॰ पुं॰) अन्नप्राशन ।
चटु–(हिं॰ पुं॰) प्रिय वाक्य ।
चटुक–(हिं॰ वि॰) चपल, चंचल ।
चटुल–(हिं॰ वि॰) चंचल ।
चटुला–(सं॰ स्त्री॰) बिजली ।
चटोरा–(हिं॰ वि॰) लोभी, लोलुप ।
चट्ट–(हिं॰ वि॰) समाप्त, लुप्त ।
चट्टा–(हिं॰ पुं॰) शिष्य, चेला, बाँस की चटाई, खुला मैदान जिसमें वृक्ष न हों, राशि, ढेर ।
चट्टान–(हिं॰ स्त्री॰) पत्थर का लंबा-चौड़ा टुकड़ा, शिला-खण्ड ।
चट्टा-बट्टा–(हिं॰ पुं॰) लड़कों के खेलने का खिलौने का समूह ।
चट्टी–(हिं॰ स्त्री॰) पड़ाव, बिना एड़ी का स्लीपर ।
चट्टू–(हिं॰ वि॰) चटोरा ।
चड्डा–(हिं॰ वि॰) मूर्ख; (पुं॰) जाँघ का ऊपरी भाग ।
चढ़त–(हिं॰स्त्री॰)किसी देवता की भेंट ।
चढ़ता–(हिं॰ वि॰)आगे को बढ़ता हुआ।
चढ़न–(हिं॰ स्त्री॰) चढ़न की क्रिया ।
चढ़ना–(हिं॰ क्रि॰) ऊपर उठना, बढ़ना, उन्नति करना, नदी में बाढ़ आना, दल बाँधकर जाना, देवता या महात्मा को भेंट देना, सवार होना, वर्ष, मास आदि का आरम्भ होना, बही खाते में लिखना, बुरा भाव होना, पकाने के लिये आँच पर रखना, लेप होना ।
चढ़ाई–(हिं॰ स्त्री॰) चढ़ने की क्रिया, ऊपर का चढ़ाव, आक्रमण ।
चढ़ाचढ़ी–(हिं॰ स्त्री॰) चढ़ा-ऊपरी ।
चढ़ाना–(हिं॰ क्रि॰) ऊँचाई पर पहुँचाना, मूल्य बढ़ाना, देवता को अर्पण करना, पुस्तक में लिखना, पकने क लिये आँच पर रखना, मढ़ना ।
चढ़ाव–(हिं॰ पुं॰) चढ़ने की क्रिया या भाव-वृद्धि । चढ़ाव-उतार–ऊँचा-नीचा स्थान ।
चढ़ावा–(हिं॰पुं॰) वर की ओर से कन्या को विवाह के दिन पहिनाया हुआ गहना।
चढ़त–(हिं॰ पुं॰) चढ़नेवाला, सवार होनेवाला ।
चण्ड–(सं॰वि॰) तीक्ष्ण, प्रबल; (पुं॰) ताप, गरमी। चण्डता–(स्त्री॰) उग्रता, प्रबलता, प्रताप ।
चण्डांशु–(सं॰ वि॰) तीक्ष्ण किरणवाला। (पुं॰) सूर्य ।
चण्डा–(सं॰ वि॰) कर्कशा ।
चण्डाल–(सं॰ वि॰) श्वपच ।
चण्डी–(सं॰ स्त्री॰) दुर्गा, कर्कशा स्त्री ।
चण्डीपति–(सं॰ पुं॰) शिव, महादेव ।
चण्डीश–(सं॰ पुं॰) चण्डीपति, शिव ।
चतुरङ्ग–(सं॰ वि॰) चार अंगवाला; (वि॰) शतरंज का खेल ।

चतुरङ्गिणी–(सं० वि०) जिस सेना में हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सवार हों।
चतुर–(सं० वि०) प्रवीण, निपुण, धूर्त।
चतुरई–(हिं० स्त्री०) चतुरता।
चतुरभुज–(हि पुं०) देखो चतुर्भुज।
चतुरमास–(हिं० पुं०) देखो चातुर्मास।
चतुरमुख–(हिं० वि०) देखो चतुर्मुख।
चतुराई–(हिं०स्त्री०) निपुणता, धूर्तता।
चतुर्गुण–(सं०वि०) चौगुना, चार गुण का।
चतुर्थ–(सं०वि०) चौथा, चौथी संख्या का
चतुर्थांश–(सं० वि०) चौथाई भाग।
चतुर्थाश्रम–(सं० पुं०) संन्यास।
चतुर्थी–(सं० स्त्री०) महीन के किसी पक्ष की चौथी तिथि।
चतुर्दश–(सं० पुं०) चौदह; (वि०) चौदहवाँ। **चतुर्दशी**–(सं० स्त्री०) महीने के किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि, चौदस।
चतुर्दिक्–(सं० पुं०) चारों दिशायें; (क्रि० वि०) चारों ओर।
चतुर्भुज–(सं०वि०) चार भुजाओंवाला; (पुं०) वह क्षेत्र या आकृति जिसमें चार भुजायें और चार कोण हों।
चतुर्मास–(सं०वि०) बरसात के चार मास।
चतुर्मुख–(सं० पुं०) चार मुखवाला; –(क्रि० वि०) चारों ओर।
चतुर्वर्ग–(सं० पुं०) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।
चतुर्वर्ण–(सं० पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
चतुष्क–(सं० वि०) चौपहल; (पुं०) एक प्रकार का गृह, चौक।
चतुष्कर–(सं० पुं०) पंजेवाला पशु।
चतुष्कोण–(सं०वि०) चार कोणवाला।
चौकोना–(हिं० पुं०) जिस आकृति में चार कोण हों।
चतुष्पथ–(सं०पुं०) चौराहा, चौमुहानी।
चतुष्पद–(सं० पुं०) चार पैरवाला पशु, चौपाया; (हिं० वि०) चार परवाला।
चतुष्पदी–(सं० स्त्री०) चौपाई छन्द, चार पद का एक गीत।
चत्वर–(सं० पुं०) चौमुहानी, चौरस्ता, आँगन।
चदरा–(हिं० पुं०) देखो चादर।
चद्दर–(हिं० स्त्री०) चादर, किसी धातु का लंबा-चौड़ा पत्तर।
चनक–(हिं० पुं०) चणक, चना।
चनकट–(हिं० स्त्री०) तमाचा, थप्पड़।
चनकना–(हिं० क्रि०) देखो चटकना।
चनखना–(हिं०क्रि०) रुष्ट होना, चिढ़ना।
चनन–(हिं० पुं०) देखो चन्दन।
चनवर–(हिं० पुं०) ग्रास, कवर।
चना–(हिं० पुं०) चणक, बूट, रहिला।
चन्दन–(सं० पुं०) एक वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी अति सुगंधित होती है।
चन्द्र–(सं०पुं०) चन्द्रमा। **चन्द्रक**–(पुं०) चन्द्रमा का मण्डल, चाँदनी। **चन्द्रकला**–(स्त्री०) चन्द्रमण्डल का सोलहवाँ अंश, चन्द्रमा की किरण। **चन्द्रकान्त**–(पुं०) एक रत्न।
चन्द्रकान्ता–(सं० स्त्री०) चन्द्रमा की स्त्री, रात्रि। **चन्द्रक्षय**–(पुं०) अमावस्या।
चन्द्रप्रभा–(स्त्री०) चाँदनी।
चन्द्रबाण–(सं० पुं०) अर्धचन्द्र के आकार का बाण। **चन्द्रबिन्दु**–(सं० पुं०) अर्ध अनुस्वार का बिन्दु जो अक्षर के ऊपर लगाया जाता है। **चन्द्रभाग**–(सं०पुं०) चन्द्रमा की कला
चन्द्रमा–(सं० पुं०) सुधांशु, शशि।
चन्द्रहार–(सं० पुं०) गले में पहिनने का एक आभूषण। **चन्द्रहास**–(सं० पुं०) खड्ग, तलवार, चाँदी।

चन्द्रालोक–(सं० पुं०) चन्द्रमा का प्रकाश।
चन्द्रिका–(सं० स्त्री०) कौमुदी, चन्द्रमा का प्रकाश, माथे का एक आभूषण।
चन्द्रोदय–(सं० पुं०) चन्द्रमा का उदय।
चन्द्रोपल–(सं० पुं०) चन्द्रकान्त मणि।
चपकन–(हिं० स्त्री०) अंगा, अँगरखा, किवाड़ या संदूक में ताला बन्द करने की कड़ी।
चपकना–(हिं० क्रि०) देखो चिपकना।
चपकाना–(हिं० क्रि०) देखो चिपकाना।
चपटा–(हिं० वि०) देखो चिपटा।
चपटाना–(हिं० क्रि०) चिपकाना।
चपटी–(हिं० वि०) चिपटी; (स्त्री०) ताली।
चपड़गट्ट–(हिं० वि०) आपद्ग्रस्त।
चपड़चपड़–(हि० स्त्री०) जीभ से चट चट करने का शब्द।
चपड़ा–(हिं० पुं०) शोधी हुई लाह का पत्तर। **चपड़ी**–(हिं० स्त्री०) पटिया।
चपत–(हिं० पुं०) थप्पड़, तमाचा, धक्का।
चपना–(हिं० क्रि०) लज्जित होना, चौपट होना।
चपरगट्टू–(हिं० वि०) दुर्भाग्य, अभागा।
चपरना–(हिं० क्रि०) चुपड़ना, सानना।
चपरा–(हिं० अव्य०) तुरत, झटपट; (वि०) झूठा। **चपराना**–(हिं० क्रि०) झूठा बनाना।
चपरास–(हिं० स्त्री०) पेटी या परतले में लगान की पट्टी, आरी का दाहिने-बायें झुकाव
चपरासी–(हिं० पुं०) सिपाही, अर्दली।
चपरी–(हिं० स्त्री०) एक कदन्न, खसारी।
चपल–(सं० वि०) चंचल, चुलबुला।
चपलता–(सं० स्त्री०) चंचलता, उतावलापन।
चपला–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, बिजली, चंचला, जीभ।
चपली–(हिं० स्त्री०) जूती, चट्टी।
चपाती–(हिं० स्त्री०) हाथ से बढ़ाकर बनाई हुई रोटी।
चपाना–(हिं० क्रि०) दबवाना, फँसाना।
चपेट–(हिं० स्त्री०) रगड़, घिस्सा, आघात। **चपेटना**–(क्रि०) दबाना, रगड़ देना।
चप्पड़–(हिं० पुं०) देखो चिप्पड़।
चप्पल–(हिं० पुं०) चिपटी एड़ी का जूता।
चबकी–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के बाल बाँधने की गुथी हुई डोरी, परांदा।
चबवाना–(हिं० क्रि०) चबाने का काम दूसरे से कराना।
चबाना–(हिं० क्रि०) दांतों से कुचलना।
चबूतरा–(हिं० पुं०) चौरस ऊँचा स्थान।
चबैना–(हिं० पुं०) सूखा भुना हुआ अन्न, चर्वण, भूँजा।
चबैनी–(हिं० स्त्री०) कर्मकारों का दोपहर का कलेवा।
चब्बू, चब्भू–(हिं० वि०) अधिक भोजन करनेवाला।
चब्भो–(हिं० पुं०) डुबकी।
चभक–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का पानी में गिरने का शब्द।
चभकना–(हिं० क्रि०) दबाया जाना।
चभाना–(हिं० क्रि०) भोजन कराना।
चभोकना, चभोरना–(हिं० क्रि०) गोता देना।
चमक–(हिं० स्त्री०) प्रकाश, ज्योति, आभा, दीप्ति, कान्ति, झलक, लचक, शरीर के किसी अंग की पेशियों का एकाएक तनना। **चमकदमक**–(हिं० स्त्री०) तड़क-भड़क। **चमकदार**–(हिं० वि०) चमकीला, भड़कीला।
चमकना–(हिं० क्रि०) कान्तियुक्त होना, जगमगाना, प्रकाशित होना,

भड़क उठना, एकाएक पीड़ा उत्पन्न होना, लचकना।

चमकीला–(हिं० वि०) चमकदार, भड़कीला।

चमकौवल–(हिं० स्त्री०) चमकने-मटकने की क्रिया।

चमगादड़–(हिं० पुं०) एक उड़नेवाला जन्तु जिसकी बनावट चूहे के समान होती है, इसको कान होते हैं और यह बच्चा देता ह, इसका पर झिल्ली का बना होता है।

चमचम–(हिं० स्त्री०) छेने की एक प्रकार की बँगला मिठाई; (क्रि०वि०) चमाचम

चमची–(हिं० स्त्री०) छोटा चम्मच, आचमनी।

चमटा–(हिं० पुं०) देखो चिमटा।

चमड़ा–(हिं० पुं०) चर्म, त्वचा, खाल, छिलका।

चमड़ी–(हिं०क्रि०) त्वचा, चमड़ा, खाल।

चमत्कार–(सं० पुं०) अद्भुत व्यापार, विचित्र घटना, विचित्रता।

चमर–(सं० पुं०) सुरागाय की पूंछ का बना हुआ चँवर।

चमरशिखा–(हिं०स्त्री०) घोड़े की कलँगी।

चमरी–(सं० स्त्री०) सुरागाय।

चमाचम–(हिं० वि०) झलकता हुआ।

चमार–(हिं० पुं०) चर्मकार, चमड़े का काम करनेवाला, झाड़ू देनेवाला, अन्त्यज।

चमारनी, चमारिन–(हिं० स्त्री०) चमार की स्त्री।

चमारी–(हिं०स्त्री०) चमार का व्यवसाय

चमीकर–(सं० पुं०) वह खान जिसमें से सोना निकलता है।

चमेलिया–(हिं०वि०) चमेली के रंग का।

चमेली–(हिं० स्त्री०) एक लता जिसमें सुगन्धित श्वेत पुष्प होता है।

चमोटा–(हिं० पुं०) मोटे चमड़े का छोटा टुकड़ा जिस पर नाई छुरे की धार तेज करते हैं।

चमोटी–(हिं० स्त्री०) कोड़ा, चाबुक।

चय–(सं० पुं०) ढेर, समूह, गढ़, कोट।

चयन–(सं० पुं०) संग्रह, संचय।

चर–(सं० पुं०) भेड़िया, चलनेवाला; (वि०) अस्थिर, आपसे आप चलनेवाला, खानेवाला।

चरई–(हिं०स्त्री०) चौपायों का चारापानी देने का गड्ढा।

चरकटा–(हिं० पुं०) तुच्छ मनुष्य।

चरकना–(हिं० क्रि०) टूटना, फूटना।

चरखा–(हिं० पुं०) गोल घूमनेवाला चक्कर, ऊन, कपास या रेशम कातकर सूत निकालने का यन्त्र, कुवें से पानी निकालने का रहट। **चरखी**–(हिं० स्त्री०) छोटा चरखा, सूत लपेटने की फिरकी, एक प्रकार की घूमनेवाली अग्निक्रीड़ा।

चरचराना–(हिं० क्रि०) चरचर शब्द करते हुए टूटना, घाव का सूखकर पीड़ा उत्पन्न करना।

चरचा–(हिं० स्त्री०) देखो चर्चा।

चरचरी–(हिं० वि०) निन्दक, निन्दा करनेवाला।

चरजना–(हिं० क्रि०) भुलावा देना।

चरण–(सं०पुं०) पग, पाँव, पैर, किसी पदार्थ का चौथा भाग, क्रम, गोत्र, गमन, आचार।

चरणामृत–(सं० पुं०) वह जल जिसमें किसी महात्मा के चरण धोये गये हों, पादोदक, एक में मिला हुआ दूध, दही, घृत, मधु और शक्कर जिसमें देवमूर्ति स्नान कराई जाती है।

चरणोदक–(सं० पुं०) चरणामृत।
चरती–(हिं० पुं०) वह जो व्रत के दिन उपवास न करता हो।
चरन–(हिं० पुं०) देखो चरण।
चरनदासी–(हिं० स्त्री०) जूता, पनही, पत्नी।
चरना–(हिं० क्रि०) पशुओं का घूम-घूमकर चारा खाना, इधर-उधर घूमना।
चरनि–(हिं० स्त्री०) चाल, गति।
चरनी–(हिं०स्त्री०) पशुओं के चरने का स्थान, जिस नाँद में चौपायों को खाने के लिये चारा दिया जाता है।
चरन्नी–(हिं० स्त्री०) चवन्नी।
चरपरा–(हिं० वि०) स्वाद में तीखा, चटपटा। चरपराना–(क्रि०) घाव सूखकर पीड़ा होना। चरपराहट–(हिं० स्त्री०) स्वाद की तीक्ष्णता।
चरबन–(हिं० पुं०) भूना हुआ अन्न, चबैना।
चरबाँक–(हिं०वि०) चतुर, निर्भय, ढीठ।
चरम–(सं० वि०) अन्तिम, सबसे बढ़ा हुआ; (पुं०) पश्चिम।
चरमर–(हिं० पुं०) किसी तनी वस्तु के दबने से उत्पन्न शब्द।
चरवाई–(हिं०स्त्री०) चराने का कार्य।
चरवाना–(हिं० क्रि०) चराने का काम दूसरे से कराना। चरवाहा–(पुं०) चौपायों को चरानेवाला। चरवाही–(स्त्री०) पशुओं को चराने का काम, चराने का शुल्क। चरवैया–(हिं० पुं०) चरने या चरानेवाला।
चरस–(हिं० पुं०) गाँजे के पेड़ से निकाला हुआ गोंद जिसको लोग गाँजे की तरह पीते हैं, वन-मयूर, एक प्रकार का पक्षी।
चरसा–(हिं० पुं०) मोट, पुरवट।
चरसी–(हिं० पुं०) चरस पीनेवाला।
चराई–(हिं०स्त्री०) चराने का काम।
चराचर–(सं० वि०) स्थावर और जंगम; (पुं०) संसार, जगत्।
चराना–(हिं० क्रि०) छलना, धोखा देना, बहकाना।
चरित–(हिं० पुं०) आचरण, कृत्य, करतूत, चरित्र, किसी मनुष्य की जीवनी की विशेष घटनाओं का वर्णन।
चरितार्थ–(सं० वि०) कृतार्थ, कृतकृत्य।
चरित्तर–(हिं० पुं०) धूर्तता, बहाना।
चरित्र–(सं० पुं०) स्वभाव, करनी, करतूत। चरितवान्–(वि०) अच्छे चरित्र का, सदाचारी।
चरित्रवान्–(सं० वि०) अच्छे चरित्र का, सदाचारी।
चरी–(हिं० स्त्री०) पशुओं के चरने की भूमि, पौधे जो चौपायों को काटकर खिलाये जाते हैं।
चरु–(सं० पुं०) हवन के लिये पकाया हुआ अन्न। चरुआ–(हिं० पुं०) चौड़े मुख का मिट्टी का पात्र।
चरेर, चरेरा–(हिं०वि०) कर्कश, कड़ा।
चरैया–(हिं० वि०) चरानेवाला।
चर्चर–(सं० वि०) गमनशील, चलनेवाला।
चर्चरी–(सं० स्त्री०) वह गान जो वसन्त में गाया जाता है, फाग।
चर्चा–(सं० स्त्री०) वर्णन, वार्तालाप, जनश्रुति।
चर्चित–(सं० वि०) लगाया या पोता हुआ, जिसकी चर्चा की जाती है।
चर्पट–(सं० पुं०) थप्पड़, खुली हुई हथेली; (वि०) अधिक।
चर्परा–(हिं० वि०) देखो चरपरा।
चर्भट–(सं० पुं०) ककड़ी।

चर्म–(सं०पुं०) चमड़ा, ढाल। **चर्मकार**–(सं० पुं०) चमार, रयदास।
चर्मचटका–(सं० स्त्री०) चमगादड़।
चर्मपादुका–(सं० स्त्री०) चमड़े का जूता। **चर्मपुट, चर्मपुटक**–(सं० पुं०)चमड़े का बड़ा कुप्पा।
चर्या–(सं० स्त्री०) आचरण, वृत्ति, व्यवसाय, सेवा, भक्षण,गमन, जीविका।
चर्राना–(हिं० क्रि०) लकड़ी के टूटते समय चरचर शब्द करना, शरीर में हलकी पीड़ा होना।
चर्री–(हिं० स्त्री०) व्यंगपूर्ण बात।
चर्वण–(सं० पुं०) दाँतों से चबाने का कार्य, भूना हुआ अन्न, बहुरी।
चर्वित–(सं०वि०)दाँतों से चबाया हुआ।
चर्वितचर्वण–(सं०पुं०) किये हुए काम को दुबारा करना।
चलंता–(हिं०वि०)चलताहुआ,चलनेवाला
चल–(सं० वि०) चलायमान, अस्थिर, चंचल; (पुं०) **चलचलाव**–(हिं०पुं०) यात्रा, प्रस्थान, मृत्यु।
चलता–(हिं० वि०) गतिमान, चलता हुआ, काम करने योग्य, व्यवहार में निपुण; (स्त्री०) चंचलता।
चलन–(हिं०पुं०) गति, चाल, व्यवहार, रीति, गति, भ्रमण, कम्पन; **चलन-कलन**–(सं० पुं०) ज्योतिष का वह गणित जिसके द्वारा पृथ्वी की गति के अनुसार दिन के बढ़ने-घटने का हिसाब किया जाता है। **चलन समीकरण**–(सं० पुं०) गणित की एक विशेष क्रिया। **चलनसार**–(हिं० वि०) व्यवहार में प्रचलित।
चलना–(हिं०क्रि०) गमन करना, जाना, व्यवहार में आना, प्रयुक्त होना, अच्छी तरह काम देना, तीर, गोला आदि का छूटना, सफल होना, निर्वाह होना।
चलनी–(हिं० स्त्री०) आटा आदि को महीन छानने की चलनी।
चलनौस–(हिं० पुं०) चोकर, चालन।
चलबाँक–(हिं० वि०) शीघ्रगामी।
चलविचल–(हिं० वि०) अव्यवस्थित अंडबंड; (स्त्री०) व्यतिक्रम।
चलवैया–(हिं० पुं०) चलनेवाला।
चलाँक–(हिं०स्त्री०)दक्ष, पटु। **चलाँकी**–(हिं० स्त्री०) दक्षता।
चलाऊ–(हिं० वि०) बहुत दिनों तक टिकनेवाला, पुष्ट, टिकाऊ।
चलाचल–(हिं० वि०) चंचल।
चलाचली–(हिं० स्त्री०) बहुत से लोगों का प्रस्थान, चलने की तैयारी।
चलान–(हिं०स्त्री०) अपराधी को पकड़ा जाकर न्यायालय में न्याय के लिये भेजा जाना, सामग्री का एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाना, एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजी हुई सामग्री।
चलाना–(हिं० क्रि०) चलने में लगाना, व्यवहार करना, व्यापार में वृद्धि होना, किसी अस्त्र से मारना, प्रेरित करना, आरम्भ करना, प्रचलित करना।
चलायमान–(सं०वि०)चंचल,विचलित।
चलित–(सं०वि०) चलायमान, अस्थिर।
चलैया–(हिं० वि०) चलनेवाला।
चवन्नी–(हिं० स्त्री०) चार आने के मूल्य का सिक्का।
चवर्ग–(सं० पुं०) 'च' से 'ञ' तक के पाँच अक्षरों का समूह।
चवा–(हिं० स्त्री०)चारों ओर से बहने-वाली हवा।
चवाव–(हिं० पुं०) प्रवाद, निन्दा की चर्चा, पीठ पीछे की निन्दा।

चशमा–(हिं० पुं०) उपनेत्र।
चष–(हिं० पुं०) चक्षु, नेत्र, आँख।
चषक–(सं० पुं०) मदिरा पीने का पात्र।
चषण–(सं० पुं०) भोजन, वध करना, क्षय, नाश।
चस–(हिं० स्त्री०) वस्त्र के किनारे पर सिली हुई गोंट।
चसक–(हिं० पुं०) प्रवाद, निन्दा की चर्चा, पीठ पीछे की निन्दा।
चलकना–(हिं० क्रि०) मन्द पीड़ा होना, टीसना।
चसका–(हिं० पुं०) दुर्व्यसन, लत, चाट।
चसना–(हिं० क्रि०) प्राण त्यागना, मरना।
चह–(हिं० पुं०) नदी के कच्चे घाट पर बल्ले गाड़कर उस पर बनाया हुआ मचान जिस पर से मनुष्य नाव पर चढ़ते हैं।
चहक–(हिं० स्त्री०) पक्षियों का मधुर कलरव। चहकना–(हिं० क्रि०) उमंग में बकवाद करना।
चहका–(हिं० पुं०) पत्थर या ईंट का बना हुआ स्थान, चहला, कीचड़।
चहकारना–(हिं० क्रि०) देखो चहकना।
चहचहा–(हिं० पुं०) चहक, हँसी, ठट्ठा; (वि०) आनन्द उत्पन्न करनेवाला।
चहटा–(हिं० पुं०) पंक, कीचड़, चहला।
चहनि–(हिं० स्त्री०) चाह, अभिलाषा, इच्छा।
चहबच्चा–(हिं० पुं०) मैले पानी का गड्ढा।
चहर–(हिं० स्त्री०) आनन्द का उत्सव।
चहल–(हिं० स्त्री०) कीच, कीचड़, आनन्द का उत्सव।
चहल-पहल–(हिं० स्त्री०) आनन्द की धूम।
चहला–(हिं० पुं०) पंक, कीचड़।
चहुँ–(हिं० वि०) चार, चारों।
चहुँक–(हिं० स्त्री०) देखो चिहुँक।
चहुँधा–(हिं० क्रि० वि०) चारों ओर।
चहूँटना–(हिं० क्रि०) सटना, मिलना, लगना।
चहेटना–(हिं० क्रि०) रस निचोड़ना, चपेटना।
चाँइयाँ, चाईं–(हिं० पुं०) ठग, उचक्का; (वि०) कपटी, छली।
चाँगला–(हिं० वि०) आरोग्य, चतुर।
चाँचर, चाँचरी–(हिं० स्त्री०) एक राग जो वसन्त ऋतु में गाया जाता है।
चाँटा–(हिं० पुं०) थप्पड़, तमाचा।
चाँड़–(हिं० स्त्री०) भार सँभालने को थूनी, टेक, व्याकुलता, संकट, दबाव, प्रबल इच्छा, अधिकता।
चाण्डाल–(सं० पुं०) श्वपच, डोम।
चाँद–(हिं० पुं०) चन्द्रमा, कमरखी, घोड़े के सिर पर की भँवरी; (स्त्री०) मस्तक के बीच का भाग।
चाँदनी–(हिं० स्त्री०) चन्द्रिका, चन्द्रमा का प्रकाश, बिछावन की उज्ज्वल चादर।
चाँदमारी–(हिं० स्त्री०) पटरे इत्यादि पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।
चाँदी–(हिं० स्त्री०) रजत, रौप्य, आर्थिक लाभ, खोपड़ी का मध्य भाग।
चाँप–(हिं० पुं०) दबाव, भूमि पर पैर पड़ने का शब्द, धक्का।
चायँचायँ–(हिं० पुं०) व्यर्थ की बकबक।
चाउर–(हिं० पुं०) देखो चावल।
चाक–(हिं० पुं०) कुम्हार का गोल पत्थर जिसको घुमाकर तथा मिट्टी का लोंदा रखकर वह पात्र आदि बनाता है, गाड़ी या रथ का पहिया।
चाकना–(हिं० क्रि०) सीमाबद्ध करने के लिये चारों ओर रेखा खींचना।

चाकरनी, चाकरानी–(हिं० स्त्री०) नौकरानी, दासी।
चाका–(हिं०पुं०) चीनी का बड़ा बताशा
चाकी–(हिं० स्त्री०) आटा पीसने की चक्की।
चाचर, चाचरि–(हिं० स्त्री०) होली में गाने का गीत, होली के खेल और स्वाँग।
चाचा–(हिं० पुं०) पितृव्य, पिता का भाई। चाची–(हिं० स्त्री०) चाचा की स्त्री।
चाट–(हिं०स्त्री०) स्वाद लेने की इच्छा, चसका, लालसा।
चाटना–(हिं०क्रि०) स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को जीभ से उठाना।
चाटु–(सं० पुं०) मीठी बात, प्रिय वार्ता, झूठी प्रशंसा; चाटुकार–झूठी प्रशंसा करनेवाला।
चाड़–(हिं० स्त्री०) तीव्र अभिलाषा, प्रेम, चाह।
चाण्डाल–(सं० पुं०) श्वपच, डोम; (वि०) कुकर्मी, दुरात्मा।
चातक–(सं० पुं०) पपीहा।
चातुर–(सं० वि०) चतुर, धूर्त; (पुं०) चार पहिये की गाड़ी।
चातुरी–(हिं० स्त्री०) चतुराई, धूर्तता।
चातुर्मास–(सं०पुं०) वर्षा के चार मास; (वि०) चार मास में होनेवाला।
चातुर्य–(सं० पुं०) चतुराई, दक्षता।
चादरा–(हिं० पुं०) बड़ी चादर।
चानस–(हिं० पुं०) ताश का एक खेल।
चान्द्र–(सं० वि०) चन्द्रमा संबंधी।
चान्द्रमास–(सं० पुं०) वह मास जो चन्द्रमा की गति के अनुसार विभक्त किया गया हो।
चान्द्रायण–(सं० पुं०) महीने भर में समाप्त होनेवाला एक व्रत।
चाप–(सं० पुं०) धनुष, कमान, रेखागणित में अर्धवृत्त क्षेत्र।
चापट–(हिं०स्त्री०) देखो चापड़, चोकर।
चापड़–(हिं० वि०) समतल, बराबर, चौपट; (पुं०) उजाड़; (हिं० स्त्री०) चोकर, भूसी।
चापना–(हिं० क्रि०) दबाना, ढकेलना।
चापर–(हिं० वि०) देखो चापड़।
चाबना–(हिं० क्रि०) दाँतों से कुचलकर खाना, चबाना।
चाबी–(हिं० स्त्री०) ताली, कुंजी।
चाभी–(हिं० स्त्री०) ताली, कुंजी।
चाम–(हिं० पुं०) चर्म, चमड़ा, खाल।
चामर–(सं० पुं०) चँवर, मुरछल।
चामीकर–(सं० पुं०) सुवर्ण, सोना।
चाय–(हिं० स्त्री०) एक पौधा, जिसकी पत्तियों को उबालकर इसमें दूध और चीनी मिलाकर सर्वत्र लोग पीते हैं।
चायक–(हिं० वि०) चाहनेवाला, प्रेमी।
चार–(हिं० वि०) तीन और एक की संख्या का, अनेक, कई एक, थोड़ा-सा, थोड़ा-बहुत; (पुं०) सेवक, दास, रीति।
चारक–(सं० पुं०) चरवाहा, सहचर, भेदिया।
चारखाना–(हिं० पुं०) एक प्रकार का कपड़ा जिसमें ताने और बाने के रंगीन डोरों से चौखूट खाने बने होते हैं।
चारण–(सं० पुं०) भाट, बन्दी।
चारन–(हिं० पुं०) देखो चारण।
चारपाई–(हिं० स्त्री०) छोटी पलंग, खटिया, खाट।
चारयारी–(हिं० स्त्री०) चार मित्रों की मण्डली।
चारा–(हिं० पुं०) पशुओं के खाने की घास-पात, जिस वस्तु को बंसी में लगाकर मछली फँसाई जाती है।

चारि–(हिं० वि०) देखो चार।
चारित–(सं० वि०) चलाया हुआ।
चारित्र–(सं० पुं०) परम्परा का आचार-व्यवहार, स्वभाव। चारित्र विनय–(सं० पुं०) शिष्टाचार, नम्रता।
चारित्र्य–(सं० पुं०) चरित्र।
चारी–(हिं० वि०) आचरण या व्यवहार करनेवाला।
चारु–(हिं० वि०) सुन्दर, रुचिर, मनोहर।
चाल–(हिं० स्त्री०) गति, गमन, चलने का ढंग, आचरण, रीति, ढंग, कपट।
चालक–(हिं० वि०) संचालक, धूर्त, चतुर।
चालचलन–(हिं० पुं०) शील, चरित्र।
चालढाल–(हिं० स्त्री०) व्यवहार, ढंग।
चालन–(हिं० पुं०) चलन या चलाने की क्रिया।
चालना–(हिं० क्रि०) चलाना, चलनी में आटा हिलाकर चोकर अलगना।
चालनी–(हिं० वि०) आटा चालने की चलनी, छलनी।
चाला–(हिं० पुं०) प्रस्थान।
चालान–(हिं० पुं०) भेजे हुए माल की सूची, बीजक, अपराधी का विचार के लिये न्यायालय में भेजा जाना।
चालिया–(हिं० वि०) धूर्त, छली।
चालिस–(हिं० वि०) देखो चालीस।
चाली–(हिं० वि०) धूर्त, उपद्रवी।
चालीस–(हिं० वि०) तीस और दस की संख्या का। चालीसवाँ–(हिं० वि०) उनतालीस वस्तु के बाद का।
चाव–(हिं० पुं०) अभिलाषा, लालसा, प्रेम, चाह।
चावड़ी–(हिं० स्त्री०) चट्टी, पड़ाव।
चावर, चावल–(हिं० पुं०) तण्डुल, धान के भीतर से निकला हुआ अन्न, रत्ती के आठवें भाग के बराबर का परिमाण।
चाशनी–(हिं० स्त्री०) मिश्री, चीनी अथवा गुड़ का अग्नि पर पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस।
चासनी–(हिं० स्त्री०) देखो चाशनी।
चाह–(हिं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा।
चाहक–(हिं० वि०) चाहनेवाला।
चाहना–(हिं० क्रि०) अभिलाषा करना, प्यार करना।
चाहि–(हिं० अव्य०) अपेक्षा, से।
चाहिए–(हिं० अव्य०) उचित है, ठीक है।
चाहे–(हिं० अव्य०) इच्छा हो, या तो, होनेवाला हो तो।
चिआँ–(हिं० पुं०) इमली का बीज।
चिउँटा–(हिं० पुं०) एक काले रंग का कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है और उसको जल्दी नहीं छोड़ता।
चिउँटी–(हिं० स्त्री०) चींटी, पिपीलिका।
चिगना–(हिं० पुं०) पक्षी का छोटा बच्चा, छोटा बालक।
चिगुरना–(हिं० क्रि०) अंग के किसी भाग का संकुचित होना।
चिंदी–(हिं० स्त्री०) टुकड़ा।
चिउड़ा, चिउरा–(हिं० पुं०) हरे धान को कूटकर बनाया हुआ चिपटा चावल।
चिकट–(हिं० वि०) चिपचिपा, लसलसा।
चिकना–(हिं० वि०) चिक्कण, अनुरागी, प्रेमी; (पुं०) स्निग्धतापूर्ण पदार्थ। चिकनाई–(हिं० स्त्री०) स्निग्धता, चिकनापन। चिकनाना–(हिं० क्रि०) चिकना करना, मोटा होना।
चिकनिया–(हिं० वि०) छैला, बाँका।
चिकरना–(हिं० क्रि०) चिग्घाड़ना।
चिकवा-(हिं० पुं०) मांसबेचनेवाला, कस्साई
चिकार–(हिं० पुं०) चिग्घाड़, चीख।
चिकारा–(हिं० पुं०) सारंगी की तरह का एक बाजा।

चिकित्सक–(सं० पुं०) रोग हटाने का उपाय करनेवाला, वैद्य, हकीम, डाक्टर।
चिकित्सा–(सं० स्त्री०) रोग दूर करने तथा शरीर नीरोग करने की विधि।
चिकित्सालय–रोगियों की भली भाँति चिकित्सा करने का स्थान। चिकित्सित-(सं० वि०) चिकित्सा किया हुआ।
चिकिल–(सं० वि०) कीचड़, पंक।
चिकीर्षा–(सं० स्त्री०) करने की इच्छा।
चिकुटी–(हिं० स्त्री०) देखो चुटकी।
चिकुर–(सं० वि०) सिर के बाल, केश, पर्वत।
चिकोटी–(हिं० स्त्री०) देखो चुटकी।
चिक्कट–(हिं० वि०) मैला-कुचैला।
चिक्कण–(सं० वि०) चिकना।
चिक्कन–(हिं०वि०) चिक्कण, चिकना।
चिखुरी–(हिं० स्त्री०) गिलहरी।
चिखौनी–(हिं० स्त्री०) स्वाद की थोड़ी-सी वस्तु।
चिचिड़ी–(हिं०स्त्री०) किलनी, किल्ली।
चिचियाना–(हिं० क्रि०) चिल्लाना।
चिचकना–(हिं०क्रि०) देखो चुचुकाना।
चिजारा–(हिं० पुं०) राजगीर, मेमार।
चिञ्चा–(सं० स्त्री०) इमली, इमली का चिआँ।
चिञ्ची–(सं० स्त्री०) गुंजा, घुमची।
चिटकना–(हिं०क्रि०) रूक्षता या गरमी से फट जाना।
चिटकाना–(हिं० क्रि०) किसी सूखे पदार्थ को तड़काना, चिढ़ाना।
चिटनवीस–(हिं० पुं०) चिट्ठी-पत्री हिसाब-किताब लिखनेवाला लेखक।
चिट्टा–(हिं० पुं०) झूठा बढ़ावा।
चिट्ठा–(हिं० पुं०) हिसाब का बही-खाता, ब्यौरा।
चिट्ठी–(हिं० स्त्री०) कागज की वह टुकड़ी जिसमें कहीं भेजने के लिये समाचार इत्यादि लिखा हो, माल का दाम लिखा हुआ पुरजा, आज्ञापत्र, निमन्त्रणपत्र। चिट्ठी-पत्री–(हिं० स्त्री०) पत्र-व्यवहार।
चिड़चिड़ा–(हिं० पुं०) चिचिड़ा, अपामार्ग, जल्दी चिढ़नवाला। चिड़ाना–(हिं० क्रि०) चिढ़ना।
चिवड़ा–(हिं० पुं०) हरे धान को कूटकर चिपटा किया हुआ दाना।
चिड़िया–(हिं० स्त्री०) पक्षी, पंछी, पखेरू, ताश में चिड़ी का पत्ता। चिड़ियाखाना-(हिं० पुं०) वह स्थान जिसमें नाना प्रकार के पशु-पक्षी देखन के लिये पाले जाते हैं। चिड़िहार–(हिं० पुं०) बहेलिया, व्याध।
चिड़ी–(हिं० स्त्री०) चिड़िया, ताश का एक रंग। चिड़ीमार–(हिं० पुं०) व्याध, बहेलिया।
चिढ़–(हिं०स्त्री०) क्रोध सहित अप्रसन्नता, कुढ़न। चिढ़ना–(हिं० क्रि०) अप्रसन्न होना, कुढ़ना। चिढ़ाना–(हिं० क्रि०) अप्रसन्न करना, कुढ़ाना।
चित्–(सं० स्त्री०) चेतना, ज्ञान, चित्तवृत्ति; (पुं०) अग्नि, संस्कृत का अनिश्चय सूचक शब्द।
चित्त–(हिं० पुं०) चित्त, चितवन; (हिं० वि०) पीठ के बल पड़ा हुआ।
चितचोर–(हिं० पुं०) मन को लुभानेवाला, प्रिय, मनोहर।
चितभंग–(हिं० पुं०) ध्यान न लगना, चित्त ठिकाने न रहना।
चितरनहार–(हिं०पुं०) चित्रण करनेवाला।
चितरना–(हिं० क्रि०) चित्र बनाना।
चितला–(हिं० वि०) चितकबरा, रंग-बिरंगा।

चितवन–(हिं० स्त्री०) दृष्टि, कटाक्ष, भौं चढ़ाना। चितवना–(हिं० क्रि०) दृष्टि डालना, देखना। चितवनि-(हिं० स्त्री०) देखो चितवन। चितवाना–(हिं० स्त्री०) दिखाना, तकाना।
चिता–(सं० स्त्री०) लकड़ी का ढेर जिस पर शव जलाया जाता है।
चिताना–(हिं० क्रि०) सावधान करना, याद दिलाना।
चिताभूमि–(सं०स्त्री०) श्मशान।
चितावना–(हिं० स्त्री०) स्मारक।
चितावनी–(हिं० स्त्री०) सावधान करने की क्रिया।
चिति–(सं०स्त्री०) एकत्र करने का कार्य।
चितेरा–(हिं० पुं०) चित्रकार, चित्र बनानेवाला।
चित्त–(सं० पुं०) अन्तःकरण की एक वृत्ति, जी, मन। चित्तवान्–(सं० वि०) उदार चित्त का। चित्तविक्षेप–(सं०पुं०) मन की चंचलता। चित्त-विप्लव–(सं०पुं०) उन्माद। चित्त-विभ्रम–(सं०पुं०) भ्रम, भ्रान्ति। चित्तवृत्ति–(सं० स्त्री०) चित्त की अवस्था।
चित्ति–(सं०स्त्री०) ख्याति, वृद्धि।
चित्ती–(हिं० स्त्री०) छोटा धब्बा या चिह्न, बुंदकी।
चित्र–(सं०पुं०) कागज, कपड़े आदि पर अनेक रंगों के मेल से बनी हुई आकृति। चित्र उतारना–चित्र बनाना।
चित्रकण्ठ–(सं०पुं०) कपोत, कबूतर।
चित्रक, चित्रकार–(सं०पुं०) चित्रकार। चित्रकारी–(हिं० स्त्री०) चित्र बनाने की कला। चित्रना–(हिं० क्रि०) चित्रित करना, चित्र बनाना।
चित्रपट–(सं०पुं०) वह कागज या कपड़े का टुकड़ा जिस पर चित्र बनाया जाता है, छींट। चित्रमृग–(सं० पुं०) चितकबरा मृग।
चिन्तित–(सं०वि०) चिन्तायुक्त।
चिन्त्य–(सं०वि०) विचारणीय, भावनीय।
चिन्मय–(सं० वि०) ज्ञानमय; (पुं०) परमेश्वर।
चिन्हवाना, चिन्हाना–(हिं० क्रि०) पहिचनवाना। चिन्हानी, चिन्हारी–(हिं० स्त्री०) पहिचान, स्मारक चिह्न।
चिन्हार–(हिं० वि०) परिचित, जान-पहिचान का। चिन्हारी–(हिं० स्त्री०) परिचय।
चिन्हित–(हिं० वि०) देखो चिह्नित।
चिपकना–(हिं० क्रि०) दो पदार्थों का परस्पर जुटना या सटना।
चिपकाना–(हिं०क्रि०) चिमटाना, लिपटाना, आलिङ्गन करना।
चिपचिप–(हिं० पुं०) लसदार वस्तु के छूने से चिपकने का शब्द। चिपचिपा–(हिं० वि०) चिपकनेवाला।
चिपटना–(हिं०क्रि०) चिपकना, सटना।
चिपटा–(हिं० क्रि०) जिसका तल दबा हुआ तथा बराबर फैला हो। चिपटाना–(हिं० क्रि०) चिपकाना, सटाना।
चिपड़ी, चिपरी–(हिं० स्त्री०) उपली, गोहरी।
चिपिट, चिपिटकू–(हिं०वि०) चिपटा; (पुं०) चिवड़ा।
चिप्पड़–(हिं० पुं०) किसी पदार्थ का छोटा चिपटा टुकड़ा, पपड़ी।
चिप्पी–(हिं० स्त्री०) देखो चिप्पड़।
चिबिल्ला–(हिं०वि०) देखो चिलबिल।
चिबुक–(सं० पुं०) ठुड्ढी, ठोड़ी।
चिमटना–(हिं०क्रि०) चिपकना, सटना।
चिमटा–(हिं०पुं०) धातु की दो पट्टियों

से बना हुआ अस्त्र जो जलते हुए अंगारे इत्यादि को उठाने के काम में आता है। **चिमटाना**–(हि० क्रि०) सटाना, लिपटाना। **चिमटी**–(हि० स्त्री०) छोटा चिमटा।

चिमोटा–(हि० पुं०) देखो चमोटा।

चिरंजीव–(सं०वि०) अनेक वर्षों तक जीवित रहनेवाला; (पुं०) आशीर्वाद का शब्द। **चिरंजीवी**–(हि० वि०) देखो चिरजीवी।

चिरंतन–(सं० वि०) पुरातन, बहुत पुराना।

चिर–(सं० वि०) दीर्घायु, चिरायु।

चिरई–(हि० स्त्री०) चिड़िया, पक्षी।

चिरकारी–(सं० वि०) दीर्घसूत्री।

चिरकाल–(सं० पुं०) दीर्घकाल, बहुत समय।

चिरकुट–(हि० पुं०) गूदड़, चिथड़ा।

चिरजीवी–(सं०वि०) दीर्घजीवी, अमर।

चिरना–(हि० क्रि०) फटना, एक सीधी लकीर में कटना।

चिरबत्ती–(हि० वि०) टुकड़ा-टुकड़ा।

चिरवाई–(हि० स्त्री०) चिरवाने का कार्य या पारिश्रमिक। **चिरवाना**–(हि० क्रि०) फड़वाना।

चिरस्थायी–(सं० वि०) बहुत दिनों तक ठहरनेवाला। **चिरस्मरणीय**–(सं० वि०) बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य।

चिरहँटा–(हि०पुं०) चिड़ीमार, व्याध।

चिराई–(हि० स्त्री०) चीरने का कार्य।

चिरायँध–(हि० स्त्री०) चमड़े, बाल आदि के जलने से उत्पन्न दुर्गन्ध।

चिरायु–(सं० वि०) दीर्घायु।

चिराव–(हि० पुं०) चीरने का भाव या क्रिया।

चिरिया–(हि० स्त्री०) चिड़िया, पक्षी।

चिरिहार–(हि०पुं०) व्याधा, बहेलिया।

चिरी–(हि० स्त्री०) देखो चिड़िया।

चिरु–(सं० पुं०) कन्धे और बाँह का जोड़।

चिरैया–(हि० स्त्री०) देखो चिड़िया।

चिलका–(हि०पुं०) चमकता हुआ चाँदी का रुपया।

चिलकाना–(हि० क्रि०) चमकाना।

चिलड़ा–(हि० पुं०) एक प्रकार का पक्वान्न, उलटा।

चिलबिल्ला–(हि०वि०) चपल, चंचल।

चिल्लड़–(हि० पुं०) जूँ की तरह का, एक सफेद कीड़ा।

चिल्लपों–(हि०स्त्री०) चिल्लाने का शब्द।

चिल्लवाना–(हि० क्रि०) चिल्लाने में प्रवृत्त करना।

चिल्लाना–(हि०क्रि०) हल्ला मचाना।

चिल्लाहट–(हि० स्त्री०) कोलाहल।

चिहुँटना–(हि० क्रि०) चिमटना।

चिहुँटी–(हि० स्त्री०) चुटकी, चिकोटी।

चिह्न–(सं० पुं०) किसी वस्तु को पहिचानने का लक्षण।

चीं-चीं–(हि० स्त्री०) पक्षियों के बच्चों का धीमा शब्द।

चींचपड़–(हि० स्त्री०) किसी बड़े के विरोध में कुछ करना या कहना।

चींटा–(हि० पुं०) देखो चिउँटा।

चींटी–(हि०स्त्री०) पिपीलिका, चिउँटी।

चीतना–(हि० क्रि०) चित्रित करना।

चीथना–(हि० क्रि०) फाड़ना।

चीक–(हि० स्त्री०) चीत्कार; (पुं०) कसाई।

चीकट–(हि० क्रि०) तेल की मैल, तलछट।

चीकना–(हि० वि०) पीड़ा के कारण चिल्लाना।

चीखना–(हिं०क्रि०) स्वाद लेने के लिये किसी पदार्थ को थोड़ा-सा खाना या पीना
चीखुर–(हिं०स्त्री०) चिखुरी, गिलहरी।
चीतकार–(हिं० पुं०) देखो चीत्कार।
चीतना–(हिं० क्रि०) सोच विचार करना, चैतन्य होना।
चीता–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाघ।
चीत्कार–(सं० पुं०) चिल्लाहट।
चीथड़ा–(हिं० पुं०) फटे पुराने वस्त्र का छोटा टुकड़ा।
चीथना–(हिं० क्रि०) फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना।
चीथरा–(हिं० पुं०) देखो चीथड़ा।
चीनना–(हिं०क्रि०) चीन्हना, पहचानना।
चीनी–(हिं०स्त्री०) शक्कर; (वि०) चीन देश का, चीन देश या चाइना संबंधी।
चीन्हना–(हिं० क्रि०) पहचानना।
चीप–(हिं० स्त्री०) छोटी फन्नी।
चीमड़–(हिं० वि०) चिमड़ा, लचीला।
चीया–(हिं० पुं०) इमली का बीज।
चीर–(हिं० पुं०) पुराने कपड़े का टुकड़ा, लत्ता, चिथड़ा। चीरफाड़–चीरने-फाड़ने का काम।
चीर, चरम–(हिं०पुं०) मृगछाला, बाघंबर।
चीरना–(हिं० क्रि०) विदीर्ण करना, फाड़ना।
चीरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का लहरिया रंगीन वस्त्र जिसकी पगड़ी बनती है।
चीर्ण–(सं० वि०) फटा या चिरा हुआ।
चील–(हिं० स्त्री०) बाज की जाति की एक चिड़िया। चीलझपट्टा–किसी वस्तु को झपटकर ले जाना।
चीलड़, चीलर–(हिं० पुं०) जूँ की तरह का एक छोटा कीड़ा।
चील्ह–(हिं० स्त्री०) देखो चील।
चीवर–(सं०पुं०) संन्यासियों या भिक्षुकों का फटा वस्त्र।
चुंगना–(हिं० क्रि०) देखो चुगना।
चुंगल–(हिं० पुं०) पक्षियों का टेढ़ा झुका हुआ पंजा, बटोरा हुआ मनुष्य का पंजा।
चुंगी–(हिं०स्त्री०) नगर के भीतर आनेवाली सामग्री पर का कर।
चुंडी–(हिं० स्त्री०) चुटिया।
चुँदरी–(हिं० स्त्री०) देखो चूनरी।
चुंदी–(हिं० स्त्री०) शिखा, चुटैया।
चुअना–(हिं०क्रि०) चूना, रसकर बहना।
चुआई–(हिं० स्त्री०) चुआने या टपकाने का काम। चुआना–(हिं० क्रि०) टपकाना, बूँद बूंद करके गिराना।
चुआव–(हिं०स्त्री०) चुआने की क्रिया।
चुकन्दर–(हिं० पुं०) शलजम के प्रकार की एक तरकारी।
चुकचुकाना–(हिं० क्रि०) पसीजना।
चुकता–(हिं० वि०) ऋण मुक्त किया हुआ।
चुकना–(हिं० क्रि०) समाप्त होना।
चुकवाना–(हिं० क्रि०) निबटवाना।
चुकाई–(हिं० स्त्री०) चुकता होने का भाव।
चुकाना–(हिं०क्रि०) ऋण निःशेष करना।
चुक्कड़–(हिं०पुं०) मिट्टी का छोटा पात्र।
चुगना–(हिं० क्रि०) पक्षी का चोंच से दाना उठाकर खाना।
चुचकारना–(हिं० क्रि०) चुमकारना।
चुचकारी–(स्त्री०) चुमकारने की क्रिया।
चुचाना–(हिं०क्रि०) बूँद-बूँद करके टपकाना।
चुचुक–(सं०वि०) स्तन का अग्रभाग या घुंडी।

चुचुकना–(सं० पुं०) संकुचित होना।
चुटकना–(हि० क्रि०) कोड़े से मारना, चुटकी से तोड़ना।
चुटकला–(हि० पुं०) देखो चुटकुला।
चुटकी–(हि० स्त्री०) अँगूठे और बीच की अँगुली के मिलने की स्थिति।
चुटकुला–(हि० पुं०) कोई विलक्षण वार्ता, कोई विनोदपूर्ण बात, अधिक गुण करनेवाली विशिष्ट औषधि।
चुटिया–(हि०स्त्री०)लट, शिखा, चुन्दी।
चुटीला–(हि० वि०) चोट खाया हुआ, भड़कीला।
चुटल–(हि०वि०)जिसको चोट लगी हो।
चुड़िहारा–(हि० पुं०) चूड़ी बनान और बेचनेवाला।
चुड़ैल–(हि०स्त्री०)प्रेतनी,भूतनी,डायन।
चुन–(हि०पुं०)आटा,चूर्ण,बुकनी,पिसान।
चुनचुना–(हि० वि०) जिसके स्पर्श से चुनचुनाहट उत्पन्न हो।
चुप–(हि० वि०)मूक, मौन। चुपकी–(हि० स्त्री०) मौनभाव। चुपचाप–(हि० क्रि० वि०) मौन रहकर, गुप्त रूप से।
चुपड़ना–(हि० क्रि०) किसी गीली वस्तु को फैलाना, दोष छिपाना।
चुपाना–(हि० क्रि०) चुप हो रहना, न बोलना।
चुप्पा–(हि० वि०) कम बोलनेवाला, जो किसी बात का उत्तर जल्दी से न देता हो।
चुप्पी–(हि० स्त्री०) मौन।
चुबलाना, चुभलाना–(हि०क्रि०) स्वाद लेने के लिय किसी वस्तु को मुख में रखकर जीभ से इधर-उधर डोलाना।
चुभकना–(हि० क्रि०) पानी में डूबना।
चुभकाना–(हि० क्रि०) पानी में गोते देना। चुभकी–(हि० स्त्री०) डुबकी, गोता।
चुभना–(हि० क्रि०) गड़ना, धँसना।
चुभाना–(हि० क्रि०) धँसाना, गड़ाना।
चुभोना–(हि० क्रि०) चुभाना, गड़ाना।
चुमकार–(हि० स्त्री०) चूमने के समय उच्चारित शब्द, पुचकार।
चुम्बक–(सं० पुं०) पत्थर या धातु का वह टुकड़ा जो लोहे को खींचकर पकड़ लेता है।
चुम्बन–(सं० पुं०) प्रेम में किसी के होठों से गाल इत्यादि को स्पर्श करने या दबाने की क्रिया। चुम्बित–(सं०वि०) प्रेम किया हुआ, चूमा हुआ, स्पर्श किया हुआ।
चुम्मक–(हि० पुं०) देखो चुम्बक।
चुम्मा–(हि० पुं०) चुम्बन।
चुरकना–(हि० क्रि०) बोलना, चहचहाना, टूटना, फूटना।
चुरकी–(हि०स्त्री०) चोटी,चुटिया,शिखा
चुरचुरा–(हि० वि०) थोड़े से दबाव में चूरचूर करके टूटनेवाला। चुरचुराना–(हि० क्रि०) चुरचुर शब्द करना।
चुरना–(हि०क्रि०) किसी वस्तु का पानी में खौलना, परस्पर गुप्त मन्त्रणा करना।
चुरवाना–(हि० क्रि०) पकाने का काम दूसरे से कराना।
चुराई–(हि० स्त्री०) चुराने की क्रिया या भाव, पकने का काम। चुराना–(हि० क्रि०) चोरी करना, लोगों की दृष्टि से छिपाना।
चुरिहारा–(हि० पुं०) देखो चुड़िहारा।
चुल–(हि० स्त्री०) खुजलाहट।
चुलचुलाना, चुलबुली–(हि० स्त्री०) खुजलाहट, चुल।

चुलबुल–(हिं० स्त्री०) चंचलता, चपलता। चुलबुला–(हिं० वि०) चपल, चंचल। चुलबुलाना–(हिं० क्रि०) चंचल होना, चपलता करना।
चुल्ल–(हिं० पुं०) एक हाथ की हथेली का गड्ढा।
चुवना–(हिं० क्रि०) चना, रसकर बहना।
चुवाना–(हिं० क्रि०) बूंद-बूंद करके गिराना, टपकाना।
चुसकी–(हिं० स्त्री०) ओंठ से किसी वस्तु के पीने की क्रिया, घूंट। चुसाना–(हिं० क्रि०) चूसा जाना। चुसनी–(हिं० स्त्री०) बच्चों का चूसने का खिलौना।
चुसवाना–(हिं० क्रि०) चूसने का काम दूसरे से कराना। चुसाई–(हिं० स्त्री०) चूसन का काम करना, चूसने देना।
चुहँटी–(हिं० स्त्री०) चुटकी।
चुहचुहा, चुहचुहाता–(हिं० वि०) चटकीला, रसीला। चुहचुहाना–(हिं० क्रि०) चटकीला जान पड़ना।
चुहटाना–(हिं० क्रि०) पैरों से कुचलना।
चुहड़ा–(हिं० पुं०) चाण्डाल, भंगी।
चुहना–(हिं० क्रि०) दाँतों से दबाकर रस चूसना।
चुहल–(हिं० स्त्री०) हँसी-ठट्ठा, ठिठोली।
चुहिया–(हिं० स्त्री०) मादा चूहा, छोटा चूहा।
चूं–(हिं० पुं०) छोटी चिड़िया के बोलने का शब्द।
चूं करना–(हिं० क्रि०) कुछ कहना।
चूंचूं–(हिं० पुं०) चिड़ियों के बोलने का शब्द।
चूंनी–(हिं० स्त्री०) अन्न का कण।
चूक–(हिं० स्त्री०) भूल, दरार, फटन, धोखा। चूकना–(हिं० क्रि०) अशुद्धि करना, भूल करना।
चूड़, चूड़क–(सं० पुं०) शिखा, चोटी।
चूड़ान्त–(सं० वि०) पराकाष्ठा, अन्तिम सीमा तक का।
चूड़ा–(सं० स्त्री०) शिखा, चोटी, चुरकी। चूड़ाकरण–(सं० पुं०) बालक का पहिली बार सिर मुण्डन करने का संस्कार।
चूड़ामणि–(सं० पुं०) सिर में पहिनने का एक आभूषण, शीशफूल, अग्रगण्य।
चूड़ी–(हिं० स्त्री०) कोई वृत्ताकार पदार्थ, हाथ में पहिनने का एक गहना।
चूतड़, चूतर–(हिं० पुं०) कमर के नीचे तथा जाँघ के ऊपर का मांसल भाग, नितम्ब।
चून–(हिं० पुं०) चूर्ण, आटा, पिसान।
चूनर, चूनरी–(हिं० स्त्री०) देखो चुनरी।
चूना–(हिं० पुं०) पत्थर, कंकड़ आदि को फूंककर बनाया हुआ तीक्ष्ण भस्म, किसी वस्तु का ऊपर से नीचे अचानक गिरना, छिद्र से रसकर बहना; (वि०) छिद्र द्वारा टपकनेवाला।
चूनी–(हिं० स्त्री०) अन्न का कण या छोटा टुकड़ा, माणिक रत्न का छोटा टुकड़ा।
चूमना–(हिं० क्रि०) ओठों से शरीर के किसी अंग को या किसी पदार्थ को दबाना या स्पर्श करना।
चूर–(हिं० पुं०) टुकड़े, महीन कण, चूर्ण; (वि०) निमग्न, लीन, उन्मत्त।
चूरण, चूरन–(हिं० पुं०) चूर्ण, महीन पिसी हुई औषधि।
चूरना–(हिं० क्रि०) चूर चूर करना।
चूरमा–(हिं० पुं०) एक पक्वान्न जो रोटी या पूरी को चूरचूर करके घी में भूनकर चीनी मिलाकर बनाया जाता है।

चूरा–(हिं०पुं०) किसी वस्तु का पीसा हुआ भाग।
चूर्ण–(सं०पुं०) महीन पिसा हुआ पदार्थ।
चूर्णित–(सं० वि०) चूर्ण किया हुआ।
चूर्मा–(हिं० पुं०) देखो चूरमा।
चूल–(हिं०स्त्री०) लकड़ी का वह पतला सिरा जिस पर कोई पदार्थ घूमता है।
चूल्हा–(हिं०पुं०) मिट्टी का अथवा लोहे का बना हुआ वह पात्र जिसमें आँच रखकर पकाने का काम होता है।
चूषण–(सं० पुं०) चूसने की क्रिया।
चूषणीय–(सं० वि०) चूसने योग्य।
चूसना–(हिं०क्रि०) ओठ और जीभ को मिलाकर किसी पदार्थ का रस खींचना।
चूहड़, चूहड़ा–(हिं० पुं०) श्वपच, भंगी, मेहतर।
चूहा–(हिं० पुं०) मूषक, मूसा। चूहादान, चूहेदानी–(हिं० पुं०) चूहों को फँसाने का पिंजड़ा।
चेंचें–(हिं० स्त्री०) पक्षी के बोलने का शब्द। चेंचें करना-वृथाकी बकवाद करना
चेंगड़ा–(हिं० पुं०) छोटा बालक, बच्चा।
चेंगी–(हिं० स्त्री०) चमड़े की गोल छेद की हुई चकती जो गाड़ी के धुरे पर पहिनाई रहती है।
चेंचर–(हिं०वि०) बकवाद करनेवाला।
चेंचें–(हिं० स्त्री०) चिड़ियों के बोलने का शब्द।
चेटुआ–(हिं० पुं०) चिड़िया का बच्चा।
चेंपें–(हिं० स्त्री०) चींचपड़, व्यर्थ की बकवाद।
चेफ–(हिं० पुं०) ऊख का छिलका।
चेट, चेटक–(सं०पुं०) सेवक, दास, पति, विदूषक, भाँड़, दूत।
चेटिका, चेटिकी–(हिं० स्त्री०) दासी।
चेटी–(सं० स्त्री०) दासी, लौंडी।
चेटुआ–(हिं० पुं०) चिड़िये का बच्चा।
चेत–(हिं०पुं०) चित्तवृत्ति, चेतना, ज्ञान।
चेतन–(सं० पुं०) जीव, आत्मा।
चेतना–(सं० स्त्री०) मनोवृत्ति, बुद्धि।
चेतनीय–(सं० वि०) जानने योग्य।
चेतन्य–(हिं० पुं०) देखो चैतन्य।
चेतवनि–(हिं० स्त्री०) चितवन।
चेतावनी–(हिं० स्त्री०) सावधान होने की सूचना।
चेतौनी–(हिं० स्त्री०) देखो चेतावनी।
चेप–(हिं० पुं०) कोई गाढ़ा चिपचिपा रस या लासा, उत्साह।
चेर–(हिं० पुं०) दास, सेवक।
चेरा–(हिं० पुं०) नौकर, दास, चेला।
चेरि, चेरी–(हिं० स्त्री०) दासी, नौकरनी।
चेला–(हिं०पुं०) शिष्य, छात्र, विद्यार्थी।
चेष्टा–(सं० स्त्री०) इच्छा, कामना, प्रयत्न, उद्योग।
चै–(हिं० पुं०) जन-समूह, ढेर।
चैत–(हिं० पुं०) चैत्र महीना।
चैतन्य–(सं०पुं०) चित् स्वरूप, आत्मा, ज्ञान; (वि०) सचेत, सावधान।
चैती–(हिं० स्त्री०) चैत में कटनेवाला, अन्न; (वि०) चैत्र संबंधी।
चैत्य–(सं० पुं०) मन्दिर, देवालय।
चैत्र–(सं० पुं०) चैत का महीना।
चैन–(हिं० पुं०) आनन्द, सुख।
चैल–(सं० पुं०) वस्त्र, कपड़ा, पहिनावा।
चैला–(हिं० पुं०) कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा।
चैली–(हिं०स्त्री०) चीरी हुई लकड़ी का छोटा चैला।
चोंकर–(हिं० पुं०) देखो चोकर।
चोंगा–(हिं०पुं०) बाँस, कागज आदि की एक ओर बन्द तथा दूसरी ओर खुली हुई पोली नली।

चोंच–(हिं० स्त्री०) पक्षी के मुख का नोकीला अगला भाग, चञ्चु।
चोंटना–(हिं० क्रि०) तोड़ना, खोंटना।
चोंथ–(हिं० पुं०) गाय, भैंस आदि का उतना गोबर जितना एक बार गिरे।
चोंथना–(हिं० क्रि०) नोचना, चोथना।
चोंधर, चोंधरा–(हिं०वि०) बहुत छोटी आँखवाला, मूर्ख।
चोआ–(हिं० पुं०) तौलने में किसी बाँट की कमी पूरी करने के लिये जो कंकड़ पत्थर का टुकड़ा प्रयोग किया जाता है।
चोकर–(हिं० पुं०) पीसे हुए अन्न की भूसी या छिलका जो आटे के चालने पर निकलता है।
चोखा–(हिं०पुं०) शुद्ध, बिना मिलावट का, पनी धार का, चतुर, बैंगन, अरुई आदि का भुरता।
चोचला–(हिं० पुं०) मोहित करने के लिये अंगों की गति या चष्टा, हावभाव।
चोज–(हिं० पुं०) हँसी-ठट्ठा, व्यंग-पूर्ण उपहास।
चोट–(हिं० स्त्री०) टक्कर, मार, घाव, आक्रमण, सन्ताप, दुःख ; चोटइल–(वि०) चोट खाया हुआ ; चोटहा–(वि०) जिसके अंग पर आघात का चिह्न हो।
चोटा–(हिं० पुं०) राब का पसेव।
चोटार–(हिं० वि०) चोट पहुँचानेवाला।
चोटियाना–(हिं० क्रि०) चोट मारना, चोटी पकड़ना।
चोटी–(हिं०स्त्री०) शिखा, चुन्दी, स्त्रियों के एक में एक गुथे बाल। चोटीपोटी-(स्त्री०) झूठी बात।
चोट्टा–(हिं० पुं०) तस्कर, चोरी करने-वाला।
चोप–(हिं० पुं०) चाव, उमंग।
चोपदार–(हिं० पुं०) देखो चोबदार।
चोपना–(हिं० क्रि०) मोहित करना।
चोपी–(हिं० स्त्री०) देखो चोप।
चोभाना–(हिं० क्रि०) देखो चुभाना।
चोभा–(हिं० पुं०) वह पोटली जिसमें दवा बाँधकर शरीर के कोई अंग सेंके जाते हैं।
चोर–(सं० पुं०) तस्कर, अनिष्टकारक पदार्थ; (वि०) छिपाया हुआ, गुप्त।
चोरकट–(हिं० पुं०) चोर, उचक्का।
चोरखाना–(हिं० पुं०) सन्दूक आदि में लगा हुआ गुप्त स्थान।
चोराना–(हिं० क्रि०) देखो चुराना।
चोरी–(हिं० स्त्री०) चुराने का काम।
चोला–(हिं० पुं०) साधु का पहिनने का ढीला लंबा कुरता।
चोली–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों की एक प्रकार की अँगिया।
चोषक–(सं० वि०) चूसनेवाला।
चोषण–(सं० पुं०) चूसने की क्रिया।
चोष्य–(सं० वि०) चूसने योग्य।
चोसा–(हिं०पुं०) लकड़ी रेतन की रेती।
चौंक–(हिं० स्त्री०) पीड़ा या भय के कारण शरीर का झटके से हिल उठना तथा जी घबड़ाना, भड़क, झिझक।
चौंकना–(हिं०क्रि०) आश्चर्य, भय, पीड़ा आदि के कारण शरीर कँप जाना, भड़-कना, चकित होना।
चौंकाना–(हिं० क्रि०) भड़काना।
चौंतरा–(हिं० पुं०) देखो चबूतरा।
चौंतीस–(हिं० वि०) तीस और चार की संख्या ३४। चौंतीसवाँ–(हिं० वि०) तेंतीस संख्या के बाद का।
चौंध–(हिं० स्त्री०) दृष्टि की अस्थिरता, तिलमिलाहट। चौंधना–चमकना।

चौंधियाना–(हिं० क्रि०) दृष्टि स्थिर न कर सकना।
चौंर–(हिं० पुं०) चँवर, झालर, फुंदना।
चौंरा–(हिं० पुं०) अन्न रखने का गड्ढा।
चौंरी–(हिं० स्त्री०) मक्खी हाँकने का छड़ी में बँधा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा।
चौंसठ–(हिं० वि०) साठ और चार की संख्या ६४। **चौंसठवां**–(हिं० वि०) संख्या में तिरसठ के बाद का।
चौ–(हिं०वि०) चार; (पुं०) जौहरियों का मोती तौलने का एक परिमाण।
चौआ–(हिं० पुं०) चौपाया; (पुं०) चार अँगुल की नाप, ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों। **चौआना**–(हिं०क्रि०) विस्मित होना, चकपकाना।
चौक–(हिं० पुं०) चौकोर भूमि, घर के बीच का चौखूटा स्थान, नगर का चौड़ा मैदान जहाँ बड़ी-बड़ी दूकानें हों।
चौकठ, चौकठा–(हिं० पुं०) देखो चौखटा।
चौकड़–(हिं०वि०) उत्तम, बढ़िया, अच्छा।
चौकड़ा–(हिं० पुं०) कान में पहिनने की बाली।
चौकड़ी–(हिं० स्त्री०) हरिन की वह गति जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता हुआ दौड़ता है, चार मनुष्यों का गुट्ट, पलथी, चार युगों का समूह, चार घोड़े की गाड़ी।
चौकन्ना–(हिं० वि०) सावधान, सजग।
चौकरी–(हिं० स्त्री०) देखो चौकड़ी।
चौकस–(हिं० वि०) सावधान, सचेत।
चौका–(हिं० पुं०) पत्थर का चौकोर टुकड़ा, रोटी बेलने का काठ या पत्थर का गोल टुकड़ा, चकला, हिन्दुओं के रसोई बनाने का स्थान, स्वच्छता के लिये मिट्टी, गोबर का लेप, चार बूटियों का ताश का पत्ता, एक प्रकार का ठस बिना हुआ वस्त्र।
चौकी–(हिं० स्त्री०) काठ या पत्थर का चार पावे लगा हुआ आसन, कुरसी, पुलिस का छोटा थाना। **चौकीदार**–(हिं० पुं०) पहरा देनेवाला, गोड़ैत।
चौकीदारी–(हिं० स्त्री०) रखवाली, वह धन जो चौकीदार रखने के लिये दिया जावे।
चौकोन, चौकोना, चौकोर–(हिं० वि०) चतुष्कोण, चौखूटा।
चौखट–(हिं०स्त्री०) चार लकड़ियों से बना हुआ ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे होते हैं, देहली।
चौखानि–(हिं० स्त्री०) चार प्रकार के जीव यथा अण्डज, पिण्डज, स्वेदज और उद्भिज।
चौखूंट–(हिं० पुं०) चारों दिशा, भूमण्डल
चौखूंटा–(हिं० वि०) चौकोर।
चौगुन–(हिं० वि०) चौगुना, चतुर्गुण।
चौगुना, चौगून–(हिं० वि०) चतुर्गुण।
चौगोड़िया–(हिं० स्त्री०) चार पावे की ऊँची चौकी।
चौघड़–(हिं० पुं०) दाढ़ का चौड़ा दाँत जो चिपटा होता है।
चौघड़ा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का चार खाने का डिब्बा।
चौघोड़ी–(हिं० स्त्री०) चार घोड़े की गाड़ी या रथ।
चौचन्द–(हिं० पुं०) अपवाद।
चौजुगी–(हिं०स्त्री०) चार युगों का काल
चौड़ा–(हिं० वि०) लंबाई से भिन्न दिशा में विस्तृत।
चौतरा–(हिं० पुं०) देखो चबूतरा।
चौतही–(हिं० स्त्री०) चार तह करके बिछाने की मोटी चाँदनी।

चौतारा–(हिं०पुं०) एक बाजा जिसमें चार तार लगे होते हैं।
चौथ–(हिं० स्त्री०) महीने के प्रत्येक पक्ष का चौथा दिन, मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमें आय का चौथाई अंश राजा को मिलता था।
चौथिया–(हिं० पुं०) चौथे दिन आनेवाला ज्वर।
चौदस–(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि।
चौदह–(हिं० वि०) जो गिनती में दस और चार हो। **चौदहवाँ**–(हिं० वि०) क्रम में तेरह के बाद का।
चौधराई–(हिं०स्त्री०) चौधरी का काम या पद। **चौधराना**–(हिं०स्त्री०) वह धन जो चौधरी को उसके काम के लिये दिया जाय।
चौधरी–(हिं० पुं०) किसी जाति या समाज का मुखिया।
चौपग–(हिं०पुं०) चार पैर का प्राणी।
चौपट–(हिं०वि०) चारों ओर से खुला हुआ, नष्ट-भ्रष्ट।
चौपटहा–(हिं० वि०) सर्वनाशी।
चौपड़–(हिं० स्त्री०) चौसर का खेल।
चौपथ–(हिं० पुं०) चौरा, चौमुहानी।
चौपद–(हिं० पुं०) चौपाया, पशु।
चौपरतना–(हिं० क्रि०) कपड़े की तह लगाना।
चौपहरा–(हिं०वि०) चार पहर का।
चौपहल–(हिं०वि०) जिसमें चार पहल हों। **चौपहला, चौपहलू**–(हिं० वि०) वर्गात्मक, चार पहल का।
चौपहिया–(हिं० वि०) जिसमें चार पहिये हों।
चौपहलू–(हिं० पुं०) देखो चौपहला।
चौपाई–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।
चौपाया–(हिं०पुं०) चार पैरवाला पशु।
चौपाल–(हिं० पुं०) बैठने-उठने का स्थान जो ऊपर से ढपा तथा चारों ओर से खुला हो, एक प्रकार की खली पालकी।
चौफला–(हिं०वि०) जिसमें चार फल या धार हों।
चौफेर–(हिं०क्रि०वि०) चारों ओर।
चौफेरी–(हिं०स्त्री०) चारों ओर घूमना।
चौबन्दी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिरजई।
चौबगला–(हिं० पुं०) कुरता, फतुही आदि में बगल के नीचे तथा कली के ऊपर का भाग; (वि०) चारों ओर का। **चौबगली**–(हिं०स्त्री०) बगलबन्दी
चौबाइन–(हिं०स्त्री०) चौबे की स्त्री।
चौबाई–(हिं०स्त्री०) चारों ओर बहनेवाली हवा, किंवदन्ती।
चौबारा–(हिं० पुं०) घर के ऊपर की वह कोठरी जिसमें चारों ओर खिड़कियाँ हों; (वि०) चौथी बार।
चौबिस, चौबीस–(हिं०वि०) बीस और चार की संख्या का, यह संख्या २४।
चौबीसवाँ–(हिं० वि०) संख्या में तेईस के बाद का।
चौबे–(हिं० पुं०) ब्राह्मणों की एक शाखा, चतुर्वेदी।
चौमसिया–(हिं० वि०) वर्षा ऋतु के चार महीने में होनेवाली; (पुं०), चार माश का बाँट।
चौमासा–(हिं०पुं०) चातुर्मास, वर्षा के चार महीने।
चौमुख–(हिं० क्रि० वि०) चारों ओर।
चौमुखा–(हिं०वि०) चारोंओर मुखवाला

चौमुहानी–(हिं०स्त्री०) चतुष्पथ, चौरहा।
चौरंगा–(हिं० वि०) चार रंग का।
चौरस–(हिं०वि०) जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल, बराबर।
चौरस्ता–(हिं० पुं०) चौरहा, चौमुहानी। चौरहा–(हिं०पुं०) चतुष्पथ।
चौरा–(हिं० पुं०) चबूतरा, वेदी।
चौरानबे–(हिं० वि०) नब्बे और चार की संख्या का, ९४।
चौरासी–(हिं० वि०) अस्सी और चार की संख्या ८४; (पुं०) एक प्रकार का घुंघुरू।
चौराहा–(हिं० पुं०) देखो चौरहा।
चौरी–(हिं०स्त्री०) छोटा चबूतरा या वेदी
चौरेठा–(हिं०पुं०) पानी के साथ पीसा हुआ चावल।
चौर्य–(सं०पुं०) स्तेय, चोरी।
चौलकर्म–(हिं०वि०) चूड़ासंस्कार, मुण्डन
चौलड़ा–(हिं० वि०) जिस माला में चार लड़ी हों।
चौवन–(हिं०वि०) पचास और चार की संख्या का, ५४।
चौवा–(हिं० पुं०) हाथ की चार अँगुलियों का समूह, चार अँगुलियों में लपेटा हुआ तागा, ताश का पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
चौवालिस–(हिं० वि०) चालिस और चार की संख्या, ४४।
चौसर–(हिं० पुं०) एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार-चार गोटियों से दो मनुष्यों में खेला जाता है।
चौहट, चौहट्ट–(हिं० पुं०) वह स्थान जहाँ चारों ओर दूकान हों, चौक, चौरास्ता, चौमुहानी।
चौहत्तर–(हिं० वि०) सत्तर और चार की संख्या, ७४।
चौहद्दी–(हिं० स्त्री०) चारों ओर की सीमा।
चौहरा–(हिं० वि०) चार तह या परत का, चौगुना।
चौहें–(हिं० क्रि० वि०) चारों ओर।
च्यवन–(सं० पुं०) टपकना, चूना, रसना।

छ

छ–हिन्दी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसका उच्चारण तालु से होता है; (सं०पुं०) आच्छादन, घर, खण्ड, टुकड़ा; (वि०) स्वच्छ, तरल; निर्मल, (हिं०वि०) पाँच से एक अधिक संख्या का, गिनती में पाँच से एक अधिक।
छंग–(हिं० पुं०) उत्संग, गोद, अंक।
छंगा–(हिं० वि०) छ अँगुलियों वाला।
छँटना–(हिं०क्रि०) कटकर अलग होना।
छँटवाना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु का अनावश्यक भाग कटवा देना। छँटाई-(हिं० स्त्री०) छाँटने या अलग करने का काम, चुनने का काम। छँटान-(हिं० पुं०) छाँटने का काम।
छँड़ना–(हिं० क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
छँड़ुवा–(हिं०वि०) छोड़ा हुआ, मुक्त।
छंद–(हिं०पुं०) युक्ति, चाल, अभिप्राय, ढकना, स्त्रियों का हाथ में पहिनने का एक आभूषण।
छंदना–(हिं० क्रि०) पैरों में रस्सी लगाकर बाँधा जाना।
छई–(हिं० स्त्री०) देखो क्षयी।
छक–(हिं० स्त्री०) तृप्ति।
छकड़ा–(हिं० पुं०) बोझ लादने की दुपहिया गाड़ी।
छकड़िया–(हिं० स्त्री०) छः कहारों से उठाने की पालकी।

छकड़ी–(हिं० स्त्री०) छः का समूह।
छकना–(हिं० क्रि०) चकराना।
छकाछक–(हिं० वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ।
छकाना–(हिं० क्रि०) कष्ट देना, परास्त करना। **छकीला**–(हिं० वि०) छका हुआ।
छक्का–(हिं० पुं०) छ का समूह, वह ताश जिसमें छ बूटियाँ हों। **छक्का-पंजा**-दावपेंच। **छक्के छूटना**–साहस छूटना।
छगन–(हिं० पुं०) छोटा बालक, प्रिय बालक।
छगरी–(हिं० स्त्री०) छोटी बकरी।
छगल–(सं० पुं०) छाग, बकरा।
छगुनी–(हिं० स्त्री०) हाथ की सबसे छोटी अँगुली।
छछूंदर, छछुंदर–(हिं० पुं०) चूहे की जाति का जन्तु जिसका थूथन अधिक नुकीला होता है, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा।
छजना–(हिं० क्रि०) शोभा देना, अच्छा लगना, ठीक जँचना।
छज्जा–(हिं० पुं०) ओलती, भीत के बाहर निकला हुआ भाग।
छटंकी–(हिं० स्त्री०) एक छटांक का बटखरा, बहुत छोटी वस्तु।
छटकना–(हिं० स्त्री०) वेग के साथ निकल जाना, अलग-अलग रहना, उछलना-कूदना।
छटकाना–(हिं० क्रि०) बलपूर्वक अलग करना।
छटपट–(हिं० पुं०) पीड़ा के कारण पैर पटकने की क्रिया; (वि०) चंचल, चपल। **छटपटाना**–(हिं० क्रि०) तड़-फड़ाना, घबड़ाना।
छटपटी–(हिं० स्त्री०) व्याकुलता।
छटाँक–(हिं० स्त्री०) एक सेर का सोल-हवाँ भाग।
छटा–(सं० स्त्री०) प्रकाश, शोभा, सौन्दर्य, छवि, बिजली।
छटाभा–(सं० स्त्री०) बिजली की चमक।
छटैल–(हिं० वि०) छँटा हुआ, चतुर।
छठवाँ, छठा–(हिं० वि०) क्रम में पाँच वस्तु के बाद का। **छठे छमासे**-कभी-कभी।
छठी–(हिं० स्त्री०) जन्म से छठे दिन अथवा छठे मास का पूजन।
छड़–(हिं० स्त्री०) धातु या लकड़ी का लंबा पतला टुकड़ा या गज।
छड़ा–(हिं० पुं०) स्त्रियों की पैर में पहिनने की चूड़ी।
छड़ी–(हिं० स्त्री०) पतली लकड़ी या लाठी; (वि०) अकेली। **छड़ी सवारी**–अकेला, बिना सामग्री की यात्रा।
छण–(हिं० पुं०) देखो क्षण।
छत–(सं० स्त्री०) चूना, कंकड़ आदि डालकर बनाई हुई घर की भूमि, पाटन।
छतना–(हिं० पुं०) पत्तों का बना हुआ छाता। **छतनार**–(हिं० वि०) छत्ते की तरह फैला हुआ।
छतवंत–(हिं० वि०) क्षतयुक्त।
छतरी–(हिं० स्त्री०) छाती, मण्डप, इक्के के ऊपर की छाजन, कुकुरमुत्ता।
छतिया-(हिं० स्त्री०) वक्षःस्थल, छाती।
छतीसा-(हिं० वि०) चतुर, सयाना, धूर्त। **छतीसापन**–धूर्तता।
छत्ता–(हिं० पुं०) छाता, छतर, पटाव जिसके नीचे से मनुष्य के चलने का मार्ग हो, मधुमक्खियों के रहने का मोम का बना हुआ घर।

छत्तीस–(हिं० पुं०) तीस और छ की संख्या ३६। छत्तीसवाँ–(हिं० वि०) पैंतीस के बाद की संख्या का।
छत्तीसा–(हिं० पुं०) नाई, हज्जाम; (वि०) धूर्त, चतुर।
छत्तीसी–(हिं० वि०) छलछंदवाली, छिनाल।
छत्तर–(हिं० पुं०) छाता।
छत्र–(सं० पुं०) छाता, छतरी।
छत्रक–(सं० पुं०) कुकुरमुत्ता।
छत्रपति–(सं० पुं०) छत्र का अधिपति, राजा। छत्रपत–(सं० पुं०) भोजपत्र का वृक्ष। छत्रभंग–(सं० पुं०)अराजकता।
छद–(सं० पुं०) आवरण, छाल।
छदाम–(हिं० पुं०) पैसे का चतुर्थांश।
छद्म–(सं० पुं०) बहाना, मिस, कपट।
छद्मवेश–दूसरों को ठगने के लिये धारण किया हुआ वेश। छद्मी–(हिं० वि०) कपटी, छली।
छन–(हिं० पुं०) देखो क्षण।
छनक–(हिं० स्त्री०) झनझनाहट, झनकार, भड़क; (पुं०) एक क्षण। छनकना–(हिं० क्रि०) भड़कना।
छनछनाना–(हिं०क्रि०) झनझनाना।
छनछबि–(हिं० स्त्री०) क्षणप्रभा, बिजली।
छनना–(हिं० क्रि०) महीन छिद्रों में से किसी पदार्थ का नीचे गिरना, छोटे-छोटे छेदों म से होकर आना, छानबीन होना; (पुं०) छानने का महीन वस्त्र।
छनभंगु–(हिं० वि०) क्षणभर में नष्ट होनेवाला।
छनाका–(हिं० पुं०) झनकार, ठनाका।
छनिक–(हिं०वि०) क्षणिक, अल्प काल का; (पुं०) एक क्षण।
छन्न–(सं० वि०) ढपा हुआ, लुप्त।
छन्नमति–(हिं० वि०) मूर्ख, अज्ञान।
छना–(हिं० पुं०) देखो छनना।
छन्द–(सं० पुं०) वेद, वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि के नियम हों।
छंदोभंग–(सं० पुं०) छन्द-रचना का एक दोष।
छप–(हिं०स्त्री०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
छपका–(हिं० पुं०) सिर में पहिनने का एक आभूषण, पानी में हाथ-पाँव मारने का काम।
छपटना–(हिं० क्रि०) चिपकना। छपटाना–(हिं० क्रि०) छाती से लगाना।
छपद–(हिं० पुं०) भ्रमर, भौंरा।
छपन–(हिं०वि०) गुप्त; (पुं०) विनाश, संहार।
छपना–(हिं०क्रि०) छापा जाना, अंकित होना।
छपरखट, छपरखाट–(हिं० पुं०) मसहरीदार पलंग।
छपवया–(हिं०वि०)छपाने या छपवानेवाला।
छपहीं–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के हाथ की अँगुलियों में पहिनने का एक गहना।
छपा–(हिं० स्त्री०) क्षपा, रात्रि।
छपाई–(हिं० स्त्री०) छापने का काम या ढंग, मुद्रण, छापने की मजदूरी।
छपाकर–(हिं० पुं०)क्षपाकर, चन्द्रमा।
छपाका–(हिं० पुं०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
छपाना–(हिं० क्रि०) छापने का काम कराना, छापेखाने में मुद्रित कराना।
छपानाथ–(हिं० पुं०) देखो क्षपानाथ।

छपाव–(हिं० पुं०) देखो छिपाव।
छप्पन–(हिं० वि०) पचास और छ की संख्या, ५६।
छप्पय–(हिं० पुं०) एक मात्रिक छन्द जिसमें छ चरण होते हैं।
छप्पर–(हिं०स्त्री०) लकड़ी, फूस आदि की बनाई हुई छाजन।
छब–(हिं०स्त्री०) देखो छबि।
छबड़ा–(हिं० पुं०) छितना, झाबा, खाँचा।
छबि–(हिं० स्त्री०) शोभा, सुन्दरता।
छबीला–(हिं०वि०) सुन्दर, सोहावना।
छब्बीस–(हिं० वि०) बीस और छ की संख्या, २६। छब्बीसवाँ–(हिं० वि०) संख्या में पचीस के बाद का।
छब्बीसी–(हिं० स्त्री०) छब्बीस वस्तुओं का समूह।
छम–(हिं०स्त्री०) घुंघरू बजने का शब्द।
छमक–(हिं० स्त्री०) ठसक, ठाटबाट।
छमकना–(हिं०क्रि०) ठसक दिखलाना।
छमछम–(हिं० स्त्री०) घुंघरू, पायल आदि के बजने का शब्द; (क्रि० वि०) ऐसे शब्द के साथ।
छमा–(हिं० स्त्री०) देखो क्षमा।
छमाछम–(हिं० स्त्री०) गहने के बजने या पानी बरसने का शब्द।
छमावान–(हिं० वि०) देखो क्षमावान।
छमिच्छा–(हिं०स्त्री०) समस्या, संकेत।
छय–(हिं० पुं०) क्षय, नाश, विनाश।
छयना–(हिं० क्रि०) नष्ट होना।
छर–(हिं० पुं०) देखो क्षर।
छरकना–(हिं० क्रि०) छिटकना, विखरना।
छरछंद, छरछंदी–देखो छलछंद, छरछंदी।
छरछर–(हिं० पुं०) कणों का वेग से निकलने का शब्द। छरछराना–(हिं० क्रि०) घाव पर नमक लगने से पीड़ा होना। छरछराहट–(हिं० स्त्री०) शरीर के कटे भाग पर क्षार लगकर पीड़ा होना।
छरना–(हिं०क्रि०) टपकना, चूना, झरना।
छरछरा–(हिं० वि०) क्षीण अंग का, हलका।
छरा–(हिं० पुं०) छड़ा, लड़ी, रस्सी।
छरीदा–(हिं०वि०) बिना संग-साथ का, अकेला।
छर्रा–(हिं० पुं०) कंकड़ आदि का छोटा टुकड़ा, बन्दूक में भरने के सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े।
छल–(सं०पुं०) धूर्तता, बहाना, कपट।
छलक–(हिं० स्त्री०) छलकने का भाव या क्रिया। छलकन–(हिं०स्त्री०) उछाल। छलकना–(हिं०क्रि०) किसी द्रव पदार्थ का बरतन से उछलकर बाहर गिरना।
छलछंदी–(हिं० वि०) धूर्त, कपटी।
छलछाया–(हिं० स्त्री०) कपट जाल।
छलछिद्र–(सं० पुं०) कपट व्यवहार।
छलन–(हिं० पुं०) छल करने का कार्य।
छलना–(हिं० क्रि०) धोखा देना।
छलनी–(हिं० स्त्री०) आटा चालने का बरतन, चलनी।
छलाँग–(हिं० स्त्री०) फलाँग, कुदान, चौकड़ी।
छला–(हिं० पुं०) छल्ला या अँगूठी।
छलित–(सं० वि०) वंचित, धोखा दिया हुआ। छलिया–(हिं०वि०) छल करनेवाला, कपटी। छली–(हिं०वि०) कपटी।
छल्ला–(हिं० पुं०) अँगूठी, मुंदरी, कोई मण्डलाकार वस्तु। छल्ली–(हिं०स्त्री०) छाल, छोटा छल्ला।
छवना–(हिं०पुं०) बच्चा, सूअर का बच्चा

छवाई–(हिं० स्त्री०) छाने का काम या पारिश्रमिक।
छवि–(सं० स्त्री०) शोभा,कान्ति,सौन्दर्य
छवैया– (हिं० पुं०)छप्पर छानेवाला।
छह–(हिं०वि०) छ।
छहरना–(हिं० क्रि०) बिखरना, फैलना।
छहराना–(हिं० क्रि०) छितराना।
छहरीला–(हिं० वि०) छरहरा।
छहियाँ–(हिं० स्त्री०) छाहँ, छाया।
छाँगुरा–(हिं० पुं०) छ अँगुलियोंवाला।
छाँछ–(हिं० स्त्री०) देखो छाछ।
छाँट–(हिं० स्त्री०) काटने-छाँटने की क्रिया, छाँटने का ढंग, कतरन, अन्न की भूसी। छाँटन–(हिं० स्त्री०) अलग की हुई बेकार वस्तु, कतरन।
छाँटना–(हिं० स्त्री०) टुकड़ा अलगाना, स्वच्छ करने के लिये अन्न का कूटना, चुन लेना, हटाना, संक्षिप्त करना, गढ़-गढ़कर बातें करना।
छाँड़ना–(हिं० क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
छाँद–(हिं० स्त्री०) पशुओं के पैर बाँधने की छोटी रस्सी। छाँदना–(हिं०क्रि०) रस्सी से बाँधना।
छाँवड़ा–(हिं० पुं०) पशु का छोटा बच्चा।
छाँह–(हिं० स्त्री०) छाया, परछाहीं, प्रतिबिम्ब।
छाँहीं–(हिं० स्त्री०) देखो छाँह।
छाई–(हिं० स्त्री०) राख, खाद।
छाग–(हिं० पुं०) बकरा।
छागर–(सं० स्त्री०) छाल, बकरी।
छागल–(सं० पुं०) बकरा, स्त्रियों के पैर में पहिनने का एक गहना।
छाछ–(हिं० स्त्री०) मक्खन निकाला हुआ दूध या दही।
छाछठ–(हिं० वि०) देखो छासट।
छाज (-न)–(हिं० स्त्री०) छप्पर।
छाड़ना–(हिं० क्रि०) वमन करना।
छाता–(हिं०पुं०) छड़ी, छतरी, छत्ता।
छाती–(हिं०स्त्री०) वक्षःस्थल, कलेजा, हृदय, मन, तन, कुच, साहस, दृढ़ता।
छात्र, छात्रक–(सं० पुं०) विद्यार्थी, शिष्य, चेला।
छात्रवृत्ति–(सं० स्त्री०) विद्यार्थियों को विद्याभ्यास की दशा में आर्थिक सहायता। छात्रालय–(सं० पुं०) विद्यार्थियों के रहने का स्थान।
छादन–(सं०पुं०)आवरण, ढाँकने का काम
छादित–(सं०वि०)आच्छादित, ढपा हुआ।
छाद्मिक–(सं०स्त्री०) पाखंडी, बहुरूपिया।
छान–(हिं०स्त्री०) घास-फूस की छाजन, खपरैल।
छानना–(हिं० पुं०) मिली हुई वस्तु को अलगाना, जाँचना, पड़ताल करना, रस्सी से बाँधना।
छानबीन–(हिं० स्त्री०) अनुसन्धान, जाँच-पड़ताल, पूर्ण विवेचना।
छाना–(हिं० वि०) ऊपर से आच्छादित करना।
छानबे–(हिं० वि०) नब्बे और छ की संख्या का, नब्बे से छ अधिक, ९६।
छानी–(हिं० स्त्री०) छप्पर।
छाप–(हिं० स्त्री०) किसी उभड़े या खुदे हुए ठप्पे का चिह्न।
छापना–(हिं० क्रि०) चिह्नित करना। मुद्रित करना।
छापा–(हिं० पुं०) ठप्पा, मुद्रा, मुद्रायन्त्र, प्रतिकृति, असावधान शत्रु पर रात्रि में आक्रमण।
छापाखाना–(हिं०पुं०) मुद्रणालय, प्रेस।
छाम–(हिं० पुं०) क्षाम, दुर्बल, कृश।
छामोदरी–(हिं० वि०) कृशोदरी, छोटे पेटवाली।

छाय–(हिं० स्त्री०) छाया।
छाया–(सं० स्त्री०) प्रकाश का अभाव, परछाईं, प्रतिबिम्ब, अनुहार, अन्धकार, भूत-प्रेत का प्रभाव।
छायादान–(सं० पुं०) घी या तेल में अपने मुख की छाया देखकर इसमें कुछ दक्षिणा डालकर दान करने की विधि
छायायन्त्र–(सं० पुं०) धूपघड़ी।
छायालोक–(सं० पुं०) अदृश्य जगत्।
छार–(हिं० पुं०) वनस्पतियों को जलाकर इनका निकाला हुआ नमक, क्षार।
छाल–(हिं० स्त्री०) वृक्षों के ऊपर का आवरण, वल्कल, बोकला।
छालटी–(हिं० स्त्री०) सन या पटुवे का बना हुआ कपड़ा।
छालना–(हिं०क्रि०) छलनी में रखकर आटा आदि छानना, चालना।
छाला–(हिं० पुं०) छाल या चमड़े के ऊपर की झिल्ली का उभड़ आना।
छालिया–(हिं० पुं०) काँसे का प्याला जिसमें घी या तेल भरकर छायादान किया जाता है, सुपारी।
छावँ–(हिं० स्त्री०) प्रतिबिम्ब, छाया, शरण। **छावना**–(हिं०क्रि०) देखो छाना।
छावनी–(हिं० स्त्री०) पड़ाव, डेरा, सेना के ठहरने का स्थान।
छावरा–(हिं० पुं०) पशु का बच्चा, छौना।
छावा–(हिं० पुं०) पुत्र, बेटा, बच्चा।
छाछठ–(हिं० वि०) गिनती में साठ और छ की संख्या ६६।
छिऊँका–(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा चींटा। **छिउँकी**–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चींटी।
छिकाना–(हिं० क्रि०) छींक लाना।
छिगुनिया, छिगुनी–(हिं० स्त्री०) कानी अँगुली।
छिड़ाना–(हिं० क्रि०) छीनना।
छिः–(हिं० अव्य०) घृणा, तिरस्कार अथवा अरुचि सूचक शब्द।
छिगुनी–(हिं० स्त्री०) हाथ की सबसे छोटी अँगुली।
छिच्छ–(हिं० स्त्री०) छींटा, बूंद।
छिछकारना–(हिं० क्रि०) छिड़कना।
छिछड़ा–(हिं० पुं०) देखो छीछड़ा।
छिछला–(हिं० वि०) पानी का तल जो गहरा न हो।
छिछोरपन, छिछोरापन–(हिं० पुं०) क्षुद्रता, ओछापन, नीचता।
छिछोरा–(हिं० वि०) क्षुद्र, ओछा।
छिटकना–(हिं० स्त्री०) चारों ओर बिखरना, चारों ओर प्रकाश फैलना।
छिटकाना–(हिं० स्त्री०) ,बिखराना।
छिटकी–(हिं० स्त्री०) छींट, छींटा।
छिट्टी–(हिं० स्त्री०) सूक्ष्म जलकण, महीन छींटा।
छिड़कना–(हिं० क्रि०) पानी के छींटे फेंकना।
छिड़ना–(हिं० स्त्री०) आरंभ होना।
छिण–(हिं० पुं०) देखो क्षीण।
छितनी–(हिं०स्त्री०) बाँस की छिछली टोकरी।
छितराना–(हिं०क्रि०) बिखराना, इधर-उधर डालना।
छिति–(हिं०स्त्री०) भूमि,पृथ्वी; **छितिपाल**–(हिं० पुं०) राजा। **छितिरुह**–(हिं०पुं०) वृक्ष। **छितीस**–(हिं०पुं०) क्षितीश, भूपति, राजा।
छित्वर–(हिं० वि०) धूर्त, छेदक, वैरी।
छिदना–(हिं० क्रि०) छिद्रयुक्त होना।
छिदरा–(हिं०वि०) छितरायाहुआ, विरल।
छिदवाना, छिदाना–(हिं० क्रि०) देखो छेदाना।

छिद्र–(सं० पुं०) छेद, गड्ढा, बिल, दोष, त्रुटि। छिद्रान्वेषण–(सं० पुं०) दोष ढूंढ़ना, खुचुर निकालना।
छिद्रित–(सं० वि०) दूषित, छेदा हुआ।
छिन–(हि० पुं०) देखो क्षण।
छिनक–(हिं०क्रि० वि०) क्षण भर, दम-भर। छिनकना–(हि०क्रि०) नाक का मैल बाहर फेंकते हुए निकालना।
छिनछवि–(हिं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
छिनना–(हि० क्रि०) छीन लिया जाना।
छिनार, छिनाल–(हिं० स्त्री०) व्यभिचारिणी, कुलटा।
छिन्न–(सं० वि०) खण्डित, काटकर अलग किया हुआ। छिन्न-भिन्न–(सं० वि०) टूटा-फूटा, नष्ट-भ्रष्ट।
छिपकली–(हि० स्त्री०) गोह जाति का एक जन्तु जो घरों में रहता है।
छिपना–(हिं० क्रि०) देख न पड़ना, अदृश्य होना, गुप्त रहना। छिपाना–(हि० क्रि०) ढाँकना, गुप्त रखना, प्रकट न करना।
छिप्र–(हिं० वि०) देखो क्षिप्र।
छिया–(हिं० स्त्री०) घृणित वस्तु, मल।
छियानबे–(हि० वि०) देखो छानबे।
छियालिस, छियालीस–(हिं० वि०) चालिस और छ की संख्या, ४६।
छियासी–(हिं० वि०) अस्सी और छ की संख्या, ८६।
छिरकना–(हिं० क्रि०) देखो छिड़कना।
छिरहा–(हि० वि०) हठी।
छिलका–(हिं०पुं०) फल कन्द आदि के ऊपर का आवरण, फलों की त्वचा।
छिलना–(हिं० क्रि०) छिलके या चमड़े का कटकर अलग होना, उधड़ना।
छिहत्तर–(हि० वि०)सत्तर और छ की संख्या, ७६।
छिहरना–(हिं०वि०) छितराना, फैलाना।
छींक–(हिं० स्त्री०) वेग के साथ नाक से वायु का झोंका निकलना।
छींट–(हिं० स्त्री०) रंग-बिरंगे बूटे का छपा हुआ वस्त्र।
छींटना–(हि०क्रि०) बिखराना, छितराना।
छींटा–(हि० पुं०) बूंद, जलकण, बूंद का चिह्न।
छी–(हिं० अव्य०) घृणा-सूचक शब्द।
छीका–(हिं०पुं०) रस्सियों का बना हुआ गोल जाल जो वस्तुओं को रखने के लिये छत में लटका दिया जाता है, सिकहर।
छीछड़ा–(हिं० पुं०) मांस का बेकाम लच्छा।
छीछल–(हिं० वि०) देखो छिछला।
छीज–(हिं० स्त्री०) कमी, घाटा, टोटा।
छीजना–(हि० क्रि०) घटना।
छीति–(हि०स्त्री०) क्षति, हानि, बुराई।
छीदा–(हिं० वि०) झँझरा, अनेक छिद्र-वाला।
छीन–(हिं० पुं०) क्षीण, कृश, दुबला-पतला। छीनता–(हिं० स्त्री०) देखो क्षीणता।
छीनना–(हिं०क्रि०) छिन्न करना, बल-पूर्वक किसी की वस्तु हर लेना, पुरवट का पानी गिराना।
छीप–(हिं०वि०) क्षिप्र, वेगवान्; (स्त्री०) छाप, चिह्न, शरीर पर के छोटे चिन्ह।
छीपी–(हिं० पुं०) वस्त्र पर छींट छापने-वाला।
छीबर–(हिं०स्त्री०) वह वस्त्र जिस पर बेलबूटे छपे हों।
छीमी–(हिं०स्त्री०) मटर आदि की फली।
छीर–(हिं० स्त्री०) कपड़े का छोर, कपड़े के फटने का चिन्ह।

छीरज–(हिं० पुं०) क्षीरज, दधि, दही।
छीरधि–(हिं० पुं०) क्षीरसागर।
छीरसार–(हिं० पुं०) देखो क्षीरसागर।
छीलक–(हिं०पुं०) छिलका।
छीलना–(हिं०क्रि०) छिलका उतारना।
छुआना–(हिं० क्रि०) देखो छुलाना, स्पर्श कराना।
छुईमुई–(हिं०स्त्री०) लजाधुरनामक पौधा।
छुगुन–(हिं० पुं०) घुंघरू।
छुच्छा–(हिं० वि०) देखो छूछा।
छुच्छी–(हिं०स्त्री०) पोली पतली नली।
छुछकारना–(हिं० क्रि०) कुत्ते को आखेट के पीछे लगाना, ललकारना।
छुछुंदर–(हिं० पुं०) देखो छछूंदर।
छुछुआना–(हिं० क्रि०) वृथा का बनावटी प्रम दिखलाना।
छुट–(हिं० अव्य०) अतिरिक्त, सिवाय।
छुटकाना–(हिं० क्रि०) छोड़ना, छुटकारा देना।
छुटकारा–(हिं० पुं०) बन्धन से मुक्ति।
छुटपन–(हिं० पुं०) लघुता, छोटाई।
छुटवाना–(हिं०क्रि०) देखो छोड़वाना।
छुटाई–(हिं०स्त्री०) देखो छोटाई।
छुटाना–(हिं०क्रि०) बंधन से मुक्त करना।
छुट्टा–(हिं०वि०) जो लंबा न हो, अकेला।
छुट्टी–(हिं०स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा, अवकाश, कार्यालय के बन्द रहने का दिन।
छुड़वाना-(हिं०क्रि०) छोड़नेकाकामकराना
छुड़ाई–(हिं०स्त्री०) छोड़ने की क्रिया।
छुड़ाना–(हिं० क्रि०) पकड़ से अलग करना, उलझी हुई वस्तु को पृथक् करना, दूसरे के अधिकार से मुक्त करना, नौकरी से हटाना। छुड़ौती–(हिं० स्त्री०) बंधन से मुक्त करने के लिये दिया हुआ धन, ऋणशेष जो छोड़ दिया जाय।
छुत्–(हिं० स्त्री०) क्षुधा, भूख।
छुतिहर–(हिं०पुं०) वह पात्र जो अशुचि वस्तु के संसर्ग से अशुद्ध हो गया हो।
छुतिहा–(हिं०वि०) अस्पृश्य, कलंकित।
छुद्र–(हिं० पुं०) देखो क्षुद्र।
छुधा–(हिं० स्त्री०) क्षुधा, भूख।
छुधित–(हिं० वि०) क्षुधित, भूखा।
छुनछुनाना–(हिं०वि०) झनझन करना।
छुनमुन, छुननमुनन–(हिं० पुं०) बच्चों के पैर के आभूषण का शब्द।
छुप–(हिं० पुं०) क्षुप, झाड़ी।
छुपना, छुपाना–देखो छिपना, छिपाना।
छुबुक–(हिं० पुं०) चिबुक, ठुडढी।
छुभित–(हिं० वि०) घबड़ाया हुआ।
छुरा–(हिं० पुं०) नाई का उस्तरा, बेंट लगा हुआ एक धारदार आक्रमण करने का अस्त्र।
छुरी–(हिं०स्त्री०) फल तरकारी आदि काटने का बेंटदार चाकू।
छुलछुलाना–(हिं० क्रि०) थोड़ा-थोड़ा करके पानी डालना।
छुलाना–(हिं०क्रि०) स्पर्श कराना।
छुवाना–(हिं०क्रि०) स्पर्श कराना।
छुवाव–(हिं० पुं०) संसर्ग, संबंध।
छुहना–(हिं० क्रि०) रँगा जाना, लीपापोता जाना।
छूंछा–(हिं०वि०) रिक्त, पोला, निःसार।
छू–(हिं० पुं०) मन्त्र पढ़कर मुख से हवा फेंकने का शब्द, मन्त्र की फूंक। छू होना–चले जाना। छूमंतर होना-जल्दी से लुप्त होना।
छूछू–(हिं० वि०) मूर्ख।
छूट–(हिं० स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा।
छूटना–(हिं० क्रि०) अलग होना, दूर होना, छुटकारा होना, प्रस्थान करना, वन्द होना, किसी वस्तु का वेग से

निकलना, शेष रहना, किसी काम का भूल से न किया जाना, नौकरी से हटाया जाना।
छूत–(हिं० स्त्री०) स्पर्श, संसर्ग, अस्पृश्य का संसर्ग।
छूना–(हिं० क्रि०) स्पर्श होना, थोड़ा व्यवहार करना, लीपना, पोतना।
छूरा–(हिं० पुं०) देखो छुरा। छूरी–देखो छुरी।
छेंकना–(हिं० क्रि०) घेरना, रोकना, रेखाओं से घेरना, लिखे हुए अक्षर या वाक्य को लकीर खींचकर काटना।
छेक–(हिं० पुं०) छिद्र, कटाव।
छेटा–(हिं० स्त्री०) बाधा, अवरोध, रुकावट।
छेड़–(हिं० स्त्री०) चिढ़ानेवाली बात, विरोध, आपस का झगड़ा।
छेड़ना–(हिं० क्रि०) भड़कना, व्यग्र करना, कुढ़ाना, कोई कार्य आरंभ करना।
छेड़ा–(हिं० पुं०) रस्सी की साँट।
छेत्र–(हिं० पुं०) देखो क्षेत्र।
छेद–(सं० पुं०) ध्वंस, नाश, गणित में भाजक, खण्ड, टुकड़ा, छिद्र, दोष, बिल। छेदक–(सं० वि०) छेद करनेवाला, विभाजक।
छेदन–(सं० पुं०) काटने या चुभाने की क्रिया, नाश। छेदना–(हिं० क्रि०) छिद्र करना, बेधना, भेदना, काटना।
छेना–(हिं० पुं०) फटे दूध का खोया, पनीर, कंडा।
छेनी–(हिं० स्त्री०) पत्थर, धातु आदि काटने का अस्त्र, टाँकी।
छेम–(हिं०पुं०) देखो क्षेम।
छेरना–(हिं० क्रि०) अपच के कारण बारंबार शौच होना।
छेव–(हिं० पुं०) चोट, घाव, आनेवाली आपत्ति, अनिष्ट।
छेवना–(हिं० स्त्री०) ताड़ी; (क्रि०) छिन्न करना, चिह्नित करना, काटना।
छेवर–(हिं० पुं०) छाला, चमड़ा।
छेवा–(हिं०पुं०) छीलने या काटने का काम
छेह–(हिं०पुं०) देखो छव, खण्डन, नाश; (वि०) टुकड़ा किया हुआ।
छेहर–(हिं० वि०) छाया, साया।
छै–(हिं०वि०) देखो छ; (वि०) देखो क्षय
छैना–(हिं०वि०) क्षीण: होना, नष्ट होना।
छैया–(हिं० पुं०) बच्चों के लिये प्यार का शब्द।
छैल–(हिं० पुं०) बना ठना सुन्दर मनुष्य, बाँका। छैला–(हिं० पुं०) सुन्दर वेष पहिना हुआ मनुष्य।
छो–(हिं०पुं०) छोह, प्रीति, दया, क्षोभ।
छोकड़ा–(हिं० पुं०) बालक, लड़का। छोकड़िया, छोकड़ी–(हिं० स्त्री०) लड़की, बेटी।
छोटका–(हिं० वि०) देखो छोटा।
छोटपन–(हिं० पुं०) देखो छोटापन।
छोटा–(हिं० वि०) विस्तार या आकार में न्यून, अल्प वय का, पद या प्रतिष्ठा में कम, जिसमें गम्भीरता तथा शिष्टता का अभाव हो। छोटा मोटा–छोटा-सा, सामान्य। छोटाई–(हिं० स्त्री०) लघुता, छोटापन, नीचता। छोटापन–(हिं० पुं०) लड़कपन।
छोड़छुट्टी–(हिं०स्त्री०) नाता या संबंध का त्याग।
छोड़ना–(हिं० क्रि०) पास न रखना, ग्रहण न करना, छूट देना, छुटकारा देना, प्रस्थान करना, दूर तक जानेवाले अस्त्र को फेंकना, भीतर से वेग सहित बाहर आना, बन्द करना।

छोड़वाना–(हिं०क्रि०) छोड़ने का काम दूसरे से कराना। छोड़ाना–(हिं० क्रि०) देखो छुड़ाना।
छोनिप–(हिं० पुं०) भूपति, राजा।
छोनी–(हिं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
छोप–(हिं० पुं०) मोटा लेप चढ़ाने का काम, प्रहार, आघात, छिपाव। छोपना–(हिं० क्रि०) मोटी तह चढ़ाना, लेप करना, किसी बात को छिपाना, आक्रमण से रक्षा करना।
छोपाई–(हिं० स्त्री०) छोपने की क्रिया या पारिश्रमिक।
छोभ–(हिं० पुं०) क्षोभ। छोभना–(हिं० क्रि०) क्षुब्ध होना।
छोर–(हिं०पुं०) किसी वस्तु का किनारा, विस्तार की सीमा, नोक।
छोरना–(हिं० क्रि०) बंधन मुक्त करना, हरण करना।
छोरा–(हिं०पुं०) बालक, लड़का, छोकड़ा
छोराछोरी–(हिं० स्त्री०) नोच-खसोट।
छोल–(हिं० स्त्री०) छिल जाने का चिह्न।
छोलना–(हिं० क्रि०) छीलना।
छोलदारी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा खेमा।
छोलनी–(हिं० स्त्री०) हलवाई की खुरचनी।
छोह–(हिं० पुं०) स्नेह, प्रेम, दया, कृपा। छोहना–(हिं० क्रि०) प्रेम दिखलाना।
छोहरा–(हिं० पुं०) बालक, लड़का, छोकड़ा। छोहरी–(हिं० स्त्री०) बालिका, लड़की।
छोहाना–(हिं० क्रि०) प्रेम दिखलाना।
छोही–(हिं०वि०) प्रेमी, स्नेही, अनुरागी।
छौंक–(हिं० स्त्री०) तड़का, बघार।
छौंकना–(हिं० क्रि०) बघार देना।
छौना–(हिं० पुं०) पशु का बच्चा।
छौर–(हिं० पुं०) देखो क्षौर।
छौलदारी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा तंबू।

ज

ज–हिन्दी भाषा का एक व्यञ्जन वर्ण, जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है, इसका उच्चारणस्थान तालु है; (सं० पुं०) पिता, जन्म, वेग, मुक्ति, (वि०) वेग युक्त, जीतनेवाला, उत्पन्न करनेवाला।
जँगरा–(हिं० पुं०) मूँग, मटर, उर्द इत्यादि के डंठल, जेंगरा।
जँगरैत–(हिं० वि०) परिश्रमी।
जंगल–(हिं० पुं०) वन।
जँगला–(हिं० पुं०) छड़ों की पंक्ति, कटघरा।
जंगली–(हिं०वि०) जंगल संबंधी, आपसे आप उगनेवाले पौधे।
जंगारी(-ली)–(हिं०वि०) नीले रंग का, नीला।
जंघा–(हिं० स्त्री०) जाँघ।
जँघिया–(हिं० स्त्री०) जाँघ तक का पायजामा।
जँचना–(हिं० क्रि०) देखा-भाला जाना, प्रतीत होना।
जँचा–(हिं० वि०) सुपरीक्षित।
जंजाल–(हिं०पुं०) झंझट, प्रपंच, बखेड़ा, बड़े मुँह की तोप। जंजालिया, जंजाली–(हिं०वि०) उपद्रवी, झगड़ालू, बखेड़िया।
जंड–(हिं० पुं०) विवाह के अन्त में समधियों का भोज।
जंतर–(हिं० पुं०) यन्त्र, गले में पहिनने का एक गहना, कठुला।
जंतरी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का तार महीन करने का यंत्र, तिथि पत्र, पंजिका।

जंतु–(हिं० पुं०) देखो जन्तु।
जंत्र–(हिं० पुं०) कल, यंत्र, तालाब।
जंत्रित–(हिं० वि०) बंद किया हुआ।
जंबाल–(हिं०पुं०) पंक, कीचड़, सेवार।
जंबीर–(हिं० पुं०) जंबीरी नीबू।
जंबूरा–(हिं० पुं०) जिस चरखे पर तोप चढ़ाई जाती है, भँवरकली, बाँक।
जंभ–(हिं० पुं०) जबड़ा, दाढ़।
जँभाई–(हिं० स्त्री०) उबासी।
जँभाना–(हिं० क्रि०) जँभाई लेना।
जई–(हिं० पुं०) जव की जाति का एक अन्न।
जऊ–(हिं० क्रि० वि०) यद्यपि।
जकंदना–(हिं० क्रि०) उछाल मारना।
जक–(हिं० पुं०) भूत-प्रेत, कंजूस; (स्त्री०) हठ।
जकड़–(हिं० स्त्री०) जकड़ने का भाव।
जकड़ना–(हिं० क्रि०) कसकर बाँधना।
जकना–(हिं० क्रि०) भौचक्का होना।
जकित–(हिं०वि०) विस्मित, चकित, व्यग्र।
जक्ष–(हिं० पुं०) देखो यक्ष।
जक्षण–(सं० पुं०) भक्षण, भोजन।
जक्ष्मा–(हिं० स्त्री०) देखो यक्ष्मा।
जखेड़ा–(हिं० पुं०) समूह, जमाव।
जग–(हिं० पुं०) जगत्, संसार, संसार के लोग; देखो यज्ञ।
जगजगा–(हिं० वि०) जगमगाता हुआ, चमकीला। जगजगाना–चमकना।
जगजोनि–(हिं० पुं०) जगयोनि, ब्रह्मा।
जगत्–(सं० पुं०) संसार, भुवन।
जगत–(हिं० स्त्री०) कुवें के ऊपर का चारों ओर का चबूतरा।
जगतसेठ–(हिं० पुं०) बहुत बड़ा धनवान्।
जगती–(सं० स्त्री०) संसार, पृथ्वी।
जगतीतल–(सं० पुं०) भूमि, पृथ्वी।
जगत्साक्षी–(सं० पुं०) सूर्य।
जगदन्तक–(सं० पुं०) मृत्यु, यम।
जगद–(हिं० पुं०) रक्षक, पालक।
जगदाधार–(सं० पुं०) परमेश्वर, वायु, जगदीश। जगदीश्वर–(सं० पुं०) परमेश्वर।
जगद्गुरु–(सं० पुं०) परमेश्वर, अत्यन्त पूजनीय पुरुष।
जगद्धाता–(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
जगद्धात्री–(सं० पुं०) दुर्गा, सरस्वती।
जगद्बल–(सं० पुं०) वायु, हवा।
जगद्योनि–(सं० पुं०) शिव, ब्रह्मा, विष्णु, पृथ्वी।
जगद्विनाश–(सं० पुं०) प्रलय-काल।
जगना–(हिं०क्रि०) नींद से उठना, सचेत होना, जगमगाना।
जगन्नाथ–(सं० पुं०) संसार का स्वामी, विष्णु की प्रसिद्ध मूर्ति।
जगमग–(हिं०वि०) प्रकाशित, चमकीला।
जगमगाना–(हिं० क्रि०) चमकना, झलकना। जगमगाहट–(हिं० वि०) चमक।
जगरनाथ–(हिं० पुं०) देखो जगन्नाथ।
जगरमगर–(हिं० वि०) देखो जगमग।
जगवाना–(हिं०क्रि०) सोते से उठवाना।
जगहर–(हिं० स्त्री०) जागने की अवस्था।
जगात–(हिं० पुं०) दान, कर।
जगाना–(हिं०क्रि०) नींद छोड़ने के लिये किसी को प्रेरणा करना, चैतन्य करना।
जग्य–(हिं० पुं०) देखो यज्ञ।
जघन–(सं० पुं०) नितंब, चूतड़।
जघन्य–(सं० वि०) अन्तिम, क्षुद्र, निकृष्ट; (पुं०) शूद्र जाति।
जङ्गम–(सं०वि०) चलने-फिरनेवाला।
जङ्गल–(सं० पुं०) अरण्य, मांस।
जंघा–(सं० स्त्री०) ऊरु, जाँघ, पिंडली।
जचना–(हिं० क्रि०) देखो जँचना।
जच्छ–(हिं० पुं०) देखो यक्ष।

जजमान–(हिं० पु०) देखो यजमान।
जटना–(हिं० क्रि०) ठगना।
जटल–(हिं० स्त्री०) झूठ मूठ की बात, बकवाद।
जटा–(सं० स्त्री०) एक में एक उलझे हुए सिर के बाल, जड़ के पतले सूत्र।
जटाजूट–(सं० पुं०) जटा का समूह।
जटाना–(हिं० क्रि०) ठगा जाना।
जटित–(सं० वि०) जड़ा हुआ, खचित।
जटिल–(सं० वि०) अत्यन्त कठिन।
जठर–(सं० पुं०) पेट, कुक्षि; (वि०) वृद्ध, बूढ़ा।
जठराग्नि–(हिं० स्त्री०) अन्न को पचाने की पेट में की अग्नि।
जठेरा–(हिं० वि०) जेठा, वय में बड़ा।
जड़–(सं० वि०) अचेतन, चेष्टाहीन, मन्दबुद्धि, गहरा, सरदी से ठिठुरा हुआ; (हिं० पुं०) कारण, हेतु, आधार, वृक्ष का वह भाग जो भूमि के भीतर रहता है, नीच। **जड़ता**–(सं० स्त्री०) मर्खता, स्तब्धता।
जड़ना–(हिं० क्रि०) बैठाना, पिच्ची करना।
जड़वाना–(हिं० क्रि०) जड़ने का काम दूसरे से कराना।
जड़हन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का धान।
जड़ाई–(हिं० स्त्री०) जड़ने का काम।
जड़ाऊ–(हिं० वि०) जिस पर रत्न जड़े हों।
जड़ान–(हिं० स्त्री०) जड़ाई। **जड़ाना**–(हिं० क्रि०) जड़ने का काम दूसरे से कराना, शीत लगना।
जड़ाव–(हिं० पुं०) जड़ने का काम।
जड़ावर–(हिं० पुं०) जाड़े में पहिनने के कपड़े।
जड़ित–(हिं० वि०) जिसमें रत्न जड़े हों।
जड़िया–(हिं० पुं०) आभूषणों में नगीने जड़नेवाला।
जड़ी–(हिं० स्त्री०) औषधि की जड़ जो औषधियों में प्रयोग की जाती है। **जड़ीबूटी**–वनौषधि।
जड़ीला–(हिं० वि०) जड़दार, जिसमें जड़ हो।
जड़ैया–(हिं० स्त्री०) जूड़ी ज्वर।
जत–(हिं० वि०) जिस मात्रा का, जितना।
जतन–(हिं० पुं०) देखो यत्न।
जतलाना, जताना–(हिं० क्रि०) पहिले से सूचना देनेवाला, बतलानेवाला।
जति, जती–(हिं० पुं०) यति, संन्यासी।
जतु–(सं० पुं०) गोंद, लाह, शिलाजीत।
जतेक–(हिं० वि०) जितना।
जत्था–(हिं० पुं०) समूह, वर्ग।
जथा–(हिं० क्रि० वि०) यथा, जिस प्रकार से।
जद–(हिं० क्रि० वि०) जब, जबै कभी।
जदपि–(हिं० क्रि० वि०) यद्यपि।
जदुपति, जदुपाल–(हिं० पुं०) यदुपति।
जदुराई–(हिं० पुं०) यदुपति, श्रीकृष्ण। **जदुराज, जदुराय, जदुवर, जदुवीर**–(हिं० पुं०) श्रीकृष्ण।
जद्दपि–(हिं० क्रि० वि०) यद्यपि।
जद्दबद्द–(हिं० पुं०) दुर्वचन।
जन–(सं० पुं०) लोग, समूह, समुदाय, प्रजा, अनुयायी। **जनक**–(सं० पुं०) जन्मदाता, पिता। **जनचर्चा**–(सं० स्त्री०) लोकप्रवाद। **जनता**–(सं० स्त्री०) जनसमूह, सर्वसाधारण लोग। **जनदेव**–(सं० पुं०) नरपति, राजा।
जनन–(सं० पुं०) उत्पत्ति, जन्म, आविर्भाव। **जनना**–(हिं० क्रि०) प्रसव करना
जननी–(सं० स्त्री०) उत्पन्न करनेवाली माता।
जनपद–(सं० पुं०) देश, देशवासी प्रजा।
जनप्रवाद–(सं० पुं०) लोकप्रवाद, किंवदन्ती

जनप्रिय-(सं०वि०) सर्वप्रिय, सबका प्यारा
जनम-(हिं० पुं०) उत्पत्ति, जन्म, आयु, जीवन। जनमना-(हिं० क्रि०) उत्पन्न होना, जन्म लेना।
जनमाना-(हिं० क्रि०) प्रसव कराना।
जनयिता-(सं० पुं०) पिता, बाप।
जनयित्री-(सं० स्त्री०) जन्म देनेवाली, माता।
जनरव-(सं० पुं०) जनश्रुति, लोकनिन्दा, कोलाहल।
जनवल्लभ-(सं० पुं०) जनप्रिय, लोकप्रिय।
जनवाई-(हिं० स्त्री०) देखो जनाई।
जनवाना-(हिं० क्रि०) प्रसव कराना, सूचित कराना।
जनवास-(सं० पुं०) बरातियों के ठहरने का घर। जनवासा-(हिं० पुं०) देखो जनवास।
जनश्रुत-(सं० वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।
जनश्रुति-(सं० स्त्री०) किंवदन्ती।
जनसंख्या-(सं० स्त्री०) नगर, देश आदि के निवासियों की गणना।
जना-(हिं० वि०) उत्पन्न हुआ।
जनाई-(हिं० स्त्री०) पैदा कराई।
जनाचार-(सं० पुं०) देश या समाज की प्रचलित रीति।
जनाना-(हिं०क्रि०) जनाना, उत्पन्न कराना
जनाव-(हिं० पुं०) सूचना।
जनावर-(हिं० पुं०) देखो जानवर।
जनाशन-(सं० पुं०) मनुष्य-भक्षक।
जनाश्रय-(सं० पुं०) धर्मशाला।
जनि-(सं० स्त्री०) उत्पत्ति, जन्मदाता, स्त्री, पुत्रवधू, भार्या, जन्मभूमि।
जनिका-(हिं० स्त्री०) पहेली, बुझौवल।
जनित-(सं० वि०) उत्पन्न, जन्मा हुआ।
जनिता-(हिं० पुं०) उत्पन्न करनेवाला, पिता।
जनित्र-(सं० पुं०) जन्मभूमि। जनित्री-(सं० स्त्री०) उत्पन्न करनेवाली, माता।
जनियां-(हिं०स्त्री०) प्रियतमा, प्राणप्यारी।
जनी-(सं० स्त्री०) उत्पन्न करनेवाली, माता, स्त्री।
जनु-(हिं० क्रि० वि०) मानो; (स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति।
जनेऊ-(हिं० पुं०) यज्ञोपवीत।
जनेत-(हिं० स्त्री०) बरयात्रा, बारात।
जनेता-(हिं० पुं०) पिता, बाप।
जनेव-(हिं० पुं०) देखो जनेऊ।
जनेश-(सं० पुं०) भूपति, नरेश, राजा।
जनैया-(हिं०वि०) जाननेवाला, जानकार
जनो-(हिं०पुं०) जनेऊ; (क्रि०वि०) मानो
जन्तु-(सं० पुं०) जन्म लेनेवाला, जीव, प्राणी, जानवर।
जन्म-(सं० पुं०) उत्पत्ति, जीवन, आविर्भाव। जन्मक्षेत्र-(सं०पुं०) जन्मभूमि।
जन्मपत्री, जनमपत्री-(सं० स्त्री०) वह पत्र जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति, दशा, अन्तर्दशा आदि दिये हों। जन्मभूमि-(सं० स्त्री०) वह देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो। जन्मरोगी-(सं० पुं०) वह जो जन्म-काल से ही रोगी हो।
जन्मा-(हिं० पुं०) जन्मवाला; (वि०) उत्पन्न। जन्माना-(हिं० क्रि०) जन्म देना, उत्पन्न करना। जन्मान्तर-(सं० पुं०) अन्य जन्म, लोकान्तर।
जन्मान्ध-(सं० वि०) जन्म से अन्धा।
जन्य-(सं० पुं०) हाट, बाजार, निन्दा, संग्राम, युद्ध।
जप-(सं० पुं०) पाठ, अध्ययन, मन्त्र आदि का बारंबार उच्चारण, किसी मन्त्र को संख्यानुसार धीरे-धीरे बारंबार उच्चारण करना।

जपनी–(हिं० स्त्री०) जपने की माला।
जपनीय–(सं० वि०) जप करने योग्य।
जब–(हिं० क्रि० वि०) जिस समय।
जबड़ा–(हिं० पुं०) गले के भीतर का भाग।
जबरा–(हिं० वि०) शक्तिमान्, बली।
जम–(हिं० पुं०) देखो यम।
जमक–(हिं० पुं०) देखो यमक।
जमघट–(हिं०पुं०) मनुष्यों की भीड़भाड़।
जमज–(हिं०वि०) देखो यमज, जुड़वाँ।
जमन–(सं० पुं०) भोजन, खाद्य पदार्थ; (हिं० पुं०) देखो यवन।
जमना–(हिं० क्रि०) गाढ़ा होना, एकत्र होना, किसी काम करने में हाथ बैठना, स्थिर होना, उत्पन्न होना, उगना।
जमनिका–(हिं०स्त्री०) जवनिका, परदा।
जमवट–(हिं० स्त्री०) लकड़ी का गोल चक्कर जो कुवें की पेंदी में रखकर इस पर ईंटों की जोड़ाई की जाती है, जमोट।
जमराज–(हिं० वि०) देखो यमराज।
जमाई–(हिं० पुं०) जामाता, दामाद; (स्त्री०) जमने की क्रिया।
जमाना–(हिं०क्रि०) गाढ़ा करना, दृढ़तापूर्वक बैठाना, चोट लगाना, उत्पन्न करना, उपजाना।
जमामार–(हिं० वि०) अनुचित रूप से दूसरे का धन दबा लेनेवाला।
जमाव–(हिं० स्त्री०) जमने या जमाने का भाव। जमावट–(हिं० स्त्री०) जमने का भाव।
जमावड़ा–(हिं० पुं०) मनुष्यों की भीड़।
जमुनियाँ–(हिं० वि०) जामुन के रंग का।
जमुहाना–(हिं० क्रि०) देखो जँभाना।
जमोग–(हिं० पुं०) स्वीकार करने की क्रिया।
जम्बुक–(सं० पुं०) जामुन, सियार।
जम्बूक–(सं० पुं०) शृगाल, सियार।
जम्हाई–(हिं० स्त्री०) देखो जृम्भा।
जँभाना–(हिं० क्रि०) जँभाई लेना।
जय–(सं० पुं०) जीत।
जयजीव–(हिं०पुं०) अभिवादन का शब्द।
जद–(सं० वि०) जीतनेवाला।
जयना–(हिं० क्रि०) जीतना।
जयपत्र–(सं० पुं०) वह पत्र जिस पर किसी विवाद के वाद राजकीय मन्तव्य लिखा जाता है।
जयमंगल–(सं०पुं०) राजा की सवारी का हाथी।
जयमाल–(हिं० स्त्री०) वह माला जिसको स्वयंवर के समय कन्या अपने चुने हुए वर के गले में डालती थी।
जययज्ञ–(सं० पुं०) अश्वमेध यज्ञ।
जयलेख–(सं० पुं०) वह पत्र जो हारा हुआ पुरुष अपने जीतनेवाले को लिख देता है।
जयश्री–(सं०स्त्री०) विजयलक्ष्मी, विजय।
जयस्तम्भ–(सं० पुं०) जयसूचक स्तंभ।
जयी–(हिं० वि०) विजयी, जयशील।
जर–(सं० पुं०) जरा, वृद्धावस्था; (हिं० पुं०) देखो ज्वर।
जरजर–(हिं० पुं०) देखो जर्जर।
जरन–(हिं० स्त्री०) देखो जलन।
जरना–(हिं० क्रि०) देखो जलना।
जरा–(सं० स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
जरातुर–(सं० वि०) जीर्ण, पुराना।
जराना–(हिं० क्रि०) देखो जलाना।
जरायु–(सं० पुं०) कलल, खेंड़ी।
जरायुज–(सं०पुं०) वह प्राणी जो खेंड़ी में लिपटा हुआ गर्भ से पैदा होता है।
जर्जर–(सं० वि०) जीर्ण, बहुत पुराना, टूटा-फूटा। जर्जरता–(हिं० स्त्री०) जीर्णता। जर्जरित–(सं०वि०) खंडित, टूटा-फूटा।

जलंधर–(हिं० पुं०) पेट में पानी भर जाने का रोग।
जल–(सं० पुं०) पानीय, पानी, अप।
जल अलि–(सं० पुं०) पानी का भँवर, जल के तल पर तैरनेवाला एक प्रकार का काला कीड़ा।
जलकण्टक–(सं० पुं०) सिंघाड़ा, जलकुंभी। **जलकपि**–(सं० पुं०) शिशुमार, सूंस नामक जलजन्तु। **जलकर**–(हिं० पुं०) जल से होनेवाली आय पर कर। **जलकुंभी**–(हिं० स्त्री०) जल के तल पर होनेवाली एक वनस्पति।
जलक्रिया–(सं० स्त्री०) पित्रादि का तर्पण। **जलक्रीड़ा**–(सं० स्त्री०) जलविहार। **जलघड़ी**–(सं० स्त्री०) समय जानने का एक प्राचीन यन्त्र जिसमें नाँद में भरे जल में एक महीन छिद्र की कटोरी डाल दी जाती है जो एक घंटे में जल से भरकर डूब जाती है। **जलचर**–(सं० पुं०) जल में रहनेवाला जन्तु। **जलतरङ्ग**–(सं० पुं०) धातु की छोटी-बड़ी कटोरियों में जल भरकर लकड़ी के डंडे से बजाने का एक बाजा। **जलज**–(सं० वि०) जो पानी में उत्पन्न हो।
जलडमरूमध्य–(सं० पुं०) दो बड़े समुद्रों को जोड़नेवाला समुद्र का पतला भाग।
जलद–(सं० वि०) जल देनेवाला; (पुं०) मेघ, बादल।
जलधर–(सं० पुं०) मेघ, बादल, समुद्र।
जलधि–(सं० पुं०) समुद्र, दस शंख की संख्या।
जलन–(हिं० स्त्री०) बहुत अधिक ईर्ष्या, जलने का कष्ट या पीड़ा।
जलना–(हिं० क्रि०) दग्ध होना, जलना, झुलसना।
जलनिधि–(सं० पुं०) समुद्र।
जलपति–(सं० पुं०) समुद्र। **जलपथ**–(सं० पुं०) जल बहने का मार्ग।
जलपान–(हिं० पुं०) प्रातराश, कलेवा।
जलप्रदान–(सं० पुं०) प्रेत पितर आदि का तर्पण।
जलप्रपा–(सं० स्त्री०) पौसरा, सबील।
जलप्रपात–(सं० पुं०) किसी नदी के स्रोत का ऊँचे स्थान से नीचे को गिरना।
जलफल–(सं० पुं०) शृङ्गाटक, सिंघाड़ा।
जलभाजन–(सं० पुं०) पानी रखने का पात्र।
जलभू–(सं० पुं०) मेघ, बादल।
जलभृत–(सं० पुं०) मेघ, बादल।
जलमय–(सं० वि०) पानी से भरा हुआ।
जलमानुष–(सं० पुं०) परारू नामक जलजन्तु जिसका नाभि के ऊपर का भाग मनुष्य के समान तथा नीचे का भाग मछली के ऐसा होता है।
जलमार्ग–(सं० पुं०) जलपथ, पानी बहने की नाली। **जलमुच**–(सं० पुं०) मेघ, बादल, कपूर।
जलयन्त्र–(सं० पुं०) जलघड़ी।
जलयान–(सं० पुं०) पोत, नाव आदि।
जलराशि–(सं० पुं०) जल-समूह, समुद्र।
जलरुह–(सं० पुं०) पद्म, कमल।
जलवाद्य–(सं० पुं०) जल तरंग।
जलवाना–(हिं० क्रि०) जलाने का काम दूसरे से कराना।
जलवाह–(सं० पुं०) मेघ, बादल।
जलवाहक–(सं० पुं०) पानी ढोनेवाला।
जलशयन, जलशायी–(सं० पुं०) विष्णु।
जलसुत–(हिं० पुं०) कमल, मोती।
जलसेना–(सं० स्त्री०) समुद्र में पोत पर लड़नेवाली सेना।
जलस्थान–(सं० पुं०) जलाशय।

जलाकर–(सं०पुं०) समुद्र, नदी, जलाशय आदि।
जलाञ्जलि–(सं०पुं०) प्रेत पितर आदि का जल से तर्पण।
जलाद–(हि० पुं०) घातक।
जलाना–(हि० क्रि०) प्रज्वलित करना, दहकाना, भस्म करना, झुलसना, सन्तप्त करना।
जलापा–(हि० पुं०) डाह या ईर्ष्या के कारण उत्पन्न होनेवाला दुःख।
जलायुका–(सं० स्त्री०) जलौका, जोंक।
जलावन–(हि० पुं०) इन्धन, जलाने की लकड़ी।
जलावर्त–(सं० पुं०) पानी का भँवर।
जलाशय–(सं० पुं०) वह स्थान जहां पानी जमा हो।
जलज, जलजात–(सं० पुं०) पद्म, कमल।
जलेबा–(हि० पुं०) बड़ी जलेबी।
जलेबी–(हि० स्त्री०) इमरती की तरह की एक प्रकार की कुण्डलाकार मिठाई, कुण्डली।
जलेश–(सं० पुं०) वरुण, समुद्र।
जलोका, जलोकिका–(सं०स्त्री०) जोंक।
जलोदर–(सं० पुं०) एक रोग जिसमें पेट में पानी भर जाता है।
जलोद्भव–(सं०वि०) जल में उत्पन्न होनेवाला।
जलौकस, जलौका–(सं० पुं०) जोंक।
जल्दी–(हि० स्त्री०) शीघ्रता।
जल्प–(सं० पुं०) प्रलाप, बकवाद।
जल्पक–(सं० पुं०) बकवादी।
जल्पन–(सं० पुं०) वाचालता, प्रलाप।
जव–(सं० पुं०) वेग; (हि० पुं०) यव।
जवन–(हि०पुं०) अरब देश, देखो यवन।
जवनिका–(हि०स्त्री०) देखो यवनिका।
जवाई–(हि० स्त्री०) जाने की क्रिया।
जवारा–(हि० पुं०) जौ के हरे अंकुर।
जवैया–(हि०वि०) गमनशील, जानेवाला।
जसद–(सं० पुं०) जस्ता नामक धातु।
जस–(हि० पुं०) देखो यश; (हि०क्रि०) जैसा।
जसवंत–(हि० पुं०) एक प्रकार का फूल।
जस्त–(हि० पुं०) देखो जस्ता। जस्तई–(हि० वि०) जस्ते के रंग का।
जस्ता–(हि०पुं०) एक भारी धूसर वर्ण का धातु।
जहँ–(हि०क्रि०वि०) जहां, जिस स्थानपर।
जहँड़ना–(हि० क्रि०) धोखे में पड़ना।
जहदा–(हि० पुं०) कीचड़, दलदल।
जहना–(हि० क्रि०) छोड़ना, त्यागना।
जहरीला–(हि० वि०) विषैला।
जहला–(हि० स्त्री०) ताप, गरमी।
जहाँ–(हि० क्रि०वि०) जिस स्थान पर।
जहिया–(हि०क्रि०वि०) जिस दिन, जब।
जहीं–(हि० अव्य०) जिस स्थान पर।
जाँ–(सं० स्त्री०) माता, मा, देवर की स्त्री, देवरानी; (वि०) उत्पन्न, जायमान, संभूत।
जाँगड़ा–(हि०पुं०) बन्दी, भाट।
जाँगर–(हि० पुं०) शरीर, देह, बल।
जाँगरा–(हि०पुं०) भाट, बन्दी, जांगड़ा।
जाँगी–(हि० पुं०) नगाड़ा।
जाँघ–(हि० स्त्री०) ऊरु, जंघा।
जाँघिया–(हि० पुं०) पैजामे की तरह का घुटने तक का नीचा पहिनावा।
जाँच–(हि०स्त्री०) परीक्षा, परख, खोज।
जाँचक–(हि० पुं०) देखो याचक।
जाँचना–(हि० क्रि०) सचाई-झुठाई का पता लगाना।
जांत, जांता–(हि० पुं०) आटा पीसने की चक्की।
जांवल–(हि० क्रि० वि०) जितना।

जुआँ–(हिं० स्त्री०) देखो जूं।
जुआ–(हिं० पुं०) बाजी लगाकर हार-जीत का खेल, लकड़ी का वह ढाँचा जो बैल के कन्धे पर रक्खा जाता है, जाँते की मुठिया।
जुआरी–(हिं० पुं०) जुआ खेलनेवाला।
जुग–(हिं० पुं०) देखो युग, जोड़ा, दल, पीढ़ी।
जुगजुगाना–(हिं० क्रि०) जगमगाना।
जुगत–(हिं० स्त्री०) युक्ति, उपाय, व्यवहार।
जुगनू–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बरसाती छोटा कीड़ा, जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह रह-रहकर चमकता है, खद्योत, पान के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ गले में पहनती हैं।
जुगम–(हिं० वि०) देखो युग्म।
जुगल–(हिं० वि०) देखो युगल।
जुगवाना(हिं० क्रि०) संचित करना।
जुगार–(हिं० स्त्री०) जुगाली।
जुगाली–(हिं० स्त्री०) रोमन्थ, पागुर।
जुगत–(हिं० स्त्री०) युक्ति, उपाय।
जुगुप्सक–(सं० वि०) दूसरे की व्यर्थ निन्दा करनेवाला। जुगुप्सा–(सं० स्त्री०) निन्दा, बुराई, गर्हणा।
जुगुप्सित–(सं०वि०) घृणित, निन्दित।
जुगुप्सु–(सं० वि०) निन्दक।
जुगल–(हिं० वि०) युग्म, जोड़ा।
जुज्झ–(हिं० स्त्री०) देखो युद्ध।
जुझावना–(हिं० क्रि०) लड़ा देना।
जुझाऊ–(हिं० वि०) युद्ध संबंधी।
जुट–(हिं०स्त्री०) जोड़ी, मण्डली, जत्था, दल।
जुटना–(हिं० क्रि०) सटना, चिपटना, लगा रहना, एकत्र होना, प्रवृत्त होना।
जुटाना–(हिं० क्रि०) जोड़ना, सटाना, जमा करना।
जुट्टी–(हिं० स्त्री०) घास, पुआल आदि का मुट्ठा, अँटिया।
जुठारना–(हिं० क्रि०) उच्छिष्ट करना।
जुठिहावा–(हिं० पुं०) जूठा खानेवाला मनुष्य।
जुड़वाँ–(हिं०वि०) एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे, यमल, युग्म।
जुड़ाना–(हिं० क्रि०) ठंडा होना।
जुड़वाना–(हिं० क्रि०) शान्त करना।
जुत–(हिं० वि०) देखो युक्त।
जुतवाना–(हिं० क्रि०) दूसरे से हल चलवाना। जुताई–(हिं० स्त्री०) जोतने का काम। जुताना–(हिं०क्रि०,) देखो जोताना।
जुतियाना–(हिं० क्रि०) जतों से मारना, निरादर करना। जुतियौवल–(हिं० स्त्री०) आपस में जूतों की मार।
जुत्थ–(हिं० पुं०) देखो यूथ।
जुद्ध–(हिं० स्त्री०) देखो यूथ।
जुध–(हिं० स्त्री०) देखो, युद्ध, लड़ाई
जुन्हरी–(हिं०स्त्री०) ज्वार नामक अन्न।
जुन्हाई–(हिं० स्त्री०) चन्द्रिका, चाँदनी।
जुरझुरी–(हिं० स्त्री०) ज्वर की कँपकँपी।
जुरना–(हिं० क्रि०) देखो जुड़ना।
जुराना–(हिं० क्रि०) देखो जुटाना।
जुल–(हिं०पुं०) धोखा, छल, दम, पट्टी।
जुलना–(हिं० क्रि०) भेंट करना।
जुलाहा–(हिं० पुं०) कपड़ा बिननेवाला मुसलमान, तन्तुकार।
जुलोक–(हिं० पुं०) द्युलोक, वैकुण्ठ।
जुवराज–(हिं० पुं०) देखो युवराज।
जुवा–(हिं० पुं०) देखो युवा, द्यूत।
जुवारी–(हिं० पुं०) देखो जुआरी।

जुहाना–(हिं० क्रि०) एकत्रित करना।
जूं–(हिं० स्त्री०) बालों में पड़नेवाला एक छोटा स्वेदज कीड़ा।
जूं–(हिं० अव्य०) एक आदरसूचक शब्द।
जूंठ, जूंठन–देखो जूठ, जूठा।
जूआ–(हिं० पुं०) हार-जीत का खेल, चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसको पकड़कर यह चलाई जाती है।
जूझ–(हिं०स्त्री०) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई।
जूझना–(हिं० क्रि०) लड़ना।
जूट–(सं० पुं०) जूड़ा, लट।
जूटि–(हिं० स्त्री०) जोड़ी।
जूठन–(हिं० स्त्री०) उच्छिष्ट भोजन।
जूड़–(हिं० वि०) ठंडा, प्रसन्न।
जूड़ा–(हिं० पुं०) सिर के बालों की ग्रन्थि, चोटी, कलँगी।
जूड़ी–(हिं० स्त्री०) जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।
जूत,जूता–(हिं० पुं०) पदत्राण, उपानह, पनही, जोड़ा। **जूताखोर**–(हिं० वि०) जो जूता खाया करे, निर्लज्ज।
जूती–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के पहिनने का जूता। **जूतीकारी**–(हिं० स्त्री०) जूतों की मार। **जूतीपजार**-(हिं०स्त्री०) मारपीट, लड़ाई-झगड़ा।
जूथ–(हिं० पुं०) देखो यूथ।
जून–(हिं० पुं०) समय, काल।
जूना–(हिं० पुं०) बोझ बाँधने की रस्सी, उसकन।
जूरा–(हिं० पुं०) देखो जूड़ा।
जूस–(हिं० पुं०) मूंग, अरहर आदि की पकी हुई दाल का पानी, उबाली हुई वस्तु का रस, युग्म संख्या।
जूसी–(हिं० स्त्री०) खाँड़ का पसेव।
जूह–(हिं० पुं०) देखो यूथ।
जृम्भ–(सं० पुं०) जँभाई, उबासी, आलस्य। **जृम्भण**–(सं० पुं०) जँभाई लेना। **जृम्भा**-(सं०स्त्री०) जँभाई, आलस्य
जेंवना–(हिं०क्रि०) भक्षण करना, खाना।
जेंवनार–(हिं० स्त्री०) देखो जेवनार।
जेंवाना–(हिं० क्रि०) भोजन कराना।
जे–(हिं० सर्व०) 'जो' का बहुवचन।
जेइ, जेउ, जऊ–(हिं० सर्व०) जो।
जेठ–(हिं० पुं०) वैशाख और आषाढ़ के बीच का चान्द्रमास, पति का बड़ा भाई; (वि०) अग्रज, वय में बड़ा। **जेठरा**–(हिं० वि०) जेठा, बड़ा।
जेठा–(हिं० वि०) अग्रज, बड़ा। **जेठाई**–(हिं० स्त्री०) जेठापन।
जेठानी–(हिं० स्त्री०) पति के बड़े भाई (जेठ) की स्त्री।
जेठौत-जेठौता-(हिं० पुं०) पति के बड़े भाई (जेठ) का पुत्र।
जेतव्य-(सं०वि०) जेय, जो जीता जा सके।
जेता–(हिं० वि०) जयशील, विजयी।
जेतिक–(हिं० वि०) जितना, जेते, जितने।
जेती–(हिं० क्रि०वि०) जितना।
जेमन–(सं० पुं०) भक्षण, भोजन।
जेय–(सं० वि०) जीतने योग्य।
जेवड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो जेवरी।
जेवन–(हिं० क्रि०) देखो जीमना।
जेवनार–(हिं० स्त्री०) बहुत-से मनुष्यों का साथ बैठकर भोजन करना।
जेवरा–(हिं० पुं०) रस्सा।
जेवरी–(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी।
जेष्ठ-(सं०वि०) जेठ का महीना, अग्रज, बड़ा
जेहल, जेहलखाना–देखो जेल, जेलखाना।
जेहि–(हिं० सर्व०) जिसको, जिससे।
जै–(हिं०स्त्री०) देखो जय; (वि०) जितना, जिस संख्या का।
जैजैकार–(हिं०स्त्री०) देखो जयजयकार
जैंपत्र–(हिं०पुं०) देखो जयपत्र।

जंबो–(हिं० क्रि०) देखो जाना।
जैमाल–(हिं० स्त्री०) देखो जयमाल।
जैव–(सं० वि०) जीवन संबंधी।
जैसा–(हिं०वि०) जिस आकृति या गुण का, जिस प्रकार का, जितना, जिस परिमाण का, सदृश,तुल्य, समान,बराबर; (क्रि०वि०) जिस मात्रा में, जितना।
जैसो–(हिं० क्रि० वि०) देखो जैसा।
जों–(हिं० क्रि० वि०) देखो ज्यों।
जोंक–(हिं०स्त्री०) एक पानी का कीड़ा, जो जीवों के शरीर में चिपककर उनका रक्त चूसता है।
जोंकी–(हिं०स्त्री०) दोहरे मुंह का काँटा
जोंदरी, जोंधरी–(हिं० स्त्री०) छोटी ज्वार, बाजरा।
जो–(हिं० सर्व०) एक संबंध-वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा निर्दिष्ट संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ अधिक वर्णन की योजना की जाती है; (अव्य०)यदि।
जोइ–(हिं०स्त्री०) जाया, पत्नी, स्त्री; (सर्व०) जो।
जोइसी–(हिं० पुं०) देखो ज्योतिषी।
जोई–(हिं० सर्व०) देखो जो।
जोखना–(हिं०क्रि०) तौलना, जाँचना।
जोखा–(हिं०पुं०)लेखा, हिसाब-किताब।
जोखिम–(हिं०स्त्री०)विपत्ति की आशंका
जोखिता–(हिं० स्त्री०) पत्नी, स्त्री।
जोग–(हिं० पुं०) देखो जोग; (हिं० अव्य०)के समीप, के वास्ते।
जोगड़ा–(हिं०पुं०) पाखंडी, बनावटी।
जोगता–(हिं० स्त्री०) योग्यता।
जोगवाना–(हिं० क्रि०) रक्षित रखना, संचित रखना।
जोगिन–(हिं०स्त्री०) साधुनी, विरक्त स्त्री
जोग्य–(हिं० वि०) देखो योग्य।
जोगिनी–(हिं०स्त्री०) देखो योगिनी।
जोगिया–(हिं०वि०) गेरू के रंग का।
जोगी–(हिं०पुं०) योग करनेवाला, योगी
जोगीश्वर–(हिं०पुं०) देखो योगीश्वर।
जोगू–(सं० वि०) स्तुति करनेवाला।
जोगेश्वर–(हिं० पुं०) देखो योगेश्वर।
जोड़–(हिं० पुं०) बन्धन, युग्म, तुल्य, समधर्मी, गणित में कई संख्याओं का योग, जोड़ने की क्रिया, योग-फल, जोड़ने का टुकड़ा, शरीर का सन्धिस्थान, समानता, जोड़ा।
जोड़ती–(हिं० स्त्री०) अनेक संख्याओं का योग, जोड़। **जोड़न**–(हिं० पुं०) जामन जो दही जमाने के लिये दूध-में डाला जाता है।
जोड़ना–(हिं०क्रि०) टूटे हुए पदार्थ के टुकड़ों को मिलाकर एक करना, सामग्री को क्रम से रखना, एकत्र करना, संग्रह करना, संबंध स्थापित करना।
जोड़वाई–(हिं०पुं०)जोड़ने की क्रिया।
जोड़वाना–(हिं० क्रि०) जोड़ने का काम दूसरे से कराना।
जोड़ा–(हिं० पुं०)एक तरह के दो पदार्थ, दोनों पैरों के जूते, एक साथ पहिने जानेवाले दो कपड़े, एक आकार की वस्तु, स्त्री-पुरुष।
जोड़वा–(हिं०वि०) गर्भ से एक ही साथ दो बच्चे, यमज। **जोड़ाई**–(हिं० स्त्री०) दो या अधिक वस्तुओं को जोड़ने का शुल्क, दीवार बनाने में ईंटों या पत्थरों के टुकड़ों को जोड़ने की क्रिया।
जोड़ी–(हिं० स्त्री०) एक ही तरह के दो पदार्थ, स्त्री-पुरुष, नर-मादा, दो घोड़ों से खींची जानेवाली गाड़ी, ताल।
जोड़ू–(हिं० स्त्री०)देखो जोरू, पत्नी।
जोत–(हिं०स्त्री०) ऊँट,घोड़े आदि जोते

जानेवाले पशुओं के गले की रस्सी, तराजू के पलरे में बंधी हुई रस्सी, उतनी भूमि जितनी किसी असामी को जोतने बोने के लिये दी गई हो।

जोतदार–(हिं० पुं०) वह असामी जिसको जोतने बोने के लिये कुछ भूमि मिली हो। **जोतना**–(हिं०क्रि०) रथ, गाड़ी, कोल्हू आदि चलाने के लिये उसमें बैल आदि बाँधना, हल चलाना। **जोताई**–(हिं०स्त्री०) जोतने का काम, जोतने का पारिश्रमिक।

जोति–(हिं० स्त्री०) देखो ज्योति।

जोतिक, जोतिसी-(हिं०पुं०) ज्योतिषी।

जोती–(हिं० स्त्री०) ज्योति, घोड़े की लगाम, तराजू के पल्ले की रस्सी।

जोधा–(हिं० पुं०) देखो योद्धा, लड़नेवाला।

जोना–(हिं० क्रि०) देखना।

जोनि–(हिं० स्त्री०) देखो योनि।

जोह, जोहाई–(हिं० स्त्री०) चन्द्रिका।

जोप–(हिं० पुं०) यदि, यद्यपि।

जोबना–(हिं० पुं०) यौवन।

जोय–(हिं०स्त्री०) जोरू, पत्नी; (सर्व०) जो, जिस।

जोयसी–(हिं० क्रि०) देखो ज्योतिषी।

जोरना–(हिं० क्रि०) जोड़ना, मिलाना।

जोराजोरी–(हिं० स्त्री०) विवशता; (क्रि० वि०) बलपूर्वक।

जोरू–(हिं०स्त्री०) भार्या, पत्नी।

जोशी–(हिं० पुं०) देखो ज्योतिषी।

जोषी–(हिं० पुं०) ज्योतिषी।

जोह–(हिं० स्त्री०) खोज, प्रतीक्षा।

जोहड–(हिं० पुं०) कच्चा तालाब।

जोहन–(हिं० स्त्री०) प्रतीक्षा, खोज।

जोहना–(हिं० क्रि०) प्रतीक्षा करना, ढूंढ़ना।

जोहार–(हिं०पुं०) अभिवादन, नमस्कार।

जौ–(हिं० अव्य०) यदि, जो; (हिं० क्रि० वि०) ज्यों।

जौ–(हिं० पुं०) गेहूँ की तरह का एक अन्न, यव; (क्रि० वि०) जब; (अव्य०) यदि।

जोख–(हिं० पुं०) सेना, झुण्ड, जत्था।

जौचनी–(हिं०स्त्री०) चना मिला हुआ जव

जौतुक–(हिं० पुं०) यौतुक, दहेज।

जौन–(हिं०सर्व०) जो; (वि०) जो।

जौ पै–(हिं० अव्य०) यदि।

जौहरी–(हिं० पुं०) रत्न बेचनेवाला, रत्नों की परख करनेवाला, गुणग्राहक।

ज्ञ-यह संयुक्त अक्षर 'ज' और 'ञ' के योग से बनता है। (सं० पुं०) ज्ञानी, जाननेवाला, पण्डित।

ज्ञपित–(सं० वि०) जाना हुआ। **ज्ञप्त**–(सं० वि०) ज्ञापित, जाना हुआ।

ज्ञप्ति–(सं० स्त्री०) बुद्धि, स्तुति, विज्ञापन।

ज्ञा–(सं०स्त्री०) जानकारी, कविता की आज्ञा।

ज्ञात–(सं० वि०) विदित, जाना हुआ।

ज्ञातक–(सं०वि०) विदित, जाना हुआ।

ज्ञाता–(हिं०पुं०) जानकार, जाननेवाला।

ज्ञाति–(सं० पुं०) एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य, बान्धव, गोती।

ज्ञान–(सं० पुं०) बोध, प्रतीति, जानकारी। **ज्ञानचक्षु**–(सं० पुं०) पण्डित, विद्वान्। **ज्ञानवान्**–(सं० वि०) ज्ञानी, जिसको ज्ञान हो। **ज्ञानवृद्ध**-(सं० वि०) जिसको अधिक ज्ञान हो।

ज्ञानापन्न–(सं० वि०) ज्ञानप्राप्त, ज्ञानी, बुद्धिमान।

ज्ञानी–(सं० वि०) ब्रह्मज्ञानी, जिसको सच्चा ज्ञान हो।

ज्ञानेन्द्रिय–(सं० पुं०) वे इन्द्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का ज्ञान होता है।
ज्ञानोदय–(सं० पुं०) ज्ञान की उत्पत्ति।
ज्ञापक–(सं० वि०) बोधक, सूचक।
ज्ञापन–(सं० पुं०) जताने या बतलाने का कार्य। ज्ञापनीय–(सं० वि०) निवेदनीय। ज्ञापित–(सं० वि०) सूचित, बतलाया हुआ।
ज्ञेय–(सं० वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य।
ज्या–(सं० स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला, किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा, पृथ्वी, वह लम्ब रेखा जो किसी चाप के एक छोर से दूसरे छोर तक गये हुए व्यास पर गिरती हो। ज्याघोष–(सं० पुं०) धनुष की टंकार।
ज्यामिति–(सं० स्त्री०) गणित शास्त्र का वह विभाग जिसके द्वारा भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोर्ण, समतल, घन परिमाण आदि विषयों का निरूपण होता है।
ज्यायस्–(सं० वि०) वृद्ध, जीर्ण, पुराना।
ज्यारना–(हिं० क्रि०) देखो जिलाना।
ज्यूँ–(हिं० अव्य०) देखो ज्यों।
ज्येष्ठ–(सं० वि०) अति वृद्ध, बड़ा बूढ़ा।
ज्येष्ठतात–(सं० पुं०) पिता के बड़े भाई।
ज्येष्ठत्व–(सं० पुं०) ज्येष्ठता, बड़ाई।
ज्यों–(हिं० क्रि० वि०) जिस प्रकार। ज्यों-त्यों–किसी न किसी प्रकार से।
ज्योति–(सं० स्त्री०) प्रकाश, ज्वाला।
ज्योतिक–(हिं० पुं०) देखो ज्योतिषी।
ज्योतित–(हिं० वि०) प्रकाशित।
ज्योतिर्मय–(सं० वि०) प्रकाशमय।
ज्योतिर्विद–(सं० पुं०) ज्योतिष जाननेवाला, ज्योतिषी।
ज्योतिष–(सं० पुं०) वह विद्या या शास्त्र जिससे आकाशस्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है; ज्योतिषी–(हिं० पुं०) ज्योतिःशास्त्र जाननेवाला मनुष्य, दैवज्ञ, गणक।
ज्योतिष्पथ–(सं० पुं०) आकाश।
ज्योतिष्मान्–(सं० वि०) प्रकाशयुक्त; (पुं०) सूर्य।
ज्योत्सना–(सं० स्त्री०) कौमुदी, चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी रात।
ज्योनार–(हिं० स्त्री०) पका हुआ भोजन, रसोईं, भोज।
ज्यौ–(हिं० अव्य०) यदि जो–यह शब्द बहुधा कविता में प्रयुक्त होता है।
ज्योतिष–(सं० वि०) ज्योतिष संबंधी। ज्योतिषक–(सं० पुं०) ज्योतिष शास्त्र जाननेवाला।
ज्वर–(सं० पुं०) शरीर की अस्वस्थता में उत्पन्न गरमी। ज्वरघ्न–(सं० वि०) ज्वरनाशक।
ज्वल–(सं० पुं०) दीप्ति, ज्वाला, प्रकाश।
ज्वलन्त–(सं० वि०) प्रकाश मान, जलता हुआ।
ज्वान–(हिं० पुं०) युवा पुरुष।
ज्वार–(हिं० स्त्री०) जुंधरी, समुद्र के जल का उभाड़।
ज्वारभाटा–(हिं० पुं०) समुद्र के जल का चढ़ाव-उतार।
ज्वाल–(सं० पुं०) अग्नि-शिखा, अग्नि की लौ, आँच।
ज्वाला–(सं० स्त्री०) आग की लपट।
ज्वालामुखी पर्वत–(सं० पुं०) वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुआँ, राख तथा जले हुए और पिघले हुए पदार्थ समय समय पर अथवा निरन्तर निकलते रहते हैं।

झ

झ-संस्कृत और हिंदी व्यञ्जन वर्ण का नवाँ वर्ण तथा च वर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान तालु है।
झ-(सं० पुं०) वर्षा मिली हुई तीव्र आँधी, जल का गिरना, तीव्र वायु।
झउआ-(हिं० पुं०) टोकरा, खाँचा, झावा।
झं-(हिं० पुं०) धातुखण्ड के परस्पर टकराने से उत्पन्न शब्द।
झंकना-(हिं० क्रि०) देखो झीखना।
झंकार-(हिं० स्त्री०) झनकार।
झंकारना-(हिं० क्रि०) झनझन शब्द उत्पन्न करना या होना।
झंकृत-(हिं० वि०) ध्वनित।
झंखना-(हिं० क्रि०) पश्चात्ताप करना।
झंखाड़-(हिं० पुं०) बहुत निकृष्ट वस्तुओं का ढेर।
झंगरा-(हिं० पुं०) बाँस का गोल टोकरा।
झंगा-(हिं० पुं०) देखो झगा।
झंझ-(हिं० पुं०) झाँझ।
झंझट-(हिं० स्त्री०) प्रपंच, टंटा, बखेड़ा
झंझनाना-(हिं० क्रि०) झंकारना।
झंझर-(हिं० पुं०) देखो झञ्झर।
झँझरा-(हिं० वि०) महीन छेदवाला।
झँझरी-(हिं० स्त्री०) भीत में बनी हुई जालीदार खिड़की।
झंझा-(हिं० पुं०) वर्षा सहित तीव्र आँधी।
झंझार-(हिं० पुं०) आग की लपट।
झंझावात-(हिं० पुं०) देखो झंझा।
झंझी-(हिं० स्त्री०) फूटी कौड़ी।
झंझोड़ना-(हिं० क्रि०) झकोरना, झटका देना।
झंडा-(हिं० पुं०) ध्वजा, पताका, फरहरा
झंप-(हिं० पुं०) फलाँग, छलाँग।
झंपना-(हिं० क्रि०) ढाँकना, छिपाना।
झपड़िया, झपरी-(हिं० स्त्री०) ओहार।
झंपान-(हिं० पुं०) एक प्रकार की खटोली जो पहाड़ पर सवारी के काम में आती है।
झंपित-(हिं० वि०) छिपा हुआ।
झंपोला-(हिं० पुं०) छोटा झाँप, छबड़ा।
झंव-(हिं० पुं०) गुच्छा।
झँवरना-(हिं० क्रि०) कुछ काला पड़ जाना, फीका पड़ना।
झँवाँ-(हिं० पुं०) देखो झाँवा।
झँवाना-(हिं० क्रि०) झवाँ के रंग का होना, अग्नि का मन्द होना, घटना, कम होना, कुम्हलाना।
झँसना-(हिं० क्रि०) किसी को बहकाकर उसका धन छीन लेना।
झक-(हिं० स्त्री०) धुन, सनक।
झकझक-(हिं० स्त्री०) बकवाद।
झकझका-(हिं० स्त्री०) चमकीला।
झकझोर-(हिं० पुं०) झटका, झोंका।
झकझोरना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को पकड़कर झटका देना। झकझोरा-(हिं० पुं०) धक्का।
झकना-(हिं० क्रि०) व्यर्थ की बात करना।
झकाझक-(हिं० वि०) चमकता हुआ।
झकार-(सं० पुं०) 'झ' मात्र वर्ण।
झकोर-(हिं० पुं०) हवा का झटका।
झकोरना-(हिं० क्रि०) झोंका मारना।
झकोरा-(हिं० पुं०) वायु का वेग।
झक्क-(हिं० वि०) चमकीला, जगमगाता।
झक्कड़-(हिं० पुं०) तीव्र वायु, अन्धड़; (वि०) झक्की।
झक्की-(हिं० वि०) व्यर्थ की बकवाद करनेवाला, सनकी।
झक्खना-(हिं० क्रि०) देखो झीखना।

झख–(हिं० स्त्री०) झीखने का भाव या क्रिया।
झखना–(हिं० क्रि०) देखो झीखना।
झखी–(हिं० स्त्री०) मत्स्य, मछली।
झगड़ना–(हिं० क्रि०) झगड़ा करना, लड़ना।
झगड़ा–(हिं० पुं०) लड़ाई-बखेड़ा, टंटा।
झगड़ाल–(हिं० पुं०) कलहप्रिय।
झगराऊ–(हिं० वि०) झगड़ालू।
झगला, झगा–(हिं० पुं०) छोटे बच्चों के पहिनने का ढीला वस्त्र।
झंकार–(हिं०पुं०) गूंजन, झनझन शब्द।
झज्झर–(हिं०पुं०) पानी रखने का चौड़े मुंह का मिट्टी का पात्र।
झञ्झी–(हिं० स्त्री०) फूटी कौड़ी।
झझक–(हिं० पुं०) भय की झुंझलाहट, दुर्गन्ध, सनक। झझकना–(हिं०वि०) झुंझलाना, खिजलाना। झझकाना–(हिं० क्रि०) खिजलाना, भड़काना, रोक देना। झझकार–(हिं० स्त्री०) झझकारने का भाव या क्रिया।
झझकारना–(हिं०क्रि०) डाटना, डपटना
झञ्झन–(सं० पुं०) झनकार।
झञ्झा–(सं० स्त्री०) अंधड़।
झञ्झा-वायु–(सं० पुं०) वह आंधी जिसके साथ पानी भी बरसता हो।
झट–(हिं० क्रि० वि०) तत्क्षण, तुरंत।
झटक–(हिं० पुं०) देखो झटका।
झटका–(हिं० पुं०) झोंका, झटकने की क्रिया। झटकारना–(हिं० वि०) झटकना।
झटपट–(हिं०अव्य०) अति शीघ्र, जल्दी
झटका–(हिं० वि०) देखो झड़ाका।
झटिका–(हिं० स्त्री०) झाड़ी।
झटिति–(सं० अव्य०) झटपट, तत्क्षण।
झड़–(हिं० स्त्री०) ताले के भीतर का खटका जो ताली से हटता और ताले को खोलता है।
झड़न–(हिं० स्त्री०) झड़ने की क्रिया या भाव, झड़ी हुई वस्तु। झड़ना–(हिं० क्रि०) कण या बिन्दु रूप में गिरना।
झड़प–(हिं० स्त्री०) आवेग, लड़ाई, मुठभेड़, क्रोध। झड़पना–(हिं० क्रि०) वेग से आक्रमण करना, लड़ना, झगड़ना।
झड़पाझड़पी–(हिं० स्त्री०) हाथापाई।
झड़वाना–(हिं० क्रि०) झाड़ने का काम दूसरे से कराना।
झड़ाई–(हिं० स्त्री०) झड़ने की क्रिया।
झड़ाक–(हिं० क्रि० वि०) तुरत।
झड़का–(हिं० पुं०) मुठभेड़, झटपट।
झड़ाझड़–(हिं० क्रि० वि०) अविरल, लगातार।
झड़ी–(हिं० स्त्री०) महीन-महीन बूंदों की वर्षा, ताले के भीतर का अंश जो चाभी से हटाता बढ़ाता है, निरन्तर बहुत-सी बातें कहते जाना।
झन–(हिं० स्त्री०) किसी धातु-खण्ड के आघात से उत्पन्न शब्द।
झनक–(हिं० स्त्री०) धातु आदि के परस्पर टकराने का शब्द। झनकना–(हिं० क्रि०) झनकार का शब्द करना, चिड़चिड़ाना।
झनकमनक–(हिं० स्त्री०) आभूषण आदि का शब्द।
झनकार–(हिं० स्त्री०) देखो झंकार।
झनझन–(हिं० स्त्री०) झनकार, झनझन शब्द।
झन्नाहट–(हिं० स्त्री०) झनकार।
झप–(हिं० क्रि० वि०) तुरत, छटपट।
झपक–(हिं० स्त्री०) बहुत थोड़ा समय,

पलक गिरना, लज्जा। **झपकना**–(हिं॰ क्रि॰) डरना, पलक गिराना, ढकेलना, वेग से आगे को बढ़ना, ऊँघना।
झपका–(हिं॰ पुं॰) हवा का झोंका।
झपकाना–(हिं॰ क्रि॰) पलकों का बन्द करना।
झपकी–(हि॰ स्त्री॰) अल्प निद्रा, आँख झपकने की क्रिया। **झपकौहाँ**–(हिं॰ वि॰) निद्रा में भरा हुआ।
झपट–(हिं॰ स्त्री॰) झपटन की क्रिया या भाव। **झपटना**–(हिं॰ क्रि॰) आक्रमण करना, ले लेना। **झपटाना**–(हिं॰ क्रि॰) उसकाना।
झपना–(हिं॰ क्रि॰) पलकों को बन्द करना
झपट्टा–(हिं॰ पुं॰) देखो झपट।
झपस–(हिं॰ स्त्री॰) गूंजान होने की त्रिया। **झपसना**–(हि॰ क्रि॰) वृक्ष या लता की शाखाओं का सघन होकर फैलना।
झपाका–(हिं॰ पुं॰) शीघ्रता, जल्दी; (क्रि॰ वि॰) शीघ्रता से।
झपाटा–(हिं॰ पुं॰) आक्रमण, धावा।
झपाना–(हिं॰ क्रि॰) बन्द करना, मूंदना
झपित–(हिं॰ वि॰) मूंदा हुआ, लज्जित, नींद में भरा हुआ।
झपेट–(हिं॰ स्त्री॰) देखो झपट।
झपेटना–(हिं॰ क्रि॰) दबोचना, धावा करके ले लेना। **झपेटा**–(हिं॰ पुं॰) चपेट।
झप्पड़–(हिं॰ पुं॰) झापड़, थप्पड़।
झप्पान–(हिं॰ पुं॰) चार आदमियों से उठाने की एक प्रकार की पहाड़ी सवारी।
झबरा-झबरीला–(हिं॰ वि॰) जिसके बिखरे हुए लंबे बाल हों।
झबा–(हि॰ पुं॰) देखो झब्बा।
झबार–(हिं॰ स्त्री॰) बखेड़ा, टंटा।
झबिया–(हिं॰ स्त्री॰) छोटा झब्बा, फुंदना।
झब्बा–(हिं॰ पुं॰) रेशम, कलाबत्तू, सूत आदि के तारों का गुच्छा।
झमक–(हिं॰ स्त्री॰) चमक, प्रकाश, उजाला। **झमकना**-(हिं॰ क्रि॰) चमक उत्पन्न करना।
झमझम–(हि॰ स्त्री॰) घुंघरू आदि के बजने का शब्द, वर्षा होने का शब्द, चमक, दमक; (हि॰) जगमगाता हुआ; (हिं॰ क्रि॰) चमक दमक के साथ। **झमझमाना**-(हिं॰ क्रि॰) चमचमाना
झमना–(हिं॰ स्त्री॰) झुकना, दबना।
झमाका–(हिं॰ पुं॰) पानी बरसने अथवा आभूषणों के बजने का शब्द।
झमाझम–(हिं॰ स्त्री॰) घुंघरू आदि के बजने का शब्द; (हिं॰ क्रि॰ वि॰) झमाझम शब्द सहित।
झमाना–(हिं॰ क्रि॰) झपकना, छाना, घेरना।
झमेल–(हिं॰ स्त्री॰) देखो झमेला।
झमेला–(हिं॰ पुं॰) झंझट, झगड़ा, बखेड़ा, भीड़भाड़। **झमेलिया**–(हिं॰ वि॰) झगड़ालू।
झम्प–(सं॰ पुं॰) उछाल, फलांग, कुदान।
झर–(सं॰ पुं॰) पहाड़ से निकला हुआ झरना, सोता, झुंड, समूह, लगातार वृष्टि, लपट, ताले के भीतर का भाग जिसको ताली हटाकर खोलती है।
झरकना–(हिं॰ क्रि॰) झिड़कना।
झरझर–(हिं॰ स्त्री॰) वह शब्द जो पानी बरसने, वायु चलने या वर्षा होने से उत्पन्न होता है। **झरझराना**–(हिं॰ क्रि॰) किसी पदार्थ को किसी पात्र में झाड़कर गिरा देना।

झरन–(हिं० स्त्री०) झरन की क्रिया।
झरना–(हिं० पुं०) जल प्रवाह, सोता, बड़ी छलनी, सोते का ऊँचे स्थान से गिरना।
झरनि–(हिं० स्त्री०) देखो झरन।
झरप–(हिं० स्त्री०) झकोरा, झोंका।
झराझर–(हिं० क्रि० वि०) झरझर शब्द करते हुए।
झरित–(सं० वि०) गलित, गला हुआ।
झरी–(सं० स्त्री०) स्रोत; (हिं० स्त्री०) दरार, वह कर जो किसी स्थान में हाट लगाने के लिये दिया जाता है।
झरोखा–(हिं० पुं०) भीत में बनी हुई झरीदार छोटी खिड़की या मोखा, गवाक्ष।
झल–(हिं० पुं०) उत्कट इच्छा, क्रोध, रोष
झलक-(हिं० स्त्री०) आभा, द्युति, चमक, प्रतिबिम्ब।
झलकना–(हिं० क्रि०) चमकना।
झलका–(हिं० पुं०) शरीर पर पड़ा हुआ छाला, फफोला।
झलकाना–(हिं० क्रि०) चमकाना, आभास देना, दिखलाना।
झलकी–(हिं० स्त्री०) देखो झलक।
झलझल–(हिं० स्त्री०) चमक-दमक।
झलझलाना–(हिं० क्रि०) चमकना, चमचमाना। झलझलाहट–(हिं० स्त्री०) चिड़चिड़ाहट।
झलना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ से हवा लगाना, हवा करने के लिये किसी वस्तु को हिलाना, किसी वस्तु को राँगे से जोड़ना, देखो झलना।
झलमल–(हिं० पुं०) अल्प प्रकाश।
झलमला–(हिं० वि०) चमकीला।
झलमलाना–(हिं० वि०) रह रहकर चमकना।
झलरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का पकवान।
झलराना–(हिं० क्रि०) फैलकर छा जाना।
झलवाना–(हिं० वि०) किसी दूसरे से झलन या झालने का काम कराना।
झलहाया–(हिं० पुं०) ईर्ष्या करनवाला मनुष्य।
झलाझल–(हिं० वि०) खूब चमकता हुआ।
झल्लकण्ठ–(सं० पुं०) पारावत, परेवा पक्षी।
झल्लरा–(सं० स्त्री०) झांझ, छोटे बच्चों के बाल, स्वेद, पसीना।
झल्ला–(हिं० पुं०) बड़ी टोकरी, खाँचा, वर्षा, बौछार; (वि०) जो बहुत गाढ़ा न हो, सनकी, पागल।
झल्लाना–(हिं० क्रि०) खिजलाना, चिढ़ाना।
झवर–(हिं० पुं०) झगड़ा।
झष–(सं० पुं०) मत्स्य, मीन, मछली।
झसना–(हिं० क्रि०) देखो झँसना।
झहरना–(हिं० क्रि०) झरझर शब्द करना, शिथिल होना, ढीला पड़ना, झिड़कना। झहराना–(हिं० क्रि०) खिजलाना, शिथिल होकर गिरना।
झा–(हिं० पुं०) मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि।
झाई–(हिं० स्त्री०) प्रतिबिंब, परछाईं, छल, अन्धकार, प्रतिबिंब।
झाँक–(हिं० स्त्री०) ताकने की क्रिया या भाव। झाँकना–(हिं० क्रि०) आड़ में से मुख निकालकर देखना।
झाँकी–(हिं० स्त्री०) झाँकने की क्रिया, दर्शन, दृश्य।

झाँगला–(हिं० वि०)ढीलाढीला पोशाक।
झाँगा–(हिं० पुं०) देखो झगा।
झाँझ–(हिं० स्त्री०)काँसे के ढले हुए दो गोलाकार टुकड़ों का जोड़ा जो मजीरे से बड़ा होता है।
झाँझड़ी, झाँझन–(हिं० स्त्री०) घुँघरूदार पैजनी, पायल।
झाँझर–(हिं० वि०) जर्जर, पुराना, छिद्रमय; (स्त्री०) पैजनी, झाँझन।
झाँझरी-(हिं०स्त्री०)झाँझ नामक आभूषण
झाँझ–(हिं० पुं०) झंझट, बखेड़ा।
झाँझिया–(हिं० पुं०)झाँझ बजानेवाला।
झाँप–(हिं० स्त्री०)किसी वस्तु को ढांपने की वस्तु, नाद, झपकी। **झाँपना**–(हिं० वि०) ढाँकना।
झाँपी–(हिं० स्त्री०)ढाँपने की डलिया।
झाँवर–(हिं० स्त्री०) नीची भूमि जहाँ पानी ठहरता हो; (वि०) मलिन, मुरझाया हुआ, शिथिल।
झाँवली–(हिं० स्त्री०)आँख की कनखी।
झाँवा–(हिं० पुं०) ईंट जो अधिक पकने के कारण काली हो गई हो।
झाँसना–(हिं० क्रि०)धोखा देना, ठगना।
झाँसा–(हिं० पुं०) छल, धोखाधड़ी।
झाँसिया–(हिं० पुं०)धोखा देनेवाला।
झाँसू–(हिं० पुं०) छल करनेवाला।
झाग–(हिं०पुं०)नल आदि का फेन, गाज।
झागड़–(हिं० पुं०) झगड़ा।
झागना–(हिं० क्रि०)फेन उत्पन्न होना।
झाड़–(हिं० पुं०) छोटा वृक्ष जिसकी डालियाँ भूमि के बहुत पास से निकलकर चारों ओर फैली रहती हैं, प्रकाश करने का काँच का झाड़ जो छत में से लटकाया जाता है, गुच्छा, लच्छा, झाड़ने की क्रिया, डाट-डपट, फटकार। **झाड़फूंक**–मंत्रोपचार।
झाड़झंखाड़–(हिं० पुं०)व्यर्थ की वस्तुओं का समूह।
झाड़दार–(हिं० वि०) काँटेदार, कँटीला
झाड़न–(हिं० स्त्री०)धूल इत्यादि हटाने का कपड़ा,झाड़ू देने पर निकली हुई वस्तु
झाड़ना–(हिं० क्रि०) धूल इत्यादि हटाना, झटकारना, फटकारना, झटके से किसी वस्तु को गिराना, भूत प्रेत दूर करने के लिये मन्त्रपढ़ कर फूंकना, डाँटना, डपटना।
झाड़फूंक–(हिं० स्त्री०) मन्त्र पढ़कर भूत-प्रेत दूर करने की क्रिया।
झाड़बुहार–(हिं०स्त्री०)परिष्कार,शुद्धता
झाड़ा–(हिं० पुं०)विष्ठा, मैला, पुरीष।
झाड़ी–(हिं० स्त्री०) छोटा झाड़, अनेक छोटे पेड़ों का समुदाय।
झाड़ीदार–(हिं० वि०)झाड़ी के समान।
झाड़ू–(हिं० पुं०) कूंचा, बोहारी।
झापड़–(हिं० पुं०) थप्पड़, तमाचा।
झाबर–(हिं० पुं०) दलदली भमि।
झावा–(हिं० पुं०) टोकरा, खाँचा।
झाम–(हिं० पुं०) झब्बा, गुच्छा, डाँट-डपट, घुड़की, छल, कपट, धोखा, कुवें की मिट्टी खोदने का यंत्र।
झामक–(सं०पुं०)जली हुई ईंट, झाँवा।
झामर–(सं० पुं०) एक प्रकार का पैर का गहना, टेकुआ।
झामी–(हिं० पुं०) छली, कपटी।
झायँझायँ–(हिं० स्त्री०) झनझन शब्द, झनकार, सूनसान स्थान में वायु का शब्द
झार–(हिं० वि०) एकमात्र, सम्पूर्ण, सब; (स्त्री०) ईर्ष्या, डाह, लपट, चरपराहट।
झारन–(हिं० पुं०) देखो झाड़न।
झारना–(हिं० क्रि०) बालों में कंघी करना, अलग करना।

झारी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की टोंटी लगी हुई लोटिया।
झारू–(हिं० पुं०) देखो झाड़ू।
झाल–(हिं० पुं०) झाँझ, खाँचा, टोकरी, तरंग, लहर।
झालना–(हिं० क्रि०) धातु की वस्तुओं को टाँका लगाकर जोड़ना।
झालर–(हिं० स्त्री०) लटकता हुआ किनारा जो शोभा के लिये लगाया जाता है, किनारा, छोर। झालरदार–(हिं० वि०) जिसमें झालर लगी हो।
झाला–(हिं० पुं०) मकड़ी का जाला।
झाँवँझावँ–(हिं०स्त्री०) कलह, बकवाद।
झगरना–(हिं० क्रि०) झगड़ना।
झझकना–(हिं० क्रि०) देखो झझकना।
झिझकार–(हिं०स्त्री०) देखो झझकार।
झिझकारना–(हिं० क्रि०) झटकना।
झिटका–(हिं० पुं०) देखो झटका।
झिड़कना–(हिं० क्रि०) अवज्ञापूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना, वस्तु को दूर फेंक देना।
झिड़की–(हिं० स्त्री०) डाँट-फटकार।
झिड़झिड़ाना–(हिं०क्रि०) चिड़चिड़ाना।
झिपना–(हिं० क्रि०) लज्जित होना।
झिपाना–(हिं० क्रि०) लज्जित करना।
झिरकना–(हिं०क्रि०) डपटना, फेंक देना।
झिरझिर–(हिं० क्रि० वि०) धीरे-धीरे।
झिरझिरा, झिरझिर–(हिं० वि०) बहुत पतला, झँझरा, झीना।
झिरना–(हिं० क्रि०) देखो झुरना; (पुं०) छिद्र, छेद। झिराना–(हिं० क्रि०) देखो झुराना।
झिरी–(हिं० स्त्री०) छोटा छेद।
झिलँगा–(हिं०पुं०) टूटी हुई खटियाकाबाध
झिलना–(हिं० क्रि०) बलपूर्वक प्रवेश करना, सन्तुष्ट होना।
झिलमिल–(हिं० स्त्री०) प्रकाश की चंचलता, एक प्रकार का सुंदर महीन वस्त्र; (वि०) रह-रहकर चमकनेवाला।
झिलमिला–(हिं० वि०) झँझरा, झीना, ठहर-ठहरकर हिलता प्रकाश देनवाला।
झिलमिलाना–(हिं० क्रि०) रह-रहकर चमकना।
झिलमिली–(हिं० स्त्री०) अनेक पतली आड़ी पटरियों का ढाँचा जो किवाड़ों में प्रकाश, धूल आदि रोकने के लिये जड़ा रहता है।
झिल्लिका, झिल्ली–(सं० स्त्री०) कीट विशेष, झींगुर।
झिल्ली–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु की पतली तह, महीन छाल।
झिल्लीक–(सं० पुं०) झिल्ली, झींगुर।
झिल्लीदार–(हिं० वि०) जिसकी ऊपरी तह बहुत पतली हो, जिस पर झिल्ली हो।
झींकना–(हिं० क्रि०) देखो झींखना।
झींका–(हिं० पुं०) अन्न का वह परिमाण जो पीसने के लिये चक्की में एक बार डाला जाता है।
झींखना–(हिं० क्रि०) दुखी होकर पछताना और चिढ़ना; (पुं०) दुखड़ा।
झींगट–(हिं० पुं०) कर्णधार, मल्लाह, केवट, एक प्रकार के धान का नाम।
झींगुर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो अँधेरे में रहता है, बरसात में झन्-झन् शब्द करता है, झिल्ली।
झीना–(हिं० वि०) छिद्रयुक्त, झँझरा, धीमा, मन्द।
झींसी–(हिं०स्त्री०) छोटी बूँदों की वर्षा, फूही।
झील–(हिं० स्त्री०) चारों ओर भूमि से घिरा हुआ एक प्राकृतिक जलाशय, बहुत बड़ा तालाब।

झींवर–(हिं० पुं०) कर्णधार, माझी ।
झुंझलाना–(हिं० क्रि०) चिड़चिड़ाना ।
झुंगना–(हिं० पुं०) जुगनू ।
झुंड–(हिं० पुं०) समुदाय, यूथ ।
झुकझोरना–(हिं० क्रि०) देखो झकझोरना ।
झुकना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का नीचे को लटकाना, नवना, निहुरना ।
झुकमुक–(हिं० पुं०) ऐसा अन्धकार जब कोई वस्तु स्पष्ट न देख पड़े ।
झुकरना–(हिं० क्रि०) क्रुद्ध होना, खिजलाना, चिढ़ना । झुकराना–(हिं० क्रि०) झोंका देना । झुकवाई–(हिं० स्त्री०) झुकवाने की क्रिया । झुकवाना–(हिं० क्रि०) झुकाने का काम दूसरे से कराना । झुकाई–(हिं० स्त्री०) झुकाने का काम या पारिश्रमिक । झुकाना–(हिं० क्रि०) निहुराना ।
झुकार–(हिं० पुं०) हवा का झोंका या झकोरा ।
झुकाव–(हिं० पुं०) किसी ओर नवने या झुकने की क्रिया, झुकने का भाव, प्रवृत्ति ।
झुटपुटा–(हिं० पुं०) ऐसा समय जब थोड़ा अन्धकार और कुछ प्रकाश हो ।
झुटुंग–(हिं० वि०) जटावाला, झोंटेवाला
झुठकाना–(हिं० क्रि०) झूठी बात द्वारा दूसरे को धोखा देना ।
झुठलाना, झुठवाना–(हिं० क्रि०) झूठा ठहराना, झूठा बनाना ।
झुठाई–(हिं० स्त्री०) असत्यता, झूठापन ।
झुठाना–(हिं० क्रि०) झूठा ठहराना ।
झुठालना–(हिं० क्रि०) देखो झुठलाना ।
झुनक–(हिं० पुं०) पैंजनी का शब्द ।
झुनकना–(हिं० क्रि०) झुनझुन बजना ।
झुनझुन–(हिं० पुं०) नूपुर आदि के बजने का शब्द ।
झुनझुना–(हिं० पुं०) छोटे लड़कों के खेलने का झुनझुन शब्द करनेवाला खिलौना । झुनझुनाना–(हिं० क्रि०) झुनझुन शब्द होना या उत्पन्न करना ।
झुनझुनी–(हिं० स्त्री०) शरीर के किसी अंग में उत्पन्न एक प्रकार की सनसनाहट ।
झुप्पा–(हिं० पुं०) झब्बा, गुच्छा, झुण्ड ।
झुमका–(हिं० पुं०) एक प्रकार का कान में पहिनने का गहना, एक पौधा ।
झुमाऊ–(हिं० वि०) झूमनेवाला ।
झुमाना–(हिं० क्रि०) झूमने में किसी को प्रवृत्त करना ।
झुरझुरी–(हिं० स्त्री०) कम्प, कँपकँपी ।
झुरना–(हिं० क्रि०) सूखना, दुःखाकुल होना, दुबला होना, अधिक पछतावा करना ।
झुरकुट–(हिं० वि०) कुम्हलाया हुआ ।
झुरकुटिया–(हिं० वि०) दुबला, पतला ।
झुरमुट–(हिं० पुं०) घनी झाड़ी, मनुष्यों का समूह ।
झुरवन–(हिं० स्त्री०) किसी सूखे पदार्थ से निकला हुआ अंश ।
झुरवाना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को सुखाने का काम दूसरे से कराना ।
झुरसना–(हिं० क्रि०) देखो झुलसना ।
झुरहुरी–(हिं० स्त्री०) देखो झुरझुरी ।
झुराना–(हिं० क्रि०) सुखाना, दुबला होना ।
झुरावन–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु को सुखाने के कारण उसमें से निकला हुआ अंश ।
झुर्री–(हिं० स्त्री०) सिकुड़न ।
झुलना–(हिं० पुं०) स्त्रियों के पहिनने का

ढीला कुरता, पालना, झूला; (वि०) झूलनेवाला।
झुलनीबीर–(हिं० पुं०) धान की बाल।
झुलमुला–(हिं० वि०) देखो झिलमिल।
झुलवा–(हिं०पुं०) देखो झूला, पालना।
झुलवाना–(हिं० क्रि०) झुलाने का काम दूसरे से कराना।
झुलसना–(हिं० क्रि०) झौंसना, अधिक उष्णता के कारण ऊपरी भाग सूखकर काला पड़ना।
झुलसवाना–(हिं० क्रि०) झुलसने का काम दूसरे से कराना। झुलसाना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ के ऊपरी अंश को आधा जला देना। झुलाना–(हिं०क्रि०) हिलाना, आसरे में रखना।
झूँकटी–(हिं० स्त्री०) छोटी झाड़ी।
झूझना–(हिं० क्रि०) देखो जूझना।
झूट–(हिं० पुं०) देखो झूठ, असत्य।
झूठ–(हिं० पुं०) जो बात यथार्थ न हो, असत्य बात।
झूठन–(हिं० स्त्री०) देखो जूठन।
झूठमूठ–(हिं० क्रि० वि०) असत्य रूप में, व्यर्थ।
झूठा–(हिं० वि०) असत्य, मिथ्या, झूठ बोलनेवाला, कृत्रिम, बनावटी; (वि०) देखो 'जूठा'। झूठों–(हिं० क्रि० वि०) नाममात्र के लिये, वृथा।
झूम–(हिं०स्त्री०) झूमने की क्रिया, झपकी
झूमक–(हिं०पुं०)होली में गाया जानेवाला एक गीत जिसको स्त्रियाँ झूम-झूमकर गाती हैं, गुच्छा।
झूमका–(हिं० पुं०) देखो झुमका।
झूमड़–(हिं०पुं०) देखो झूमर। झूमड़-झामड़–(हिं० पुं०) निरर्थक प्रपंच।
झूमना–(हिं०क्रि०)किसी वस्तु का इधर-उधर हिलना या झोंके खाना।
झूमर–(हिं० पुं०) सिर में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण जिसमें घुंघरू या झब्बे लटकते रहते हैं।
झूर–(हिं० स्त्री०) जलन, दुःख; (वि०) शुष्क, सूखा।
झूरना–(हिं० क्रि०) सूचना देना।
झूरा–(हिं० वि०)शुष्क, सूखा; (पुं०) सूखा स्थान, पानी न बरसना।
झूरें–(हिं० क्रि० वि०)निरर्थक, व्यर्थ।
झूल–(हिं० स्त्री०) चौपायों की पीठ पर डालने का चौकोर वस्त्र।
झूलना–(हिं० क्रि०) इधर-उधर हिलना झूले पर बैठकर पेंग लगाना, अस्थिर रहना, आसरे में देर तक पड़े रहना; (वि०) झूलनेवाला।
झूला–(हिं० पुं०) हिंडोला, एक प्रकार का पुल जो पुष्ट रस्सों, जंजीरों या तारों का बना होता है।
झेंपना–(हिं० क्रि०) लज्जित होना।
झेरना–(हिं० क्रि०) आरंभ करना।
झेरा–(हिं० पुं०)प्रपंच, झंझट, बखेड़ा।
झेल–(हिं०स्त्री०) हलका धक्का, हलोरा।
झेलना–(हिं०क्रि०)सहनकरना,ऊपर लेना
झोंक–(हिं० स्त्री०) प्रवृत्ति, झुकाव, प्रचंड गति, बोझ, भार, किसी कार्य में सजावट, ठाटबाट, पानी का हलरा।
झोंकना–(हिं० क्रि०) वेग से आगे की ओर बढ़ाना, बिना सोचे-विचारे अधिक व्यय करना, अधिक कार्यभार किसी पर डालना, किसी को आपत्ति में डालना, ठेलना, ढकेलना।
झोंकवा–(हिं० पुं०) भट्ठी या भाड़ में इन्धन फेंकनेवाला। झोंकवाई–(हिं० स्त्री०) झोंकने की क्रिया या वेतन।
झोंकवाना–(हिं० क्रि०) झोंकने का काम किसी से कराना।

झोंका–(हिं० पुं०) आघात, हवा का झकोरा, पानी का हिलोरा। झोंकाई–(हिं० स्त्री०) झोंकने की क्रिया या पारिश्रमिक। झोंकिया–(हिं० पुं०) भाड़ में पत्ते झोंकनेवाला।
झोंझ–(हिं०पुं०) घोंसला, खोता, पक्षियों के गले की लटकती हुई मांस की थैली।
झोंझल–(हिं०पुं०) क्रोध, रोष, कुढ़न, गुस्सा।
झोंपड़ा–(हिं० पुं०) पर्णशाला, कुटी।
झोपड़ा, झोपड़ी–(हिं० पुं०स्त्री०) देखो झोपड़ा, झोपड़ी।
झोपा–(हिं० पुं०) झब्बा, गुच्छा।
झोंटिंग–(हिं० वि०) जिसके माथे पर बड़े खड़े बाल हों।
झोरई–(हिं० वि०) झोलदार (रसदार) तरकारी।
झोरना–(हिं०क्रि०) झटका देकर कँपाना या हिलाना।
झोरा–(हिं० पुं०) झब्बा, गुच्छा।
झोरी–(हिं० स्त्री०) झोली।
झोर, झोल–(हिं० पुं०) तरकारी आदि का गाढ़ा रसा; (हिं० वि०) ढीला, निकम्मा। झोलदार-(हिं० वि०) रस भरा हुआ, ढीला ढाला।
झोलना–(हिं०क्रि०) जलाना, दाह करना।
झोला–(हिं०पुं०) कपड़े की बड़ी थैली।
झौंझट–(हिं० पुं०) देखो झंझट।
झौंरना–(हिं०क्रि०) गूंजना, गंजारना।
झौंराना–(हिं० क्रि०) झूमना, इधर-उधर हिलना।
झौंलना–(हिं० क्रि०) जलाना।
झौंसना–(हिं० क्रि०) देखो झुलसना।
झौर–(हिं० पुं०) प्रपंच, वाद-विवाद।
झौरना–(हिं०क्रि०) छोप लेना, दबा लेना
झौरा–(हिं०पुं०) झंझट, बखेड़ा।
झौरे–(हिं०क्रि०वि०) संग, साथ, समीप।
झौवा–(हिं०पुं०) रहठे की बनी हुई दौरी।
झौहाना–(हिं० क्रि०) कुढ़ना, चिड़चिड़ाना।

ञ

ञ–हिन्दी और संस्कृत व्यञ्जन वर्ण का दसवाँ अक्षर, चवर्ग का पाँचवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है। ञ–(सं० पुं०) गानेवाला, घरघर शब्द, बैल।
ञकार–(सं० पुं०) 'ञ' स्वरूप वर्ण।

ट

ट–संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन तथा टवर्ग का पहिला अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।
टक–(सं०पुं०) नारियल का वृक्ष; (पुं०) वामन, चतुर्थांश।
टँकना–(हिं० क्रि०) जोड़ा जाना, सिला जाना, लिखा जाना, कुटना, रेता जाना।
टँकाई–(हिं० स्त्री०) टाँकने की क्रिया या वेतन। टँकाना–(हिं० क्रि०) टाँकों से सिलाना, खुरखुर करना, मुद्रा की जाँच करना।
टँगड़ी–(हिं०स्त्री०) घुटने से लेकर एड़ी तक का भाग, टाँग।
टँगना–(हिं० क्रि०) लटकना, चढ़ना या लटकाना।
टँगरी–(हिं० स्त्री०) देखो टँगड़ी।
टँगारी–(हिं० स्त्री०) छोटा टाँगा।
टँडिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का बाँह में पहिनने का आभूषण।
टंक–(सं० पुं०) क्रोध, तलवार, टाँकी, जंघा, एक तोले चार माशे का परिमाण, पत्थर का टुकड़ा।

टसक–(हिं० स्त्री०) ठहर-ठहरकर होने-वाली पीड़ा, टीस, चमक, पीड़ा।
टसकना–(हिं०क्रि०)हटना, टीस मारना।
टसकाना–(हिं० क्रि०) खिसकाना।
टसर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा रेशम।
टसुआ-(हिं० पुं०) अश्रु, आँसू।
टहकना–(हिं० क्रि०) ठहर ठहरकर पीड़ा होना।
टहना–(हिं०पुं०) वृक्ष की शाखा, डाल।
टहनी–(हिं० स्त्री०) वृक्ष की पतली डाली।
टहल–(हिं०स्त्री०) सेवा, शुश्रुषा, चाकरी।
टहलना–(हिं० क्रि०) धीरे-धीरे चलना।
टहलनी–(हिं० स्त्री०)दासी, नौकरानी।
टहलाना–(हिं०क्रि०)धीरे-धीरे चलाना।
टहलुआ–(हिं० पुं०) सेवक, चाकर।
टहलुई–(हिं० स्त्री०) दासी, लौंडी।
टहलू–(हिं० पुं०) नौकर, सेवक।
टही–(हिं० स्त्री०) प्रयोजन सिद्ध करने की युक्ति।
टहूका–(हिं० पुं०) पहेली, चुटकुला।
टहोका–(हिं० पुं०) धक्का, झटका।
टाँक–(हिं० स्त्री०) चार माशे की तौल, लिखावट, लेखनी की नोक, जाँच।
टाँकना–(हिं० क्रि०) सिलाई करके जोड़ना, याद करने के लिये लिख लेना, चट कर जाना, उड़ा जाना।
टाँका–(हिं० पुं०) जोड़ मिलाने का काँटा या कील, सिलाई का अलग अलग भाग, डोभ, वह मसाला जिससे धातु जोड़ा जाता है, पानी रखने का खुले मुंह का बड़ा पात्र।
टाँकाटक–(हिं० वि०) जो तौलने में ठीक-ठीक हो।
टाँकी–(हिं० स्त्री०) पत्थर गढने की छेनी

टाँग–(हिं० स्त्री०) जांघ से लेकर एँड़ी तक का अंग।
टाँगन–(हिं० पुं०) छोटा घोड़ा, टट्टू।
टाँगना–(हिं०क्रि०)लटकाना,फाँसी देना।
टाँगा–(हिं० पुं०) बड़ी कुल्हाड़ी, बैल या घोड़े से खींची जानेवाली एक प्रकार की दो पहियावाली गाड़ी।
टाँगी–(हिं०स्त्री०)छोटा गँड़ासा,कुल्हाड़ी
टाँच–(हिं० स्त्री०) दूसरे का काम बिगड़ने की बात। टाँचना–(हिं०क्रि०) टाँकना, सीना, काटना, छाँटना।
टाँठ, टाँठा–(हिं० वि०) हृष्ट-पुष्ट।
टाँड़–(हिं० स्त्री०) सामग्री रखने की पाटन, स्त्रियों का बाँह में पहिनने का एक आभूषण, ढेर, राशि।
टाँय-टाँय–(हिं०स्त्री०)अप्रिय शब्द, टें टें।
टाट–(हिं० पुं०) सन या पटुवे का बना हुआ मोटा कपड़ा, बिरादरी, साहूकार के बैठने की गद्दी।
टाटिक, टाटी–(हिं०स्त्री०) देखो टट्टी।
टान–(हिं० स्त्री०) फैलाव, तनाव।
टानना–(हिं० क्रि०) खींचना, तानना।
टाप–(हिं०पुं०)घोड़े के पैर का निचला भाग, वह शब्द जो चलते समय घोड़े के पैर से उत्पन्न होता है।
टापड़–(हिं० पुं०) ऊसर मैदान।
टापदार–(हिं० वि०) जिसका ऊपरी या नीचे का भाग फैला हुआ हो।
टापना–(हिं० क्रि०)निराहार पड़े रहना, पछताना।
टापा–(हिं० पुं०) टप्पा, उजाड़ मैदान।
टापू–(हिं० पुं०) वह भूमिखण्ड जो चारों ओर पानी से घिरा हो, द्वीप।
टाबर–(हिं०पुं०)लड़का,बालक, छोकरा।
टामक–(हिं० पुं०) डिमडिम, डुगडुगी।
टाल–(हिं० स्त्री०) बड़ी राशि, ऊँचा

ढेर, कुटना, दलाल। टालटूल–(हिं० स्त्री०) देखो टालमटूल।
टालना–(हिं० क्रि०) न मानना, समय व्यतीत करना, तरह देना, बचा जाना, हटाना, सरकाना, दूर करना, मिटाना।
टालमटूल–(हिं० पुं०) मिस, बहाना।
टाली–(हिं० स्त्री०) आधे रुपये का सिक्का, अठन्नी।
टिकटिक–(हिं० स्त्री०) घोड़ा हाँकते समय मुख से किया हुआ शब्द, घड़ी के चलने से उत्पन्न शब्द।
टिकटी–(हिं० स्त्री०) लकड़ी का बना हुआ ढाँचा जिसमें बाँधकर अपराधी को बेंत लगाई जाती है, अथवा गले में फाँसी का फन्दा बाँधा जाता है।
टिकड़ा–(हिं०पुं०) किसी वस्तु का गोल चिपटा टुकड़ा, आँच पर सेंकी हुई मोटी रोटी, बाटी। टिकड़ी–(हिं० स्त्री०) छोटा गोल टुकड़ा।
टिकना–(हिं० क्रि०) डेरा देना।
टिकरी–(हिं० स्त्री०) टिकिया, एक प्रकार का नमकीन पकवान। टिकली–(हिं०स्त्री०) छोटी टिकिया, छोटी बिन्दी।
टिकस–(हिं० पुं०) कर, महसूल।
टिकाई–(हिं० स्त्री०) टिकने का भाव।
टिकाऊ–(हिं० वि०) टिकनेवाला।
टिकान–(हिं० पुं०) टिकने का स्थान, चट्टी, पड़ाव। टिकाना–(हिं० क्रि०) रहने के लिये स्थान देना। टिकानी–(हिं० स्त्री०) टिकाव। टिकाव–(हिं० पुं०) पड़ाव।
टिकिया–(हिं० स्त्री०) छोटा गोल टुकड़ा, एक प्रकार की गोल चिपटी मिठाई।
टिकुली–(हिं० स्त्री०) देखो टिकली।
टिक्कड़–(हिं०पुं०) मोटी रोटी, लिट्टी।
टिक्का–(हिं० पुं०) देखो टीका।
टिक्की–(हिं० स्त्री०) टिकिया, लिट्टी, बाटी, बिंदी, ताश की बूटी।
टिखटिख–(हिं० स्त्री०) देखो टिकटिक।
टिघलना–(हिं०क्रि०) गलना, पिघलना, लाना।
टिचन–(हिं० वि०) प्रस्तुत, उद्यत।
टिटकारना–(हिं०क्रि०) टिकटिक करके किसी पशु को हाँकना।
टिड्डी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो दल बाँधकर चलता है, पेड़ की पत्ती को खाता और कृषि को हानि पहुँचाता है।
टिढ़बिड़ंगा, टिढ़बिगा–(हिं०वि०) टेढ़ा-मेढ़ा।
टिपका–(हिं० पुं०) पानी का बूंद।
टिपटिप–(हिं०स्त्री०) बूंद-बूंद कर पानी गिरने का शब्द।
टिपवाना–(हिं० क्रि०) पिटवाना।
टिपुर–(हिं० पुं०) अभिमान, घमंड।
टिप्पणी–(हिं० स्त्री०) देखो टिप्पनी।
टिप्पन–(सं० पुं०) टीका, व्याख्या।
टिप्पनी–(सं० स्त्री०) व्याख्या, टीका।
टिप्पी–(हिं०स्त्री०) वह चिह्न जो अँगुली में रंग पोतकर बनाया जाता है।
टिमटिमाना–(हिं० क्रि०) कम प्रकाश देना, मन्द-मन्द जलना।
टिर–(हिं० स्त्री०) देखो टर।
टिरफिस–(हिं०स्त्री०) प्रतिवाद, विरोध।
टिर्राना–(हिं० क्रि०) देखो टर्राना।
टिल्ला–(हिं० पुं०) धक्का, ठोकर, चोट।
टिसुआ–(हिं० पुं०) अश्रु, आँसू।
टिहुक–(हिं० स्त्री०) चमक।
टिहुकना–(हिं०क्रि०) ठिठकना, चौंकना।
टिहुनी–(हिं० स्त्री०) घुटना, कोहनी।
टीक–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के गले में पहिनने का एक आभूषण।

टीकन–(हिं० पुं०) टाँड़, खंभा।

टीका–(हिं० पुं०) तिलक, आधिपत्य का चिह्न, वह भेंट जो असामी राजा को देता है, धब्बा, चिह्न, किसी रोग से बचने के लिये उसी रोग का रस लेकर शरीर में सूई से प्रवेश कराना, विवाह-संबंध स्थिर करने के लिये वर के मस्तक पर तिलक लगाने तथा कुछ धन आदि देने की प्रथा; (सं० स्त्री०) व्याख्या, ग्रन्थ।

टीकाकार–(सं० पुं०) व्याख्याकार।

टीप–(हिं०स्त्री०) हलका प्रहार, स्मरण रखने के लिये किसी बात को टाँक लेने की क्रिया। **टीपटाप**–(हिं० स्त्री०) आडंबर, ठाटबाट। **टीपना**–(हिं० क्रि०) अंकित करना, ऊँचे स्वर से गाना, प्रहार करना।

टीमटाम–(हिं० स्त्री०) शृंगार, सजावट, तड़क-भड़क, पाखण्ड।

टीला–(हिं०पुं०) पृथ्वी के तल से ऊँचा भाग, भीटा, छोटी पहाड़ी।

टीस–(हिं० स्त्री०) ठहर-ठहरकर होनेवाली शरीर की पीड़ा, चमक।

टीसना–(हिं० क्रि०) ठहर-ठहरकर पीड़ा होना।

टुंगना–(हिं०क्रि०) कोमल पत्तियों को दाँत से कुतरकर खाना, कुतरना।

टुंच–(हिं० वि०) क्षुद्र, नीच, तुच्छ।

टुंटा–(हिं०वि०) बिना हाथवाला, लूला।

टुंड–(हिं० पुं०) वह वृक्ष जिसकी शाखा कट गई हो, ठूंठ, लूला।

टुंडा–(हिं० वि०) ठूंठा, लूला, लूंजा।

टुंडी–(हिं० स्त्री०) बाहुदण्ड, भुजा।

टुंइयाँ–(हिं०स्त्री०) छोटी जात का सुग्गा, सुग्गी; (वि०) नाटा, बौना।

टुक–(हिं०वि०) किञ्चित्, तनिक, थोड़ा।

टुकड़गदा–(हिं० पुं०) भिखारी। (वि०) निर्धन, कंगाल।

टुकड़तोड़–(हिं० पुं०) पराश्रित मनुष्य।

टुकड़ा–(हिं० पुं०) काटा हुआ अंश, खण्ड, भाग, ग्रास।

टुघलाना–(हिं० क्रि०) चुभलाना।

टुच्चा–(हिं० वि०) तुच्छ, नीच, ओछा।

टुटका–(हिं० पुं०) देखो टोटका।

टुटपुंजिया–(हिं०वि०) थोड़ी पूंजी का।

टुड़ी–(हिं० स्त्री०) नाभि, ढोंढी।

टुनगा–(हिं० पुं०) डाल के आगे का भाग। **टुनगी**–(हिं० स्त्री०) टहनी का अगला भाग जिसकी पत्तियाँ छोटी होती हैं।

टुनहाया–(हिं०वि०) जादू-टोना करनेवाला।

टुन्ना–(हिं०पुं०) वृक्ष की वह डाल जिसमें फल लगता है।

टुपकना–(हिं०क्रि०) धीरे से काटना या डंक मारना, चुगली खाना।

टुर्रा–(हिं० पुं०) कण, टुकड़ा।

टुसकना–(हिं० क्रि०) देखो टसकना।

टूंगना–(हिं०क्रि०) थोड़ा-थोड़ा करके खाना।

टूंड़–(हिं०पुं०) नुकीला अवयव, सींग।

टूंड़ी–(हिं०स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी, नोक।

टूक–(हिं० पुं०) टुकड़ा, खण्ड।

टूकरा–(हिं० पुं०) खण्ड, टुकड़ा।

टूका–(हिं०स्त्री०) खण्ड, टुकड़ा, भूल।

टूट–(हिं० पुं०) घाटा, टोटा। **टूटना**–(हिं०क्रि०) टुकड़े-टुकड़े होना, आक्रमण करना, अलग होना, टोटा होना।

टूटा–(हिं०वि०) खण्डित, भग्न, निर्धन।

टूठना–(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट होना।

टूठनि–(हिं० स्त्री०) सन्तोष, तुष्टि।

टूम–(हिं०स्त्री०) आभूषण, गहना, व्यंग, ताना। **टूमटाम**–वस्त्र तथा गहना।

टूमना–(हिं० क्रि०) ताना मारना।
टूसा–(हिं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा, कली।
टूसी–(हिं० स्त्री०) फूल की कली।
टें–(हिं० स्त्री०) सुग्गे की बोली। टें टें करना–वृथा की बकवाद करना। टें बोलना–मर जाना।
टेंघुना–(हिं० पुं०) घुटना। टेंघुनी–(हिं० स्त्री०) घुटने पर की चक्की।
टेंट–(हिं० स्त्री०) कमर पर लपेटी हुई धोती की ऐंठन, कपास की ढोढ़ी।
टेंटड़, टेंटर–(हिं० पुं०) आँख के ढेले का उभड़ा हुआ भाग।
टेंटुवा–(हिं० पुं०) गला, घेंटू।
टेंटें–(हिं० स्त्री०) व्यर्थ की बकवाद।
टेउकी–(हिं०स्त्री०) आड़, रोक, ओट।
टेक–(हिं०स्त्री०) खंभा, आश्रय, सहारा, थनी, चाँड़, हठ, अभ्यास, ऊँचा टीला।
टेकन–(हिं० क्रि०) अटक, रोक, चाँड़।
टेकना–(हिं० क्रि०) सहारा लेना।
टेकान–(हिं० पुं०) टेक, चाँड़, खंभा।
टेकाना–(हिं० क्रि०) सहारा देने के लिए थामना। टेकानी–(हिं० पुं०) वह लोहे की कील जो पहिये को रोकने के लिये लगायी रहती है।
टेकी–(हिं० पुं०) अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहनवाला मनुष्य; (वि०) हठी।
टेकुआ–(हिं० पुं०) कते हुए सूत को लपेटने की चरखे की तकली।
टेकुरी–(हिं०स्त्री०) सूत कातने की तकली
टेघरना–(हिं०क्रि०) पिघलना, गलना।
टेड़–(हिं० पुं०) वक्रता, टढ़ापन, ऐंठन
टेढ़ बिड़ंगा–(हिं० वि०) टेढ़ा मेढ़ा।
टेढ़ा–(हिं०वि०) वक्र, कुटिल, तिरछा, पेचीला, कठिन। टेढ़ी खीर–कठिन कार्य।
टेढ़ई, टेढ़ाई–(हिं० स्त्री०) टेढ़ापन।
टेढ़ा–(हिं० क्रि०वि०) पेचीले तरह से।
टेना–(हिं० क्रि०) शस्त्र को पैना करने के लिये पत्थर आदि पर रगड़ना, मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिये ऐंठना।
टेनी–(हिं० स्त्री०) छोटी अँगुली।
टेम–(हिं०स्त्री०) दीपक की ज्योति, लौ।
टेर–(हिं० स्त्री०) गान में ऊँचा स्वर, तान, पुकारने का शब्द, बुलाहट।
टेरना–(हिं० क्रि०) तान लगाना, पूरा करना, निबाहना।
टेव–(हिं० स्त्री०) अभ्यास, बान।
टेवना–(हिं० क्रि०) देखो टेना।
टेवा–(हिं० पुं०) वह लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति, दिन, घटी, पल आदि लिखी रहती है।
टेसू–(हिं० पुं०) पलाश का फूल।
टोई–(हिं० स्त्री०) अँगुली का पोर।
टोंका–(हिं० पुं०) किनारा, नोक।
टोंगा–(हिं० पुं०) देखो टाँगा।
टोंचना–(हिं०क्रि०) चुभाना, गड़ाना।
टोंटी–(हिं० स्त्री०) झारी में लगी हुई नली, पशुओं का थूथुन।
टोक–(हिं० स्त्री०) प्रश्न करके किसी बात में बाधा डालना, बुरी दृष्टि का प्रभाव। टोकटाक–पूछताछ करके बाधा डालना। टोकना–(हिं० क्रि०) बीच में बोल उठना, बुरी दृष्टि डालना।
टोकरा–(हिं०पुं०) खाँचा, झाबा, डला।
टोकरी–(हिं०स्त्री०) छोटा डला, झाँपी।
टोकारा–(हिं० पुं०) स्मरण दिलाने के लिये कही हुई कोई बात।
टोटका–(हिं० पुं०) तान्त्रिक प्रयोग, मन्त्र, टोना, लटका।
टोटा–(हिं० पुं०) बाँस का खण्ड, घाटा, हानि।
टोनहा–(हिं०वि०) जादू टोना करनेवाला।

टोनहाई–(हिं०स्त्री०) जादू टोना करनेवाली स्त्री। टोना–(हिं० पुं०) मन्त्र तन्त्र का प्रयोग; (क्रि०) छूना, हाथ से टटोलना।

टोप–(हिं० पुं०) बड़ी टोपी।

टोपन–(हिं० पुं०) टोकरा, खाँचा।

टोपा–(हिं० पुं०) बड़ी टोपी जो कान तक ढाँपने के लिये पहनी जाती है, टोकरा

टोपी–(हिं० स्त्री०) सिर पर का पहनावा।

टोभ–(हिं० पुं०) टाँका।

टोरना–(हिं० क्रि०) अलगाना, तोड़ना। आँख टोरना–लज्जावश आँख छिपा लेना

टोरा–(हिं० पुं०) तौलने का तराजू।

टोर्रा–(हिं० पुं०) छिलका-सहित अरहर का खड़ा दाना जो दाल में रह जाता है।

टोरू–(हिं० पुं०) देखो टोर्रा।

टोल–(हिं० स्त्री०) समूह, मण्डली, जत्था, झुंड, चटसाल।

टोला–(हिं० पुं०) महल्ला। टोलिया–(हिं० स्त्री०) छोटा मोहल्ला, टोली।

टोली–(हिं० स्त्री०) बस्ती का छोटा भाग, समूह, झुंड, मंडली, जत्था।

टोवना–(हिं० क्रि०) टोना, टटोलना।

टोवा–(हिं० पुं०) पानी की गहराई नापनेवाला माँझी।

टोह–(हिं० स्त्री०) अन्वेषण, खोज, ढूँढ़।

टोहना–(हिं० क्रि०) खोजना, पता लगाना। टोहाटाई–(हिं० स्त्री०) अन्वेषण, छानबीन। टोहिया–(हिं० पुं०) भेदिया, जासूस।

टौरना–(हिं० क्रि०) पता लगाना।

ठ

ठ–संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर, टवर्ग का द्वितीय वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।

ठ–(सं० पुं०) शिव, चन्द्रमण्डल, शून्य।

ठंठ–(हिं० वि०) ठूंठा, सूखा, परिवारशून्य।

ठंठनाना–(हिं० क्रि०) ठनठन शब्द होना या करना।

ठंठार–(हिं०वि०) रिक्त, छूछा, खाली।

ठंठी–(हिं०स्त्री०) दाना पीटने के बाद बालों में लगा हुआ अनाज।

ठंठपाल–(हिं० वि०) निर्धन, धनहीन।

ठंड, ठंडक–(हिं०स्त्री०) देखो ठंढ, ठंढक।

ठंडा–(हिं०वि०) देखो ठंढा।

ठंढ–(हिं० स्त्री०) शीत, जाड़ा ठंढक।

ठंढई–(हिं० स्त्री०) शरीर में ठंढक पहुँचानेवाले पदार्थ, भाँग। ठंढक–(हिं० स्त्री०) जाड़ा, तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता। ठंढा–(हिं० वि०) शीतल, उत्साहहीन, नपुंसक, मन्द, उदासीन, धीमा, निश्चेष्ट, जड़, मरा हुआ।

ठंढाई–(हिं० स्त्री०) देखो ठंढई।

ठंढी–(हिं० वि०) शीतल; (स्त्री०) शीतला रोग, चेचक।

ठई–(हिं०वि०) स्थिर की हुई, ठहराई हुई

ठक–(हिं०स्त्री०) दो वस्तुओं के परस्पर टकराने का शब्द; (वि०) स्तब्ध।

ठकठक–(हिं० स्त्री०) प्रपंच, झंझट, झगड़ा। ठकठकाना–(हिं० क्रि०) ठोंकना, पीटना, खटखटाना।

ठकठकिया–(हिं० वि०) बखेड़िया, झगड़ालू।

ठकार–(सं०पुं०) "ठ" स्वरूप वर्ण।

ठकुरसुहाती–(हिं०स्त्री०) चाटूक्ति।

ठकुराइन–(हिं० स्त्री०) ठाकुर की स्त्री, स्वामिनी, मालकिन। ठकुराई–(हिं० स्त्री०) आधिपत्य, महत्व, श्रेष्ठता।

ठकुरानी–(हिं०स्त्री०) ठाकुर की स्त्री, सरदारिन, रानी, स्वामिनी।

ठकोरी–(हिं० स्त्री०) साधुओं की कमर टेकने की (ɪ) के आकार की लकड़ी।
ठक्कर–(हिं० स्त्री०) टक्कर।
ठग–(हिं० पुं०) डाकू, छली, चंचल। ठगई–(हिं० स्त्री०) ठगों का कार्य, छल, धूर्तता।
ठगना–(हिं० क्रि०) धूर्तता करना, छलना, धोखा देना। **ठगा-सा**–भौंचक्का। ठगनी–(हिं० स्त्री०) ठग की स्त्री, धूर्त स्त्री। **ठगपन, ठगपना**–(हिं० पुं०) कपट, छल, धूर्तता। **ठगमूरी**–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की विषैली जड़ी-बूटी जिसको खिलाकर ठग लोग पथिकों को अचेत करके लूटते थे।
ठगाना–(हिं० क्रि०) धोखे में आ जाना, ठगा जाना। **ठगिन, ठगिनी**–(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जो दूसरे को धोखा देकर उसका धन लूटती है, लुटेरिन।
ठगिया–(हिं० पुं०) धूर्त, छली, वंचक।
ठगी–(हिं० स्त्री०) ठग का काम, धूर्तता।
ठगोरी–(हिं० स्त्री०) जादू टोना।
ठट–(हिं० पुं०) भीड़, झुंड, समूह, पंक्ति। **ठटकीला**–ठाठदार, तड़क-भड़क वाला।
ठटना–(हिं० क्रि०) स्थिर करना, ठहराना, सुसज्जित करना।
ठटनि–(हिं० स्त्री०) आडंबर, सजावट।
ठटरी–(हिं० स्त्री०) अस्थिपंजर, किसी वस्तु का ढांचा।
ठट्ठ–(हिं० पुं०) ठाटबाट, सजावट, शृंगार।
ठट्ट–(हिं० पुं०) समुदाय, समूह, झुंड।
ठट्ठई–(हिं० स्त्री०) हँसी, उपहास।
ठट्टा–(हिं० पुं०) उपहास।
ठठ–(हिं० पुं०) झुंड, जमावड़ा, समूह।
ठठई–(हिं० स्त्री०) उपहास।
ठठक–(हिं० स्त्री०) अवरोध, रुकावट।
ठठकना–(हिं० क्रि०) सहसा रुकना या भौंचक रह जाना। **ठठकान**–(हिं० स्त्री०) रुकावट।
ठठरी–(हिं० स्त्री०) देखो ठटरी।
ठठरा–(हिं० पुं०) टट्टर, ओट।
ठठाई–(हिं० स्त्री०) मारपीट, ठोकाई।
ठठाना–(हिं० क्रि०) पीटना, ठोंकना।
ठठरिन–(हिं० स्त्री०) देखो ठठेरिन।
ठठेरा–(हिं० पुं०) कसेरा।
ठठेरिन–(हिं० स्त्री०) ठठेरे की स्त्री।
ठठरी–(हिं० पुं०) ठठेरे का काम।
ठठोल–(हिं० पुं०) हँसी, उपहास।
ठठोलिया–(हिं० पुं०) ठट्ठेबाज।
ठड़कना–(हिं० क्रि०) ठठकना।
ठड़ा–(हिं० वि०) खड़ा हुआ।
ठढा–(हिं० वि०) लंबमान, खड़ा हुआ।
ठढिया–(हिं० स्त्री०) काठ की ऊँची ओखरी जिसमें धान खड़े होकर कूटा जाता है। **ठढियाना**–(हिं० क्रि०) खड़ा होना।
ठन–(हिं० स्त्री०) धातु के किसी पदार्थ पर आघात का शब्द। **ठनक**-(हिं० स्त्री०) ढोल, मृदंग आदि की ध्वनि, ठहर-ठहरकर पीड़ा, टीस। **ठनकना**-(हिं० क्रि०) ठन-ठन शब्द होना। टीसना। **ठनका**–(हिं० पुं०) धातु के टुकड़े पर चोट पड़ने का शब्द, आघात।
ठनकाना–(हिं० क्रि०) शब्द उत्पन्न करना, बजाना, रुपये को बजाकर परख करना। **ठनकार**–(हिं० पुं०) ध्वनि, शब्द।
ठनगन–(हिं० पुं०) अड़, हठ, मचलाहट
ठनठन–(हिं० पुं०) धातु-खण्ड के बजने का शब्द। **ठनठन गोपाल**–(हिं० पुं०) निर्धन मनुष्य। **ठनठनाना**–(हिं० क्रि०) ठनठन शब्द निकालना ठनठन शब्द होना।

ठनना–(हिं० क्रि०) दृढ़ संकल्प से किसी कार्य को आरम्भ करना, पक्का होना, उद्यत होना, लगना, निश्चित होना।
ठनाका–(हिं० पुं०) ठनकार। ठनाठन–(हिं० क्रि० वि०) ठनठन शब्द करते हुए।
ठपका–(हिं०पुं०) ठोकर, आघात, धक्का।
ठपना–(हिं०क्रि०) प्रयुक्त करना, लगाना, लगना, निश्चित करना, पक्का करना।
ठप्पा–(हिं० पुं०) साँचा, छापा।
ठमक–(हिं० स्त्री०) रुकावट, ठहराव, लचक की चाल। ठमकना–(हिं० क्रि०) रुकना, ठहरना, ठिठकना। ठमकाना, ठमकारना–(हिं० क्रि०) ठहराना, रोकना।
ठयना–(हिं०क्रि०) स्थिर करना, ठानना, स्थापित करना, नियुक्त करना, जमना, लगना।
ठरन–(हिं० स्त्री०) ठिठुरन, अधिक जाड़ा। ठरना–(हिं० क्रि०) ठिठुरना, अधिक ठंढ पड़ना।
ठरमराना–(हिं० क्रि०) ठंढ से सिकुड़ जाना।
ठर्रा–(हिं० पुं०) बटा हुआ मोटा सूत, अधपकी ईंट।
ठवना–(हिं० क्रि०) गिराना।
ठवनी–(हिं० स्त्री०) बैठने का ढंग, मुद्रा, स्थिति।
ठवर–(हिं० पुं०) ठौर, स्थान, जगह।
ठस–(हिं०वि०) कड़ा, ठोस, दृढ़, सुस्त, मट्ठर, कृपण, खोटा (रुपया)।
ठसक–(हिं०स्त्री०) गर्व, अहंकार, ऐंठन।
ठसकना–(हिं०क्रि०) टूटना, पटकना।
ठसका–(हिं०पुं०) सूखी खाँसी, धक्का, ठोकर।
ठसनी–(हिं०स्त्री०) ठूसने का गज या छड़।
ठसमस, ठसाठस–(हिं० वि०) ठूँस कर भरा हुआ।
ठस्सा–(हिं० पुं०) ठसक, अहंकार।
ठहक–(हिं० स्त्री०) नगाड़े की ध्वनि।
ठहना–(हिं० क्रि०) सँवारना, बनाना।
ठहर–(हिं०पुं०) ठौर, स्थान। ठहरना–(हिं० क्रि०) रुकना, टिकना, डेरा डालना, टिके रहना, प्रतीक्षा करना, थिराना, आसरा देखना।
ठहराई–(हिं०क्रि०) ठहरने की क्रिया या मजदूरी। ठहराऊ–(हिं० वि०) टिकाऊ। ठहराना–(हिं० क्रि०) टिकाना, डेरा देना, स्थिर करना, मूल्य स्थिर करना। ठहराई–(हिं० पुं०) स्थिरता, दृढ़ विचार।
ठहाका–(हिं०पुं०) अट्टहास, जोर की हँसी।
ठहियाँ–(हिं० स्त्री०) ठाँव, ठिकाना।
ठाँई–(हिं० पुं०) स्थान; (क्रि० वि०) निकट, पास, प्रति, तईं।
ठाउँ–(हिं०पुं०) ठिकाना, ठाँव; (क्रि० वि०) समीप, पास, निकट।
ठाँठ–(हिं०वि०) शुष्क, रसहीन, नीरस, दूध न देनेवाली (गाय, भैंस आदि)।
ठाँठर–(हिं० पुं०) ठठरी।
ठाँयँ–(हिं०स्त्री०) ठौर, स्थान, ठिकाना, बंदूक छूटने का शब्द।
ठाँयँ-ठाँयँ-(हिं०स्त्री) वाक्युद्ध, कलह, झगड़ा
ठाँव–(हिं०पुं०) ठिकाना, जगह।
ठाँसना–(हिं०क्रि०) दबा-दबाकर भरना, मना करना, ठनठन शब्द करते हुए खाँसना
ठाकुर–(हिं० पुं०) देवता की मूर्ति, परमेश्वर, पूज्य व्यक्ति, स्वामी, सरदार। ठाकुरद्वारा–(हिं० पुं०) देवस्थान। ठाकुरबाड़ी–(हिं०स्त्री०) देवालय, मन्दिर। ठाकुरसेवा–(हिं०स्त्री०) किसी देवता का पूजन।

ठाट–(हि०पुं०) ढाँचा, ठठरी, शृंगार, वेश, आडंबर, दिखावट, ढंग, सामग्री, उपाय, समूह, झुंड।
ठाटना–(हिं० क्रि०) निर्माण करना, बनाना, साजना।
ठाटबाट–(हिं० पुं०) शोभा, सजावट, शृंगार, तड़क-भड़क, आडम्बर।
ठाटर–(हिं० पुं०) टट्टी, ढाँचा, टट्टर, शृंगार।
ठाठ–(हि० पुं०) देखो ठाट।
ठाड़ा–(हिं०वि०) खड़ा, सीधा, खड़े बल का।
ठाढ़, ठाढ़ा–(हि० वि०) दंडायमान, सीधा, खड़ा, समूचा।
ठान–(हिं०स्त्री०) दृढ़ संकल्प, आयोजन, हठ।
ठानना–(हिं०क्रि०) स्थिर करना, ठहराना, चित्त में कोई विचार स्थिर करना।
ठाना–(हिं० क्रि०) निश्चित करना, स्थापित करना।
ठाम–(हिं० पुं० स्त्री०) थान, ठाँव।
ठार–(हि० पुं०) जाड़ा, पाला, हिम्।
ठाला–(हिं० पुं०) काम-काज न रहना; (वि०) व्यवसायहीन।
ठाला–(हि० वि०) रिक्त, निठल्ला।
ठावँ–(हि० स्त्री०) स्थान, जगह।
ठाहर–(हिं०स्त्री०) स्थान, डेरा, टिकान।
ठिगना–(हि० वि०) छोटे डील-डौल का, नाटा।
ठिकड़ा–(हि०पुं०) ठीकरा।
ठिकना–(हि० क्रि०) रुकना, अड़ना।
ठिकरा–(हिं०पुं०) देखो ठीकड़ा।
ठिकरी–(हिं०स्त्री०) मिट्टी के पात्र का छोटा खंड।
ठिकान–(हिं० पुं०) ठिकाना, पता।
ठिकाना–(हिं० पुं०) निवास-स्थान, आश्रय-स्थान, ठौर, सीमा, निश्चय।
ठिठक–(हि० पु०) घबड़ाहट।
ठिठकना–(हि० क्रि०) ठमकना, स्तब्ध होना।
ठिठरना–(हि० क्रि०) ठंढ के कारण अकड़ना या सिकुड़ना।
ठिठुरन–(हिं० स्त्री०) अधिक ठंढ के कारण अकड़ या सिकुड़न।
ठिठुरा–(हि०वि०) पाले से जकड़ा हुआ।
ठिठोलिया–(हि० वि०) उपहासी।
ठिठोली–(हि० स्त्री०) हँसी।
ठिनकना–(हि०स्त्री०) छोटे बालकों का ठहर-ठहरकर रोना।
ठिर–(हिं० स्त्री०) गहरी ठंढ।
ठिरना–(हिं०क्रि०) ठंढ पड़ना, ठिठुरना।
ठिलना–(हि० क्रि०) ढकेला जाना, धँसना, जमना।
ठिलवा–(हि० पुं०) मिट्टी का घड़ा।
ठिलिया–(हि० स्त्री०) मिट्टी की छोटी गगरी, मटकी।
ठिलुया–(हिं०वि०) निकम्मा, निठल्ला।
ठिल्ला–(हि० पुं०) घड़ा, मगरा।
ठिल्ली–(हिं० स्त्री०) छोटी गगरी।
ठीक–(हिं० वि०) युक्त, यथोचित, प्रामाणिक, उचित, निश्चित, शुद्ध, निर्दिष्ट, पक्का, स्थिर। **ठीकठीक**–(हिं० क्रि० वि०) उचित रीति से, अच्छी तरह से; (हिं० पुं०) व्यवस्था, उचित प्रबन्ध; (वि०) प्रस्तुत।
ठीकड़ा, ठीकरा–(हिं० पुं०) मिट्टी के पात्र का टूटा-फूटा अंश। **ठीकरी**–(हि० स्त्री०) टूटे हुए मिट्टी के बरतन का छोटा टुकड़ा।
ठीका–(हिं० पुं०) किसी व्यक्ति को किसी निर्धारित समय में कोई काम पूरा करने के लिये उत्तरदायी बनाना।
ठीकेदार–(हिं० पुं०) ठीका लेनेवाला

मनुष्य । ठीकेदारिन–(हि० स्त्री०) ठीकेदार की स्त्री ।
ठीठी –(हि० स्त्री०) हँसी का शब्द ।
ठीलना–(हि० क्रि०) ठेलना, ढकेलना ।
ठीवन–(हि० पुं०) थूक, खखार ।
ठीहा–(हि० पुं०) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिस पर रखकर कसेरा, बढ़ई, सोनार आदि पिटने से ठोंकने आदि का काम करते हैं, बैठने के लिये ऊँचा किया हुआ स्थान, सीमा, गद्दी, हद ।
ठुंठ –(हि० पुं०) वृक्षस्तंभ ।
ठुकना–(हि०क्रि०) आघात सहना, पीटा जाना, गड़ना, दबना ।
ठुकराना–(हि० क्रि०) ठोकर मारना, तिरस्कार करना, उपेक्षा करना ।
ठुकवाना (हि० क्रि०) पिटवाना ।
ठुड्डी, ठुड्ढी–(हि० पुं०) चिबुक, निचले ओंठ की जड़, दाढ़ी, ठोर्री ।
ठुनकना–(हि०क्रि०) ठुनुकना, अँगुली से ठोंक लगाना ।
ठुनक–(हि०स्त्री०) सुसकी; ठुनकाना–(हि० क्रि०) अँगुली से धीरे धीरे चोट पहुँचाना ।
ठुनठुन–(हि०पुं०) बच्चों के रोने का शब्द
ठुमक–(हि०पुं०) बच्चे की उछल-कूद की गति, ठसक । ठुमकना–(हि०क्रि०) कूदते हुए चलना ।
ठुमका–(हि०वि०) नाटा, ठिगना; (हि० पुं०) पतंग (गुड्डी) की डोर में झटका देना; ठुमकारना–(हि० क्रि०) गुड्डी की डोरी में झटका देना; ठुमकी–(हि० स्त्री०) थपका, झटका ।
ठुमरी–(हि०स्त्री०) दो बोलका छोटा गीत
ठुर्री–(हि०स्त्री०) बिना छिलका उतारा हुआ भूना दाना ।
ठुरियाना–(हि० क्रि०) सिकुड़ना ।
ठुसकना–(हि०क्रि०) ठिनककर रोना ।
ठुसना–(हि०क्रि०) कसकर प्रवेश होना या भरा जाना । ठुसवाना–(हि०क्रि०) कसकर घुसवाना । ठुसाना–(हि० क्रि०) भरवाना, कसाना ।
ठूँठ–(हि० पुं०) शाखा तथा पत्रहीन वृक्ष, कटा हुआ हाथ ।
ठूँठा–(हि० वि०) बिना शाखा और पत्तियों का वृक्ष, लूला । ठूँठिया–(हि० वि०) लूला, लँगड़ा ।
ठूँठी–(हि०स्त्री०) अरहर, बाजरा आदि को जड़ से काटने पर बची हुई खूँटी ।
ठूँसना–(हि० क्रि०) ठूसना, घुसाना ।
ठेउना–(हि० पुं०) ठेहना, घुटना ।
ठेंगना–(हि०वि०) छोटे डील का, नाटा ।
ठेंगा–(हि० पुं०) अंगूठा ।
ठेंठी–(हि० स्त्री०) कान की मैल ।
ठेंपी–(हि० स्त्री०) ढपनी, ढेंपी ।
ठेक–(हि० स्त्री०) सहारा, टेक, चाँड़ ।
ठेकना–(हि०क्रि०) टेकना, सहारा लेना ।
ठेका–(हि० पुं०) देखो ठीका, अड्डा । ठेक, बैठक, तबले का बायाँ पट्टा ।
ठेकाना–(हि० पुं०) निवास-स्थान ।
ठेगना–(हि० क्रि०) सहारा लेना, सहारा लेने की लकड़ी ।
ठेठ–(हि०वि०) बिना मेल का, स्वाभाविक; (स्त्री०) सीधी-सादी बोली जिसमें साहित्यिक शब्दों का प्रयोग न हो ।
ठेपी–(हि० स्त्री०) बोतल, शीशी आदि का मुंह बन्द करने का डट्टा ।
ठेलना–(हि० क्रि०) ढकेलना, रेलना ।
ठेला–(हि० पुं०) टक्कर, धक्का, एक प्रकार की गाड़ी जिसको आदमी ठेलकर चलाते हैं । ठेलाठेल, ठेलाठेली–(हि० पुं० स्त्री०) धक्कम-धक्का ।

ठेवकी–(हिं० स्त्री०) ओट।
ठेवना–(हिं० पुं०) जानु, घुटना।
ठेस–(हिं० स्त्री०) आघात, ठोकर, चोट।
ठेसना–(हिं० क्रि०) ठूंसना।
ठेसरा–(हिं० वि०) अभिमानी, घमंडी।
ठेहरी–(हिं० स्त्री०) आश्रय, सहारा।
ठेहुना–(हिं० पुं०) देखो घुटना।
ठैनि–(हिं० स्त्री०) जगह, स्थान।
ठैयाँ–(हिं० स्त्री०) स्थान।
ठैरना, ठैराना–(हिं० क्रि०) देखो ठहरना, ठहराना।
ठैराई–(हिं० स्त्री०) देखो ठहराई।
ठैल–(हिं० स्त्री०) चोट, ठेंस।
ठोंक–(हिं० स्त्री०) आघात, प्रहार, चोट।
ठोंकना–(हिं० क्रि०) मारना, पीटना, थपथपाना।
ठोंकवा–(हिं० पुं०) मोटी पूड़ी।
ठोंग–(हिं० स्त्री०) चोंच की मार, अँगुलियों के पीछे की हड्डी की मार।
ठोंगना (हिं० क्रि०) चोंच से मारना।
ठोंठी (हिं० स्त्री०) फली, बोड़ी, कोष।
ठो–(हिं० अव्य०) संख्या, यह शब्द संख्यावाचक शब्दों के बाद प्रयुक्त होता है।
ठोकना–(हिं० क्रि०) देखो ठोंकना।
ठोकर–(हिं० स्त्री०) चोट लगना, ठेस, जूते का नुकीला भाग।
ठोकरा–(हिं० वि०) कठिन, कड़ा।
ठोकराना (हिं० क्रि०) जूते की नोक से प्रहार करना, स्वयं ठोकर खा जाना।
ठोकवा–(हिं० पुं०) देखो ठोंकवा।
ठोट–(हिं० वि०) निःसत्व, नीरस, मूर्ख।
ठोड़ी, ठोढ़ी–(हिं० स्त्री०) चिबुक, ठुड्डी,
ठोप–(हिं० पुं०) बिन्दु, बूंद।
ठोर–(हिं० पुं०) चंचु, चोंच, एक प्रकार का मीठा पकवान।
ठोस–(हिं० वि०) घन, पुष्ट, दृढ़।
ठोसा (हिं० पुं०) हाथ का अंगूठा, ठेंगा।
ठोहना–(हिं० क्रि०) पता लगाना।
ठौनि–(हिं० स्त्री०) स्थिति, स्थान, देखो ठवनि।
ठौर–(हिं० पुं०) ठिकाना, स्थान, अवसर, एक प्रकार का मीठा पकवान।

ड

ड–संस्कृत तथा देवनागरी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यंजन तथा टवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण मूर्धा से होता है।
ड–(सं० पुं०) शिव, शब्द, त्रास।
डंक–(हिं० पुं०) वह विषैला काँटा जो बिच्छू, मधुमक्खी आदि कीड़ों के पीछे की ओर रहता है, लेखनी की जीभी।
डंकना–(हिं० क्रि०) गरजना।
डंका–(हिं० पुं०) एक प्रकार का नगाड़ा।
डंकिनी–(हिं० स्त्री०) देखो डाकिनी।
डंगर–(हिं० पुं०) चौपाया।
डँटैया–(हिं० वि०) डाँटनेवाला।
डंठल–(हिं० पुं०), डंठी–(हिं० स्त्री०) पौधों की शाखा या पेड़ी।
डंड–(हिं० पुं०) लाठी, सोंटा, दंड, एक प्रकार का व्यायाम जो हाथ-पैर के पंजों के बल झुककर किया जाता है।
डंडक–(हिं० पुं०) देखो दण्डक।
डंडवारा–(हिं० पुं०) खुली हुई नीची भीत।
डंड़हारा–(हिं० स्त्री०) द्वार में ताला लगाने के लिये जड़ा हुआ लोहे या पीतल का सरकौवा डंडा।
डंडा–(हिं० पुं०) सोंटा, लाठी, मोटी छड़ी।
डंडाल–(हिं० पुं०) दुन्दुभी, नगाड़ा।

डँड़िया–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की साड़ी।
डँड़ियाना–(हि० क्रि०) दो कपड़ों की लंबाई के किनारों को एक में मिलाना।
डंडी–(हि० स्त्री०) छोटी पतली लंबी लकड़ी, किसी अस्त्र की मुठिया, तराजू की वह लकड़ी जिसमें रस्सियाँ लटकाकर पल्ले बँधे रहते हैं, डंठल, नाल, लंबा भाग, वह संन्यासी जो दण्ड धारण करता हो; (वि०) झगड़ा लगानेवाला, चुगलखोर।
डँडोरना–(हि० क्रि०) ढूंढ़ना।
डंबर–(हि० पुं०) ढकोसला, आडम्बर। मेघडंबर–बहुत बड़ा चँदवा, दलबादल।
डँवाडोल-(हि०वि०) चंचल, घबड़ाया हुआ।
डंस–(हि० पुं०) जंगली मच्छड़, डांस, वह स्थान जहाँ पर डंक अथवा विषैले कीड़े का दाँत चुभा हो।
डँसना–(हि० क्रि०) देखो डसना।
डकरना–(हि० क्रि०) डकार लेना।
डकराना–(हि० क्रि०) बैल या भैंस का बोलना।
डकार–(सं० पुं०) 'ड' स्वरूप अक्षर, 'ड' वर्ण। डकार–(हि० पुं०) मुख से वायु का निकला हुआ उद्गार, सिंह, बाघ आदि की गरज।
डकारना–(हि० क्रि०) डकार लेना।
डकैत–(हि० पुं०) डाकू। डकैती–(हि० स्त्री०) लूटमार।
डग–(हि० पुं०) उतनी दूरी जितने पर एक पग से दूसरे पग पर पैर पड़े।
डगडोलना–(हि०क्रि०) देखो डगमगाना।
डगडो–(हि० क्रि०) देखो डावाँडोल।
डगना–(हि० क्रि०) हिलना, घसकना, भूल चूक करना।
डगडगाना–(हि० क्रि०) लड़खड़ाना, थरथराना। डगमगाना-(हि० क्रि०) विचलित होना, स्थिर न रहना।
डगर–(हि०स्त्री०) मार्ग, पथ। डगरना–(हि० क्रि०) लुढ़कना। डगरा–(हि० पुं०) मार्ग, टोकरा, छबड़ा।
डगाना–(हि० क्रि०) देखो डिगाना।
डटना–(हि० क्रि०) स्थिर रहना, अड़ना, भिड़ना। डटाना–(हि० क्रि०) खड़ा करना, सटाना। डटाई–(हि० स्त्री०) डटाने का काम।
डट्टा–(हि०पुं०) काग, ठप्पा, साँचा।
डड़ढना–(हि० क्रि०) जलाना।
डड़ढार–(हि० वि०) बड़ी दाढ़ीवाला।
डढ़न–(हि० स्त्री०) देखो जलन।
डढ़ार, डढ़ारा–(हि०वि०) जिसको दाढ़ हो।
डढ़ियल–(हि० वि०) डाढ़ीवाला।
डपट–(हि०स्त्री०) डाँट, झिड़की, घुड़की।
डपटना–(हि० क्रि०) डाँटना, वेग से दौड़ना।
डपोरसंख–(हि०पुं०) अपनी झूठी बड़ाई करनेवाला।
डफ–(हि० पुं०) डफला, चंग बाजा।
डफला–(हि० पुं०) डफ नाम का बाजा।
डफली–(हि० स्त्री०) छोटा डफ, खंजड़ी।
डफार–(हि० स्त्री०) चिग्घाड़।
डफारना–(हि० क्रि०) जोर से चिल्लाना या रोना।
डब–(हि० पुं०) थैला, जेब।
डबकना–(हि० क्रि०) धातु की चद्दर को कटोरी के आकार का गहरा बनाना, टीसना, लँगड़ाना। डबकौहाँ–(हि०वि०) डबडबाया हुआ। डबडबाना–(हि० क्रि०) अश्रुपूर्ण होना।
डबरा–(हि० पुं०) छिछला गड्ढा, कुंड।
डबरी–(हि० स्त्री०) छोटा गड़हा।

डबल–(हि० पु०) पसा।
डबला–(हि०पुं०) मिट्टी का छोटा पात्र।
डबी–(हि०स्त्री०)देखो डिब्बी, डिबिया।
डबोना–(हि० क्रि०) डुबाना बिगाड़ना।
डब्बा–(हि० पुं०) किसी वस्तु को रखने का ढपनेदार छोटा पात्र, रेलगाड़ी की एक कोठरी।
डब्बू–(हि० पुं०) एक प्रकार का कटोरा।
डभकना–(हि० क्रि०) पानी में डूबना-उतराना।
डभका–(हि० पुं०) कुवें में से निकाला हुआ तुरंत का पानी।
डभकौरी–(हि० स्त्री०) उड़द की पीठी की बरी।
डमर-(सं० पुं०) उपद्रव, हलचल।
डमरी-(सं० स्त्री०) छोटा डफ, खंजड़ी।
डमरू–(हि० पुं०)एक बाजा जो बीच में पतला तथा किनारों पर चौड़ा होता है।
डमरूमध्य–(सं० पुं०) भूमि का वह संकीर्ण भाग जो बड़े-बड़े दो खण्डों को मिलाता हो। **जलडमरूमध्य**–जल का वह पतला भाग जो जल के दो बड़े-बड़े भागों को मिलाता हो।
डमरूयन्त्र–(सं० पुं०) दो घड़ों के मुख मिलाकर बनाया हुआ यन्त्र जो अर्क खींचने के काम में आता है।
डर–(हि० पुं०) भीति, भय, आशका।
डरना–(हि० क्रि०) भयभीत होना।
डरपना–(हि० क्रि०) डरना।
डरपोक–(हि० वि०) भीरु, कायर।
डरवाना–(हि० क्रि०) देखो डराना।
डराना–(हि० क्रि०) भयभीत करना।
डरावना–(हि० वि०) भयानक, भयंकर।
डरिया–(हि० स्त्री०)देखो डाल, शाख।
डरील, डरीला–(हि० वि०)शाखायुक्त।
डरैला–(हि० वि०) डरावना, भयंकर।
डल–(हि० पु०) खण्ड, अंश, टुकड़ा; (स्त्री०) झील।
डलई–(हि० स्त्री०) देखो डलिया।
डलना–(हि० क्रि०) डाला जाना, पड़ना।
डलवाना–(हि० क्रि०) डालने का काम दूसरे से कराना।
डला–(हि० पुं०) खण्ड, टुकड़ा, दौरा, टोकरा।
डलिया–(हि० स्त्री०)छोटा टोकरा, दौरी
डली–(हि० स्त्री०)खण्ड, छोटा टुकड़ा।
डवँरा–(हि० पुं०)एक प्रकार का बड़ा कटोरा।
डवरा–(हि० पुं०) एक प्रकार का बड़ा कटोरा।
डवरू–(हि० पुं०)देखो डमरू।
डसन–(हि० स्त्री०) डसने की क्रिया या ढंग।
डसना–(हि०क्रि०) साँप का काटना, डंक मारना। **डसवाना, डसाना**-(हि० क्रि०) दाँत से कटवाना।
डहकना–(हि० क्रि०)ठगना, छितराना, ललचाना, गरजना। **डहकाना**–(हि० क्रि०) नष्ट करना, गँवाना।
डहडहा–(हि०वि०)हरा-भरा, प्रफुल्लित, टटका।
डहना–(हि० क्रि०) भस्म होना, जलना, द्वेष करना, कुढ़ना।
डहर–(हि० स्त्री०) पथ, मार्ग।
डहरना–(हि० क्रि०) चलना, घूमना, फिरना।
डहराना–(हि० क्रि०) चलाना, फिराना।
डहार–(हि० पुं०) कष्ट देनेवाला।
डाँइन–(हि० स्त्री०) राक्षसी, चुड़ैल।
डाँक–(हि० स्त्री०) वमन।
डाँकना–(हि० क्रि०) कूद कर पार करना, वमन करना।

डाँगर–(हिं० पुं०) चौपाया; (वि०) कृश दुबला-पतला।
डाँट–(हिं० स्त्री०) घुड़की, डपट।
डाँटना–(हिं० क्रि०) डपटना, घुड़कना।
डाँट–(हिं० पुं०) देखो डंठल।
डाँड़–(हिं० पुं०) डंडा, भीटा, टीला, सीमा, अर्थदंड, बाँस, नाव खेने का पटरा लगा हुआ डंडा। डाँड़ना–(हिं० क्रि०) अर्थदण्ड देना।
डाँड़ा–(हिं० पुं०) नाव खेने का पटरा लगा हुआ बाँस का डंडा, सीमा, कर।
डाँड़ी–(हिं० स्त्री०) लंबा, पतला काठ, अस्त्र की मुठिया, तराजू की डंडी, पतली शाखा, एक प्रकार की पहाड़ी सवारी।
डांघरा–(हिं० स्त्री०) पुत्र, बेटा, लड़का।
डांवरी–(हिं० स्त्री०) पुत्री, कन्या, बेटी।
डांवरू–(हिं० पुं०) बाघ का बच्चा।
डांवाडोल–(हिं० वि०) चंचल, विचलित।
डांस–(हिं० पुं०) बड़ा मच्छड़।
डाइन–(हिं० स्त्री०) कुरूपा स्त्री।
डाक–(हिं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर घोड़े-गाड़ी बदले जाते हैं, चिट्ठियों के जाने-आने की राजकीय व्यवस्था, वमन, उलटी।
डाकखाना–(हिं० पुं०) डाकघर।
डाकगाड़ी–(हिं० स्त्री०) वह रेलगाड़ी जो डाक को ले जाती है। डाकघर–(हिं० पुं०) देखो डाकखाना।
डाकना–(हिं० स्त्री०) लाँघना, फाँदना, वमन करना।
डाका–(हिं० पुं०) किसी का धन छीनने के लिये आक्रमण या धावा।
डाकिन, डाकिनी–(सं० स्त्री०) पिशाची, डाइन, चुड़ैल।
डाकू–(हिं० पुं०) लुटेरा।
डागा–(हिं० पुं०) वह डंडा जिससे नगाड़ा बजाया जाता है, चोब।
डाट–(हिं० स्त्री०) टेक, चाँड़, डट्टा, भाग, देखो डाँट। डाटना–(हिं० क्रि०) चाँड़ लगाना, टेकना, ठेपी लगाना।
डाढ़–(हिं० स्त्री०) चबाने के चौड़े दाँत, दाढ़, वट आदि वृक्षों की जटा, बरोह।
डाढ़ना–(हिं० क्रि०) जलाना।
डाढ़ा–(हिं० स्त्री०) दावानल, जलन, दाह।
डाढ़ी–(हिं० स्त्री०) दाढ़ी, चिबुक, ठुड्डी।
डाब–(हिं० स्त्री०) कच्चा नारियल।
डाबर–(हिं० पुं०) पोखरी, गड्ढा, ताल; (वि०) मटमैला जल।
डाबा–(हिं० पुं०) देखो डब्बा।
डाभ–(हिं० पुं०) कच्चा नारियल।
डाभक–(हिं० वि०) टटका।
डामर–(सं० पुं०) आडम्बर, चमत्कार, गर्व।
डामल–(हिं० स्त्री०) जीवनपर्यन्त कारागार
डामाडोल (हिं० वि०) देखो डावांडोल।
डायन–(हिं० स्त्री०) डाकिनी, पिशाचिनी।
डार–(हिं० स्त्री०) शाखा, डाल।
डारना–(हिं० क्रि०) देखो डालना।
डाल–(हिं० स्त्री०) शाखा, फानूस की खूँटी, डलिया।
डालना–(हिं० क्रि०) नीचे गिराना, फेंकना, छोड़ना, रखना, मिलाना, भीतर घुसाना, धारण करना, सौंपना, लगाना।
डाली–(हिं० स्त्री०) फूल-फल या खाने-पीने की वस्तु, सजाकर किसी के यहाँ भेजने की टोकरी, छितनी।
डावड़ा, (डावरा)–(हिं० पुं०) पुत्र, बेटा।
डावरी–(हिं० स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्री।
डासन–(हिं० पुं०) बिस्तर, बिछावन।
डासना–(हिं० क्रि०) फैलाना, बिछाना।
डासनी–(हिं० स्त्री०) चारपाई, पलंग।

डाह–(हिं० स्त्री०) ईर्ष्या, द्वेष, जलन ।
डाहना–(हिं०क्रि०) कष्ट देना,जलाना ।
डाही,डाहुक–(हिं०पुं०) कष्ट देनेवाला ।
डिगल–(हिं०वि०) दूषित, घृणित, नीच ।
डिभिया–(हिं० वि०) पाखण्डी ।
डिगना–(हिं० क्रि०) हिलना ।
डिगाना–(हिं० क्रि०) घसकाना, विचलित करना ।
डिग्गी–(हिं० स्त्री०) तालाब, पोखरी ।
डिङ्गर–(सं० पुं०) मोटा आदमी, वन, धूर्त मनुष्य, ठग ।
डिठार, डिठिर–(हिं० वि०) आँखवाला, जिसको सुझाई दे ।
डिठौना–(हिं० पुं०) काजल का टीका जिसको स्त्रियाँ दृष्टि न लगने के लिये बच्चों के सिर पर लगाती हैं ।
डिण्डिभ–(सं० पुं०) डिमडिमी, डुगडुगिया ।
डिबिया–(हिं० स्त्री०) छोटा डिब्बा ।
डिब्बा–(हिं० पुं०) ढपनेदार छोटा पात्र, रेलगाड़ी का एक कमरा ।
डिभकना–(हिं० क्रि०) मोहित करना ।
डिमडिमी–(हिं०स्त्री०) डुगडुगिया,डुग्गी ।
डिम्ब–(सं० पुं०) भय, डर, गर्भाशय, फेंफड़ा, भय से उत्पन्न कलह, प्लीहा, कीड़े का बच्चा, उपद्रव ।
डिम्बज–(सं० पुं०) जिसकी उत्पत्ति अंडे से हो ।
डिम्बाहव–(सं० पुं०) ऐसी लड़ाई जिसमें राजा सम्मिलित न हो ।
डिम्भ, डिम्भक–(सं०पुं०) शिशु, बालक ।
डिल्ला–(हिं० पुं०) बैल के कंधे पर का उठा हुआ कूबड़, ककुत्थ ।
डींग–(हिं० स्त्री०) अपनी बड़ाई की झूठी बात ।
डीठ–(हिं० स्त्री०) दृष्टि, देखने की शक्ति, ज्ञान,सूझ । डीठना–(हिं०क्रि०) देख पड़ना, दृष्टि लगाना ।
डीठबंध–(हिं० पुं०) इन्द्रजाल ।
डीठिमूठि–(हिं० स्त्री०) जादू, टोना ।
डीबुआ–(हिं० पुं०) डबल, पैसा ।
डीमडाम–(हिं०पुं०) ठाटबाट,आडम्बर ।
डील–(हिं० पुं०) शरीर का विस्तार ।
डीलडौल–(हिं०पुं०) शरीर का ढाँचा,काठी
डुंग–(हिं० पुं०) ढेर, राशि, भीटा ।
डुंड–(हिं० पुं०) ठूँठ ।
डुक–(हिं० पुं०) घूसा, मुक्का ।
डुकियाना–(हिं० क्रि०) घूसा मारना ।
डुगडुगी–(हिं० स्त्री०) डुग्गी, डम्मल ।
डुग्गी–(हिं० स्त्री०) देखो डुगडुगी ।
डुगडुगाना–(हिं० क्रि०) नगाड़ा, ताशा आदि को लकड़ी से बजाना ।
डुपटना–(हिं०क्रि०) कपड़े को चुनना ।
डुपट्टा–(हिं० पुं०) देखो दुपट्टा ।
डुबकी–(हिं०स्त्री०) जल में डूबने का कार्य, तली हुई बरी ।
डुबवाना–(हिं० क्रि०) डुबाने का काम दूसरे से कराना । डुबाना–(हिं०क्रि०) गोता देना, बोरना, नष्ट करना ।
डुबाव–(हिं०पुं०) डूबने भर की जल की गहराई ।
डुबोना–(हिं०क्रि०) देखो डुबाना,बौरना ।
डुब्बी–(हिं० स्त्री०) देखो डुबकी ।
डुलना–(हिं० क्रि०) देखो डोलना ।
डुलाना–(हिं० क्रि०) चलाना, घुमाना, फिराना ।
डूंगर–(हिं०पुं०) खंडहर, टीला, भीटा ।
डूंगरी–(हिं० स्त्री०) छोटा टीला ।
डूंगा–(हिं० पुं०) चम्मच, चमचा ।
डूबना–(हिं० क्रि०) गोता खाना, सूर्य, चन्द्रमा ग्रह आदि का अन्त होना, सत्यानाश होना, लीन होना ।

डेड़हा–(हिं० पुं०) जल का सर्प।
डेढ़–(हिं०वि०) एक पूरा और आधा।
डेढ़ा–(हिं० वि०) डेढ़ गुना, एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़ गुनी संख्या बतलाई जाती है।
डेरा–(हिं० पुं०) पड़ाव, टिकान, छावनी, खेमा, निवासस्थान, मकान, नाचने या गानेवालों की मण्डली।
डेराना–(हिं० क्रि०) डरवाना।
डेवढ़–(हिं० वि०) डेढ़ गुना, डेवढ़ा; (स्त्री०) क्रम।
डेवढ़ना–(हिं०क्रि०) हिसाब बन्द करना।
डेवढ़ा–(हिं० वि०) एक और आधा, डेढ़ गुना।
डेवढ़ी–(हिं० स्त्री०) देखो ड्योढ़ी।
डेहरी–(हिं० स्त्री०) दहलीज, देहली।
डोंगर–(हिं०पुं०) पहाड़ी टीला, भीटा।
डोंगा–(हिं० पुं०) बड़ी नाव।
डोंगी–(हिं०स्त्री०) छोटी नाव।
डोंड़ी–(हिं०स्त्री०) पोस्ते का फल जिसके छिलके को चीरकर अफीम निकाली जाती है।
डोई–(हिं०स्त्री०) कटोरे में बेंट जड़ी हुई करछी।
डोकर, डोकरा–(हिं० पुं०) अशक्त बुड्ढा आदमी।
डोका–(हिं० पुं०) तेल, घी आदि रखने का काठ का छोटा पात्र। **डोकिया, डोकी**–(हिं० स्त्री०) तेल आदि रखने का काठ का बरतन।
डोड़हा–(हिं०पुं०) जल में रहनेवाला सर्प।
डोड़ी–(हिं०स्त्री०) मटर, सेम आदि की कच्ची फली।
डोब, डोबा–(हिं० पुं०) गोता, डुबकी।
डोबना–(हिं० क्रि०) डुबाना।
डोम–(हिं०पुं०) भारतवर्ष की एक अस्पृश्य नीच जाति। **डोमड़ा**–(हिं० पुं०) देखो डोम। **डोमनी**–(हिं० स्त्री०) डोम जाति की स्त्री।
डोमिन–(हिं०स्त्री०) डोम जाति की स्त्री।
डोर–(हिं०पुं०) डोरा, सूत।
डोरना–(हिं०क्रि०) हाथ पकड़कर चलना।
डोरा–(हिं०पुं०) सूत, तागा, धारी, लकीर।
डोरिया–(हिं०पुं०) एक प्रकार का सूती कपड़ा जिसमें मोटे सूत की लम्बी धारियाँ बनी रहती हैं। **डोरियाना**–(हिं० क्रि०) बन्धन लगाकर पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना।
डोरी–(हिं० स्त्री०) रज्जु, पाश, रस्सी।
डोरे–(हिं०क्रि०वि०) संग-संग, साथ-साथ।
डोल–(हिं० पुं०) कुवें से पानी खींचने का लोहे का गोल बरतन, हिंडोला, झूला, हलचल।
डोलची–(हिं० स्त्री०) छोटा डोल।
डोलना–(हिं० क्रि०) चलना, घूमना, फिरना, हटना।
डोला–(हिं०पुं०) शिविका, पालकी, डोली
डोलाना–(हिं०क्रि०) हिलाना चलाना।
डोली–(हिं० स्त्री०) शिविका, पालकी।
डोली करना–हटाना, दूर करना।
डौंड़ी–(हिं०स्त्री०) ढिंढोरा, घोषणा।
डौआ–(हिं० पुं०) काठ का बना हुआ बड़ा चम्मच।
डौल–(हिं० पुं०) ढाँचा, शैली, ढब, प्रकार, उपाय। **डौलडाल**–(हिं०पुं०) युक्ति, उपाय। **डौलदार**–(हिं०वि०) सुन्दर।
डौलियाना–(हिं०क्रि०) ढंग पर लाना।
ड्योढ़ा–(हिं० वि०) पूरा और आधा, डेवढ़ा; (पुं०) डेढ़गुनी संख्या का पहाड़ा।

ड्योढ़ी–(हि॰ स्त्री॰) फाटक, चौखट, पौरी।
ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान–(हि॰ पुं॰) दरवान, चौकीदार।

ढ

ढ–संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण तथा टवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।
ढ–(सं॰पुं॰) बड़ा ढोल, नगाड़ा,ध्वनि।
ढंकन–(हि॰ पुं॰) देखो ढक्कन।
ढँकना–(हि॰ क्रि॰) देखो ढकना।
ढंग–(हि॰ पुं॰) प्रणाली, पद्धति, शैली, बनावट, उपाय, युक्ति, अवस्था, व्यवहार।
ढंगी–(हि॰ वि॰) चतुर, धूर्त, छली।
ढंढार–(हि॰वि॰) बहुत बुड्ढा।
ढँढोर–(हि॰पुं॰) आग की लपट, लौ।
ढँढोरना–(हि॰वि॰) इधर-उधर ढूंढ़ना।
ढँढोरा–(हि॰पुं॰) डुगडुगी, ढोल बजाकर की हुई घोषणा। ढँढोरिया–(हि॰ पुं॰) डुग्गी बजाकर घोषणा करनेवाला।
ढँपना–(हि॰क्रि॰) ढँक जाना; (पुं॰) वह वस्तु जिससे कोई चीज ढाँकी जाती है।
ढकना–(हि॰ पुं॰) ढाँपने की वस्तु ढक्कन; (क्रि॰) छिपाना, ढाँकना।
ढकनिया, ढकनी–(हि॰ स्त्री॰) ढाँपने की वस्तु।
ढकेलना–(हि॰क्रि॰) धक्का देकर आगे बढ़ाना।
ढकोसना–(हि॰क्रि॰)बड़े बड़े घूंट पीना
ढकोसला–(हि॰ स्त्री॰) पाखंड।
ढक्का–(हि॰ पुं॰) बड़ा ढोल, नगाड़ा।
ढचर–(हि॰पुं॰) प्रपंच, बखेड़ा; (वि॰) अत्यन्त जीर्ण तथा दुर्बल।
ढटिंगड़–(हि॰वि॰) बड़े डील-डौल का।
ढट्टी–(हि॰स्त्री॰)डाढ़ी बाँधने की कपड़े की पट्टी।
ढड्ढा–(हि॰वि॰)आवश्यकता से अधिक, बहुत बड़ा; (पुं॰) ढाँचा, आडम्बर।
ढनमनाना–(हि॰क्रि॰) लुढ़क जाना।
ढड्ढी–(हि॰ स्त्री॰) बुड्ढी स्त्री।
ढप–(हि॰पुं॰) देखो ढब, रीति, युक्ति।
ढपना–(हि॰ पुं॰) ढक्कन; (क्रि॰) ढँपा होना।
ढब–(हि॰ पुं॰) ढंग, युक्ति, रीति।
ढमढम–(हि॰पुं॰) नगाड़ा या ढोल का शब्द।
ढयना–(हि॰ क्रि॰) घर, मकान आदि का ध्वस्त होना या गिर पड़ना।
ढरकना–(हि॰ क्रि॰) ढलना, गिरकर बह जाना।
ढरका–(हि॰ पुं॰) चौपायों को दवा पिलाने की बाँस की नुकीली नली।
ढरकाना–(हि॰ क्रि॰) नीचे तल में गिराना, बहाना।
ढरकी–(हि॰स्त्री॰) बाने का सूत फेंकने का जुलाहे का एक साधन।
ढरना–(हि॰ क्रि॰) देखो ढलना।
ढरनि–(हि॰ स्त्री॰) पतन, चित्तवृत्ति, झुकाव, दयाशीलता।
ढरहना–(हि॰क्रि॰) झुकना, गिरना।
ढरहरा–(हि॰वि॰) ढालवाँ।
ढराना–(हि॰क्रि॰) देखो ढराना, ढरकाना।
ढरारा–(हि॰वि॰)गिरकर बह जानेवाला।
ढर्रा–(हि॰पुं॰) शैली, ढंग, उपाय।
ढसकना–(हि॰क्रि॰) ढलना, सरकना।।
ढलकाना–(हि॰क्रि॰) बहाना, गिराना।

ढलमल–(हि० वि०) शिथिल।
ढलना–(हि० क्रि०) गिरकर बहना, बीतना, लुढ़कना, साँचे में ढालकर बनाया जाना, प्रसन्न होना, प्रवृत्त होना।
ढलवाँ–(हि० वि०) साँचे में ढालकर बनाया हुआ। **ढलवाना**–(हि० क्रि०) ढालने का काम दूसरे से कराना।
ढलाई–(हि० स्त्री०) ढालने का काम, ढालने का शुल्क। **ढलाना**–(हि०क्रि०) देखो ढलवाना।
ढलवाँ–(हि० वि०) ढालकर बनाया हुआ
ढहना–(हि०क्रि०) घर आदि का गिरना, नष्ट होना। ढहरी–(हि०स्त्री०) देहली
ढहाना–(हि० क्रि०) मकान आदि को ध्वस्त कराना।
ढाँकना–(हि० क्रि०) छिपाना।
ढाँचा–(हि० पुं०) डौल, ठाट, ठठरी।
ढाँपना–(हि०क्रि०) देखो ढाँकना।
ढाँस–(हि०स्त्री०) गले का वह शब्द जो सूखी खाँसी के साथ निकलता है।
ढाँसना–(हि०क्रि०) सूखी खाँसी खाँसना।
ढाई–(हि०वि०) दो से आधा अधिक, २॥
ढाड़–(हि०स्त्री०) चिल्लाहट, गरज चिग्घाड़
ढाढ़ना–(हि०क्रि०) देखो दाढ़ना।
ढाढ़स–(हि०पुं०) आश्वासन, धैर्य, सान्त्वना
ढाना–(हि०क्रि०) ढहवाना, ध्वस्त करना
ढापना–(हि०क्रि०) ढपना, बंद करना।
ढाबर–(हि०वि०) मटमैला।
ढाबा–(हि०पुं०) ओलती, जाल।
ढामक–(हि० पुं०) नगाड़े, ढोल आदि का शब्द।
ढार–(हि० पुं०) उतार, ढालुवाँ भूमि।
ढारना–(हि० क्रि०) ढालना, गिराना।
ढारस–(हि० पुं०) आश्वासन।
ढाल–(हि० पुं०) थाली के आकार का चमड़े का बना हुआ एक अस्त्र जो तलवार, भाले आदि के आक्रमण को रोकने के लिये धारण किया जाता है, उतार, तिरछी भूमि, ढार।
ढालना–(हि०क्रि०) उँडेलना, मदिरा पीना, बिक्री करना, कम दाम पर माल बेचना, ताना मारना, पिघले हुए धातु आदि को साँचे में ढालकर कोई वस्तु तैयार करना।
ढालवाँ–(हि०वि०) ढालू, ढालदार।
ढालिया–(हि० पुं०) कसेरा।
ढालुआँ, ढालू–(हि०वि०) देखो ढालवाँ।
ढासना–(हि० पुं०) टेक, ओटकन, सहारा।
ढाहना–(हि०क्रि०) ढाना, ध्वस्त करना।
ढिंढोरना–(हि०क्रि०) अनुसन्धान करना, खोजना।
ढिंढोरा–(हि० पुं०) डुगडुगी, ढोल बजाकर की हुई घोषणा।
ढिग–(हि० क्रि० वि०) समीप, निकट; (स्त्री०) तट, किनारा।
ढिठाई–(हि०स्त्री०) धृष्टता, चपलता।
ढिबरी–(हि० स्त्री०) वह मिट्टी की कुल्हिया जिसमें बत्ती लगाकर केरासिन तेल जलाया जाता है, लोहे का छेददार टुकड़ा जो पेंच पर कसा जाता है।
ढिमका–(हि० स्त्री०) अमुक, ठेकाना।
ढिलढिला–(हि०वि०) ढीलाढाला, तरल।
ढिलाई–(हि० स्त्री०) आलस्य, शिथिलता।
ढिलाना–(हि० क्रि०) ढीला करना।
ढिल्लड़–(हि० क्रि०) मट्ठर, आलसी।
ढींगर–(हि० पुं०) हृष्टपुष्ट मनुष्य।
ढीठ–(हि० वि०) धृष्ट, उद्दण्ड। **ढीठता**–(हि० स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई।
ढील–(हि० स्त्री०) शिथिलता, बालों में पड़नेवाली जुआँ। **ढीलना**–(हि० क्रि०) छोड़ देना, कुत्ते में लटकाना।

ढीला–(हि० वि०) जो तना न हो, जो दृढ़ता से बँधा न हो।
ढीलापन–(हि० पुं०) शिथिलता।
ढीह–(हि० पुं०) ऊँचा टीला, भीटा।
ढुंढ़–(हि० पुं०) ठग, चोर, उचक्का।
ढुंढ़वाना–(हि०क्रि०) अन्वेषण कराना।
ढुंढ़ी–(हि० स्त्री०) बाहु, बाँह।
ढुकना–(हि० क्रि०) प्रवेश करना, घुसना। ढुकास–तीव्र प्यास।
ढुक्का–(हि० पुं०) देखो ढूका।
ढुठौना–(हि० पुं०) लड़का।
ढुरकना–(हि० क्रि०) ढुलकना, झुकना।
ढुनसुनिया–(हि० स्त्री०) ढुकने की क्रिया या भाव।
ढुरना–(हि० क्रि०) ढलना, टपकना।
ढुरहुरी–(हि०स्त्री०) पगडंडी।
ढुराना–(हि०क्रि०) ढरकाना, टपकाना।
ढुर्री–(हि०स्त्री०)पतला मार्ग, पगडंडी।
ढुलकना–(हि०क्रि०) गिरना, लुढ़कना।
ढुलकाना–(हि० क्रि०) लुढ़काना।
ढुलना–(हि०क्रि०) लुढ़कना, फिसलना, प्रसन्न होना, झुकना, प्रवृत्त होना।
ढुलवाई–(हि० स्त्री०) ढोने का काम, ढोन का शुल्क। ढुलवाना–(हि०क्रि०) ढोने का काम दूसरे से कराना।
ढुलाना–(हि०क्रि०) ढालना, लुढ़काना।
ढूंढ़–(हि० स्त्री०) अन्वेषण, खोज।
ढूंढ़ना–(हि०क्रि०) अन्वेषण करना।
ढूह, ढूहा–(हि० पुं०) अटाला, राशि, ढेर।
ढेंकली–(हि० स्त्री०) कुवें से पानी निकालने का एक यन्त्र, धान कूटने का एक प्रकार का लकड़ी का यन्त्र।
ढेंकी, ढेंकुली–(हि०स्त्री०) अनाज कूटने की ढेंकुली।
ढेंढ़र–(हि० पुं०) आँख का ढेला।
ढेंढ़ी–(हि० स्त्री०) कपाल, पोस्ते आदि की फली।
ढेंप, ढेंपी–(हि० स्त्री०) उभड़ा हुआ कोना।
ढेबुवा–(हि० पुं०) पैसा।
ढेरी–(हि०स्त्री०)ढेर, समूह, टाल, राशि।
ढेल–(हि० पुं०) देखो ढेला।
ढेलवांस–(हि० स्त्री०) ढेला फेंकने का रस्सी का बना हुआ फन्दा।
ढेला–(हि० पुं०) पत्थर, इंट आदि का टुकड़ा।
ढेया–(हि०स्त्री०) अढ़ाई सेर तौलने का बटखरा, अढ़ाईगुने का पहाड़ा।
ढोंकना–(हि०क्रि०) पीना, पी जाना।
ढोंका–(हि०पुं०) पत्थर आदि का अन-गढ़ा टुकड़ा।
ढोंग–(हि०पुं०) पाखंड, ढकोसला।
ढोंढ़–(हि०पुं०) कपास, पोस्ते आदि की डोंकली, डोडा।
ढोंढ़ी–(हि० स्त्री०) नाभि।
ढोका–(हि० पुं०) देखो ढोंका।
ढोटा–(हि० पुं०) पुत्र, लड़का, बेटा।
ढोटी–(हि० स्त्री०)पुत्री, बटी, लड़की।
ढोना–(हि० क्रि०) बोझ ले चलना या पहुँचाना, निर्वाह करना।
ढोल–(सं० पुं०) कान का परदा; (हि० पुं०) एक प्रकार का दोनों ओर चमड़ा मढ़ा हुआ मेंड़रा जो गले में लटकाकर बजाया जाता है।
ढोलक–(हि० स्त्री०) छोटा ढोल।
ढोलकिया–(हि० पुं०) ढोल बजाने-वाला मनुष्य। ढोलकी–(हि० स्त्री०) छोटा ढोलक। ढोलना–(हि० पुं०) ढोलक के आकार का गले में पहनने का यन्त्र, छोटा झूला, पालना; (क्रि०) ढरकाना, ढालना।

ढोला-(हिं० पुं०) गोल मेहराब बनान का डाँट, लदाव।
ढोली-(सं० वि०) ढोल बजानेवाला; (हिं० स्त्री०) दो सौ पान की गड्डी, ठिठोली।
ढोव-(सं० पुं०) डाली, भेंट।
ढोहना-(हिं० क्रि०) खोजना।
ढौंचा-(हिं०पुं०) वह पहाड़ा जिसमें त्येक अंक की साढ़े चार गुनी संख्या दोहराई जाती है।
ढौंसना-(हिं०क्रि०) आनन्द-ध्वनि करना।
ढौंकन-(सं० पुं०) उत्कोच, घूस।

ण

ण-संस्कृत तथा हिन्दी के व्यंजन वर्णों का पन्द्रहवाँ अक्षर तथा टवर्ग का पाँचवाँ वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।
ण-(सं०पुं०) आभूषण, निर्णय, शिव का एक नाम, ज्ञान, दान, पानी का घर; (हिं०) गुणरहित, गुणशून्य।
णकार-(सं० पुं०) 'ण' स्वरूप वण।

त

त-संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का सोलहवां अक्षर तथा तवर्ग का पहिला वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
त-(सं० पुं०) चोर, अमृत, पूंछ, नाव, झूठ, पुण्य।
तइनात-(हिं० पुं०) देखो तैनात।
तइँ-(हिं०) (प्रत्य०) से, प्रति, को; (अव्य०) लिये, वास्ते।
तई-(हिं० स्त्री०) कड़ा लगी हुई छिछली कड़ाही।
तउ-(हिं० अव्य०) तब, त्यों, उस तरह।
तऊ-(हिं०अव्य०) तथापि, तौ भी, तिस पर भी।
तंतुकीट-(हिं०पुं०) रेशम का कीड़ा।
तंडुल-(हिं० पुं०) चावल।
तंतमन्त-(हिं० पुं०) देखो तन्त्रमन्त्र।
तंतु-(हिं० पुं०) सूत, डोरा, तागा, ताँत।
तंत्र-(हिं०पुं०) ताँत, सूत, कपड़ा, घन।
तंत्री-(हिं० स्त्री०) वीणा आदि तार के बाजे, नस, रस्सी, बाजा बजानेवाला।
तंदरा-(हिं० स्त्री०) देखो तन्द्रा।
तंदुल-(हिं० पुं०) देखो तण्डुल, चावल।
तंदूरी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का उत्तम महीन रेशम; (वि०) तंदूर में बनाया हुआ।
तंदेही-(हिं०स्त्री०)प्रयत्न, प्रयास,आज्ञा।
तंद्रा-(सं०स्त्री०)ऊँघ, ऊँघाई। तंद्रालु-(हिं० वि०) ऊँघनेवाला।
तंबाकू-(हिं० पुं०) देखो तमाखू।
तँबिया-(हिं०पुं०)ताँबे का छोटा तसला।
तँबियाना-(हिं० क्रि०) ताँबे के रंग का। होना, ताँबे का स्वाद या गन्ध आ जाना।
तंबू-(हिं० पुं०) डेरा, शिविर।
तंबूल-(हिं०पुं०) पान, देखो ताम्बूल।
तंबोलिन-(हिं० स्त्री०) पान बेचनेवाली स्त्री, तमोलिन।
तंबोली-(हिं० पुं०) पान बेचनेवाला मनुष्य, बरई।
तँवार-(हिं० स्त्री०) चक्कर, घुमटा।
तक-(हिं० अव्य०) किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करनेवाली एक विभक्ति, पर्यन्त।
तकन-(हिं० स्त्री०) ताकने की क्रिया, दृष्टि।
तकना-(हिं० क्रि०) निहारना, देखना।
तकला-(हिं० पुं०) टकुआ। तकली-(हिं० स्त्री०) छोटा तकला, टेकुरी।

तकवाना–(हि० क्रि०) देखने का काम दूसरे से कराना।

तकाई–(हि०स्त्री०) देखने की क्रिया या भाव।

तकान–(हि०स्त्री०) देखो थकान, थकावट

तकाना–(हि०क्रि०) दिखाना, बतलाना।

तकार–(सं० पुं०) 'त' स्वरूप अक्षर।

तक्र–(सं०पुं०) मठा, छाछ।

तक्षण–(सं०पुं०) बढ़ई, मूर्ति बनाने का काम।

तगड़ा–(हिं०वि०) बलवान्, सबल, पुष्ट।

तगना–(हिं०क्रि०) सिला जाना।

तगाई–(हि०स्त्री०) सिलाई का काम।

तगाड़, (-र), **तगाड़ा**–(हि० पुं०) वह कुण्ड जिसमें मसाला, चूना आदि जोड़ाई करने के लिये साना जाता है।

तगाना–(हि० क्रि०) सिलने का काम दूसरे से कराना।

तगियाना–(हिं०क्रि०) देखो तागना।

तङ्ग–(सं०पुं०) प्रिय के विरह से उत्पन्न सन्ताप, भय।

तचना–(हि० क्रि०) तपना, जलना।

तचाना–(हि०क्रि०) जलाना, दुखी करना।

तचित–(हिं० वि०) दुखित। **तच्छक**–(हिं० पुं०) देखो तक्षक।

तच्छिन–(हिं०क्रि०वि०) तत्क्षण, तत्काल।

तच्छील–(सं०वि०) स्वभाव से ही काम करनेवाला।

तजन–(हि० पुं०) त्याग, परित्याग की क्रिया।

तजना–(हिं० क्रि०) त्यागना, छोड़ना।

तज्ञ–(सं० वि०) तत्त्व को जाननेवाला, ज्ञानी।

तटंक–(हिं० पुं०) कर्णफूल।

तट–(सं० पुं०) नदी आदि का किनारा, तीर, कूल।

तटका–(हिं०वि०) देखो टटका, ताजा।

तटनी–(हि० स्त्री०) नदी, सरिता।

तटस्थ–(सं० वि०) निरपेक्ष, उदासीन प्रकृति का।

तटाक–(सं० पुं०) सरोवर, तालाब।

तटिनी–(सं० स्त्री०) नदी, सरिता।

तटी–(सं०स्त्री०) तीर, किनारा, नदी।

तड़–(हि० पुं०) स्थल, थप्पड़ आदि मारने या किसी वस्तु के पटकने से उत्पन्न शब्द।

तड़क–(हिं०स्त्री०) तड़कने की क्रिया, स्वाद लेने की इच्छा; (पुं०) चमक-दमक। **तड़कना**–(हिं०क्रि०) चटकना।

तड़का–(हि०पुं०) प्रभातकाल, बघार।

तड़काना–(हिं० क्रि०) तोड़ना, क्रोध दिखलाना।

तड़प–(हिं० स्त्री०) चमक, भड़क, कूदने का काम। **तड़पाना**–(हि० क्रि०) अधिक पीड़ा के कारण तड़फड़ाना, गरजना।

तड़बंदी–(हिं० स्त्री०) जाति अथवा समाज में पृथक्-पृथक् पक्षों का बनना।

तड़ाक–(सं० पुं०) तड़ाग; (क्रि० वि०) तड़ाक शब्द के साथ, चटपट।

तड़ाका–(सं० स्त्री०) आघात, चोट; (क्रि० वि०) तुरत।

तड़ाग–(सं०पुं०) सरोवर, पुष्कल, ताल।

तड़ातड़–(हिं० क्रि० वि०) तड़ तड़ शब्द करते हुए। **तड़ाना**–(हि०क्रि०) ताड़ने के लिये किसी दूसरे को प्रवृत्त करना।

तड़ावा–(हिं० स्त्री०) आडम्बर, छल, कपट।

तड़ित–(सं० स्त्री०) विद्युत्, बिजली।

तड़िया–(हिं०स्त्री०) समुद्र के तट की वायु।

तड़ी–(हिं० स्त्री०) चपत, धौल, छल।

तत्–(सं० पुं०) हेतु, के लिये; (सर्व०) उस, वह।
ततकाल–(हिं०क्रि०वि०) देखो तत्काल।
ततताथेई–(हिं० स्त्री०) नाचने का शब्द या बोल।
तताई–(हिं० स्त्री०) उष्णता, गरमी।
तातारना–(हिं०क्रि०)गरम पानी से धोना।
तति–(स० स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति।
ततैया–(हिं० स्त्री०) हड्डा, भिड़, बरै; (वि०) तीव्र कष्ट देनवाला।
तत्कालीन–(सं० वि०) उसी काल या समय का।
तत्क्षण–(सं०पुं०) उसी समय, तत्काल।
तत्ता–(हिं० पुं०) उष्ण, गरम।
तत्तुल्य–(सं० वि०) उसके समान।
तत्तोथबो–(हिं० पुं०) बहलावा, बीच-बचाव।
तत्व–(सं० पुं०) यथार्थता, वास्तविक स्थिति, स्वरूप, सार वस्तु, सारांश, पंचभूत।
तत्वज्ञ–(स० वि०) तत्वज्ञानी, जिसको ईश्वर-विषयक ज्ञान हो। तत्वज्ञान–(सं० पुं०) ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान।
तत्वज्ञानी–(स० पुं०) तत्वज्ञ, दार्शनिक।
तत्वतः–(सं० अव्य०) वस्तुतः।
तत्वविद्–(सं०पुं०) तत्ववेत्ता।
तत्व–(हिं० वि०) मुख्य, प्रधान; (पुं०) शक्ति, बल।
तत्वपद–(सं० पुं०) परमपद, निर्वाण।
तत्पर–(सं० वि०) उद्यत, सन्नद्ध, तैयार, निपुण, दक्ष, चतुर। तत्परता–(सं० स्त्री०) निपुणता, दक्षता।
तत्पुरुष–(स० पुं०) व्याकरण में एक प्रकार का समास जिसमें उत्तर पद को प्रधानता होती है।
तत्पूर्व–(सं०वि०)सर्वप्रथम, सबसे पहला।
तत्प्रकार–(सं०क्रि०वि०) उसी तरह।
तत्र–(सं० क्रि० वि०) उसस्थान पर, वहाँ। तत्रभवान्–(सं० वि०) पूज्य, मान्य, प्रशंसनीय, श्रेष्ठ।
तत्रापि–(सं०अव्य०) तथापि, तो भी।
तत्सदृश–(सं० वि०) तथाविध, उसके समान। तत्सम–(सं० पुं०) हिन्दी प्राकृत आदि भाषा में प्रयुक्त होनेवाला संस्कृत का शब्द।
तथा–(सं०अव्य०) इसी तरह, ऐसे ही।
तथाच–(सं० अव्य०) तथापि, तो भी।
तथापि–(सं०अव्य०)तिस पर भी,तो भी
तथाभावी–(सं०वि०)उसी स्वभाव का।
तथाभूत–(सं० वि०) उसी प्रकार से होता हुआ। तथास्तु–(सं० अव्य०) वैसा ही हो।
तथ्य–(सं० पुं०) यथार्थता, सत्य, सचाई। तदधिक–(सं० त्रि०) उसके अतिरिक्त।
तदन्त–(सं०वि०) उसी प्रकार समाप्त होना।
तदन्तर, तदनन्तर–(सं० पुं०) उसके उपरान्त।
तदनु–(सं० क्रि० वि०) तदन्तर। तदनुसार–(सं० वि०) उसके अनुकूल।
तदपि–(सं० अव्य०) तथापि, तो भी।
तदर्थ–(सं०क्रि०वि०) उसके लिय, उस प्रयोजन से।
तदवधि–(सं० क्रि० वि०) तब तक।
तदा–(सं० अव्य०) उस समय, तब।
तदाकार–(सं०वि०) उसी आकार का।
तदात्मा–(सं० वि०) उसी के सदृश।
तदानीं–(सं० अव्य०) उसी समय, तब।
तदीय–(सं० वि०) उससे संबंध रखनेवाला, तत्संबंधी, उसका।
तदुपरान्त–(सं० अव्य०) उसके पीछे।

तदुपरि–(सं० क्रि० वि०) उसके ऊपर।
तद्गत–(सं० वि०) उससे संबंध रखनेवाला, उसके अन्तर्गत।
तद्दिन–(सं० वि०) कृपण, कंजूस।
तद्धित–(सं० पुं०) व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसको संज्ञा में जोड़कर नया शब्द बनाया जाता है—जैसे भिन्न से भिन्नता।
तद्भव–(सं०पुं०) संस्कृत शब्द का अपभ्रंश रूप जो भाषा में प्रयुक्त होता है जैसे चक्र—चक्कर।
तद्यपि–(हिं० अव्य०) तथापि, तौ भी।
तद्वत्–(सं० अव्य०) ज्यों का त्यों, उसकी नाईं।
तद्व्यतिरिक्त–(सं०वि०) उसके सिवाय।
तननना–(हिं० पुं०) क्रोध, प्रभाव।
तनतनाना–(हिं० क्रि०) क्रोध करना।
तनत्राण–(हिं० पुं०) कवच।
तनविही–(हिं०स्त्री०) उद्योग, प्रयत्न।
तनधर–(हिं० वि०) देखो तनुधारी।
तनना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ का फैलाना, वेग से खिचना, अकड़कर खड़ा होना, गर्व से ऐंठना।
तनपात–(हिं० पुं०) देखो तनुपात।
तनप्रोषक–(हिं० वि०) स्वार्थी।
तनमय–(हिं० वि०) देखो तन्मय।
तनय–(सं० पुं०) पुत्र, लड़का, बेटा।
तनया–(सं०स्त्री०) कन्या, पुत्री, बेटी।
तनराग–(हिं० पुं०) देखो तनुराग।
तनरुह–(हिं०पुं०) रोवाँ, पंख।
तनवाना–(हिं० क्रि०) तानने का काम दूसरे से कराना।
तनाई-तनाउ–(हिं०स्त्री०) देखो तनाव।
तनाकु–(हिं०क्रि०वि०) तनिक, थोड़ा।
तनाना–(हिं० क्रि०) तानने का काम दूसरे से कराना।
तनाय, तनाव–(हिं०पुं०) तानने का भाव या क्रिया।
तनि, तनिक–(हिं० वि०) अल्पमात्र, थोड़ा, कम; (क्रि० वि०) थोड़ा।
तनियाँ–(हिं०स्त्री०) लँगोट, कौपीन।
तनी–(हिं० स्त्री०) अँगरखे आदि में पल्ला बाँधने के लिये लगा हुआ बन्द।
तनु–(सं० स्त्री०) शरीर, देह, चमड़ा, त्वचा; (स्त्री०) केंचुली; (वि०) कृश, दुबला-पतला, अल्प, सुन्दर, कोमल।
तनुज–(सं० पुं०) पुत्र, लड़का, बटा।
तनुजा–(सं०स्त्री०) पुत्री, बेटी, लड़की।
तनुता–(सं० स्त्री०) कृशता, दुर्बलता, छोटाई।
तनुत्याग–(सं० पुं०) देहत्याग।
तनुत्राण–(सं० पुं०) वह वस्तु जिससे शरीर की रक्षा हो, कवच।
तनुभव–(सं० पुं०) पुत्र, बेटा।
तनू–(सं० पुं०) पुत्र, बेटा, शरीर।
तनूरुह–(सं० पुं०) रोम, रोवाँ, पुत्र।
तनेना, तनैन–(हिं०वि०) तिरछा, खिचा हुआ, टेढ़ा, क्रुद्ध।
तनै–(हिं०पुं०) देखो तनय, बेटा।
तनोज–(हिं०पुं०) रोवाँ, पुत्र।
तनोरुह–(हिं०पुं०) देखो तनूरुह।
तन्तु–(सं० पुं०) सूत, तागा, सन्तान, ताँत, विस्तार, फैलाव।
तन्तुकीट–(सं० पुं०) रेशम का कीड़ा।
तन्तुनाभ–(सं० पुं०) लूता, मकड़ी।
तन्तुशाला–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर कपड़ा बुना जाता है।
तन्त्र–(सं०पुं०) सामग्री, राज्य, शासन, आनन्द, घर, सम्पत्ति, दल, समुदाय, उद्देश्य, दृढ़ विचार, उपाय।
तन्द्रता–(सं०स्त्री०) ऊँचाई, ऊँघ, आलस्य।
तन्द्रालु–(सं०वि०) आलस्ययुक्त, आलसी

तन्द्रिता–(सं०स्त्री०) निद्रालुता, आलस्य।
तन्द्री–(सं० स्त्री०) तन्द्रा, ऊँघ।
तन्ना–(हि०पुं०) बुनाई में लंब बल का सूत जो ताना जाता है।
तन्नी–(हि० स्त्री०) तराजू की रस्सी जिसमें पल्ला बँधा होता है।
तन्मनस्क–(सं० वि०) तन्मय।
तन्मय–(सं०वि०) दत्तचित्त, मन लगाये हुए, लवलीन।
तप–(सं० पुं०) तपस्या, ग्रीष्मकाल।
तपकना–(हि०क्रि०) टपकना, उछलना।
तपन–(सं० पुं०) सूर्य, ग्रीष्मकाल, जलन, दाह, ताप, आँच, धूप।
तपनमणि–(सं०पुं०) सूर्यकान्त मणि।
तपना–(हि०क्रि०) गरम होना, गरमी फैलाना, तपस्या करना।
तपनी–(हि० स्त्री०) वह स्थान जहां पर बैठकर जाड़े के दिनों में लोग आग तापते हैं, कौड़ा।
तपभूमि–(हि० स्त्री०) तपोभूमि।
तपवाना–(हि० क्रि०) गरम करने का काम दूसरे से कराना।
तपश्चरण, तपश्चर्या–(सं० स्त्री०) तप, तपस्या।
तपसाली–(हि०पुं०) तपस्वी।
तपसी–(हि० पुं०) तपस्या करनेवाला।
तपस्या–(सं० स्त्री०) तप, व्रतचर्या।
तपस्विनी–(सं० स्त्री०) तपस्या करनेवाली स्त्री।
तपस्वी–(सं० पुं०) तपस्या करनेवाला मनुष्य।
तपा–(सं० पुं०) ग्रीष्मऋतु।
तपाना–(हि० क्रि०) तप्त करना।
तपान्त–(सं०पुं०) ग्रीष्म ऋतु का अन्त।
तपाव–(हि० पुं०) तप, गरमाहट।
तपित–(सं०वि०) तप्त, उष्ण, गरम।
तपिया–(हि० पुं०) तपस्वी।
तपी–(हि० पुं०) तपस्वी, ऋषि, सूर्य।
तपेला–(हि० पुं०) भट्ठी।
तपोड़ी–(हि० स्त्री०) काठ का बना हुआ पात्र।
तपोबल–(सं०पुं०) तप का प्रभाव या शक्ति। **तपोवन**–(सं०पुं०) मुनियों का आश्रय-स्थान। **तपोवृद्ध**–(सं० वि०) जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।
तप्त–(सं०वि०) दग्ध, तपा हुआ, गरम, दुःखित, पीड़ित। **तप्तमुद्रा**–(सं० स्त्री०) शंख, चक्र आदि के लोहे या पीतल के छापे जिनको तपाकर वैष्णव लोग अपने शरीर पर दागते हैं।
तब–(हि०अव्य०) उस समय, इसलिये।
तबेला–(हि० पुं०) घोड़साल।
तब्बर–(हि० पुं०) पुत्र।
तभी–(हि० पुं०) उसी समय, इस कारण से।
तम–(सं० पुं०) अन्धकार, अँधेरा; (पुं०) मोह, अविद्या।
तमक–(सं०पुं०) उद्वेग, तीव्रता, क्रोध। **तमकना**–(हि०क्रि०) क्रोध का आवेश दिलाना।
तमगुन–(हि० पुं०) देखो तमोगुण।
तमङ्ग, तमंगक–(सं० पुं०) मचान।
तमचर–(हि०पुं०) राक्षस।
तमतमाना–(हि०क्रि०) अधिक गरमी या क्रोध के कारण चेहरा लाल होना, चमकना।
तमता–(सं० स्त्री०) अंधकार, अँधेरा।
तमलेट–(हि०पुं०) एक प्रकार का टीन या लोहे का छोटा पात्र।
तमस–(सं० पुं०) अन्धकार, अज्ञान।
तमांचा–(हि० पुं०) देखो तमाचा।
तमाखू–(हि० स्त्री०) एक प्रकार का

प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते तथा डंठल को लोग खाते और जलाकर धूम्रपान करते हैं
तमाचारी–(सं०पुं०) निशाचर, राक्षस।
तमारि–(हि०पुं०) दिनकर, सूर्य।
तमिस्र–(सं० पुं०) अन्धकार, क्रोध।
तमी–(सं० स्त्री०) रात्रि, रात। **तमीचर**–(सं० पुं०) निशाचर, दैत्य।
तमीपति, तमीश–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
तमोघ्न–(सं० वि०) अन्धकार को नाश करनेवाला; (पुं०) सूर्य, चन्द्रमा।
तमोभित्–(सं० पुं०) खद्योत, जुगनू; (त्रि०) अँधेरा दूर करनेवाला।
तमोभूत–(सं०वि०) अँधेरा किया हुआ, अज्ञानी, मूर्ख।
तमोमय–(सं० वि०) अन्धकारपूर्ण।
तमोर–(हि० पुं०) ताम्बूल, पान।
तमोलिन–(हि० स्त्री०) तमोली की स्त्री। **तमोली**–(हि० पुं०) तंबोली, पान बेचनेवाला।
तयना–(हि० क्रि०) देखो तपना।
तयार–(हि० वि०) बनाया हुआ।
तरंगा–(हि० पुं०) लहर।
तर–(सं० प्रत्य०) जो गुणवाचक शब्दों में दो वस्तुओं में से एक का उत्कर्ष या अपकर्ष सूचित करने के लिये प्रयुक्त होता है; यथा—श्रेष्ठतर, कष्टतर।
तरई–(हि० स्त्री०) तारा, नक्षत्र।
तरक–(हि० स्त्री०) देखो तड़क; (पुं०) सोच-विचार, तर्क, वह अक्षर या शब्द जो पृष्ठ के समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर लिखा जाता है।
तरकना–(हि० क्रि०) तर्क करना, सोच-विचार करना, उछलना, कूदना।
तरकस–(हि० पुं०) तीर रखने का चोंगा।
तरकी–(हि०स्त्री०) कान में पहिनने का एक प्रकार का गहना।
तरखा–(हि०स्त्री०) जल का तीव्र प्रवाह।
तरङ्ग–(सं० पुं०) लहर, हिलोरा, मन की मौज।
तरङ्गिणी–(सं० स्त्री०) सरिता, नदी।
तरङ्गित–(सं०वि०) लहराता हुआ, चञ्चल, चपल, नीचे-ऊपर उठता हुआ।
तरङ्गी–(सं०वि०) तरंगयुक्त, मनमौजी।
तरजना–(हि०क्रि०) डाँटना, डपटना।
तरजील–(हि० त्रि०) क्रोधयुक्त।
तरजनी–(हि० स्त्री०) अँगठे के पास की अँगुली।
तरण–(सं० पुं०) पानी पर तैरनेवाला पटरा, बड़ा; (पुं०) बेड़े पर बैठकर दूर देश को जाना, नदी पार करने की क्रिया, निस्तार, उद्धार।
तरणि–(सं० पुं०) बेड़ा, किरण, नाव।
तरणी–(सं० स्त्री०) नौका, नाव।
तरतम–(सं०वि०) न्यूनाधिक, थोड़ा-बहुत।
तरतराना–(हि० क्रि०) तड़तड़ शब्द करना।
तरन–(हि० पुं०) देखो तरण। **तरनतार**–(हि०पुं०) निस्तार, मुक्ति, मोक्ष।
तरनतारन–(हि० पुं०) मोक्ष, निस्तार, उद्धार।
तरना–(हि० क्रि०) पार करना, मुक्त होना, उद्धार होना।
तरनि–(हि० स्त्री०) देखो तरणि।
तरनी–(हि०स्त्री०) नौका, नाव, मिठाई का थाल या खोमचा रखने का छोटा मोढ़ा।
तरन्ती–(सं०स्त्री०) नौका, नाव।
तरपन–(हि० पुं०) देखो तर्पण।
तरपना–(क्रि० वि०) देखो तड़पना।
तरपर–(हि० क्रि० वि०) नीचे-ऊपर।
तरबूजिया–(हि०वि०) तरबूज के छिलके के रंग का।
तरराना–(हि० क्रि०) ऐंठना।

तरल–(सं०वि०) चंचल, हिलता हुआ, चपल, बहनवाला द्रव ।
तरलाई–(हिं०स्त्री०) द्रवत्व, चंचलता।
तरलित–(सं० वि०) थरथराता हुआ।
तरवड़ी–(हिं०स्त्री०) छोटी तराजू का पलड़ा।
तरवन–(हिं० पुं०) करनफूल।
तरवरिया–(हिं०पुं०) खड्ग चलानेवाला।
तरवा–(हिं० पुं०) देखो तलवा।
तरवाई, सिवाई–(हिं० स्त्री०) ऊँची-नीची भूमि।
तरवार–(हिं०स्त्री०) करवाल, खड्ग।
तरस–(हिं०पुं०) दया, करुणा।
तरसाना–(हिं० क्रि०) ललचाना।
तरस्थान–(सं० पुं०) नाव से उतरने-चढ़ने का स्थान, घाट।
तरस्वी–(सं०वि०) शूरवीर।
तरहर–(हिं०क्रि०वि०) नीचे की ओर; (वि०) नीचे का, निकृष्ट, अधम, बुरा।
तराई–(हिं० स्त्री०) पहाड़ के नीचे की घाटी।
तराबोर–(हिं० वि०) भींगा हुआ।
तरायला–(हिं० वि०) चपल, तीव्र।
तरारा–(हिं० पुं०) उछाल, छलाँग, किसी वस्तु पर निरन्तर गिरनवाली जल की धारा।
तरिका–(हिं० पुं०) कान में पहिनने का एक गहना, तरकी।
तरित–(सं० वि०) पार किया हुआ।
तरियाना–(हिं० क्रि०) तल में बैठाना।
तरिवन–(हिं०पुं०) तरकी, करनफूल।
तरिवर–(हिं०पुं०) देखो तरुवर, श्रेष्ठ वृक्ष।
तरिहंत–(हिं०क्रि०वि०) तल में, नीचे।
तरु–(सं० पुं०) वृक्ष, गाछ, पेड़।
तरुज–(सं० वि०) वृक्ष से उत्पन्न।
तरुजीवन–(सं० पु०) पेड़ की जड़।
तरुण–(सं० वि०) युवा, नूतन, नया।
तरुणाई–(हिं०पुं०) युवावस्था, जवानी।
तरुणी–(सं० स्त्री०) युवती।
तरुण–(हिं० पुं०) देखो तरुण।
तरुनाई–(हिं०स्त्री०) युवावस्था, जवानी।
तरुनापा–(हिं०पुं०) युवावस्था, जवानी।
तरुबाँही–(हिं०स्त्री०) वृक्ष की शाखा।
तरुमृग–(सं० पुं०) शाखामृग, बन्दर।
तरेंदा–(सं०पुं०) जल के तल पर तैरता हुआ काठ, बेड़ा।
तरे–(हिं० क्रि० वि०) नीचे की ओर, नीचे।
तरेरना–(हिं०क्रि०) दृष्टि कुपित करना।
तरोवर–(हिं० पुं०) देखो तरुवर, श्रेष्ठ वृक्ष।
तरौंस–(हिं० पुं०) तट, किनारा।
तरौना–(हिं० पुं०) स्त्रियों के कान में पहिनने की तरकी, कर्णफूल, मिठाई का खोमचा रखने का मोढ़ा।
तर्क–(सं०पुं०) आकांक्षा, परीक्षा, विचार, मीमांसा शास्त्र, तर्कशास्त्र, व्यंग, ताना।
तर्कवितर्क–(सं०पुं०) विवेचना, वाद-विवाद। तर्कविद्या–(सं०स्त्री०) न्याय-शास्त्र।
तर्कित–(सं० वि०) आलोचित, विचारा हुआ, अनुमान किया हुआ। तर्की–(हिं० वि०) तर्क करनेवाला।
तर्कुट–(सं० पुं०) कर्तन, कातना।
तर्कुटी–(सं० स्त्री०) तकला, टेकुआ।
तर्जन–(सं० पुं०) तिरस्कार, फटकार।
तर्जनी–(सं०स्त्री०) अँगूठे के पास की हाथ की अँगुली।
तर्जित–(सं० त्रि०) अपमान किया हुआ।
तर्पण–(सं०पुं०) संतोष होने की क्रिया, देवर्षि, पितर आदि को सन्तुष्ट करने के

लिये अँजुली में पानी भरकर जलदान देने की क्रिया।
तर्पित–(सं०वि०) सन्तुष्ट किया हुआ।
तर्पी–(सं० वि०) सन्तुष्ट करनेवाला।
तर्हि–(सं० अव्य०) उस समय, तब।
तल–(सं० पुं०) घर की छत, थप्पड़, तमाचा, अधोभाग, पेंदी, पाताल, हथली, पैर का तलवा।
तलक–(हिं० अव्य०) पर्यन्त, तक।
तलकर–(हिं० पुं०) वह कर या लगान जो भूस्वामी सूखे तालाब की भूमि पर लगाता है।
तलगू–(हिं०स्त्री०) तैलंग देश की भाषा।
तलभरा–(हिं० पुं०) भूमिगृह।
तलछट–(हिं० स्त्री०) किसी द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल, तलौंछ, गाद।
तलध्वनि–(सं० पुं०) हथेली (ताली) बजाने का शब्द।
तलना–(हिं०क्रि०) घी या तेल को खौलाकर इसमें किसी वस्तु को पकाना।
तलप–(हिं० पुं०) देखो तल्प।
तलपट–(हिं० वि०) नष्ट, चौपट।
तलप्रहार–(सं० पुं०) थप्पड़, तमाचा।
तलफना–(हिं० क्रि०) छटपटाना।
तलबेली–(हिं०स्त्री०) उत्कण्ठा, आतुरता।
तलमल–(सं० पुं०) तलछट, तरौंछ।
तलमलाना–(हिं० क्रि०) छटपटाना।
तलमलाहट–(हिं० स्त्री०) व्याकुलता।
तलयुद्ध–(सं० पुं०) मुक्के की लड़ाई करने की क्रिया।
तलवा–(हिं०पुं०) पैर के नीचे का भाग।
तलवार–(हिं० स्त्री०) करवाल, असि, खड्ग, कृपाण।
तलहटी–(हिं० स्त्री०) पहाड़ की तराई।
तला–(हिं०पुं०) किसी वस्तु के नीचे का तल, पेंदी, जूते के नीचे का चमड़ा।
तलाव–(हिं० पुं०) तालाब, ताल।
तलिन–(सं० पुं०) शय्या, पलंग।
तलिया–(हिं० स्त्री०) समुद्र की थाह।
तली–(हिं०स्त्री०) तल, पेंदी, तलछट, तलौंछ
तले–(हिं०क्रि०वि०) नीचे, नीचे की ओर।
तलेटी–(हिं० स्त्री०) तराई, घाटी।
तलैया–(हिं० स्त्री०) छोटा ताल।
तलौंछ–(हिं० स्त्री०) तलछट।
तल्प–(सं० पुं०) पलंग, शय्या।
तल्ला–(हिं० पुं०) तले की परत, अस्तर।
तल्लिका–(सं० स्त्री०) कुञ्जिका, कुञ्जी।
तल्ली–(सं० स्त्री०) नौका, नाव, युवती।
तवनी–(हिं० स्त्री०) छोटा तवा।
तवना–(हिं० क्रि०) तपना, गरम होना, कुढ़ना।
तवर्ग–(सं० पुं०) त, थ, द, ध, न—ये पाँच अक्षर। तवर्गीय–(सं० वि०) तवर्ग से उत्पन्न वर्ण।
तवारा–(हिं० पुं०) दाह, ताप, जलन।
तस–(हिं० वि०) तैसा, वैसा।
तसली–(हिं० स्त्री०) छोटा तसला।
तसू–(हिं० पुं०) इमारती गज का चौबीसवाँ अंश जो प्रायः सवा इंच के बराबर होता है।
तस्कर–(सं० पुं०) चोर, चोट्टा।
तस्करी–(सं० स्त्री०) चोर की स्त्री, चोरी का काम।
तस्मात्–(सं० अव्य०) इस कारण से, इसलिये।
तस्सू–(हिं० पुं०) देखो तसू।
तहँ, तहँवाँ–(हिं०क्रि०वि०) उस स्थान पर।
तह–(हिं०स्त्री०) परत, तल, पेंदी, थाह, झिल्ली, महीन पटल।
तहरी–(हिं० स्त्री०) बरी और चावल की खिचड़ी, मटर की खिचड़ी।

तहाँ–(हि०क्रि०वि०)वहाँ,उस स्थान पर।
तहाना–(हि०क्रि०)लपेटना, तह करना।
तहिया–(हि० क्रि०वि०) उस समय, तब।
तहियाना–(हि० क्रि०) तह लगाना।
ताहीं–(हि०क्रि०वि०)उसी स्थान पर, वहीं
ता–(सं० पुं०)विशेषण तथा संज्ञा शब्दों में लगाने का एक भाववाचक प्रत्यय; (सर्व०) उस; (वि०) उसका।
ताइ–(हि० स्त्री०)ताप, जाड़ा, चाची।
ताईं–(हि० अव्य०) पर्यन्त, समीप, निकट, पास।
ताऊ–(हि० पुं०) बड़ा चाचा।
ताँगा–(हि० पुं०) देखो टाँगा।
ताँत–(हि० स्त्री०)चमड़े या पशुओं की नसों से बनी हुई डोरी।
ताँतड़ी–(हि० स्त्री०) ताँत तन्तु।
ताँता–(हि० पुं०) पंक्ति।
ताँति–(हि० स्त्री०) देखो ताँत, तन्तु।
ताँतिया–(हि० वि०) जो ताँत की तरह पतला हो।
ताँती–(हि० स्त्री०) पंक्ति, क्रम।
ताँबा–(हि० पुं०) ताम्र, लाल रंग का एक मुलायम धातु जो पीटने से बढ़ सकता है।
ताँबूल–(सं० पुं०) पान।
ताँवर–(हि० स्त्री०) ताप जूड़ी, मूर्छा।
ताँसना–(हि० क्रि०) डाटना, डपटना।
ताक–(हि० स्त्री०)अवलोकन, टकटकी, प्रतीक्षा।
ताकझाँक–(हि० स्त्री०) देखभाल, छिपकर देखने की क्रिया, अन्वेषण, खोज।
ताकना–(हि० क्रि०) देखना, रखवाली करना, टकटकी लगाना।
ताग–(हि० पुं०) देखो तागा।
तागड़ी–(हि० स्त्री०) कटिसूत्र, करधनी।
तागना–(हि० क्रि०) सिलाई करना।
तागा–(हि० पुं०) सूत, डोरा, धागा।
ताजन, ताजना–(हि०पुं०)चाबुक, कोड़ा।
ताटंक–(सं० पुं०) तरकी, करनफूल।
ताड़–(सं०पुं०) ताड़न, प्रहार, आघात।
ताड़क–(स० वि०) प्रहार करनेवाला।
ताड़न–(सं० पुं०) आघात, प्रहार, शासन, दण्ड, डाँट-डपट, घुड़की।
ताड़ना–(सं० स्त्री०) प्रहार, शासन, कष्ट; (हि० क्रि०) डाँटना, डपटना, मारना, पीटना, छिपी हुई बात का पता लगा लेना।
ताड़नी–(हि० स्त्री०) कोड़ा, चाबुक।
ताड़नीय–(सं० वि०)शासन करने योग्य, दण्ड देने योग्य।
ताड़पत्र–(सं० पुं०) ताड़ का पत्ता।
ताड़ित–(सं० वि०) दण्डित, दूरीकृत।
ताड़ी–(हि०स्त्री०)वह मादक रस जो ताड़ के फूलते हुए डंठलों में से निकलता है।
ताड्य–(सं० वि०) ताड़न योग्य।
ताण्डव–(सं०पुं०)नृत्य,नाच,पुरुष का नाच
तात–(सं०पुं०) पिता, बाप, प्यार का शब्द जो भाई-बन्धु विशेष कर अपने से छोटे के लिये व्यवहार किया जाता है; (हि० वि०) गरम, उष्ण।
ताता–(हि०वि०)तपा हुआ, गरम, उष्ण।
ताताथई–(हि० स्त्री०) नाचने में पाद विक्षेप का शब्द।
तात्पर्य–(सं० पुं०) आशय, अभिप्राय।
तात्विक–(सं० वि०) तत्वज्ञान सम्बन्धी।
तादर्थिक–(सं० वि०)उसी अर्थ का, उसी तरह का। तादात्म्य–(सं० पुं०) तत्स्वरूपता।
तादृश–(सं० वि०) उसी तरह, उसी के समान, तत्तुल्य। तादृशी–(सं०स्त्री०) उसी के समान, वैसी।

ताधर्म्य–(सं०पुं०) एक धर्म, एक नियमता।
तान–(सं० स्त्री०) विस्तार, फैलाव, खींच, लय का विस्तार, आलाप।
तानना–(हिं० क्रि०) वेग से खींचना, बढ़ाना, प्रहार के लिये अस्त्र उठाना, परदा लगाना।
तानपूरा–(हिं० पुं०) तम्बूरा।
ताना–(हिं० पुं०) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लंबाई के बल में रहता है।
ताना–(हिं० क्रि०) तपाना, गरम करना, जाँचना।
तानारीरी–(हिं० स्त्री०) सामान्य गायन।
तानी–(हिं० स्त्री०) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लंबाई के बल हो।
तान्तव–(सं० पुं०) वस्त्र, कपड़ा।
तान्त्रिक–(सं० वि०) तन्त्र शास्त्र को जाननेवाला।
ताप–(सं० पुं०) उष्णता, आँच की लपट, ज्वर, कष्ट, यातना।
तापतिल्ली–(हिं० स्त्री०) प्लीहा रोग।
तापना–(हिं० क्रि०) अग्नि की गर्मी से अपने शरीर को गरम करना, फूंकना, नष्ट करना।
तापमान यन्त्र–(सं० पुं०) गरमी की मात्रा नापने का यन्त्र, जिसको अंग्रेजी में थर्मामीटर कहते हैं।
तापस–(सं० पुं०) तपस्या करनेवाला।
तापसी–(सं० स्त्री०) तपस्या करनेवाली स्त्री।
तापहर–(सं० वि०) ज्वर को दूर करनेवाला।
तापित–(सं० वि०) जो तपाया गया हो, दुःखित, पीड़ित। **तापी**–(सं० वि०) ताप देनेवाला।
ताबड़तोड़–(हिं० क्रि० वि०) लगातार क्रम से, बराबर।
ताम–(सं० पुं०) क्लेश, व्याकुलता, पाप; (हिं० पुं०) क्रोध, अन्धकार, अँधेरा।
तामड़ा–(हिं० वि०) ताँबे के समान रंग का; (पुं०) ऊदे रंग का एक प्रकार का पत्थर।
तामरस–(सं० पुं०) कमल, सोना, ताँबा।
तामरसी–(सं० स्त्री०) पद्मिनी, कमलिनी
तामस–(सं० पुं०) क्रोध, अज्ञान, मोह, अन्धकार, अँधेरा। **तामसी**–(सं० वि०) तमोगुणवाली।
ताम्बुली, ताम्बूल–(सं०) नागवल्ली, पान
ताम्र–(सं० पुं०) ताँबा नामक धातु।
ताम्रकार–(सं० पुं०) कसेरा जाति।
ताम्रपट्ट, ताम्रपत्र–(सं० पुं०) ताँबे की चद्दर का टुकड़ा जिस पर प्राचीन समय में दानपत्र आदि खुदवाये जाते थे।
ताँय–(हिं० अव्य०) तक।
ताय–(हिं० पुं०) ताप, गरमी, धूप, उष्णता, जलन; (सर्व०) देखो ताहि।
तायना–(हिं०क्रि०) तपाना, गरम करना।
ताया–(हिं० पुं०) पिता का बड़ा भाई।
तार–(सं० पुं०) रूपा, चाँदी, तारण, उद्धार, नक्षत्र, तारा; (वि०) निर्मल, स्वच्छ; (पुं०) ऊँचा स्वर, धातु का खींचकर बनाया हुआ सूत, वह सूत जिसमें से बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान को समाचार भेजा जाता है, सूत्र, तागा, परम्परा, क्रम, युक्ति, उपाय, व्यवस्था, सुविधा, संगीत का एक सप्तक, करताल, मजीरा।
तारक–(सं० पुं०) आँख की पुतली; (पुं०) नक्षत्र, तारा।
तारका–(सं० स्त्री०) तारा, नक्षत्र, आँख की पुतली।
तारघर–(हिं० पुं०) वह घर जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजा जाता है और प्राप्त होता है।

तारघाट–(हिं० पुं०) कार्यसिद्ध का योग, व्यवस्था।
तारण–(सं० पुं०) तेली, विष्णु; (वि०) उद्धार करनेवाला; (पुं०) पार उतरने की क्रिया, उद्धरण।
तारणि–(सं० स्त्री०) नौका, नाव।
तारतम्य–(सं० पुं०) न्यूनाधिक्य, कमी-बढ़ती का हिसाब।
तारतार–(हिं० वि०) उधड़ा हुआ।
तारन–(हिं० पुं०) देखो तारण।
तारना–(हिं० क्रि०) पार लगाना, उद्धार करना।
तारपीन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का तेल जो चीड़ के पेड़ से निकलता है।
तारबर्की–(हिं० पुं०) वह तार जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार पहुँचाया जाता है।
तारयिता–(सं० वि०) उद्धार करनवाला।
तारहार–(सं० पुं०) बड़े-बड़े मोतियों का हार।
तारा–(सं० स्त्री०) आँख की पुतली। **तारा टूटना**–उल्कापात। **तारा डूबना**–शुक्रास्त होना।
ताराधिप, ताराधीश, तारानाथ–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
तारापथ–(सं० पुं०) आकाश।
तारामण्डल–(सं० पुं०) नक्षत्रों का समूह।
तारिणी–(सं० वि०) उद्धार करनवाली।
तारुण–(सं० वि०) तरुण, छोटी अवस्था का
तारुण्य–(सं० पुं०) युवावस्था, यौवन।
तारेश–(हिं० पुं०) चन्द्रमा।
तार्किक–(सं० वि०) तर्कशास्त्र को जाननेवाला।
ताल–(सं० पुं०) करतल, हथेली, ताली, ताड़ का पेड़, उपनेत्र (चश्मे) के पत्थर या काँच का एक पल्ला, मजीरा, झाँझ वह शब्द जो जाँघ या बाहु पर हथेली मारने से उत्पन्न होता है, नाचने-गाने में उसके काल और क्रिया का परिमाण। **ताल ठोंकना**–लड़ने के लिये ललकारना।
तालपत्र–(सं० पुं०) ताड़ का पत्ता।
तालबन्द–(हिं० पुं०) वह हिसाब जिसमें आय का प्रत्येक मद अलग-अलग दिखलाया जाता है।
तालमेल–(हिं० पुं०) मेल-जोल, सुअवसर।
तालरस (सं० पुं०) ताड़ का मद्य, ताड़ी।
तालव्य–(सं० वि०) तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण, इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य और श–ये वर्ण तालव्य हैं।
ताला–(हिं० पुं०) किवाड़ संदूक, आदि में बन्द करने का वह यन्त्र जो विशिष्ट ताली से ही खुलता है।
ताला-कुञ्जी–(हिं० स्त्री०) वह यन्त्र जिससे किवाड़ सन्दूक, आदि बन्द किया जाता है, लड़कों का एक खेल।
तालाब–(हिं० पुं०) जलाशय, सरोवर।
तालवेली–(हिं० स्त्री०) व्याकुलता।
तालिका–(सं० स्त्री०) तालपत्र अथवा कागज का पुलिन्दा, सूची, ताली-कुंजी।
ताली–(सं० स्त्री०) कुंजी, मेहराब के बीचोबीच का पत्थर या ईंट, हथेलियों को परस्पर पीटने की क्रिया।
तालु–(सं० पुं०) मुख के भीतर ऊपर की ओर की पूरी छत।
तालू–(हिं० पुं०) मुख के भीतर की ऊपरी छत।
तालेवर–(हिं० वि०) धनाढ्य, धनी।
ताव–(हिं० पुं०) वह उष्णता जो किसी वस्तु को गरम करने या पकाने के लिये दी जावे, क्रोध का आवेश, अहंकार, कागज का एक तख्ता।
तावकीन–(सं० वि०) त्वदीय, तुम्हारा।

तावत्–(सं० अव्य०) उतने परिमाण का, उतना, उतनी देर तक, वहाँ तक।
तावना–(हि०क्रि०) तपाना, गरम करना।
तावन्मात्र–(सं० वि०) उतने ही परिमाण का, उतना।
तावभाव–(हि०पुं०)परिस्थिति, अवसर।
तावर–(सं० पुं०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
तावरी–(हि०स्त्री०) दाह, ताप, गर्म धूप।
तावीष–(सं० पुं०) स्वर्ग, समुद्र, सोना।
ताश–(हि० पुं०) खेलने के लिये मोटे कागज का आयताकार टुकड़ा जिस पर लाल या काले रंग की बूटियाँ या तस्वीरें बनी रहती हैं।
तासु–(हि० सर्व०) उसका।
तासों–(हि० सर्व०) उससे।
ताहि–(हि० सर्व०) उसको, उसे।
ताहीं–(हि० अव्य०) ता, तई।
तिआह–(हि०पुं०)किसी पुरुष का तीसरा विवाह।
तिकड़ी–(हि० स्त्री०) वह जिसमें तीन कड़ियाँ हों।
तिकोना–(हि० वि०) तीन कोनेवाला, एक प्रकार का नमकीन पकवान, समोसा। **तिकोनिया**–(हि० वि०) तीन कोने का, त्रिकोण।
तिक्का–(हि० स्त्री०) वह ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ रहती हैं।
तिक्ख–(हि०वि०)तीक्ष्ण, तीखा, चोखा।
तिक्त–(सं० वि०) तीते रसवाला, तीता, कड़वा। **तिक्तता**–(सं० स्त्री०) तीतापन, कड़वापन।
तिक्ष–(हि० वि०) तीक्ष्ण, तीता, चोखा।
तिक्षता–(हि० स्त्री०) तीक्ष्णता, चोखापन, तेजी।
तिखटी–(हि० स्त्री०) देखो टिकठी।
तिखाई–(हि०स्त्री०)तीक्ष्णता, तीखापन।
तिखारना–(हि० क्रि०) सहेजना।
तिखूंटा–(हि० वि०) त्रिकोण, जिसमें तीन कोने हों, तिकोना।
तिगना–(हि०क्रि०)दृष्टि डालना, देखना।
तिगुना–(हि० वि०) तीन गुना।
तिग्म–(सं० वि०) तीक्ष्ण, तेज। **तिग्मकर**–(सं० पुं०) सूर्य, तेज, प्रकाश।
तिग्मता–(सं० स्त्री०) तीक्ष्णता।
तिच्छ–(हि० वि०) तीक्ष्ण। **तिच्छन**–(हि० वि०) तीक्ष्ण।
तिजरा–(हि० पुं०) तीसरे दिन आनेवाला ज्वर, तिजारी।
तिजोरी–(हि० स्त्री०) लोहे की सन्दूक।
तिड़ी–(हि० स्त्री०) ताश का वह पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ हों। **तिड़ी करना**-(हि० क्रि०) हटा देना।
तिड़ीबिड़ी–(हि०वि०) छितराया हुआ
तित–(हि० क्रि० वि०) तहाँ, वहाँ, इधर की ओर, उस ओर।
तितउ-(सं०पुं०) छलनी, चलनी, छाता।
तितना–(हि० क्रि० वि०) उतने परिमाण का।
तितर बितर–(हि० वि०) अव्यवस्थित।
तितली–(हि० स्त्री०) एक उड़नेवाला रङ्गबिरङ्गे पर का कीड़ा या फतिंगा।
तितलौआ–(हि०पुं०)कड़ुवा कद्दू, तितलौकी।
तितिक्ष–(सं० वि०) सहनशील।
तितिक्षा–(सं० स्त्री०) सरदी-गरमी सहन करने का सामर्थ्य, क्षमा, शान्ति।
तितिक्षु–(सं० वि०)क्षमाशील, सहिष्णु।
तितिर–(सं०पुं०)तीतर नाम का पक्षी।
तितीर्षा–(सं० स्त्री०) तैरने की अभिलाषा,तर जाने की इच्छा, **तितीर्षु**–(सं० वि०) तैरने की इच्छा करनेवाला,

जो निस्तार प्राप्त करने की इच्छा करता हो।
तित्तिर–(सं० पुं०) तीतर नामक पक्षी।
तिते–(हिं०वि०) उतने, उतनी संख्या का।
तितेक-(हिं० वि०) उतना। **तितै**–(हिं० क्रि० वि०) वहाँ, उधर, वहीं।
तितो-(हिं० क्रि० वि०) उतना।
तिथि–(सं० स्त्री०) चान्द्रमास के अलग-अलग दिन।
तिदरी–(हिं० स्त्री०) वह कोठरी जिसमें तीन खिड़कियाँ हों।
तिधर-(हिं० क्रि०वि०) उस ओर, उधर।
तिन–(हिं०सर्व०) 'तिस' का बहुवचन; (पुं०) तृण, तिनका।
तिनकना–(हिं०क्रि०) चिढ़ना, क्रुद्ध होना।
तिनका–(हिं०पुं०) तृण, सूखी घास का टुकड़ा।
तिनगना-(हिं० क्रि०) देखो तिनकना।
तिनधरा-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तिकोनी रेती।
तिनपहल, तिनपहला–(हिं०वि०) जिसमें तीन पहल हों, तीन पहलवाला।
तिनूका–(हिं० पुं०) तृण, तिनका।
तिन्ना–(हिं० पुं०) तिन्नी नामक धान।
तिन्नी–(हिं० स्त्री०) तालों में होनेवाला एक प्रकार का छोटा धान।
तिन्ह-(हिं० सर्व०) देखो तिन।
तिपत्ति–(हिं०स्त्री०) देखो तृप्ति।
तिपल्ला–(हिं० वि०) जिसमें तीन परत हों।
तिपाई–(हिं०स्त्री०) तीन पावे की छोटी ऊँची चौकी, तीन पल्ले की कोई वस्तु।
तिबारा–(हिं०वि०) तीसरी बार; (पुं०) वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों, तीन बार उतारा हुआ अर्क या मद्य।
तिबासी–(हिं० वि०) वह खाद्य पदार्थ जो तीन दिन का बासी हो।
तिम–(हिं० पुं०) ढक्का, नगाड़ा, डंका।
तिमि–(हिं० अव्य०) उसी प्रकार से।
तिमिङ्गिल–(सं०पुं०) ह्वेल नामक मछली
तिमिर–(सं० पुं०) अन्धकार, अँधेरा।
तिमिरारि–(सं० पुं०) सूर्य।
तिमुहानी–(हिं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ तीन सड़कें मिली हों।
तिय–(हिं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
तिया–(हिं० पुं०) वह ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ हों।
तिरकाना–(हिं०क्रि०) रस्सा ढीला करना।
तिरखा–(हिं० स्त्री०) तृषा, प्यास।
तिरखित–(हिं० वि०) देखो तृषित।
तिरखूँटा–(हिं० वि०) तिकोना।
तिरछाई–(हिं० स्त्री०) तिरछापन।
तिरछा–(हिं० वि०) तिर्यक्, तिरश्चीन, जो ठीक सामने न जाकर इधर-उधर फिर गया हो। **तिरछाई**–(हिं० स्त्री०) तिरछापन। **तिरछाना**–(हिं० क्रि०) तिरछा होना।
तिरछी–(हिं० स्त्री०) रहर के तिरछे दाने
तिरछौंहा–(हिं० वि०) जो कुछ तिरछापन लिये हो। **तिरछौंहें**–(हिं० क्रि० वि०) वक्रता से, तिरछापन लिये हुए।
तिरना–(हिं० क्रि०) पानी के तल के ऊपर रहना, तराना, मुक्त होना।
तिरनी–(हिं० स्त्री०) घाघरा बाँधने की डोरी, नीवी।
तिरपट, तिरपटा–(हिं० वि०) तिरछा, टेढ़ा, ऐंचा।
तिरपन–(हिं० वि०) पचास और तीन की संख्या का; (पुं०) यह संख्या ५३।
तिरपाई–(हिं० स्त्री०) तीन पावे की छोटी ऊँची चौकी।

तिरपाल–(हिं० पुं०) रंग चढ़ा हुआ टाट।
तिरपित–(हिं० वि०) देखो तृप्त, संतुष्ट
तिरपौलिया–(हिं०पुं०) वह बड़ा स्थान जिसमें तीन बड़े फाटक हों।
तिरबेनी–(हिं० स्त्री०) देखो त्रिवेणी।
तिरशूल–(हिं० पुं०) देखो त्रिशूल।
तिरश्चीन–(सं० वि०) तिरछा, टेढ़ा।
तिरसठ–(हिं० वि०) साठ और तीन की संख्या का; (पुं०) साठ और तीन की संख्या ६३।
तिरस्करिणी–(सं० स्त्री०) परदा, कनात, चिक, ओट, आड़। **तिरस्करी**–(हिं० स्त्री०) परदा, चिक।
तिरस्कार–(सं० पुं०) अनादर, अपमान। **तिरस्कारी**–(सं०वि०) अपमान करनेवाला। **तिरस्कृत**–(सं० वि०) अपमान किया हुआ। **तिरस्क्रिया**–(सं० स्त्री०) तिरस्कार, अपमान।
तिरानबे–(हिं०वि०) नब्बे और तीन की संख्या का; (पुं०) नब्बे और तीन की संख्या ९३।
तिराना–(हिं० स्त्री०) पानी के तल पर ठहरना, उतराना।
तिरास–(हिं० पुं०) देखो त्रास। **तिरासना**–(हिं० क्रि०) कष्ट देना।
तिरासी–(हिं० वि०) अस्सी और तीन की संख्या का; (पुं०) अस्सी और तीन की संख्या ८३।
तिराहा–(हिं० पुं०) तिरमुहानी।
तिरिन–(हिं० पुं०) तृण, घास।
तिरिया–(हिं० स्त्री०) स्त्री।
तिरीछा–(हिं० वि०) देखो तिरछा।
तिरेंदा–(हिं० पुं०) समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिये रखा जाता है।
तिरोगत–(सं० वि०) अदृश्य। **तिरोध**–(हिं० स्त्री०) अन्तर्धान।
तिरोधान–(सं० पुं०) अन्तर्धान, अदर्शन।
तिरोधायक–(सं० पुं०) छिपानेवाला।
तिरोभाव–(सं०पुं०) अदर्शन, आच्छादन। **तिरोभूत**–(सं०वि०) गुप्त, छिपा हुआ।
तिरोहित–(सं०वि०) अन्तर्हित, अदृष्ट।
तिरौंछा–(हिं० वि०) तिरछा, तिर्यक्।
तिर्यक्–(सं० वि०) वक्र, तिरछा, टेढ़ा।
तिर्यग्गति–(सं० स्त्री०) वक्रगति, तिरछी चाल। **तिर्यग्योनि**–(सं० स्त्री०) पशु-पक्षी आदि जीव।
तिर्यग्जाति–(सं० स्त्री०) पशु-पक्षियो की जाति।
तिर्यग्धार–(सं०पुं०) तीव्र धारवाला।
तिर्यग्नासा–(सं०वि०) टेढ़ी नाकवाला।
तिर्यग्योनि–(सं० स्त्री०) पशु, पक्षी, सर्प आदि।
तिलंगा–(हिं० पुं०) अंग्रेजी सेना का देशी सिपाही, एक प्रकार की बड़ी कनकैया या पतंग।
तिल–(हिं०पुं०) एक पौधा जिसमें काले या सफेद दाने होते हैं, इसको पेरकर तेल निकाला जाता है जो "मीठा तेल" कहलाता है, शरीर पर का काले रंग का छोटा धब्बा, गोदना जो काली बिन्दी के आकार का होता है, आँख की पुतली के बीच की गोल बिन्दी।
तिलक–(सं० पुं०) ललाट आदि स्थानो में चन्दनादि द्वारा धारण करने का चिह्न, राज्याभिषक, स्त्रियों के मस्तक पर धारण करने का एक आभूषण, विवाह-संबंध स्थिर करने की एक रीति, किसी ग्रन्थ की अर्थबोधक व्याख्या; (वि०) श्रेष्ठ, शिरोमणि।
तिलकना–(हिं० क्रि०) ताल आदि को मिट्टी का सूखकर फट जाना।
तिलकमुद्रा–(सं० पुं०) चन्दन आदि का

टीका और शंख, चक्र आदि का छाप जिसको वैष्णव लोग लगाते हैं।
तिलका–(सं०स्त्री०) कण्ठ में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण। **तिलकालक**–(सं०पुं०) शरीर पर के तिल के आकार का काला चिह्न।
तिलकिट्ट–(सं० पुं०) तिल की खली।
तिलकित–(सं०त्रि०) अंकित, छापा हुआ
तिलकी–(सं०वि०) तिलक लगाये हुए।
तिलकुट–(हिं० पुं०) तिल को कूटकर चीनी मिलाकर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई।
तिलखलि–(सं०स्त्री०) तिल की खली।
तिलचावली–(हिं० स्त्री०) तिल और चावल की खिचड़ी।
तिलचूर्ण–(सं० पुं०) तिलकुट।
तिलछना–(हिं० क्रि०) व्यग्र होना।
तिलज–(सं० पुं०) तिल का तेल।
तिलड़ा–(हिं० वि०) तीन लरवाला।
तिलड़ी–(हिं०स्त्री०) तीन लड़ियों की बनी हुई माला।
तिलपट्टी, तिलपपड़ी–(हिं० स्त्री०) खाँड़ या गुड़ में पागे हुए तिलों की पपड़ी।
तिलपिष्टक–(सं०पुं०) तिल की पीठी।
तिलमिल–(हिं० स्त्री०) चकाचौंध।
तिलमिलाना–(हिं०क्रि०) चकाचौंध होना
तिलमोदक–(हिं० पुं०) तिल का बना हुआ लड्डू।
तिलरस–(सं० पुं०) तिल का तेल।
तिलवट–(हिं०पुं०) तिलपट्टी, तिल पपड़ी।
तिलवा–(हिं०पुं०) तिल का लड्डू।
तिलशकरी–(हिं०स्त्री०) तिल पपड़ी।
तिलस्नेह–(सं०पुं०) तिल का तेल।
तिलहन–(हिं०पुं०) वे पौध जिनके बीजों से तेल निकाला जाता है।
तिलाञ्जलि–(सं०स्त्री०) मृतक संस्कार का एक अंग जो शव के जल जाने के बाद स्नान करते समय किया जाता है, इसमें अँजुली में पानी भरकर इसमें तिल डालकर मृतक के नाम पर छोड़ा जाता है।
तिलान्न–(सं० पुं०) तिल की खिचड़ी।
तिलाम्बु–(सं० पुं०) तिल मिला हुआ जल।
तिलावा–(हिं० पुं०) बड़ा कुवाँ।
तिलिया–(हिं० पुं०) सरपत, सरकंडा।
तिली–(हिं० स्त्री०) तिल, तिल्ली।
तिलोक–(हिं० पुं०) देखो त्रैलोक। **तिलोकपति**–(हिं० पुं०) त्रैलोक्यपति, विष्णु। **तिलोकी**–(हिं० पुं०) देखो त्रिलोकी। **तिलोचन**-(हिं०पुं०) महादेव
तिलोदक--(सं० पुं०) तिल मिला हुआ जल, देखो तिलाञ्जलि।
तिलौंछना–(हिं० क्रि०) तेल पोतकर चिकना करना। **तिलौंछा**–(हिं०वि०) जिसमें तेल लगा हो, जिसमें तेल का स्वाद हो।
तिलौरी–(हिं० स्त्री०) तिल मिलाकर बनाई हुई बरी।
तिल्ली–(हिं० स्त्री०) प्लीहा, पिलही, तिल नामक अन्न।
तिवास–(हिं०पुं०) तीन दिन का काल।
तिवासी–(हिं० वि०) देखो तिवासी।
तिष्ठना–(हिं० क्रि०) ठहरना।
तिस–(हिं० सर्व०) का, ता, तिस पर, ऐसा होने पर, ऐसी स्थिति में।
तिराना–(हिं० स्त्री०) देखो तृष्णा।
तिसरायत–(हिं० स्त्री०) तीसरा होने का भाव। **तिसरैत**–(हिं० पुं०) एक तीसरा मनुष्य जो झगड़ा तय करता है, मध्यस्थ, तीसरे अंश का मालिक।
तिसाना–(हिं० क्रि०) प्यासा होना।

तिहत्तर–(हिं० वि०) सत्तर और तीन की संख्यावाला; (पुं०) सत्तर और तीन की संख्या, ७३।
तिहरा–(हिं० वि०) देखो तेहरा।
तिहराना–(हिं०क्रि०) तिबारा करना।
तिहवार–(हिं० पुं०) त्योहार, पर्व का दिन; तिहवारी–(हिं०स्त्री०) मिष्टान्न, फल आदि जो उत्सव के दिन संबंधियों के घर भेजे जाते हैं।
तिहाई–(हिं० पुं०) तृतीयांश।
तिहायत–(हिं० पुं०) तिसरैत, मध्यस्थ।
तिहारा, तिहारो–(हिं०सर्व०) तुम्हारा।
तिहाव–(हिं० पुं०) रोष, क्रोध, झगड़ा
तिहि–(हिं० सर्व०) देखो तेहि।
तिहूं–(हिं० वि०) तीन, तीनों।
तिहैया–(हिं० पुं०) तृतीयांश, तीसरा भाग
ती–(हिं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
तीछण, तीक्षन–(हिं० वि०) तीक्ष्ण।
तीक्ष्ण–(सं० वि०) उग्र, प्रचण्ड, तीव्र, प्रखर, तीखा, तेज धारवाला, असह्य।
तीक्ष्णदृष्टि–(सं० स्त्री०) सूक्ष्म दृष्टि, जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो।
तीक्ष्णधार–(सं० पुं०) खड्ग, तलवार; (वि०) पैनी धारवाला। तीक्ष्णाग्र–(सं० वि०) तीखी नोकवाला, जिसकी नोक तेज हो। तीक्ष्णायस–(सं० पुं०) पक्का लोहा, इस्पात।
तीख–(हिं० वि०) देखो तीक्ष्ण, तीखा।
तीखन–(हिं० वि०) देखो तीक्ष्ण।
तीखा–(हिं० वि०) जिसकी नोक या धार पैनी हो, प्रचण्ड, उग्र स्वभाव का।
तीखुर, तीखल–(हिं० पुं०) तवक्षीर, हल्दी की जाति का एक प्रकार का पौधा इसकी जड़ से आरारूट तैयार किया जाता है।
तीछ–(हिं० वि०) देखो तीक्ष्ण।
तीज–(हिं०स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि।
तीतर–(हिं० पुं०) एक वेग से दौड़नेवाला छोटा पक्षी।
तीता–(हिं० वि०) तिक्त, तीखे-चरपरे स्वाद का, कटु, कड़वा।
तीतुरी–(हिं० स्त्री०) देखो तितली।
तीतुल–(हिं० पुं०) देखो तितल, तित्तिर
तीन–(हिं० वि०) जो दो से एक अधिक हो; (पुं०) दो और एक के योग से बनी हुई संख्या।
तीनि–देखो तीन।
तीय, तीया–(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।
तीर–(सं०पुं०) नदी आदि का किनारा, तट।
तीरथ–(हिं० पुं०) देखो तीर्थ।
तीरवर्ती–(सं०वि०) तट पर रहनेवाला।
तीरस्थ–(सं० वि०) तीरस्थित, तीर पर रहनेवाला।
तीरा–(हिं० पुं०) देखो तीर।
तीरान्तर–(सं० पुं०) दूसरे पार।
तीर्ण–(सं०वि०) जो पार गया हो, हराया हुआ।
तीर्थ–(सं० पुं०) पुण्य स्थान, मन्त्री, गुरु, पात्र, शास्त्र, यज्ञ, क्षत्र, राष्ट्र की अठारह सम्पत्तियाँ, तारक, मोक्ष देनेवाला, संन्यासियों की एक उपाधि, अवसर। तीर्थपद–(सं० पुं०) हरि।
तीर्थराज–(सं० पुं०) प्रयाग तीर्थ।
तीर्थसेवा–(सं० स्त्री०) तीर्थ-यात्रा।
तीर्थसेवी–(सं०वि०) तीर्थ-यात्रा करनेवाला।
तीर्थाटन (सं०पुं०) तीर्थयात्रा, तीर्थसेवा।
तीवर–(सं० पुं०) मछुवा, बहेलिया।
तीवरी–(सं०स्त्री०) तीवर जाति की स्त्री

तीव्र–(सं० वि०) अत्यन्त तीक्ष्ण, बहुत गरम, असह्य, तीखा, प्रचण्ड, कड़ुआ ।
तीव्रता–(सं० स्त्री०) उष्णता, तीक्ष्णता ।
तीव्र वेदना–(सं० स्त्री०) अत्यन्त पीड़ा ।
तीस–(हिं० वि०) बीस और दस की संख्या का; (पुं०) बीस और दस की संख्या ३० ।
तीसरा–(हिं०वि०) जो दो के बाद आता हो ।
तीसी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का तिलहन अनाज, अलसी ।
तु–(सं० अव्य०) निरर्थक पादपूरक शब्द, तो ।
तुंदैला–(हिं० वि०) लम्बोदर, तोंदवाला ।
तुअ–(हिं० सर्व०) तुव, तव, तुम्हारा ।
तुअना–(हिं० क्रि०) गिर पड़ना ।
तुअर–(हिं० पुं०) अरहर, आढकी ।
तुई–(हिं० स्त्री०) कपड़े पर बनी हुई एक प्रकार की बेल ।
तुक–(हिं० स्त्री०) मैत्री, अन्त्यानुप्रास, पद्य के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षर का परस्पर मेल ।
तुकान्त–(हिं०स्त्री०) पद्य के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल ।
तुकार–(हिं० स्त्री०) अशिष्ट संबोधन, 'तू तू' करके बोलने की रीति ।
तुकारना–(हिं० क्रि०) तू तू करके पुकारना ।
तुक्कड़–(हिं० पुं०) वह जो भद्दी कविता बनाता हो ।
तुख–(हिं० पुं०) छिलका, भूसा ।
तुङ्ग–(सं० वि०) उन्नत, ऊँचा, उग्र, प्रचंड, प्रधान । **तुङ्गता**–(सं० स्त्री०) उच्चता, ऊँचाई ।
तुङ्गत्व–(सं० पुं०) तुङ्गता । **तुङ्गमुख**–(सं० पुं०) गण्डक, गैंडा ।
तुच, तुचा–(हिं० स्त्री०) देखो त्वचा ।
तुचार–(हिं० वि०) तीखा, पैना ।
तुच्छ–(सं० वि०) क्षुद्र, निःसार खोखला, अल्प, थोड़ा । **तुच्छता**–(सं० स्त्री०) नीचता, अल्पता, ओछापन ।
तुच्छत्व–(सं० पुं०) ओछापन ।
तुजह–(हिं० स्त्री०) धनुष, कमान ।
तुझ–(हिं० सर्व०) 'तू' शब्द का वह स्वरूप जो प्रथमा और षष्ठी विभक्ति के सिवाय अन्य विभक्तियों के पहिले लगाया जाता है । **तुझे**–(हिं० सर्व०) "तू" का कर्म और सम्प्रदान का रूप ।
तुट–(हिं० वि०) अल्प मात्रा में, थोड़ा-सा ।
तुट्टना–(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना ।
तुड़वाना–(हिं० क्रि०) तोड़ने का काम दूसरे से कराना । **तुड़ाई**–(हिं० स्त्री०) तोड़ने की क्रिया या भाव ।
तुड़ाना–(हिं० क्रि०) तोड़ने का काम किसी दूसरे से कराना ।
तुड़म–(हिं० पुं०) तुरुही, बिगुल ।
तुण्ड–(सं० पुं०) मुख, मुँह, चोंच, थूथुन ।
तुण्डिका–(सं० स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी ।
तुण्डिल–(सं० वि०) तोंदीला ।
तुण्डी–(सं० वि०) चोंचवाला, मखवाला, थूथुनवाला; (स्त्री०) नाभि ढोंढ़ी ।
तुतरा–(हिं० वि०) देखो तोतला ।
तुतराना–(हिं० क्रि०) तुतलाकर बोलना । **तुतरौहा**–(हिं० वि०) देखो तोतला ।
तुतलना–(हिं० क्रि०) शब्दों तथा अक्षरों का शुद्ध उच्चारण न करना, अस्पष्ट टूटे-फूटे शब्द बोलना ।
तुत्थ–(सं० पुं०) तूतिया नामक उपधातु, नीलाथोथा ।
तुदना–(सं०पुं०) पीड़ा देने की क्रिया, व्यथा

तुनीर–(हि० पुं०) देखो तूणीर।
तुन्द–(सं० पुं०) उदर, पेट। तुन्दी–(सं० स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी।
तुन्दिक, तुन्दिकर–(सं० वि०) तोंदवाला, बड़े पेटवाला।
तुन्दिका–(सं० स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी।
तुन्दिन–(सं० वि०) उभड़े हुए पेटवाला
तुन्दिभ, तुन्दिल–(सं० वि०) स्थूलोदर, तोंदीला।
तुन्न–(हि० वि०) पीड़ित, दुःखित, फटा हुआ।
तुपक–(हिं० स्त्री०) छोटी तोप या बन्दूक, कड़ाबीन।
तुभना–(हिं० क्रि०) स्तब्ध रहना।
तुम–(हिं० सर्व०) 'तू' शब्द का बहुवचन का रूप।
तुमड़ी–(हिं० स्त्री०) सूखे कद्दू का बना हुआ बाजा जिसको सँपेरे बजाते ह महुवर।
तुमरा–(हिं० सर्व०) देखो तुम्हारा।
तुमल–(हिं० वि०) देखो तुमुल, प्रचण्ड।
तुमाना–(हिं० क्रि०) रुई के तुनने का काम दूसरे से कराना।
तुमुर, तुमुल–(सं० पुं०) सेना का कोलाहल, लड़ाई का शब्द; (वि०) प्रचण्ड, उग्र
तुम्बा–(सं० स्त्री०) कड़वा कद्दू, कद्दू का बना हुआ जलपात्र।
तुम्बी–(सं० स्त्री०) छोटा कद्दू।
तुम्ह–(हिं० सर्व०) देखो तुम। तुम्हारा (हिं० सर्व०) 'तु' का सम्बन्ध कारक का रूप। तुम्हें–(हि० सर्व०) तुमको।
तुरंग–देखो तुरग।
तुरंत–(हिं० क्रि० वि०) झटपट, जल्दी से।
तुर–(सं० वि०) वेगवान्।
तुरग–(हिं० पुं०) घोड़ा; (वि०) शीघ्रगामी।
तुरगारोह–(सं० पुं०) अश्वारोही।
तुरगीय–(सं० वि०) अश्व संबंधी।
तुरगुला–(हिं० पुं०) लोलक, कर्णफूल।
तुरङ्ग, तुरङ्गक–(सं० पुं०) घोड़ा; (वि०) शीघ्र चलनेवाला।
तुरङ्गम–(सं० पुं०) घोड़ा, चित्त; (वि०) शीघ्र चलनेवाला। तुरङ्गमशाला–अश्वशाला। तुरङ्गमेध–अश्वमेध।
तुरत–(हिं० अव्य०) तत्क्षण, शीघ्र।
तुरपई–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की कपड़ा मोड़कर सीने की विधि।
तुरपन–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सिलाई। तुरपना–(हिं० क्रि०) तुरपन की सिलाई करना।
तुरही–(हिं० स्त्री०) मुंह से फुलाकर बजाने का एक बाजा।
तुराई–(हिं० स्त्री०) रुई से भरा हुआ गद्दा।
तुराना–(हिं० क्रि०) व्यग्र होना, घबड़ाना।
तुराय–(हि० क्रि० वि०) आतुरता से।
तुरास–(हि० पुं०) वेग।
तुरीय–(सं० वि०) गतियुक्त, चतुर्थ, उद्धार करनेवाला।
तुरुप–(हि० पुं०) ताश का एक खेल जिसमें कोई एक रंग प्रधान मान लिया जाता है।
तुरुपना–(हिं० क्रि०) देखो तुरपना।
तुरुही–(हिं० स्त्री०) देखो तुरही।
तुर्य–(सं० वि०) चतुर्थ, चौथा। तुर्यगोल–समय जानने का एक प्राचीन यन्त्र।
तुर्या–(सं० स्त्री०) वह ज्ञान जिससे मुक्ति प्राप्त होती है।
तुल–(हि० वि०) देखो तुल्य, बराबर।
तुलना–(हिं० क्रि०) तौला जाना, पूरित होना, भरना, तुल्य होना, तौल में बराबर होना, गाड़ी के पहिये के धुरे में घी, चर्बी आदि भरना; (सं० स्त्री०) सादृश्य, उपमा, समता, बराबरी।

तुलबुली–(हिं० स्त्री०) शीघ्रता।
तुलवाई–(हिं० स्त्री०) तौलने का पारिश्रमिक, पहिये को औंगने का शुल्क।
तुलवाना–(हिं० क्रि०) तौल कराना, गाड़ी के पहिये को औंगवाना।
तुलसी–(सं० स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसको हिन्दू लोग अति पवित्र मानते हैं। तुलसीदल–तुलसी की पत्ती। तुलसीदास–भारतवर्ष के एक सर्वप्रधान भक्त कवि जो सरयूपारीण ब्राह्मण थे।
तुला–(सं० स्त्री०) सादृश्य, तुलना, तराजू। तुलाई–(हिं० स्त्री०) तौलने का भाव या काम, रूई भरा हुआ दोहरा कपड़ा, दुलाई।
तुलाकूट–(सं० स्त्री०) तौलने में कसर करनेवाला, डाँड़ी मारनेवाला।
तुलाकोटि–(सं० स्त्री०) तराजू की डंडी जिसके दोनों ओर रस्सी में पलड़े बँधे होते हैं।
तुलादण्ड–(सं० पुं०) मानदण्ड, नापने की डंडी। तुलादान–(सं० पुं०) एक महादान जिसमें किसी मनुष्य के तौल के बराबर द्रव्य का दान होता है।
तुलाना–(हिं० क्रि०) पूरा होना, गाड़ी के पहिये में चिकना देना।
तुलाग्रह–(सं० पुं०) तुलादण्ड, तराजू में बँधी हुई डोरी। तुलामान–(सं० पुं०) तुलादण्ड, बाँट, बटखरा।
तुलायन्त्र–(सं० पुं०) तराजू।
तुलासूत्र–(सं० पुं०) तराजू की रस्सी जिसमें पलड़े बँधे रहते हैं।
तुलि–(सं० स्त्री०) जुलाहे की कूँची, चित्रकार की कूंची।
तुलिका–(सं० स्त्री०) कूंची।
तुलित–(सं० वि०) तुला हुआ।
तुल्य–(सं० वि०) सदृश, समान, बराबर।
तुल्याकृति–(सं० वि०) जो देखने में समान आकृति हो।
तुव–(हिं० सर्व०) देखो तव।
तुवर–(सं० पुं०) कसैला रस; (वि०) कसैला, तीता।
तुष–(सं० पुं०) अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी।
तुषाग्नि, तुषानल–(सं० पुं०) भूसी या करसी की आँच।
तुषार–(सं० पुं०) हिम, हिमकण, पाला; (वि०) जो स्पर्श करने में अति शीत जान पड़े। तुषारकाल–शीतकाल। तुषारकिरण–चन्द्रमा। तुषारपाषाण–ओला।
तुष्ट–(सं० वि०) सन्तुष्ट, तृप्त, प्रसन्न। तुष्टना–(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट होना, तृप्त होना।
तुष्टि–(सं० स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति।
तुस–(सं० पुं०) तूष, भूसी।
तुसार–(हिं० पुं०) देखो तुषार।
तुसी–(हिं० स्त्री०) छिलका, भूसी।
तुहार–(हिं० सर्व०) तुम्हारा।
तुहिं–(हिं० सर्व०) तुझे, तुमको।
तुहिन–(सं० पुं०) हिम, पाला, कुहिरा।
तू–(हिं० सर्व०) यह शब्द उस पुरुष के साथ प्रयुक्त होता है जिसको सम्बोधन करके कुछ कहा जाता है; (स्त्री०) कुत्ते को पुकारने का शब्द।
तूं–(हिं० सर्व०) देखो तू।
तूंबना–(हिं० क्रि०) देखो तूमना।
तूंबा–(हिं० पुं०) गोल लौकी, तितलौकी। तूंबी–(हिं० स्त्री०) सूखे कद्दू का बनाया हुआ जलपात्र।
तूख–(हिं० पुं०) तिनके या सींक का टुकड़ा।
तूटना–(हिं० क्रि०) देखो टूटना।

तूठना–(हिं०क्रि०) तृप्त होना, प्रसन्न होना
तूण–(सं० पुं०) तूणीर, तरकश।
तूणी, तूणीक–(सं० पुं०) देखो तूण।
तूणी–(सं० स्त्री०) तरकश।
तूणीर–(सं० पुं०) तरकश।
तूतिया–(हिं० पुं०) नीलाथोथा।
तूनीर–(हिं० स्त्री०) देखो तूणीर।
तूबर–(सं० पुं०) बिना सींग का बैल, बिना दाढ़ी मूंछ का मनुष्य, कसैला रस; (वि०) जिसमें कसैलापन हो।
तूमड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो तुम्बी।
तूमना–(हिं०क्रि०) रूई के गोले के रेशों को अलग-अलग करना।
तूय–(सं० पुं०) जल, पानी, शीघ्रता।
तूर–(सं० पुं०) नगाड़ा, तुरही नामक बाजा; (हिं० स्त्री०) जुलाहे के करगह की लंबी लकड़ी, अरहर का पौधा।
तूरण, तूरन–(हिं०क्रि०वि०) देखो तूर्ण।
तूर्त–(हिं० पुं०) शीघ्रता, जल्दी।
तूल–(सं० पुं०) आकाश, कपास, सेम्हर आदि के ढोंढ़े के भीतर का घुआ; (हिं० पुं०) एक प्रकार का लाल रंग का कपड़ा, गहरा रंग; (हिं० वि०) तुल्य, सदृश, समान। तूलता–(हिं० स्त्री०) समता, बराबरी। तूलना–(हिं० क्रि०) गाड़ी के पहिये के धुरे में चिकना पोतना, बराबर होना।
तूलनलिका, तूलनाली–(सं० स्त्री०) पिजिका, प्यूनी।
तूला–(सं० स्त्री०) कपास, रूई।
तूली, तूलिका–(सं० स्त्री०) चित्रकार की रंग भरने की कूंची।
तूवर–(सं० पुं०) कसैला रस; (वि०) कसैले रस का।
तूष्णीं–(सं० अव्य०) मौन, चुप।
तूष्णीक–(सं० वि०) मौन साधनेवाला।
तूष्णीभूत–(सं० वि०) मौन, चुपचाप।
तूस–(हिं० पुं०) भूसी, भूसा, पहाड़ी बकरे का ऊन।
तूसना–(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट करना।
तृखा–(हिं० स्त्री०) देखो तृषा, प्यास।
तृजग–(हिं० वि०) देखो तिर्यक्, टेढ़ा।
तृण–(सं० पुं०) नरकट, सरपत, घास।
तृणकुटी–(सं० स्त्री०) तृण से छाई हुई मड़ई। तृणप्राय–(सं० वि०) निकृष्ट, निकम्मा। तृणराज–(सं०पुं०) नारियल या ताड़ का वृक्ष, बाँस।
तृणाग्नि–(सं० पुं०) घास-फूस की आग।
तृणान्न–(सं० पुं०) तिन्नी का चावल।
तृणोल्का–(सं०स्त्री०) घास-फूस की मसाल।
तृणवान–(सं० वि०) तृणयुक्त।
तृतीय–(सं० वि०) तीसरा। तृतीयक–(सं० पुं०) तीसरे दिन आनेवाला ज्वर, तिजरिया। तृतीयांश–(सं०पुं०) तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीया–(सं० स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि, तीज, व्याकरण में करण कारक।
तृतीयाश्रम–(सं०पुं०) वानप्रस्थ आश्रम।
तृपति–(हिं० स्त्री०) देखो तृप्ति।
तृपित–(हिं० वि०) देखो तृप्त, संतुष्ट।
तृपिता–(हिं० स्त्री०) तृप्ति।
तृप्त–(सं०वि०) तृप्तियुक्त, अघाया हुआ।
तृप्ताना (हिं० क्रि०) तृप्त होना।
तृप्ति–(सं० स्त्री०) सन्तोष।
तृफला–(हिं० स्त्री०) हर्रा, बहेड़ा और आमला ये तीन फल।
तृषा–(सं० स्त्री०) आकांक्षा, अभिलाषा, इच्छा, लोभ, प्यास। तृषालु, तृषानु–(सं० वि०) पिपासित, प्यासा। तृषावंत–(हिं० वि०) प्यासा।
तृषित–(सं०वि०) प्यासा, लोभी, लालची।
तृष्णा–(सं०स्त्री०) प्यास, लोभ, लालच।

तेईस–(हिं० वि०) बीस और तीन की संख्या का; (पुं०) बीस और तीन की संख्या, २३। **तेईसवाँ**–(हिं०वि०) जो क्रम से तेईस के स्थान पर हो।

तें–(हिं० प्रत्य०) से, द्वारा।

तेंतालिस–(हिं०वि०) चालीस और तीन की संख्या का; (पुं०) चालीस और तीन की संख्या ४३। **तेंतालिसवाँ**–(हिं० वि०) जो क्रम में तेंतालिस के स्थान पर हो।

तेंतीस–(हिं० वि०) तीस और तीन की संख्या का; (पुं०) तीस और तीन की संख्या ३३। **तेंतीसवाँ**–(हिं० वि०) जो क्रम से तेंतीसवें स्थान पर हो।

ते–(हिं० अव्य०) वे; (सर्व०) वे लोग।

तेखना–(हिं० क्रि०) रोष दिखलाना।

तेज, तेजस–(सं० पुं०) दीप्ति, चमक, प्रभाव, बल, पराक्रम, प्रताप, साहस, सामर्थ्य।

तेजःपुञ्ज–(सं० पुं०) आभा का समूह।

तेजधारी–(हिं० वि०) तेजस्वी, प्रतापी।

तेजवन्त, तेजवान–(हिं० वि०) तेजस्वी, वीर्यवान्, बली, चमकीला।

तेजस–(सं० पुं०) देखो तेज।

तेजसी–(हिं० वि०) तेजयुक्त, तेजस्वी।

तेजस्कर–(सं०वि०) तेज की वृद्धि करनेवाला।

तेजस्विता–(सं० वि०) तेज की वृद्धि; (सं० स्त्री०) प्रभावशालिता।

तेजस्वी–(सं० वि०) तेजयुक्त, प्रतापी।

तेजोधातु–(सं० पुं०) पित्त। **तेजोमय**–(सं० वि०) ज्योतिर्मय। **तेजोमूर्ति**–(सं० पुं०) सूर्य; (वि०) जिसमें अधिक तेज हो, तेज से परिपूर्ण। **तेजोराशि**–(सं० पुं०) तेज का समूह।

तेतना–(हिं० वि०) तितना, उतना।

तेता–(हिं०वि०) उस प्रमाण का, उतना।

तेतीस–(हिं० वि०) देखो तेंतीस।

तेतालीस–(हिं० वि०) देखो तेंतालिस।

तेतिक–(हिं०वि०) उसका, उस प्रमाण का।

तेतो–(हिं० वि०) देखो तेता।

तेरस–(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।

तेरह–(हिं० वि०) दस और तीन की संख्या का; (पुं०) दस और तीन की संख्या १३। **तेरहवाँ**–(हिं० वि०) जो क्रम में तेरह के स्थान में हो।

तेरा–(हिं० सर्व०) संबंध कारक सर्वनाम का मध्यम पुरुष एकवचन।

तेरो–(हिं० सर्व०) तेरा।

तेल–(हिं०पुं०) किसी बीज या वनस्पति आदि से निकाला हुआ स्निग्ध पदार्थ।

तेलहंडा–(हिं० पुं०) तेल रखने का बड़ा पात्र। **तेलहंडी**–(हिं० स्त्री०) तेल रखने का छोटा पात्र। **तेलहन**–(हिं० पुं०) वे बीज जिनमें से तेल निकाला जाता है।

तेलहा–(हिं० वि०) तेलयुक्त, जिसमें तेल पड़ा हो।

तेलिन–(हिं० स्त्री०) तेली की स्त्री।

तेलिया–(हिं० वि०) जो तेल की तरह चिकना और चमकीला हो; (पुं०) काला चमकीला रंग, काले चमकीले रंग का घोड़ा।

तेली–(हिं० पुं०) हिन्दुओं में एक शूद्र जाति जो सरसों, तीसी, तिल आदि पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करती है।

तेवरना–(हिं० क्रि०) भ्रम में पड़ना।

तेवहार–(हिं० पुं०) त्योहार, उत्सव।

तेवान–(हिं० पु०) चिन्ता। तेवाना–(हिं० क्रि०) चिन्ता करना, सोचना, विचारना।
तेह–(हिं० पुं०) क्रोध, अहंकार, घमंड।
तेहरा–(हिं०वि०) तीन परत किया हुआ, त्रिगुणित, तिगुना। तेहराना–(हिं० क्रि०) तीन बार करना।
तेहवार–(हिं० पुं०) देखो त्योहार।
तेहा–(हिं० पुं०) घमण्ड, अहंकार।
तेहि–(हिं० सर्व०) उसको, उसे।
तेही–(हिं० वि०) अभिमानी, घमंडी।
तैंतालिस–(हिं० वि०) देखो तेंतालिस।
तैंतीस–(हिं० वि०) देखो तेंतीस।
तैं–(हिं० क्रि० वि०)से, तें; (सर्व०) तू।
तै–(हिं० वि०) जिसका निर्णय हो चुका हो, समाप्त, जो पूरा हो चुका हो।
तैखाना–(हिं० पुं०) भूमिगृह।
तैतिक्ष–(सं० वि०) क्षमाशील।
तैतिर–(सं० पुं०) तीतर पक्षी।
तैतिल–(सं० पुं०) गण्डक, गैंड़ा।
तैत्तिर–(सं० पुं०) तीतर पक्षी, गैंड़ा।
तैनाती–(हिं० स्त्री०) नियुक्ति।
तैयारी–(हिं० स्त्री०)तत्परता, समारोह, सजावट, धूमधाम।
तैरना–(हिं० क्रि०) पानी के ऊपर उतराना, हाथ-पैर हिलाते हुए पानी म चलना। तैराई–(हिं० स्त्री०) तैरने की क्रिया। तैराक–(हिं० वि०) तैरनेवाला। तैरना–(हिं० क्रि०) तैरने का काम दूसरे से कराना।
तैर्थ–(सं० वि०) तीर्थ सम्बन्धी।
तैलकार–(सं० पुं०)तेल पेरनेवाला, तेली।
तैलकिट्ट–(सं० पुं०) तेल का मैल, खली।
तैलयन्त्र–(सं० पुं०)तेल पेरने का कोल्हू।
तैलाक्त–(सं० वि०) जिसमें तेल पोता हुआ हो।
तैलिक–(सं० पुं०) तेल पेरनेवाला, तला।
तैलिन–(सं० वि०) तैलयुक्त।
तैसा–(हिं० वि०)उस प्रकार का, वैसा।
तैसे–(हिं०क्रि०वि०)उस प्रकार से, वैसे।
तों–(हिं० क्रि० वि०) देखो त्यों।
तोंद–(हिं० स्त्री०)पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग, पेट का फुलाव। तोंदल–(हिं० वि०) तोंदवाला।
तोंदा–(हिं० पुं०) तालाब का पानी निकालने का मार्ग, लक्ष्य का अभ्यास करने के लिये मिट्टी की भीत या टीला, राशि, ढेर।
तोंदी–(हिं० स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी।
तोंदीला, तोंदैल–(हिं० वि०)देखो तोंदल।
तोंबा–(हिं० पुं०) देखो तुम्बा। तोंबी–(हिं० स्त्री०) देखो तुम्बी।
तो–(हिं० सर्व०) तेरा; (अव्य०) उस स्थिति में, तब; (अव्य०) जोर देने के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होता है। (सर्व०)तुझ (व्रजभाषा में प्रयुक्त होता है)
तोइ–(हिं० पुं०) तोय, जल, पानी।
तोख–(हिं० पुं०) सन्तोष। तोखना–(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट करना।
तोटका–(हिं० पुं०) देखो टोटका।
तोड़–(हिं० पुं०) तोड़ने की क्रिया, नदी की तीव्र धारा, प्रतीकार।
तोड़न–(सं० पुं०) चीरने का काम, मारने का काम। तोड़ना–(हिं० पुं०) टुकड़े करना, किसी संस्था या संगठन को नष्ट करना, दूर करना, किसी वस्तु के खरीदन के लिये दाम घटाकर तय करना।
तोड़, तोड़ा–(हिं० पुं०) सोने या चाँदी की चौड़ी लच्छेदार सिकड़ी जो हाथों में पहिनी जाती है, रुपया रखने की टाट की थैली,किनारा,तट,घाटा, टोटा, कमी।

तोड़ाई–(हिं० स्त्री०) देखो तुड़ाई।
तोड़ाना–(हिं० क्रि०) देखो तुड़ाना।
तोण–(हिं० पुं०) तूण, तरकश।
तोत–(हिं० पुं०) राशि, ढेर। तोतकर–(हिं० पुं०) पपीहा।
तोतर, तोतरा–(हिं० वि०) देखो तोतला। तोतराना–(हिं० क्रि०) देखो तुतलाना। तोतला–(हिं० वि०) तुतला कर बोलनेवाला।
तोती–(हिं० स्त्री०) सुग्गी।
तोद–(सं० पुं०) व्यथा, पीड़ा; (वि०) कष्ट पहुँचानेवाला। तोदन–(सं० पुं०) चमोटी, चाबुक।
तोपना–(हिं० क्रि०) ढाँपना, बन्द करना।
तोपाना–(हिं० क्रि०) ढाँपने का काम दूसरे से कराना।
तोम–(हिं० पुं०) समूह, ढेर।
तोमर–(सं० पुं०) भाले की तरह का भारत का एक प्राचीन अस्त्र।
तोय–(सं० पुं०) जल, पानी। तोयकर्म–(सं० पुं०) तर्पण। तोयक्रीड़ा–(सं० स्त्री०) जलक्रीड़ा। तोयधार, तोयधारा–(सं० पुं०) मेघ, बादल। तोयधि–(सं० पुं०) समुद्र, सागर। तोयनिधि–(सं० पुं०) समुद्र, सागर।
तोयालय–(सं० पुं०) समुद्र, सागर।
तोर–(हिं० पुं०) अरहर।
तोरण–(सं० पुं०) किसी घर या नगर का बाहरी फाटक, बन्दनवार।
तोरन–(हिं० पुं०) देखो तोरण।
तोरना–(हिं० क्रि०) देखो तोड़ना।
तोरा–(हिं० सर्व०) तेरा।
तोराना–(हिं० क्रि०) देखो तुड़ाना।
तोरावान्–(हिं० वि०) तीव्र, तेज, वेगवान्।
तोल–(हिं० स्त्री०) देखो तौल। तोलन–(सं० पुं०) तौलने की क्रिया, उठाने की क्रिया। तोलना–(हिं० क्रि०) देखो तौलना। तोलवाना–(हिं० क्रि०) देखो तौलवाना।
तोला–(हिं० पुं०) बारह माशे या छानबे रत्ती की तौल, इस तौल का बाँट।
तोष–(सं० पुं०) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता; (वि०) अल्प, थोड़ा। तोषक–(सं० वि०) तुष्टिकारक। तोषण–(सं० पुं०) सन्तुष्ट करने की क्रिया। तोषना–(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट होना या करना, तृप्त होना।
तोषित–(सं० वि०) तृप्त, सन्तुष्ट। तोषी–(सं० वि०) तृप्त करनेवाला। तोष्य–(सं० वि०) सन्तुष्ट करने योग्य।
तोस–(हिं० पुं०) देखो तोष।
तोसक–(हिं० पुं०) रूईदार गद्दा।
तोहरा–(हिं० सर्व०) तुम्हारा।
तोहि–(हिं० सर्व०) तुझको, तुमको, तुझे।
तौंस–(हिं० स्त्री०) धूप से उत्पन्न प्यास जो किसी तरह न बुझे। तौंसना–(हिं० क्रि०) गरमी के कारण सन्तप्त होना। तौंसा–(हिं० पुं०) अधिक गरमी या ताप।
तौ–(हिं० क्रि० वि०) तो।
तौन–(हिं० सर्व०) वह, जो।
तौनी–(हिं० स्त्री०) रोटी सेंकने का छोटा तवा, तई।
तौरा–(हिं० पुं०) वह रस्सी जिससे मथानी घुमाई जाती है, नेमी।
तौरि–(हिं० स्त्री०) घुमरी, चक्कर।
तौल–(सं० पुं०) तुला, तराजू।
तौलना–(हिं० क्रि०) जोखना, तारतम्य जानना, साधना। तौलाई–(हिं० स्त्री०) तौलने का कार्य, तौलने का शुल्क। तौलाना–(हिं० क्रि०) तौलने का काम दूसरे से कराना।

तौलिया–(हिं०स्त्री०) शरीर पोंछने के काम में आनेवाला मोटा अँगौछा।
तौसना–(हिं० क्रि०) गरमी के कारण व्याकुल होना।
त्यक्त–(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
त्यजन–(सं० पुं०) त्याग, छोड़ने का काम। त्यजनीय–(सं० वि०) त्याग करने योग्य। त्यज्यमान–(सं० वि०) जो छोड़ दिया जावे।
त्याग–(सं०पुं०) उत्सर्ग, छोड़ने का काम, सम्बन्ध न रखने की क्रिया। त्यागना–(हिं० क्रि०) त्याग करना, छोड़ना।
त्यागपत्र–(सं० पुं०) दानपत्र, वह पत्र जिसमें किसी तरह के त्याग का उल्लेख हो। त्यागवान्–(सं० वि०) त्यागी, जिसने त्याग किया हो।
त्यागशील–(सं०वि०) दानशील, उदार।
त्यागी–(सं० वि०) सांसारिक सुख को छोड़नेवाला, विरक्त, शूर।
त्याज्य–(सं० वि०) छोड़ने योग्य।
त्यार–(हिं० वि०) देखो तैयार।
त्यूं, त्यों–(हिं० क्रि० वि०) उसी प्रकार, उसी तरह से, उसी समय, तत्काल।
त्योरी–(हिं० स्त्री०) दृष्टि, चितवन, अवलोकन।
त्योहार–(हिं० पुं०) उत्सव-दिन, पर्व का दिन।
त्योहारी–(हिं०स्त्री०) त्योहार के उपलक्ष में मिठाई, धन इत्यादि देना।
त्यौं–(हिं० क्रि० वि०) देखो त्यों, उस प्रकार से।
त्यौहार–(हिं० पुं०) देखो त्योहार, पर्व दिन।
त्यौहारी–(हिं० स्त्री०) देखो त्योहारी।
त्रपा–(सं० स्त्री०) लज्जा, लाज।
त्रपु–(सं० पुं०) सीसा नामक धातु।
त्रय–(सं० पुं०) त्रितय, तीसरी संख्या।
त्रयी–(सं०स्त्री०) तीन वस्तुओं का समूह।
त्रयोदशी–(सं० स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की तेरहवीं तिथि, तेरस।
त्रष्टा–(सं० पुं०) तष्टा, तश्तरी।
त्रसन–(सं० पुं०) उद्वेग, भय।
त्रसाना–(हिं० क्रि०) धमकाना, डराना।
त्रसित–(सं०वि०) भयभीत, डरा हुआ।
त्राण–(सं० पुं०) रक्षा, बचाव, कवच।
त्रात–(सं० वि०) रक्षा किया हुआ।
त्रातव्य–(सं० वि०) रक्षा करने योग्य।
त्राता, त्रातार–(सं० पुं०) रक्षक, बचानेवाला।
त्रायमाण–(सं०वि०) रक्ष्यमाण, बचानेवाला।
त्रास–(सं० पुं०) डर, भय, कष्ट।
त्रासक, त्रासकर–(सं० पुं०) भयभीत करनेवाला, डरानेवाला।
त्रासन–(सं० पुं०) भयोत्पादन, डराने का काम। त्रासनीय–(वि०) ताड़नीय, दण्ड देने योग्य। त्रासना–(हिं० क्रि०) भय दिखलाना, डराना। त्रासित–(सं० वि०) त्रस्त, भयभीत।
त्राहि–(सं० क्रि०) रक्षा करो, बचाओ।
त्रि–(सं० वि०) तीन। त्रिकाल–भूत, भविष्य, वर्तमान। त्रिभुवन–स्वर्ग, मर्त्य, पाताल। त्रिगुण–सत्व, रज, तम।
त्रिक–(सं० पुं०) तीन का समूह, कटि भाग, तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।
त्रिकटु–(सं० पुं०) सोंठ, मिर्च, पीपल ये तीन कटु पदार्थ।
त्रिकण्टक–(सं० पुं०) गोखरू, त्रिशूल।
त्रिकाम, त्रिकाय–(सं० पुं०) बुद्धदेव।
त्रिकाल–(सं० पुं०) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल, प्रातः मध्याह्न और सन्ध्या। त्रिकालज्ञ–(सं० पुं०) सर्वज्ञ।
त्रिकुटी–(सं० स्त्री०) दोनों भौंहों के बीच के ऊपर का स्थान।

त्रिकूट–(सं०पुं०) तीन शिखरवाला पर्वत।
त्रिकोण–(सं० पुं०) त्रिभुज क्षेत्र, तीन कोनवाला क्षेत्र।
त्रिखा–(हिं० स्त्री०) देखो तृषा, प्यास।
त्रिगण–(सं० पुं०) धर्म, अर्थ और काम, त्रिवर्ग।
त्रिगुण–(सं० पुं०) सत्व, रज तथा तम इन तीनों गुणों का समूह।
त्रिगुणित–(सं० वि०) त्रिरावृत, तिगुना किया हुआ।
त्रिजामा–(हिं०स्त्री०)देखो त्रियामा, रात्रि
त्रिज्या–(सं० स्त्री०) वह रेखा जो किसी वृत्त में केन्द्र से परिधि तक खींची गई हो, व्यासार्ध रेखा।
त्रितय–(सं० पुं०) सन्निपात ज्वर; (वि०) तीन प्रकार का।
त्रितल–(सं०वि०) तीन खण्ड का घर।
त्रिदश–(सं० पुं०) देवता; (वि०) तीस।
त्रिदिव–(सं० पुं०) स्वर्ग, आकाश, सुख।
त्रिदिवेश–(सं० पुं०) देवता।
त्रिदोष–(सं०पुं०) वात, पित्त और कफ।
त्रिधा–(सं० क्रि० वि०) तीन प्रकार से।
त्रिधातु–(सं० पुं०) सोना, चाँदी और ताँबा य तीनों धातु।
त्रिधारा–(सं० स्त्री०) तीन पहलवाला सेहुड़।
त्रिन–(हिं० पुं०) देखो तृण, तिनका।
त्रिनयन(नेत्र)–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
त्रिनाभ–(सं० पुं०) विष्णु।
त्रिपथ–(सं० पं०) तिरमुहानी। **त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी**–(सं०स्त्री०) गंगा।
त्रिपादिका–(सं० स्त्री०) तिपाई।
त्रिपिताना–(हिं० क्रि०) संतुष्ट होना या करना।
त्रिपिष्टप–(सं० पुं०) स्वर्ग, आकाश।
त्रिपुट–(सं० पुं०) तीन किनारा।
त्रिपुटक–(सं० पुं०) त्रिभुज।
त्रिपुण्ड–(सं० पुं०) भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग ललाट पर लगाते हैं।
त्रिपुरुष–(सं० पुं०) पिता, पितामह और प्रपितामह, शिव, महादेव।
त्रिपौलिया–(हिं० स्त्री०) देखो तिरपौलिया।
त्रिफला–(सं० स्त्री०) हर्रा, बहेड़ा और आमले का फल।
त्रिवलि–(सं० स्त्री०) पेट में पड़नेवाली तीन बल या रेखा।
त्रिभाग–(सं० पुं०) तृतीय भाग।
त्रिभुज–(सं० पुं०) तीन भुजाओं का क्षेत्र, वह समतल जो तीन रेखाओं से घिरा हो; (वि०) तीन पद या भुजयुक्त।
त्रिभुवन–(सं० पुं०) त्रिलोक।
त्रिमात्रिक–(सं० वि०) जिसमें तीन मात्रायें हों।
त्रिमार्ग–(सं० पुं०) तिरमुहानी।
त्रिमुकुट–(सं० पुं०) जिस पहाड़ में तीन शिखर हों।
त्रिमूर्ति–(सं० पुं०) ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीन देवता।
त्रिमूर्ध–(सं०वि०)जिसके तीन मस्तक हों।
त्रियम्बक–(सं० पुं०) त्रिनेत्र, महादेव।
त्रिया–(हिं० स्त्री०) स्त्री, औरत।
त्रियामा–(सं० स्त्री०) निशा, रात्रि।
त्रियुग–(सं० पुं०) वसन्त आदि तीन ऋतु, सत्य युग, त्रेता और द्वापर ये तीन युग।
त्रिलोक–(सं० पुं०) त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।
त्रिलोकीनाथ–(सं० पुं०) परमेश्वर, ईश्वर।
त्रिलोचन–(सं० पुं०) शिव, महादेव।

त्रिवर्ग–(सं०पुं०) धर्म, अर्थ और काम, त्रिफला, त्रिकटु, वृद्धि, स्थिति और क्षय, सत्व, रज और तम ये तीनों गुण, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये प्रधान जातियाँ।

त्रिवर्ण–(सं०पुं०) तीन प्रधान रंग, काला, लाल और पीला रंग।

त्रिवर्त्मगा–(सं० स्त्री०) त्रिपथगा, गंगा।

त्रिवर्षीय–(सं० वि०) तीन वर्ष का, तीन वर्ष ठहरनेवाला।

त्रिवार–(सं० वि०) तीन बार।

त्रिविध–(सं० वि०) तीन प्रकार का।

त्रिविष्टप–(सं० पुं०) स्वर्ग।

त्रिवेणी–(सं० स्त्री०) तीन नदियों का सङ्गम, प्रयाग में वह स्थान जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम है।

त्रिवेद–(सं०पुं०) ऋक, यजु और साम ये तीनों वेद।

त्रिवेनी–(हिं० स्त्री०) देखो त्रिवेणी।

त्रिशत–(सं० पुं०) तीन सौ।

त्रिशाख–(सं०वि०) तीन शाखायुक्त।

त्रिशिख–(सं० पुं०) त्रिशूल, किरीट।

त्रिशूल–(सं० पुं०) एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिर पर तीन फल होते हैं।

त्रिषित–(हिं० वि०) देखो तृषित।

त्रिसङ्गम–(सं० पुं०) तीन नदियों के मिलने का स्थान।

त्रिसन्ध्य–(सं० पुं०) प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या ये तीन काल।

त्रिसर्ग–(सं० पुं०) सत्व, रज और तम ये तीनों गुण, सृष्टि।

त्रिस्रोता–(सं० स्त्री०) गंगा नदी।

त्रुटि–(सं० स्त्री०) न्यूनता, अभाव, संशय।

त्रुटित–(सं० वि०) टूटा-फूटा हुआ।

त्रुटिस्वीकार–(सं० पुं०) दोष की स्वीकृति।

त्रुटी–(हिं० स्त्री०) देखो त्रुटि।

त्रै–(हिं० वि०) तीन।

त्रैकालिक–(सं० वि०) तीनों काल में अर्थात् सर्वदा रहनेवाला।

त्रैगुणिक–(सं० वि०) तीन बार गुणा किया हुआ।

त्रैध–(सं० अव्य०) तीन प्रकार से।

त्रैमासिक–(सं० वि०) तीन महीने का, हर तीसरे महीने होनेवाला।

त्रैराशिक–(सं० पुं०) गणित की वह क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशि से चौथी अज्ञात राशि निकाली जाती है।

त्रैलोक, त्रैलोक्य–(सं० पुं०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

त्रैविद्य–(सं० पुं०) तीनों वेदों का जाननवाला।

त्रोटक–(सं० वि०) छेदक, भेदक; (पुं०) दृश्य काव्य का एक भेद।

त्रोण, त्रोन–(हिं० पुं०) तरकस।

त्र्यंश–(सं० पुं०) तिगुना अंश, तिगुना भाग।

त्र्यक्षर–(सं० पुं०) प्रणव, ओंकार।

त्र्यध्वगा–(सं० स्त्री०) गङ्गा।

त्र्यम्बक–(सं० पुं०) शिव, महादेव।

त्र्याह–(स० पुं०) तीन दिन का काल।

त्र्यायुष–(सं० पुं०) बाल्य, यौवन और स्थविर ये तीन अवस्थायें।

त्र्याहिक–(सं० पुं०) तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।

त्वक्–(सं० पुं०) छिलका, छाल, खाल, चमड़ा, स्पर्श करने की इन्द्रिय।

त्वचकना–(हिं० क्रि०) पचकना।

त्वचा–(सं०स्त्री०) चमड़ा, छाल, वल्कल, केंचुली।

त्वत्कृत–(सं० वि०) तुमसे किया हुआ।

त्वदीय–(सं० स्त्री०) तुम्हारा।

त्वरा–(सं० स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी।
त्वरारोह–(सं० पुं०) पारावत, कबूतर।
त्वरावान–(सं० पुं०)शीघ्रता करनेवाला
त्वरित–(सं० पुं०) शीघ्र, जल्दी; (क्रि० (वि०) जल्दी से।
त्वष्टा–(स० पुं०) विश्वकर्मा, बढ़ई।

थ

थ–हिंदी तथा संस्कृत वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन तथा तवर्ग का दूसरा अक्षर,इसका उच्चारण-स्थान दन्तमूल है।
थ–(सं०पुं०)पर्वत, भय, आहार; (वि०) भयरक्षक।
थंका–(हि० पुं०) थोक में।
थंब, थंभ–(हि० पुं०) स्तम्भ, खंभा, सहारा।
थंभन–(हि० पुं०) स्तम्भन, रुकावट।
थंभना–(हि० क्रि०) देखो थमना।
थंभित–(हि० वि०) स्थिर, निश्चल।
थक–(हि० पुं०) देखो थाक।
थकना–(हि० क्रि०) शिथिल होना, अशक्त होना।
थकान–(हि० स्त्री०) शिथिलता, थकावट। थकाना–(हि०क्रि०)शिथिल करना।
थकार–(सं० पुं०) 'थ' स्वरूप अक्षर।
थकाव, थकावट–(हि० स्त्री०) शिथिलता, थकान का भाव; (हि० वि०) श्रान्त, शिथिल, थका हुआ।
थकिया–(हि०स्त्री०) वह मोटी तह जो किसी गाढ़ी वस्तु के जमने से बन जाती है।
थकौहाँ–(हि० वि०) शिथिल।
थक्का–(हि० पुं०) जमा हुआ कतरा, किसी गाढ़ी वस्तु की मोटी तह।
थगित–(हि० वि०) ठहरा हुआ।
थड़ा–(हि० पुं०)बैठने का स्थान, बैठक।
थति–(हि० स्त्री०) देखो थाती।
थत्ती–(हि० स्त्री०) राशि, ढेर, पुंज।
थन–(हि० पुं०) चौपायों का स्तन।
थनी–(हि० स्त्री०) बकरी के गले की लटकती हुई स्तन के आकार की मांस की दो थैलियाँ।
थनैला–(हि० पुं०) स्त्रियों के स्तन पर होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।
थनैत–(हि० पुं०) गाँव का प्रधान पुरुष।
थपकन–(हि० पुं०) वह आघात जो प्रेम से किसी के शरीर पर किया जाय।
थपकना–(हि० क्रि०) स्नेहवश किसी के शरीर पर धीरे-धीरे हाथ मारना, पुचकारना, ढाढ़स देना।
थपका–(हि० पुं०) थक्का। थपकी–(हि० स्त्री०) आघात, जो प्रेमवश हथली से धीरे-धीरे पहुँचाया जाता है।
थपन–(हि० पुं०) स्थापन, ठहरने का काम। थपना–(हि० क्रि०) स्थापित होना, ठहरना।
थपुआ–(हि० पुं०) चौरस, छोटा छाजन।
थपेड़ना–(हि० क्रि०) थप्पड़ मारना।
थपेड़ा–(हि० पुं०) थप्पड़,ठोकर,टक्कर।
थपोड़ी, थपोली–(हि० स्त्री०) हथेली।
थम–(हि० पुं०) खंभा।
थमकारी–(हि० पुं०)स्तम्भन करनेवाला।
थमना–(हि० क्रि०) ठहरना, रुकना।
थर–(हि० स्त्री०) तह, परत।
थरकना–(हि० क्रि०) भय से काँपना, थर्राना।
थरकौंहा–(हि० वि०) काँपनेवाला।
थरथर–(हि० स्त्री०) भय के कारण कम्पन; (क्रि० वि०) काँपते हुए।
थरथराना–(हि० क्रि०) भय से काँपना।
थरथराहट–(हि० स्त्री०) भय से उत्पन्न कँपकँपी।

थरना–(हिं० क्रि०)काँटी आदि की नोक को हथौड़ी से पीटकर चौड़ी करना।
थरहरी–(हिं० स्त्री०) भय से उत्पन्न कँपकँपी।
थरिया–(हिं० स्त्री०) देखो थाली।
थर्राना–(हिं० क्रि०) भय से काँपना।
थल–(हिं० पुं०) स्थल, ठिकाना, स्थान।
थलकना–(हिं० क्रि०) झोल होने के कारण ऊपर से नीचे हिलना।
थलचर–(हिं० पुं०) स्थलचर, भूमि पर रहनेवाला प्राणी।
थलथल–(हिं० वि०) मोटाई के कारण हिलता हुआ।
थलथलाना–(हिं० क्रि०) मोटाई के कारण शरीर के मांस का झूलकर हिलना।
थलपति–(हिं० पुं०) भूपति, राजा।
थाली–(हिं० स्त्री०) स्थली, स्थान, ठिकाना, भूमि।
थवई–(हिं० पुं०) स्थपति, मकान बनानेवाला, राज।
थहना–(हिं० क्रि०) थाह लगाना।
थहराना–(हिं० क्रि०) थाह लेना।
थहरि–(हिं० स्त्री०) भूमि।
थहाना–(हिं० क्रि०)थाह लगाना, किसी के आश्रय को जानने का प्रयत्न करना।
थांग–(हिं० स्त्री०) अनुसन्धान, खोज, पता, गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना, भेद।
थांगी–(हिं० पुं०) चोरों का भेदिया, जासूस, चोरों का सरदार।
थांभ–(हिं० पुं०) खंभा, थूनी, चाँड़।
था–(हिं० क्रि०) "है" शब्द का भूतकाल का रूप, रहा।
थाई–(हिं० वि०) स्थायी, स्थिर रहनेवाला; (पुं०) बैठने का स्थान, बैठक।
थाक–(हिं० पुं०) गाँव की सीमा या सरहद, राशि, ढेर, समूह।
थाकना–(हिं० क्रि०) ठहराना।
थाति–(हिं० स्त्री०) स्थिरता, टिकाव।
थाती–(हिं० स्त्री०)धरोहर, संचित धन, अमानत।
थान–(हिं० पुं०) स्थान, ठिकाना, घोड़े या चौपायों के बाँधने का स्थान, मन्दिर, देवालय, संख्या, कपड़े, गोट आदि का पूरा टुकड़ा।
थाना–(हिं० पुं०)अड्डा, टिकान, पुलिस की बड़ी चौकी।
थानी–(हिं० पुं०) स्थान का मालिक।
थानेत–(हिं० पुं०) देखो थानत।
थानेदार–(हिं० पुं०) थाने का प्रधान अधिकारी। थानेदारी–(हिं० स्त्री०) थानेदार का पद या कार्य।
थानैत–(हिं०पुं०)किसी स्थान का स्वामी
थाप–(हिं० स्त्री०) मृदङ्ग, तबले आदि पर पूरे पंजे का आघात, ठोंक, महत्व, प्रतिष्ठा, धाक, थप्पड़, छाप, स्थिति।
थापन–(हिं० पुं०) स्थापित करने की क्रिया। थापना–(हिं० क्रि०) स्थापित करना, बैठाना; (पुं०) किसी प्रतिमा का स्थापन या प्रतिष्ठा।
थापा–(हिं० पुं०) पंजे का छापा।
थापिया–(हिं० पुं०) थापनेवाला।
थापी–(हिं० स्त्री०) कुम्हार का कच्चा घड़ा पीटने की मुंगरी, गच पीटने की राज की चिपटी मुंगरी।
थाम–(हिं० पुं०) स्तंभ, खंभा।
थामना–(हिं० क्रि०) लेना, सँभालना, सहारा देना।
थायी–(हिं० वि०) स्थायी, स्थिर, दृढ़।
थार–(हिं० पुं०) बड़ी थाली।
थाल–(हिं० पुं०) आलवाल, थाँवला।

थाली–(हिं० स्त्री०) छोटा थाल।
थावर–(हिं० वि०) देखो स्थावर।
थाह, थाव–(हिं०स्त्री०) जल की गहराई का अंत, जलाशय का तल भाग, परिमिति, हद। **थाहना**–(हिं० क्रि०) गहराई का पता लगाना, अनुमान करना। **थाहरा**–(हिं० वि०) कम गहरा, छिछला।
थिगली–(हिं० स्त्री०) किसी फटे हुए वस्त्र के छेद पर लगाने की चकती, पेवन।
थित–(हिं० वि०) स्थित, ठहरा हुआ, रक्खा हुआ। **थिति**–(हिं० स्त्री०) अवस्था, दशा।
थिर–(हिं० वि०) स्थिर, अचल, स्थायी, शान्त, दृढ़, टिकाऊ।
थिरता, थिरताई–(हिं०स्त्री०) स्थिरता।
थिरना–(हिं० क्रि०) जल का क्षुब्ध न रहना।
थिरा–(हिं० स्त्री०) स्थिरा, पृथ्वी।
थिराना–(हिं० क्रि०) किसी तरल पदार्थ को स्थिर करना।
थी–(हिं० क्रि०) "था" का स्त्रीलिङ्ग का रूप।
थीता–(हिं० पुं०) स्थिरता, शान्ति।
थीर–(हिं० पुं०) स्थिर।
थुकवाना–(हिं० क्रि०) देखो थुकाना।
थुकाई–(हिं० स्त्री०) थूकने का काम।
थुकाना–(हिं० वि०) उगलवाना, तिरस्कार या निन्दा करना।
थुड़ी–(हिं० स्त्री०) तिरस्कार और घृणा सूचक शब्द, धिक्कार।
थुत्कार–(सं० पुं०) वह शब्द जो मुख से थूक निकलते समय उत्पन्न होता है।
थुथना–(हिं० पुं०) देखो थूथन।
थुन्नी–(हिं०स्त्री०) स्तम्भ, खंभा, चाँड़।
थुरना–(हिं०क्रि०) मारना, पीटना, कटना।
थुरहथा–(हिं० वि०) मितव्ययी।
थू–(हिं० अव्य०) तिरस्कारसूचक शब्द, छिः, थूकने का शब्द। **थू थू करना**–धिक्कारना।
थूक–(हिं० पुं०) निष्ठीवन, खखार।
थूकना–(हिं० क्रि०) तिरस्कार करना, धिक्कारना।
थूथन–(हिं० पुं०) मुख का अग्रभाग जो आगे से निकला हुआ हो।
थूनी–(हिं०स्त्री०) स्तम्भ, खंभा, चाँड़।
थूरना–(हिं० क्रि०) पीटना, कूटना।
थूल–(हिं० वि०) स्थूल, भारी।
थूला–(हिं० वि०) हृष्ट-पुष्ट।
थूहा–(हिं० पुं०) टीला, राशि, ढेर।
थूही–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का ढेर, मिट्टी का खंभा जो कुवें पर बनाया जाता है, जिस पर लकड़ी रखकर पानी खींचने के लिये गड़ारी लगाई जाती है।
थेंहर–(हिं० वि०) श्रान्त, थका हुआ।
थेइ, थेई–(हिं० वि०) ताल-सूचक आघात और मुद्रा।
थेगली–(हिं० स्त्री०) देखो थिगली।
थैला–(हिं० पुं०) कपड़े या टाट का बना हुआ झोला। **थैली**–(हिं० वि०) छोटा थैला, रुपयों से भरा हुआ कोष, तोड़ा।
थोक–(हिं० पुं०) राशि, ढेर, समूह, एकत्रित वस्तु, इकट्ठा बेंचने की वस्तु, भूमि का टुकड़ा।
थोड़ा–(हिं० वि०) न्यून, अल्प, कम परिमाण का; (क्रि० वि०) तनिक, थोड़ा बहुत, बिलकुल नहीं।
थोथ–(हिं० स्त्री०) पोलापन, तोंद, पेटी।
थोथरा–(हिं० वि०) निःसार, पोला, व्यर्थ का।

थोथा–(हिं० वि०) निःसार।
थोपड़ी–(हिं० स्त्री०) थप्पड़, चपत, धौल।
थोबड़ा–(हिं० क्रि०) मिट्टी आदि का मोटा लेप चढ़ाना, आरोपित करना।
थोबड़-थोबड़ा–(हिं० पु०) पशुओं का थूथन।
थोर, थोरा–(हिं० वि०) देखो थोड़ा।
थोरिक–(हिं० वि०) थोड़ा-सा, अल्प मात्रा में।

द

द–संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन, तवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्त-मूल है।
द–(सं० पुं०) अचल, पर्वत, दाँत; (स्त्री०) भार्या; (वि०) दाता, देनेवाला।
दइत–(हिं० पुं०) देखो दैत्य।
दई–(हिं० पुं०) दैवयोग, प्रारब्ध।
दईमारा–(हिं० वि०) हतभाग्य, अभागा।
दंगली–(हिं० वि०) झगड़ालू।
दंगा–(हिं० पुं०) उपद्रव, झगड़ा।
दंगैत–(हिं० वि०) उपद्रवी, लड़ाका।
दंड–(हिं० पुं०) डंडा, सोंटा।
दंत–(सं० पु०) देखो दाँत।
दँतिया, दँतुरिया–(हिं० स्त्री०) छोटे-छोटे दाँत।
दँतुला–(हिं० वि०) बड़े-बड़े दाँतवाला।
दंद–(हिं० स्त्री०) किसी पदार्थ से निकलती हुई गरमी; (पुं०) लड़ाई-झगड़ा।
दंदी–(हिं० पुं०) उपद्रवी, झगड़ालू।
दँवरी–(हिं० स्त्री०) अन्न के सूखे डंठलों में से दाने अलगाने के लिये बैलों के खुरों से रौंदवाने का काम।
दँवारी–(हिं० स्त्री०) देखो दावाग्नि।
दंश–(सं० पुं०) गोमक्षिका, दाँतों से काटने की क्रिया, साँप के काटने का घाव, द्वेष, वर, दाँत, विषैले जन्तुओं के डंक, कटूक्ति। **दंशक**–(सं० वि०) दाँत से काटनेवाला।
दंशन–(सं० पुं०) दाँत काटना, डँसना।
दंष्ट्र–(सं० पुं०) दाँत, शकर।
दंष्ट्रा–(सं० स्त्री०) दाढ़, चौघड़।
दंष्ट्रायुध–(सं० पुं०) वराह, सुअर।
दंस–(हिं० पुं०) देखो दंश।
दकार–(सं० पुं०) तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द'।
दक्खिन–(हिं० पुं०) सूर्य की ओर मुख करके खड़े होने पर दाहिने हाथ की ओर पड़नेवाली दिशा; भारत के दक्षिण की ओर का भाग। **दक्खिनी**–(हिं० वि०) जो दक्षिण दिशा में हों; (पुं०) दक्षिण देश का रहनेवाला।
दक्ष–(सं० वि०) निपुण, चतुर, कुशल।
दक्षता–(सं० स्त्री०) निपुणता, योग्यता।
दक्षाय्य–(सं० पुं०) गरुड़ पक्षी, गृध्र।
दक्षिण–(सं० वि०) उत्तर के सामने की दिशा, अपसव्य, दाहिना, अनुकूल, निपुण, चतुर, दक्ष, समर्थ।
दक्षिण गोल–(सं० पुं०) वे छ राशियाँ जो विषुवत् रेखा के दक्षिण में हैं।
दक्षिणा–(सं० स्त्री०) दक्षिण दिशा, प्रतिष्ठा, सम्मान, पुरस्कार, भेंट, ब्राह्मण को दिया जानेवाला दान।
दक्षिणायन–(सं० पुं०) सूर्य की दक्षिण की ओर की गति, सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति।
दक्षिणी–(हिं० स्त्री०) दक्षिण देश की भाषा, मराठी; (वि०) दक्षिण देश संबंधी।
दक्षिणेतर–(सं० वि०) दाहिने से इतर, बायाँ।

दखिन–(हिं० पुं०) देखो दक्षिण।
दखिनहा–(हिं० वि०) दक्खिन का, दक्षिणी।
दगड़–(हिं० पुं०) बड़ा ढोल, जो लड़ाई के मैदान में बजाया जाता है।
दगड़ना–(हिं० स्त्री०) सच्ची बात पर विश्वास न करना।
दगदगाना–(हिं०क्रि०) चमकना, दमकना।
दगदगी–(हिं० स्त्री०) भय, सन्देह।
दगध–(हिं० पुं०) दाह-क्रिया, दग्ध।
दगधना–(हिं० क्रि०) जलना, जलाना।
दगना–(हिं० क्रि०) बन्दूक या तोप का छूटना, दागा जाना।
दगर, दगरा–(हिं०पुं०) विलम्ब, देर, मार्ग।
दगवाना–(हिं० क्रि०) दागने के काम में किसी दूसरे को लगाना।
दगहा–(हिं० वि०) दागवाला, जिसने मृतक का दाहकर्म किया हो।
दगैल–(हिं० वि०) जिसमें कुछ दोष हो; (पुं०) छली, कपटी।
दग्ध–(सं०वि०) जला हुआ, जलाया हुआ।
दग्धाक्षर–(सं० पुं०) पिङ्गल के अनुसार झ, ह, र, भ और ष ये पाँच अक्षर जिनसे किसी छंद का आरम्भ करना मना है।
दग्धेष्टका–(सं० स्त्री०) झाँवाँ।
दचक–(हिं० स्त्री०) दबाव।
दचकना–(हिं० क्रि०) दब जाना, झटका खाना, झटका देना।
दचका–(हिं० पुं०) धक्का।
दचना–(हिं० क्रि०) गिर पड़ना।
दच्छ–(हिं० पुं०) देखो दक्ष।
दच्छिना–(हिं० स्त्री०) देखो दक्षिणा।
दच्छिन–(हिं० क्रि०) देखो दक्षिण।
दढ़ना–(हिं० क्रि०) जलना।
दढ़ियल–(हिं० वि०) दाढ़ीवाला।

दण्ड–(सं० पुं०) यष्टि, लाठी, डंडा, दमन, शासन, २४ मिनट का समय, घड़ी।
दण्डक–(सं० पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सत्ताइस अक्षर होते हैं, डंडा। **दण्डकी**–(सं०स्त्री०) ढोलक।
दण्डग्रहण–(सं० पु०) संन्यास आश्रम ग्रहण करना। **दण्डढक्का**–(सं० स्त्री०) दुन्दुभि, नगाड़ा।
दण्डधर–(सं० वि०) डंडा धारण करनेवाला; (पुं०) यमराज, शासनकर्ता, राजा, संन्यासी।
दण्डन–(सं० पुं०) दण्ड देने की क्रिया, शासन। **दण्डनायक**–(सं० पुं०) सेनापति। **दण्डनीति**–(सं० स्त्री०) वह शास्त्र जिसमें राज्य-शासन के संबंध के नियम और उपदेश हों। **दण्डनीय**–(सं० वि०) दण्ड देने योग्य। **दण्डपाल**–(सं० पुं०) द्वारपाल। **दण्डप्रणाम**–(सं० पुं०) भूमि पर डंडे के समान पड़कर प्रणाम करना।
दण्डवत्–(सं० वि०) दण्ड के समान; (स्त्री०) पृथ्वी पर लेटकर प्रणाम करना। **दण्डस्थान**–(सं० पुं०) शरीर का वह अंग जहाँ पर दण्ड दिया जा सकता है। **दण्डा**–(हिं० पुं०) देखो डंडा। **दण्डादण्डि**–(सं०अव्य०) डंडों की मारपीट।
दण्डायमान–(सं०वि०) जो डंडे की तरह सीधा खड़ा हो। **दण्डालय**–(सं०पुं०) वह न्यायोलय जहाँ पर दण्ड देने का विधान हो। **दण्डिक**–(सं० स्त्री०) डोरी, रस्सी।
दण्डित–(सं० वि०) वह जिसको दण्ड मिला हो।
दण्डी–(सं० पुं०) हिन्दुओं का एक उपासक सम्प्रदाय, ये लोग दंड कमण्डलु लिये

इधर-उधर घूमते हैं। दण्ड्य-(सं० वि०) दण्डनीय।

दतवन-(हिं० स्त्री०) देखो दतुवन।

दतिया-(हिं० स्त्री०) छोटा दाँत।

दतुअन, दतुवन-(हिं० स्त्री०) बबूल, नीम आदि की पतली टहनी, दाँत स्वच्छ करने की क्रिया। दतौन-(हिं० स्त्री०) देखो दतुवन।

दत्त-(सं० वि०) रक्षित, बचाया हुआ, दान दिया हुआ; (पुं०) दान, दत्तक।

दत्तक-(सं० पुं०) गोद लिया हुआ बेटा।

दत्ती-(हिं० स्त्री०) दृढ़ संबंध, सगाई।

ददरा-(हिं० पुं०) छानने का कपड़ा, छन्ना।

ददा-(हिं० पुं०) देखो दादा।

ददिया ससुर-(हिं० पुं०) ससुर का पिता।

ददिया सास-(हिं० स्त्री०) पति या पत्नी की दादी। ददिहाल-(हिं० पुं०) दादा का घर।

ददोरा-(हिं० पुं०) शरीर पर उभड़ा हुआ चकोता।

दद्रु-(सं० पुं०) कच्छप, कछुआ, दाद।

दधि-(सं० पुं०) जमाया हुआ दूध, दही।

दधिचार-(सं० पुं०) दही मथने की मथानी।

दधिज-(सं० पुं०) नवनीत, मक्खन।

दधिमण्ड-(सं० पुं०) दही का पानी।

दध्यन्न-(सं० पुं०) दही मिला हुआ अन्न।

दध्योदन-(सं० पुं०) दही मिला हुआ भात।

दनदना-(हिं० क्रि०) आनन्द करना।

दनादन-(हिं० क्रि० वि०) दनदन शब्द के साथ, तुरत।

दन्त-(सं० पुं०) दाँत। दन्तक-(सं० पुं०) पहाड़ की चोटी। दन्तकथा- (सं० स्त्री०) सुनी हुई बात, जनश्रुति।

दन्तकर्ष-(सं० पुं०) दाँत किरकिराना।

दन्तच्छद-(सं० पुं०) ओष्ठ, ओठ।

दन्तजात-(सं० वि०) दाँत निकलने योग्य। दन्तधावन-(सं० पुं०) दाँत धोने या स्वच्छ करने की क्रिया।

दन्तप्रक्षालन-(सं० पुं०) दाँत स्वच्छ करने का काम। दन्तशुद्धि- (सं० स्त्री०) दाँतों की स्वच्छता। दन्तशूल-(सं० पुं०) दाँत की पीड़ा। दन्तसंघर्ष-(सं० पुं०) दाँत किरकिराना।

दन्ताग्र-(सं० पुं०) दाँत की नोक या अग्रभाग। दन्ताघात-(सं० पुं०) दाँत का आघात या चोट। दन्तादन्ति-(सं० स्त्री०) एक दूसरे को दाँत काटने का युद्ध।

दन्ती-(सं० स्त्री०) हाथी, गज।

दन्तुर-(सं० वि०) जिसके दाँत आगे को निकले हों, दँतूला।

दन्तोष्ठ्य-(सं० पुं०) वह वर्ण जिसका उच्चारण दाँत और ओंठ से हो।

दन्त्य-(सं० वि०) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो, तवर्ग।

दन्न-(हिं० पुं०) तोप आदि के छूटने का 'दन' शब्द।

दपट-(हिं० स्त्री०) डपट, घुड़की।

दपटना-(हिं० क्रि०) डाटना, घुड़कना।

दपेट-(हिं० स्त्री०) देखो दपट, झिड़की।

दपेटना-(हिं० क्रि०) झिड़कना, चपेटना।

दफला-(हिं० पुं०) देखो डफला।

दबंग-(हिं० वि०) प्रभावशाली।

दबक-(हिं० स्त्री०) छिपाने का भाव, दबने की क्रिया, सिकुड़न। दबकना-(हिं० क्रि०) छिपना, लुकना। दब-कनी-(हिं० स्त्री०) भाथी का छिद्र

जिसमें से होकर हवा भीतर जाती है।
दबकवाना-(हिं० क्रि०) दबकानेमें किसी दूसरे को प्रवृत्त करना।
दबकाना-(हिं० स्त्री०) ढांपना, छिपाना।
दबाना-(हिं० क्रि०) भार से नीचे को आना, संकोच करना, धीमा पड़ना, किसी के दबाव से विबश होना, पीछे को हटना।
दबवाना-(हिं० क्रि०) दबाने के काम में दूसरे को लगाना।
दबाई-(हिं० वि०) दबाने का कार्य।
दबाऊ-(हिं० वि०) दबानेवाला।
दबाना-(हिं० क्रि०) धँसाना, भार देना, छिपा रखना, विवश करना, धरती में गाड़ना, अनुचित रीति से किसी का माल ले लेना, लाना, दमन करना, शान्त करना।
दबाव-(हिं० पुं०) दबाने की क्रिया, चांप।
दबेला-(हिं० वि०) जिस पर दबाव पड़ा हो, शीघ्र होनेवाला।
दबोचना-(हिं० क्रि०) किसी को अकस्मात् पकड़कर दबा लेना, छिपाना।
दबोरना-(हिं० क्रि०) देखो दबाना।
दभ्य-(सं० वि०) हन्तव्य, मारने योग्य।
दम-(सं० पुं०) दण्ड, दमन, इन्द्रियों को वश में करना।
दमक-(हिं० स्त्री०) द्युति, चमक।
दमकना-(हिं० क्रि०) चमकना।
दमकला-(हिं० पुं०) वह यन्त्र जिसके द्वारा किसी तरल पदार्थ का फौवारा बड़े वेग से दूर तक फेंका जाता है।
दमचूल्हा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का चूल्हा जिसके बीच में जाली होती है और बगल में हवा देने के लिये एक बड़ा छेद होता है।
दमड़ी-(हिं० स्त्री०) एक पैसे का आठवाँ भाग।
दमन-(सं० पुं०) दबाने की क्रिया, दण्ड।
दमनशील-(सं० वि०) दमन करनेवाला।
दमना-(हिं० क्रि०) दमन करना।
दमनीय-(सं० वि०) दमन करने योग्य।
दमाद-(हिं० पुं०) जामाता।
दमादम-(हिं० क्रि० वि०) लगातार, बराबर।
दमारि-(हिं० पुं०) वन की आग।
दमित-(सं० वि०) वश में किया हुआ।
दमी-(हिं० वि०) दम लगानेवाला।
दमैया-(हिं० वि०) दमन करनेवाला।
दमोड़ा-(हिं० पुं०) मूल्य।
दम्पति-(सं० पुं०) पति और पत्नी।
दम्भ-(सं० पुं०) कपट, छल, धोखा।
दम्भक-(सं० पुं०) पाखंडी।
दम्भन-(सं० पुं०) लुभान की क्रिया।
दम्भी-(सं० वि०) अभिमानी, पाखंडी।
दम्य-(सं० वि०) दमन करने योग्य।
दयंत-(हिं० पुं०) देखो दैत्य।
दय-(सं० पुं०) दया, कृपा, करुणा।
दया-(सं० स्त्री०) करुणा।
दयाना-(हिं० क्रि०) दयालु होना।
दयानिधान, दयानिधि-(स० पुं०) अति दयालु। दयापात्र-(सं० वि०) वह जिस पर दया करना उचित हो।
दयामय-(सं० वि०) दया से पूर्ण।
दयार्द्र-(सं० वि०) दयापूर्ण, दयालु।
दयाल-(हिं० वि०) दयालु, कृपालु।
दयालु-(सं० वि०) दयावान्, कृपालु।
दयालुता-(सं० स्त्री०) दया करने की प्रवृत्ति। दयावन्त-(हिं०वि०) दयालु।
दयावान-(हिं० वि०) कृपालु। दयाशील-(सं० वि०) दयालु, कृपालु।

दयासागर–(सं० पुं०) अत्यन्त दयालु मनुष्य ।
दयिता–(सं० स्त्री०) पत्नी, भार्या ।
दयिताधीन–स्त्री के वशीभूत ।
दर–(हिं० पुं०) सेना, समूह, दल, ठिकाना; (वि०) थोड़ा-सा ।
दरक–(सं० वि०) डरपोक, कायर, भीरु; (हिं० स्त्री०) वह दरार जो दाब पड़ने से उत्पन्न होती है ।
दरकच–(हिं० स्त्री०) कुचल जाने से लगी हुई चोट ।
दरकटी–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु के भाव का ठहरना ।
दरकना–(हिं० क्रि०) विदीर्ण होना, फटना ।
दरका–(हिं० पुं०) दरार ।
दरकाना–(हिं० क्रि०) फटना, फाड़ना ।
दरज–(हिं० स्त्री०) दरार, फटन ।
दरजन–(हिं० पुं०) बारह का समूह ।
दरजिन–(हिं० स्त्री०) दरजी की स्त्री ।
दरजी–(हिं० पुं०) कपड़ा सीने का व्यापार करनेवाला ।
दरण–(हिं० पुं०) ध्वंस, नाश, पीसने की क्रिया ।
दरदरा–(हिं० वि०) जिसके कण मोटे हों, जो महीन पिसा न हो । **दरदराना**–(हिं० क्रि०) बहुत महीन न पीसना ।
दरद्द–(हिं० पुं०) पीड़ा ।
दरन–(हिं० वि०) नाश करनेवाला ।
दरना–(हिं० क्रि०) मोटा पीसना, नष्ट करना ।
दरज–(हिं० पुं०) देखो दर्ज ।
दरपन–(हिं० पुं०) दर्पण ।
दरपना–(हिं० क्रि०) अहंकार करना ।
दरपनी–(हिं० स्त्री०) छोटा दर्पण ।
दरब–(हिं० पुं०) धन, धातु ।
दरभ–(हिं० पुं०) दर्भ, कुश ।
दरराना–(हिं० क्रि०) वेग से आ पहुंचना ।
दरवी–(हिं० पुं०) सँड़सी, करछुल, पौना । **दरवीकर**–सर्प, साँप ।
दरश–(हिं० पुं०) देखो दर्श । **दरशन**–(हिं० पुं०) देखो दरशन ।
दरशाना–(हिं० क्रि०) दरसाना, दिखलाना ।
दरस–(हिं० पुं०) दर्शन, भेंट, सुन्दरता, छवि । **दरसन**–(हिं० पुं०) दर्शन, भेंट ।
दरसना–(हिं० क्रि०) देखना ।
दरसनीय–(हिं० स्त्री०) देखो दर्शनीय ।
दरसान–(हिं० पु०) प्रकाश, चमक ।
दरसाना, दरसना–(हिं० क्रि०) दिखलाना ।
दरारा–(हिं० पुं०) धक्का, रगड़, दरेरा ।
दरि–(सं० स्त्री०) गुहा, कन्दरा ।
दरित–(सं० वि०) भयभीत, डरपोक ।
दरिद्र–(सं० वि०) निर्धन, कंगाल ।
दरिद्रता–(सं० स्त्री०) निर्धनता ।
दरी–(सं० स्त्री०) पर्वत की गुहा, खोह; (हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटे दल का बिछौना, जो मोटे सूत से बनाया जाता है ।
दरेंती–(हिं० स्त्री०) अनाज दरने की छोटी चक्की ।
दरेरना–(हिं० क्रि०) रगड़ते हुए धक्का देना, पीसना, रगड़ना । **दरेरा**–(हिं० पुं०) धक्का, रगड़, तोड़ ।
दरेस–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छींट ।
दरेसी–(हिं० स्त्री०) तैयारी ।
दरैया–(हिं० पुं०) दाल दरनेवाला ।
दर्जन–(हिं० पुं०) बारह वस्तु का समूह ।
दर्दुर–(सं० पुं०) भेक, मेढक, मेघ, बादल ।
दर्प–(सं० पुं०) गर्व, अहंकार, अभिमान ।
दर्पण–(सं० पुं०) उत्तेजना, आइना, आरसी । **दर्पद**–(सं० वि०) अभिमान उत्पन्न करनवाला । **दर्पित**–(सं० वि०)

अहंकार से भरा हुआ। दर्पी–(सं०वि०) अहंकारी, घमंडी।
दर्भ–(सं० पुं०) कुश, डाभ, कुश का बना हुआ आसन।
दर्भासन–(सं० पुं०) कुशासन।
दर्राना–(हि० क्रि०) बेधड़क किसी स्थान में प्रवेश करना।
दर्वि–(सं० स्त्री०) करछी।
दर्वी–(सं०स्त्री०) करछी, चम्मच, चमचा।
दर्शक–(सं० पुं०) द्वारपाल; (वि०) देखनेवाला, दिखानेवाला।
दर्शन–(सं० पुं०) नयन, दर्पण, भेंट, साक्षात्कार, ज्ञान, वह शस्त्र जिसके द्वारा यथार्थ तत्व का ज्ञान होता है।
दर्शनपथ–(सं० पुं०) दृष्टिपथ।
दर्शनीय–(सं०वि०) देखने योग्य, सुन्दर।
दर्शयिता–(सं०वि०) दर्शक, दिखलानेवाला।
दर्शाना–(हि० क्रि०) दिखलाना।
दर्शित–(सं० वि०) दिखलाया हुआ।
दर्शी–(सं० वि०) देखनेवाला, भेंट करानेवाला।
दल–(सं० पुं०) खण्ड, टुकड़ा, झुण्ड, समूह, फूल की पंखड़ी, मण्डली, सेना।
दलक–(हि० स्त्री०) थरथराहट, शरीर की वह पीड़ा जो रह रहकर उठती है।
दलकन–(हि०पुं०) दलकन की क्रिया।
दलकना–(हि० क्रि०) डराना, कँपाना।
दलदल–(हि० स्त्री०) वह भूमि जो बहुत गहराई तक गीली और मृदु हो, कीचड़।
दलदार–(हि० वि०) मोटी तह या परत का।
दलन–(सं० पुं०) विनाश, संहार, नाश।
दलना–(हि० क्रि०) चूर्ण करना, कुचलना।
दलपति–(सं० पुं०) सरदार, सेनापति।
दलबल–(सं० पुं०) सैन्य-समूह।
दलबादल–(हि० पुं०) बादलों का समूह, बड़ी सेना।
दलमलना–(हि० क्रि०) कुचलना।
दलवाना–(हि० क्रि०) दूसरे से दलने का काम कराना।
दलवाल–(सं० पुं०) सेनापति।
दलवैया–(हि० वि०) कुचलनेवाला।
दलहन–(हि० पुं०) वह अन्न जिसकी दाल बनाई जावे।
दलान–(हि० पुं०) ओसारा।
दलित–(सं०वि०) विदीर्ण, कुचला हुआ।
दलिया–(हि० पुं०) वह अन्न जो दलकर टुकड़े-टुकड़े किया गया हो।
दलेपंज–(हि० पुं०) बुड्ढा मनुष्य।
दल्लाल–(हि० पुं०) देखो दलाल।
दल्लाली–(हि० स्त्री०) देखो दलाली।
दवँरी–(हि० स्त्री०) देखो दँवरी।
दव–(सं० पुं०) वन, जंगल, वह अग्नि जो जंगलों में आप से आप लग जाती है।
दवदहन–(सं० पुं०) जंगल की आग।
दवना–(हि०क्रि०) दग्ध करना, जलाना।
दवनी–(हि० स्त्री०) देखो दँवरी।
दवागिन–(हि० स्त्री०) देखो दावाग्नि।
दवाग्नि–(सं० पुं०) वन में लगनेवाली अग्नि।
दवादर्पन–(हि० पुं०) औषधि।
दवारि–(हि० स्त्री०) वनाग्नि, दावानल।
दश–(सं० वि०) पाँच की दूनी संख्या, दस। **दशकण्ठ**–(सं० पुं०) रावण।
दशकन्ध, दशकन्धर–(सं० पुं०) रावण।
दशकर्म–(सं०पुं०) द्विजों के दस संस्कार।
दशग्रीव–(सं० पुं०) रावण।
दशदिक्–(सं० स्त्री०) दसों दिशा।
दशदिक्पाल–(सं० पुं०) दसों दिशा की रक्षा करनेवाले दस देवता।

दशद्वार–(सं० पुं०)शरीर के दस छिद्र ।
दशधा–(सं० अव्य०) दस प्रकार से ।
दशन–(सं० पुं०)दाँत, शिखर, कवच ।
दशनाम–(सं० पुं०) संन्यासियों के दस भेद । दशनामी–(हिं० पुं०) संन्यासियों का एक वर्ग ।
दशम–(सं० वि०) दसवाँ । दशमलव–(सं० पुं०) गणित में वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात होता है ।
दशमांश–(सं० पुं०) दसवाँ भाग ।
दशमी–(सं० स्त्री०) चान्द्रमास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि ।
दशमुख–(सं० पुं०) रावण ।
दशरथ–(सं० पुं०) रामचन्द्र के पिता ।
दशवक्त्र–(सं० पुं०) रावण ।
दशवाजिन्–(सं० पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा ।
दशवार्षिक–(सं० वि०) दस वर्ष में होनेवाला ।
दशविध–(सं० वि०) दस प्रकार का ।
दशहरा–(सं०स्त्री०)ज्येष्ठ शुक्ल दशमी ।
दशा–(सं० स्त्री०) अवस्था, चित्त, कपड़े का किनारा, दिये की बत्ती ।
दशानन–(सं० पुं०) रावण ।
दशान्त–(सं० पुं०)बत्ती का पिछला भाग ।
दशार्ध–(सं० पुं०) दस का आधा भाग ।
दशाह–(सं० पुं०) मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन ।
दष्ट–(सं० वि०) दाँत से काटा हुआ ।
दस–(हिं० वि०)जो गिनती में नव और एक हो, पाँच का दुगुना; (पुं०)पाँच की दूनी संख्या, १० ।
दसन–(हिं० पुं०) देखो दशन ।
दसना–(हिं० क्रि०) फैलना, फैलाना ।
दसमाथ–(हिं० पुं०) दशशिर, रावण ।
दसमी–(हिं० स्त्री०) देखो दशमी ।
दसवाँ–(हिं० वि०) गिनती में दसवें स्थान का ।
दसा–(हिं० स्त्री०) देखो दशा ।
दसाना–(हिं० क्रि०) बिछाना ।
दसी–(हिं० स्त्री०)वस्त्र के किनारे का पल्ला ।
दसोतरा–(हिं० वि०) दस अधिक ।
दस्यु–(सं० पुं०) डकैत, डाकू, चोर, म्लेच्छ, असुर, दैत्य; (वि०) उपेक्षा करनेवाला । दस्युता–(सं० स्त्री०) लुटेरापन, डकैती, भय ।
दह–(हिं० पुं०)नदी के भीतर का गड्ढा ।
दहक–(हिं० स्त्री०) धधक, ज्वाला, लपट, लज्जा । दहकन–(हिं० स्त्री०) दहकने की क्रिया । दहकना–(हिं०क्रि०) ज्वाला के साथ जलना, शरीर का गरम होना । दहकाना–(हिं० क्रि०) धधकाना, क्रोध दिलाना ।
दहन–(सं० पुं०) अग्नि ।
दहना–(हिं० क्रि०) जलना, जलाना, भस्म होना या भस्म करना, क्रोध दिलाना; (वि०) दाहिना ।
दहनि–(हिं० स्त्री०) जलाने की क्रिया ।
दहनीय–(सं० वि०)जलने या जलाने योग्य
दहनोपल–(सं० पुं०) सूर्यकान्त मणि ।
दहपटना–(हिं० क्रि०) ध्वस्त करना ।
दहर–(हिं० पुं०) नदी का गहरा स्थान, पाल, कुण्ड ।
दहरदहर–(हिं० क्रि० वि०)धधकते हुए ।
दहरना–(हिं०क्रि०) दहलना, दहलाना ।
दहल–(हिं० स्त्री०) भय से काँप उठने का कार्य । दहलना–(हिं० क्रि०) डर से काँप उठना ।
दहलाना–(हिं० क्रि०) भयभीत करना ।
दहाड़–(हिं० स्त्री०) चिल्लाहट, आर्तनाद । दहाड़ना–(हिं० क्रि०) गुर्राना, गरजना ।

दहिना–(हिं०वि०) अपसव्य, बायें का उलटा।
दहिने–(हिं० क्रि० वि०) दाहिनी ओर।
दही–(हिं०पुं०) खटाई डालकर जमाया हुआ दूध।
दहुँ–(हिं०अव्य०) किंवा, अथवा, कदाचित्।
दहेंगर–(हिं० पुं०) दही का घड़ा।
दहेंड़ी–(हिं० स्त्री०) दही रखने का मिट्टी का पात्र।
दह्यमान–(सं० वि०) जो जल रहा हो।
दाइज, दाइजा–(हिं० पुं०) दहेज।
दाइँ–(हिं०वि०) दाहिनी; (स्त्री०) बार।
दाई–(हिं० स्त्री०) धात्री, धाय।
दाऊ–(हिं० पुं०) बड़ा भाई।
दाऊदी–(हिं० पुं०) सफेद नरम छिलके का गेहूँ।
दाँकना–(हिं० क्रि०) गरजना।
दाँक–(हिं० पुं०) डंका, नगाड़ा।
दाँज–(हिं० स्त्री०) समता, तुलना, बराबरी।
दाँड़ना–(हिं० क्रि०) दण्ड देना।
दाँडिक–(हिं० पुं०) घातक।
दाँत–(हिं० पुं०) मुख में की नुकीली हड्डी जो आहार को काटने तथा चबाने के काम में आती है।
दाँता–(हिं०पुं०) एक प्रकार का नुकीला कँगूरा। दाँताकिटकिट–(हिं० स्त्री०) वाग्युद्ध, कहासुनी।
दाँना, दाँवना–(हिं० क्रि०) पकी हुई उपज के डंठलों में से दाना अलगाने के लिये बैलों से रौंदवाना।
दाक–(सं० पुं०) दाता, यजमान।
दाक्षायण–(सं० वि०) दक्ष से उत्पन्न।
दाक्षिण–(सं० वि०) दक्षिण संबंधी।
दाक्षिणात्य–(सं०वि०) दक्षिण देश संबंधी।
दाक्षिण्य–(सं० पुं०) अनुकूलता, उदारता सुशीलता; (वि०) दक्षिण संबंधी।
दाख–(हिं०स्त्री०) द्राक्षा, मुनक्का, अंगूर।
दाग–(हिं० पुं०) दग्ध, मृतक का दाह-कर्म। दाग देना–मृतक का दाह-कर्म करना।
दागना–(हिं० क्रि०) जलाना, तपे हुए लोहे से शरीर पर चिह्न लगाना, रंजक में आग लगाना, बंदूक, तोप आदि छोड़ना।
दाघ–(सं० पुं०) दाह, जलान, उष्णता।
दाजन–(हिं० स्त्री०) जलन। दाजना–(हिं० क्रि०) दाह करना, जलाना।
दाड़िम–(सं० पुं०) अनार।
दाढ़–(सं०स्त्री०) भयंकर शब्द, चौघड़।
दाढ़ना–(हिं० क्रि०) जलाना, दुःखी करना।
दाढ़ा–(सं० स्त्री०) दंष्ट्रा, चौघड़, प्रार्थना; (हिं० स्त्री०) दावानल।
दाढ़ी–(हिं० स्त्री०) चिबुक, ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल।
दाण्डिक–(सं० पुं०) दण्ड देने के लिये नियुक्त पुरुष।
दात–(सं० वि०) काटा हुआ, छिन्न।
दातव्य–(सं० वि०) दान देने योग्य; (पुं०) उदारता।
दाता–(सं० पुं०) दानशील, दान देनेवाला।
दातापन–(हिं० पुं०) दानशीलता।
दातार–(हिं० पुं०) दाता, देनेवाला।
दातु–(सं० पुं०) दान।
दातुन–(हिं० स्त्री०) देखो दतुवन।
दातृ–(सं० वि०) दान देनेवाला।
दातृत्व–(सं० पुं०) दानशीलता।
दातौन–देखो दतुवन।
दाद–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का चर्म-रोग, दद्रु।
दादा–(हिं० पुं०) पिता का पिता, बड़ा भाई, एक आदर-सूचक शब्द जो बड़े

बूढ़ों के लिये प्रयुक्त होता है।
दादी–(हिं० स्त्री०) पिता की माता।
दादु–(हिं० स्त्री०) दद्रु, दाद नामक चर्म-रोग।
दादुर–(हिं० पुं०) मेढक, भेक।
दादू–(हिं० पुं०) दादा के प्रति प्यार का शब्द, एक साधारण संबोधन का शब्द।
दाधिक–(सं० वि०) दही में बना हुआ।
दाध–(हिं० स्त्री०) दाह, जलन।
दाधना–(हिं० क्रि०) जलाना, भस्म करना।
दान–(सं० पुं०) हाथी का मद, राजनीति के चार उपायों में से एक कार्य, त्याग, धर्मार्थ कार्य।
दानपति–(सं० पुं०) सर्वदा दान देनेवाला। **दानपत्र**–(सं० पुं०) वह लेखपत्र जिसके द्वारा कोई सम्पत्ति किसी को दान के रूप में दी जावे।
दानव–(सं० पुं०) असुर, राक्षस।
दानवगुरु–(सं० पुं०) दानवों के गुरु शुक्राचार्य।
दानवी–(सं० स्त्री०) राक्षसी; (हिं० वि०) दानव संबंधी।
दानवीर–(सं० पुं०) अत्यन्त दान देनेवाला।
दानशील–(सं० वि०) दाता, दानी।
दानशीलता–(सं० स्त्री०) उदारता।
दानाध्यक्ष–(सं० पुं०) दान किये हुए धन को बाँटनेवाला अधिकारी।
दानद–(सं० वि०) दान देनेवाला।
दानौ–(हिं० पुं०) देखो दानव।
दान्त–(सं० वि०) जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो।
दाप–(हिं० पुं०) दर्प, अहंकार, गर्व।
दापनीय–(सं० वि०) दण्ड देने योग्य।
दापित–(सं० पुं०) दंडित।
दाबदार–(हिं० वि०) प्रभावशाली, प्रतापी।
दाबना–(हिं० क्रि०) देखो दबाना।
दाबा–(हिं० पुं०) वृक्ष की कलम बाँधने की एक विधि।
दाभी–(सं० स्त्री०) अनिष्टकारक।
दाम्य–(सं० वि०) शासन किये जाने योग्य।
दाम–(सं० पुं०) हार, माला, समूह, अनुसन्धान, खोज, धन द्वारा शत्रु को वश में करने की राजनीति; (हिं० पुं०) एक दमड़ी का तीसरा अंश, धन, रुपया-पैसा, मूल्य।
दामनी–(सं० स्त्री०) रस्सी, डोरी।
दामार, दामरी–(हिं० स्त्री०) रस्सी, डोरी
दामिनी–(सं० स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
दाम्पत्य–(सं० पुं०) दम्पति संबंधी कर्म।
दाम्भिक–(सं० वि०) दम्भयुक्त, पाखंडी।
दाय–(सं० पुं०) उत्तराधिकारियों में बाँटी जानेवाली संपत्ति। **दायक**–(सं० वि०) दाता। **दायजा**–(हिं० पुं०) यौतुक, दहेज। **दायबन्धु**–(सं० पुं०) भ्राता, भाई। **दायभाग**–(सं० पुं०) पैतृक धन का पुत्र-पौत्र तथा संबंधियों में विभाग।
दायाँ–(हिं० वि०) दाहिना।
दायागत–(सं० वि०) बाँट में आया हुआ पैतृक अंश।
दायाद–(सं० पुं०) कुटुम्बी; (पुं०) अंशभागी पुत्र।
दायिनी–(सं० वि०) देनेवाली।
दायी–(सं० वि०) दाता, देनेवाला।
दायें–(हिं० क्रि० वि०) दाहिनी ओर।
दार–(सं० पुं०) पत्नी, भार्या। **दारक**–(सं० पुं०) पुत्र, बेटा, लड़का; (वि०) विदारक, फाड़नेवाला। **दारकर्म**–(सं० पुं०) विवाह।
दारण–(सं० पुं०) चीरने-फाड़ने का काम। **दारपरिग्रह**–(सं० पुं०) विवाह।

दारन–(हिं० वि०) देखो दारुण।
दारना–(हिं० क्रि०) विदीर्ण करना।
दारा–(हिं० स्त्री०) भार्या, पत्नी।
दाराधीन–(सं० वि०) जो स्त्री के अधीन हो।
दारि–(सं० वि०) दारक, फाड़नेवाला; (हिं०) दाल।
दारिउँ–(हिं० पुं०) दाड़िम, अनार।
दारिका–(सं० स्त्री०) कन्या, बेटी, बालिका।
दारित–(सं० वि०) फाड़ा हुआ।
दारिद–(हिं० पुं०) दरिद्रता।
दारिद्र्य–(सं० पुं०) दरिद्रता, निर्धनता।
दारीजार–(हिं० पुं०) लौंड़ी का पति।
दारु–(सं० पुं०) काठ, लकड़ी।
दारुण–(सं० वि०) प्रचण्ड, भयंकर, विकट, कठिन। **दारुणता**–(सं० स्त्री०) कठोरता।
दारुपात्र–(सं० पुं०) काठ का बना हुआ पात्र।
दारुवह–(सं० पुं०) लकड़ी ढोनेवाला।
दारुसार–(सं० पुं०) चन्दन।
दार्दुरिक–(सं० वि०) कुम्हार।
दार्यों–(हिं० पुं०) दाड़िम, अनार।
दार्वी–(सं० स्त्री०) देवदार।
दार्शनिक–(सं० पुं०) दर्शनशास्त्र जाननेवाला, तत्वज्ञानी; (वि०) दर्शनशास्त्र संबंधी।
दाल–(हिं० स्त्री०) दला हुआ अन्न जो सालन की तरह खाया जाता है, दाल के आकार की कोई वस्तु।
दालमोट–(हिं० स्त्री०) घी, तेल आदि में तली हुई तथा नमक, मिर्च मिलाई हुई दाल।
दाँव–(हिं० पुं०) कार्य साधन का उपाय, युक्ति, जाल, छल, खेलने की बारी।
दाँवना–(हिं० क्रि०) सूखे हुए अन्न के डंठलों का भूसा अलगाने के लिये बैलों के पैरों से रौंदवाना।
दाँवरी–(हिं० स्त्री०) रस्सी, डोरी।
दाव–(सं० पुं०) वन, जंगल, बड़वानल।
दावन–(हिं० पुं०) दमन, नाश, खुखड़ी, हँसिया।
दावना–(हिं० क्रि०) देखो दाँवना, दमन करना, नष्ट करना।
दावनी–(हिं० स्त्री०) देखो दाँवरी।
दावाग्नि, दावानल–(सं० पुं०) वन में लगनेवाली आग।
दाश–(सं० पुं०) धीवर, केवट।
दाशरथ, दाशरथि–(सं० पुं०) दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र।
दास–(सं० पुं०) शूद्र, सेवक। **दासता, दासत्व**–(सं०) सेवावृत्ति।
दासा–(हिं० पुं०) वह चबूतरा जो आँगन के चारों ओर भीत से सटाकर उठाया जाता है। **दासानुदास**–(सं० पुं०) सेवक का सेवक, अति तुच्छ सेवक।
दासिका, दासी–(सं० स्त्री०) दास की पत्नी, टहलनी।
दास्य–(सं० पुं०) दासत्व, सेवा।
दास्यमान–(सं० वि०) दान दिया जानेवाला पदार्थ।
दाह–(सं० पुं०) भस्म करने या जलाने की क्रिया, शव जलान की क्रिया, सन्ताप, अत्यन्त दुःख, ईर्ष्या। **दाहक**–(सं० वि०) जलानेवाला। **दाहकर्म**–(सं० पुं०) शव फूंकने का काम। **दाहक्रिया**–(सं० स्त्री०) दाहकर्म। **दाहघ्न**–(सं० पुं०) शरीर की जलन मिटानेवाली औषधि। **दाहना**–(हिं० क्रि०) भस्म करना, जलाना, फूंकना; (हिं० वि०) दाहिना।

दाहिना–(हिं० वि०) दक्षिण, बायाँ का उलटा, अनुकूल। **दाहिने**–(हिं० क्रि० वि०) दाहिने हाथ की ओर।

दाही–(हिं० वि०) जलाने या भस्म करनेवाला।

दिअरी, दिअली–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का बहुत छोटा दिआ, दिउली।

दिआ–(हिं०पुं०) देखो दिया। **दिआना**–(हिं० क्रि०) देखो दिलाना। **दिआ-सलाई**–(हिं०स्त्री०) देखो दियासलाई।

दिक्क–(हिं० वि०) देखो दिक।

दिक्चक्र–(सं० पुं०) आठों दिशाओं का समूह।

दिक्पाल–(सं० पुं०) दसो दिशाओं के पालन करनेवाले देवता।

दिक्षा–(हिं० स्त्री०) देखो दीक्षा।

दिखना–(हिं० क्रि०) दिखाई पड़ना।

दिखलवाई–(हिं० स्त्री०) दिखलवाने के बदले में दिया जानवाला धन। **दिखलवाना**–(हिं० क्रि०) दिखलाने में दूसरे को प्रवृत्त करना। **दिख-लाना**–(हिं०क्रि०) दृष्टिगोचर कराना, दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना। **दिखाई**–(हिं० स्त्री०) देखने का काम, दिखाने का भाव। **दिखाऊ**–(हिं० वि०) दशनीय, देखने योग्य, दिखौवा, बनावटी। **दिखावा**–(हिं० पुं०) आडंबर, ऊपरी तड़क-भड़क। **दिखैया**–(हिं० वि०) देखने या दिख-लानेवाला। **दिखौवा**–(हिं० वि०) दिखावटी, बनावटी।

दिगंश–(सं० पुं०) क्षितिज वृत्त का तीन सौ साठवां अंश।

दिगन्त–(सं० पुं०) दिशाओं का छोर, अन्त, क्षितिज; (हिं०पुं०) आँख का कोना

दिगन्तर–(सं० पुं०) दिशाओं के बीच का स्थान, विपरीत दिशा।

दिगम्बर–(सं० पुं०) शिव, महादेव; (वि०) नंगा, नग्न।

दिग्–(हिं० स्त्री०) दिशा।

दिग्गज–(सं० पुं०) आठों दिशा के आठ हाथी जो पृथ्वी को दबाये रखते हैं; (वि०) बहुत भारी या बड़ा।

दिग्ज्ञान–(सं० पुं०) वह ज्ञान-साधन जिससे सभी दिशाओं का ज्ञान हो।

दिग्घ–(हिं० वि०) दीर्घ, लंबा, बड़ा।

दिग्दर्शक-यन्त्र–(सं० पुं०) शीशा लगी हुई डिबिया के आकार का यन्त्र जिससे दिशा का बोध होता है।

दिग्दर्शन–(सं०पुं०) अभिज्ञता, जो कुछ उदाहरण के रूप में दिखाया जाय।

दिग्दाह–(सं० पुं०) एक उत्पात विशेष जिसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशायें लाल जलती हुई देख पड़ती हैं।

दिग्देवता–(सं० स्त्री०) दिक्पाल।

दिग्पति, दिग्पाल–(हिं० पुं०) देखो दिक्पाल।

दिग्विजय–(सं० पुं०) युद्ध द्वारा चारों दिशाओं की विजय। **दिग्विजयी**–(सं० वि०) जिसने दिग्विजय किया हो।

दिग्विदिक्–(सं० पुं०) सब दिशायें।

दिग्विभाग–(सं० पुं०) दिशा, ओर।

दिग्व्यापी–(सं०वि०) जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।

दिङ्मूढ़–(सं० वि०) जिसको दिशा का भ्रम हुआ हो, मर्ख।

दिच्छित–(हिं० पुं०) देखो दीक्षित।

दिजराज–(हिं० पुं०) देखो द्विजराज।

दिठवन–(हिं० स्त्री०) देखो देवोत्थान।

दिठादिठी–(हिं०स्त्री०) देखो देखादेखी।

दिठाना–(हिं०क्रि०) बुरी दृष्टि लगाना।

दिठौना–(हिं०पुं०) काजल का टीका जो बालक के माथे पर कुदृष्टि न पड़न के लिये लगाया जाता है।
दिढ़–(हिं० वि०) देखो दृढ़, पुष्ट।
दिढ़ाना–(हिं० क्रि०) दृढ़ करना।
दिदृक्षा–(सं० स्त्री०) देखने की अभिलाषा। **दिदृक्षु**–(सं० वि०) जो देखना चाहता हो।
दिन–(सं० पुं०) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय, साठ दण्ड, परिमित काल, समय, काल, नियुक्त काल, निश्चित समय।
दिनअर–(हिं० पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनकंत–(हिं० पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनकर्ता–(सं० पुं०) सूर्य। **दिनचर्या**–(सं० स्त्री०) दिनभर का काम-धंधा। **दिननाथ**, **दिननायक**–(सं० पुं०) सूर्य, दिनकर। **दिननाह**–(सं० पुं०) दिननाथ, सूर्य। **दिनप**, **दिनपति**–(सं० पुं०) सूर्य, अर्क, वृक्ष। **दिनमान**–(सं० पुं०) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान। **दिनमुख**–(सं० पुं०) प्रभात, सबेरा।
दिनराज–(सं० पुं०) सूर्य, दिनकर।
दिनाइ–(हिं० पुं०) दद्रु, दाद का रोग।
दिनागम–(सं०पुं०) प्रातःकाल, तड़का।
दिनाती–(हिं० स्त्री०) कर्मकारों का एक दिन का वेतन।
दिनाधीश–(सं०पुं०) सूर्य, मदार का वृक्ष।
दिनान्त–(सं० पुं०) सन्ध्याकाल।
दिनान्तक–(सं० पुं०) अन्धकार, अँधेरा।
दिनियर–(हिं० पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनी–(हिं०वि०) बहुत दिनों का पुराना।
दिनेर–(हिं० पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनेश–(सं० पुं०) आदित्य, सूर्य।
दिनेश्वर–(सं० पुं०) दिनेश, सूर्य।
दिनौंधी–(हिं० स्त्री०) आँख का वह रोग जिसमें सूर्य के तीव्र प्रकाश में अच्छी तरह नहीं देख पड़ता।
दिपति–(हिं० स्त्री०) देखो दीप्ति।
दिपना–(हिं०क्रि०) चमकना। **दिपाना**–(हिं० क्रि०) चमकाना।
दिब–(हिं० वि०) देखो दिव्य।
दिमात–(हिं० वि०) दो मात्रावाला।
दिय–(सं० वि०) देय, देने योग्य।
दियट–(हिं० स्त्री०) देखो दीयट।
दियना–(हिं० क्रि०) चमकाना।
दिया–(हिं० पुं०) देखो दीया।
दियाबत्ती–(हिं० स्त्री०) दिया जलाने का काम।
दियासलाई–(हिं० स्त्री०) वह लकड़ी जो रगड़ने से जल उठती है।
दिरद–(हिं० पुं०) देखो द्विरद।
दिरानी–(हिं० स्त्री०) देखो देवरानी।
दिरिस–(हिं० पु०) देखो दृश्य।
दिलवाना–(हिं० क्रि०) देखो दिलाना।
दिलवैया–(हिं० वि०) दिलानेवाला।
दिलाना–(हिं० क्रि०) देन का कार्य दूसरे से कराना।
दिलासा–(हिं० पुं०) आश्वासन, ढाढ़स।
दिली–(हिं० वि०) हार्दिक, अति घनिष्ठ।
दिल्ला–(हिं० पुं०) किवाड़ के पल्ले में जड़ा हुआ लकड़ी का चौखटा, दिलाहा।
दिल्लीवाल–(हिं०वि०) दिल्ली नगर का, एक प्रकार का दिल्ली का बना हुआ जूता।
दिव–(सं०स्त्री०) आकाश, दिन; (पुं०) वन, जंगल।
दिवङ्गम–(सं० वि०) आकाशगामी, स्वर्गगामी।
दिवरानी–(हिं० स्त्री०) देखो देवरानी।
दिवस–(सं० पुं०) दिन, वासर।

दिवा–(सं० पुं०) दिवस, दिन।
दिवाचर–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया।
दिवाचारी–(सं०वि०) दिन में चलनेवाला।
दिवान–(हिं० पुं०) दीवान, मन्त्री।
दिवाना–(हिं० क्रि०) दिलवाना।
दिवानाथ–(हिं० पुं०) सूर्य।
दिवानिशि–(सं० स्त्री०) दिन-रात।
दिवान्ध–(सं० पुं०) उल्लू; (वि०) जिसको दिन में न सूझता हो।
दिवाभीत–(सं० पुं०) उल्लू।
दिवामणि–(सं० पुं०) सूर्य।
दिवामध्य–(सं० पुं०) मध्याह्न, दोपहर।
दिवामुख–(सं० पुं०) प्रभात, सबेरा।
दिवाल–(हिं० वि०) देनेवाला।
दिवाला–(हिं० पुं०) महाजन की वह अवस्था जब उसके पास अपना ऋण चुकाने के लिये धन न रह जाय। दिवालिया–(हिं० वि०) जिसके पास ऋण चुकाने के लिये धन न बचा हो।
दिवाली–(हिं० स्त्री०) देखो दीपावली।
दिवावसान–(सं० पुं०) सन्ध्या, शाम।
दिवास्वप्न–(सं० पुं०) दिन की निद्रा।
दिवास्वापा–(सं० स्त्री०) बगुला पक्षी।
दिविचर, दिविचारी–(सं० वि०) आकाशगामी।
दिविष्ठ–(सं०वि०) स्वर्ग में रहनेवाला।
दिवैया–(हिं०वि०) देनेवाला, जो देता हो।
दिवोद्भव–(सं० वि०) स्वर्ग में उत्पन्न; (सं०पुं०) देवता।
दिवौकस्–(सं०वि०) स्वर्ग में रहनेवाला।
दिव्य–(सं० वि०) स्वर्गीय, प्रकाशमान्, चमकीला, अति सुन्दर, अलौकिक, अच्छी तरह स्वच्छ किया हुआ। दिव्यचक्षु–(सं० पुं०) ज्ञानचक्षु। दिव्यता–(सं० स्त्री०) उत्तमता, सुन्दरता। दिव्यदर्शी–(सं० वि०) अलौकिक पदार्थों को देखनेवाला। दिव्यदृष्टि–(सं० स्त्री०) अलौकिक दृष्टि। दिव्यवाक्य–देववाणी। दिव्यसरित–(सं० स्त्री०) आकाश गङ्गा। दिव्यस्त्री–(सं० स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा।
दिव्याङ्गना–(सं० स्त्री०) अप्सरा।
दिव्यांश–(सं० पुं०) दिवाकर, सूर्य। दिव्यास्त्र–(सं० पुं०) देवताओं का दिया हुआ अस्त्र, मन्त्रों की शक्ति से चलनेवाला अस्त्र।
दिव्योदक–(सं० पुं०) वर्षा का पानी।
दिशा–(सं० स्त्री०) ओर, क्षितिज, वृत्त के चार कल्पित विभागों में से एक विभाग या विस्तार।
दिशि–(हिं० स्त्री०) देखो दिशा।
दिष्ट–(सं० पुं०) भाग्य, काल; (वि०) दिखलाया हुआ, उपदेश किया हुआ, दिया हुआ।
दिष्टबन्धक–(हिं० पुं०) वह बंधक जिसमें महाजन को केवल रुपये का सूद मिलता है और बंधक की हुई वस्तु पर कोई अधिकार नहीं होता।
दिष्टि–(सं० स्त्री०) हर्ष, उपदेश-कथन।
दिसंतर–(हिं० पुं०) देशान्तर, विदेश, परदेश।
दिस–(हिं० स्त्री०) दिशा।
दिसना–(हिं० क्रि०) दिखाई पड़ना।
दिसा–(हिं० स्त्री०) देखो दिशा, मलत्याग।
दिसावर–(हिं० पुं०) देशान्तर, परदेश। दिसावरी–(हिं० वि०) विदेश से आया हुआ।
दिसैया–(हिं० वि०) देखने या दिखलानेवाला।
दिस्टी–(हिं० स्त्री०) देखो दृष्टि। दिष्टीबंध–(हिं० पुं०) इन्द्रजाल, जादू।

दिस्ता–(हिं० पुं०) देखो दस्ता।
दिहाड़ा–(हिं०पुं०) दुर्गति, बुरी अवस्था।
दिहात–(हिं० स्त्री०) देखो देहात।
दिहाती–(हिं० वि०) ग्रामीण।
दिहातीपन–(हिं० पुं०) ग्रामीणता।
दिहुड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो ड्योढ़ी।
दिहेज–(हिं० पुं०) देखो दहेज।
दीअट–(हिं० स्त्री०) देखो दीयट।
दीआ–(हिं० पुं०) देखो दीया।
दीक्षक–(सं० वि०) दीक्षा देनेवाला, उपदेश देनेवाला, शिक्षक। **दीक्षण**–(सं० पुं०) दीक्षा देने की क्रिया।
दीक्षा–(सं० स्त्री०) संकल्पपूर्वक अनुष्ठान, मन्त्र का उपदेश, गुरु से नियमपूर्वक मन्त्र ग्रहण करना, गुरुमन्त्र।
दीक्षित–(सं० वि०) जिसने आचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा ली हो; (पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
दीखना–(हिं० क्रि०) देख पड़ना।
दीघी–(हिं० स्त्री०) तालाब, पोखरी।
दीच्छा–(हिं० स्त्री०) देखो दीक्षा।
दीठ, दीठि–(हिं०स्त्री०) नेत्र की ज्योति, देखने की शक्ति, खुली हुई आँख, किसी अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि डालना जिसका बुरा प्रभाव पड़े, देखभाल।
दीठबंद–(हिं० पुं०) इन्द्रजाल, जादू।
दीठबंदी–(हिं० स्त्री०) जादू।
दीति–(सं० स्त्री०) दीप्ति, प्रकाश।
दीदी–(हिं० स्त्री०) बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द।
दीधिति–(सं० स्त्री०) सूर्य, चन्द्रमा आदि की किरण। **दीधितिमान्**–सूर्य।
दीन–(सं०वि०) दुःखित, दरिद्र, उदास, विनीत।
दीनताई–(हिं० स्त्री०) दीनता, विनीत भाव। **दीनदयालु**–(सं०वि०) दुखियों पर दया करनेवाला; (पुं०) परमेश्वर का एक नाम। **दीनबन्धु**–(सं० पुं०) वह जो दुखियों की सहायता करता है, ईश्वर का एक नाम।
दीनानाथ–(सं० पुं०) दुखियों का रक्षक, परमेश्वर।
दीनार–(सं० पुं०) सुवर्ण-मुद्रा, सोने की मोहर।
दीप–(सं० पुं०) जलती हुई बत्ती, दीया; (हिं० पुं०) देखो द्वीप।
दीपक–(सं० पुं०) दीया; (वि०) प्रकाश फैलानेवाला, पाचन-शक्ति को तीव्र करनेवाला, उत्तेजक। **दीपकवृक्ष**–(सं० पुं०) एक प्रकार का दीवट जिसमें दिया रखने के लिये अनेक शाखायें होती हैं। **दीपकसुत**–(सं० पुं०) कज्जल, काजल। **दीपकाल**–(सं० पुं०) सन्ध्या समय, दीया जलाने का समय।
दीपदान–(सं० पुं०) किसी देवता के सामने दीपक जलाने का कार्य।
दीपदानी–(हिं० स्त्री०) घी की बोरी हुई बत्ती रखने की डिबिया।
दीपन–(सं० पुं०) क्षुधा को तीव्र करना, उत्तेजन; (वि०) भूख को बढ़ानेवाला।
दीपना–(हिं० क्रि०) प्रकाशित होना, चमकना।
दीपनीय–(सं० वि०) उत्तेजित करने योग्य।
दीपपादप–(सं० पुं०) दीपवृक्ष, दीवट।
दीपमाला–(सं० स्त्री०) जलते हुये दीपकों की पंक्ति। **दीपमालिका**–(सं० स्त्री०) जलते हुए दीपकों की पंक्ति, दीवाली। **दीपमाली**–(हिं० स्त्री०) दीवाली।
दीपित–(सं०वि०) प्रकाशित, प्रज्वलित।

दीपोत्सव–(सं० पुं०)दीपावली, दीवाली।
दीप्त–(सं०वि०)प्रज्वलित, जलता हुआ।
दीप्तांशु–(सं० पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष।
दीप्ताङ्ग–(सं०वि०) जिसका अङ्ग चमकता हो, मोर।
दीप्ति–(सं० पुं०)द्युति, प्रकाश, उजाला, प्रभा, चमक। **दीप्तिमान**–(सं० वि०) दीप्तियुक्त, चमकता हुआ।
दीप्तोपल–(सं० पुं०) सूर्यकान्त मणि।
दीप्यमान–(सं० वि०) चमकता हुआ।
दीबो–(हिं० पुं०) देखो देना।
दीयट–(हिं० पुं०) देखो दीवट।
दीयमान–(सं०वि०) जो देने योग्य हो।
दीया–(हिं० पुं०) वह बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती हो, दीपक; (स्त्री०) वह पात्र जिसमें तेल डालकर बत्ती जलाई जाती है।
दीयासलाई–(हिं० स्त्री०) लकड़ी की छोटी सींक जिसके छोर पर मसाला लगा होता है जो रगड़ने से जल उठती हो।
दीरघ–(हिं० वि०) देखो दीर्घ।
दीर्घ–(सं० वि०) आयत, लंबा, बड़ा।
दीर्घकण्ठ–(सं० पुं०) बकुला; (वि०) जिसकी गर्दन लंबी हो। **दीर्घकाय**–(सं० वि०) लंब-चौड़े शरीरवाला। **दीर्घकाल**–(सं० पुं०) अनक दिन।
दीर्घकेश–(सं० पुं०) भालू; (वि०) जिसके बाल लंबे हों।
दीर्घगति–(सं० पुं०) ऊँट; (वि०) लंबी डग मारनेवाला। **दीर्घजिह्वी**–(सं० पुं०) कुक्कुर, कुत्ता। **दीर्घजीवी**–(सं० वि०) बहुत दिनों तक जीनेवाला। **दीर्घतन्तु**–(सं० पुं०) लंबा तागा। **दीर्घता**–(सं० स्त्री०) लंबाई। **दीर्घदर्शिता**–(सं० स्त्री०) दूरदर्शिता। **दीर्घदर्शी**–(सं०पुं०) वह जो सब बातों का परिणाम सोच लेता है। **दीर्घदृष्टि**–(सं० पुं०) वह जो दूर तक की बात सोचता हो, पण्डित।
दीर्घनिद्रा–(सं० स्त्री०) बहुत देर तक रहनेवाली नींद, मृत्यु। **दीर्घरद**–(सं० पुं०) शूकर, सूअर; (वि०)जिसके दाँत लम्बे हों। **दीर्घरोगी**–(सं० वि०)बहुत दिनों का रोगी। **दीर्घरोम**–(सं० पुं०) भालू; (वि०) बड़े-बड़े बालोंवाला।
दीर्घलोचन–(सं० वि०) बड़ी-बड़ी आँखोंवाला। **दीर्घश्मश्रुत**–(सं० वि०) बड़ी दाढ़ीवाला। **दीर्घश्रु**–(सं० वि०) जो दूर तक सुन पड़े, जिसका नाम दूर तक प्रसिद्ध हो। **दीर्घसूत्रता**–(सं० स्त्री०) प्रत्येक कर्म में विलंब करने का अभ्यास। **दीर्घसूत्री**–(सं०वि०) विलंब करनेवाला। **दीर्घस्वर**–(सं० पुं०) वह स्वर जिसमें दो मात्रायें हों।
दीर्घास्य–(सं० वि०) बड़े मुखवाला।
दीर्घिका–(सं० स्त्री०) छोटा तालाब, बावली।
दीर्घोच्चारण–(सं० पुं०)गुरु उच्चारण।
दीवट–(हिं० स्त्री०) दीया रखने का धातु या लकड़ी का बना हुआ आधार।
दीवाला–(हिं० पुं०) देखो दिवाला।
दीवाली–(हिं० स्त्री०) एक उत्सव जो कार्तिक की अमावस्या के दिन होता है जिसमें सन्ध्या के समय नगर में तथा घर के बाहर जलते हुए दीपकों की पंक्ति रक्खी जाती है।
दीसना–(हिं० क्रि०) देख पड़ना।
दीह–(हिं० वि०) दीर्घ, लंबा, बड़ा।
दुंद–(हिं० पुं०) युग्म, जोड़ा, दुन्दुभि, नगाड़ा।
दुंदुह–(हिं० पुं०) जलसर्प, डेड़हा।

दुःख–(सं० पुं०) संकट, व्यथा, कष्ट, पीड़ा। **दुःखकर**–(सं० वि०) कष्ट पहुँचानेवाला। **दुःखता**–(सं० स्त्री०) दुःख का भाव। **दुःखद**–(सं० वि०) दुःखदायी, क्लेश पहुँचानेवाला।
दुःखदाता–(सं० वि०) क्लेश पहुँचानेवाला। **दुःखदायक, दुःखदायी**–(सं० वि०) क्लेश देनेवाला। **दुःखप्रद**–(सं० वि०) कष्ट देनेवाला। **दुःखभाग**–(सं० वि०) दुःख भोगनेवाला।
दुःखशील–(सं० वि०) जो सर्वदा दुःख भोगता हो। **दुःखसाध्य**–(सं० वि०) जिसका करना कठिन हो।
दुःखाकर–(सं० पुं०) दुःख की खान।
दुःखान्त–(सं० पुं०) क्लेश की समाप्ति; (वि०) जिस नाटक आदि के अन्त में दुःख का वर्णन हो।
दुःखार्त–(सं० वि०) दुःख पीड़ित।
दुःखित–(सं० वि०) जिसको दुःख हो।
दुःखी–(सं० वि०) क्लेशित, पीड़ित।
दुःशकुन–(सं० पुं०) बुरा शकुन।
दुःशासन–(सं० वि०) जिस पर शासन करना कठिन हो।
दुःशील–(सं० वि०) बुरे स्वभाव का।
दुःशीलता–(सं०स्त्री०) दुष्टता, अविनय।
दुःशोध–(सं० वि०) जिसका शोधन या सुधार कठिनता से हो।
दुःसंकल्प–(सं० पुं०) दुष्ट विचार।
दुःसंग–(सं० पुं०) कुसंग।
दुःसह–(सं० वि०) जिसका सहना कठिन हो। **दुःसाध्य**–(सं० वि०) जिसका सहन करना कठिन हो, जिसका उपाय कठिन हो।
दुःसाहस–(सं० पुं०) अनुचित साहस।
दुःस्त्री–(सं० स्त्री०) दुष्ट स्त्री।
दुःस्थित–(सं०वि०) दुःख में अवस्थित, दरिद्र। **दुःस्थिति**–(सं० स्त्री०) दुर्दशा।
दुःस्वभाव–(सं० पुं०) बुरा स्वभाव; (वि०) बुरे स्वभाव का।
दु–(हिं० वि०) 'दो' शब्द का छोटा रूप जो समस्त पद के पहिले जोड़ा जाता है।
दुआदस–(हिं० वि०) द्वादश, बारहवाँ।
दुआर–(हिं० पुं०) द्वार। **दुआरी**–(हिं० स्त्री०) छोटा द्वार।
दुआली–(हिं०स्त्री०) वह आरा जिसको दो आदमी चलाते हैं।
दुइ–(हिं० वि०) दो संख्या, दो।
दुइज–(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि।
दुऊ–(हिं० वि०) दोनों।
दुकड़हा–(हिं० वि०) जिसका दाम दो दमड़ी या एक छदाम हो, तुच्छ, नीच। **दुकड़ा**–(हिं०पुं०) एक में लगी हुई दो वस्तु, एक पैसे का चौथा अंश। **दुकड़ी**–(हिं० वि०) जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो; (स्त्री०) वह ताश का पत्ता जिसमें दो बूटियाँ हों।
दुकना–(हिं० क्रि०) छिपना।
दुकाल–(हिं० पुं०) दुष्काल, अकाल।
दुकूल–(सं० पुं०) महीन वस्त्र।
दुकेला–(हिं०वि०) जो अकेला न हो। **दुकेले**–(हिं० क्रि० वि०) दूसरे व्यक्ति को साथ लिये हुए।
दुक्कड़–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाजा जो तबले की तरह का होता है, दो नावों का बेड़ा जो एक में एक जुटी होती हैं।
दुक्का–(हिं० वि०) जो अकेला न हो, जोड़ा।
दुखंडा–(हिं० वि०) जिस(घर) में दो खण्ड हों।
दुख–(हिं० पुं०) देखो दुःख। **दुखड़ा**–

(हिं० पुं०) दुःख की कथा, विपत्ति का वर्णन। **दुखदाई**–(हिं०वि०) कष्ट देनेवाला । **दुखना**–(हिं०क्रि०) पीड़ा-युक्त होना। **दुखरा**–(हिं० पुं०) देखो दुखड़ा। **दुखवाना**–(हिं०क्रि०) दुखाना। **दुखाना**–(हिं० क्रि०) कष्ट पहुँचाना ।
दुखारा, दुखारी–(हिं०वि०) दुःख-पीड़ित।
दुखित–(हिं० वि०) दुःखित, पीड़ित । **दुखिया**–(हिं० वि०) दुःखी, पीड़ित । **दुखियार**–(हिं० वि०) जिसको किसी बात का दुःख हो, रोगी।
दुखी–(हिं०वि०) जिसको कोई कष्ट हो।
दुखीला–(हिं० वि०) दुःखपूर्ण । **दुखौंहाँ**–(हिं० वि०) दुःखदायी।
दुगदुगी–(हिं० स्त्री०) धुकधकी, गले में पहिनने का एक गहना।
दुगुना–(हिं० वि०) द्विगुण, दूना।
दुगुण–(हिं० वि०) देखो द्विगुण, दूना ।
दुगुन–(हिं० वि०) द्विगुण, दूना।
दुगूल–(हिं० पुं०) देखो दुकूल।
दुग्ग–(हिं० पुं०) देखो दुर्ग।
दुग्ध–(सं० पुं०) दूध । **दुग्धदा**–(सं० वि०) दूध देनेवाली।
दुघड़िया–(हिं०वि०) दो घड़ी का (मुहूर्त)
दुचित्–(हिं० वि०) अस्थिर चित्त।
दुचितई, दुचिताई–(हिं० स्त्री०) चिन्ता, द्विविधा, शंका।
दुचित्ता–(हिं० वि०) अस्थिर चित्त, चिन्तित।
दुज–(हिं० पुं०) देखो द्विज।
दुजन्मा–(हिं० पुं०) देखो द्विजन्मा ।
दुजपति–(हिं० पुं०) देखो द्विजपति ।
दुजाति–(हिं० पुं०) द्विज।
दुजानू–(हिं०क्रि०वि०) दोनों जाँघ के बल।
दुजीह–(हिं० पुं०) द्विजिह्व, सर्प ।
दुजेश–(हिं० पुं०) देखो द्विजेश।
दुटप्पी बात–(हिं०पुं०) संक्षिप्त वार्ता।
दुटूक, दुटूक–(हिं०वि०) दो टुकड़ों में किया हुआ।
दुण्डुभि–(सं० पुं०) देखो दुन्दुभि, नगाड़ा।
दुत्–(हिं०अव्य०) तिरस्कार-सूचक शब्द जो हटाने के लिये प्रयुक्त होता है।
दुतकार–(हिं० स्त्री०) धिक्कार, तिरस्कार। **दुतकारना**–(हिं०क्रि०) तिरस्कार करना।
दुति–(हिं० स्त्री०) द्युति, आभा, चमक।
दुतिमान–(हिं० वि०) देखो द्युतिमान।
दुतिय–(हिं० वि०) देखो द्वितीय, दूसरा।
दुतिया–(हिं० स्त्री०) द्वितीया।
दुतिवंत–(हिं०वि०) द्युतिमान, चमकीला।
दुतिय–(हिं० वि०) द्वितीय, दूसरा।
दुतिया–(हिं०स्त्री०) देखो द्वितीय; दूज।
दुदल–(हिं० वि०) द्विदल; (पुं०) दाल।
दुदलाना–(हिं० क्रि०) दुतकारना।
दुदहँडी–(हिं०स्त्री०) दूध रखने का मिट्टी का पात्र।
दुधमुख–(हिं० वि०) दूध पीता हुआ।
दुधहँडी, दुधहांडी–(हिं०स्त्री०) दूध रखने या गरम करने का पात्र।
दुधाँड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो दुधहँडी ।
दुधार–(हिं० वि०) दूध देनेवाली।
दुधारा–(हिं० वि०) जिसमें दोनों ओर धार हो; (पुं०) तलवार, खाँड़ा। **दुधारी**–(हिं० वि०) दूध देनेवाली, जिसमें दोनों ओर धार हो।
दुधारू–(हिं० वि०) देखो दुधार।
दुधिया–(हिं० वि०) दूध मिला हुआ, सफेद रंग का, दूध की तरह सफेद; (पुं०) खड़िया मिट्टी।
दुधैल–(हिं० वि०) बहुत दूध देनेवाली।
दुनरना, दुनवना–(हिं० क्रि०) लचककर दोहरा हो जाना।

दुनाली–(हिं० वि०) जिसम दो नाली लगी हों; (स्त्री०) दुनाली बंदूक जिसमें एक साथ दो गोलियाँ भरी जा सकें।
दुनी–(हिं०स्त्री०) संसार, दुनिया।
दुन्दुभ–(सं० पुं०) दुन्दुभि, नगाड़ा।
दुन्दुभि–(सं० पुं०) बड़ा ढोल, नगाड़ा।
दुपटा,दुपट्टा–(हिं०पुं०)दो पाट की चद्दर, वह लम्बा वस्त्र जो कन्ध या गले पर से ओढ़ा जाता है।
दुपद–(हिं० पुं०) देखो द्विपद।
दुपर्दी–(हिं० स्त्री०) मिरजई।
दुपलिया–(हिं० वि०) दो पल्लेवाली।
दुपहर, दुपहरी–(हिं० स्त्री०)देखो दोपहर। **दुपहरिया**–(हिं० स्त्री०) मध्याह्न, दोपहर।
दुफसली–(हिं० वि०) दोनों फसलों में (अर्थात् रबी और भदई दोनों में) उत्पन्न होनेवाला; (वि०) सन्दिग्ध, अनिश्चित।
दुबधा–(हिं० स्त्री०) अनिश्चित, असमंजस, चिन्ता, संशय।
दुबरा–(हिं० वि०) देखो दुबला।
दुबराना–(हिं० क्रि०) दुर्बल होना।
दुबला–(हिं० वि०)दुर्बल, कृश। **दुबलापन**–(हिं० पुं०) दुर्बलता।
दुबाइन–(हिं० स्त्री०) दूबे की स्त्री।
दुबारा–(हिं० क्रि० वि०)देखो दोबारा।
दुबाहिया–(हिं० वि०) वह योद्धा जो दोनों हाथों से तलवार चलाता हो।
दुबे–(हिं० पुं०)ब्राह्मणों की एक उपाधि।
दुभाषी–(हिं० पुं०) देखो द्विभाषी।
दुभाषिया, दुभासी–(हिं० पुं०) वह जो दो भाषाओं को जानता हो।
दुमन–(हिं० पुं०) अप्रसन्न, खिन्न।
दुमाता–(हिं० वि०) सौतेली माता।
दुमाला–(हिं० पुं०) पाश, फन्दा।
दुमुहाँ–(हिं० वि०) दो मुखवाला।
दुरंगा–(हिं० वि०)दो रंग का, दो तरह का।
दुरंत, दुरंद–(हिं० वि०) दुर्गम, कठिन, भारी, दुष्ट।
दुर–(सं० अव्य०) क्रिया के साथ लगाने से इस शब्द का अर्थ "दुष्ट, बुरा, निषेध, दुःख, थोड़ा संकट तथा दुबला होता है"; (हिं० अव्य०) तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिये इस शब्द का व्यवहार होता है। इसका अर्थ है "दूर हो"। **दुरदुर करना**–तिरस्कारपूर्वक हटाना।
दुरजन–(हिं० वि०) दुर्जन, दुष्ट।
दुरतिक्रम–(सं० वि०) अपार, प्रबल।
दुरत्यय–(सं० वि०)दुस्तर, जिसका पार करना कठिन हो।
दुरद–(हिं० पुं०) देखो द्विरद।
दुरदाम–(हिं० वि०) कष्टसाध्य।
दुरदुराना–(हिं० क्रि०) तिरस्कार दिखलाते हुए दूर करना।
दुरदृष्ट–(सं० पुं०) अदृष्ट, दुर्भाग्य।
दुरधिग, दुरधिगम्य–(सं० वि०) कठिनता से मिलने योग्य।
दुरधीत–(सं० वि०)बुरी तरह से अध्ययन किया हुआ।
दुरध्यय–(सं० वि०) अध्ययन करने में अशक्य। **दुरध्यवसाय**–(सं० पुं०)बुरा काम करने की चेष्टा।
दुरध्व–(सं० पुं०) कुपथ, कुमार्ग।
दुरना–(हिं० क्रि०) आड़ में होना, छिप जाना।
दुरन्त–(सं० वि०) जो पहिले अच्छा जान पड़े परन्तु जिसका अन्त बुरा हो।
दुरबार–(हिं० वि०) अटल।
दुरबास–(हिं० पुं०) दुर्गन्ध।

दुरभेव–(हिं० पुं०)दुर्भाव, मनमोटाव।
दुरमुस–(हिं० पुं०) गदा के आकार का यन्त्र जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है।
दुरवस्थ–(सं० वि०) जो दुर्दशा में हो, जिसकी दशा अच्छी न हो।
दुराकांक्षा–(सं० स्त्री०) बुरे विषय की अभिलाषा।
दुराकृति–(सं० स्त्री०) बुरा स्वरूप।
दुराक्रम–(सं० वि०) जो बड़ी कठिनता से आक्रमण किया जावे।
दुरागौन–(हिं० पुं०)वधू का दूसरी बार ससुराल को जाना, द्विरागमन।
दुराग्रह–(सं० पुं०)किसी विषय में बुरी तरह से हठ करना। दुराग्रही–(हिं० वि०) जो बिना उचित-अनुचित विचार किये हुए अपने मत पर अड़ा रहता है, हठी।
दुराचरण–(सं० पुं०) बुरा व्यवहार।
दुराचार–(सं० पुं०) बुरा आचरण।
दुराज–(हिं० पुं०) दुष्ट शासन।
दुरात्मा–(सं० वि०) नीच प्रकृति का, खोटा।
दुरादुरी–(हिं० पुं०) गोपन, छिपाव।
दुराधार–(सं० वि०) जो कठिनता से सहारा पा सके।
दुराना–(हिं० क्रि०) हटना, छिपना, दूर करना।
दुराप–(सं० वि०)दुष्प्राप्य, कठिनता से मिलने योग्य।
दुराम्नाय–(सं० वि०) जो बड़ी कठिनता से वश में लाया जा सके।
दुराराध्य–(सं० वि०) दुष्प्राप्य, जो कठिनता से प्राप्त हो सके। दुराराध्य–(सं० वि०) जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो।
दुरालाप–(सं० पुं०) कटुवचन, गाली-गलौज।
दुराव–(हिं० पुं०) किसी से बात गुप्त रखने का भाव, कपट, छल।
दुराश–(सं० पुं०) जिसको अच्छी आशा न हो। दुराशय–(सं० वि०) जिसका अभिप्राय बुरा हो।
दुराशा–(सं० स्त्री०) व्यर्थ की आशा।
दुरासद–(सं० वि०) दुष्प्राप्य, जिसका मिलना कठिन हो।
दुरित–(सं० पुं०)पातक, पाप।
दुरुक्त–(सं० पुं०)कटुवचन, अपशब्द।
दुरुक्ति–(सं० स्त्री०) कटुवाक्य, कठोर वचन।
दुरुत्तर–(सं० वि०)दुस्तर, जिसको पार करना कठिन हो, अनुत्तर, जिसका उत्तर देना कठिन हो; (पुं०) बुरा उत्तर या जवाब।
दुरुद्वह–(सं० वि०) दुःसह।
दुरुपचार–(सं० पुं०) बुरा व्यवहार।
दुरुपयोग–(सं० पुं०)अनुपयुक्त व्यवहार।
दुरुपाय–(सं० पुं०) बुरा विचार।
दुरेफ–(हिं० पुं०) देखो द्विरेफ।
दुर्ग–(सं० पुं०)कोट, गढ़।
दुर्गत–(सं० वि०) दुर्दशाग्रस्त, दरिद्र; (स्त्री०) देखो दुर्गति।
दुर्गतरणी–(सं०स्त्री०)एक देवी का नाम।
दुर्गति–(सं०स्त्री०)बुरी स्थिति, दुर्दशा।
दुर्गन्ध–(सं० पुं०) बुरी गन्ध; (वि०) बुरी गन्ध का। दुर्गन्धी–(सं० वि०) जिसकी गन्ध बुरी हो
दुर्गपति–(सं० पुं०)दुर्गरक्षक। दुर्गपाल–(सं० पुं०) दुर्ग का रक्षक।
दुर्गम–(सं० वि०) जहाँ पहुंचना कठिन हो, जिसका जानना कठिन हो, दुस्तर, विकट।

दुर्गरक्षक–(सं० पुं०) गढ़पति ।
दुर्गा–(सं० स्त्री०) आदि शक्ति ।
दुर्गाधिकारी–(सं० पुं०) दुर्ग का रक्षक ।
दुर्गुण–(सं० पुं०) बुरा गुण, दोष, बुराई ।
दुर्गेश–(सं० पं०) दुर्ग का अध्यक्ष ।
दुर्ग्रह–(सं० वि०) जो कठिनता से पकड़ा जा सके । **दुर्ग्राह्य**–(सं० वि०) कठिनता से पकड़े जाने योग्य ।
दुर्घट–(सं०वि०) कठिनता से होने योग्य । **दुर्घटना**–(सं० स्त्री०) अशुभ घटना, विपत्ति ।
दुर्जन–(सं० पुं०) दुष्ट मनुष्य । **दुर्जनता**–(सं० स्त्री०) खोटापन, दुष्टता ।
दुर्जय–(सं० वि०) जिसको जीतना कठिन हो ।
दुर्जात–(सं० वि०) जिसका जन्म बुरी तरह से हुआ हो, नीच, अभागा ।
दुर्जीव–(सं० पुं०) बुरा जीवन ।
दुर्जेय–(सं० वि०) जिसका जीतना कठिन हो ।
दुर्ज्ञेय–(सं० वि०) दुर्बोध, जो सहज में समझ में न आ सके ।
दुर्णीत–(स० स्त्री०) देखो दुर्नीत ।
दुर्दम–(सं० वि०) प्रचण्ड । **दुर्दम्य**–(सं०वि०) जो शीघ्र जीता न जा सके ।
दुर्दर्श–(सं० वि०) भयंकर रूप का ।
दुर्दशा–(सं०स्त्री०) बुरी अवस्था, बुरी दशा दुर्गति ।
दुर्दान्त–(सं० वि०) प्रचण्ड, प्रबल ।
दुर्दिन–(सं० पुं०) ऐसा दिन जब बादल छाये हों, बुरा दिन, कष्ट का समय ।
दुर्दिवस–(सं० पुं०) दुर्दिन, बरसात का दिन ।
दुर्दैव–(सं०पुं०) दुर्भाग्य, पाप, बुरा संयोग ।
द्रुम–(सं० पुं०) पलाण्डु, प्याज ।
दुर्धर–(सं०वि०) कठिनता से होने योग्य, प्रचण्ड, दुर्ज्ञेय ।
दुर्धर्ष–(सं० वि०) प्रबल, प्रचण्ड ।
दुर्नय–(सं० पुं०) नीति विरुद्ध आचरण ।
दुर्नाद–(सं० पुं०) अप्रिय ध्वनि ।
दुर्नाम–(सं० पुं०) दुर्वचन, गालीगलौज ।
दुर्निर्मित–(सं० वि०) जो बुरे विचार से फेंक दिया गया हो ।
दुर्निवार्य–(सं०वि०) जो जल्दी से हटाया न जा सके ।
दुर्नीत–(सं० पुं०) बुरी नीति, कुचाल ।
दुर्बचन–(हि०पुं०) दुर्वचन, कुवाक्य, गाली ।
दुर्बद्ध–(सं० वि०) बुरी तरह से बाँधा हुआ ।
दुर्बल–(सं०वि०) बलहीन, दुबला-पतला, कृश । **दुर्बलता**–(हिं०स्त्री०) दुबलापन ।
दुर्बुद्धि–(सं० स्त्री०) दुर्मति, कुबुद्धि; (वि०) मन्द बुद्धिवाला, दुष्ट ।
दुर्बुध–(सं०वि०) गूढ़, कठिन, क्लिष्ट ।
दुर्भक्ष–(सं० वि०) जो जल्दी से खाया न जा सके, खाने में जो अच्छा न लगे ।
दुर्भक्ष्य–(सं० वि०) जिसका खाना कठिन हो ।
दुर्भग–(सं० वि०) अभागा ।
दुर्भर–(सं० वि०) दुःसह, भारी ।
दुर्भागी–(सं० वि०) मन्दभाग्य, अभागा ।
दुर्भाग्य–(सं० पुं०) मन्दभाग्य, पापी; (वि०) हतभाग्य, अभागा ।
दुर्भाव–(सं०पुं०) बुरा भाव, द्वेष, मनोमालिन्य । **दुर्भावना**–(सं० स्त्री०) बुरी भावना ।
दुर्भाषित–(सं० पुं०) बुरा कहा हुआ ।
दुर्भाषी–(सं०वि०) कटु वचन बोलनेवाला ।
दुर्भिक्ष–(सं० पुं०) अकाल । **दुर्भिच्छ**–(हिं० पुं०) दुर्भिक्ष, अकाल ।
दुर्भिद–(सं०वि०) जो जल्दी से भेदा न जा सके ।

दुर्भेद, दुर्भेद्य–(सं० वि०) जो सहज में भेदा या छेदा न जा सके।
दुर्मति–(सं० स्त्री०) दुर्बुद्धि।
दुर्मद–(सं० वि०) मद में चूर, अभिमान में भरा हुआ।
दुर्मनस्–(सं० पुं०) बुरा मन या चित्त; (वि०) खिन्न, उदास।
दुर्मन्त्र, दुर्मन्त्रणा–(सं०पुं०) बुरा परामर्श।
दुर्मन्त्रित–(सं० वि०) जिसने बुरी मन्त्रणा दी हो। दुर्मन्त्रि–(सं० पुं०) कुमन्त्री, दुष्ट मन्त्री।
दुर्मर–(सं० वि०) जिसकी मृत्यु बड़े कष्ट से हो।
दुर्मरण–(सं० पुं०) बुरी तरह से (बड़े कष्ट से) होनेवाली मृत्यु।
दुर्मर्ष–(सं० पुं०) जिसको सहन करना कठिन हो।
दुर्मर्षण–(सं० पुं०) वह जो कठिनाई से सहन किया जावे। दुर्मर्षित–(सं० वि०) जो वर का बदला लेने के उद्योग में हो।
दुर्मित्र–(सं० पुं०) अमित्र, शत्रु।
दुर्मुस–(हिं० पुं०) लोहे या पत्थर का डंडा लगा हुआ गदा के आकार का एक यन्त्र जो मिट्टी या कंकड़ पीटने के काम में आता है, दुरमिस।
दुर्मुहूर्त–(सं० पुं०) बुरा समय।
दुर्मूल्य–(सं० वि०) महँगा।
दुर्मेधस–(सं० वि०) मन्दबुद्धि।
दुर्यश–(सं० पुं०) अपयश, अपकीर्ति।
दुर्योग–(सं० पुं०) दुर्भाग्य-सूचक योग।
दुर्लक्षण–(सं० पुं०) अशुभ लक्षण।
दुर्लभ–(सं० वि०) दुष्प्राप्य, अनोखा।
दुर्ललित–(सं० पुं०) दुष्कर्म, पाप; (वि०) चंचल, चपल।
दुर्लेख्य–(सं० पुं०) निन्दित लेखपत्र; (वि०) जिसकी लिखावट बुरी हो।
दुर्वच, दुर्वचन–(सं० पुं०) कटु वचन, गाली-गलौज।
दुर्वह–(सं० वि०) जिसको उठाकर ले जाना कठिन हो।
दुर्वाच्य–(सं० पुं०) अपकीर्ति, निन्दा।
दुर्वाद–(सं० पुं०) अपकीर्ति, निन्दा।
दुर्वार–(सं० वि०) जिसका निवारण करना या हटाना कठिन हो।
दुर्वासना–(सं० स्त्री०) बुरी आकांक्षा।
दुर्विनय–(सं० पुं०) बुरा शिष्टाचार।
दुर्विपाक–(सं०पुं०) बुरा फल, दुर्घटना।
दुर्विभाग–(सं० पुं०) वह जिसका विभाग जल्दी से न हो सके।
दुर्विभाव्य–(सं० वि०) दुर्बोध।
दुर्वक्ता–(सं० पुं०) कटुभाषण करनेवाला
दुर्विषह–(सं० वि०) असह्य।
दुर्वृत्त–(सं० पुं०) निन्दित आचरण; (वि०) दुर्जन। दुर्वृत्ति–(सं० स्त्री०) निन्दित आचरण।
दुर्वेद–(सं० वि०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ।
दुर्व्यवस्था–(सं०स्त्री०) कुप्रबन्ध। दुर्व्यवस्थापक–(सं० पुं०) कुप्रबन्ध करनेवाला।
दुर्व्यवहार–(सं० पुं०) दुष्ट आचरण।
दुर्हृद–(सं० पुं०) शत्रु, बैरी।
दुलकना–(हिं०क्रि०) अस्वीकार करना।
दुलखना–(हिं०क्रि०) बार-बार बतलाना या कहना।
दुलड़ा–(हिं० वि०) दो लड़ों का।
दुलड़ी–(हिं०स्त्री०) दो लड़ों की माला।
दुलना–(हिं० क्रि०) देखो डुलना।
दुलभ–(हिं० वि०) देखो दुर्लभ।
दुलरा–(हिं० वि०) दुलारा।
दुलराना–(हिं० क्रि०) लाड़ करना।
दुलरी–(हिं० स्त्री०) देखो दुलड़ी।
दुलहन–(हिं०स्त्री०) नवविवाहिता वधू।

दुल्हा, दुल्हा–(हिं० पुं०) देखो दूल्हा।
दुलहिन–(हिं० स्त्री०) देखो दुलहन।
दुलाई–(हिं० स्त्री०) रूई भरा हुआ ओढ़ने का दोहरा कपड़ा।
दुलाना–(हिं० क्रि०) देखो डुलाना।
दुलार–(हिं० पुं०) अनुराग, प्रेम, लाड़-प्यार। दुलारना–(हिं० क्रि०) लाड़ करना, प्रेम दिखलाना। दुलारा–(हिं० वि०) प्रिय, प्यारा। दुलारी–(हिं० वि०) प्रिय कन्या।
दुल्लभ–(हिं० वि०) देखो दुर्लभ।
दुव–(हिं० वि०) दो संख्या का, दो।
दुवन–(हिं० पुं०) दुर्जन, बुरा मनुष्य।
दुवादस–(हिं०वि०) देखो द्वादश, बारह।
दुवाली–(हिं० स्त्री०) परतला में लगा हुआ तस्मा जिसमें तलवार आदि लटकाई जाती है।
दुवार–(हिं० पुं०) देखो द्वार।
दुविधा–(हिं०स्त्री ०) देखो दुबधा।
दुवो–(हिं० वि०) देखो दोनों; (वि०) वैरी, शत्रु।
दुश्चर–(सं० वि०) दुष्कर, दुर्गम। दुश्चरित–(सं० पुं०) बुरा आचरण, पाप, कुचाल; (वि०) बुरे आचरण का।
दुश्चरित्र–(सं० वि०) बुरे चरित्र या आचरण का; (पुं०) बुरा आचरण।
दुश्चलन–(हिं० स्त्री०) बुरा आचरण।
दुश्चिकित्स्य–(सं०वि०) जिसकी चिकित्सा न हो सके।
दुश्चित–(सं० पुं०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
दुश्चिन्ता–(सं० स्त्री०) आशंका।
दुश्चेष्टा–(सं० स्त्री०) कुचेष्टा।
दुश्चेष्टित–(सं० पुं०) पाप, दुष्कर्म।
दुष्कर–(सं० वि०) अत्यन्त दुःख से करने योग्य, दुःसाध्य।
दुष्कर्म–(सं.पं.) कुकर्म, पाप।
दुष्कर्मी–(हिं० वि०) दुराचारी।
दुष्कलेवर–(सं० पुं०) बुरा शरीर।
दुष्काल–(सं०पुं०) कुसमय, दुर्भिक्ष, अकाल
दुष्कीर्ति–(सं० स्त्री०) अपयश।
दुष्कुल–(सं० पुं०) निन्दित कुल।
दुष्कृत–(सं० पुं०) नीच कार्य।
दुष्कृति–(सं० पुं०) कुकर्म, बुरा काम।
दुष्क्रीत–(सं०वि०) महँगा, महँगे दाम का।
दुष्ट–(सं० वि०) दोषयुक्त, दुराचारी, दुर्जन। दुष्टाचारी–(सं० वि०) बुरा आचरण करनेवाला। दुष्टता–(सं० स्त्री०) दुर्जनता। दुष्टपना–(हिं०पुं०) दुष्टता। दुष्टसाक्षी–(सं० वि०) कूट साक्षी। दुष्टाचार–(सं० पुं०) कुकर्म, कुचाल। दुष्टाचारी–(सं०वि०) कुकर्मी।
दुष्टात्मा–(सं०वि०) खोटी प्रकृति का।
दुष्टान्न–(सं० पुं०) कुत्सित अन्न, बासी अन्न, पाप की कमाई का अन्न।
दुष्टपरीक्ष–(सं० वि०) जिसकी जाँच कठिनता से हो।
दुष्पुत्र–(सं० पुं०) कुपुत्र, नीच लड़का।
दुष्प्रकृति–(सं० वि०) बुरे स्वभाव का; (स्त्री०) खोटा स्वभाव।
दुष्प्राप्य–(सं० वि०) दुर्लभ, जो कठिनता से प्राप्त हो सके।
दुसह–(हिं० वि०) असह्य, जो सहन न हो सके।
दुसाखा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का प्रदीपक जिसमें दो शाख निकली होती हैं।
दुसार–(हिं० पुं०) आरपार छेद; (क्रि० वि०) आरपार।
दुसासन–(हिं० पुं०) देखो दुशासन।
दुसूती–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मोटी चादर जिसमें दो तागों का ताना और बाना रहता है।

दुसेजा–(हिं० पुं०) पलंग, दो आदमियों के सोने की खाट।
दुस्तर–(सं० वि०) दुर्घट, विकट।
दुस्सह–(हिं० वि०) देखो दुःसह।
दुहता–(हिं० पुं०) दोहिता, नाती।
दुहत्था–(हिं०वि०) दोनों हाथों से किया हुआ।
दुहना–(हिं० क्रि०) स्तन में से दूध निकालना, निचोड़ना, तत्व निकालना।
दुहनी–(हिं०स्त्री०) वह पात्र जिसमें गाय, भैंस आदि का दूध दुहा जाता है।
दुहरा, दुहराना–देखो दोहरा, दोहराना।
दुहाई–(हिं० स्त्री०) सहायता के लिये पुकार, गाय भैंस आदि को दुहने का काम, दुहने की मजदूरी।
दुहागिन–(हिं० स्त्री०) विधवा स्त्री।
दुहागी–(हिं० वि०) अभागा, दुर्भाग्य।
दुहाजू–(हिं० वि०) वह मनुष्य जो दूसरा विवाह करे।
दुहाना–(हिं० क्रि०) किसी अन्य पुरुष से दूहने का काम कराना।
दुहिता–(हिं० स्त्री०) दुहितृ, कन्या, लड़की, पुत्री।
दुहेल–(हिं० पुं०) संकट, क्लेश।
दुहेला–(हिं० वि०) दुःसाध्य, दुःखदायी।
दुहोतरा–(हिं०पुं०) कन्या का पुत्र, नाती; (वि०) दो, दो अधिक।
दुह्य–(सं०वि०) दुहन योग्य। दुह्यमान–(सं० वि०) जो दूहा जाय।
दूंद–(हिं० पुं०) ऊधम।
दूंदना–(हिं० क्रि०) ऊधम करना।
दूइज–(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, दूज।
दूक–(हिं० वि०) दो-एक, एकाध।
दूखन–(हिं० पुं०) दोष।
दूखना–(हिं०क्रि०) दोष लगाना, पीड़ा होना।
दूज–(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया।
दूजा–(हिं० वि०) दूसरा।
दूत–(सं० पुं०) संवाद पहुँचानेवाला चर। दूतर–(हिं० वि०) दुस्तर।
दूतावास–(हिं०पुं०) दूत के रहने का स्थान।
दूति, दूतिका–(सं० स्त्री०) दूती, कुटनी।
दूती–(सं० स्त्री०) संचारिका, कुटनी।
दूत्य–(सं० पुं०) दूत का काम।
दूध–(हिं० पुं०) दुग्ध, दूध के समान वह तरल द्रव्य जो अनेक पौधों के डंठल तथा पत्तियों में से निकलता है।
दूध पूत–(हिं० पुं०) धन और सन्तति।
दूधमुहाँ–(हिं० वि०) जो अभी तक माता का दूध पीता हो, शिशु, बालक, छोटा बच्चा। दूधमुख–(हिं० वि०) छोटा बच्चा, शिशु।
दूधाभाती–(हिं० स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें वर कन्या को तथा कन्या वर को दूध-भात खिलाते हैं।
दूधिया–(हिं०वि०) दुग्ध संबंधी, जिसमें दूध मिला हो, दूध के रंग का, सफेद।
दून–(हिं०स्त्री०) दूने का भाव, साधारण से कुछ जल्दी-जल्दी गाना।
दूना–(हिं० वि०) द्विगुण, दुगुना।
दूनौं–(हिं० वि०) दोनों।
दूब–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की प्रसिद्ध घास, दूर्वा।
दूबरा–(हिं० वि०) दुर्बल, दुबला।
दूभर–(हिं० वि०) दुःसाध्य, कठिन।
दूमना–(हिं० क्रि०) हिलना, डोलना।
दूर–(हिं० क्रि० वि०) अनिकट।
दूरगत, दूरगामी–(सं० वि०) जो बहुत दूर तक चला गया हो।
दूरङ्गम–(सं० वि०) बहुत दूर तक जानेवाला।

दूरता–(हिं० स्त्री०) दूरत्व। **दूरत्व**–(सं० पुं०) दूर होने का भाव, अन्तर।
दूरदर्शक–(सं० वि०) देखो दूरदर्शी; (पुं०) **दूरदर्शक यन्त्र**–दूरबीन। **दूरदर्शिता**–(सं० स्त्री०) दूर की बात सोचने का गुण। **दूरदर्शी**–(सं०वि०) दूरदर्शक, बहुत दूर की बात सोचनेवाला; (पुं०) पंडित, बुद्धिमान्। **दूरदृष्टि**–(सं० स्त्री०) भविष्य का विचार।
दूरवा–(हिं० पुं०) देखो दूर्वा।
दूरवर्ती–(सं० वि०) जो दूर का हो।
दूरवीक्षण–(सं०पुं०) वह यन्त्र जिससे दूर की वस्तु बहुत पास और बड़ी देख पड़ती है।
दूरवेधी–(सं० पुं०) वह जो दूर से लक्ष्य लगाता हो।
दूरावस्थित–(सं० वि०) दूरवर्ती।
दूरी–(हिं० स्त्री०) दूरत्व। **दूरीकरण**–(सं० पुं०) बाहर निकाल देने की क्रिया। **दूरीकृत**–(सं० वि०) जो दूर निकाल दिया गया हो। **दूरीभूत**–(सं० वि०) बाहर निकाला हुआ।
दूर्वा–(सं० स्त्री०) दूब नाम की घास।
दूलन–(हिं० पुं०) देखो दोलन।
दूलह–(हिं० पुं०) दुलहा, पति, स्वामी।
दूषक–(सं० वि०) दोष लगानेवाला; (पुं०) वह पदार्थ जो दोष उत्पन्न करे।
दूषण–(सं० पुं०) दोष लगाने की क्रिया या भाव, अवगुण। **दूषणीय**–(सं०वि०) दोष लगाने योग्य। **दूषना**–(हिं०क्रि०) कलंक लगाना।
दूषिका–(सं०स्त्री०) चित्रकार की कूँची; (वि०) दोष लगानेवाली।
दूषित–(सं० वि०) दोषयुक्त, जिसमें दोष हो।
दूष्य–(सं० वि०) दोष लगाने (निन्दा करने) योग्य, नीच, तुच्छ।
दूसना–(हिं० क्रि०) देखो दूषना।
दूसर, दूसरा–(हिं० वि०) द्वितीय।
दूहना–(हिं० क्रि०) देखो दुहना।
दृक्–(सं० पुं०) नेत्र, आँख।
दृक्कर्ण–(सं० पुं०) सर्प, साँप।
दृक्क्षेप–(सं० पुं०) दृष्टिपात।
दृक्पात–(सं० पुं०) अवलोकन।
दृगंचल–(हिं० पुं०) आँख की पलक।
दृग–(हिं० पुं०) दृष्टि, देखने की शक्ति।
दृग्गणित–(सं० पुं०) ग्रहों का वेध करने का गणित।
दृग्गोचर–(सं० वि०) जो आँखों से देख पड़े।
दृढ़–(सं० वि०) स्थूल, मोटा, बलवान्, स्थायी, पक्का, कठिन, निडर, ढीठ। **दृढ़ता**–(सं० स्त्री०) पुष्टता। **दृढ़निश्चय**–(सं० पुं०) वह जो अपने संकल्प पर दृढ़ रहे।
दृढ़प्रतिज्ञ–(सं०वि०) जो अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे।
दृढ़ाङ्ग–(सं० वि०) जिसके अङ्ग पुष्ट हों, हट्टा-कट्टा। **दृढ़ाई**–(हिं० स्त्री०) दृढ़ता। **दृढ़ना**–(हिं० क्रि०) दृढ़ करना, पक्का करना, पक्का होना।
दृत–(सं० वि०) आदर किया हुआ।
दृत्य–(सं० वि०) आदरणीय।
दृन्भू–(सं० पुं०) वज्र, सूर्य, राजा।
दृप्त–(सं० वि०) प्रबल, प्रचण्ड, घमण्डी।
दृश–(सं० पुं०) आँख, ज्ञान, दर्शन।
दृश्य–(सं० वि०) दर्शनीय, जो देखने योग्य हो, जो देखने में आ सके, मनोहर, सुन्दर।
दृश्यकाव्य–(सं० पुं०) वह काव्य जो नाट्यशाला में नट लोगों से दिखलाया

जाता है। **दृश्यमान**–(सं० वि०) जो देख पड़ता हो।

दृष्ट–(सं०वि०)देखा हुआ, गोचर,प्रकट, प्रत्यक्ष।

दृष्टान्त–(सं० पुं०) उदाहरण।

दृष्टार्थ–(सं०वि०)जिसका अर्थ स्पष्ट हो।

दृष्टि–(सं० स्त्री०) अवलोकन, चक्षु। **दृष्टिगत**–(सं० पुं०); (वि०) जो देख पड़े। **दृष्टिगोचर**–(सं० वि०) जो देख पड़ सके। **दृष्टिपथ**–(सं० पुं०) दृष्टि की पहुँच। **दृष्टिपात**–(सं० पुं०) अवलोकन, ताकना। **दृष्टिबन्ध**–(सं० पुं०) इन्द्रजाल, जादू।

दृष्टिरोग–(सं० पुं०) नेत्ररोग।

दृष्टिवन्त–(हिं० स्त्री०) देखने की क्रिया या भाव।

देई–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द, देवी।

देखनहार–(हिं० वि०) देखनेवाला।

देखना–(हिं० क्रि०) अवलोकन करना, ढूंढ़ना, परीक्षा करना, अनुभव करना, समझना, ताकते रहना, विचारना।

देखभाल–(हिं० स्त्री०) निरीक्षण, जाँच-पड़ताल।

देखरेख–(हिं० स्त्री०)निरीक्षण, देखभाल।

देखाऊ–(हिं० वि०) झूठी तड़क-भड़क-वाला, दिखौवा।

देखादेखी–(हिं०स्त्री०)साक्षात्कार, दर्शन।

देखाना–(हिं० क्रि०) देखो दिखाना। **देखाव**–(हिं० पुं०) बनावट, तड़क-भड़क। **देखावट**–(हिं० स्त्री०) तड़क-भड़क। **देखावना**–(क्रि०) देखो दिखाना। **देखौवा**–(हिं० वि०) देखो देखाऊ।

देदीप्यमान–(सं० वि०) चमकता हुआ, अत्यन्त प्रकाशयुक्त।

देन–(हिं०स्त्री०) देने की क्रिया या भाव, दान की हुई वस्तु। **देनदार**–(हिं० पुं०) ऋणी, दानी। **देनदारी**–(हिं० स्त्री०) ऋणी होने की अवस्था।

देनलेन–(हिं० पुं०) महाजनी का व्यवसाय।

देनहारा–(हिं० वि०)देनेवाला।

देना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को अपने अधिकार से हटाकर दूसरे के अधिकार में स्थापित करना, सौंपना, लगाना, डालना; (पुं०) ऋण।

देय–(सं० वि०) दातव्य, देने योग्य।

देरी–(हिं० स्त्री०) विलम्ब।

देव–(सं० पुं०)देवता, राजा, पूज्य व्यक्ति

देवकर्म–(सं० पुं०)वह कर्म जो देवता को प्रसन्न करने के लिये किया जाय।

देवकार्य–(सं० पुं०) देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म। **देवकुल**–(सं० पुं०) देवताओं का वंश, देवता-समूह। **देवकुल्या**–(सं० स्त्री०) गंगा नदी।

देवक्षेत्र–(सं० पुं०) पुण्यस्थान, स्वर्ग।

देवगण–(सं० पुं०) देवताओं का समूह, किसी देवता का अनुचर।

देवगति–(सं० स्त्री०) स्वर्ग लाभ।

देवगिरा–(सं०स्त्री०)देववाणी, संस्कृत। **देवगुरु**–(सं० पुं०) देवताओं के गुरु बृहस्पति। **देवगृह**–(पुं०) देवालय, मन्दिर।

देवचर्या–(सं०स्त्री०)देवताओं के निमित्त हवन आदि।

देवजन–(सं० पुं०) देवताओं के सदृश मनुष्य, गन्धर्व।

देवठान–(हिं० पुं०)कार्तिक सुदी एकादशी।

देवढ़ी–(हिं० स्त्री०) देखो ड्योढ़ी।

देवतर–(सं० वि०) बहुत चमकीला।
देवता–(सं० स्त्री०) स्वर्ग में रहनेवाला देव, सुर, निर्जर। **देवतागृह**–(सं०पुं०) देवालय, ठाकुरद्वारा।
देवतीर्थ–(सं० पुं०) अँगूठे को छोड़ अन्य अँगुलियों का अग्रभाग।
देवत्व–(सं० पुं०) देवता का भाव, देवता का धर्म।
देवदीप–(सं० पुं०) वह दीपक जो देवता के निमित्त जलाया गया हो। **देवदूत**–(सं० पुं०) देवताओं का दूत। **देवदूती**–(सं०स्त्री०) अप्सरा। **देवदेवेश**–(सं० पुं०) शिव, महादेव।
देवधाम–(सं० पुं०) देवस्थान, तीर्थस्थान।
देवधुनि–(सं० स्त्री०) गङ्गा नदी।
देवनागर, देवनागरी–(सं०पुं०) भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत, हिन्दी, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।
देवनिकाय–(सं० पुं०) देवस्थान, स्वर्ग। **देवनिगंगा**–(हि० स्त्री०) गंगा। **देवनिर्मित**–(सं० वि०) देवता से बनाया हुआ।
देवपति–(सं० पुं०) देवताओं के स्वामी इन्द्र। **देवपथ**–(सं० पुं०) देवताओं का मार्ग, आकाश।
देवपर–(सं०पुं०) वह जो आपत्ति में पड़ने पर केवल देवता के भरोसे बैठा रहे।
देवपशु–(सं० पुं०) वह पशु जो देवता के नाम पर छोड़ा गया हो।
देवपूजा–(सं० स्त्री०) देवताओं का पूजन।
देववधू–(सं० स्त्री०) अप्सरा।
देवभवन–(सं० पुं०) स्वर्ग, देवालय।
देवभाग–(सं० पुं०) किसी संपत्ति या वस्तु का वह अंश जो देवता के लिये निकाला गया हो।
देवभाषा–(सं० स्त्री०) संस्कृत भाषा।
देवभू–(सं० पुं०) देवता, स्वर्ग। **देवभूमि**–(सं० स्त्री०) स्वर्ग।
देवमन्दिर–(सं० पुं०) देवालय, ठाकुरद्वारा।
देवयान–(सं० पुं०) देवताओं का विमान।
देवयुग–(सं० पुं०) सत्ययुग।
देवयोनि–(सं० पुं०) देवजाति जिनके अन्तर्गत विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक और सिद्ध हैं।
देवर–(सं० पुं०) पति का छोटा भाई।
देवरा–(हि० पुं०) छोटा देवता, देवर।
देवरानी–(हि० स्त्री०) पति के छोटे भाई की स्त्री।
देवर्षि–(सं० पुं०) नारद, अत्रि, मरीचि, भारद्वाज आदि ऋषि।
देवल–(सं० पुं०) देवताओं की पूजा करके जीविका निर्वाह करनेवाला, पुजारी; (हि०पुं०) देवमन्दिर, देवालय।
देवलोक–(सं० पुं०) स्वर्ग।
देववर्त्म–(सं० पुं०) आकाश।
देववाणी–(सं० स्त्री०) संस्कृत भाषा।
देवशत्रु–(सं० पुं०) असुर।
देवशिल्पी–(सं० पुं०) विश्वकर्मा।
देवसख–(सं० पुं०) देवताओं का मित्र।
देवसद्म–(सं० पुं०) देवस्थान, देवालय।
देवसदन–(सं० पुं०) देवालय, स्वर्ग।
देवसरित–(सं० स्त्री०) गंगा नदी।
देवसात्–(सं० अव्य०) देवता के निमित्त अर्पण किया हुआ।
देवस्थान–(सं० पुं०) देवालय, देवमन्दिर, ठाकुरद्वारा। **देवस्व**–(सं० पुं०) देवप्रतिमा के लिये अर्पण की हुई संपत्ति।
देवा–(हि० वि०) देनेवाला। **देवाङ्गना**–(सं० स्त्री०) अप्सरा।

देवाना–(हिं० वि०) देखो दीवाना।
देवान्न–(सं० पुं०) चरु, हवि।
देवायतन–(सं० पुं०) देवमन्दिर, ठाकुरद्वारा।
देवायुध–(सं० पुं०) इन्द्रधनुष।
देवारी–(हिं० स्त्री०) देखो दिवाली।
देवाल–(हिं० वि०) दाता, देनेवाला।
देवालय–(सं० पुं०) देवगृह, ठाकुरद्वारा।
देवाला–(हिं० पुं०) देखो दिवाला।
देवालिया–(हिं०वि०) देखो दिवालिया।
देवी–(सं० स्त्री०) देवपत्नी, देवता की स्त्री, दुर्गा, पटरानी।
देवेन्द्र–(सं० पुं०) देवताओं के राजा इन्द्र।
देवैया–(हिं० वि०) देनेवाला, दाता।
देवोत्तर–(सं० पुं०) वह सम्पत्ति जो किसी देवता के नाम पर अलग निकाल दी गई हो।
देवोत्थान–(सं० पुं०) कार्तिक शुक्ला एकादशी, डिठवन एकादशी।
देश–(सं० पुं०) पृथ्वी का वह भाग जिसका कोई विशिष्ट नाम हो और जिसके अन्तर्गत अनेक नगर, ग्राम आदि हों, जनपद।
देशक–(सं० वि०) उपदेश करनेवाला।
देशज–(सं० वि०) देशजात, देश में उत्पन्न। **देशज्ञ**–(सं० पुं०) वह जो देश की वार्ता जानता हो। **देशधर्म**–(सं० पुं०) देश की रीति के अनुसार व्यवहार।
देशस्थ–(सं० वि०) देश में रहनेवाला।
देशाचार–(सं० पुं०) देश की चाल या व्यवहार।
देशाटन–(सं० पुं०) देशभ्रमण, अनेक देशों में यात्रा।
देशान्तर–(सं० पुं०) परदेश, विदेश, भूगोल में उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक गई हुई मध्य रेखा से पूरब या पच्छिम की ओर की दूरी, लम्बांश।
देशिक–(सं० पुं०) यात्री, पथिक, बटोही।
देशित–(सं० वि०) जिससे उपदेश लिया गया हो। **देशिनी**–(सं० स्त्री०) अँगूठे और मध्यमा के बीच की अँगुली।
देशी–(हिं० वि०) देश का, देश संबंधी, अपने देश का बना हुआ, स्वदेश में उत्पन्न।
देस–(हिं० पुं०) देखो देश।
देसावर–(हिं० पुं०) देशान्तर, परदेश **देसावरी**–(वि०) बाहरी।
देसी–(हिं०वि०) स्वदेशी, अपने देश का।
देह–(सं० पुं०) शरीर, तनु, शरीर का कोई अङ्ग। **देहकर्ता**–(सं० पुं०) ईश्वर। **देहकोष**–(सं० पुं०) त्वचा, चमड़ा। **देहक्षय**–(सं० पुं०) शरीर का नाश, रोग। **देहज**–(सं० पुं०) तनुज, पुत्र, बेटा; (वि०) जो शरीर से उत्पन्न हो। **देहत्याग**–(सं० पुं०) प्राणनाश, मृत्यु। **देहपात**–(सं० पुं०) मृत्यु। **देहभाज**–(सं० वि०) जीवधारी। **देहयात्रा**–(सं० पुं०) देह के रक्षण के उद्यम। **देहर**–(हिं० स्त्री०) नदी के किनारे की नीची भूमि। **देहरी**–(हिं० स्त्री०) देखो देहली। **देहलक्षण**–(सं० पुं०) सामुद्रिक शास्त्र, शरीर के ऊपर का चिह्न।
देहली–(सं० स्त्री०) द्वार के चौखट के नीचे लगी हुई लकड़ी।
देहवना–(हिं० वि०) शरीरधारी; (पुं०) देह धारण करनेवाला मनुष्य। **देहवान्**-(सं० वि०) शरीरधारी; (पुं०) सजीव प्राणी।
देहातीत–(सं० पुं०) वह ज्ञानी जिसको शरीर की ममता न हो। **देहान्त**–(सं० पुं०) मृत्यु। **देहांतर**–(सं० पुं०) दूसरे शरीर की प्राप्ति, मृत्यु।

देहेश्वर–(सं० पुं०) शरीर का अधिष्ठाता, आत्मा।
देहोद्भव–(सं० वि०) शरीर से उत्पन्न।
दैर्घ्य–(सं० पुं०) लंबाई।
दैत्य–(सं० पुं०) असुर, राक्षस, अति बलवान् मनुष्य, दुराचारी व्यक्ति।
दैन–(सं० पुं०) दीन होने का भाव, दीनता; (वि०) दीन सम्बन्धी। दैनन्दिन–(सं० वि०) प्रतिदिन का, प्रतिदिन होनेवाला; (हि० पुं०) दैन्य, दीनता।
दैनिक–(सं० वि०) प्रतिदिन होनेवाला, प्रतिदिन का; (पुं०) एक दिन का वेतन।
दैन्य–(सं० पुं०) दीनता, दरिद्रता।
दैया–(हि० पुं०) दई, दैव।
दैव–(सं० वि०) देवता सम्बन्धी; (वि०) प्रारब्ध, भाग्य, विधाता, ईश्वर, आकाश।
दैवगति–(सं० स्त्री०) ईश्वरी घटना, प्रारब्ध, भाग्य।
दैवदुर्विपाक–(सं० पुं०) दैव की प्रतिकूलता, अभाग्य।
दैवपर–(सं० वि०) भाग्य पर भरोसा करनेवाला।
दैवयोग–(सं० पुं०) आकस्मिक फल, संयोग।
दैववश–(हि० क्रि० वि०) दैवयोग से।
दैववशात्–(हिं० क्रि० वि०) अकस्मात्।
दैववाणी–(सं० स्त्री०) आकाशवाणी, संस्कृत वाक्य। दैववादी–(सं० वि०) निरुद्योगी, आलसी।
दैवहीन–(सं० वि०) जिसके भाग्य में कोई शुभ लक्षण न हो।
दैवागत–(सं० वि०) सहसा होनेवाला, आकस्मिक।
दैवात्–(सं० अव्य०) अचानक।
दैविक–(सं० वि०) देवता संबंधी।
दैवी–(सं० स्त्री०) देवता संबंधी, देवकृत, आकस्मिक, प्रारब्ध से होनेवाली।
दैवोपहतक–(सं० वि०) हतभाग्य, अभागा।
दैशिक–(सं० वि०) देश संबंधी।
दैहिक–(सं० वि०) शरीर संबंधी, शारीरिक।
दोंकना–(हिं० क्रि०) गुर्राना।
दोंचना–(हिं० क्रि०) दबाव में डालना।
दोंकी–(हि० स्त्री०) धौंकनी।
दो–(हिं० वि०) तीन से एक कम, एक और एक।
दोइ–(हि० वि०) दो संख्या का, दो।
दोउ, दोऊ–(हि० वि०) दोनों।
दोकोंहा–(हिं० पुं०) वह ऊँट जिसकी पीठ पर दो ककुद (कूबड़) हों।
दोख–(हिं० पुं०) देखो दोष।
दोखना–(हिं० क्रि०) दोष लगाना।
दोखी–(हिं० वि०) देखो दोषी।
दोगा–(हिं० पुं०) छपे हुए मोट देसी कपड़े का ओढ़ना, छूहने के लिये पानी में घोला हुआ चूना।
दोगुना–(हि० वि०) देखो दुगुना।
दोग्धा–(सं० वि०) ग्वाला, अहीर; (वि०) दुहनेवाला, दुहने योग्य।
दोग्ध्री–(सं० स्त्री०) दुधार गाय।
दोघ–(सं० पुं०) दुहनेवाला मनुष्य।
दोच–(हिं० स्त्री०) असमंजस, दुबधा।
दोचन–(हिं० स्त्री०) दुविधा, असमंजस।
दोचना–(हिं० स्त्री०) आग्रह करना, दबाव देना।
दोचित्ता–(हिं० वि०) उद्विग्न चित्त का।
दोचित्ती–(हिं० स्त्री०) उद्विग्नता।
दोज–(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया।
दोजानू–(हिं० क्रि० वि०) घुटने के बल।
दोतला, दोतल्ला–(हिं० वि०) दो खण्ड का (घर)।

दोतही–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की चादर।
दोदना–(हिं० क्रि०) कही हुई बात को अस्वीकार करना।
दोधार–(हिं० पुं०) भाला, बरछा।
दोधारा–(हिं० वि०) जिस शस्त्र के दोनों ओर धार हो।
दोन–(हिं० पुं०) दो नदियों का संगम स्थान, दो वस्तुओं का मेल।
दोनला, दोनली–(हिं० वि०) दो नाल या नलीवाला।
दोना–(हिं० पुं०) कटोरी के आकार का पत्तों का बना हुआ पात्र। **दोनियाँ**–(हिं० स्त्री०) छोटा दोना।
दोनों–(हिं० वि०) उभय, एक और दूसरा
दोपट्टा–(हिं० पुं०) देखो दुपट्टा।
दोपल्ला–(हिं० वि०) दो पल्ले का।
दोपल्ली–(हिं० वि०) दो पल्लेवाला; (स्त्री०) दो टुकड़े कपड़ों को एक में सिलकर बनाई हुई टोपी।
दोपहर–(हिं० स्त्री०) मध्याह्नकाल।
दोपहरिया–(हिं० स्त्री०) देखो दोपहर।
दोपीठा–(हिं० वि०) जिस वस्त्र के दोनों ओर समान रंग रूप हो; (पुं०) कागज के ताव को एक ओर छापने के बाद दूसरी ओर छापना।
दोबल–(हिं० पुं०) अपराध, दोष।
दोवा–(हिं० पुं०) द्विविधा।
दोमट–(हिं०स्त्री०)बालू मिली हुई मिट्टी।
दोमुँहा–(हिं० वि०) जिसके दो मुख हों, दोहरी चाल चलनेवाला, कपटी।
दोय–(हिं० वि०) दो, दोनों।
दोरंगा–(हिं० वि०) जिसमें दो रंग हों, दो रंगवाला, दोनों ओर चलनेवाला।
दोरदण्ड–(हिं० वि०) देखो दुर्दण्ड।
दोरसा–(हिं० वि०) जिसमें दो तरह का स्वाद या रस हो।
दोराहा–(हिं० पुं०) वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।
दोर्ज्या–(सं० पुं०) भुज के आकार की ज्या।
दोर्दण्ड–(सं० पुं०) भुजदण्ड।
दोर्मध्य–(सं० पुं०) बाहु का मध्य भाग।
दोर्मूल–(सं० पुं०) कक्ष, कोख।
दोल–(सं०पुं०) हिंडोला, दोलना, झूला।
दोलड़ा–(हिं० वि०) जिसमें दो लड़ें हों।
दोलत्ती–(हिं० स्त्री०) देखो दुलत्ती।
दोला–(सं० स्त्री०) हिंडोला, झूला, डोली। **दोलायमान**–(सं०वि०) झूलता हुआ, हिलता हुआ।
दोलिका–(सं० स्त्री०) झूला, हिंडोला, डोली।
दोलित–(हिं० वि०) चंचल, दोलायमान।
दोली–(सं० स्त्री०) देखो डोली।
दोष–(सं० पुं०) दूषण, अवगुण, पराया-पन, अभियोग, कलंक।
दोष–(सं० पुं०) पाप, शरीर का विकार जो वात, पित्त, कफ के कुपित होने से उत्पन्न होता है। **दोषग्राही**–(सं० वि०) दुर्जन, दुष्ट। **दोषघ्न**–(सं० वि०) कुपित दोषों को शान्त करनेवाली औषधि। **दोषज्ञ**–(सं० पुं०) चिकित्सक, वैद्य। **दोषता**–(सं० स्त्री०) दोष का भाव। **दोषत्रय**–(सं० पुं०) वात, पित्त और कफ।
दोषन–(हिं०पुं०) दूषण, दोष, अपराध।
दोषना–(हिं० क्रि०) अपराध लगाना।
दोषपत्र–(सं० पुं०) वह कागज जिसमें अपराधी के अपराधों का विवरण लिखा रहता है।
दोषिन–(हिं०स्त्री०)पाप करनेवाली स्त्री।
दोषी–(सं० वि०) दोषयुक्त, अपराधी।
दोस–(हिं० पुं०) देखो दोष।

दोसाला–(हिं०वि०) दो वर्ष का पुराना। **दोसाही**–(हिं० वि०) जिस वर्ष में दो फ़स्लें होती हों।
दोह–(सं० पुं०) दोहन, दुहने का काम, देखो द्रोह।
दोहता–(हिं०पुं०) कन्या का पुत्र, नाती।
दोहत्थड़–(हिं० स्त्री०) वह थप्पड़ जो दोनों हाथों से मारा जाय। **दोहत्था**–(हिं० क्रि० वि०) दोनों हाथों से, दोनों हाथों के द्वारा; (वि०) जो दोनों हाथों से किया जाय।
दोहद–(सं० स्त्री०) गर्भवती की अभिलाषा या इच्छा, उकौंना।
दोहना–(हिं० क्रि०) दोष या ऐब निकालना। **दोहनी**–(सं०स्त्री०) दूध दुहने का मिट्टी का पात्र, दूध दुहने का काम।
दोहर–(हिं० स्त्री०) दो परतों की बनी हुई ओढ़ने की चादर।
दोहरना–(हिं० क्रि०) दूसरी आवृत्ति होना, दोबारा होना, दो परत किया जाना।
दोहरा–(हिं० वि०) जिसमें दो परत या तहें हों, दुगुना। **दोहराना**–(हिं०क्रि०) किसी बात को दुबारा करना, तह करना।
दोहा–(हिं० पुं०) हिन्दी का एक मात्रा-वृत्त छन्द।
दोहाई–(हिं० स्त्री०) देखो दुहाई।
दोहाक, दोहाग–(हिं० पुं०) दुर्भाग्य, अभाग्य। **दोहागा**–(हिं०वि०) अभागा।
दोहित–(सं० वि०) दूहा हुआ; (हिं० पुं०) दोहिता, नाती। **दोही**–(सं० वि०) दूहनेवाला; (पुं०) गोप, ग्वाला।
दौंकना–(हिं०क्रि०) दमकना, चमकना।
दौंचना–(हिं०क्रि०) दबाव डालकर लेना।
दौंरी–(हिं० स्त्री०) खेती की उपज के डंठलों में से दाना अलगाने के लिए इसको बैल के खुरों से कुचलवाना।
दौ–(हिं०स्त्री०) जंगल की अग्नि, संताप, जलन।
दौड़–(हिं० स्त्री०) द्रुतगमन, धावा, चढ़ाई, गति की पहुँच, विस्तार, लंबाई, सिपाहियों का वह दल जो अपराधियों को पकड़ने के लिये एक साथ जाता है, बुद्धि की गति, अधिक से अधिक जो उपाय किया जा सके।
दौड़ना–(हिं०क्रि०) द्रुत गति से चलना, उपाय करना, उद्योग फैलाना, छा जाना, चढ़ दौड़ना, धावा करना। **दौड़ादौड़ी**–(हिं० स्त्री०) व्यग्रता, आतुरता।
दौड़ान–(हिं० स्त्री०) दौड़ने की क्रिया या भाव, वेग। **दौड़ाना**–(हिं० क्रि०) जल्दी-जल्दी चलाना, बार-बार आने जाने के लिये विवश करना, चलाना, फैलाना।
दौत्य–(सं० पुं०) दूतकर्म, दूत का काम।
दौन–(हिं० पुं०) देखो दमन।
दौरा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का टोकरा।
दौरी–(हिं० स्त्री०) छोटी टोकरी।
दौर्जन्य–(सं० पुं०) दुर्जनत्व, दुर्जनता, दुष्टता, बुरा व्यवहार।
दौर्बल्य–(सं० पुं०) दुर्बलता।
दौमनस्य–(सं० पुं०) कुमन्त्रणा, बुरा विचार।
दौवारिक–(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
दौहित्र–(सं०पुं०) लड़की का पुत्र, नाती।
द्युति–(सं० स्त्री०) कान्ति, चमक, शोभा, किरण।
द्युपति–(सं० पुं०) सूर्य, इन्द्र। **द्युपथ**–(सं० पुं०) स्वर्ग का मार्ग।
द्युसरित्, द्युसिन्धु–(सं० स्त्री०) मन्दाकिनी।

द्यूत–(सं० पुं०) दाँव बदकर खेला हुआ खेल, जुआ। **द्यूतकर**–(सं० पुं०) जुआ खेलनेवाला, जुआरी। **द्यूतकारक**–(सं० वि०) जुआ खेलनेवाला।
द्यून–(सं० वि०) क्षीण।
द्यो–(सं० पुं०) स्वर्ग, आकाश।
द्योत–(सं०पुं०) प्रकाश, आतप। **द्योतक**–(सं० वि०) प्रकाश करनेवाला।
द्योतन–(सं० स्त्री०) प्रकाशन। **द्योति**–(हिं० स्त्री०) कान्ति। **द्योतित**–(सं० वि०) प्रकाशित।
द्रग–(हिं० पुं०) दृग, नेत्र।
द्रव–(सं० वि०) आर्द्र, गीला, तरल, पिघला हुआ। **द्रवण**–(सं० वि०) बहाव, गरमी, पिघलने की क्रिया, हृदय पर करुणापूर्ण प्रभाव पड़ने का भाव।
द्रवना–(सं० स्त्री०) पानी की तरह पतला होना या बहना।
द्रवरस–(सं० पुं०) गीला रस।
द्रवीकरण–(सं०पुं०) गलने की क्रिया।
द्रवीकृत–(सं० वि०) गलाया हुआ।
द्रवीभाव–(सं० पुं०) गलने का भाव।
द्रवीभूत–(सं० वि०) कृपालु, दयालु।
द्रव्य–(सं० पुं०) वस्तु, धन, सामग्री, जतु, लाह। **द्रव्यवान्**–(सं० वि०) धनवान्, धनी।
द्रष्टव्य–(सं० वि०) देखने योग्य।
द्रष्टा–(सं० बि०) दर्शक, देखनेवाला।
द्राक्षा–(सं० स्त्री०) दाख, अंगूर।
द्राघिमा–(सं० स्त्री०) दीर्घता, लंबाई, भूमध्य के समानान्तर पूर्व और पश्चिम की ओर की वे कल्पित रेखायें जो अक्षांश को सूचित करती हैं।
द्राव–(सं० पुं०) बहाव, गमन, गरमी, उष्णता, पसीजकर बहने की क्रिया।
द्रावक–(सं० वि०) हृदयग्राही।
द्रावित–(सं० वि०) द्रवित, गलाया हुआ।
द्रुत–(सं० वि०) शीघ्रगामी, भागा हुआ।
द्रुतगति–(सं०स्त्री०) तीव्र गति; (वि०) शीघ्र चलनवाला। **द्रुतगामी**–(सं०वि०) शीघ्र चलनेवाला। **द्रुतविलम्बित**–(सं० पुं०) एक छन्द का नाम।
द्रुति–(सं० स्त्री०) द्रव, गति।
द्रुम–(सं० पुं०) वृक्ष, पेड़।
द्रुह–(सं० पुं०) वृक्ष, पुत्र, बेटा; (वि०) द्रोह, करनेवाला।
द्रुही–(सं० स्त्री०) दुहिता, कन्या, बेटी।
द्रोण–(सं० पुं०) कठवत, लकड़ी का रथ, डोम, कौवा, बिच्छू, नाव, डोंगा।
द्रोणि–(सं० स्त्री०) कठवत, डोंगी, दो पर्वतों के बीच की भूमि, एक सौ अट्ठाइस सेर का प्राचीन परिमाण।
द्रोणी–(सं० स्त्री०) काठ का बना हुआ पात्र, कठवत।
द्रोह–(सं० पुं०) द्वेष, वैर।
द्रोही–(सं० पुं०) द्रोहक, द्रोह करनेवाला।
द्वन्द, द्वन्द्व–(सं० पुं०) मिथुन, जोड़ा, युग्म, दो मनुष्यों का परस्पर लड़ना, जोड़, कलह, झगड़ा।
द्वन्दर–(हिं० वि०) झगड़ालू।
द्वन्द्वयुद्ध–(सं० पुं०) दो पुरुषों का परस्पर युद्ध।
द्वन्द्व–(सं० पुं०) युग्म, जोड़ा, लड़ाई, एक प्रकार का समास जिसमें सब शब्द जो जोड़े जाते हैं प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है।
द्वय–(सं० पुं०) द्वन्द्व, युग्म, दो; (वि०) दोहराया हुआ।
द्वादश–(सं०वि०) दस और दो की संख्या; (पुं०) बारह की संख्या।
द्वादशाह–(सं० पुं०) बारह दिनों में किया जानेवाला एक यज्ञ, वह श्राद्ध

जो किसी के निमित्त उसके मरने के बारहवें दिन किया जाता है।
द्वादशी–(सं० स्त्री०) किसी मास के किसी पक्ष की बारहवीं तिथि।
द्वापर–(सं० पुं०) चार युगों में से तीसरा युग।
द्वार–(सं० पुं०) मार्ग या छेद, साधन, उपाय। द्वारचार–(सं० पुं०) विवाह की एक रीति जो बरात के कन्या के द्वार पर पहुँचने पर होती है। द्वार-छेकाई–(हिं० स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें जब वर-वधू घर पहुँचते हैं तब वर की बहिन मार्ग रोकती है और उसको कुछ नेग दिया जाता है, यह नेग।
द्वारपति, द्वारपाल–(सं०पुं०) प्रतिहारी।
द्वारपूजा–(हिं० स्त्री०) विवाह की एक रीति जो कन्यावाले के द्वार पर तब की जाती है जब वर बरात के साथ पहिले-पहिल कन्यावाले के घर आता है।
द्वारयन्त्र–(सं० पुं०) तालक, ताला।
द्वारा–(हिं०पुं०) फाटक, मार्ग; (अव्य०) साधन से। द्वाराध्यक्ष–(सं० पुं०) द्वारपाल, ड्योढ़ीवान।
[illegible]ारिका–(सं० पुं०)द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
[illegible]ारी–(हिं० स्त्री०) छोटा द्वार, दुआरी।
द्वास्थ–(सं० पुं०) द्वारपाल, दरवान।
द्वि–(सं०वि०) द्वित्व, दो संख्या का, दो।
द्विक–(सं०वि०) द्वय, दो, दूसरा, दो बार।
द्विकर–(सं०) दो भुजा, दो हाथ।
द्विकर्मक–(सं० वि०) वह क्रिया जिसमें दो कर्म हों।
द्विगु–(सं०पुं०) जिसके पास दो गाय हों, वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद संख्यावाचक शब्द हो।
द्विगुण–(सं० पुं०) दुगुना, दूना।
द्विगुणित–(सं०वि०) दो से गुणा किया हुआ, दुगुना, दूना।
द्विज–(सं० पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिसका उपनयन संस्कार हुआ हो, अण्डज प्राणी, पक्षी; (वि०)जिसका दो बार जन्म हुआ हो।
द्विजन्मा–(सं० पुं०) ब्राह्मण, दांत, पक्षी, वैश्य; (वि०) जिसका दो बार जन्म हुआ हो।
द्विजराज–(सं० पुं०) देखो द्विजपति।
द्विजर्षभ–(सं० पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण।
द्विजवर–(सं० पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण।
द्विजाति–(सं०पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य।
द्विजालय–(सं० पुं०) कोटर।
द्विजिह्व–(सं० पुं०) सर्प, सांप, पिशुन, दुष्ट, चोर।
द्विजेन्द्र, द्विजेश–(सं० पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण।
द्विजोत्तम–(सं० पुं०) ब्राह्मण।
द्विजोपासक–(सं०पुं०)द्विज-सेवक, शूद्र।
द्विजसेवा–(सं० स्त्री०) द्विज की सेवा।
द्वितय–(सं० पुं०) दो की संख्या; (वि०) दोहरा। द्वितीय–(सं० वि०) दूसरा; (पुं०) पुत्र, बेटा। द्वितीया–(सं० स्त्री०) स्त्री, प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीयाश्रम–(सं० पुं०) गार्हस्थ आश्रम।
द्वित्व–(सं० पुं०) दोहरा होने का भाव।
द्विदल–(सं० वि०) दो पत्तोंवाला, दो पंखड़ियोंवाला; (पुं०) वह अन्न जिसमें दो दल हों, दाल।
द्विदश–(सं० वि०) बीस की संख्या।
द्विधा–(सं० अव्य०) दो प्रकार।
द्विप–(सं० पुं०) हस्ती, हाथी।
द्विपक्ष–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, एक

महीना; (वि०) जिसके दो पक्ष हों, दो पक्षवाला।
द्विपथ-(सं० पुं०) दो मार्ग।
द्विपद-(सं०पुं०) मनुष्य, पक्षी, दो पैर।
द्विपमद-(सं० पुं०) हाथी के मद का जल
द्विपाद-(सं० पुं०) मनुष्य, पक्षी; (वि०) जिसके दो पैर हों।
द्विबाहु-(सं० पुं०) मनुष्य आदि दो बाहुवाले जीव; (वि०) जिसके दो बाहु हों।
द्विभाग-(सं० पुं०) दो भाग, दो अंश।
द्विभाषी-(सं० पुं०) दो भाषा जाननेवाला मनुष्य।
द्विभुज-(सं० वि०) दो हाथवाला।
द्विमुख-(सं० वि०) जिसके दो मुख हों।
द्विर-(सं० पुं०) भौंरा, शहद की मक्खी।
द्विरद-(सं० पुं०) हाथी; (वि०) दो दाँतवाला। द्विरसन-(सं० पुं०) सर्प।
द्विरागमन-(सं० पुं०) विवाह के बाद वधू का पति के घर पर दुबारा आना।
द्विरात्र-(सं०पुं०) दो रात में होनेवाला यज्ञ; (पुं०) दो रात।
द्विरुक्त-(सं०वि०) दो बार कहा हुआ।
द्विवचन-(सं० पुं०) संस्कृत व्याकरण में किसी विभक्ति का वह रूप जो दो व्यक्ति के लिये प्रयोग किया जाता है।
द्विविध-(सं० वि०) दो प्रकार का।
द्विशीर्ष-(सं० पुं०) अग्नि, आग; (वि०) जिसके दो सिर हों।
द्विष-(सं० पुं०) वैरी, शत्रु; (वि०) विरोध या द्वेष करनेवाला।
द्विहृदया-(सं० स्त्री०) गर्भवती स्त्री।
द्वीप-(सं० पुं०) भूमि का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो, टापू; (पुं०) बाघ का चमड़ा।
द्वीपवती-(सं०स्त्री०) भूमि। द्वीपिनख-(सं० पुं०) व्याघ्र नख।
द्वेधा-(सं० अव्य०) दो प्रकार के।
द्वेष-(सं० पुं०) शत्रुता, वैर, विरोध।
द्वेषी-(सं० वि०) विरोध करनेवाला।
द्वैत-(सं० पुं०) भेद, भ्रम, अज्ञान, दुविधा।
द्वैध-(सं० अव्य०) दो प्रकार से; (वि०) परस्पर का विरोध।
द्वैराज्य-(सं० पुं०) वह राज्य जो दो राजाओं में विभक्त हो।
द्वैविध्य-(सं० पुं०) भ्रम, दुविधा।

ध

ध-हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन तथा तवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्तमूल है।
ध-(सं० पुं०) धन, ब्रह्मा, कुवेर, धकार वर्ण।
धंका-(हिं० पुं०) धक्का।
धंगर-(हिं०पुं०) ग्वाल, अहीर, चरवाहा।
धंध, धंधक-(हिं०पुं०) जंजाल, बखेड़ा।
धंधरक-(हिं०पुं०) काम-धंधे का आडंबर।
धंधला-(हिं० पुं०) झूठा आडम्बर, ढोंग, बहाना। धंधलाना-(हिं० क्रि०) झूठा आडम्वर रचना, ढंग करना।
धंधा-(हिं० पुं०) व्यवसाय, कामकाज, उद्यम।
धंस-(हिं० पुं०) डुबकी, गोता। धँसन-(हिं०स्त्री०) धँसने की क्रिया। धँसना-(हिं० क्रि०) घुसना, गड़ना, बैठ जाना, पैठना, नष्ट होना।
धँसान-(हिं० स्त्री०) धँसने की क्रिया या ढंग, उतार। धँसाना-(हिं० क्रि०) गड़ाना, चुभाना, पैठाना। धँसाव-(हिं० पुं०) धँसने की क्रिया, दलदल।

धक–(हिं०स्त्री०) हृदय धड़कने का भाव या शब्द, उमंग, उद्वेग; (क्रि० वि०) अचानक। **धकधकाना**–(हिं० क्रि०) दहकना, भभकना, जलना। **धकधकाहट**–(हिं० स्त्री०) आशंका, धड़कन, खटका। **धकधकी**–(हिं०स्त्री०) हृदय की धड़कन।

धकपक–(हिं०स्त्री०) कलेजे की धड़कन; (क्रि० वि०) डरते हुए। **धकपकाना**-(हिं० क्रि०) डरना, दहलना।

धकार–(सं० पुं०) 'ध' अक्षर का रूप।

धक्रा–(हिं० पुं०) देखो धक्का।

धकाना–(हिं० क्रि०) धधकाना।

धकियाना–(हिं० क्रि०) धक्का देना, ढकेलना। **धकेलना**–(हिं० क्रि०) ठेलना, धक्का देना। **धकेलू**–(हिं० पुं०) धक्का देनेवाला। **धकैत**–(हिं० वि०) धक्का देनेवाला।

धक्कपक्क–(हिं० स्त्री०) देखो धकपक।

धक्कमधक्का–(हिं०पुं०) बहुत से मनुष्यों में आपस में धक्का देने का कार्य।

धक्का–(हिं० पुं०) आघात, टक्कर, झोंका, हानि, टोटा। **धक्कामुक्की**–मुठभेड़, मारपीट।

धगड़–(हिं० पुं०) देखो धगड़।

धचका–(हिं० पुं०) आघात, धक्का, झोंका।

धज–(सं०स्त्री०) सुन्दर रचना, आकृति, शोभा। **सजधज**–तैयारी।

धजा–(हिं० स्त्री०) ध्वजा, पताका।

धजीला–(हिं० वि०) सुन्दर ढंग का, झंडा।

धज्जी–(हिं०स्त्री०) कपड़ा या कागज का लम्बा पतला टुकड़ा, लोहे की चद्दर या लकड़ी की पतली चीर या पट्टी।

धटपरीक्षा–(सं० स्त्री०) देखो तुला-परीक्षा।

धटी–(सं० स्त्री०) कपड़े की चीर।

धड़ंग–(हिं० वि०) वस्त्रहीन, नंगा।

धड़–(हिं० पुं०) शरीर का बिचला मोटा भाग, कमर के ऊपर का भाग, वृक्ष का जड़ से ऊपर का भाग, तना, पेड़ी; (स्त्री०) किसी वस्तु के वेग से भूमि पर गिरने का शब्द।

धड़क–(हिं० स्त्री०) हृदय का स्पन्दन, खटका। **धड़कन**–(हिं० स्त्री०) हृदय का स्पन्दन। **कलेजा धड़कना**–(हिं० क्रि०) हृदय का स्पन्दन करना।

धड़ाका–(हिं० पुं०) खटका, साहस।

धड़काना–(हिं० क्रि०) दहलाना, डराना।

धड़क्का–(हिं० पुं०) देखो धड़ाका।

धड़टटा–(हिं० वि०) जिसकी कमर झुक गई हो, कुबड़ा।

धड़धड़–(हिं० स्त्री०) किसी भारी वस्तु के चलने से उत्पन्न तीव्र शब्द; (क्रि० वि०) बेधड़क; बिना रुकावट के।

धड़धड़ाना–(हिं० क्रि०) धड़ धड़ शब्द करना।

धड़ल्ला–(हिं०पुं०) धड़धड़ शब्द, धड़का, भीड़भाड़।

धड़वाई–(हिं० पुं०) किसी वस्तु को तौलनेवाला।

धड़ा–(हिं० पुं०) तराजू के पलड़ें पर किसी पात्र आदि के भार को बराबर करने का तौल, बांट, बटखरा, तुला, तराजू, चार सेर की तौल।

धड़ाका–(हिं०पुं०) धड़धड़ शब्द करना।

धड़ाधड़–(हिं० क्रि० वि०) धड़धड़ शब्द के साथ, बिना रुकावट के। **धड़ाबन्दी**–(हिं०स्त्री०) धड़ा बांधने का काम।

धड़ाम–(हिं० पुं०) किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
धत्–(हिं० अव्य०) तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।
धत–(हिं० स्त्री०) बुरा अभ्यास, बुरी लत। **धतकारना**–(हिं० क्रि०) धिक्कारना, दुरदुराना।
धता–(हिं० वि०) दूर किया हुआ।
धतिया–(हिं० वि०) कुटेव का।
धतींगड़–(हिं० पुं०) मोटा मनुष्य।
धधक–(हिं० स्त्री०) आग की लपट का ऊपर उठना। **धधकना**–(हिं० वि०) आग भड़कना, दहकना। **धधकाना**–(हिं० क्रि०) दहकाना।
धन–(सं० पुं०) द्रव्य, सम्पत्ति, अति प्रिय वस्तु, पूंजी, गणित में जोड़ का चिह्न (+); (हिं०वि०) देखो धन्य।
धनक–(हिं० पुं०) धनुष, कमान, टोपी में लगाने का गोटा।
धनकुवेर–(हिं० पुं०) बड़ा धनी, धनाढ्य मनुष्य।
धनक्षय–(सं० पुं०) धन का नाश।
धनञ्जय–(सं० पुं०) अग्नि, आग।
धनतेरस–(हिं० स्त्री०) कातिक कृष्ण त्रयोदशी।
धनद–(सं० पुं०) कुबेर; (वि०) धन देनेवाला। **धनदण्ड**–(सं० पुं०) धन रूप में दण्ड, जुर्माना।
धनदेव–(सं० पुं०) धन के देवता, कुवेर।
धनधान्य–(सं० पुं०) धन और अन्न आदि, सामग्री, सम्पत्ति। **धनधाम**–(सं० पुं०) रुपया-पैसा और घरबार।
धनपत्र–(सं० पुं०) हिसाब लिखने का बहीखाता।
धनलोभ–(सं०पुं०) धन की अभिलाषा।
धनवन्त–(सं० वि०) देखो धनवान्।
धनवान्–(सं०वि०) जिसके पास धन हो।
धनशाली–(सं० वि०) धनवान्, धनी
धनसंचय–(सं० पुं०) धन इकट्ठा करना।
धनस्पृहा–(सं०स्त्री०) धन की अभिलाषा।
धनहर–(सं० वि०) तस्कर। **धनहीन**–(सं० वि०) निर्धन, कंगाल, दरिद्र।
धनाकांक्षा–(सं० स्त्री०) धन की अभिलाषा।
धनागम–(सं० पुं०) धन की प्राप्ति।
धनाढ्य–(सं० वि०) धनवान्। **धनाधिकारी**–(सं० पुं०) कोषाध्यक्ष, भण्डारी।
धनाधिप–(सं० पुं०) कुबेर, धनरक्षक, भण्डारी। **धनाधिपति, धनाध्यक्ष**–(सं० पुं०) धनरक्षक, कुबेर।
धनार्थ–(सं०वि०) धन के लिये। **धनार्थी**–(सं० वि०) धन चाहनेवाला।
धनार्थी–(सं० स्त्री०) धन का लोभी।
धना–(सं० वि०) जिसके पास धन हो।
धनिक–(सं० वि०) जिसके पास धन हो।
धनिष्ठ–(सं० वि०) बहुत बड़ा धनी।
धनी–(हिं० वि०) जिसके पास धन हो; (पुं०) धनवान् पुरुष।
धनु–(सं० पुं०) धनुष, कमान। **धनुआ**–(हिं० पुं०) धनुष, कमान, रूई धुनने की धुनकी। **धनुई**–(हिं०स्त्री०) छोटा धनुष। **धनुक**–(हिं०पुं) इन्द्रधनुष।
धनुर्गुण–(सं०पुं०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
धनुर्धर–(सं० पुं०) धनुर्धारी। **धनुर्धारी**–(सं० वि०) देखो धनुर्धर।
धनुर्वेद–(सं० पुं०) धनुर्विद्या बोधक शास्त्र।
धनुष–(सं० पुं०) कमान।
धनुष्कर–(सं० पुं०) धनुष बनानेवाला।
धनुहाई–(हिं० स्त्री०) धनुष की लड़ाई खेलने का कमान।

धनेस–(हिं०पुं०)धन का स्वामी, कुबेर।
धन्ना–(हिं०पुं०)देखो धरना; (वि०)धन्य।
धन्नासेठ–(हिं०पुं०)बड़ा धनाढ्य मनुष्य।
धन्नी–(हिं०) एक जाति।
धन्य–(सं० वि०) पुण्यवान्, श्लाघ्य।
धन्यवाद–(सं० पुं०)साधुवाद, कृतज्ञता-सूचक शब्द।
धन्वन्तर–(सं० पुं०) चार हाथ की नाप।
धन्वा–(हिं० पुं०)धनुष, कमान, चाप।
धन्वाकार–(सं० वि०) कमान के आकार का।
धन्वी–(सं०पुं०) धनुर्धर, वीर, निपुण।
धप–(हिं० स्त्री०) थप्पड़, तमाचा।
धपना–(हिं० क्रि०) वेग से चलना, झपटना। **धप्पा**-(हिं० पुं०) धौल, थप्पड़, क्षति, हानि।
धबला–(हिं० पुं०)एक प्रकार का ढीला पहनावा।
धब्बा–(हिं० पुं०) कलंक, दोष।
धम–(हिं० स्त्री०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, धमाका। **धमक**–(हिं० स्त्री०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, आघात। **धमकना**–(हिं० क्रि०)धमाका करना, रह-रहकर पीड़ा होना। **धमकाना**–(हिं० क्रि०) भय दिखलाना, डराना।
धमकी–(हिं०स्त्री०)डाँट, डपट, घुड़की।
धमगरज–(हिं० पुं०) उत्पात, उपद्रव।
धमधमाना–(हिं० क्रि०) धमधम शब्द करना।
धमधूसर–(हिं०वि०)भद्दा, मोटा आदमी।
धमना–(हिं० क्रि०) धौंकना, फेंकना।
धमनी–(सं० स्त्री०) नाड़ी आदि का संचार करनेवाली छोटी या बड़ी नली।
धमसा–(हिं० पुं०) नगाड़ा, धौंसा।
धमाका–(हिं० पुं०)किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, बन्दूक का शब्द, आघात।
धमाचौकड़ी–(हिं० स्त्री०)उपद्रव,उछल-कूद, ऊधम। **धमाधम**–(हिं० क्रि० वि०) प्रहार के शब्दों के सहित।
धमार–(हिं० स्त्री०) उत्पात, उपद्रव।
धमारिया–(हिं० पुं०) उछल-कूद करने-वाला, नट; (वि०) उपद्रवी।
धमारी–(हिं० वि०)उत्पाती, उपद्रवी।
धमूका–(हिं० पुं०) आघात, प्रहार।
धमेख–(हिं० स्त्री०) बुद्ध के काल का।
धयना–(हिं० क्रि०) दौड़ना, धूपना।
धरंता–(हिं० वि०) पकड़नेवाला।
धर–(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़; (वि०) धारण करनेवाला। **धरपकड़**–अप-राधियों को पकड़ने का काम।
धरक–(हिं०पुं०)देखो धड़क। **धरकना**–(हिं० क्रि०) धड़कना।
धरण–(सं०पुं०)धारण करने की क्रिया।
धरणि–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, धमनी।
धरणिधर–(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़, शेषनाग। **धरणिरुह**–(सं०पुं०) वृक्ष।
धरणी–(सं०स्त्री०)पृथ्वी, नाड़ी, मेदा।
धरणीधर–(सं०पुं०) देखो धरणिधर।
धरता–(हिं० पुं०) ऋणी, देनदार।
धरती–(हिं०स्त्री०)धरित्री, पृथ्वी,संसार।
धरन–(हिं० स्त्री०) धरने की क्रिया या भाव, टेक, हठ, कड़ी, धरनी।
धरना–(हिं० क्रि०) स्थापित करना ठहराना, बन्धक रखना, आश्रय लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, आरो-पित करना, धारण करना, पहिनना; (हिं० पुं०) अड़े रहना।
धरनि–(हिं० स्त्री०) देखो धरणि।
धरनी–(हिं० स्त्री०) देखो धरणी।

धरनेत–(हिं० पुं०) धरना देनेवाला मनुष्य।
धरम–(हिं० पुं०) धर्म। धरमघड़ी–(हिं० स्त्री०) लंगर पर चलनेवाली भीत पर लगी हुई बड़ी घड़ी।
धरावना–(हिं० क्रि०) पकड़ाना।
धरसना–(हिं०क्रि०) डर जाना, दब जाना।
धरहर–(हिं० स्त्री०) धरपकड़, रक्षा, बचाव, धीरज, तय।
धरहरा–(हिं०पुं०) ऊँचा बुर्ज या मकान जिसमें चढ़ने के लिये भीतर की ओर सीढ़ियाँ बनी रहती हैं।
धरहरिया–(हिं० पुं०) बीच-बचाव करनेवाला।
धरा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, धरती, संसार, बटखरा।
धराऊ–(हिं० वि०) बहुत दिनों का रक्खा हुआ, पुराना।
धरातल–(सं० पुं०) धरती, पृथ्वी, लंबाई और चौड़ाई का गुणनफल।
धराधर–(सं० पुं०) पर्वत, विष्णु, शेषनाग।
धराधिप, धराधिपति, धराधीश–(सं०पुं०) नृप, राजा।
धराना–(हिं० क्रि०) पकड़ाना।
धरासुर–(हिं० पुं०) ब्राह्मण।
धरित्री–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
धरया–(हिं०वि०) धरने या पकड़नेवाला।
धरोहर–(हिं० स्त्री०) न्यास, थाती।
धर्ता–(सं० पुं०) धारण करनेवाला, अपने ऊपर किसी का भार लेनेवाला।
धर्म–(सं० पुं०) सत्कर्म, पुण्य, सदाचार, कोई विशिष्ट व्यापार, प्रकृति, नियम, नित्य नियम। धर्म कमाना–धर्म कार्य।
धर्मकर्म–(सं० पुं०) वह कर्म जिसका करना किसी धर्मग्रन्थ में आवश्यक बतलाया गया हो।
धर्मक्षेत्र–(सं०पुं०) कर्मभूमि, भारतवर्ष। धर्मचारी–(सं०वि०) धर्म का आचरण करनेवाला। धर्मज्ञ–(सं० वि०) धर्म को जाननेवाला। धर्मतः–(सं० अव्य०) धर्म का ध्यान करते हुए, धर्म-को साक्षी रखकर। धर्मनिष्ठा–(सं० स्त्री०) धर्म में विश्वास। धर्मपत्नी–(सं० स्त्री०) विवाहिता स्त्री। धर्मपरायण–(सं० वि०) सर्वदा धर्मकार्य का यथाशक्ति अनुष्ठान करनेवाला। धर्मपुत्र–(सं० पुं०) धर्म के अनुसार स्वीकृत किया हुआ पुत्र। धर्मबुद्धि–(सं० स्त्री०) धर्मज्ञान, भले-बुरे का विचार। धर्मभगिनी–(सं० स्त्री०) धर्म के अनुसार मानी हुई बहिन, गुरु की कन्या।
धर्मभ्राता–(सं० पुं०) भाई के समान एक ही आश्रम में रहनेवाला। धर्म-मति–(सं०वि०) धार्मिक, पुण्यात्मा। धर्ममहामात्य–(सं०पुं०) धर्म विषयक मंत्री।
धर्मयुग–(सं० पुं०) सत्ययुग। धर्म-युद्ध–(सं० पुं०) वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अन्याय अथवा नियम भंग न हो।
धर्मराइ–(हिं० पुं०) देखो धर्मराज।
धर्मराज–(सं०पुं०) नृपति, राजा, राजा युधिष्ठिर, न्यायाधीश, यम, धर्म का पालन करनेवाला, न्यायकर्ता। धर्मराय–(हिं० पुं०) देखो धर्मराज।
धर्मवीर–(सं० पुं०) वीर रस के अनुसार वह पुरुष जो धर्म करने में साहसी हो। धर्मशाला–(सं० स्त्री०) यात्रियों के लिये धर्मार्थ बना हुआ गृह, सत्र, विचारालय। धर्मशासन–

(सं० पुं०) धर्मशास्त्र। **धर्मशास्त्र**–(सं० पुं०) वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार संबंधी नियम लिखे हों। **धर्मशास्त्री**–(सं० पुं०) वह जो धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देता हो। **धर्मशील**–(सं०वि०)धार्मिक। **धर्मसंकट**–(हि० पुं०) ऐसी स्थिति का आ पड़ना जब किसी कार्य के करने या न करने पर धर्म का आघात पड़ता हो। **धर्मसभा**–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर बैठकर न्यायाधीश न्याय करे।
धर्मागम–(सं० पुं०) धर्मशास्त्र।
धर्माचार्य–(सं० पुं०) धर्मशिक्षक।
धर्मात्मा–(सं० वि०) धर्म करनेवाला, धार्मिक।
धर्माधर्म–(सं० पुं०) पुण्य और पाप।
धर्माधिकार–(सं० पुं०) न्याय और अन्याय के विचार का अधिकार।
धर्माधिकारी–(सं० पुं०) धर्म, अधर्म की व्यवस्था देनेवाला, न्यायाधीश।
धर्माध्यक्ष–(सं० पुं०) धर्माधिकारी।
धर्मार्थ–(सं० क्रि० वि०)धर्म के निमित्त, परोपकार के लिये।
धर्मावतार–(सं० पुं०) साक्षात् धर्म, अत्यन्त धर्मात्मा, अच्छी तरह न्याय कार्य करनेवाला।
धर्माश्रित–(सं०वि०)धर्मशील, धार्मिक।
धर्मासन–(सं० पुं०) न्यायाधीश के बैठने का आसन।
धर्मिणी–(सं० स्त्री०) पत्नी, स्त्री।
धर्मिष्ठ–(सं०पुं०)पुण्यात्मा,अत्यन्त धार्मिक
धर्मी–(सं० वि०) धार्मिक।
धर्मोपदेश–(सं० पुं०) धर्मशास्त्र, धर्म की शिक्षा। **धर्मोपदेशक**–(सं० वि०) धर्म का उपदेश देनेवाला।
धर्ष–(सं० पुं०) क्रोध, अविनय, अनादर
धर्षक–(सं० वि०) अपमान करनेवाला।
धर्षण–(सं० पुं०) अनादर, अपमान।
धर्षणा–(सं० स्त्री०) अवज्ञा, अपमान।
धर्षणीय–(सं० वि०) दबाने या हराने योग्य। **धर्षित**–(सं० वि०) अपमानित किया हुआ।
धव–(सं० पुं०) पति, स्वामी।
धवरहर, धवराहर–(हि० पुं०) देखो धरहरा।
धवरा–(हि० वि०) उजला, सफेद।
धवल–(सं०वि०) सफेद, उजला, निर्मल, सुन्दर।
धवलता–(हि०स्त्री०) सफेदी, उजलापन।
धवला–(सं०स्त्री०) सफेद गाय; (वि०) उजली। **धवलाई**–(हि०स्त्री०) उजलापन, सफेदी। **धवलित**–(सं० वि०) सफेद किया हुआ। **धवली**–(सं० स्त्री०) सफेद गाय। **धवलीभूत**–(स० वि०) जो सफेद किया हुआ हो।
धवलोत्पल–(सं० पुं०) कुमुद।
धवाना–(हि० क्रि०) दौड़ाना।
धस–(हि० पुं०) गोता, डुबकी। **धसक**–(हि० स्त्री०) सूखी खाँसी, ईर्ष्या, डाह। **धसकना**–(हि० क्रि०) नीचे की ओर धँसना, दबना, डाह करना।
धाँधल–(हि० स्त्री०) उपद्रव, ऊधम, धोखा। **धाँधलपन**–उपद्रव, पाजीपन।
धाँधली–(हि० वि०) उपद्रवी।
धाँय–(हि० स्त्री०) देखो धायँ।
धाँस–(हि० स्त्री०) मिर्च, तमाखू आदि की तीव्र गन्ध जिससे खाँसी आने लगती है।
धा–(सं० वि०) धारण करनेवाला।
धाई–(हि० स्त्री०) देखो धाय, धातु।
धाक–(हि० पुं०) दबदबा, प्रसिद्धि।

धागा–(हि० पुं०) बटा हुआ सूत, तागा, डोरा।
धाड़–(हि० स्त्री०) डाकुओं का धावा, झुण्ड, जत्था, दहाड़।
धाड़स–(हि० स्त्री०) देखो ढाढ़स।
धात–(हि० स्त्री०) देखो धातु।
धाता–(सं० पुं०) विधाता, ब्रह्मा।
धातु–(सं० पुं०) परमात्मा, शरीर को धारण करनेवाला, द्रव्य, शब्द का वह रूप जिससे क्रिया बनती है, वे खान से निकलनवाले द्रव्य जो भारी हों, जो गलाये जा सकें, जिनमें गुरुत्व हो, जिनको पीटकर बढ़ाया जा सके तथा जिसका तार खींचा जा सके, यथा–सोना, चाँदी आदि।
धातृ–(सं० वि०) धारण करनेवाला, पोषक; (पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, आत्मा, मेद।
धात्री–(सं० स्त्री०) माता, स्त्री, बच्चे का पालन-पोषण करनेवाली स्त्री, धाय।
धात्वर्थ–(सं० पुं०) किसी शब्द का धातु से निकलनेवाला अर्थ।
धान–(हिं० पुं०) तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों का छिलका हटाने पर चावल होता है।
धानपान–(हिं० पुं०) विवाह के पहिले की एक रीति जिसमें वर पक्ष की ओर से कन्या के घर धान और हल्दी भेजी जाती है; (वि०) पतला।
धाना–(हि० क्रि०) दौड़ना, भागना।
धानी–(सं० स्त्री०) आधार, वह जिसमें कोई वस्तु रक्खी जावे, स्थान; (हि० स्त्री०) धान की पत्ती के समान रंग का।
धानुक–(हिं० पुं०) धनुर्धारी।
धान्य–(सं०पुं०) छिलका-सहित चावल, धान, कोई भी अन्न, चार तिल का एक परिमाण, धनिया।
धान्यमण्ड–(सं० पुं०) धान की बनाई हुई मदिरा।
धाप–(हिं० पुं०) लंबा-चौड़ा मैदान, दूरी की नाप जो एक या दो मील मानी जाती है; (स्त्री०) तृप्ति, संतोष।
धापना–(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट होना, अघाना, दौड़ना, भागना।
धाभाई–(हिं० पुं०) देखो दूधभाई।
धाम–(सं० पुं०) घर, शरीर, शोभा, किरण, स्थान, जन्म, तेज, देवस्थान, अवस्था, स्थिति, गति, स्वर्ग।
धामा–(हिं० पुं०) भोजन का नेवता।
धायँ–(हिं० स्त्री०) तोप, बंदूक आदि के छूटने का शब्द, गिरने का शब्द।
धाय–(हि०स्त्री०) वह स्त्री जो दूसरे के पुत्र को दूध पिलाती है तथा उसका पालन-पोषण करती है।
धायना–(हिं० स्त्री०) दौड़ना, धूपना।
धार–(हिं० स्त्री०) निरन्तर जल का प्रवाह, पानी का सोता, किसी काटने-वाले हथियार का पैना किनारा, आक्रमण, दिशा, किनारा, छोर।
धारक–(सं० वि०) धारण करनेवाला, रोकनेवाला।
धारण–(सं० पुं०) ग्रहण, थामना, अपने ऊपर लेना, पहिनना, सेवा, रक्षा, स्थापन, ऋण।
धारणा–(सं० स्त्री०) स्मरण-शक्ति, पक्का विचार, स्मृति।
धारणीय–(सं० वि०) धारण करने योग्य।
धारन–(हिं० पुं०) देखो धारण। **धारना**–(हिं० क्रि०) धारण करना, ऋण लेना।
धारयित्री–(सं० स्त्री०) धारण करने-वाली, पृथ्वी।

धारा–(सं० स्त्री०) पानी आदि का बहाव, हथियार की धार, कीर्ति, यश, उन्नति, समूह, झुंड, अधिक वर्षा, पानी का झरना। **धारागृह**–(सं० पुं०) वह घर जिसमें जलयन्त्र लगे हों।
धारांकुर–(सं० पुं०) वर्षा की बूँद।
धाराङ्ग–(सं० पुं०) खड्ग, तलवार।
धारायन्त्र–(सं० पुं०) फुहारा।
धारावाही–(सं० वि०) धारा रूप में (बिना रुकावट के) आगे को बढ़नेवाला। **धारासार**–(सं० पुं०) जल की सतत वृष्टि।
धारिणी–(सं० स्त्री०) धरणी, पृथ्वी, भूमि।
धारी–(हिं० स्त्री०) सेना, समूह, झुंड, रेखा; (वि०) ऋण लेनवाला। **धारीदार**–(हिं० वि०) वह वस्त्र जिसमें लंबी-लंबी रेखा व धारी हों।
धारोष्ण–(सं० पुं०) थन से निकला हुआ ताजा दूध जो कुछ गरम होता है।
धार्मिक–(सं० वि०) धर्माचरण करनेवाला, पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्मात्मा। **धार्मिकता**–(सं० स्त्री०) धर्मशीलता।
धार्य–(सं० वि०) धारण करने योग्य; (पुं०) वस्त्र, कपड़ा।
धावक–(सं० पुं०) हरकारा, धोबी।
धावन–(सं० पुं०) शीघ्रगमन, वेग से दौड़कर जाना, धोने या स्वच्छ करने का काम।
धावना–(हिं० क्रि०) दौड़ना, भागना।
धावरी–(हिं० स्त्री०) सफेद रंग की गाय।
धावा–(हिं० पु०) आक्रमण, चढ़ाई।
धाह–(हिं० स्त्री०) चिल्लाकर रोना।
धिंग–(हिं० स्त्री०) ऊधम, उपद्रव।
धिंगा–(हिं० वि०) उपद्रवी, निर्लज्ज।
धिंगाई–(हिं० स्त्री०) ऊधम, उपद्रव, निर्लज्जता। **धिंगाधिंगी**–(हिं० स्त्री०) उपद्रव। **धिंगान**–(हिं० क्रि०) ऊधम मचाना, उपद्रव करना।
धिआ–(हिं० स्त्री०) धिय, कन्या, बेटी।
धिआन–(हिं० पुं०) देखो ध्यान।
धिआना–(हिं० क्रि०) देखो ध्यावना।
धिक्–(सं० अव्य०) घृणासूचक शब्द, भर्त्सना, तिरस्कार, निन्दा।
धिकना–(हिं० क्रि०) गरम होना।
धिकाना–(हिं० क्रि०) आँच पर गरम करना।
धिक्कार–(सं० पुं०) भर्त्सना, तिरस्कार, अनादर। **धिक्कारना**–(हिं० क्रि०) तिरस्कार करना।
धिग्–(हिं० अव्य०) देखो धिक्।
धिया–(हिं० स्त्री०) कन्या, बेटी, लड़की।
धिरकार–(हिं० स्त्री०) देखो धिक्कार।
धिरवना, धिराना–(हिं० क्रि०) डराना।
धिषणा–(सं० स्त्री०) बुद्धि, प्रशंसा।
धींग–(हिं० पुं०) हृष्टपुष्ट मनुष्य; (वि०) पापी, उपद्रवी।
धींगा–(हिं० वि०) उपद्रवी, पाजी। **धींगाधींगी**–(हिं० स्त्री०) उपद्रव, बलप्रयोग। **धींगाड़ा**–(हिं० वि०) दुष्ट, हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।
धींवर–(हिं० पुं०) देखो धीवर, मल्लाह।
धी–(सं० स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, मन, कर्म; (हिं० स्त्री०) लड़की, बटी। **धीगुण**–(सं० पुं०) बुद्धि का गुण।
धीजना–(हिं० क्रि०) अंगीकार करना।
धीति–(सं० स्त्री०) प्यास, अनादर, आराधना।
धीदा–(प्रा० स्त्री०) कन्या, कुमारी, बेटी; (सं० वि०) बुद्धिदायक।
धीन्द्रिय–(सं० पुं०) ज्ञानेन्द्रिय।
धीम–(हिं० वि०) देखो धीमा।

धीमत्–(सं० वि०) बुद्धियुक्त।
धीमर–(हिं० पुं०) धीवर, मल्लाह।
धीमा–(हिं०वि०)जिसका वेग मन्द हो।
धीमान्–(सं० पुं०) बुद्धिमान्।
धीय, धीया–(हिं०स्त्री०)दुहिता,लड़की।
धीर–(सं० वि०) धैर्यचित्त, विनीत, नम्र, गंभीर, धीमा, मनोहर, सुन्दर।
धीरज–(हिं० पुं०)देखो धैर्य। धीरता–(सं०स्त्री०) चित्त की दृढ़ता, संतोष।
धीरत्व–(सं० पुं०)धीरता।
धीरे–(हिं० क्रि० वि०) मन्द गति से।
धीर्य–(हिं० वि०) कातर, डरपोक।
धीलटि–(हिं० स्त्री०) दुहिता, लड़की।
धीवर–(हिं० पुं०) मल्लाह, मछुआ।
धीवरि–(सं० स्त्री०) मल्लाहिन।
धीशक्ति–(हिं० स्त्री०) बुद्धि का गुण।
धीसचिव–(हिं० पुं०) बुद्धिमान मंत्री।
धु–(हिं० स्त्री०) कँपकँपी, थरथराहट।
धुंआ–(हिं० पुं०) धूम्र।
धुंकार–(हिं० स्त्री०) गड़गड़ाहट।
धुंगार–(हिं० स्त्री०) बघार, तड़का, छौंक।
धुंगारना–(हिं० क्रि०)बघारना,छौंकना।
धुंद–(हिं० स्त्री०) देखो धुंध।
धुंदा–(हिं० वि०) अन्धा, नेत्रहीन।
धुंध–(हिं० स्त्री०) वायु में उड़ती हुई धूल, आँख का वह रोग जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दीख पड़ती।
धुंधका–(हिं०पुं०)धुआं निकलने का छिद्र।
धुंधकार–(हिं० पुं०) अन्धकार, अँधेरा।
धुंधमार–(हिं० पुं०) देखो धुन्धुमार।
धुंधला–(हिं० वि०) धुवें के रंग का, अस्पष्ट, थोड़ा अँधेरा। धुंधलई–(हिं० स्त्री०) धुंधलापन; धुंधलाना–(हिं० क्रि०) धुंधला पड़ जाना। धुंधलापन–(हिं० पुं०) अस्पष्ट होने का भाव।
धुंधुकार–(हिं० पुं०) धुंधलापन।
धुंधुवाना–(हिं० क्रि०) धुआँ देना, धुआँ देकर जलना।
धुंधला–(हिं० पुं०) दुष्ट, छली।
धुआँ–(हिं०पुं०) धूम्र, बड़ा समूह, उमड़ती हुई वस्तु। धुआँकश–(हिं० पुं०, भाफ से चलनेवाली नाव। धुँआँदान–(हिं० पुं०) छत में धुआं निकलने का छिद्र। धुआँधार–(हिं० वि०) घोर, प्रचण्ड, भड़कीला, गहरे रंग का; (क्रि० वि०) बड़े वेग से। धुआँना–(हिं० क्रि०) अधिक धुयें में रहने के कारण स्वाद या गन्ध का बिगड़ जाना।
धुआँऍंध–(हिं० वि०)धुएँ के समान गन्ध का।
धुकड़पुकड़–(हिं०पुं०)व्यग्रता,घबड़ाहट।
धुकड़ी–(हिं० स्त्री०) छोटी थैली या बटुआ।
धुकधुकी–(हिं० स्त्री०) छाती के बीच का गहरा स्थान, हृदय की धड़कन।
धुकाना–(हिं० वि०) झुकाना, पटकना, ढकेलना।
धुकार–(हिं० स्त्री०) नगाड़े का शब्द।
धुगधुगी–(हिं० स्त्री०) देखो धुकधुकी।
धुजिनी–(हिं० स्त्री०) सेना।
धुड़ंगा, धुड़ंगी–(हिं० वि०) वस्त्रहीन।
धुतकार–(हिं० स्त्री०) देखो दुतकार।
धुतकारना–(हिं०क्रि०)देखो दुतकारना।
धुताई–(हिं० स्त्री०) धूर्तता।
धुधुकार–(हिं० स्त्री०) कर्कश शब्द।
धुन–(हिं० स्त्री०) किसी काम को निरन्तर बिना सोचे-समझे करने की प्रवृत्ति, मन की तरंग।
धुनकना–(हिं० क्रि०) धुनना।
धुनकी–(हिं० स्त्री०)धनुष के आकार का रूई धुनने का साधन।

धुनना–(हिं० क्रि०) धुनकी से रुई स्वच्छ करना।
धुनियाँ–(हिं० पुं०) रुई धुनने का काम करनवाला, बेहना।
धुनी–(हिं० वि०) निरन्तर किसी काम में लगा रहनवाला।
धुनेहा–(हिं० पुं०) देखो धुनियाँ,बेहना।
धुपना–(हिं० क्रि०) धुलना, धोना।
धुपाना–(हिं० क्रि०) धूप दिखाना।
धुपेली–(हिं० स्त्री०) गरमी के दिनों में पसीने से निकलनेवाली फुन्सी।
धुमिलाना–(हिं० क्रि०) धूमिल करना। धुमिला–(वि०) धुंधला। धुरंधर–देखो धुरन्धर।
धुर–(सं० पुं०) गाड़ी या रथ का धुरा, प्रधान स्थान, धन, भूमि की एक नाप जो एक बिस्वे के बराबर होती है, भाग, अंश; (वि०) दृढ़।
धुरना–(हिं० क्रि०) मारना, पीटना।
धुरन्धर–(सं० पुं०) बोझ ढोनेवाला मनुष्य या पशु; (वि०) भार ढोनेवाला, श्रेष्ठ या प्रधान।
धुरा–(हिं० पुं०) वह लोहे का डंडा जिस पर गाड़ी आदि का पहिया घूमता है।
धुरियाना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को धूल से ढाँपना।
धुरी–(हिं० स्त्री०) छोटा धुरा।
धुरीण–(सं० वि०) बोझ ले जानेवाला, मुख्य, प्रधान।
धुरेटना–(हिं० क्रि०) धूल लगाना।
धुर्री–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का बहुत छोटा भाग, कण।
धुलना–(हिं० क्रि०) धोया जाना।
धुलवाना–(हिं० क्रि०) धोने का काम किसी दूसरे से कराना; (हिं० स्त्री०) धोने का काम या शुल्क।
धुवाँरा–(हिं० पुं०) धुआँ निकलने का छिद्र। धुवाँस–(हिं० स्त्री०) उड़द का आटा।
धुवाना–(हिं० क्रि०) देखो धुलाना।
धुस्स–(हिं० पुं०) टीला, बाँध।
धुस्सा–(हिं० पुं०) मोटे ऊन की बनी हुई लोई।
धू–(हिं० पुं०) ध्रुव तारा, धुरी।
धूआँ–(हिं० पुं०) देखो धुआँ, धूम्र।
धूआँधार–(हिं०पुं०) देखो धुआँधार।
धूत–(हिं० वि०) कम्पित, काँपता हुआ, देखो धूर्त।
धूतना–(हिं०क्रि०) ठगना, धोखा देना।
धूतपाप–(सं० पुं०) जिसका पाप दूर हो गया हो।
धूतू–(हिं० पुं०) तुरही बाजा।
धूधू–(हिं०पुं०) आग में दहकने का शब्द।
धून–(सं०वि०) कम्पित, काँपता हुआ।
धूनन–(सं०पुं०) कम्प, थरथराहट।
धूनना–(हिं०क्रि०) रुई के रेशे को अलगाना।
धूनी–(हिं० स्त्री०) देवपूजन अथवा सुगन्ध के लिये कपूर, अगर, गुगुल, आदि सुगन्धित द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ, साधुओं के तापने की आग।
धूप–(सं० पुं०) मिश्रित गन्धद्रव्यों का धुआँ, जो देवपूजन या सुगन्ध के लिये जलाई जाती है, सूर्य का प्रकाश, घाम। धूपघड़ी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का यन्त्र जिसमें सूर्य के प्रकाश से समय का ज्ञान होता है। धूपछाँह–जिसमें ताने और बाने का विभिन्न रंग होता है। धूपदानी–(हिं० स्त्री०) छोटा धूपदान। धूपना–(हिं० क्रि०) गन्ध-द्रव्य जलाना, धूप देना। धूपबत्ती–

(हिं० स्त्री०) मसाला लपेटी हुई सींक या बत्ती जिसके जलाने से सुगन्धित धुआँ उठकर फैलता है।
धूपित–(सं० वि०) धूप दिया हुआ।
धूम–(सं० पुं०) धूम्र, धुआँ। **धूम**–(हिं० पुं०) आन्दोलन, उपद्रव, उत्पात, समारोह, प्रसिद्धि। **धूमकधैया**–(हिं० स्त्री०) उत्पात, उपद्रव, कूदफाँद, हल्ला। **धूमकेतु**–(सं० पुं०) पुच्छल तारा। **धूमधड़क्का**–(हिं० पुं०) समारोह, भारी आयोजन।
धूमधाम–(हिं० पुं०) समारोह, ठाटबाट। **धूमपान**–(सं० पुं०) औषधियों का धुआँ जो नली द्वारा पान कराया जाता है, तमाखू, बीड़ी आदि पीन का काम। **धूमपोत**–(सं० पुं०) अग्निबोट, धुआँकस।
धूमल–(सं० पुं०) कृष्ण लोहित वर्ण; (वि०) धुएँ के रंग का। **धूमला**–(हिं० वि०) धुंधला, मलिन।
धूमिल–(हिं० वि०) धुंधला, धुएँ के रंग का।
धूम्र–(सं० पुं०) धुआँ, ललाई लिये काला रंग। **धूम्रलोहित**–(सं० पुं०) शिव, महादेव, कालापन लिये हुए लाल रंग।
धूर–(हिं० स्त्री०) धूलि, धूल।
धूरत–(हिं० वि०) देखो धूर्त।
धूरदानी–(हिं० स्त्री०) धूर का ढेर।
धूरा–(हिं०पुं०) धूल, चूरा, चूर्ण, बुकनी।
धूरे–(हिं० क्रि० वि०) पास में।
धूर्त–(सं० वि०) मायावी, वंचक, धोखा देनेवाला।
धूर्तता–(सं० स्त्री०) शठता, ठगपन।
धूल–(हिं० स्त्री०) मिट्टी रेत आदि का महीन कण, रेणु, रज।
धूला–(हिं० पुं०) खण्ड, टुकड़ा।
धूलि–(सं० स्त्री०) मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर्ण।
धूली–(सं० स्त्री०) धूल।
धूवाँ–(हिं० पुं०) देखो धुआँ।
धूसर–(सं० पुं०) मटमैला रंग। **धूसरा**–(हिं० वि०) धूल लगा हुआ, मटमैला।
धूसला–(हिं० वि०) देखो धूसरा।
धृत–(सं० वि०) धारण किया हुआ, निश्चित।
धृति–(सं० स्त्री०) धारण करने या पकड़ने की क्रिया, सन्तोष, तृप्ति।
धृतिमत्–(सं० वि०) धैर्ययुक्त।
धृष्ट–(सं०वि०) निर्लज्ज, उद्धत, निर्दय।
धृष्टता–(सं० स्त्री०) ढिठाई, निर्लज्जता।
धृष्णु–(सं० वि०) प्रगल्भ, उद्धत, ढीठ।
धेन–(हिं० स्त्री०) देखो धेनु, गाय।
धेनु–(सं० स्त्री०) गाय, हाल की ब्याई हुई गाय।
धेय–(सं० वि०) धारण करने योग्य।
धेलचा, धेला–(हिं० पुं०) आधे पैसे के मूल्य का ताँबे का सिक्का।
धेली–(हिं०स्त्री०) आधा रुपया, अठन्नी।
धैर्य–(सं० पुं०) चित्त की स्थिरता, धीरता। **धैर्यच्युत**–(सं० वि०) अस्थिर, धैर्यहीन। **धैर्यशाली**–(सं० वि०) धैर्ययुक्त, शान्त।
धोंडाल–(हिं० वि०) जिसमें कंकड़, पत्थर के ढोंके हों।
धोंधा–(हिं० पुं०) पिण्ड, लोंदा, भद्दा।
धोई–(हिं० स्त्री०) उड़द या मूंग की छिलका निकाली हुई दाल।
धोकड़–(हिं० वि०) हट्टा-कट्टा।
धोका–(हिं० पुं०) देखो धोखा।
धोखा–(हिं० पुं०) छल, भुलावा, भ्रम, भ्रान्ति उत्पन्न करनेवाली वस्तु।
धोटा–(हिं० पुं०) देखो ढोटा।

धोती–(हिं० स्त्री०) वस्त्र जिससे भारतवासी हिन्दू लोग कमर से लेकर पैर तक का शरीर का भाग ढांपते हैं तथा स्त्रियाँ सर्वांग ढांपने के लिये कमर से बाँध लेती हैं।
धोना–(हिं० क्रि०) जल से स्वच्छ करना, पखारना, हटाना, मिटाना।
धोप–(हिं० स्त्री०) खड़ग, तलवार।
धोब–(हिं० पुं०) धोये जाने का काम।
धोबिघटा–(हिं० पुं०) वह घाट जहाँ धोबी कपड़े धोते हैं। **धोबिन**–(हिं० स्त्री०) धोबी की स्त्री। **धोबी**–(हिं० पुं०) मैले कपड़ों को धोकर स्वच्छ करनेवाला, रजक।
धोम–(हिं० पुं०) धूम्र, धूम, धुआँ।
धोर–(हिं० स्त्री०) निकटता, सामीप्य।
धोरी–(हिं० पं०) भार उठानेवाला, बड़ा आदमी, सरदार।
धोरे–(हिं० क्रि० वि०) पास में।
धोलाना–(हिं० क्रि०) देखो धुलाना।
धोवत–(हिं० पुं०) धोबी।
धोवना–(हिं० पुं०) धोने या पखारने की क्रिया। **धोवाना**–(हिं० क्रि०) धुलने का काम किसी दूसरे से कराना।
धौं–(हिं० अव्य०) "मालूम नहीं, न जाने, अथवा, या अच्छा तो, भला, कि" अर्थों में यह शब्द प्रयुक्त होता है।
धौंक–(हिं० स्त्री०) आघात, ताप, हवा का वेग। **धौंकना**–(हिं० क्रि०) आग सुलगाने के लिये उस पर हवा के आघात पहुँचाना, दण्ड आदि लगाना, भार डालना या पहुँचाना। **धौंकनी**–(हिं० स्त्री०) आग फूंकने की धातु या बाँस की सोनार की पोली नली, भाथी। **धौंका**–(हिं० पुं०) वायु का झोंका, लू, तीव्र वायु। **धौंकिया**–(हिं० पुं०) आग फूंकनेवाला, भाथी चलानेवाला।
धौंज, धौंजन–(हिं० स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
धौंजना–(हिं० क्रि०) दौड़-धूप करना।
धौंताल–(हिं० वि०) चतुर, साहसी, निपुण।
धौंस–(हिं० क्रि०) घुड़की, धमकी, डाँटडपट, कपट, धोखा। **धौंसना**–(हिं० क्रि०) दण्ड देना, धमकी देना, मारना, पीटना, डराना। **धौंसपट्टी**–(हिं० स्त्री०) धोखा, भुलावा।
धौंसा–(हिं० पुं०) डंका, बड़ा नगाड़ा। **धौंसिया**–(हिं० पुं०) डाँट-डपट से काम लेनेवाला, नगाड़ा बजानेवाला।
धौत–(सं० त्रि०) धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ, नहाया हुआ।
धौरा–(हिं० वि०) उजला।
धौल–(हिं० वि०) थप्पड़, तमाचा, चाँटा; (हिं० पुं०) उपद्रव, दंगा, मारपीट। **धौलहर**–(हिं० पुं०) देखो धोरहर।
धौला–(हिं० वि०) धवल, उजला, सफेद। **धौलाई**–(हिं० स्त्री०) उजलापन।
ध्यात–(सं० वि०) ध्यान किया हुआ, विचार किया हुआ।
ध्याता–(हिं० वि०) ध्यान करनेवाला।
ध्यान–(सं० पुं०) चित्त की एकाग्रता, सोच, विचार, धारणा, स्मृति, बुद्धि, भावना, विचार, एक विषय में चित्त एकाग्र करना।
ध्यानना–(हिं० क्रि०) विचार करना।
ध्येय–(सं० वि०) जिसका ध्यान किया जाय, ध्यान करने योग्य, जो ध्यान का विषय हो।
ध्रुव–(सं० वि०) दृढ़, निश्चित, स्थिर।
ध्रुवता–(सं० स्त्री०) दृढ़ता, स्थिरता, निश्चय

ध्रुवतारा–(हिं०स्त्री०) मेरु के अग्रभाग में स्थित वह तारा जो सर्वदा उत्तर में रहता है।
ध्रुवदर्शक–(सं० पुं०) सप्तर्षि-मण्डल।
ध्रुवरेखा–(सं० स्त्री०) विषुवत् रेखा।
ध्वंस–(सं० पुं०) विनाश, क्षति, हानि।
ध्वंसक–(सं० वि०) नाश करनेवाला।
ध्वंसकला–(सं०स्त्री०) हत्या। **ध्वंसन**–(सं० पुं०) नाश करने की क्रिया।
ध्वंसित–(सं० वि०) नाश किया हुआ।
ध्वंसी–(सं० वि०) नाश करनेवाला।
ध्वज–(सं० पुं०) ध्वजा, चिह्न, गर्व, अभिमान, खाट, झंडा। **ध्वजगृह**–(सं० पुं०) वह घर जिस पर झंडा फहराया जाता है।
ध्वजा–(सं० स्त्री०) पताका, झंडा।
ध्वजारोपण–(सं० पुं०) देवालय तथा अट्टालिकाओं पर पताका फहराना।
ध्वजी–(हिं० वि०) ध्वजयुक्त, ध्वजावाला।
ध्वन–(सं० पुं०) शब्द। **ध्वनन**–(सं० पुं०) अव्यक्त शब्द।
ध्वनि–(सं० पुं०) मृदंगादि शब्द, नाद, गुंजन, लय, गूढ़ार्थ आशय। **ध्वनित**–(सं० वि०) शब्द किया हुआ, प्रकट किया हुआ।
ध्वसनि–(सं० पुं०) मेघ, बादल।
ध्वस्त–(सं० वि०) नष्ट-भ्रष्ट।
ध्वाङ्क्ष–(सं० पुं०) काक, कौवा, वगला।
ध्वान–(सं० पुं०) शब्द।
ध्वान्त–(सं० पुं०) अन्धकार, अँधेरा।

न

न–हिन्दी तथा संस्कृत व्यंजन वर्ण का बीसवां वर्ण तथा तवर्ग का पांचवां अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
नंग–(हिं०पुं०) नंगापन; (वि०) नंगा।
नंगधड़ंग–(हिं० वि०) जिसके शरीर पर एक भी वस्त्र न हो। **नंगपैरा**–(हिं० वि०) जिसके पैर में जूता न हो।
नंगर–(हिं० पुं०) देखो लंगर।
नंगा–(हिं० वि०) नग्न, वस्त्रहीन, बिना ढपने का, दुष्ट, निर्लज्ज, एक पर्वत। **नंगाझोरी**, **नंगाझोली**–(हिं० स्त्री०) किसी छिपाई हुई वस्तु का पता लगाने के लिये किसी मनुष्य के वस्त्र को उतरवाकर अथवा वस्त्र को भली भाँति हाथों से टटोलकर देखना। **नंगा-लुच्चा**, **नंगा-बुच्चा**–(हिं० वि०) अति दरिद्र, कंगाल।
नँगियाना–(हिं० क्रि०) नंगा करना।
नंदना–(हिं०स्त्री०) पुत्री, लड़की, बेटी।
नंदोई–(हिं० पुं०) पति का बहनोई।
नंबरदार–(हिं० पुं०) गाँव का वह भूस्वामी जो अपनी पट्टी के तथा हिस्सेदारों का कर आदि लेता हो तथा सरकारी कर जमा करता हो।
नंबरी–(हिं० वि०) जिस पर नंबर या संख्या लिखी हो। **नंबरी गज**–(हिं० पुं०) तीन फुट का गज। **नंबरी सेर**–(हिं० पुं०) अस्सी रुपये की तौल का लोहे का अंग्रेजी सेर।
नंस–(हिं० पुं०) ध्वंस, नाश।
न–(सं० अव्य०) निषेधसूचक शब्द, मत, नहीं, या नहीं, कि नहीं।
नइहर–(हिं० पुं०) स्त्रियों की माता का घर, मायका।
नई–(हिं० वि०) "नया" शब्द का स्त्रीलिङ्ग का रूप।
नउ–(हिं० वि०) नव, नौ, नया।
नउआ–(हिं० पुं०) नापित, नाऊ।
नउका–(हिं० पुं०) देखो नौका, नाव।

नउत–(हिं० वि०) वह जो नीचे की ओर झुका हो।
नउलि–(हिं० वि०) नवीन, नया।
नउरंग–(हिं० स्त्री०) नारंगी।
नउर–(हिं० पुं०) देखो नेवला, नेउर।
नओढ़–(हिं० वि०) देखो नवोढ़ा।
नककटा–(हिं० वि०) जिसकी नाक कटी हो, निर्लज्ज। नककटी–(हिं० स्त्री०) नाक काटने की क्रिया, दुर्दशा। नकघिसनी–(हिं० स्त्री०) अति दीनता।
नकचढ़ा–(हिं० वि०) चिड़चिड़ा।
नकटा–(हिं० पुं०) वह जिसकी नाक कट गई हो।
नकना–(हिं० क्रि०) नाक में दम होना।
नकफूल–(हिं० पुं०) नाक में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।
नकबानी–(हिं० स्त्री०) व्यग्रता, दमा।
नकसा–(हिं० पुं०) मानचित्र।
नकसीर–(हिं० स्त्री०) आप से आप नाक से लहू बहना।
नकाना–(हिं० क्रि०) नाक में दम होना।
नकार–(सं० पुं०) "न" वर्ण स्वरूप।
नकारना–(हिं० क्रि०) अस्वीकार करना।
नकिंचन–(सं० वि०) दरिद्र, कंगाल।
नकियाना–(हिं० क्रि०) नाक से बोलना।
नकुटी–(सं० पुं०) नासिका, नाक।
नकुल–(सं० पुं०) नेवला।
नकुली–(सं० स्त्री०) नेवली, नेवले की मादा।
नकुवा–(हिं० पुं०) नासिका, तराजू की डंडी में का छेद।
नकेल–(हिं० स्त्री०) ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी।
नक्का–(हिं० पुं०) सुई का छेद, नाका, ताश के पत्ते में की एक्की, कौड़ी।
नक्कार–(हिं० पुं०) तिरस्कार, अपमान।
नक्की–(हिं० स्त्री०) ताश के पत्ते की एक्की
नक्कू–(हिं० वि०) बड़ी नाकवाला, सबसे भिन्न आचरणवाला।
नक्त–(सं० पुं०) रात्रि।
नक्तचर–(सं० पुं०) रात को घूमनेवाला, राक्षस, उल्लू। नक्तचारी–बिल्ली, उल्लू, राक्षस।
नक्र–(सं० पुं०) मगर, घड़ियाल।
नक्षत्र–(सं० पुं०) तारों का वह गुच्छा या समूह जो चन्द्रमा के पथ में घूमता है। नक्षत्रपति–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
नक्षत्रराज–(सं० पुं०) नक्षत्रों का अधिपति, चन्द्रमा। नक्षत्रविद्या–(सं० स्त्री०) ज्योतिषविद्या।
नक्षत्रवृष्टि–(सं० पुं०) उल्कापात, तारा टूटना।
नक्षत्री–(हिं० वि०) जो शुभ नक्षत्रों में उत्पन्न हुआ हो।
नख–(सं० पुं०) अँगुली के अगले भाग की कोमलास्थि, कररुह।
नखकर्तनी–(सं० स्त्री०) नाखून काटने की नहरनी।
नखक्षत–(सं० पुं०) नह गड़ाने से बना हुआ चिह्न।
नखत, नखतर–(हिं० पुं०) देखो नक्षत्र।
नखतेस–(हिं० पुं०) चन्द्रमा।
नखतारण–(सं० पुं०) नहरनी।
नखना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना।
नखशिख–(हिं० पुं०) नख से लेकर शिखा तक सब अंग। नखहरणी–(हिं० पुं०) नहरनी।
नखानखि–(सं० अव्य०) परस्पर नख के आघात का युद्ध।

नखास–(अ० पुं०) वह बाजार जिसमें चौपाये और विशेषकर घोड़े बिकते हैं।
नखियाना–(हिं० क्रि०) नह गड़ाना।
नखेद–(हिं० पुं०) निषेध।
नखोटना–(हिं० क्रि०) नख से नोचना।
नग–(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़, पेड़; (वि०) स्थिर, अचल।
नगण्य–(सं०वि०) तुच्छ, घृणा करने योग्य।
नगन–(हिं० वि०) नग्न, नंगा, जिसके शरीर पर वस्त्र न हो। **नगना**–(हिं० स्त्री०) नग्ना, नंगी।
नगपति–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत, शिव, मेरु पर्वत।
नगर–(सं० पुं०) मनुष्यों के रहने की वह बस्ती जो गाँव और कस्बे से बड़ी हो, जिसमें अनेक जातियाँ रहती हों।
नगरनायिका, नगरनारी–(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी। **नगरपति**–(सं० पुं०) नगर का अध्यक्ष।
नगरपाल–(सं० पुं०) नगर-रक्षक, चौकीदार।
नगरप्रान्त–(सं० पुं०) नगर के समीप का स्थान। **नगरवासी**–(सं० वि०) पुरवासी, नागरिक।
नगराई–(हिं० स्त्री०) नागरिकता, चतुराई।
नगराधिप–(सं० पुं०) नगरपालक।
नगाड़ा–(हिं० पुं०) डंका, धौंसा।
नगाधिप–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत।
नगारि–(सं० पुं०) इन्द्र।
नगिचाना–(हिं० क्रि०) समीप आना।
नगी–(हिं० स्त्री०) रत्न, मणि, नगीना।
नगीच–(हिं० क्रि० वि०) पास।
नगेन्द्र, नगेश–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत।
नग्न–(सं० वि०) विवस्त्र, नंगा।
नग्नता–(सं० स्त्री०) नगापन।
नग्ना–(सं० स्त्री०) नंगी स्त्री।
नग्र–(हिं० पुं०) देखो नगर।
नघना–(हिं० क्रि०) लाँघना, पार करना।
नघाना–(हिं० क्रि०) उल्लंघन करना।
नचना–(हिं० क्रि०) नाचना, इधर-उधर घूमना। **नचनिया**–(हिं० वि०) नाचनेवाला। **नचाना**–(हिं० क्रि०) नाचने का काम दूसरे से कराना, किसी वस्तु को इधर-उधर घुमाना।
नचीला–(हिं० वि०) चंचल।
नचेत्–(सं० अव्य०) नहीं तो, ऐसा न हो कि।
नचौंहाँ–(हिं० वि०) सर्वदा इधर-उधर घूमनेवाला।
नछत्र–(हिं० पुं०) देखो नक्षत्र।
नछत्री–(हिं० वि०) प्रभावशाली, भाग्यवान्।
नजराना–(हिं० क्रि०) बुरी दृष्टि का प्रभाव होना या लगाना; (पुं०) भेंट, उपहार।
नजिकाना–(हिं० क्रि०) समीप पहुँचना।
नजीक–(हिं०क्रि०वि०) समीप, पास।
नट–(सं० पुं०) नर्तक, नाट्य करनेवाला।
नटई–(हिं० स्त्री०) गला, गरदन।
नटखट–(हिं० वि०) उपद्रवी, चंचल।
नटखटी–(हिं० स्त्री०) उपद्रव।
नटता–(सं० स्त्री०) नटत्व, नट का भाव, नट का काम।
नटन–(सं० पुं०) नृत्य, नाच।
नटना–(हिं० क्रि०) अस्वीकार करना, कहकर बदल जाना, नाचना, नष्ट करना; (हिं० पुं०) रस छानने की छलनी।
नटनि–(हिं० स्त्री०) नृत्य, नाच, अस्वीकार। **नटनी**–(हिं० स्त्री०) नट की

स्त्री । नटवना-(हि० क्रि०) अभिनय करना, नाटक दिखलाना । नटवर-(सं० पुं०) नाट्य कला में बहुत चतुर मनुष्य; (वि०) बहुत चतुर या चालाक ।
नटसार-(हिं० स्त्री०) नाट्यशाला ।
नटिन-(हिं० स्त्री०) नट की स्त्री ।
नटी-(सं० स्त्री०) नट जाति की स्त्री, नाचनेवाली स्त्री, अभिनय करनेवाली स्त्री ।
नठना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना या होना ।
नढ़ना-(हिं०क्रि०) बाँधना, पिरोना, गूँथना ।
नतम-(हिं० वि०) बाँका ।
नतर, नतरु-(हिं० क्रि० वि०) अन्यथा, नहीं तो ।
नतांश-(सं० पुं०) वह वृत्त जिसका केन्द्र भूकेन्द्र पर रहता है और जो विषुवत् रेखा पर लम्ब होता है ।
नति-(सं० स्त्री०) झुकाव, नमन, नमस्कार, विनती ।
नतिनी-(हिं० स्त्री०) लड़की की लड़की ।
नतु-(सं० अव्य०) अन्यथा, नहीं तो ।
नतैत-(हिं० पुं०) सम्बन्धी, नातेदार ।
नत्थ-(हिं० स्त्री०) देखो नथ, नथिया ।
नत्थी-(हिं० स्त्री०) कागज, कपड़े आदि के टुकड़ों की एक साथ सिली हुई गड्डी, इस प्रकार नथे हुए पत्र ।
नथ-(हिं० स्त्री०) बाली की तरह का एक आभूषण जिसको स्त्रियाँ नाक में पहिनती हैं। नथना-(हिं० पुं०) नाक का अग्रभाग, नाक का छेद ।
नद-(सं० क्रि०) स्तुति करना, पूजा करना; (पुं०) बड़ी नदी ।
नदना-(हिं० क्रि०) रँभाना ।
नदर-(सं० वि०) भयशून्य, निडर ।
नदराज-(सं० पुं०) समुद्र, सागर ।
नदि-(सं० पुं०) स्तुति, प्रशंसा ।
नदी-(सं० स्त्री०) किसी पर्वत या जलाशय से निकलकर बहनेवाला जल का बड़ा प्राकृतिक प्रवाह जो वर्ष भर होता रहता है । नदीपति-(सं० पुं०) समुद्र ।
नन्दन-(सं० पुं०) इन्द्र का बगीचा जो स्वर्ग में है; (पुं०) बेटा, लड़का; (वि०) आनन्द देनेवाला ।
नन्दरानी-(हिं० स्त्री०) नन्द की स्त्री, यशोदा । नन्दलाल-(हिं० पुं०) नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण ।
नन्दित-(सं० वि०) आनन्दित, प्रसन्न ।
नन्दिनी-(सं० स्त्री०) गंगा, ननद, कन्या, पुत्री ।
नन्योरा-(हिं० पुं०) ननिहाल, नाना का घर ।
नन्हा-(हिं० वि०) छोटा । नन्हाई-(हिं० स्त्री०) छोटाई, अप्रतिष्ठा ।
नपाई-(हिं० स्त्री०) नापने का काम या शुल्क ।
नपुंसक-(सं० पुं०) क्लीब, हिजड़ा; (वि०) कायर, डरपोक । नपुंसकता-(सं० स्त्री०) नपुंसक होने का भाव ।
नपुआ-(हिं० पुं०) नापने की वस्तु ।
नपुत्री-(हिं० वि०) देखो निपुत्री ।
नप्ता-(हिं० स्त्री०) लड़की या लड़के का लड़का, नाती या पोता ।
नप्त्री-(सं० स्त्री०) पोती, नातिन ।
नबेड़ना-(हिं० क्रि०) झगड़ा तय करना, समाप्त करना ।
नबेड़ा-(हिं० पुं०) न्याय, निपटारा ।
नब्बे-(हिं० वि०) जो गिनती में अस्सी और दस के बराबर हो; (पुं०) यह संख्या ९० ।
नभ-(सं० पुं०) आकाश, शून्य स्थान ।
नभःकेतन, नभःपन्थ-(सं० पुं०)

सूर्य। **नभःप्राण**–(सं० पुं०) पवन। **नभःसद**–(सं० पुं०) देवता, पक्षी। **नभग**–(सं० पुं०) पक्षी, पवन, मेघ; (वि०) आकाश में विचरनेवाला, अभागा। **नभगामी**–(हिं० पुं०) सूर्य, तारा, देवता, चन्द्रमा। **नभश्चर**–(सं० वि०) गगनचारी।
नभस्थल–(हिं० पुं०) आकाश। **नभस्थित**–(हिं० वि०) नभःस्थित।
नभीत–(सं० वि०) भयरहित, निडर।
नभोमणि–(सं० पुं०) सूर्य। **नभोमण्डल**–(सं० पुं०) गगनमण्डल।
नमन–(सं० पुं०) प्रणाम, नमस्कार, झुकाव। **नमना**–(हिं० क्रि०) झुकना, नमस्कार करना। **नमनीय** (सं०वि०) झुकने या झुकाने योग्य, नमस्कार करने योग्य, आदरणीय।
नमस्कार–(सं० पुं०) प्रणाम, झुककर अभिवादन करने की क्रिया। **नमस्ते**–(सं०) एक वाक्य जिसका अर्थ है—आपको नमस्कार।
नमित–(हिं० वि०) झुका हुआ।
नमाना–(हिं० क्रि०) झुकाना।
नमुचि–(सं० पुं०) कन्दर्प।
नम्य–(सं० वि०) झुकने योग्य।
नम्र–(सं० वि०) झुका हुआ, विनीत। **नम्रता**–(सं० स्त्री०) विनय; **नम्रत्व**–(सं० पुं०) नम्रता। **नम्रप्रकृति**–(सं० वि०) विनीत स्वभाव का।
नय–(सं० पुं०) नीति, न्याय, नम्रता।
नयकारी–(हिं० पुं०) नाचनेवाला मनुष्य, नचनियाँ।
नयन–(सं० पुं०) चक्षु, नेत्र, आँख। **नयनगोचर**–(सं० वि०) समक्ष, देख पड़नेवाला, जो आँख के सामने हो। **नयनपट**–(सं० पुं०) आँख की पलक। **नयनपथ**–(सं० पुं०) जितनी दूरी तक दृष्टि जा सके। **नयनपुट**–(सं० पुं०) आँख की पलक।
नयनवारि, **नयनसलिल**–(सं० पुं०) नेत्रजल, आँसू।
नयना–(हिं० क्रि०) लटकना, झुकना; (पुं०) नयन, आँख। **नयनागर**–(सं० वि०) नीतिकुशल। **नयनाञ्जन**–(सं० पुं०) काजल, सुरमा। **नयनाभिराम**–(सं० वि०) आँखों को प्रिय लगनेवाला, सुन्दर।
नयनी–(सं० स्त्री०) आँख की पुतली।
नयनू–(हिं० पुं०) मक्खन, एक प्रकार की मलमल जिस पर सफेद बूटियाँ बनी होती हैं।
नयर–(हिं० पुं०) देखो नगर।
नयवर्त्म–(सं० पुं०) नीति-मार्ग।
नया–(हिं० वि०) नूतन, नवीन। **नयापन**–(हिं० पुं०) नया होने का भाव, नवीनता।
नर–(सं० पुं०) पुरुष, परमात्मा, विष्णु; (हिं० पुं०) पानी का कल, नरकट।
नरकंत–(हिं० पुं०) राजा, नृप।
नरक–(सं० पुं०) हिन्दू धर्मशास्त्र तथा पुराणों के अनुसार वह स्थान जहाँ जाकर मनुष्य की आत्मा को अपने किये हुये पाप का फल भोगना पड़ता है। **नरककुण्ड**–(सं० पुं०) पापियों के कष्ट भोगने का एक स्थान।
नरकचतुर्दशी–(सं० स्त्री०) कार्तिक बदी चौदस। **नरकट**–(हिं० पुं०) बेंत की तरह का एक पौधा। **नरकपाल**–(सं० पुं०) मृतक की खोपड़ी।
नरकल, **नरकस**–(हिं०पुं०) देखो नरकट।
नरकुल–(हिं० पुं०) देखो नरकट।
नरकेहरि–(हिं० पुं०) नरसिंह।

नरता–(सं० स्त्री०) मनुष्यत्व ।
नरतात–(सं० पुं०) नृपति, राजा ।
नरत्व–(सं० पुं०) मनुष्यत्व ।
नरदान–(हिं०स्त्री०)नाद करना, गरजना।
नरदारा–(सं० पुं०) नपुंसक, हिजड़ा ।
नरदेव–(सं०पुं०)नृपति, राजा, ब्राह्मण ।
नरद्विव–(सं० पुं०) राक्षस, असुर ।
नरनाथ, नरनायक–(सं० पुं०) नृपति, राजा ।
नरनारायण–(सं० पुं०) नर और नारायण नाम के दो ऋषि ।
नरनाह–(हिं० पुं०) नृप, राजा ।
नरनाहर–(हिं० पुं०) नृसिंह भगवान् ।
नरपति–(सं० पुं०) नृपति, राजा ।
नरपद–(सं० पुं०) नगर, देश ।
नरपशु–(सं० पुं०) जिस मनुष्य का आचरण पशु के सदृश हो ।
नरपाल–(सं० पुं०) राजा ।
नरपिशाच–(सं० पुं०) अति दुष्ट, नीच मनुष्य ।
नरपुङ्गव–(सं० पुं०) मनुष्यों में श्रेष्ठ ।
नरपुर–(सं० पुं०) भूलोक, मनुष्यलोक ।
नरबलि–(सं० पुं०) देवता की वह पूजा जिसमें नर की हत्या की जाती है; नरमेध ।
नरभक्षी–(सं० पुं०)दैत्य, दानव, राक्षस ।
नरम–(हिं० वि०) कोमल, लचीला, मृदु । नरमाई–(हिं०स्त्री०) कोमलता । नरमाना–(हिं० क्रि०) कोमल करना, शान्त करना ।
नरमेध–(सं० पुं०) देखो नरबलि ।
नरयान–(सं०पुं०) मनुष्य से खींची जानेवाली सवारी या गाड़ी ।
नरराज–(सं० पुं०) नरश्रेष्ठ । नररूप–(सं०वि०)मनुष्य के समान आकृति का ।
नरव्याघ्र–(सं० पुं०) मनुष्यों में श्रेष्ठ ।
नरसल–(हिं० पुं०) देखो नरकट ।
नरसिंगा–(हिं० पुं०) देखो नरसिंघा ।
नरसिंघ–(हिं० पुं०) देखो नरसिंह ।
नरसिंघा–(हिं० पुं०) मुख से फूँककर बजाया जानेवाला एक बाजा ।
नरसों–(हिं० क्रि० वि०)परसों से पहिले या बाद का दिन ।
नरहर–(हिं० स्त्री०) पैर की पिंडली के ऊपर की हड्डी ।
नराच–(हिं० पुं०) नाराच, तीर, बाण ।
नराट–(हिं० पुं०) नृपति, राजा ।
नराधम–(सं० पुं०) नीच मनुष्य ।
नराधिप–(सं० पुं०) राजा ।
नरियर–(हिं० पुं०) देखो नारियल ।
नरिया–(हिं० पुं०) अर्धवृत्ताकार मिट्टी का खपड़ा । नरियाना–(हिं० क्रि०) चिल्लाना ।
नरेन्द्र–(सं० पुं०) नरेश, राजा ।
नरेश–(सं० पुं०) नरेन्द्र, राजा, नृप ।
नरोत्तम–(सं० पुं०) मनुष्यों में श्रेष्ठ ।
नर्क–(हिं० पुं०) देखो नरक ।
नर्कट–(हिं० पुं०) देखो नरकट ।
नर्त, नर्तक–(सं० पुं०) नट, नाचनेवाला, बन्दीजन ।
नर्तन–(सं० पुं०) नृत्य, नाच ।
नर्तना–(हिं० क्रि०) नाचना ।
नर्मद–(सं० वि०) आनन्द लेनेवाला; (पुं०) ठिठोलिया, भाँड़ ।
नर्मसचिव–(सं० पुं०) विदूषक ।
नल–(सं० पुं०) पद्म, कमल, नरकट; (हिं० पुं०) कोई लंबी पोली वस्तु, धातु की बनी हुई पोली वस्तु, परनाली, शरीर में की मूत्र निकालने की नाली ।
नलवा–(हिं० पुं०) गाय, बैल को दवा पिलाने की बाँस की ढरकी ।
नलाना–(हिं० स्त्री०) बोने के खेत से

निरर्थक घास आदि दूर करना, निराना।
नलिका–(सं०स्त्री०)जल बहने की नाली, नली के आकार की कोई वस्तु, चोंगा, तीर रखने का तरकस। **नलिकायन्त्र**–(सं० पुं०) नली के आकार का जलोदर का पानी निकालने का एक प्राचीन यन्त्र।
नलिन–(सं० पुं०) पद्म, कमल, पानी, नील।
नलिनी–(सं० स्त्री०) कमलिनी।
नलिनीरुह–(सं० पुं०) कमल की नाल।
नली–(हिं० स्त्री०) छोटी पतली नली, चोंगा, नल के आकार की हड्डी, बन्दूक की नली जिसमें से गोली छूटती है, पिंडली।
नलुआ–(हिं० पुं०) बाँस का पोर, छोटी नली।
नव–(सं० पुं०) स्तोत्र; (वि०) नवीन, नूतन, नया; (हिं०वि०)दस से एक कम की संख्या का; (पुं०)आठ और एक की संख्या ९।
नवका–(हिं० स्त्री०) देखो नौका।
नवछात्र–(सं० पुं०) नवीन विद्यार्थी।
नवछावरि–(हिं०स्त्री०)देखो न्यौछावर।
नवत–(हिं०वि०)नबीन, नया। **नवता**–(हिं० पुं०) ढालुआँ भूमि, नयापन; (सं० स्त्री०) चित्रकार की रंग भरने की कूँची।
नवदल–(सं० पुं०) नया पत्ता।
नवद्वीप–(सं० पुं०) बंगाल के नदिया नामक नगर का प्राचीन नाम।
नवधा–(सं० अव्य०)नवगुणा, नव बार। **नवधाभक्ति**–(सं० स्त्री०) नव प्रकार की भक्ति, यथा श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।
नवन–(हिं० पुं०) देखो नमन।
नवना–(हिं० क्रि०) झुकना, नम्र होना। **नवनि**–(हिं० स्त्री०) विनीत भाव, दीनता, नम्रता।
नवनी, नवनीत–(सं०स्त्री०पुं०) मक्खन।
नवपदी–(सं० स्त्री०) चौपाई या जनकरी छन्द।
नवम–(सं० वि०) जो गिनती में नव के स्थान में हो, नवाँ।
नवमल्लिका–(सं० स्त्री०) चमेली या नेवारी का फूल।
नवमी–(सं० स्त्री०) चान्द्रमास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।
नवयुवक, नवयुवा–(सं० पुं०) तरुण, युवक। **नवयौवन**–(सं० पुं०) तरुण अवस्था, जवानी।
नवरंग–(हिं० वि०) रूपवान्, सुन्दर, नये ढंग का। **नवरंगी**–(हिं० वि०) प्रति दिन नया आनन्द लेनेवाला; (हिं० स्त्री०) देखो नारंगी।
नवरत्न–(सं० पुं०) नौ प्रकार के रत्न।
नवरस–(सं० पुं०) शृङ्गार आदि काव्य के प्रधान नौ रस।
नवरात्र–(सं० पुं०) आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक के नौ दिन, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त नौ दिन।
नवल–(सं० पुं०) नवीन, नया, सुन्दर।
नवलता–(हिं० स्त्री०) नयापन।
नववधू–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका विवाह हाल में हुआ हो।
नववर्ष–(सं० पुं०) नया वर्ष, नई वर्षा।
नववस्त्र–(सं० पुं०) नया वस्त्र।
नवविध–(सं० वि०) नव प्रकार का।
नवशस्य–(सं० पुं०) नया अन्न।

नवशिक्षित–(सं० वि०) नवसिखुआ, आधुनिक रीति की शिक्षा प्राप्त किया हुआ।
नवसप्त–(सं० पुं०) नव और सात अर्थात् सोलह श्रृङ्गार।
नवसर–(हिं० पुं०) नव लड़ी का हार।
नवससि–(हिं०पुं०) द्वितीया का चन्द्रमा।
नवसिखा–(हिं० पुं०) नव शिक्षित।
नवाँ–(हिं० वि०) आठवें के बाद तथा दसवें के पहिले का, नौवाँ।
नवाई–(हिं०स्त्री०) विनीत होने का भाव।
नवागत–(सं०वि०) नया आया हुआ।
नवाजना–(हिं०क्रि०) दया दिखलाना।
नवाना–(हिं० क्रि०) विनीत करना, झुकाना।
नवान्न–(सं० पुं०) नया अन्न।
नवासी–(हिं०वि०) अस्सी और नव की संख्या का; (पुं०) अस्सी और नव की संख्या ८९।
नवाह–(सं० पुं०) नव दिन।
नवि–(हिं०स्त्री०) गाय को दूहते समय बछड़े का गला बाँधने की रस्सी।
नवीन–(सं० वि०) नूतन, नया, विचित्र, तरुण।
नवीनता–(हिं० स्त्री०) नयापन।
नवेद–(हिं० स्त्री०) निमन्त्रण, न्यौता।
नवेला–(हिं०वि०) नवीन, नया, तरुण।
नवोढ़ा–(सं०स्त्री०) नव विवाहिता स्त्री।
नवोदक–(सं० पुं०) नया पानी।
नवोद्‌धृत–(सं० वि०) तुरंत निकाला हुआ; (पुं०) नवनीत, मक्खन।
नव्य–(सं० वि०) नूतन, नवीन, नया।
नशना–(हिं० क्रि०) नाश होना।
नशाना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना।
नशावन–(हिं० वि०) नष्ट करनेवाला।
नशोहर–(हिं०वि०) नाश करनेवाला।
नश्वर–(सं० वि०) नष्ट होनेवाला।
नश्वरता–(सं० स्त्री०) नाश।
नष्ट–(सं०वि०) जो देख न पड़े, अधम, नीच, पामर, निष्फल, व्यर्थ, जिसका नाश हो गया हो। **नष्टचित्त**–(सं०वि०) उन्मत्त, मतवाला। **नष्टचेष्ट**–(सं० वि०) जिसमें हिलने-डोलने की शक्ति न रह गई हो। **नष्टजन्मा**–(सं० पुं०) वर्णसंकर, दोगला। **नष्टता**–(सं० स्त्री०) नाश। **नष्टदृष्टि**–(सं० वि०) दृष्टिहीन, अन्धा। **नष्टबुद्धि**–(सं०वि०) बुद्धिहीन, मूढ़, मूर्ख। **नष्ट-भ्रष्ट**–(सं० वि०) जो बिलकुल नष्ट हो गया हो अथवा टूट-फूट गया हो।
नष्टाग्नि–(सं० पुं०) वह अग्निहोत्री जिसकी अग्नि बुझ गई हो। **नष्टात्मा**–(सं० वि०) दुष्ट, खल। **नष्टार्थ**–(सं० वि०) निर्धन, दरिद्र।
नसंक–(हिं० वि०) निःशंक, निर्भय।
नस–(हिं० स्त्री०) शरीर के भीतर के तन्तुओं का वह लच्छा जो पेशियों के छोर पर रहता है और दूसरी पेशियों की अथवा हड्डी आदि को बाँधे रहता है, रक्तवाहिनी नली, पत्ते के बीच का तन्तु।
नसकटा–(हिं० पुं०) नपुंसक, हिंजड़ा।
नसना–(हिं० क्रि०) नष्ट होना।
नसहा–(हिं० वि०) जिसमें नस हों।
नसाना, नसावना–(हिं० क्रि०) नष्ट होना।
नसीठ–(हिं०पुं०) अपशकुन, असगुन।
नसीनी–(हिं० स्त्री०) निसेनी, सीढ़ी।
नसीबा–(हिं० पुं०) भाग्य।
नसीला–(हिं० वि०) नसदार।
नसूढ़िया–(हिं० वि०) जिसके दर्शन मात्र से हानि या दोष हो।
नसेनी–(हिं० स्त्री०) सीढ़ी।

नस्य–(सं० पुं०) सुंघनी। नस्यधानी–(सं०स्त्री०)सुंघनी रखने की डिबिया।
नस्वर–(हिं० वि०) देखो नश्वर।
नहँ–(हिं० पुं०) नख।
नहन–(हिं० पुं०) पुरवट खींचने की मोटी रस्सी, नार।
नहना–(हिं० क्रि०) काम में लगाना।
नहरनी–(हिं०स्त्री०)नख काटने का यन्त्र।
नहला–(हिं० पुं०) ताश का वह पत्ता जिसमें नौ बूटियाँ रहती हैं।
नहलाई–(हिं० स्त्री०) नहलाने की क्रिया या भाव, नहलाने के बदले में दिया जानेवाला धन। नहलाना, नहलवाना–(हिं० क्रि०) स्नान कराना।
नहा–(हिं०पुं०)पहिये के बीच का छिद्र।
नहान–(हिं० पुं०) नहाने की क्रिया, स्नान का पर्व। नहाना–(हिं०क्रि०) स्नान करना।
नहि–(सं० अव्य०) कभी नहीं। नहीं–(हि० अव्य०) निषेध या अस्वीकृति-सूचक अव्यय। नहीं तो–इस बात के न होने पर। नहीं सही–कुछ चिन्ता नहीं।
नाउँ–(हिं० पुं०) देखो नाम।
नाँगा–(हिं० वि०) देखो नंगा।
नाँघना–(हिं० क्रि०) उछलकर एक पार से दूसरे पार जाना।
नाँठना–(हिं० क्रि०) नष्ट होना।
नाँद–(हिं० स्त्री०) चौड़े मुंह का मिट्टी का बड़ा पात्र।
नाँदना–(हिं० क्रि०) शब्द करना, आनन्दित होना।
नाँयँ–(हिं०पुं०)देखो नाम; (अव्य०)नहीं।
नाँवँ–(हिं० पुं०) देखो नाम।
नाह–(सं०पुं०) नाथ, स्वामी, मालिक।
ना–(सं० अव्य०) अस्वीकृति या निषेध-सूचक शब्द, न, नहीं।
नाइक–(हिं० पुं०) देखो नायक।
नाइन–(हिं० स्त्री०) नाई की स्त्री।
नाईं–(हिं० स्त्री०) समान दशा या स्थिति; (वि०) तुल्य, सदृश, समान।
नाई–(हिं० पुं०) नापित, नाऊ।
नाउन–(हिं० स्त्री०) देखो नाइन।
नाऊ–(हिं० पुं०) नाई, नापित।
नाक–(सं० पुं०) स्वर्ग, आकाश, किसी अस्त्र का एक आघात; (हिं० पुं०) नास, नासिका, नाक से निकलनेवाला मल, शोभा की वस्तु, मान, प्रतिष्ठा मगर की जाति का एक जन्तु।
नाकचर–(सं० पुं०) आकाश में भ्रमण करनेवाले ग्रह, देवता आदि।
नाकड़ा–(हिं० पुं०) नाक का एक रोग जिसमें नाक के छिद्र के भीतर फोड़ा हो जाता है।
नाकना–(हिं० क्रि०) उल्लंघन करना।
नाका–(हिं० पुं०) प्रदेश, नगर अथवा गढ़ का फाटक, एक अस्त्र, सूई का छेद, वह प्रधान स्थान जहाँ निरीक्षण करने के लिये अथवा कर लेने के लिये सिपाही नियुक्त रहते हैं।
नाकाबन्दी–(हिं० स्त्री०) जाने-आने के मार्ग का छेंका जाना, चौकीदार, पहरेदार।
नाकेदार–(हिं० पुं०) फाटक पर रहनेवाला सिपाही; (वि०) जिसमें नाका या छेद हो।
नाखना–(हिं० क्रि०) बिगाड़ना, गिराना।
नाग–(सं० पुं०) सीसा, सर्प, हाथी।
नागदन्त, नागदन्तक–(सं० पुं०) हाथी-दाँत, भीत में लगान की खूंटी। नागधर–(सं० पुं०) शिव, महादेव। नागनग–(हिं०) गजमुक्ता; (सं०पुं०) नागों

का अधिपति। **नागपंचमी**–श्रावण शुक्ल पंचमी। **नागपत्र**–(सं० पुं०) पान का पत्ता।

नागमती–(सं० स्त्री०) काली तुलसी।

नागयष्टि–(सं०स्त्री०) तालाव के बीचो-बीच खड़ा किया हुआ खम्भा।

नागर–(सं०वि०) नगर सम्बन्धी, नगर में रहनेवाला। **नागरता**–(सं० स्त्री०) नगर की रीति और व्यवहार।

नागरबेल–(हि० स्त्री०) ताम्बूल।

नागराज–(सं० पुं०) शेषनाग, ऐरावत।

नागरिक–(सं० वि०) नगर संबंधी; नगरनिवासी, चतुर, सभ्य। **नागरिकता**–(सं० स्त्री०) नगर के अधिकारों से युक्त होने की अवस्था। **नागरी**–(सं० स्त्री०) स्त्री, भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी लिखी जाती है, देवनागरी।

नागलोक–(सं०पुं०) पाताल।

नागवल्लरी, नागवल्लिका–(सं० स्त्री०) पान की लता।

नागवारिक–(सं० पुं०) हस्तिपालक, महावत।

नागा–(हि० पुं०) शैव सम्प्रदाय के वे साधु जो वस्त्र धारण नहीं करते, एकदम नंगे रहते हैं।

नागिन–(हि० स्त्री०) मादा सर्प।

नागेन्द्र, नागेश्वर–(सं० पुं०) ऐरावत, शेषनाग, बड़ा हाथी, बड़ा सर्प।

नागोद–(सं० पुं०) छाती पर पहिनने का लोहे का कवच।

नाच–(हि०पुं०) अंगों की वह गति जो चित्त की उमंग के कारण उत्पन्न हो, नाट्य, खेल, क्रीड़ा, काम-धंधा। **नाचकूद**–(हिं० स्त्री०) प्रयत्न, आयोजन। **नाचघर**–(हि०पुं०) नृत्यशाला।

नाचना–(हि० क्रि०) कूदना तथा अंगों में तरह-तरह की आकृति बनाना; चक्कर मारना, इधर-उधर घूमना, स्थिर न रहना, काँपना, थर्राना।

नाचरंग–(हि० पुं०) आमोद-प्रमोद।

नाचार–(हि०वि०) असहाय, व्यर्थ, तुच्छ।

नाज–(हि० पुं०) अन्न, अनाज।

नाट–(सं० पुं०) नृत्य, नाच।

नाटक–(सं० वि०) नर्तक, नट, नाट्य पर अभिनय करनेवाला; (पुं०) रंगशाला में नटों के हाव-भाव, वेष, वचन आदि द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन।

नाटकीय–(सं०वि०) नाटक सम्बन्धी।

नाटना–(हि० क्रि०) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहना।

नाटा–(सं० वि०) छोटे डील-डौल का; (पुं०) छोटा बैल।

नाटित–(सं० वि०) जिसका अभिनय हुआ हो।

नाट्यकार–(सं०पुं०) नाटक करनेवाला, नट। **नाट्यशाला**–(सं० स्त्री०) नाटक-घर।

नाठ–(हि० पुं०) नाश, ध्वंस, हानि।

नाठना–(हि० क्रि०) नष्ट करना या होना। **नाठा**–(हि० पुं०) वह जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

नाड़–(हि० स्त्री०) ग्रीवा, गरदन।

नाड़ा–(हि० पुं०) सूत की मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाघरा या धोती बाँधती हैं, नीवी, विना बटा हुआ (कच्चा) सूत।

नाड़ि–(सं० स्त्री०) देखो नाड़ी।

नाड़िया–(हि० पुं०) चिकित्सक, वैद्य।

नाड़ी–(सं० स्त्री०) देहस्थित शिरा, रक्तवाहिनी नालियाँ।

नाड़ीमण्डल–(सं० पुं०) विषुवत रेखा।

नात–(हिं० पुं०) नातेदार, सम्बन्धी, सम्बन्ध, नाता।
नातरु–(हिं० अव्य०) अन्यथा, नहीं तो।
नाता–(हिं० पुं०) ज्ञाति सम्बन्ध, कुटुम्ब की घनिष्ठता, सम्बन्ध, लगाव।
नातिदीर्घ–(सं० वि०) जो अधिक लंबा न हो।
नातिन–(हिं०स्त्री०)लड़की की लड़की।
नात्युष्ण–(सं० वि०) गुनगुना।
नाती–(हिं० पुं०) बेटी का बेटा।
नाते–(हिं० क्रि०वि०)सम्बन्ध से, वास्ते, लिये। **नातेदार**–(हिं० वि०) संबंधी।
नाथ–(सं० पुं०) अधिपति, प्रभु, स्वामी, पति, भैंसे आदि की नाक छेदकर उसमें बँधी हुई रस्सी; (स्त्री०) लड़ी के रूप में जोड़ने की क्रिया, नत्थी। **नाथत्व**–(सं० पुं०) प्रभुता, प्रभुत्व।
नाथना–(हिं०क्रि०) बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उसमें रस्सी डालना, नकेल लगाना, नत्थी करना।
नाद–(सं० पुं०) शब्द, अनुस्वार के समान उच्चारित होनेवाला वर्ण, अर्धचन्द्र। **नादना**–(हिं० क्रि०) शब्द करना, बजना, चिल्लाना, गरजना।
नादविद्या–(सं० स्त्री०) संगीत शास्त्र।
नादित–(सं० वि०) बजता हुआ।
नादी–(हिं० वि०) शब्द करनेवाला, बजनेवाला।
नाधना–(हिं० स्त्री०) बैल या घोड़े को जोतना, जोड़ना, सम्बन्ध करना, गूँथना, आरम्भ करना।
नानकीन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मटमैले रंग का सूती कपड़ा।
नानस–(हिं० स्त्री०) सास की माता।
नानसारा–(हिं० पुं०) पति या स्त्री की नानी।

नाना–(सं० अव्य०) अनेक प्रकार के; बहुत तरह के, अनेक, बहुत; (हिं० पुं०) माता का पिता, मातामह, माँ का बाप।
नानाप्रकार–(सं०वि०) बहुविधि, अनेक प्रकार से। **नानारूप**–(सं० पुं०) विविध प्रकार की आकृति। **नानार्थ**–(सं० वि०) वह शब्द जिसके एक से अधिक अर्थ हों। **नानावर्ण**–(सं० वि०) जिसमें कई एक रंग हों। **नानाविध**–(सं० वि०)अनेक प्रकार या तरह से।
नानाशब्द-संग्रह–(सं० पुं०) अनेक शब्दों का संग्रह, शब्द-कोष।
नानिहाल–(हिं० पुं०) नाना नानी के रहने का घर। **नानी**–(हिं० स्त्री०) माता की माता, मातामही।
नानुकर–(हिं० पुं०) अस्वीकार, नहीं।
नान्दी–(सं०स्त्री०)नाटक का मंगलाचरण
नान्ह–(हिं०वि०)छोटा, महीन, पतला।
नान्हा–(हिं० वि०) नन्हा, छोटा।
नाप–(हिं० स्त्री०) परिमाण, माप, किसी निर्दिष्ट लंबाई को एक मानकर यह स्थिर करना कि अमुक वस्तु का विस्तार कितना है, मानदण्ड। **नाप-जोख**–(हिं० स्त्री०) नापने या तौलने की क्रिया, परिमाण या तौल जो नाप-कर तौलकर स्थिर की जावे। **नापतौल**–(हिं० स्त्री०) नाप जोख। **नापना**–(हिं० क्रि०) अनुमान करना, पता लगाना, मापना।
नापित–(सं० पुं०) नाई, नाऊ।
नाभ–(हिं० स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी।
नाभि–(सं० पुं०) पहिये का बिचला भाग; (स्त्री०) ढोंढ़ी, धुन्नी, तुण्डी।
नाभिच्छेदन–(सं० पुं०) नवजात शिशु की नाल काटने की क्रिया।

नाभी–(सं० स्त्री०) देखो नाभि।
नाम–(सं० अव्य०) संभावना, क्रोध, विस्मय, स्मरण, विकल्प आदि अर्थ में प्रयुक्त होता है, विभक्तिहीन शब्द; (हिं० पुं०) वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु या समूह का बोध हो, संज्ञा, प्रसिद्धि।
नामक–(सं०वि०) नाम से प्रसिद्ध, नाम धारण करनेवाला।
नामकरण–(सं० पुं०) एक संस्कार जिसमें बालक का नाम रक्खा जाता है, नाम रखने का काम। **नामकीर्तन**–(सं० पुं०) भगवत् का भजन। **नामग्राम**–(सं० पुं०) नाम और पता। **नामधराई**–(हिं० स्त्री०) अपकीर्ति, निन्दा। **नामधाम**–(हिं० पुं०) पता-ठिकाना। **नामधारी**–(हिं० वि०) नामवाला, नामक। **नामधेय**–(सं० पुं०) नाम का, नामवाला।
नामरूप–(सं० पुं०) जिसका केवल नाम मात्र अस्तित्व ज्ञात हो।
नामलेवा–(हिं० पुं०) उत्तराधिकारी, सन्तति, नाम लेनेवाला।
नामशेष–(सं०वि०) जिसका केवल नाम-मात्र बच गया हो।
नामा–(सं०वि०) नामधारी, नामवाला।
नामावली–(सं० स्त्री०) नामों की सूची।
नामिक–(सं० वि०) नाम सम्बन्धी।
नामित–(सं० वि०) झुकाया हुआ।
नामी–(हिं०वि०) नामवाला, नामधारी।
नायँ–(हिं० पुं०) देखो नाम; (अव्य०) नहीं
नाय–(सं० पुं०) नय, नीति, युक्ति।
नायक–(सं० पुं०) नेता, अगुवा, श्रेष्ठ पुरुष, सुमिरनी, सेनापति, वह प्रधान पुरुष जिसका चरित्र किसी नाटक या काव्य में वर्णन किया जावे। **नायका**–(हिं०स्त्री०) वेश्या की माँ, कुटनी, दूती।
नायन–(हिं० स्त्री०) नापित की स्त्री।
नायर–(हिं० पुं०) बड़ी नाव।
नायिका–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके चरित्र का वर्णन किसी क़ाव्य या नाटक में किया गया हो।
नार–(हिं०स्त्री०) गरदन, गला, नाला, मोटा रस्सा।
नारकी–(सं०वि०) नरकभोगी, पातकी।
नारङ्गी–(हिं०स्त्री०) नीबू की जाति का एक वृक्ष जिसमें मीठे रसदार सुगंधित फल लगते हैं, नारङ्गी के छिलके के समान पीलापन लिये हुए लाल रंग; (वि०) ऐसे रंग का।
नारना–(हिं० क्रि०) थाह लेना, पता लगाना।
नारा–(हिं० पुं०) सूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ घाघरा बाँधती हैं, नीवी, बरसाती पानी बहने की नाली, लाल या पीला रँगा हुआ सूत जो देवताओं को चढ़ाया जाता है, मौली।
नाराच–(सं० पुं०) लोहे का बना हुआ बाण, दुर्दिन।
नारायण–(सं० पुं०) परमात्मा, विष्णु।
नारायणी–(सं० स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी, गंगा, सतावर।
नारि–(हिं० स्त्री०) देखो नारी।
नारिकेर, नारिकेल–(सं०पुं०) नारियल।
नारियल–(हिं० पुं०) खजूर की जाति का एक वृक्ष जो खम्भे की तरह पचास-साठ गज ऊँचा होता है, नारियल के फल का बना हुआ हुक्का।
नारियली–(हिं० स्त्री०) नारियल की खोपड़ी।
नारी–(सं० स्त्री०) अबला, वामा, स्त्री,

देखो नाड़ी, नाली।
नारीयान–(सं०पुं०) स्त्रियों की सवारी।
नारू–(हिं० पुं०) जूँ, ढील।
नाल–(सं०पुं०) कमलदण्ड, गर्भस्थ बालक की नाभि से मिली हुई मज्जातन्तु की बनी हुई रक्त की नली।
नालकी–(हिं० स्त्री०) धन्वाकार छाजन की दोनों ओर से खुली हुई पालकी।
नाला–(हिं० पुं०) वर्षा का जल बहने की चौड़ी नाली।
नाली–(सं०स्त्री०) नाड़ी, धमनी; (हिं० स्त्री०) मोरी, पनाला, चौपायों को दवा पिलाने का ढरका।
नालौट–(हिं० वि०) अपनी प्रतिज्ञा भंग करनेवाला।
नावँ–(हिं० पुं०) देखो नाम।
नाव–(हिं० स्त्री०) जल के ऊपर तैरनेवाली लोहे या लकड़ी आदि की बनी हुई सवारी, जलयान।
नावक–(हिं०पुं०) मल्लाह, माँझी, केवट। **नावघाट**–(हिं० पुं०) नावों के ठहरने का घाट।
नावना–(हिं० क्रि०) झुकना, नवाना, झुकाना, गिराना, डालना।
नावर–(हिं० पुं०) नाव, नौका।
नाविक–(सं० पुं०) कर्णधार, माँझी।
नाश–(सं०पुं०) ध्वंस, अदर्शन, पलायन। **नाशक**–(सं० वि०) ध्वंसक, नाश करनेवाला, वध करनेवाला।
नाशपाती–(सं० स्त्री०) एक मझोले आकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ अमरूद के पत्तों के समान होती हैं इसका गोल फल कुरकुरा और खटमीठा होता है।
नाशवान्–(सं० वि०) नश्वर, अनित्य।
नाशित–(सं० वि०) नाश किया हुआ।
नाशी–(सं० वि०) नाश होनेवाला, नष्ट होनेवाला।
नास–(हिं० क्रि०) सुँघनी।
नासदान–(हिं० पुं०) सुँघनी रखने को डिबिया।
नासना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना।
नासा–(सं० स्त्री०) नासिका, नाक, नथना। **नासाग्र**–(सं० पुं०) नाक का अगला भाग।
नासाविवर–(सं० पुं०) नाक का छेद।
नासिका–(सं० स्त्री०) घ्राणेन्द्रिय, नाक, नासा। **नासिकाग्र**–(सं० पुं०) नाक का अगला भाग। **नासिकामल**–(सं० पुं०) नाक का मल, नेटा; **नासिकाशब्द**–(सं० पुं०) नाक से निकलनेवाला शब्द।
नास्ति–(सं०अव्य०) अविद्यमानता, नहीं। **नास्तिक**–(सं०पुं०) वह जो ईश्वर का अस्तित्व नहीं मानता।
नाह–(हिं० पुं०) नाथ।
नाहनूह–(हिं० स्त्री०) अस्वीकार, नहीं नहीं का शब्द।
नाहर–(हिं० पुं०) सिंह, शेर, व्याघ्र।
नाहरू–(हिं० पुं०) नहरुवा नामक रोग।
नाहिन–(हिं० अव्य०) नहीं
नाहीं–(हिं० अव्य०) नहीं।
नि–(सं० अव्य०) एक उपसर्ग जिस शब्द में लगने से "निषेध संशय, समीप, बन्धन, अन्तर्भाव, समूह, अधोभाव आदि" अर्थ होते हैं।
निअर, निअरे–(हिं० क्रि० वि०) निकट, पास में।
निअराना–(हिं० क्रि०) निकट जाना।
निआउ–(हिं० पुं०) देखो न्याय।
नियान–(हिं०पुं०) अन्त; (अव्य०) अन्त में
निकंटक–(हिं० वि०) देखो निष्कंटक।

निकंदन–(हिं० पुं०) नाश, ध्वंस।
निकंदना–(हिं० क्रि०) नाश करना।
निंद–(हिं० वि०) देखो निन्द्य। **निंदना**–(हिं०क्रि०) निन्दा करना। **निंदरना**–(हिं०क्रि०) निन्दा करना।
निंदरिया–(हिं० क्रि०) निद्रा, नींद।
निंदासा–(हिं० वि०) जिसको नींद आती हो। **निंदिया**–(हिं०स्त्री०) निद्रा, नींद।
निः–(सं०अव्य०) "विहीन" अर्थ का एक उपसर्ग। **निःकपट**–(हिं० वि०) देखो निष्कपट। **निःकाम**–(हिं० वि०) देखो निष्काम।
निःशेष–(सं० वि०) संपूर्ण, समूचा।
निःश्रेणि, निःश्रेणी–(सं० स्त्री०) काठ की सीढ़ी, खजूर का वृक्ष। **निःश्वास**–(सं० पुं०) प्राणवायु का नाक या मुख से निकलना, नाक से निकली हुई वायु।
निःसंकोच–(सं०क्रि०वि०) बिना संकोच के, बेधड़क। **निःसंशय**–(सं० वि०) जिसमें सन्देह न हो। **निःसन्देह**–(सं० वि०) जिसमें सन्देह न हो; (क्रि०वि०) बिना संदेह के। **निःसत्व**–(सं० वि०) जिसमें तत्व या सार न हो। **निःसन्तान**–(सं० वि०) जिसके संतान न हो। **निःसंशय**–(सं०वि०) बिना सन्देह का। **निःसारित**–(सं०वि०) बाहर निकाला हुआ। **निःस्नेह**–(सं० वि०) रसहीन, प्रेमरहित, जिसमें चिकनाहट न हो। **निःस्पन्द**–(सं०वि०) निश्चल। **निःस्पृह**–(सं०वि०) आशाशून्य, इच्छा-रहित। **निःस्वार्थ**–(सं० वि०) वह जो अपना अर्थ न साधता हो।
निकट–(सं०वि०) समीप का, पास का, (क्रि०वि०) पास, सन्निकट। **निकटता**–(सं० स्त्री०) समीपता।
निकटवर्ती–(सं० वि०) निकट का, समीप का। **निकटस्थ**–(सं० वि०) पास का, समीप का।
निकटागत–(सं० वि०) जो पास में आ गया हो।
निकन्दन–(सं० पुं०) ध्वंस, नाश।
निकम्मा–(हिं० वि०) जो कोई व्यवसाय न करता हो।
निकर–(सं० पुं०) समूह, झुंड, राशि।
निकरना–(हिं० क्रि०) निकलना।
निकर्मा–(हिं० वि०) जो काम-धंधा न करता हो, आलसी।
निकलंक–(हिं० वि०) निर्दोष।
निकलना–(हिं० क्रि०) भीतर से बाहर आना, पार जाना, व्यतीत होना, प्रकाशित होना, हिसाब करने पर कुछ धन बाकी देने को होना; प्राप्त होना, अलग होना, अलग हो जाना, शरीर पर उत्पन्न होना, छूटना, उत्तीर्ण होना, खुलना, उदय होना, निश्चित होना, देख पड़ना, किसी प्रश्न का ठीक उत्तर प्राप्त होना, प्रचलित होना, कहकर अस्वीकार करना, खपना।
निकलवाना–(हिं० क्रि०) निकलने का काम दूसरे से कराना।
निकष–(सं० पुं०) कसौटी, सान चढ़ाने का पत्थर।
निकस–(सं० पुं०) निकष, कसौटी।
निकसना–(हिं० क्रि०) देखो निकलना।
निकाई–(हिं० पुं०) देखो निकाय।
निकाज–(हिं० वि०) निकम्मा, बेकाम।
निकाम–(हिं० वि०) निकम्मा, बुरा; (क्रि०वि०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
निकाय–(सं० पुं०) समूह, झुंड, ढेर।
निकार–(हिं० पुं०) निकालने का काम, निकास।

निकाल–(हिं० पुं०) निकास। **निकालना**–(हिं० क्रि०) भीतर से बाहर करना, उपस्थित करना, ठहराना, प्रकट करना, खोलना, घटाना, आविष्कार करना, घोड़े बल आदि को गाड़ी में चलने की शिक्षा देना, पता लगाना, प्रकाशित करना, फैलाना, संकट से छुटकारा देना, बेचना, खपाना, नौकरी से छुड़ाना। **निकाला**–(हिं० पुं०) निकालने का काम, बहिष्कार, किसी स्थान से निकाले जाने का दण्ड।

निकास–(हिं० पुं०) क्रम, द्वार, आय, वह स्थान जिसमें से होकर कोई वस्तु निकले, मूलस्थान, संकट, छुटकारे का उपाय, आय का ढंग। **निकासना**–(हिं० क्रि०) देखो निकालना। **निकासी**–(हिं० स्त्री०) बिक्री, खपत, चुंगी, भरती, लदाई, प्राप्ति, आय।

निकियाना–(हिं०क्रि०) नोचकर धज्जी-धज्जी अलग करना।

निकिल्विष–(सं० पुं०) पाप का अभाव।

निकिष्ट–(हिं० वि०) देखो निकृष्ट।

निकुञ्ज–(सं० पुं०) लतागृह, वृक्षों अथवा लताओं से घिरा हुआ मण्डप।

निकृति–(सं० स्त्री०) तिरस्कार, अपकार, शठता, नीचता।

निकृन्तन–(सं० वि०) काटनेवाला; (पुं०) छेदन, खण्डन।

निकृष्ट–(सं० वि०) अधम, नीच, तुच्छ। **निकृष्टता**–(सं० स्त्री०) अधमता, नीचता।

निकेतन–(सं० पुं०) गृह, घर।

निकोसना–(हिं० क्रि०) दाँत पीसना।

निकौनी–(हिं० स्त्री०) निराई का काम या शुल्क।

निक्का–(हिं० वि०) छोटा, नन्हा।

निक्षिप्त–(सं० वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, रक्खा हुआ (धरोहर)।

निक्षेप–(सं० पुं०) फेंकने की क्रिया या भाव, धरोहर, थाती। **निक्षेपक**–(सं० पुं०) फेंकनवाला। **निक्षपण**–(सं० पुं०) त्यागना, छोड़ना। **निक्षेपी**–(हिं० वि०) फेंकनेवाला, छोड़नेवाला, धरोहर रखनेवाला।

निखट्टर–(हिं० वि०) निष्ठुर, निर्दय।

निखट्टू–(हिं० वि०) जो कोई काम-काज न करता हो, आलसी, निकम्मा।

निखनन–(सं० पुं०) खनना, खोदना।

निखरना–(हिं० क्रि०) स्वच्छ होना, निर्मल होना। **निखरवाना**–(हिं०क्रि०) धुलवाना।

निखरी–(हिं० स्त्री०) घी में पकाया हुआ भोजन द्रव्य।

निखर्व–(सं० पुं०) वामन, बौना।

निखार–(हिं० पुं०) निर्मलता, स्वच्छता।

निखिल–(सं० वि०) समग्र, संपूर्ण, सब।

निखुटना–(हिं० क्रि०) घटना, समाप्त होना।

निखेध–(हिं० वि०) देखो निषेध। **निखेधना**–(हिं० क्रि०) मना करना।

निखोट–(हिं०वि०) निर्दोष, स्पष्ट, स्वच्छ; (हिं०क्रि०वि०) बिना संकोच के।

निखोड़ा–(हिं०वि०) कठोरहृदय, निर्दय।

निखोड़ना–(हिं० क्रि०) नख से नोचना।

निगंध–(हिं०वि०) देखो निर्गन्ध, गन्धहीन।

निगड़–(सं० पुं०) हाथी के पैर में बाँधने की लोहे की सिकड़ी, आँदू। **निगड़न**–(सं० पुं०) सिकड़ी से बाँधने का काम। **निगड़ित**–(सं०वि०) सिकड़ी से बँधा हुआ।

निगद–(सं० पुं०) भाषण, कथन।

निगदित–(सं०वि०) भाषित, कहा हुआ।

निगम–(सं० पुं०) वाणिज्य, व्यापार।
निगमागम–(सं० पुं०) वेदशास्त्र।
निगर–(सं०पुं०) भोजन; (हिं०वि०) सब।
निगरण–(सं० पुं०) भोजन, भक्षण।
निग्रही–(हिं० वि०) रोकनेवाला, दबानेवाला, दण्ड देनेवाला; **निग्रहीतव्य**–(सं० वि०) जो दण्ड देने योग्य हो।
निघण्ट–(सं० पुं०) निघण्टु, सूचीपत्र।
निघण्टु–(सं०पुं०) वैदिक शब्दों की सूची।
निघरघट–(हिं० वि०) जिसको कहीं रहने का ठिकाना न हो, निर्लज्ज।
निघरा–(हिं० वि०) जिसके घरबार न हो।
निघ्न–(सं० वि०) घायल, निर्भर, (गणित में) गुणा किया हुआ।
निचय–(सं० पुं०) समूह, निश्चय, संचय।
निचल–(हिं० वि०) देखो निश्चल।
निचला–(हिं० वि०) नीचे का, नीचेवाला। **निचाई**–(हिं० स्त्री०) नीचापन, नीचा।
निचुड़ना–(हिं० क्रि०) टपकना या चूना, रसहीन होना।
निचै–(हिं० पुं०) देखो निचय।
निचोड़–(हिं० पुं०) सार वस्तु, सत्व, तात्पर्य, सारांश। **निचोड़ना**–(हिं० क्रि०) निकालना, गारना, सार भाग अलग करना, सर्वस्व हरण करना।
निचोना–(हिं०क्रि०) देखो निचोड़ना।
निचौंहा–(हिं०वि०) नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ। **निचौहें**–(हिं० क्रि० वि०) नीचे की ओर।
निछक्का–(हिं० पुं०) एकान्त।
निछत्र–(हिं० वि०) छत्रहीन, बिना छत्र का।
निछल–(हिं० वि०) बिना छल-कपट का। **निछला**–(हिं० वि०) बिना मिलावट का।
निछान–(हिं०वि०) विशुद्ध, बिना मिलावट का; (क्रि० वि०) एकदम।
निछावर–(हिं० स्त्री०) उत्सर्ग, उतारा, नग।
निछोह, निछोही–(हिं० वि०) निर्दयी, निष्ठुर।
निज–(सं० वि०) स्वकीय, अपना, मुख्य; (अव्य०) ठीक ठीक, विशेष करके। **निजकाना**–(हिं०क्रि०) समीप आना, निकट पहुँचना। **निजन**–(हिं० वि०) देखो निर्जन।
निजी–(हिं० वि०) स्वयं, अपना।
निजू–(हिं० वि०) निज का, अपना।
निजोर–(हिं० वि०) बलहीन, निर्बल।
निझरना–(हिं०क्रि०) झड़ जाना, दोष से मुक्त होना।
निझाना–(हिं० क्रि०) छिपकर देखना।
निटर–(हिं०क्रि०) जिसमें कुछ दम न हो।
निटोर–(हिं० पुं०) टोला, मुहल्ला।
निठल्ला, निठल्लू–(हिं० वि०) व्यवसायरहित।
निठाला–(हिं० पुं०) ऐसा समय जब कोई काम धंधा न हो।
निठुर–(हिं० वि०) निष्ठुर, क्रूर, निर्दय।
निठुरता–(हिं० स्त्री०) निर्दयता, क्रूरता।
निठुराव–(हिं० पुं०) निठुराई।
निठौर–(हिं० पुं०) बुरी अवस्था।
निडर–(हिं० वि०) निर्भय, साहसी। **निडरपन, निडरपना**–(हिं० पुं०) निर्भयता, साहस।
निड़े–(हिं० क्रि० वि०) निकट, समीप, पास।
निढाल–(हिं० वि०) अशक्त, शिथिल। **निढिल**–(हिं० वि०) जो ढीला न हो, कसा हुआ।
नितंत–(हिं० क्रि० वि०) देखो नितान्त।

नित–(हिं०अव्य०) सर्वदा, नित्य, प्रतिदिन। **नित नित**–प्रतिदिन।
नितम्ब–(सं० पुं०) स्त्री का कमर के पीछे का उभड़ा हुआ भाग, चूतड़, किनारा।
नितान्त–(सं० वि०) अधिक, सर्वथा।
निति–(हिं० अव्य०) नित, प्रतिदिन।
नित्य–(सं० वि०) सतत, प्रतिदिन का; (अव्य०) प्रतिदिन, हरदिन, सर्वदा।
नित्यशः–(सं० अव्य०) प्रतिदिन, सर्वदा। **नित्य समास**–(सं०पुं०) 'कु' शब्द तथा 'आदि' शब्द के साथ जो समास होता है वह नित्य समास कहलाता है।
निथंभ–(हिं० पुं०) स्तम्भ, खंभा।
निथरना–(हिं० क्रि०) घुली हुई वस्तु का नीचे बैठकर जल आदि का स्वच्छ हो जाना।
निथार–(हिं० पु०) पानी के स्थिर होने से उसके जल में बैठी हुई वस्तु। **निथारना, निथालना**–(हिं० क्रि०) घुली हुई वस्तु को नीचे बैठाकर जल को स्वच्छ करना।
निदई–(हिं० वि०) देखो निर्दयी।
निदरना–(हिं० क्रि०) अपमान करना।
निदर्शक–(सं० वि०) दिखलानेवाला।
निदर्शन–(सं० पुं०) प्रकाशित करने या दिखलाने का काम, उदाहरण, दृष्टान्त।
निदहना–(हिं० क्रि०) जलाना।
निदाघ–(सं०पुं०)ग्रीष्म काल, घाम, धूप।
निदान–(सं० पुं०) रोग की पहिचान, अन्त, कारण; (अव्य०) अन्त में।
निदेश–(सं०पुं०) शासन, आज्ञा, कथन।
निदेस–(हिं० पुं०) देखो निर्देश।
निदोष–(हिं० वि०) देखो निर्दोष।
निद्धि–(हिं० स्त्री०) देखो निधि।
निद्रा–(सं० स्त्री०) स्वप्न, नींद, सुषप्ति **निद्राकुल**–(सं०वि०) निद्रा से पीड़ित। **निद्राक्रान्त**–(सं० वि०) निद्राकुल। **निद्राग्रस्त**–(सं० वि०) निद्राकुल, निद्रालु। **निद्राभङ्ग**–(सं० पुं०) नींद टूटना। **निद्रालु**–(सं० वि०) निद्राशील, सोनेवाला। **निद्रित**–(सं० वि०) निद्रागत, सोया हुआ।
निधड़क–(हिं०क्रि०वि०) बिना संकोच के, निःशंक, बिना भय या चिन्ता के।
निधन–(सं० पुं०) मरण, नाश; (वि०) धनहीन, दरिद्र। **निर्धनता**–(सं०स्त्री०) दरिद्रता, कंगाली।
निधनी–(हिं० वि०) धनहीन, दरिद्र।
निधान–(सं०पुं०) आश्रय, आधार, निधि।
निधि–(सं०पुं०) समुद्र, आधार। **निधिमान**–(सं० वि०) धनाढ्य।
निनरा–(हिं०क्रि०) न्यारा, अलग, दूर।
निनाद–(सं० पुं०) शब्द मात्र।
निनादी–(सं० वि०) शब्द करनेवाले।
निनान–(हिं०वि०) घोर, निकृष्ट, बुरा; (क्रि० वि०) अन्त में।
निनारा–(हिं०वि०)भिन्न, न्यारा, अलग।
निनावाँ–(हिं० पुं०) महीन लाल दाने जो जीभ और मसूढे पर निकल आते हैं।
निभौना–(हिं०क्रि०) नवाना, झुकाना; नीचे करना।
निनौरा–(हिं०पुं०) नाना नानी का घर।
निन्दक–(सं० वि०) दूसरों का दोष या बुराई कहनेवाला। **निन्दनीय**–(सं० वि०) निन्द्य, निन्दा करने योग्य।
निन्दा–(सं० स्त्री०) अपवाद, दुष्कृति, आक्षेप, जुगुप्सा। **निन्दाकर**–(सं०पुं०) अपवादक। **निन्दान्वित**–(सं० वि०) निन्दित। **निन्दित**–(सं०वि०) निन्दा किया हुआ।

निन्द्य–(सं० वि०) निन्दनीय, निन्दा करने योग्य।
निन्यानबे–(हि० वि०) एक कम सौ की गणना का; (पुं०) नब्बे और नव संख्या ९९।
निन्यारा–(हि० वि०) देखो न्यारा।
निपजना–(हि० क्रि०) उपजना, उगना।
निपजी–(हि० स्त्री०) लाभ, उपज; (हि० अव्य०) निरा, नितान्त।
निपट–(हि० वि०) निरा। **निपटना**–(हि० क्रि०) देखो निबटना।
निपतन–(सं० वि०) अशिक्षित।
निपतन–(सं० पुं०) अधःपतन, गिराव।
निपतित–(सं०वि०)पतित,गिरा हुआ।
निपत्र–(हि० वि०) पत्रहीन।
निपात–(सं० पुं०) पतन, गिराव, नाश, मृत्यु, अधःपतन, विनाश, वह शब्द जो व्याकरण में दिये हुए नियम के अनुसार न बना हो; (वि०) बिना पत्ते का। **निपातना**–(हि० क्रि०) गिराना, नष्ट करना, वध करना। **निपातित**–(सं० वि०) जो नीचे फेंक दिया गया हो।
निपुड़ना–(हि०क्रि०) खोलना, उघारना।
निपुण–(सं० वि०) कार्य-कुशल, दक्ष, विद्वान्। **निपुणता**–(सं०स्त्री०) कुशलता। **निपुणाई**–(हि० स्त्री०)दक्षता।
निपुत्री–(हि० वि०)निःसन्तान, निपूता।
निपुन–(हि० वि०) देखो निपुण, दक्ष।
निपुनई–(हि० स्त्री०) निपुणता, दक्षता।
निपूत, निपूता–(हि०वि०)अपुत्र, जिसके सन्तान न हो।
निपीड़ना–(हि० क्रि०) दाँत निकालना।
निफन–(हि०वि०) निष्पन्न, पूर्ण, पूरा; (क्रि०वि०)अच्छी तरह से, पूर्णरूप से।
निफरना–(हि०क्रि०) चुभकर इस पार से उस पार निकल जाना।
निफल–(हि० वि०) देखो निष्फल।
निफारना–(हि० क्रि०) खोलना, स्पष्ट करना।
निफालन–(सं० पुं०) दर्शन, दृष्टि।
निफोट–(हि० वि०) स्पष्ट, स्वच्छ।
निबकौरी–(हि० स्त्री०) नीम का फल या बीज।
निबटना–(हि० क्रि०) निश्चित होना, छुट्टी पाना, समाप्त होना, अन्त होना। **निबटाना**–(हि० क्रि०) पूरा करना, भुगताना, चुकाना। **निबटाव**–(हि० स्त्री०) निर्णय। **निबटेरा**–(हि० पुं०) झगड़े का निर्णय, निश्चय।
निबड़ना–(हि० क्रि०) देखो निबटना।
निबद्ध–(सं० वि०) गुथा हुआ, बैठाया हुआ, जड़ा हुआ।
निबन्ध–(सं० पुं०) पुस्तक की टीका, बंधन, लेख।
निबर–(हि० वि०) देखो निर्बल। **निबरना**–(हि०क्रि०) अलग होना, छूटना, निर्णय होना, समाप्त होना, अवकाश पाना, सुलझना, अन्त होना, दूर होना।
निबल–(हि०वि०) देखो निर्बल। **निबलाई**–(स्त्री०) दुर्बलता।
निबह–(हि०पुं०)देखो निर्वह, समूह,झुण्ड।
निबहना–(हि० क्रि०) छुटकारा पाना।
निबहुर–(हि० पुं०) यमद्वार जहाँ से कोई लौटकर न आवे।
निबहुरा–(हि०वि०) जो जाकर फिर न लौटे।
निबाह–(हि० पुं०) निर्वाह, निरन्तर व्यवहार। **निबाहक**–(हि० वि०) निर्वाह करनेवाला। **निबाहना**–(हि०क्रि०)निर्वाहकरना, चरितार्थ करना
निबिड़–(हि० वि०) बँधा हुआ। **निबि-**

ड़ना–(हिं० क्रि०) बन्धन आदि से मुक्त करना, अलग करना।
निबुकना–(हिं०क्रि०) बंधन से मुक्त होना
निबेड़ा–(हिं० पुं०) देखो निबेरा।
निबेरना–(हिं० क्रि०) निबटाना, दूर करना, हटाना।
निबेरा–(हिं० पुं०) मुक्ति, छुटकारा।
निभना–(हिं० क्रि०) निर्वाह होना।
निभरम–(हिं०वि०) भ्रमरहित; (क्रि० वि०) बेधड़क।
निभरोस–(हिं० वि०) निराश, हताश।
निभरोसी–(हिं० वि०) निराश्रय।
निभागा–(हिं०वि०) अभागा, हतभाग्य।
निभाना–(हिं० क्रि०) निर्वाह करना।
निभृत–(सं० वि०) धरा हुआ, रक्खा हुआ, भरा हुआ, निश्चित।
निमंत्रना–(हिं० क्रि०) नेवता देना।
निमक–(हिं० पुं०) देखो नमक।
निमकी–(हिं०स्त्री०) नीबू का अचार।
निमकौड़ी–(हिं०स्त्री०) नीम की फली।
निमग्न–(सं० वि०) डूबा हुआ, तन्मय।
निमछड़ा–(हिं० पुं०) अवकाश।
निमज्जक–(सं०वि०) डुबकी या गोता लगानेवाला। **निमज्जन**–(सं० पुं०) अवगाहन। **निमज्जना**–(हि० क्रि०) गोता लगाना, स्नान करना।
निमटना–(हिं० क्रि०) देखो निबटाना।
निमटेरा–(हिं० पुं०) देखो निबटारा।
निमंत्रक–(सं० पुं०) निमन्त्रण या नेवता देनेवाला।
निमंत्रण–(सं०पुं०) भोजन का बुलावा, न्योता। **निमंत्रित**–(सं० वि०) जिसको न्योता दिया गया हो।
निमन्यु–(सं० वि०) क्रोध-रहित।
निमान–(हिं० पुं०) मूल्य, दाम; (हिं० वि०) नीचा, ढालुआँ, विनीत।
निमाना–(हि० वि०) नम्र, विनीत।
निमि–(सं० पुं०) निमेष, आँख का मिचना।
निमिख–(हि० पुं०) देखो निमिष।
निमित्त–(सं० पुं०) चिह्न, लक्षण, हेतु, कारण, शकुन, उद्देश्य।
निमिष–(सं० पुं०) आँख मिचना, पलकों का गिरना।
निमीलन–(सं० पुं०) निमेष, पलक मारना, मरण।
निमीलित–(सं० वि०) बंद किया हुआ, ढपा हुआ।
निमुंहाँ–(हिं० वि०) जिसको बोलने का मुंह न हो।
निमूंद–(हिं० वि०) बन्द किया हुआ।
निमूल–(हिं० वि०) मूल-रहित।
निमेख–(हिं० पुं०) देखो निमेष।
निमेट–(हिं० वि०) न मिलनेवाला।
निमेष–(सं० पुं०) पलक मारने भर का समय, पल, क्षण।
निमोना–(हिं० पुं०) पिसे हुए हरे चने या मटर के दानों को भूनकर बनाया हुआ एक व्यंजन।
निम्न–(सं०वि०) नीच, नीचा। **निम्नग**–(सं० वि०) नीचे नीचे जानवाला। **निम्नगत**–(सं० वि०) जो नीचे की ओर गया हो। **निम्नगा, निम्नदेश**–(सं० स्त्री०) सरिता, नदी।
निम्नदेश–(सं० पुं०) तल देश, निचला भाग
निम्ब–(सं० पुं०) नीम का वृक्ष।
नियत–(सं०वि०) संयत, स्थिर, ठहराया हुआ, नियोजित, स्थापित, परिमित। **नियतमानस**–(सं०वि०) जितेन्द्रिय।
नियति–(सं० स्त्री०) नियम, बन्धेज, स्थिरता।
नियतेन्द्रिय–(सं० वि०) जितेन्द्रिय।

नियन्तव्य–(सं०वि०) दमन या शासन करने योग्य।
नियन्ता–(सं० वि०) विधायक, कार्य चलानेवाला, नियम बाँधनेवाला।
नियम–(सं० पुं०) प्रतिज्ञा, विधि या निश्चय के अनुसार प्रतिबन्ध, निश्चय, व्यवस्था, पद्धति, परम्परा, क्रम, शासन।
नियमन–(सं० पुं०) नियमबद्ध करने का कार्य; **नियमपत्र**–(सं० पुं०) प्रतिज्ञापत्र।
नियमबद्ध–(सं० वि०) नियमों के अनुकूल। **नियमभंग**–(सं० पुं०) प्रतिज्ञाभंग, नियम का उल्लंघन।
नियर–(हिं० अव्य०) पास, समीप।
नियराई–(हिं० स्त्री०) निकटता।
नियराना–(हिं०क्रि०) निकट आना।
नियरे–(क्रि०वि०) समीप।
नियाई–(हिं० वि०) देखो न्यायी।
नियाज–(हिं० पुं०) प्रार्थना।
नियान–(हिं०पुं०) निदान, परिणाम, अन्त।
नियामक–(सं०वि०) नियम या व्यवस्था करनेवाला, मारनेवाला।
नियार–(हिं० पुं०) जौहरी या सोनार की दूकान में का कूड़ा-करकट।
नियारना–(हिं० क्रि०) अलगाना।
नियारा–(हिं०वि०) पृथक्, अलग, न्यारा।
नियारिया–(हिं० पुं०) सुनारों या जौहरियों की दुकान के कूड़ा-करकट में से माल निकालनेवाला, चतुर मनुष्य।
नियारे–(हिं० अव्य०) देखो न्यारे।
नियाव–(हिं० पुं०) देखो न्याय।
नियुक्त–(सं० वि०) अधिकार दिया हुआ, लगाया हुआ, प्रेरित।
नियोक्ता–(सं० पुं०) नियोजित करनेवाला, किसी काम में लगानेवाला।
नियोग–(सं० पुं०) प्रेरणा में नियुक्ति, आज्ञा, निश्चय।
नियोगी–(सं० वि०) जो नियुक्त किया गया हो। **नियोगपत्र**–(सं० पुं०) वह पत्र जिसमें किसी की नियुक्ति के विषय में लिखा हो।
नियोगविधि–(सं० पुं०) किसी को किसी कार्य में नियुक्त करने की विधि।
नियोग्य–(सं० वि०) नियोग करने योग्य।
नियोजक–(सं० पुं०) कार्य में नियुक्त करनेवाला। **नियोजन**–(सं० पुं०) नियोग, प्रेरणा।
नियोजित–(सं०वि०) नियुक्त किया हुआ।
नियोज्य–(सं० वि०) जो नियुक्त करने योग्य हो।
निर–(सं० अव्य०) यह शब्द वियोग, अतिक्रम, निषेध आदि अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होता है।
निरंश–(सं० पुं०) बिना अक्षांश का।
निरकेवल–(हिं०वि०) बिना मेलका, स्वच्छ।
निरक्षदेश–(सं० पुं०) भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्खिन के वे देश जहाँ दिन-रात बराबर होते हैं।
निरक्षन–(हिं० पुं०) देखो निरीक्षण।
निरक्षर–(सं० वि०) अनपढ़ा, मूर्ख।
निरक्षरेखा–(सं० स्त्री०) क्रान्तिवृत्त।
निरखना–(हिं० क्रि०) देखना, ताकना।
निरगुन–(हिं० वि०) देखो निर्गुण।
निरंकुश–(सं० वि०) बिना अंकुश या प्रतिबन्ध का, स्वेच्छाचारी।
निरङ्ग–(सं० वि०) अंगहीन। **निरंग**–(हिं० वि०) बिना रंग का, उदास, फीका।
निरच–(हिं० वि०) निश्चिन्त।
निरच्छ–(हिं० वि०) चक्षुहीन, अन्धा।
निरजर–(हिं० वि०) जो कभी जीर्ण न हो।
निरजल–(हिं० वि०) देखो निर्जल।

निरजिन–(सं० पुं०) जिसको चमड़ा न हो।
निरजोस–(हिं० पुं०) निचोड़, सारांश।
निरजोसी–(हिं० वि०) निर्णय करनेवाला।
निरझर–(हिं० पुं०) देखो निर्झर।
निरञ्जन–(सं० वि०) काजल-रहित।
निरत–(सं० वि०) नियुक्त, तत्पर, लीन, तन्मय।
निरति–(सं० स्त्री०) अत्यन्त प्रीति।
निरदई–(हिं० वि०) देखो निर्दयी।
निरधन–देखो निर्धन।
निरधार–(हिं० पुं०) देखो निर्धार।
निरधारना–(हिं० क्रि०) निश्चय करना, स्थिर करना।
निरध्व–(सं० वि०) जो अपना मार्ग भूल गया हो।
निरनुक्रोश–(सं० पुं०) निर्दयता, निष्ठुरता।
निरन्तर–(सं० वि०) निबिड़, घना; (हिं० क्रि० वि०) सदा, सर्वदा।
निरन्न–(सं० वि०) अन्नहीन; (हिं० वि०) निराहार।
निरन्नता–(सं० स्त्री०) उपवास।
निरन्वय–(सं० वि०) संबंध-रहित।
निरपराध–(सं० वि०) अपराध-रहित, निर्दोष; (हिं० क्रि० वि०) बिना कोई अपराध किये हुए।
निरपवय–(सं० वि०) जो लौटा न देता हो, जिसमें भाजक का पूरा भाग न लग सके।
निरपवाद–(सं० वि०) अपवाद-रहित।
निरपाय–(सं० वि०) जिसका नाश न हो
निरपेक्ष–(सं० वि०) जिसको किसी वस्तु की आकांक्षा न हो, तटस्थ; (पुं०) अनादर। निरपेक्षा–(सं० स्त्री०) अवज्ञा, निराशा। निरपेक्षी–(सं० वि०) अपेक्षा न रखनेवाला।

निरफल–(हिं० वि०) निष्फल।
निरबंध–(हिं० वि०) बन्धनहीन।
निरबंसी–(हिं० वि०) निर्वंश।
निरबल–(हिं० वि०) देखो निर्बल।
निरबान–देखो निर्वाण।
निरबाह–देखो निर्वाह।
निरभय–देखो निर्भय।
निरभिमान–(सं० वि०) अभिमानरहित।
निरभिलाष–(सं० वि०) अभिलाषारहित।
निरभै–देखो निर्भय।
निरभ्र–(सं० वि०) मेघ-शून्य।
निरमना–(हिं० क्रि०) निर्माण करना, बनाना।
निरमर, निरमल–(हिं० वि०) देखो निर्मल।
निरमान–(हिं० पुं०) देखो निर्माण।
निरमाना–(हिं० क्रि०) बनाना, तैयार करना।
निरमायल–(हिं० पुं०) देखो निर्माल्य।
निरमूलना–(हिं० क्रि०) निर्मूल करना, नष्ट करना।
निरमोल–(हिं० वि०) अमूल्य, अनमोल।
निरमोही–(हिं० वि०) देखो निर्मोही।
निरम्बर–(सं० वि०) वस्त्र-शून्य, नंगा।
निरम्बु–(सं० वि०) जलहीन, बिना जल का
निरर्थ–(सं० वि०) अर्थ-शून्य, निष्फल, व्यर्थ। निरर्थक–(सं० वि०) निष्फल निष्प्रयोजन, व्यर्थ।
निरलस–(हिं० वि०) आलस्यहीन।
निरवकाश–(सं० वि०) जिसमें अवकाश न हो।
निरवच्छिन्न–(सं० वि०) जिसका क्रम न टूटे, निरन्तर।
निरवद्य–(सं० वि०) अनिन्द्य, निर्दोष।
निरवधि–(सं० क्रि० वि०) निरन्तर, बराबर, सर्वदा।

निरवयव–(सं० वि०) अवयवों से रहित, निराकार।

निरवलम्ब–(सं० वि०) आधार-रहित, निराश्रय। **निरशेष**–(सं० वि०) समग्र, समूचा।

निरवाना–(हिं० क्रि०) निराने का काम दूसरे से कराना।

निरवार–(हिं० पुं०) निस्तार, छुटकारा, निबटारा, निर्णय। **निरवारना**–(हिं० क्रि०) युक्त करना, छोड़ाना, सुलझाना।

निरवाह–(हिं० पुं०) देखो निर्वाह।

निरशन–(सं० पुं०) अनशन, उपवास।

निरसंक–(हिं० वि०) देखो निःशंक।

निरस–(सं० वि०) नीरस, रसहीन, फीका, निःसत्व, असार, सूखा। **निरसन**–(सं० पुं०) निराकरण, परिहार, वध।

निरस्त–(सं० वि०) थूका हुआ, उगला हुआ, भेजा हुआ; (पुं०) थक फेंकने की क्रिया।

निरस्त्र–(सं० वि०) बिना अस्त्र का।

निरस्य–(सं० वि०) खंडनीय, परिहार करने योग्य।

निरहंकार–(सं० वि०) अभिमान-रहित।

निरहंकृत–(सं० वि०) अहंकार-रहित।

निरहेतु–(हिं० वि०) देखो निर्हेतु।

निरा–(हिं० वि०) विशुद्ध, बिना मेल का, एकमात्र, नितान्त, निपट।

निराई–(हिं० स्त्री०) निराने का काम।

निराकांक्ष–(सं० वि०) जिसको अभिलाषा न हो। **निराकांक्षा**–(सं०स्त्री०) लोभ, लालसा का न होना। **निराकांक्षी**–(सं० वि०) निस्पृह।

निराकार–(सं० वि०) जिसका कोई आकार न हो, परमेश्वर।

निराकाश–(सं० वि०) आकाश-शून्य।

निराकुल–(सं०वि०) जो घबड़ाया न हो।

निराकृत–(सं० वि०) नष्ट किया हुआ, हटाया हुआ।

निराखर–(हिं० वि०) अपठित, मूढ़, मौन, चुप।

निराचार–(सं० वि०) आचारशून्य।

निराट–(हिं० वि०) निपट, निरा।

निराडम्बर–(सं० वि०) आडम्बररहित।

निरांतक–(सं० वि०) भयशून्य, रोगरहित।

निरातप–(सं० वि०) उष्णता-रहित।

निरादर–(सं० पुं०) अपमान।

निराधार–(सं०वि०) अवलम्ब या आश्रय-रहित, मिथ्या, अयुक्त।

निराधि–(सं० वि०) रोग-रहित।

निरानन्द–(सं० वि०) आनन्द-रहित।

निराना–(हिं० क्रि०) पौधों के आस-पास उगी हुई घास आदि को खोदकर हटाना।

निरापद–(सं० स्त्री०) जिसको कोई आपत्ति या डर न हो, सुरक्षित।

निरामिषाशी–(सं० वि०) मांस न खानेवाला, जितेन्द्रिय।

निराय–(सं० वि०) आय-रहित, बिना कर का।

निरायुध–(सं० वि०) अस्त्रहीन।

निरारा–(हिं० वि०) निराला, पृथक्, अलग।

निरालम्ब–(सं० वि०) निराधार।

निरालस–(हिं० वि०) बिना आलस्य का।

निरालस्य–(सं० वि०) जिसमें आलस्य न हो, तत्पर; (पुं०) आलस्य का अभाव।

निराला–(हिं० पुं०) एकान्त स्थान; (वि०) निर्जन, एकान्त, अद्भुत, विलक्षण।

निरावलम्ब–(सं० वि०) निराधार।

निरावृत–(सं० वि०) जो ढंका न हो

निराश–(सं० वि०) आशा-रहित।

निराशंक–(सं० वि०) आशंका-रहित।

निराशी–(सं०वि०) आशाहीन, हताश।
निराशिष–(सं०वि०) बिना आशीर्वाद का।
निराश्रय–(सं०वि०) असहाय, अशरण।
निराश्रम–(सं० वि०) आश्रम-रहित।
निरासी–(हिं० वि०) निराश, उदास।
निराहार–(सं०वि०) जो भोजन न किये हो।
निरिच्छ–(सं० वि०) इच्छा-शून्य, जिसको इच्छा न हो।
निरिन्द्रिय–(सं० वि०) इन्द्रिय-रहित।
निरिच्छना–(हिं० क्रि०) देखना।
निरिन्धन–(सं० वि०) बिना ईंधन का।
निरी–(हिं० वि०) देखो निरा।
निरीक्षक–(सं० वि०) देख-रेख करनेवाला। निरीक्षण–(सं० पुं०) दर्शन, देख-रेख। निरीक्षित–(सं० वि०) देखा हुआ। निरीक्ष्यमाण–(सं० वि०) जो देखा जाता हो।
निरीश–(सं० वि०) बिना मालिक का, नास्तिक।
निरीह–(सं० वि०) चेष्टाशून्य, विरक्त, उदासीन, तटस्थ।
निरुक्त–(सं० पुं०) वेद का चौथा अंग; (वि०) व्याख्या किया हुआ।
निरुक्ति–(सं० स्त्री०) व्युत्पत्ति आदि को बतलाते हुए किसी पद या वाक्य की व्याख्या।
निरुत्तर–(सं०वि०) जो उत्तर न दे सके।
निरुत्पात–(सं० वि०) उत्पात-रहित।
निरुत्सव–(सं० वि०) उत्सव-हीन।
निरुत्साह–(सं०वि०) बिना उत्साह का।
निरुत्सुक–(सं० वि०) औत्सुक्यहीन।
निरुद्ध–(सं० वि०) बँधा हुआ, रुका हुआ।
निरुद्यम–(सं० वि०) बिना उद्योग का।
निरुद्यमी–(हिं० वि०) जो कोई काम न करता हो। निरुद्योग–(सं० पुं०) जिसके पास कोई उद्योग न हो।
निरुद्योगी–(सं० वि०) जो कोई उद्योग न करता हो।
निरुद्विग्न–(सं० वि०) उद्वेग-रहित।
निरुद्वेग–(सं० वि०) उद्वेग-रहित।
निरुपद्रव–(सं० वि०) उपद्रव-रहित।
निरुपाधि–(सं० वि०) जिसमें किसी प्रकार की उपाधि न हो।
निरुपम–(सं० वि०) उपमा-रहित।
निरुपयोगी–(सं० वि०) निरर्थक, व्यर्थ।
निरुपसर्ग–(सं० वि०) उत्पात-रहित।
निरुपाय–(सं० वि०) उपायहीन।
निरुपेक्ष्य–(सं० वि०) उपेक्षा-रहित।
निरुवरना–(हिं०क्रि०) कठिनाई हटाना।
निरुवार–(हिं० पुं०) मुक्ति, छुटकारा। निरुवारना–(हिं० क्रि०) मुक्त करना, निर्णय करना।
निरूढ़–(सं० वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात व्युत्पन्न कुँवारा।
निरूप–(सं० वि०) रूपहीन, निराकार, कुरूप, भद्दा; (पुं०) वायु, देवता, आकाश। निरूपक–(सं० वि०) किसी विषय का निरूपण करनेवाला। निरूपण–(सं०पुं०) आलोक, विचार।
निरूपना–(हिं० क्रि०) निश्चित करना, स्थिर करना।
निरूपित–(सं० वि०) विचारा हुआ, निर्णय किया हुआ।
निरै–(हिं० पुं०) निरय, नरक।
निरोग, निरोगी–(हिं०वि०) रोग-रहित।
निरोध–(सं० पुं०) नाश, रुकावट, प्रगति बंध। निरोधक–(सं० वि०) रोकनेवाला। निरोधन–(सं० पुं०) गति का अवरोध, रुकावट। निरोधी–(सं० वि०) रोकनेवाला।
निर्गत–(सं० वि०) निकला हुआ।
निर्गन्ध–(सं० वि०) गन्ध-रहित।

निर्गमन–(सं० पुं०) द्वार, द्वारपाल ।
निर्गमना–(हिं० क्रि०) निकलना ।
निर्गुन–(हिं० वि०) जिसमें गुण न हो; (पुं०) परमेश्वर ।
निर्गूढ़–(सं० वि०) जो बहुत गूढ़ या गुप्त हो ।
निर्घुरिणी–(सं० स्त्री०)पानी का सोता ।
निर्घोष–(सं० वि०) शब्द-रहित ।
निर्जन–(सं० वि०) जन शुन्य (स्थान), सुनसान ।
निर्जर–(सं० पुं०) देवता; (वि०) जरा या वृद्धावस्था से रहित ।
निर्जल–(सं० वि०) जल शून्य, बिना जल का, जल के संसर्ग से रहित ।
निर्जला एकादशी–(सं०स्त्री०)जेठ सुदी एकादशी ।
निर्जित–(सं०वि०)पराजित,जीता हुआ ।
निर्जीव–(सं० वि०) प्राणहीन, मृतक ।
निर्झर–(सं० पुं०) झरना, सोता ।
निर्झरिणी–(सं० स्त्री०) नदी ।
निर्णय–(सं० पुं०) किसी विषय में कोई सिद्धान्त स्थिर करना,विचार, निवटारा, फैसला ।
निर्णेता–(सं०वि०) झगड़े को निबटाने-वाला । **निर्णेय**–(सं० वि०) निर्णय करने योग्य ।
निर्त–(हिं० पुं०) देखो नृत्य ।
निर्तना–(हिं० क्रि०) नृत्य करना,नाचना ।
निर्दई–(हिं० वि०) देखो निर्दय ।
निर्दय–(सं० वि०) दयाहीन, निष्ठुर ।
निर्दयता–(सं० स्त्री०) निष्ठुरता ।
निर्दहना–(हिं० क्रि०) जलाना ।
निर्दिष्ट–(सं० वि०) निश्चित, ठहराया हुआ ।
निर्देश–(सं० पुं०) उल्लेख, वर्णन, नाम, संज्ञा, चेतन, निश्चय, कथन, आज्ञा ।
निर्दोष–(सं० वि०) दोषरहित । **निर्दोषता**–(सं० स्त्री०)दोषहीनता, शुद्धता ।
निर्दोषी–(हिं० वि०) जिसने कोई अप-राध न किया हो ।
निर्द्रव्य–(सं० वि०) दरिद्र, धनहीन ।
निर्द्वन्द्व–(सं० वि०) जिसका विरोध करनेवाला कोई न हो, स्वच्छन्द ।
निर्धन–(सं० वि०) धन-रहित, दरिद्र, कंगाल । **निर्धनता**–(सं०स्त्री०)दरिद्रता ।
निर्धारण–(सं० पुं०) निर्णय, निश्चय ।
निर्धारना–(हिं० क्रि०) निर्धारित करना । निश्चित करना, ठहरना । **निर्धारित**–(सं० वि०) निश्चित, ठहराया हुआ ।
निर्धूम–(सं० वि०) जहाँ धुआँ न हो ।
निर्धूत–(सं० वि०) धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ ।
निर्नाथ–(सं० वि०) नाथशुन्य, अनाथ ।
निर्पक्ष–(हिं० वि०) पक्षपात-रहित ।
निर्फल–(हिं० वि०) देखो निष्फल ।
निर्बन्ध–(सं० पुं०) आग्रह, हठ ।
निर्बन्धु–(सं० वि०)बन्धुरहित, बन्धुहीन ।
निर्बल–(सं० वि०) बलहीन ।
निर्बलता–(सं० स्त्री०) शक्तिहीनता ।
निर्बहना–(हिं० क्रि०) अलग होना, पालन होना ।
निर्बाचन–(हिं० पुं०) देखो निर्वाचन ।
निर्बाण–(हिं० पुं०) देखो निर्वाण ।
निर्बाध–(सं० वि०) निरुपद्रव ।
निर्बुद्धि–(सं० वि०) बुद्धिहीन, मूर्ख ।
निर्बोध–(सं० वि०) अज्ञान ।
निर्भय–(सं० वि०) भयरहित, निडर ।
निर्भयता–(हिं० स्त्री०) निडर होने की अवस्था ।
निर्भर–(सं० पुं०) अवलंबित, आश्रित ।
निर्भाग्य–(सं० वि०) मन्दभाग्य,अभागा ।
निर्भीक–(सं० वि०) निःशंक, निडर ।

निर्भीत–(सं० वि०) भय-रहित, निडर ।
निर्भ्रम–(सं० वि०) भ्रम-रहित; (क्रि० वि०) बिना सन्देह के, बेखटके ।
निर्भ्रान्त–(सं० वि०) भ्रम-रहित ।
निर्मत्सर–(सं० वि०) अहंकारहीन ।
निर्मद–(सं० वि०) निरभिमान ।
निर्मना–(हिं० क्रि०) देखो निर्माना ।
निर्मनुज, निर्मनुष्य–(सं०वि०) निर्जन ।
निर्मन्यु–(सं० वि०) क्रोध-रहित ।
निर्मम–(सं० वि०) जिसको ममता न हो ।
निर्ममता–(सं०स्त्री०) ममता का अभाव ।
निर्मल–(सं० वि०) कलंकहीन । **निर्मलता**-(सं० स्त्री०) स्वच्छता, शुद्धता, पवित्रता ।
निर्मांस–(सं० वि०) जिसमें मांस न हो, अति दुर्बल ।
निर्माण–(सं० पुं०) रचना, बनावट । **निर्माणविद्या**–(सं० स्त्री०) मकान, पुल आदि बनाने की विद्या, वास्तु-विद्या ।
निर्माता–(हिं०पुं०) निर्माण करनेवाला ।
निर्मान–(हिं० वि०) अपार, असीम । **निर्माना**–(हिं० क्रि०) निर्माण करना, बनाना ।
निर्मालय–(हिं० पुं०) देखो निर्माल्य ।
निर्माल्य–(सं० पुं०) देवता को अर्पित की हुई वस्तु ।
निर्मुक्त–(सं०वि०) जो मुक्त हो गया हो ।
निर्मूल, निर्मूलक–(सं० वि०) बिना जड़ का, बिना आधार का ।
निर्मेघ–(सं० वि०) बिना बादल का ।
निर्मोक–(सं० पुं०) साँप की केंचुली ।
निर्मोल–(हिं० वि०) अमूल्य ।
निर्मोह–(सं० वि०) मोह-शून्य ।
निर्मोही–(हिं० वि०) निर्दय, कठोर हृदय का ।
निर्यात–(स० पुं०) निर्गत, देश के बाहर भेजी हुई सामग्री; (वि०) निकला हुआ ।
निर्यास–(सं० पुं०) कषाय, काढ़ा; (पुं०) गोंद, लाह, वल्कल ।
निर्लज्ज–(सं० वि०) लज्जाहीन । **निर्लज्जता**–(सं० स्त्री०) लज्जाहीनता ।
निर्लोभी–(हिं० वि०) लोभ-रहित ।
निर्वंश–(सं० वि०) जिसके आगे वंश में कोई न हो ।
निर्वचन–(सं० वि०) मौन ।
निर्वहना–(हिं० क्रि०) निभाना, चलाना ।
निर्वाचक–(सं० वि०) जो चुनता हो, चुननेवाला । **निर्वाचन**–(सं० पुं०) किसी मुख्य कार्य के लिये अनेक व्यक्तियों में से एक या अधिक को चुन लेना । **निर्वाचित**–(सं० वि०) चुना हुआ ।
निर्वाण–(सं० पुं०) निवृत्ति, शान्ति । **निर्वास**–(हिं०पुं०) प्रवास, विदेश-यात्रा ।
निर्वासक–(सं० पुं०) निर्वास करनेवाला ।
निर्वासन–(सं० पुं०) मारण, वध, नगर, देश, गाँव आदि से दण्ड रूप में बाहर निकाला जाना ।
निर्वाह–(सं० पुं०) पालन, निर्वाह, समाप्ति । **निर्वाहक**–(सं० वि०) किसी काम का निर्वाह करनेवाला । **निर्वाहना**–(हिं० क्रि०) निर्वाह करना ।
निर्वाहित–(सं० वि०) निबाहा हुआ ।
निर्विकल्प–(सं० वि०) भेद से रहित, स्थिर ।
निर्विकार–(सं० पुं०) जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो; (वि०) विकारशून्य, विघ्न या बाधा-रहित, बिना बाधा का ।
निर्विचेष्ट–(सं० वि०) अज्ञान, मूर्ख ।
निर्विवाद–(सं० वि०) कलहशून्य ।
निर्विवेक–(सं० वि०) अविवेकी ।
निर्विशंक–(सं० वि०) निर्भय, निडर ।
निर्बीज–(सं० वि०) बीजशून्य ।

निर्वृत्त–(सं० वि०) निष्पन्न।
निर्बोध–(सं० वि०) ज्ञानहीन, मूर्ख।
निर्व्याज–(सं० वि०) छल-रहित।
निर्व्याधि–(सं० वि०) व्याधिमुक्त, आरोग्य।
निर्व्यापार–(सं० वि०) बिना काम-काज का।
निर्हेतु–(सं० वि०) कारणहीन।
निलज्ज–(हिं० वि०) देखो निर्लज्ज।
निलज्जता–(हिं० स्त्री०) निर्लज्जता।
निलय–(सं० पुं०) गृह, घर, आश्रयस्थान।
निलहा–(हिं० वि०) नील संबंधी।
निवछावर–(हिं० स्त्री०) देखो निछावर।
निवर्त–(सं० वि०) हटाया हुआ।
निवर्तक–(सं० वि०) प्रतिबन्धक।
निवर्तन–(सं० पुं०) साधन।
निवसति–(सं० स्त्री०) घर, मकान।
निवसथ–(सं० पुं०) गाँव, सीमा, हद।
निवसन–(सं० पुं०) घर, वस्त्र, कपड़ा।
निवसना–(हिं० क्रि०) बसना, रहना।
निवाई–(हिं० वि०) नया, अनोखा।
निवाज–(हिं० वि०) कृपा करनेवाला।
निवाजना–(हिं० क्रि०) अनुग्रह करना।
निवाना–(हिं० क्रि०) झुकाना, नीचे की ओर करना।
निवार–(सं० वि०) रोकनेवाला।
निवारण–(सं० पुं०) निवृत्ति, छुटकारा।
निवारणीय–(सं० वि०) रोकने या हटाने योग्य।
निवारन–(हिं० पुं०) देखो निवारण।
निवारना–(हिं० क्रि०) निषेध करना, मना करना, हटाना, दूर करना।
निवास–(सं० पुं०) रहने का स्थान, आश्रम, गृह, घर।
निवासस्थान–(सं० पुं०) रहने का स्थान, घर।
निवासी–(सं० वि०) बसनेवाला, रहनेवाला।
निविड़–(सं० वि०) गहरा, घना।
निविड़ता–(सं० स्त्री०) गहरापन, घनापन
निविष्ट–(सं० वि०) प्रविष्ट, घुसा हुआ।
निवृत्त–(सं० वि०) घिरा हुआ।
निवृत्ति–(सं० स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा।
निवेद–(हिं० पुं०) देखो नैवेद्य।
निवेदक–(सं० वि०) प्रार्थना करनेवाला।
निवेदन–(सं० पुं०) प्रार्थना, विनती।
निवेदना–(हिं० क्रि०) विनती करना, प्रार्थना करना। निवेदित–(सं० वि०) निवेदन किया हुआ, कहा हुआ, अर्पण किया हुआ। निवेदी–(सं० वि०) निवेदन करनेवाला, प्रकाशक।
निवेरना–(हिं० क्रि०) निबटाना, तय करना।
निवेरा–(हिं० क्रि०) छाँटा हुआ, चुना हुआ।
निवेश–(सं० पुं०) शिविर, डेरा।
निवेशन–(सं० पुं०) स्थापन, स्थिति।
निशंक–(हिं० वि०) निर्भय, निडर।
निश–(हिं० स्त्री०) रात्रि।
निशा–(सं० स्त्री०) रात्रि, रात।
निशाकर–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
निशाचर–(सं० पुं०) राक्षस, प्रेत, भूत; (वि०) रात को चलनेवाला। निशाचरी–(सं० स्त्री०) राक्षसी।
निशाजल–(सं० पुं०) पाला, ओस।
निशाटन–(सं० पुं०) रात के समय में भ्रमण।
निशाधीश–(सं० पुं०) निशापति, चन्द्रमा।
निशानाथ–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
निशान्त–(सं० पुं०) पिछली रात, प्रभात, तड़का।
निशान्ध–(सं० पुं०) जिसको रात में सूझ न पड़ता हो।

निशापति–(सं० पुं०) देखो निशाकर, चन्द्रमा ।
निशामुख–(सं० पुं०) गोधूलि वेला ।
निशावसान–(सं० पुं०) रात का अन्तिम भाग, तड़का ।
निशि–(सं० स्त्री०) रजनी, रात ।
निशिकर–(सं० पुं०) चन्द्रमा ।
निशिचर–(हिं० पुं०) निशाचर ।
निशित–(सं० वि०) चोखा किया हुआ; (हिं० वि०) पैना, धारदार ।
निशिदिन–(हिं० क्रि० वि०) रात-दिन ।
निशिनाथ, निशिनायक, निशिपति, निशिपाल–(सं० पुं०) चन्द्रमा ।
निशिवासर–(हिं० पुं०) रात दिन, सर्वदा ।
निशीथ–(सं० पुं०) रात्रि, रात, आधी-रात ।
निश्चक्षु–(सं० वि०) नेत्रहीन, अन्धा ।
निश्चन्द्र–(सं० वि०) चन्द्रमा-रहित ।
निश्चय–(सं० पुं०) निर्णय, विश्वास, पक्का विचार । निश्चयरूप, निश्चयात्मक–(सं०वि०) बिना सन्देह का ।
निश्चयी–(सं० वि०) स्थिर किया हुआ ।
निश्चल–(सं० वि०) स्थिर, अचल । निश्चलता–(सं० स्त्री०) दृढ़ता, स्थिरता ।
निश्चायक–(सं० वि०) निश्चय करनेवाला ।
निश्चिन्त–(सं० वि०) चिन्तारहित ।
निश्चेतन–(सं० वि०) चैतन्यशून्य ।
निश्चेष्ट–(सं० वि०) निश्चल, स्थिर, अचेत ।
निश्चेष्टा–(सं० स्त्री०) निश्चलता ।
निश्च–(हिं० पुं०) देखो निश्चय ।
निश्छिद्र–(सं० वि०) बिना छेद का ।
निश्छेद–(सं० वि०) गणित में अविभाज्य राशि ।
निश्रयणी, निश्रेणी–(सं० स्त्री०) सोपान, सीढ़ी ।
निश्रेयस–(हिं० पुं०) कल्याण, मोक्ष ।
निश्वस्य, निश्वास–(सं० पुं०) दीर्घ निश्वास का परित्याग, आह भरना ।
निश्शंक–(सं० वि०) निर्भय, निडर ।
निशेष–(सं० वि०) जिसमें कुछ बाकी न हो ।
निषङ्ग–(सं० पुं०) तूणीर, तरकस ।
निषण्ण–(सं० पुं०) बैठा हुआ ।
निषधाभास–(सं० पुं०) आक्षेप अलंकार ।
निषिद्ध–(सं० वि०) जिसका निषेध किया गया हो, दूषित ।
निषेचन–(सं०पुं०) सींचना, भिगाना ।
निषेध–(सं० पुं०) वर्जन, बाधा, रुकावट; (सं० वि०) रोकनेवाला ।
निषेधपत्र–(सं० पुं०) वह पत्र जिसके द्वारा किसी प्रकार का निषेध किया जावे । निषेधविधि–(सं० पुं०) वह आज्ञा जिसके द्वारा किसी बात का निषेध किया जावे । निषेधित–(सं० वि०) निषेध किया हुआ । निषेधी–(सं० वि०) निषेध करनेवाला ।
निषेधोक्ति–(सं० स्त्री०) निषेध-वाक्य ।
निषेवितव्य–(सं० वि०) सेवा करने योग्य ।
निष्कण्टक–(सं० वि०) कंटकहीन, उपद्रव-रहित, निर्विघ्न ।
निष्कपट–(सं० वि०) निश्छल । निष्कपटता–(सं० स्त्री०) सरलता ।
निष्करुण–(सं० वि०) दयारहित ।
निष्कर्मा–(सं० वि०) अकर्मी, आलसी ।
निष्कर्ष–(सं० पुं०) सारांश, सार, निचोड़ ।
निष्कलंक–(सं० वि०) जिसमें किसी प्रकार का कलंक न हो, निर्दोष ।
निष्कल्मष–(सं० वि०) कलंकहीन ।

निष्काम–(सं० वि०) कामना-रहित ।
निष्कासन–(सं० पुं०) बाहर करना ।
निष्कासित–(सं० वि०) बाहर निकाला हुआ ।
निष्कृति–(सं०स्त्री०) निस्तार, छुटकारा ।
निष्क्रम–(सं० पुं०) घर से बाहर निकलने का कार्य; (वि०) बिना क्रम का ।
निष्क्रमण–(सं० पुं०) घर से बाहर निकलना । **निष्क्रिय**–(सं० वि०) व्यापारशून्य, क्रिया या चेष्टारहित ।
निष्क्रय–(सं० पुं०) किसी वस्तु के स्थान पर दिया जानेवाला धन, विनिमय, बदला ।
निष्क्रांत–(सं०वि०) निकला या निकाला हुआ ।
निष्ठा–(सं० स्त्री०) निश्चय, धर्मादि में श्रद्धा ।
निष्ठीव–(सं० पुं०) थूक, खखार ।
निष्ठुर–(सं० वि०) कठोर, कठिन, क्रूर ।
निष्ठुरता–(सं० वि०) निर्दयता, क्रूरता ।
निष्पक्ष–(सं० वि०) पक्षपातरहित ।
निष्पत्ति–(सं० स्त्री०) समाप्ति, सिद्धि ।
निष्पन्द–(सं० वि०) जिसमें किसी प्रकार का कम्प न हो ।
निष्पादित–(सं० वि०) सम्पादित, उत्पादित ।
निष्प्रकाश–(सं० वि०) जिसमें प्रकाश न हो ।
निष्प्रताप–(सं० वि०) प्रतापहीन ।
निष्प्रतिघ–(सं० वि०) जिसमें कोई रुकावट न हो । **निष्प्रतिपक्ष**–(सं०वि०) शत्रुहीन । **निष्प्रतिभ**–(सं० वि०) मूर्ख, जड़ ।
निष्प्रपञ्च–(सं० वि०) प्रपंचरहित ।
निष्प्रभ–(सं० वि०) प्रभा-रहित, बिना चमक का । **निष्प्रभाव**–(सं० वि०) प्रभाव-रहित, बिना सामर्थ्य का ।
निष्प्रयत्न–(सं० वि०) यत्नहीन ।
निष्प्रयोजन–(सं० वि०) निरर्थक, व्यर्थ ।
निष्फल–(सं० वि०) निरर्थक ।
निस्–(सं० अव्य०) यह शब्द "निषेध, निश्चय, साकल्य तथा अतिक्रम अर्थ में व्यवहृत होता है ।"
निसंक–(हिं० वि०) देखो निश्शंक ।
निसठ–(हिं० वि०) निर्धन, दरिद्र ।
निसंस(हिं० वि०) नृशंस, क्रूर, निर्दय ।
निसंसना–(हिं० क्रि०) हाँफना ।
निस–(हिं० स्त्री०) निशा, रात्रि, रात ।
निसक–(हिं० वि०) अशक्त, दुर्बल ।
निसकर–(हिं० पुं०) चन्द्रमा ।
निसचय–(हिं० पुं०) देखो निश्चय ।
निसत्–(हिं० वि०) असत्य ।
निसतरना–(हिं० क्रि०) छुटकारा पाना ।
निसतार–(हिं० पुं०) देखो निस्तार ।
निसतारना–(हिं० क्रि०) मुक्त करना ।
निसद्योस–(हिं० क्रि० वि०) रात-दिन ।
निसनेहा–(हिं० स्त्री०) देखो निःस्नेहा ।
निसरना–(हिं० क्रि०) निकलना ।
निसर्ग–(सं० पुं०) प्रकृति, स्वभाव, स्वरूप, सृष्टि ।
निसवासर–(हिं० पुं०) रातदिन, सर्वदा ।
निसाँस, निसाँसा–(हिं० पुं०) ठंढी साँस; (वि०) मृतप्राय ।
निसा–(हिं० स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति, देखो निशा ।
निसाकर–(हिं० पुं०) देखो निशाकर ।
निसाचर–(हिं० पुं०) देखो निशाचर ।
निसान–(हिं० पुं०) नगाड़ा, धौंसा, सन्ध्या, चन्द्रमा ।
निसारना–(हिं० क्रि०) बाहर करना, निकालना ।
निसास–(हिं० पुं०) देखो निःश्वास ।
निसि–(हिं० स्त्री०) देखो निशि ।

निसिचर, निसिचारी–(हिं० पुं०) देखो निशिचर ।
निसित–(हिं०वि०) तीव्र ।
निसिदिन–(हिं० क्रि० वि०) रात-दिन ।
निसिवर–(हिं०पुं०) निशिकर, चन्द्रमा ।
निसिवासर–(हिं०क्रि० वि०) रातदिन ।
निसीठा–(हिं० वि०) नीरस, फीका ।
निसीथ–(हिं० पुं०) आधी रात ।
निसु–(हिं० स्त्री०) निशा, रात्रि, रात ।
निसुका–(हिं० वि०) दरिद्र, गरीब ।
निसूदक–(सं० वि०) हिंसक । निसूदन–(सं० पुं०) हिंसा, वध; (विं०) मारनेवाला ।
निसृष्ट–(सं० वि०) प्रेरित, भेजा हुआ ।
निसेनी–(हिं० स्त्री०) सोपान, सीढ़ी ।
निसेस–(हिं० पुं०) चन्द्रमा ।
निसैनी–(हिं० स्त्री०) देखो निसेनी ।
निसोग, निसोच–(हिं० वि०) जिसको किसी प्रकार की चिन्ता न हो ।
निस्केवल–(हिं० वि०) निर्मल, शुद्ध ।
निस्तत्व–(सं०वि०) तत्वहीन, निःसार ।
निस्तन्द्र–(सं० वि०) तन्द्रारहित ।
निस्तब्ध–(सं० वि०) निश्चेष्ट । निस्तब्धता–(सं० स्त्री०) सन्नाटा ।
निस्तरण–(सं० पुं०) निस्तार, छुटकारा । निस्तरना–(हिं०क्रि०) छूटना ।
निस्तल–(सं० वि०) बिना पेंदी का ।
निस्तार–(सं० पुं०) निस्तरण, उद्धार ।
निस्तारक–(सं० वि०) मोक्ष देनेवाला ।
निस्तारना–(हिं० क्रि०) मुक्त करना ।
निस्तिमिर–(सं० वि०) अन्धकार-रहित ।
निस्तुष–(सं०वि०) जिसमें भूसी न हो, निर्मल ।
निस्तेज–(सं० वि०) प्रभा-रहित, मलिन ।
निस्तोय–(सं० वि०) जल-रहित ।
निस्त्रप–(सं० वि०) निर्लज्ज; (पुं०) खड्ग, तलवार ।
निस्पन्द–(सं०वि०)जिसमें कम्प न हो ।
निस्पन्दी–(सं० वि०) काँपता हुआ ।
निस्पृह–(सं०वि०) जिसको किसी प्रकार का लोभ या लालच न हो । निस्पृहता–(सं० स्त्री०)निस्पृह होने का कार्य ।
निस्व–(सं० वि०) दरिद्र, गरीब ।
निस्वन–(सं० पुं०) शब्द ।
निस्वास–(हिं० पुं०) देखो निश्वास ।
निस्संकोच–(हिं० वि०) संकोच-रहित ।
निस्संतान–(हिं० वि०) संतति-रहित ।
निस्संदेह–(हिं० क्रि० वि०) अवश्य ।
निस्सरण–(सं० पुं०) निकास ।
निस्सहाय–(हिं० वि०) निराश्रय ।
निस्सारित–(सं० वि०) निकाला हुआ ।
निस्सीम–(सं० वि०) सीमा-रहित, असीम, अपार ।
निस्स्वार्थ–(हिं० वि०) स्वार्थ से रहित ।
निहंग–(हिं०वि०)अकेला, नंगा, निर्लज्ज ।
निहन्ता–(हिं० वि०) प्राणघातक ।
निहकाम–(हिं० पुं०) देखो निष्काम ।
निहचय–(हिं० वि०) देखो निश्चय ।
निहचल–(हिं० वि०) देखो निश्चल ।
निहित–(सं० वि०) नष्ट, फेंका हुआ, मार डाला हुआ ।
निहत्था–(हिं० वि०) जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो ।
निहनन–(स० पुं०) मारण, वध ।
निहफल–(हिं० वि०) देखो निष्फल ।
निहाई–(हिं० स्त्री०) पक्के लोहे का चौकोर टुकड़ा जिस पर लोहार या सोनार हथोड़े से धातु पीटते हैं ।
निहाउ–(हिं० पुं०) देखो निहाई ।
निहार–(सं० पुं०) नीहार, हिम, ओस, कुहरा, पाला ।

निहारना–(हिं०क्रि०) ध्यानपूर्वक देखना।
निहुकना–(हिं० क्रि०) झुकना ।
निहुड़ना, निहुरना–(हिं० क्रि०) झुकना, नवना। निहुराना–(हिं०क्रि०)झुकाना, नवाना।
निहुराई–(हिं० स्त्री०) निष्ठुरता ।
निहोरना–(हिं० क्रि०) विनती करना।
निहोरा–(हिं० पुं०) उपकार, अनुग्रह; (क्रि० वि०)वास्ते,लिये,निमित्त, द्वारा।
निह्नुत–(सं० वि०) छिपाया हुआ ।
नींद–(हिं० स्त्री०) निद्रा, स्वप्न ।
नीक, नीका–(हिं० वि०)स्वच्छ, सुन्दर।
नीके–(हिं० क्रि० वि०) भली भाँति ।
नीच–(सं० वि०) तुच्छ, अधम, पामर; (पुं०) क्षुद्र मनुष्य ।
नीचग–(सं०पुं०) नीचे की ओर बहनेवाला पानी; (वि०) पामर, ओछा।
नीचगा–(सं० स्त्री०) निम्नगा, नदी ।
नीचगामी–(हिं०वि०) नीचे जानेवाला।
नीचता–(सं० स्त्री०) अधमता, निचाई।
नीचत्व–(सं० पुं०) नीचता।
नीचट–(हिं० वि०) दृढ़, पक्का ।
नीचा–(हिं०वि०) जिसके आसपास का तल ऊँचा न हो, छोटा, ओछा, धीमा, झुका, अधिक लटका ।
नीचाशय–(सं०वि०) तुच्छ विचार का।
नीचे–(हिं० क्रि० वि०) नीचे की ओर, अधीनता में, न्यून, घटकर ।
नीज–(हिं० पुं०) रज्जु, रस्सी ।
नीजन–(हिं० पुं०) निर्जन स्थान ।
नीझर–(हिं०पुं०) पानी का सोता ।
नीठ–(हिं० क्रि० वि०) कठिनाई से ।
नीठि–(हिं० स्त्री०) अरुचि, अनिच्छा; (क्रि०वि०)किसी न किसी प्रकार से ।
नीठो–(क्रि०वि०) जो सुहावना न हो।
नीड़–(सं०पुं०) पक्षियों के रहने का घोंसला ।
नीत–(सं०वि०) गृहीत, लाया हुआ ।
नीति–(सं० स्त्री०) आचार, पद्धति, समाज का कल्याण करनेवाली व्यवहार की रीति, युक्ति, उपाय, चाल, राजा और प्रजा दोनों के लिये निर्धारण की हुई व्यवस्था, राजनीति ।
नीतिज्ञ–(सं० वि०) नीति जाननेवाला।
नीतिमान–(हिं० वि०) नीति-कुशल, सदाचारी ।
नीदना–(हिं०क्रि०) निद्रा लेना, सोना।
नीधना–(हिं० वि०) निर्धन, दरिद्र ।
नीबू–(हिं० पुं०) एक मध्यम आकार का काँटेदार वृक्ष जिसका गोल फल खट्टा होता है ।
नीम–(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसका प्रत्येक भाग कड़वा होता है ।
नीमटर–(हिं० वि०) जिसको किसी विद्या की पूरी जानकारी न हो ।
नीमन–(हिं०वि०)अच्छा, भला, नीरोग।
नीमर–(हिं० वि०) दुर्बल, बलहीन ।
नीमस्तीन–(हिं० स्त्री०) आधे बाँह की कुरती ।
नीर–(सं० पुं०) जल, पानी, कोई द्रव पदार्थ ।
नीरज–(सं० पुं०) पद्म, कमल, मोती, उशीर। नीरजात–(सं० वि०) जल से उत्पन्न; (पुं०) कमल ।
नीरद–(सं० पुं०) मेघ, बादल; (वि०) अदन्त, बिना दाँत का। नीरधर–(सं० पुं०) मेघ, बादल ।
नीरन्ध्र–(सं० वि०) छिद्र-रहित ।
नीरम–(हिं०पुं०) वह बोझ जो जहाज का समभार करने के लिये रक्खा जाता है।
नीररुह–(सं० पुं०) पद्म,कमल ।

नीरस–(सं० वि०) सूखा, स्वाद-रहित।
नीराजन–(सं० पुं०) दीपदान, आरती।
नीराजना–(हिं० स्त्री०) देवता को दीपक दिखलाने की विधि।
नीराञ्जन–(सं०पुं०) दीपदान, आरती।
नीरुज–(सं० वि०) रोगरहित, नीरोग, स्वस्थ।
नीरूप–(सं० वि०) रूपहीन, कुरूप।
नीरे–(हिं० क्रि० वि०) नियरे, पास में।
नीरोग–(हिं० वि०) रोगहीन, आरोग्य।
नील–(सं० पुं०) गहरा नीला रंग।
नीलकण्टक–(सं० पुं०) चातक पक्षी, पपीहा। **नीलकण्ठ**–(सं० वि०) जिसका कंठ नीला हो, एक प्रकार की चिड़िया जिसके पंख और कंठ नीले रंग के होते हैं। **नीलगाय**–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा हरिन जो गाय के बराबर होता है।
नीलपद्म–(सं० पुं०) नीला कमल।
नीलफला–(सं० स्त्री०) बैंगन, भंटा।
नीलमणि–(सं० पुं०) इन्द्रनील, नीलम।
नीला–(हिं०वि०) नीले रंग का; (पुं०) नीलम।
नीलाथोथा–(हिं० पुं०) तांबे का क्षार, तूतिया।
नीलाम्बर–(वि०) नीला वस्त्र पहिननेवाला।
नीलाम्बुज–(सं० पुं०) नील कमल।
नीलाहट–(हिं० स्त्री०) नीलापन।
नीलिमा–(हिं० स्त्री०) नीलापन।
नीली–(हिं० वि०) नीले रंग की।
नीलोत्पल–(सं० पुं०) नीला कमल।
नीवँ–(हिं० स्त्री०) भीत का आधार, नस्थिति, जड़, मूल।
नीव–(हिं० स्त्री०) देखो नीवँ।
नीवानास–(हिं०पुं०) सत्यानाश, सर्वनाश।
नीवार–(सं० पुं०) तिन्नी का चावल।
नीवि–(सं०स्त्री०) पण, पूँजी, स्त्री के कमर पर का वस्त्र बाँधने का डोरा, कमर में लपेटी हुई धोती की गाँठ, लहँगे में पड़ी हुई डोरी।
नीसक–(हिं० वि०) बलहीन।
नीसुआ, नीसू–(हिं० पुं०) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिस पर रखकर गड़ाँसे से चारा काटा जाता है।
नीहार–(सं० पुं०) तुषार, हिम, पाला।
नुकाना–(हिं० क्रि०) छिपाना।
नुकीला–(हिं० वि०) नोकदार।
नुक्कड़–(हिं० पुं०) नोक, अन्त, छोर।
नुक्का–(हिं० पुं०) नोक, नुकीला भाग।
नुचना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु का खिचकर अलग होना, उखड़ना, खरोंचा जाना।
नुचवाना–(हिं० क्रि०) नोचने के लिये किसी दूसरे को लगाना।
नुति–(सं०स्त्री०) स्तुति, वन्दना, पूजा।
नुनखरा, नुनखारा–(हिं० वि०) स्वाद में नमक के सदृश।
नुनना–(हिं० क्रि०) लुनना, कृषि फल काटना।
नुनेरा–(हिं०पुं०) नोनिया, नमक बनानेवाला।
नुनाई–(हिं०स्त्री०) सुन्दरता, लावण्य।
नूत–(हिं० वि०) नूतन, नया, अनोखा; (सं०वि०) नवीन, नया, अपूर्व, अनोखा।
नून–(हिं०पुं०) लवण, नमक; (वि०) देखो न्यून, कम।
नूनताई–(हिं० स्त्री०) न्यूनता, कमी।
नूपुर–(सं० पुं०) स्त्रियों के पैर में पहिनने का एक गहना, पैंजनी।
नृ–(सं० पुं०) मनुष्य, पुरुष। **नृकेशरी**–(सं० पुं०) नृसिंहावतार। **नृघ्न**–(सं०

वि०) नर-घातक। **नृजाति**–(सं०स्त्री०) मनुष्य-जाति।
नृतक–(हिं० वि०) नर्तक, नाचनेवाला।
नृत्य–(सं०वि०)ताण्डव नाच। **नृत्यकी**–(सं०स्त्री०) नर्तकी, नाचनेवाली।
नृत्यशाला–(सं० स्त्री०) नाचघर।
नृदेव,नृदेवता–(सं०पुं०) राजा, ब्राह्मण।
नृप–(सं० पुं०) नरपति, राजा। **नृपगृह**–राजमहल। **नृपति**–(सं० पुं०) राजा। **नृपमन्दिर**–(सं० पुं०) राजगृह, राजभवन।
नृपाल–(सं० पुं०) नृपति, राजा।
नृमेघ–(सं० पुं०) नरमेघ यज्ञ।
नृलोक–(सं० पुं०) मनुष्य लोक।
नृवाहन–(सं० पुं०) नरवाहन, कुवेर।
नृशंस–(सं० वि०) क्रूर, निर्दय, अपकारी; (सं० स्त्री०) निर्दयता, क्रूरता।
नृसिंह–(सं० पुं०) विष्णु का नरसिंह रूपी अवतार। **नृसिंह चतुर्दशी**–वैशाख मास की शुक्ला चतुर्दशी।
नृहन–(सं० पुं०) नरघातक।
ने–(हिं० प्रत्य०) सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता का चिह्न जो उसके आगे लगाया जाता है।
नेउतना–(हिं० क्रि०) निमंत्रण देना।
नेउला–(हिं० पुं०) देखो नेवला।
नेग–(हिं० पुं०) पुरस्कार जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा इन कृत्यों में सहायता देनवालों को दिया जाता है। **नेगचार, नेगजोग**–(हिं० पुं०) विवाह आदि शुभ अवसरों पर दिया हुआ पुरस्कार। **नेगी**–(हिं० पुं०) नेग पानेवाला। **नेगीजोगी**–(हिं० पुं०) नेग पानेवाला।
नेवछावर–(हिं० स्त्री०) देखो निछावर।
नेटा–(हिं० पुं०) नाक से निकलनेवाला कफ।
नेठना–(हिं० क्रि०) देखो नाठना।
नेड़े–(हिं० स्त्री०) समीप, निकट, पास।
नेत–(हिं० पुं०) निर्धारण, निश्चय।
नेता–(हिं० पुं०) नायक, सरदार,अगुआ।
नेति–(सं० पुं०) एक संस्कृत वाक्य जिसका अर्थ है "इति नहीं" अर्थात् अन्त नहीं है।
नेती–(हिं० स्त्री०) मथानी में लपेटकर खींचने की रस्सी। **नेतीधोती**–(हिं० स्त्री०) हठयोग की वह क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में डालकर आँतें साफ की जाती हैं।
नेतृत्व–(सं० पुं०) नायकता, अध्यक्षता।
नेत्र–(सं० पु०) चक्षु, नयन, आँख।
नेत्रकोष–आँख का परदा।
नेत्रजल–(सं० पुं०) अश्रु, आँसू।
नेत्रमल–(सं० पुं०) आँख का कीचड़।
नेत्ररञ्जन–(सं० पुं०) कज्जल, काजल।
नेत्ररोम–(सं० पुं०) आँख की बरौनी।
नेत्रवारि–(सं० पुं०) अश्रुजल, आँसू।
ननुआ, नेनुवा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की तरकारी, घिया, तरोई।
नेपथ्य–(सं० पुं०) वेष, भूषण, अभिनय, नाटक आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट नटी नाना प्रकार के वेश सजते हैं।
नेब–(हिं० पुं०) सहायक मंत्री, दीवान।
नेबु–(हिं० पुं०) देखो नीबू।
नेम–(हिं० पुं०) नियम, बन्धेज, रीति।
नेमत–(हिं० स्त्री०) वैभव।
नेमि–(सं० स्त्री०) पहिये का घेरा, चक्कर, वज्र, कुवें की जगत।
नेमी–(हिं० वि०) धर्म की दृष्टि से पाठ-

पूजा, व्रत, उपवास आदि नियमों का पालन करनेवाला।
नेरे–(हिं०क्रि०वि०) निकट, समीप, पास।
नेवज–(हिं० पुं०) नैवेद्य, भोग।
नेवतना–(हिं० क्रि०) निमंत्रण देना, नेवता भेजना। नेवतहारी–(हिं० पुं०) जिसको निमंत्रण दिया जावे।
नेवता–(हिं० पुं०) देखो न्यौता।
नेवर–(हिं०पुं०) पैर का गहना; (वि०) बुरा। नेवरना–(हिं० क्रि०) दूर होना, समाप्त होना।
नेवला–(हिं० पुं०) गिलहरी के आकार का मांसाहारी एक जन्तु जो भूरे रंग का होता है।
नेवा–(हिं० पुं०) लोकोक्ति, कहावत।
नेष्ट–(सं० वि०) शास्त्र से निषिद्ध।
नेसुक–(हिं० वि०) अल्प, थोड़ा, तनिक; (क्रि० वि०) अल्प मात्रा में।
नेह–(हिं० पुं०) स्नेह, प्रीति, प्रेम, घी।
नेही–(हिं० वि०) स्नेह करनेवाला।
नैक–(सं० वि०) अनेक, बहुत।
नैकशः–(सं० वि०) अनेक बार।
नैकशय–(सं० पुं०) राक्षस।
नैगम–(सं० पुं०) नय, नीति।
नैदाघ–(सं० वि०) ग्रीष्म संबंधी।
नैधन–(सं० पुं०) निधन, मरण।
नैन–(हिं० पुं०) नयन, नेत्र, मक्खन। नैनसुख–(हिं० पुं०) एक प्रकार का सूती चिकना कपड़ा।
नैपुण, नैपुण्य–(सं० पुं०) निपुणता।
नैमित्तिक–(सं० वि०) जो किसी निमित्त से किया जाय।
नैया–(हिं० स्त्री०) नाव।
नैयायिक–(सं० पुं०) न्याय शास्त्र का जाननेवाला।
नैर–(हिं० पुं०) देश, नगर।
नैरपेक्ष–(सं० पुं०) अपेक्षा का अभाव।
नैराश्य–(सं० पुं०) निराशा का भाव।
नैऋत–(सं० पुं०) पश्चिम दक्षिण का कोना, इसका स्वामी।
नैऋति–(सं० स्त्री०) दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच की दिशा।
नैर्मल्य–(सं० पुं०) स्वच्छता, निर्मलता।
नैर्लज्ज–(सं० पुं०) निर्लज्जता।
नैवेद्य–(सं० पुं०) वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढ़ाई जावे।
नैश–(सं० वि०) निशा संबंधी, रात का।
नैश्चित्य–(सं० पुं०) निश्चय।
नैज–(सं० वि०) निज संबंधी, अपना।
नैष्ठुर्य–(सं० पुं०) निठुरता, क्रूरता।।
नैसर्गिक–(सं०वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक
नैसर्गिकी–(हिं० वि०) स्वाभाविक।
नैसा–(हिं० वि०) बुरा।
नैहर–(हिं० पुं०) स्त्री के पिता का घर, मायका।
नो–(सं० अव्य०) नहीं।
नोआ–(हिं० पुं०) दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधने की रस्सी।
नोई–(हिं० स्त्री०) देखो नोआ।
नोकझोंक–(हिं०स्त्री०) शृंगार, ठाट-बाट।
नोकदार–(हिं० वि०) जिसमें नोक हो, चुभनेवाला, चित्त पर प्रभाव डालनेवाला, तड़क-भड़क का।
नोकाझोंकी–(हिं० स्त्री०) वादाविवाद, छेड़-छाड़ की बातें।
नोकीला–(हिं० वि०) देखो नुकीला।
नोच–(हिं० स्त्री०) नोचने की क्रिया या भाव, चारों ओर की माँग। नोचना–(हिं० क्रि०) उखाड़ना, खरोचना, पीछे पड़ जाना।
नोचू–(हिं० पुं०) नोचनेवाला।
नोदन–(सं० पुं०) खंडन, प्ररणा।

नोधा–(सं० अव्य०) नवधा, नव प्रकार।
नोन–(हिं० पुं०) लवण, नमक।
नोनचा–(हिं० पुं०) नमकीन अचार।
नोना–(हिं० पुं०) लोनी मिट्टी; (वि०) नमक मिला हुआ, खारा।
नोनिया–(हिं० पुं०) लोनी मिट्टी में से नमक निकालनेवाला।
नोवना–(हिं० क्रि०) दूहते समय गाय का पिछला पैर रस्सी से बाँधना।
नोहर–(हिं० वि०) दुर्लभ, अलभ्य।
नौं–(सं० स्त्री०) नौका, नाव।
नौ–(हिं० वि०) नव, जो गिनती में आठ और एक हो, एक कम दस की संख्या।
नौका–(सं० स्त्री०) तरणि, नाव, पोत।
नौग्रही–(हिं० स्त्री०) हाथ में पहिनने का एक गहना।
नौछावर–(हिं० स्त्री०) देखो निछावर।
नौज–(हिं० अव्य०) ईश्वर करे, ऐसा न हो कि, न सही, न हो।
नौजीविक–(सं० पुं०) वह जो नाव चलाकर अपनी जीविका करता हो।
नौता–(हिं० पुं०) देखो न्यौता, निमंत्रण; (वि०) नया।
नौतन–(हिं० वि०) देखो नूतन, नया।
नौतम–(हिं० वि०) अत्यन्त नवीन, बहुत नया; (पुं०) विनय, नम्रता।
नौतोड़–(हिं० वि०) नया तोड़ा हुआ, जो पहिले-पहिल तोड़ा गया हो।
नौदण्ड–(सं० पुं०) नाव का डाँड़ा।
नौध–(हिं० पुं०) नया पौधा, अँखुवा।
नौधा–(हिं० पुं०) देखो नवधा।
नौना–(हिं० पुं०) नवना, झुकना।
नौमि–(सं० क्रि०) एक संस्कृत का वाक्य जिसका अर्थ है—मैं नमस्कार करता हूँ।
नौमी–(हिं० स्त्री०) नवमी, किसी पक्ष की नवीं तिथि।
नौरंगी–(हिं० स्त्री०) देखो नारंगी।
नौलक्खा, नौलखा–(हिं० वि०) जिसका मूल्य नौ लाख हो, बहुमूल्य, अनमोल।
नौल–(हिं० पुं०) देखो नेवला, नकुल।
नौसरा–(हिं० पुं०) नौ लड़ी की माला या हार।
नौसादर–(हिं० पुं०) एक तीक्ष्ण क्षार या नमक जो सींग, हड्डी, खुर, बाल आदि का भभके से अर्क खींचकर निकाला जाता है।
नौसिख–(हिं० वि०) नवशिक्षित।
नौसिखिया, नौसिखुआ–(हिं० वि०) जो किसी विद्या या कला में पक्का न हुआ हो।
नौसेना–(हिं० स्त्री०) वह सेना जो जहाजों पर से लड़ती हो।
नौहँड़–(हिं० पुं०) मिट्टी की नई हाँड़ी, कोरी हँड़िया।
नौहँड़ा–(हिं० पुं०) पितृपक्ष, कनागत।
न्यग्रोध–(सं० पुं०) वट वृक्ष, बरगद।
न्यस्त–(सं० वि०) फेंका हुआ, त्युक्त, छोड़ा हुआ।
न्याउ–(हिं० पुं०) देखो न्याय।
न्याति–(हिं० स्त्री०) ज्ञाति, जाति।
न्याय–(सं० पुं०) नियम के अनुकूल बात, वीति, अधिकारी और अनधिकारी तथा दोषी और निर्दोषी का निणय।
न्यायकर्ता–(सं० पुं०) न्याय करनेवाला, दो पक्षों के विवाद का निर्णय करनेवाला। **न्यायतः**–(सं० अव्य०) धर्माधर्म और नीति के अनुसार ठीक न्याय।
न्यायता–(सं० स्त्री०) उपयुक्तता।
न्यायपथ–(सं०पुं०) उचित रीति। **न्यायपरता**–(सं०स्त्री०) न्यायी होने का भाव।
न्याययुक्त–(सं०वि०) न्याय पर चलनेवाला।
न्यायविहित–(सं०वि०) न्याय के अनुसार अथवा न्यायपूर्वक किया हुआ।

न्यायसभा–(सं० स्त्री०) न्यायालय।
न्यायाधीश–(सं० पुं०) न्यायकर्ता।
न्यायालय–(सं० पुं०) वह स्थान जहाँ पर अभियोग का न्याय किया जाता है।
न्यय्यी–(सं० वि०) न्याय पर चलनेवाला।
न्यारा–(हिं० वि०) अलग, निराला, अनोखा, भिन्न, अन्य।
न्यारिया–(हिं० पुं०) सोनारों के नियार (कूड़ा करकट को) धोकर इसमें से सोना-चाँदी निकालनेवाला।
न्यारे–(हिं० क्रि० वि०) दूर, अलग, पास नहीं, पृथक्।
न्याव–(हिं० पुं०) नियम, नीति, आचरण, पद्धति।
न्यास–(सं० पुं०) उपनिधि, धरोहर, थाती, निक्षेप।
न्यासिक–(सं० वि०) धरोहर रखनेवाला।
न्यन–(सं० वि०) क्षुद्र, हीन, अल्प, नीच। **न्यनतर**–(सं० वि०) प्रचलित परिमाण से कम। **न्यूनता**–(सं० स्त्री०) अल्पता, कमी।
न्यूनाङ्ग–(सं० वि०) अंगहीन, खंज, लंगड़ा।
न्योछावर–(हिं० स्त्री०) देखो निछावर।
न्योतना–(हिं० क्रि०) निमंत्रित करना।
न्योतहरी–(हिं० पुं०) न्योते में आया हुआ मनुष्य।
न्योला–(हिं० पुं०) देखो नेवला।
न्हाना–(हिं० क्रि०) देखो नहाना, स्नान करना।

प

प–हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला के व्यञ्जन वर्ण का इक्कीसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण ओंठ से होता है, यह स्पर्श-वर्ण कहलाता है।
प–(सं० पुं०) हवा, पत्ता, पतन, अन्त, शब्द के अन्त में लगने से इसका अर्थ 'पालन करनेवाला' होता है।
पंक–(हिं० पुं०) देखो पंक।
पङ्क्ति–(सं० स्त्री०) देखो पंक्ति।
पंख–(हिं० पुं०) पक्ष, पर, डैना।
पंखड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो पखड़ी।
पंखा–(हिं० पुं०) व्यजन, बिजना, बना।
पंखियाँ, पंखी–(हिं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, पखड़ी; (स्त्री०) छोटा पंखा, पहिये की कीचड़ रोकने की धातु या लकड़ी की पट्टी।
पँखुड़ा, पखुरा–(हिं० पुं०) कन्धे और बाँह का जोड़, पखुरा।
पँखेरू–(हिं० पुं०) पखेरू, पक्षी।
पंग–(हिं० वि०) पंगु, लँगड़ा।
पंगत–(हिं० स्त्री०) पाँती, भोजन के समय भोजन करनेवालों की पंक्ति, सभा, समाज।
पंच–(हिं० पुं०) पाँच की संख्या या अंक, पाँच या अधिक मनुष्यों का समुदाय, समाज, न्याय-सभा।
पंचकोस–(हिं० पुं०) पाँच कोस की लंबाई-चौड़ाई के बीच में बसी हुई भूमि। **पंचक्रोशी**–(हिं० स्त्री०) काशी की परिक्रमा।
पंचतपा–(हिं० पुं०) अपने चारों ओर आग जलाकर तथा धूप में बैठकर तप करनेवाला साधु।
पँचमेल–(हिं० वि०) जिसमें पाँच वस्तु मिली हों।
पँचरंगा–(हिं० वि०) पाँच रंग का, रंग-बिरंगा।
पँचलड़ा–(हिं० वि०) पाँच लड़ों का।
पँचलड़ी या पँचलरी–(हिं० स्त्री०) गले में पहिनने की पाँच लरों की माला।
पंचानबे–(हिं० वि०) नब्बे और पाँच की संख्या का; (पुं०) नब्बे और पाँच की संख्या ९५।

पंचायत–(हिं० स्त्री०) निर्धारित मनुष्यों का वह समाज जो किसी विवाद विषय को निश्चित करने के लिये नियुक्त किया जाता है।
पंचायती–(हिं० वि०) पंचायत संबंधी, साझ का, मिला-जुला, सर्व साधारण का।
पंचालिस–(हिं० वि०) देखो पैंतालिस।
पंछा–(हिं० पुं०) छाला, फफोला, एक प्रकार का स्राव जो मनुष्य के शरीर से अथवा पौधों में से निकलता है।
पंछी–(हिं० पुं०) पक्षी, चिड़िया।
पंजरी–(हिं० स्त्री०) अरथी, टिकठी।
पंजारा–(हिं० पुं०) रुई धुननेवाला, धुनिया
पंजीरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।
पंडल–(हिं० वि०) पीले रंग का; (पुं०) शरीर, पिण्ड।
पंड़वा–(हिं० पुं०) भैंस का बच्चा।
पंडा–(हिं० पुं०) किसी तीर्थ या मन्दिर का पुजारी, घाटिया; (सं० स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि, विवेक।
पंडित–(हिं० पुं०) देखो पण्डित। **पंडिताई**–(हिं० स्त्री०) पाण्डित्य, विद्वत्ता।
पंडिताऊ–(हिं० वि०) पंडितों के ढंग का। **पंडितानी**–(हिं० स्त्री०) पंडित की स्त्री, ब्राह्मणी।
पंथ–(हिं० पुं०) रीति, चाल, व्यवस्था, संप्रदाय, धर्ममार्ग, मत।
पंथान–(हिं० पुं०) पथ, मार्ग।
पंथकी, पंथिक–(हिं० पुं०) पथिक, बटोही
पंथी–(हिं० पुं०) किसी संप्रदाय का अनुयायी।
पंदरह–(हिं० वि०) दस और पाँच की संख्या का; (पुं०) दस और पाँच की संख्या १५। **पंदरहवाँ**–(हिं० वि०) जो पन्द्रह के स्थान पर हो।
पँचलाना–(हिं० क्रि०) फुसलाना, बहलाना।
पँवर–(हिं० स्त्री०) सामान, सामग्री।
पँवरना–(हिं० क्रि०) पानी में तैरना, पता लगाना।
पँवरि–(हिं० स्त्री०) ड्योढ़ी।
पँवरिया–(हिं० पुं०) द्वारपाल, शुभ अवसर पर द्वार पर बैठकर मंगल गीत गानेवाला, भिक्षुक।
पँवरीह–(हिं० स्त्री०) खड़ाऊँ।
पँवाड़ा–(हिं० पुं०) मनगढ़ी कहानी, वृथा के विस्तार-सहित कही हुई बात।
पँवारना–(हिं० क्रि०) हटाना, दूर करना।
पंसरहट्टा–(हिं० पुं०) वह हाट जहाँ पंसारियों की दूकान हो। **पंसारी**–(हिं० पुं०) वह बनिया जो मसाले तथा औषधिके लिये जड़ी-बूटी बेचता हो।
पँसली–(हिं० स्त्री०) देखो पसली।
पँसेरी–(हिं० स्त्री०) पाँच सेर की तौल या बाट।
पइसना–(हिं० क्रि०) पैठना, घुसना।
पइसार–(हिं० पुं०) प्रवेश, पैठ।
पकड़–(हिं० स्त्री०) पकड़ने का ढंग, भिड़ंत, लड़ाई, दोष या भूल, ढूंढ़कर निकालन की क्रिया। **पकड़ना**–(हिं० क्रि०) थामना, धरना, पता लगाना, रोक रखना, ठहराना।
पकड़वाना–(हिं० क्रि०) पकड़न में दूसरे को प्रवृत्त करना।
पकड़ाना–(हिं० क्रि०) ग्रहण कराना, थँमाना
पकना–(हिं० क्रि०) सीझना, रींधना, चुरना, सौदा पटाना, आँच खाकर गलना या तैयार होना।
पकरना–(हिं० क्रि०) देखो पकड़ना।
पकवान–(हिं० पुं०) घी या तेल में पकाकर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।
पकवाना–(हिं० क्रि०) पकाने का काम

दूसरे से कराना।

पकाई–(हिं० स्त्री०) पकाने की क्रिया या शुल्क।

पकार–(सं० पुं०) 'प' अक्षर, 'प' स्वरूप वर्ण। **पकारादि**–(सं० वि०) जिसके आदि म 'प' अक्षर हो। **पकारान्त**–(सं० वि०) जिसके अंत में 'प' अक्षर हो। **पकाव**–(सं०पुं०)पकाने का भाव, पीव।

पकावन–(हिं० पुं०) देखो पकवान।

पकौड़ा–(हिं० पुं०) घी या तेल म पकी हुई बेसन या पीठी की बरी। **पकौड़ी**–(हिं०स्त्री०)छोट आकार का पकौड़ा।

पक्का–(हिं० पुं०)अन्न या फल जो पुष्ट होकर खाने योग्य हो गया हो, पका हुआ, अनुभव-प्राप्त, निपुण, निश्चित, प्रामाणिक।

पक्व–(सं०वि०)पका हुआ,पुष्ट, पक्का।

पक्वान्न–(सं० पुं०) पका हुआ अन्न, खाने की वस्तु जो घी, पानी आदि के साथ आग पर पकाई गई हो।

पक्वाशय–(सं० पुं०) पट के भीतर का नाभि के नीचे का भाग।

पक्ष–(सं० पुं०) पंद्रह दिन का काल, पाख, पक्षियों का डैना, पर, किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अंगों में से एक, सेना बल। **पक्षघात**–(सं० पुं०)वह वात रोग जिसमें शरीर के एक ओर के अंग सुन्न हो जाते हैं, लकवा। **पक्षधर**–(सं० पुं०) चन्द्रमा, पक्षी। **पक्षपात**–(सं० पुं०) उचित और अनुचित का विचार न करते हुए। किसी के अनुकूल प्रवृत्ति।

पक्षपाती–(सं० वि०) उचित अनुचित विचार न करके किसी के अनुकूल प्रवृत्त होना। **पक्षपोषक**–(सं० वि०) पक्षसमर्थक।

पक्षाघात–(सं० पुं०) एक प्रकार का वायु रोग जिसमें शरीर का आधा भाग निश्चेष्ट और क्रियाहीन हो जाता है, लकवा।

पक्षान्तर–(सं० पुं०) दूसरा पक्ष, मतान्तर।

पक्षिशाला–(सं० स्त्री०) चिड़ियों के रहने का घर। **पक्षी**–(सं० पुं०) खग, विहंगम, शकुन्त, चिड़िया; (हिं० वि०) पक्षपाती।

पक्ष्म–(हिं० पुं०) आँख की बरौनी।

पखंड–(हिं० पुं०)देखो पाखण्ड। **पखण्डी**–(हिं० वि०) देखो पाखण्डी।

पखड़ी–(हिं० स्त्री०) दल, फूलों का रंगीन पटल।

पखपान–(हिं० पुं०) पैर में पहिनने का एक गहना।

पखरना–(हिं० क्रि०) धोना। **पखराना**–(हिं० क्रि०) पखारने या धोने का काम कराना।

पखरी–(हिं०स्त्री०)देखो पाखर,पाखड़ी।

पखवाड़ा, पखवारा–(हिं०पुं०)अर्ध मास, पन्द्रह दिन का समय।

पखान–(हिं० पुं०) देखो पाषाण, पत्थर।

पखाना–(हिं० पुं०) उपाख्यान, कथा, कहावत।

पखारना–(हिं० क्रि०) पानी से धोकर मल हटाना।

पखाली–(हिं०पुं०) मसक में पानी भरने-वाला।

पखावज–(हिं० स्त्री०) मृदंग से छोटा एक प्रकार का बाजा। **पखावजी**–(हिं० पुं०) पखावज बजानेवाला।

पखिया–(हिं० पुं०) झगड़ा करनेवाला, बगली भाग।

पखेरू–(हिं० पुं०) पक्षी, चिड़िया।
पखौआ–(हिं० पुं०) पंख, पर।
पखौटा–(हिं० पुं०) डैना, पर।
पखौरा–(हिं० पुं०)कंधे पर की हड्डी।
पग–(हिं० पुं०) पैर, पाँव, डग, फाल।
पगडंडी–(हिं० स्त्री०) मैदान या जंगल का वह पतला मार्ग जो मनुष्यों के चलने से बन गया हो।
पगड़ी–(हिं० स्त्री०) सिर पर लपेटकर बाँधन का कपड़ा, चीरा, उष्णीश,मुरेठा।
पगतरी–(हिं० स्त्री०) उपानह, जूता।
पगदासी–(हिं० स्त्री०) जूता, खड़ाऊँ।
पगना–(हिं० स्त्री०) रस के साथ पककर मिलना, मग्न होना, प्रेम में डूबना।
पगनियाँ–(हिं० स्त्री०) जूती।
पगपान–(सं० पुं०) पैर में पहिनने का एक गहना।
पगरा–(हिं० पुं०) डग, पग।
पगरी–(हिं० स्त्री०) देखो पगड़ी।
पगला–(हिं० पुं०) देखो पागल।
पगहा–(हिं० पुं०)पशु बाँधने की रस्सी।
पगा–(हिं० पुं०) पटका, डुपट्टा।
पगाना–(हिं० क्रि०) चाशनी में किसी वस्तु को पागने का काम दूसरे से कराना।
पगार–(हिं०पुं०) पैर में लगी हुई मिट्टी।
पगारना–(हिं० क्रि०) फैलाना।
पगियाना–(हिं० क्रि०) देखो पगाना।
पगिया–(हिं० स्त्री०) देखो पगड़ी।
पगुरना–(हिं० क्रि०) पागुर करना।
पघा–(हिं० पुं०) चौपायों को बाँधने की रस्सी, पगहा।
पघिलाना–(हिं० क्रि०)देखो पिघलाना।
पघेया–(हिं० पुं०) गाँव-गाँव घूम-घूमकर माल बेचनेवाला व्यापारी।
पङ्क–(सं० पुं०) कीचड़, कीच, लेप, मगर। **पङ्कज**–(सं० पुं०) पद्म, कमल; (वि०)कीचड़ में उत्पन्न होनेवाला। **पङ्कजात**–(सं० पुं०) पद्म, कमल। **पङ्कजावली**–(सं० स्त्री०) पद्म-समूह। **पङ्करुह**–(सं० पुं०) पद्म, कमल।
पङ्किल–(सं० वि०)कीचड़ से भरा हुआ।
पङ्केज–(सं० पुं०) पद्म, कमल।
पङ्केरुह–(सं० पुं०) पद्म, कमल।
पङ्कित–(सं० पुं०) पद्म, कमल।
पङ्क्ति–(सं०स्त्री०) श्रेणी, पाँती, भोज में एक साथ बैठकर खानेवालों की श्रेणी। **पङ्क्तिच्युत**–(सं०वि०) जाति से निकाला हुआ।
पङ्गु–(सं० वि०) खंज, लँगड़ा।
पङ्गुता–(सं० स्त्री०) पंगुत्व, लँगड़ापन।
पङ्गुल–(सं० वि०) लँगड़ा।
पचकना–(हिं० क्रि०) देखो पिचकना।
पचगुना–(हिं० वि०) पाँच गुना।
पचड़ा–(हिं० पुं०)प्रपंच, बखेड़ा, झंझट।
पचन–(स० पुं०) पकन या पकाने की क्रिया; (वि०) पकानेवाला।
पचना–(हिं० क्रि०) भोजन किये हुए पदार्थ का रसादि में परिणत होकर शरीर में लगने योग्य होना, समाप्त होना, नष्ट होना।
पचनीय–(सं० वि०) पचने योग्य।
पचपचा–(हिं० वि०)वह अधपका भोजन जिसका पानी अच्छी तरह से सूखा या जला न हो।
पचपचाना–(हिं० क्रि०) कीचड़ होना।
पचपन–(हिं० वि०) पचास और पाँच की संख्या का; (वि०) पचास और पाँच की संख्या ५५। **पचपनवाँ**–(हिं० वि०) जो गिनती में चौवन के बाद हो।
पचमेल–(हिं०वि०)कई तरह या मेल का।

पचरा–(हिं० पुं०) देखो पचड़ा।
पचलड़ी–(हिं० स्त्री०) पाँच लड़ियों की माला या हार।
पचहत्तर–(हिं० वि०) सत्तर और पाँच की संख्या का; (पुं०) सत्तर और पाँच की संख्या। **पचहत्तरवाँ**–(हिं० वि०) जिसका क्रम चौहत्तर के बाद हो।
पचहरा–(हिं० वि०) पाँच परत का।
पचाना–(हिं० क्रि०) आँच की सहायता से गलाना, खाई हुई वस्तु को जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत करके शरीर में लगाने योग्य बनाना, जीर्ण करना, नष्ट करना, पराये माल को अपना कर लेना, समाप्त करना।
पचारना–(हिं० क्रि०) ललकारना।
पचाव–(हिं०पुं०) पचने की क्रिया या भाव।
पचास–(हिं० वि०) चालीस और दस की संख्या का; (पुं०) चालीस और दस की संख्या ५०। **पचासवाँ**–(हिं० वि०) गिनती में पचास के स्थान पर पड़नेवाला। **पचासा**–(हिं० पुं०) एक ही प्रकार की पचास चीजों का समूह।
पचासी–(हिं० वि०) अस्सी और पाँच की संख्या का; (पुं०) अस्सी और पाँच की संख्या, ८५। **पचासीवाँ**–(हिं० वि०) जो क्रम से ८५ के स्थान पर हो।
पचित–(सं०वि०) जड़ा हुआ, बठाया हुआ।
पचीस–(हिं० वि०) बीस और पाँच की संख्या का; (पुं०) बीस और पाँच की संख्या २५। **पचीसवाँ**–(हिं० वि०) जो गणना में पचीस के स्थान पर हो।
पचोका–(हिं० पुं०) पिचकारी।
पचोतर–(हिं० वि०) किसी संख्या से पाँच अधिक। **पचोतरसो**–(हिं० पुं०) एक सौ पाँच की संख्या।
पचौनी–(हिं० स्त्री०) पाचन।
पचौर–(हिं० पुं०) गाँव का मुखिया।
पचौवर–(हिं० वि०) पाँच तह या परत किया हुआ।
पच्चड़, पच्चर–(हिं० स्त्री०) लकड़ी या बाँस की पट्टी।
पच्ची–(हिं० स्त्री०) धातु के बने पदार्थ पर किसी अन्य वस्तु के पत्तर का जड़ाव।
पच्छ–(हिं० पुं०) देखो पक्ष। **पच्छघात**–(हिं०पुं०) देखो पक्षघात।
पच्छम, पच्छिम–(हिं० पुं०) देखो पश्चिम, पिछला, पीछे का।
पच्छी–(हिं० स्त्री०) पक्षी, चिड़िया।
पछड़ना–(हिं० क्रि०) लड़ने में पटका जाना, पिछड़ना।
पछताना–(हिं०क्रि०) पश्चात्ताप करना।
पछतानि–(हिं० स्त्री०) पश्चात्ताप।
पछतावा–(हिं०पुं०) अनुताप, पश्चात्ताप।
पछना–(हिं० क्रि०) पाछा जाना; (पुं०) पाछने का यन्त्र।
पछमन–(हिं० क्रि० वि०) पीछे।
पछरना–(हिं० क्रि०) लौटना। **पछरा**–(हिं० पुं०) पछाड़।
पछलगा–(हिं० पुं०) अनुयायी।
पछवाँ–(हिं० वि०)-पश्चिमी।
पछाँह–(हिं० स्त्री०) पश्चिम की ओर का प्रदेश। **पछाँहियाँ**–(हिं० वि०) पश्चिम देश का।
पछाड़–(हिं० स्त्री०) मूर्छित होकर गिरना। **पछाड़ना**–(हिं० क्रि०) लड़ाई या मल्लयुद्ध में पटकना या गिराना, कपड़े को धोने के लिये पटकना।
पछाड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो पिछाड़ी;
पछाया–(हिं०पुं०) किसीवस्तुकापिछलाभाग
पछारना–(हिं० क्रि०) कपड़े को पटककर धोना।
पछाँही–(हिं० वि०) पश्चिम प्रदेश का।

पछियाना–(हिं०क्रि०)पीछे पीछे चलना।

पछिताना–(हिं० क्रि०) देखो पछताना।

पछिताव–(हिं० पुं०) देखो पछतावा।

पछिलना–(हिं० क्रि०) देखो पिछड़ना।

पछिला–(हिं० वि०) देखो पिछला।

पछिवाँ–(हिं० वि०)पच्छिम की; (स्त्री०) पश्चिम की हवा।

पछेला–(हिं० पुं०) स्त्रियों के हाथ में पहिनने का एक गहना, मठिया; (वि०) पछिला। **पछेली**–(हिं० स्त्री०) हाथ का एक आभूषण।

पछोड़ना, पछोरना–(हिं० क्रि०) सूप आदि में रखकर तथा फटककर अन्न आदि को स्वच्छ करना।

पछौरा–(हिं० पुं०) देखो पिछौरा।

पजोड़ा–(हिं० वि०) दुष्ट, पाजी।

पञ्च–(सं० पुं०) पाँच, पाँच संख्या युक्त। **पञ्चक**–(सं० पुं०) पाँच का समूह, धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र, वह जिसमें पाँच अवयव हों।

पञ्चकोण–(सं० पुं०) पाँच कोने का क्षेत्र। **पञ्चक्रोशी**–(सं० स्त्री०) पाँच कोस की लंबाई-चौड़ाई के बीच में बसी हुई काशी नगरी।

पञ्चगंगा–(सं० स्त्री०) गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा इन पाँच नदियों का समूह।

पञ्चगव्य–(सं० पुं०) गो संबंधी पाँच प्रकार के द्रव्य यथा–दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र।

पञ्चगौड़–(सं० पुं०) ब्राह्मणों का वह विभाग जिसके अन्तर्गत सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल हैं।

पञ्चतत्व–(सं० पुं०) पाँच तत्त्वों का समुदाय जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश हैं।

पञ्चमकार–(सं० पुं०) तन्त्रानुसार मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन पंच मकार कहलाते हैं। **पञ्चतन्त्र**–(सं० पुं०) विष्णुशर्मा–विरचित एक संस्कृत ग्रन्थ का नाम।

पञ्चत्व–(सं० पुं०) मरण, मृत्यु।

पञ्चदश–(सं० पुं०) पन्द्रह की संख्या।

पञ्चनद–(सं० पुं०) पंजाब प्रदेश।

पञ्चपक्षी–(सं० पुं०) प्रश्नादि द्वारा शकुन जानने का शिवोक्त एक शास्त्र।

पञ्चपल्लव–(सं० पुं०) आम, जामुन, कथ, बिजौरा और बेल अथवा आम, पीपल, वर, पाकर और औदुम्बर। **पञ्चपात्र**–(सं० पुं०) चौड़े मुख का गिलास के आकार का पात्र जो पूजा आदि में जल रखने के काम में आता है।

पञ्चप्राण–(सं० पुं०) शरीर-स्थित पाँच प्राण वायु जिनके नाम प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान हैं।

पञ्चबाण–(सं०पुं०)कामदेव के पांच बाण।

पञ्चभूत–(सं० पुं०) पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश।

पञ्चम–(सं० वि०) पाँचवाँ।

पञ्चमी–(सं० स्त्री०) किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि।

पञ्चमुख–(सं० पुं०) सिंह।

पञ्चरत्न–(सं०पुं०)पाँच प्रकार के रत्न।

पञ्चरात्र–(सं० पुं०) पाँच रात में होनेवाला यज्ञ, पाँच रात।

पञ्चराशिक–(सं० पुं०) गणित, जिसमें चार ज्ञात राशियों से पाँचवीं निकाली जाती है।

पञ्चवायु–(सं० पुं०) शरीर में स्थित प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये पाँच वायु।

पञ्चवार्षिक–(सं०वि०)पाँच बरस का।

पञ्चविध–(सं० वि०) पाँच प्रकार का।
पञ्चशः–(सं० अव्य०) पाँच पाँच करक।
पञ्चशाख–(सं० वि०) पनशाखा, जिसमें पाँच बत्तियाँ हों।
पञ्चसन्धि–(सं० स्त्री०) व्याकरण में सन्धि के पाँच भेद।
पञ्चाक्षर–(सं० पुं०) प्रणव, पाँच अक्षर का मन्त्र।
पञ्चाङ्ग–(सं० पुं०) किसी वृक्ष की छाल, पत्ता, फूल, फल और जड़, पुरश्चरण विशेष–जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मण-भोजन, ज्योतिष के अनुसार वह पंजिका जिसमें वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण लिखे हों।
पञ्चामृत–(सं० पुं०) एक स्वादिष्ठ द्रव्य जो घी, दूध, दही, मधु और चीनी मिलाकर बनाया जाता है।
पञ्चायत–(हिं० पुं०) भारतवर्ष की ग्राम्य विचारसभा, जो आपस के झगड़े निबटाती है।
पञ्चालिका–(सं०स्त्री०) पुतली, गुड़िया।
पञ्चाली–(सं० स्त्री०) गुड़िया।
पञ्चाशिका–(सं० स्त्री०) वह पुस्तक जिसमें पचास श्लोक या कविता हों।
पञ्चिका–(सं० स्त्री०) पाँच खण्ड या अध्यायों का समूह।
पञ्चेन्द्रिय–(सं० पुं०) पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ।
पञ्जर–(सं० पुं०) शरीर की हड्डियों का समूह।
पञ्जि–(सं० स्त्री०) पंजिका, पंचाङ्ग।
पञ्जिका–(सं० स्त्री०) रूई की प्योनी, तिथि वार आदि पञ्चाङ्ग युक्त पत्रिका।
पट–(सं० पुं०) वस्त्र, कपड़ा, चित्र बनाने का कागज या कपड़ा, छान, छप्पर, आड़, परदा; (हिं० पुं०) किवाड़ा सिंहासन, चिपटी चौरस भूमि; (वि०) ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि पर हो तथा पीठ आकाश की ओर, तुरंत, शीघ्र।
पटकन–(हिं० स्त्री०) पटकने की क्रिया या भाव, चपत, तमाचा, छोटा डंडा या छड़ी।
पटकना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को वेग के साथ ऊँचे स्थान से नीचे को झोंक से गिराना।
पटकनिया–(हिं० स्त्री०) पटकने की क्रिया या भाव, पटकान।
पटका–(हिं० पुं०) पेट में बाँधने का दुपट्टा, कमरपेंच।
पटकार–(सं० पुं०) कपड़ा बुननेवाला, चित्रकार।
पटकुटी–(सं०स्त्री०) कपड़े का घर, तंबू।
पटच्चर–(सं० पुं०) पुराना कपड़ा, चीर।
पटझोल–(हिं० पुं०) अंचल।
पटड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो पटरी।
पटतर–(हिं० पुं०) तुल्यता, समानता सादृश्य, उपमा।
पटधारी–(हिं० वि०) जो वस्त्र पहिने हो; (पुं०) कोष का अधिकारी।
पटना–(हिं० क्रि०) समतल या चौरस होना, पक्की या कच्ची छत बनाना, खेत आदि का सींचा जाना, बेचा-बिक्री आदि में मूल्य आदि का स्थिर होना, गाढ़ मैत्री होना, ऋण का चुकता हो जाना।
पटनी–(हिं०स्त्री०) कोठे के नीचे का घर, स्थायी पट्टे पर मिली हुई भूमि।
पटपट–(हिं० स्त्री०) किसी हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द जो बार बार होवे; (क्रि० वि०) पट पट शब्द करता हुआ। **पटपटाना**–(हिं० क्रि०) भूख, प्यास अथवा सरदी गरमी के

कारण अधिक कष्ट उठाना, किसी वस्तु को पीटकर पटपट शब्द उत्पन्न करना।

पटपर–(हिं० वि०) समतल, चौरस।

पटवास–(हिं० पुं०) वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य।

पटबंधक–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बंधक जिसमें महाजन बंधक की हुई सम्पत्ति के आय से सूद लेने के बाद जो बढ़ती होती है उसको मूल ऋण में काटता जाता है और संपूर्ण ऋण चुक जाने पर वह सम्पत्ति उसके मालिक को लौटा देता है।

पटबीजना–(हिं० पुं०) खद्योत, जुगनू।

पटमण्डप–(सं० पुं०) तंबू, कपड़े का बना हुआ घर।

पटरा–(हिं० पुं०) लकड़ी का लंबा चौरस पल्ला, धोबी का पाट।

पटरानी–(हिं० स्त्री०) किसी राजा की सबसे बड़ी या मुख्य रानी जिसको राजा के साथ सिंहासन पर बैठने का अधिकार हो।

पटरी–(हिं०स्त्री०) काठ का लंबा पतला पटरा, लिखने की पटिया, सड़क के दोनों किनारों पर मनुष्यों के चलने के लिये बना हुआ ऊँचा मार्ग, बगीचों में क्यारियों के चारों ओर चलने का मार्ग, स्त्रियों के हाथ में पहिनने का एक आभूषण।

पटल–(सं० पुं०) छान, छप्पर, तिलक, टीका, पुस्तक का एक भाग, परिच्छेद, समूह, पटरा, आवरण, परत।

पटली–(हिं० स्त्री०) पंक्ति।

पटवा–(हिं० पुं०) वह जो सूत या रेशम में गहनों को गूंथता है।

पटवाद्य–(सं० पुं०) झांझ की तरह का का प्राचीन बाजा।

पटवाना–(हिं० क्रि०) ढंपवाना, गड्ढों को मिट्टी आदि से भरवाना, पानी से तर कराना, दाम चुका देना।

पटवारी–(हिं० पुं०) वह कर्मचारी जो गाँव की भूमि, उसके कर आदि का हिसाब-किताब रखता हो।

पटवास–(सं० पुं०) शिविर, तंबू, वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य।

पटवेश्म–(सं० पुं०) शिविर, तम्बू।

पटसन–(हिं० पुं०) पाट, जूट।

पटह–(हिं० पुं०) दुंदुभी, नगाड़ा।

पटहार–(हिं० पुं०) पटवा नामक जाति।

पटा–(हिं० पुं०) चटाई, लंबी धारी।

पटाई–(हिं० स्त्री०) सिंचाई, पाटने की क्रिया।

पटाक–(हिं० पुं०) किसी छोटी वस्तु के गिरने का शब्द।

पटाका–(हिं० पुं०) एक प्रकार की अग्नि-क्रीड़ा जिसके छूटन पर पटाक् शब्द निकलता है, थप्पड़, तमाचा।

पटाखा–(हिं० पुं०) देखो पटाका।

पटाना–(हिं० क्रि०) गड्ढे को पाटकर भूमि समतल करना, पाटन बनवाना, मूल्य स्थिर करना, ऋण चुकाना।

पटापट–(हिं० क्रि० वि०) निरन्तर पटपट शब्द करते हुए; (स्त्री०) निरन्तर पट-पट शब्द होना।

पटार–(हिं०स्त्री०) पिंजड़ा, पेटी, पिटारा।

पटाव–(हिं० पुं०) पाटन की क्रिया, पटा हुआ स्थान, पाटन, भरेठा।

पटिया–(हिं० स्त्री०) पत्थर का लंबा चौरस टुकड़ा, खाट या पलंग की पट्टी, पाटी, माँग, लिखने की पट्टी।

पटीलना–(हिं० क्रि०) ठगना, छलना।

पटु–(सं०वि०) दक्ष, चतुर, स्वस्थ, तीक्ष्ण।

पटुआ–(हिं० पुं०) देखो पटुवा।

पटुका–(हिं०पुं०) चादर, धारीदार वस्त्र।
पटुता–(सं० स्त्री०) दक्षता, चतुराई, प्रवीणता। **पटुत्व**–(सं० पुं०) पटुता, दक्षता।
पटुवा–(हिं० पुं०) पटसन, जूट।
पटूका–(हिं० पुं०) देखो पटका।
पटेबाज–(हिं० पुं०) वह जो पटा खेलता हो, पटे से लड़नेवाला।
पटेरा–(हिं० पुं०) देखो पटरा, पटेला।
पटेल–(हिं० पुं०) गाँव का मुखिया या चौधरी।
पटेलना–(हिं० क्रि०) देखो पटीलना।
पटेला–(हिं० पुं०) वह नाव जिसका बिचला भाग पटा हुआ हो।
पटेली–(हिं० स्त्री०) छोटा पटला।
पटेत–(हिं० पुं०) पटा लड़नेवाला।
पटौनी–(हिं०पुं०) नाविक, मल्लाह, माँझी।
पट्ट–(सं० पुं०) नगर; (पुं०) घाव पर बाँधने की पट्टी, दुपट्टा, पीढ़ा, पाटा, पगड़ी; (वि०) प्रधान। **पट्टक**–(सं० पुं०) लिखने की पटिया, चित्रपट।
पट्टदेवी–(हिं० स्त्री०) पटरानी।
पट्टन–(सं० पुं०) पत्तन, बड़ा नगर।
पट्टमहिषी–(सं० स्त्री०) पटरानी।
पटराज्ञी–(सं० स्त्री०) पटरानी।
पट्टा–(सं० पुं०) स्थावर सम्पत्ति के उपयोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी, ठीकेदार या किरायेदार को लिखा जाता है, एक आभूषण जिसको स्त्रियाँ चूड़ियों के बीच में पहनती हैं, पीढ़ा, चपरास, पुरुष के सिर पर के बाल जो पीछे की ओर गिरे रहत हैं और बराबर कटे होते हैं।
पट्टी–(हिं० स्त्री०) किसो भूमि का वह भाग जो एक पट्टीदार के अधिकार में हो, कपड़े का किनारा, तिल या चन की दाल चिपकाकर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई, सूती या ऊनी वस्त्र की धज्जी, पंक्ति, पटिया, लिखने की पट्टी, धातु कागज या कपड़े की धज्जी, घाव पर बाँधने की कपड़े की धज्जी, बहकानेवाली शिक्षा, सिखावन, पाठ, माँग की दोनों ओर के बैठाये हुए बाल, विभाग।
पट्टीदार–(हिं० पुं०) संयुक्त सम्पत्ति के अंश का स्वामी।
पट्टीदारी–(हिं० स्त्री०) भाईचारा, वह भूसम्पत्ति जिसमें अनेक भागी हों।
पट्टू–(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में बनाया जाता है।
पट्टैत–(हिं० पुं०) पटेत, मूर्ख।
पट्टोपाध्याय–(सं० पुं०) दानपत्र का लिखनेवाला।
पट्ठा–(हिं० पुं०) तरुण, नवयुवक, स्नायु, दलदार मोटा पत्ता, एक प्रकार का चौड़ा गोटा, जाँघ के जोड़ का स्थान।
पठन–(सं० पुं०) अध्ययन, पढ़ना।
पठनीय–(सं० वि०) पढ़ने योग्य।
पठवना–(हिं० क्रि०) भेजना। **पठवाना**–(हिं० क्रि०) भेजवाना।
पठावन–(हिं० पुं०) सन्देश ले जानेवाला, दूत।
पठावनि, पठावनी–(हिं० स्त्री०) किसी मनुष्य को कहीं कोई वस्तु लेकर अथवा सन्देश पहुँचाने के लिये भेजना, इस कार्य का वेतन।
पठित–(सं० वि०) शिक्षित, पढ़ा हुआ, पढ़ा-लिखा। **पठितव्य**–(सं० वि०) पढ़ने योग्य।
पठिया–(हिं०स्त्री०) यौवनप्राप्त स्त्री।

पठौना–(हिं॰ क्रि॰) भेजना।
पठौनी–(हिं॰ स्त्री॰) किसी को कुछ देकर कहीं भेजने की क्रिया या भाव।
पठ्यमान–(सं॰ वि॰) जो पढ़ा जाता हो।
पठछती–(हिं॰ स्त्री॰) लकड़ी की पाटन।
पड़त पड़ता–(हिं॰ पुं॰) सामान्य दर, लागत।
पड़ताल–(हिं॰ स्त्री॰) अनुसन्धान, गाँव या नगर के पटवारी द्वारा खेतों की उत्पत्ति आदि विषयक जाँच पड़ताल।
पड़तालना–(हिं॰क्रि॰) अनुसन्धान करना, छानबीन करना।
पड़ती–(हिं॰ स्त्री॰) वह भूमि जो कुछ दिनों से जोती बोई न गई हो।
पड़ना–(हिं॰ क्रि॰) गिरना, बिछाया जाना, उत्पन्न होना, उपस्थित होना, ठहरना, रोगी होना, पड़ता खाना, मार्ग में मिलना।
पड़पड़ाना–(हिं॰ क्रि॰) पड़पड़ शब्द होना, चरपराना।
पड़पड़ाहट–(हिं॰ स्त्री॰) चरपराहट।
पड़पोता–(हिं॰पुं॰) प्रपौत्र, पोते का पुत्र।
पड़वा–(हिं॰ स्त्री॰) प्रत्येक पक्ष की पहिली तिथि; (पुं॰) भैंस का वच्चा।
पड़वाना–(हिं॰ क्रि॰) गिरवाना।
पड़ाइन–(हिं॰ स्त्री॰) देखो पाँड़ाइन।
पड़ाका–(हिं॰ पुं॰) देखो पटाका।
पड़ाना–(हिं॰ क्रि॰) झुकाना, गिराना।
पड़ापड़–(हिं॰ क्रि॰ वि॰) देखो पटापट।
पड़ाव–(हिं॰ पुं॰) वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हों।
पड़िया–(हिं॰स्त्री॰) भैंस का मादा बच्चा।
पड़िवा–(हिं॰ स्त्री॰) प्रतिपदा।
पड़ोस–(हिं॰ पुं॰) आसपास का स्थान, समीपवर्ती स्थान। **पड़ोसी, पड़ौसी**–(हिं॰ पुं॰) पड़ोस में रहनेवाला।
पढ़ंत–(हिं॰क्रि॰) पढ़ने की क्रिया या भाव।
पढ़ना–(हिं॰ क्रि॰) उच्चारण करना, बाँचना, अध्ययन करना, शिक्षा प्राप्त करना।
पढ़वाना–(हिं॰ क्रि॰) बँचवाना किसी के द्वारा शिक्षा दिलाना। **पढ़वैया**–(हिं॰ पुं॰) शिक्षार्थी, पढ़नेवाला।
पढ़ाई–(हिं॰स्त्री॰) विद्याभ्यास, पठन।
पढ़ाना–(हिं॰ क्रि॰) अध्ययन करना, शिक्षा देना, सिखाना, समझाना।
पढ़ैया–(हिं॰ पुं॰) पाठक, पढ़नेवाला।
पण–(सं॰ पुं॰) जुआ, मूल्य, दाम, धन, सम्पत्ति, प्रतिज्ञा, वह वस्तु जिसका देना स्वीकार हो, क्रय-विक्रय की वस्तु।
पणनीय–(सं॰वि॰) खरीदने या बेचने योग्य
पणव–(सं॰पुं॰) छोटा नगाड़ा, छोटा ढोल।
पणश–(सं॰ पुं॰) कटहल।
पणित–(सं॰ वि॰) व्यवहार किया हुआ।
पण्डित–(सं॰ पुं॰) विद्वान्, विदग्ध; (वि॰) चतुर, संस्कृत भाषा का विद्वान्।
पण्डितराज–(सं॰ पुं॰) पण्डितों में श्रेष्ठ। **पण्डिता**–(सं॰ स्त्री॰) विदुषी, विद्वान् महिला। **पण्डिताइन**–(हिं॰ स्त्री॰) पण्डितानी, **पण्डिताई**–(हिं॰ स्त्री॰) विद्वत्ता, पाण्डित्य। **पण्डिताऊ**–(हिं॰ वि॰) पण्डितों के ढंग का।
पण्डितानी–(हिं॰स्त्री॰) पण्डित की स्त्री।
पण्य–(सं॰ वि॰) व्यवहार करने योग्य, प्रशंसा करने योग्य; (पुं॰) व्यापार, माल, हाट, दूकान। **पण्यभूमि**–(सं॰ स्त्री॰) कोठी, गोदाम। **पण्यशाला**–(सं॰ स्त्री॰) विक्रय गृह।
पतंग–(हिं॰ स्त्री॰) कनकैया, गुड्डी।
पतंगा–(हिं॰ पुं॰) फतिंगा, चिनगारी।
पत–(हिं॰ स्त्री॰) लज्जा, प्रतिष्ठा; (पुं॰) पति, स्वामी।

पतई–(हिं० स्त्री०) पत्र, पत्ती।
पतङ्ग–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, सूर्य, फतिंगा, टिड्डी, चिनगारी।
पतझड़, पतझर, पतझार–(हिं० स्त्री०) वह ऋतु जिसमें वृक्षों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं।
पतत्री–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया।
पतन–(सं० पुं०) गिरने या नीचे आने का भाव, गिरना, अवनति, अधोगति, नाश।
पतनारा–(हिं० पुं०) परनाला, मोरी।
पतनीय–(सं० वि०) गिरनवाला।
पतपानी–(हिं० पुं०) प्रतिष्ठा, मान।
पतर–(हिं० वि०) पतला; (पुं०) पत्तल, पत्ता।
पतरा–(हिं० वि०) पतला। पतराई (हिं० पुं०) पतलापन। पतरी–(हिं० स्त्री०) पत्तल।
पतला–(हिं० वि०) कृश, झीना, हलका, अधिक तरल। पतलापन–(हिं० पुं०) पतला होने का भाव।
पतली–(हिं० स्त्री०) द्यूत, जुआ।
पतलून–(हिं० पुं०) वह पायजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और जो बटन से बंद किया जाता है।
पतलो–(हिं० स्त्री०) सरकंडा, सरपत।
पतवर–(हिं० क्रि० वि०) बराबर से।
पतवार–(हिं० स्त्री०) नाव का वह तिकोना अंग जिसके द्वारा नाव मोड़ी और घुमाई जाती है, कर्ण।
पतवाल–(हिं० स्त्री०) देखो पतवार।
पता–(हिं० पुं०) किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान का ज्ञान करा देनेवाली वस्तु, अनुसन्धान, रहस्य, चिट्ठी की पीठ पर लिखे हुए पते का शब्द।
पताई–(हिं० स्त्री०) सूखकर झड़ी हुई पौधे की पत्तियाँ।
पताका–(सं० स्त्री०) ध्वजा, झंडा।
पताल–(हिं० पुं०) देखो पाताल।
पतावर–(हिं० पुं०) पेड़ के सूखे पत्ते।
पतिंगा–(हिं० पुं०) फतिंगा।
पति–(सं० पुं०) दूल्हा, भर्ता, अधिपति, स्वामी, प्रभु, ईश्वर, मर्यादा, लज्जा।
पतिआना–(हिं० क्रि०) विश्वास करना।
पतिआर–(हिं० पुं०) विश्वास।
पतित–(सं० वि०) गिरा हुआ, नीति-भ्रष्ट, अति नीच, महापातकी, अधम।
पतितपावन–(सं० वि०) पापों को पवित्र करनेवाला, ईश्वर। पतित्व–(सं० पुं०) स्वामीत्व।
पतिधर्म–(सं० पुं०) पति के प्रति स्त्री का धर्म।
पतियाना–(हिं० क्रि०) विश्वास करना, सच मानना।
पतिवती–(हिं० वि०) सौभाग्यवती, सधवा। पतिव्रत–(सं० स्त्री०) पति में निष्ठापूर्वक अनुराग। पतिव्रता–(सं० स्त्री०) अपने स्वामी के प्रति अनन्य अनुराग करनेवाली तथा पति की सेवा करनेवाली स्त्री, सती, साध्वी।
पतीजन, पतीजना–(हिं० क्रि०) विश्वास करना, पतिआना।
पतीरा–(हिं० स्त्री०) पंक्ति, पाँति।
पतीला–(हिं० वि०) पतला।
पतीली–(हिं० स्त्री०) चौड़े मुँह की बट-लोई, देगची।
पतुरिया–(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
पतुली–(हिं० स्त्री०) कलाई में पहिनने का एक गहना।
पतेर–(हिं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, गडढा।
पतोखा–(हिं० पुं०) पत्ते का बना हुआ पात्र, दोना। पतोखी–(हिं० स्त्री०) धोधी, एक पत्ते की बनी हुई दोनियाँ।

पतोह, **पतोहू**–(हिं०स्त्री०) बेटे की स्त्री।
पतौआ–(हिं० पुं०) पत्र, पत्ता।
पत्तन–(सं० पुं०) नगर, मृदङ्ग।
पत्तर–(हिं० पुं०) किसी धातु को पीट-कर तैयार किया हुआ पतला टुकड़ा।
पत्तल–(हिं० स्त्री०) पत्तों को सींक से जोड़कर बनाया हुआ पात्र, पत्तल में परोसी हुई भोजन-सामग्री।
पत्ता–(हिं० पुं०) पर्ण, पत्र; (वि०) बहुत हलका।
पत्ती–(हिं० स्त्री०) छोटा पत्ता, भाग, हिस्सा।
पत्तीदार–(हिं०पुं०) साझीदार, हिस्सेदार।
पत्थ–(हिं० पुं०) देखो पथ्य।
पत्थर–(हिं० पुं०) पृथ्वी तल का कड़ा खण्ड या पिण्ड, रत्न, बिनौला, ओला, पत्थर की तरह कठोर तथा भारी अयोग्य वस्तु।
पत्थरकला–(हिं० पुं०) पुरानी चाल की बन्दूक।
पत्नी–(सं०स्त्री०) स्त्री, भार्या, जाया।
पत्नीव्रत–(सं० पुं०) अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री के साथ गमन न करने का नियम।
पत्याना–(हिं० क्रि०) देखो पतिआना।
पत्यारा–(हिं० पुं०) देखो पतिआरा।
पत्र–(सं० पुं०) पत्ता, चिड़ियों का पर, पत्री, चिट्ठी, धातु की चद्दर, लिखा हुआ कागज, पट्टा, समाचारपत्र।
पत्रकार–(हिं० पुं०) समाचारपत्र का संपादक। **पत्रपुष्प**–(सं० पुं०) छोटा उपहार या भेंट। **पत्रभङ्ग**–(सं० पुं०) वे चित्र और रेखायें जो स्त्रियाँ सुन्दरता बढ़ाने के लिये स्तन, कपोल आदि पर बनाती हैं। **पत्ररथ**–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया। **पत्रवाह**, **पत्रवाहक**–(सं० पुं०) बाण, तीर, चिड़िया, चिट्ठीरसा, हरकारा; (वि०) चिट्ठी लिखनेवाला।
पत्रव्यवहार–(सं० पुं०) चिट्ठी लिखने और उत्तर पाने की क्रिया।
पत्रा–(हिं० पुं०) तिथिपत्र, जन्त्री, पंचांग, पन्ना, पृष्ठ।
पत्रिका–(सं० स्त्री०) चिटठी-पत्री, छोटा लेख, समाचारपत्र।
पत्री–(सं० स्त्री०) लिपि, पत्र, चिट्ठी।
पथ–(सं० पुं०) पन्थ, मार्ग, व्यवहार, विधान; (हिं० पुं०) पथ्य। **पथ-गामी**, **पथचारी**–(हिं० पुं०) पथिक, बटोही।
पथदर्शक–(सं० पुं०) मार्गदर्शक।
पथप्रदर्शक–(सं० पुं०) देखो पथदर्शक।
पथरकला–(हिं० पुं०) पुराने ढंग की बंदूक।
पथरना–(हिं० क्रि०) शस्त्र को पत्थर पर रगड़कर पैना करना। **पथराना**–(हिं० क्रि०) सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना।
पथरी–(हिं० स्त्री०) अश्मरी नामक रोग, कटोरे के आकार का पत्थर का बना हुआ पात्र। **पथरीला**–(हिं० वि०) पत्थरों से युक्त।
पथिक–(सं० पुं०) मार्ग चलनेवाला, यात्री। **पथिकशाला**–(स्त्री०) सराय, यात्रियों के ठहरने की धर्मशाला।
पथिकार–(सं० वि०) मार्ग बनानेवाला।
पथिकाश्रय–(सं० पुं०) पथिकों के ठह-रने का स्थान।
पथी–(हिं० पुं०) पथिक, यात्री।
पथु–(हिं० पुं०) पथ, मार्ग।
पथेरा–(हिं० पुं०) ईंट पाथनेवाला, कुम्हार।

पथोरा–(हिं० पुं०) गोबर पाथने का स्थान।
पथ्य–(सं० पुं०) वह हलका और शीघ्र पचनेवाला भोजन जो रोगी के लिये लाभकारक हो।
पद–(सं० पुं०) पैर, शब्द, प्रदेश, व्यवसाय, स्थान, चिह्न, श्लोक या किसी छन्द का चौथा भाग, मोक्ष, गीत, भजन।
पदक–(सं० पुं०) सोने चाँदी का बना हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा जो कोई विशिष्ट या अद्भुत कार्य करने के उपलक्ष में किसी व्यक्ति या समाज को दिया जाता है।
पदग–(सं० पुं०) पैदल चलनेवाला, प्यादा
पदच्छेद–(सं० पुं०) सन्धि और समास युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पदों को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग अलग करना।
पदच्युत–(सं० वि०) अपने पद या स्थान से हटाया या गिराया हुआ।
पदज–(सं०पुं०) पैर की अँगुली, शूद्र; (वि०) जो पैर से उत्पन्न हो।
पदतल–(सं० पुं०) पैर का तलवा।
पदत्तर–(सं० पुं०) पैदल, प्यादा। **पदचारी**–(सं० पुं०) पैदल चलनेवाला। **पदचिह्न**–(सं० पुं०) वह चिह्न जो चलते समय भूमि पर बन जाता है।
पदत्याग–(सं० पुं०) अपने पद को छोड़ने की क्रिया।
पदत्राण–(सं० पुं०) जूता। **पदत्रान**–(हिं० पुं०) देखो पदत्राण।
पदत्री–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया।
पददलित–(सं० वि०) पैरों से कुचला हुआ।
पदन्यास–(सं०पुं०) गमन करना, चलना
पदपंक्ति–(सं० स्त्री०) पदश्रेणी, पैर का चिह्न।
पदभंजिका–(सं० स्त्री०) पंजिका, टिप्पणी।
पदमाकर–(हिं० पुं०) जलाशय, तालाब। **पदमाला**–(सं० स्त्री०) पदश्रेणी, पैरों का चिह्न। **पदमूल**–(सं० पुं०) पैर का तलवा।
पदरथी–(सं० पुं०) जूता, खड़ाऊँ।
पदवि–(सं० स्त्री०) पद्धति, परिपाटी।
पदविग्रह–(सं० पुं०) समास, समास वाक्य।
पदविच्छेद–(सं० पुं०) पदों को अलग अलग करने का काम।
पदवी–(सं० स्त्री०) पद्धति, परिपाटी, विधि, उपाधि।
पदाति, पदातिक–(सं० पुं०) पैदल, सिपाही, प्यादा; (वि०) पैदल चलनेवाला
पदाधिकारी–(सं० पुं०) वह जो किसी पद पर नियुक्त हो, अधिकारी।
पदान्त–(सं० पुं०) पद का शेष, पद का अन्त। **पदान्तर**–(सं० पुं०) स्थानान्तर, दूसरा पद।
पदारथ–(हिं० पुं०) देखो पदार्थ।
पदारविन्द–(सं० पुं०) पद्मरूपी पैर।
पदार्घ्य–(सं० पुं०) वह जल जो किसी अतिथि या पूज्य के पैर धोने के लिये दिया जाय।
पदार्थ–(सं० पुं०) धर्म, सत्व, वस्तु।
पदार्थ विज्ञान–(सं० पुं०) वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान प्राप्त होता है।
पदार्पण–(सं० पुं०) किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया (इस शब्द का प्रयोग केवल माननीय व्यक्ति के लिये किया जाता है)।
पदावली–(सं० स्त्री०) वाक्यों की श्रेणी, भजनों का संग्रह।

पदाश्रित–(सं०वि०) शरण में आया हुआ।
पदी–(हिं० पुं०) पैदल, प्यादा।
पदु–(हिं० पुं०) पद, अधिकार।
पदुम–(हिं० पुं०) देखो पद्म। पदुमिनी–(हिं० वि०) देखो पद्मिनी।
पद्धति–(सं० स्त्री०) पदवी, प्रणाली, रीति ढंग, विधि विधान।
पद्म–(सं०पुं०) कमल का फूल या पौधा।
पद्मकन्द–(सं० पुं०) कमल की जड़, भिस्सा, भसीड़। पद्मकिञ्जल्क–(सं० पुं०) कमल का केसर। पद्मकोष–(सं० पुं०) कमल के बीज का छत्ता। पद्मतन्तु–(सं० पुं०) मृणाली, कमल की डंडी। पद्मनाल–(सं० पुं०) मृणाल। पद्मरज–(सं० पुं०) कमल-केशर। पद्मबीज–(सं० पुं०) कमल बीज, कमलगट्टा।
पद्मा–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी। पद्माकर–(सं० पुं०) बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल उत्पन्न होते हैं। पद्माक्ष–(सं० पुं०) कमलगट्टा, विष्णु। पद्मालया–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, गंगा।
पद्मिनी–(सं० स्त्री०) पद्मलता, कमलिनी।
पद्मोद्भव–(सं० पुं०) ब्रह्मा।
पद्य–(सं० पुं०) कविता, काव्य, श्लोक। पद्यात्मक–(सं०वि०) जो पद्यमय या छंदबद्ध हो।
पधरना–(हिं० क्रि०) किसी प्रतिष्ठित या पूज्य व्यक्ति का आगमन।
पधराना–(हिं० क्रि०) किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाना। पधरावनी–(हिं० स्त्री०) आदरपूर्वक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को ले जाकर बैठाने की क्रिया। पधराना–(हिं० क्रि०) प्रतिष्ठित करना, आदरपूर्वक बैठाना।
पन–(हिं० पुं०) संकल्प, प्रतिज्ञा; (हिं० प्रत्य०) भाववाचक संज्ञा बनाने में प्रयुक्त होता है, यथा–कड़ापन, लड़कपन। पनकपड़ा–(हिं० पुं०) पानी से भिगाया हुआ लत्ता जो शरीर में कहीं पर कट जाने पर बाँधा जाता है।
पनकाल–(हिं० पुं०) अति वर्षा के कारण अकाल। पनकुट्टी–(हिं० स्त्री०) पान कूटने का छोटा खरल। पनघट–(हिं० पुं०) पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ पर लोग पानी भरते हैं।
पनच–(हिं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
पनचक्की–(हिं० स्त्री०) पानी के वेग से चलाई जानेवाली चक्की या कल।
पनचोरा–(हिं० पुं०) वह पात्र जिसकी पेंदी और मुँह छोटा हो।
पनडब्बा–(हिं०पुं०) पान रखने का डब्बा।
पनडुब्बा–(हिं० पुं०) पानी में गोता लगानेवाला। पनडुब्बी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा जहाज जो पानी में डूबकर यन्त्र से चलता है।
पनपना–(हिं० क्रि०) पानी मिलने के कारण फिर से हरा हो जाना, रोग से मुक्त होकर स्वस्थ होना।
पनपाना–(हिं० क्रि०) ऐसा कार्य करना जिससे कोई वस्तु पनपे।
पनभरा–(हिं०पुं०) पानी भरनेवाला।
पनव–(हिं० पुं०) देखो प्रणव।
पनवाड़ी–(हिं० स्त्री०) पान का खेत।
पनस–(सं० पुं०) कटहल।
पनसल्ला–(हिं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ यात्रियों को पानी पिलाया जाता है।
पनसाखा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की मसाल जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ जलती हैं।
पनसारी–(हिं० पुं०) देखो पंसारी।
पनसाल–(हिं० स्त्री०) पौसरा।

पनसुइया—(हिं० स्त्री०) छोटी नाव ।
पनसेरी—(हिं० स्त्री०) पाँच सेर की बाँट ।
पनहरा—(हिं० पुं०) पानी भरनेवाला भृत्य, पनभरा ।
पनहा—(हिं० पुं०) कपड़े या भीत आदि की चौड़ाई, गूढ़ आशय ।
पनहारा—(हिं० पुं०) पनभरा ।
पनहिया—(हिं० स्त्री०) देखो पनही, जूता ।
पनहियाभद्र—(हिं० पुं०) सिर पर जूतों की मार ।
पनही—(हिं० स्त्री०) उपानह, जूता, जूती ।
पना—(हिं० पुं०) आम इमली आदि से बनाया हुआ एक प्रकार का पेय ।
पनाती—(हिं० पुं०) नाती का लड़का ।
पनारा, पनाला—(हिं० पुं०) देखो परनाला ।
पनासना—(हिं० क्रि०) पालन-पोषण करना ।
पनियाँ—(हिं० वि०) पानी से उत्पन्न, पानी मिला हुआ ।
पनियाला—(हिं० पुं०) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा ।
पनिहा—(हिं० वि०) पानी में रहनेवाला ।
पनिहार—(हिं० पुं०) देखो पनहर ।
पनी—(हिं० पुं०) प्रतिज्ञा करनेवाला पुरुष ।
पनीला—(हिं० वि०) जलयुक्त ।
पनुआँ—(हिं० वि०) फीका, जिसमें मिठास कम हो ।
पनैला—(हिं० पुं०) गरम कपड़ों के नीचे अस्तर देने का चिकना गाढ़ा कपड़ा ।
पनौआ—(हिं० पुं०) पान के पत्तों की पकौड़ी । पनौटी—(हिं० स्त्री०) पान रखने की पिटारी, पानदान ।
पन्नग—(सं० पुं०) सर्प, साँप ।
पन्ना—(हिं० पुं०) मरकत मणि, हरे रंग का एक रत्न ।
पन्नी—(हिं० स्त्री०) राँगे या पीतल के बहुत पतले पत्र, सुनहला या रुपहला कागज ।
पन्हाना—(हिं० क्रि०) देखो पहिनाना ।
पन्हैयाँ—(हिं० स्त्री०) देखो पनही ।
पपड़ा—(हिं० पुं०) लकड़ी का पतला कुड़कीला छिलका, चिप्पड़, रोटी के ऊपर का छिलका । पपड़िया—(हिं० वि०) पपड़ीदार, पपड़ी सम्बन्धी । पपड़ियाना—(हिं० क्रि०) अत्यन्त सूख जाना ।
पपड़ी—(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु के ऊपर की परत जो सूखकर कड़ी हो गई हो, एक प्रकार की मिठाई ।
पपड़ीला—(हिं० वि०) जिस पर पपड़ी जमी हो ।
पपनी, पपरी—(हिं० स्त्री०) बरौनी ।
पपीता—(हिं० पुं०) रेंड़ की तरह का एक पौधा जिसका फल पकाकर खाया जाता है ।
पपीहा—(हिं० पुं०) चातक ।
पपैया—(हिं० पुं०) आम का नया पौधा ।
पपोटा—(हिं० पुं०) आँख के ऊपर का परदा, पलक ।
पपोरना—(हिं० क्रि०) बाँह को ऐंठकर उसको उभाड़ना । पपोलना—(हिं० क्रि०) मुंह चलाना ।
पबारना—(हिं० क्रि०) फेंक देना ।
पबि—(हिं० पुं०) वज्र ।
पब्बय—(हिं० पुं०) पर्वत, पहाड़ ।
पयःकुण्ड—(सं० पुं०) दूध या जल रखने का घड़ा; पयःपान—(सं० पुं०) दुग्धपान, दूध पीना ।
पय—(सं० पुं०) जल, पानी, दूध, अन्न । पयद—(हिं० पुं०) मेघ । पयधि—(हिं० पुं०) देखो पयोधि, समद्र ।
पयना—(हिं० वि०) नुकीला, चोखा ।
पयस्विन्, पयस्विनी—(सं० स्त्री०) नदी, दूध देनेवाली गाय, बकरी ।
पयस्वी—(हिं० वि०) जिसमें जल हो ।

पयान–(हिं० पुं०) गमन, यात्रा, जाना।
पयार, पयाल–(हिं० पुं०) धान के सूखे डंठल जिसमें से दाने निकाल दिये गय हों, पुआल।
पयोद–(सं० पुं०) मेघ, बादल। **पयोदन**–(हिं० पुं०) दूध-भात।
पयोधर–(सं०पुं०) स्त्री का स्तन, समुद्र।
पयोमुख–(सं०वि०) दुग्धपीत, दुधमुंहा।
परंच–(सं०अव्य०)तो भी,और भी,परन्तु।
परंपरा–(हिं० स्त्री०) एक के पीछे दूसरा। **परंपरागत**–(हिं०वि०) परंपरा से आता हुआ।
पर–(सं० वि०) श्रेष्ठ, अन्य, दूसरा।
पर–(हिं० अव्य०) पश्चात्, पीछे, परन्तु, किन्तु; (पुं०) चिड़िया का डैना, पंख।
परई–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का एक पात्र जो दिए से बड़ा होता है।
परकटा–(हिं०वि०) जिसके पर कटे हों।
परचना–(हिं० क्रि०) अभ्यास पड़ना, हिलना मिलना।
परकर्म–(सं० पुं०) दूसरे का काम।
परकलत्र–(सं० पुं०) दूसरे की स्त्री।
परकसना–(हिं० क्रि०) प्रकाशित होना।
परकाजी–(हिं० वि०) परोपकारी।
परकाना–(हिं०क्रि०) परचाना, हिलाना, मिलाना।
परकार्य–(स० पुं०) दूसरे का कार्य।
परकाल–(हिं० पुं०) देखो परकार।
परकाला–(हिं०पुं०) सीढ़ी,खण्ड,टुकड़ा।
परकास–(हिं० पुं०) देखो प्रकाश।
परकासना–(हिं० क्रि०) प्रकट करना, प्रकाशित करना।
परकित–(हिं० स्त्री०) देखो प्रकृति।
परकीय–(सं० वि०) पराया, दूसरे का।
परकोटा–(हिं० पुं०) गढ़ की रक्षा के लिये इसके चारों ओर बनाई हुई भीत।
परख–(हिं० स्त्री०) जाँच, परीक्षा। **परखना**–(हिं० क्रि०) जाँच करना, परीक्षा करना। **परखवाना**–(हिं०क्रि०) दूसरे से जँचवाना। **परखवैया**–(हिं० पुं०) परखनेवाला। **परखाई**–(हिं० स्त्री०) परखने का काम या शुल्क।
परखाना–(हिं० क्रि०) परीक्षा कराना, जँचवाना। **परखैया**–(हिं० पुं०) परखनेवाला।
परग–(हिं० पुं०) पग, कदम, डग।
परगट–(हिं० वि०) देखो प्रगट।
परगसना–(हिं० क्रि०) प्रगट होना।
परगास–(हिं० पुं०) देखो प्रकाश। **परगासना**–(हिं०क्रि०) प्रकाशित होना या करना।
परघट–(हिं० वि०) देखो प्रगट।
परचण्ड–(हिं० वि०) देखो प्रचण्ड।
परचन–(हिं० स्त्री०) जान-पहचान।
परचना–(हिं० क्रि०) घनिष्ठता प्राप्त करना।
परचाना–(हिं०क्रि०) हिलाना-मिलाना, घनिष्ठता उत्पन्न करना,संकोच हटाना।
परचार–(हिं० पुं०) देखो प्रचार।
परचारना–(हिं० क्रि०) प्रचार करना।
परछाई–(हिं० स्त्री०) छायाकृति, प्रतिबिम्ब।
परछिद्र–(सं० पुं०) दूसरे का दोष।
परजंक–(हिं० पुं०) देखो पर्यङ्क।
परजन–(हिंपुं०) देखो परिजन।
परजन्य–(हिंपुं०) देखो परिजन्य।
परजरना–(हिं०क्रि०)सुलगना,दहकना।
परजा–(हिं० स्त्री०)प्रजा, आश्रितजन।
परजात–(सं० वि०) दूसरे से उत्पन्न; (पुं०) कोयल; (हिं० पुं०)पारिजात, एक मझोले आकार का वृक्ष जिसके

सुगन्धित फूल गुच्छों में लगते हैं, इसके फूल की डंठी मूंगे के रंग की होती है।
परजाय–(हिं०पुं०) देखो पर्याय।
परजारना–(हिं० क्रि०) जलाना।
परजित–(सं० वि०) शत्रु से पराजित।
परजौट–(हिं० पुं०) वह वार्षिक कर जो घर बनाने के लिये ली हुई भूमि पर लगे।
परञ्च–(सं०अव्य०) परन्तु, तौ भी।
परत–(हिं० स्त्री०) स्तर, तह, कपड़े कागज आदि के अलग-अलग भाग जो जोड़ने से नीचे ऊपर हो गये हों।
परतन्त्र–(सं० वि०) पराधीन, परवश।
परतच्छ–(हिं० वि०) देखो प्रत्यक्ष।
परतला–(हिं०पुं०) कपड़े, चमड़े आदि की चौड़ी पट्टी जो कन्धे पर से छाती और पीठ पर होती हुई तिरछी लटकती है और जिसमें तलवार लटकाई जाती है।
परता–(हिं० पुं०) देखो पड़ता।
परताप–(हिं० पुं०) देखो प्रताप।
परताल–(हिं० स्त्री०) देखो पड़ताल।
परतिग्या–(हिं० स्त्री०) देखो प्रतिज्ञा।
परती–(हिं०स्त्री०) बिना जोती हुई भूमि।
परतीत–(हिं० स्त्री०) देखो प्रतीति।
परतेजना–(हिं० क्रि०) त्याग करना।
परतोली–(हिं० स्त्री०) गली।
परत्र–(सं० अव्य०) दूसरे स्थान में, परलोक में।
परयन्न–(हिं० पुं०) देखो पलेथन।
परदच्छिना–(हिं०स्त्री०) देखो प्रदक्षिणा।
परदनी–(हिं० स्त्री०) धोती।
परदादा–(हिं० पुं०) दादा का बाप।
परदार–(सं० पुं०) दूसरे की स्त्री।
परदिवस–(सं०पुं०) आज से दूसरा दिन।
परदेवता–(सं० स्त्री०) श्रेष्ठ या इष्ट देवता।
परदेश–(सं० पुं०) दूसरा देश, विदेश।
परदेशी–(सं० वि०) दूसरे देश में रहनेवाला।
परदोस–(हिं० पुं०) देखो प्रदोष।
परधान–(हिं० वि०) देखो प्रधान।
परधाम–(सं० पुं०) वैकुण्ठ, परलोक।
परन–(हिं०पुं०) प्रतिज्ञा, टेक, अभ्यास।
परना–(हिं० क्रि०) देखो पड़ना।
परनाना–(हिं० पुं०) नाना का पिता।
परनाम–(हिं० पुं०) देखो प्रणाम।
परनाला–(हिं० पुं०) मोरी, पनाला।
परनाली–(हिं० स्त्री०) छोटी मोरी।
परनि–(हिं० स्त्री०) आदत, टेक।
परनौत–(हिं० स्त्री०) नमस्कार, प्रणाम।
परन्तु–(हिं० अव्य०) लेकिन, देखो परंतु।
परपंच–(हिं० पुं०) देखो प्रपंच।
परपंची–(हिं० वि०) धूर्त, बखेड़िया।
परपक्ष–(सं० पुं०) विरोधियों का दल।
परपट–(हिं० पुं०) समतल भूमि।
परपटी–(हिं० स्त्री०) देखो पर्पटी।
परपराना–(हिं० क्रि०) चुनचुनाना।
परपराहट–(हिं० स्त्री०) चुनचुनाहट।
परपाजा–(हिं० पुं०) दादा का पिता।
परपारा–(हिं० पुं०) दूसरी ओर का।
परपीड़क–(सं० पुं०) दूसरे को कष्ट देनेवाला।
परपूठा–(हिं० वि०) पक्व, पक्का।
परपोता–(हिं० पुं०) देखो प्रपौत्र।
परफुल्ल–(हिं० वि०) देखो प्रफुल्ल।
परफुल्लित–(हिं०वि०) देखो प्रफुल्लित।
परबन्ध–(हिं० पुं०) व्यवस्था।
परब–(हिं०पुं०) देखो पर्व; (स्त्री०) किसी रत्न का एक छोटा टुकड़ा।
परबत–(हिं० पुं०) पर्वत, पहाड़।
परबल–(हिं० वि०) देखो प्रबल।
परबस–(हिं० वि०) पराधीन।

परबसताई–(हिं० स्त्री०) पराधीनता।
परबाल–(हिं० पुं०) आँख की बरौनी।
परबीन–(हिं० वि०) देखो प्रवीण।
परबेश–(हिं० पुं०) देखो प्रवेश।
परबोध–(हिं० पुं०) देखो प्रबोध।
परबोधता–(हिं० क्रि०) ज्ञान का उपदेश करना, समझाना।
परब्रह्म–(सं० पुं०) निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म।
परभाइ–(हिं० पुं०) देखो प्रभाव।
परभाग–(सं० पुं०) बचा हुआ अंश, दूसरी ओर का भाग, पश्चिम भाग।
परभात–(हिं० पुं०) देखो प्रभात।
परभाती–(हिं० स्त्री०) देखो प्रभाती।
परभाव–(हिं० पुं०) देखो प्रभाव।
परभुक्त–(सं०वि०) दूसरे से भोगा हुआ।
परभृत, परभृत्–(सं० वि०) दूसरे को पालनेवाला; (पुं०) कोयल।
परभृत्य–(सं० पुं०) दूसरे का सेवक।
परम–(सं०वि०) प्रधान, मुख्य, अत्यन्त।
परम गति–(सं०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष।
परमधाम–(सं० पुं०) वैकुण्ठ, स्वर्ग।
परमपद–(सं० पुं०) मोक्ष, मुक्ति।
परम भट्टारक–(सं० पुं०) महाराजाधिराज।
परमल–(हिं० पुं०) ज्वार या गेहूँ का भूना हुआ दाना।
परमहंस–(सं० पुं०) ज्ञान की परम अवस्था को पहुँचा हुआ संन्यासी।
परमा–(हिं० स्त्री०) शोभा, छवि।
परमाणु–(सं० पुं०) पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश का सबसे छोटा भाग जिसके फिर विभाग नहीं हो सकते, अत्यन्त सूक्ष्म अणु।
परमात्मा–(सं० पुं०) परब्रह्म, ईश्वर।
परमानन्द–(सं० पुं०) परम आनन्दस्वरूप ब्रह्म, परमात्मा।
परमान–(हिं० पुं०) देखो प्रमाण, सत्य वार्ता, अवधि, सीमा।
परमारथ–(हिं० पुं०) देखो परमार्थ।
परमार्थ–(सं० पुं०) उत्कृष्ट पदार्थ, मोक्ष। परमार्थी–(सं० वि०) यथार्थ तत्त्व को ढूंढ़नेवाला, मोक्ष चाहनेवाला।
परमुख–(हिं०वि०) पराङ्मुख, विमुख।
परमेश, परमेश्वर–(सं० पुं०) सृष्टि आदि का रचनेवाला, त्रिमूर्तक ब्रह्म।
परमेसर–(हिं० पुं०) देखो परमेश्वर।
परमैश्वर्य–(सं० पुं०) श्रेष्ठ ऐश्वर्य।
परमोद–(हिं० पुं०) देखो प्रमोद।
परम्परा–(सं० स्त्री०) परिपाटी, अनुक्रम, एक के बाद एक। परम्परागत–(सं० वि०) वंशानुक्रम से प्रचलित।
परयंक–(हिं० पुं०) देखो पर्यंक।
परलउ–(हिं० पुं०) देखो प्रलय।
परलय–(हिं० स्त्री०) प्रलय, सृष्टि का नाश या अन्त।
परला–(हिं०वि०) दूसरीओरका, उधरका।
परलै–(हिं० पुं०) देखो प्रलय।
परलोक–(सं० पुं०) लोकान्तर, दूसरा लोक, स्वर्गादि। परलोकवासी–(हिं० वि०) मृत्युप्राप्त।
परवल–(हिं० पुं०) एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है।
परवश, परवश्य–(हिं० वि०) पराधीन।
परवश्यता–(सं० स्त्री०) पराधीनता।
परवस्ती–(हिं०स्त्री०) पालन-पोषण।
परवा–(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की पहली तिथि।
परवाद–(सं० पुं०) प्रवाद, अपवाद।
परवान–(हिं०पुं०) अवधि, प्रमाण।
परवानना–(हिं० क्रि०) उचित समझना।
परवाल–(हिं० पुं०) देखो प्रवाल, मूँगा।

परवासी–(सं० वि०) दूसरे के घर में बसनेवाला ।
परवाह–(हिं० पुं०) देखो प्रवाह, व्यग्रता, चिन्ता, भरोसा ।
परवीन–(हिं० वि०) देखो प्रवीण ।
परवेश–(हिं० पुं०) देखो प्रवेश ।
परवेश्म–(सं० पुं०) वैकुण्ठ, स्वर्ग ।
परशु–(सं० पुं०) कुठार, कुल्हाड़ी ।
परसंग–(हिं० पुं०) देखो प्रसङ्ग ।
परसंसा–(हिं० पुं०) देखो प्रशंसा ।
परस–(हिं०पुं०) स्पर्श, छूने की क्रिया, पारस पत्थर ।
परसन–(हिं०पुं०) स्पर्श; (वि०) प्रसन्न ।
परसना–(हिं० क्रि०) स्पर्श करना, छूना, किसी के सामने भोजन के पदार्थ रखना ।
परसन्न–(हिं० वि०) देखो प्रसन्न ।
परसवर्ण–(सं० पुं०) उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण ।
परसा–(हिं० पुं०) कुठार, फरसा ।
परसाद–(हिं० पुं०) देखो प्रसाद ।
परसाना–(हिं० क्रि०) स्पर्श कराना ।
परसिद्ध–(हिं० वि०) देखो प्रसिद्ध ।
परसु–(हिं० पुं०) देखो परशु ।
परसेद–(हिं० पुं०) देखो प्रस्वेद ।
परसेवा–(सं० स्त्री०) दूसरे को सेवा ।
परसों–(हिं० अव्य०) बीते हुए कल से एक दिन पहले आनेवाला, कल से एक दिन आगे ।
परसोतम–(हिं० पुं०) देखो पुरुषोत्तम ।
परस्पर–(सं० अव्य०) एक दूसरे के साथ, आपस में ।
परहरना–(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना ।
परहार–(हिं०पुं०) देखो प्रहार, परिहार ।
परहित–(सं० पुं०) दूसरे का कल्याण ।
परहेलना–(हिं० क्रि०) निरादर करना ।
परा–(सं०अव्य०) प्राधान्य, गति, विक्रम, वध आदि अर्थ में प्रयुक्त होता है, अनादर अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होता है ।
पराइ, पराई–(हिं० वि०) दूसरे की ।
पराकाष्ठा, पराकोटि–(सं० स्त्री०) चरम सीमा, हद ।
पराक्रम–(सं०पुं०) शक्ति, बल, सामर्थ्य । **पराक्रमी**–(हिं०वि०) पुरुषार्थी, उद्यमी, बलवान् ।
पराग–(सं० पुं०) पुष्प-धूलि, वह रज जो फूलों के बीच में केशरों पर जमी रहती है ।
परागना–(हिं० क्रि०) अनुरक्त होना ।
पराङ्ग–(सं०पुं०) शरीर का पिछला भाग ।
पराङ्मुख–(सं० वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, उदासीन ।
पराचित–(सं० वि०) दूसरे से पाला-पोसा हुआ ।
पराजय–(हिं० स्त्री०) पराभव, हार ।
पराजित–(सं० वि०) पराभूत, हारा हुआ । **पराजिष्णु**–(सं० वि०) विजयी, जीतनेवाला ।
पराठा–(हिं० पुं०) तवे पर घी लगाकर सेंकी हुई चपाती, परौंठा ।
परात–(हिं० स्त्री०) थाली के आकार का बड़ा पात्र, बड़ी थाली, थाल ।
परमेश्वर–(वि०) सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम; (सं० पुं०) परमात्मा ।
पराधीन–(सं०वि०) परवश । **पराधीनता** (सं० स्त्री०) परतन्त्रता ।
परान–(हिं० पुं०) देखो प्राण ।
पराना–(हिं० क्रि०) भागना ।
परान्न–(सं० पुं०) दूसरे का दिया हुआ भोजन ।
पराभव–(सं० पुं०) पराजय, हार ।

पराभूत–(सं०वि०)पराजित, हारा हुआ।
परामर्श–(सं० पुं०) विचार, युक्ति, निर्णय, मन्त्रणा। **परामर्शन**–(सं० पुं०) स्मरण, चिन्तन।
परामृष्ट–(सं० वि०) निर्णय किया हुआ, विचारा हुआ।
परायण–(सं० वि०) प्रवृत्त, तत्पर।
परायत्त–(सं० वि०) पराधीन, परवश।
पराया–(हिं०वि०) अन्य का, दूसरे का।
परार्थ–(सं० वि०) दूसरे के निमित्त का; (पुं०) दूसरे का उपकार।
परावन–(हिं० पुं०) पलायन, भगदड़।
परावर्त–(सं० पुं०) अदल-बदल, पलटाव। **परावर्तन**–(सं० पुं०) पलटना, लौटना। **परावर्तित**–(सं० वि०) पलटाया हुआ।
परावा–(हिं० वि०) देखो पराया।
परावृत–(सं० वि०) फेरा हुआ, बदला हुआ। **परावृत्ति**–(सं० स्त्री०) पलटने या पलटान की क्रिया या भाव।
पराश्रय–(सं०वि०) वह जो दूसरे के आश्रय में हो।
परास्त–(सं० वि०)पराजित, हारा हुआ।
पराह्न–(सं० वि०) अपराह्न, तीसरा पहर।
परि–एक संस्कृत उपसर्ग जिसको शब्द में जोड़ने से "सर्वोत्तम, अच्छी तरह, अतिशय, त्याग, नियम" अर्थों की वृत्ति होती है।
परिकर–(सं० पुं०) पर्यङ्क, पलंग, परिवार, अनुचर वर्ग।
परिकरमा–(हिं०स्त्री०) देखो परिक्रमा।
परिकल्प–(सं० पुं०) बनावट, रचना।
परिकल्पन–(सं० पुं०) चिन्तन, मनन।
परिकल्पित–(सं०वि०)स्थिर किया हुआ।
परिकीर्ण–(सं० वि०) विस्तृत, फैला हुआ।
परिकीर्तन–(सं० पुं०) अधिक प्रशंसा।
परिकीर्तित–(सं०वि०)प्रशंसा किया हुआ, कहा हुआ।
परिकूट–(सं० पुं०) नगर या गढ़ के फाटक पर की खाई।
परिक्रम, परिक्रमण–(सं० पुं०) प्रदक्षिणा, परिक्रमा।
परिक्रमा–(सं० स्त्री०) किसी तीर्थस्थान या देवमन्दिर के चारों ओर घूमने के लिये बना हुआ मार्ग।
परिखन–(हिं० वि०) रक्षक, रखवाली करनेवाला। **परिखना**–(हिं० क्रि०) प्रतीक्षा करना, परीक्षा करना।
परिखा–(सं० स्त्री०) किले को घेरने की खाई। **परिखान**–(सं० पुं०) परिखा, खाई।
परिख्यात–(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।
परिगणन, परिगणना–(सं० पुं०) भली भाँति गणना करना, विचार करना।
परिगणनीय–(सं० वि०) गिने जाने योग्य। **परिगणित**–(सं० वि०) गिना हुआ।
परिगत–(सं० वि०) ज्ञात, जाना हुआ, प्राप्त, भूला हुआ, बीता हुआ, घिरा हुआ, मरा हुआ।
परिगदित–(सं० वि०) कहा हुआ।
परिगर्हण–(सं० पुं०) बड़ी निन्दा।
परिगह–(हिं०पुं०) कुटुम्बी, आश्रितजन।
परिगृहीत–(सं० वि०) स्वीकृत, ग्रहण किया हुआ।
परिग्रह–(सं० पुं०) दान लेना, ग्रहण करना, अनुग्रह, कृपा।
परिचना–(हिं० क्रि०) देखो परचना।
परिचय–(सं० पुं०) प्रमाण, अभ्यास, किसी व्यक्ति के नाम-धाम गुण आदि का बोध, जान-पहिचान।

परिचर–(सं० पुं०) अनुचर, भृत्य, टहलुआ। **परिचरजा**–(हिं० स्त्री०) देखो परिचर्या । **परिचरी**–(सं० स्त्री०) दासी, टहलनी । **परिचर्या**–(सं० स्त्री०) सेवा, शुश्रूषा, रोगी की सेवा ।
परिचरण–(सं० पुं०) सेवा, टहल ।
परिचार–(सं० पुं०) सेवा, टहल ।
परिचारक–(सं० पुं०) भृत्य, दास, किंकर ।
परिचारण–(सं० पुं०) सेवा, टहल ।
परिचारना–(हिं० क्रि०) सेवा, टहल करना ।
परिचारिक–(सं० पुं०) दास, सेवक ।
परिचारिका–(सं० स्त्री०) दासी । **परिचारी**–(हिं० वि०) सेवक ।
परिचालक–(सं० पुं०) संचालक, चलानेवाला । **परिचालन**–(सं० पुं०) कार्यक्रम चलाना । **परिचालित**–(सं० वि०) चलाया हुआ, परिचित, जाना-समझा, अभिज्ञ, संचित, इकट्ठा किया हुआ ।
परिच्छद–(सं० पुं०) परिवार, कुटुम्ब, वेश, पहिनावा ।
परिच्छन्न–(सं० वि०) स्वच्छ किया हुआ, वस्त्रयुक्त, ढपा हुआ ।
परिच्छा–(हिं० स्त्री०) देखो परीक्षा ।
परिच्छिन्न–(सं० वि०) मर्यादित, सीमायुक्त ।
परिच्छेद–(सं० पुं०) ग्रन्थ या पुस्तक का अध्याय, प्रकरण । **परिच्छेद्य** (सं० वि०) बाँटने योग्य ।
परिछन–(हिं० पुं०) देखो परछन ।
परिछाहीं–(हिं० स्त्री०) देखो परछाई ।
परिजंक–(हिं० पुं०) देखो पर्यंक ।
परिजटन–(हिं० पुं०) देखो पर्यटन ।
परिजन–(सं० पुं०) परिवार, आश्रित वर्ग ।
परिज्ञान–सं० पुं०) किसी वस्तु का भली भाँति ज्ञान, सूक्ष्म ज्ञान । **परि**-**ज्ञेय**–(सं० वि०) जानने योग्य ।
परिणत–(सं० वि०) रूप बदला हुआ, प्रौढ़, तुष्ट ।
परिणय–(सं० पुं०) विवाह, ब्याह ।
परिणाम–(सं० पुं०) विकार, प्रकृति का अन्यथा भाव, रूपान्तर-प्राप्ति, फल ।
परिणामदर्शी–(सं० क्रि०) सोच-विचार कर काम करनेवाला ।
परितच्छ–(हिं० पुं०) देखो प्रत्यक्ष ।
परितप्त–(सं० वि०) अत्यन्त गरम, तपा हुआ, जलता हुआ ।
परिताप–(सं० पुं०) दुःख, सन्ताप ।
परितापी–(हिं० वि०) दुःखित, व्यथित ।
परितुष्ट–(सं० वि०) अच्छी तरह से सन्तुष्ट ।
परितृप्त–(सं० वि०) अच्छी तरह से सन्तुष्ट, अघाया हुआ ।
परित्यक्त–(सं० वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ । **परित्याग**–(सं० पुं०) त्यागने का भाव, अलग कर देना ।
परित्रस्त–(सं० वि०) भयभीत, डरा हुआ ।
परित्राण–(सं० पुं०) रक्षा, बचाव ।
परित्रात–(सं० वि०) रक्षा किया हुआ ।
परित्राता–(सं० वि०) रक्षा करनवाला ।
परिध–(हिं० पुं०) देखो परिधि ।
परिधान–(सं० पुं०) पहिनने का वस्त्र ।
परिधि–(सं० पुं०) रेखागणित में वह रेखा जो किसी वृत्त के चारों ओर खींची जाती है, घेरा, कक्षा ।
परिधूपित–(सं० वि०) धूप द्वारा सुवासित
परिधेय–(सं० वि०) पहिनने योग्य ।
परिध्वंस–(सं० पुं०) अत्यंत नाश ।
परिनय–(हिं० पुं०) देखो परिणय ।
परिनिर्वाण–(सं० पुं०) पूर्ण मोक्ष ।
परिपक्व–(सं० वि०) प्रौढ़, अच्छी तरह से पका हुआ, अनुभवी, निपुण, प्रवीण ।

परिपाक–(सं० पुं०) कर्म का फल, परिणाम, प्रौढ़ता, पूर्णता।
परिपाटी–(सं० स्त्री०) प्रणाली, ढंग, रीति, पद्धति, अंकगणित।
परिपालक–(सं० वि०) रक्षा करनेवाला।
परिपालन–(सं० पुं०) रक्षा, बचाव।
परिपुष्ट–(सं०वि०) अच्छी तरह से पुष्ट।
परिपूत–(सं० वि०) विशुद्ध, अति पवित्र।
परिपूरित–(सं० वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ।
परिपूर्ण–(सं० वि०) सम्पूर्ण, पूरा किया हुआ, तृप्त, अघाया हुआ। परिपूर्णता–(सं० स्त्री०) सम्पूर्णता।
परिपृच्छक–(सं० पुं०) पूछनेवाला।
परिफुल्ल–(सं० वि०) अत्यन्त खिला हुआ, रोमांचित।
परिभव, परिभवन–(सं० पुं०) अनादर, तिरस्कार, पराजय। परिभावी–(हिं० वि०) तिरस्कार करनेवाला। परिभाव–(सं० पुं०) अनादर, तिरस्कार।
परिभावन–(सं० पुं०) संयोग, मिलाप।
परिभावना–(सं० स्त्री०) चिन्ता, शोच।
परिभावी–(हिं० वि०) तिरस्कार किया हुआ; (पुं०) तिरस्कार या अपमान करनेवाला।
परिभाषिक–(सं० वि०) निन्दक, अपमान करनेवाला।
परिभाषा–(सं० स्त्री०) किसी शब्द का इस प्रकार अर्थ करना कि जिसमें उसकी विशेषता और व्याप्ति पूर्ण रूप से निश्चित हो जावे, किसी शास्त्र ग्रन्थ आदि की विशिष्ट संज्ञा, ऐसा जो किसी शास्त्र में निर्दिष्ट अर्थ में व्यवहार किया गया हो। परिभाषित–(सं० वि०) जिसकी परिभाषा की गई हो।
परिभूषित–(सं० वि०) सजाया या सँवारा हुआ।
परिभोक्ता–(सं०पुं०) दूसरे के धन का उपभोग करनेवाला। परिभ्रमण–(सं० पुं०) पर्यटन, इधर-उधर घूमना।
परिभ्रष्ट–(सं० वि०) पतित, गिरा हुआ।
परिमल–(सं० पुं०) उत्तम गन्ध।
परिमाण–(सं० पुं०) माप, वह मान जो तौल या नापने से जानी जाय।
परिमान–(हिं० पुं०) देखो परिमाण।
परिमार्गण–(सं० पुं०) खोजना, ढूँढ़ना।
परिमार्जक–(सं० पुं०) धोने या माँजनेवाला। परिमार्जन–(सं० पुं०) परिशोधन, मार्जन।
परिमार्जित–(सं० वि०) धोया हुआ, माँजा हुआ।
परिमित–(सं० वि०) अल्प, थोड़ा, कम।
परिमिति–(सं० स्त्री०) भूमि मापन शास्त्र; (हिं० स्त्री०) मर्यादा, प्रतिष्ठा।
परिमुक्त–(सं० वि०) पूर्ण रूप से मुक्त।
परिम्लान–(सं० वि०) कुम्हलाया हुआ।
परियंक–(हिं० पुं०) देखो पर्यङ्क। परियंत–(हिं० अव्य०) देखो पर्यन्त।
परिरक्षक–(सं० वि०) सब तरह से रक्षा करनेवाला। परिरक्षा–(सं० स्त्री०) परिपालन। परिरक्षित–(सं० वि०) उत्तम रूप से रक्षित। परिरक्षी–(हिं० वि०) रक्षाकारी, बचानेवाला।
परिरम्भ, परिरम्भन–(सं० पुं०) आलिंगन। परिरम्भना–(हिं०क्रि०) आलिंगन करना।
परिलंघन–(सं० पुं०) फलाँग मारना।
परिलिखित–(सं० वि०) रेखा से घिरा हुआ।
परिलेख–(सं० पुं०) चित्र का स्थूल रूप जिसमें केवल रेखा हों, रंग न भरा हो।

परिलेखन–(सं० पुं०) किसी वस्तु के चारों ओर रेखा खींचना।
परिलेखना–(हिं० क्रि०) समझना, विचार करना।
परिवर्जक–(सं० वि०) त्याग करनेवाला।
परिवर्जन–(सं० पुं०) परित्याग, मारण।
परिवर्जनीय–(सं० वि०) त्याग करने योग्य। परिवर्जित–(सं० वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
परिवर्तक–(सं० वि०) चक्कर देनेवाला, बदलनेवाला। परिवर्तन–(सं० पुं०) दो वस्तुओं का परस्पर अदल-बदल, घुमाव, फेरा, बदलने की क्रिया, युग की समाप्ति। परिवर्तनीय–(सं० वि०) बदलने योग्य। परिवर्तित–(सं० वि०) बदला हुआ।
परिवर्धन–(सं० पुं०) अच्छी तरह वृद्धि होना। परिवर्धित–(सं० वि०) बढ़ा हुआ, बढ़ाया हुआ।
परिवसथ–(सं० पुं०) ग्राम, गाँव।
परिवा–(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की पहिली तिथि, प्रतिपदा।
परिवाद–(सं० पुं०) अपवाद, निन्दा।
परिवादक–(सं० वि०) निन्दा करनेवाला।
परिवादी–(हिं० वि०) निन्दा करनेवाला।
परिवार–(सं० पुं०) परिजन-समूह, कुटुम्ब। परिवारी–(हिं० पुं०) कुटुम्बी।
परिविष्ट–(सं० वि०) घिरा हुआ।
परिवृत्ति–(सं० स्त्री०) घुमाव, चक्कर, वेष्टन, घेरा।
परिवृद्ध–(सं० वि०) अत्यन्त बढ़ा हुआ।
परिवेश–(सं० पुं०) परिधि, वेष्टन, घेरा।
परिवेष–(सं० पुं०) परिधि, सूर्य का मंडल। परिवेष्टन–(सं० पुं०) आच्छादन। परिवेष्टित–(सं० वि०) चारों ओर से घिरा हुआ।
परिव्यक्त–(सं० वि०) अत्यन्त स्पष्ट।
परिव्राज, परिव्राजक, परिव्राट्–(सं० पुं०) संन्यासी, परमहंस, यति, श्रमणक।
परिशिष्ट–(सं० पुं०) पुस्तक की उपयोगिता बढ़ाने के लिय अवशिष्ट विषयों की पूर्ति; (वि०) अवशिष्ट, छूटा हुआ।
परिशीलन–(सं० पुं०) सब बातों या विषयों को सोच-समझकर पढ़ना।
परिशुद्ध–(सं० वि०) अच्छी तरह से शुद्ध किया हुआ।
परिशोध–(सं० पुं०) ऋण की चुकती।
परिशोधन–(सं० पुं०) पूर्ण रीति से शुद्ध करना।
परिश्रम–(सं० पुं०) प्रयास, उद्यम, व्यायाम। परिश्रमी–(सं० वि०) उद्यमी।
परिश्रय–(सं० पुं०) वेष्टन, घेरा।
परिश्रान्त–(सं० वि०) बहुत थका हुआ।
परिश्रान्ति–(सं० स्त्री०) थकावट।
परिश्रुत–(सं० वि०) प्रसिद्ध।
परिषत्, परिषद्–(सं० स्त्री०) समूह, समाज, सभा।
परिषिक्त–(सं० वि०) सींचा हुआ।
परिषेक–(सं० पुं०) छिड़काव, स्नान।
परिषेचक–(सं० वि०) सींचनेवाला, छिड़कनेवाला।
परिष्कार–(सं० पुं०) शुद्धि, अलंकार स्वच्छता। परिष्कृत–(सं० वि०) विभूषित, सजाया हुआ।
परिष्वङ्ग–(सं० पुं०) आलिंगन।
परिसंख्या–(सं० पुं०) गणना, गिनती।
परिसमाप्त–(सं० वि०) पूर्ण रूप से समाप्त, निःशेष।
परिस्पर्धा–(सं० स्त्री०) धन, बल, यश आदि में किसी के बराबर होने की इच्छा।
परिस्पर्धी–(सं० वि०) स्पर्धा करनेवाला।

परिस्फुट–(सं॰ वि॰)व्यक्त, प्रकाशित।
परिहत–(स॰ वि॰) मृत, मरा हुआ; (हिं॰ स्त्री॰) हल की अन्तिम और मुख्य भाग की वह सीधी खड़ी लकड़ी जिसके ऊपर की ओर मुठिया लगी होती है तथा नीचे की ओर हरिस तथा तरेली ठोंकी रहती है ।
परिहर–(हिं॰ पुं॰) देखो परिहार । **परिहरण**–(सं॰ पुं॰) परिवर्जन, त्याग, निवारण ।
परिहरणीय–(सं॰ वि॰) हटाने या दूर करने योग्य ।
परिहरना–(हिं॰क्रि॰)त्यागना, छोड़ना।
परिहंस–(हिं॰ पुं॰) परिहास, हँसी ।
परिहार–(सं॰ पुं॰) अनादर, उपेक्षा, छूट, खण्डन, दोषादि का त्याग, छिपाने की क्रिया, तिरस्कार ।
परिहारक–(सं॰वि॰)परिहार करनेवाला।
परिहारना–(हिं॰ क्रि॰) प्रहार करना; **परिहारी**–(सं॰वि॰)हरण करनेवाला।
परिहास–(हिं॰ पुं॰) क्रीड़ा, खेल, हँसी, दिल्लगी ।
परीक्षक–(सं॰पुं॰)परखने या जाँचनेवाला।
परीक्षा–(सं॰ स्त्री॰) गुण दोष विवेचन, जाँच-पड़ताल ।
परीक्षित–(सं॰ वि॰) जिसकी परीक्षा की गई हो । **परीक्ष्य** (सं॰ वि॰) परीक्षा करने योग्य ।
परीखना–(हिं॰ क्रि॰) देखो परखना ।
परीछत–(हिं॰ पुं॰) देखो परीक्षित ।
परीछना–(हिं॰ क्रि॰) परीक्षा लेना ।
परीछम–(हिं॰ पुं॰) पैर में पहिनने का एक आभूषण ।
परीछा–(हिं॰ स्त्री॰) देखो परीक्षा ।
परीछित–(हिं॰ वि॰) देखो परीक्षित ।
परुख–(हिं॰ वि॰) कठोर, तीक्ष्ण । **परुखाई**–(हिं॰स्त्री॰) परुषता, कठोरता ।
परुष–(सं॰ वि॰) कठोर, कड़ा, निष्ठुर, अप्रिय, निर्दय । **परुषता**–(हिं॰ स्त्री॰) निष्ठुरता । **परुषोक्ति**–(सं॰ स्त्री॰) निष्ठुर वचन ।
परे–(हिं॰अव्य॰)दूर, उधर, उस ओर ।
परेखना–(हिं॰ क्रि॰) ध्यान से देखना, जाँचना, प्रतीक्षा करना ।
परेखा–(हिं॰ स्त्री॰) परीक्षा ।
परेग–(हिं॰ स्त्री॰)लोहे की कील, छोटा काँटा ।
परेट–(हिं॰ पुं॰) सैनिक शिक्षा ।
परेत–(हिं॰ पुं॰)देखो प्रेत; (वि॰)मृत मरा हुआ । **परेत भूमि**–श्मशान ।
परेता–(हिं॰ पुं॰) वह बेलन या चरखा जिस पर पतंग (गुड्डी) की डोरी (नख) लपेटी जाती है ।
परेर–(हिं॰ पुं॰) आकाश ।
परोधित–(सं॰ वि॰) दूसरे से पाला पोसा हुआ; (पुं॰) कोकिल, कोयल ।
परों–(हिं॰ क्रि॰ वि॰) देखो परसों ।
परोक्ष–(सं॰ पुं॰) अप्रत्यक्ष, अनुपस्थित (वि॰) गुप्त, छिपा हुआ ।
परोजन–(हिं॰ पुं॰) देखो प्रयोजन ।
परोट–(स॰ पुं॰) घी में पकाई हुई पूरी ।
परोना–(हिं॰ क्रि॰) देखो पिरोना ।
परोपकार–(सं॰ पुं॰) दूसरे के हित का काम, दूसरे का उपकार । **परोपकारक**–(सं॰पुं॰)वह जो दूसरे की भलाई करता हो । **परोपकारी**–(सं॰ वि॰) दूसरे का हित करनेवाला ।
परोसना–(हिं॰क्रि॰)खाने के लिये सामने तरह-तरह के भोजन रखना ।
परोसा–(हिं॰ पुं॰) एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो कहीं भेजा जाता है ।
परोसी–(हिं॰ पुं॰) देखो पड़ोसी ।

परोसैया–(हिं० पुं०) भोजन परसनेवाला
पर्कटि,पर्कटी–(सं०स्त्री०)पाकड़ का वृक्ष।
पर्कार–(हिं०पुं०)देखो परकार,परकाल।
पर्काला–(हिं० पुं०) देखो परकाला।
पर्गना–(हिं० पुं०) देखो परगना ।
पर्चा–(हिं० पुं०) देखो परचा।
पर्चाना–(हिं० क्रि०) देखो परचाना।
पर्चून–(हिं० पुं०) देखो परचून।
पर्चूनिया–(हिं० पुं०) देखो परचूनी।
पर्जङ्क–(हिं० पुं०) देखो पर्यंक ।
पर्जन्य–(सं० पुं०) मेघ, बादल।
पर्ण–(सं० पुं०) पत्र, पत्ता, डैना ।
पर्णकार–(सं० पुं०) तमोली, बरई ।
पर्णकुटिका,पर्णकुटी–(सं०पुं०) झोपड़ी, केवल पत्तों की बनी हुई कुटी ।
पर्त–(हिं० स्त्री०) देखो परत।
पर्दनी–(हिं० स्त्री०) धोती ।
पर्दा–(हिं० पुं०) देखो परदा ।
पर्पटी–(सं० स्त्री०) पपड़ी ।
पर्बत–(हिं० पुं०) देखो पर्वत।
पर्बती–(हिं०वि०) पहाड़ संबंधी, पहाड़ी।
पर्यङ्क–(सं० पुं०) पलंग ।
पर्यटन–(सं० पुं०) भ्रमण, घूमना,फिरना।
पर्यन्त–(सं० पुं०) समीप, पास; (अव्य०) तक, लौं ।
पर्यवसायी–(हिं० वि०) समाप्त करनेवाला ।
पर्यवस्कन्द–(सं० पुं०) रथ से उतारना।
पर्यवस्थान–(सं० पुं०) विरोध ।
पर्यस्त–(सं० वि०) पतित, प्रसारित ।
पर्याकुल–(सं०त्रि०)बहुत घबड़ाया हुआ।
पर्याप्त–(सं० त्रि०) यथेष्ट, पूरा ।
पर्यालोचन–(सं० पुं०) अनुशीलन ।
पर्यालोचना–(सं० स्त्री०) पूरी जाँच-पड़ताल।
पर्युपासक–(सं० पुं०) सेवा करनेवाला।
पर्युपासन–(सं० पुं०) सेवा सत्कार।
पर्व–(सं० पुं०) बाँस की गाँठ, अँगुली का जोड़, उत्सव, पूर्णिमा और प्रतिपदा की सन्धि, अंश, भाग, अवसर, सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण ।
पर्वणी–(सं०स्त्री०)पूर्णिमा, पौर्णमासी
पर्वत–(सं० पुं०) शैल, गिरि, पहाड़, किसी वस्तु का ऊँचा ढेर ।
पर्वती–(हिं० वि०) पर्वत संबंधी, पहाड़ी; (पुं०) पहाड़ पर रहनेवाला ।
पर्वर–(हिं०पुं०) देखो परवर, परवल।
पर्वसन्धि–(सं० पुं०)घुटने पर का जोड़।
पर्शु–(सं० पुं०) परशु, फरसा। पर्शुका–(सं० स्त्री०) छाती पर की हड्डी।
पर्षद–(सं० स्त्री०) सभा, समाज ।
पलंग–(हिं०पुं०)पर्यंक, सुन्दर चारपाई; पलंगड़ी–(हिं० स्त्री०) छोटा पलंग।
पल–(सं० पुं०) समय का एक प्राचीन विभाग जो चौबीस सेकेन्ड के बराबर होता है, घड़ी या दण्ड का साठवाँ भाग।
पलई–(हिं० स्त्री०) पेड़ की टहनी ।
पलक–(सं० पुं०) आँख के ऊपर का चमड़े का परदा जिसके गिरने से आँख बन्द होती है और उठने से खुलती है, क्षण, पल।
पलका–(हिं० पुं०) पलंग, चारपाई।
पलटन–(हिं० स्त्री०) पैदल सेना का एक विभाग, इसमें प्रायः दो सौ सैनिक रहते हैं, समूह, समुदाय, दल ।
पलटना–(हिं०क्रि०) बदलना, लौटाना, फेरना, लौटना, पीछे फिरना, मुड़ना, एक वस्तु को त्याग कर दूसरा ग्रहण करना ।
पलटनिया–(हिं० पुं०) पलटन में काम करनेवाला सैनिक।
पलटा–(हिं० पुं०) प्रतिफल, बदला,

परिवर्तन।
पलटाना–(हि० क्रि०) बदलना, फेरना, लौटाना। **पलटे**–(हि० क्रि० वि०) बदले में।
पलड़ा–(हि० पुं०) तराजू का पल्ला।
पलथी–(हि०स्त्री०) बैठने का एक ढंग जिसमें दाहिने पैर का पंजा बायें और बाये पैर का पंजा दाहिन पट्ठे के नीचे दबा कर रक्खा जाता है और दोनों टाँगें ऊपर नीचे होकर दोनों जाँघों से त्रिकोण बनाती हैं।
पलना–(हि० क्रि०) पाला पोसा जाना, तैयार होना।
पलरा–(हि० पुं०) देखो पलड़ा।
पलल–(सं० पुं०) मांस, कीचड़, तिल का चूर्ण; (पुं०) सेवार, बल, शक्ति।
पलवल–(हि० पुं०) देखो परवल।
पलवाना–(हि० क्रि०) किसी के द्वारा पालन-पोषण कराना।
पलवैया–(हि० वि०) पालन-पोषण करनेवाला।
पलस्तर–(हि० पुं०) भीत आदि पर गारे आदि का लेप।
पलहना–(हि० क्रि०) पत्तियों से भर जाना, पत्तियाँ फूटना।
पलहा–(हि० पुं०) कोमल पत्ता, कोंपल।
पला–(हि० पुं०) तराजू का पलड़ा, पल्ला, किनारा, अंचल।
पलाण्डु–(सं० पुं०) प्याज।
पलाद–(सं० पुं०) मांसभक्षक, राक्षस।
पलान–(हि० पुं०) पशुओं की पीठ पर चढ़न या बोझ रखने का गद्दा।
पलाना–(हि० क्रि०) भाग जाना, भगा देना।
पलानी–(हि० स्त्री०) पैर की अँगुलियों में पहिनने का एक गहना।
पलायक–(सं० वि०) भागनेवाला।
पलायन–(सं० पुं०) भागने की क्रिया या भाव।
पलायमान–(सं० वि०) भागता हुआ।
पलायित–(सं० वि०) भागा हुआ।
पलायी–(सं० वि०) पलायक, भग्गू।
पलाश–(सं० पुं०) पत्र, पत्ता, ढाक का फूल; (वि०) निष्ठुर, कठोर।
पलास–(हि० पुं०) पलाश, ढाक।
पलिका–(हि० पुं०) खाट, चारपाई।
पलिघ–(हि० पुं०) गोशाला, फाटक, अर्गला, अगरी।
पलित–(सं० वि०) वृद्ध, बूढ़ा।
पली–(हि० स्त्री०) किसी खड़े पात्र में से घी या तेल निकालने की एक प्रकार की करछी।
पलीत–(हि० पुं०) भूत, प्रेत, पिशाच; (वि०) दुष्ट, धूर्त।
पलुआ–(हि० वि०) पाला हुआ, पालतू।
पलेट–(हि० स्त्री०) लंबी पट्टी, गोट।
पलेथन–(हि० पुं०) वह सूखा आटा जो रोटी बेलते समय लोई में लगाया जाता है।
पलेनर–(हि० पुं०) चौरस करने की पटिया।
पलेव–(हि०पुं०) जस को गाढ़ा करने के लिये इसमें मिलाया हुआ आटा या मसाला।
पलोटना–(हि० क्रि०) पैर दबाना।
पलोथन–(हि० पुं०) देखो पलेथन।
पल्टा–(हि० पुं०) देखो पलटा।
पल्लव–(सं० पुं०) नये निकल हुए कोमल पत्ते, किसलय। **पल्लवना**–(हि० क्रि०) पत्ते निकलना।
पल्लवित–(सं० वि०) जिसमें नये नये पत्ते निकले हों।

पल्ला–(हिं० पुं०) किसी वस्त्र का अंचल, दूरी, पास, तराजू का पलड़ा, पटल, किवाड़ी, पहल, चादर जिसमें अन्न बाँधकर लोग ले जाते हैं, दुपलिया टोपी का एक भाग।

पल्लि–(सं० स्त्री०) कुटी, ग्राम, छिपकली। **पल्ली**–(सं० स्त्री०) छिपकली, गोधा, बिस्तुइया।

पल्लू–(हिं० पुं०) चौड़ी गोंट, पल्ला, छोर, अँचरा।

पल्लेदार–(हिं० पुं०) आढ़त या दूकान में अन्न तौलनेवाला मनुष्य, बया।

पल्वल–(सं० पुं०) छोटा तालाब या गड्ढा।

पवन–(सं० पुं०) वायु; (वि०) पावन, पवित्र।

पवनचक्की–(हिं० स्त्री०) वायु के वेग से चलनेवाली चक्की या कल। **पवनचक्र**–(सं० पुं०) चक्रवात, बवण्डर।

पवरिया–(हिं० पुं०) ड्योढ़ीदार।

पवर्ग–(सं० पुं०) वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग, जिसमें, प, फ, ब, भ, म, ये पाँच अक्षर हैं।

पवांरना–(हिं० क्रि०) गिराना, फेंकना।

पवाई–(हिं० स्त्री०) एक पैर का जूता, चक्की का एक पाट।

पवाना–(हिं० क्रि०) भोजन कराना, खिलाना।

पवि–(सं० पुं०) वज्र, बिजली, मार्ग, थूहर का वृक्ष।

पवित–(सं० वि०) पूत, पवित्र, शुद्ध।

पवित्तर–(हिं० वि०) देखो पवित्र।

पवित्र–(सं० वि०) शुद्ध, निर्मल।

पवित्रता–(सं० स्त्री०) स्वच्छता, शुद्धि।

पवित्रा–(सं० स्त्री०) श्रावण के शुक्लपक्ष की एकादशी, रेशम के दानों की बनी हुई माला। **पवित्रात्मा**–(हिं० वि०) शुद्ध अन्तःकरणवाला। **पवित्रित**–(सं० वि०) शुद्ध या निर्मल किया हुआ।

पवित्री–(सं० स्त्री०) कुश का बना हुआ छल्ला जो यज्ञादि के समय अनामिका में पहिना जाता है।

पवेरना–(हिं० क्रि०) छितराकर बोना।

पवेरा–(हिं० पुं०) वह बोवाई जो अन्न को हाथ से छितराकर या फेंककर को जावे।

पशम–(हिं० स्त्री०) बहुत बढ़िया कोमल ऊन जिसके दुशाले आदि बनते हैं, अति तुच्छ पदार्थ।

पशु–(सं० पुं०) चार पैर से चलनेवाले रोवाँ और पूंछयुक्त प्राणी, प्राणिमात्र, जीव, देवता, पागल, यज्ञ।

पशुता–(सं० स्त्री०) पशु का भाव, मूर्खता।

पशुपति–(सं० पुं०) शिव, महादेव।

पशुपाल–(सं० पुं०) पशुओं को पालनेवाला। **पशुपालक**–(सं० वि०) पशुओं का रक्षक।

पश्चात्–(सं० अव्य०) पीछे से, फिर, अनन्तर; (पुं०) पश्चिम दिशा।

पश्चात्ताप–(सं० पुं०) पछतावा।

पश्चात्तापी–(सं० वि०) पछतावा करनेवाला।

पश्चानुताप–(सं० पुं०) पछतावा।

पश्चिम–(सं० वि०) अन्तिम, जो बाद में उत्पन्न हुआ हो, बाद का; (पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है।

पश्चिमरात्र–(सं०पुं०) रात्रि का शेष भाग

पश्चिमी–(हिं० वि०) पच्छिम संबंधी।

पश्चिमोत्तर–(सं० स्त्री०) वायुकोण, पच्छिम और उत्तर के बीच का कोण।

पश्मीना–(हिं० पुं०) एक प्रकार का उत्तम कोमल ऊनी वस्त्र।

पषाण (–न)–(हिं० पुं०) देखो पाषाण।
पषारना–(हिं० क्रि०) प्रक्षालन, धोना।
पसंगा (–घा)–(हिं०पुं०) वह भार जो तराज़ू के पल्लों का समभार करने के लिये उस पल्ले की ओर जोती में बाँध दिया जाता है जो पल्ला हलका होता है; (वि०) बहुत कम या थोड़े परिमाण का।
पसंती–(हिं० स्त्री०) देखो पश्यन्ती।
पसमीना–(हिं० पुं०) देखो पश्मीना।
पसर–(हिं० पुं०) गहरी की हुई हथेली, आधी अंजली, विस्तार, फैलाव।
पसरना–(हिं० क्रि०) फैलाना, आगे की ओर बढ़ाना, हाथ-पैर फैलाकर लेटना।
पसरहा, पसरहट्टा–(हिं० पुं०) वह हाट जिसमें पंसारियों की दूकानें हों।
पसराना–(हिं० क्रि०) पसारने का काम दूसरे से कराना। **पसरौंहाँ**–(हिं०वि०) पसारने या फैलानेवाला।
पसली–(हिं० स्त्री०) मनुष्यों की छाती के अस्थि-पंजर की गोलाकार आड़ी हड्डियों में से एक, पर्शु।
पसाउ–(हिं० पुं०) प्रसाद, प्रसन्नता।
पसाना–(हिं० क्रि०) भात का माड़ निकालना, पसेव निकालना।
पसार–(हिं० पुं०) विस्तार, फैलाव।
पसारना–(हिं०क्रि०) फैलाना, आगे को बढ़ाना।
पसारी–(हिं० पुं०) देखो पंसारी।
पसाव–(हिं० पुं०) माड़, पीच।
पसावन–(हिं० पुं०) पानी, माड़, पीच।
पसाहनि–(हिं० स्त्री०) अंगराग।
पसीजना–(हिं० क्रि०) किसी घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंशों का गरमी पाकर रसकर बहना।
पसीना–(हिं० पुं०) श्रमवारि, स्वेद।
पसु–(हिं० पुं०) देखो पशु। **पसुरी**–(हिं० स्त्री०) देखो पसली, पर्शु।
पसूता–(हिं० स्त्री०) प्रसूता।
पसेउ–(हिं० पुं०) देखो पसेव।
पसेरी–(हिं० स्त्री०) पाँच सेर का परिमाण।
पसेव–(हिं० पुं०) रसकर निकलनेवाला जल, स्वेद, पसीना।
पस्ताना–(हिं० क्रि०) देखो पछताना।
पस्तावा–देखो पछतावा।
पहँ–(हिं० अव्य०) निकट, समीप, पास।
पहचनवाना–(हिं० क्रि०) पहचानने का काम करना।
पहचान–(हिं० स्त्री०) पहचानने की सामग्री, परिचय, लक्षण। **पहिचानना**–(हिं० क्रि०) विवेक करना, चीन्हना, जानना।
पहटना–(हिं० क्रि०) खदेड़ना।
पहनना–(हिं० क्रि०) शरीर पर धारण करना। **पहनवाना**–(हिं० क्रि०) पहिनने का काम किसी दूसरे से कराना। **पहनाई**–(हिं० स्त्री०) पहनने की क्रिया या भाव, पहिनाने का शुल्क। **पहनाना**–(हिं० क्रि०) किसी के शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण कराना। **पहनावा**–(हिं० पुं०) पहिनने के प्रधान वस्त्र, वे वस्त्र जो मुख्य अवसर पर पहिने जाते हैं।
पहपट–(हिं० पुं०) कोलाहल, अपमान की चर्चा।
पहर–(हिं० पुं०) तीन घंटे का समय।
पहरना–(हिं० क्रि०) देखो पहनना।
पहरा–(हिं० पुं०) रक्षकगण, रखवाली, नियुक्ति।
पहराइत–(हिं० पुं०) पहरा देनेवाला।
पहराना–(हिं० क्रि०) देखो पहनाना।

पहरावनी–(हिं० स्त्री०) वह पहिनावा जिसको कोई बड़ा अपने से छोटे को दे। **पहरावा**–(हिं०पुं०) देखो पहनावा।
पहरी–(हिं० पुं०) चौकीदार, पहरेदार, पहरुआ। **पहरू**–(हिं० पुं०) चौकीदार।
पहल–(हिं० पुं०) समतल अंश, परत, तह, किसी कार्य का आरंभ।
पहलदार–(हिं० वि०) जिसमें पहल हों।
पहला–(हिं० वि०) जो क्रम में प्रथम हो।
पहले–(हिं०अव्य०) आरंभ में, पूर्व काल में।
पहलेज–(हिं० पुं०) एक प्रकार का खर्बूजा जो लंबोतर होता है।
पहले पहल–(हिं० अव्य०) पहिली बार।
पहलौंठा, पहलौठा–(हिं० वि०) पहिली बार के गर्भ से उत्पन्न।
पहलौठी–(सं० स्त्री०) प्रथम प्रसव।
पहाड़–(हिं० पुं०) पर्वत, गिरि, किसी वस्तु का भारी ढेर, दुःसाध्य अथवा अति क्लिष्ट कार्य, बहुत बड़े भार की वस्तु।
पहाड़ा–(हिं० पुं०) किसी अंक के एक से लेकर दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सूची।
पहाड़िया–(हिं० वि०) देखो पहाड़ी।
पहाड़ी–(हिं०वि०) पहाड़ पर रहनेवाला, पहाड़ संबंधी; (स्त्री०) छोटा पहाड़।
पहार–(हिं० पुं०) देखो पहाड़।
पहिचानना–(हिं० क्रि०) पहचानना।
पहिनना–(हिं० क्रि०) देखो पहनना।
पहिनाना–(हिं० क्रि०) देखो पहनाना।
पहिनावा–(हिं० क्रि०) देखो पहनावा।
पहिनावा–(हिं० पुं०) देखो पहरावा।
पहिया–(हिं० पुं०) वह चक्राकार भाग जो अपनी धुरी पर घूमता हो, चक्र, चक्कर।
पहिरना–(हिं० क्रि०) देखो पहनना।
पहिराना–(हिं० क्रि०) देखो पहनाना।
पहिरावना–(हिं० क्रि०) देखो पहनाना।
पहिरावनि, पहिरवानी–(हिं०स्त्री०) देखो पहनावा।
पहिला–(हिं० वि०) प्रथम। **पहिले**–(हिं० अव्य०) आरंभ में।
पहुंच–(हिं० स्त्री०) किसी स्थान तक की गति, प्राप्ति, प्रवेश, पैठ। **पहुँचना**–(हिं० क्रि०) प्राप्त होना, मिलना, पैठना, घुसना, गूढ़ अर्थ को जान लेना।
पहुँचा–(हिं० पुं०) अग्र बाहु और हथेली के बीच का भाग, मणिबन्ध, कलाई, गट्टा।
पहुँचाना–(हिं० क्रि०) किसी को किसी विशेष अवस्था में ले जाना।
पहुँची–(हिं० स्त्री०) हाथ की कलाई पर पहिनने का एक गहना।
पहुनई–(हिं० स्त्री०) देखो पहुनाई।
पहुना–(हिं० पुं०) देखो पाहुना।
पहुनाई–(हिं० स्त्री०) अतिथि सत्कार।
पहुप–(हिं० स्त्री०) पुष्प, फूल।
पहुमी–(हिं० स्त्री०) पृथ्वी।
पहुरी–(हिं० स्त्री०) संगतराश की मठारने की टांकी।
पहेरी, पहेली–(हिं० स्त्री०) समस्या, बुझौवल, फेरवट की बात।
पाँ, पाँइ–(हिं० पुं०) पद, पाँव, पैर।
पाँइता–(हिं० पुं०) देखो पाँयता।
पाँउँ–(हिं० पुं०) पद, पाँव, पैर।
पाँक–(हिं०पुं०) पंक, कर्दम, कीचड़।
पाँका–(हिं० पुं०) देखो पाँक।
पाँख–(हिं० पुं०) पंख, पर।
पाँच–(हिं० वि०) जो गिनती में चार और एक हो; (पुं०) चार और एक की संख्या, ५। **पाँचवाँ**–(सं० वि०) जो

क्रम से पाँच के स्थान पर हो।
पाँचालिका–(हिं० स्त्री०) कपड़े की बनी हुई पुतली, गुड़िया।
पाँचना–(हिं० क्रि०) टाँका लगाकर जोड़ना, झालना।
पाँजर–(हिं०पुं०) पसली, पार्श्व, सामीप्य।
पाँति–(हिं० स्त्री०) पंगत, पंक्ति, पाँति।
पाँथ–(हिं० वि०) पथिक, बटोही।
पाँय–(हिं० पुं०) पद, पैर, चरण।
पाँयता–(हिं०पुं०) खाट या पलंग का उस ओर का भाग जिस ओर पैर किया जाता है।
पाँव–(हिं० पुं०) पाद, पैर।
पाँवड़ी–(हिं० स्त्री०) खड़ाऊँ।
पाँवरी–(हिं०स्त्री०) सोपान, सीढ़ी, जूता।
पाँशु–(सं० पुं०) धूलि, रज, बालू।
पाँसा–(हिं०पुं०) हड्डी या हाथीदाँत के बने हुए चौसर खेलने के चौकोर टुकड़े।
पाँसु–(सं० पुं०) धूलि, रज।
पाँसुरी–(हिं० स्त्री०) देखो पँसुली।
पाँही–(हिं०क्रि०वि०) समीप, निकट, पास।
पाइ–(हिं० पुं०) देखो पाद, पाँव।
पाइतरी–(हिं० स्त्री०) चारपाई का पैताना।
पाइल–(हिं० स्त्री०) देखो पायल।
पाई–(हिं० स्त्री०) एक पैसा, एक छोटी मुद्रा जो एक पैसे में तीन होती है, छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लिखने से चतुर्थांश प्रकट करती है, पूर्ण विराम के लिये खींची हुई छोटी खड़ी रेखा, घुन की तरह का एक कीड़ा।
पाउँ–(हिं० पुं०) देखो पाँव।
पाक–(हिं० पुं०) पकाने की क्रिया, रींधन, रसोंई, खाये हुए पदार्थ की पचने की क्रिया।
पाकठ–(हिं० वि०) पका हुआ, अनुभवी।
पाकड़–(हिं० पुं०) देखो पाकर।
पाकना–(हिं० क्रि०) देखो पकना।
पाकर–(हिं० पुं०) समस्त भारतवर्ष में होनेवाला एक वृक्ष।
पाकशाला–(हिं० स्त्री०) महानस, रसोंई बनाने का घर। पाकशासन–(सं० पुं०) इन्द्र। पाकस्थली–(सं० स्त्री०) उदर में का पक्वाशय जहाँ आहार का पाचन होता है।
पाकागार–(सं० पुं०) रसोईघर।
पाक्षिक–(सं०वि०) पक्षपाती, जो प्रतिपक्ष में एक बार हो।
पाखंड–(हिं० पुं०) ढोंग, आडंबर।
पाखंडी–(हिं० वि०) ढोंगी, धूर्त, कपटी, बनावटी धर्म दिखलानेवाला।
पाख–(हिं० पुं०) महीने का आधा भाग, मकान की चौड़ाई के भीतों के भाग।
पाखण्ड–(सं० पुं०) कपट, छल, ढकोसला, आडंबर; (सं० वि०) कपटाचारी, ढोंगी, धूर्त।
पाखर–(हिं० स्त्री०) राल चढ़ाया हुआ टाट। पाखरी–(हिं० स्त्री०) टाट का बना हुआ बड़ा चादर जिसको बैलगाड़ी में रखकर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है।
पाखा–(हिं०पुं०) कोना, छोर, देखो पाख।
पाखान–(हिं० पुं०) देखो पाषाण, पत्थर।
पाग–(हिं० पुं०) पगड़ी; (पुं०) चाशनी में पकाई हुई औषधि, फल आदि।
पागना–(हिं० क्रि०) चाशनी में लपेटना।
पागल–(सं० वि०) उन्मत्त, बावला, विक्षिप्त, मूर्ख।
पागुर–(हिं० पुं०) जुगाली।
पाचक–(सं० पुं०) पकाने या पचानेवाला; (पुं०) पाचन शक्ति को बढ़ाने-

वाली औषधि, रसोइयादार।
पाचन–(सं० पुं०) दोष को पचानेवाली औषधि।
पाचना–(हिं० क्रि०) अच्छी तरह से पकाना। **पाचनीय**–(सं० वि०) पचाने या पकाने योग्य।
पाचर–(हिं० पुं०) देखो पच्चर।
पाछ–(हिं० स्त्री०) रस निकालने के लिये वृक्ष की डाल या तने पर बनाया हुआ चीरा; (पुं०) पिछला भाग; (क्रि०वि०) पीछे की ओर। **पाछना**–(हिं० क्रि०) जन्तु या पौधे के अंग पर छुरी की धार से मारकर रक्त या रस निकालना।
पाछल–(हिं०वि०) देखो पिछला। **पाछा**–(हिं० पुं०) देखो पीछा। **पाछिल**–(हिं० वि०) देखो पिछला।
पाछी, पाछु, पाछे–(हिं० क्रि० वि०) पीछे की ओर।
पाजी–(हिं० वि०) दुष्ट, नीच। **पाजीपन**–(हिं० पुं०) दुष्टता, नीचता।
पाञ्चालिका, पाञ्चाली–(सं० स्त्री०) गुड़िया।
पाटंबर–(हिं० पुं०) रेशमी वस्त्र।
पाट–(हिं० पुं०) जूट का पौधा, वस्त्र, कपड़ा, चक्की का एक पल्ला, धोबी का कपड़ा पटककर धोने का पत्थर, पल्ला, पीढ़ा, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, रेशम, राज्यशासन, कीड़ा।
पाटच्चर–(सं० पुं०) चोर।
पाटन–(हिं० स्त्री०) पाटने की क्रिया या भाव, पटाव।
पाटना–(हिं० क्रि०) किसी नीचे स्थान को उसके आसपास के धरातल के बराबर कर देना, ढेर लगा देना।
पाटमहिषी–(हिं० स्त्री०) प्रधान रानी, पटरानी।
पाटम्बर–(सं० पुं०) रेशमी वस्त्र।
पाटरानी–(हिं० स्त्री०) देखो पटरानी।
पाटला–(हिं० पुं०) भारत का शुद्ध किया हुआ बढ़िया सोना।
पाटव–(सं० पुं०) पटुता, निपुणता।
पाटसन–(हिं० पुं०) पटसन, पटुआ।
पाटा–(हिं० पुं०) पीढ़ा, बल्ली, पटिया।
पाटी–(हिं० पुं०) वह लकड़ी की पट्टी जिस पर बालकों को विद्याभ्यास कराया जाता है, पटिया की पाट खाट की लम्बाई बल की लकड़ी। **पाटीगणित**–(सं० पुं०) अंक विद्या।
पाठ–(सं० पुं०) शिष्य का अध्यापन, पढ़ना, पढ़ने की क्रिया, किसीधर्म-पुस्तक को नियमपूर्वक पढ़ने की क्रिया, किसी पुस्तक का वह अंश जो एक बार पढ़ाया जाय।
पाठक–(सं० पुं०) उपाध्याय, पढ़ानेवाला, धर्मोपदेशक, अध्यापक। **पाठना**–(हिं० क्रि०) पढ़ाना।
पाठपद्धति, पाठप्रणाली–(सं० स्त्री०) पढ़ने की रीति या ढंग।
पाठभेद–(सं० पुं०) वह भेद जो एक ही ग्रन्थ की दो प्रतियों के पाठ में पाया जाता है।
पाठशाला–(सं० स्त्री०) अध्ययनगृह, विद्यालय।
पाठान्तर–(सं० पुं०) पाठभेद।
पाठार्थी–(सं० वि०) पढ़नेवाला।
पाठालय–(सं०पुं०) पाठशाला, विद्यालय।
पाठिका–(सं० स्त्री०) पाठ पढ़नवाली।
पाठित–(सं० वि०) पढ़ाया हुआ।
पाठी–(हिं० पुं०) पढ़नेवाला।
पाठ्य–(सं० वि०) पढ़ने योग्य।
पाड़–(हिं० पुं०) धोती, साड़ी आदि का किनार।

पाड़ा–(हिं० पुं०) नगर का मुहल्ला, टोला।
पाढ़–(हिं० पुं०) वह पीढ़ा जिस पर बैठकर सुनार, लोहार या बढ़ई काम करते हैं, अस्त्र, पाटा, लकड़ी की सीढ़ी।
पाढ़त–(हिं० स्त्री०) पढ़ने की क्रिया या भाव।
पाढ़ल–(हिं० पुं०) देखो पाटल।
पाणि–(सं० पुं०) हस्त, हाथ, कर।
पाणिग्रहण–(सं० पुं०) विवाह।
पाणिज–(सं० पुं०) अँगुली, नख। **पाणितल**–(सं० पुं०) करतल, हथली।
पाणिपीड़न–(सं०पुं०)पाणिग्रहण,विवाह।
पाणिरुह–(सं० पुं०) अँगुली, नख।
पाणिवाद–(सं० वि०)ताली बजाना।
पाणिवादक–(सं०वि०)ताली बजानेवाला।
पाण्डित्य–(सं० पुं०) विद्वत्ता, पण्डिताई।
पाण्डु–(सं० पुं०) हलका पीला रंग, कामला रोग। **पाण्डुता**–(सं० स्त्री०) पाण्डुत्व, पीलापन।
पाण्डुरोग–(सं० पुं०) कामला रोग।
पाण्डुलिपि, पाण्डुलेख–(सं० पुं०) लेख आदि का पहला रूप।
पात–(सं० पुं०) पतन, खगोल का वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षायें क्रान्तिवृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे उतरती हैं, नाश, मृत्यु; (वि०) गिरानेवाला; (हिं० पुं०) पत्ता, कान में पहिनने का एक गहना।
पातक–(सं० पुं०)पाप, दुष्कृत। **पातकी**–(हिं० वि०) पाप करनेवाला।
पातबंदी–(हिं० स्त्री०) वह मानचित्र जिसमें भूसम्पत्ति की आय और उस पर का देन लिखा होता है।
पातर–(हिं० वि०) सूक्ष्म, पतला।
पातल़–(हिं० वि०)देखो पातर, पतला।
पातव्य–(सं० वि०) रक्षा करने योग्य, पीने योग्य।
पाता–(हिं० पुं०)पत्ता; (वि०) रक्षक।
पाताखत–(हिं० पुं०) पत्र और अक्षत।
पाताल–(सं० पुं०) विवर, गुफा, बिल, पृथ्वीतल के नीचे का सातवाँ लोक।
पातालयन्त्र–(सं० पुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कड़ी औषधियाँ पिघलाई जाती हैं।
पाति–(हिं०स्त्री०)पत्ती,दल,पत्र,चिट्ठी।
पातित–(सं० वि०) गिराया हुआ।
पातिव्रत, पातिव्रत्य–(सं० पुं०) स्त्री का पतिव्रता होने का धर्म।
पाती–(हिं० स्त्री०) मान, प्रतिष्ठा, पत्र, चिट्ठी, पत्री।
पात्र–(सं० वि०)अनेक गुणों से सम्पन्न; (पुं०) आधार, भाजन, नाटक का अभिनेता अथवा नायक या नायिका।
पात्रता–(सं० स्त्री०)योग्यता। **पात्रत्व**–(सं० पुं०) योग्यता।
पात्रशेष–(सं० पुं०) खाकर छोड़ा हुआ अन्न आदि, उच्छिष्ट, जूठा।
पात्री–(हिं० वि०) जिसके पास सुयोग्य मनुष्य हों।
पाथ–(हिं० पुं०) मार्ग।
पाथना–(हिं० क्रि०) गढ़ना, पीटना, ठोंकना, किसी गीली वस्तु को साँचे में रखना।
पाथर–(हिं० पुं०) देखो पत्थर।
पाथि–(हिं० पुं०) घाव पर की पपड़ी।
पाथेय–(सं० पुं०) यात्री का रास्ते का कलेवा। **पाथेयक**–(सं० वि०) वह जिसके पास मार्ग-व्यय हो।
पाद–(सं० पुं०) चरण, पैर, पाँव, चतुर्थांश, श्लोक का चौथा भाग, मयूख, किरण।

पादग्रहण–(सं० पुं०) पैर छूकर प्रणाम करना। **पादचारी**–(सं० पुं०) पदाति, पैदल चलनेवाला। **पादचिह्न**–(सं० पुं०) दोनों पैरों के चिह्न।
पादज–(सं० पुं०) शूद्र; (वि०) जो पैर से उत्पन्न हो। **पादजल**–(सं० पुं०) पादोदक।
पादटीका–(सं० स्त्री०) वह टिप्पणी जो किसी पुस्तक के पृष्ठ के नीचे लिखी गई हो।
पादतल–(सं० पुं०) पैर का तलवा।
पादत्र, पादत्राण–(सं० पुं०) पादरक्षक, पादुका, खड़ाऊँ, जूता। **पाददलित**–(सं० वि०) पैर से कुचला हुआ।
पादधावन–(सं० पुं०) पैर धोने की क्रिया।
पादना–(हिं० क्रि०) अपान वायु त्याग करना।
पादप–(सं० पुं०) वृक्ष, पेड़।
पादपद्धति–(सं० स्त्री०) पगडंडी।
पादप्रक्षालन–(सं० पुं०) पैरों का धोना।
पादप्रमाण–(सं०पुं०) साष्टांग दण्डवत।
पादप्रहार–(सं० पुं०) लात मारना।
पादमूल–(सं०पुं०) पैर का निचला भाग।
पादलेप–(सं० पुं०) पैर में लगाने का आलता, महावर।
पादशुश्रूषा–(सं० स्त्री०) चरण-सेवा।
पादहीन–(सं० वि०) जिसके चरण न हो, जिस कविता में तीन ही चरण हों।
पादाक्रान्त–(सं० वि०) पैरों से कुचला हुआ। **पादाग्र**–(सं० पुं०) पैर की नोंक।
पादाघात–(सं० पुं०) पैरों का प्रहार।
पादान्त–(सं० पुं०) पाद का अन्त या अन्तिम भाग; (वि०) पैर का अन्त।
पादार्ध–(सं० पुं०) पाद का अर्ध भाग, आठवाँ हिस्सा।
पादीय–(हिं० पुं०) पदवाला।
पादोदक–(सं० पुं०) वह जल जिसमें किसी का पर धोया गया हो।
पादोदर–(सं० पुं०) सर्प, साँप।
पाद्यार्घ–(सं० पुं०) हाथ-पैर धुलाने का जल, पूजा की सामग्री।
पाधा–(हिं० पुं०) आचार्य, उपाध्याय, पण्डित।
पान–(सं०पुं०) पीना, मदिरा पीना, पीने का पदार्थ, मद्य; (वि०) रक्षा करनेवाला।
पान–(हिं० पुं०) ताम्बूल, पान के आकार की कोई वस्तु, ताश के पत्ते के चार भेदों में से एक।
पानदान–(हिं० पुं०) वह डब्बा जिसमें पान, खैर, सुपारी, चूना आदि रक्खा जाता है।
पानदोष–(सं० पुं०) मद्यपान का व्यसन।
पानप–(सं० वि०) मद्य पीनेवाला, पियक्कड़। **पानभूमि**–(सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ एकत्र होकर लोग मदिरा पीते हैं।
पानरा–(हिं० पुं०) देखो पनारा, पनाला।
पानही–(हिं० स्त्री०) पनही, जूता।
पाना–(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, पास पहुँचना, समर्थ होना, जानना, देखना, अनुभव करना, अच्छा बुरा परिणाम भोगना।
पानागार–(सं० पुं०) जहाँ बहुत-से लोग मिलकर मद्य पीते हैं।
पानि–(हिं० पुं०) हाथ, पानी, जल।
पानिक–(सं० पुं०) मदिरा बेचनेवाला, कलवार।
पानिग्रहण–(सं० पुं०) देखो पाणिग्रहण, विवाह।
पानिप–(हिं० पुं०) द्युति, चमक, कान्ति।
पानिय–(हिं० वि०) पानी।
पानी–(हिं० पुं०) पानीय, जल, वृष्टि,

वर्षा, मेघ, वारि, जलवायु, चमक, कोई द्रव पदार्थ, अर्क, मान, प्रतिष्ठा, पौरुष, शास्त्र की उत्तमता, जूस, छवि ।
पानीदार–(हिं० पुं०) चमकदार, माननीय, आत्माभिमानी ।
पानीदेवा–(हिं० वि०) तर्पण या पिण्डदान देनेवाला ।
पानीफल–(हिं० पुं०) सिंघाड़ा ।
पानीय–(सं० पुं०) जल; (वि०) पाने योग्य, जो पिया जा सके ।
पान्थ–(सं० पुं०) पथिक; (वि०) वियोगी, विरही ।
पाप–(सं०पुं०) अधम, दुष्कृत, अहित, बुराई ।
पापकर्म–(सं० पुं०) निषिद्ध कार्य जिसके करने से पाप हो । **पापकर्मी**–(हिं० वि०) पापी, पातकी ।
पापघ्न–(सं० वि०) पापनाशक ।
पापचारी–(सं० वि०) पाप करनेवाला ।
पापड़–(हिं० पुं०) उर्द अथवा मूंग की धुली हुई बिना छिलके की दाल के आटे से बनाई हुई मसालेदार महीन पापड़ी; (वि०) पतला, सूखा ।
पापदृष्टि–(सं० वि०) अशुभ या अमंगल दृष्टिवाला ।
पापधी–(सं० वि०) पापमति, मन्दबुद्धि ।
पापनाशन–(सं० वि०), **पापनाशक**–(पुं०) विष्णु, शिव ।
पापर–(हिं० पुं०) देखो पापड़ ।
पापलेन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का सूती कपड़ा ।
पापलोक–(सं० पुं०) नरक । **पापशील**–(सं० वि०) दुष्ट स्वभाव का ।
पापहन, पापहर–(सं० वि०) पाप को नाश करनेवाला ।
पापाचार–(सं० पुं०) पापकार्य, पाप का आचरण ।
पापात्मा–(सं०वि०) पापिष्ठ, पापी, पातकी
पापिष्ठ–(सं० वि०) बहुत बड़ा पापी, पातकी ।
पापी–(हिं० वि०) पाप करनेवाला, निर्दय, क्रूर, दुराचारी ।
पापीयसी–(हिं० वि०) पाप करनेवाली ।
पामर–(सं० वि०) दुष्ट, नीच कुल में उत्पन्न, दुश्चरित्र ।
पामरी–(हिं० स्त्री०) उपरना, डुपट्टा ।
पायँ–(हिं० पुं०) देखो पाँव ।
पायँता–(हिं० पुं०) चारपाई का वह भाग जिस पर पैर रहता है ।
पायँती–(हिं०स्त्री०) पायताना, पयताना ।
पायक–(सं० वि०) पानेवाला; (हिं० पुं०) दूत ।
पायना–(हिं० क्रि०) हथियार पर शान देना ।
पायल–(हिं० स्त्री०) नूपुर, पायजेब ।
पायस–(सं० पुं०) खीर ।
पायसा–(हिं० पुं०) पड़ोस ।
पाया–(हिं० पुं०) गोड़ा, पावा, खंभा ।
पायित–(सं० वि०) सान धरा हुआ ।
पारंगत, पारंपर–देखो पारगत, पारम्पर्य ।
पार–(सं० पुं०) प्रान्त, भाग, छोर, अन्त, हद; (अव्य०) आगे, दूर ।
पारख–(हिं० स्त्री०) देखो पारिख, पारखी ।
पारखद–(हिं० पुं०) देखो पार्षद ।
पारखी–(हिं०पुं०) परीक्षक, परखनेवाला ।
पारग–(सं० वि०) पार जानेवाला, समर्थ, अभिज्ञ ।
पारगत–(सं० वि०) समर्थ, पूरा जानकार ।
पारण–(सं० पु०) वह भोजन जो किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन प्रथम बार किया जाय । **पारणा**–(सं०स्त्री०) उप-

वास, व्रत आदि के दूसरे दिन का प्रथम भोजन।

पारतन्त्र्य–(सं० पुं०) पराधीनता।

पारथ, पारथिव–(हिं० पुं०) देखो पार्थ।

पारद–(सं० पुं०) पारा।

पारदर्शक–(सं० वि०) आरपार दिखलाई देनेवाला।

पारदर्शन–(सं० वि०) सर्वज्ञ, पारगामी।

पारदर्शी–(सं० वि०) चतुर, विद्वान्, दूरदर्शी।

पारधी–(हिं० पुं०) बहेलिया व्याध।

पारन–(हिं० पुं०) देखो पारण।

पारना–(हिं० क्रि०) डालना, गिराना, मिलाना, भूमि पर लंबा डालना, पछाड़ना।

पारवती–(हिं० स्त्री०) देखो पार्वती।

पारमार्थिक–(सं० वि०) परमार्थ संबंधी, प्रेम-रहित।

पारम्परीण–(सं० वि०) परम्परा के अधीन। **पारम्पर्य**–(सं० पुं०) कुल-क्रम।

पारलौकिक–(सं० पुं०) परलोक संबंधी।

पारवश्य–(सं० पुं०) परतन्त्रता।

पारस–(हिं० पुं०) स्पर्श मणि, एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में लोगों मेंऐसी प्रसिद्धि है कि इसमें लोहा छुलाने से सुवर्ण हो जाता है, अत्यन्त लाभ देनेवाली तथा उपयोगी वस्तु।

पारा–(हिं० पुं०) चाँदी की तरह श्वेत चमकता हुआ एक तरल धातु।

पारायण–(सं० पुं०) सम्पूर्णता, समाप्ति।

पारावत–(सं० पुं०) पण्डुक, कबूतर।

पारावार–(सं० पुं०) आरापार, वारपार, सीमा, हद।

पारिजात–(सं० पुं०) एक वृक्ष जो समुद्र-मंथन के समय निकला था और इन्द्र के नन्दन वन में स्थापित हुआ, परजाता, हरसिंगार।

पारितोषिक–(सं० पुं०) वह वस्तु जो किसी को प्रसन्न करने के लिये दी जाय, भेंट, उपहार।

पारिपार्श्व–(सं० पुं०) सेवक, अनुचर।

पारिभाषिक–(सं० पुं०) परिभाषा द्वारा अर्थबोधक पद।

पारी–(हिं० स्त्री०) बारी, ओसरी।

पारीण–(सं० वि०) पारगामी।

पारुष्य–(सं० पुं०) कठोरता; (पुं०) बृहस्पति।

पार्थ–(सं० पुं०) पृथ्वीपति, अर्जुन।

पार्थक्य–(सं० पुं०) पृथक् होने का भाव, वियोग।

पार्थिव–(सं० पुं०) पृथ्वीपति, राजा; (वि०) मिट्टी आदि का बना हुआ।

पार्शुका–(सं० स्त्री०) पर्शुका, पसली।

पार्श्व–(सं० पुं०) काँख के नीचे का भाग, पसलियाँ, निकटता, समीपता। **पार्श्ववर्ती**–समीपस्थ।

पार्श्वग–(सं० पुं०) अनुचर, सेवक; (वि०) पास में चलनेवाला। **पार्श्वचर**–(सं० पुं०) अनुचर, भृत्य।

पार्श्ववर्ती–(सं० पुं०) पास रहनेवाला मनुष्य। **पार्श्वशायी**–(सं० वि०) पास में सोनेवाला।

पार्श्वस्थ–(सं० पुं०) पार्श्वस्थित नट; (वि०) पास में खड़ा रहनेवाला।

पार्श्वस्थित–(सं० वि०) पास में रहनेवाला। **पार्श्वानुचर**–(सं० पुं०) अनुचर

पार्ष्णि–(सं० पुं०) पालक, पालन करनेवाला; (हिं० पुं०) पत्ता बिछाकर फलों को पकाने की विधि, तंबू, चँदवा, गाड़ी आदि ढाँपने का वस्त्र, ओहार,

नाव में बाँधने का मोटा वस्त्र, खाना; (स्त्री०) ऊँचा किनारा, कगार।

पालक–(सं० पुं०) रक्षा करनेवाला मनुष्य; (वि०) पालनेवाला; (हिं० पुं०) एक प्रकार का शाक, पाला हुआ पुत्र।

पालकी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सवारी जिसको कहार लेकर चलते हैं, पीनस, खड़खड़िया।

पालट–(हिं० पुं०) पाला पोसा हुआ, दत्तक पुत्र।

पालतू–(हिं० वि०) पाला पोसा हुआ।

पालथी–(हिं० स्त्री०) देखो पलथी।

पालन–(सं० पुं०) रक्षक, भरण-पोषण, अनुकूल व्यवहार से किसी बात का निर्वाह।

पालना–(हिं० क्रि०) पालन-पोषण करना, पक्षी आदि को पोसना, निर्वाह करना; (पुं०) बच्चों को सुलाने का खटोला या झूला जो रस्सियों से लटकाया रहता है। **पालनीय**–(सं० वि०) पालन करने योग्य। **पालयिता**–(हिं० वि०) पालन करनेवाला।

पाला–(हिं० पुं०) वायु में मिले हुए भाप के अत्यन्त सूक्ष्म कण जो पृथ्वी के ठंडी रहने पर उस पर बूंदों के रूप में जम जाते हैं, हिम बैठने की जगह, सीमा निर्धारित करने के लिये बनी हुई मेड़।

पालागन–(हिं०स्त्री०) नमस्कार, दण्डवत।

पालान–(हिं० पुं०) देखो पलान।

पालि–मध्य एशिया में प्रचलित एक प्राचीन लिपि जिसमें लिखे हुए अशोक के समय के अनेक शिलालेख पाये जाते हैं।

पालि–(सं० स्त्री०) पंक्ति, श्रेणी, कोना।

पालित–(सं०वि०) रक्षित, पाला हुआ।

पालित्य–(सं० पुं०) बालों की सफेदी।

पाली–(हिं० वि०) पालन करनेवाला, रक्षा करनेवाला।

पाली–(हिं० स्त्री०) पात्र का ढपना, परई, एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रन्थ लिखे हुए हैं।

पालू–(हिं० वि०) पालतू; पाला हुआ।

पालो–(हिं०पुं०) गाँव में बस्ती से दूर की भूमि जिसमें सिंचाई कुवें से होती है।

पाँव–(हिं० पुं०) पाद, पैर।

पाँवड़ा–(हिं० पुं०) पैर रखने के लिये फैलाया हुआ कपड़ा। **पाँवड़ी**–(हिं० स्त्री०) खड़ाऊँ, जूता।

पाँवर–(हिं० वि०) पामर, तुच्छ, नीच, मूर्ख।

पाव–(हिं० पुं०) चतुर्थ भाग, एक सेर का चौथाई भाग, चार छटाँक का परिमाण।

पावक–(सं० वि०) शुद्ध या पवित्र करनेवाला। **पावकमणि**–(सं० पुं०) सूर्यकान्तमणि।

पावदान–(हिं० पुं०) पैर रखने की वस्तु या स्थान।

पावन–(सं० वि०) शुद्ध, पवित्र; (सं० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धता। **पावना**–(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, पाना, अनुभव करना, भोजन करना; (पुं०) लेहना।

पावनी–(सं० वि०) पवित्र करनेवाली।

पावस–(हिं० स्त्री०) वर्षाकाल, बरसात।

पावा–(हिं० पुं०) पाया।

पाश–(सं०पुं०) फन्दा, जाल, डोरी, रस्सी।

पाशक्रीड़ा–(सं० स्त्री०) पासा खलना।

पाशबन्धक–(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया।

पाशव–(सं० वि०) पशु संबंधी।

पाशुपत–(सं० पुं०) पशुपति देवता के भक्त या उपासक।

पाश्चात्य–(सं० वि०) पिछला, पश्चिम देश का या दिशा का।

पाषण्ड–(सं० पुं०) मिथ्याधर्मी, कपट-वेशधारी, ढोंगी। **पाषण्डी**–(सं० वि०) धूर्त, ढोंगी ।
पाषाण–(सं० पुं०) प्रस्तर, पत्थर ।
पास–(हिं० पुं०) पार्श्व, ओर, निकटता; (अव्य०) निकट, समीप में, अधिकार में ।
पासनी–(हिं० स्त्री०) अन्नप्राशन ।
पासमान–(हिं० पुं०) पार्श्ववर्ती ।
पासवर्ती–(हिं० पुं०) देखो पार्श्ववर्ती ।
पासा–(हिं० पुं०) छपहल, छोटे टुकड़े जिन पर बिन्दियाँ बनी होती हैं जो चौसर खेलने के काम में आता है, कामी, गुल्ली या पीतल या काँसे का ठप्पा ।
पासिका–(हिं०स्त्री०)पाश, फन्दा, जाल।
पासी–(हिं० पुं०) व्याध, बहेलिया; (स्त्री०) फन्दा, फाँसी, एक जाति ।
पासुली–(हिं० स्त्री०) देखो पसली ।
पाहँ–(हिं० अव्य०) निकट, समीप, पास।
पाहन–(हिं० पुं०) पाषाण, पत्थर ।
पाहरू–(सं० पुं०) चौकीदार ।
पाहिं–(हिं०अव्य०)समीप, निकट, पास।
पाहि–(सं०) एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो', 'बचाओ' ।
पाही–(हिं० स्त्री०) वह खेती जिसका किसान दूसरे गाँव में रहता हो ।
पाहुँच–(हिं० स्त्री०) देखो पहुँच ।
पाहुना–(हिं० पुं०) अभ्यागत, अतिथि ।
पाहुनी–(हिं० स्त्री०) आतिथ्य सत्कार ।
पाहुर–(हिं० पुं०) भेंट ।
पाहू–(हिं० पुं०) पत्थरों के जोड़ पर जड़ने का टेढ़ा लोहा ।
पिंग–(हिं० वि०) भूरे रंग का, पीला ।
पिंगल–(हिं० वि०) पीला ।
पिंगूरा–(हिं० पुं०) बच्चों को सुलाकर झुलाने का पालना ।
पिंजड़ा–(हिं० पुं०) देखो पिंजरा ।
पिंजन–(हिं० पुं०) रुई धुनने की धुनकी ।
पिंजर, पिञ्जर–पिंजड़ा ।
पिंजरा–(हिं० पुं०) लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं ।
पिंजरापोल–(हिं० पुं०) गोशाला, पशु-शाला ।
पिंजियारा–(हिं० पुं०) रुई ओटनेवाला।
पिंडी–(हिं०स्त्री०)गीली वस्तु का लोंदा।
पिंडखजूर–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं ।
पिंडरी, पिंडली–(हिं० स्त्री०) टाँग ।
पिंडा–(हिं० पुं०) गीली या ठोस वस्तु का टुकड़ा, पितरों को अर्पित करने का मधु, तिल आदि मिला हुआ लोंदा ।
पिंडालू–(हिं० स्त्री०)सकरकन्द, सुथनी।
पिंड़िया–(हिं० स्त्री०) गुड़ आदि का मुट्ठी में बाँध कर बनाया हुआ छोटा टुकड़ा, भेली, मुट्ठी ।
पिअ–(हिं० वि०) देखो प्रिय ।
पिअरवा–(हिं० पुं०) पति; (वि०) प्यारा ।
पिअराई–(हिं० स्त्री०) पीलापन।
पिअरी–(हिं० स्त्री०) हल्दी से रंगी हुई धोती ।
पिआज–(हिं० पुं०) देखो प्याज ।
पिआना–(हिं० क्रि०) देखो पिलाना ।
पिआर–(हिं० पुं०) देखो प्यार ।
पिआस–(हिं० स्त्री०) देखो प्यास ।
पिउ–(हिं० पुं०) पति ।
पिउनी–(हिं० स्त्री०) देखो प्यूनी ।
पिक–(सं० पुं०) कोकिल, कोयल ।
पिघलना–(हिं० क्रि०) किसी घन पदार्थ का गरमी से गलकर पानी के समान हो जाना । **पिघलाना**–(हिं० पुं०) दयार्द्र करना, पानी के रूप में लाना ।

पिङ्ग–(सं० पुं०) चूहा; (वि०) पीले रंग का
पिंगर, पिङ्गल–(सं० पुं०) नीला और पीला मिला हुआ रंग, उल्लू पक्षी, नेवला, बन्दर, अग्नि ।
पिचक–(हिं० स्त्री०) देखो पिचकारी ।
पिचकना–(हिं० क्रि०) किसी उभड़े हुए अथवा फूले हुए तल का दब जाना। **पिचकवाना**–(हिं० क्रि०) पिचकाने का काम दूसरे से कराना । **पिचका**–(हिं० पुं०) बड़ी पिचकारी । **पिचकाना**–(हिं० क्रि०) फूले या उभड़े तल को भीतर की ओर दाबना ।
पिचकारी–(हिं० स्त्री०) एक नलदार यन्त्र जिससे कोई तरल पदार्थ खींचकर वेग से फेंका जाता है । **पिचकी**–(हिं० स्त्री०) पिचकारी ।
पिचपिचा–(हिं० वि०) देखो चिपचिपा ।
पिचपिचाना–(हिं० क्रि०) घाव आदि में से थोड़ा-थोड़ा पंछा आदि निकलना ।
पिचपिचाहट–(हिं० स्त्री०) गीले या आर्द्र रहने का भाव ।
पिचलना–(हिं० पुं०) देखो कुचलना ।
पिचुकिया–(हिं० स्त्री०) छोटी पिचकारी ।
पिचुक्का–(हिं० पुं०) गोलगप्पा, पिचकारी ।
पिचोतरसो–(हिं० पुं०) पहाड़े में एक सौ पाँच की संख्या को कहा जाता है ।
पिच्छ, पिच्छक–(सं० पुं०) पशु की पूंछ, मोर की पूंछ ।
पिच्छिल–(हिं० वि०) जिस पर से पैर फिसल जावे, चिकना ।
पिच्छिका–(सं० स्त्री०) चँवर, मोरछल ।
पिच्छिल–(सं० वि०) गीला और चिकना, फिसलनेवाला ।
पिछड़ना–(हिं० क्रि०) श्रेणी में आगे या बराबर न रहना ।
पिछलगा–(हिं० पुं०) सेवक, आश्रित, अनुगामी, चेला । **पिछलगी**–(हिं० स्त्री०) अनुसरण । **पिछलग्गू**–(हिं० वि०) देखो पिछलगा ।
पिछलना–(हिं० क्रि०) पीछे की ओर जाना या मुड़ना ।
पिछलगाई–(हिं० स्त्री०) जादूगरनी, चुड़ैल ।
पिछला–(हिं० वि०) पीछे की ओर का बीता हुआ, भूतकाल का, बाद का ।
पिछवाई–(हिं० स्त्री०) पीछे की ओर लटकाने का परदा ।
पिछवाड़ा, पिछवारा–(हिं० पुं०) घर के पीछे का स्थान ।
पिछाड़ी–(हिं० स्त्री०) घोड़े के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी ।
पिछान–(हिं० स्त्री०) देखो पहचान ।
पिछानना–(हिं० क्रि०) देखो पहचानना।
पिछौंड़–(हिं० वि०) किसी के मुख की ओर पीठ किया हुआ । **पिछौंड़ा**–(हिं० वि०) पीछे की ओर का ।
पिछौंता–(हिं० क्रि० वि०) पिछली ओर ।
पिछौंहें–(हिं० क्रि० वि०) पिछली ओर ।
पिछौरा–(हिं० पुं०) मनुष्य के ओढ़ने का दुपट्टा या चादर ।
पिछौरी–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों की चादर जिसको वे धोती के ऊपर ओढ़ती हैं ।
पिञ्जट–(सं० पुं०) आँख का कीचड़ ।
पिञ्जन–(सं० पुं०) धुनिये की कमान ।
पिञ्जर–(सं० पुं०) पक्षियों के रखने का पिंजड़ा, हड्डी की ठठरी । **पिञ्जरता**–(सं० स्त्री०) भूरापन ।
पिञ्जल–(सं० वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ ।
पिञ्जिका–(सं० स्त्री०) रुई की पोली बत्ती, धूनी ।
पिटंत–(हिं० स्त्री०) पीटने की क्रिया या भाव ।

पिटक–(सं० पुं०) पेटारा, फुड़िया-फुंसी, किसी ग्रंथ का विभाग या खंड । पिटका–(सं० स्त्री०) पिटारी, फुंसी ।
पिटना–(हि० क्रि०) मार खाना, ठोंका जाना; (पुं०) छत पीटने की लकड़ी की मुंगरी ।
पिटपिट–(हि० स्त्री०) हलके आघात से उत्पन्न शब्द ।
पिटरिया–(हि० स्त्री०) देखो पिटारी ।
पिटवाना–(हि० क्रि०) दूसरे से मार खिलवाना, कुटवाना, ठोंकवाना ।
पिटाई–(हि० स्त्री०) प्रहार, आघात, पीटने या मारने का वेतन । पिटापीट–(हि० स्त्री०) मारपीट ।
पिटारा–(हि० पुं०) बाँस, बेंत आदि के छिलके का बना हुआ ढपनेदार गोल पात्र । पिटारी–(स्त्री०) छोटा पिटारा, झाँपी ।
पिट्टस–(हि० स्त्री०) दुःख या शोक से छाती पीटना ।
पिट्टू–(हि० वि०) जिसको मार खाने का अभ्यास हो ।
पिट्ठी–(हि० स्त्री०) देखो पीठी ।
पिट्ठू–(हि० पुं०) सहायक, अनुयायी ।
पिठौरी–(हि० स्त्री०) पीठी की बनी हुई बरी, पकौड़ी आदि ।
पिड़क–(सं० पुं०) छोटा फोड़ा, फुंसी ।
पिड़िया–(हि० स्त्री०) चावल का लड्डू ।
पिढ़ई–(हि० स्त्री०) छोटा पीढ़ा या पाटा ।
पिण्ड–(सं० पुं०) पित्रादि के उद्देश्य से दिया जानेवाला अन्न ।
पिण्डज–(सं० पुं०) वह जन्तु जो गर्भ से अण्ड के रूप में न निकले, परन्तु बने हुए शरीर के रूप में निकले ।
पिण्डद–(सं०पुं०) पिण्डदान करनेवाला ।
पिण्डदान–(सं० पुं०) पिण्ड देने का काम । पिण्डमय–(सं० वि०) गोल-मटोल टुकड़ा । पिण्डमूल–(सं० पुं०) गाजर-शलजम ।
पिण्डालु–एक प्रकार का सफतालू ।
पिण्डाश–(सं० पुं०) भिक्षुक, भिखारी ।
पिण्डी–(सं० स्त्री०) कद्दू, लौकी, ठोस टुकड़ा, लुगदी, सूत, रस्सी आदि का लपेटा हुआ लच्छा ।
पितम्बर–(हि० पुं०) देखो पीताम्बर ।
पितर–(हि० पुं०) मृत पूर्वपुरुष, मरे हुए पुरख जिनके नाम पर श्राद्ध और तर्पण किया जाता है ।
पितराइ, पितराई–(हि० स्त्री०) खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव ।
पितरिहा–पीतल का बना हुआ ।
पिता–(हि० पुं०) जनक, बाप । पितामह–(सं० पुं०) पिता का पिता, दादा । पितामही–(सं० स्त्री०) पितामह की स्त्री, दादी ।
पितिया–(हि०पुं०) पिता का भाई, चाचा ।
पितियानी–(हि० स्त्री०) चाचा की स्त्री, चाची ।
पितिया ससुर–(हि० पुं०) स्त्री या पति का चाचा । पितिया सास–(हि० स्त्री०) स्त्री या पति की चाची ।
पितु–(हि० पुं०) पिता । पितुःस्वसा–(सं० स्त्री०) पिता की बहिन, फुआ मौसी ।
पितृ–(सं० पुं०) उत्पादक, जनक, पिता ।
पितृक–(सं० वि०) पैतृक, पिता का; (सं० पुं०) जो श्राद्ध तर्पण आदि पितरों के उद्देश्य से किये जाते हैं । पितृकल्प–(सं० वि०) पिता के सदृश ।
पितृकानन–(सं० पुं०) श्मशान ।
पितृगृह–(सं० पुं०) श्मशान, बाप का

घर, स्त्रियों का पीहर, नैहर, मायका । **पितृघात**–(सं० पुं०) पिता की हत्या। **पितृतर्पण**–पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला बलिदान, तर्पण आदि । **पितृतिथि**–(सं० स्त्री०) अमावस्या ।
पितृतीर्थ–(सं० पुं०) गया तीर्थ, दहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान। **पितृत्व**–(सं० पुं०) पिता का भाव या धर्म। **पितृदान**–(सं० पुं०) पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ अन्न आदि का दान । **पितृराय**–(सं० पुं०) पिता से प्राप्त धन या सम्पत्ति, बपौती । **पितृदिन**–(सं० पुं०) अमावस्या । **पितृपक्ष**–(सं० पुं०) आश्विन मास का कृष्ण पक्ष । **पितृलोक**–(सं० पुं०)वह स्थान जहाँ पितर लोग रहते हैं । **पितृवत्**–(सं० अव्य०) पिता के सदृश ।
पितृव्य–(सं० पुं०) पिता के भाई, चाचा। **पितृहा**–(सं० पुं०) पिता की हत्या करनेवाला ।
पित्त–(सं० पुं०) शरीर के भीतर यकृत् में बननेवाला एक तरल पदार्थ जो खाये हुए अन्न को पचाने में सहायता देता है ।
पित्तल–(सं० पुं०) पीतल नामक धातु।
पित्ता–(हिं० पुं०) पित्ताशय, जिगर में की वह थैली जिसमें पित्त रहता है ।
पित्ती–(हिं० स्त्री०) गरमी के दिनों में पसीना मरने से शरीर में निकलनेवाले महीन दाने ।
पित्र्य–(सं० वि०) पितृ संबंधी ।
पिधातव्य–(सं० स्त्री०) ढाँपने योग्य ।
पिधान–(सं० पुं०) आवरण, आच्छादन, परदा, ढपना, किवाड़ । **पिधानक**–(सं० पुं०) खड्ग, कोष ।
पिनकना–(हिं० क्रि०) ऊँघना, नींद में आगे को झुकना ।
पिनकी–(हिं० पुं०) पिनक लेनेवाला, अफीमची ।
पिनपिन–(हिं० स्त्री०) रोगी या दुर्बल बच्चे का अनुनासिक स्वर में रोना । **पिनपिनहा**–(हिं० वि०)निरन्तर रोनेवाला बच्चा । **पिनपिनाना**–(हिं० क्रि०) धीमे स्वर में रुक-रुककर बच्चे का रोना। **पिनपिनाहट**–(हिं० स्त्री०) पिनपिन करके रोने का शब्द ।
पिनस–(सं० पुं०) देखो पीनस ।
पिनाक–(सं० पुं०) शिवजी का धनुष जिसको श्रीरामचन्द्र ने जनकपुर में तोड़ा था ।
पिनाकी–(सं० पुं०) पिनाकधारी शिव।
पिन्नस–(हिं० स्त्री०) देखो पीनस ।
पिन्ना–(हिं० वि०) सर्वदा रोनेवाला; (पुं०) धुनकी ।
पिन्नी–(हिं० स्त्री०) आटे या अन्य प्रकार के अन्न के चूर्ण में गुड़ या चीनी मिलाकर बनाई हुई मिठाई ।
पिन्हाना–(हिं० क्रि०) देखो पहनाना ।
पिपराही–(हिं० पुं०) पीपल का जंगल।
पिपासा–(सं० स्त्री०) तृष्णा, प्यास, लोभ, लालच। **पिपासित**–(सं० वि०) प्यासा। **पिपासु**–(सं० वि०) उत्कट इच्छा करनेवाला, लालची ।
पिपीलिका–(सं० स्त्री०) चींटी, च्यूँटी।
पिप्पल–(सं० पुं०) अश्वत्थ, पीपल का पेड़।
पिप्पली–(सं० स्त्री०) पीपल की लता, इसका शहतूत के आकार का फल.।
पिय–(हिं० पुं०) स्वामी, भर्ता, पति ।
पियर–(हिं०वि०)पीला, पीले रंग का।
पियरई–(हिं० स्त्री०) पीलापन । **पिय**-

राई–(हिं० स्त्री०) पीलापन । पियराना–(हिं०क्रि०)पीला पड़ना या होन
पियरवा–(हिं० वि०)प्रिय, अति प्यारा।
पियरौ–(हिं० स्त्री०) पीली रँगी हुई धोती, एक प्रकार का पीला रंग ।
पियली–(हिं० स्त्री०) नारियल की खोपड़ी का टुकड़ा ।
पियल्ला–(हिं०पुं०)दूध पीनेवाला बच्चा।
पियवास–(हिं० पुं०) देखो प्रियवास ।
पिया–(हिं० पुं०) देखो प्रिय, प्रिया ।
पियाज–देखो प्याज ।
पियाना–(हिं० क्रि०) देखो पिलाना ।
पियार–(हिं० पुं०) महुवे की तरह का एक वृक्ष जिसके बीच की गरी चिरौंजी कहलाती है ।
पियारा–(हिं० वि०) देखो प्यारा ।
पियाला–(हिं० पुं०) कटोरी ।
पियास–(हिं० वि०) देखो प्यास ।
पियासा–(हिं० वि०) प्यासा ।
पियूख, पियूष–(हिं० पुं०) देखो पीयूष ।
पिरकी–(हिं० स्त्री०) फुंसी, फोड़िया ।
पिरथी–(हिं० स्त्री०) देखो पृथ्वी ।
पिराक–(हिं० पुं०) एक प्रकार की चीनी का ढालकर बना हुआ बड़ा अर्धचन्द्राकार पकवान ।
पिराना–(हिं०क्रि०) पीड़ा होना, दुखना।
पिरिच–(हिं० पुं०) कटोरी ।
पिरीतम–(हिं० वि०) प्रिय, प्रियतम ।
पिरीता–(हिं० वि०) प्रिय, प्यारा ।
पिरीति–देखो प्रीति ।
पिरोजन–(हिं० पुं०) देखो प्रयोजन ।
पिरोजा–(फा० पुं०) हरापन लिये हुए एक प्रकार का पत्थर ।
पिरोना–(हिं० क्रि०)तागे आदि को सूई के छेद में डालना ।
पिलई–(हिं०स्त्री०)बरवट, तापतिल्ली ।
पिलकना–(हिं०क्रि०)ढकेलना, गिराना।
पिलचना–(हिं० क्रि०)तत्पर होना, लीन होना ।
पिलना–(हिं० क्रि०) लग जाना, लिपट जाना, टूट पड़ना, भिड़ जाना ।
पिलपिल, पिलपिला–(हिं० वि०)इतना नरम या ढीला कि दबाने से भीतर का रस या गूदा बाहर निकल आवे ।
पिलपिलाना–(हिं० क्रि०) गूदेदार या रसदार वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसमें का रस ढीला होकर बाहर निकलने लगे । पिलपिलाहट–(हिं० स्त्री०) वह नरमी या मृदुता जो घुलने या रस के ढीले होने के कारण आ गई हो।
पिलाना–(हिं० क्रि०) पीन का काम कराना, भीतर करना, किसी छेद में डाल देना ।
पिलुंडा–(हिं० पुं०)देखो पुलिन्दा ।
पिल्ला–(हिं० पुं०)कुत्ते का छोटा बच्चा।
पिल्लू–(हिं० पुं०) बिना पैर का सफेद कीड़ा, जो सड़े हुए फल, घाव आदि में पड़ जाता है ।
पिव–(हिं० पुं०) देखो पिय ।
पिवाना–(हिं० क्रि०)देखो पिलाना ।
पिशंगी–(हिं० वि०) पीला ।
पिशाच–(सं० पुं०) भूत, प्रेत ।
पिशित–(सं० पुं०) मांस ।
पिशिताशन–(सं०वि०)मांस खानेवाला ।
पिशुन–(सं० वि०) क्रूर, दुष्ट । पिशुनता–(सं० स्त्री०) क्रूरता, चुगलखोरी ।
पिष्ट–(सं० पुं०) पिट्ठी, पीठी; (वि०) चूर्ण किया हुआ । पिष्टक–(सं० पुं०) पिष्ट, पिठी, रोट, कचौड़ी, पूआ । पिष्टपेषण–(सं० पुं०) पीसे हुए को पीसना, एक बार कही हुई बात को बारबार दोहराना ।

पिसनहारी–(हिं० स्त्री०) आटा पीसनेवाली स्त्री ।
पिसना–(हिं० क्रि०) पीसकर तैयार होना, कुचल जाना ।
पिसवाज–(हिं० पुं०) रंडियों के पहिनने का घाघरा ।
पिसवाना–(हिं० क्रि०) पीसने का काम दूसरे से कराना ।
पिसाई–(हिं० स्त्री०) पीसने की क्रिया या भाव, पीसने का शुल्क ।
पिसाच–(हिं० पुं०) देखो पिशाच ।
पिसान–(हिं० पुं०) अन्न का महीन पिसा हुआ चूर्ण, आटा । **पिसाना**–(हिं० क्रि०) पिसवाना ।
पिसुन–(हिं० पुं०) देखो पिशुन ।
पिसौनी–(हिं० स्त्री०) पीसने का काम, परिश्रम का काम ।
पिस्ता–(हिं०पुं०)एक छोटा पेड़ जिसका फल अच्छे मेवों में गिना जाता है ।
पिस्तौल–(हिं०स्त्री०)छोटी बंदूक,तमंचा ।
पिस्सू–(हिं० पुं०) उड़नेवाला एक छोटा कीड़ा जो मच्छरों की तरह काटता और रक्त चूसता है ।
पिहकना–(हिं० क्रि०) मोर, कोयल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना ।
पिहान–(हिं० पुं०) पिधान, ढापना ।
पिहित–(सं० वि०) आच्छादित, छिपा हुआ ।
पींजरा–(हिं० पुं०) देखो पिंजड़ा ।
पींड–(हिं० पुं०) किसी गीली वस्तु का गोला, पिंडी, पिंडखजूर, शरीर, देह ।
पींडी–(हिं० स्त्री०) देखो पिंडी ।
पी–(सं०पुं०)पपीहे की बोली,देखो पिय ।
पीक–(हिं० पं०) थूक से मिला हुआ पान का-रस । **पीकदान**–(हिं० पुं०) उगलदान ।
पीकना–(हिं० क्रि०) पिहिकना ।
पीखग–(हिं० पुं०) पपीहा ।
पीच–(सं० पुं०) नीचे का जबड़ा; (हिं० स्त्री०) माड़ ।
पीचना–(हिं० क्रि०) पीसना, दबाना ।
पीछा–(हिं० पुं०) पिछला भाग, किसी घटना के बाद का काल ।
पीछे–(हिं० अव्य०) पीछे की ओर, कुछ दूर पर, अन्त में,पीठ की ओर,कारण से, वास्ते, लिये, उपरान्त, अनन्तर ।
पीजन–(हिं०पुं०) ऊन धुनने की धुनकी ।
पीजर–(हिं० पुं०) देखो पिंजड़ा ।
पीटन–(हिं० पुं०) देखो पिटना ।
पीटना–(हिं० क्रि०) प्रहार करना, मारना, चिपटी करना, ठोंकना ।
पीठ–(सं० पुं०) चौकी, आसन, किसी मूर्ति के नीचे का आधार, पिण्ड ।
पीठगर्भ–(सं० पुं०) वह गड्ढा जो किसी मूर्ति को बैठाने के लिये खोदा जाता है ।
पीठा–(हिं० पुं०) आटे की लोई में पीठी भरकर बनाया हुआ एक पकवान, पीढ़ा ।
पीठि–(हिं० स्त्री०) देखो पीठ ।
पीठिका–(सं० स्त्री०) भाग, अध्याय ।
पीठी–(हिं० स्त्री०) उड़द, मूंग आदि की छिलका उतारकर पीसी हुई दाल ।
पीड़क–(सं० पुं०) दुःखदायी, पीड़ा देनेवाला ।
पीड़न–(सं० पुं०) दुःख देना, चांपने या दबाने की क्रिया, नाश, लोप । **पीड़नीय**–(सं० वि०) दुःख पहुँचानेवाला ।
पीड़ा–(सं० स्त्री०) वेदना, व्यथा, व्याधि, रोग । **पीड़ाकर**–(सं० वि०) दुःखदायक ।

पीड़ित–(सं० वि०) क्लेशयुक्त, दुःखित, रोगी ।
पीडुरी–(हिं० स्त्री०) देखो पिंडुली ।
पीढ़ा–(हिं० पुं०) लकड़ी की छोटी नीची पावे की चौकी ।
पीढ़ी–(हिं० स्त्री०) किसी वंश या कुल में किसी विशेष व्यक्ति से आरंभ करके उसके ऊपर या नीचे के पुरुषों की गणना, क्रम से निश्चित स्थान, समुदाय, सन्तान, सन्तति ।
पीत–(सं० वि०)पीले रंग का, पिया हुआ ।
पीतता–(सं० स्त्री०) पीलापन ।
पीतम–(सं० स्त्री०) देखो प्रियतम ।
पीतर–(हिं० पुं०) देखो पीतल ।
पीतरत्न–(सं०वि०)पीतमणि, पुखराज ।
पीतल–(हिं० पुं०) जस्ते और ताँबे के संयोग से बनी हुई एक उपधातु ।
पीतवान–(हिं० पुं०) हाथी की दोनों आँखों के बीच का स्थान ।
पीतवास–(सं० वि०) पीला वस्त्र पहिननेवाला ।
पीतसरा–(हिं० पुं०) ससुर का भाई ।
पीताम्बर–(सं० पुं०) पीला कपड़ा, रेशमी धोती जिसको पहनकर लोग पूजा-पाठ करते हैं ।
पीताश्म–(सं० पुं०) पुष्परागमणि, पुखराज ।
पीन–(सं० वि०) पृष्ठ, स्थूल, सम्पन्न, मोटा ।
पीनक–(हिं० स्त्री०) अफीम के नशे में ऊँघना, आगे को झुक पड़ना ।
पीनता–(सं० स्त्री०) स्थूलता, मोटाई ।
पीनना–(हिं० क्रि०) देखो पीज़ना ।
पीनस–(सं० पुं०) नाक का एक रोग; (हिं० स्त्री०) पालकी ।
पीना–(हिं० क्रि०) जल या इसके समान अन्य वस्तु को घूंट-घूंट करके गले के नीचे उतारना, मद्य पीना, सोखना, चूसना, धूम्रपान करना, सहन करना, उपेक्षा करना ।
पीनो–(हिं० स्त्री०) तीसी, तिल आदि की खली ।
पीप–(हिं० स्त्री०) फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला लसलसा सफेद पदार्थ, पीव, रीम ।
पीपर–(हिं० पुं०) देखो पीपल ।
पीपल–(हिं० पुं०) बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष, एक लता जिसके पत्त पान की तरह होते हैं ।
पीपा–(हिं० पुं०) ढोल के आकार का लोहे या काठ का बड़ा पात्र ।
पीब–(हिं० पुं०) देखो पीप ।
पीबर–(हिं० वि०) पीला, पीले रंग का ।
पीयूख–(हिं० पुं०) देखो पीयूष ।
पीयूष–(सं० पुं०) सुधा, अमृत ।
पीर–(हिं० स्त्री०) सहानुभूति, करुणा, दया, पीड़ा, दुःख, प्रसव-वेदना ।
पीरा–(हिं० स्त्री०) देखो पीड़ा; (वि०) देखो पीला ।
पीलपाल–(हिं० पुं०)हाथीवान, महावत ।
पीलपावँ–(हिं०पुं०) पैर के फूल जाने का एक रोग ।
पीलवान–(हिं०पुं०)हाथीवान, महावत ।
पीला–(हिं० पुं०) एक प्रकार का हल्दी या सोने के सदृश रंग, शतरंज का एक मोहरा ।
पीलापन–(हिं०पुं०)पीला होने का भाव ।
पीलाम–(हिं० पुं०)साटन नामक कपड़ा ।
पीलिया–(हिं० पुं०) कामला रोग ।
पील–(सं० पुं०)अस्थिखंड, कीड़ा, बाण ।
पीलू–(हिं० पुं०)सफेद लंब कीड़े जो फलों के सड़ने पर उनमें पड़ जीत हैं ।

पीव–(हिं० पुं०) पिय, पति, देखो पीव।
पीवना–(हिं० क्रि०) देखो पीना।
पीवर–(सं० वि०) स्थूल, गुरु, भारी, मोटा।
पीवा–(हिं० वि०) स्थूल, पुष्ट, मोटा।
पीसना–(हिं० क्रि०) कुचलकर बुकनी करना, कठोर परिश्रम करना।
पीसू–(हिं० पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, देखो पिस्सू।
पीह–(हिं० स्त्री०) वसा।
पीहर–(हिं० पुं०) स्त्रियों के माता-पिता का घर, मायका।
पीहू–(हिं० पुं०) देखो पीसू।
पुंखित–(हिं० वि०) पक्षयुक्त।
पुंगफल, पुंगीफल–(हिं० पुं०) देखो पुङ्गीफल।
पुंछल्ला–(हिं० पुं०) देखो पुंछाला।
पुंछवाना–(हिं० क्रि०) देखो पुंछवाना।
पुंछार–(हिं० पुं०) मयूर, मोर।
पुंछाला–(हिं० पुं०) पूंछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु।
पुंज–(सं० पुं०) समूह, ढेर।
पुंजा–(हिं० पुं०) समूह, गुच्छा, फल।
पुंजी–(हिं० स्त्री०) देखो पूंजी।
पुंजीकृत–(हिं० वि०) इकट्ठा किया हुआ।
पुंडरी–(हिं० पुं०) भूमि कमल।
पुंलिङ्ग–(सं० पुं०) पुरुष का चिह्न, पुरुषवाचक शब्द।
पुंवत्–(सं० अव्य०) पुरुष की तरह, पुरुषवाची शब्द की तरह।
पुंश्चल–(सं० पुं०) व्यभिचारी पुरुष।
पुंश्चली–(सं० स्त्री०) असती, कुलटा, छिनार।
पुंस–(हिं० पुं०) पुरुष, मर्द।
पुंसवन–(सं० पुं०) द्विजों के सोलह संस्कारों में से एक जो गर्भाधान के तीसरे महीने में किया जाता है।
पुंसवान–(हिं० वि०) पुत्रवाला।
पुंस्त्व–(सं० पुं०) पुरुषत्व, पुरुष का धर्म।
पुआ–(हिं० पुं०) चाशनी में पागी हुई आटे की मोटी रोटी या टिकिया।
पुआल–(हिं० पुं०) पयाल।
पुकार–(हिं० स्त्री०) रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट, हाँक, माँग की चिल्लाहट, अभियोग, गुहार।
पुकारना–(हिं० क्रि०) गोहार लगाना, घोषित करना, चिल्लाकर कहना।
पुक्कश, पुक्कस–(सं० पुं०) अधम, नीच।
पुख–(हिं० पुं०) देखो पुष्प।
पुखता–(हिं० वि०) दृढ़।
पुखर–(हिं० पुं०) पुष्कर, तालाब।
पुखराज–(हिं० पुं०) पीले रंग का एक रत्न।
पुगना–(हिं० क्रि०) देखो पूजना।
पुगाना–(हिं० क्रि०) पूरा करना, पुजाना।
पुङ्ख–(सं० पुं०) बाण का पिछला भाग जिसमें पर खोंसे रहते हैं।
पुङ्गव–(सं०वि०) किसी शब्द के अन्त में जोड़ने से इसका अर्थ श्रेष्ठ होता है।
पुचकार–(हिं० वि०) चुमकार।
पुचकारना–(हिं० क्रि०) चुमकारना।
पुचकारी–(हिं० स्त्री०) चुमकार।
पुचारना–(हिं०क्रि०) पोतना, पुचारा देना।
पुचारा–(हिं० पुं०) वह गीला कपड़ा जिससे पोता या पुचारा दिया जाता है, पतला लेप करने की क्रिया, हलका लेप, झूठी प्रशंसा।
पुच्छ–(सं० पुं०) लाँगूल, पूंछ, किसी वस्तु का पिछला भाग।
पुच्छल–(सं० वि०) पूंछदार। **पुच्छल तारा**–(हिं० स्त्री०) देखो केतु।

पुछल्ला–(हिं० पुं०) आश्रित, पीछे लगा रहनेवाला, आवश्यक वस्तु के साथ अन्य वस्तु।
पुछार–(हिं० पुं०) पूछनेवाला, खोज लेनेवाला।
पुछैया–(हिं० पुं०) पूछनेवाला।
पुजना–(हिं० क्रि०) सम्मानित होना, पूजा जाना। **पुजवाना**–(हिं० क्रि०) पूजा करने में प्रवृत्त कराना।
पुजाई–(हिं० स्त्री०) पूजा करने की क्रिया या भाव, पूजा करने का शुल्क।
पुजाना–(हिं०क्रि०) पूजा में प्रवृत्त कराना अथवा भेंट चढ़वाना, धन लेना, घाव धोना, चोट आदि के गड्ढे भराना, पूर्ति कराना।
पुजापा–(हिं० पुं०) पूजा की सामग्री।
पुजारी–(हिं० पुं०) देव-मूर्ति की पूजा करनेवाला।
पुजाही–(हिं० स्त्री०) पूजा की सामग्री रखने का पात्र।
पुजेरी–(हिं० पुं०) देखो पुजारी।
पुजैया–(हिं० पुं०) पूजा करनेवाला।
पुजौरा–(हिं० पुं०) पूजा के समय देवता को अर्पण करने की सामग्री।
पुट–(सं० पुं०) कटोरा, औषधि पकाने का पात्र, अन्तःपट, ढाँपने की वस्तु; (हिं० पुं०) हलका छिड़काव, बहुत हलका मेल देने के लिये घुले हुए रंग में या पतली वस्तु में डुबाना।
पुटकी–(हिं० स्त्री०) दैवी आपत्ति, पोटली, गठरी।
पुटपाक–(सं० पुं०) किसी मिट्टी आदि के पात्र में औषधि रखकर तथा उसका मुख अच्छी तरह से बन्द करके गड्ढे के भीतर गोहरा रखकर पकाने की विधि।
पुटभेद–(सं० पुं०) पानी का भँवर।
पुटरिया–(हिं०स्त्री०) देखो पोटली।
पुटरी–(हिं० स्त्री०) देखो पोटली।
पुटिनी–(सं० स्त्री०) फेनी नाम की मिठाई।
पुटी–(सं० स्त्री०) छोटा कटोरा, छोटा दोना, पुड़िया।
पुटोदक–(सं० पुं०) नारिकेल, नारियल।
पुट्ठा–(हिं० पुं०) चूतड़ का ऊपरी कड़ा भाग, पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग।
पुट्ठी–(हिं० स्त्री०) गाड़ी के पहिये के घेरे का वह भाग जिसमें आरे जड़े रहते हैं।
पुठवार–(हिं० क्रि० वि०) पीछे, बगल में।
पुठवाल–(हिं० पुं०) पृष्ठ-रक्षक।
पुड़ा–(हिं० पुं०) बड़ी पुड़िया।
पुड़िया–(हिं० स्त्री०) मोड़कर लपेटा हुआ कागज या पत्ता जिसमें कोई वस्तु रक्खी जाय, पुड़िया में लपेटी हुई औषधि की एक मात्रा।
पुण्ड–(सं० पुं०) माथे पर लगाने का तिलक।
पुण्डरीक–(सं० पुं०) सफेद कमल, रेशम का कीड़ा।
पुण्य–(सं० पुं०) धर्म का कार्य, शुभ कार्य, कार्य का सञ्चय; (वि०) धर्म-विहित, पवित्र, शुभ। **पुण्यकर्म**–(सं० पुं०) जिस कार्य के करने से पुण्य होता है। **पुण्यकाल**–(सं० पुं०) दान-पुण्य करने का काल। **पुण्यक्षेत्र**–(सं० पुं०) पुण्य-भूमि, आर्यावर्त। **पुण्यजन**–(सं० पुं०) सज्जन, धर्मात्मा। **पुण्यता**–(सं०स्त्री०) पुण्य कर्म का भाव। **पुण्यदर्शन**–(सं० वि०) जिसके दर्शन का शुभ फल हो। **पुण्यवान्**–(हिं० वि०) धर्मात्मा, पुण्य करनेवाला। **पुण्यशील**–(सं० वि०) अच्छे स्वभाववाला।

पुण्यस्थान–(सं० पुं०) तीर्थ-स्थान।
पुण्याई–(हिं० स्त्री०) पुण्य का फल, पुण्य का प्रभाव। पुण्यात्मा–(सं० वि०) पुण्यशील, धर्मात्मा। पुण्याह–(सं० स्त्री०) पुण्य दिन, मंगल दिवस। पुण्याहवाचन–(सं० पुं०) देवादि कर्म में मंगल के निमित्त 'पुण्याह' इस शब्द का तीन बार उच्चारण।
पुतरिया, पुतरी–(हिं० स्त्री०) देखो पुतली।
पुतला–(हिं० पुं०) लकड़ी, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई पुरुष की मूर्ति। पुतली–(हिं० स्त्री०) लकड़ी, मिट्टी, धातु अथवा कपड़े की बनी हुई स्त्री की आकृति, गुड़िया, आँख के बीच का काला भाग।
पुताई–(हिं० स्त्री०) पोतने की क्रिया या भाव, पोतने का शुल्क।
पुतारा–(हिं० पुं०) पोतन के लिये भिगाया हुआ कपड़ा।
पुत्त–(हिं० पुं०) देखो पुत्र, बेटा।
पुत्तरी–(हिं० स्त्री०) पुत्री, बेटी।
पुत्तल, पुत्तलक–(सं० पुं०) पुतला।
पुत्तलिका–(सं०स्त्री०) गुड़िया। पुतली–(सं० पुं०) प्रतिमूर्ति, पुतली।
पुत्र–(सं० पुं०) तनय, तनुज, लड़का, बेटा। पुत्रक–(सं० पुं०) पुत्र, बेटा। पुत्रकाम–(सं०वि०) पुत्राभिलाषी। पुत्र-कामेष्टि–(सं० स्त्री०) पुत्र प्राप्त करने के निमित्त किया जानेवाला यज्ञ। पुत्रता–(सं० स्त्री०) पुत्र का धर्म। पुत्रपौत्र–(सं० पुं०) लड़क पोतों का समुदाय। पुत्रवत्सल–(सं० वि०) पुत्र के प्रति अधिक प्रेमयुक्त। पुत्रवधू–(सं० स्त्री०) पुत्र की पत्नी, पतोहू।
पुत्रिका–(सं० स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या, पुतली गुड़िया।
पुत्री–(सं० पुं०) पुत्रयुक्त, पुत्रवान्; (स्त्री०) कन्या, बेटी।
पुत्रीय–(सं० वि०) पुत्र संबंधी।
पुत्रेष्टि–(सं० स्त्री०) वह यज्ञ जो पुत्र की कामना से किया जाता है।
पुत्रोत्सव–(सं० पुं०) पुत्र के जन्म-दिन में किया जानेवाला उत्सव।
पुनः–(हिं० अव्य०) दोबारा, दूसरी बार, फिर, अनन्तर, उपरान्त, पीछे। पुनः पुनः–(सं० अव्य०) बारंबार।
पुन–(हिं० पं०) पुण्य, धर्म।
पुनना–(हिं० क्रि०) भला-बुरा कहना।
पुनरपि–(सं० अव्य०) फिर से।
पुनरागत–(सं० वि०) दुबारा आया हुआ।
पुनरागमन–(सं० पुं०) द्वितीय बार आगमन।
पुनरावृत्त–(सं० वि०) फिर से कहा हुआ, फिर से घूमकर आया हुआ। पुनरावृत्ति–(सं० स्त्री०) पुनर्जन्म।
पुनरुक्त–(सं० वि०) फिर से कहा हुआ।
पुनरुक्ति–(सं० स्त्री०) कहे हुए वचन को दोहराना।
पुनरुत्पत्ति–(सं० स्त्री०) पुनर्जन्म।
पुनर्गमन–(सं० पुं०) दुबारा गमन।
पुनर्जन्म–(सं० पुं०) एक शरीर छूटने पर दूसरा शरीर धारण करना।
पुनर्जात–(सं० वि०) फिर से उत्पन्न।
पुनर्विवाह–(सं० पुं०) दुबारा विवाह।
पुनि–(हिं० क्रि० वि०) फिर से, दुबारा।
पुनिम, पुनी–(हिं० स्त्री०) पूर्णिमा।
पुनी–(हिं० स्त्री०) पूर्णिमा; (पुं०) पुण्यात्मा, धर्मात्मा।
पुनीत–(हिं० वि०) पवित्र, शुद्ध।
पुन्न–(हिं० पुं०) देखो पुण्य।

पुन्य–(सं० पुं०) देखो पुण्य।
पुन्यताई–(हिं० स्त्री०) पवित्रता।
पुपली–(हिं० स्त्री०) बाँस की पतली नली
पुमान्–(सं० पुं०) पुरुष, नर।
पुरः–(हिं० अव्य०) आगे, पहिले। पुरःसर–(हिं० वि०) अग्रगण्य, अगुआ।
पुर–(सं० पुं०) नगर, गृह, घर, दुर्ग, गढ़, समूह, देह, शरीर; (वि०) पूर्ण, भरा हुआ; (हिं० पुं०) कुवें से पानी निकालने का चमड़े का बड़ा डोल, पुरवट।
पुरखा–(हिं० पुं०) पूर्वज, पूर्व पुरुष, कुल का वृद्ध पुरुष, बड़ा बूढ़ा।
पुरजन–(हिं० पुं०) नागरिक।
पुरजित्–(सं० पुं०) त्रिपुरारि, शिव।
पुरतिटी–(सं० स्त्री०) छोटा हाट।
पुरनियाँ–(हिं० वि०) वृद्ध, बुड्ढा।
पुरपाल–(सं० पुं०) नगरपाल, कोतवाल।
पुरबला, पुरबुला–(हिं० वि०) पहिले क, पूर्वजन्म संबंधी।
पुरबिया, पुरबिहा–(हिं० वि०) पूर्व देश में उत्पन्न, पूरब का।
पुरमार्ग–(सं० पुं०) नगर का मार्ग।
पुररक्ष–(सं० पुं०) नगर का रक्षक।
पुरवइया–(हिं० स्त्री०) देखो पुरवाई।
पुरवट–(हिं० पुं०) मोट।
पुरवना–(हिं० क्रि०) पूरा करना या होना, भरना, पुजाना।
पुरवा–(हिं० पुं०) छोटा गाँव, पूर्व दिशा से चलनेवाली हवा, मिट्टी का कुल्हड़।
पुरवाई–(हिं० स्त्री०) पूर्व दिशा से चलनेवाली हवा।
पुरवासी–(सं० वि०) नगर में रहनेवाला।
पुरवैया–(हिं० वि०) देखो पुरवाई।
पुरश्चरण–(सं० पुं०) किसी कार्य की सिद्धि के लिये अनुष्ठान करना।
पुरषा–(हिं० पुं०) देखो पुरखा।
पुरसा–(हिं० पुं०) ऊँचाई या गहराई की एक नाप जो प्रायः साढ़े चार या पाँच हाथ की होती है।
पुरस्कार–(सं० पुं०) आदर, पूजा, प्रधानता, स्वीकार, उपहार, पारितोषिक।
पुरस्कृत–(सं० वि०) पूजित, स्वीकृत।
पुरस्सर–(सं० पुं०) अगुआ, साथी; (वि०) आगे का, पहिला।
पुरहत–(हिं० पुं०) वह अन्न, द्रव्य आदि जो मंगल-कार्य में पुरोहित या प्रजा को पहिले दिया जाता है, आखत।
पुरहा–(हिं० पुं०) वह मनुष्य जो पुरवट का पानी गिराने के लिये नियुक्त रहता है।
पुरा–(सं० अव्य०) प्राचीन काल में; (वि०) प्राचीन, पुराना; (हिं० पुं०) पुरवा, गाँव, बस्ती।
पुराकल्प–(सं० पुं०) प्राचीन काल।
पुराचीन–(हिं० वि०) देखो प्राचीन।
पुराण–(सं० वि०) प्राचीन, पुराना; (सं० पुं०) पुरानी कथा, हिन्दुओं के धर्म संबंधी आख्यान ग्रन्थ, जिनमें संसार की सृष्टि, लय, प्राचीन ऋषि-मुनियों और राजाओं की कथा रहती है।
पुराण पुरुष–(सं० पुं०) विष्णु।
पुरातन–(सं० वि०) प्राचीन, पुराना।
पुराधिप–(सं० पुं०) नगर का अध्यक्ष।
पुरान–(हिं० पुं०) देखो पुराण; (वि०) पुराना। पुराना–(हिं० वि०) प्राचीन काल का, जीर्ण, परिपक्व, पुरातन।
पुराल–(हिं० पुं०) देखो पयाल।
पुरावसु–(सं० पुं०) भीष्म।
पुरावृत्त–(सं० पुं०) इतिहास, पुराना चरित्र।
पुरी–(सं० स्त्री०) नगरी।

पुरीष–(सं० पु०) विष्ठा, मल, गू।
पुरुख–(हिं० पुं०) देखो पुरुष।
पुरुखा–(हिं० पुं०) देखो पुरुषा।
पुरुष–(सं० पुं०) मनुष्य, पूर्वज, पति, मनुष्य का शरीर या आत्मा, सूर्य, व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम अथवा क्रियापद अपने लिये अथवा अन्य के लिये प्रयोग किया गया है–यथा "मैं" उत्तम पुरुष, "तुम" मध्यम पुरुष और "वह" अन्य पुरुष कहलाता है। **पुरुषकार**–(सं० पुं०) पौरुष, उद्योग।
पुरुषता–(सं० स्त्री०) पुरुषत्व।
पुरुषमेघ–(सं० पुं०) नर बलि।
पुरुषराज–(सं० पुं०) पुरुषश्रेष्ठ। **पुरुषवध**–(सं० पुं०) नरहत्या। **पुरुषवत्**–(सं० वि०) मनुष्य के समान।
पुरुषाधम–(सं० पुं०) अधम मनुष्य।
पुरुषानुक्रम–(सं० पुं०) पुरुषों से चली आती हुई परम्परा। **पुरुषारथ**–(हिं० पुं०) देखो पुरुषार्थ। **पुरुषार्थ**–(सं० पुं०) पौरुष, पराक्रम, उद्यम। **पुरुषार्थी**–(सं०वि०) पराक्रमी, परिश्रमी, उद्योगी।
पुरुषोत्तम–(सं० पुं०) विष्णु, पुरुषश्रेष्ठ, ईश्वर।
पुरुहूत–(सं० पुं०) इन्द्र।
पुरैथा–(हिं० पुं०) हलकी मूठ, परिहथा।
पुरैन–(हिं० स्त्री०) देखो पुरइन।
पुरोग–(सं० वि०) अग्रगामी, आगे जानेवाला। **पुरोगत**–(सं० वि०) जो पहिले गया हो। **पुरोगामी**–(सं० वि०) अग्रगामी।
पुरोजन्मा–(सं० वि०) बड़ा भाई।
पुरोजव–(सं० वि०) आगे बढ़नेवाला।
पुरोडाश–(सं० पुं०) यज्ञीय द्रव्य।
पुरोद्यान–(सं० पुं०) नगर का बगीचा।
पुरोधा–(सं० पुं०) पुरोहित। **पुरौधा**–(हिं० स्त्री०) पुरोहिताई।
पुरोहित–(सं० पुं०) यजमान के यहाँ यज्ञादि श्रौत कर्म, गृह् कर्म, संस्कार शान्ति आदि कर्म करानेवाला ब्राह्मण। **पुरोहिताई**–(हिं० स्त्री०) पुरोहित का काम। **पुरोहितानी**–(हिं० स्त्री०) पुरोहित की स्त्री।
पुर्सा– (हिं० पुं०) देखो पुरसा।
पुलक–(सं० पुं०) रोमाञ्च, एक प्रकार का रत्न। **पुलकना**–(हिं० क्रि०) रोमांचित होना, गद्गद होना। **पुलकाई**–(हिं० स्त्री०) पुलकित होने का भाव। **पुलकित**–(सं० वि०) रोमाञ्चित, गद्गद।
पुलट–(हिं० स्त्री०) देखो पलट।
पुलपुला–(हिं० वि०) जो इतना कोमल हो कि छूने से धँस जावे। **पुलपुलाना**–(हिं० क्रि०) किसी कोमल वस्तु का दबाना, चूसना। **पुलपुलाहट**–(हिं० स्त्री०) पुलपुला होने का भाव।
पुलाव–(हिं० पुं०) मांस और चावल को एक साथ पका कर बना हुआ एक व्यंजन।
पुलिंदा–(हिं० पुं०) लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का छोटा मुट्ठा, गट्ठा।
पुलिन–(सं० पुं०) तट, किनारा, नदी के बीच में पड़ी हुई रेती।
पुल्ल–(सं० वि०) विकसित, खिला हुआ।
पुंल्ला–(हिं० पुं०) नाक में पहिनने का एक गहना।
पुवा–(हिं० पुं०) पूवा, मालपूवा।
पुवार–(हिं० पुं०) देखो पयाल, पुआल।

पुषित–(सं० वि०) पोषण किया हुआ।
पुष्कर–(सं० पुं०) ढोल, मृदंग आदि का मुखड़ा जिस पर चमड़ा मढ़ा जाता है, आकाश, ताल, पोखरा।
पुष्करपर्ण–(सं० पुं०) कमल का पत्ता।
पुष्करिणी–(सं० स्त्री०) जलाशय, पोखरा।
पुष्कल–(सं० पुं०) एक प्रकार का ढोल; (पुं०) अन्न नापने की एक प्राचीन नाप; (वि०) प्रचुर, अधिक।
पुष्ट–(सं० वि०) बलवर्धक, बलिष्ठ, मोटा, दृढ़, पक्का। पुष्टई–(हिं० स्त्री०) बल वीर्य को पुष्ट करनेवाली औषधि।
पुष्टता–(सं० स्त्री०) दृढ़ता, पोढ़ापन।
पुष्टि–(सं० स्त्री०) पोषण, वृद्धि, दृढ़ता।
पुष्टिकर–(सं० वि०) पुष्ट करनेवाला।
पुष्टिकारक–(सं० वि०) देखो पुष्टिकर।
पुष्टिद–(सं० वि०) पुष्टि देनेवाला।
पुष्प–(सं० पुं०) कुसुम, सुमन, फूल।
पुष्पक–(सं० पुं०) कुबेर का विमान।
पुष्पकाल–(सं० पुं०) वसन्त ऋतु।
पुष्पकीट–(सं० पुं०) भौंरा, फूल का कीड़ा।
पुष्पजासव–(सं० पुं०) फूलों से बनाई हुई मदिरा।
पुष्पद–(सं० वि०) फूल देनेवाला।
पुष्पदाम–(सं० पुं०) फूलों की माला।
पुष्पद्रव–(सं० पुं०) फूल का रस।
पुष्पनिर्यास–(सं० पुं०) मकरन्द, फूल का रस।
पुष्पपत्री–(सं० पुं०) कुसुमशर, कामदेव।
पुष्पभव–(सं० पुं०) मकरन्द, मधु।
पुष्पभूषित–(सं० वि०) फूलों से सुशोभित। पुष्पमास–(सं० पुं०) वसन्त ऋतु के दो महीने। पुष्पराग–(सं० पुं०) पुखराज। पुष्परेणु–(सं० पुं०) फूल की धूल, पराग। पुष्पलिह–(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा। पुष्पवाटिका–(सं० स्त्री०) फूलों का बगीचा, फुलवारी।
पुष्पहीन–(सं० वि०) बिना फूल का, गूलर का वृक्ष। पुष्पहीना–(सं० स्त्री०) वन्ध्या, बाँझ स्त्री।
पुष्पाकर–(सं० पुं०) वसन्त ऋतु।
पुष्पाञ्जलि–(सं० पुं०) अंजुली भरकर फूल जो किसी देवता पर चढ़ाये जावें।
पुष्पित–(सं० वि०) कुसुमित, फूला हुआ।
पुष्पोत्सव–(सं० पुं०) कुसुम-क्रीड़ा, फूल का खेल। पुष्पोद्यान–(सं० पुं०) पुष्पवाटिका, फुलवारी।
पुष्य–(सं० पुं०) पुष्टि, पोषण।
पुस–(हिं० पुं०) बिल्ली को पुकारने का प्यार का शब्द।
पुसाना–(हिं० क्रि०) शोभा देना, अच्छा लगना, बन पड़ना।
पुस्तक–(सं० पुं०) पोथी। पुस्तकाकार–(सं० वि०) पुस्तक के आकार का, पोथी के रूप का। पुस्तकागार–(सं० पुं०) जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो। पुस्तकालय–(सं० पुं०) जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो।
पुस्तिका–(सं० स्त्री०) छोटे आकार की पोथी।
पुस्फुस–(सं० पुं०) फुसफुस रोग।
पुहकर–(हिं० पुं०) देखो पुष्कर।
पुहाना–(हिं० क्रि०) गुथवाना, पिरोने का काम दूसरे से कराना।
पुहुप–(हिं० पुं०) देखो पुष्प, फूल।
पुहराज–(हिं० पुं०) पुखराज।
पुहुरेनु–(हिं० पुं०) पुष्परेणु, पराग।
पुहुमी–(हिं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
पूंछ–(हिं० स्त्री०) पशु, पक्षी, कीड़े आदि के शरीर का सबसे पिछला भाग, लांगूल, पोंछ।
पूंछड़ी–(हिं० स्त्री०) लांगूल, पुच्छ, पूंछ।

पूंछताछ–(हिं० स्त्री०) देखो पूछताछ।
पूंछना–(हिं० क्रि०) देखो पूछना।
पूंछलतारा–(हिं० पुं०) देखो केतु।
पूंजी–(हिं० स्त्री०) मूल धन, किसी कार्यालय की अचल सम्पत्ति, रुपया-पैसा, धन। **पूंजीदार**–पूंजीपति, वह जो किसी व्यवसाय में धन लगावे।
पूंजीवाद–(हिं० पुं०) समाज में धनपति द्वारा उत्पादन के साधनों पर अधिकार करने की व्यवस्था।
पूंठ–(हिं० स्त्री०) देखो पीठ।
पूआ–(हिं० पुं०) मालपुआ।
पूखन–(सं०पुं०)सुपारी का वृक्ष या फल।
पूगना–(हिं० स्त्री०) पूरा होना।
पूगी–(सं० पुं०) सुपारी।
पूछ–(हिं० स्त्री०) जिज्ञासा, खोज।
पूछताछ–(हिं० स्त्री०) जिज्ञासा, जाँच-पड़ताल।
पूछना–(हिं० क्रि०)जिज्ञासा करना, पता लगाना, आदर करना, ध्यान देना, टोकना।
पूछपाछ–(हिं० स्त्री०) देखो पूछताछ।
पूछाताछी, पूछापाछी–(हिं० स्त्री०) पूछने की क्रिया या भाव।
पूज–(हिं० पुं०) देवता; (वि०) पूजने योग्य।
पूजक–(हिं० वि०) पूजा करनेवाला।
पूजन–(हिं० वि०) पूजा, अर्चना, देवता की वन्दना।
पूजना–(हिं०क्रि०) गहराई भरना या बराबर होना, समाप्त होना, बीतना, ऋण आदि का चुकता होना, किसी देवता की आराधना करना, आदर करना, घूस देना।
पूजनीय–(सं० वि०) पूजा करने योग्य, आदरणीय, अर्चनीय।
पूजमान–(हिं० वि०) पूजनीय, पूज्य।
पूजा–(सं० स्त्री०) पूजन, अर्चन, आराधना, आदर-सत्कार। **पूजार्ह**–(सं० वि०) मान्य, पूजन योग्य। **पूजित**–(सं० वि०) जिसकी पूजा की गई हो।
पूजेता–(हिं० पुं०) पुजारी।
पूज्य–(सं० वि०) पूजनीय, माननीय।
पूज्यपाद–(सं० वि०) जिसके पैर पूजनीय हों। **पूज्यमान**–(सं० वि०) जो पूजा जाता हो।
पूठा–(हिं० पुं०) देखो पट्ठा।
पूठि–(हिं० स्त्री०) देखो पीठ, पृष्ठ।
पूड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो पूरी।
पूणू–(हिं० स्त्री०) पूर्णिमा, पुनवासी।
पूत–(सं० वि०) पवित्र, सत्य, सच्चा।
पूत–(हिं० पुं०) पुत्र, बेटा।
पूतड़ा–(हिं० पुं०) छोटे बच्चों के नीचे मलमूत्र त्याग करने के लिये बिछाने का छोटा बिछौना।
पूतरा–(हिं० पुं०) देखो पुतला, बाल-बच्चा। **पूतरी**–(हिं० स्त्री०) देखो पुतली।
पूता–(सं० वि०) पवित्र, शुद्ध। **पूतात्मा**–(सं० वि०) शुद्ध अन्तःकरण का।
पूति–(स्त्री०) पवित्रता, दुर्गन्ध; (वि०) दुर्गन्धयुक्त।
पूती–(हिं० स्त्री०) लहसुन की गाँठ।
पूथ,पूथा–(हिं०पुं०)बालू का ऊँचा टीला।
पूनव–(हिं० स्त्री०) देखो पूर्णिमा, पूनो।
पूनसलाई–(हिं० स्त्री०) पूनी बनाने की सलाई।
पूनिउँ–(हिं०स्त्री०) देखो पूनो, पूर्णिमा।
पूनी–(हिं० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धि; (हिं० स्त्री०) धुनी हुई रूई की बड़ी बत्ती जो सूत कातने के लिये बनाई जाती है।

पूनो–(हिं० स्त्री०) पूर्णमासी, पूर्णिमा।
पूप–(सं० पुं०) पूआ, मालपूआ।
पूपली–(सं० स्त्री०) बाँस आदि की पोली नली, बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।
पूय–(सं० पुं०) मवाद, पीब।
पूर–(सं० पुं०) मसाले आदि जो पकवान के भीतर भरे जात हैं।
पूरक–(सं० पुं०) वह अंक जिसमें किसी संख्या का गुणा किया जावे, प्राणायाम का वह अंग जिसमें नाक के एक छिद्र को बन्द करके दूसरे छिद्र द्वारा साँस ऊपर को खींची जाती है।
पूरणी–(सं० स्त्री०) पूरा करनेवाली।
पूरणीय–(सं० वि०) पूरा करन योग्य।
पूरन–(हिं०वि०)देखो पूर्ण। **पूरनकाम**–(हिं०वि०)देखो पूर्णकाम। **पूरनपूरी**–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मीठी कचौड़ी।
पूरनमासी–(हिं० स्त्री०)देखो पूर्णमासी।
पूरना–(हिं० क्रि०) पूर्ति करना, मनोरथ सिद्ध करना, मंगल अवसरों पर भूमि पर अबीर आटे, आदि से चौखूटे क्षेत्र बनाना, बटना, पूर्ण या व्याप्त होना।
पूरब–(हिं० पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है।
पूरबल–(हिं०पुं०)प्राचीन समय,पूर्व जन्म।
पूरबला–(हिं० वि०) पुरातन, पुराना, पहिले जन्म का।
पूरबिया, पूरबी–(हिं० वि०) पूर्व संबंधी, पूरब का।
पूर–(हिं० वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, समूचा, विना भाग किया हुआ, पूर्ण, भरपूर, तुष्ट, सम्पन्न।
पूरित–(सं० वि०)परिपूर्ण, भरा हुआ।
पूरी–(हिं० स्त्री०) एक खाद्य पदार्थ जो आटे को साधारण रोटी की तरह बेलकर घी में पका लिया जाता है।
पूरुष–(सं०पुं०)पुरुष, नर, चेतन, आत्मा।
पूर्ण–(सं० वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, समूचा, परितृप्त, समाप्त, सफल, सिद्ध। **पूर्णकाम**–(सं० पुं०) परमेश्वर; (वि०) जिसकी सब कामनायें पूरी हो चुकी हों। **पूर्णकुम्भ**–(सं० पुं०)जल से भरा हुआ घड़ा। **पूर्णचन्द्र**–(सं० पुं०) पूर्णिमा का चन्द्रमा। **पूर्णतया, पूर्णतः**–(सं० अव्य०) पूर्ण रूप से। **पूर्णता**–(सं० स्त्री०) पूर्णत्व। **पूर्णपात्र**–(सं० पुं०) वस्तुपूर्ण पात्र, जलपूर्ण पात्र। **पूर्णमासी**–(सं० स्त्री०) चन्द्रमास की अन्तिम तिथि या पंद्रहवाँ दिन।
पूर्णविराम–(सं० पुं०) लिखने में वह चिह्न जो वाक्य के पूरे होने पर लगाया जाता है, नागरी, बँगला आदि में इसके लिये एक खड़ी पाई '।' का प्रयोग किया जाता है।
पूर्णानन्द–(सं० पुं०) परमेश्वर, परब्रह्म।
पूर्णायु–(सं०पुं०)सौ वर्ष का जीवनकाल; (वि०) पूरे आयुष्यवाला।
पूर्णाहुति–(सं० स्त्री०) होम-समाप्ति में अन्तिम आहुति।
पूर्णिमा–(सं०स्त्री०)पौर्णमासी, पुनवासी
पूर्णेन्दु–(सं० पुं०) पूर्णिमा का चन्द्रमा।
पूर्ति–(सं०स्त्री०) पूरा करने का काम, गुणा करने का काम।
पूर्व–(सं० वि०) पहिले का, प्राचीन, पुराना, पिछला; (पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है; (अव्य०) पहले।
पूर्वक–(सं० अव्य०) साथ, सहित, अर्थ में प्रायः संयुक्त संज्ञा के अन्त में प्रयोग होता है, यथा ध्यानपूर्वक।

पूर्वकर्म–(सं० पुं०) पहले किया जानेवाला कार्य । **पूर्वकाय**–(सं० पुं०) शरीर में नाभि के ऊपर का भाग। **पूर्वकाल**–(सं० पुं०) प्राचीन काल ।
पूर्वकालिक– (सं० वि०) पूर्व काल संबंधी, जिसकी स्थिति पूर्वकाल में हो, जिसका जन्म पूर्वकाल में हुआ हो। **पूर्वकालिक क्रिया**–वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले होता हो ।
पूर्वज–(सं० पुं०) पूर्वपुरुष, पुरखा; (वि०) पूर्वकाल में उत्पन्न। **पूर्वजन्मा**–(सं० पुं०) अग्रज, बड़ा भाई। **पूर्वजा**–(सं० स्त्री०) बड़ी बहन। **पूर्वज्ञान**–(सं० पुं०) पहिले का ज्ञान, पूर्व जन्म का ज्ञान।
पूर्वतन–(सं० वि०) पुराने समय का। **पूर्वतः**–(सं० अव्य०) पहले से।
पूर्वत्व–(सं० पं०) पुरानापन ।
पूर्वदिन–(सं० पुं०) आज से पहिले का दिन ।
पूर्वपक्ष–(सं० पुं०) कृष्णपक्ष, शास्त्रार्थ में संशय हटाने के लिये जो प्रश्न किया जाता है।
पूर्वपद–(सं० पुं०) पूर्ववर्ती स्थान ।
पूर्वपितामह–(सं० पुं०) प्रपितामह, परदादा ।
पूर्वपुरुष–(सं० पुं०) बाप, दादा, परदादा आदि पुरखा।
पूर्वभाषी–(सं० वि०) पहिले बोलनेवाला । **पूर्वभूत**–(सं०वि०) जो पहिले बीत गया हो ।
पूर्वराग–(सं० पुं०) पूर्वानुराग, प्रथम अनुराग ।
पूर्वरात्र–(सं० पुं०) रात्रि का पूर्व भाग।
पूर्वरूप–(सं० पुं०) पहिले का रूप ।
पूर्ववत्–(सं० अव्य०) पूर्वतुल्य, पहले की तरह ।
पूर्ववायु–(सं० पुं०) पुरवैया हवा ।
पूर्वविद्–(सं० वि०) पुरानी बातों को जाननेवाला । **पूर्ववृत्त**–(सं० पुं०) प्राचीन घटना, इतिहास ।
पूर्ववैरी–(हिं० पुं०) पहिले का शत्रु।
पूर्वा–(सं० स्त्री०) पूर्व दिशा।
पूर्वापर–(सं० क्रि० वि०) अगला और पिछला, क्रमानुसार; (पुं०) पूर्व और पश्चिम ।
पूर्वाभिभाषी–(सं०वि०) पहिले बोलनेवाला । **पूर्वाभिमुख**–(सं० वि०) पूरब की ओर मुख किया हुआ ।
पूर्वार्जित–(सं० वि०) पहिले का उपार्जित या कमाया हुआ।
पूर्वार्ध–(सं० वि०) किसी पुस्तक का पहिला आधा भाग ।
पूर्वाह्न–(सं० पुं०) दिनमान का प्रथम भाग, प्रातःकाल से दोपहर तक का समय ।
पूर्वी–(हिं० वि०) पूरब का ।
पूर्वेतर–(सं० वि०) पूर्व से भिन्न, पश्चिम
पूर्वोक्त–(सं० वि०) पूर्वकथित, पहले कहा हुआ ।
पूर्वोत्तरा–(सं० स्त्री०) ईशान कोण।
पूर्वोत्पन्न–(सं०वि०) पूर्वकाल में उत्पन्न ।
पूला–(हिं० पुं०) मूंज आदि का बँधा हुआ गट्ठा ।
पूवा–(हिं० पुं०) देखो पूआ ।
पूस–(हिं० पुं०) पौष मास ।
पृच्छक–(सं० वि०) प्रश्न करनेवाला।
पृच्छना–(सं० स्त्री०) जिज्ञासा करना, पूछना ।
पृतना–(सं०स्त्री०) सेना, संग्राम, लड़ाई।
पृथक्–(सं० अव्य०) भिन्न, अलग ।

पृथक्करण–(सं० पुं०) अलग करने का भाव, अलगाव।
पृथक्जन–(सं० पुं०) नीच, पापी पुरुष।
पृथग्भाव–(सं० पुं०) देखो पृथक्त्व।
पृथग्विध–(सं० वि०) नाना रूप का।
पृथवी–(हिं० स्त्री०) देखो पृथिवी।
पृथिवी–(सं० स्त्री०) अचला, भूमि, धरा, धरणी। पृथिवीकम्प–भूकम्प। पृथिवीपति–राजा। पृथिवीलोक–भूलोक।
पृथुता–(सं० स्त्री०) विस्तार, फैलाव।
पृथुत्व–(हिं० पुं०) देखो पृथुता। पृथुदर्शी–(सं० वि०) बहुदर्शी, चतुर, प्रवीण। पृथुपाणि–(सं० वि०) जिसके हाथ बहुत लम्बे हों।
पृथुल–(सं० वि०) बड़ा भारी, स्थूल, अधिक।
पृथुलाक्ष–(सं० वि०) बड़ी-बड़ी आँखोंवाला।
पृथ्वी–(सं० स्त्री०) सौर जगत् का वह ग्रह जिस पर हम सब प्राणी चलते-फिरते हैं।
पृथ्वीगृह–(सं० पुं०) गह्वर, गुफा।
पृथ्वीज–(सं० वि०) भूमि से उत्पन्न।
पृथ्वीतल–(सं० पुं०) संसार, वह धरातल जिस पर हम लोग चलते-फिरते हैं।
पृथ्वीधर–(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़।
पृथ्वीनाथ–(सं० पुं०) राजा। पृथ्वीपति, पृथ्वीपाल–(सं० पुं०) पृथ्वीपालक, राजा।
पृथ्वीपुत्र–(सं० पुं०) मंगल ग्रह।
पृथ्वीश–(सं० पुं०) भूपति, राजा।
पृषदश्व–(सं० पुं०) वायु, हवा।
पृष्ठ–(सं० पुं०) शरीर के पीछे का भाग, पीठ, पीछा, पुस्तक का पत्र या पन्ना, पुस्तक के पत्र के एक ओर का तल। पृष्ठग्रन्थि–(सं० पुं०) गण्डु रोग, कूबड़। पृष्ठचर–(सं० पुं०) पीछे चलनेवाला। पृष्ठपोषक–(सं० पुं०) पीठ ठोंकनेवाला, सहायक।
पृष्ठफल–(सं० पुं०) किसी पिण्ड के ऊपरी भाग का क्षेत्रफल। पृष्ठभाग–(सं० पुं०) पिछला भाग, पीठ।
पृष्ठवंश–(सं० पुं०) पीठ की हड्डी, रीढ़। पृष्ठास्थि–(सं० पुं०) देखो पृष्ठवंश।
पें–(हिं० पुं०) रोने या बाजा फूंकने से निकलने का शब्द।
पेंग–(हिं० स्त्री०) हिंडोले या झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर जाना।
पेंच–(हिं० पुं०) देखो पेच।
पेंडुकी–(हिं० स्त्री०) पंडुक पक्षी, गुझिया नामक पकवान।
पेंदा–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का निचला भाग या आधार। पेंदी–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु का निचला भाग।
पेउसी–(हिं० स्त्री०) ब्याई हुई गाय या भैंस का पहिले दिन का दूध।
पेखक–(हिं० वि०) प्रेक्षक, देखनेवाला।
पेखना–(हिं० क्रि०) देखना।
पेचक–(सं० पुं०) उलूक पक्षी, उल्लू।
पेचना–(हिं० क्रि०) किन्हीं दो वस्तुओं के बीच में तीसरी वस्तु को इस प्रकार से जमा देना कि पता न चले।
पेचिका–(सं० स्त्री०) मादा उल्लू पक्षी।
पेट–(हिं० पुं०) शरीर के भीतर का वह भाग जहाँ पहुँचकर भोजन पचता है, उदर, अन्तःकरण, मन, गर्भ, चक्की का भीतरी भाग, जीविका।
पेटक–(सं० पुं०) मंजूषा, पेटारा, समूह, ढेर।
पेटकैया–(हिं० क्रि० वि०) पेट के बल।
पेटल–(हिं० वि०) बड़े पेटवाला, तोंदीला।

पेटा–(हि० पुं०) सीमा, पूरा विवरण, वृत्त, घेरा, किसी पदार्थ का मध्य भाग, नदी बहने का मार्ग, नदी का पाट।
पेटाक–(सं० पुं०) पेटक, पिटारा।
पेटागि–(हि० स्त्री०) पेट की आग, भूख।
पेटारा–(हि० पुं०) देखो पिटारा।
पेटार्थी, पेटार्थू–(हि० वि०) भुक्खड़।
पेटिका–(हि० स्त्री०) छोटी पिटारी।
पेटी–(हि० क्रि०) छोटा संदूक, छाती और पेड़ू के बीच का स्थान, कटिबन्ध।
पेटू–(हि० वि०) जो खाता हो, भुक्खड़।
पेठ–(हि० पुं०) देखो पैंठ।
पेठा–(हि० पुं०) कूष्माण्ड, सफेद कुम्हड़ा।
पेड़–(हि० पुं०) पादप, वृक्ष।
पेड़ना–(हि० स्त्री०) देखो पेरना।
पेड़ा–(हि० पुं०) खोवे की बनी हुई गोल चिपटी मिठाई।
पेड़ी–(हि० स्त्री०) वृक्ष का धड़, पुराने पौध में का पान।
पेड़ू–(हि० पुं०) गर्भाशय, उपस्थ।
पेन्हाना–(हि० क्रि०) देखो पहनाना, दूहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।
पेम–(हि० पुं०) देखो प्रेम।
पेय–(सं० पुं०) पीने की वस्तु; (वि०) पीने योग्य।
पेरना–(हि० क्रि०) किसी काम के करने में देर लगाना, रस निकालने के लिये किसी वस्तु को दबाना, कष्ट देना।
पेरवा–(हि० पुं०) कोल्हू में किसी वस्तु को पेरनेवाला।
पेरा–(हि० पुं०) घर आदि पोतने की पीली मिट्टी।
पेरी–(हि० क्रि०) देखो पियरी।
पेलव–(सं० वि०) मृदु, कोमल।
पेला–(हि० पुं०) आक्रमण, धावा, झगड़ा।
पेवँ–(हि० पुं०) प्रेम, स्नेह।
पेवक्कड़–(हि० पुं०) देखो पियक्कड़।
पेवड़ी–(हि० स्त्री०) रामरज, पीले रंग की बुकनी।
पेवर–(हि० पुं०) पीला रंग।
पेवस–(हि० पुं०) हाल की ब्याई हुई गाय या भस का दूध।
पेशल–(सं० वि०) दक्ष, प्रवीण, चतुर।
पेशी–(सं० स्त्री०) शरीर के भीतर की मांस की गाँठ, पट्ठा।
पेशीकोष–(सं० पुं०) अण्डकोष।
पेषक–(सं० वि०) पीसनेवाला; **पेषण**–(सं० पुं०) चूर्ण करना, पीसना।
पेषणी–(सं० स्त्री०) वह सिल जिस पर कोई वस्तु पीसी जावे। **पेषणीय**–(सं० वि०) पीसने योग्य।
पेषना–(हि० क्रि०) देखो पेखना।
पेसल–(हि० वि०) देखो पेशल।
पेंकड़ा–(हि० पुं०) पैर का कड़ा, ऊँट की नकेल।
पेंग–(हि० स्त्री०) धनुष की डोरी।
पेंचना–(हि० क्रि०) अनाज फटकना।
पेंचा–(हि० पुं०) पलटा, हेरफेर।
पेंजना–(हि० पुं०) पैर में पहनने का एक गहना। **पेंजनियाँ, पेंजनी**–(हि० स्त्री०) पैर में पहनने का एक गहना जो चलने पर झनझन शब्द करता है, सग्गड़ या बैलगाड़ी के पहिये के आगे की ओर की वह टेढ़ी लकड़ी जिसके छेद में पहिया या धुरा निकला रहता है।
पेंठ–(हि० स्त्री०) हाट, दूकान, हाट लगने का दिन। **पेंठोर**–(हि० पुं०) दूकान, हाट।
पेंड़–(हि० पुं०) मार्ग, पगडंडी, पग, डग।
पेंड़ा–(हि० पुं०) प्रणाली, रीति, मार्ग।
पेंत–(हि० स्त्री०) पण, दाँव।

पैंतालिस–(हिं॰ वि॰) चालीस और पाँच की संख्या का; (पुं॰) चालीस और पाँच की संख्या ४५।
पैंती–(हिं॰ स्त्री॰) श्राद्धादि कर्म करते समय अँगुलियों में पहिनने का कुश का बना हुआ छल्ला।
पैंतीस–(हिं॰ वि॰) तीस और पाँच की संख्या का; (पुं॰) तीस और पाँच की संख्या, ३५।
पैंसठ–(हिं॰ वि॰) साठ और पाँच की संख्या का; (पुं॰) साठ और पाँच की संख्या, ६५।
पै–(हिं॰ स्त्री॰) दोष, त्रुटि; (अव्य॰) प्रति, ओर, निकट, समीप, परन्तु, पर, अनन्तर पीछे; (प्रत्य॰) अधिकरण-सूचक विभक्ति, पर, ऊपर-करणसूचक विभक्ति-द्वारा, से।
पैकरमा–(हिं॰ स्त्री॰) देखो परिक्रमा।
पैका–(हिं॰ पुं॰) पैसा।
पैकारी–(हिं॰ पुं॰) देखो पैकार।
पैकी–(हिं॰ पुं॰) मेले आदि में घूम-घूमकर तमाखू पिलानेवाला।
पैंग–(हिं॰ पुं॰) कदम, डग।
पैज–(हिं॰ स्त्री॰) प्रतिज्ञा, पण, टेक।
पैजनी–(हिं॰ स्त्री॰) देखो पैंजनी।
पैजा–(हिं॰ पुं॰) किवाड़ के छेद में पहिनाया हुआ लोहे का कड़ा, पायना।
पैजावा–(हिं॰पुं॰) ईंट पकाने का स्थान।
पैठ–(हिं॰ स्त्री॰) प्रवेश, पहुँच, त्रुटि।
पैठाना–(हिं॰ क्रि॰) घुसाना।
पैठार–(हिं॰ पुं॰) प्रवेश, पैठ।
पैठारी–(हिं॰ स्त्री॰) प्रवेश, पैठ, गति, पहुँच।
पैंटी–(हिं॰ स्त्री॰) बदला।
पैड़ी–(हिं॰ स्त्री॰) सीढ़ी, पौदर।
पैंतरा–(हिं॰ पुं॰) मल्लयुद्ध में अथवा तलवार चलाते समय घूम-फिरकर पैर रखने की मुद्रा, धूल पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।
पैंतरी–(हिं॰ स्त्री॰) रेशम की परेती।
पैंतला–(हिं॰ वि॰) छिछला, कम गहरा।
पैताना–(हिं॰ पुं॰) देखो पायताना।
पैतृक–(सं॰ वि॰) पितृ संबंधी। पैतृक-भूमि–जिस स्थान में बाप-दादे बसे रहे हों।
पैत्त–(सं॰ वि॰) पित्त से उत्पन्न, पित्त सम्बन्धी।
पैत्तिक–(सं॰ वि॰) पित्त सम्बन्धी।
पैथला–(हिं॰ वि॰) छिछला, उथला।
पैदल–(हिं॰ पुं॰) पदाति, पैदल सिपाही, पाँवपाँव चलना; (वि॰) पाँवपाँव चलनेवाला; (क्रि॰वि॰) पाँवपाँव, पैदल
पैन–(हिं॰ पुं॰) छोटा नाला, परनाली।
पैना–(हिं॰ पुं॰) हलवाहों की हाँकने की छोटी छड़ी; (वि॰) तीक्ष्ण, धारदार, चोखा।
पैनाना–(हिं॰ क्रि॰) छुरी आदि की धार चोखी करना।
पैन्हना–(हिं॰ क्रि॰) देखो पहनना।
पैयाँ–(हिं॰ स्त्री॰) पैर, पाँव।
पैया–(हिं॰ पुं॰) पोला दाना।
पैर–(हिं॰ पुं॰) चरण, पाँव, धूल, डंठल-सहित अन्न का अटाल।
पैरना–(हिं॰क्रि॰) पानी के ऊपर हाथ-पैर चलाते हुए जाना, तैरना।
पैरा–(हिं॰ पुं॰) पड़े हुए चरण, पैर में पहिनने का एक प्रकार का कड़ा, बाँट।
पैराई–(हिं॰ स्त्री॰) तैरने की क्रिया।
पैराक–(हिं॰ पुं॰) तैरनेवाला।
पैराना–(हिं॰क्रि॰) तराने का काम कराना।
पैराव–(हिं॰ पुं॰) इतना गहरा पानी जो तैरकर ही पार किया जा सकता है।

पैरी–(हिं० पुं०) पैर में पहिनने का एक चौड़ा गहना।
पैलगी–(हिं० स्त्री०) पालागन, प्रणाम।
पैला–(हिं० पुं०)अन्न नापने की डलिया।
पैशाच–(सं० वि०) पिशाच सम्बन्धी।
पैशाचिक–(सं० वि०) पिशाच संबंधी, राक्षसी। पैशाची–(सं०स्त्री०) प्राकृत भाषा का एक भेद।
पैशुनिक–(सं० वि०) पीठ पीछे निन्दा करनेवाला। पैशुन्य–(सं० पुं०) पिशुनता।
पैसना–(हिं० क्रि०) प्रवेश करना, घुसना।
पैसरा–(हिं० पुं०)व्यापार, प्रयत्न, झंझट।
पैसा–(हिं० पुं०) तीन पाई अथवा पाव आने के मूल्य की ताँबे की मुद्रा, धन।
पैसार–(हिं० पुं०) प्रवेश द्वार।
पैसेवाला–(हिं० पुं०) धनी, धनवान्।
पैहरा–(हिं० पुं०) पैकार, बनिया।
पैहारी–(हिं० वि०) केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।
पोंकना–(हिं० क्रि०) बहुत डरना।
पोंका–(हिं० पुं०) वह फतिंगा जो पौधों पर उड़ता फिरता है।
पोंगरा–(हिं० पुं०) चोंगा, बाँस की पोर या नली; (वि०)पोला, खोखला, मूर्ख।
पोंगी–(हिं० स्त्री०)छोटी पोली नली।
पोंछ–(हिं० स्त्री०) देखो पूँछ।
पोंछन–(हिं० पुं०) किसी वस्तु को पोंछकर निकाला हुआ अंश। पोंछना–(हिं० क्रि०) काछना; (पुं०) पोंछने का कपड़ा।
पोंटा–(हिं० पुं०) नाक से निकला हुआ मल।
पोआ–(हिं० पुं०) साँप का छोटा बच्चा।
पोआना–(हिं० क्रि०) पोने का काम दूसरे से कराना।
पोई–(हिं० स्त्री०) अंकुर, गेहूँ आदि का छोटा पौधा।
पोकल–(हिं० वि०) निःसार, पोला, खोखला।
पोख–(हिं० पुं०)पालने-पोसने का संबंध।
पोखना–(हिं० क्रि०) पालना, पोसना, सोखना।
पोखर–(हिं० पुं०) तालाब, पोखरा।
पोखरा–(हिं० पुं०) खोदकर बनाया हुआ तालाब।
पोखराज–(हिं० पुं०) देखो पुखराज।
पोखरी–(हिं० स्त्री०) छोटा पोखरा या ताल।
पोगण्ड–(सं० पुं०)पाँच वर्ष से लेकर दस वर्ष तक की अवस्था का बालक।
पोच–(हिं० वि०) क्षीण, हीन, तुच्छ, नीच, क्षुद्र।
पोचारा–(हिं० पुं०) देखो पुचारा।
पोची–(हिं० स्त्री०) निचाई, बुराई।
पोछना–(हिं० क्रि०) देखो पोंछना।
पोट–(सं० पुं०) स्पर्श, मेल, मिलान; (हिं० स्त्री०) मोटरी, पोटली।
पोटना–(हिं० क्रि०) फुसलाना।
पोटरी–(हिं० स्त्री०) देखो पोटली।
पोटला–(हिं० पुं०) बड़ी गठरी।
पोटली–(हिं० स्त्री०) छोटी गठरी या बगुचा।
पोटा–(हिं० पुं०) पेट की थैली, सामर्थ्य, चिड़िया का बच्चा, नाक का मल, अँगुली का छोर।
पोट्टलिका, पोट्टली–(सं० स्त्री०) पोटरी, छोटी गठरी।
पोढ़ा–(हिं० वि०) दृढ़, पुष्ट, कठोर, कड़ा। पोढ़ाना–(हिं०क्रि०)पुष्ट करना।
पोत–(सं० पुं०) नाव, जहाज, पशु आदि का छोटा बच्चा; (हिं० स्त्री०) माला

या गुरिया का दाना, काँच की गुरिया; (पुं०) भूमिकर जो किसान देता है।

पोतड़ा-(हिं० पुं०) बच्चों के चूतड़ के नीचे रखने का वस्त्र, गंतरा।

पोतदार-(हिं० पुं०) कोषाध्यक्ष जिसके पास लगान का रुपया रखा जावे।

पोतधारी-(सं० पुं०) जहाज का अध्यक्ष।

पोतनहार-(हिं० स्त्री०) वह पात्र जिसमें पोतने के लिये मिट्टी घोलकर रखी हो, घर पोतनवाली स्त्री, आँत, अँतड़ी।

पोतना-(हिं० क्रि०) किसी गीले पदार्थ को दूसरे पदार्थ पर फैलाकर लगाना, मण्डना; (पुं०) पोतने का कपड़ा।

पोतनायक-(सं० पुं०) जहाज का अधिकारी। पोतभङ्ग-(सं० पुं०) जहाज का टक्कर खाकर नष्ट होना।

पोतला-(हिं० पुं०) तवे पर घी लगाकर सेंकी हुई चपाती, पराँठा।

पोतवाह-(सं० पुं०) मल्लाह, माँझी।

पोता-(हिं० पुं०) पौत्र, बेटे का बेटा।

पोतारा-(हिं० पुं०) देखो पुतारा।

पोतारी-(हिं० स्त्री०) पोतने का कपड़ा।

पोताश्रय-(सं० पुं०) बन्दरगाह।

पोती-(हिं० स्त्री०) पौत्री, पुत्र की बेटी, रेशमी कपड़े पर माड़ी चढ़ाने की क्रिया।

पोथा-(हिं० पुं०) कागजों की गड्डी, बड़े आकार की पोथी। पोथी-(हिं० स्त्री०) पुस्तिका, किताब।

पोदना-(हिं०पुं०) नाटा या ठिगना आदमी

पोद्दार-(हिं० पुं०) देखो पोतदार।

पोना-(हिं० क्रि०) गीले आटे की लोई को हाथों में घुमाकर रोटी बनाना, पिरोना, गूँथना, पकाना।

पोपला-(हिं० वि०) सिकुड़ा हुआ, पचका हुआ, बिना दाँत का। पोपलाना-(हिं० क्रि०) पोपला होना।

पोया-(हिं० पुं०) नरम छोटा पौधा, बच्चा, साँप का छोटा बच्चा।

पोर-(हिं० स्त्री०) अँगुली की गांठ या जोड़, रीढ़, ऊख, बाँस आदि का वह भाग जो दो गाँठों के बीच में हो।

पोरा-(हिं० स्त्री०) लकड़ी का मण्डलाकार टुकड़ा।

पोरिया-(हिं० स्त्री०) छल्ले के आकार का वह गहना जो हाथ या पैर के पोरों पर पहना जाता है।

पोल-(हिं० पुं०) अवकाश, शून्य स्थान, खोखलापन।

पोला-(हिं० वि०) पुलपुला, खोखला, निःसार, तत्त्वरहित।

पोली-(सं० स्त्री०) पतली रोटी।

पोष-(सं० पुं०) पालन-पोषण, वृद्धि, तृप्ति, उन्नति।

पोषक-(हिं० वि०) पालक, पालनेवाला, सहायता देनेवाला।

पोषण-(सं० पुं०) पुष्टि, पालन।

पोषना-(हिं० क्रि०) पालना।

पोषित-(सं० वि०) पाला हुआ।

पोष्य-(सं०वि०) पोषणीय, पालने योग्य।

पोष्यपुत्र-पुत्र के समान पाला हुआ लड़का।

पोस-(हिं० पुं०) पालनेवाले के साथ प्रेम। पोसन-(हिं० पुं०) रक्षा, पालन। पोसना-(हिं० क्रि०) रक्षा करना, पालना।

पोहना-(हिं० क्रि०) पिरोना, गूँथना, घुसाना, धँसाना; (वि०) घुसनेवाला।

पोहर-(हिं० पुं०) पशुओं के चरने का स्थान, पशुओं का चारा।

पोहमी-(हिं० स्त्री०) देखो पुहमी।

पोहा-(हिं० पुं०) पशु, चौपाया।

पोहिया-(हिं० पुं०) चरवाहा।

पौंचा–(हिं० पुं०) साढ़े पाँच का पहाड़ा।
पौंड़ा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की कड़ी और मोटी जाति की ऊख।
पौंड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो पौरी।
पौंढ़ना, पौंरना–(हिं० क्रि०) तैरना।
पौ–(हिं० स्त्री०) पौसला, प्याऊ; (पुं०) पैर, जड़। **पौ फटना**–प्रातःकाल होना।
पौआ–(हिं० पुं०) देखो पौवा।
पौढ़ना–(हिं० क्रि०) लेटना, सोना, आगे-पीछे हिलना। **पौड़ाना**–(हिं० क्रि०) इधर-उधर हिलाना, झुलाना।
पौण्ड्र,पौण्ड्रक–(सं०पुं०) मोटा गन्ना, पौंड़ा।
पौत्र–(सं० पुं०) पुत्र का पुत्र, पोता।
पौत्री–(सं० स्त्री०) पुत्र की बेटी, पोती।
पौद–(हिं० स्त्री०) छोटा पौधा।
पौदर–(हिं० स्त्री०) चिह्न, वह ढालुआ स्थान जिस पर से बैल कुवें से पुरवट खींचते हैं।
पौनः, पुनिक–(सं० पुं०) गणित में दशमलव के अंक जो बारंबार आते हैं।
पौनरुक्त–(सं० वि०) बारंबार कहा हुआ।
पौन–(हिं० पुं०) देखो पवन, वायु, हवा; (वि०) तीन चौथाई भाग।
पौना–(हिं० पुं०) पौने का पहाड़ा, लोहे की बड़ी करछी या झरनी।
पौनार, पौनारि–(हिं० स्त्री०) कमल के फूल की डंडी।
पौनी–(हिं० स्त्री०) छोटा पौना।
पौने–(हिं० वि०) किसी संख्या का तीन चौथाई।
पौमान–(हिं० पुं०) जलाशय, पोखरा।
पौर–(सं० वि०) नगर संबंधी।
पौरजन–(सं०पुं०) नगर में रहनेवाला।
पौरा–(हिं० पुं०) पड़े हुए चरण।
पौराण–(सं० वि०) पुराण सम्बन्धी।
पौराणिक–(सं० पुं०) पुराणपाठी।
पौरि–(हिं० स्त्री०) देखो पौरी।
पौरिया–(हिं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।
पौरी–(हिं० स्त्री०) ड्योढ़ी, सीढ़ी, खड़ाऊँ।
पौरुष–(सं० पुं०) पराक्रम, साहस, उद्यम, उद्योग; (वि०) पुरुष संबंधी।
पौरुष्य–(सं० पुं०) पुरुषता, साहस।
पौरोहित–(सं० पुं०) पुरोहित का धर्म या कार्य। **पौरोहित्य**–(सं० पुं०) पुरोहिताई।
पौर्णमासिक–(सं०वि०) पूर्णिमा संबंधी।
पौर्णमासी–(सं० स्त्री०) पूर्णमासी।
पौल–(हिं० स्त्री०) मार्ग।
पौलना–(हिं० क्रि०) कहना।
पौला–(हिं०पुं०) बिना खूंटी का खड़ाऊँ जिसके छेद में फँसी हुई रस्सी से अंगूठा फँसा रहता है।
पौलि–(हिं० स्त्री०) फुलका, रोटी।
पौलिया–(हिं०पुं०) देखो पौरिया।
पौली–(हिं० स्त्री०) पौरी, ड्योढ़ी।
पौवा–(हिं० पुं०) एक सेर का चौथाई अंश, पाव भर।
पौष–(सं० पुं०) पूस का महीना।
पौष्करिणी–(सं० स्त्री०) छोटा पोखरा या तालाब।
पौष्टिक–(सं० वि०) पुष्टि करनेवाला।
पौसरा, पौसला–(हिं०स्त्री०) प्यासों को पानी पिलाने का स्थान।
पौसेरा–(हिं० पुं०) पाव सेर की तौल।
पौहारी–(हिं० पुं०) वह जो केवल दूध पीकर रहता है।
प्याऊ–(हिं० पुं०) पौसरा, पौसला।
प्याना–(हिं० क्रि०) पिलाना।
प्यार–(हिं० पुं०) प्रेम, स्नेह, प्रेम दिखलाने का कार्य। **प्यारा**–(हिं० वि०) प्रीति-पात्र।

प्यावना–(हिं० क्रि०) देखो पिलाना।
प्यूनी–(हिं० स्त्री०) सूत कातने की रूई की बत्ती।
प्यूस–(हिं० पुं०) देखो पेवस।
प्यो–(हिं० पुं०) पति, स्वामी।
प्योसर–(हिं० पुं०) हाल की ब्याई हुई गाय का दूध।
प्योसार–(हिं० पुं०) स्त्री के माता-पिता का घर।
प्र–(सं० अव्य०) एक संस्कृत का उपसर्ग जो गति, उत्कर्ष, उत्पत्ति, आरंभ, ख्याति तथा व्यवहार अर्थ के लिये प्रयोग किया जाता है।
प्रकट–(सं० वि०) स्पष्ट, जो प्रत्यक्ष हुआ हो, आविर्भूत, उत्पन्न। **प्रकटन**–(सं० पुं०) प्रकट होने की क्रिया।
प्रकटित–(सं० वि०) प्रकाशित।
प्रकम्प–(सं० पुं०) कँपकँपी, थरथराहट। **प्रकम्पमान**–(सं० वि०) वेग से थरथराता हुआ। **प्रकम्पित**–(सं०वि०) कम्पनयुक्त।
प्रकरण–(सं० पुं०) प्रसंग का विषय, किसी ग्रन्थ का एक छोटा विभाग।
प्रकर्तव्य–(सं० वि०) अवश्य करने योग्य।
प्रकर्ता–(सं० वि०) अच्छी तरह से काम करनेवाला।
प्रकर्ष–(सं० पुं०) उत्तमता, अधिकता।
प्रकर्षक–(सं० पुं०) उत्तमता से करनवाला। **प्रकर्षण**–(सं० पुं०) आधिक्य, अधिकता।
प्रकला–(सं० स्त्री०) एक कला का साठवाँ भाग।
प्रकल्पना–(हिं० क्रि०) निश्चित करना।
प्रकल्पित–(सं०वि०) निश्चित किया हुआ
प्रकाण्ड–(सं० पुं०) वृक्ष का तना, शाखा; (वि०) बहुत फैला हुआ।
प्रकाम–(सं० वि०) यथेष्ट।
प्रकार–(सं० पुं०) सादृश्य, समानता, भेद, भाँति, तरह; (हिं० स्त्री०) परकोटा, घेरा।
प्रकारान्त–(सं० पुं०) अन्य प्रकार।
प्रकाश–(सं० पुं०) दीप्ति, धूप, ज्योति, स्पष्ट रूप से समझ में आना, प्रसिद्धि।
प्रकाशक–(सं० वि०) प्रकट करनेवाला।
प्रकाशता–(सं० स्त्री०) प्रकाश का भाव या धर्म, प्रकाशत्व। **प्रकाशन**–(सं० पुं०) प्रकाशित करने का काम, किसी ग्रन्थ को छापकर सर्वसाधारण में प्रचलित करने का काम; **प्रकाशमान**–(सं० वि०) प्रकाशयुक्त, चमकीला, प्रसिद्ध, विख्यात। **प्रकाशित**–(सं० वि०) जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो, चमकता हुआ, जो प्रकाश में आ चुका हो, शोभित, प्रकट।
प्रकास–(हिं० पुं०) देखो प्रकाश। **प्रकासना**–(हिं० क्रि०) प्रकट करना।
प्रकीर्ण–(सं० वि०) छितराया हुआ, फैलाया हुआ। **प्रकीर्णक**–(सं० पुं०) अध्याय, प्रकरण, विस्तार।
प्रकीर्तन–(सं० पुं०) उच्च स्वर से चिल्लाकर कीर्तन करना।
प्रकीर्ति–(सं० स्त्री०) प्रशंसा, प्रसिद्धि, घोषणा; **प्रकीर्तित**–(सं० वि०) कहा हुआ।
प्रकुपित–(सं० वि०) अति क्रुद्ध।
प्रकृति–(सं० स्त्री०) स्वभाव, किसी पदार्थ का गुण जो सर्वदा बना रहता हो।
प्रकृतिज–(सं० वि०) प्रकृति या स्वभाव से उत्पन्न। **प्रकृतिभाव**–(सं० पुं०) स्वभाव, व्याकरण में संधि का वह नियम जिसमें दो पदों के मिलने से इनमें से किसी में कोई परिवर्तन नहीं

होता। प्रकृतिसिद्ध–(सं० वि०) स्वाभाविक, प्राकृत।
प्रकृष्ट–(सं० वि०) मुख्य, प्रधान; (वि०) आकृष्ट, खिचा हुआ। **प्रकृष्टता**–(सं० स्त्री०) उत्तमता, श्रेष्ठता।
प्रकोट–(सं० पुं०) परकोटा, परिखा।
प्रकोप–(सं० पुं०) अधिक क्रोध, क्षोभ, चंचलता। **प्रकोपन**–(सं० पुं०) क्रोध, क्षोभ। **प्रकोपनीय**–(सं० वि०) क्रुद्ध करने योग्य। **प्रकोपित**–(सं० वि०) उत्तजित किया हुआ।
प्रकोष्ठ–(सं० पुं०) केहुनी के नीचे का भाग, घर के प्रधान द्वार के पास की कोठरी, बड़ा आँगन जिसके चारों ओर कोठरियाँ हों।
प्रक्रिया–(सं० स्त्री०) प्रकरण, नियत विधि, युक्ति।
प्रक्लेद–(सं० पुं०) आर्द्रता, नमी, तरी।
प्रक्ष–(हि० वि०) पूछनेवाला।
प्रक्षालन–(सं० पुं०) मार्जन, जल से धोने की क्रिया; **प्रक्षालनीय**–(सं० वि०) धोने या स्वच्छ करने योग्य।
प्रक्षालित–(सं० वि०) धोया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।
प्रक्षिप्त–(सं० वि०) फेंका हुआ।
प्रक्षेप–(सं० पुं०) फेंकना, छितराना, मिलाना, किसी व्यापार में अंशधारी की अलग-अलग लगाई हुई पूंजी।
प्रक्षेपण–(सं० पुं०) निक्षेपण, फेंकना।
प्रख्यात–(सं० वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।
प्रख्याति–(सं० स्त्री०) विख्याति, प्रसिद्धि
प्रगट–(हि० वि०) देखो प्रकट। **प्रगटना**–(हिं० क्रि०) सन्मुख होना।
प्रगटाना–(हिं० क्रि०) प्रकट करना।
प्रगण्ड–(सं० पुं०) कन्धे से लेकर केहुनी तक का भाग।
प्रगति–(हिं० स्त्री०) ढंग, चाल। **प्रगतिशील**–(वि०) गतियुक्त।
प्रगमन–(सं० पुं०) उन्नति।
प्रगर्जन–(सं० पुं०) अति भयंकर शब्द।
प्रगल्भ–(सं० वि०) उद्धत, निर्लज्ज, धृष्ट, अभिमानी। **प्रगल्भता**–(सं० स्त्री०) धृष्टता, निर्लज्जता, अभिमान।
प्रगसना–(हिं० क्रि०) देखो प्रगटना।
प्रगाढ़–(सं० वि०) अतिशय, अधिक गाढ़ा, घना।
प्रगृहीत–(सं० बि०) अच्छी तरह से पकड़ा हुआ।
प्रघट–(हिं० वि०) देखो प्रकट।
प्रघटना–(हिं० क्रि०) देखो प्रकटना।
प्रचंड–देखो प्रचण्ड।
प्रघुर्ण, प्रघूर्ण–(सं०पुं०) अतिथि, पाहुन।
प्रचण्ड–(सं० वि०) प्रबल, कठोर, भयंकर, असह्य, उग्र, बलवान्। **प्रचण्डता**–(सं० स्त्री०) तीखापन।
प्रचय–(सं० पुं०) समूह, झुण्ड, ढेर, वृद्धि, बीजगणित में एक प्रकार का संयोग।
प्रचर–(सं०पुं०) मार्ग, गमन। **प्रचरना**–(हिं० क्रि०) चलना, फैलना।
प्रचरित–(सं० वि०) चलता हुआ।
प्रचलन–(सं० पुं०) प्रवर्तन, चालना।
प्रचलित–(सं० वि०) चलता हुआ।
प्रचार–(सं० पुं०) चलन, प्रसिद्धि।
प्रचारक–(सं० वि०) प्रचार करनेवाला, फैलानेवाला। **प्रचारण**–(सं० पुं०) प्रचार, चलन, रीति।
प्रचारना–(हिं० क्रि०) प्रचार करना, विस्तार करना। **प्रचारित**–(सं० वि०) विस्तृत, प्रचार किया हुआ। **प्रचारी**–(सं० वि०) प्रचार करनेवाला।
प्रचालित–(सं०वि०) प्रचार किया हुआ।
प्रचुर–(सं० वि०) अनेक, बहुत। प्रचु-

रता–(सं० स्त्री०) बहुलता, अधिकता।
प्रचोदन–(सं० पुं०) उत्तेजना, प्रेरणा, आज्ञा, नियम। प्रचोदित–(सं० वि०) उत्तेजित किया हुआ।
प्रच्छक–(सं० वि०) पूछनेवाला।
प्रच्छना–(सं० स्त्री०) जिज्ञासा, पूछना।
प्रच्छन्न–(सं० वि०) आच्छादित, ढपा हुआ।
प्रच्छर्दन–(सं० पुं०) वमन, उल्टी।
प्रच्छादन–(सं० पुं०) ओढ़ने का वस्त्र।
प्रच्छादित–(सं० वि०) आच्छादित, ढपा हुआ।
प्रच्छालना, प्रछालना–(हिं० क्रि०) धोना।
प्रजंत–(हिं० अव्य०) देखो पर्यन्त।
प्रजल्प, प्रजल्पन–(सं० पुं०) व्यर्थ की इधर-उधर की बातचीत। प्रजल्पित–(सं० वि०) कहा हुआ। प्रजल्पिता–(सं० स्त्री०) बकवादी स्त्री।
प्रजा–(सं० स्त्री०) सन्तति, सन्तान, वह जनसमूह जो किसी एक राजा के अधीन या एक राज्य के अन्तर्गत रहता हो।
प्रजागर–(सं०पुं०) पूरी तरह का जागरण। प्रजागरण–(सं० पुं०) नींद न आना।
प्रजातन्त्र–(सं० पुं०) वह शासन-पद्धति जिसमें कोई राजा नहीं होता परन्तु जनसमूह समय-समय पर अपना शासक चुन लेते हैं।
प्रजानाथ–(सं० पुं०) लोकनाथ, राजा।
प्रजापति–(सं० पुं०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा, महीपाल, राजा।
प्रजापाल–(सं० पुं०) प्रजा का पालन करनेवाला।
प्रजारना–(हिं० क्रि०) अच्छी तरह से जलाना।
प्रजासत्ता–(सं० स्त्री०) देखो प्रजातन्त्र।
प्रजुरना–(हिं० क्रि०) प्रकाशित होना, जगमगाना।
प्रजुलित–(सं० वि०) देखो प्रज्वलित।
प्रजोग–(हिं० पुं०) देखो प्रयोग।
प्रज्ञ–(सं० पुं०) विद्वान्, पण्डित।
प्रज्ञा–(सं० स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि। प्रज्ञा-चक्षु–(वि०) जिसके पास प्रज्ञारूपी चक्षु हो, अन्धा।
प्रज्वलन–(सं० पुं०) अच्छी तरह से जलने की क्रिया। प्रज्वलित–(सं० वि०) जलता हुआ।
प्रज्वालन–(हिं०क्रि०) जलाना, दहकाना।
प्रण–(हिं० पुं०) किसी काम के करन के लिये किया हुआ अटल निश्चय, प्रतिज्ञा।
प्रणत–(सं० वि०) प्रणाम करता हुआ। प्रणतपाल–(सं० पुं०) दीन-रक्षक।
प्रणति–(सं० स्त्री०) विनती, नम्रता।
प्रणम–(हिं० पुं०) देखो प्रणाम।
प्रणमन–(सं० पुं०) दण्डवत् या प्रणाम।
प्रणम्य–(सं० वि०) प्रणाम करने योग्य, वन्दनीय।
प्रणय–(सं० पुं०) प्रीतियुक्त प्रार्थना।
प्रणयी–(सं० पुं०) प्रेम करनेवाला, पति, स्वामी।
प्रणव–(सं० पुं०) ओंकार, परमेश्वर।
प्रणवना–(हिं० क्रि०) प्रणाम या नमस्कार करना।
प्रणाम–(सं० पुं०) दण्डवत्, नमस्कार।
प्रणामी–(सं० वि०) प्रणाम करनेवाला।
प्रणालिका–(सं० स्त्री०) परनाली।
प्रणाली–(सं० स्त्री०) नाली, परिपाटी, श्रेणी, रीति, पद्धति।
प्रणिधान–(सं० पुं०) मन की एकाग्रता।
प्रणिधि–(सं० पुं०) प्रार्थना, विनती, भेदिया
प्रणिनाद–(सं० पुं०) वज्र के समान गरजना।

प्रणीत–(सं० वि०) बनाया हुआ, सुधारा हुआ, भेजा हुआ।
प्रणेता–(सं० वि०) रचयिता, बनानेवाला।
प्रतनु–(सं० वि०) बहुत छोटा, बहुत महीन।
प्रतंचा–(हिं० पुं०) देखो प्रत्यंचा।
प्रतच्छ–(हिं० वि०) देखो प्रत्यक्ष।
प्रतप्त–(सं० वि०) तपा हुआ।
प्रतर्क–(सं० पुं०) सन्देह, वादाविवाद।
प्रतल–(सं० पुं०) हाथ की हथली, पाताल के सातवें भाग का नाम।
प्रताप–(सं० पुं०) वीरता, बल, पराक्रम, तेज, गरमी।
प्रतापवान्–(हिं० वि०) प्रतापयुक्त।
प्रतापी–(हिं० वि०) प्रतापवान्, दुःखदायी।
प्रतारक–(सं० वि०) वंचक, ठग, धर्त।
प्रतारण–(सं० पुं०) वंचन, धूर्तता, ठगी।
प्रतारणीय–(सं० वि०) ठगने योग्य।
प्रतारित(सं० वि०) जो ठगा गया हो।
प्रतिंचा–(हिं० स्त्री०) प्रत्यंचा, चिल्ला।
प्रति–(सं० अव्य०) एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में –"प्रतिनिधि, प्रतिकूल, विपरीत, प्रत्येक, दुबारा, ऊपर, समीप, विरोध, अल्पमात्रा, निश्चय, अंश, निन्दा, स्वभाव, प्रतिदिन तथा व्याप्ति"—अर्थों को बोधित करने के लिये जोड़ा जाता है।
प्रति–(हिं० अव्य०) सामने, ओर; (स्त्री०) एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं में से एक वस्तु।
प्रतिकाय–(सं० पुं०) प्रतिमा, प्रतिरूप।
प्रतिकार, प्रतिकारी–(सं० वि०) बदला चुकानेवाला।
प्रतिकूल–(सं० वि०) विपरीत, विरुद्ध; (पुं०) प्रतिपक्षी। **प्रतिकूलता**–(सं० स्त्री०) प्रतिकूल आचरण।
प्रतिकृत–(सं० वि०) जिसका बदला हो चुका हो। **प्रतिकृति**–(सं० स्त्री०) प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, प्रतिबिम्ब।
प्रतिक्रिया–(सं० स्त्री०) प्रतीकार, बदला।
प्रतिक्षण–(सं० अव्य०) बारंबार।
प्रतिक्षिप्त–(सं० वि०) तिरस्कार किया हुआ।
प्रतिगृहीत–(सं० वि०) ग्रहण किया हुआ, लिया हुआ।
प्रतिग्या–(हिं० स्त्री०) देखो प्रतिज्ञा।
प्रतिग्रह–(सं० पुं०) ग्रहण, स्वीकार, ब्राह्मण का विधिपूर्वक दिये हुए दान को लेना, पाणिग्रहण।
प्रतिग्रहीत–(हिं० वि०) प्रतिग्रह या दान लेनवाला।
प्रतिघात–(सं० पुं०) प्रतिवन्ध, बाधा।
प्रतिघातन–(सं० पुं०) हत्या, बाधा।
प्रतिघाती–(सं० वि०) टक्कर लगानेवाला, विरोध करनेवाला; (पुं०) शत्रु, वैरी।
प्रतिचिन्तन–(सं० पुं०) पुनर्विचार।
प्रतिच्छाया–(सं० स्त्री०) प्रतिमूर्ति, चित्र, प्रतिबिम्ब, परछाई।
प्रतिछाया–(हिं० स्त्री०) प्रतिबिंब, परछाई।
प्रतिज्ञा–(सं० स्त्री०) किसी काम के करने के लिये दृढ़ निश्चय।
प्रतिज्ञात–(सं० वि०) अंगीकृत।
प्रतिज्ञापत्र–(सं० पुं०) वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो।
प्रतिदत्त–(सं० वि०) लौटाया हुआ।
प्रतिदान–(सं० पुं०) विनिमय, बदला।
प्रतिदिन–(सं० पुं०) प्रत्यह, हर दिन।
प्रतिदिवस–(सं० अव्य०) देखो प्रतिदिन।
प्रतिद्वन्द्व–(सं० पुं०) बराबरीवालों की लड़ाई। **प्रतिद्वन्द्वी**–(सं० पुं०) शत्रु, बराबरी का लड़नेवाला।

प्रतिध्वनि–(सं० पुं०) वह शब्द जो अपने उत्पत्ति-स्थान पर फिर से सुनाई पड़े। **प्रतिध्वनित**–(वि०) गूंजता हुआ।
प्रतिनाद–(सं० पुं०) प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि।
प्रतिनिधि–(सं० पुं०) किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त पुरुष।
प्रतिनिधित्व–(सं० पुं०) प्रतिनिधि होने का कार्य या भाव।
प्रतिनियम–(सं० पुं०) व्यवस्था, प्रत्येक के लिये एक नियम।
प्रतिनिर्देश–(सं० पुं०) वह जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका हो।
प्रतिवृत्त–(सं० वि०) प्रत्यागत, लौटा हुआ।
प्रतिपक्ष–(सं० पुं०) प्रतिवादी, शत्रु, विरुद्ध पक्ष। **प्रतिपक्षी**–(सं० पुं०) विपक्षी, विरोधी।
प्रतिपच्छ–(हिं० पुं०) देखो प्रतिपक्ष।
प्रतिपत्ति–(सं० स्त्री०) प्राप्ति, ज्ञान, अनुमान, निरूपण, विचार, गौरव, स्वीकृति।
प्रतिपदा–(सं० स्त्री०) किसी पक्ष की पहली तिथि।
प्रतिपन्न–(सं० वि०) जाना हुआ, परिपूर्ण, निश्चित।
प्रतिपादक–(सं० वि०) निर्वाह करनेवाला, उत्पन्न करनेवाला।
प्रतिपादन–(सं० पुं०) दान, उत्पत्ति, पुरस्कार, निरूपण। **प्रतिपादनीय**–(सं० वि०) दान करने योग्य। **प्रतिपादित**–(सं० वि०) स्थिर या निश्चय किया हुआ, सुधारा हुआ।
प्रतिपार–(हिं० पुं०) देखो प्रतिपाल।
प्रतिपाल, प्रतिपालक–(सं०वि०) रक्षक, पोषक। **प्रतिपालन**–(सं० पुं०) निर्वाह, रक्षा। **प्रतिपालित**–(सं० वि०) पालन किया हुआ।
प्रतिपुरुष–(सं० पुं०) प्रतिनिधि।
प्रतिफल–(सं० पुं०) प्रतिबिम्ब, छाया, प्रत्युपकार।
प्रतिबन्ध–(सं० पुं०) बाधा, विघ्न, रुकावट। **प्रतिबन्धक**–(सं०वि०) बाधा डालनेवाला।
प्रतिबिम्ब–(सं० पुं०) प्रतिमा, मूर्ति, परछाई।
प्रतिबिम्बक–(सं०वि०) परछाहीं के समान पीछे-पीछे चलनेवाला। **प्रतिबिंबना**–(हिं०क्रि०) प्रतिबिम्बित होना। **प्रतिबिम्बित**–(सं० वि०) जिसकी परछाहीं पड़ती हो, जो परछाहीं पड़ने के कारण देख पड़ता हो।
प्रतिबोध–(सं० पुं०) जागरण, ज्ञान।
प्रतिबोधक–(सं० पुं०) शिक्षक।
प्रतिभट–(सं० पुं०) शत्रु, वैरी, बराबरी का योद्धा।
प्रतिभा–(सं० स्त्री०) दीप्ति, चमक, असाधारण बुद्धिमानी।
प्रतिभाग–(सं० पुं०) प्रत्येक भाग।
प्रतिभामुख–(सं० वि०) प्रभावशाली।
प्रतिभाशाली–(सं० वि०) प्रभावशाली।
प्रतिभासम्पन्न–(सं०वि०) प्रतिभाशाली।
प्रतिभाहानि–(सं० पुं०) बुद्धिनाश।
प्रतिभू–(सं० वि०) जमानत करनेवाला।
प्रतिमा–(सं० स्त्री०) किसी वास्तविक या कल्पित आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र।
प्रतिमास–(सं० अव्य०) हर महीने।
प्रतिमुक्त–(सं०वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
प्रतिमूर्ति–(सं० स्त्री०) देवतादि की मूर्ति।
प्रतिमोचन–(सं० पुं०) बन्धन से मुक्त करना।

प्रतियोग–(सं० पुं०) शत्रुता, विरुद्ध पदार्थों का संयोग। **प्रतियोगिता**–(सं० स्त्री०) प्रतिद्वन्द्विता। **प्रतियोगी**–(हिं० वि०) विरोधी, वैरी।
प्रतियोद्धा–(हिं० वि०) शत्रु, वैरी।
प्रतिरात्र–(सं० अव्य०) प्रत्येक रात को।
प्रतिरुद्ध–(सं० वि०) अवरुद्ध, रुका हुआ।
प्रतिरूप–(सं० पुं०) प्रतिमा, मूर्ति, चित्र।
प्रतिरोध–(सं० पुं०) विरोध, तिरस्कार।
प्रतिरोधक–(सं० पुं०) बाधा डालनेवाला। **प्रतिरोधन**–(सं० पुं०) प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव।
प्रतिरोधित–(सं० वि०) निवारित, रोका हुआ।
प्रतिलिपि–(सं० स्त्री०) किसी लेख का अनुकरण।
प्रतिलोम–(सं० वि०) विपरीत, उलटा।
प्रतिवचन–(सं० पुं०) उत्तर, विरुद्ध-वाक्य।
प्रतिवसथ–(सं० पुं०) ग्राम, गाँव।
प्रतिवाक्य–(सं० पुं०) प्रतिध्वनि, प्रत्युत्तर।
प्रतिवाद–(सं० पुं०) किसी के वाक्य या सिद्धान्त को खण्डन करने के लिये कहा हुआ वाक्य, विवाद, विरोध।
प्रतिवादी–(सं० पुं०) प्रतिवाद या खण्डन करनेवाला, वादी का उत्तर देनेवाला।
प्रतिवास–(सं० स्त्री०) सुगन्धि, पड़ोस।
प्रतिवासी–(सं० पुं०) पड़ोस में रहनेवाला, पड़ोसी।
प्रतिवेश्म–(सं० पुं०) पड़ोस का घर।
प्रतिशब्द–(सं० पुं०) प्रतिध्वनि, गूंज।
प्रतिशयन–(सं० पुं०) धरना देना।
प्रतिशिष्य–(सं० पुं०) चेले (शिष्य) का चेला
प्रतिशोध–(हिं० पुं०) बदला चुकाने के लिये किया जानेवाला काम।
प्रतिश्रुत–(सं० वि०) स्वीकार किया हुआ। **प्रतिश्रुति**–(सं० स्त्री०) अंगीकार, प्रतिध्वनि।
प्रतिषिद्ध–(सं० वि०) निषेध किया हुआ।
प्रतिषेध–(सं० पुं०) खण्डन, निषेध।
प्रतिष्टम्भ–(सं० पुं०) प्रतिबन्ध, रुकावट।
प्रतिष्ठा–(सं० स्त्री०) मान, मर्यादा, गौरव, आदर, देवता की प्रतिमा का स्थापन।
प्रतिष्ठापत्र–(सं० पुं०) सम्मानपत्र।
प्रतिष्ठापन–(सं० पुं०) किसी देव-मूर्ति की स्थापना।
प्रतिष्ठावान्–(हिं० वि०) प्रतिष्ठा योग्य।
प्रतिष्ठित–(सं० वि०) आदर-प्राप्त, प्रशंसित।
प्रतिसंवत्सर–(सं० अव्य०) हर साल, प्रतिवर्ष।
प्रतिसव्य–(सं० वि०) विपरीत, प्रतिकूल।
प्रतिसार–(सं० पुं०) दूरीकरण, अलग करना।
प्रतिस्पर्धा–(सं० स्त्री०) चढ़ा-उपरी, विवाद, झगड़ा। **प्रतिस्पर्धी**–(सं० वि०) विद्रोही।
प्रतिहत–(सं० वि०) हटाया हुआ, चोट खाया हुआ।
प्रतिहार–(सं० पुं०) द्वारपाल, चोबदार।
प्रतिहारी–(सं० पुं०) द्वारपाल, दरवान।
प्रतिहार्य–(सं० वि०) छोड़ने योग्य।
प्रतिहास–(सं० पुं०) हँसी करनेवाले के साथ हँसी।
प्रतिहिंसा–(सं० स्त्री०) बदला चुकाने के लिय हिंसा करना।
प्रतीक–(सं० पुं०) अवयव, अंग, चिह्न, प्रकृति, किसी गद्य या पद्य के आदि या अन्त के कुछ शब्दों को लिख या पढ़कर पूरे वाक्य या पद का पता लगाना।

प्रतीकार–(सं० पुं०) अपकार का बदला।
प्रतीक्षक–(सं० वि०) आसरा देखनेवाला, पूजा करनेवाला। **प्रतीक्षण**–(सं० पुं०) आसरा देखना।
प्रतीक्षणीय–(सं० वि०) प्रतीक्षा करने योग्य।
प्रतीक्षा–(सं० स्त्री०) प्रतीक्षण, आसरा।
प्रतीची–(सं० स्त्री०) पश्चिम दिशा।
प्रतीचीन–(सं० वि०) पश्चिम दिशा का।
प्रतीत–(सं० वि०) विदित, जाना हुआ।
प्रतीति–(सं० स्त्री०) विश्वास, दृढ़ निश्चय
प्रतीप–(सं० वि०) प्रतिकूल, उलटा।
प्रतीपगति–(सं० स्त्री०) प्रतिकूल गति। **प्रतीपगमन**–(सं० पुं०) प्रतिकूल गमन। **प्रतीपवचन**–(सं० पुं०) प्रतिकूल वाक्य, खण्डन।
प्रतीहारी–(सं० पुं०) द्वारपालिका, ड्योढ़ीदारिन।
प्रतुष्टि–(सं० स्त्री०) अधिक सन्तोष।
प्रतूलिका–(सं० स्त्री०) गद्दी।
प्रतोशना–(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट करना।
प्रत्यंचा–(हिं० स्त्री०) धनुष की डोरी।
प्रत्यक्–(हिं० क्रि० वि०) पीछे, पश्चिम।
प्रत्यक्ष–(सं० वि०) इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगोचर, जो आँखों के सामने हो, (हिं० क्रि० वि०) आँखों के सामने।
प्रत्यक्षता–(सं० स्त्री०) प्रत्यक्ष होने का भाव। **प्रत्यक्षणता**–(सं० स्त्री०) यथार्थ ज्ञान।
प्रत्यक्षीकरण–(सं० पुं०) इन्द्रियों द्वारा ज्ञान करा देना।
प्रत्यञ्चा–(सं० स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
प्रत्यपकार–(सं० पुं०) किसी अपकार के बदले में किया हुआ अपकार।
प्रत्यभिज्ञान–(सं० पुं०) सदृश वस्तु देखकर किसी पहले देखी हुई वस्तु का स्मरण।
प्रत्यभियोग–(सं० पुं०) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगानेवाले पर चलावे।
प्रत्यय–(सं० पुं०) ज्ञान, बुद्धि, विश्वास, निश्चय, व्याकरण में वह अक्षर या शब्द जो मूल शब्द के अन्त में लगाने से विशिष्ट अर्थ निकालता है।
प्रत्ययकारी–(सं० वि०) विश्वास दिलानेवाला। **प्रत्ययी**–(सं० वि०) विश्वासपात्र।
प्रत्यवाय–(सं०पुं०) परिवर्तन, उलटफेर।
प्रत्यवेक्षण–(सं० पुं०) अनुसन्धान, खोज।
प्रत्याख्यान–(सं० पुं०) निराकरण, खण्डन।
प्रत्यागत–(सं० वि०) लौटा हुआ।
प्रत्यागमन–(सं० नपुं०) लौट आना।
प्रत्याघात–(सं० पुं०) चोट के बदले चोट, टक्कर।
प्रत्यादिष्ट–(सं० वि०) जताया हुआ।
प्रत्यादेश–(हिं० पुं०) निराकरण, खण्डन।
प्रत्यानीत–(सं० वि०) फिर से लाया हुआ।
प्रत्याशा–(सं० स्त्री०) आकांक्षा, भरोसा।
प्रत्याशी–(हिं० वि०) अभिलाषी।
प्रत्याश्रय–(सं० पुं०) शरण का स्थान।
प्रत्यासन्न–(सं० वि०) निकटवर्ती, समीप का।
प्रत्युक्त–(सं० वि०) उत्तर दिया हुआ।
प्रत्युत्–(सं० अव्य०) इसके विरुद्ध, वरन्।
प्रत्युत्तर–(सं० पुं०) उत्तर का उत्तर।
प्रत्युत्थान–(सं० पुं०) किसी बड़े या पूज्य के आने पर उसके स्वागत के लिये आसन छोड़कर खड़े हो जाना।
प्रत्युत्पन्न–(सं० वि०) जो फिर से अथवा ठीक समय पर उत्पन्न हुआ हो।

प्रत्युत्पन्नमति–ठीक समय पर काम करनेवाली बुद्धि ।
प्रत्युदाहरण–(सं० पुं०) उदाहरण के विपरीत उदाहरण ।
प्रत्युपकार–(सं० पुं०) किसी उपकार के बदले में किया जानेवाला उपकार ।
प्रत्युपकारी–(सं० वि०) उपकार का बदला देनवाला ।
प्रत्युष, प्रत्यूष–(सं० पुं०) प्रभात, सबेरा ।
प्रत्यूह–(सं० पुं०) विघ्न, बाधा ।
प्रत्येक–(सं० वि०) बहुतों में से हर एक, अलग-अलग ।
प्रथम–(सं० वि०) प्रधान, मुख्य, पहिला; (क्रि० वि०) आगे, पहले । प्रथमकारक–व्याकरण में कर्ता कारक । प्रथमज, प्रथमजात–(सं०वि०) अग्रज, जो पहले उत्पन्न हुआ हो ।
प्रथमतः–(सं० अव्य०) पहले से, सबसे पहले ।
प्रथम पुरुष–(सं० पुं०) आदि पुरुष, व्याकरण में वह सर्वनाम जिसके विषय में कुछ कहा जाता है यथा–वह पुरुष, वह स्त्री, वह पशु आदि ।
प्रथमा–(सं० स्त्री०) व्याकरण में कर्त्ता कारक ।
प्रथमी–(हिं० स्त्री०) देखो पृथ्वी ।
प्रथमेतर–(सं० वि०) भिन्न, दूसरा ।
प्रथा–(सं० स्त्री०) ख्याति, रीति, चाल ।
प्रथित–(सं० वि०) प्रसिद्ध ।
प्रथिवी–(सं० स्त्री०) देखो पृथ्वी ।
प्रद–(सं० वि०) दाता, देनेवाला, यौगिक शब्द के अन्त में यह शब्द प्रयुक्त होता है जैसे–सुखप्रद, कष्टप्रद इत्यादि ।
प्रदक्षिणा–(सं० स्त्री०) परिक्रमा ।
प्रदत्त–(सं० वि०) अर्पित, दिया हुआ ।
प्रदर्शक–(सं० वि०) देखने या दिखलानेवाला; (पुं०) गुरु । प्रदर्शन–(सं० पुं०) उल्लेख ।
प्रदर्शनी–(सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तु लोगों को दिखलाने के लिये रखी जाती है ।
प्रदर्शित–(सं० वि०) दिखलाया हुआ ।
प्रदहन–(सं०पुं०) अच्छी तरह से जलना ।
प्रदाता–(सं० वि०) अधिक दान देनेवाला ।
प्रदान–(सं० पुं०) दान देने की क्रिया ।
प्रदानशूर–(सं० पुं०) दानवीर ।
प्रदायक–(सं० वि०) दान देनेवाला ।
प्रदायी–(सं० वि०) दान देनेवाला ।
प्रदाह–(सं० पुं०) दावाग्नि, जङ्गल की आग, शरीर में जलन जो अधिक ज्वर आने में उत्पन्न होती है ।
प्रदिशा–(सं० स्त्री०) दो मुख्य दिशाओं के बीच का कोना ।
प्रदीप–(सं० पुं०) दीप, दीया, प्रकाश ।
प्रदीपक–(सं० पुं०) प्रकाशक ।
प्रदीपति–(हिं० स्त्री०) देखो प्रदीप्ति ।
प्रदीपन–(सं० पुं०) उद्दीपन, उजाला ।
प्रदीपिका–(सं० स्त्री०) छोटी लालटेन ।
प्रदीप्त–(सं० वि०) चमकता हुआ ।
प्रदीप्ति–(सं० स्त्री०) प्रकाश, चमक ।
प्रदेय–(सं० वि०) दान करने योग्य ।
प्रदेश–(सं० पुं०) किसी देश का बड़ा विभाग, प्रान्त ।
प्रदेशी–(सं० वि०) प्रदेश सम्बन्धी ।
प्रदोष–(सं० पुं०) सूर्यास्त के बाद चार दण्ड का काल ।
प्रद्वेष–(सं० पुं०) शत्रुता, वैर ।
प्रद्वेषण–(सं० पुं०) घृणा, द्वेष ।
प्रधन–(सं० पुं०) युद्ध, लड़ाई ।

प्रधर्ष–(सं० पुं०) आक्रमण, धावा। **प्रधर्षक**–(सं० वि०) आक्रमण करनेवाला। **प्रधर्षण**–(सं० पुं०) आक्रमण।
प्रधान–(सं० पुं०) सेनाध्यक्ष, सचिव, मन्त्री, सरदार, नेता; (वि०) मुख्य, सर्वश्रेष्ठ, उत्तम, प्रमुख। **प्रधानता**–(सं० स्त्री०) प्रधान होने का भाव या धर्म, कार्य या पद।
प्रधावन–(सं० पुं०) वेग से दौड़ना।
प्रधी–(सं० स्त्री०) तीव्र बुद्धि।
प्रध्वंस–(सं० पुं०) नाश।
प्रध्वंसक–(सं० वि०) नाश करनेवाला। **ध्वंसन**–(सं० पुं०) नाश। **प्रध्वस्त**–(सं० वि०) जो नष्ट हो गया हो।
प्रन–(हिं० पुं०) देखो प्रण, संकल्प, दृढ़ निश्चय।
प्रनति–(हिं० स्त्री०) देखो प्रणति।
प्रनवना–(हिं० क्रि०) देखो प्रणमना।
प्रनष्ट–(सं० वि०) अच्छी तरह से नष्ट।
प्रनामी–(हिं० पुं०) प्रणाम करनेवाला।
प्रनाली–(हिं० स्त्री०) प्रणाली।
प्रनाशन–(हिं० पुं०) देखो प्रणाशन।
प्रनाशी–(सं० वि०) नाश करनेवाला।
प्रनिपात–(हिं० पुं०) देखो प्रणिपात।
प्रपञ्च–(सं० पुं०) विस्तार, भवजाल, संसारी जंजाल, झमेला, बखेड़ा, आडम्बर, ढोंग। **प्रपञ्चित**–(सं० वि०) छली, कपटी, ढोंगी।
प्रपन्न–(सं० वि०) प्राप्त, पाया हुआ।
प्रपा–(सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ प्यासों को पानी पिलाया जाता है, पौसरा।
प्रपात–(सं० पुं०) पहाड़ या चट्टान का किनारा, पानी का झरना।
प्रपान–(सं० पुं०) पौसरा, प्याऊ।
प्रपितामह–(सं० पुं०) दादा के बाप, परदादा।
प्रपितव्य–(सं० पुं०) परदादा का भाई।
प्रपीड़न–(सं० पुं०) अधिक कष्ट देना।
प्रपीड़ित–(सं० वि०) अधिक कष्ट दिया हुआ।
प्रपुत्र–(सं० पुं०) पौत्र, बेटे का बेटा।
प्रपूरित, **प्रपूर्ण**–(सं० वि०) परिपूर्ण किया हुआ।
प्रपौत्र–(सं० पुं०) पोते का लड़का, परपोता। **प्रपौत्री**–(सं० स्त्री०) पोते की कन्या, परपोती।
प्रफुलना–(हिं० क्रि०) फूलना।
प्रफुल्ल–(सं० वि०) विकसित, खिला हुआ, कुसुमित, फूला हुआ।
प्रबन्ध–(सं० पुं०) योजना, वाक्य-रचना का विस्तार, उपाय, आयोजन, व्यवस्थान।
प्रबल–(सं० वि०) बलवान्, प्रचण्ड, उग्र।
प्रबाल–(हिं० पुं०) देखो प्रवाल, मंगा।
प्रबीन–(हिं० वि०) देखो प्रवीण।
प्रबुद्ध–(सं० वि०) पण्डित, ज्ञानी, जागा हुआ।
प्रबोध–(सं० पुं०) यथार्थ ज्ञान, विकास। **प्रबोधक**–(सं० वि०) जगामेवाला, समझानेवाला। **प्रबोधन**–(सं० पुं०) यथार्थ ज्ञान, जागरण, आश्वासन; (हिं० क्रि०) ढाढ़सदेना। **प्रबोधिनी**–(सं० स्त्री०) कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी, देवोत्थान।
प्रबोधित–(सं० वि०) जगाया हुआ, ज्ञान प्राप्त।
प्रभञ्जन–(सं० पुं०) तोड़-फोड़, विनाश।
प्रभव–(सं० पुं०) जन्म, हेतु, जल निकलने का मार्ग, पराक्रम।
प्रभविष्णु–(सं० वि०) प्रभावशाली।
प्रभा–(सं० स्त्री०) दीप्ति, चमक, प्रकाश।
प्रभाउ–(हिं० पुं०) देखो प्रभाव।
प्रभाकर–(सं० पुं०) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि।

प्रभाकीट–(सं० पुं०) खद्योत, जुगनू।
प्रभात–(सं० पुं०) प्रातःकाल।
प्रभामण्डल–(सं०पुं०) गोलाकार रश्मि।
प्रभामय–(सं० वि०) दीप्तिमय।
प्रभाव–(सं० पुं०) प्रताप, तेज, सामर्थ्य।
प्रभावज–(सं० वि०) प्रभाव से उत्पन्न।
प्रभावती–(सं० स्त्री०) बड़े प्रभाववाली स्त्री।
प्रभाषण–(सं० पुं०) अच्छी तरह कहना।
प्रभाषी–(सं० वि०) अच्छी तरह से बोलनेवाला।
प्रभासना–(हिं० क्रि०) दिखाई पड़ना।
प्रभु–(सं०पुं०) अधिपति, नायक, स्वामी। **प्रभुता, प्रभुताई**–(सं० स्त्री०) महत्त्व, बड़ाई, वैभव।
प्रभुभक्त–(सं० वि०) स्वामिभक्त।
प्रभूत–(सं० वि०) प्रचुर, अधिक, बहुत।
प्रभूति–(सं० स्त्री०) उत्पत्ति, अधिकता।
प्रभृति–(सं० अव्य०) इत्यादि, आदि।
प्रभेद–(सं० पुं०) विभिन्नता, भेद, अन्तर।
प्रभेदक–(सं० वि०) विभाग करनेवाला।
प्रभ्रष्ट–(सं० वि०) टूटा-फूटा हुआ।
प्रमत्त–(सं० वि०) उन्मत्त, मतवाला, विक्षिप्त। **प्रमत्तता**–(सं० स्त्री०) पागलपन।
प्रमथ–(सं० पुं०) घोटक, घोड़ा।
प्रमद–(सं० पुं०) हर्ष, आनन्द, उन्मत्तता।
प्रमदा–(सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
प्रमन–(हिं० वि०) प्रसन्न।
प्रमर्दन–(सं० वि०) अच्छी तरह से रगड़नेवाला।
प्रमा–(सं० वि०) यथार्थ ज्ञान।
प्रमाण–(सं० पुं०) सत्यता, सचाई, निश्चय; (वि०) सच बोलनेवाला, मान्य, प्रमाणित; (अव्य०) पर्यन्त, तक।
प्रमाणपत्र–(सं० पुं०) वह लिखा हुआ पत्र जिस पर का लेख किसी बात का प्रमाण हो। **प्रमाण पुरुष**–(सं० पुं०) पंच।
प्रमाणित–(सं० वि०) सच्चा ठहराया हुआ।
प्रमाणीकृत–(सं० वि०) प्रमाण रूप से जो स्वीकार किया गया हो।
प्रमाता–(सं० स्त्री०) पिता की माता, दादी।
प्रमातामह–(सं० पुं०) मातामह का पिता, परनाना। **प्रमातामही**–(सं० स्त्री०) प्रमातामह की पत्नी, परनानी।
प्रमाद–(सं० पुं०) भ्रान्ति, असावधानी।
प्रमादी–(सं० वि०) असावधानी करनेवाला; (पुं०) पागल।
प्रमान–(हिं० पुं०) देखो प्रमाण।
प्रमानना–(हिं० क्रि०) सिद्ध करना, यथार्थ जानना।
प्रमानी–(हिं० वि०) प्रमाण योग्य, माननीय।
प्रमुख–(सं० वि०) मुख्य, प्रधान, पहला, प्रतिष्ठित।
प्रमुद–(सं० स्त्री०) अत्यन्त आनन्द।
प्रमुदित–(सं० स्त्री०) अत्यन्त आनन्दयुक्त; (सं० वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
प्रमृष्ट–(सं० वि०) मार्जित, धोया हुआ।
प्रमेय–(सं० वि०) जो प्रमाण का विषय हो सके।
प्रमेह–(सं० पुं०) बहुमूत्र का रोग।
प्रमेही–(सं० पुं०) प्रमेह का रोगी।
प्रमोद–(सं० पुं०) हर्ष, आनन्द, सुख।
प्रमोदित–(सं० वि०) हर्षित, आनन्दित। **प्रमोदी**–(सं० वि०) अति प्रसन्न।
प्रमोह–(सं० पुं०) मूर्छा। **प्रमोही**–(सं० वि०) मोहजनक।
प्रयंक–(हिं० पुं०) देखो पर्यङ्क।

प्रयंत–(हिं० अव्य०) देखो पर्यन्त ।
प्रयत–(सं० वि०) पवित्र, नम्र, दीन, दिया हुआ ।
प्रयत्न–(सं० पुं०) चेष्टा, प्रयास ।
प्रयागवाल–(हिं० पुं०) प्रयाग तीर्थ का पंडा ।
प्रयाण–(सं० पुं०) गमन, चढ़ाई, आरम्भ ।
प्रयात–(सं०वि०) गया हुआ, मरा हुआ, सोया हुआ ।
प्रयास–(सं० पुं०) प्रयत्न, उद्योग, श्रम ।
प्रयुक्त–(सं० वि०) प्रेरित, लगाया हुआ ।
प्रयुक्ति–(सं० स्त्री०) प्रयोजन, प्रयोग ।
प्रयुत–(सं० पुं०) दस लाख की संख्या ।
प्रयोक्ता–(सं० पुं०) प्रयोग या व्यवहार करनेवाला, सूत्रधार ।
प्रयोग–(सं० पुं०) अनुष्ठान, साधन ।
प्रयोगी–(सं० वि०) प्रयोग करनेवाला ।
प्रयोजक–(सं०वि०) प्रबन्ध करनेवाला ।
प्रयोजन–(सं० पुं०) हेतु, कार्य कारण, व्यवहार, उपयोग ।
प्रयोजनीय–(सं० वि०) उपयोग का ।
प्ररोचन–(सं० पुं०) रुचि दिलाना, उत्तेजित करना, मोहित करना ।
प्ररोचना–(सं० स्त्री०) उत्तेजना, बढ़ावा ।
प्ररोह–(सं० पुं०) अंकुर, अँखुआ ।
प्ररोहण–(सं० पुं०) उत्पत्ति, आरोह, चढ़ाव ।
प्रलपित–(सं० वि०) कथित, कहा हुआ ।
प्रलम्बित–(सं० वि०) नीचे तक लटका हुआ । **प्रलम्बी**–(सं०वि०) सहारा लेनेवाला ।
प्रलम्भन–(सं० पुं०) छल, धोखा ।
प्रलय–(सं० पुं०) संसार के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना ।
प्रलाप–(सं० पुं०) व्यर्थ की बकवाद ।
प्रलापन–(सं० पुं०) बकवाद, बकबक ।
प्रलापी–(सं० वि०) अंड-बंड बकनेवाला ।
प्रलेप–(सं०पुं०) शरीर पर किसी औषधि का लेप चढ़ाना ।
प्रलोभ–(सं० पुं०) अति लोभ, लालच ।
प्रलोभक–(सं० वि०) ललचानेवाला ।
प्रलोभन–(सं० पुं०) लालच ।
प्रलोभी–(सं० वि०) लोभ में फँसानेवाला । **प्रलोभित**–(सं०वि०) ललचाया हुआ ।
प्रवंचना (हिं० स्त्री०) धूर्तता, छल, कपट ।
प्रवक्ता–(सं० वि०) उपदेश देनेवाला ।
प्रवचन–(सं० पुं०) किसी वाक्य की व्याख्या । **प्रवचनीय**–(सं० वि०) समझाकर कहने योग्य ।
प्रवदन–(सं० पुं०) घोषणा ।
प्रवर–(सं०पुं०) गोत्र, सन्तति; (वि०) श्रेष्ठ, मुख्य । **प्रवर्तक**–(सं० वि०) किसी काम को चलानेवाला, आविष्कार करनेवाला, उसकानेवाला ।
प्रवर्तन–(सं०पुं०) ठानना, प्रचार करना ।
प्रवर्तित–(सं०वि०) चलाया हुआ, आरंभ किया हुआ ।
प्रवर्धक–(सं० वि०) वृद्धि करनेवाला ।
प्रवर्ष–(सं० पुं०) अति वृष्टि ।
प्रवर्षण–(सं० पुं०) अति वृष्टि ।
प्रवहन–(सं० पुं०) यान, सवारी, पोत, नाव ।
प्रवाचक–(सं० वि०) अच्छा बोलनेवाला ।
प्रवाद–(सं० पुं०) जनरव, जनश्रुति ।
प्रवादक–(सं० पुं०) बाजा बजानेवाला ।
प्रवादन–(सं० पुं०) घोषणा ।
प्रवाल–(सं० पुं०) विद्रुम, मूँगा ।
प्रवास–(सं० पुं०) अपना घर या देश त्याग कर दूसरे देश में निवास करना ।
प्रवासन–(सं० पुं०) देश या नगर से

बाहर निकालना । **प्रवासित**–(सं० वि०) देश से निकाला हुआ । **प्रवासी**-(सं० वि०) परदेश में रहनेवाला, परदेसी ।

प्रवाह–(सं० पुं०) जल का स्रोत, विस्तार; **प्रवाहक**–(सं० वि०) अच्छी तरह ले जानेवाला ।

प्रवाहिका–(सं० स्त्री०) ग्रहणी रोग ।

प्रवाही–(सं० वि०) बहने या बहाने-वाला, तरल, द्रव ।

प्रविष्ट–(सं० वि०) पैठा हुआ, घुसा हुआ ।

प्रविसना–(हिं० क्रि०) प्रवेश करना, घुसना ।

प्रवीण–(सं० पुं०) निपुण, शिक्षित, कुशल, चतुर । **प्रवीणता**–(सं० स्त्री०) चतुराई ।

प्रवीर–(सं० पुं०) बड़ा योद्धा ।

प्रवृत्त–(सं० वि०) नियुक्त, लीन ।

प्रवृत्ति–(सं० स्त्री०) चित्त का किसी ओर झुकाव, उत्पत्ति ।

प्रवेश–(सं० पुं०) गति, पहुँच ।

प्रवेशनीय–(सं० वि०) घुसने योग्य ।

प्रवेशिका–(सं० स्त्री०) वह पत्र, चिह्न आदि जिसको दिखलाकर कोई कहीं प्रवेश पा सकता है ।

प्रबोध–(सं० पुं०) ज्ञान, समझ ।

प्रव्रजन–(सं० पुं०) संन्यास ।

प्रशंसक–(सं० वि०) प्रशंसाकारी ।

प्रशंसन–(सं० पुं०) गुणकीर्तन ।

प्रशंसना–(हिं० क्रि०) प्रशंसा या स्तुति करना । **प्रशंसनीय**–(सं० वि०) स्तुति के योग्य । **प्रशंसा**–(सं० स्त्री०) स्तुति ।

प्रशंसित–(सं० वि०) प्रशंसायुक्त ।

प्रशमन–(सं० पुं०) शान्ति ।

प्रशस्त–(सं० वि०) अति श्रेष्ठ, उत्तम; (पुं०) क्षेम, कुशल ।

प्रशस्ति–(सं० स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति, सिरनामा, राजा के वे आज्ञापत्र जो प्राचीन समय में पत्थरों, चट्टानों या ताम्रपत्रों पर खोदे जाते थे, प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के आदि और अन्त की कुछ पंक्तियाँ जिनमें पुस्तक के कर्त्ता, विषय काल आदि का कुछ पता चलता है ।

प्रशाखा–(सं० स्त्री०) शाखा में से निकली हुई शाखा ।

प्रशान्त–(सं० वि०) स्थिर, शान्त, निश्चल वृत्ति का ।

प्रशिष्य–(सं० पुं०) शिष्य का शिष्य ।

प्रश्न–(सं० पुं०) जिज्ञासा, पूछने की बात ।

प्रश्नबूती–(सं० पुं०) बुझौवल ।

प्रश्नोत्तर–(सं० पुं०) प्रश्न का उत्तर ।

प्रश्रय–(सं० पुं०) विनय, सहारा, टक । **प्रश्रयण**–(सं० पुं०) विनय, शिष्टाचार । **प्रश्रयी**–(सं० वि०) शान्त, नम्र, विनीत ।

प्रश्वास–(सं० पुं०) साँस लेते समय वह वायु जो नाक से बाहर निकलती है ।

प्रष्टा–(सं० पुं०) प्रश्नकर्ता, पूछनवाला ।

प्रसक्त–(सं० वि०) संबद्ध, आसक्त, संश्लिष्ट ।

प्रसङ्ग–(सं० पुं०) घनिष्ठ संबंध, मेल ।

प्रसङ्गी–(सं० पुं०) भारी-सङ्गी ।

प्रसस्ति–(सं० स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति ।

प्रसन्न–(सं० वि०) सन्तुष्ट, अनुकूल ।

प्रसन्नता–(सं० स्त्री०) हर्ष, आनन्द ।

प्रसन्नमुख–(सं० वि०) जिसकी आकृति से प्रसन्नता टपकती हो । **प्रसन्नात्मा**–(सं० वि०) जो सदा प्रसन्न रहे; (पुं०) विष्णु ।

प्रसर–(सं० पुं०) विस्तार, फैलाव ।

प्रसरित–(सं० वि०) विस्तृत, फैला हुआ ।

प्रसर्पण–(सं० पुं०) फैलाव।
प्रसव–(सं० पुं०) बच्चा जनने की क्रिया, प्रसूति, जन्म, उत्पत्ति। **प्रसवना**–(हिं० क्रि०) उत्पन्न होना।
प्रसविनी–(सं० स्त्री०) जन्म देनेवाली, माता।
प्रसाद–(सं० पुं०) प्रसन्नता, स्वच्छता, कृपा, अनुग्रह, वह पदार्थ जिसको देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें।
प्रसादना–(सं० स्त्री०) परिचर्या, सेवा।
प्रसादनीय–(सं०वि०) प्रसन्न करने योग्य।
प्रसादी–(हिं० स्त्री०) नैवेद्य, देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ।
साधक–(सं० वि०) सम्पादन करनेवाला। **प्रसाधन**–(सं० पुं०) अलंकार, शृंगार।
प्रसार–(सं० पुं०) विस्तार, फैलाव।
प्रसारण–(सं० पुं०) फलाव, बढ़ाना।
प्रसारना–(हिं० क्रि०) फैलाना।
प्रसारित–(सं० वि०) विस्तारित, फैलाया हुआ। **प्रसारी**–(सं० वि०) फैलानेवाला।
प्रसिद्ध–(सं० वि०) विख्यात, विभूषित। **प्रसिद्धि**–(सं० स्त्री०) ख्याति, सिंगार।
प्रसुप्त–(सं० वि०) निद्रित, सोया हुआ।
प्रसुप्ति–(सं० स्त्री०) गहरी नींद।
प्रसूत–(सं० वि०) संजात, उत्पन्न।
प्रसूता–(सं० स्त्री०) बच्चा जननेवाली स्त्री। **प्रसूति**–(सं० स्त्री०) प्रसव, जनन। **प्रसूतिका**–(सं० स्त्री०) प्रसूता।
प्रसून–(सं० पुं०) पुष्प, फूल।
प्रसृत–(सं० वि०) बढ़ा हुआ, फैला हुआ।
प्रसृति–(सं० स्त्री०) विस्तार, फैलाव, सन्तति।
प्रसेक–(सं० पुं०) सेंकना।
प्रसेद–(हिं० पुं०) पसीना।
प्रस्तर–(सं० पुं०) शिला, पत्थर, मणि, बिछावन।
प्रस्तार–(सं० पुं०) विस्तार, फलाव, परत, सीढ़ी, समतल भूमि।
प्रस्ताव–(सं० पुं०) प्रकरण, छिड़ी हुई बात, चर्चा, सभा के सामने उपस्थित की हुई बात, भूमिका।
प्रस्तावक–(सं० पुं०) प्रस्ताव करनेवाला।
प्रस्तावना–(सं० स्त्री०) आरंभ, कथोद्घात।
प्रस्तुत–(सं० वि०) उपयुक्त, योग्य, प्राप्त, उद्यत, तैयार।
प्रस्तुति–(सं० स्त्री०) प्रस्तावना, प्रशंसा।
प्रस्थान–(सं० पुं०) गमन। **प्रस्थानी**–(हिं० वि०) प्रस्थान करनेवाला, जानेवाला। **प्रस्थायी**–(सं० वि०) प्रेषित, भेजा हुआ, जो भविष्य में यात्रा करनेवाला हो।
प्रस्थित–(सं० वि०) स्थिर, ठहरा हुआ, दृढ़। **प्रस्थिति**–(सं० स्त्री०) प्रस्थान, यात्रा।
प्रस्नुषा–(सं०स्त्री०) प्रुतोह, पुत्र की स्त्री।
प्रस्फुट–(सं० वि०) प्रकट, खिला हुआ।
प्रस्फोटन–(सं० पुं०) सूप, किसी पदार्थ का एकाएक फूटना या खुलना, जिसमें भीतर का पदार्थ वेग से बाहर निकल आवे।
प्रस्रव–(सं० पुं०) झरना, बहना।
प्रस्रवण–(सं० पुं०) स्वेद, पसीना सोता, झरना। **प्रस्राव**–(सं० पुं०) अच्छी तरह से बहना।
प्रस्वेद–(सं० पुं०) घर्म, पसीना।
प्रहत–(सं० वि०) प्रताड़ित, पीटा हुआ; (पुं०) प्रहार।

प्रहन्ता–(सं० वि०) मारनेवाला।
प्रहर–(सं० पुं०) तीन घण्टे का समय।
प्रहरण–(सं० पुं०) फेंकना, हटाना, छीनना। **प्रहरणीय**–(सं० वि०) हरण करने योग्य।
प्रहरी–(सं० पुं०) पहरा देनेवाला, चौकीदार।
प्रहर्ता–(सं०वि०) प्रहार करनेवाला, योद्धा।
प्रहर्ष–(सं० पुं०) हर्ष, अत्यन्त आनन्द।
प्रहसन–(सं० पुं०) अट्टहास, परिहास, व्यंगोक्ति, चुहल, खिल्ली।
प्रहार–(सं० वि०) आघात, चोट, युद्ध।
प्रहारक–(सं० पुं०) मारनेवाला।
प्रहारना–(हिं० क्रि०) आघात पहुँचाना, मारना।
प्रहारी–(सं० वि०) मारनेवाला।
प्रहास–(सं० पुं०) वेग की हँसी, ठहाका। प्रहासिक, **प्रहासी**–(सं० पुं०) लोगों को हँसानेवाला।
प्रहृत–(सं० वि०) फेंका हुआ।
प्रहृष्ट–(सं० वि०) अत्यन्त प्रसिद्ध।
प्रहेलिका–(सं० स्त्री०) कूटार्थ, पहेली।
प्रह्लादक–(सं० वि०) आनन्दकर।
प्रह्लादन–(सं० पुं०) प्रसन्न करना।
प्रांशु–(सं० वि०) उच्च, उन्नत। **प्रांशुता**–उच्चता।
प्राकार–(सं० पुं०) प्राचीर, चहारदीवारी
प्राकृत–(सं० वि०) स्वाभाविक, लौकिक, संसारी, साधारण; (स्त्री०) बोलचाल की वह भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रान्त में हो, एक प्राचीन भाषा जिसका प्रचार प्राचीन समय में भारतवर्ष में था।
प्राकृतिक–(सं० वि०) प्रकृति संबंधी, स्वाभाविक, साधारण, सांसारिक, लौकिक।
प्रागल्भ्य–(सं० पुं०) निर्भयता, साहस, वीरता, प्रबलता।
प्रागुत्तरा–(सं० स्त्री०) पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा।
प्राग्गामी–(सं०वि०) अग्रगामी, पूर्वगामी।
प्राग्जन्म–(सं० पुं०) पूर्व जन्म।
प्राची–(सं० स्त्री०) पूर्व दिशा, पूरब।
प्राचीन–(सं०वि०) पहिले का, पुराना।
प्राचीनता–(सं० स्त्री०) पुरानापन।
प्राचीर–(सं० पुं०) परकोटा।
प्राचुर्य–(सं० पुं०) प्रचुरता, बहुतायत।
प्राच्य–(सं० पुं०) पूर्व देश या पूर्वदिशा में उत्पन्न; (वि०) पूर्वी, पूर्व काल का, पुराना।
प्राज्ञ–(वि०) बुद्धिमान, चतुर, पण्डित।
प्राण–(सं० पुं०) वायु, श्वास, शक्ति, परम प्रिय व्यक्ति।
प्राण आधार–(हि० पुं०) स्वामी, पति, अति प्रिय व्यक्ति।
प्राणकर–(सं० वि०) शक्तिवर्धन।
प्राणकष्ट–(सं० पुं०) बहुत बड़ा कष्ट या दुःख। **प्राणघात**–(सं० पुं०) हत्या, वध। **प्राणघ्न**–(सं० वि०) प्राण लेनवाला। **प्राणजीवन**–(सं० पुं०) परम प्रिय व्यक्ति। **प्राणत्याग**–(सं० पुं०) प्राण का परित्याग करना।
प्राणदाता–(सं० वि०) जीवन देनेवाला। **प्राणदान**–(सं० पुं०) जीवनदान। **प्राणद्रोह**–(सं०पुं०) प्राणहत्या।
प्राणधन–(सं० वि०) अत्यन्त प्रिय।
प्राणधार–(सं०वि०) जीवित, प्राणवाला।
प्राणधारण–(सं० पुं०) जीव धारण।
प्राणधारी–(सं० वि०) प्राणयुक्त, जीवित, चेतन।
प्राणनाथ–(सं० पुं०) पति, स्वामी, प्रिय।
प्राणनाश–(सं० पुं०) प्राणत्याग।

प्राणनाशक–(सं० वि०) मार डालनेवाला।
प्राणनिग्रह–(सं० पुं०) प्राणायाम की क्रिया।
प्राणपति–(सं० पुं०) आत्मा, स्वामी, पति, प्रिय व्यक्ति।
प्राणप्यारा–(हिं० पुं०) अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी।
प्राणप्रतिष्ठा–(सं० स्त्री०) किसी नई बनी हुई मूर्ति को मन्दिर में स्थापित करते समय मंत्रों को पढ़कर उसमें प्राण आरोपण करना।
प्राणप्रद–(सं० वि०) शरीर का स्वास्थ्य तथा बल आदि बढ़ानेवाला। प्राणप्रिय–(सं०वि०)प्राण के समान प्यारा, प्रियतम।
प्राणभृत–(सं०वि०) प्राण धारण करनेवाला।
प्राणरोध–(सं० पुं०) प्राणायाम। प्राणवध–(सं० पुं०) जान से मार डालना। प्राणवल्लभ–(सं० पुं०) अत्यन्त प्रिय। प्राणवायु–(सं० स्त्री०) प्राण, जीव। प्राणसंयम–(सं० पुं०) प्राणायाम। प्राणसंशय, प्राणसंकट, प्राणसन्देह–(सं० पुं०) जीवन की आशंका। प्राणसम–(सं० पुं०) प्राणों के समान। प्राणहारी–(हिं०वि०)प्राण लेनेवाला। प्राणाधार–(सं०पुं०) पति। प्राणाधिक–(सं०वि०)प्राणों से अधिक प्रिय, प्यारा।
प्राणाधिनाथ–(सं० पुं०) पति, स्वामी।
प्राणान्त–(सं० पुं०) प्राणनाश, मरण।
प्राणायाम–(सं० पुं०) योग जिसमें श्वास और प्रश्वास को यथाविधि अपने अधिकार में किया जाता है।
प्राणायामी–(सं० वि०)प्राणायाम करनेवाला।
प्राणिद्यूत–(सं० पुं०) मेढ़ा, तीतर, घोड़े आदि जीवों की लड़ाई या दौड़ का जूआ।
प्राणी–(हिं० पुं०) जीव, जन्तु, मनुष्य, व्यक्ति, पुरुष या स्त्री; (वि०) जिसमें प्राण हो।
प्राणेश, प्राणेश्वर–(सं० पुं०)पति, स्वामी, प्रिय व्यक्ति, बहुत प्यारा।
प्रात–(हिं० अव्य०) सबेरे, तड़के।
प्रातः–(सं० पुं०) प्रभात, तड़का।
प्रातराश–(सं० पुं०) प्रातःकाल का जलपान, कलेवा।
प्रातिपदिक–(सं० पुं०) संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो न धातु हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगाने से हुई हो—इसके अन्तर्गत ऐसे नाम, सर्वनाम, तद्धितान्त, कृदन्त और समासान्त पद हैं जिनमें कारक की विभक्तियाँ न लगाई गई हों।
प्रातिरूप्य–(सं० पुं०) अनुरूपता।
प्राथमिक–(सं० वि०) प्रारंभिक, जो पहले उत्पन्न हुआ हो।
प्राथम्य–(सं० पुं०) प्रथमता, पहलापन।
प्रादुर्भाव–(सं०पुं०)आविर्भाव, उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत–(सं० वि०) प्रकटित, विकसित, उत्पन्न।
प्रादेशिक–(सं० वि०) किसी एक देश का, प्रान्तिक।
प्राधान्य–(सं० पुं०) प्रधानता, श्रेष्ठता।
प्रान–(हिं० पुं०) देखो प्राण।
प्रान्त–(सं० पुं०)अन्त, किनारा, दिशा, प्रदेश। प्रान्तभूमि–(सं० स्त्री०)सोपान, सीढ़ी।
प्रान्तिक–(सं० वि०) प्रान्त संबंधी, प्रांतीय।
प्रांशु–(सं० वि०) ऊँचा।

फड़फड़ाना–(हिं० क्रि०) उत्सुक होना, तड़फड़ाना ।

फतिङ्गा–(सं० स्त्री०) झींगुर, फतिंगा ।

फड़काज, फड़िया–(हिं० पुं०) वह पुरुष जो लोगों को अपने घर पर जुआ खेलाता है ।

फड़ी–(हिं० स्त्री०) ईंटों का ढेर ।

फड़ोलना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को इधर उधर करना ।

फण–(सं०पुं०) साँप का फन, रस्सी का फन्दा ।

फणा–(सं० स्त्री०) सर्प का फन ।

फणि–(सं०पुं०) विष । **फणिक**–(हिं० पुं०) नाग, सर्प ।

फणिमुख–(सं० पुं०) चोर की सेंध लगाने की सबरी । **फणी**–(सं० पुं०) सर्प, साँप ।

फतिगा–(हिं०पुं०)एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा ।

फदकना–(हिं०क्रि०) खदबदाना,फुदकना ।

फदका–(हिं०पुं०)गुड़ का पाग जो बहुत गाढ़ा न हुआ हो ।

फन–(हिं०पुं०) साँप का फैलाया हुआ सिर, फण ।

फनकना–(हिं० क्रि०) सनसनाते हुए हवा में हिलना, फनफनाना । **फनकार**–(हिं० स्त्री०) फनफन होने का शब्द ।

फनगना–(हिं०क्रि०) पौधों में नये नये अंकुर निकलना ।

फनगा–(हिं०पुं०) देखो फतिंगा ।

फनना–(हिं० क्रि०) कार्य का आरंभ होना ।

फनफनाना–(हिं० क्रि०) फनफन शब्द उत्पन्न करना, इधर-उधर हिलना ।

फनस–(हिं० पुं०) कटहल ।

फनिधर, फनिपति–(हिं०पुं०) सर्प, साँप ।

फनिग–(हिं० पुं०) देखो फणीन्द्र ।

फनिद–(हिं० पुं०) देखो फणीन्द्र ।

फनि–(हिं० पुं०) देखो फण, फणी ।

फनिग,फनिप, फनिधर–(हिं०पुं०) सर्प ।

फन्नी–(हिं० स्त्री०) लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली वस्तु को दृढ़ करने के लिये ठोंका जाता है ।

फफदना–(हिं० क्रि०) किसी गीले पदार्थ का बढ़कर फैलना, बढ़ना ।

फफूंदी–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों की साड़ी का बन्धन, नीवी ।

फफोला–(हिं० पुं०) चमड़े पर का पोला उभाड़ जिसके भीतर पानी भर जाता है, छाला ।

फबकना–(हिं० क्रि०) मोटा होना ।

फबती–(हिं०स्त्री०) हँसी की बात जो किसी पर घटती हो, चुटकी, व्यंग ।

फबन–(हिं० स्त्री०) सुन्दरता, शोभा, छवि । **फबना**–(हिं०क्रि०)सुन्दर या भला जान पड़ना । **फबीला**–(हिं० वि०) शोभा देनेवाला ।

फरक–(हिं० स्त्री०) फरकने का भाव या क्रिया ।

फरकन–(हिं० पुं०) फड़कने का भाव या क्रिया । **फरकना**–(हिं० क्रि०) उड़ना, उभड़ना ।

फरकाना–(हिं० क्रि०) हिलाना, फड़फड़ाना ।

फरकीला–(हिं०पुं०)देखो फड़कीला ।

फरचा–(हिं० वि०) जो जूठा न हो, शुद्ध, पवित्र । **फरचाना**–(हिं० क्रि०) शुद्ध करना ।

फरना–(हिं० क्रि०) देखो फलना ।

फरफंद–(हिं०पुं०)चोचला, छल, कपट ।

फरफर–(हिं० पुं०) किसी पदार्थ के उड़ने या फड़फड़ाने से उत्पन्न शब्द ।

फरफराना–(हिं० क्रि०) देखो फड़फड़ाना।
फरफुंदा–(हिं० पुं०) देखो फतिंगा।
फरराना–(हिं० क्रि०) देखो फहराना।
फरवी–(हिं० पुं०) एक प्रकार का भूना हुआ चावल, मुरमुरा।
फरस–(हिं० पुं०) समतल भूमि।
फरसा–(हिं०पुं०) चौड़ी धार की कुल्हाड़ी।
फरहर–(हिं० वि०) शुद्ध, निर्मल, प्रसन्न।
फरहरना–(हिं० क्रि०) फरकना, फहराना।
फरहरा–(हिं० पुं०) झंडा, पताका; (वि०) स्पष्ट, शुद्ध, निर्मल, खिला हुआ।
फरहरी–(हिं० स्त्री०) फल।
फराक–(हिं० पुं०) मैदान; (वि०) लंबा-चौड़ा।
फराल–(हिं० स्त्री०) विस्तार, फैलाव।
फरियाना–(हिं० क्रि०) छाँटकर अलग करना, पक्ष निर्णय करना, स्पष्ट देख पड़ना।
फरुहरी–(हिं० स्त्री०) देखो फुरहरी।
फरुहा–(हिं० पुं०) देखो फावड़ा।
फरुही–(हिं० स्त्री०) छोटा फावड़ा, एक प्रकार का भूना हुआ चावल जो भीतर से पोला हो जाता है, लाई।
फरेंदा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की बड़ी गूदेदार मीठी जामुन।
फरेरी–(हिं० पुं०) जंगली मेवा।
फर्राटा–(हिं० पुं०) वेग, देखो खर्राटा।
फल–(सं० पुं०) लाभ, वनस्पति में होनेवाला गूदे से परिपूर्ण वह बीजकोष जो फूलों में से विशिष्ट ऋतु में उत्पन्न होता है, गणित की किसी क्रिया का परिणाम, उद्देश्य की सिद्धि, त्रैराशिक की तीसरी राशि, सूद, क्षेत्रफल, प्रयोजन, गुण, प्रभाव, कर्मों का परिणाम, बाण, भाले आदि का नुकीला भाग।
फलक–(सं० पुं०) लकड़ी आदि का पटरा, चौकी, हथेली।
फलकना–(हिं० क्रि०) छलकना, फरकना।
फलकर–(हिं० पुं०) वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाता है।
फलग्राही–(सं० वि०) फल लेनेवाला।
फलतः–(सं० अव्य०) फलस्वरूप, इसलिये।
फलद–(सं० वि०) फल देनेवाला।
फलदार–(हिं०वि०) जिसमें फल लगे हों।
फलना–(हिं० क्रि०) फल से युक्त होना फल लगना।
फलप्रद–(सं० वि०) फल देनेवाला।
फलभागी–(हिं० पुं०) फल का भोग करनेवाला।
फलहरी–(हिं० स्त्री०) वन के वृक्षों के फल, मेवा। फलहार– (हिं० पुं०) देखो फलाहार।
फलहारी–(हिं० वि०) जिस खाद्य पदार्थ के बनाने में केवल फलों का उपयोग किया गया हो।
फलाँग–(हिं० स्त्री०) एक स्थान से उछल कर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या उसका भाँव। फलाँगना–(हिं० क्रि०) कूदना, फाँदना।
फलांश–(हिं० पुं०) तात्पर्य, सारांश।
फलागम–(सं०पुं०) फल आने का काल।
फलादेश–(सं० पुं०) किसी बात का फल या परिणाम बतलाना, फल कहना।
फलाना–(हिं० क्रि०) फलने में प्रवृत्त करना। फलान्त–(सं० पुं०) फल का अन्त या शेष।
फलाफल–(सं० पुं०) अच्छा और बुरा फल। फलाराम–(सं० पुं०) फल का बागीचा। फलार्थी–(सं० वि०) फल की कामना करनेवाला।

फोली–(हिं० स्त्री०) घुटने के नीचे एड़ी तक का भाग।
फुकना–(हिं० क्रि०) भस्म होना, जलना, नष्ट होना।
फुकनी–(हिं० स्त्री०) बांस, पीतल आदि की नली जिसमें मुँह की हवा भरकर आग को दहकाने के लिये उस पर छोड़ते हैं, भाथी।
फुंकरना–(हिं० क्रि०) मुंह से हवा छोड़ना। फुंकवाना–(हिं० क्रि०) भस्म करवाना, जलवाना। फुंकाना–(हिं० क्रि०) फूंकने का काम कराना।
फुंकार–(हिं० पुं०) फुत्कार।
फुंदना–(हिं० पुं०) झालर, झब्बा।
फुंदिया–(हिं० स्त्री०) फुंदना।
फुंदी–(हिं० स्त्री०) बिंदी, गाँठ, टीका।
फुंसी–(हिं० स्त्री०) छोटी फुड़िया।
फुआरा–(हिं० पुं०) देखो फुहारा।
फुचड़ा–(हिं० पुं०) वह सूत या रेशा जो कपड़े, चटाई आदि बुनी हुई वस्तु के बाहर निकला रहता है।
फुट–(हिं० वि०) अयुग्म, जिसका परस्पर संबंध अलग हो।
फुटकर, फुटकल–(हिं० वि०) विषम, अकेला, थोड़ा थोड़ा, कई प्रकार का।
फुटका–(हिं० पुं०) फफोला।
फुटकी–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु के छोट लच्छे या कण जो अलग-अलग देख पड़ते हैं।
फुटेहरा–(हिं० पुं०) मटर या चने का भूना हुआ दाना जिसका छिलका फटकर अलग हो गया हो।
फुटैल–(हिं० वि०) देखो फुट्टैल।
फुट्टैल–(हिं० वि०) झुंड या समूह से अलग रहनेवाला, अभागा।
फुत्कार–(सं० पुं०) फूंक, मुंह से हवा छोड़ने का शब्द।
फुदकना–(हिं० क्रि०) उछल उछल कर कूदना, उमंग में आना।
फुनंग–(हिं० स्त्री०) वृक्ष की शाखा या अगला भाग, अंकुर।
फुन–(हिं० अव्य०) पुनः, फिर से।
फुनगी–(हिं० स्त्री०) वृक्ष या वृक्ष की शाखाओं का अग्र भाग।
फुनना–(हिं० पुं०) देखो फुंदना।
फुनफुनी–(हिं० अव्य०) बारंबार।
फुप्फुस–(सं० पुं०) फेफड़ा।
फुफुँदी–(हिं० स्त्री०) वह डोरी जो लहँगे या स्त्रियों की साड़ी में कसी जाती है, नीवी।
फुफकाना–(हिं० पुं०) देखो फुफकारना।
फुफकार–(हिं० पुं०) फूत्कार।
फुफेरा–(हिं० वि०) फफा संबंधी।
फुर–(हिं० स्त्री०) पक्षी का पर फड़फड़ाने का शब्द; (वि०) सत्य, सच्चा।
फुरकाना–(हिं० क्रि०) देखो फड़काना।
फुरती–(हिं० स्त्री०) शीघ्रता; फुरतीला–(हिं० वि०) जो मन्द न हो।
फुरना–(हिं० क्रि०) सच्चा ठहरना, पूरा उतरना, प्रकाशित होना, चमक उठना, मुख से शब्द निकालना, फड़कना।
फुरफुर–(हिं० स्त्री०) उड़ने में पर की फड़फड़ाहट से उत्पन्न शब्द। फुरफुराना–(हिं० क्रि०) उड़कर पैरों से शब्द निकालना, कान में रूई की फुरेरी फिराना। फुरफुराहट–(हिं० स्त्री०) पंख फड़फड़ाने का भाव।
फरमान–(हिं० पुं०) राजा की आज्ञा।
फुरहरना–(हिं० क्रि०) स्फुरित होना।
फुरहरी–(हिं० स्त्री०) फरफराहट, कँपकँपी, रोमाञ्च।
फुराना–(हिं० स्त्री०) प्रमाणित करना।

फुरेरी–(हिं० स्त्री०) रोमाञ्चयुक्त कँपकँपी, रूई लपेटी हुई सींक जो तेल; इत्र आदि में डुबोकर काम में लाई जाती है।

फुर्ती–(हिं० स्त्री०) देखो फुरती।

फुलका–(हिं० पुं०) पतली हलकी रोटी, चपाती।

फुलझड़ी, फुलझरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जिसमें से फूलों के समान चिनगारियाँ निकलती हैं, विवाद या कलह उत्पन्न करनेवाली बात।

फुलवर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का कपड़ा जिस पर रेशम के बेल बूटे कढ़े होते हैं।

फुलवाई–(हिं० स्त्री०) देखो फुलवारी।

फुलवार–(हिं० पुं०) प्रसन्न।

फुलवारी–(हिं० स्त्री०) उद्यान, बगीचा।

फुलहारा–(हिं० पुं०) माली।

फुलाई–(हिं० स्त्री०) फूलन का भाव।

फुलाना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु के फैलाव को वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बाहर की ओर बढ़ाना, गर्वित करना।

फुलाव–(हिं० पुं०) फूलने का भाव या अवस्था। **फुलावट**–(हिं० स्त्री०) उभाड़ या सूजन।

फुलिंग–(हिं० पुं०) स्फुलिंग, चिनगारी।

फुलिया–(हिं० स्त्री०) कील या काँटा जिसका माथा फैला हुआ हो।

फुलेरा–(हिं० पुं०) फूल की बनी हुई छतरी जो देवताओं की मूर्ति के ऊपर लगाई जाती है।

फुलेल–(हिं० पुं०) सुगन्धयुक्त तेल। **फुलेली**–(हिं० स्त्री०) फुलेल रखने का काँच का पात्र।

फुलेहरा–(हिं० पुं०) बन्दनवार।

फुलौरा–(हिं० पुं०) बड़ी फुलौरी, पकौड़ा।

फुलौरी–(हिं० स्त्री०) बेसन की पकौड़ी।

फुल्ली–(हिं० स्त्री०) फुलिया, फूल के आकार का कोई आभूषण।

फुस–(हिं० स्त्री०) अति मन्द स्वर।

फुसकारना–(हिं० क्रि०) फूंक मारना।

फुसड़ा–(हिं० पुं०) देखो फुचड़ा।

फुसफुसा–(हिं० वि०) नरम, ढीला; **फुसफुसाना**–(हिं० क्रि०) अति मन्द स्वर से बोलना।

फुसलाना–(हिं० क्रि०) भुलावा देकर शान्त और चुप कराना, बहलाना।

फुहार–(हिं० पुं०) पानी का छींटा, झींसी।

फुहारा–(हिं० पुं०) जल की वह टोंटी जिसमें से महीन धार या छींट वेग से ऊपर की ओर उठते और नीचे गिरते हैं, जल का महीन छींटा।

फुही–(हिं० स्त्री०) महीन महीन बूंदों को झड़ी।

फूंक–(हिं० स्त्री०) साँस, मुंह की हवा। **फूंकना**–(हिं० क्रि०) ओठों को चारों ओर से सिकोड़कर वेग से हवा फेंकना, धातुओं को रसायन की रीति से भस्म करना, फूंककर प्रज्वलित करना या जलाना, कष्ट देना, व्यर्थ व्यय करना।

फूंका–(हिं० पुं०) भाथी या नली से आग पर फूंक मारने की क्रिया, फफोला बाँस की नली में जलन उत्पन्न करनेवाली औषधियों को भरकर गाय के थन में लगाकर फूंकना जिसमें उसका सब दूध बाहर निकल जावे।

फूंद, फूंदा–(हिं० स्त्री०) फुंदना, झब्बा।

फूट–(हिं० स्त्री०) विरोध, वर, बिगाड़, एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर फूट जाती है।

फूटन–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो फटकर अलग हो गया हो, शरीर के जोड़ों की पीड़ा।

फूटना–(हिं० क्रि०) खण्ड होना, नष्ट होना, बिगड़ना, शरीर पर दान के रूप में प्रकट होना, अंखुआ फूटना, व्याप्त होना, फैलना, कली का खिलना, शब्द का मुख से निकलना, शरीर के जोड़ों में पीड़ा होना, भद खुलना।

फूटा–(हिं० वि०) भग्न, टूटा हुआ।

फूत्कार–(सं० पुं०) मुख से हवा छोड़ने का शब्द।

फूफा–(हिं० पुं०) पिता की बहिन का पति; फूफी–(हिं० स्त्री०) पिता की बहिन, बुआ।

फूल–(हिं० पुं०) पुष्प, कुसुम, शरीर पर का सफेद चिह्न, स्त्रियों के पहिनने का एक प्रकार का गहना, दीपक का गुल, चिनगारी, ताँबे और राँगे के मेल से बनी हुई एक मिश्र धातु। **फूलगोभी**–(हिं० स्त्री०) गोभी की एक जाति जिसमें मंजरियों का बँधा हुआ ठोस पिण्ड होता है। **फूलडोल**–(हिं० पुं०) चैत्र शुक्ल एकादशी के दिन होनवाला एक उत्सव। **फूलदान**–(हिं० पुं०) गिलास के आकार का फूलों को रखने का पात्र। **फूलदार**–(हिं०वि०) जिस पर बेलबूटे या फूल-पत्ते काढ़कर बनाये गये हों।

फूलना–(हिं०क्रि०) फूलों से युक्त होना, किसी तल का उठा होना, विकसित होना, खिलना, घमंड करना, मोटा होना, रूठना, प्रफुल्ल होना, आनन्दित होना।

फूली–(हिं० स्त्री०) सफेद चिह्न जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है।

फूस–(हिं०पुं०) छप्पर आदि छाजने की सूखी हुई लम्बी घास, तृण, तिनका, खर।

फूहड़, फूहर–(हिं०वि०) कुरूप और भद्दा

फूहा–(हिं० पुं०) रूई का गोला।

फूही–(हिं० स्त्री०) पानी की महीन बूंद।

फेंक–(हिं० स्त्री०) फेंकने की क्रिया या भाव। **फेंकना**–(हिं० क्रि०) एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर डालना, अपव्यय करना, उछालना, छोड़ना।

फेंट–(हिं० स्त्री०) कमर में बाँधा हुआ कपड़ा, फेंटा, लपेटा।

फेंटा–(हिं० पुं०) कमर का घेरा, पटुका, सिर पर लपेटने की छोटी पगड़ी।

फेकरना–(हिं० क्रि०) आच्छादन-रहित होना, नंगा होना।

फेकारना–(हिं० क्रि०) खोलना या नंगा करना।

फेन–(सं० पुं०) जल के ऊपर उठा हुआ बुलबुला।

फेनल–(हिं० वि०) फेनयुक्त।

फेनिका–(सं०स्त्री०) फेनीनामकीमिठाई।

फेनिल–(सं० वि०) फेनयुक्त।

फेनी–(हिं० स्त्री०) लपेटे हुए सूत के लच्छे के आकार की मिठाई।

फेफड़ा–(हिं० पुं०) शरीर के भीतर छाती की हड्डियों के नीचे का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं, फुप्फुस।

फेफड़ी–(हिं० स्त्री०) पपड़ी।

फेर–(हिं० पुं०) घुमाव, चक्कर, मोड़, उलझन, संशय, घाटा, प्रभाव, युक्ति, अन्तर, धोखा, ढंग, दिशा, ओर; (हिं० अव्य०) पुनः, एक बार फिर।

फेरना–(हिं० क्रि०) पलटना, बदलना, बारंबार दोहराना, लौटाना, ऐंठना, मरोड़ना, पीछे चलाना, पोतना, तह चढ़ाना।

फेरपलटा–(हिं०पुं०) द्विरागमन, गौना।

फेरफार–(हिं० पुं०) परिवर्तन, उलटफेर।

फेरवट–(हिं० स्त्री०) फेरने का भाव, पेंच, अन्तर, घुमाव, फिराव।
फेरवा–(हिं० पुं०) तार को दो-तीन बार लपेटकर बनाया हुआ छल्ला।
फेरा–(हिं०पुं०) परिक्रमण, टक्कर,लपेट, फेर, बारंबार, आना-जाना,घेरा,मण्डल।
फेराफेरी–(हिं० पुं०) हेराफेरी, इधर का उधर।
फेरि–(हिं० अव्य०) पुनः, फिर से।
फेरी–(हिं० स्त्री०) परिक्रमा, प्रदक्षिणा।
फेरीवाला–(हिं० पुं०) घूम घूम कर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।
फैल–(हिं० स्त्री०) विस्तृत, लंबाचौड़ा।
फैलना–(हिं० क्रि०) लगातार स्थान घेरना, बहुतायत से मिलना, प्रसिद्ध होना, मोटाना, बिखरना, अधिक खुलना, व्यापक होना, बिखरना।
फैलाना–(हिं० क्रि०) इधर-उधर देर तक पहुँचाना, छेद या गड्ढे को बड़ा करना, हिसाब-किताब करना, बढ़ाना, गुणा भाग की क्रिया को ठीक होने की परीक्षा करना, पसारना, बिखेरना, व्यापक करना, प्रसिद्ध करना।
फैलाव–(हिं० पुं०) विस्तार, प्रचार।
फोंक–(हिं० पुं०) वस्त्र की फटन।
फोंकट–(हिं० वि०) निःसार, पोला, व्यर्थ।
फोंकला–(हिं० वि०) छिछला।
फोंका–(हिं० पुं०) लंबा और पोला चोंगा।
फोंफर–(हिं० वि०) खोखला।
फोंफी–(हिं० स्त्री०) छोटी नली।
फोट–(हिं० पुं०) स्फोट, धड़ाका।
फोटा–(हिं० पुं०) बूंद, तिलक, बुन्दा।
फोड़ना–(हिं० क्रि०) खरी वस्तु के टुकड़े टुकड़े करना, भेद खोल देना, भेद-भाव उत्पन्न करना, विदीर्ण करना।
फोड़ा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का शोथ या उभाड़ जो शरीर पर रुधिर के बिगड़ने से उत्पन्न हो जाता है।
फोड़िया–(हिं०स्त्री०) छोटा फोड़ा,फुंसी।
फोया–(हिं० पुं०) रूई का लच्छा।
फोरना–(हिं० क्रि०) देखो फोड़ना।
फोहारा–(हिं० पुं०) देखो फुहारा।
फौआरा–(हिं० पुं०) देखो फुहारा।
फौकना–(हिं० क्रि०) डींग हाँकना।

ब

ब–हिन्दी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन तथा पवर्ग का तीसरा वर्ण; इसका उच्चारण दोनों ओठों को मिलाकर किया जाता है।
ब–(सं० पुं०) वरुण, जल, गन्ध, कुम्भ।
बंक–(हिं० वि०) टेढ़ा, तिरछा, दुर्गम।
बंकट–(हिं० वि०) वक्र, टेढ़ा।
बंका–(हिं० वि०) टेढ़ा, तिरछा।
बंकाई–(हिं० स्त्री०) टेढ़ापन, तिरछापन।
बंकुर–(हिं० पुं०) बंक, टेढ़ा। बंकुरता–(हिं० स्त्री०) वक्रता, टेढ़ापन।
बंगला–(हिं० पुं०) एक खंड का घर जिसके चारों ओर बरामदे होते हैं, घर की ऊपरी छत पर बना हुआ हवादार कमरा,बंगाल देश का पान, बंगाली-भाषा; (वि०) बंगाल संबंधी।
बंगाला–(हिं० पुं०) बंगाल प्रान्त।
बंगालिन–(हिं० स्त्री०) बंगाली की स्त्री। बंगाली–(हिं० पुं०) बंगाल देश का निवासी।
बंचक–(हिं० पुं०) धूर्त, पाखंडी। बंचकता, बंचकताई–(हिं० स्त्री०) धूर्त। बंचन–(हिं० पुं०) छल, धूर्तता।
बंचनता–(हिं० स्त्री०) ठगी, छल।
बंचना–(हिं० स्त्री०) छल, ठगी; (क्रि०) ठगना, धोखा देना।

बंचर–(हिं० पुं०) देखो वनचर।
बंचवाना–(हिं० क्रि०) पढ़वाना।
बंचित–(सं० वि०) देखो वञ्चित।
बंछना–(हिं० क्रि०) इच्छा करना।
बंछनीय,बंछित–(हिं०वि०)देखोवाञ्छित।
बंज–(हिं० पुं०) देखो बनिज।
बंजर–(हिं० पुं०) ऊसर।
बंझा–(हिं० वि०) जिसको संतान न हो, बाँझ।
बँटना–(हिं० क्रि०) विभाग होना।
बँटवाई–(हिं० स्त्री०) बाँटने का शुल्क।
बँटवाना–(हिं० क्रि०) वितरण करवाना, सबको अलग-अलग करके दिलवाना। बँटवारा–(हिं० पुं०) बाँटने की क्रिया, विभाग। बँटवैया–(हिं० वि०) बाँटनेवाला।
बंटा–(हिं० पुं०) चौकोर या गोल छोटा डब्बा। बँटाई–(हिं० स्त्री०) वितरण, बाँटने का काम या शुल्क।
बँटाना–(हिं० क्रि०) अंश ले लेना, भाग करा लेना। बँटावन–(हिं० वि०) बाँटने या भाग करनेवाला।
बंटी–(हिं० स्त्री०) छोटा बेटा।
बँटैया–(हिं० पुं०) बाँटनेवाला।
बंडी–(हिं० स्त्री०)मिरजई, बगलबन्दी।
बंडेरा–(हिं० पुं०) खपरैल की छाजन में मगरे पर रखने की लकड़ी।
बंदगोभी–(हिं० स्त्री०) करमकल्ला, पातगोभी।
बंदन–(हिं० पुं०) देखो बन्दन; (हिं० स्त्री०) रोळी, इंगुर, सिन्दूर।
बंदनता–(हिं० स्त्री०)आदर या बन्दना किये जाने की योग्यता।
बंदनवार–(हिं० पुं०)बन्दन, मालातोरण।
बंदना–(हिं० स्त्री०)देखो वन्दना; (क्रि०) प्रणाम करना।
बंदनी–(हिं० स्त्री०) सिर पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।
बंदर–(हिं० पुं०) कपि, मर्कट। (फा० पुं०) समुद्र के किनारे पर का जहाज ठहरने का स्थान।
बंदवान–(हिं० स्त्री०)बंदीगृह का रक्षक।
बंदसाल–(हिं० पुं०) बंदीगृह।
बंदारू–(हिं० वि०) आदरणीय, पूजनीय।
बंदिया–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के सिर पर पहिनने का एक आभूषण, बंदी।
बंदी–(हिं० पुं०)चारणों की एक जाति; (स्त्री०) एक प्रकार का आभूषण जिसको स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।
बंदीघर–(हिं० पुं०) कारागृह।
बंध–(हिं० पुं०) देखो बन्ध, बन्धन।
बँधना–(हिं० क्रि०) बाँधा जाना, वचनबद्ध होना, फँसना, अटकना, बंदी होना; (पुं०) कोई बाँधने की वस्तु।
बँधवाना–(हिं० क्रि०) बाँधने का काम दूसरे से कराना।
बंधान–(हिं० पुं०) लेन-देन के विषय में निश्चित क्रम या नियम, पानी रोकने का बाँध।
बँधाना–(हिं० क्रि०) बाँधने का काम दूसरे से कराना।
बंधुर–(हिं० पुं०) मुकुट।
बंधेज–(हिं० पुं०) किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति, प्रतिबन्ध, रुकावट।
बंध्या–(हिं० स्त्री०) बाँझ स्त्री। बंध्यापन–(हिं० पुं०) बाँझपन।
बंपुलिस–(हिं० स्त्री०) म्युनिसिपैलिटी आदि का बनाया हुआ सार्वजनिक मलत्याग करने का स्थान।
बंबं–(हिं० स्त्री०) नाद, दुंदुभी, नगाड़ा।
बंबा–(हिं० पुं०) जल का सोता, पानी

बहने का नल।

बंबाना–(हिं० क्रि०) रँभाना।

बंबू–(हिं०पुं०) बाँस की छोटी पतली नली।

बंस–(हिं० पुं०) वंश, परिवार।

बंसकार–(हिं० पुं०) बाँसुरी।

बंसरी–(हिं० स्त्री०) बंसी।

बँसवाड़ी–(हिं० स्त्री०) बाँस का बगीचा।

बंसार–(हिं० पुं०) भण्डारघर।

बंसी–(हिं० स्त्री०) बाँसुरी, मछली फँसाने का एक अस्त्र।

बंसीधर–(हिं० पुं०) वंशीधर, श्रीकृष्ण।

बँहगी–(हिं० स्त्री०) भार ढोने का एक उपकरण जिसमें बाँस के डंडे के दोनों सिरों पर रस्सियों में छींके लटकाये रहते हैं।

बँहोली–(हिं० स्त्री०) कुरते आदि का हाथ का भाग।

बइठना–(हिं० क्रि०) देखो बैठना।

बउर–(हिं० पुं०) देखो बौर।

बउरा–(हिं० वि०) बावला, पागल।

बउराना–(हिं० क्रि०) पगलाना।

बक–(सं० पुं०) बगुला।

बकचा–(हिं० पुं०) देखो बकुचा।

बकझक–(हिं० स्त्री०) बकवाद।

बकठाना–(हिं० क्रि०) किसी बहुत कसैले पदार्थ के खाने से मुख का स्वाद बिगड़ जाना।

बकता, बकतार–(हिं०वि०) देखो वक्ता।

बकध्यान–(हिं० पुं०) पाखंडपूर्ण मुद्रा।

बकध्यानी–(हिं० वि०) वह जो देखने में सीधा परन्तु वस्तुतः कपटी हो।

बकना–(हिं० क्रि०) बड़बड़ाना।

बकबक–(हिं० स्त्री०) प्रलाप, बकवाद।

बकमौन–(हिं० पुं०) अपना उद्देश्य पूर्ण करने के लिय बगुले की तरह सीधा बनकर चुपचाप रहने की क्रिया, भाव; (वि०) चुपचाप अपना काम साधनेवाला।

बकयन्त्र–(सं०पुं०) मुड़ी हुई लंबी गरदन की काँच की गोल पेंदे की शीशी जिसको वैद्य लोग तेल आदि उतारने के काम में लाते हैं।

बकरना–(हिं० क्रि०) आपसे आप बकना, बड़बड़ाना।

बकरा–(हिं० पुं०) फटे हुए खुर का एक प्रसिद्ध छोटी जाति का चौपाया, अज।

बकराना–(हिं० क्रि०) दोष या करतूत कहलाना।

बकला–(हिं० पुं०) पेड़ की छाल, फल के ऊपर का छिलका।

बकवाद–(हिं० स्त्री०) व्यर्थ की वार्ता, बकबक। बकवादी–(हिं० वि०) बकबक करनेवाला। बकवाना–(हिं० क्रि०) किसी से बकवाद कराना। बकवास–(हिं०स्त्री०) बकबक करने का अभ्यास।

बकवृत्ति–(सं० पुं०) कपटचारी मनुष्य।

बकस–(हिं० पुं०) कपड़े, कागज आदि रखने का संदूक, छोटा डब्बा।

बकसीला–(हिं० वि०) जिसके खाने से जीभ ऐंठने लगे और मुख का स्वाद बिगड़ जाय।

बकाना–(हिं० क्रि०) बकबक करने के लिय उद्यत करना।

बकारी–(हिं० स्त्री०) मुख से निकलने-वाला शब्द।

बकुचना–(हिं० क्रि०) संकुचित होना, सिकुड़ना। बकुचाना–(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को गठरी बाँधकर कंधे पर लटकाना या पीठ पर बाँधना।

बकुचा–(हिं० पुं०) छोटी गठरी।

बकुची–(हिं० स्त्री०) छोटी गठरी।

बकुरना–(हिं० क्रि०) देखो बकुरना।

बकुराना–(हि० क्रि०) स्वीकार कराना।
बकुल–(सं० पुं०) मौलसिरी का वृक्ष।
बकुला–(हि० पुं०) देखो बगला।
बकेन, बकेना–(हि० स्त्री०) वह गाय या भैंस जिसको बच्चा दिये प्राय: सालभर हो गया हो और वह दूध देती हो।
बकैयाँ–(हि० पुं०) बच्चों का घुटने के बल चलने का ढङ्ग।
बकोट–(हि० स्त्री०) बकोटने या नोचने की क्रिया या भाव, उतनी मात्रा जो एक बार चंगुल में पकड़ी जा सके।
बकोटना–(हि० क्रि०) नख से नोचना।
बक्कल–(हि०पुं०) वल्कल, छिलका, छाल।
बक्की–(हि० वि०) बकवाद करनेवाला; (पुं०) एक प्रकार का भदहिया धान।
बक्कुर–(हि० पुं०) वचन, बोली।
बखर–(हि० पुं०) देखो बक्खर।
बखरा–(हि० पुं०) भाग हिस्सा, बाँट।
बखरी–(हि० स्त्री०) एक कुटुम्ब के रहने योग्य इंट मिट्टी आदि का बना हुआ गाँव का घर।
बखरैत–(हि०पुं०) हिस्सेदार, साझीदार।
बखान–(हि० पुं०) वर्णन, कथन, गुणकीर्तन, प्रशंसा। **बखानना**–(हि०क्रि०) वर्णन करना, बुरा-भला कहना, प्रशंसा करना।
बखार–(हि० पुं०) भीत या टट्टी आदि से घेरकर बनाया हुआ अन्न रखने का स्थान। **बखारी**–(हि० स्त्री०) छोटा बखार।
बखिया–(फा० पुं०) एक प्रकार की महीन पुष्ट सिलाई। **बखियाना**–(हि० क्रि०) किसी वस्तु पर बखिया की सिलाई करना, बखिया करना।
बखीर–(हि० स्त्री०) मीठे रस में पकाया हुआ चावल, एक प्रकार की खीर।
बखेड़ा–(हि० पुं०) आडम्बर, व्यर्थ का विस्तार, विवाद, झगड़ा, झंझट।
बखेड़िया–(हि० वि०) बखेड़ा करनेवाला, झगड़ालू।
बखेरना–(हि० क्रि०) पदार्थों को इधर-उधर फैलाना या फेंकना।
बखोरना–(हि० क्रि०) टोकना, छेड़ना।
बगदना–(हि० क्रि०) बिगड़ना, नष्ट होना, बहकना, भूलना।
बगदर–(हि० पुं०) मच्छड़।
बगदवाना–(हि० क्रि०) भुलवाना।
बगदाना–(हि० क्रि०) भड़काना, भुलाना
बगना–(हि० क्रि०) घूमना फिरना।
बगर–(हि० पुं०) बड़ा घर, द्वार के सामने का खुला स्थान, आँगन।
बगरना–(हि० क्रि०) बिखेरना, फैलना, छितराना। **बिगराना**–(हि० क्रि०) छितराना, फैलाना, बिखराना।
बगलबंदी–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की मिरजई जिसमें बगल के नीचे बंद लगे रहते हैं।
बगला–(हि० पुं०) सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।
बगलियाना–(हि० क्रि०) अलग करना, बगल में लाना या करना, बगल से होकर जाना।
बगली–(हि० वि०) बगल का, बगल से संबंध रखनेवाला, कपड़े का वह टुकड़ा जो अंगे, कुरते आदि के बगल में लगाया जाता है।
बगलौहाँ–(हि० वि०) बगल की ओर झुका हुआ, तिरछा।
बगा–(हि० पुं०) जामा, बागा; (पुं०) बगला।
बगाना–(हि० क्रि०) घुमाना, फिराना, भगाना।

बगारना–(हिं०क्रि०) पैसाना, फैलाना।
बगिया–(हिं० स्त्री०) छोटा उपवन।
बगीचा–(हिं० पुं०) उपवन।
बगुला–(हिं० पुं०) बक पक्षी।
बगुलाभगत–(हिं० वि०) पाखण्डी मनुष्य।
बगेदना–(हिं० क्रि०) विचलित करना।
बगैचा–(हिं० पुं०) देखो बगीचा।
बग्गी, बग्घी–(हिं० स्त्री०) पालकी के आकार की चौपहिया गाड़ी।
बघम्बर–(हिं० पुं०) बाघ की खाल।
बघनहाँ–(हिं० पुं०) एक प्रकार का शस्त्र जिसमें नख के समान चिपटे टेढ़े काँटे रहते हैं, यह अँगुलियों में पहना जाता है।
बघार–(हिं० पुं०) छौंक, तड़का, बघारने का मसाला। **बघारना**–(हिं०क्रि०) तड़का देना, छौंकना।
बघूरा–(हिं० पुं०) बवंडर।
बघेरा–(हिं० पुं०) लकड़बग्घा।
बचकाना–(हिं० वि०) बच्चों के योग्य, बच्चों के समान, थोड़ी अवस्था का।
बचत–(हिं० स्त्री०) शेष, बचाव, लाभ।
बचन–(हिं० पुं०) वाणी, वचन।
बचना–(हिं० क्रि०) हटना, अलग होना, छूट जाना।
बचपन–(हिं०पुं०) बाल्यावस्था, लड़कपन।
बचवैया–(हिं० वि०) बचानेवाला।
का–(हिं० पुं०) देखो बच्चा, लड़का।
बचाना–(हिं० क्रि०) रक्षा करना, पीछे करना, हटाना, व्यय न होने देना।
बचाव–(हिं० पुं०) बचाने का भाव, रक्षा।
बच्ची–(हिं० स्त्री०) छोटी कन्या, बालिका।
बच्छ–(हिं० पुं०) बच्चा, बेटा, बछड़ा।
बच्छल–(हिं० वि०) देखो वत्सल।
बच्छस–(हिं० पुं०) छाती, सीना।
बच्छा–(हिं० पुं०) किसी पशु का बच्चा।
बछ, बछड़ा–(हिं० पुं०) गाय का बच्चा।
बछरा–(हिं० पुं०) देखो बछड़ा। **बछरू**–(हिं० पुं०) देखो बछड़ा, बछवा।
बछल–(हिं० वि०) देखो वत्सल।
बछवा, बछेड़ा–(हिं०पुं०) गाय का बच्चा।
बजकना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ का सड़कर बुलबुले फेंकना, बजबजाना।
बजका–(हिं० पुं०) बेसन की पकौड़ी जो पानी में भिगोकर दही में डाली जाती है।
बजड़ना–(हिं० क्रि०) पहुँचना, टकराना।
बजना–(हिं० क्रि०) प्रसिद्ध होना, प्रहार होना, आघात पड़ना, शस्त्रों का चलाना, बोलना; (पुं०) बजानेवाला, बाजा, रुपया; (वि०) बजानेवाला।
बजनियाँ, बजनिहाँ–(हिं० पुं०) बाजा बजानेवाला।
बजरंग–(हिं०वि०) वज्र के समान पुष्ट शरीरवाला।
बजरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की बड़ी पटी हुई नाव, देखो बाजरा।
बजरागि–(हिं० स्त्री०) देखो बिजली।
बजवाई–(हिं० स्त्री०) बाजा बजाने का पारिश्रमिक। **बजवाना**–(हिं० क्रि०) बजाने में किसी को प्रवृत्त करना।
बजवैया–(हिं० वि०) बजानेवाला।
बजागि–(हिं० पुं०) वज्र की आग, बिजली।
बजाना–(हिं० क्रि०) शब्द उत्पन्न करना, आघात पहुँचाना।
बजार–(हिं० पुं०) हाट।
बजारी, बजारू–(हिं० वि०) साधारण, सामान्य।
बजुआ–(हिं० पुं०) देखो बाजू।
बजूखा–(हिं० पुं०) बाजू।

बज्जर–(हिं० वि०) कड़ा, पुष्ट; (पुं०) देखो वज्र।
बज्र–(हिं० पुं०) देखो वज्र।
बझवट–(हिं० स्त्री०) बाँझ स्त्री।
बझना–(हिं० क्रि०) बंधन में पड़ना, फँसना, उलझना। **बझान**–(हिं० स्त्री०) बझाव। **बझाना**–(हिं० क्रि०) उलझाना, फँसाना।
बझाव, बझावट–(हिं० पुं०) अटकाव, उलझन।
बझावना–(हिं० क्रि०) देखो बझाना।
बट–(हिं० पुं०) देखो वट, बड़ा नामक पकवान, बट्टा, लोढ़िया, बाँटबखरा, रस्सी की ऐंठन या बल।
बटखर, बटखरा–(हिं० पुं०) तौलने का मान, बाँट।
बटन–(हिं० स्त्री०) रस्सी आदि बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव। **बटना**–(हिं० क्रि०) कई तन्तुओं, तागों या तारों को एक साथ मिलाकर इस प्रकार ऐंठना कि वे सब मिलकर एक हो जावें।
बटपरा, बटपार–(हिं०पुं०)देखो बटमार।
बटपारी–(हिं० स्त्री०) डकैती, ठगी।
बटम–(हिं० पुं०) कोन नापने का यन्त्र, गोनिया।
बटमार–(हिं० पुं०) डाकू, लुटेरा।
बटला–(हिं० पुं०) देगचा।
बटली, बटलोई–(हिं० स्त्री०) देगची।
बटवायक, बटवार–(हिं० पुं०)चौकीदार।
बटा–(हिं० पुं०) गोल वस्तु, गोला, गणित में अपूर्ण संख्या में अंक भाग, यथा तीन बटा चार।
बटाई–(हिं० स्त्री०)बटने या ऐंठन डालने का काम, बटन का शुल्क।
बटाऊ–(हिं० पुं०) बटोही, पथिक।
बटाक–(हिं० वि०) बड़ा ऊँचा।
बटाना–(हिं० क्रि०) बंद हो जाना।
बटाली–(हिं० स्त्री०) रुखानी।
बटिया–(हिं० स्त्री०) लोढ़िया, छोटा बट्टा।
बटी–(हिं०स्त्री०)बड़ी नाम का पकवान।
बटुआ–(हिं० पुं०) देखो बटुवा।
बटुक–(सं० पुं०) लड़का, बच्चा।
बटुरना–(हिं० क्रि०) सिमटना, फैला न रहना।
बटुला–(हिं० पुं०) बड़ी वटलोई।
बटुवा–(हिं० पुं०) कपड़े या चमड़े की थैली जिसमें कई घर रहते हैं, बड़ी बटलोई।
बटेरा–(हिं० पुं०) कटोरा, गहरी थाली।
बटोई–(हिं० पुं०) देखो बटोही।
बटोर–(हिं० पुं०) जमघट, जमावड़ा, कूड़े-करकट का ढेर। **बटोरन**–(हिं० स्त्री०) कूड़े-करकट का ढेर। **बटोरना**–(हिं० क्रि०) इकट्ठा करके ढर लगाना, समेटना।
बटोहिया–(हिं० पुं०) देखो बटोही।
बटोही–(हिं० पुं०) पथिक, यात्री।
बट्ट–(हिं० पुं०) बाँट, बटखरा।
बट्टा–(हिं० पुं०) दलाली, हानि, पत्थर आदि का गोल टुकड़ा, कूटने या पीसने का पत्थर, वह कमी जो लेन-देन मे किसी वस्तु के मूल्य में दी जाती है।
बट्टी–(हिं० स्त्री०) छोटा बट्टा, लोढ़िया।
बट्टू–(हिं० पुं०) धारीदार चारखाना।
बट्टबाज–(हिं० वि०) जादूगर, धूर्त।
बड़–(हिं०स्त्री०)प्रलाप, बकवाद; (पुं०) बरगद का वृक्ष; (वि०) बड़ा; (क्रि० वि०) बढ़कर।
बड़प्पन–(हिं०पुं०)महत्त्व, श्रेष्ठता, बड़ाई।
बड़बड़–(हिं० स्त्री०) बकवाद। बड़-

बड़ाना–(हिं० क्रि०) प्रलाप करना।
बड़बड़िया–(हिं० वि०) बकवादी।
बड़बोल, बड़बोला–(हिं० वि०) लंबी चौड़ी बातें करनवाला, सीटनेवाला।
बड़भाग, बड़भागी–(हिं०वि०) भाग्यवान्।
बड़रा–(हिं० वि०) विशाल, बड़ा।
बड़राना–(हिं०वि०) बर्राना, बरबर करना।
बड़वा–(हिं० स्त्री०) घोड़ी। बड़वाग्नि, बड़वानल–(सं० पुं०) समुद्र के भीतर की अग्नि या ताप।
बड़वार–(हिं० वि०) बड़ा, विशाल।
बड़वारी–(हिं० स्त्री०) महत्व, बड़प्पन।
बड़हल–(हिं० पुं०) एक बड़ा वृक्ष जिसके फल बेडौल होते हैं और खाने में मीठ होते हैं।
बड़हार–(हिं० पुं०) बरातियों की वह ज्योनार जो विवाह के बाद की जाती है।
बड़ा–(हिं० वि०) अधिक विस्तृत, लंबा-चौड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम; (पुं०) मसाला मिली हुई उर्द की पीठी को घी या तेल में तलकर बनाया हुआ एक पकवान। बड़ाई–(हिं० स्त्री०) महिमा, प्रशंसा, बड़प्पन, श्रेष्ठता।
बड़ादिन–(हिं० पुं०) २५ दिसम्बर का दिन जो ईसा मसीह का जन्मदिवस माना जाता है। बड़ाबोल–(हिं० पुं०) अहंकार के शब्द।
बड़ी–(हिं० स्त्री०) उड़द, मूंग आदि की पीठी की बनाई हुई छोटी छोटी टिकिया।
बड़ी माता–(हिं० स्त्री०) शीतला रोग, चेचक। बड़े लाट–(हिं० पुं०) बृटिश भारत में साम्राज्य के प्रधान शासक।
बड़ेरा–(हिं० पुं०) छाजन में लंबे बल की लकड़ी जिस पर ठाठ रक्खा जाता है।
बड़ौना–(हिं० पुं०) प्रशंसा।
बढ़–(हिं० वि०) अधिक।
बढ़ई–(हिं० पुं०) काठ को छील और गढ़कर अनेक प्रकार की सामग्री बनानेवाला।
बढ़ती–(हिं० स्त्री०) मात्रा, मन या संख्या में वृद्धि, धन-धान्य की वृद्धि।
बढ़न–(हिं० स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।
बढ़ना–(हिं० क्रि०) वृद्धि को प्राप्त होना, उन्नति करना, दुकान आदि का बन्द होना, दीपक का बुझना।
बढ़नी–(हिं० स्त्री०) झाड़ू, बोहारी।
बढ़ाना–(हिं० क्रि०) फैलाना, लम्बा करना, किसी कार्यालय को बन्द करना, भाव अधिक कर देना, चलाना।
बढ़ाली–(हिं० स्त्री०) कटारी, कटार।
बढ़ाव–(हिं० पुं०) विस्तार, वृद्धि, अधिकता। बढ़ावना–(हिं० क्रि०) देखो बढ़ाना। बढ़ावा–(हिं० पुं०) उत्तेजना, प्रोत्साहन।
बढ़िया–(हिं० वि०) उत्तम, अच्छा।
बढ़ेला–(हिं० पुं०) जंगली सुअर।
बढ़ैया–(हिं० वि०) बढ़ने या बढ़ानेवाला।
बढ़ोतरी–(हिं० स्त्री०) उन्नति, बढ़ती।
बणिक–(सं० पुं०) वाणिज्य करनेवाला, बनिया। बणिकपथ–हाट।
बत–(हिं० स्त्री०) बात, यौगिक शब्दों में इसका प्रयोग होता है, यथा बतकही।
बतकहाव–(हिं० पुं०) वाद-विवाद।
बतकही–(हिं०स्त्री०) वार्तालाप, बातचीत।
बतक–(हिं० स्त्री०) हंस की जाति की पानी में तैरनेवाली एक सफेद चिड़िया।
बतचल–(हिं० वि०) बकवादी, बक्की।
बतबढ़ाव–(हिं० पुं०) व्यर्थ बात बढ़ाना, झगड़ा बढ़ाना।
बतरस–(हिं० पुं०) वार्तालाप का आनन्द।
बतरान–(हिं० स्त्री०) बातचीत।
बतराना–(हिं० क्रि०) बातचीत करना।

बतरौंहा–(हिं० वि०) बातचीत करने को उत्सुक ।
बतलाना, बताना–(हिं० क्रि०) निर्देश करना, दिखाना, जताना, समझाना ।
बताशा–(हिं० पुं०) देखो बतासा ।
बतास–(हिं० स्त्री०) वायु, हवा ।
बतासा–(हिं० स्त्री०) चीनी की चाशनी टपकाकर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई ।
बतिया–(हिं० पुं०) कच्चा छोटा फल ।
बतियाना–(हिं० क्रि०) बातचीत करना ।
बतियार–(हिं० स्त्री०) बातचीत ।
बतीसी–देखो बत्तीसी ।
बतौरी–(हिं० स्त्री०) सूजन ।
बत्तक–(हिं० स्त्री०) देखो बत्तख ।
बत्तिस–(हिं० वि०) देखो बत्तीस ।
बत्ती–(हिं०स्त्री०) सूत, रूई, कपड़े आदि की पतली छड़ या मोटा फीता जो दीपक जलाने के लिये उपयोग में आता है, प्रकाश, बत्ती के आकार की कोई वस्तु, पलीता ।
बत्तीस–(हिं० वि०) तीस और दो की संख्या का; (पुं०) तीस और दो की संख्या ३२ । **बत्तीसी**–(हिं० स्त्री०) बत्तीस का समूह, मनुष्य के नीचे-ऊपर के दाँतों की पंक्ति जिसकी पूरी संख्या बत्तीस होती है ।
बदना–(हिं० क्रि०) स्थित करना, ठहराना, स्वीकार करना, मान लेना, होड़ लगाना ।
बदरा–(हिं० पुं०) बादल, मेघ ।
बदराई–(हिं० स्त्री०) बदली ।
बदरिया-बदरी–(हिं०स्त्री०) देखो बदली ।
बदलना–(हिं० क्रि०) भिन्न होना, एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना अथवा एक के स्थान पर दूसरा हो जाना ।
बदलवाना–(हिं० क्रि०) बदलने का काम दूसरे से कराना ।
बदला–(हिं० पुं०) प्रतीकार, प्रतिफल ।
बदलाना–(हिं० क्रि०) देखो बदलवाना ।
बदली–(हिं० स्त्री०) फैलकर छाया हुआ बादल, एक स्थान या पद से दूसरे स्थान पर नियुक्ति । **बदलौवल**–(हिं० स्त्री०) अदलबदल, हेरफेर ।
बदा–(हिं०वि०) प्रारब्ध में लिखा हुआ ।
बदान–(हिं० स्त्री०) किसी बात का प्रतिज्ञापूर्वक पहले से स्थिर किया जाना ।
बदाबदी–(हिं० स्त्री०) लाग-डाँट ।
बदाम–(हिं० पुं०) देखो बादाम ।
बदामी–(हिं० वि०) बदाम के रंग का ।
बदि–(हिं० स्त्री०) बदला, पलटा; (अव्य०) वास्ते, बदले में ।
बदी–(हिं० स्त्री०) कृष्णपक्ष, अँधेरा पाख ।
बदे–(हिं० अव्य०) वास्ते, लिये ।
बद्दर, बद्दल–(हिं० पुं०) देखो बादल ।
बद्दू–(हिं० वि०) अपमानित ।
बद्ध–(सं० वि०) बँधा या बाँधा हुआ, जकड़ा हुआ ।
बद्धमुष्टि–(सं० वि०) कृपण, कंजूस ।
बद्धी–(हिं० स्त्री०) डोरी, रस्सी, बाँधने की कोई वस्तु ।
बध–(हिं० पुं०) हनन, हत्या ।
बधक–(हिं० वि०) वध करनेवाला ।
बधना–(हिं० क्रि०) वध करना, हत्या करना ।
बधाई–(हिं० स्त्री०) बढ़ती, शुभ अवसर पर दिया जानेवाला उपहार, चहल-पहल ।
बधाना–(हिं० क्रि०) वध कराना ।
बधाया–(हिं० पुं०) देखो बधाई ।
बधावना, बधावा–(हिं० पुं०) बधाई, मंगलाचार ।

बधिया–(हिं० पुं०) वह पशु जो अण्ड-कोश कुचलकर या निकालकर षंड (नपुंसक) कर दिया गया हो।
बधियाना–(हिं० क्रि०) बधिया करना या बनाना।
बधिर–(सं० वि०) बहरा। **बधिरता**–(सं० पुं०) बहरापन।
बधू–(सं० स्त्री०) नव-विवाहिता स्त्री, पतोहू, भार्या, पत्नी। **बधूजन**–नारी, स्त्री।
बधूटी–(सं० स्त्री०) पुत्र की स्त्री, पतोहू, नई आई हुई बहू।
बधूरा–(हि० पुं०) अंधड़, बवंडर।
बध्य–(सं० वि०) मार डालने योग्य। **बध्यभूमि**–वध करने का स्थान।
बन–(हि० पुं०) जंगल, अरण्य।
बनउर–(हिं० पुं०) बिनौला। **बनकंडा**–(हि० पुं०) जंगल का सूखा गोबर।
बनक–(हिं० स्त्री०) बन की उपज; (स्त्री०) सजधज।
बनकर–(हिं० पुं०) जंगल में होनेवाले पदार्थों की आय।
बनखंड–(हिं० पुं०) जंगल का कोई भाग। **बनचर**–(हिं० पुं०) वन्य पशु, जंगली मनुष्य। **बनचारी**–(हि० पुं०) जंगल में रहनेवाला मनुष्य या पशु।
बनज–(हि० पुं०) वाणिज्य, व्यवसाय।
बनजना–(हिं० क्रि०) व्यापार करना।
बनजर–(हिं० स्त्री०) देखो बंजर।
बनजारा–(हिं० पुं०) वह व्यापारी जो बैलों पर अन्न लादकर देश-देश में घूमकर बेचता है।
बनजारी–(हिं० स्त्री०) बनजारे की स्त्री।
बनत–(हिं० स्त्री०) रचना, बनावट।
बनताई–(हिं० स्त्री०) जंगल का घनापन।
बनद–(हि० पुं०) मेघ, बादल।
बनना–(हिं० क्रि०) रचा जाना, तैयार होना, आपस में मित्रता होना, अच्छा अवसर प्राप्त होना, स्वरूप धारण करना, मूर्ख ठहरना।
बननि–(हिं०स्त्री०) बनावट, सिंगार-पटार।
बननिधि–(सं० पुं०) समुद्र।
बनपति–(हिं० पुं०) सिंह, शेर।
बनपथ–(हिं० पुं०) वह मार्ग जिसमें बहुत से जंगल पड़ते हों।
बनबारी–(हि०स्त्री०) फल का बगीचा।
बनबास–(हि० पुं०) वन में रहने या बसने की क्रिया या अवस्था। **बनबासी**–(हिं० वि०) बन में रहनेवाला, जंगली।
बनमानुष–(हिं० पुं०) वह पशु जो बन्दर से बड़ा होता है, जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता जुलता है, बिलकुल जंगली आदमी।
बनरखा–(हिं० पुं०) वन का रक्षक।
बनरुह–(हि० पुं०) जंगली पेड़।
बनवना–(हि० क्रि०) देखो बनना।
बनवर–(हिं० पुं०) बिनौला।
बनवसन–(हिं० पुं०) वृक्ष की छाल का बना हुआ कपड़ा।
बनवाना–(हिं० क्रि०) बनाने का काम दूसरे से कराना।
बनवारी–(हिं० पुं०) वनमाली, श्रीकृष्ण।
बनवासी–(हि० पुं०) जंगल में रहनेवाला।
बनवैया–(हिं० वि०) बनानेवाला।
बनसपती–(हिं० स्त्री०) देखो वनस्पति।
बनसी–(हिं०स्त्री०) देखो वंशी।
बनस्थली–(हिं० स्त्री०) जंगल का कोई भाग।
बनस्पती–(हिं० पुं०) देखो वनस्पति।
बनाइ–(हिं० क्रि० वि०) अत्यन्त, बहुत।
बनाउ–(हि० पुं०) देखो बनाव।
बनागिन–(हिं० स्त्री०) दावानल।
बनात–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का ऊनी

वस्त्र जो कई रंग का होता है।
बनाती–(हिं०वि०) बनात का बना हुआ।
बनाना–(हिं० क्रि०) प्रस्तुत करना, रचना, तैयार करना, आविष्कार करना, दोष हटाकर ठीक करना, मूर्ख ठहराना, अच्छी स्थिति में पहुँचाना, प्राप्त करना, उपार्जित करना।
बनाय–(हिं० क्रि० वि०) पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से।
बनाव–(हिं० पुं०) रचना, शृंगार, युक्ति। **बनावट**–(हिं० स्त्री०) गढ़न, ऊपरी दिखावा, आडंबर।
बनावटी–(हिं० वि०) कृत्रिम, दिखौवा।
बनावन–(हिं० पुं०) कंकड़ी, मिट्टी, छिलके आदि जो अन्न को स्वच्छ करने पर निकलें,बिनन। **बनावनहारा**–(हिं० पुं०) रचयिता, बनानेवाला।
बनि–(हिं० वि०) समस्त, सब।
बनिक–(हिं० पुं०) वणिक, बनिया।
बनिज–(हिं० पुं०) वस्तुओं का क्रय-विक्रय, व्यवसाय, व्यापार की वस्तु।
बनिजना–(हिं० क्रि०) व्यापार करना।
बनिजाति–(हिं० स्त्री०) व्यापार की सामग्री।
बनिजारा–(हिं० पुं०) देखो बनजारा।
बनित–(हिं० स्त्री०) वेषभूषा, बानक।
बनिता–(हिं० स्त्री०) स्त्री, भार्या, पत्नी।
बनिया–(हिं० पुं०) व्यापार करनेवाला मनुष्य, वैश्य, मोदी।
बनियाइन–(हिं० स्त्री०) बनिये की स्त्री, बंडी या कुरती जो शरीर में चिपकी रहती है।
बनिहार–(हिं० पुं०) वह भृत्य जो रखवाली के लिये नियुक्त किया जाता है।
बनी–(हिं० स्त्री०) वनस्थली, वन का टुकड़ा, वाटिका।
बनेठी–(हिं० स्त्री०) वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे होते हैं जिसका व्यवहार पटेबाजी के खेल और अभ्यासों में किया जाता है।
बनैला–(हिं० वि०) वन्य, जंगली।
बनौरी–(हिं० स्त्री०) वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला या पत्थर।
बनौवा–(हिं० वि०) कृत्रिम, बनावटी।
बन्दर–(हिं० पुं०) कपि।
बन्ध–(सं० पुं०) बन्धन, शरीर, गाँठ।
बन्धक–(सं० पुं०) ऋण के बदले महाजन के पास रखने की वस्तु, गिरवी।
बन्धकी–(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बन्धन–(सं० पुं०) बाँधने की क्रिया, वह जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय, रस्सी, बंधन-स्थान, बंदीगृह; (वि०) बाँधनेवाला।
बन्धनी–(सं० स्त्री०) शरीर के बन्धन-स्थान पर की मोटी नसें जो अवयवों को बाँध रहती हैं। **बन्धनीय**–(सं० वि०) बाँधने योग्य।
बन्धयिता–(हिं० वि०) बाँधनेवाला।
बन्धु–(सं० पुं०) बान्धव, भाई।
बन्धुजन–(सं० पुं०) आत्मीय, कुटुम्ब।
बन्धुता–(सं०स्त्री०) भाईचारा। **बन्धुत्व**–(सं० पुं०) मित्रता।
बन्धुपाल–(सं० पुं०) अपने कुटुम्ब का पालन करनेवाला।
बन्धुर–(सं०वि०) सुन्दर, नम्र, ऊँचा-नीचा।
बन्ध्या–(सं० स्त्री०) जिस स्त्री को सन्तान न हो, बाँझ स्त्री।
बन्नी–(हिं० स्त्री०) उपज का कोई अंश जो खेत में काम करनेवालों को वेतन के बदले में दिया जाता है।
बन्हि–(हिं० स्त्री०) देखो वह्नि।
बप–(हिं० पुं०) बाप, पिता। **बपमार**–

(हिं० वि०) अपने पिता की हत्या करनेवाला।
बपना–(हिं० क्रि०) बीज बोना।
बपु–(हिं० पुं०) शरीर, अवतार, रूप।
बपुरा–(हिं० पुं०) अशक्त, बेचारा।
बपौती–(हिं० स्त्री०) पिता से मिली हुई सम्पत्ति।
बप्पा–(हिं० पुं०) पिता, बाप।
बबकना–(हिं० क्रि०) आवेग में आकर वेग से बोलना।
बबा–(हिं० पुं०) देखो बाबा।
बबुआ–(हिं० पुं०) पुत्र या दामाद के लिये प्यार का शब्द, रईस, भूमि स्वामी। **बबुई**–(हिं० स्त्री०) कन्या, किसी सरदार या बाबू की बटी, छोटी ननद।
बभूत–(हिं०स्त्री०) देखो भभूत,विभूति।
बम्–(हिं० पुं०) शिव के उपासकों का बम् बम् शब्द, वह लम्बा बाँस जो गाड़ी आदि में आगे की ओर लगा रहता है।
बमकना–(हिं० क्रि०) डींग हाँकना।
बमचख–(हिं० स्त्री०) लड़ाई झगड़ा।
बमीठा–(हिं० पुं०) बल्मीक, बाँबी।
बयन्द–(हिं० स्त्री०) हाथी, गज।
बय–(हिं० पुं०) देखो तय।
बयन–(हिं० पुं०) वाणी, बात।
बयना–(हिं०क्रि०) वर्णन करना, कहना; (पुं०) बौना।
बयर–(हिं० पुं०) देखो वैर।
बयस–(हिं० स्त्री०) देखो वयस।
बया–(हिं० पुं०) अनाज तौलनेवाला मनुष्य, एक पक्षी।
बयाई–(हिं० स्त्री०) अन्न आदि तौलने की तौलाई।
बयाना–(हिं० पुं०) वह धन जो किसी काम के लिये दिये जानेवाले पुरस्कार के लिये बात पक्की हो जाने पर अग्रिम दिया जाता है और पुरस्कार देते समय काट लिया जाता है।
बयार–(हिं० स्त्री०) पवन, हवा।
बयारा–(हिं० पुं०) हवा का झोंका।
बयालिस–(हिं० पुं०) चालीस और दो की संख्या ४२; (वि०) जो संख्या चालीस और दो हो। **बयालिसवाँ**–जो क्रम से बयालिस के स्थान पर हो।
बयासी–(हिं० वि०) अस्सी और दो की संख्या का; (पुं०) अस्सी और दो की संख्या ८२।
बरँगा–(हिं० पं०) छत पाटने की पत्थर या लकड़ी की पटिया।
बर–(हिं० पुं०) दूल्हा, आशीर्वाद-सूचक वचन, बल, शक्ति, वट का पेड़; (वि०) श्रेष्ठ।
बरई–(हिं० पुं०) तमोली।
बरकना–(हिं० क्रि०) अलग रहना, हटना।
बरकाज–(हिं० पुं०) विवाह।
बरकाना–(हिं०क्रि०) बचाना, फुसलाना।
बरख–(हिं० पुं०) वर्ष, साल।
बरखना–(हिं० क्रि०) वर्षा होना। **बरखा**–(हिं० स्त्री०) वर्षा, वृष्टि।
बरगद–(हिं०पुं०) वटवृक्ष, बर का पेड़।
बरछा–(हिं० पुं०) भोंककर मारने का एक अस्त्र, भाला। **बरछैत**–(हिं० पुं०) बरछा चलानेवाला।
बरजन–(हिं०क्रि०) मना करना, रोकना। **बरजनि**–(हिं०स्त्री०) रुकावट, मनाही।
बरजोर–(हिं० वि०) प्रबल; (क्रि० वि०) बहुत वेग से।
बरजोरी–(हिं० स्त्री०) बल का प्रयोग; (क्रि० वि०) बलपूर्वक।
बरणना–(हिं०क्रि०) वर्णन करना।

बरत–(हि० पुं०) व्रत, उपवास।
बरतन–(हि० पुं०) कोई वस्तु रखने का मिट्टी या धातु का पात्र।
बरतना–(हि० क्रि०) व्यवहार में लाना।
बरताना–(हि० क्रि०) बाँटना।
बरताव–(हि० पुं०) व्यवहार।
बरती–(हि० स्त्री०) बत्ती; (वि०) जिसने व्रत या उपवास किया हो।
बरतोर–(हि० पुं०) बाल की जड़ टूट जाने से होनेवाला फोड़ा।
बरदवान–(हि० पुं०) तीव्र वायु।
बरधा–(हि० पुं०) बैल।
बरन–(हि० पुं०) देखो वर्ण।
बरनन–(हि० पुं०) देखो वर्णन।
बरना–(हि० क्रि०) वर्णन करना, पति या पत्नी के रूप में अंगीकार करना, देखो बलना।
बरफ–(हि० स्त्री०) हिम।
बरबंड–(हि० स्त्री०) व्यर्थ की बात।
बरबस–(हि० क्रि० वि०) बलपूर्वक, व्यर्थ
बरम–(हि० पुं०) कवच।
बरमा–(हि० पुं०) लकड़ी आदि में छेद करने का एक अस्त्र।
बरबट–(हि० स्त्री०) तापतिल्ली नाम का रोग।
बरखना–(हि० क्रि०) बरसना, वर्षा होना
बरखा–(हि० स्त्री०) वृष्टि, पानी बरसना, बरसात।
बरस–(हि० पुं०) वर्ष, बारह महीने का समूह।
बरसगाँठ–(हि० स्त्री०) सालगिरह।
बरसना–(हि०क्रि०) आकाश से जल की बूंदों का निरन्तर गिरना, अधिक प्रकट होना।
बरसाऊ–(हि०स्त्री०) वर्षाऋतु, वर्षाकाल।
बरसाती–(हि०वि०) वर्षा सम्बन्धी, बरसात का, वर्षाऋतु में पहनने का कपड़ा जिसके पहनने से शरीर नहीं भींगता।
बरसाना–(हि० क्रि०) वृष्टि या वर्षा करना, अन्न को ओसाना, अधिक मात्रा या संख्या में चारों ओर से प्राप्त कराना।
बरसावना–(हि० क्रि०) देखो बरसाना।
बरसी–(सं० स्त्री०) वह श्राद्ध जो किसी मृतक के उद्देश्य से उसके मरने की तिथि के ठीक एक वर्ष बाद होता है।
बरसीला–(हि० वि०) बरसनेवाला।
बरसौंहा–(हि० वि०) बरसनेवाला।
बरहा–(हि० पुं०) खेत में सिंचाई के लिये बनाई हुई छोटी नाली, मोटा रस्सा।
बरही–(हि०पुं०) मोर, ईंधन का बोझ, पत्थर आदि उठाने का मोटा रस्सा, प्रसूता का सन्तान उत्पन्न करने के बारहवें दिन का स्नान तथा अन्य क्रियायें।
बरहीमुख–(हि० पुं०) देखो बर्हिमुख, देवता।
बरह्मंड–(हि० पुं०) देखो ब्रह्माण्ड।
बरांडा–(हि० पुं०) देखो बरामदा।
बरा–(हि०पुं०) एक प्रकार का पकवान जो उड़द की दाल को पीसकर बनाया जाता है।
बराई–(हि० स्त्री०) देखो बड़ाई।
बराक–(हि० पुं०) युद्ध, लड़ाई; (वि०) अधम, पापी, बेचारा।
बराट–(हि० स्त्री०) कौड़ी।
बरात–(हि० स्त्री०) वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर को लेकर कन्यावाले के घर पर जाते हैं अनेक मनुष्यों का समुदाय। बराती–(हि० पुं०) वर के साथ कन्या के घर बारात ले जानेवाला मनुष्य।

बराना–(हिं० क्रि०) अलग करना, बचाना रक्षा करना, चुनना, छाँटना।
बराव–(हिं० पुं०) निवारण, बचाव।
बरास–(हिं० पुं०) भीमसेनी कपूर।
बराह–(हिं० पुं०) देखो वराह।
बरिआत–(हिं० स्त्री०) देखो बरात।
बरिआर–(हिं० वि०) प्रबल, बलवान्।
बरिया–(हिं० वि०) बलवान्, पुष्ट।
बरियाई–(हिं० क्रि० वि०) हठपूर्वक।
बरिषा–(हिं० स्त्री०) देखो वर्षा।
बरिस–(हिं० पुं०) वर्ष, साल।
बरी–(हिं० स्त्री०) गोल टिकिया, बटी, उर्द या मूंग की पीठी के सुखाये हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े।
बरीसना–(हिं० क्रि०) देखो बरसना।
बरु–(हिं० अव्य०) चाहे, कुछ चिन्ता नहीं, भले ही।
बरुआ–(हिं० पुं०) उपनयन संस्कार।
बरुनी–(हिं० स्त्री०) बरौनी।
बरे–(हिं० अव्य०) बदले में, पलटे में, निमित्त, वास्ते; (क्रि० वि०) बड़े वेग से, हठ से, ऊँचे स्वर से।
बरेखी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का गहना जिसको स्त्रियाँ भुजा पर पहनती हैं; (हिं० स्त्री०) विवाह संबंध के निमित्त कन्या को देखना, ठहरौनी।
बरेठा–(हिं० पुं०) धोबी।
बरेदी–(हिं० पुं०) चरवाहा।
बरोठा–(हिं० पुं०) ड्योढ़ी, पौरी, बैठक।
बरोह–(हिं० स्त्री०) बरगद की जटा जो नीचे की ओर बढ़ती हुई भूमि में जाकर जड़ पकड़ लेती है।
बरौंछी–(हिं० स्त्री०) सुअर के बालों की बनी हुई कूंची।
बरौनी–(हिं० स्त्री०) देखो बरुनी।
बरौरी–(हिं० स्त्री०) बरी नाम का पकवान।
बर्छा–(हिं० पुं०) देखो बरछा।
बर्जना–(हिं० क्रि०) देखो बरजना।
बर्णना–(हिं० क्रि०) वर्णन करना।
बर्तन–(हिं० पुं०) पात्र।
बर्तना–(हिं० क्रि०) व्यवहार करना।
बर्ताव–(हिं० पुं०) व्यवहार।
बर्द–(हिं० पुं०) वृष, बैल।
बर्न–(हिं० पुं०) देखो वर्ण।
बर्फी–(फा० स्त्री०) देखो बरफी।
बर्बर–(सं० वि०) हकलाता हुआ, घुंघुरुवा, असभ्य, उद्दण्ड; (पुं०) असभ्य मनुष्य, शस्त्रों की झनकार।
बर्बरता–(हिं० स्त्री०) असभ्यता, अत्याचार।
बर्राना–(हिं० क्रि०) व्यर्थ बकबक करना, स्वप्न की अवस्था में बोलना।
बर्रे–(हिं० पुं०) भिड़ नामक कीड़ा, ततैया।
बर्सात–(हिं० स्त्री०) देखो बरसात।
बल–(सं० पुं०) सेना, स्थूलता, सामर्थ्य, आश्रय, सहारा। (हिं० पुं०) लपेट, फेरा, ऐंठन, टढ़ापन, सिकुड़न, घुमाव।
बलकट–(हिं० वि०) अग्रिम।
बलकना–(हिं० क्रि०) उबलना, खौलना।
बलकर–(सं० वि०) जिससे बल की वृद्धि हो।
बलकल–(हिं० पुं०) देखो वल्कल।
बलकाना–(हिं० क्रि०) उबालना, खौलाना।
बलद–(सं० वि०) बल देनेवाला।
बलदाऊ–(हिं० पुं०) बलदेव, बलराम।
बलदेव–(सं० पुं०) बलराम।
बलना–(हिं० क्रि०) जलना, दहकना।
बलप्रद–(सं० वि०) बलदायक।
बलबलाना–(हिं० क्रि०) ऊँट का बोलना, निरर्थक शब्द बोलना। **बलबलाहट**–

(हिं० स्त्री०) ऊँट की बोली, व्यर्थ की बकवाद, अहंकार।
बलम, बलमा–(हिं० पुं०) पति, नायक।
बलय–(हिं० पुं०) देखो वलय।
बलबंड–(हिं० वि०) बलवान्। बलवन्त–(हिं० वि०) बलवान्, बली।
बलवान्–(सं० वि०) शक्तिमान्।
बलशाली–(सं० वि०) बलवान्।
बलसुम–(हिं० वि०) बलुआ, जिसमें बाल हो।
बलसेना–(सं० स्त्री०) सेनादल।
बलँहर–(सं० वि०) बल नाशक।
बलहीन–(सं० वि०) बलशून्य, बलरहित।
बलाग्र–(सं० पुं०) सेना का अगला भाग, सेनापति; (वि०) बलवान्।
बलाढ्य–(सं० वि०) शक्तिशाली, बलवान्
बलात्–(सं० अव्य०) बलपूर्वक, हठ से।
बलात्कार–(सं० पुं०) अत्याचार, अन्याय।
बलाध्यक्ष–(सं० पुं०) सेनापति।
बलाय–(हिं० पुं०) आपत्ति, विपत्ति, दुःख, कष्ट।
बलावलेप–(सं० पुं०) दर्प, गर्व, अहंकार।
बलाहक–(सं० पुं०) मेघ, बादल।
बलि–(सं० पुं०) उपहार, भेंट, चढ़ावा, नैवेद्य, वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जावे।
बलिकर्म–बलिदान।
बलित–(हिं० वि०) बलिदान दिया हुआ।
बलिदान–(सं० पुं०) किसी देवता के उद्देश्य से नैवेद्य आदि पूजा की सामग्री चढ़ाना, दुर्गा आदि देवता को चढ़ाने के लिये बकरा आदि पशु को मारना।
बलिया–(हिं० वि०) बलवान्।
बलिवर्द–(सं० पुं०) वृष, साँड़।
बलिष्ठ–(सं० वि०) अधिक बलवान्।
बलिहारना–(हिं० क्रि०) न्योछावर करना।
बलिहारी–(हिं० स्त्री०) श्रद्धा, भक्ति, प्रेम आदि के कारण अपने को निछावर करना।
बली–(सं० वि०) पराक्रमी, बलवान्।
बलीक–(सं० पुं०) ओलती, ओरी।
बलीमुख–(सं० पुं०) वानर, बन्दर।
बलीवर्द–(सं० पुं०) वृषभ, बैल।
बलुआ–(हिं० वि०) रेतीला।
बलैया–(सं० पुं०) बला, बलाय।
बल्कल–(हिं० पुं०) देखो वल्कल।
बल्लभ–(हिं० पुं०) देखो वल्लभ।
बल्लभी–(हिं० स्त्री०) प्रिया।
बल्लम–(हिं० पुं०) बरछा, भाला, डंडा, सोंटा, वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसको चोबदार राजाओं के आगे आगे लेकर चलते हैं।
बल्ला–(हिं० पुं०) लकड़ी का मोटा लंबा डंडा।
बल्ली–(हिं० स्त्री०) छोटा बल्ला।
बवँड़ना–(हिं० क्रि०) व्यर्थ इधर-उधर घूमना।
बवंडर–(हिं० पुं०) चक्रवात, आँधी।
बवघूरा–(हिं० पुं०) बवंडर, चक्रवात।
बवन–(हिं० पुं०) देखो वमन।
बवना–(हिं० क्रि०) छिटकना, बिखरना।
बवरना–(हिं० क्रि०) देखो बौरना।
बसंत–(हिं० पुं०) देखो वसन्त।
बसंती–(हिं० पुं०) सरसों के फूल के समान रंग, पीला कपड़ा; (वि०) वसन्त ऋतु संबंधी, पीले रंग का।
बसंदर–(हिं० पुं०) अग्नि, आग।
बस–(हिं० पुं०) देखो वश।
बसन–(हिं० पुं०) देखो वसन।
बसना–(हिं० क्रि०) निवास करना,

जनपूर्ण होना, ठहरना, सुगन्ध से पूर्ण हो जाना; (पुं०) बेठन, थैली।
बसनि–(हिं० स्त्री०) निवास, रहना, वास
बसवार–(हिं० पुं०) छौंक, बघार।
बसवास–(हिं० पुं०) निवास, ठिकाना स्थिति।
बसह–(हिं० पुं०) वृषभ, बैल।
बसा–(हिं० स्त्री०) वसा, चर्बी, बर्रे, भिड़।
बसाना–(हिं० क्रि०) ठहराना, टिकाना, महकाना, दुर्गन्ध करना।
बसिऔरा–(हिं० पुं०) बासी भोजन।
बसिया–(हिं० वि०) देखो बासी। **बसियाना**–(हिं० क्रि०) बासी हो जाना।
बसीकर–(हिं० वि०) वश में करनेवाला।
बसीकरण–(हिं० पुं०) देखो वशीकरण।
बसीठ–(हिं० पुं०) दूत।
बसीठी–(हिं० स्त्री०) दौत्य, दूत का काम।
बसीना–(हिं० पुं०) बसन, रहन।
बसुधा–(हिं० स्त्री०) देखो वसुधा।
बसुरी–(हिं० स्त्री०) बाँसुली, बसुला।
बसुला–(हिं० पुं०) बढ़ई का लकड़ी छीलन और गढ़ने का अस्त्र। **बसूला**–(हिं० स्त्री०) मेमार का बसुले के आकार का छोटा अस्त्र।
बसेरा–(हिं० वि०) रहनेवाला, बसनेवाला; (पुं०) यात्रियों का टिकने का स्थान, वह स्थान जहाँ पक्षी रात में रहते हैं, निवास।
बसेरी, बसेरा–(हिं० वि०) निवासी, रहनेवाला।
बसौंधी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की रबड़ी जो सुगन्धित और लच्छेदार होती है।
बस्तर–(हिं० पुं०) देखो वस्त्र।
बस्ती–(हिं० स्त्री०) जनपद, निवास, बहुत से घरों का समूह जिसमें लोग बसते हैं।
बस्तु–(हिं० पुं०) देखो वस्तु। **बस्त्र**–(हिं० पुं०) देखो वस्त्र। **बस्य**–(हिं० वि०) देखो वश्य।
बस्साना–(हिं० क्रि०) दुर्गन्ध देना।
बहँगी–(हिं० स्त्री०) तराजू के आकार का एक ढाँचा जिसके दोनों ओर के पलरों पर बोझ ले जाते हैं, काँवर।
बहकना–(हिं० क्रि०) मार्ग भ्रष्ट होना, भटकना।
बहकाना–(हिं० क्रि०) भुलावा देना, भटकाना। **बहकावट**–(हिं० स्त्री०) बहकाने की क्रिया या भाव।
बहतोल–(हिं० स्त्री०) पानी बहाने की नाली।
बहत्तर–(हिं० वि०) सत्तर और दो की संख्या का; (पुं०) सत्तर और दो की संख्या ७२। **बहत्तरवाँ**– जिसका स्थान बहत्तर पर पड़े।
बहन–(हिं० स्त्री०) देखो बहिन; (स्त्री०) बहन की क्रिया या भाव।
बहना–(हिं० क्रि०) पानी की धारा में पड़कर जाना, व्यर्थ खर्च हो जाना, उठना, चलना, धारण करना, रखना, हवा का चलना, द्रव रूप के पदार्थ का किसी ओर चलना, निर्वाह करना।
बहनापा–(हिं० पुं०) बहन का सम्बन्ध।
बहनु–(हिं० पुं०) देखो बहन, यान।
बहनेली–(हिं० स्त्री०) वह जिसके साथ बहनापा हो।
बहनोई–(हिं० पुं०) बहन का पति।
बहनौता–(हिं० पुं०) बहिन का पुत्र।
बहनौरा–(हिं० पुं०) बहिन की ससुराल।
बहरा–(हिं० पुं०) वह जो कान से कम सुनता हो, जो बिलकुल न सुनता हो।
बहराना–(हिं० क्रि०) भुलावा देना, बहकाना।

बहरियाना–(हिं०क्रि०) बाहर निकालना अलग करना।
बहरूपिया–(हिं० पुं०) वह जो नाना प्रकार के रूप धारण करता हो।
बहल–(हिं० पुं०) बल से खींची जाने-वाली एक प्रकार की छतरीदार गाड़ी।
बहलना–(हिं० क्रि०) मनोरञ्जन होना, चित्त प्रसन्न होना।
बहलाना–(हिं० क्रि०) भुलावा देना, बातों में लगाना।
बहलाव–(हिं०पुं०) मनोरंजन, प्रसन्नता।
बहलिया–(सं० पुं०) देखो बहेलिया।
बहली–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छतरीदार या परदेदार बैलगाड़ी, खड़खड़िया।
बहल्ला–(हिं० पुं०) प्रसन्नता, आनन्द।
बहसना–(हिं०क्रि०) वाद-विवाद करना।
बहाना–(हिं० क्रि०) ढलकाना, लुढ़काना, पानी की धारा में डालना, खोना, गँवाना।
बहाव–(हिं० पुं०) प्रवाह, बहने की क्रिया या भाव, बहती हुई धारा।
बहिअर–(हिं० स्त्री०) स्त्री।
बहिन–(हिं० स्त्री०) भगिनी।
बहिनापा–(हिं० पुं०) देखो बहनापा।
बहियाँ–(हिं० स्त्री०) बाहु, बाँह।
बहिर–(हिं० वि०) बहरा।
बहिरत–(हिं० अव्य०) बाहर।
बहिराना–(हिं० क्रि०) बाहर करना। **बहिर्गत**–(सं० वि०) जो बाहर गया हो, अलग। **बहिर्भूमि**–(सं० स्त्री०) बस्ती के बाहर की भूमि। **बहिर्मुख**–(सं० वि०) पराङ्मुख, विरुद्ध।
बहिला–(हिं० वि०) बन्ध्या, बाँझ।
बहिष्करण–(सं० पुं०) बाहर करना।
बहिष्कार–(सं० पुं०) निकालना, बाहर करना, दूर करना, हटाना।
बहिष्कृत–(सं०वि०) अलग किया हुआ।
बहिष्कृति–(सं० स्त्री०) बाहर करने की क्रिया।
बही, बहीखाता–(हिं० स्त्री०) हिसाब-किताब लिखने की पुस्तिका।
बहीर–(हिं०स्त्री०) जनसमूह, भीड़भाड़।
बहु–(सं० वि०) एक से अधिक, अधिक, बहुत; (वि०) झाड़ू देनेवाला, बहुत से काम करनेवाला।
बहुकरी–(सं० स्त्री०) मार्जनी, झाड़ू।
बहुक्षम–(सं० वि०) अधिक सहनेवाला।
बहुगुण–(सं० वि०) अनेक गुणों से युक्त।
बहुगुना–(हिं० पुं०) चौड़े मुंह का एक गहरा पात्र जो अनेक कामों में लाया जाता है।
बहुचारी–(सं० वि०) अनेक स्थानों में घूमनेवाला।
बहुज्ञ–(सं० वि०) बहुदर्शी।
बहुटनी–(हिं० स्त्री०) बाँह पर पहनने का एक गहना।
बहुत–(हिं०वि०) आवश्यकता से अधिक अनेक।
बहुतक–(हिं० वि०) बहुत से, बहुतेरे।
बहुता–(सं० स्त्री०) अधिकता, बहुत्व।
बहुताइत–(सं० स्त्री०) देखो बहुतायत।
बहुताई–(हिं० स्त्री०) अधिकता। **बहुतात, बहुतायत**–(हिं० स्त्री०) अधिकता।
बहुतेरा–(हिं० वि०) अधिक, बहुत सा; (क्रि० वि०) बहुत परिमाण में, बहुत प्रकार से। **बहुतेरे**– (हिं० वि०) संख्या में अधिक, बहुत से। **बहुत्व**–(सं० पुं०) आधिक्य, अधिकता।
बहुदर्शिता–(सं०स्त्री०) बहुत सी बातों का ज्ञान। **बहुदर्शी**–(सं० पुं०) जिसने बहुत कुछ देखा हो, अनुभवी।

बहुधा–(सं० अव्य०) प्रायः, अधिकतर।
बहुप्रकार–(सं० वि०) अनेक तरह का।
बहुप्रज–(सं० वि०) जिसके बहुत सी संतान हों। **बहुप्रद**–(सं० वि०) बहुत देनेवाला।
बहुभाषी–(सं० वि०) बहुत बोलनेवाला, बकवादी; (पुं०) वह जो अनेक भाषा जानता हो।
बहुभुजक्षेत्र–(सं० पुं०) रेखा गणित में वह क्षेत्र जो चारों ओर अनेक रेखाओं से घिरा हो।
बहुमत–(सं० पुं०) बहुत से मनुष्यों का अलग अलग मत, बहुत से लोगों का मिलकर एक मत।
बहुमान–(सं० वि०) अधिक माननीय।
बहुमानी–(सं०वि०) अधिक आदरणीय।
बहुमान्य–(सं० वि०) जिसका बहुत से लोग आदर करते हों।
बहुमूल्य–(सं० वि०) अधिक दाम का।
बहुरंगा–(हिं०वि०) चित्र-विचित्र, अनेक रंग का। **बहुरंगी**–(हिं० वि०) अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला, बहुरूपिया।
बहुरना–(हिं०क्रि०) लौटना, फिर मिलना।
बहुराशिक–(सं० पुं०) गणित में एक त्रैराशिक द्वारा दूसरे त्रैराशिक की निर्दिष्ट राशि जानने की विधि।
बहुरि–(हिं० क्रि० वि०) इसके उपरान्त, फ़िर से।
बहुरिया–(हिं० स्त्री०) नई बहू।
बहुरी–(हिं० स्त्री०) चर्वण, चबेना।
बहुरूप–(सं० वि०) नानारूपयुक्त।
बहुरूपिया–(हिं० पुं०) अनेक रूप धारण करनेवाला मनुष्य।
बहुल–(सं० वि०) प्रचुर, अधिक।
बहुलता–(सं० स्त्री०) अधिकता।
बहुवचन–(सं० पुं०) व्याकरण की एक परिभाषा जिसमें एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है।
बहुवर्ण–(सं०पुं०) अनेक वर्ण, अनेक जाति
बहुवादी–(सं० वि०) बहुत बोलनेवाला।
बहुबार–(सं० पुं०) अनेक बार।
बहुवार्षिक–(सं० वि०) कई वर्षों तक होनेवाला।
बहुविध–(सं० वि०) नाना प्रकार का।
बहुविस्तीर्ण–(सं० वि०) बहुत लंबा-चौड़ा
बहुव्ययी–(सं० वि०) अतिव्ययी।
बहुव्रीहि–(सं० पुं०) एक प्रकार का समास जिसमें दो या दो से अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है वह किसी अन्य पद का विशेषण होता है।
बहुश्रुत–(सं० वि०) जिसने अनेक विद्वानों से भिन्न भिन्न शास्त्रों की बातें सुनी हों।
बहुसंख्यक–(सं० पुं०) गिनती में बहुत।
बहुसुत–(सं० वि०) जिसके बहुत सन्तान हों।
बहूँटा–(सं० पुं०) बाँह पर पहनने का एक आभूषण।
बहू–(हिं० स्त्री०) पुत्रवधू, पतोहू, नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन, पत्नी।
बहेतू–(हिं० वि०) इधर-उधर मारा फिरनेवाला, व्यर्थ घूमनेवाला।
बहेलिया–(हिं० पुं०) चिड़ीमार, व्याध।
बहोर–(हिं० पुं०) फेरा, पलटा; (क्रि० वि०) फिर से। **बहोरना**–(हिं० क्रि०) सटाना।
बहोरि–(हिं० अव्य०) पुनः, फिर से।
बह्वक्षर–(सं०वि०) अनेक अक्षरों का पद
बह्वाशी–(सं० वि०) बहुत भोजन करने-वाला।

बाँ–(हिं० पुं०) गाय बैल के बोलने का शब्द।

बाँक–(हिं० पुं०) बाँह पर पहनने का एक आभूषण, लोहे का शिकंजा; (वि०) टेढ़ा, घुमावदार, तिरछा, बांका।

बांकड़ा–(हिं० वि०) शूरवीर, साहसी।

बांकड़ी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता जो बादले और कलाबत्तू से बनाया जाता है।

बांकना–(हिं० क्रि०) टेढ़ा करना या होना।

बांकपन–(हिं० पुं०) तिरछापन, टेढ़ापन, छवि, शोभा।

बांका–(हिं० वि०) वीर, बहादुर, बना-ठना, सुन्दर, छैला, टेढ़ा, तिरछा।

बांकुर, बांकुरा–(हिं० वि०) पतली धार का टेढ़ा, बांका, चतुर।

बांगड़–(हिं० वि०) मूर्ख।

बाँगर–(हिं० पुं०) नदी के किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी नहीं पहुँचता।

बाँगा–(हिं० पुं०) बिना ओटी हुई रूई, कपास।

बाँगेर–(हिं० पुं०) पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल, फंदा।

बांचना–(हिं० क्रि०) पढ़ना।

बाँछना–(हिं० क्रि०) अभिलाषा करना, इच्छा करना।

बांछा–(हिं० स्त्री०) वाञ्छा, इच्छा।

बांछित–(हिं० वि०) इच्छा किया हुआ।

बांछी–(हिं० वि०) अभिलाषा या इच्छा करनेवाला।

बाँझ–(हिं० स्त्री०) वन्ध्या स्त्री, वृक्ष।

बाँझपन, बाँझपना–(हिं० पुं०) बाँझ होने का भाव।

बांट–(हिं० पुं०) बांटने की क्रिया या भाव, भाग। बांटना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु के अनेक विभाग करके अलग अलग करना।

बांटा–(हिं० पुं०) बांटने की क्रिया या भाव, विभाग।

बांड़–(हिं० पुं०) दो नदियों के संगम के बीच की भूमि।

बांड़ा–(हिं० पुं०) वह पशु जिसकी पूंछ कट गई हो; (वि०) बिना पूंछ का।

बांड़ी–(हिं० स्त्री०) बिना पूंछ की गाय।

बांदर–(हिं० पुं०) देखो बन्दर।

बांदा–(हिं० पुं०) किसी वृक्ष के ऊपर उगी हुई दूसरी वनस्पति।

बांदी–(हिं० स्त्री०) दासी, लौंड़ी।

बांदू–(हिं० पुं०) बँधुवा।

बांध–(हिं० पुं०) मिट्टी, ईंट या पत्थर का बना हुआ धुस जो जलाशय के किनारे पर पानी रोकने के लिये बनाया जाता है।

बांधना–(हिं० क्रि०) गांठ लगाकर कसना, पकड़ कर बन्द करना, ठीक करना, पानी का बहाव रोकने का प्रबंध करना, नियत करना।

बांधनू–(हिं० पुं०) उपक्रम, कल्पित वार्ता, मनगढ़ंत।

बांधव–(सं० पुं०) भाईबन्द।

बांबी–(हिं० स्त्री०) दीमक के रहने का भीटा, सर्प का बिल।

बांयाँ–(हिं० वि०) देखो बायाँ।

बांस–(हिं० पुं०) तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर गाँठ होती है और गाँठों के बीच का स्थान पोला होता है, लाठा।

बांसली–(हिं० स्त्री०) मुरली, बाँसुरी।

बांसा–(हिं० पुं०) नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नयनों के बीच में रहती है।

बांसुरी, बाँसुली–(हिं० स्त्री०) मुख से फूंककर बजाने का एक बाजा, बाँसुली ।
बाँह–(हिं० स्त्री०) बाहु, भुजा, बल, शक्ति, सहारा, भरोसा, सहायक ।
बाँही–(हिं० स्त्री०) देखो बाँह ।
बा–(हिं० पुं०) जल, पानी ।
बाइ–(हिं० स्त्री०) देखो बाई ।
बाइसवाँ–(हिं० वि०) देखो बाईसवाँ ।
बाई–(हिं० स्त्री०) स्त्रियों का आदर-सूचक शब्द ।
बाईस–(हिं० वि०) बीस और दो की संख्या का; (पुं०) बीस और दो की संख्या २२ । **बाईसवाँ**–(हिं० वि०) जो क्रम से बाईस के स्थान पर हो । **बाईसी**–(हिं० स्त्री०) बाईस वस्तुओं का अथवा बाईस पद्यों का समूह ।
बाउ–(हिं० पुं०) वायु, पवन, हवा ।
बाउर–(हिं० वि०) बावला, पागल ।
बाऊ–(हिं० पुं०) वायु, पवन । **बाएँ**–(हिं० क्रि० वि०) बायीं ओर ।
बाकचाल–(हिं० वि०) बड़ा बकवादी ।
बाकना–(हिं० क्रि०) बकबक करना ।
बाकल–(हिं० पुं०) देखो वल्कल ।
बाकुल–(हिं० पुं०) देखो वल्कल ।
बाखरि–(हिं० स्त्री०) देखो बखरी ।
बागडोर–(हिं० स्त्री०) घोड़े की लगाम में बाँधने की रस्सी ।
बागना–(हिं० क्रि०) चलना, फिरना, घूमना, टहलना ।
बागल–(हिं० पुं०) बक, बगला ।
बागुर–(हिं० पुं०) पशु या पक्षी फँसाने का जाल ।
बागसरी–(हिं० स्त्री०) सरस्वती ।
बाघंबर–(हिं० पुं०) बाघ की खाल जो बिछाने के काम में आती है ।
बाघ–(हिं० पुं०) सिंह, शेर ।
बाचना–(हिं० क्रि०) सुरक्षित रखना, बचाना ।
बाचा–(हिं० स्त्री०) बोलने की शक्ति, वार्तालाप, बातचीत । **बाचाबंध**–जिसने किसी प्रकार की प्रतिज्ञा की हो ।
बाछड़ा–(हिं०पुं०) देखो बछड़ा । **बाछा**–(हिं० पुं०) गाय का बच्चा, बछवा ।
बाज–(हिं० पुं०) घोड़ा ।
बाजड़ा–(हिं० पुं०) देखो बाजरा ।
बाजन–(हिं०पुं०) देखो बाजा । **बाजना**–(हिं० क्रि०) बाजे आदि का बजना; लड़ना, भिड़ना ।
बाजरा–(हिं० पुं०) जोंधरी ।
बाजा–(हिं० पुं०) वाद्य, बजाने का कोई यन्त्र । **बाजा-गाजा**–अनेक प्रकार के बाजों का समुदाय ।
बाजारू–(हिं० वि०) हाट संबंधी ।
बाजि–(हिं० पुं०) घोड़ा, पक्षी, बाण ।
बाजी–(हिं० पुं०) घोड़ा, बजनिया ।
बाजूबीर–(हिं० पुं०) बाजूबंद ।
बाझन–(हिं० स्त्री०) उलझन, बखेड़ा, झंझट । **बाझन** (हिं० क्रि०) बझना ।
बाट–(हिं० पुं०) मार्ग, बटखरा, पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसी जाती है; (स्त्री०) बटन, बल । **बाटना**–(हिं० क्रि०) सिल पर बट्टे से कोई वस्तु पीसना ।
बाटिका–(सं० स्त्री०) उपवन, उद्यान, बगीचा, फुलवारी ।
बाटी–(हिं० स्त्री०) अंगारों या उपलों पर सेंकी हुई गोली या पेड़ के आकार की रोटी, लिट्टी ।
बाड़–(हिं० स्त्री०) बाढ़, धार ।
बाड़ा–(हिं० पुं०) पशुशाला ।
बाड़ी–(हिं० स्त्री०) वाटिका, बारी ।
बाढ़–(सं० स्त्री०) वृद्धि, अधिकता ।

(हिं० स्त्री०) बढ़ती, अधिक वर्षा के कारण नदी आदि के जल का वेग से बढ़ना, बंदूक, तोप आदि का निरन्तर छूटना, व्यापार में होनवाला लाभ, तलवार, छुरी आदि की धार, सान।

बाढ़ना–(हिं० क्रि०) देखो बढ़ना।

बाढ़ीवान–(हिं० पुं०) छुरी, कैंची आदि पर सान रखनेवाला।

बाण–(सं० पुं०) तीर, सायक, अग्नि।

बाणपथ–(सं० पुं०) उतनी दूरी जहाँ तक जा सके। **बाणविद्या**–(सं०स्त्री०) बाण चलाने की विद्या।

बाणिज्य–(सं० पुं०) व्यापार।

बात–(हिं० स्त्री०) वचन, फैली हुई चर्चा, उपदेश, सीख, रहस्य, प्रतिज्ञा, मान-मर्यादा, इच्छा, रीति, व्यवहार, प्रकृति, संबंध, अभिप्राय, विशेषता, बहाना, सन्देश, वार्तालाप।

बातचीत–(हिं० स्त्री०) वार्तालाप।

बाती–(हिं० स्त्री०) देखो बत्ती।

बातुल–(हिं० वि०) सनकी, बौड़हा।

बातूनिया, बातूनी–(हिं० वि०) बहुत बोलनेवाला, बकवादी।

बाद–(हिं० पुं०) तर्क, वितर्क, विवाद, झंझट; (अव्य०) निरर्थक।

बादना–(हिं० क्रि०) बकवाद करना।

बादर–(हिं० पुं०) बादल, मेघ।

बादरिया–(हिं० स्त्री०) देखो बादल।

बादल–(हिं० पुं०) मेघ।

बादला–(हिं० पुं०) सोने या चाँदी का महीन चिपटा किया हुआ तार जो कला-बत्तू बनाने के काम में आता है।

बादहवाई–(हिं० क्रि० वि०) व्यर्थ।

बादाम–(हिं० पुं०) जामुन आदि वृक्षों की तरह का एक पेड़ जिसका तना मोटा होता है, इसका फल मेवों में गिना जाता है।

बादामी–(हिं० वि०) बादाम के छिलके के रंग का, अण्डाकार।

बादि–(हिं० अव्य०) व्यर्थ।

बादिया–(हिं० पुं०) पेंच बनाने का लोहारों का एक अस्त्र।

बादुर–(हिं०पुं०) शत्रु, प्रतिद्वन्द्वी, चमगीदड़।

बाध–(सं० पुं०) प्रतिबन्ध, रुकावट, उपद्रव, कष्ट, पीड़ा, कठिनता।

बाधक–(सं० वि०) प्रतिबन्धक, दुःख-दायी। **बाधकता**–(सं० स्त्री०) बाधक का भाव या धर्म, बाधा।

बाधन–(सं० पुं०) कष्ट, पीड़ा, बाधा।

बाधना–(हिं० क्रि०) बाधा डालना, विघ्न करना।

बाधा–(सं० स्त्री०) कष्ट, पीड़ा, विघ्न, संकट, अड़चन।

बाधित–(सं० वि०) ग्रस्त, असङ्गत, जिसको सिद्ध करने में रुकावट हो।

बाध्य–(सं० वि०) रोका जानेवाला।

बान–(हिं० पुं०) बाण, तीर, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जो तीर के आकार की होती है, अभ्यास, बनावट; (पुं०) कान्ति, रंग।

बानइत–(हिं० वि०) बाण चलानेवाला योद्धा, वीर।

बानक–(हिं० स्त्री०) वेष, भेस।

बानगी–(हिं० स्त्री०) किसी माल का वह अंश जो गाहक को दिखलाने के लिये दिया जाता है।

बानबे–(हिं० वि०) नब्बे और दो की संख्या का; (पुं०) नब्बे और दो की संख्या ९२।

बानर–(हिं० पुं०) बन्दर।

बाना–(हिं०पुं०) वस्त्र, पहिनावा, भाले

के आकार का एक शस्त्र, कपड़े की बुनावट में वे तागे जो तान जाते हैं, भेस, स्वभाव, बुनाई।
बानात–(हिं० स्त्री०) देखो बनात।
बानि–(हिं० स्त्री०) बनावट, अभ्यास, वचन।
बानिक–(हिं० स्त्री०) वेश, शृंगार, सजधज।
बानिया–(हिं० स्त्री०) बनिया, व्यापारी।
बानी–(हिं० स्त्री०) वचन, प्रतिज्ञा, साधु महात्मा का उपदेश, वाणिज्य।
बानैत–(हिं० पुं०) बाण चलानेवाला योद्धा, सैनिक।
बान्धव–(सं० पुं०) भाई-बन्धु, नातेदार, मित्र।
बाप–(हिं० पुं०) पिता, जनक। **बापदादा**–पूर्व पुरुष, पुरखा। **बाप माँ**–पालन या रक्षा करनेवाला।
बापी–(हिं० स्त्री०) देखो वापी, बावली।
बापुरा–(हिं० वि०) तुच्छ, दीन, वेचारा।
बापू–(हिं० पुं०) देखो बाबू, बाप।
बाबरी–(हिं०स्त्री०) सिर पर के लंबे बाल।
बाबा–(हिं० पुं०) पिता, बाप, पितामह, दादा, वृद्ध पुरुष, एक आदरसूचक शब्द जो साधु-संन्यासियों के लिये प्रयुक्त होता है, लड़कों के लिये प्यार का शब्द।
बाबू–(हिं० पुं०) एक आदरसूचक शब्द, भला आदमी, पिता के लिये संबोधन, छोटे राजा के बन्धु-बान्धवों के लिये प्रयुक्त शब्द।
बाभन–(हिं० पुं०) ब्राह्मण।
बाम–(हिं० पुं०) देखो वाम।
बामी–(हिं० स्त्री०) देखो बाँबी।
बायँ–(हिं० वि०) बायाँ, खाली, चका हुआ, लक्ष्य पर न बैठा हुआ।
बाय–(हिं० स्त्री०) वायु, हवा।
बायक–(हिं० पुं०) दूत, बतलानेवाला।
बायन–(हिं० पुं०) भेंट, उपहार।
बायबी–(हिं०वि०) अपरिचित, बाहरी।
बायव्य–(हिं० पुं०) देखो वायव्य।
बायल–(हिं० वि०) जो दाँव खाली जाय।
बायस–(हिं० पुं०) देखो वायस।
बायाँ–(हिं० वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, बायें हाथ से बजाने का तबला।
बायें–(हिं० क्रि० वि०) विपरीत, विरुद्ध बाईं ओर।
बारंबार–(हिं० क्रि० वि०) पुनः पुनः, लगातार।
बार–(हिं० पुं०) द्वार, आश्रय, स्थान; (स्त्री०) काल, समय, अतिकाल; (पुं०) घेरा, रोक। **बारबार**–फिरफिर; (हिं० पुं०) देखो बाल।
बारजा–(हिं० पुं०) कोठा, अटारी, घर के आगे की दालान।
बारतीय–(हिं०स्त्री०) देखो बारस्त्री, वेश्या
बारन–(हिं० पुं०) देखो वारण, बालना, (हिं० क्रि०) मना करना, जलाना, जोंधरी, बाजरे आदि के दान अलगाना।
बारबधू, बारवधूटी (हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बारह–(हिं० वि०) दस और दो की संख्या का; (पुं०) दस और दो की संख्या १२।
बारहखड़ी–(हिं० स्त्री०) वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः इन बारह स्वरों को मात्रा के रूप में लगातार बोलते या लिखते हैं।
बारहदरी–(हिं० स्त्री०) चारों ओर से खुली हुई हवादार बैठक।
बारहमासी–(हिं० वि०) सब ऋतुओं में फलने फूलनेवाला।

बारहवां–(हिं० वि०) जो बारहवें स्थान में हो।
बारहसिंघा–(हिं० पुं०) हरिन की जाति का एक चौपाया जिसकी सींग में कई एक शाखा निकली रहती हैं।
बारा–(हिं० वि०) बाल्यावस्था का, जो सयाना न हो; (पुं०) महीन तार खींचने की जन्ती।
बारात–(हिं० स्त्री०) वरयात्रा, वह समाज जो वर के साथ उसको ब्याहने के लिये वधू के घर जाता है।
बारादरी–(हिं० स्त्री०) देखो बारहदरी।
बारिधर–(हिं० पुं०) मेघ, बादल।
बारिधि–(हिं० पुं०) देखो वारिधि।
बारिवाह–(हिं० पुं०) बादल।
बारी–(हिं० स्त्री०) तट, किनारा, धारा, बाढ़, बगीचे, खेत आदि के चारों ओर बना हुआ घेरा, किसी पात्र की कोर, अवसर, पारी, खिड़की, झरोखा, वह स्थान जहाँ वृक्ष लगाये गये हों।
बारीस–(हिं० पुं०) समुद्र।
बारुणी–(हिं० स्त्री०) देखो वारुणी।
बारू–(हिं० पुं०) देखो बालुका।
बाल–(सं० पुं०) बालक, लड़का, लोभ, केश, कुन्तल; (वि०) वह जो पूरी बाढ़ पर न पहुँचा हो; (स्त्री०) कुछ अन्न के पौधों के डंठल का अग्रभाग जिसमें दानों के गुच्छे लगे रहते हैं।
बालक–(सं० पुं०) पुत्र, शिशु, लड़का, थोड़ी वय का बच्चा, अबोध या अनजान मनुष्य, हाथी या घोड़े का बच्चा, केश, बाल। **बालकता**–(सं० स्त्री०) लड़कपन। **बालकताई**–(हिं० स्त्री०) बाल्यावस्था, लड़कपन।
बालकाल–(सं० पुं०) बाल्यावस्था।
बालकेलि–(सं० स्त्री०) लड़कों का खेल।
बालखोरा–(हिं० पुं०) सिर के बाल झड़ने का रोग।
बालगोपाल–(सं० पुं०) परिवार के बच्चे। **बालचरित**–(सं० पुं०) लड़कों का खिलवाड़।
बालटी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की डोलची जिसका नीचे का घेरा सँकरा तथा ऊपर का चौड़ा होता है।
बालधि–(हिं० स्त्री०) पूँछ।
बालना–(हिं० क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना।
बालपन–(हिं० पुं०) बाल्यावस्था, लड़कपन।
बालपुष्पी–(सं० स्त्री०) यूथिका, जूही।
बालबच्चे–(हिं० पुं०) सन्तान।
बालबुद्धि–(सं० स्त्री०) बालकों के समान बुद्धि। **बालबोध**–(सं० स्त्री०) देवनागरी लिपि। **बालब्रह्मचारी**–(सं० पुं०) वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो।
बालभाव–(सं० पुं०) लड़कपन।
बालम–(हिं० पुं०) पति, स्वामी, प्रेमी।
बाललीला–(सं० स्त्री०) लड़कों का खेल।
बालविधु–(सं० पुं०) अमावस्या के बाद के दिन का नवीन चन्द्रमा।
बालसूर्य–(सं०पुं०) उदय-काल का सूर्य।
बाला–(सं० स्त्री०) बारह वर्ष से सोलह वर्ष तक की स्त्री,एक प्रकार का आभूषण।
बालादित्य–(सं० पुं०) तुरत का उदय हुआ सूर्य।
बालापन–(हिं० पुं०)बचपन, लड़कपन।
बालार्क–(सं० पुं०) प्रातःकाल का सूर्य।
बालिका–(सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री।
बालिश–(सं० वि०) मूर्ख, अबोध।
बाली–(हिं० स्त्री०) कान में पहिनने का एक प्रसिद्ध आभूषण।

बालुका-(सं०स्त्री०) बालू। बालुका-यन्त्र-वह यन्त्र जिसमें औषधि फूंकने के लिये बालू भरी हाँड़ी में रक्खी जाती है।
बालू-(हिं० पुं०) पत्थर का वह महीन चूर्ण या कण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ पर से आता है और नदियों के किनारों पर जम जाता है, रेणुका, रेत।
बालूदानी-(हिं० स्त्री०) बालू रखने की झँझरीदार छोटी डिबिया जिसमें से बालू गिराकर मसि (रोशनाई) आदि सुखाई जाती है।
बालूसाही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।
बालेन्दु-(सं० पुं०) नया उदित चन्द्र।
बालेय-(सं० पुं०) रासभ, गदहा।
बाल्टी-(हिं० स्त्री०) देखो बालटी।
बाल्य-(सं० वि०) बालक संबंधी, बचपन का।
बाल्यावस्था-(सं० स्त्री०) लड़कपन।
बावड़ी-(हिं० स्त्री०) बावली, छोटा तालाब।
बावन-(हिं० वि०) पचास और दो की संख्या का; (पुं०) पचास और दो की संख्या ५२।
बावना-(हिं० वि०) देखो बौना।
बावभक-(हिं० स्त्री०) झक, पागलपन।
बावरा-(हिं० वि०) देखो बावला।
बावरी-(हिं० स्त्री०) देखो बावली।
बावल-(हिं० पुं०) अन्धड़, आँधी।
बावला-(हिं० वि०) विक्षिप्त, पागल।
बावलापन-(हिं० पुं०) झक, पागलपन।
बावली-(हिं० स्त्री०) सीढ़ियाँ लगा हुआ छोटा गहरा तालाब या चौड़े मुंह का कुआँ।
बावाँ-(हिं०वि०) बाईं ओर का, बायाँ।
बाष्प-(हिं० पुं०) भाप।
बास-(हिं० पु०) निवास, रहने का स्थान, गन्ध, महक।
बासठ-(हिं० वि०) साठ और दो की संख्या का; (पुं०) साठ और दो की संख्या, ६२। बासठवाँ-वह जो क्रम से बासठ के स्थान पर हो।
बासदेव-(हिं० पुं०) देखो वासुदेव।
बासन-(हिं० पुं०) पात्र, भांड।
बासना-(हिं० स्त्री०) इच्छा, चाह; (क्रि०) सुवासित करना, मँहकाना।
बासर-(हिं०पुं०) वासर, दिन, प्रातःकाल।
बाससी-(सं० पुं०) वस्त्र, कपड़ा।
बासा-(हिं० पुं०) वह स्थान जहाँ पकी हुई रसोईं दाम देने पर मिलती है।
बासित-(हिं०वि०) सुगन्धित किया हुआ।
बासी-(हिं० वि०) देर का अथवा एक दिन पहले का बना हुआ खाना, जो हरा-भरा न हो, सूखा या कुम्हलाया हुआ, कुछ देर तक रक्खा हुआ।
बासौंधी-(हिं० स्त्री०) देखो बसौंधी।
बाहना-(हिं० क्रि०) ढोना, लादना या चढ़ाकर ले जाना, फेंकना, चलाना।
बाहनी-(हिं० स्त्री०) सेना।
बाहर-(हिं० क्रि० वि०) किसी निश्चित या कल्पित सीमा से हटकर, सिवाय, अलग, प्रभाव या अधिकार से पृथक्, किसी दूसरे स्थान पर, दूसरे नगर में।
बाहरी-(हिं० वि०) बाहर का, पराया, जो घर का न हो, जो बाहर से देखा जावे।
बाहाँजोरी-(हिं० क्रि० वि०) भुजा से भुजा अथवा हाथ से हाथ मिलाकर।
बाहिनी-(हिं० स्त्री०) सेना, नदी, यान।
बाहिर-(हिं० क्रि० वि०) देखो बाहर।
बाहीं-(हिं० स्त्री०) देखो बाँह, बाहु।
बाहु-(सं० पुं०) भुजा, बाँह।

बाहुज्या–(सं० पु०) गणित की भुजज्या
बाहुत्राण–(सं० पुं०) चमड़, लोहे आदि का बना हुआ हस्तत्राण जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है।
बाहुमूल–(सं० पुं०) कन्धे और बाँह का जोड़, काँख। **बाहुयुद्ध**–(सं० पुं०) मल्लयुद्ध।
बाहुल्य–(सं० पुं०) आधिक्य, अधिकता।
बाहुवीर्य–(सं० पुं०) बाहुबल, पराक्रम।
बाहुशिखर–(सं० पुं०) स्कन्ध, कन्धा।
बाह्य–(सं० पुं०) भार ढोनेवाला पशु; (वि०) ढोनेवाला, बाहरी, बाहर का।
बिंग–(हिं० पुं०) देखो व्यंग।
बिंजन–(हिं० पुं०) देखो व्यंजन।
बिंद–(हिं० पुं०) पानी का बूंद, देखो बिन्दी।
बिंदा-(हिं० स्त्री०) माथे पर का गोल बड़ा टीका। **बिंदी**–(हिं० स्त्री०) शून्य सुन्ना, माथे पर लगाने का गोल छोटा टीका, इस आकार का कोई चिह्न। **बिंदुका**–(हिं० पुं०) बिन्दी, गोल टीका। **बिंदुरी, बिंदुली**–(हिं० स्त्री०) माथे पर का गोल टीका, टिकुली।
बिंधना–(हिं०क्रि०) छेदा जाना, उलझना।
बिंब–(हिं० पुं०) प्रतिबिंब, छाया।
बि–(हिं० वि०) दो, एक और एक।
बिअहुता–(हिं० वि०) विवाह संबंधी, जिसका विवाह हो गया हो।
बिआधि–(हिं० स्त्री०) देखो व्याधि।
बिआधु–(हिं० पुं०) देखो व्याध।
बिआना–(हिं०क्रि०) पशुओं का बच्चा देना, जनना।
बिआपी–(हिं० वि०) देखो व्यापी।
बिओग, बिओगी–(हिं० वि०) देखो वियोग, वियोगी।
बिकट–(हिं० वि०) देखो विकट।
बिकना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ का मूल्य लेकर दिया जाना, बेचा जाना।
बिकरम–(हिं० पुं०) देखो विक्रमादित्य।
बिकरार, बिकराल–(हिं० वि०) डरावना, भयानक।
बिकल–(हिं० वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ। **बिकलाई**–(हिं० स्त्री०) व्याकुलता। **बिकलाना**–(हिं० क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना।
बिकवाना–(हिं० क्रि०) बचने का काम दूसरे से कराना।
बिकसना–(हिं० क्रि०) खिलना, फूलना, बहुत प्रसन्न होना। **बिकसाना**–(हिं० वि०) विकसित कराना, खिलाना, प्रफुल्लित करना, प्रसन्न करना।
बिकाऊ–(हिं० वि०) बिकने योग्य, बिकनेवाला।
बिकाना–(हिं० क्रि०) देखो बिकना।
बिकार–(हिं० वि०) देखो विकार। **बिकारी**–(हिं० वि०) विकृत रूपवाला, हानिकारक।
बिकास–(हिं० पुं०) देखो विकास।
बिक्री–(हिं० स्त्री०) बेचे जाने की क्रिया या भाव।
बिख–(हिं० पुं०) विष, गरल।
बिखम–(हिं० पुं०) देखो विषम।
बिखरना–(हिं० क्रि०) छितराना।
बिखराना–(हिं० क्रि०) बिखेरना।
बिखाद–(हिं० पुं०) देखो विषाद।
बिखान–(हिं० पुं०) देखो विषाण।
बिखेरना–(हिं० क्रि०) छितराना।
बिग–(हिं० पुं०) भेड़िया।
बिगड़ना–(हिं० क्रि०) असली रूप-रंग या गुण का नष्ट हो जाना, क्रुद्ध होना, विरोधी होना, पशु आदि का अपने

रक्षक की आज्ञा से बाहर होना, बुरी अवस्था को प्राप्त होना, लड़ाई-झगड़ा होना, व्यर्थ व्यय होना।
बिगड़ैल–(हिं०वि०) थोड़ी बात पर क्रुद्ध होनेवाला, हठ करनेवाला।
बिगरना–(हिं० क्रि०) देखो बिगड़ना।
बिगराइल–(हिं०वि०) देखो बिगड़ैल।
बिगलित–देखो विगलित। **बिगसना**–(हिं० क्रि०) देखो विकसना।
बिगहा–(हिं० पुं०) देखो बीघा।
बिगाड़–(हिं० पुं०) वैमनस्य, लड़ाई-झगड़ा, बुराई। **बिगाड़ना**–(हिं०क्रि०) कुमार्ग में लगाना, बुरी अवस्था में लाना, व्यर्थ व्यय करना।
बिगार–(हिं० पुं०) देखो बिगाड़।
बिगारी–(हिं० स्त्री०) देखो बेगारी।
बिगास–(हिं० पुं०) देखो विकास।
बिगासना–(हिं०क्रि०) विकसित करना।
बिगुन–(हिं० वि०) गुणरहित।
बिगुर–(हिं० वि०) बिना गुरु का।
बिगूचन–(हिं० स्त्री०) असमंजस, कठिनता। **बिगूचना, बिगूतना**–(हिं० क्रि०) संकोच में पड़ना।
बिगोना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना, व्यग्र करना, छिपाना।
बिग्रह–(हिं० पुं०) देखो विग्रह।
बिघटना–(हिं० क्रि०) बिगाड़ना।
बिघन–(हिं० पुं०) देखो विघ्न।
बिच–(हिं० वि०) देखो बीच।
बिचकना–(हिं० क्रि०) भड़कना।
बिचकाना–(हिं० क्रि०) मुँह चिढ़ाना।
बिचच्छन–(हिं० वि०) देखो विचक्षण।
बिचलना–(हिं० क्रि०) विचलित होना, कोई बात कहकर मुकर जाना।
बिचला–(हिं०वि०) बीच का, बीचवाला।
बिचलाना–(हिं०क्रि०) विचलित करना।
बिचवान, बिचवानी–(हिं०पुं०) मध्यस्थ।
बिचहुत–(हिं०पुं०) सन्देह, दुबिधा अन्तर।
बिचारना–(हिं०क्रि०) विचार करना।
बिचारमान–(हिं० वि०) विचार करनेवाला, विचारने योग्य।
बिचारा–(हिं० वि०) देखो बेचारा।
बिचारी–(हिं०वि०) विचार करनेवाला।
बिचाल–(हिं० पुं०) अन्तर।
बिचेत–(हिं० वि०) अचेत, मूर्छित।
बिचौहा–(हिं० पुं०) मध्यस्थ।
बिच्छी, बिच्छू–(हिं० पुं०) एक छोटा विषैला कीड़ा जिसकी पूंछ में डंक होता है जिसमें विष रहता है, एक प्रकार की घास जिसके छू जाने से बिच्छू के काटने के समान जलन और पीड़ा उत्पन्न होती है।
बिच्छेप–देखो विक्षेप।
बिछना–(हिं० क्रि०) फैलाया जाना।
बिछलन–(सं० पुं०) फिसलन।
बिछलाना–(हिं० क्रि०) फिसलाना।
बिछवाना–(हिं० क्रि०) बिछाने का काम दूसरे से कराना।
बिछाना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को भूमि पर कुछ दूर तक फैला देना।
बिछावन, बिछायत–(हिं०पुं०) बिछौना।
बिछिया–(हिं० स्त्री०) पैर की अँगुलियों में पहिनने का एक प्रकार का छल्ला।
बिछिप्त–(हिं० वि०) देखो विक्षिप्त।
बिछुआ–(हिं० पुं०) पैर में पहिनने का एक प्रकार का गहना, एक प्रकार की छोटी छुरी।
बिछुड़न–(हिं० स्त्री०) बिछुड़ने या अलग होने का भाव, वियोग। **बिछुड़ना**–(हिं० क्रि०) दो प्रेमियों का परस्पर वियोग होना।
बिछुरना–(हिं० क्रि०) देखो बिछुड़ना।

बिछुरनि–(हिं० स्त्री०) बिछुड़न।
बिछुरन्ता–(हिं० पुं०) बिछुड़नेवाला।
बिछूना–(हिं०पुं०) वह जो बिछुड़ गया हो।
बिछोई–(हिं० पुं०) वियोगी।
बिछोड़ा–(हिं० पुं०) बिछोह।
बिछोय, बिछोह–(हिं०पुं०) वियोग, विरह।
बिछोयना–(हिं० क्रि०) वियोग करना।
बिछौना–(हिं० पुं०) बिछावन, बिस्तर।
बिजड़–(हिं० स्त्री०) खड्ग, तलवार।
बिजन, बिजना–(हिं० पुं०) व्यजन, पंखा; (वि०) एकान्त।
बिजली–(हिं० स्त्री०) वह शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे कभी-कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है, विद्युत्, बादलों के टकराने तथा रासायनिक क्रिया से उत्पन्न होनेवाला वह प्रकाश जो आकाश में कभी-कभी देख पड़ता है, कान में पहिनने का एक गहना, गले में पहिनने का एक आभूषण।
बिजाती–(हिं० वि०) दूसरी जाति का, दूसरी तरह का।
बिजान–(हिं० वि०) अज्ञान।
बिजायठ–(हिं० पुं०) बाजूबन्द।
बिजुरी–(हिं० स्त्री०) देखो बिजुली।
बिजूका, बिजूखा–(हिं०पुं०) विभीषिका, पशु-पक्षियों को डराने के लिय खेत में गाड़ा हुआ पुतला।
बिजोग–(हिं० पुं०) वियोग।
बिजोरा–(हिं० वि०) निर्बल, बलहीन।
बिज्जु–(हिं० स्त्री०) बिजली, विद्युत्।
बिज्जुपात–(हिं० पुं०) बिजली का गिरना। बिज्जुल–(हिं०स्त्री०) बिजली।
बिझरा–(हिं० पुं०) एक में मिला हुआ मटर, चना, गेहूँ और जव।
बिझुकना–(हिं० क्रि०) भयभीत होना।
बिझुकाना–(हिं० क्रि०) भड़काना, डराना।
बिटरना–(हिं० क्रि०) घँघोलना।
बिटिनियाँ, बिटिया–(हिं० स्त्री०) बेटी, पुत्री।
बिठलाना–(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।
बिठाना–(हिं० क्रि०) बैठाना।
बिड़ब–(हिं० पुं०) विडम्ब, आडम्बर।
बिड़बना–(हिं० पुं०) निन्दा, उपहास, हँसी-ठट्ठा।
बिडर–(हिं० वि०) निर्भय, ढीठ।
बिडरना–(हिं० क्रि०) तितर-बितर होना। बिडराना–(हिं०क्रि०) तितर-बितर करना।
बिड़वना–(हिं० क्रि०) तोड़ना।
बिडारना–(हिं०क्रि०) डराकर भगाना।
बिड़ाल–(सं० पुं०) बिलाव, बिल्ली।
बिड़ौजा–(सं० पुं०) इन्द्र का एक नाम।
बिढ़ती–(हिं० पुं०) लाभ।
बिढ़वना–(हिं० क्रि०) एकत्रित करना।
बित–(हिं० पुं०) धन, द्रव्य।
बितना–(हिं० पुं०) बित्ता।
बितनाना–(हिं० क्रि०) व्याकुल होना।
बितरना–(हिं० क्रि०) बाँटना।
बितवना–(हिं० क्रि०) बिताना।
बिता–(हिं० पुं०) देखो बित्ता।
बिताना–(हिं० क्रि०) समय आदि व्यतीत करना।
बिताल–(हिं० पुं०) देखो वैताल।
बितावना–(हिं० क्रि०) देखो बिताना।
बितीतना–(हिं० क्रि०) व्यतीत होना।
बितु–(हिं० पुं०) देखो बित्त।
बित्त–(हिं० पुं०) वित्त, धन।
बित्ता–(हिं० पुं०) हाथ की अँगुलियों को फैलाकर अँगूठे के सिरे तक की पूरी नाप।
बिथकना–(हिं० क्रि०) चकित होना।

बिथरना–(हिं० क्रि०) छितराना, खिल जाना।
बिथा–(हिं० स्त्री०) देखो व्यथा, पीड़ा।
बिथारना–(हिं० क्रि०) बिखेरना।
बिथित–(हिं० वि०) देखो व्यथित।
बिथोरना–(हिं० क्रि०) देखो बिथरना।
बिदकना–(हिं० क्रि०) फटना, चिरना।
बिदकाना–(हिं० क्रि०) विदीर्ण करना, फाड़ना।
बिदरन–(हिं० स्त्री०) दरार, फटन; (वि०) फाड़ने या चीरनेवाला।
बिदलना–(हिं० क्रि०) दलित करना।
बिदला–(सं० वि०) जिसमें पत्ते न हों।
बिदा–(अ०स्त्री०)प्रस्थान,जानेकीआज्ञा।
बिदाई–(हिं० स्त्री०) बिदा होने का भाव या क्रिया, बिदा होने की आज्ञा।
बिदारना–(हिं०क्रि०)फाड़ना, नष्ट करना।
बिदुरना–(हिं० क्रि०) मुसकराना।
बिदुरानी–(हिं० स्त्री०) मुसकराहट।
बिदूषना–(हिं० क्रि०) कलंक या दोष लगाना।
बिदेस–(हिं० पुं०) अन्य देश, परदेश।
बिदोख–(हिं०पुं०)वैमनस्य, वैर, शत्रुता।
बिदोरना–(हिं० क्रि०) ओंठ चलाना।
बिधंसना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना।
बिध–(हिं० पुं०) ब्रह्मा, प्रकार, तरह, आय-व्यय का लेखा।
बिधना–(हिं०पुं०)विधि, विधाता, ब्रह्मा।
बिधवपन–(हिं० पुं०) वैधव्य, रँड़ापा।
बिधवा–(हिं० स्त्री०) विधवा।
बिधांसना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना।
बिधाना–(हिं० क्रि०) देखो बिंधाना।
बिधानी–(हिं० पुं०)रचने या बनानेवाला।
बिधि–देखो विधि।
बिधिना–(हिं० स्त्री०) देखो बिधना।
बिंतुद–(हिं० पुं०) राहु।
बिधुंसना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना।
बिधु–देखो विधु।
बिन–(हिं० अव्य०) बिना।
बिनई–(हिं० वि०) देखो विनयी।
बिनऊ–(हिं० स्त्री०) देखो विनय।
बिनति, बिनती–(हिं० स्त्री०) निवेदन प्रार्थना।
बिनन–(हिं० स्त्री०) बुनने की क्रिय. बुनावट, चुनकर निकाला हुआ कूड़ा करकट।
बिनना–(हिं० क्रि०) छोटे-छोटे पदार्थों को एक-एक करके अलग करना, देखो बुनना।
बिनय–(हिं० पुं०) देखो विनय।
बिनवना–(हिं० क्रि०) प्रार्थना करना।
बिनसना–(हिं० क्रि०) नष्ट होना या करना। बिनसाना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना।
बिना–(हिं० अव्य०) छोड़कर।
बिनाई–(हिं० स्त्री०) बीनने-चुनने की क्रिया या भाव, इस कार्य का शुल्क।
बिनाती–(हिं० स्त्री०) देखो बिनती।
बिनाना–(हिं० क्रि०) देखो बुनना।
बिनानी–(हिं० वि०) अज्ञानी।
बिनावट–(हिं० स्त्री०) देखो बुनावट।
बिनासना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना।
बिनि, बिनु–(हिं० अव्य०) बिना।
बिन–(हिं० स्त्री०) देखो विनय।
बिनौला–(हिं० पुं०) कपास का बीज।
बिन्दु–(हिं० पुं०) देखो विन्दु, बूंद।
बिपच्छ–(हिं० पुं०)विपक्ष, शत्रु; (वि०) विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध।
बिपच्छी–(हिं० पुं०) शत्रु, विरोधी।
बिपत–(हिं० स्त्री०) देखो विपत्ति।
बिपद, बिपत्ति–(हिं० स्त्री०) देखो विपत्ति।

बिपरीत–(हिं० वि०) प्रतिकूल।
बिफरना–(हिं० क्रि०) विद्रोही होना।
बिबरन–(हिं० वि०) जिसका रंग बिगड़ गया हो, देखो विवरण।
बिबस–(हिं० वि०) विवश, पराधीन।
बिबहार–(हिं० पुं०) देखो व्यवहार।
बिबाक–(हिं० वि०) चुकता।
बिबाहना–(हिं० क्रि०) विवाह करना।
बिबि–(हिं० वि०) दो।
बिभावरी–(हिं० स्त्री०) रात्रि।
बिभु–देखो विभु।
बिमन–(हिं० वि०) अति दुखी, चिन्तित, उदास।
बिमान–देखो विमान।
बिमानी–(हिं० वि०) मानरहित।
बिमोहना–(हिं० क्रि०) मोहित करना।
बिमौरा–(हिं० पुं०) वल्मीक, बाँबी।
बिम्ब–(सं० पुं०) प्रतिबिम्ब, छाया।
बिय–(हिं० वि०) युग्म, दो, दूसरा।
बियत–(हिं० पु०) बियत्, आकाश।
बिया–(हिं० पुं०) बीज; (वि०) अन्य, दूसरा। **बियाज**–(हिं०पुं०) देखो ब्याज।
बियाधा–(हिं० पुं०) देखो व्याधा।
बियाधि–(हिं० स्त्री०) देखो व्याधि।
बियान–(हिं० पुं०) प्रसव।
बियाना–(हिं०क्रि०) पशुओं का बच्चा देना
बियापना–(हिं० क्रि०) देखो व्यापना।
बियारी,बियालू–(हिं०स्त्री०) देखो ब्यालू।
बियाह–(हिं० पुं०) विवाह, ब्याह।
बियोग–देखो वियोग।
बिरकत–देखो विरक्त।
बिरङ्ग–(हिं० वि०) कई रंगों का।
बिरचना–(हिं० क्रि०) बनाना।
बिरंचि–(हिं० पुं०) ब्रह्मा।
बिरछ–(हिं० पुं०) देखो वृक्ष।
बिरज–(हिं० वि०) निर्दोष।
बिरझना–(हिं० क्रि०) झगड़ा करना।
बिरतंत–(हिं० पुं०) देखो वृत्तान्त।
बिरताना–(हिं० क्रि०) बाँटना।
बिरथा–(हिं०वि०) वृथा, व्यर्थ, निरर्थक।
बिरद–(हिं० वि०) बड़ाई, यश।
बिरदैत–(हिं० वि०) प्रसिद्ध, नामी।
बिरध–(हिं० वि०) देखो वृद्ध।
बिरधाई–(हिं०स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
बिरधापन–(हिं० पुं०) वृद्धावस्था।
बिरमना–(हिं० क्रि०) विराम करना, सुस्ताना, ठहरना। **बिरमाना**–(हिं० क्रि०) व्यतीत करना, बिताना।
बिरला–(हिं० वि०) कोई-कोई, इक्का-दुक्का।
बिरवा–(हिं० पुं०) वृक्ष, पौधा, चना।
बिरवाही–(हिं०स्त्री०) छोटे-छोटे पौधों का कुंज।
बिरषभ–(हिं० पुं०) देखो वृषभ।
बिरसन–(हिं० पुं०) विष, गरल।
बिरहा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का गीत।
बिरही–(हिं० पुं०) वियोग से पीड़ित पुरुष। **बिराग**–(हिं० पुं०) विरक्ति।
बिराजना–(हिं० क्रि०) शोभित होना, शोभा देना।
बिरान, बिराना–(हिं० वि०) दूसरा।
बिराना–(हिं० क्रि०) मुँह चिढ़ाना।
बिरिछि–(हिं० पुं०) देखो वृक्ष।
बिरियाँ–(हिं० स्त्री०) समय, बार।
बिरिया–(हिं० स्त्री०) कान में पहिनने का कटोरी के आकार का एक गहना।
बिरी–(हिं० स्त्री०) देखो बीड़ी, बीड़ा।
बिरुझना–(हिं० क्रि०) उलझना, झगड़ना।
बिरुद–(हिं० पुं०) प्रशंसा।
बिरुधाई–(हिं० स्त्री०) बुढ़ापा।
बिरूप–(हिं० पुं०) कुरूप।
बिरोधना–(हिं० पुं०) विरोध करना।

बिलंगी–(हिं०स्त्री०) अलगनी, अरगनी।
बिलंबना–(हिं० क्रि०) विलंब करना, देर करना।
बिल–(सं० पुं०) छेद, गुहा, कन्दरा।
बिलखना–(हिं० क्रि०) विलाप करना, रोना, दुःखी होना। **बिलखाना**–(हिं० क्रि०) दुःखी करना।
बिलग–(हिं० वि०) पृथक्, अलग; (पुं०) अलग होने का भाव।
बिलगाना–(हिं० क्रि०) पृथक् होना, अलगाना, चुनना, छाँटना।
बिलच्छन–(हिं० वि०) देखो विलक्षण।
बिलनी–(हिं० स्त्री०) काली भौंरी, आँख की पलक पर होनेवाली फुंसी।
बिलपना–(हिं० क्रि०) विलाप करना, रोना।
बिलबिलाना–(हिं० क्रि०) छोटे-छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना, असंबद्ध प्रलाप करना, व्याकुल होकर बकना, भूख से व्यग्रहोना, व्याकुल होकर रोना और चिल्लाना।
बिलम–(हिं० पुं०) देखो विलम्ब, देर।
बिलमना–(हिं० क्रि०) विलम्ब करना।
बिलमाना–(हिं० क्रि०) रोक रखना।
बिललाना–(हिं० क्रि०) विलाप करना।
बिलवाना–(हिं० क्रि०) नष्ट करना।
बिलवासी–(सं०वि०) बिल में रहनेवाला
बिलसना–(हिं० क्रि०) अच्छा जान पड़ना, शोभा देना। **बिलसाना**–(हिं० क्रि०) काम में लाना, दूसरे से भोग कराना।
बिलहरा–(हिं० पुं०) बाँस का बना हुआ एक प्रकार का चिपटा डब्बा।
बिलाई–(हिं० स्त्री०) बिल्ली, लोहे या लकड़ी की सिटकिनी जो किवाड़ों को बन्द करने के लिय लगाई जाती है।
बिलाना–(हिं० क्रि०) नष्ट होना, विलीन होना।
बिलापना–(हिं० क्रि०) विलाप करना।
बिलार–(हिं० पुं०) मार्जार, बिल्ला।
बिलारी–(हिं०स्त्री०) मार्जारी, बिल्ली।
बिलास–देखो विलास।
बिलासना–(हिं०क्रि०) भोग करना।
बिलूर–(हिं० पुं०) देखो बिल्लौर।
बिलैया–(हिं० स्त्री०) बिल्ली, सिटकिनी, कद्दूकस।
बिलोकना–(हिं० क्रि०) परीक्षा करना, देखना। **बिलोकनि**–(हिं० स्त्री०) दृष्टिपात, कटाक्ष।
बिलोड़ना–(हिं० क्रि०) व्यग्र होना।
बिलोन–(हिं० वि०) बिना नमक का, कुरूप; भद्दा।
बिलोना–(हिं० क्रि०) मथना, गिराना।
बिलोरा–(हिं०क्रि०) देखो बिलोड़ना।
बिलोलना–(हिं० क्रि०) हिलना, डोलना
बिलौर–(हिं० पुं०) देखो बिल्लौर।
बिल्ला–(हिं० पुं०) नर बिल्ली, चपरास की तरह की पतली पट्टी जो बाँह पर या गले में पहनी जाती है।
बिल्ली–(हिं० स्त्री०) सिटकिनी, बिलैया।
बिल्लूर, बिल्लौर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का स्वच्छ पारदर्शक पत्थर, स्फटिक।
बिल्लौरी–(हिं० वि०) बिल्लौर पत्थर का, बिल्लौर के समान स्वच्छ।
बिल्व–(सं० पुं०) बेल का वृक्ष।
बिल्वपत्र–(सं० पुं०) बेल की पत्ती।
बिषान–(हिं० पुं०) देखो विषाण।
बिसंच–(हिं० पुं०) बाधा, भय, डर।
बिसंभार–(हिं० वि०) असावधान।
बिस–(हिं० पुं०) देखो विष।
बिसकरमा–देखो विश्वकर्मा।
बिसतरना–(हिं०क्रि०) बढ़ाना, फैलाना।

बिसतार–देखो विस्तार।
बिसद–(हिं० वि०) देखो विशद।
बिसन–(हिं० पुं०) देखो व्यसन।
बिसनी–(हिं० वि०) जिसको किसी बात का व्यसन हो।
बिसमऊ–(हिं० पुं०) देखो विस्मय।
बिसमरना–(हिं० क्रि०) भूल जाना।
बिसमव–(हिं० पुं०) देखो विसमय।
बिसरना–(हिं० क्रि०) भूल जाना।
बिसराना–(हिं०क्रि०) ध्यान में न रखना।
बिसराम–(हिं० पुं०) देखो विश्राम।
बिसवास–(हिं० पुं०) देखो विश्वास।
बिसवासी–(हिं०वि०) जिस पर विश्वास किया जा सके।
बिसहर–(हिं० पुं०) सर्प, साँप।
बिसहरू–(हिं० पुं०) मोल लेनेवाला।
बिसाना–(हिं० क्रि०) वश में होना।
बिसायँध–(हिं० वि०) सड़ी मछली की गन्धवाला; (स्त्री०) सड़ी मछली के समान गन्ध।
बिसारद–(हिं० पुं०) देखो विशारद।
बिसारना–(हिं०क्रि०) भुलाना, बिसार देना
बिसारा–(हिं० वि०) विष भरा हुआ।
बिसास–(हिं० पुं०) विश्वास। **बिसासनी, बिसासिनी**–(हिं० स्त्री०) जिस पर विश्वास न किया जा सके।
बिसासी–(हिं० वि०) छली, कपटी।
बिसाह–(हिं० पुं०) क्रय।
बिसाहना–(हिं० क्रि०) मोल लेना, अपने साथ करना।
बिसाहा–(हिं०पुं०) मोल ली हुई वस्तु, सौदा
बिसिख–(हिं० पुं०) देखो विशिख।
बिसियर–(हिं० वि०) विषैला।
बिसूरना–(हिं० क्रि०) चिन्ता करना; (स्त्री०) चिन्ता।
बिसेखना–(हिं० क्रि०) ब्यौरेवार वर्णन करना।
बिसेस–(हिं० वि०) देखो विशेष।
बिसेसर–(हिं० पुं०) देखो विश्वेश्वर।
बिस्तर–(हिं० पुं०) बिछौना, विस्तार, बढ़ाव। **बिस्तरना**–(हिं० क्रि०) विस्तारपूर्वक वर्णन करना या कहना।
बिस्तारना–(हिं० क्रि०) विस्तार करना, फैलाना। **बिस्तुइया**–(हिं० स्त्री०) गृहगोधा, छिपकिली।
बिस्मय, बिस्राम–देखो विस्मय, विश्राम।
बिस्वा–(हिं०पुं०) एक बीघे का बीसवाँ भाग
बिस्वास–(हिं० पुं०) देखो विश्वास।
बिहंग–(हिं० पुं०) पक्षी।
बिहंडना–(हिं० क्रि०) टुकड़े-टुकड़े करना।
बिहँसना–(हिं० क्रि०) मुस्कराना।
बिहँसाना–(हिं०क्रि०) प्रफुल्लित करना।
बिहग–(हिं० पुं०) देखो बिहङ्ग, पक्षी।
बिहबल–(हिं० पुं०) बिह्वल, व्याकुल।
बिहरना–(हिं० क्रि०) भ्रमण करना, विदीर्ण होना।
बिहरी–(हिं० स्त्री०) अंशदान, चन्दा।
बिहान–(हिं० पुं०) प्रातःकाल, सबेरा; (क्रि० वि०) कल्ह, कल।
बिहाना–(हिं० क्रि०) त्यागना, छोड़ना, बीतना।
बिहारना–(हिं० क्रि०) विहार करना।
बिहाल–(हिं० वि०) व्याकुल।
बिहि–(हिं० स्त्री०) देखो विधि।
बिहीन, बिहून–(हिं० वि०) विहीन, रहित, बिना।
बिहोरना–(हिं० क्रि०) देखो बिछुड़ना।
बींड़ा–(हिं० पुं०) मेड़रा, घास आदिकी बनी हुई गेड़ुरी।
बींधना–(हिं० क्रि०) बाँधना, छेदना
बी–(पुं०) बीज, दाना।
बीका–(हिं० वि०) वक्र, टेढ़ा।

बीख–(हिं० पुं०) पद, कदम, डग।
बीग–(हिं० पुं०) भेड़िया।
बीगना–(हिं० क्रि०) फेंकना, छितराना।
बीघा–(हिं० पुं०) खेत नापने का वह वर्गमान जो बीस बिस्वे का होता है।
बीच–(हिं० पुं०) किसी पदार्थ का मध्य भाग, अन्तर, अवसर, भेद; (स्त्री०) तरङ्ग, लहर।
बीचु–(हिं० पुं०) अन्तर, अवसर।
बीछना–(हिं० क्रि०) चुनना, छाँटना।
बीछी, बीछू–(हिं० पुं०) देखो बिच्छू, बिछुआ।
बीज–(सं० पुं०) प्रधान कारण, अंकुर, वृक्ष आदि के अंकुर का आधार।
बीजक–(सं० पुं०) वह सूची जिसमें माल का ब्यौरा, मूल्य आदि लिखा हो।
बीजक्रिया–(सं० स्त्री०) बीजगणित के किसी प्रश्न की क्रिया। **बीजगणित**–(सं० पुं०) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों की संख्याओं को द्योतक मानकर अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं।
बीजमन्त्र–(सं० पुं०) मूल मन्त्र।
बीजरी–(हिं० स्त्री०) देखो बिजली।
बीजल–(सं० वि०) बीजयुक्त।
बीजा–(हिं० वि०) दूसरा।
बीजाक्षर–(सं० पुं०) किसी बीजमन्त्र का पहला अक्षर। **बीजांकुर**–(सं० पुं०) प्रथम अंकुर, अँखुआ।
बीजी–(हिं०स्त्री०) गरी, मींगी, गुठली।
बीजु–(हिं० स्त्री०) बिजुली, विद्युत्।
बीजुपात–(हिं० पुं०) देखो वज्रपात।
बीजुरी–(हिं० स्त्री०) देखो बिजली।
बीजू–(हिं० वि०) जो (वृक्ष) बीज से उत्पन्न हो।
बीझना–(हिं०क्रि०) लिप्त होना, फँसना।
बीझा–(हिं० वि०) निर्जन, एकान्त।
बीट–(हिं० स्त्री०) पक्षियों की विष्ठा।
बीड़–(हिं० स्त्री०) एक के ऊपर दूसरे रक्खे हुए रुपयों की तही या गड्डी।
बीड़ा–(हिं० पुं०) पान की गिलौरी।
बीड़ी–(हिं० स्त्री०) बीड़ा, गड्डी, बीड़।
बीतना–(हिं० क्रि०) समय का व्यतीत होना, दूर होना, छूट जाना।
बीता–(हिं० पुं०) देखो बित्ता।
बीथित–(हिं० वि०) व्यथित, दुःखित।
बीथी–(हिं० स्त्री०) देखो वीथी।
बीधना–(हिं० क्रि०) फँसना, बींधना।
बीन–(हिं० स्त्री०) वीणा।
बीनना–(हिं० क्रि०) चुनना, छाँटकर अलगाना।
बीफै–(हिं० पुं०) बृहस्पतिवार, गुरुवार।
बीभत्स–(सं० पुं०) घृणा। **बीभत्सिक**–(सं० वि०) घृणित, निन्दित।
बीय–(हिं० वि०) देखो बीजा, दूसरा।
बीया–(हिं० वि०) द्वितीय, दूसरा; (पुं०) बीज, दाना।
बीर–(हिं० वि०) देखो वीर।
बीरन–(हिं० पुं०) भ्राता, भाई।
बीरा–(हिं० पुं०) देखो बीड़ा।
बीरो–(हिं० पुं०) वृक्ष, पेड़।
बीस–(हिं० वि०) दस की दूनी संख्या का; (पुं०) दस की दूनी संख्या, २०।
बीसवाँ–(हिं० वि०) बीस के स्थान पर पड़नेवाला।
बीसरना–(हिं० क्रि०) भूलना।
बीसी–(हिं० स्त्री०) बीस वस्तुओं का समूह, कोड़ी।
बीहड़–(हिं० वि०) विषम, ऊँचा-नीचा, विकट।
बुंद–(हिं० स्त्री०) बूँद, टोप; (वि०) थोड़ा-सा। **बुंदकी**–(हिं० स्त्री०) गोल छोटी बिन्दी, छोटा गोल चिह्न या धब्बा।

बुंदवान–(हिं० पुं०) छोटी-छोटी बूंदों की वर्षा ।
बुंदा–(हिं० पुं०) माथे पर लगाने की बड़ी टिकुली ।
बुंदिया–(हिं० स्त्री०) देखो बूंदी ।
बुंदीदार–(हिं० वि०) जिसमें छोटी-छोटी बिन्दियाँ बनी या लगी हों ।
बुंदौरी–(हिं० स्त्री०) बूंदी या बुंदिया नाम की मिठाई ।
बुआ–(हिं० स्त्री०) देखो बूआ ।
बुक–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपड़ा ।
बुकचा–(हिं० पुं०) वह गठरी जिसमें कपड़े बँधे हों । **बुकची**–(हिं० स्त्री०) छोटी गठरी ।
बुकनी–(हिं० स्त्री०) महीन पिसा हुआ चूर्ण, वह महीन चूर्ण जिसको पानी में घोलने से कोई रंग बनता है ।
बुकवा–(हिं० पुं०) उबटन, बटना ।
बुकस–(हिं० पुं०) भंगी, मेहतर ।
बुक्कस–(सं० पुं०) चाण्डाल ।
बुक्का–(हिं०पुं०) कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण ।
बुक्कार–(सं० पुं०) सिंह का गरजना ।
बुग–(हिं० पुं०) मच्छड़ ।
बुगचा–(हिं० पुं०) देखो बुकचा ।
बुगदर–(हिं० पुं०) मच्छड़ ।
बुझना–(हिं० क्रि०) जलने का अन्त होना, ठंडा होना ।
बुझाई–(हिं० स्त्री०) बुझाने की क्रिया या भाव ।
बुझाना–(हिं०क्रि०) जलते हुए पदार्थ को ठंडा करना, सन्तोष देना, जी भरना ।
बुटना–(हिं० क्रि०) माँगना ।
बुड़की–(हिं० स्त्री०) डुबकी, गोता ।
बुड़ना–(हिं० क्रि०) देखो बूड़ना ।
बुड़बुड़ाना–(हिं० क्रि०) बड़बड़ करना ।
बुड़ाना–(हिं०क्रि०) डुबाना, गोता देना ।
बुड़ाव–(हिं० पुं०) डुबाव ।
बुड्ढा–(हिं० वि०) जिसका वय अधिक हो गया हो ।
बुढ़वा–(हिं० वि०) देखो बुड्ढा ।
बुढ़ाई–(हिं० स्त्री०) बुढ़ापा । **बुढ़ाना**–(हिं० क्रि०) बुड्ढा होना । **बुढ़ापा**–(हिं० पुं०) वृद्धावस्था । **बुढ़ौती**–(हिं० स्त्री०) बुढ़ापा ।
बुतना–(हिं० क्रि०) देखो बुझना ।
बुताना–(हिं० क्रि०) बुझाना ।
बुत्ता–(हिं० पुं०) बहाना, धोखा ।
बुदबुदा–(हिं० पुं०) बुलबुला, बुल्ला ।
बुद्बुद–(सं० पुं०) बुलबुला, बुल्ला ।
बुद्ध–(सं० वि०) जागा हुआ, ज्ञानी, विद्वान्, पण्डित ।
बुद्धि–(सं० स्त्री०) मन की वह शक्ति जिसके अनुसार मनुष्य किसी उपस्थित विषय के संबंध में ठीक-ठीक विचार या निर्णय करता है, ज्ञान ।
बुद्धिपर–(सं० वि०) जहाँ तक बुद्धि न पहुँच सके । **बुद्धिपूर्ण**–(सं० वि०) जो जान-बूझकर किया गया हो । **बुद्धिमत्ता**–(सं० स्त्री०) बुद्धिमानी । **बुद्धिवंत**–(हिं० वि०) बुद्धिमान् । **बुद्धिशाली, बुद्धिशील**–(सं० वि०) बुद्धिमान् । **बुद्धिहीन**–(सं० वि०) जिसमें बुद्धि न हो ।
बुध–(सं० पुं०) विद्वान्, पण्डित ।
बुधवार–(सं० पुं०) सात वारों में से एक वार जो मंगलवार के बाद और गुरुवार के पहले होता है ।
बुनना–(हिं० क्रि०) ताने-बाने की सहायता से कपड़ा तैयार करने की क्रिया ।
बुनाई–(हिं० स्त्री०) बुनने की क्रिया

या भाव। **बुनावट**–(हिं० स्त्री०) बुनने में सूतों का संयोग।
बुबुकना–(हिं०क्रि०) उच्च स्वर से रोना।
बुबुकारी–(हिं०स्त्री०) उच्च स्वर से रोना।
बुबुधान–(सं० पुं०) आचार्य, पण्डित।
बुभुक्षा–(सं० स्त्री०) क्षुधा। **बुभुक्षित, बुभुक्षु**–(सं० वि०) क्षुधित।
बुरकाना–(हिं० क्रि०) भुरभुराने या छिड़कने का काम दूसरे से कराना।
बुरा–(हिं० वि०) निकृष्ट। **बुराई**–(हिं०स्त्री०) बुरापन, नीचता, खोटापन।
बुरापन–(हिं० पुं०) देखो बुराई।
बुलवाना–(हिं० क्रि०) बुलाने का काम दूसरे से करवाना।
बुलाक–(हिं० पुं०) एक लंबा सुराहीदार मोती जिसको स्त्रियाँ नथ में या दोनों नथनों के बीच के परदे में पहनती हैं।
बुलाना–(हिं० क्रि०) पुकारना, किसी को अपने पास आने के लिए कहना।
बुलावा–(हिं० पुं०) निमन्त्रण।
बुलौवा–(हिं० पुं०) देखो बुलावा।
बुल्लन–(हिं० पुं०) मुख, चेहरा, बुल्ला।
बुल्ला–(हिं० पुं०) बुदबुद, बुलबुला।
बुष, बुस–(सं० पुं०) अनाज के ऊपर का छिलका।
बुहारना–(हिं० क्रि०) झाड़ू से निर्मल करना।
बुहारी–(हिं० स्त्री०) झाड़ू, बढ़नी, सोहनी।
बूंद–(हिं० स्त्री०) जल आदि का थोड़ा अंश जो गिरते समय छोटी-सी गोली या दाने का रूप धारण करता है।
बूंदा–(हिं० पुं०) बड़ी टिकली, सुराहीदार लंबोतरा मोती जो कान या नाक में पहना जाता है। **बूंदाबूंदी**–(हिं० स्त्री०) अल्प वृष्टि, हलकी वर्षा।
बूंदी–(हिं० स्त्री०) वर्षा की बूंद, एक प्रकार की मिठाई, बूंदिया।
बूआ–(हिं०स्त्री०) पिता की बहिन, फूफी।
बूकना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ को पीसकर महीन चूर्ण करना, अपने से अधिक योग्य प्रमाणित करन के लिये गढ़कर बातें करना।
बूगा–(हिं० पुं०) भूसा।
बूचा–(हिं० वि०) कनकटा, भद्दा और कुरूप।
बूजना–(हिं० क्रि०) धोखा देना, छिपाना
बूझ, बूझन–(हिं० स्त्री०) बुद्धि, समझ, ज्ञान, पहेली। **बूझना**–(हिं० क्रि०) जानना, समझना।
बूट–(हिं० पुं०) चने का हरा दाना, होरहा।
बूटना–(हिं०क्रि०) भागना।
बूटा–(हिं० पुं०) वृक्ष, फल, पत्ते आदि के चित्र जो कपड़े, भीत आदि पर रंग-बिरंगे बनाये जाते हैं।
बूटी–(हिं० स्त्री०) वनस्पति, जड़ी, वनौषधि, भांग, ताश में बनी हुई टिक्की, फल-फूल के छोटे चिह्न जो वस्त्रादि पर बनाये जाते हैं।
बूढ़, बूढ़ा–(हिं० वि०) देखो बुड्ढा।
बूता–(हिं० पुं०) बल, पराक्रम।
बूरा–(हिं०पुं०) भूरे रंग की कच्ची चीनी, महीन चूर्ण।
बृच्छ–(हिं० पुं०) देखो वृक्ष।
बृहच्चञ्चु–(सं०पुं०) लंबी चोंचवाला।
बृहज्जाल–(सं० पुं०) बड़ी जाल।
बृहत्–(सं० वि०) विशाल, बहुत बड़ा, ऊँचा, दृढ़।
बेंग–(हिं० पुं०) भेक, मेढक।
बेंड़–(हिं० स्त्री०) चाँड़, थोक।
बेंड़ना–(हिं० क्रि०) बन्द करना।

बेंड़ा–(हिं० वि०) आड़ा, तिरछा, कठिन।
बेंड़–(हिं० पुं०) हवा की ओर घूमनेवाला एक यन्त्र, फरहरा।
बेंत–(हिं० पुं०) देखो बेत।
बेंदली–(हिं० स्त्री०) टिकली।
बेंदा–(हिं० पुं०) माथे पर लगाने का तिलक, टीका, स्त्रियों के माथे पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण।
बेंदी–(हिं० स्त्री०) टिकुली, बिंदी।
बेंवड़ा–(हिं० पुं०) वह लकड़ी जो बन्द द्वार के पीछे लगाई जाती है, अरगल।
बेंवताना–(हिं० क्रि०) किसी से कपड़ा नपवाना।
बेअंत–(हिं० वि०) जिसका अंत न हो।
बेआरा–(हिं० वि०) एक में मिला हुआ जव और चना।
बेकल–(हिं० वि०) व्याकुल, व्यग्र।
बेकली–(हिं०स्त्री०)व्यग्रता, घबड़ाहट।
बेकहा–(हिं० वि०) जो किसी का कहना न मानता हो।
बेकाम–(हिं० वि०) निकम्मा; (क्रि० वि०) निरर्थक, व्यर्थ।
बेकार्‌थो–(हिं०पुं०)पुकारने का संबोधन का शब्द।
बेखटक–(हिं० वि०) बिना संकोच या असमंजस का; (क्रि०वि०)बिना आगा-पीछा किये हुए।
बेग–(हिं० पुं०) देखो वेग, चमड़े, कपड़े आदि का बना हुआ थैला।
बेगना–(हिं० क्रि०) शीघ्रता करना।
बेगर–(हिं० पुं०) अचार में मिलाया हुआ मसाला।
बेगसर–(हिं० पुं०) खच्चर।
बेगि–(हिं० क्रि० वि०)शीघ्रता से, तुरंत।
बेचना–(हिं०क्रि०) विक्रय करना।
बेचवना, बेचाना–(हिं० क्रि०) देखो बिकवाना।
बेझना–(हिं० क्रि०) देखो बेधना।
बेझरा–(हिं० पुं०) गेहूँ, जव, चना, मटर आदि में से दो या तीन मिले हुए अन्न।
बेटा–(हिं० पुं०) पुत्र, लड़का।
बेटौना–(हिं० पुं०) बेटा।
बेठन–(हिं० पुं०) कपड़े का टुकड़ा जो किसी वस्तु के लपेटने के काम में आता है, बँधना।
बेठिकाने–(हिं० वि०) निरर्थक, बिना सिर-पैर का।
बेड़–(हिं० पुं०)मेड़, थाला, नगद रुपया।
बेड़ना–(हिं० क्रि०) छोटी भीत खड़ी करना, थाला बाँधना।
बेड़ा–(हिं० पुं०) लट्ठे, बाँस आदि को एक में बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी पर चलते हैं, तिराना, नाव, बहुत-सी नाव या जहाजों का समूह।
बेड़ी–(हिं० स्त्री०) लोहे की कड़ी जो अपराधियों के पैर में डाल दी जाती है।
बेडौल–(हिं० वि०) भद्दा, बेढंगा।
बेढंग, बेढंगा–(हिं० वि०)कुरूप, भद्दा।
बेढंगपन–(हिं० पुं०) भद्दापन।
बेढ़–(हिं० पुं०) नाश।
बेढ़ई–(हिं० स्त्री०) पीठी आदि भरी हुई कचौड़ी।
बेढब–(हिं०वि०)जिसका ढंग अच्छा न हो।
बेढ़ाना–(हिं०क्रि०)ओढ़ाना, घिरवाना।
बेणीफूल–(हिं०पुं०) सिर पर पहनने का एक प्रकार का गहना, सीसफल।
बेत–(हिं० पुं०) एक प्रकार की लचीली नरकट, आकाश, वियत्।
बेतना–(हिं० क्रि०) प्रतीत होना, जान पड़ना।

बेतार–(हिं०वि०) बिना तार का, जिसमें तार न हो।
बेताल–(हिं०पुं०) देखो वेताल, भाट, बन्दी।
बेतुला–(हिं० वि०) बेढंगा।
बेद–(हिं० पुं०) देखो वेद।
बेदना–देखो वेदना।
बेदाना–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार।
बेधड़क–(हिं० क्रि० वि०) बिना किसी प्रकार के संकोच, भय या आशंका के; (वि०) निर्भर, निडर।
बेधना–(हिं० क्रि०) किसी नुकीली वस्तु से छेद करना।
बेधर्म–(हिं० क्रि०) जिसको अपने धर्म का ध्यान न हो।
बेधिया–(हिं० पुं०) अंकुश।
बेधीर–(हिं० वि०) देखो अधीर।
बेन–(हिं० पुं०) बंसी, मुरली, सँपेरे की तुमड़ी।
बेना–(हिं० पुं०) बाँस का बना हुआ छोटा पंखा, व्यजन।
बेनागा–(हिं० क्रि० वि०) निरन्तर।
बेनी–(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की चोटी, वेणी।
बेनु–(हिं० पुं०) देखो वेणु, बंसी, मुरली, बाँस।
बेपाई–(हिं०वि०) हक्का-बक्का, भौंचक।
बेपार, बेपारी–देखो व्यापार, व्यापारी।
बेपेंदी–(हिं० वि०) इधर उधर लुढ़कनेवाला।
बेबस–(हिं० वि०) विवश, लाचार।
बेबसी–(हिं०स्त्री०) विवशता, पराधीनता।
बेबहा–(हिं० वि०) अमूल्य।
बेब्याहा–(हिं०वि०) अविवाहित, कुँआरा।
बेमन–(हिं० क्रि०वि०) बिना मन लगाये; (वि०) जिसका मन न लगता हो।
बेरखा–(हिं० पुं०) कलाई में पहनने का एक गहना, कड़ा।
बेरा–(हिं० पुं०) बेला, समय, एक में मिला हुआ चना और जव।
बेरिआ–(हिं० स्त्री०) समय, बेला।
बेरूप–(हिं० वि०) कुरूप।
बेर्रा–(हिं० पुं०) मिले हुए जव-चने का आटा।
बेलंब–(हिं० पुं०) देखो विलम्ब।
बेल–(हिं०पुं०) बिल्व, श्रीफल; (स्त्री०) वे छोटे कोमल पौध जो अपने बल पर ऊपर नहीं उठ सकते, लता, वल्ली, फीते पर बना हुआ जरदोजी या रेशम का काम।
बेलक–(हिं० पुं०) फरसा, फावड़ा।
बेलकी–(हिं० पुं०) चरवाहा।
बेलगिरी–(हिं० स्त्री०) बेल के फल का गूदा।
बेलड़ी–(हिं०स्त्री०) छोटी बेल या लता।
बेलन–(हिं० पुं०) कोई लंबा गोल लुढ़कनेवाला पदार्थ।
बेलना–(हिं० पुं०) काठ का गोल लंबा टुकड़ा जो पूरी रोटी आदि को बेलने के काम में आता है; (हिं०क्रि०) चकले पर लोई रखकर बेलना से बढ़ाकर गोल करना तथा पतला करना, नष्ट करना।
बेलपत्ती, बेलपत्र–(हिं० पुं०) बेल के वृक्ष की पत्ती।
बेलपाता–(हिं० पुं०) देखो बेलपत्र।
बेलसना–(हिं०क्रि०) भोग-विलास करना
बेलहरा–(हिं० पुं०) बाँस या धातु की बनी हुई लंबोतरी पिटारी जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।
बेला–(हिं०पुं०) एक छोटा पौधा जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं।

बेलाग–(हिं० पुं०)जिसमें किसी प्रकार की लगावट न हो।
बेलि–(हिं० स्त्री०)देखो बेल। **बेलिया**–(हिं० स्त्री०) छोटी कटोरी।
बेलौस–(हिं० पुं०) सच्चा, खरा।
बेवपार–(हिं० पुं०) देखो व्यापार।
बेवरा–(हिं० पुं०) विवरण, ब्योरा।
बेवरेबाजी–(हिं० स्त्री०) धूर्तता।
बेवरेवार–(हिं० वि०) विवरण सहित।
बेवसाय–(हिं० पुं०) देखो व्यवसाय।
बेवस्था–(हिं० स्त्री०) देखो व्यवस्था।
बेवहरना–(हिं० क्रि०)व्यवहार करना।
बेवहरिया–(हिं० पुं०) लेन-देन का व्यवहार करनेवाला महाजन।
बेवहार–(हिं० पुं०) देखो व्यवहार।
बेवाई–(हिं०स्त्री०)देखो बेवाई। पैर के तलवे फटन का रोग।
बेवान–(हिं० पुं०) देखो विमान।
बेश–(हिं० पुं०) देखो वेश।
बेश्म–(हिं० पुं०) देखो वेश्म, गृह, घर।
बेसंभर–(हिं० वि०) बेसुध।
बेसन–(हिं० पुं०) चने का महीन आटा।
बेसर–(हिं०पुं०)नाक में पहनने की नथ।
बेसवा–(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बेसारा–(हिं०वि०)बैठने या ठहरनेवाला।
बेसाहना–(हिं० क्रि०) मोल लेना।
बेसाह, बेसाहा–(हिं०पुं०) माल, सौदा।
बेसी–(हिं० क्रि० वि०) अधिक।
बेसुध–(हिं० वि०) अचेत। **बेसुधी**–(हिं० स्त्री०)अचेत अवस्था।
बेसुर–(हिं० वि०) जिसका स्वर(संगीत में) ठीक न हो, बेमेल स्वर का।
बेसुरा–(हिं० वि०) जो नियमित स्वर में न हो।
बेस्वाद–(हिं०वि०) जो स्वादरहित हो।
बेहंगम–(हिं०वि०)बेढंगा, विकट, बेढब।
बेहंगमपन–(हिं०पुं०)बेढंगापन, भद्दापन।
बेहँसना–(हिं० क्रि०) ठट्ठा मारकर हँसना।
बेह–(हिं० पुं०) बेध, छिद्र, छेद।
बेहड़–(हिं० वि०) देखो बीहड़।
बेहन–(हिं० पुं०) अन्न आदि का बीज जो खेत में बोया जाता है, बीज।
बेहरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की चिपटी पिटारी; (वि०) पृथक्, अलग। **बेहराना**–(हिं०क्रि०) दरार होना, फटना।
बेहरी–(हिं० स्त्री०) अंशदान के रूप में इकट्ठा किया हुआ धन।
बेहला–(हिं० पुं०) सारंगी की तरह का एक प्रकार का अंग्रेजी बाजा।
बेंगन–(हिं० पुं०) भंटा। **बैंगनी**–(हिं० वि०) ललाई लिये नीले रंग का।
बेंजनी–(हिं० वि०) देखो बैंगनी।
बेंडा–(हिं० वि०) देखो बेंड़ा।
बै–(हिं० स्त्री०) बिक्री, बेंचना।
बैकल–(हिं० वि०) उन्मत्त, पागल।
बैगन–(हिं० पुं०) देखो बैंगन, भंटा।
बैगनी–(हिं० वि०) देखो बैंगनी।
बैठक–(हिं० स्त्री०) बैठने का स्थान, आसन, बैठने का ढंग, मेल।
बैठका–(हिं०पुं०)वह चौपाल या दालान, जहाँ पर बैठकर लोग बातचीत करते हैं।
बैठकी–(हिं० स्त्री०) आसन, आधार।
बैठन–(हिं०स्त्री०) बैठने का ढंग, बैठक, आसन।
बैठना–(हिं० क्रि०) स्थित होना, आसन जमाना, निरुद्योग रहना, समाना, ठीक होना, धँसना, व्यवसायहीन होना, पचक जाना, दबना।
बैठवाना–(हिं० क्रि०) बैठाने का काम दूसरे से कराना, पेड़-पौधे लगवाना।
बैठाना–(हिं० क्रि०) दबाकर बराबर

करना, पचकाना या धँसाना, लक्ष्य पर जमाना, सवार कराना, पौधे को लगाना, धुली हुई वस्तु को तल में जमाना, अभ्यस्त करना, नीचे की ओर ले जाना, पद पर स्थापित करना। **बैठारना, बैठालना**–(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।

बैताल–(हिं० पुं०) देखो बेताल।

बैद–(हिं० पुं०) देखो वैद्य, चिकित्सक। **बैदगी**–(हिं० स्त्री०) वैद्य की विद्या या व्यवसाय।

बैन–(हिं० पुं०) वार्ता, बात।

बैना–(हिं० पुं०) वह मिठाई, पकवान आदि जो विवाहादि उत्सवों के उपलक्ष में इष्ट-मित्रों के यहाँ भजा जाता है।

बैपार–(हिं० पुं०) देखो व्यापार।

बैपारी–(हिं० पुं०) व्यापार करनेवाला।

बैर–(हिं० पुं०) देखो वैर, शत्रुता, द्रोह, विरोध, बेर का वृक्ष या फल।

बैराखी–(हिं० स्त्री०) भुजा पर पहनने का एक गहना, बैरखी।

बैराग–(हिं० पुं०) देखो वैराग्य। **बैरागी**–(हिं० पुं०) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद। **बैराग्य**–(हिं० पुं०) देखो वैराग्य।

बैरी–(हिं० वि०) देखो वैरी, विरोधी, शत्रु।

बैल–(हिं० पुं०) एक चौपाया जिसकी मादा गाय कहलाती है, मूर्ख मनुष्य।

बैस–(हिं० स्त्री०) आयु, युवावस्था।

बैसना–(हिं० क्रि०) देखो बैठना।

बैसाख–(हिं० पुं०) चैत के बाद के महीने का नाम। **बैसाखी**-(हिं० वि०) वशाख महीने की; (हिं० पुं०) वह लाठी जिसको बगल में रखकर लँगड़े लोग टेककर चलते हैं।

बैसाना, बैसारना–(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।

बैहर–(हिं० वि०) भयानक, प्रचण्ड, क्रोधी; (स्त्री०) वायु, हवा।

बोंक–(हिं० पुं०) लोहे का मुड़ा हुआ कीला जो पल्ले के नीचे की कील में लगाया जाता है।

बोंगना–(हिं० पुं०) चौड़े मुख का एक प्रकार का पात्र।

बोआई–(हिं० स्त्री०) बोने का काम, बोने का वेतन।

बोझ–(हिं० पुं०) भार, गुरुत्व, भारीपन, कठिन कार्य। **बोझना**–(हिं० क्रि०) नाव, गाड़ी आदि पर माल रखना।

बोझल–(हिं० वि०) भारी। **बोझा**–(हिं० पुं०) देखो बोझ। **बोझाई**–(हिं० स्त्री०) बोझने या लादने का काम, इस काम का शुल्क।

बोटा–(हिं० पुं०) लकड़ी का छोटा-मोटा कटा हुआ टुकड़ा। **बोटी**–(हिं०स्त्री०) मांस का छोटा टुकड़ा।

बोड़री–(हिं० स्त्री०) नाभि, तोंदी।

बोड़ी–(हिं०स्त्री०) पौध, वृक्ष आदि की फली।

बोतल–(हिं० स्त्री०) काँच का लंबी गरदन का पात्र। **बोतलिया**–(हिं० वि०) बोतल के रंग का, हरा।

बोदर–(हिं० पुं०) ताल के किनारे का सिंचाई का पानी चढ़ाने का स्थान।

बोदा–(हिं० वि०) मूर्ख, मट्ठर। **बोदापन**–(हिं० पुं०) मूर्खता।

बोध–(सं० पुं०) ज्ञान, सन्तोष, धैर्य, धीरज। **बोधक**–(सं० पुं०) ज्ञापक। **बोधकर**–(सं० पुं०) जो प्रातःकाल किसी को जगाता है। **बोधगम्य**–(सं० वि०) समझ में आने योग्य।

बोधन–(हिं० पुं०) ज्ञापन, जताना, विज्ञापन, चैतन्य, संपादन। **बोधना**–(हिं० क्रि०) ज्ञान देना, समझाना।
बोधनीय–(सं० वि०) समझाने योग्य।
बोधित–(सं०वि०) ज्ञापित, जताया हुआ।
बोना–(हि० क्रि०) किसी दाने या फल के बीज को इसलिए मिट्टी में डालना जिसमें उसमें से अंकुर फूटें और पौधा उत्पन्न हो, बिखराना।
बोय–(हिं० स्त्री०) गन्ध, दुर्गन्ध।
बोर–(हि० पुं०) गुंबज के आकार का एक गहना जो सिर पर पहना जाता है।
बोरका–(हिं० पुं०) मिट्टी की दावात जिसमें लड़के खड़िया मिट्टी घोलकर रखते हैं।
बोरना–(हिं० क्रि०) डुबोना, कलंकित करना, योग देना, मिलाना, डुबाकर भिगोना।
बोरसी–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का वह पात्र जिसमें आग रक्खी जाती है, अँगीठी।
बोरा–(हिं० पुं०) अन्न आदि रखने का टाट का बना हुआ थैला।
बोरिया–(हिं० स्त्री०) छोटा थैला, बिस्तर, चटाई। **बोरी**–(हिं० स्त्री०) छोटा बोरा।
बोरी–(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा धान
बोल–(हि० पुं०) वचन, व्यंग, ताना, प्रतिज्ञा।
बोलता–(हिं० पुं०) आत्मा, बोलनेवाला प्राणी, मनुष्य, हुक्का, प्राण; (वि०) वाचाल, बकवादी। **बोलती**–(हिं० स्त्री०) वाक्, वाणी। **बोलनहारा**–(हिं०वि०) बोलनेवाला।
बोलना–(हिं० क्रि०) मुख से शब्द निकालना, कहना, पुकारना।
बोलवाना–(हिं०क्रि०) उच्चारण कराना।
बोलाचाली–(हिं०स्त्री०) देखो बोलचाल।
बोलाना–(हिं० क्रि०) देखो बुलाना।
बोलावा–(हिं० पुं०) निमंत्रण।
बोली–(हिं० स्त्री०) वाणी, अर्थयुक्त शब्द या वाक्य, वचन, नीलाम करनेवाले और लेनवाले का चिल्लाकर दाम कहना।
बोवाई–(हिं० स्त्री०) बोने की क्रिया।
बोवाना–(हिं० क्रि०) बोन का काम दूसरे से कराना।
बोह–(हिं० स्त्री०) डुबकी, गोता।
बोहनी–(हिं० स्त्री०) किसी दिन की पहली बिक्री।
बोहारी–(हिं० स्त्री०) झाड़ू।
बौंडर–(हिं० पुं०) चक्रवायु, बवंडर।
बौंड़ी–(हिं० स्त्री०) लता या पौधों के कच्चे फल, फली, छीमी।
बौआना–(हिं० क्रि०) स्वप्न की अवस्था में बोलना।
बौखल–(हिं०वि०) पागल, सनकी, झक्की।
बौखलाना–(हिं० क्रि०) सनक जाना।
बौखा–(हिं० स्त्री०) हवा का तीव्र झोंका।
बौछाड़–(हिं० स्त्री०) वायु के झोंके से तिरछी आती हुई पानी की बूंदों का समूह, झपास, ताना।
बौछार–(हिं० स्त्री०) देखो बौछाड़।
बौड़हा–(हिं० वि०) पागल, सनकी।
बौना–(हिं० पुं०) वामन, बहुत ठिंगना आदमी।
बौर–(हिं०पुं०) आम के वृक्ष की मंजरी।
बौरई–(हिं० स्त्री०) पागलपन, सनक।
बौरना–(हिं० क्रि०) आम के वृक्ष में मंजरी निकलना।
बौरहा–(हिं० वि०) विक्षिप्त, पागल।
बौराई–(हिं० स्त्री०) सनक, पागलपन।

बौराना–(हिं० क्रि०) पगला हो जाना, सनक जाना । **बौराहा**–(हिं० वि०) पागल, सनकी ।
ब्यंग, ब्यंजन–(हिं० पुं०) देखो व्यङ्ग, व्यञ्जन ।
ब्यतीतना–(हिं० क्रि०) बीतना ।
ब्यक्ति, ब्यञ्जन–(हिं० पुं०) देखो व्यक्ति, व्यञ्जन । **ब्यथा, ब्यथित**–(हिं० पुं०) देखो व्यथा, व्यथित ।
ब्यवसाय–(हिं० पुं०) देखो व्यवसाय ।
ब्यवस्था–(हिं० स्त्री०) देखो व्यवस्था ।
ब्यवहार–(हिं० पुं०) व्यवहार, रुपये का लेन देन ।
ब्यवहारिया–(हिं० वि०) रुपये का लेन-देन करनेवाला महाजन ।
ब्यवहारी–(हिं० वि०) व्यापारी, कार्य-कर्ता ।
ब्यसन, ब्यसनी–(हिं०वि०) देखो व्यसन, व्यसनी ।
ब्याज–(हिं० पुं०) वृद्धि, सूद ।
ब्याध, ब्याधा–(हिं० पुं०) देखो व्याध, व्याधा ।
ब्याधि–(हिं० स्त्री०) देखो व्याधि, रोग ।
ब्याना–(हिं० क्रि०) पशुओं का बच्चा पैदा करना ।
ब्यापना–(हिं० क्रि०) चारों ओर फैलना, ग्रसना, घेरना ।
ब्यापार–(हिं० पुं०) देखो व्यापार ।
ब्याल–(हिं० पुं०) देखो व्याल ।
ब्यालि–(हिं० स्त्री०) सर्पिणी, नागिन ।
ब्यालू–(हिं० पुं०) रात का भोजन ।
ब्याह–(हिं० पुं०) देखो विवाह, पाणि-ग्रहण । **ब्याहता**–(हिं० वि०) जिसके साथ विवाह हुआ हो । **ब्याहना**–(हिं० क्रि०) किसी का किसी के साथ विवाह संबंध कर देना । **ब्याहुता**–(हिं० वि०) विवाह संबंधी ।
ब्योंचना–(हिं० क्रि०) किसी अंग का मुरक जाना ।
ब्योंत–(हिं० पुं०) विवर, युक्ति, उपाय, साधन या सामग्री, पहनावा बनाने के लिये कपड़े की काट-छाँट, प्रबंध, आयोजन ।
ब्योंतना–(हिं० क्रि०) कोई पहनावा बनाने के लिये कपड़े को नापकर काटना-छाँटना । **ब्योंताना**–(हिं०क्रि०) शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटवाना ।
ब्योपार, ब्योपारी–(हिं०) देखो व्यापार, व्यापारी ।
ब्योरा–(हिं० पुं०) विवरण, वृत्तान्त, समाचार ।
ब्योसाय–(हिं० पुं०) देखो व्यवसाय ।
ब्योहर–(हिं० पुं०) रुपये का लेन-देन, व्यापार । **ब्योहरिया**–(हिं० पुं०) महा-जनी करनेवाला, सूद पर रुपया ऋण देनेवाला ।
ब्यौहर–(हिं० पुं०) देखो ब्योहर ।
ब्रजना–(हिं० क्रि०) चलना ।
ब्रह्मंड–(हिं० पुं०) देखो ब्रह्माण्ड ।
ब्रह्म–(सं० पुं०) आनन्दस्वरूप आत्मा, आत्मा, चैतन्य ।
ब्रह्मगति–(सं० स्त्री०) निर्वाण, मोक्ष । **ब्रह्मग्रन्थि**–(सं० पुं०) यज्ञोपवीत की मुख्य गाँठ । **ब्रह्मघाती**–(सं० वि०) ब्राह्मण की हत्या करनेवाला ।
ब्रह्मघ्न–(सं०वि०) ब्राह्मण को मारनेवाला ।
ब्रह्मचर्य–(सं०पुं०) एक आश्रम का नाम ।
ब्रह्मचारिणी–(सं० स्त्री०) ब्रह्मचर्य पालन करनेवाली स्त्री ।
ब्रह्मचारी–(सं० पुं०) उपनयन के बाद नियमपूर्वक वेदादि के अध्ययन के लिये गुरु के घर में रहनेवाला ।

ब्रह्मज्ञान–(सं० पुं०) ब्रह्म-विषयक ज्ञान, अपने आत्मा का यथार्थ अनुभव।
ब्रह्मज्ञानी–(सं० वि०) परमार्थ तत्त्व का ज्ञान रखनेवाला।
ब्रह्मत्व–(सं० पुं०) ब्राह्मणत्व। **ब्रह्मदण्ड**–(सं० पुं०) ब्राह्मण का शाप-रूपी दण्ड, ब्रह्मशाप। **ब्रह्मदोष**–(सं० पुं०) ब्रह्महत्या, ब्राह्मण की हत्या करने का पाप। **ब्रह्मपद**–(सं० पुं०) ब्रह्मत्व, मोक्ष, मुक्ति, ब्राह्मणत्व। **ब्रह्मभवन**–(सं० पुं०) ब्रह्मलोक। **ब्रह्मभोज**–(स०पुं०) ब्राह्मणों को भोजन कराना।
ब्रह्ममुहूर्त–(सं० पुं०) सूर्योदय के तीन-चार घड़ी पहले का समय, प्रभात।
ब्रह्मराक्षस–(सं० पुं०) वह ब्राह्मण जो मरकर प्रेत योनि को प्राप्त हुआ हो। **ब्रह्मलेख**–(सं० पुं०) भाग्य या अभाग्य का लेख। **ब्रह्मर्षि**–(सं० पुं०) ब्राह्मण ऋषि। **ब्रह्मलोक**–(सं० पुं०) वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। **ब्रह्मवाद**–(सं० पुं०) वेदपाठ। **ब्रह्मवादी**–(सं० पुं०) वेदान्ती, वेदों को पढ़ानेवाला। **ब्रह्मविद्या**–(सं० स्त्री०) ब्रह्मज्ञान। **ब्रह्मसूत्र**–(सं० पुं०) यज्ञोपवीत, जनेऊ। **ब्रह्महत्या**–(सं० स्त्री०) ब्राह्मण का वध।
ब्रह्मा–(सं० पुं०) वह जो सृष्टि की रचना करता है। **ब्रह्माक्षर**–(सं० पुं०) प्रणव, ओंकार। **ब्रह्माणी**–(सं०स्त्री०) ब्रह्मा की स्त्री, शक्ति, सावित्री, गायत्री, दुर्गा। **ब्रह्माण्ड**–(सं० पुं०) चौदहों भुवनों का समूह।
ब्राह्मण–(सं० पुं०) अग्रजन्मा, भूदेव, विप्र, ब्राह्मण जाति। **ब्राह्ममुहूर्त**–(सं० पुं०) अरुणोदय काल के प्रथम दो दण्ड।

भ

भ–हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ तथा पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
भ–(सं० पुं०) नक्षत्र, ग्रह, पर्वत, भ्रांति।
भंकार–(हिं० पुं०) भयंकर ध्वनि या शब्द।
भंग–(हिं० पुं०) खण्ड, टुकड़ा, भाँग।
भंगड़–(हिं० वि०) बहुत भाँग पीने-वाला।
भंगना–(हिं० क्रि०) तोड़ना, दबाना।
भंगार–(हिं० पुं०) वह गड्ढा जो कूप खनते समय पहले खोदा जाता है।
भंगी–(हिं०वि०) नष्ट होनेवाला; (पुं०) एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मल-मूत्र आदि उठाना है; (वि०) भँगेड़ी।
भंगुर–(हिं० वि०) नाशवान्।
भंगेड़ी–(हिं०पुं०) अधिक भाँग पीनेवाला।
भंजक–(हिं०वि०) तोड़नेवाला।
भंजन–(हिं० पुं०) तोड़ने का काम।
भँजना–(हिं० क्रि०) विभक्त होना, किसी बड़ी मुद्रा का छोटी मुद्रो में बदला जाना, भुनना।
भँजाना–(हिं० क्रि०) तोड़वाना, बड़ी मुद्रा के बदले में छोटी मुद्रा देना, भुनाना, रस्सी, कागज आदि को भाँजने में दूसरे को नियुक्त करना।
भंटा–(हिं० पुं०) बैंगन।
भंड–(हिं० पुं०) भाँड़।
भंडना–(हिं० क्रि०) भंग करना, तोड़ना, अपकीर्ति फैलाना।
भंडफोड़–(हिं०पुं०) भेद खोलने का काम।
भंडरिया–(हिं० पुं०) पाखंडी, ढोंगी, धूर्त; (स्त्री०) भीत का ताखा जिसमें पल्ले लगे हों।

भड़सार, भड़साल–(हि॰ स्त्री॰) वह गोदाम जहाँ सस्ता अन्न मोल लेकर महँगा बेचने के लिये इकट्ठा किया जाता है।
भंडा–(हि॰ पुं॰) पात्र, भाड़ा, भंडार, रहस्य, भेद।
भंडाना–(हि॰क्रि॰) नष्ट करना, तोड़ना।
भंडार–(हि॰पुं॰) कोष, कोठार, भंडारा।
भंडारा–(हि॰ पुं॰) झुंड, समूह, साधुओं का भोज। **भंडारी**–(हि॰ पुं॰) कोषाध्यक्ष, रसोइयादार।
भंडेरिया–(हि॰ पुं॰) देखो भंडरिया।
भंडेरियापन–(हि॰ पुं॰) पाखंड, ढोंग।
भंभरना–(हि॰ क्रि॰) भयभीत होना।
भंभा–(हि॰ पुं॰) विल, छद। **भंभाका**–(हि॰ स्त्री॰) कोई बड़ा छिद्र।
भंभाना–(हि॰ क्रि॰) गौ आदि पशुओं का चिल्लाना, रँभाना।
भंभेरि–(हि॰ स्त्री॰) भय, डर।
भँवना–(हि॰ क्रि॰) घूमना, फिरना, चक्कर लगाना।
भँवर–(हि॰ पुं॰) भौंरा, गड्ढा, जल के बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केन्द्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है।
भँवरकली–(हि॰ स्त्री॰) लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि चारों ओर घूम सके। **भँवरजाल**–(हि॰ पुं॰) संसार के झगड़े।
भँवरा–(हि॰ पुं॰) देखो भौंरा, भ्रमर।
भँवरी–(हि॰ स्त्री॰) भँवर, पानी का चक्कर, जन्तुओं के शरीर पर का वह स्थान जहाँ पर रोवें या बाल एक केन्द्र पर घूमे रहते हैं।
भँसना–(हि॰ वि॰) पानी के ऊपर तैरना, पानी में डाला या फेंका जाना।
भइया–(हि॰ पुं॰) भ्राता, भाई, एक आदरसूचक शब्द जो बराबरवालों के लिये प्रयुक्त होता है।
भक–(हि॰ वि॰) आग के एकाएक जलने या धुवें के निकलने से उत्पन्न शब्द।
भकभकाना–(हि॰ क्रि॰) प्रदीप्त होना।
भकक्षा–(सं॰ स्त्री॰) नक्षत्र की कक्षा।
भकराँध–(हि॰ स्त्री॰) अन्न के सड़ने की गन्ध।
भकराँधा–(हि॰ वि॰) सड़ा हुआ।
भकसा–(हि॰ वि॰) जो अधिक समय तक पड़ा रहने के कारण दुर्गन्धयुक्त हो गया हो। **भकसाना**–(हि॰ क्रि॰) किसी खाद्य पदार्थ का दुर्गन्धित और कसैला हो जाना।
भकाऊँ–(हि॰ पुं॰) बच्चों को डराने का शब्द, हौवा।
भकार–(सं॰ पुं॰) 'भ' स्वरूप वर्ण।
भकुआ–(हि॰ वि॰) मूढ़, मूर्ख। **भकुआना**–(हि॰ क्रि॰) व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
भकोसना–(हि॰ क्रि॰) बिना अच्छी तरह से कुचले खा जाना, निगलना।
भक्त–(सं॰ पुं॰) भात; (वि॰) तत्पर, भक्तियुक्त। **भक्तवत्सल**–(सं॰ स्त्री॰) भक्तों पर स्नेह करनेवाला। **भक्तशाला**–(सं॰ स्त्री॰) रसोइया घर।
भक्ति–(सं॰ स्त्री॰) सेवा, शुश्रूषा, श्रद्धा, विश्वास, पूजा, अर्चन, स्नेह, अनुराग।
भक्ष–(सं॰ पुं॰) अशन, खाने का काम, खाने का पदार्थ। **भक्षक**–(सं॰ वि॰) खानेवाला। **भक्षकार**–(सं॰ पुं॰) हलवाई। **भक्षना**–(हि॰ क्रि॰) भोजन करना, खाना। **भक्षणीय**–(सं॰वि॰)

खाने योग्य। भक्षयिता–(सं०वि०)खानेवाला। भक्षित–(सं०वि०)खाया हुआ।
भक्षी–(सं० वि०) भक्षक, खानेवाला।
भक्ष्य–(सं०वि०)खाने योग्य; (पुं०)अन्न, आहार। भक्ष्यकार–हलवाई। भक्ष्याभक्ष्य–(सं० पुं०) खाने तथा न खाने योग्य पदार्थ।
भख–(हिं० पुं०) आहार, भोजन।
भखना–(हिं०क्रि०)भोजन करना, खाना।
भग–(सं० पुं०) स्त्री की योनि, मोक्ष, सौभाग्य, कान्ति।
भगत–(हिं० पुं०) भक्त, सेवक, उपासक।
भगदड़, भगदर–(हिं०स्त्री०) किसी कारण से त्रस्त होकर बहुत से लोगों का एकाएक भागना।
भगतबछल–(हिं०वि०) देखो भक्तवत्सल।
भगति–(हिं० स्त्री०) देखो भक्ति।
भगती–(हिं०स्त्री०)देखो भक्ति। भगन–(हिं० वि०) देखो भग्न।
भगना–(हिं०पुं०) बहन का पुत्र, भांजा।
भगली–(हिं० स्त्री०) देखो भगिनी।
भगन्दर–(सं० पुं०) गुदा में व्रण होने का रोग।
भगर–(हिं० पुं०) सड़ा हुआ अन्न, छल, कपट।
भगवती–(सं०स्त्री०)देवी, सरस्वती, दुर्गा।
भगवत्–(सं० पुं०) परमेश्वर, पूजनीय गुरु; (वि०) पूजनीय।
भगवद्गीता–(सं० स्त्री०) महाभारत के भीष्म पर्व के अन्तर्गत अठारह अध्याय का वह ग्रंथ जिसमें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का उपदेश है।
भगवद्भक्त–(सं० पुं०) ईश्वर का भक्त।
भगवा–(हिं० पुं०) लँगोटा।
भगवान्, भगवान–(हिं० पुं०) परमेश्वर, विष्णु, कोई आदरणीय व्यक्ति।
भगांकुर–(सं०पुं०) अर्श रोग, बवासीर।
भगाना–(हिं० क्रि०) किसी को भागने में प्रवृत्त करना।
भगिनी–(सं० स्त्री०) सहोदरा, बहिन। भगिनीपति–(सं० पुं०) बहनोई।
भगड़–(हिं० वि०) वह जो काम पड़ने पर भाग जाता हो, कायर। भगोड़ा–(हिं० वि०) भागनेवाला, कायर।
भगोल–(सं० पुं०) नक्षत्रचक्र, खगोल।
भगौती–(हिं० स्त्री०) देखो भगवती।
भगौहाँ–(हिं० वि०) वह जो भागने को तैयार हो, कायर।
भग्गुल, भग्गू–(हिं० वि०) जो विपत्ति देखकर भागता हो, युद्ध-क्षेत्र से भगा हुआ, कायर।
भग्न–(सं० वि०) पराजित, हारा हुआ।
भग्नावशेष–(सं० पुं०) किसी टूटे हुए पदार्थ के टुकड़े। भग्नाश–(सं० वि०) हताश।
भङ्ग–(सं० पुं०) पराजय, हार।
भङ्गा–(सं० स्त्री०) भाँग।
भङ्गी–(सं० पुं०) नष्ट करनेवाला।
भङ्गुर–(सं० वि०) नाश होनेवाला, टेढ़ा। भङ्गुरता–(सं० स्त्री०) कुटिलता, टेढ़ापन।
भचक–(हिं० स्त्री०) लँगड़ापन। भचकना–(हिं० क्रि०) चलती समय पैर का टेढ़ा-मेढ़ा पड़ना।
भचक्र–(सं०पुं०) नक्षत्र-समूह, राशिचक्र।
भच्छ–(हिं०पुं०) देखो भक्ष्य। भच्छना–(हिं० क्रि०) भक्षण करना, खाना।
भजन–(सं० पुं०) सेवा, पूजा, बारबार किसी देवता या पूज्य का नाम लेना, स्मरण, स्तोत्र, गुण-कीर्तन।
भजना–(हिं०क्रि०) सेवा करना, पहुँचना, देवता का नाम जपना।

भजनानन्द–(सं० पुं०) वह आनन्द जो परमेश्वर का नाम लेने पर प्राप्त होता है।
भजनी–(हिं० वि०) भजन गानेवाला।
भजनीय–(सं० वि०) सेवा करने योग्य।
भजाना–(हिं० क्रि०) दौड़ाना, भगाना।
भञ्जन–(सं० पुं०) नाश, ध्वंस।
भट–(सं० पुं०) योद्धा, वीर, सैनिक।
भटकना–(हिं० क्रि०) भ्रम में पड़ना, मार्ग भूल जाना। **भटकाना**–(हिं० क्रि०) भ्रम में डालना।
भटकैया–(हिं० वि०) भटकने या भटकानेवाला। **भटकौहाँ**–(हिं० वि०) भ्रम में डालनेवाला।
भटा–(हिं० पुं०) भंटा, बैगन।
भटियारा–(हिं० पुं०) देखो भठियारा।
भटोट–(हिं० पुं०) यात्रियों के गले में फाँसी लगानेवाला, ठग।
भटोला–(हिं० पुं०) वह भूमि जो भाट को दी गई हो।
भट्ट–(सं० पुं०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक उपाधि, पण्डित, योद्धा, भाट।
भट्टारकवार–(सं० पुं०) रविवार।
भट्ठी–(हिं०पुं०) बड़ी भट्ठी, इंट, खपड़ा आदि के पकाने का पजावा, हलवाई का बड़ा चूल्हा, देशी मद्य बनाने का कार्यालय।
भठियाना–(हिं० क्रि०) समुद्र में भाटा आना।
भठियारपन–(हिं० पुं०) भठियारों की तरह लड़ना और गाली बकना।
भठियारा–(हिं० पुं०) सराय का प्रबंध करनवाला।
भड़क–(हिं०स्त्री०) दिखौवा, चमक-दमक।
भड़कदार–(हिं० वि०) चमकीला, भड़कीला।
भड़कना–(हिं० क्रि०) प्रज्वलित होना, चौंकना।
भड़काना–(हिं० क्रि०) जलाना, चमकाना, उत्तेजित करना।
भड़कीला–(हिं० वि०) भड़कदार, चमकीला, डरकर उत्तेजित होनवाला।
भड़कीलापन–(हिं० पुं०) भड़कीला होने का भाव।
भड़भड़–(हिं० स्त्री०) आघात से उत्पन्न शब्द, भीड़भाड़, व्यर्थ की अधिक वार्ता। **भड़भड़ाना**–(हिं० क्रि०) भड़-भड़ शब्द करना, व्यर्थ की बकवाद करना।
भड़भड़िया–(हिं० वि०) व्यर्थ की बात करनेवाला।
भड़भूँजा–(हिं० पुं०) हिन्दुओं की एक छोटी जाति जो भाड़ में अन्न भूनने का काम करती है।
भड़साई–(हिं०स्त्री०) भड़भूँजे की भाड़।
भड़ाल–(हिं० पुं०) वीर, योद्धा, लड़ाका।
भड़िहा–(हिं० पुं०) तस्कर, चोर, ठग।
भड़ी–(हिं० स्त्री०) झूठा बढ़ावा।
भड़ुआ–(हिं० पुं०) रंडियों का तबला या सारंगी बजानेवाला।
भड्डर, भड्डुर–(हिं० पुं०) ब्राह्मणों में निम्न श्रेणी की एक जाति।
भणन–(सं० पुं०) कथन, उक्ति। **भणना**–(हिं० क्रि०) कहना। **भणित**–(सं० वि०) कहा हुआ; (स्त्री०) कही हुई बात।
भण्ड–(सं० पुं०) भाँड़।
भण्डन–(सं० पुं०) क्षति, हानि।
भतवान–(हिं० पुं०) विवाह की एक रीति जिसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगों को कच्ची रसोई खिलाते हैं।
भतार–(हिं० पुं०) देखो भर्ता, पति।
भतीजा–(हिं० पुं०) भाई का पुत्र।

भत्ता–(हिं० पुं०) किसी कर्मचारी को यात्रा के समय दिया जानेवाला दैनिक व्यय
भदई–(हिं० वि०) भादों महीन का; (स्त्री०) भादों के महीने में तैयार होनेवाली उपज।
भदेरु–(हिं० वि०) कुरूप, भद्दा।
भदेसिल–(हिं० वि०) भद्दा, कुरूप।
भदौहाँ–(हिं०वि०) भादों महीने में होनेवाला।
भद्दा–(हिं० वि०) कुरूप, बेढंगा। **भद्दापन**–(पुं०) कुरूपता, बेढंगापन।
भद्र–(सं० पुं०) क्षेम, कुशल; (वि०) सभ्य, श्रेष्ठ, कल्याणकारी।
भद्रकार, भद्रकारक–(सं० वि०) कल्याण करनेवाला। **भद्रगणित**–(सं० पुं०) बीज गणित के अन्तर्गत एक गणित जो चक्रविन्यास की सहायता से की जाती है।
भद्रता–(सं० स्त्री०) सभ्यता, शिष्टता।
भद्रशील–(सं० वि०) सच्चरित्र।
भद्रा–(सं० स्त्री०) आकाश गंगा, फलित ज्योतिष में द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियों का नाम। **भद्राकरण**–(सं० पुं०) मुण्डन, सिर का बाल मुड़वाना।
भद्री–(हिं० वि०) भाग्यवान्।
भनक–(हिं० स्त्री०) धीमा शब्द, ध्वनि, जनश्रुति। **भनकना**–(हिं० क्रि०) धीरे से बोलना या कहना।
भनना–(हिं० क्रि०) कहना।
भनभनाना–(हिं० क्रि०) भनभन शब्द करना। **भनभनाहट**–(हिं० स्त्री०) गुंजार।
भनित–(हिं० वि०) देखो भणित।
भबका–(हिं० पुं०) अर्क उतारने या मद्य चुआने का यन्त्र।
भभक–(हिं० स्त्री०) उबलना, उबाल।
भभकना–(हिं० क्रि०) गरमी पाकर किसी वस्तु का फटना, उबलना, प्रज्वलित होना, भड़कना।
भभका–(हिं० पुं०) देखो भबका।
भभकी–(हिं०स्त्री०) झूठी धमकी, घुड़की।
भभूका–(हिं० पुं०) ज्वाला, लपट।
भभूत–(हिं० स्त्री०) वह भस्म जिसको शैव लोग माथ तथा भुजा पर लगाते हैं।
भम्भड़–(हिं० स्त्री०) जनसमुदाय।
भभीरा–(हिं० स्त्री०) झींगुर।
भय–(सं० पुं०) भय हेतु, डर। **भयंकर**–(सं० वि०) भयकारक। **भयकर्ता**–(सं० वि०) भयानक, भय उत्पन्न करनेवाला।
भयङ्कर–(सं० वि०) भयजनक।
भयङ्करता–(हिं० स्त्री०) भीषणता।
भयजात–(सं० वि०) भय से उत्पन्न।
भयद–(सं० वि०) भय उत्पन्न करनेवाला।
भयप्रद–(सं० वि०) भयानक।
भयभीत–(सं० वि०) डरा हुआ।
भयवाद–(हिं० पुं०) भाईबंद, सजातीय।
भयहारी–(हिं०वि०) डर दूर करनेवाला।
भया–(हिं० वि०) हुआ।
भयाकुल–(सं०वि०) डर से घबड़ाया हुआ।
भयातुर–(सं०वि०) डर से घबड़ाया हुआ।
भयानक–(सं० वि०) भयंकर, डरावना।
भयाना–(हिं० क्रि०) डरना, डराना।
भयारा–(हिं० वि०) भयानक, डरावना।
भयावन–(हिं०वि०) डरावना। **भयावह**–(सं० वि०) भयंकर, डरावना।
भय्या–(हिं० पुं०) भैया, भाई।
भरंत–(हिं० स्त्री०) भ्रान्ति, सन्देह।
भर–(हिं० पुं०) पुष्टि, मोटाई; (क्रि० वि०) द्वारा, बल से; (हिं०पुं०) एक अस्पृश्य जाति।

भरक–(हिं॰ पुं॰) भड़क । **भरकना**–(हिं॰ क्रि॰) देखो भड़कना ।
भरण–(सं॰ पुं॰) पालन-पोषण ।
भरणीय–(सं॰वि॰) पालने-पोसने योग्य ।
भरण्ड–(सं॰ पुं॰) स्वामी, मालिक ।
भरतखण्ड–(सं॰ पुं॰) भारतवर्ष ।
भरतरी–(हिं॰ स्त्री॰) पृथ्वी ।
भरतवर्ष–(हिं॰ पुं॰) देखो भारतवर्ष ।
भरता–(हिं॰ पुं॰) एक प्रकार का सालन जो भंटा, आलू आदि को भून कर बनाया जाता है ।
भरतार–(हिं॰ पुं॰) पति, स्वामी ।
भरती–(हिं॰ स्त्री॰) भरे जान का भाव ।
भरथ–(सं॰ पुं॰) लोकपाल; (हिं॰ पुं॰) देखो भरत ।
भरना–(हिं॰ क्रि॰) पूर्ण करना, अवकाश या छिद्र का बन्द होना, पद पर नियुक्त करना, निर्वाह करना, खेत में पानी देना, किसी की गुप्त रूप से निन्दा करना, सहना, झेलना; (हिं॰ पुं॰) उत्कोच, घूस ।
भरनि–(हिं॰ स्त्री॰) पहनावा ।
भरपाई–(हिं॰ क्रि॰ वि॰) भली भाँति, पूर्ण रूप से; (स्त्री॰) जो कुछ बाकी हो वह पूरा पूरा पा जाना ।
भरपूर–(हिं॰ वि॰) परिपूर्ण; (क्रि॰ वि॰) भली भाँति ।
भरभराना–(हिं॰क्रि॰) रोवाँ खड़ा होना ।
भरभराहट–(हिं॰ स्त्री॰) घबड़ाहट ।
भरभूंजा–(हिं॰ पुं॰) देखो भड़भूंजा ।
भरम–(हिं॰ पुं॰) भ्रम, भ्रान्ति, संशय ।
भरमना–(हिं॰ क्रि॰) भटकना, धोखे में पड़ना; (स्त्री॰) भ्रम, भ्रान्ति, भूल । **भरमाना**–(हिं॰ क्रि॰) बहकाना, चकित होना ।
भरमार–(हिं॰ स्त्री॰) अत्यन्त, अधिकता ।
भरराना–(हिं॰ क्रि॰) अरराना, टूट पड़ना ।
भरवाई–(हिं॰ स्त्री॰) भरवाने की क्रिया या भाव, भरवाने का वेतन । **भरवाना**–(हिं॰ क्रि॰) भरने का काम दूसरे से कराना ।
भरसक–(हिं॰क्रि॰वि॰) यथाशक्ति ।
भरसन–(हिं॰ स्त्री॰) भर्त्सना, डाँट-फटकार ।
भरसाईं–(हिं॰ पुं॰) देखो भाड़ ।
भरहरना–(हिं॰ क्रि॰) देखो भरभराना ।
भरहराना–(हिं॰ क्रि॰) भहराना ।
भराँति–(हिं॰ स्त्री॰) देखो भ्रांति ।
भराई–(हिं॰ स्त्री॰) भरने की क्रिया या भाव, भरने का शुल्क ।
भरापूर–(हिं॰ वि॰) जिसमें किसी बात की न्यूनता न हो ।
भराव–(हिं॰पुं॰) भरने का भाव, भरने का काम ।
भरित–(हिं॰ वि॰) भरा हुआ, पालित, जिसका पालन-पोषण किया गया हो ।
भरिया–(हिं॰ वि॰) भरनेवाला, पूर्ण करनेवाला, ऋण चुकानवाला ।
भरी–(हिं॰ स्त्री॰) दस माशे या एक रुपये के बराबर की तौल ।
भरुहाना–(हिं॰ क्रि॰) गर्व करना, बहकाना, उत्तेजित करना ।
भरुही–(हिं॰ स्त्री॰) लेखनी बनाने की एक प्रकार की कच्ची किलक ।
भरेठ–(हिं॰ पुं॰) द्वार के ऊपर लगाई हुई लकड़ी जिस पर भीत उठाई जाती है ।
भरैया–(हिं॰ वि॰) पालन करनेवाला ।
भरोसा–(हिं॰ पुं॰) अवलम्ब, सहारा ।
भरोसी–(हिं॰ वि॰) भरोसा करनेवाला विश्वसनीय, जिस पर भरोसा किया जावे

भरौती–(हिं० स्त्री०) वह रसीद जिसमें भरपाई की गई हो।
भरौना–(हिं० वि०) बोझल, भारी।
भर्जन–(सं० पुं०) भूना हुआ अन्न।
भर्तव्य–(सं०वि०) भरण-पोषण करने योग्य
भर्ता–(हिं० पुं०) स्वामी, पति।
भर्तार–(हिं० पुं०) पति, स्वामी।
भर्तृत्व–(सं०पुं०) पति का भाव या धर्म।
भर्त्सना–(सं० स्त्री०) निन्दा, डाँट-डपट, फटकार।
भर्म–(हिं० पुं०) देखो भ्रम।
भर्राना–(हिं०क्रि०) भर्र भर्र शब्द होना।
भलमनसत, भलमनसाहत भलमनसी–(हिं० स्त्री०) सज्जनता।
भला–(हिं० वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया; (पुं०) लाभ, कल्याण।
भला–(हिं० अव्य०) अस्तु।
भलाई–(हिं० स्त्री०) अच्छापन, उपकार। **भलापन**–(हिं० पुं०) देखो भलाई।
भले–(हिं०क्रि०वि०) भली भाँति, अच्छी तरह से; (अव्यय) वाह।
भल्लाक्ष–(सं० वि०) जिसको कम देख पड़ता हो, मन्ददृष्टि।
भल्लुक, भल्लूक–(सं० पुं०) भालू।
भवँ–(हिं० स्त्री०) देखो भौंह।
भवंत–(हिं० पुं०) भुजंग, सर्प।
भवंग–(हिं०वि०) आपका, आप लोगों का।
भव–(सं० पुं०) जन्म, उत्पत्ति, संसार, क्षम, कुशल, प्राप्ति, कारण, हेतु, जन्म-मरण का दुःख; (हिं०पुं०) भय, डर; (वि०) कल्याणकारक, शुभ, उत्पन्न, जनमा हुआ। **भवक्षिति**–(सं०स्त्री०) जन्मभूमि।
भवतव्यता–(हिं० स्त्री०) देखो भवितव्यता।
भवदीय–(सं० वि०) आपका, तुम्हारा।
भवन–(सं० पुं०) प्रासाद, हर्म्य, गृह; (हिं० पुं०) जगत्, संसार। **भवनपति**–घर का स्वामी।
भवना–(हिं० क्रि०) घूमना।
भवनी–(हिं० स्त्री०) गृहिणी, भार्या, स्त्री।
भवपाली–(सं० स्त्री०) संसार की रक्षा करनेवाली शक्ति।
भवबन्धन–(सं०पुं०) संसार की झंझट।
भवभञ्जन–(सं० पुं०) संसार का नाश करनेवाला, काल, परमेश्वर।
भवभय–(सं० पुं०) संसार में बार-बार जन्म लेने और मरने का भय।
भवाँ–(हिं० स्त्री०) चक्कर, भौंरी।
भवाँना–(हिं० क्रि०) घुमाना, फिराना।
भवितव्य–(सं० वि०) भवनीय, अवश्य होनेवाली। **भवितव्यता**–(सं० स्त्री०) भाग्य, अदृष्ट।
भविष्य–(सं० वि०) आनेवाला काल।
भविष्यत्–(सं० वि०) वर्तमान काल के उपरान्त का काल, आगामी काल।
भविष्यद्वक्ता–(सं० पुं०) वह जो होनेवाली बात को पहले से ही कह दे।
भविष्यद्वाणी–(सं० स्त्री०) भविष्य की बात जो पहले ही से कही गई हो।
भवीला–(हिं० वि०) भावयुक्त, भावपूर्ण।
भव्य–(सं० वि०) शुभ, जो देखने में भारी और सुन्दर जान पड़े, योग्य, श्रेष्ठ, बड़ा, प्रसन्न।
भव्यता–(सं० स्त्री०) भव्य होने का भाव या धर्म।
भषण–(सं० पुं०) कुत्ते का भूँकना।
भषना–(हिं० स्त्री०) भोजन करना, खाना।
भसना–(हिं० क्रि०) पानी के तल पर तैरना, पानी में डूबना।

भसम–(हिं० पुं०) देखो भस्म।
भसान–(बंगला पुं०) काली या सरस्वती आदि की मूर्ति की पूजा के उपरान्त नदी में प्रवाह करना।
भसाना–(बं० क्रि०) पानी में डुबाना।
भसिड, भसींड–(हिं० स्त्री०) कमलनाल, मुरार।
भसुंड–(हिं० पुं०) हाथी, गज।
भसुर–(हिं०पुं०) पति का बड़ा भाई, जेठ।
भसूंड़–(हिं० पुं०) हाथी का सूंड़।
भस्त्रका, भस्त्रा–(सं० स्त्री०) भाथी।
भस्म–(सं० पुं०) लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख; चिता की राख, अग्निहोत्र की राख, (वि०) जो जलकर राख हो गया हो।
भस्मित–(सं० वि०) जलाया हुआ।
भस्मीभूत–(सं० वि०) जो जलकर राख हो गया हो।
भहराना–(हिं० क्रि०) झोंके से गिर पड़ना, टूट पड़ना, फिसल पड़ना।
भहूँ–(हिं० स्त्री०) देखो भौंह।
भाँउ–(हिं०पुं०) भाव, अभिप्राय, आशय।
भाँग–(हिं० स्त्री०) सन की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं, विजया, बूटी।
भाँज–(हिं० स्त्री०) किसी पदार्थ को मोड़ने या तह करने की क्रिया।
भाँजना–(हिं० क्रि०) तह करना, मोड़ना, मुद्‌गर आदि को घुमाना, दो या अनेक लड़ियों को एक में मिलाकर बटना।
भाँजा–(हिं०पुं०) देखो भानजा। भाँजी–(हिं० स्त्री०) बहिन की पुत्री, किसी होते हुए काम में बाधा डालनेवाली बात।
भाँट–(हिं० पुं०) देखो भाट।
भाँटा–(हिं० पुं०) बैगन।
भाँड़–(हिं० पुं०) मसखरा, ठिठोलिया, विदूषक।
भाँड़ना–(हिं० क्रि०) भ्रष्ट करना, बिगाड़ना।
भाँड़ा–(हिं० पुं०) पात्र, बड़ा पात्र।
भाँडागार–(हिं० पुं०) कोष। भाँडागारिक–(हिं० पुं०) भंडारी, कोषाध्यक्ष।
भाँति–(हिं० स्त्री०) तरह, प्रकार।
भाँपना–(हिं० क्रि०) अनुमान कर लेना, ताड़ना।
भाँय-भाँय–(हिं०पुं०) निर्जन स्थानका शब्द
भाँवर–(हिं० स्त्री०) परिक्रमा करना।
भा–(सं० स्त्री०) प्रभा, कान्ति, शोभा; (हिं० अव्य०) यदि इच्छा हो।
भाइ–(हिं० पुं०) प्रीति, प्रेम, स्वभाव।
भाइप–(हिं०पुं०) भाईचारा, आत्मीयता।
भाई–(हिं० पुं०) भ्राता, सहोदर, भैया, संबोधन का एक शब्द, किसी वंश या परिवार की किसी एक पीढ़ी के व्यक्ति के लिये उसी पीढ़ी का दूसरा मनुष्य यथा––ममेरा या चचेरा भाई। भाईचारा–(हिं० पुं०) भाई के समान होने का भाव। भाईदूज–(हिं० स्त्री०) कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाईपन–(हिं० पुं०) भ्रातृत्व, परम मित्र या बन्धु होने का भाव। भाईबन्द–(हिं० पुं०) अपनी जाति के लोग।
भाउ–(हिं० पुं०) भाव, चित्तवृत्ति।
भाऊ–(हिं० पुं०) भावना, चित्तवृत्ति, प्रेम, स्नेह, महिमा, अवस्था।
भाएँ–(हिं०क्रि०वि०) बुद्धि के अनुसार।
भाकसी–(हिं० स्त्री०) भट्‌ठी, भरसाईं।
भाक्त–(सं० वि०) भक्त सम्बन्धी।
भाक्ष–(सं० वि०) खाने योग्य।
भाख–(हिं० पुं०) देखो भाषण। भाखन–(हिं० क्रि०) बोलना, कहना।

भाखर–(हिं० पुं०) पर्वत, पहाड़।
भाखा–(हिं० स्त्री०) देखो भाषा।
भाग–(सं० पुं०) अंश, भाग्य, प्रारब्ध, गणित में किसी राशि का अनेक अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया, वैभव, ऐश्वर्य। **भागक**–(सं० वि०) भाजक। **भागकर**–(सं० पुं०) विभाग करनेवाला, बाँटनेवाला।
भागड़–(हिं० स्त्री०) भगदड़।
भागधेय–(सं० पुं०) भाग्य, प्रारब्ध; (पुं०) दायाद, सपिण्ड।
भागना–(हिं० क्रि०) पिंड छुड़ाना, टल जाना, हट जाना।
भागनेय–(सं० पुं०)भानजा।
भागफल–(सं० पुं०) गणित में वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो, लब्धि।
भागवंत–(हिं० वि०) भाग्यवान्, भाग्यशील।
भागवत–(सं० पुं०) अठारह पुराणों के अन्तर्गत एक महापुराण; (सं० वि०) भगवद्भक्त।
भागवान–(हिं० वि०) देखो भाग्यवान्।
भागहर–(सं० वि०) भाग या अंश लेनेवाला। **भागहार**–(सं० पुं०) गणित में किसी राशि को कुछ निश्चित अंशों में विभक्त करने की क्रिया।
भागार्ह–(सं० वि०) जो विभक्त करने योग्य हो।
भागिनेय–(सं० पुं०)भगिनीपुत्र, भानजा। **भागिनेयी**–(सं० पुं०) भानजी।
भागी–(हिं० पुं०) अधिकारी, अंशधारी।
भागीरथी–(सं० स्त्री०) जाह्नवी, गंगा।
भाग्य–(सं० पुं०) अदृष्ट।
भाजक–(सं० वि०) विभाग करनेवाला; (पुं०) गणित में वह अंक जिससे कोई संख्या भाग दी जावे। **भाजकांश**–(सं० पुं०) वह संख्यजिससे किसी राशि को भाग देने पर कुछ शेष न बचे।
भाजन–(सं० पुं०) आधार, पात्र, बरतन, योग्य। **भाजनता**–(सं० स्त्री०) योग्यता।
भाजना–(हिं० क्रि०) भाग देना।
भाजित–(सं० वि०) पृथक् किया हुआ।
भाजी–(हिं० स्त्री०) साग, तरकारी, मिठाई, पकवान आदि जो तेहवारों पर इष्ट-मित्र या सम्बन्धियों के घर भेजा जाता है।
भाज्य–(सं० वि०) विभाग करने योग्य; (पुं०) वह संख्या जो भाजक से भाग दी जाती है।
भाट–(हिं० पुं०) स्तुतिपाठक, बन्दी, चारण।
भाटा–(हिं० पुं०) पानी का चढ़ाव की ओर से उतार की ओर जाना।
भाठ–(हिं० स्त्री०) वह मिट्टी जिसको नदी बाढ़ में लाती है और उतार के समय कछार में जमाती है; (हिं० पुं०) गड्ढा।
भाठी–(हिं० स्त्री०) पानी का उतार, देखो भट्ठी.
भाड़–(हिं० पुं०) भड़भूंजों की भट्ठी।
भाड़ा–(हिं० पुं०) किराया।
भाण्ड–(सं० पुं०) पात्र, बनिये का मूलधन। **भाण्डक** छोटा पात्र। **भाण्डपति**–बनिया, व्यवसायी। **भाण्डशाला**–भंडारघर। **भाण्डागारिक**–भंडारी।
भाण्डार–(सं० पुं०) भंडारघर।
भाण्डारिक–(सं० पुं०) भण्डारी।
भाण्डिनी–(सं०स्त्री०)मंजूषा, छोटी पेटी।
भात–(हिं० पुं०) पानी में उबाला हुआ चावल।

भाथा–(हिं० पुं०) तरकश, तूणीर, बड़ी भाथी।
भाथी–(हिं० स्त्री०) चमड़े की बनी हुई धौंकनी जिसमें से हवा फेंककर भट्ठी की आग सुलगाई जाती है।
भादों–(हिं० पुं०) सावन के बाद के तथा कुआर के पहिले के महीने का नाम।
भान–(सं० पुं०) प्रकाश, दीप्ति, चमक।
भानजा–(हिं० पुं०) बहिन का लड़का।
भानना–(हिं० क्रि०) तोड़ना, काटना, मिटाना।
भानमती–(हिं० स्त्री०) जादूगरनी।
भाना–(हिं० क्रि०) जान पड़ना, रुचना।
भानु–(सं० पुं०) सूर्य। **भानुकम्प**–ग्रहण आदि के समय सूर्य के बिम्ब का काँपना।
भानुदिन–(सं० पुं०) रविवार। **भानुपाक**–(सं० पुं०) औषध आदि को सूर्य की गरमी से पकाने की विधि।
भानुफला–(सं० स्त्री०) कदली, केला।
भानुमत–(सं० वि०) दीप्तिमान्, प्रकाशमान।
भाप–(हिं० स्त्री०) वाष्प।
भापना–(हिं० क्रि०) देखो भाँपना।
भाभर–(हिं० पुं०) पहाड़ों के नीचे तराई के बीच का जंगल।
भाभरी–(हिं० स्त्री०) गरम राख।
भाभी–(हिं० स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री।
भाम–(सं० पुं०) बहनोई; (हिं० स्त्री०) भामा, स्त्री।
भामक–(सं० पुं०) भगिनीपति, बहनोई।
भामण्डल–(सं० पुं०) किरणों की मेखला।
भामिनी–(सं० स्त्री०) स्त्री।
भाय–(हिं० पुं०) भाई, भाव, ढंग।
भायप–(हिं० पुं०) भ्रातृभाव, भाईचारा।
भाया–(हिं० वि०) प्रिय, प्यारा।
भार–(सं० पुं०) गुरुत्व, बोझ; (हिं० पुं०) उत्तरदायित्व।
भारत–(सं० पुं०) महाभारत का पूर्व रूप जिसका मूल चौबीस हजार श्लोकों का है, इसको वेदव्यास ने बनाया था, लम्बा चौड़ा विवरण, बड़ा संग्राम। **भारत-खण्ड**–(सं० पुं०) भारतवर्ष। **भारतवर्ष**–(सं० पुं०) वह देश जो उत्तर में हिमालय पर्वत तक, दक्षिण में कन्याकुमारी तक, पश्चिम में सिन्धु नदी तक तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक विस्तृत है।
भारती–(सं० स्त्री०) वचन, वाक्य, सरस्वती। **भारतीय**–(सं० वि०) भारत सम्बन्धी, भारत का।
भारथ–(हिं० पुं०) युद्ध, संग्राम।
भारथी–(हिं० पुं०) योद्धा, सिपाही।
भारना–(हिं० क्रि०) भार लादना।
भारभारी, भारभूत–(सं० वि०) बोझ उठानेवाला।
भारयष्टि–(सं० स्त्री०) बँहगी।
भारवाह, भारवाहक–(सं० वि०) बोझ ढोनेवाला।
भारवी–(सं० पुं०) तुलसी का पेड़।
भारा–(हिं० पुं०) देखो भाड़ा।
भारिक–(सं० पुं०) बोझ ढोनेवाला।
भारी–(हिं० वि०) अधिक भार का, कठिन, विशाल, अधिक, अत्यन्त गम्भीर, प्रबल। **भारीपन**–(हिं० पुं०) भारी होने का भाव।
भार्या–(सं० स्त्री०) पत्नी, जाया, दारा, कलत्र। **भार्यात्व**-भार्या का भाव या धर्म
भाल–(सं० पुं०) ललाट, मस्तक, कपाल; (हिं० पुं०) भाला, बरछा।
भालचन्द्र–(सं० पुं०) शिव, महादेव।
भालना–(हिं० क्रि०) ध्यानपूर्वक देखना।

भाला–(हिं० पुं०) बरछा, साँग। **भाल-बरदार**–(हिं०पुं०)बरछा चलानेवाला।
भालि–(हिं० स्त्री०) बरछी, शूल, काँटा।
भाली–(हिं० स्त्री०) भाले की नोक।
भालू–(हिं०पुं०) एक स्तनपायी भयंकर चौपाया जो जंगलों और पहाड़ों में पाया जाता है।
भावंता–(हिं० पुं०) भावी, होनेवाला।
भाव–(सं० पुं०) मन का विकार, सत्ता, अभिप्राय, स्वभाव, चित्त, आत्मा, चेष्टा, चोचला, आदर, प्रतिष्ठा, श्रद्धा, भक्ति, कल्पना, ढंग, अवस्था।
भावइ–(हिं० अव्य०) जो इच्छा हो, जो जी चाहे।
भावक–(वि०) भावपूर्ण।
भावगति–(हिं० स्त्री०) विचार, इच्छा।
भावज–(सं०वि०) भाव से उत्पन्न; (हिं०स्त्री०)बड़े भाई की स्त्री, भौजाई।
भावताव–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का मूल्य या भाव।
भावन–(हिं० वि०) जो प्रिय या अच्छा जान पड़े।
भावना–(सं० स्त्री०) साधारण विचार या कल्पना, ध्यान, इच्छा; (वि०) प्रिय, प्यारा।
भाविन–(हिं० स्त्री०) मन की बात, जो चित्त में आवे। **भावनीय**–(सं० वि०) चिन्ता या विचार योग्य।
भावबोधक–(सं० वि०) वह जिसके द्वारा भाव का बोध हो।
भावभक्ति–(हिं० स्त्री०)आदर-सत्कार।
भावली–(हिं० स्त्री०)खेत की उपज की बँटाई जो भूस्वामी और कृषक के बीच होती है।
भाववाचक–(सं० पुं०) व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव, गुण अथवा धर्म सूचित होता है।
भाववाच्य–(सं० पुं०) व्याकरण का वह रूप जिससे यह विदित होता है कि वाक्य का उद्देश्य उस क्रिया का कर्ता और कार्य नहीं है परन्तु केवल कोई भाव है।
भावात्मक–(सं० वि०) किसी विषय की प्राकृत अवस्था का सूचक।
भावार्थ–(सं० पुं०) वह अर्थ या टीका जिसमें मूल का केवल भाव आ जावे अक्षरश: अनुवाद न हो, तात्पर्य।
भावित–(सं० वि०) सोचा हुआ,मिलाया हुआ, शुद्ध किया हुआ।
भावी–(हिं० स्त्री०) भाग्य, प्रारब्ध, अवश्य होनेवाली बात; (वि०) भावना करनेवाला, सोचनेवाला।
भावै–(हिं० अव्य०) चाहे।
भाष–(हिं० पुं०) भाषा।
भाषक–(स०वि०) वक्ता, बोलनेवाला।
भाषण–(सं० पुं०) वक्तृता, व्याख्यान, कथन, बातचीत।
भाषा–(सं० स्त्री०) वाक्य, बोली, किसी विशेष जनसमूह में प्रचलित बात-चीत करने का ढंग।
भाषातत्त्व–(सं० पुं०) शब्द तत्त्व का विज्ञान।
भाषान्तर–(सं० पुं०) अनुवाद, उल्था।
भाषित–(सं० वि०) कथित, कहा हुआ।
भाषी–(हिं०वि०) कहने या बोलनेवाला।
भाष्य–(सं० पुं०) सूत्रों की व्याख्या या टीका। **भाष्यकार**–(सं० पुं०) सूत्रों की व्याख्या या टीका करनेवाला।
भास–(सं० पुं०) दीप्ति, प्रकाश, चमक, स्वाद, मिथ्याज्ञान।
भासना–(हिं० क्रि०) चमकना, देख पड़ना, फँसना।

भासमान–(सं० वि०) दिखाई पड़ता हुआ।
भासित–(सं० वि०) दिखाई पड़नवाला।
भासुर–(सं० पुं०) स्फटिक, बिल्लौर, वीर योद्धा।
भास्कर–(सं० पुं०) सूर्य, अग्नि।
भिगाना–(हि० क्रि०) देखो भिगोना।
भिजाना–(हि० क्रि०) देखो भिगोना।
भिंडी–(हि० स्त्री०) एक पौधे की फली जिसकी तरकारी बनती है।
भिक्षा–(सं० स्त्री०) भीख माँगी हुई वस्तु। **भिक्षापात्र**–(सं० पुं०) भीख माँगने का पात्र। **भिक्षार्थी**–(सं० वि०) भिक्षुक, भिखमंगा। **भिक्षावृत्ति**–(सं० वि०) भीख माँगकर जीविका निर्वाह करनवाला।
भिक्षु–(सं० पुं०) भिक्षुक, भिखारी।
भिखमंगा–(हि०पुं०) भिक्षुक, भिखारी।
भिखार–(हि० पुं०) भिखमंगा, भिखारी।
भिखारिन, भिखारिणी–(हि० स्त्री०) भीख माँगनेवाली स्त्री।
भिखारी–(हि० पुं०) भिक्षुक।
भिखिया–(हि० स्त्री०) देखो भिक्षा।
भिगाना, भिगोना–(हि० क्रि०) पानी से गीला करना।
भिच्छा–(हि० स्त्री०) देखो भिक्षा।
भिच्छु–(हि० पुं०) देखो भिक्षु।
भिजवाना–(हि० क्रि०) भेजने का काम दूसरे से कराना।
भिगवाना–(हि० क्रि०) भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
भिजाना–(हि० क्रि०) गीला करना।
भिड़–(सं० स्त्री०) बर्रें, ततैया।
भिड़ना–(हि० क्रि०) लड़ना, झगड़ना।
भितल्ला–(हि० पुं०) दोहरे कपड़े का भीतरी पल्ला; (वि०) भीतर का।
भितल्ली–(हि० स्त्री०) चक्की के नीचे का पाट।
भिताना–(हि० क्रि०) डेराना।
भिदना–(हि०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना।
भिनकना–(हि० क्रि०) भिन-भिन शब्द करना, घृणा उत्पन्न होना। **भिन-भिनाना**–(हि० क्रि०) भिन-भिन शब्द करना।
भिनसहरा, भिनसार–(हि० पुं०) प्रातःकाल, सबेरा। **भिनहीं**–(हि० क्रि० वि०) प्रातःकाल, सबरे।
भिन्न–(सं० वि०) कटा हुआ, अन्य, दूसरा, पृथक्; (पुं०) गणित में वह संख्या जो एकाई से कम हो। **भिन्नता**–(सं० स्त्री०) भिन्न होने का भाव, भेद।
भिन्नार्थक–(सं० वि०) दूसरे अर्थ का।
भियना–(हि० क्रि०) डरना।
भिया–(हि० पुं०) भ्राता, भाई।
भिड़्ना–(हि० क्रि०) देखो भिड़ना।
भिंरिग–(हि० पुं०) देखो भृङ्ग।
भिषक्–(सं० पुं०) चिकित्सक, वैद्य।
भिषज्–(हि० पुं०) चिकित्सक, वैद्य।
भिष्टा–(हि० पुं०) देखो विष्ठा, मल।
भिसज–(हि० पुं०) वैद्य।
भिस्स–(हि०स्त्री०) कमल की जड़, भसींड़।
भिस्सा–(सं० स्त्री०) अन्न, अनाज।
भींचना–(हि० क्रि०) खींचना, कसना।
भींजना–(हि० क्रि०) गीला होना।
भी–(हि० स्त्री०) भय, डर; (अव्य०) निश्चय करके, अवश्य, तक।
भीक–(हि० वि०) भीत, डरा हुआ।
भीख–(हि०स्त्री०) भिक्षा में दी हुई वस्तु।
भीखन–(हि० वि०) विकराल, भीषण।
भीखम–(हि० वि०) भयानक, डरावना।
भीगना–(हि० क्रि०) आर्द्र होना।
भीजना–(हि० पुं०) देखो भीगना।

भीटा–(हि० पुं०) टीलेदार ऊँची भूमि या छाजन।
भीड़–(हि० स्त्री०) जमघट, जनसमूह, संकट।
भीत–(हि० स्त्री०) भित्तिका, विभाग करने का परदा, खण्ड, टुकड़ा; (हि० वि०) डरा हुआ।
भीतर–(हि० क्रि०) में; (पुं०) हृदय, अन्तःकरण, अन्तःपुर।
भीतरा–(हि० वि०) अन्तःपुर में आने-जानेवाला मनुष्य।
भीतरी–(हि० वि०) भीतरवाला।
भीति–(सं० स्त्री०) भय, डर; (हि० स्त्री०) दीवार। **भीतिकर, भीतिकारी**–(सं० वि०) डरावना।
भीन–(हि० पुं०) प्रातःकाल, सवेरा।
भीनना–(हि०क्रि०) समा जाना, भर जाना।
भीनी–(हि० वि०) मीठी।
भीम–(सं० वि०) भीषण, घोर, भयंकर।
भीमता–(सं० स्त्री०) भयंकरता।
भीमनाद–(सं० पुं०) सिंह, भयंकर शब्द।
भीर–(सं० पुं०) देखो आभीर, अहीर।
भीर–(हि० स्त्री०) देखो भीड़, संकट, विपत्ति; (वि०) भयभीत। **भीरना**–(हि० क्रि०) भयभीत होना, डरना।
भीरु–(सं० वि०) भयभीत, डरपोक।
भीरुता–(सं० स्त्री०) कायरता, भय, डर।
भीरुताई–(हि० स्त्री०) भीरुता।
भीरे–(हि०क्रि०वि०) समीप में, पास।
भीषण–(वि०) भयानक, डरावना।
भीषणता–(हि० स्त्री०) डरावनापन।
भीषन–(हि०वि०) देखो भीषण, भयंकर।
भीषम–(हि० पुं०) देखो भीष्म।
भीष्म–(सं० वि०) भयानक, भयंकर।
भीष्मगन्धक–(सं०पुं०) माधवी लता।
भीसम–(हि० पुं०) देखो भीष्म।
भुंइ–(हि० स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
भुंइहरा–(हि० पुं०) भूमि खोदकर बनाया हुआ स्थान।
भुंजना–(हि०क्रि०) भुन जाना, झुलसना, भुनना।
भुंडा–(हि० वि०) बिना सींग का।
भुअ–(हि० स्त्री०) भ्रू, भौंह।
भुअन–(हि० पुं०) देखो भुवन।
भुआर, भुआल–(हि०पुं०) भूपाल, राजा।
भुईं–(हि० स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
भुईंकम्प, भुईंडोल–(हि० पुं०) भूकम्प, भूचाल।
भुक–(हि० पुं०) भोजन, आहार।
भुकड़ी–(हि० स्त्री०) सड़े पदार्थ पर पड़नेवाली पपड़ी।
भुकराँध–(हि० स्त्री०) सड़ने की दुर्गन्ध।
भुकाना–(हि० क्रि०) बकाना।
भुक्खड़–(हि०वि०) भूखा, कंगाल, दरिद्र।
भुक्त–(सं० वि०) भक्षित, खाया हुआ, भोगा हुआ। **भुक्तशेष**–(सं० पुं०) उच्छिष्ट, जूठा।
भुक्ति–(सं० स्त्री०) भोजन, आहार।
भुखमरा–(हि० वि०) भुक्खड़, पेटू।
भुखाना–(हि० क्रि०) भूख से पीड़ित होना। **भुखालू**–(हि० वि०) भूखा।
भुगत–(हि० स्त्री०) देखो भुक्ति।
भुगतना–(हि० क्रि०) भोगना, सहना। **भुगतान**–(हि० पुं०) निबटारा। **भुगताना**–(हि०क्रि०) पूरा करना, बिताना।
भुगाना–(हि० क्रि०) भोग कराना।
भुगुति–(हि० स्त्री०) देखो भुक्ति।
भुच्चड़–(हि० वि०) मूर्ख।
भुजंग–(हि० पुं०) भुजङ्ग, सर्प।
भुज–(सं० स्त्री०) भुजा, बाहु, बाँह, समकोणों का पूरक कोण, किसी क्षेत्र

के किनारे की रेखा, प्रान्त, किनारा, शाखा, त्रिभुज का आधार।
भुजङ्ग–(सं० पुं०) सर्प।
भुजङ्गा–(हिं० पुं०) काले रंग का मधुर स्वर बोलनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी।
भुजज्या–(सं० स्त्री०) त्रिकोण क्षेत्र की भुजग्रीवा।
भुजदण्ड–(सं०पुं०) बाहुदण्ड। भुजपाश–(सं० पुं०) गले में हाथ डालना, गलबाँही।
भुजबन्द–(हिं० पुं०) बाँह में पहिनने का एक आभूषण।
भुजबल–(सं० पुं०) बाहुबल।
भुजमूल–(सं० पुं०) बाहुमूल, काँख।
भुजवा–(हिं० पुं०) भड़भूंजा।
भुजशिखर, भुजशिर–(सं०) स्कन्ध, कन्धा।
भुजा–(सं० स्त्री०) बाँह, हाथ।
भुजाना–(हिं० क्रि०) देखो भुनाना।
भुजामध्य–(सं० पुं०) केहुनी। भुजामूल–(सं० पुं०) बाहुमूल, काँख।
भुजाली–(हिं० स्त्री०) खुखरी, छोटी बरछी।
भुजिया–(हिं० पुं०) उबाले हुए धान का चावल।
भुजौना–(हिं० पुं०) भाड़ में भुंजा हुआ अन्न, चबना भुनने या भुनाने का शुल्क।
भुट्टा–(हिं० पुं०) जुआर की बाल, मक्के की हरी बाल।
भुन–(हिं० पुं०) अव्यक्त गुंजार का शब्द।
भुनगा–(हिं० पुं०) फतिगा, अति दुर्बल मनुष्य।
भुनना–(हिं० क्रि०) भूना जाना, नोट, रुपये आदि के बदले में छोटी मुद्रा का मिलना।
भुनभुनाना–(हिं० क्रि०) भुनभुन शब्द करना, मन ही मन कुछ बड़बड़ाना।
भुनाना–(हिं० क्रि०) भुनने का काम कराना, नोट, रुपये आदि को छोटी मुद्रा में बदलना।
भुवि–(हिं० स्त्री०) पृथ्वी भूमि।
भुरकना–(हिं० क्रि०) सूखकर भुरभुरा हो जाना, भूलना।
भुरका–(हिं० पुं०) बुकनी, अबीर, मिट्टी का बड़ा कसोरा। भुरकाना–(हिं० क्रि०) भुरभुरा करना।
भुरकी–(हिं० स्त्री०) अन्न रखने का छोटा कोठिला।
भुरकुन–(हिं० पुं०) चूर्ण, चूरा।
भुरकुस–(हिं० पुं०) चूर्ण, चूरा।
भुरता–(हिं० वि०) चोखा या भरता नाम का सालन।
भुरभुरा–(हिं० वि०) कुड़कीला।
भुरभुराना–(हिं० क्रि०) चूर्ण आदि को छिड़कना।
भुरवना–(हिं० क्रि०) भुलवाना।
भुराई–(हिं० स्त्री०) भोलापन, भूरापन।
भुराना–(हिं० क्रि०) भूलना, भुलाना।
भुलक्कड़–(हिं० वि०) भूलने के स्वभाववाला। भुलना–(हिं० पुं०) देखो भुलक्कड़
भलभुला–(हिं० पुं०) गरम राख।
भुलवाना–(हिं० क्रि०) भ्रम में डालना।
भुलसाना–(हिं० क्रि०) गरम राख में झुलसना।
भुलाना–(हिं० क्रि०) धोखा देना, भ्रम में पड़ना।
भुलावा–(हिं० पुं०) छल, कपट, धोखा।
भुवंग–(हिं० पुं०) देखो भुजंग, सर्प, साँप।
भुव–(सं० पुं०) संसार, पृथ्वी।
भुवन–(सं० पुं०) जगत्, संसार, जल।
भुवा–(हिं० पुं०) रूई, घूवा।
भुवार, भुआल–(हिं० पुं०) देखो भुवाल।
भुवि–(हिं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

भुस-(हिं० पुं०) भूसा।
भुसी-(हिं० स्त्री०) देखो भूसी।
भूँकना-(हिं० क्रि०) कुत्ते का भों-भों करना, व्यर्थ बक बक करना।
भूँचाल-(हिं० पुं०) भूकम्प।
भूँजना-(हिं० क्रि०) पकाना, तलना, कष्ट देना।
भूँजा-(हिं० पुं०) भूना हुआ अन्न, चबेना, भड़भूँजा।
भूँडोल-(हिं० पुं०) देखो भूकम्प।
भू-(सं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, स्थान।
भूआ-(हिं० पुं०) रूई के समान हलकी तथा कोमल वस्तु का छोटा टुकड़ा।
भूकन्द-(सं० पुं०) सूरण, ओल।
भूकम्प-(सं० पुं०) भूचाल, भूँडोल।
भूख-(हिं० स्त्री०) क्षुधा, अभिलाषा, कामना।
भूखन-(हिं० पुं०) देखो भूषण।
भूखा-(हिं० वि०) जिसको भोजन की प्रबल इच्छा हो, इच्छुक।
भूगर्भ-(सं० पुं०) पृथ्वी का भीतरी भाग। भूगर्भगृह-भूमि के भीतर का घर।
भूगर्भ-(सं० पुं०) भूमण्डल, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी भाग का स्वरूप तथा उसके प्राकृतिक विभागों का ज्ञान हमको होता है।
भूचक्र-(सं० पुं०) पृथ्वी की परिधि, विषुवत् रेखा, अयन वृत्त, क्रान्ति वृत्त।
भूचर-(सं०पुं०)भूमि पर रहनेवाला प्राणी
भूचाल-(हिं० पुं०) भूकम्प, भूडोल।
भूचित्र-(सं० पुं०) पृथ्वी का मानचित्र।
भूड़-(हिं० स्त्री०) बालू मिली हुई भूमि।
भूत-(सं० पुं०) मृत शरीर, पिशाच आदि, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो यह सूचित करता है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका, अतीत काल, प्राणी, जन्तु; (वि०) युक्त, मिला हुआ, बीता हुआ, सदृश, समान।
भूतदया-प्राणिमात्र पर दया करना।
भूतकाल-(सं० पुं०) बीता हुआ समय।
भूतकालिक-(सं० वि०) अतीत काल संबंधी।
भूतत्व-(सं० पुं०) भूत का भाव या धर्म। भूतत्वविद्या-(सं० स्त्री०) भूगर्भ शास्त्र। भूतपूर्व-(सं० वि०) वर्तमान काल के पहिले का, इस समय से पहिले का।
भूतल-(सं० पुं०) पृथ्वी, संसार, पृथ्वी का ऊपरी तल, धरातल।
भूतवत्-(सं० वि०) पूर्ववत्।
भूतवादी-(सं०वि०)ठीक-ठीक बोलनेवाला।
भूतसंप्लव-(सं० पुं०) प्रलय।
भूतहत्या-(सं० स्त्री०) जीवहत्या।
भूतात्मा-(सं० पुं०) जीवात्मा।
भूति-(सं० स्त्री०) वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, उत्पत्ति, बुद्धि।
भूतिनी-(हिं० स्त्री०) डाकिनी।
भूदेव-(सं० पुं०) ब्राह्मण।
भूधन-(सं० पुं०) राजा, नृप।
भूधर-(सं० पुं०) शेषनाग।
भूनना-(हिं० क्रि०) आग पर रखकर पकाना।
भूनेता-(सं० पुं०) भूपति, राजा।
भूप-(सं० पुं०) राजा, नृप।
भूपाल-(सं० पुं०) नृप, राजा।
भूप्रकम्प-(सं० पुं०) भूकम्प।
भूबिम्ब-(सं० पुं०) पृथ्वी की छाया।
भूभल-(हिं० स्त्री०) गरम राख या धूल।
भूभुज-(सं० पुं०) नृप, राजा।
भूभृत-(सं० पुं०) पर्वत, राजा।
भूमण्डल-(सं० पुं०) मण्डलाकार भूमि-भाग, पृथ्वी।

भूमि–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, स्थान, क्षेत्र, आधार, वासस्थान, प्रदेश, प्रान्त।
भूमिकम्प–भूडोल।
भूमिका–(सं० स्त्री०) रचना, वक्तव्य, मुखबन्ध, दीबाचा।
भूमिखण्ड-(सं०पुं०) भूमि का भाग।
भूमिगर्त–(सं० पुं०) भूमि में का विवर, छिद्र, छेद। भूमिगुहा–(सं० स्त्री०) सुरंग। भूमिगेह–(सं०पुं०) तहखाना।
भूमिचल–(सं० पुं०) भूकम्प, भूडोल।
भूमिज–(सं० वि०) जो भूमि से उत्पन्न हुआ हो। भूमिजीवी–(सं० पुं०) खेतिहर, किसान। भूमितल–(सं० पुं०) भूतल। भूमिदेव–(सं० पुं०) ब्राह्मण। भूमिधर–(सं० पुं०) पर्वत, पहाड़। भूमिप, भूमिपति, भूमिपाल–(सं०पुं०) भूपति, राजा। भूमिभृत–(सं० पुं०) राजा, पर्वत, पहाड़।
भूमिया–(हिं० पुं०) ग्रामदेवता। भूमिरुह–(सं० पुं०) वृक्ष, पेड़। भूमिलोक–(सं० पुं०) पृथ्वी लोक। भूमिष्ठ–(सं० पुं०) भूमि पर गिरा हुआ।
भूमिसुर–(सं० पुं०) ब्राह्मण।
भूमीन्द्र–(सं० पुं०) भूपति, राजा।
भूम्य–(सं०वि०) भूमि पर होने योग्य।
भूय–(सं०अव्य०) बहुत, अधिक, फिर से।
भूयिष्ठ–(सं० वि०) बहुतर, प्रचुर।
भूर–(हिं० वि०) बहुत, अधिक।
भूरसी (दक्षिणा)–(हिं० स्त्री०) वह थोड़ी-थोड़ी दक्षिणा जो किसी बड़े यज्ञ, दान अथवा धर्मकृत्य के अन्त में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।
भूरा–(हिं०पुं०) कच्ची चीनी, खाँड़।
भूरि–(सं०वि०)प्रचुर, अधिक, बड़ा भारी।
भूरिता–(सं० स्त्री०) अधिकता।
भूरुह–(सं० पुं०) वृक्ष, पेड़।
भूर्जपत्र–(सं० वि०) भोजपत्र।
भूर्लोक–(सं० पुं०) मर्त्यलोक।
भूल–(हिं०स्त्री०) दोष, अपराध, अशुद्धि।
भूलक–(हिं० पुं०) भूलनेवाला।
भूलना–(हिं० क्रि०) विस्मरण होना, याद न रहना, खो जाना; (वि०) भूलनेवाला।
भूलभुलैया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का घुमावदार और चक्कर में डालनेवाला गृह जिसमें एक ही तरह के बहुत से मार्ग और द्वार रहते हैं जिसके भीतर जाकर बाहर निकलना कठिन होता है।
भूलोक–(सं० पुं०) पृथ्वीलोक, संसार।
भूलोटन–(हिं०वि०) पृथ्वी पर लोटनेवाला।
भूवलय–(सं० पुं०) भूमि की परिधि।
भूविद्या–(सं० स्त्री०) भूमि के तत्त्वों का ज्ञान।
भूशय्या–(सं० स्त्री०) भूमि पर सोना।
भूशायी–(हिं०वि०)भूमि पर सोनेवाला।
भूषण–(सं० पुं०) अलंकार, आभरण।
भूषन–(हिं० पुं०) देखो भूषण।
भूषना–(हिं०पुं०)अलंकृत करना, सजाना।
भूषा–(सं० स्त्री०) आभूषण, गहना।
भूषित–(सं० वि०) अलंकृत, सज्जित।
भूसन–(हिं० पुं०) देखो भूषण।
भूसा–(हिं० पुं०) तुष, भूसी। भूसी–(हिं० स्त्री०) अन्न तथा दाने के ऊपर का छिलका।
भूसुत–(सं०पुं०) मंगल ग्रह, वृक्ष, पेड़।
भूसुर–(सं० पुं०) ब्राह्मण।
भृकुटी–(सं० स्त्री०) भृकुटी, भौंह।
भृङ्ग–(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा।
भृङ्गी–(सं० स्त्री०) भौंरी, भाँग।
भृत–(सं० वि०) पुष्ट, पाला हुआ।
भृति–(सं० स्त्री०) वेतन, मूल्य।

भृत्य–(सं० पुं०) दास। भृत्यता–(सं० स्त्री०) भृत्य का भाव या कर्म।
भृत्या–(सं० स्त्री०) दासी।
भृश–(सं० पुं०) बहुत अधिक।
भृष्ट–(सं०वि०) भूँना हुआ। भृष्टकार–(सं० पुं०) भड़भूंजा।
भेंगा–(हिं० वि०) जिसकी आँख की पुतली टेढ़ी रहती हो।
भेंट–(हिं० स्त्री०) मिलना, उपहार।
भेंटना–(हिं०क्रि०) मिलना, गले लगाना।
भेंड़–(हिं० स्त्री०) देखो भेंड़।
भेंवना–(हिं०क्रि०) भिगोना, तर करना।
भेउ–(हिं० पुं०) भेद, रहस्य।
भेक–(सं०पुं०) मेढक। भेख–(हिं० पुं०) देखो वेष।
भेखज–(हिं० पुं०) देखो भेषज।
भेजना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे को रवाना करना।
भेजवाना–(हिं० क्रि०) भेजने का काम दूसरे से कराना।
भेजा–(हिं०पुं०) खोपड़ी के भीतर का गूदा।
भेट–(हिं० स्त्री०) देखो भेंट।
भेड़–(हिं० स्त्री०) बकरी की जाति का एक चौपाया जिसके रोवें के कम्बल आदि बनते हैं।
भेड़ा–(हिं०पुं०) भेड़ जाति का नर, मेढ़ा।
भेड़िया–(हिं० पुं०) एक प्रसिद्ध मांसाहारी जंगली पशु।
भेड़ी–(सं० स्त्री०) मादा भेड़।
भेद–(सं० पुं०) शत्रु को बहकाकर अपनी ओर मिलाना, अन्तर, प्रकार, छिपी हुई बात।
भेदक–(सं०वि०) विदारक, छेदनेवाला।
भेदकर–(सं० वि०) भेद करनेवाला।
भेदना–(हिं०क्रि०) छेदना। भेदनीय–(सं० वि०) भेद करने योग्य।
भेदभाव–(सं० पुं०) अन्तर।
भेदित–(सं० वि०) विदारित।
भेदिया–(हिं० पुं०) भेद लेनेवाला।
भेदी, भेदू–(हिं० पुं०) गुप्त वार्ता को जाननेवाला; (वि०) भेद करनेवाला।
भेद्य–(सं० वि०) भेद करने योग्य।
भेन–(हिं० स्त्री०) भगिनी, बहिन।
भेना–(हिं० क्रि०) भिगोना, तर करना।
भेरी–(सं० स्त्री०) नगाड़ा, पटह।
भेरीकार–(हिं०पुं०) नगाड़ा बजानेवाला।
भेली–(हिं० स्त्री०) गुड़ आदि की बट्टी या पिण्डी।
भेव–(हिं० पुं०) रहस्य, भेद।
भेवना–(हिं० क्रि०) भिगोना, तर करना।
भेश–(हिं० पुं०) देखो वेश।
भेष–(हिं० पुं०) देखो वेश।
भेषज–(सं० पुं०) औषधि।
भेस–(हिं० पुं०) वेष।
भेसज–(हिं० स्त्री०) औषधि।
भेसना–(हिं०क्रि०) वस्त्र आदि पहनाना।
भैंस–(हिं० स्त्री०) गाय की जाति का काला पशु जिसको लोग दूध के लिये पालते हैं। भैंसा–(हिं० पुं०) भैंस का नर।
भै–(हिं० पुं०) भय, डर।
भैक्ष–(सं०पुं०) भिक्षा माँगने की क्रिया।
भैचक–(हिं० वि०) विस्मित, चकित।
भैन–(हिं० स्त्री०) भगिनी, बहिन।
भैने–(हिं०पुं०) बहिन का पुत्र, भानजा।
भैया–(हिं० पुं०) भ्राता, भाई, एक संबोधन का शब्द जो बराबरीवाले तथा छोटों के लिये व्यवहार किया जाता है।
भैयाचार, भैयाचारी–(हिं० पुं०) भ्रातृत्व, भाईचारा।
भैरव–(सं० वि०) भयंकर, डरावना।
भैरो–(हिं० पुं०) देखो भैरव।

भैवाद–(हि॰ पुं॰) भाईचारा।
भैषज, भैषज्य–(सं॰ पुं॰) औषध।
भैहा–(हि॰ पुं॰) डरा हुआ, भयभीत।
भौं–(हि॰ स्त्री॰) भों-भों का शब्द।
भोंकना–(हि॰ क्रि॰) धँसाना, घुसेड़ना।
भोंगाल–(हि॰ पुं॰) बड़ा भोंपा।
भोंचाल–(हि॰ पुं॰) देखो भूकम्प।
भोंड़ा–(हि॰ वि॰) कुरूप, भद्दा।
भोंड़ापन–कुरूपता, भद्दापन।
भोंतरा–(हि॰ वि॰) जिसकी धार पैनी न हो।
भोंदू–(हि॰ वि॰) मूर्ख, भोला, सीधा।
भोंपा, भोंपू–(हि॰ पुं॰) तुरही की तरह का मुंह से फूंककर बजाने का बाजा।
भो–(हि॰ क्रि॰ वि॰) भया, हुआ।
भोकार–(हि॰ स्त्री॰) वेग से रोने का शब्द।
भोक्ता–(सं॰ वि॰) भोजन करनेवाला, उपभोग करनेवाला।
भोग–(सं॰पुं॰) सुख-दुःख का अनुभव, भोजन, पुण्य-पाप का फल, पालन-पोषण।
भोगत्व–(सं॰पुं॰) भोग का भाव या धर्म।
भोगना–(हि॰क्रि॰) सुख-दुःख का अनुभव करना, सहन करना।
भोगबन्धक–(सं॰ पुं॰) बंधक रखने की वह रीति जिसमे उधार लिये हुए रुपये का सूद नहीं देना होता परन्तु कुछ काल के लिये महाजन को सम्पत्ति का भोग करने का अधिकार होता है।
भोगली–(हि॰ स्त्री॰) छोटी नली, पुपली।
भोगवाना–(हि॰ क्रि॰) भोग कराना।
भोगविलास–(सं॰ पुं॰) आमोद-प्रमोद।
भोगस्थान–(सं॰ पुं॰) भोगभूमि।
भोगाना–(हि॰ क्रि॰) भोग कराना।
भोगी–(सं॰ पु॰) सर्प; (वि॰) इन्द्रियों का सुख चाहनेवाला।
भोग्य–(सं॰ वि॰) भोगने योग्य।
भोज–(हि॰ पुं॰) बहुत से लोगों को एक साथ बैठाकर भोजन कराना, जेवनार।
भोजन–(सं॰ पुं॰) भक्षण, भोजन की सामग्री।
भोजनालय–(सं॰ पुं॰) पाकशाला, रसोइयाँघर। भोजनीय–(सं॰ वि॰) भोजन करने योग्य।
भोजपत्र–(हि॰ पुं॰) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी छाल प्राचीन समय में पुस्तकादि लिखने के काम में आती थी।
भोजयिता–(हि॰वि॰) भोजन करानेवाला।
भोजविद्या–(सं॰ स्त्री॰) ऐन्द्रजालिक विद्या, बाजीगरी।
भोजी–(हि॰ वि॰) भोजन करनेवाला।
भोजू–(हि॰ पुं॰) भोजन।
भोज्य–(सं॰ वि॰) भोजन करने योग्य; (पुं॰) खाद्य पदार्थ।
भोजागार–(हि॰ पुं॰) भण्डारघर।
भोथरा–(हि॰ वि॰) कुंठित, भुथरा।
भोना–(हि॰ क्रि॰) लिप्त होना, भीनना।
भोपा–(हि॰ पुं॰) एक प्रकार की तुरही, मूर्ख।
भोर–(हि॰ पुं॰) प्रातःकाल, तड़का।
भोराई–(हि॰स्त्री॰) भोलापन, सिधाई।
भोराना–(हि॰ क्रि॰) भ्रम में डालना।
भोरानाथ–(हि॰ पुं॰) भोलानाथ, शिव।
भोला–(हि॰ वि॰) सरल, सीधा-सादा, मूर्ख। भोलानाथ–(सं॰ पुं॰) शिव, महादेव। भोलापन–(हि॰ पुं॰) सरलता, सिधाई। भोलाभाला–(हि॰ वि॰) सीधा-सादा।

भोसर–(हिं० वि०) मूर्ख।
भौं–(हिं० स्त्री०) आँख के ऊपर के बालों की श्रेणी, भौंह।
भौंकना–(हिं० क्रि०) भौं भौं शब्द करना, कुत्तों का बोलना।
भौंचाल–(हिं० पुं०) देखो भूकम्प।
भौंर–(हिं० पुं०) भौंरा, जल का आवर्त।
भौंरा–(हिं० पुं०) काले रंग का उड़नेवाला एक फतिंगा, बड़ी मधु-मक्खी, अन्न रखने का गड्ढा।
भौंराना–(हिं० क्रि०) परिक्रमा करना, घुमाना, ब्याह करना।
भौंरी–(हिं० स्त्री०) पशुओं के शरीर पर का रोंवे का चक्र।
भौंह–(हिं० स्त्री०) भृकुटी, भौं।
भौंहरा–(हिं० पुं०) भूमिगृह।
भौ–(हिं० पुं०) भव, संसार, जगत्, भय, डर।
भौका–(हिं० पुं०) बड़ी दौरी, टोकरा।
भौगोलिक–(सं० वि०) भूगोल संबंधी।
भौचक–(हिं० वि०) स्तम्भित, घब-ड़ाया हुआ।
भौचाल–(हिं० पुं०) देखो भूकम्प।
भौजी, भौजाई–(हिं० स्त्री०) भाई की स्त्री, भावज।
भौतिक–(सं० वि०) पंच तत्वों से बना हुआ, पार्थिव, शरीर संबंधी।
भौन–(हिं० पुं०) देखो भवन, घर।
भौना–(हिं० क्रि०) भ्रमण करना, घूमना।
भौम–(सं० वि०) भूमि संबंधी, भूमि से उत्पन्न।
भौमिक–(सं० वि०) भूमि संबंधी।
भौर–(हिं० पुं०) भवँर, भौंरा।
भौलिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की नाव जो ऊपर से ढपी रहती है।
भौसा–(हिं० पुं०) जन-समूह, भीड़-भाड़।
भ्रंश–(सं० पुं०) ध्वंस, नाश; (वि०) भ्रष्ट।
भ्रकुटि–(सं० स्त्री०) भृकुटी, भौंह।
भ्रम–(सं० पुं०) भ्रान्ति, धोखा, सन्देह, संशय। भ्रमण–(सं० पुं०) घूमना-फिरना, यात्रा।
भ्रमणीय–(सं० वि०) घूमते फिरनेवाला।
भ्रमना–(हिं० क्रि०) भटकना, भूलना।
भ्रमर–(सं० पुं०) मधुकर, भौंरा।
भ्रमरी–(सं० स्त्री०) मिरगी रोग, भौंरे की मादा।
भ्रमरात्मक–(सं० वि०) संदिग्ध।
भ्रमाना–(हिं० क्रि०) बहकाना।
भ्रमी, भ्रमीत–(हिं० वि०) चकित, भौचक।
भ्रमित–(सं० वि०) शंकित, घूमता हुआ।
भ्रष्ट–(सं० वि०) दूषित, दुराचारी।
भ्रात, भ्राता–(हिं० पुं०) सगा भाई, सहोदर भ्राता। भ्रातृत्व (सं० पुं०) भ्राता का भाव या धर्म।
भ्रान्त–(सं० वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ।
भ्रान्ति–(सं० स्त्री०) भ्रम, धोखा, संशय।
भ्रामक–(सं० पुं०) भ्रम में डालनेवाला।
भ्रुकुटी–(सं० स्त्री०) क्रोध आदि द्वारा भौंह चढ़ाना।
भ्रू–(सं० स्त्री०) भौंह, भौं। भ्रूभङ्ग–(पुं०) भौंह चढ़ाना।
भ्रूण–(सं० पुं०) स्त्री का गर्भ।
भ्रूविकार–(सं० पुं०) भौंहें चढ़ाना।
भ्वहरना–(हिं० क्रि०) भयभीत होना, डरना।
भ्वासर–(हिं० वि०) मूर्ख।

म

म–हिन्दी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यञ्जन तथा पवर्ग का अन्तिम वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और नासिका है।

म (सं०पुं०) शिव, चन्द्रमा, ब्रह्मा, यम, विष, समय।
मंग–(हिं० स्त्री०) देखो माँग।
मंगता, मंगन–(हिं०पुं०) भिक्षुक, भिखमंगा
मँगनी–(हिं० स्त्री०) माँगने की क्रिया या भाव।
मंगलामुखी–(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
मंगल–देखो मङ्गल।
मँगवाना–(हिं० क्रि०) माँगने का काम दूसरे से कराना। **मंगाना**–(हिं० क्रि०) मँगवाना।
मँजना–(हिं० क्रि०) माँजा जाना, अभ्यस्त होना।
मँजाना–(हिं० क्रि०) माँजने का काम दूसरे से कराना।
मंजार–(हिं० पुं०) देखो मार्जार, बिल्ली।
मंजीर–(हिं० पुं०) नूपुर, घुँघुरू।
मंजीरा–(हिं० पुं०) करताल नामक बाजा।
मंजू, मंजुल–(हिं० वि०) मनोहर, सुन्दर।
मंजुषा–(हिं० स्त्री०) छोटा पेटारा।
मंझा–(हिं० पुं०) वह पदार्थ जिससे पतंग की डोरी माँजी जाती है।
मँझार–(हिं० क्रि० वि०) मध्य भाग में, बीच में। **मँझियार**–(हिं० वि०) मध्य या बीच का।
मंडना–(हिं०क्रि०) भरना, शृंगार करना।
मँडरना–(हिं० क्रि०) चारों ओर से घेर लेना। **मँडराना**–(हिं० क्रि०) मण्डल बाँधकर या चक्कर देते हुए उड़ना। किसी के चारों ओर घूमना।
मंडल–(हिं० पुं०) देखो मण्डल।
मंत्रणा–देखो मन्त्रणा।
मँडलाना–(हिं० क्रि०) देखो मँडराना।
मंडलीक–(हिं० पुं०) बारह राजाओं का अधिपति।
मँडवा–(हिं० पुं०) देखो मण्डप।
मंडी–(हिं० स्त्री०) थोक बिक्री का स्थान, हाट।
मँड़ुआ–(हिं०पुं०) एक प्रकार का क्षुद्र अन्न
मंडूक–(हिं० पुं०) मेढक, मण्डूक।
मंडूर–(हिं० पुं०) मण्डूर, लोहकीट।
मंत–(हिं० पुं०) मंत्र, सलाह।
मंत्री–(हिं०पुं०) मन्त्री, परामर्श देनेवाला
मंथ–देखो मन्थ।
मंदरा–(हिं० वि०) नाटा, ठिंगना।
मंदा–(हिं० वि०) धीमा, कम दाम का, सस्ता, शिथिल।
मंदिल–(हिं० पुं०) देखो मन्दिर।
मंदी–(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु के भाव का कम होना।
मंसना–(हिं०क्रि०) मन में संकल्प करना।
मंसा–(हिं०स्त्री०) अभिप्राय, इच्छा, आशय।
मइका–(हिं० पुं०) नैहर।
मउर–(हिं०पुं०) विवाह के समय दुलहे के सिर पर पहनाने का फूलों का बना हुआ मुकुट।
मउलसिरी–(हिं०स्त्री०) देखो मौलसिरी।
मउसी–(हिं० स्त्री०) देखो मौसी।
मउनी–(हिं० स्त्री०) छोटी डलिया।
मकई–(हिं० स्त्री०) ज्वार नामक अन्न।
मकड़ा–(हिं० पुं०) बड़ी मकड़ी।
मकड़ी–(हिं० स्त्री०) आठ पैरवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा, लता।
मकर–(सं० पुं०) मगर।
मकरन्द–(सं० पुं०) फूलों का रस जिसको मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं, पुष्प केसर।
मकरा–(हिं० पुं०) भूरे रंग का एक कीड़ा, मँड़ुवा नामक अन्न।
मकराकार–(सं० वि०) मगर या मछली के आकार का।

मकरालय, मकरावास–(सं० पुं०) समुद्र।
मकरौरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो प्रायः आम के वृक्षों पर चिपका रहता है।
मकार–(सं० पुं०) म स्वरूप वर्ण।
मकुंद–(हिं० पुं०) देखो मुकुन्द।
मकु–(हिं० अव्य०) कदाचित्, चाहे, वरन्
मक्कुट–(हिं० पुं०) देखो मुकुट।
मकुना–(हिं० पुं०) बिना मूंछ का मनुष्य।
मकुनी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बाटी या लिट्टी।
मको–(हिं० स्त्री०) देखो मकोय।
मकोड़ा–(हिं० पुं०) कोई छोटा कीड़ा।
मकोय–(हिं० स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसमें गोल छोटे फल लगते हैं।
मकोरना–(हिं० क्रि०) देखो मरोड़ना।
मक्का–(हिं० पुं०) ज्वार, मकई।
मक्खन–(हिं० पुं०) गाय या भैंस के दूध का वह सार भाग जो दूध या दही को मथने से प्राप्त होता है जिसको तपानेसे घी बनता है।
मक्खा–(हिं० पुं०) बड़ी जाति की मक्खी, नर मक्खी। **मक्खी**–(हिं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध उड़नेवाला छोटा कीड़ा जिसके छः पैर होते हैं, मक्षिका, मधुमक्खी।
मक्खीचूस–(हिं० वि०) बहुत बड़ा कृपण। **मक्खीलेट**–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की जाली जिस पर छोटी छोटी बूटियाँ बनी रहती हैं।
मक्षिका–(सं० स्त्री०) मक्खी, शहद की मक्खी। **मक्षिका मल**–सिक्थ, मोम।
मख–(सं० पुं०) याग, यज्ञ।
मखद्विष, मखद्वेषी–(सं० पुं०) राक्षस।
मखन–(हिं० पुं०) देखो मक्खन।
मखनिया–(हिं० पुं०) मक्खन बनाने या बेचने वाला; (वि०) जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।
मखशाला–(सं० स्त्री०) यज्ञशाला।
मखाना–(हिं० पुं०) देखो ताल मखाना।
मखालय–(सं० पुं०) यज्ञशाला।
मग–(हिं० पुं०) मार्ग।
मगजी–(हिं० स्त्री०) पतली गोट या पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है।
मगद–(हिं० पुं०) एक प्रकार की मिठाई जो मूंग के आटे और घी से बनाई जाती है। **मगदर, मगदल**–(हिं० पुं०) एक प्रकार का लड्डू जो मूंग या उड़द के आँटे में घी और चीनी मिलाकर मथकर बनाया जाता है।
मगदा–(हिं० पुं०) मार्ग दिखलानेवाला।
मगन–(हिं० वि०) नग्न, प्रसन्न, लीन।
मगना–(हिं० क्रि०) लीन या तन्मय होना।
मगर–(हिं० पुं०) इस नाम का एक प्रसिद्ध जल-जन्तु; (फा०) परन्तु।
मगरमच्छ–(हिं० पुं०) बड़ी मछली।
मगह–(हिं० पुं०) मगध देश।
मगही–(हिं० वि०) मगध देश का, मगह में उत्पन्न; (पुं०) एक प्रकार का पान।
मग्न–(सं० वि०) तन्मय, लीन, प्रसन्न।
मघई–(हिं० वि०) देखो मगही।
मघवा–(सं० पुं०) इन्द्र।
मघौना–(हिं० पुं०) नीले रंग का वस्त्र।
मङ्गल–(सं० पुं०) कल्याण, कुशल, शुभ, क्षेम। **मंगल पाठक**–बन्दीजन, स्तुतिपाठक।
मङ्गलाचरण–(सं० पुं०) शुभ कार्य के पहले मंगलजनक कार्य का आचरण।
मङ्गलामुखी–(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
माङ्गल्य–(सं० वि०) मंगलजनक, सुन्दर।
मचक–(हिं० स्त्री०) दबाव, बोझ।

मचकना–(हिं० क्रि०) झटके से किसी पदार्थ को हिलाना।
मचका–(हिं० पुं०) झोंका, धक्का।
मचना–(हिं० क्रि०) फैलना, छा जाना।
मचमचाना–(हिं० क्रि०) शब्द-सहित हिलना।
मचल–(हिं० स्त्री०) मचलने की क्रिया या भाव। **मचलना**–(हिं० क्रि०) हठ करना, अड़ना।
मचला–(हिं० वि०) मचलनेवाला। **मचलाई**–(हिं० स्त्री०) हठ।
मचलाना–(हिं० क्रि०) वमन करने की इच्छा होना, ओकाई आना।
मचवा–(हिं० पुं०) खटिया या चौकी का पावा।
मचान–(हिं० स्त्री०) चार खंभों पर बाँस या टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान जिस पर बैठकर लोग शेर आदि का शिकार करते हैं या किसान खेत की रखवाली करते हैं।
मचाना–(हिं० क्रि०) ऐसा कार्य आरंभ करना जिसमें शब्द हो।
मचिया–(हिं० स्त्री०) ऊँचे पायों की एक आदमी के बैठन योग्य छोटी चारपाई।
मचिलई–(हिं० स्त्री०) मचलाहट।
मच्छ–(हिं० पुं०) बड़ी मछली।
मच्छड़, मच्छर–(हिं० पुं०) एक प्रसिद्ध छोटा फतिंगा जो वर्षा तथा ग्रीष्म ऋतु में गरम देशों में पाया जाता है।
मच्छरता–(हिं० स्त्री०) द्वेष, ईर्ष्या, डाह।
मच्छी–(हिं० स्त्री०) देखो मछली।
मछली–(हिं० स्त्री०) मत्स्य, मीन।
मछलीमार–धीवर, मल्लाह, मछुआ।
मछुवा, मछुआ–(हिं० पुं०) धीवर, मल्लाह।
मछेह–(हिं० पुं०) मधुमक्खी का छत्ता।
मजारी–(हिं० स्त्री०) मार्जार, बिल्ली।
मजीरा–(हिं० पुं०) काँसे की बनी हुई छोटी-छोटी कटोरियों की जोड़ी जिनके बीच में छेद होता है जिनमें से डोरा पिरोकर एक दूसरी से टकराई जाती है।
मज्जन–(सं० पुं०) स्नान, नहाना।
मज्जना–(हिं० क्रि०) नहाना, गोता लगाना।
मज्जा–(सं० स्त्री०) हड्डी के भीतर का गूदा।
मज्झ, मझ–(हिं० क्रि० वि०) बीच में।
मझधार–(हिं० स्त्री०) नदी की मध्य धारा, बीच धारा।
मझला–(हिं० वि०) मध्य का, बीच का।
मझाना–(हिं० क्रि०) बीच में धँसना या धँसाना।
मझार–(हिं० क्रि० वि०) बीच में।
मझियारा–(हिं० वि०) बीच का, मध्य का।
मझोला–(हिं० वि०) बीच का, मध्यम आकार का।
मञ्च–(सं० पुं०) पीढ़ा, मचिया।
मञ्जरी–(सं० स्त्री०) मोती, लता।
मञ्जीर–(सं० पुं०) नुपुर, घुंघुरू।
मञ्जु–(सं० वि०) मनोहर, सुन्दर।
मञ्जुपाठक–(सं० वि०) अच्छी तरह पढ़नेवाला।
मञ्जुभाषी–(सं० वि०) सुन्दर बोलनेवाला।
मञ्जुल–(सं० वि०) मनोहर, सुन्दर।
मञ्जुवादी–(सं० वि०) मीठे वचन बोलनेवाला।
मञ्जूषा–(सं० स्त्री०) पिटक, पिटारो।
मट–(हिं० पुं०) मिट्टी का बड़ा पात्र।
मटक–(हिं० स्त्री०) मटकने की क्रिया या भाव, चाल।

मटकना–(हिं० क्रि०) लचक कर या चोचला दिखाते हुए चलना, लौटना, फिरना। **मटकान**–(हिं०स्त्री०) नृत्य, मटक, चोचला।

मटका–(हिं० पुं०) मिट्टी का बड़ा घड़ा जिसका मुख चौड़ा होता है।

मटकाना–(हिं० क्रि०) अङ्गों को नखरे के साथ हिलाना, डुलाना, चमकाना।

मटकी–(हिं० स्त्री०) छोटा मटका, कमोरी, मटक।

मटकीला–(हिं० वि०) चोचला के साथ अङ्गों को हिलानेवाला। **मटकौअल**–(हिं० स्त्री०) मटकने की क्रिया या भाव, मटक।

मटमैला–(हिं० वि०) मिट्टी के रंग का, धूमिल।

मटर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा अन्न, इसकी फलियों को छीमी कहते हैं जो मीठी होती है और कच्ची भी खाई जाती ह।

मटराला–(हिं० पुं०) जव के साथ मिला हुआ मटर।

मटा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का लाल चींटा।

मटिआना–(हिं० क्रि०) अशुद्ध पात्र को मिट्टी आदि लगाकर स्वच्छ करना, मिट्टी से ढाँपना।

मटिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी, मृत शरीर; (वि०) मिट्टी के समान, मटमैला। **मटियामेट**–(हिं० वि०) नष्ट-भ्रष्ट।

मटियाला, मटीला–(हिं०वि०) मटमैला।

मटुका–(हिं० पुं०) देखो मटका।

मटुकी–(हिं० स्त्री०) देखो मटकी।

मट्टी–(हिं० स्त्री०) देखो मिट्टी।

मट्ठर–(हिं० वि०) आलसी।

मट्ठा–(हिं० पुं०) मथा हुआ दही जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो, तक्र, छाछ।

मट्ठी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पकवान।

मठ–(सं० पुं०) निवास-स्थान, छात्रावास, देवगृह, मन्दिर। **मठधारी**–(हिं० पुं०) मठाधीश, अनेक मठों का अधिकारी।

मठरी–(हिं०स्त्री०) देखो मट्ठी, टिकिया।

मठाधिपति, मठाधीश–(सं० पुं०) मठ का महन्त।

मठिया–(हिं० स्त्री०) फूल धातु की बनी हुई हाथ की चूड़ियाँ। **मठी**–(हिं० स्त्री०) मठ का अधिकारी या महन्त।

मठोर–(हिं० स्त्री०) दही मथन या मट्ठा रखने की मटकी।

मड़ई–(हिं० स्त्री०) छोटी कुटी या झोपड़ी।

मड़क–(हिं० स्त्री०) गुप्त बात, रहस्य।

मड़मलाना–(हिं० क्रि०) देखो मरमराना।

मड़राना–(हिं० क्रि०) देखो मंडराना।

मड़वा–(हिं० पुं०) मण्डप।

मड़हट–(हिं० पुं०) मरघट।

मड़ाड़–(हिं० पुं०) कच्चा तालाब, कुवें आदि में का गड्ढा जो भीति के गिरने से बन गया हो।

मड़ैया–(हिं० स्त्री०) पर्णशाला, कुटी।

मढ़–(हिं० पुं०) दाँत के ऊपर की मैल; (वि०) अड़कर बैठनेवाला। **मढ़ना**–(हिं० क्रि०) चौफेर से लपेटना, ढोल किसी के गले लगाना। **मढ़वाना**–(हिं० क्रि०) मढ़ने का काम दूसरे से कराना।

मढ़ाई–(हिं० स्त्री०) मढ़ने का काम या शुल्क।

मढ़ाना–(हिं० क्रि०) मढ़ने का काम दूसरे से कराना।

मढ़ी–(हिं० स्त्री०) छोटा देवालय, छोटा मण्डप, झोपड़ी।
मढ़ैया–(हिं० वि०) मढ़नेवाला।
मणि–(सं० पुं०) बहुमूल्य पत्थर, रत्न।
मणिकार–(सं० पुं०) रत्नों को जड़कर गहने बनानेवाला।
मणी–(सं० पुं०) सर्प, साँप।
मण्ड–(सं०पुं०) अन्न आदि का रस, माँड़।
मण्डन–(सं० पुं०) आभूषण, गहना, प्रमाण आदि द्वारा किसी मत को सिद्ध या पुष्ट करना।
मण्डप–(सं० पुं०) देवालय के ऊपर का गोल भाग, चँदवा।
मण्डल–(सं० पुं०) चन्द्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़नेवाला घेरा, वृत्ताकार घेरा, समाज, समूह। **मण्डलाकार**–(सं० वि०) गोल। **मण्डलित**–(सं० वि०) गोल किया हुआ।
मण्डली–(सं० स्त्री०) गोष्ठी, समूह।
मण्डलीक, मण्डलेश, मण्डलेश्वर–(सं० पुं०) बारह राजाओं का अधिपति।
मण्डित–(सं० वि०) भूषित, सजाया हुआ।
मण्डूक–(सं० पुं०) मेढक।
मण्डूर–(सं०पुं०) गलाये हुए लोहे का मैल।
मतंग–(हिं० पुं०) हाथी, मेघ, बादल।
मत–(सं० पुं०) सम्मति, आशय, धर्म, पन्थ, ज्ञान, सम्प्रदाय; (हिं०क्रि०वि०) निषेधवाचक शब्द, नहीं।
मतंगज–(सं० पुं०) हस्ती, हाथी।
मतरिया–(हिं० स्त्री०) देखो माता।
मतवाला–(हिं० वि०) उन्मत्त, पागल।
मता–(हिं० पुं०) देखो मत; (स्त्री०) देखो मति। **मताधिकार**–(सं० पुं०) मत देने का अधिकार। **मतानुयायी**–(सं० पुं०) किसी के मत के अनुसार आचरण करनेवाला।
मतारी–(हिं० स्त्री०) महतारी, माता।
मतावलम्बी–(सं० पुं०) किसी एक मत, सिद्धान्त या सम्प्रदाय का अवलम्बन करनेवाला।
मति–(सं० स्त्री०) बुद्धि, इच्छा, सम्मति; (हिं० क्रि० वि०) देखो मत; (हिं० अव्य०) सदृश, समान। **मतिभेद**–(सं० पुं०) बुद्धि की भिन्नता। **मतिभ्रंश**–(सं० पुं०) पागलपन। **मतिभ्रम**–(सं० पुं०) बुद्धि भ्रंश।
मतिमत, मतिमन्त–(सं० वि०) बुद्धिमान्, विचारवान्।
मतिमान–(सं०वि०) बुद्धिमान्, विचारवान्।
मतिमाह–(हिं० वि०) मतिमान।
मतिविभ्रम–(सं० पुं०) उन्माद रोग।
मतिशाली–(हिं०वि०) मेधावी, बुद्धिमान्।
मती–(हिं० स्त्री०) देखो मति; (क्रि० वि०) मत।
मत्कुण–(सं०पुं०) खटमल।
मत्त–(सं० वि०) मतवाला, उन्मत्त, पागल।
मत्तता, मत्तताई–(हिं० स्त्री०) मतवालापन।
मत्तनाग–(सं० पुं०) मतवाला हाथी।
मत्था–(हिं० पुं०) ललाट, माथा, सिर।
मत्सर–(सं० पुं०) ईर्ष्या, डाह; (वि०) कृपण, कंजूस। **मत्सरता**–(सं०स्त्री०) डाह, जलन।
मत्स्य–(सं० पुं०) मीन, मछली।
मत्स्यांगना–(सं० स्त्री०) मत्स्यनारी, वह प्राणी जिसका मुख स्त्री के समान तथा बाकी शरीर का भाग मछली के समान होता है।
मत्स्याशन–(सं० पुं०) मछली खानेवाला।
मत्स्योपजीवी–(सं० पुं०) धीवर, मल्लाह।
मथन–(सं०पुं०) मथने की क्रिया या भाव।

मथना–(हि० क्रि०) किसी तरल पदार्थ को वेगपूर्वक हिलाना या चलाना, रगड़ना, नष्ट करना, घूम-घूमकर पता लगाना, किसी काम को बारंबार करना।
मथनियां–(हि० स्त्री०) मथनी; (पुं०) दूध को मथकर मक्खन निकालनेवाला।
मथनी–(हि० स्त्री०) मथने की क्रिया।
मथित–(सं० वि०) मथा हुआ।
मथुरिया–(हि० वि०) मथुरा का।
मथौरी–(हि० स्त्री०) स्त्रियों के सिर पर पहनने का एक गहना।
मदंध–(हि० वि०) देखो मदान्ध।
मद–(सं० पुं०) एक गन्धयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों में से बहता है, आनन्द , हर्ष, उन्मत्तता, पागलपन, गर्व, अहंकार; (वि०) मत्त, मतवाला।
मदक–(हि० स्त्री०) एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत्व से बनाया जाता है।
मदकारी–(हि० वि०) जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई हो।
मदकी–(हि० वि०) मदक पीनेवाला।
मदगल–(हि० वि०) मत्त, बावला।
मदजल–(सं० पुं०) मत्त हाथी के मस्तक का स्राव।
मदन–(सं०पुं०) कामदेव, वसन्त, मत्तता।
मदनगोपाल–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
मदनान्ध–(स० वि०) कामान्ध।
मदनी–(सं० स्त्री०) सुरा, मदिरा, कस्तूरी।
मदमत्त–(सं० वि०) मद में चूर।
मदस्थल–(सं०पुं०) मदिरा पीने का स्थान।
मदान्ध–(सं० वि०) मदमत्त, मद में चूर।
मदार–(हि०पुं०) आक का वृक्ष, अकवन।
मदारिय, मदारी–(हि० पु०) बन्दर, भालू आदि का तमाशा दिखलानेवाला, कलन्दर, बाजीगर।
मदालस–(सं० पुं०) मद के कारण आलस्य।
मदिया–(हि० स्त्री०) मादा प्राणी।
मदिरा–(सं० स्त्री०) मद्य। **मदिराक्ष**–(सं० वि०) जिसकी आँखें मद से भरी हों।
मदिरागृह–(सं० पुं०) मद्यशाला।
मदीय–(सं० वि०) मेरा।
मदीला–(हि० वि०) मद में भरा हुआ।
मदोत्कट–(सं० वि०) मदोन्मत्त।
मदोद्धत–(सं० वि०) मत्त, अभिमानी, घमंडी।
मदोन्मत्त–(सं० वि०) उन्मत्त।
मद्धिम–(हि० वि०) मध्यम, मन्दा।
मद्धे–(हि० अव्य०) संबंध में, विषय में।
मद्य–(सं० पुं०) सुरा, मदिरा। **मद्यप**–(सं० वि०) मदिरा पीनेवाला। **मद्यपान**–(सं० पुं०) मदिरा पीना।
मध–(हि० पुं०) देखो मध्य; (अव्य०) में।
मधिम–(हि० वि०) देखो मध्यम, मद्धिम।
मधु–(सं० पुं०) मद्य, जल, दूध, मकरन्द, मीठा रस; (वि०) मीठा, स्वादिष्ट। **मधुकर**–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा। **मधुकरी**–(सं० स्त्री०) भ्रमरी, भौंरी, वह भिक्षा जिसमें पका हुआ अन्न दिया जाता है।
मधुकोष–(सं० पुं०) मधुमक्खी का छत्ता। **मधुगन्ध**–(सं०पुं०) मीठी महक। **मधुतृण**–(सं०पुं०) इक्षु; ईख। **मधुत्व**–(सं० पुं०) मीठापन। **मधुप**–(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा, मधुमक्खी।
मधुपटल–(सं० पुं०) मधुमक्खी का छत्ता। **मधुपर्क**–(सं० पु०) पूजन का

एक उपचार जिसमें दही, घी, जल और चीनी मिलाकर देवताओं को चढ़ाया जाता है। **मधुपायी**–(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा, मधु पीनेवाला।
मधुप्रमेह–(सं० पुं०) वह रोग जिसमें मूत्र के साथ शक्कर आती है।
मधुफल–(सं० पुं०) मीठा नारियल, दाख। **मधुमक्खी**–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मक्खी जो फूलों का रस चूसकर मधु इकट्ठा करती है।
मधुमक्षिका–(सं० स्त्री०) मधुमक्खी।
मधुमाखी–(हिं० स्त्री०) मधुमक्खी।
मधुमाधव–(सं० पुं०) वसन्तकाल।
मधुर–(स० वि०) जिसका स्वाद मीठा हो, मनोरञ्जक, सुन्दर। **मधुरई**–(हिं० स्त्री०) सुकुमारता, मधुरता, कोमलता, मीठापन। **मधुरता**–(सं० स्त्री०) मधुर होने का भाव, सौन्दर्य, सुन्दरता, मिठास।
मधुराक्षर–(सं० वि०) सुन्दर अक्षर।
मधुराज–(सं० पुं०) भौंरा।
मधुरान्न–(सं० पुं०) मिठाई।
मधुरान–(हिं० क्रि०) मीठा होना, सुन्दर हो जाना।
मधुरिका–(सं० स्त्री०) सौंफ।
मधुरिमा–(हिं० स्त्री०) मीठापन, सुन्दरता।
मधुलिह, मधुलोलुप–(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा।
मधुवीज–(सं० पुं०) दाड़िम, अनार।
मधुवृक्ष–(सं० पुं०) महुए का पेड़।
मधुशर्करा–(सं० स्त्री०) मधु से बनाई हुई शक्कर। **मधुश्री**–(सं० स्त्री०) वसन्त की शोभा। **मधुस्थान**–(सं० पुं०) मधुमक्खी का छत्ता। **मधुस्नेह**–(सं० पुं०) मोम। **मधुस्वर**–(सं० पुं०) कोकिल, कोयल। **मधुकरी**–(सं० स्त्री०) मधुकरी, भ्रमरी।
मधूत्सव–(सं० पुं०) वसन्तोत्सव।
मध्य–(सं० पुं०) किसी वस्तु के बीच का अंश, कटि, कमर। **मध्यगत**–(सं० वि०) मध्य स्थित, बीच का।
मध्यचारी–(सं० वि०) बीच में चलनेवाला।
मध्यतः–(सं० अव्य०) मध्य में, बीच में।
मध्यता–(सं० स्त्री०) मध्य का भाव या धर्म। **मध्यदिन**–(सं० पुं०) मध्याह्न, दोपहर। **मध्यदेश**–(सं० पुं०) भारतवर्ष का वह प्रदेश जिसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत, पश्चिम में कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग है। **मध्यदेह**–(सं० पुं०) उदर, पेट।
मध्यमपदलोपी–(हिं० पुं०) लुप्त पद समास जिसमें पहले पद का आगामी पद से संबंध बतलानेवाला शब्द लुप्त रहता है।
मध्यमपुरुष–(सं० पुं०) व्याकरण के अनुसार वह व्यक्ति जिससे कुछ कहा जाय।
मध्यमरात्र–(सं० पुं०) मध्य रात्रि, आधीरात।
मध्यमलोक–(सं० पुं०) पृथ्वी।
मध्यमस्थ–(सं० वि०) मध्यस्थित, बीच का।
मध्यमा–(सं० स्त्री०) बीच की अंगुली।
मध्यमाहरण–(सं० पुं०) बीज गणित की वह क्रिया जिसके अनुसार कोई अव्यक्त मान निकाल लिया जाता है।
मध्यमिक–(सं० वि०) बीच का।
मध्यरात्र–(सं० पुं०) निशीथ, आधी रात
मध्यरेखा–(सं० स्त्री०) पृथ्वी के मध्यभाग की कल्पित रेखा जो उत्तर-दक्षिण मानी जाती है।

मध्यलोक–(सं० पुं०) पृथ्वी।
मध्यवर्ती–(सं० वि०) मध्य का, विचला।
मध्यवय–(हिं० पुं०) जीवन का मध्य भाग।
मध्यवृत्ता–(सं० पुं०) नाभि।
मध्यशरीर–(सं० वि०) पेट, उदर।
मध्यशायी–(सं० वि०) मध्यवर्ती, बीच का।
मध्यस्थ–(सं० पुं०) पंच, वह व्यक्ति जो बीच में पड़कर दो मनुष्यों के झगड़े को निबटाता है। **मध्यस्थता**–(सं० स्त्री०) मध्यस्थ होने का भाव या धर्म। **मध्यस्थल**–(सं० पुं०) कटि देश, कमर। **मध्यस्थित**–(सं० वि०) मध्यवर्ती।
मध्यायु–(सं० पुं०) तैंतीस वर्ष से पैंसठ वर्ष तक की आयु।
मध्याह्न–(सं० पुं०) दिन का मध्य भाग, ठीक दोपहर का समय। **मध्याह्नोत्तर**–तीसरा प्रहर।
मध्ये–(सं० क्रि० वि०) विषय में।
मनःक्षेप–(सं० पुं०) मन का उद्वेग।
मनःशास्त्र–(सं० पुं०) मनोविज्ञान।
मन–(सं० पुं०) अन्तःकरण, इच्छा; (हिं० पुं०) चालीस सेर की तौल।
मनई–(हिं० पुं०) मनुष्य।
मनकना–(हिं० क्रि०) हिलना-डोलना, तर्क-वितर्क करना।
मनकरा–(हिं० वि०) प्रकाशमान।
मनका–(हिं० पुं०) छेदा हुआ गोल दाना जिसकी सुमिरिनी बनाई जाती है, गुरिया।
मनकामना–(हिं० स्त्री०) मनोरथ, इच्छा।
मनगढ़ंत–(हिं० वि०) कपोलकल्पित, जिसकी वास्तव में सत्ता न हो।
मनचला–(हिं० वि०) साहसी, निडर, रसिक।
मनन–(सं० पुं०) सोचना, अच्छी तरह से अध्ययन।
मनभाया–(हिं० वि०) जो मन को अच्छा लगे। **मनभावता**–(हिं० वि०) प्रिय, प्यारा।
मनभावन–(हिं० वि०) मन को अच्छा लगनेवाला।
मनमंत–(हिं० वि०) देखो मैमंत।
मनमति–(हिं० वि०) स्वेच्छाचारी।
मनमथ–(हिं० पुं०) देखो मन्मथ, कामदेव।
मनमानता–(हिं० वि०) मनोवांछित, मनमाना। **मनमाना**–(हिं० वि०) मनोनीत, यथेच्छ। **मनमुखी**–(हिं० वि०) स्वेच्छाचारी।
मनमुटाव–(हिं० स्त्री०) वैमनस्य।
मनमोदक–(हिं० पुं०) वह कल्पित या असंभव बात जो अपनी प्रसन्नता के लिये मन में बनाई गई हो। **मनमोहन**–(हिं० वि०) प्रिय, प्यारा; (पुं०) श्रीकृष्ण।
मनमौजी–(हिं० वि०) मनमाना काम करनेवाला।
मनरंज, मनरंजन–(हिं० वि०) चित्त को प्रसन्न करनेवाला।
मनलाड़ू–(हिं० पुं०) देखो मनमोदक।
मनवाँ–(हिं० पुं०) नरमा, राम कपास।
मनवांछित–(हिं० वि०) देखो मनोवांछित।
मनवाना–(हिं० क्रि०) किसी को मानने में प्रवृत्त करना।
मनसना–(हिं० क्रि०) संकल्प करना, दृढ़ निश्चय करना, हाथ में जल लेकर संकल्प का मन्त्र पढ़कर कोई वस्तु दान करना।
मनसा–(हिं० स्त्री०) अभिलाषा, कामना; क्रि० वि०) मन के द्वारा, मन से।
मनसाना–(हिं० क्रि०) संकल्प का

मन्त्र पढ़कर या पढ़ाकर दूसरे से दान आदि कराना।
मनसायन–(हि॰ वि॰) मनोरम स्थान।
मनसिज, मनसिशय–(सं॰ पुं॰) कन्दर्प, कामदेव।
मनसेधू–(हि॰ पुं॰) मनुष्य, मनई।
मनस्क–(सं॰ पुं॰) 'मन' शब्द का अल्पार्थ रूप जिसका प्रयोग समस्त पदों में होता है, यथा–तन्मनस्क। मनस्काम–(सं॰ पुं॰) मनोरथ, अभिलाषा। मनस्ताप–(सं॰ पुं॰) पछतावा।
मनस्विन्–(सं॰ पुं॰) उच्च विचारवाला।
मनस्विनी–(सं॰ स्त्री॰) श्रेष्ठ विचार की स्त्री।
मनस्विन–(हि॰ वि॰) देखो मनस्विन्।
मनहर, मनोहर, मनहरण–(हि॰ वि॰) मन को हरनेवाला।
मनहुँ–(हि॰ अव्य॰) मानो, जैसे, यथा।
मनाक–(हि॰ वि॰) अल्प, थोड़ा।
मनाना–(हि॰ क्रि॰) दूसरे को मानने पर उद्यत करना, स्वीकार कराना।
मनावन–(हि॰ पुं॰) मनाने की क्रिया।
मनाही–(हि॰ स्त्री॰) निषेध, रोक।
मनि–(हि॰ स्त्री॰) देखो मणि।
मनिका–(हि॰ स्त्री॰) गुरिया।
मनिया–(हि॰ स्त्री॰) मनका, गुरिया।
मनियार–(हि॰ वि॰) चमकीला, शोभायुक्त।
मनी–(हि॰ स्त्री॰) देखो मणि।
मनीषा–(सं॰ स्त्री॰) बुद्धि, प्रशंसा।
मनीषित–(सं॰ वि॰) अभिलषित, वांछित।
मनीषिता–(सं॰ स्त्री॰) बुद्धिमत्ता, बुद्धिमानी। मनीषी–(हि॰ पुं॰) पण्डित।
मनु–(सं॰ पुं॰) मनुष्य, ब्रह्मा के पुत्र जो मानव जाति के आदि पुरुष थे; (हि॰ अव्य॰) मानो, जैसे।
मनुआँ–(हि॰ पुं॰) मनु, मनुष्य, नरमा।
मनुज–(सं॰ पुं॰) मनुष्य, आदमी।
मनुजपति–(सं॰ पुं॰) राजा। मनुजलोक–(सं॰ पुं॰) मृत्युलोक।
मनुजात–(सं॰ वि॰) मनु या मनुष्य से उत्पन्न।
मनुष–(सं॰ पुं॰) मनुष्य, पति।
मनुष्य–(सं॰ पुं॰) मनुज, मानव, पुरुष। मनुष्यता–(सं॰ स्त्री॰) मानवता, शिष्टता। मनुष्ययज्ञ–(सं॰ पुं॰) अतिथि सत्कार। मनुष्यरथ–(सं॰ पुं॰) वह रथ जिसको मनुष्य खींचते हैं।
मनुसाई–(हि॰ स्त्री॰) पुरुषार्थ, पराक्रम।
मनुहार–(हि॰ स्त्री॰) विनय, प्रार्थना, आदर, सत्कार।
मनुहारना–(हि॰ क्रि॰) आदर-सत्कार करना।
मनो–(हि॰ अव्य॰) मानो।
मनोकामना–(हि॰ स्त्री॰) अभिलाषा, इच्छा।
मनोगत–(सं॰ वि॰) जो मन में हो।
मनोगति–(सं॰ स्त्री॰) चित्तवृत्ति, अभीष्ट, इच्छा।
मनोज्ञ–(सं॰ वि॰) रुचिर, सुन्दर, मनोहर। मनोज्ञता–(सं॰ स्त्री॰) सुन्दरता।
मनोनिग्रह–(सं॰ पुं॰) चित्त की वृत्तियों का निरोध।
मनोनीत–(सं॰ वि॰) जो मन के अनुकूल हो।
मनोहारी–(हि॰ वि॰) मन को हरनेवाला।
मनोभव–(सं॰ पुं॰) कन्दर्प, कामदेव; (वि॰) मन से उत्पन्न।
मनोभिराम–(सं॰ वि॰) मनोज्ञ, सुन्दर।
मनोरञ्जक–(सं॰ वि॰) चित्त को प्रसन्न करनेवाला। मनोरञ्जन–(सं॰ पुं॰) चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।

मनोरथ–(सं० पुं०) अभिलाषा, वांछा, इच्छा।
मनोरम–(सं० वि०) सुन्दर, मनोहर।
मनोरमा–(सं० स्त्री०) गोरोचन।
मनोरा–(हि० पुं०) भीत पर गोबर से बनाये हुए चित्र।
मनोराज–(हिं० पुं०) मन की कल्पना।
मनोलौल्य–(सं० पुं०) चित्त की चंचलता।
मनोवांछा–(सं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा।
मनोवाञ्छित–(सं० वि०) इच्छित चाहा हुआ।
मनोविज्ञान–(सं० पुं०) वह शास्त्र जिसमें मन की वृत्तियों का अनुशीलन होता है।
मनोवृत्ति–(सं० स्त्री०) मन का व्यापार।
मनोहर–(सं० वि०) सुन्दर।
मनोहरता–(सं० स्त्री०) सुन्दरता।
मनोहारी–(सं० वि०) मनोहर, चित्ताकर्षक।
मनोह्लाद–(सं०पुं०) चित्त की प्रसन्नता।
मनौती–(हिं० स्त्री०) किसी देवी देवता की विशिष्ट रूप में पूजा करने का संकल्प।
मन्तव्य–(सं० पुं०) मत, विचार।
मन्त्र–(सं० पुं०) वेद की रहस्यपूर्ण बात, परामर्श, देवता के साधन के निमित्त वैदिक वाक्य जिनको पढ़कर यज्ञादि क्रिया की जाती है। **मन्त्रकार**–मन्त्र रचनेवाला ऋषि। **मन्त्रकुशल**–मन्त्र जाननेवाला। **मन्त्रज्ञ**–मन्त्र जाननेवाला, भेद जाननेवाला।
मन्त्रण–(सं० पुं०) मन्त्रणा, परामर्श।
मन्त्रद–(सं० वि०) मन्त्र देनेवाला गुरु।
मन्त्री–(सं० पुं०) अमात्य, सचिव।
मन्थ–(सं० पुं०) मन्थदण्डक, मथानी। **मन्थज**–मक्खन। **मन्थन**–मथना, डूबकर पता लगाना।
मन्थर–(सं० वि०) निश्चल, नीच, अधम।
मन्थिनी–(सं०स्त्री०) दही मथने का यन्त्र।
मन्द–(सं० वि०) धीमा, आलसी। **मन्दता**–धीमी चाल।
मन्दगति–(सं०स्त्री०) आलस्य, धीमापन।
मन्दधी, मन्दबुद्धि–(सं० वि०) अल्पबुद्धि।
मन्दभागी–(सं०वि०) हतभाग्य, अभागा। **मन्दभाग्य**–(सं० वि०) दुर्भाग्य।
मन्दा–(सं०वि०) मन्द, धीमा, शिथिल, सस्ता।
मन्दाकिनी–(सं० स्त्री०) गंगा की वह प्रधान धारा जो स्वर्ग को चली गई है।
मन्दाग्नि–(सं० पुं०) अग्नि मन्द होने का रोग।
मन्दार–(सं० पुं०) अर्कवृक्ष।
मन्दिर–(सं० पुं०) गृह, घर, जिस घर में देवी या देवता का स्थापन किया हो।
मन्दिल–(हिं० पुं०) देवालय।
मन्दी–(सं०स्त्री०) भाव का कम होना, सस्ती।
मन्दोष्ण–(सं० वि०) थोड़ा गरम, गुनगुना।
मन्मथ–(सं० पुं०) कामदेव।
मन्य–(सं० वि०) माननीय।
मन्यु–(सं० पुं०) क्रोध, अहंकार। **मन्युमय**–क्रोधमय।
मम–(सं० सर्व०) मेरा या मेरी।
ममता–(सं० स्त्री०) ममत्व, अपनापन, लोभ, मोह। **ममत्व**–(सं० पुं०) ममता, स्नेह, अभिमान, गर्व।

ममाखी–(हि० स्त्री०) मधुमक्खी ।
ममिया–(हि० वि०) जो संबंध में मामा के स्थान पर पड़ता हो, यथा–ममिया ससुर, सास आदि ।
ममियाउर, ममियौरा–(हि० पुं०) मामा का घर ।
मयंक–(हि० पुं०) देखो मृगांक, चन्द्रमा ।
मयंद–(हि० पुं०) देखो मृगेन्द्र, शेर ।
मयगल–(हि० पुं०) मस्त हाथी ।
मयट–(सं० पुं०) पर्णशाला, झोपड़ी ।
मयन–(हि०पुं०) देखो मदन, कामदेव ।
मयमंत, मयमंत्त–(हि० वि०) मदोन्मत्त; मस्त ।
मया–(हि० स्त्री०) देखो माया ।
मयार–(हि० वि०) कृपालु, दयावान् ।
मयूख–(सं०पुं०) रश्मि, किरण, प्रकाश ।
मयूर–(सं० पुं०) शिखी, बर्हि, मोर ।
मयूरासन–(सं० पुं०) शाहजहाँ का बनवाया हुआ मयूर के आकार का प्रसिद्ध सिंहासन ।
मयूरी–(सं० स्त्री०) मोरनी ।
मरंद–(हि० पुं०) देखो मकरंद ।
मरक–(हि० स्त्री०) मड़क, मृत्यु, मरण ।
मरकट–(हि० पुं०) देखो मर्कट ।
मरकत–(सं०पुं०) पन्ना नाम का रत्न ।
मरकना–(हि० क्रि०) दबाव पड़कर टूट जाना ।
मरकहा–(हि० वि०) सींग से मारनेवाला ।
मरकाना–(हि० क्रि०) दबाकर चूर चूर करना ।
मरखम–(हि० पुं०) देखो मलखंभ ।
मरगजा–(हि० वि०) मसला हुआ ।
मरघट–(हि० पुं०) श्मशान ।
मरजाद, मरजादा–(हि०स्त्री०) मर्यादा रीति, परिपाटी ।
मरजिया–(हि० वि०) मृतप्राय, अधमरा ।

मरण–(सं० पुं०) मृत्यु, पंचतत्व ।
मरणान्त–(सं० वि०) मरण पर्यन्त ।
मरणोत्तर–(सं० वि०) मृत्यु के बाद का ।
मरत–(हि० पुं०) मरण, मृत्यु ।
मरतबान–(हि० पुं०) देखो अमृतबान ।
मरदन–(हि० क्रि०) मर्दन करना, मसलना ।
मरन–(हि० पुं०) देखो मरण ।
मरना–(हि० क्रि०) मृत्य को प्राप्त होना, बहुत दुःख सहना, कुम्हलाना ।
मरनी–(हि० स्त्री०) मृत्यु, दुःख, कष्ट ।
मरभुक्खा–(हि० वि०) भुक्खड़, दरिद्र ।
मरम–(हि० पुं०) देखो मर्म ।
मरमरा–(हि० वि०) सहज में टूटनेवाला ।
मरमराना–(हि० क्रि०) वृक्ष की शाखा का दबाव पाकर मरमर शब्द करना ।
मरवाना–(हि० स्त्री०) वध कराना ।
मरहट–(हि० पुं०) मरघट, श्मशान ।
मराना–(हि० क्रि०) मारने के लिये प्रेरणा करना ।
मरायल–(हि० वि०) जिसने कई बार मार खाई हो, निर्बल; (पुं०) घाटा ।
मराल–(सं० पुं०) राजहंस, काजल, बादल ।
मरिंद–(हि० पुं०) देखो मलिन्द, मरन्द ।
मरिच–(सं० पुं०) गोल मिर्च, मिरिच ।
मरिचा–(हि० पुं०) लाल बड़ा मिरचा ।
मरियल–(हि० वि०) देखो मड़ियल ।
मरी–(हि० स्त्री०) महामारी ।
मरीचि–(सं० स्त्री०) किरण, कान्ति, ज्योति । मरीचिजल–मृगतृष्णा ।
मरीचिका–(सं० स्त्री०) मृगतृष्णा, सिरोह, किरण ।
मरीची–(हि० वि०) किरणयुक्त । मरीचिमाली–सूर्य या चन्द्रमा ।
मरु–(सं० पुं०) मरुभूमि, निर्जल प्रदेश ।

मरुआ–(हि० पुं०) पत्थर या लकड़ी का छोटा खंभा।
मरुज–(सं० वि०) मरुभूमि में होनेवाला।
मरुत्–(सं० पुं०) वायु, हवा।
मरुत्पति–(सं० पुं०) इन्द्र, **मरुत्पथ**–(सं०पुं०) आकाश।
मरुथल–(हि० पुं०) देखो मरुस्थल।
मरुदेश–(सं०पुं०) मरुभूमि, मारवाड़ देश।
मरुद्रुम–(सं० पुं०) बबूल का वृक्ष।
मरुप्रिय–(सं० पुं०) उष्ट्र, ऊँट।
मरुभूमि–(सं० स्त्री०) पेड़, पौधे तथा जलरहित बालुमय विस्तृत भूमि-भाग।
मरुरना–(हिं० क्रि०) ऐंठना, मरोड़ना।
मरुस्थल–(सं० पुं०) मरुभूमि।
मरू–(हिं० वि०) कठिन, कड़ा।
मरूरा–(हि० पुं०) देखो मरोड़।
मरोड़–(हि० पुं०) मरोड़ने की क्रिया या भाव, ऐंठन, घुमाव। **मरोड़ना**–(हिं० क्रि०) ऐंठना, बल डालना।
मरोड़ा–(हि० पुं०) पेट की पीड़ा जिसमें ऐंठन जान पड़ती है।
मरोड़ी–(हिं० स्त्री०) ऐंठन, घुमाव।
मरोर–(हिं० स्त्री०) पछतावा।
मर्कट–(सं० पुं०) बन्दर, मकड़ा।
मर्कटी–(सं० स्त्री०) मकड़ी, बँदरिया।
मर्कत–(सं० पुं०) देखो मरकत।
मर्तबान–(हि० पुं०) रंग चढ़ाया हुआ मिट्टी का पात्र जिसमें अचार, मुरब्बा आदि रक्खा जाता है, अमृतबान।
मर्त्य–(सं०पुं०) भूलोक, मनुष्य, शरीर, देह।
मर्त्यलोक–(सं० पुं०) मनुष्य लोक, पृथ्वी।
मर्दना–(हि० क्रि०) मलना, रौंदना, कुचलना।
मर्दन–(सं० पुं०) शरीर में तेल उबटन आदि मलना, कुचलना, रौंदना।
मर्दित–(सं० वि० चूर्ण किया हुआ, मला हुआ, मसला हुआ।
मर्म–(सं० पुं०) रहस्य, तत्व, शरीर में का वह स्थान जहाँ पर आघात पड़ने पर बड़ी पीड़ा होती है और कभी कभी मृत्यु भी हो जाती है।
मर्मघ्न–(सं० वि०) मर्म-घातक।
मर्मज्ञ–(सं० वि०) किसी बात का गूढ़ रहस्य जाननेवाला। **मर्मभेदक**–(सं० वि०) हृदय को अधिक कष्ट पहुँचानेवाला।
मर्मभेदी–(हिं० वि०) हृदय पर आघात पहुँचानेवाला, हार्दिक कष्ट देनवाला।
मर्मर–(सं० पुं०) कपड़े, पत्ते इत्यादि का मरमर शब्द।
मर्मवचन–(सं० पुं०) मर्मभेदी बात।
मर्मवाक्य–(सं० पुं०) रहस्य की बात।
मर्मविद–(सं० वि०) मर्मज्ञ।
मर्याद–(हि० स्त्री०) रीति, प्रथा, चाल।
मर्यादिक–(सं० वि०) माननीय।
मर्यादा–(सं० स्त्री०) मान, गौरव, सदाचार, नियम, सीमा। **मर्यादित**–(सं० वि०) मर्यादापूर्ण।
मर्षण–(सं० पुं०) क्षमा। **मर्षणीय**–(सं० वि०) क्षमा करने योग्य।
मल–(सं० पुं०) पाप, विष्ठा, पुरीष, कपूर, दोष, विकार।
मलकना–(हिं० क्रि०) हिलना, डोलना, इतराना।
मलखंभ, मलखम–(हिं० पुं०) चार-पाँच हाथ लंबा लकड़ी का मोटा डंडा जिस पर अनेक प्रकार का व्यायाम किया जाता है।
मलघ्न–(सं० त्रि०) मल-नाशक।
मलदूषित–(सं० वि०) मलिन, मैला।
मलना–(हि० क्रि०) रगड़ना, ऐंठना, मसलना।

मलवा–(हि० पुं०) कूड़ा-कर्कट, ईंट आदि।
मलमल–(हि० स्त्री०) महीन सूत से बुना हुआ एक प्रकार का पतला कपड़ा।
मलमलाना–(हि० क्रि०) बारंबार खोलना, मूंदना, पछतावा करना।
मलमास–(सं० पुं०) अधिक मास जो प्रति तीसरे वर्ष होता है।
मलय–(सं० पुं०) मालावार प्रदेश।
मलयज–(सं० पुं०) चन्दन, राहु।
मलरुचि–(सं० वि०) पापमय चित्त।
मलरोधक–(सं० वि०) मल में रुकावट करनेवाला।
मलवाना–(हिं० क्रि०) मलने का काम दूसरे से करवाना।
मलहारक–(सं० वि०) पाप हरनेवाला।
मलाई–(हिं० स्त्री०) दूध की साढ़ी, सार, तत्व, रस, रंग मलने की क्रिया या भाव, मलने का वेतन।
मलाट–(हिं० पुं०) एक प्रकार का भूरे रंग का घटिया मोटा कागज जो बाँधने के काम में आता है।
मलान–(हिं० वि०) देखो म्लान।
मलानि–(हिं० स्त्री०) देखो म्लानि।
मलाह–(हि० पुं०) देखो मल्लाह।
मलि–(हिं० पुं०) मलिन्द, भौंरा।
मलिक्ष, मलिच्छ–(हिं० वि०) देखो म्लेच्छ।
मलिन–(सं० पुं०) दोष, पाप; (वि०) मैला, धीमा, फीका। **मलिनता**–(सं० स्त्री०) मैलापन।
मलिनत्व–(सं० पुं०) मलिनता।
मलिनमुख–(सं० वि०) क्रूर, जिसका मुख उदास हो।
मलिनाई–(हि० स्त्री०) मलिनता, मैलापन। **मलिनाना**–(हि० क्रि०) मैला होना।

मलियामेट–(हिं० पुं०) सत्यानाश।
मलीन–(हिं० वि०) मैला-कुचैला, उदास। **मलीमस**–(सं० पुं) पाप, दोष।
मलुक–(हिं० स्त्री०) उदर, पेट।
मलेक्ष, मलेच्छ–(हि० वि०) देखो म्लेच्छ।
मल्ल–(सं० पुं०) पहलवान।
मल्लक्रीड़ा–(सं० स्त्री०) मल्लयुद्ध।
मल्लखम्भ–(हिं० पुं०) देखो मलखंभ।
मल्लभूमि–(सं० स्त्री०) मल्लयुद्ध का स्थान, अखाड़ा। **मल्लयुद्ध**–(सं० पुं०) आपस में युद्ध।
मल्लविद्या–(सं० स्त्री०) मल्लयुद्ध की विद्या।
मल्लिक–(सं० पुं०) भूस्वामी की एक उपाधि।
मल्लिका–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का बेला, जिसको मोतिया भी कहते हैं।
मल्ल–(हिं० पुं०) बन्दर।
मल्हराना, मल्हाना–(हिं० क्रि०) चुमकारना।
मवास–(हि० पुं०) आश्रय, शरण, रक्षा, रक्षा-स्थान।
मवासी–(हिं० स्त्री०) गढ़ी; (पुं०) गढ़पति।
मश–(सं० पुं०) क्रोध, मच्छड़।
मशक–(सं० पुं०) मच्छड़।
मशकहरी–(सं० स्त्री०) मसहरी।
मष–(हिं० पुं०) देखो मख।
मस–(हिं० क्रि०) देखो मसि, रोशनाई, मूंछ निकलने के पहिले ओंठ पर का कालापन।
मसक–(सं० पुं०) मसा, मच्छड़।
मसकना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ में दरार पड़ जाना, बलपूर्वक दबाना या मलना, चिन्तित होना।
मसखवा–(हिं० पुं०) मांसाहारी।

मसना–(हिं० क्रि०) मसलना, गूंधना।
मसलना–(हिं० क्रि०) रगड़ना, मलना, आटा गूंधना, बलपूर्वक दबाना।
मसहरी–(हिं० स्त्री०) वह जालीदार कपड़े का बना हुआ परदा जो मच्छड़ों से बचन के लिये पलंग के चारों ओर लटकाया जाता है।
मसहार–(हिं० पुं०) मांसाहारी।
मसा–(हिं०पुं०) शरीर के किसी भाग में काले रंग का उभड़ा हुआ मांस का छोटा दाना; (हिं० पुं०) मच्छड़, मस।
मसान–(हिं० पुं०) मरघट। मसानिया–(हिं० पुं०) मसान का डोम।
मसार–(सं० वि०) स्निग्ध, गीला।
मसाला–(हिं० पुं०) किसी पदार्थ को तैयार करने के लिए आवश्यक सामग्री।
मसि–(सं० पुं०) लिखने की रोशनाई।
मसिदानी, मसिधानी–(हिं० स्त्री०) दावात।
मसिपात्र–(सं० पुं०) देखो मसिदानी।
मसिबुन्दा–(हिं० पुं०) रोशनाई की बूंद।
मसिमुख–(सं० वि०) पापी, कुकर्मी।
मसियाना–(हिं० क्रि०) पूरा हो जाना।
मसिबिन्दु–(हिं० पुं०) काजल का बुन्दा जो कुदृष्टि से बचने के लिये बच्चों के माथे में लगाया जाता है, डिठौना।
मसी–(सं० स्त्री०) काली स्याही।
मसीका–(हिं० पुं०) एक माशे का मान
मसुर–(सं० पुं०) मसूर, मसुरी।
मसूढ़ा–(हिं० पुं०) मुख के भीतर का वह मांस जिसमें से दांत निकलते रहते हैं।
मसूर–(सं० पुं०) एक प्रकार का चिपटा अन्न जिसकी दाल गुलाबी रंग की होती है।
मसूरिका–(सं० स्त्री०) शीतला रोग, चेचक।
मसृण–(सं० क्रि०) चिकना और कोमल।
मसेवरा–(हिं० वि०) मांस का बना हुआ खाने का पदार्थ।
मसोसना–(हिं० क्रि०) मन में कष्ट होना।
मस्करा–(हिं० पुं०) ठिठोलिया।
मस्करी–(हिं० स्त्री०) ठिठोलियापन।
मस्खरा–(हिं० पुं०) देखो मस्करा।
मस्तक–(सं० पुं०) मुण्ड, शिर, सिर।
मस्तिष्क–(सं० पुं०) मस्तक के भीतर का गूदा, भेजा।
मस्सा–(हिं० पुं०) देखो मसा।
महँ–(हिं० अव्य०) में।
महँक, महँकना–देखो महक, महकना।
महँगा–(हिं० वि०) अधिक मूल्य पर बिकनेवाला। महँगाई–(हिं० स्त्री०) महँगी।
महँगी–(हिं० स्त्री०) महँगी होने की अवस्था, अकाल, दुर्भिक्ष।
महंत–(हिं० पुं०) किसी मठ का अधिष्ठाता, साधुओं का मुखिया; (वि०) श्रेष्ठ, प्रधान। महन्ती–(हिं० स्त्री०) महन्त का भाव या पद।
मह–(हिं० अव्य०) देखो महँ।
महक–(हिं० स्त्री०) गन्ध, वास।
महकना–(हिं० क्रि०) गन्ध निकालना।
महकान–(हिं० स्त्री०) देखो महक।
महकीला–(हिं० वि०) सुगन्धित, महकदार।
महत्–(सं० वि०) बृहत्, विपुल, विस्तीर्ण।
महत–(हिं० पुं०) देखो महत्व।
महता–(हिं० पुं०) सरदार; (स्त्री०) गर्व, अभिमान।
महतारी–(हिं० पुं०) माता, मा।
महतु–(हिं० पुं०) देखो महत्व।
महती–(हिं० पुं०) सरदार, चौधरी।

महत्कथ–(सं० वि०) चापलूस।
महत्तम–(सं०वि०) सबसे बड़ा या श्रेष्ठ।
महत्तर–(सं० वि०) दो पदार्थों में बड़ा या श्रेष्ठ। महत्व–(सं० पुं०) श्रेष्ठता, बड़प्पन।
महना–(हिं० क्रि०) दही दूध आदि को मथना; (पुं०) मथानी, रई।
महनिया–(हिं० पुं०) मथनेवाला।
महनु–(हिं० पुं०) मथन करनेवाला।
महमत–(हिं० वि०) मदोन्मत्त, मस्त।
महमह–(हिं० क्रि०वि०) सुगन्ध के साथ।
महमहा–(हिं० वि०) सुगन्धित।
महमहाना–(हिं० क्रि०) महँकना।
महमा–(हिं० स्त्री०) देखो महिमा।
महरा–(हिं० पुं०) कहार, सरदार; (वि०) श्रेष्ठ, बड़ा। महराई–(हिं० स्त्री०) श्रेष्ठता, प्रधानता। महराज–(हिं० पुं०) देखो महाराज।
महराना–(हिं० पुं०) महरों के रहने का स्थान।
महराव–(हिं० स्त्री०) घरों में की वृत्ताकार रचना।
महरी–(हिं० स्त्री०) ग्वालिन।
महर्घता–(सं० स्त्री०) महँगा होने का भाव, महँगी।
महर्षि–(सं० पुं०) अति श्रेष्ठ ऋषि।
महल्लक–(सं० पुं०) अन्तःपुर का रक्षक।
महाँ–(हिं० अव्य०) देखो महँ।
महा–(सं० वि०) अत्यन्त, बहुत, अधिक।
महाई–(हिं० वि०) मथने का भाव, मथने का शुल्क।
महाउत–(हिं० पुं०) देखो महावत।
महाउर–(सं० स्त्री०) देखो महावर।
महाकर–(सं० पुं०) लंबा हाथ, अधिक लगान; (वि०) बड़े हाथवाला।
महाकरुण–(सं० वि०) अति दयालु।
महाकान्त–(सं० वि०) बहुत सुन्दर।
महाकाय–(सं० वि०) बड़े शरीरवाला।
महाकाव्य–(सं० पुं०) सर्गबद्ध वह बड़ा काव्य जिसमें आठ से अधिक सर्ग हों।
महाकुमार–(सं० पुं०) युवराज।
महाक्रतु–(सं० पुं०) अश्वमेध आदि बड़ा यज्ञ।
महाखर्व–(सं०पुं०) सौ खर्व की संख्या।
महाखात–(सं० पुं०) लंबा-चौड़ा गड्ढा।
महाख्यात–(सं० वि०) अति प्रसिद्ध।
महाघोर–(सं० वि०) अति भयानक।
महाजन–(सं० पुं०) साधु, श्रेष्ठ पुरुष, धनी, कोठीवाल। महाजनी–(हिं० स्त्री०) रुपये के लेन-देन का व्यवसाय, महाजनों के यहाँ बही-खाता लिखने की एक लिपि जिसमें मात्रायें आदि नहीं लगाई जातीं, मुड़िया अक्षर।
महाजल–(सं० पुं०) समुद्र।
महाढ्य–(सं० वि०) बड़ा धनी।
महातङ्क–(सं० पुं०) बड़ी व्याधि।
महातप–(हिं० पुं०) कठिन तपस्या।
महातम–(हिं० पुं०) देखो माहात्म्य।
महात्मा–(हिं० पुं०) वह जिसकी आत्मा का आशय बहुत ऊँचा हो, महानुभाव, बहुत बड़ा साधु, संन्यासी वा विरक्त।
महादन्त–(हिं० वि०) हाथी का दाँत।
महादान–(सं० पुं०) वे बड़े दान जिनके करने में अनन्त स्वर्ग की प्राप्ति होती है।
महादेव–(सं० पुं०) शिव।
महाद्रुम–(सं० पुं०) ताड़ का पेड़।
महाद्वीप–(सं० पुं०) पृथ्वी का वह बड़ा भाग जो चारों ओर प्राकृतिक सीमाओं से घिरा हो, जिसमें अनेक देश हों

और अनेक जातियां जिसमें वास करती हों।
महाधन–(सं० वि०) बहुत धनी।
महाध्वनि–(सं० पुं०)बड़े वेग का शब्द।
महान्–(सं० त्रि०) विशाल, बहुत बड़ा। महानट–(सं० पुं०) शिव। महानन्द–(सं० पुं०) मुक्ति, मोक्ष।
महानस–(सं० पुं०) पाकशाला।
महानिद्रा–(सं० स्त्री०) मृत्यु, मरण।
महानिशा–(सं० स्त्री०) रात्रि का मध्य भाग, आधी रात, प्रलय की रात्रि।
महानुभाव–(सं० वि०) महाशय, कोई बड़ा आदरणीय व्यक्ति। महानुभावता-(सं० स्त्री०) बड़प्पन।
महानुराग–(सं० वि०) ऐकान्तिक प्रेम।
महान्तक–(सं० पुं०) मृत्यु।
महापथ–(सं० पुं०)प्रधान पथ, राजपथ, परलोक-मार्ग।
महापद्म–(सं० पुं०) एक पद्म की संख्या, सफेद कमल।
महापद्य–(सं० पुं०) महाकाव्य।
महापवित्र–(सं० वि०) अति पवित्र।
महापातक–(सं० पुं०) पाँच सबसे बड़े पातक।
महापात्र–(सं० पुं०) प्रधान मंत्री, कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक कर्म का दान लेता है।
महापुरी–(सं० स्त्री०) राजधानी।
महापुरुष–(सं० पुं०) महात्मा, महानुभाव, श्रेष्ठ मनुष्य।
महाप्रताप–(सं० वि०)अत्यन्त प्रभावशाली
महाप्रभ–(सं० वि०) जिसमें बहुत चमक हो। महाप्रभाव–(सं० पुं०) अति बलवान्। महाप्रसाद–(सं० पुं०) जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ भात।
महाप्राण–(सं० पुं०) व्याकरण में–ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, श, ष, स और ह इन वर्णों का नाम; (वि०) बड़ा बलवान्।
महाबली–(हिं० वि) बहुत बड़ा बलवान्।
महाबाहु–(सं० वि०) लंबी भुजावाला, बलवान्। महाबुद्धि–(सं० वि०) तीव्र बुद्धिवाला।
महाब्राह्मण–(सं० पुं०) देखो महापात्र।
महाभट–(सं० पुं०) बहुत बड़ा योद्धा।
महाभाग–(सं० वि०) बड़ा भाग्यवान् सौभाग्यशाली, महात्मा।
महाभागी–(हिं० वि०) बड़ा भाग्यवान्।
महाभार–(सं० पुं०) भारी बोझा।
महाभारत–(सं० पुं०) व्यास-प्रणीत अठारह पर्वों का एक प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें पाण्डव तथा कौरवों के युद्ध का वर्णन है। महाभाष्य–(सं० पुं०) पाणिनि व्याकरण के सूत्रों का विस्तृत भाष्य जिसको पातंजलि ने लिखा है।
महाभिमान–(सं० पुं०) बहुत बड़ा घमंड।
महाभीत–(सं० वि०) बड़ा डरपोक।
महाभीरु–(सं० वि०) अत्यन्त डरपोक।
महाभुज–(सं० वि०) जिसकी बाँह लम्बी हों।
महाभूषण–(सं०पुं०) मूल्यवान् अलंकार।
महामद–(सं० वि०) बहुत प्रसन्न।
महामन्त्री–(सं० पुं०)राजा का प्रधान मन्त्री। महामति–(हिं० वि०) बड़ा बुद्धिमान्। महामह–(सं० पुं०) बड़ा उत्सव। महामहोपाध्याय–(सं० पुं०) श्रेष्ठ पण्डित, गुरुओं का गुरु, एक उपाधि जो भारत सरकार की ओर से पण्डितों को दी जाती थी।
महामांस–(सं० पुं०) मनुष्य के शरीर का मांस।
महामाई–(हिं० स्त्री०) दुर्गा, काली।

महामात्य–(सं० पुं०) राज का प्रधान या सबसे बड़ा मन्त्री। **महामात्र**–(सं० वि०) प्रधान, श्रेष्ठ; (पुं०) प्रधान मन्त्री।
महामानी–(हिं० वि०) बहुत बड़ा घमंडी।
महामारी–(सं० स्त्री०) वह संक्रामक और भीषण रोग जिसमें एक साथ बहुत से मनुष्यों की मृत्यु होती है।
महामूढ़, महामूर्ख–(सं० वि०) बड़ा मूर्ख।
महामूर्ति–(सं० पुं०) विष्णु।
महामेघ–(सं० पुं०) काली घटा।
महामैत्री–(सं० स्त्री०) गाढ़ी मित्रता।
महामोह–(सं० पुं०) सांसारिक सुखों का भोग।
महाय–(हिं० वि०) देखो महान्, बहुत।
महायुत–(सं० पुं०) सौ अयुत की एक संख्या का नाम।
महारण–(सं० पुं०) महायुद्ध। **महारण्य**–(सं० पुं०) बड़ा जंगल।
महारथ, महारथी–(सं०पुं०) बड़ा योद्धा।
महाराज–(सं० पुं०) बहुत बड़ा राजा, ब्राह्मण, गुरु, आचार्य या किसी पूज्य के लिये संबोधन। **महाराजाधिराज**–(सं० पुं०) अनेक राजाओं में श्रेष्ठ।
महाराज्ञी–(सं० स्त्री०) महारानी।
महाराज्य–(सं० पुं०) बहुत बड़ा राज्य।
महारात्रि–(सं०स्त्री०) महाप्रलय-रात्रि।
महाराष्ट्री–(सं० स्त्री०) अठारह प्रकार की प्राकृत भाषाओं में से एक।
महारुज–(सं० स्त्री०) बड़ी पीड़ा या दुःख।
महारौरव–(सं० पुं०) एक नरक का नाम।
महार्घ–(सं० वि०) बहुमूल्य।
महार्णव–(सं० पुं०) बड़ा समुद्र।
महार्यक–(सं० वि०) अधिक मूल्य का।
महार्बुद–(सं० स्त्री०) सौ करोड़ या दस अर्बुद की संख्या।
महार्ह–(सं० वि०) महापूज्य।
महालय–(सं० पुं०) पितृपक्ष, आश्विन का कृष्ण पक्ष।
महालस–(सं० पुं०) बड़ा आलसी।
महालोल–(सं० वि०) अत्यन्त चंचल।
महावत–(हिं० पुं०) हाथी हाँकनेवाला।
महावन–(सं० पुं०) घोर जंगल।
महावर–(हिं० पुं०) लाख से बना हुआ एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैर को रँगती हैं।
महावसु–(सं० वि०) बड़ा धनी।
महावात, महावायु–(सं०पुं०) प्रचण्डवायु।
महाविक्रम–(सं० वि०) बड़ा प्रतापवान्।
महाविज्ञ–(सं० वि०) बड़ा ज्ञानवान्।
महाविद्या–(सं० स्त्री०) तन्त्र में मानी हुई दस देवियाँ।
महावैर–(सं० पुं०) बड़ी शत्रुता।
महाव्रत–(सं० पुं०) बारह वर्ष तक चलनेवाला व्रत। **महाव्रीहि**–(सं० पुं०) साठी धान।
महाशंख–(सं० पुं०) एक बहुत बड़ी संख्या जो दस शंख की होती है।
महाशठ–(सं०वि०) बड़ा दुष्ट, बड़ा धूर्त।
महाशब्द–(सं० पुं०) भयानक शब्द।
महाशय–(सं०वि०) महानुभाव, महात्मा, सज्जन।
महाशालीन–(सं० वि०) अति विनीत, बड़ा नम्र।
महाशुक्ति–(सं० स्त्री०) बड़ी सीप जिसमें से मोती निकलता है।
महाशून्य–(सं० पुं०) आकाश।
महासम्मत–(सं० वि०) अति आदरणीय।
महासुख–(सं० पुं०) अति आनन्द।
महास्पद–(सं० वि०) बड़ा प्रभावशाली।
महास्वन–(सं० पुं०) लड़ाई का डंका।
महास्वर–(सं० पुं०) उच्च स्वर।

महाहास–(सं० पुं०) ठहाके की हँसी।
महिं–(हिं० अव्य०) देखो महँ।
महि–(सं० पुं०) पृथ्वी।
महिख–(हिं० पुं०) देखो महिष।
महित–(सं० वि०) पूजित। महिता–(सं० स्त्री०) महत्व, महिमा। महित्व–(सं० पुं०) महत्व, प्रभुता।
महिदेव–(सं० पुं०) ब्राह्मण।
महिपाल–(सं० पुं०) देखो महीपाल।
महिमा–(सं० स्त्री०) महत्त्व।
महियाँ–(हिं० अव्य०) में।
महियाउर–(हिं० पुं०) मठे में पका हुआ चावल।
महिला–(सं० स्त्री०) स्त्री।
महिष–(सं० पुं०) भैंसा।
महिषी–(सं० स्त्री०) भैंस, पटरानी।
मही–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, संख्या; (हिं० पुं०) मठा, छाछ। महीकम्प–(सं० पुं०) भूडोल।
महीचर–(सं०वि०) पृथ्वी पर घूमनेवाला।
महीतल–(सं० पुं०) भूतल, पृथ्वी।
महीदेव–(सं० पुं०) देखो भूदेव, ब्राह्मण।
महीधर–(सं० पुं०) पर्वत, शेषनाग।
महीन–(हिं० वि०) जिसकी मोटाई या घेरा बहुत कम हो, कोमल, पतला, धीमा।
महीना–(हिं०पुं०) काल का वह परिमाण जो वर्ष के बारहवें अंश के बराबर होता है, मासिक वेतन।
महीनाथ, महीप–(सं० पुं०) पृथ्वीपति, राजा।
महीपतन–(सं० पुं०) साष्टाङ्ग प्रणाम करना।
महीपति, महीपाल–(सं०पुं०) पृथ्वीपति, राजा। महीप्रकम्प–(सं० पुं०) भूमिकम्प, भूडोल।
महीभुज–(सं० पुं०) राजा। महीभृत–(सं० पुं०) पर्वत, राजा। महीमण्डल–(सं० पुं०) भूमण्डल।
महीरुह–(सं० पुं०) वृक्ष, पादप, पेड़।
महीशासक–(सं० पुं०) भूपाल, राजा।
महीसुर–(सं० पुं०) ब्राह्मण।
महुँ–(हिं० अव्य०) देखो महँ।
महुअर–(हिं० स्त्री०) महुआ मिलाकर पकाई हुई रोटी, एक प्रकार का बाजा जिसको सँपेरे बजाते हैं।
महुअरा–(हिं० स्त्री०) आटे में महुआ मिलाकर बनाई हुई रोटी।
महुआ–(हिं० पुं०) एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जिसके छोटे मीठे फूलों से एक प्रकार की मदिरा बनती है। महुआरी–(हिं० स्त्री०) महुए का जंगल।
महुर्छा–(हिं०पुं०) महोत्सव, बड़ा उत्सव।
महुवरि–(हिं० स्त्री०) महुअर नाम का बाजा, तुँबड़ी।
महुवा–(हिं० पुं०) देखो महुआ।
महूरत–(हिं० स्त्री०) देखो मुहूर्त।
महेन्द्र–(सं० पुं०) विष्णु, इन्द्र।
महेर–(हिं० पुं०) झगड़ा, देखो महेरा।
महेरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का व्यंजन जो दही में चावल पकाकर बनाया जाता है। महेरी–(हिं० स्त्री०) जल में उबाली हुई ज्वार जो नमक-मिर्च मिलाकर खाई जाती है।
महेला–(हिं० स्त्री०) पशुओं को खिलाने का एक पौष्टिक पदार्थ।
महेलिका–(सं० स्त्री०) महिला, नारी।
महेश–(सं० पुं०) शिव, महादेव, ईश्वर।
महेस–(हिं० पुं०) देखो महेश।
महोगनी–(सं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष, इसकी लकड़ी पुष्ट, टिकाऊ और बहुमूल्य होती है।
महोच्छव, महोछा–(हिं०पुं०) महोत्सव।

महोती–(हिं० स्त्री०) महुवे का फल।
महोत्पल–(सं० पुं०) पद्म।
महोत्सव–(स० पुं०) कोई बड़ा उत्सव।
महोदधि–(सं० पुं०) सागर, समुद्र।
महोदय–(सं० पुं०) महाशय, बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द। **महोदया**–(सं० स्त्री०) महाशया।
महोद्यम, महोद्योग–(सं० पुं०) बड़ा उद्योग या यत्न।
महोन्नत–(सं० वि०) जिसकी बड़ी उन्नति हुई हो; (पुं०) ताल वृक्ष।
महोन्नति–(सं० स्त्री०) बड़ी उन्नति।
महोन्मद–(सं० वि०) अति उन्मत्त।
महौजस्–(सं० वि०) बड़ा तेजस्वी।
महौषधि–(सं० स्त्री०) श्रेष्ठ औषधि।
माँ–(हिं० स्त्री०) जन्म देनेवाली माता।
माँकड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो मकड़ी।
माँखन–(हिं० पुं०) मक्खन, नवनीत।
माँखना–(हिं० क्रि०) क्रुद्ध होना।
माँखी–(हिं० स्त्री०) मक्खी।
माँग–(हिं० स्त्री०) माँगने की क्रिया या भाव, आवश्यकता, सिर के बाल के बीच में की रेखा जो बालों को विभक्त करने के लिये बनाई जाती है, किसी वस्तु का ऊपरी भाग, सिरा।
माँगन–(हिं० पुं०) माँगने की क्रिया या भाव, याचक, भिखमंगा। **माँगना**–(हिं० क्रि०) कुछ प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करना।
माँचा–(हिं० पुं०) मचान, खाट, पलंग।
माँछ–(हिं० पुं०) मछली।
माँछना–(हिं० क्रि०) घुसना, बैठना।
माँछर, माँछली–(हिं० स्त्री०) मछली।
माँछी–(हिं० स्त्री०) देखो मछली।
माँजना–(हिं० क्रि०) मलकर स्वच्छ करना, अभ्यास करना, कण्ठस्थ करना।
माँजर–(हिं० स्त्री०) अस्थि पंजर, ठठरी।
माँझ–(हिं० अव्य०) में, बीच में।
माँझा–(हिं० पुं०) नदी के बीच का टापू।
माँझिल–(हिं० वि०) बीच का।
माँझी–(हिं० पुं०) नाव खेनेवाला मल्लाह, केवट।
माँट–(हिं० पुं०) मटका, घर।
माँठ–(हिं० पुं०) मटका, कुंडा। **माँठी**–(हिं० स्त्री०) मठिया।
माँड़–(हिं० पुं०) पकाये हुए चावल से निकाला हुआ पानी।
माँड़ना–(हिं० क्रि०) मसलना, सानना, पोतना, गूंधना, बनाना।
माँड़वी–(हिं० पुं०) अतिथिशाला, विवाह-मण्डप, मड़वा।
माँड़व–(हिं० पुं०) मण्डप।
माँड़ा–(हिं० पुं०) आँख का एक रोग जिसमें आँख के भीतर एक पतली झिल्ली पड़ जाती है। **मँड़वा**–देखो मण्डप।
माँड़ी–(हिं० स्त्री०) भात का पसेव, माँड़, आटे, मैदे, चावल के पसेव आदि से तयार की हुई लेई जिससे कपड़ों में कलफ दी जाती है।
माँत–(हिं० वि०) उन्मत्त, बेसुध, पागल।
माँतना–(हिं० क्रि०) उन्मत्त होना।
माँता–(हिं० वि०) उन्मत्त, मतवाला। **माँथबन्धन**–(हिं० पुं०) परान्दा, सिर में लपेटने का कपड़ा।
माँथा–(हिं० पुं०) मस्तक, सिर।
माँद–(हिं० स्त्री०) हिंसक पशुओं के रहने का विवर, खोह।
माँय–(हिं० अव्य०) में, बीच, मध्य में।
माँस–(सं० पुं०) शरीर का रक्तजात धातु-विशेष।
मांसपित्त–(सं० पुं०) अस्थि, हड्डी।

मांसपेशी–(सं० स्त्री०) शरीर के भीतर का मांसपिंड। **मांसभक्षी, मांसभोजी**–(सं० पुं०) मांस खानेवाला।
मांसल–(सं०वि०) मांसयुक्त, स्थूल, मोटा, पुष्ट। **मांसलता**–(सं० स्त्री०) स्थूलता। **मांसवृद्धि**–(सं०स्त्री०) गलगण्ड, घघा, श्लीपद, अण्डवृद्धि का रोग।
मांसस्नेह–(सं० पुं०) वसा।
मांसाशन–(सं० पुं०) मांस-भक्षण। **मांसाशी**–(सं० पुं०) राक्षस। **मांसाहारी**–(सं० पुं०) मांस खानेवाला।
माँह–(हि० अव्य०) बीच में।
माइका–(हिं० पुं०) स्त्री के माता-पिता का घर।
माई–(हि० स्त्री०) माता, माँ, बड़ी-बूढ़ी स्त्री के लिये संबोधन का शब्द।
माक्ष–(सं० पुं०) स्पृहा, देखो माख।
माख–(हिं० पुं०) अभिमान, अप्रसन्नता, पश्चात्ताप।
माखन–(हि० पुं०) मक्खन, नवनीत।
माखना–(हिं० क्रि०) अप्रसन्न होना, क्रुद्ध होना।
माखी–(हि० स्त्री०) मक्खी।
मागध–(सं० पुं०) स्तुतिपाठक, वन्दी, भाट। **मागधी**–(सं० स्त्री०) मगध देश की प्राचीन भाषा।
माघ–(सं० पुं०) पौष के बाद तथा फाल्गुन के पहिले का चान्द्रमास।
माघी–(सं०स्त्री०) माघ मास की पूर्णिमा।
मांगलिक–(वि०) मंगल प्रकट करनेवाला। **मांगल्य**–(सं० वि०) शुभजनक, मंगलकारी।
माच–(हि० पुं०) मचान। **माचना**–(हि० क्रि०) देखो मचना।
माचल–(हिं० वि०) मचलनेवाला।
माचा–(हि० पुं०) मचिया।
माछ–(हि० पुं०) बड़ी मछली, मछली।
माछर–(हिं० पुं०) मच्छड़।
माछी–(हिं० स्त्री०) मक्खी, मछली।
माटा–(हिं० पुं०) लाल रंग का च्यूंटा जिसके झुंड के झुंड आम के पेड़ पर रहते हैं।
माटी–(हिं० स्त्री०) शरीर, मिट्टी, धूल, रज।
माठ–(हि० पुं०) एक प्रकार की मिठाई।
माठा–(हि० पुं०) देखो मठा, मट्ठा।
माड़ना–(हिं० क्रि०) विभूषित करना, धारण करना, हाथ या पैर से मसलना।
माणवक–(सं०पुं०) बालक, बटु, विद्यार्थी।
माणिक्य–(सं० पुं०) लाल रंग का एक रत्न, मानिक।
माण्डप–(सं० वि०) मण्डप सम्बन्धी।
माण्डलिक–(सं० पुं०) किसी प्रान्त का शासक, वह छोटा राजा जो किसी सार्वभौम राजा के अधीन हो।
मात–(हि० स्त्री०) माता।
मातंग–(सं० पुं०) हस्ती, हाथी।
मातमुख–(हि० वि०) मूर्ख।
मातलि–(सं० पुं०) इन्द्र के सारथी का नाम।
माता–(हिं०स्त्री०) जननी, किसी आदरणीय स्त्री के लिये सम्बोधन का शब्द। **मातामह**–(सं० पुं०) नाना। **मातामही**–(सं० स्त्री०) नानी।
मातु–(हि० स्त्री०) माता, माँ।
मातुल, मातुलक–(सं० पुं०) माता का भाई, मामा।
मातुला–(सं० स्त्री०) मामी। **मातुलानी**–(सं० स्त्री०) मामी।
मातुली–(सं० स्त्री०) मामी। **मातुलेय**–(सं० पुं०) ममेरा भाई।
मातुलेयी–(सं० स्त्री०) ममेरी बहिन। **मातुल्य**–(सं० पं०) मामा का घर।

मातृ–(सं० स्त्री०) जननी माता ।
मातृक–(सं० वि०) माता सम्बन्धी ।
मातृका–(सं० स्त्री०) दूध पिलानेवाली धाय, जननी, माता, उपमाता । **मातृघाती**–(हिं० वि०) माता की हत्या करनेवाला । **मातृपूजन**–(सं० पुं०) माता की पूजा । **मातृभाषा**–(सं० स्त्री०) वह भाषा जिसका बोलना माता की गोद में रहते हुए बालक सीखता है । **मातृवत्**–(सं० वि०) माता के समान । **मातृवत्सल**–(सं० वि०) माता के प्रति भक्ति करनेवाला । **मातृष्वसा**–(सं० स्त्री०) माता की बहन, मौसी ।
मात्र–(सं० अव्य०) केवल, निश्चय ।
मात्रा–(सं० स्त्री०) परिमाण, किसी वस्तु का नियमित अल्प भाग, अवयव, शक्ति, स्वर-सूचक रेखा जो अक्षर में लगाई जाती है ।
मात्रिक–(सं० वि०) जिसमें मात्राओं की गणना की जाय ।
मात्सर्य–(सं० पुं०) ईर्ष्या, डाह ।
माथ–(हिं० पुं०) माथा ।
माथना–(हिं० क्रि०) मथन करना ।
माथा–(हिं० पुं०) किसी पदार्थ का ऊपरी भाग ।
माथे–(हिं० क्रि० वि०) सिर पर, सहारे, भरोसे ।
माद–(सं० पुं०) हर्ष, प्रसन्नता ।
मादक–(सं० वि०) नशा उत्पन्न करनेवाला
मादिनी–(सं० स्त्री०) विजया, भंग ।
माधव–(सं० पुं०) विष्णु, नारायण, वसन्त ऋतु ।
माधवी–(सं० स्त्री०) इस नाम की लता जिसमें चमेली के समान सुगन्धित फल लगते हैं, मदिरा, मधु से बनाई हुई चीनी ।
माधुर–(सं० वि०) मीठा; (पुं०) चमेली का फूल । **माधुरई, माधुरता**–(हिं० स्त्री०) मधुरता, मिठास ।
माधुरिया, माधुरी–(सं० स्त्री०) मद्य, शराब, सौन्दर्य, शोभा, मधुरता, मिठास ।
माधुर्य–(सं० पुं०) मधुरता, सुन्दरता, मिठास ।
माध्यन्दिन–(सं० स्त्री०) दिन का मध्य-भाग, दोपहर ।
माध्यम–(सं० वि०) मध्य का, बीच का ।
माध्यस्थ–(सं० पुं०) झगड़ा निबटाने-वाला पंच, दलाल ।
माध्याकर्षण–(सं० पुं०) पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सर्वदा सब पदार्थों को खींचता रहता है ।
माध्याह्निक–(सं० वि०) मध्याह्न के समय किया जानेवाला कार्य ।
माध्वी–(सं० स्त्री०) मद्य, महुवे की बनी हुई मदिरा ।
मान–(स० पुं०) परिमाण, तौल सामर्थ्य, शक्ति, प्रतिष्ठा ।
मानक्षति–(सं० स्त्री०) मानहानि ।
मानगृह–(सं० पुं०) कोपभवन ।
मानचित्र–(सं० पुं०) किसी स्थान या देश का चित्र ।
मानता–(हिं० स्त्री०) मनौती ।
मानद–(सं० वि०) बड़ाई करनेवाला ।
मानदण्ड–(सं० पुं०) वह डंडा या लकड़ी जिससे कोई वस्तु नापी जावे ।
मानधन–(सं० वि०) बड़ा प्रतिष्ठित ।
मानना–(हिं० क्रि०) स्वीकार करना, मान लेना, ध्यान में लाना, श्रद्धा या विश्वास करना, आदर करना ।
माननीय–(सं० वि०) आदर करने योग्य ।
मानपरेखा–(हिं० पुं०) आशा ।
मानभंग–(सं० पुं०) मानहानि ।

मानभाव–(सं० पुं०) चोचला।
मानमन्दिर–(सं० पुं०) ग्रहों की गति आदि देखने के लिये वैज्ञानिक यन्त्रों से सुसज्जित स्थान, वेधशाला।
मानमय–(सं० वि०) गर्वयुक्त, घमंडी।
मानमरोर–(हिं० स्त्री०) मनमुटाव।
मानव–(सं० पुं०) मनुष्य।
मानवर्जित–(सं० वि०) मानरहित।
मानवशास्त्र–(सं० पुं०) मानव जाति की उत्पत्ति तथा विकास का शास्त्र।
मानवी–(सं० स्त्री०) नारी, स्त्री; (वि०) मनुष्य सम्बन्धी।
मानवेन्द्र–(सं० पुं०) राजा।
मानस–(सं० पुं०) मन, हृदय, मनुष्य, संकल्प, विकल्प। **मानसजप**–(सं० पुं०) मन में ही (बिना उच्चारण किये) जप करने की विधि।
मानसरोवर–(हि० पुं०) एक प्रसिद्ध बड़ी झील जो हिमालय पर्वत के उत्तर में है।
मानसवेग–(सं० पुं०) मन का वेग, चिन्ता।
मानसशास्त्र–(सं० पुं०) मनोविज्ञान।
मानसिक–(सं० वि०) मन सम्बन्धी।
मानहानि–(सं० स्त्री०) अप्रतिष्ठा। **मानहीन**–(सं० वि०) जिसकी अप्रतिष्ठा हुई हो।
मानहु–(हिं० अव्य०) मानो।
माना–(हि० पुं०) अन्न आदि नापने का एक पात्र; (क्रि०) नापना, तौलना; (क्रि० वि०) मान लो कि।
मानिक–(हिं० पुं०) माणिक्य, पद्मराग।
मानित–(सं० वि०) सम्मानित, पूजित।
मानिनी–(सं० स्त्री०) गर्ववती स्त्री।
मानी–(सं० वि०) अभिमानी, गर्वी।
मानुख–(हिं० पुं०) देखो मनुष्य।
मानुष–(हिं० पुं०) मनुष्य, मानव; (वि०) मनुष्य का। **मानुषता**–(सं० स्त्री०) मनुष्य का भाव या धर्म। **मानुषिक**–(सं० वि०) मनुष्य संबंधी। **मानुषी**–(सं० वि०) मनुष्य संबंधी। **मानुस**–(हिं० पुं०) मनुष्य, आदमी।
मानो–(हिं० अव्य०) जैसे।
मान्द्य–(सं० पुं०) मन्दता, आलस्य।
मान्य–(सं० वि०) पूजनीय, आदरणीय, अधिक सम्मान योग्य।
मान्या–(सं० स्त्री०) आदर करने योग्य।
माप–(हिं० स्त्री०) मापने की क्रिया या भाव, परिमाण।
मापक–(सं० पुं०) वह जो मापता हो, वह जिससे कोई पदार्थ मापा जाय। **मापन**–(सं० पुं०) परिमाण, तौलना, नाप। **मापना**–(हिं० क्रि०) नापना।
माम–(हिं० पुं०) अहंकार, ममता।
मामक–(सं० वि०) ममतायुक्त, मेरा।
मामकीन–(सं० वि०) मेरा। **ममता**–(हिं० स्त्री०) आत्मीयता।
मामा–(हिं० पुं०) माता का भाई।
मामी–(हिं० स्त्री०) मामा की स्त्री, माँ की भौजाई।
मामूँ–(हिं०पुं०) माता का भाई, मामा।
माय–(हिं०स्त्री०) जननी, माता, माँ।
मायक–(सं० पुं०) मायावी।
मायका–(हिं० पुं०) नैहर, पीहर।
माया–(सं० स्त्री०) छलपूर्ण रचना, जादू, धूर्तता, अज्ञान, अविद्या, भ्रम। **मायाकार**–(सं० पुं०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर। **मायाचार**–(सं०वि०) मायावी।
मायाविनी–(सं० स्त्री०) छल-कपट करनेवाली स्त्री। **मायावी**–(सं० वि०) बड़ा छली।

मायिक–(सं० पुं०) मायाफल, माजूफल; (पुं०) ऐन्द्रजालिक; (वि०) मायावी, बनावटी।

मायी–(हिं० स्त्री०) देखो माई।

मायूर–(सं० वि०) मयूर संबंधी; (सं० पुं०) मारने की क्रिया या भाव, मारण, आघात; (हिं० अव्य०) अत्यन्त, बहुत।

मारक–(सं० वि०) संहारक, हत्या करनेवाला।

मारकाट–(हिं० स्त्री०) युद्ध, लड़ाई।

मारकीन–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।

मारग–(हिं० पुं०) देखो मार्ग।

मारजन–(हिं० पुं०) देखो मार्जन।

मारजनी–(हिं० स्त्री०) देखो मार्जनी।

मारजार–(हिं० पुं०) बिल्ली।

मारण–(सं० पुं०) वध, हत्या।

मारतौल–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।

मारना–(हिं० क्रि०) वध करना, आघात पहुँचाना, धातु आदि को जलाकर भस्म करना, अनुचित रीति से किसी वस्तु को ले लेना, निर्जीव कर देना, डँसना, काटना, बिना परिश्रम के प्राप्त करना, छिपाना, रोकना, नष्ट करना, ठोंकना, पीटना।

मारपेंच–(हिं० पुं०) किसी को धोखे में रखकर उसकी हानि करने की प्रयुक्ति।

मारा–(हिं० वि०) हत, मारा हुआ।

मारित–(सं० वि०) जो मार डाला गया हो।

मारी–(सं० स्त्री०) मरी रोग।

मारुत–(सं० पुं०) वायु, हवा।

मारू–(हिं० पुं०) बड़ा नगाड़ा, जंगी धौंसा; (वि०) हृदय-विदारक, मारनेवाला।

मारे–(हिं० अव्य०) कारण से।

मार्का–(हिं० पुं०) संकेत, कोई अंक या चिह्न जो किसी विशेष बात का सूचक हो।

मार्ग–(सं० पुं०) पथ।

मार्गण–(हिं० पुं०) अन्वेषण, ढूँढ़ना।

मार्गरक्षक–(सं० पुं) पथरक्षक, पहरेदार।

मार्गशीर्ष–(सं० पुं०) अगहन का महीना।

मार्गिक–(सं० पुं०) पथिक, यात्री।

मार्गित–(सं० वि०) खोजा हुआ।

मार्जक–(सं० वि०) निर्मल करनेवाला; (पुं०) रजक, धोबी।

मार्जन–(सं० पुं०) स्वच्छ करने का काम।

मार्जनी–(सं० स्त्री०) झाड़ू। **मार्जनीय**–(सं० वि०) परिष्कार करने योग्य।

मार्जार–(सं० पुं०) बिडाल, बिल्ली।

मार्जित–(सं० वि०) स्वच्छ किया हुआ।

मार्तण्डमूल–अकवन की जड़।

मार्त्य–(सं० वि०) शरीर का मैल।

मार्दव–(सं० पुं०) अहंकार-रहित होना, सरलता।

मार्मिक–(सं० वि०) मर्मस्थान पर प्रभाव डालनेवाला।

माल–(हिं० स्त्री०) माला, हार, पंक्ति, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बनी हो, गणित में वर्ग का घात, धन, संपत्ति, सामग्री, क्रय-विक्रय पदार्थ।

मालगाड़ी–(हिं० पुं०) रेल की वह गाड़ी जिसमें केवल माल भरकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है।

मालगोदाम–(हिं० पुं०) वह स्थान जहाँ पर व्यापार का माल जमा रहता है।

मालती–(सं० स्त्री०) वृक्षों पर घनी फैलनेवाली एक लता जिसमें सुगंधित सफेद फूल होते हैं।

मालदह–(हिं० पुं०) एक प्रकार का आम जो विहार प्रान्त में विशेष कर होता है।
मालदही–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छप्पर लगी हुई नाव।
मालद्वीप–(हिं० पुं०) भारत सागर के अन्तर्गत सिंहल के समीप एक द्वीपपुंज।
मालपूआ, मालपूवा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का मीठा पकवान जो पूरी की तरह का होता है।
मालव–(सं० पुं०) अवन्ति देश, मालवा, मालवा देश।
माला–(सं० स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, गले में पहनने का फूलों का हार, गजरा, जप करने की माला। **मालाकार**–(सं० पुं०) माला बनानेवाला, माली। **मालागुण**–(सं० पुं०) माला गूँथने का सूत। **मालाधारी**–(सं० वि०) माला धारण करनेवाला। **मालामणि**–(सं० पुं०) रुद्राक्ष।
मालिका–(सं० स्त्री०) पंक्ति, माला, चमेली, मालिन।
मालिनी–(सं०स्त्री०) मालिन, चम्पानगरी
मालिवान–(हिं० पुं०) देखो माल्यवान्।
माली–(हिं० पुं०) फूल बेचनेवाली जाति-विशेष, वह पुरुष जो बगीचों में पेड़-पौधे लगाने और सींचने का काम करता है।
माल्य–(सं० पुं०) फूल, सिर पर धारण करने की माला।
मावत–(हिं० पुं०) देखो महावत।
माश–(हिं० पुं०) देखो माष।
माशा–(हिं० पुं०) एक तोले का बारहवाँ भाग, आठ रत्ती का एक मान या बाँट।
माष–(सं० पुं०) उड़द। **माषपर्णी**–(सं० स्त्री०) जंगली उड़द।
माषवटी–(सं० स्त्री०) उड़द की बड़ी।
मास–(सं० पुं०) वर्ष का बारहवाँ भाग, महीना।
मासना–(हिं० क्रि०) मिलना, मिलाना।
मासवृद्धि–(सं० स्त्री०) अण्डवृद्धि का रोग, गलगण्ड, घेघा।
मासल–(सं० वि०) देखो मांसल।
मासा–(हिं० पुं०) देखो माशा।
मासान्त–(सं०पुं०) एक महीने का अन्त।
मासिक–(सं० वि०) मास संबंधी, महीने में एक बार होनेवाला; (पुं०) मासिक वेतन।
मासी–(हिं०स्त्री०) माँ की बहिन, मौसी।
माहत–(सं० पुं०) महत्त्व, बड़ाई।
माहनीय–(सं० वि०) पूजनीय, श्रेष्ठ।
माहाँ–(हिं० अव्य०) देखो महँ।
माहात्मिक–(सं०वि०) माहात्म्य संबंधी।
माहात्म्य–(सं० पुं०) महिमा, महत्त्व, गौरव।
माँहि–(हिं० अव्य०) भीतर, में, पर।
माहीं–(हिं० अव्य०) देखो माहिं।
माहुर–(हिं० पुं०) विष, गरल।
मिं–चीन देश की एक जाति का नाम।
मिंगनी–(हिं० स्त्री०) देखो मेंगनी।
मिंगी–(हिं० स्त्री०) देखो मींगी।
मिंड़ाई–(हिं० स्त्री०) मींड़ने या मींजने की क्रिया या भाव, मींड़ने का शुल्क।
मिंहदी–(हिं० स्त्री०) देखो मेंहदी।
मिचकना–(हिं० क्रि०) पलकों का झपकना या बन्द होना। **मिचकाना**–(हिं० क्रि०) बार बार आँखें खोलना या बन्द करना।
मिचकी–(हिं० स्त्री०) छलाँग।
मिचना–(हिं०क्रि०) आँखों का बन्द होना।
मिचलाना–(हिं० क्रि०) मतली आना।

मिचवाना–(हिं० क्रि०) दूसरे से आँख बंद कराना।
मिछा–(हिं० वि०) देखो मिथ्या।
मिटका–(हिं० पुं०) देखो मटका।
मिटना–(हिं० क्रि०) किसी अंकित चिह्न आदि का लुप्त हो जाना, नष्ट होना। **मिटाना**–(हिं० क्रि०) रेखा, चिह्न आदि को पोंछ देना या हटाना, नष्ट कर देना।
मिटिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का छोटा बरतन, मटकी; (वि०) मिट्टी का बना हुआ। **मिटियाना**–(हिं० क्रि०) मिट्टी लगाकर स्वच्छ करना।
मिटियाफूस–(हिं० वि०) जो दृढ़ न हो।
मिट्टी–(हिं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, धूल, शरीर।
मिट्ठा–(हिं० वि०) देखो मीठा।
मिट्ठी–(हिं० स्त्री०) चुम्बन, चूमा।
मिट्ठू–(हिं० वि०) मीठा बोलनेवाला।
मिठ–(हिं० वि०) "मीठा" शब्द का संक्षिप्त रूप, इसका व्यवहार प्रायः यौगिक शब्द बनाने के लिये होता है और यह किसी शब्द के पहले जोड़ा जाता है। **मिठबोलना-मिठबोला**–(हिं० वि०) मधुरभाषी। **मिठाई**–(हिं०स्त्री०) मिठास, कोई मीठी खाने की वस्तु। **मिठास**–(हिं० स्त्री०) मीठापन।
मिड़ाई–(हिं० स्त्री०) देखो मिड़ा।
मितंग–(हिं० पुं०) हस्ती, हाथी।
मित–(सं० वि०) परिमित। **मितभाषी**–(सं० वि०) स्वल्पभाषी।
मितभुक्–(सं० वि०) थोड़ा खानेवाला।
मितमति–(सं० वि०) अल्पमति।
मितव्यय–(सं० पुं०) कम व्यय करना। **मितव्ययी**–(सं० वि०) परिमित व्यय करनेवाला। **मितशायी**–(सं० वि०) बहुत कम सोनेवाला।
मिताई–(हिं० स्त्री०) मित्रता।
मिताशन–(सं० वि०) कम भोजन करनेवाला। **मिताशी**–अल्पभोजी।
मिताहार–(सं० पुं०) थोड़ा भोजन।
मिती–(हिं० स्त्री०) महीने की तिथि जब तक का ब्याज देना हो।
मित्रघ्न–विश्वासघातक।
मित्रता–(सं० स्त्री०) मित्र होने का भाव, सौहार्द। **मित्रभाव**–(सं० पुं०) मित्रता। **मित्रभेद**–(सं०पुं०) वह जो मित्रों में वैमनस्य उत्पन्न कराता हो।
मित्रलाभ–(सं० पुं०) मित्रों का मिलना।
मित्राई–(हिं० स्त्री०) देखो मित्रता।
मिथुन–(सं० पुं०) स्त्री और पुरुष का युग्म या जोड़ा, द्वन्द्व, युगल।
मिथ्या–(सं० वि०) असत्य, अनृत, झूठ।
मिथ्याभियोग–(सं० पुं०) किसी पर झूठा दोष लगाना। **मिथ्याभिशाप**–(सं० पुं०) झूठा कलंक। **मिथ्यामति**–(सं० स्त्री०) भ्रान्ति, भूल। **मिथ्यावाद**–(सं० पुं०) झूठी बात। **मिथ्यावादी**–(हिं० वि०) झूठ बोलनेवाला, झूठा। **मिथ्याहार**–(सं० पुं०) प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।
मिनती–(हिं० स्त्री०) देखो विनती।
मिनमिन–(हिं० स्त्री०) मक्खी के भनभनाने के समान मन्द शब्द। **मिनमिना**–(हिं० वि०) नाक से बोलनेवाला। **मिनमिनाना**–(हिं०क्रि०) नाक से बोलना।
मिमियाना–(हिं० क्रि०) बकरी या भेंड़ का बोलना।
मिरग–(हिं० पुं०) देखो मृग।
मिरगी–(हिं० स्त्री०) अपस्मार रोग जिसमें रोगी मूर्छित होकर गिर पड़ता है

मिरचा–(हिं० पुं०) लाल मिर्च।
मिरचाई–(हिं० स्त्री०) देखो मिरिच।
मिरदंग–(हिं० पुं०) देखो मृदङ्ग।
मिरदंगी–(हिं० पुं०) मृदङ्ग बजानेवाला।
मिरिग–देखो मृग।
मिरिच–(हिं० स्त्री०) देखो मरिच।
मिर्च–(हिं० स्त्री०) कुछ तीते फलों और फलियों का वर्ग जिसके अंतर्गत लाल तथा काली मिर्च है।
मिलकना–(हिं० क्रि०) जलना।
मिलकी–(हिं० स्त्री०) जिसके पास भू-सम्पत्ति हो।
मिलन–(सं० पुं०) समागम, भेंट, मिश्रण, मिलावट। **मिलनसार**–(हिं० वि०) सबसे हेल-मेल रखनेवाला।
मिलनसारी–(हिं० स्त्री०) सुशीलता।
मिलना–(हिं० क्रि०) सम्मिलित होना, किसी पक्ष में होना, मेल-मिलाप होना, सटना, चिपकना, लाभ होना, भेंट होना, प्राप्त होना।
मिलवाई–(हिं० स्त्री०) मिलवाने की क्रिया या भाव।
मिलवाना–(हिं० क्रि०) भेंट या परिचय कराना, मेल कराना।
मिलाई–(हिं० स्त्री०) मिलने की क्रिया या भाव।
मिलान–(हिं० पुं०) मिलने की क्रिया या भाव, तुलना।
मिलाना–(हिं० क्रि०) मिश्रण करना, सन्धि करना, किसी को अपने पक्ष में करना, सटाना, चिपकाना, एक करना, बराबर करना, यह देखना कि प्रतिलिपि मूल के अनुसार है या नहीं।
मिलाप–(हिं० पुं०) मिलने की क्रिया या भाव, मित्रता।
मिलाव–(हिं० पुं०) मिलाप, मिलावट।
मिलौना–(हिं० क्रि०) देखो मिलाना।
मिलौनी–(हिं० स्त्री०) मिलाने की क्रिया या भाव, मिलावट।
मिश्र–(सं० वि०) मिश्रित, मिला हुआ, गणित में भिन्न प्रकार की संख्या संबंधी।
मिश्रजाति–(सं० स्त्री०) वर्णसंकर, दोगला। **मिश्रण**–(सं० पुं०) जोड़ करने की क्रिया, मिलावट, संयोजन।
मिश्रणीय–(सं० वि०) मिलाने के योग्य।
मिश्रव्यवहार–(सं० पुं०) गणित की एक क्रिया। **मिश्रित**–(सं० वि०) मिलाया हुआ।
मिश्री–(हिं० स्त्री०) देखो मिसरी।
मिश्रोदन–(सं० पुं०) खचरिका, खिचड़ी।
मिष–(सं० पुं०) छल, कपट, बहाना।
मिष्ट–(सं० वि०) मधुर, मीठा। **मिष्ट-पाचक**–मिष्टान्न, मुरब्बा। **मिष्टपाचक**–अच्छा भोजन बनानेवाला। **मिष्ट-भाषी**–मधुर बोलनेवाला।
मिष्टान्न–(सं० पुं०) मिष्ट द्रव्य, मिठाई।
मिस–(हिं० पुं०) बहाना, हीला, पाखंड।
मिसना–(हिं० क्रि०) मिश्रित होना, मला जाना।
मिसरी–(हिं० स्त्री०) स्वच्छ करके जमाई हुई दानेदार सफेद चीनी।
मिसिरी–(हिं० स्त्री०) देखो मिसरी।
मिस्री–(हिं० स्त्री०) देखो मिसरी।
मिस्सा–(हिं० पुं०) कई तरह की दालों को पीसकर बनाया हुआ आटा।
मींगी–(हिं० स्त्री०) गूदा, गिरी।
मींजना–(हिं० क्रि०) हाथों से मलना।
मींड़क–(हिं० पुं०) मेढ़क।
मींड़ना–(हिं० क्रि०) हाथों से मलना, मसलना।
मीचना–(हिं० क्रि०) आँख बन्द करना या मूंदना।

मीचु–(हिं० स्त्री०) मृत्यु ।
मीटना–(हिं० क्रि०) देखो मीचना ।
मीठा–(हिं० वि०) हलका, धीमा, सुस्त, बहुत सीधा, प्रिय, रुचिकर, स्वादिष्ठ; (पुं०) मीठा खाद्य, मिठाई, गुड़ ।
मीठा आलू–शकरकन्द । **मीठा कद्दू**–कुम्हड़ा । **मीठा चावल**–मीठा भात । **मीठा तेल**–तिल या पोस्ते के दाने का तेल । **मीठी छुरी**–कपटी मित्र । **मीठी मार**–भीतरी मार जिसमें बाहर की चोट के चिह्न न देख पड़ें ।
मीत–(हिं० पुं०) मित्र ।
मीन–(सं० पुं०) मत्स्य, मछली ।
मीना–(सं० वि०) मछली के समान सुन्दर आँखोंवाली ।
मीनाण्ड–(सं० पुं०) मछली का अण्डा ।
मीनालय–(सं० पुं०) सागर, समुद्र ।
मीमांसक–(सं० पुं०) मीमांसा शास्त्र को जाननेवाला । **मीमांसा**–(सं० स्त्री०) विचारपूर्वक तत्व-निर्णय ।
मीलन–(सं० पुं०) आँख बन्द करना ।
मीलित–(सं० वि०) बन्द किया हुआ, सिकोड़ा हुआ ।
मुंगरा–(हिं० पुं०) काठ का बड़ा हथौड़ा, नमकीन बुंदिया ।
मुंगौरी–(हिं० पुं०) मूंग की बनी हुई बरी ।
मुंचना–(हिं० क्रि०) मुक्त करना ।
मुंड–(हिं० पुं०) देखो मुण्ड, सिर ।
मुंडचिरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार के फकीर जो अपना सिर, आंख, कान, नाक आदि किसी नुकीले हथियार से घायल करके भीख माँगते हैं और जब कोई जल्दी से भीख नहीं देता तो वे अड़ जाते हैं और अपने अंगों को और भी घायल करते हैं ।
मुंडन–(हिं० पुं०) सिर के बालों का मुंडा जाना । **मुंड़ना**–(हिं० क्रि०) सिर के बालों का मूंड़ा जाना, ठगा जाना ।
मुंडा–(हिं० पुं०) वह जिनके सिर पर बाल न हों या मुड़े हुए हों, वह पशु जिसको सींग न हो, बिना मात्रा की एक प्रकार की लिपि, बिना नोक का जूता ।
मुंड़ाई–(हिं० स्त्री०) मुड़ने या मुंड़ाने की क्रिया या भाव, मुंड़ने या मूंड़ाने का शुल्क । **मुंड़ासा**–(हिं० पुं०) सिर पर बाँधनें का मुरेठा ।
मुंड़िया–(हिं० वि०) वह जो सिर मुंड़ाकर किसी साधु संन्यासी का चेला बन गया हो ।
मुंडी–(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका सिर मूंड़ा गया हो, विधवा, राँड़ ।
मुंडेर–(हिं० स्त्री०) देखो मुंडेरा ।
मुंडेरा–(हिं० पुं०) सबसे ऊपर की छत पर चारों ओर बना हुआ भीत का उभड़ा हुआ भाग ।
मुंडी–(हिं० स्त्री०) विधवा, राँड़ ।
मुंदना–(हिं० क्रि०) खुली हुई वस्तु का ढंप जाना या बन्द होना ।
मुंदरी–(हिं० स्त्री०) अँगुलियों में पहनने का सादा छल्ला, अँगूठी ।
मुंह–(हिं० पुं०) मुख, चेहरा, सामर्थ्य, ऊपरी भाग या किनारा ।
मुंहअखरी–(हिं० वि०) मौखिक ।
मुंहकाला–(हिं० पुं०) अप्रतिष्ठा, एक प्रकार की गाली ।
मुंहचोर–(हिं० पुं०) वह जो लोगों के सामने जाने में संकोच करता हो ।
मुंहछुआई–(हिं० स्त्री०) केवल ऊपरी मन से कुछ कहना । **मुंहछुट**–(हिं०

वि०) जिसका मुंह तुच्छ बातें कहने में या गाली देने में खुला रहे।
मुंहजोर–(हिं०वि०)बड़बड़िया, उद्दण्ड।
मुंहजोरी–(हिं० स्त्री०) उद्दण्डता।
मुंहनाल–(हिं० स्त्री०) धातु की बनी हुई वह छोटी नली जो हुक्के की सटक के अगले भाग में लगी रहती है।
मुंहपड़ा–(हिं० वि०) प्रसिद्ध, आख्यात।
मुंहफट–(हिं० वि०) जिसकी वाणी संयत न हो।
मुंहासा–(हिं० पुं०) युवावस्था में मुख पर निकलनेवाले दाने या फुंसियाँ।
मुकट–(हिं० पुं०) देखो मुकुट।
मुकटा–(हिं० पुं०) एक प्रकार की रेशमी धोती जो पूजन, भोजन आदि के समय पहनी जाती है।
मुकता–(हिं० पुं०) देखो मुक्ता, मोती; (वि०) यथेष्ट, पर्याप्त, बहुत अधिक।
मुकना–(हिं० क्रि०) मुक्त होना, छुटकारा पाना।
मुकरना–(हिं० क्रि०) कोई बात कहकर उससे फिर जाना; (पुं०) वह जो बात कहकर मुकर जाता हो।
मुकराना–(हिं०क्रि०)दूसरेको झूठा बनाना
मुकियाना–(हिं० क्रि०) किसी के शरीर में मुक्कियों से बार बार आघात करना, मुक्कियों से दबाना, घूसे लगाना।
मुकुट–(सं० पुं०) किरीट, अवतंस।
मुकुठी–(सं० स्त्री०) अंगुली मटकाना।
मुकुर–(सं० पुं०) दर्पण, कोरक, कली।
मुकुरित–(सं० वि०) खिला हुआ।
मुकुल–(सं०पुं०)शरीर, आत्मा, कली।
मुकुलित–(सं० वि०) जिसमें कलियाँ आ गई हों।
मुक्का–(हिं० पुं०) बँधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय।
मुक्की–(हिं० स्त्री०) मुक्का, घूंसा, मुक्कों की मार।
मुक्त–(सं० वि०) जिसको मोक्ष प्राप्त हो गया हो बंधन से छूटा हुआ। मुक्तकण्ठ–(सं० वि०) चिल्लाकर बोलनेवाला, बेधड़क बोलनेवाला। मुक्तकेश–(सं० वि०) जिसका जूड़ा खुला हो। मुक्तनिद्रा–(सं० वि०) जागृत, जगा हुआ। मुक्तलज्ज–(सं० वि०) निर्लज्ज। मुक्तवसन–(सं० वि०) नग्न, नंगा। मुक्तव्यापार–(सं० वि०) जिसने कारबार छोड़ दिया हो। मुक्तहस्त–(सं० वि०) वह जो बड़ा दानी हो।
मुक्ता–(सं० स्त्री०) मौक्तिक, मोती। मुक्ताकलाप–मोती की माला।
मुक्तात्मा–(सं० पुं०) माया के बन्धनों से छूटकर जो मुक्त हुआ हो।
मुक्ताफल–(सं० पुं०) मोती।
मुक्तामोदक–(सं० पुं०) मोतीचूर का लड्डू।
मुक्ताम्बर–(सं० वि०) नग्न, नंगा।
मुक्ति–(सं० स्त्री०) मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण।
मुख–(सं० पुं०) मुंह, आनन, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग; (वि०) मुख्य, प्रधान। मुखचन्द्र–(सं० पुं०) चन्द्रमा के समान मुख की शोभा।
मुखचपल–(सं० वि०) जो बढ़-बढ़कर बोलता हो।
मुखज–(सं० पुं०) ब्राह्मण; (वि०) मुख से उत्पन्न।
मुखड़ा–(हिं० पुं०) मुख, चेहरा। मुखधावन–(सं० पुं०) दतवन करना।
मुखपट–(सं० पुं०) घूंघट। मुखपान–

(हिं० पुं०) पान के आकार का किसी धातु का कटा हुआ टुकड़ा। **मुखबन्ध**–(सं० पुं०) अनुक्रमणिका, प्रस्तावना।

मुखभूषण–(सं० पुं०) ताम्बूल, पान।

मुखमण्डल–(सं० पुं०) चेहरा। **मुखर**–(सं० वि०) कड़ुवा बोलनेवाला, बकवादी, प्रधान। **मुखशुद्धि**–(सं० स्त्री०) मंजन या दतुअन आदि की सहायता से मुँह स्वच्छ करना, भोजन के उपरान्त पान सुपारी आदि खाकर मुख को शुद्ध करना। **मुखशोष**–(सं० पुं०) प्यास के कारण मुँह सूखना।

मुखस्राव–(सं० पुं०) थूक, लार।

मुखाकार–(सं० पुं०) मुख के सदृश।

मुखाग्र–(सं० पुं०) किसी पदार्थ का अगला भाग, ओंठ; (वि०) कण्ठस्थ।

मुखापेक्षा–(सं० स्त्री०) दूसरे का मुँह ताकना। **मुखापेक्षी**–(सं० पुं०) वह जो दूसरे की कृपादृष्टि के भरोसे रहता हो। **मुखामृत**–(सं० पुं०) मुख की शोभा।

मुखिया–(हिं०पुं०) नेता, अग्रसर, अगुआ।

मुख्य–(सं० वि०) प्रधान, श्रेष्ठ।

मुख्यतः–(सं० अव्य०) श्रेष्ठ रूप से, अच्छी तरह से। **मुख्यता**–(सं० स्त्री०) श्रेष्ठता।

मुगदर–(हिं० पुं०) एक प्रकार की गावदुम लकड़ी की मुगरी जो व्यायाम में उपयोग की जाती है।

मुँगरेला–(हिं० पुं०) कलौंजी या मँगरैला नाम का दाना।

मुग्धस–(हिं० वि०) संकेत में कही हुई।

मुग्ध–(सं० वि०) मोह या भ्रम में पड़ा हुआ, मनोहर, मूढ़। **मुग्धता**–(सं० स्त्री०) मूढ़ता, सुन्दरता। **मुग्धबुद्धि**–(सं० वि०) भ्रान्तबुद्धि।

मुचंगड़–(हिं० वि०) मोटा और भद्दा।

मुछंदर–(हिं० पुं०) जिसकी दाढ़ी मूंछ बड़ी बड़ी हों, भद्दा, मूख मनुष्य।

मुछियल–(हिं०पुं०) बड़ी-बड़ी मुँछवाला

मुजराई–(हिं० स्त्री०) काटने या घटाने की क्रिया, बट्टा।

मुझ–(हिं० सर्व०) "मैं" का वह रूप जो उसको कर्ता और सम्बन्ध कारक को छोड़कर अन्य कारकों में विभक्ति लगाने से पहले प्राप्त होता है यथा, मुझको, मुझसे, मुझपर। **मुझे**–(हिं० सर्व०) एक पुरुष-वाचक सर्वनाम, वह उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है जो पुल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों में व्यवहार किया जाता है।

मुटकना–(हिं० वि०) जो आकार में छोटा परन्तु सुन्दर हो।

मुटका–(हिं० पुं०) एक प्रकार की रेशमी धोती, देखो मुकटा।

मुटाई–(हिं० स्त्री०) स्थूलता, मोटापन, अभिमान। **मुटाना**–(हिं० क्रि०) मोटा हो जाना। **मुटासा**–(हिं० वि०) वह जो कुछ धन कमा लेने से असावधान और घमंडी हो गया हो।

मुटिया–(हिं० पुं०) वह श्रमी जो बोझ ढोता हो।

मुट्ठा–(हिं० पुं०) घास, फूस, तृण आदि का उतना पूला जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके।

मुट्ठी–(हिं० स्त्री०) बंधी हुई हथेली।

मुठभेड़–(हिं० स्त्री०) लड़ाई, टक्कर।

मुठिया–(हिं०स्त्री०) किसी अस्त्र की बेंट।

मुड़क–(हिं० स्त्री०) देखो मुरक। **मुड़कना**–(हिं० क्रि०) देखो मुरकना।

मुड़ना–(हिं० क्रि०) दबाव या आघात से झुक जाना, लौटना, पलटना।

मुड़ला–(हिं० वि०) मुंडा, बिना बाल का। **मुड़वाना**–(हिं० क्रि०) किसी को मुड़ने के काम में प्रवृत्त करना, घूमने या मुड़ने में प्रवृत्त करना। **मुड़वारी**–(हिं० स्त्री०) मुंडेरा, चारपाई का सिरहाना। **मुड़हर**–(हिं० पुं०) स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है। **मुड़ाना**–(हिं० क्रि०) मुंडन कराना। **मुड़िया**–(हिं० पुं०) वह जिसका मस्तक मूंड़ा गया हो।

मुड़रा–(हिं० पुं०) देखो मुंडेरा।

मुण्ड–(सं० पुं०) वृक्ष का ठूंठ, मस्तक, सिर, कटा हुआ सिर; (वि०) अधम, नीच। **मुण्डन**–(सं० पुं०) सिर को उस्तरे से मूंड़ने की क्रिया। **मुण्डा**–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके सिर पर के बाल मूंड़ दिये गये हों।

मुण्डित–(सं० वि०) मूंड़ा हुआ।

मुतक्का–(हिं० पुं०) खम्भा।

मुतसिरी–(हिं० स्त्री०) गले में पहनने की मोती की कंठी।

मुतिलाड़ू–(हिं० पुं०) मोतीचूर का लड्डू।

मुद–(सं० स्त्री०) हर्ष, आनन्द।

मुदकारी–(हिं० वि०) सुखकारक।

मुदगर–(हिं० पुं०) देखो मुगदर।

मुदित–(सं० वि०) आनन्दित, प्रसन्न।

मुद्ग–(सं० पुं०) मूंग नामक अन्न।

मुद्गर–(स० पुं०) काठ का बना हुआ एक प्रकार का गावदुम दण्ड। इसको हाथ में लेकर हिलाते हुए मल्ल कई प्रकार का व्यायाम करते हैं।

मुद्धी–(हिं० स्त्री०) सरकनेवाली गाँठ।

मुद्रक–(सं० पुं०) छापनेवाला।

मुद्रण–(सं० पुं०) छपाई का काम। **मुद्रणालय**–(सं० पुं०) मुद्रण करने का स्थान, छापाखाना।

मुद्रा–(सं०स्त्री०) किसी के नाम की छाप, मुहर, सोने-चाँदी का सिक्का, चिह्न। **मुद्राकर**–(सं० पुं०) राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके अधिकार में राजा की मुद्रा रहती है, वह जो किसी प्रकार की मुद्रा तैयार करता हो। **मुद्राक्षर**–(सं० पुं०) सीसे के ढले हुए अक्षर जो छापने के काम में आते हैं। **मुद्राङ्कण**–(सं० पुं०) मुद्रा की सहायता से छापने का काम। **मुद्राङ्कित**–(सं० वि०) मोहर किया हुआ। **मुद्रायन्त्र**–(सं० पुं०) वह यन्त्र जिसके द्वारा कागज आदि पर लकड़ी या सीसे के ढले हुए टाइप से छापा जाता है। **मुद्रिका**–(सं०स्त्री०) अँगूठी।

मुद्रित–(सं० वि०) मुद्रण किया हुआ, छापा हुआ।

मुधा–(सं०अव्य०) व्यर्थ, वृथा, निष्फल।

मुनमुना–(हिं० पुं०) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।

मुनि–(सं० पुं०) महात्मा, व्रती, तपस्वी, त्यागी। **मुनिपुङ्गव**–(स० पुं०) मुनिश्रेष्ठ।

मुनियाँ–(हिं० स्त्री०) लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनीन्द्र–(सं० पुं०) ऋषिश्रेष्ठ।

मुनीब, मुनीम–(सं० पुं०) सहायक, वह जो साहूकारों का हिसाब-किताब लिखता हो।

मुनीश–(सं० पुं०) मुनिश्रेष्ठ।

मुन्ना–(हिं० पुं०) छोटे बच्चे के लिये प्रेम-सूचक शब्द, प्यारा।

मुन्नू–(हिं० पुं०) देखो मुन्ना।

मुमुक्षा–(सं० स्त्री०) मुक्ति की अभिलाषा।

मुमुक्षु-(सं० पुं०) वह जो मुक्ति की कामना करता हो।
मुमूर्षा-(सं०स्त्री०)मरने की अभिलाषा।
मुरण्डा-(हिं० पुं०) गुड़धानी; (वि०) शुष्क, सूखा हुआ।
मुरई-(हिं० स्त्री०) देखो मूली।
मुरक-(हिं०स्त्री०) मुड़ने की क्रिया या भाव। मुरकना-(हिं० क्रि०) लचककर एक ओर मुड़ना या झुकना। मुरकाना-(हिं०क्रि०) घुमाना, फेरना, लौटाना।
मुरकी-(हिं० स्त्री०) कान में पहिनने की छोटी बाली।
मुरखाई-(हिं० स्त्री०) देखो मूर्खता।
मुरचंग-(हिं० पुं०) लोहे का बना हुआ एक बाजा जो मुंह से बजाया जाता है।
मुरचा-(हिं० पुं०) देखो मोरचा।
मुरछना-(हिं० क्रि०) शिथिल होना।
मुरछल-(हिं० पुं०) देखो मोरछल।
मुरछा-(हिं० स्त्री०) देखो मूर्छा।
मुरछावंत-(हिं० वि०) देखो मूर्छित।
मुरछित-(हिं० वि०) देखो मूर्छित।
मुरज-(सं० पुं०) मृदङ्ग, पखावज।
मुरझाना-(हिं०क्रि०) फूल पत्ती आदि का कुम्हलाना, उदास होना।
मुरड़-(हिं० पुं०) अभिमान, अहंकार।
मुरना-(हिं० क्रि०) देखो मुड़ना।
मुरमुराना-(हिं० क्रि०) चूरचूर होना।
मुरलिया-(हिं०स्त्री०)मुरली, बाँसुरी।
मुरली-(सं० स्त्री०) बाँसुरी, बंसी।
मुरलीधर, मुरलीमनोहर-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
मुरबी-(हिं० स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
मुरहा-(हिं० पुं०) वह बालक जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो; (वि०) उपद्रवी।
मुराड़ा-(हिं०पुं०) जलती हुई लकड़ी।
मुराना-(हिं० क्रि०) चुभलाना।
मुरार-(हिं० पुं०) कमल की जड़, भसीड़
मुरारि-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण। मुरारे-(सं०पुं०) हे मुरारि, संबोधन का रूप।
मुरासा-(हिं० पुं०) कर्णफल, तरकी।
मुरुख-(हिं० वि०) देखो मूर्ख।
मुरुछना-(हिं० क्रि०) देखो मुरझना।
मुरुझाना-(हिं० क्रि०) देखो मुरझाना।
मुरेठा-(हिं० पुं०) पगड़ी।
मुरेर-(हिं० स्त्री०) देखो मरोड़। मुरेरना-(हिं० क्रि०) देखो मरोड़ना।
मुरेरा-(हिं० पुं०) मुडेरा, देखो मरोड़।
मुर्री-(हिं० स्त्री०) कपड़े आदि में ऐंठन या मरोड़।
मुलकना-(हिं० क्रि०) पुलकित होना।
मुलहा-(हिं०वि०) मूल नक्षत्र में उत्पन्न।
मुवना-(हिं० क्रि०) मरना।
मुवाना-(हिं० क्रि०) मार डालना।
मुशल-(सं० पुं०) मूसल।
मुषक-(सं० पुं०) मूसा, चूहा।
मुषित-(सं०वि०) चुराया हुआ, ठगा हुआ
मुष्क-(सं०पुं०) अण्डकोष, तस्कर, चोर।
मुष्टि-(सं०पुं०) मुट्ठी, मुक्का, घूँसा, चोरी
मुसकनि-(हिं० स्त्री०) मुसकराहट।
मुसकराना-(हिं० क्रि०) बहुत मंद रूप से हँसना। मुसकराहट-(हिं० स्त्री०) मुसकराने की क्रिया या भाव।
मुसकान-(हिं०पुं०) देखो मुसकराहट।
मुसकाना-(हिं०क्रि०) देखो मुसकराना। मुसकानि-(हिं० स्त्री०) मुसकराहट। मुसकिराना-(हिं० क्रि०) देखो मुसकराना। मुसकिराहट-(हिं० स्त्री०) देखो मुसकराहट। मुसकुराना-(हिं० क्रि०) देखो मुसकराना। मुसकुराहट-

(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट। मुसक्यान–(हिं०स्त्री०) देखो मुसकान।
मुसखोरी–(हिं०स्त्री०) खत में चूहों की अधिकता।
मुसटी–(हिं०स्त्री०) चुहिया।
मुसना–(हिं०क्रि०) लूटा जाना।
मुसम्मी–(हिं०पुं०) मीठा नीबू।
मुसरा–(हिं०पुं०) पेड़ की वह जड़ जिसमें एक ही मोटा पिण्ड धरती के भीतर दूर तक चला गया हो, उसमें शाखायें न हों।
मुसरिया–(हिं०स्त्री०) चूहेका बच्चा,मुसरी
मुसल–(सं० पुं०) धान कूटने का एक अस्त्र, मूसल।
मुसवाना–(हिं०क्रि०) लुटवाना।
मुस्क्यान–(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट।
मुस्टंडा–(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट।
मुहरा–(हिं०पुं०) मुख की आकृति, लक्ष्य।
मुहाला–(हिं०पुं०) पीतल की चूड़ी जो शोभा के लिये हाथी के दाँत पर चढ़ाई रहती है।
मुंहि–(हिं०सर्व०) देखो मोहिं।
मुहु–(सं०अव्य०) बार बार, फिर फिर।
मुहुर्मुहुः–(सं०अव्य०) बारंबार,फिर-फिर।
मुहूर्त–(सं०पुं०) दिन-रात का तीसवां भाग, कला का दसवाँ भाग, निर्दिष्ट क्षण या काल।
मूंग–(हिं०पुं०) एक अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है। मूंगफली–(हिं०स्त्री०) चिनिया बादाम।
मूंगा–(हिं०पुं०) विद्रुम, प्रवाल।
मूंगिया–(हिं० वि०) हरे रंग का।
मूंछ–(हिं०स्त्री०) ऊपर के ओंठ पर कड़े बाल जो केवल मनुष्यों को होते हैं।
मूंज–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का तृण।
मूंड़–(हिं०पुं०) कपाल, सिर।
मूंड़न–(हिं० पुं०) मण्डन, चूड़ाकरण संस्कार। मूंड़ना–(हिं०क्रि०) सिर के बाल बनाना, हजामत करना, धोखा देकर ठगना, चेला बनाना, भेड़ का ऊन कतरना।
मूंड़ी–(हिं०स्त्री०) मस्तक, सिर।
मूंदना–(हिं०क्रि०) ऊपर से किसी वस्तु को छिपाना, बन्द करना।
मूक–(सं० वि०) वाक्य-रहित, गूंगा।
मूकता–(सं०स्त्री०) गूंगापन।
मूका–(हिं०पुं०) छोटा गोल झरोखा, मोखा।
मूखना–(हिं०क्रि०) देखो मूसना।
मूठ–(हिं०स्त्री०) मुष्टि, मुट्ठी, उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके, किसी हथियार की मूठ। मूठना–(हिं०क्रि०) नष्ट होना, मर मिटना।
मूठा–(हिं०पुं०) मुट्ठा।
मठी–(हिं०स्त्री०) देखो मुट्ठी। मूड़–(हिं०पुं०) देखो मूंड़।
मूढ़–(सं०वि०) मूर्ख, निश्चेष्ट, स्तब्ध।
मूढ़चेतन–(सं०वि०) निर्बोध।
मूढ़ता–(सं०स्त्री०) मूढ़त्व। मूढ़धी–(सं०वि०) मन्दबुद्धि, जड़। मूढ़मति–(सं०स्त्री०) मन्दबुद्धि, मूर्ख।
मूतना–(हिं०पुं०) प्राणियों के उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला जल, मूत।
मूत्र–(सं०पुं०) मूत। मूत्रकृच्छ्–(सं० पुं०) मूत्र का वह रोग जिसमें बड़े कष्ट से रुक रुककर मूत्र निकलता है।
मूत्रकोष–(सं० पुं०) मूत्राशय।
मूना–(हिं०पुं०) पीतल या लोहे की अँकुसी जो टेकुवे पर जड़ी रहती है।
मूर–(हिं० पुं०) मूल, जड़, मूलधन।
मूरचा–(हिं०पुं०) देखो मोरचा। मूरख–(हिं०वि०) देखो मूर्ख। मूरखताई–(हिं०स्त्री०) मूर्खता।

मूरछना–(हिं०क्रि०) मूर्छित होना।
मूरछा–(हिं०स्त्री०) देखो मूर्छा। मूरत–(हिं०स्त्री०) देखो मूर्ति।
मूरतिवंत–(हिं०वि०) मूर्तिमान्, शरीरधारी
मूरि, मूरी–(हिं०वि०) मूल, जड़, जड़ी-बूटी
मूरख–(हिं०वि०) देखो मूर्ख।
मूर्ख–(सं०वि०) मूढ़, अज्ञ। मूर्खता–(सं० स्त्री०) मूढ़ता।
मूर्छन–(सं०स्त्री०) अचेत स्थिति। मूर्छा-गत–(वि०) अचेत।
मूर्छित–(सं०वि०) मूर्छायुक्त।
मूर्त–(सं०वि०) साकार।
मूर्ति–(सं० स्त्री०) शरीर, प्रतिमा, आकृति, स्वरूप। मूर्तिकार–(सं० पुं०) मूर्ति बनानेवाला, चित्रकार।
मूर्तिविद्या–(सं०स्त्री०) मूर्ति गढ़ने की विद्या, चित्रकारी।
मूर्ध–(हिं०पुं०) मस्तक, सिर।
मूर्धज–(सं०वि०) सिर से उत्पन्न होनेवाला
मूर्धन्य–(सं० वि०) मूर्धा संबंधी। मूर्धन्य-वर्ण–वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्धा से होता है, यथा–ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।
मूर्धवेष्टन–(सं०पुं०) उष्णीष, पगड़ी।
मूल–(सं० पुं०) वृक्ष का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है, जड़, आरंभ, धन या पूंजी जो किसी व्यापार में लगायी जाती है, आदि कारण, नींव; (वि०) मुख्य, प्रधान।
मूलक–(सं०पुं०) मूली, मुरई। मूल-स्थान–(स०पुं०) प्रधान स्थान। मलहर–(सं०वि०) मूलनाशक।
मूलाशी–(सं० वि०) कन्द-मूल खाकर रहनेवाला।
मूलिका–(सं०स्त्री०) औषधियों की जड़, जड़ी।
मूली–(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी जड़ खाने में तीक्ष्ण तथा मीठी होती है, मुरई।
मूलोच्छेद–(सं०पुं०) जड़ से नाश।
मूलोत्पाटन–(सं०पुं०) जड़ से उखाड़ना।
मूल्य–(सं०पुं०) किसी वस्तु के बदले में मिलनेवाला धन या दाम।
मूल्यवान्–(सं०वि०) अधिक दाम का।
मूषक–(सं०पुं०) इन्दुर, चूहा।
मूस–(हिं०पुं०) चूहा। मूसदानी–(स्त्री०) चूहा फँसाने का पिंजड़ा।
मूसना–(हिं०क्रि०) चुराकर उठा ले जाना।
मूसर–(हिं० पुं०) धान कूटने का लकड़ी का मोटा डंडा, मूसल।
मूसरचंद–(हिं०पुं०) अपढ़, गँवार, हट्टा-कट्टा परन्तु निकम्मा।
मूसल–(हिं०पुं०) धान कूटने का लंबा मोटा डंडा।
मूसलाधार–(हिं०क्रि० वि०) वृष्टि जो मोटी धार में हो।
मूसा–(हिं०पुं०) चूहा।
मृग–(सं० पुं०) कोई पशु विशेषकर जंगली पशु, अन्वेषण, खोज, हरिन। मृगछाला–(हिं०स्त्री०) हरिन का चमड़ा। मृगजल–(सं०पुं०) मृगतृष्णा। मृगजीवन–(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया। मृगणा–(सं०स्त्री०) खोई हुई वस्तु की खोज। मृगतृष्णा–(सं०स्त्री०) मृगजल, मरीचिका। मृगधर–(सं०पुं०) चन्द्रमा। मृगधूर्त–(सं० पुं०) शृगाल, सियार।
मृगनाभि–(सं० पुं०) कस्तूरी।
मृगपति, मृगप्रभु–(सं०पुं०) सिंह। मृग-मरीचिका–(सं०स्त्री०) देखो मृगतृष्णा। मृगयामित्र–(सं०पुं०) चन्द्रमा। मृगया–(सं० स्त्री०) आखेट।
मृगराज–(सं०पुं०) सिंह, व्याघ्र।

मृगलाञ्छन–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
मृगलोचना, मृगलोचनी–(सं० स्त्री०) हरिण के समान नेत्रवाली स्त्री।
मृगवन–(सं०पुं०) आखेट का जंगल।
मृगव्याध–(सं०पुं०) मृगों को खोजनेवाला बहेलिया।
मृगशाव–(सं०पुं०) हरिण का बच्चा।
मृगश्रेष्ठ–(सं० पुं०) व्याघ्र, बाघ।
मृगहन–(सं०स्त्री०) व्याध, बहेलिया।
मृगाक्षी–(सं०स्त्री०) मृगनयनी।
मृगाङ्क–(सं०पुं०) चन्द्रमा, वैद्यक के एक रस का नाम।
मृगाङ्गजा–(सं०स्त्री०) कस्तूरी।
मृगाधिप-मृगाधिराज–(सं०पुं०) सिंह, शेर
मृगित–(सं०वि०) अन्वेषित, खोजा हुआ।
मृगिनी–(हिं०स्त्री०) हरिणी।
मृगी–(सं०स्त्री०) हिरनी, अपस्मार रोग।
मृगीलोचना–(सं० स्त्री०) मृगनयनी।
मृगेक्षण–(सं०वि०) मृग के समान आँखवाला।
मृगेन्द्र–(सं०पुं०) सिंह। मृगेश, मृगेश्वर–(सं०पुं०) सिंह।
मृग्य–(सं० वि०) खोजने योग्य।
मृणाल–(सं०पुं०) कमल की डंडी, कमलनाल।
मृणालिनी–(सं०स्त्री०) पद्मिनी, कमलिनी
मृत–(सं०वि०) गतप्राण, मरा हुआ।
मृतक–(सं० पुं०) शव। मृतकर्म–(सं०पुं०) प्रेतकर्म। मृतकल्प–(सं० वि०) मरे के समान।
मृतवत्सा–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सन्तति मर मर जाती हो।
मृतसंस्कार–(सं०पुं०) अन्त्येष्टि क्रिया।
मृतस्नान–(सं० पुं०) सजाति या बन्धु के मरने पर उसके उद्दश्य से किया जानेवाला स्नान।
मृताशन–(सं० वि०) शव खानेवाला।
मृताशौच–(सं० पुं०) वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।
मृति–(सं०स्त्री०) मरण, मृत्यु।
मृत्तिका–(सं०स्त्री०) मिट्टी।
मृत्पात्र–(सं० पुं०) मिट्टी का पात्र।
मृत्यु–(सं०पुं०) प्राण छूटना, शरीर में से प्राणों का अलग होना।
मृत्युञ्जय–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
मृत्युलोक–(सं० पुं०) मर्त्यलोक।
मृथा–(हिं०क्रि०वि०) मृषा, वृथा।
मृदङ्ग–(सं०पुं०) ढोलक के आकार का उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का बाजा।
मृदु–(सं०वि०) कमल, सुकुमार, धीमा।
मृदुल–(वि०) कोमल, सुकुमार, दयालु।
मृदुलता–(सं०स्त्री०) सुकुमारता।
मृधा–(सं०अव्य०) मृषा, झूठमूठ।
मृनाल–(हिं०पुं०) देखो मृणाल।
मृन्मय–(सं०वि०) मिट्टी का बना हुआ।
मृषा–(सं० अव्य०) मिथ्या, झूठमूठ; (वि०) असत्य, झूठ।
में–(हिं०अव्य०) अधिकरण कारक का चिह्न जिसको किसी शब्द के आगे लगाने से 'भीतर, बीच का, या चारों ओर होना' बतलाया जाता है, यह आधार या अवस्थान सूचित करता है।
मेंगनी–(हिं०स्त्री०) पशुओं की गोलियों के रूप में विष्ठा।
मेख–(हिं० स्त्री०) खूंटा, कील, काँटा, लकड़ी का पच्चड़।
मेखड़ा–(हिं० स्त्री०) बाँस की फट्टी का घेरा।
मेखल–(हिं०स्त्री०) किंकिणी, करधनी।
मेखला–(सं०स्त्री०) करधनी, कमरबंद, गोल घेरा।
मेखली–(हिं० स्त्री०) कटिबन्ध, करधनी।

मेघ–(सं० पुं०) पर्जन्य, बादल। **मेघकाल**–वर्षाकाल। **मेघगर्जन**–बादलों की गड़गड़ाहट। **मेघजाल**–बिजली। **मेघजीवन**–चकवा पक्षी। **मेघडम्बर**–मेघ की गर्जना।

मेघनाथ–(सं० पुं०) इन्द्र।

मेघमण्डल–(सं० पुं०) आकाश।

मेघमाला–(सं०स्त्री०) बादलों की घटा।

मेघवाई–(हिं० स्त्री०) मेघों की घटा।

मेघवाहन–(सं० पुं०) इन्द्र।

मेघवेश्म–(सं० पुं०) आकाश।

मेघश्याम–(सं० वि०) मेघ के समान काला; (पुं०) श्रीकृष्ण।

मेघसुहृद–(सं० पुं०) मयूर, मोर।

मेघस्वन, मेघह्लाद–(सं० पुं०) मेघ की गर्जना।

मेघा–(हिं० पुं०) मण्डूक, मेढक।

मेघागम–(सं० पुं०) वर्षाकाल।

मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित–(सं० वि०) बादलों से ढँपा हुआ।

मेघाडम्बर–(सं०पुं०) मेघों का विस्तार।

मेचक–(वि०) श्यामल, कालापन, श्यामता, कालापन।

मेजा–(हिं० पुं०) मण्डूक, मेढक।

मेटक–(हिं० वि०) नाश करनेवाला, मिटानेवाला। **मेटनहार**–(हिं० पुं०) मिटाने या दूर करनेवाला।

मेटना–(हिं०क्रि०) मिटाना, नष्ट करना।

मेटिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का घड़े से छोटा पात्र, मेटी। **मेटुवा**–(हिं० स्त्री०) देखो मेटिया।

मेटुवा–(हिं० वि०) कृतघ्न।

मेड़–(हिं० पुं०) खेत या भूमि का मिट्टी डालकर बनाया हुआ घेरा।

मेड़क–(हिं० पुं०) मण्डूक, मेढक।

मेड़रा–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का मण्डलाकार ढाँचा।

मेडराना–(हिं० क्रि०) देखो मँड़राना।

मेड़िया–(हिं० स्त्री०) मेढी।

मेढक–(हिं० पुं०) मण्डूक, दर्दुर, मेघा।

मेढ़ा–(हिं० पुं०) सींगवाला एक चौपाया जिसके शरीर पर घने रोवें होते हैं इसको लोग लड़ानें के लिए पालते हैं

मेढ़्–(सं० पुं०) शिश्न, लिङ्ग।

मद–(सं० पुं०) वसा, चरबी।

मेदिनी–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती।

मेदिनीपति–(सं० पुं०) पृथिवीपति।

मेधा–(सं० स्त्री०) मन को स्मरण रखने की शक्ति।

मेधावी–(सं० वि०) जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो, पंडित, विद्वान्।

मेध्य–(सं०वि०) पवित्र, बुद्धि बढ़ानेवाला।

मेम–(हिं० स्त्री०) यूरोप या अमेरिका आदि देश की स्त्री, ताश का एक पत्ता, बीबी, रानी।

मेमना–(हिं० पुं०) भेड़ी का बच्चा।

मेरवाना–(हिं० क्रि०) मिलाना।

मेरा–(हिं० सर्व०) 'मैं' शब्द का संबंध कारक का रूप, मुझसे संबंध रखनेवाला।

मेराउ, मराव–(हिं० पुं०) मिलाप, समागम।

मेरी–(हिं० सर्व०) 'मेरा' का स्त्रीलिंग का रूप।

मेरुदण्ड–(सं० पुं०) पीठ के बीच की हड्डी, रीढ़, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच में गई है। **मेरुपृष्ठ**–(सं० पुं०) आकाश, स्वर्ग। **मेरुयन्त्र**–(सं० पुं०) बीजगणित में एक प्रकार का चक्र, चरखा।

मेरे–(हिं० सर्व०) 'मेरा' का बहुवचन, 'मेरा' का वह रूप जो संबंधवान् शब्द के आगे विभक्ति लगाने पर प्राप्त होता है।

मेल–(सं० पुं०) संयोग, मित्रता, अनुकूलता, अनुरूपता, ढंग, प्रकार, मिलावट, समता, सङ्गति, एकता।
मेलन–(सं० पुं०) मिलने की क्रिया या भाव। **मेलना**–(हिं० क्रि०) मिलाना, इकट्ठा होना।
मेला–(हिं० पुं०) बहुत से लोगों का जमावड़ा, उत्सव, खेल, कौतुक देखने के लिय बहुत से लोगों की भीड़।
मेली–(हिं०पुं०) संगी, हेलमेल रखनेवाला
मेल्हना–(हिं० क्रि०) बेचैन होना, छटपटाना।
मेवास–(हिं० पुं०) दुर्ग, गढ़, सुरक्षित स्थान। **मेवासी**–(हिं० पुं०) गढ़ में रहनेवाला, घर का मालिक।
मेष–(सं०पुं०) भेड़ा। **मेषपाल**–गँड़ेरिया।
मेहँदी–(हिं० स्त्री०) एक पौधा जिसकी पत्तियों को पीसकर स्त्रियाँ हाथ पैर में लगाती हैं जिससे लाल रंग हो जाता है।
मेह–(हिं० पुं०) मेघ, बादल, वर्षा।
मेहन–(सं० पुं०) शिश्न, लिंग।
मेहना–(हिं०पुं०) उलहना, दोष-कथन।
मेहर–(हिं० स्त्री०) देखो मेहरी, पत्नी।
मेहरा–(हिं० पुं०) स्त्रियों के समान चेष्टा या प्रकृतिवाला मनुष्य।
मेहरारू–(हिं० स्त्री०) स्त्री, औरत।
मेहरी–(हिं० स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
में–(हिं० सर्वं०) स्वयं, खुद, सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्त्ता के एकवचन का रूप; (अव्य०) में।
मैं–(हिं०अव्य०) देखो मय, साथ, मिलकर
मैत्री–(सं०स्त्री०) मित्र का भाव, मित्रता।
मैदानी–(हिं० वि०) मैदे का बना हुआ।
मैन–(हिं० पुं०) मोम।
मैनसिल–(हिं० पुं०) मनःशिला, एक प्रकार की धातु जो मिट्टी की तरह पीली होती है।
मैना–(हिं० स्त्री०) काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखलाने पर मनुष्य की तरह बोली बोल सकता है।
मैया–(हिं० स्त्री०) माता, माँ।
मैर–(हिं०स्त्री०) साँप के विष की लहर।
मैरा–(हिं० पुं०) वह मचान जिस पर बैठकर किसान अपने खेत की रखवाली करते हैं।
मैल–(हिं०वि०) मलिन, मैला; (स्त्री०) धूल, मैली करने की वस्तु, दोष, विकार।
मैलखोरा–(हिं०वि०) मैल को छिपानेवाला।
मैला–(हिं०पुं०) कूड़ा-करकट; (वि०) दूषित, जिस पर मैल जमी हो।
मैला-कुचैला–(हिं० वि०) बहुत मैला।
मैलापन–(हिं०पुं०) मैला होने का भाव।
मों–(हिं० अव्य०) में; (सर्वं०) मो।
मोंगरा–(हिं० पुं०) मेख ठोंकने का हथौड़ा, एक प्रकार की केशर।
मोंछ–(हिं० स्त्री०) देखो मूँछ।
मोंढ़ा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का गोल ऊँचा आसन, कन्धा।
मो–(हिं० सर्वं०) मेरा, "मैं" का वह रूप जो व्रज भाषा में कर्त्ता कारक के सिवाय अन्य कारकों में इसके चिह्न लगाने के पूर्व व्यवहार किया जाता है।
मोई–(हिं०स्त्री०) घी में सना हुआ आटा।
मोकना–(हिं० क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
मोकल–(हिं०वि०) मुक्त, छोड़ा हुआ।
मोकला–(हिं० वि०) अधिक चौड़ा।
मोक्ष–(सं० पुं०) मुक्ति, छुटकारा।
मोक्षक–(सं० वि०) मोक्ष देनेवाला।
मोक्षद–(सं० वि०) मोक्षदाता, मोक्ष देनेवाला।
मोख–(हिं० पुं०) देखो मोक्ष।

मोखा–(हिं० पुं०) भीत आदि में का छिद्र, झरोखा।
मोगरा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा बेले का फूल।
मोघ–(सं० वि०) निरर्थक, निष्फल, हीन। मोघता–(सं०स्त्री०) निष्फलता।
मोच–(हिं० स्त्री०) अंग के किसी जोड़ पर की नस का अपने स्थान से हट जाना।
मोचक–(सं० वि०) मुक्तिकारक, छुड़ानेवाला। मोचन–(सं० पुं०) मोक्ष। मोचना–(हिं० क्रि०) छुड़ाना, मुक्त करना।
मोचनीय–(सं०वि०) मुक्त करने योग्य।
मोची–(हिं० पुं०) चर्मकार श्रेणी की एक जाति, ये लोग जूता बनाते और इनकी मरम्मत करते हैं।
मोच्छ–(हिं० पुं०) देखो मोक्ष।
मोछ–(हिं० स्त्री०) देखो मूँछ।
मोट–(हिं० स्त्री०) चमड़े का बड़ा थैला जिसके द्वारा खेत सींचन के लिये कुएँ से पानी निकाला जाता है, चरसा; (वि०) मोटा, साधारण, कम मूल्य का।
मोटरी–(हिं० स्त्री०) गठरी।
मोटा–(हिं० वि०) दरदरा, बेडौल, भद्दा, अहंकारी, घटिया, स्थूल शरीर का मनुष्य। मोटाना–(हिं०क्रि०) स्थूलकाय होना, मोटा होना, अमीर होना, अभिमानी होना। मोटाई–(हिं० स्त्री०) स्थूलता, मोटापन। मोटापा–(हिं० पुं०) स्थूलता।
मोटिया–(हिं० पुं०) रूक्ष, मोटा देशी कपड़ा, खद्दर, बोझ ढोनेवाला कुली।
मोठ–(हिं० स्त्री०) मूँग की तरह का एक प्रकार का मोटा अन्न।
मोठस–(हिं० वि०) मौन, चुप।
मोड़–(हिं० स्त्री०) घुमाव या मुड़ने का भाव, घुमाना। मोड़ना–(हिं०क्रि०) फेरना, लौटाना, विमुख होना, तह करन
मोड़ी–(हिं० स्त्री०) घसीट लिखने की एक प्रकार की लिपि जिसमें प्रायः मराठी भाषा लिखी जाती है।
मोतिया–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बेला (फल) जिसकी कली मोती के समान गोल होती है; (वि०) गोल छोटे दाने का
मोतियाबिन्द–(हिं० पुं०) आँख का एक रोग जिसमें उसके परदे में गोल झिल्ली-सी पड़ जाती है जिसके कारण आँख से देख नहीं पड़ता।
मोती–(हिं० पुं०) मुक्ता, वह बाली जिसमें बड़े बड़े मोती पड़े रहते हैं।
मोतीचूर–(हिं० पुं०) छोटी बूँदियों का लड्डू। मोतीझिरा–(हिं०स्त्री०) छोटी शीतला का रोग।
मोद–(सं० पुं०) हर्ष, आनन्द, सुगन्ध।
मोदक–(सं० पुं०) लड्डू। मोदकर–(सं० वि०) आनन्द देनेवाला। मोदकार–(सं० पुं०) मिठाई बनानेवाला, हलवाई।
मोदकी–(सं० स्त्री०) चमेली के फूल का पौधा; (वि०) आनन्द देनवाली।
मोदन–(सं० पुं०) हर्ष, आनन्द, सुगन्ध।
मोदना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, प्रसन्न करना।
मोदनीय–(सं०वि०) आनन्द करने योग्य
मोदित–(सं०वि०) आनन्दित, हर्षयुक्त।
मोदी–(हिं० पुं०) आटा, चावल, दाल बेचनेवाला बनिया।
मोध–(हिं० वि०) मूर्ख, हतबुद्धि।
मोना–(हिं० क्रि०) तर करना, भिगाना; (पुं०) बाँस मूंज आदि का ढपनेदार पिटारा। मोनिया–(हिं० स्त्री०) छोटा मोना।

मोमबत्ती–(हिं० स्त्री०) मोम या चरबी को साँचे में ढालकर बनाई हुई बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।
मोमी–(हिं० वि०) मोम के समान, मोम का बना हुआ।
मोयन–(हिं० पुं०) माड़े हुए आटे में घी मिलाना।
मोर–(हिं० पुं०) एक सुन्दर बड़ा पक्षी; (सर्व०) मेरा।
मोरचा–(फा० पुं०) लोहे के ऊपरी तल पर चढ़ जानेवाली लाल तह जो वायु और तरी से उत्पन्न होती है, वह गड्ढा जो गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिये खोदकर बनाया जाता है।
मोरछल–(हिं० पुं०) मोर की पूँछ के परों को इकट्ठा बाँधकर बना हुआ चँवर।
मोरन–(हिं० स्त्री०) मोड़ने की क्रिया या भाव, श्रीखण्ड (सिखरन)।
मोरना–(हिं० क्रि०) देखो मोड़ना।
मोरनी–(हिं० स्त्री०) मोर पक्षी की मादा
मोरपंख–(हिं० पुं०) मोर का पर।
मोरपंखी–(हिं० स्त्री०) वह नाव जिसका अगला भाग मोर की तरह बना और रँगा रहता है; (वि०) गहरा चमकीला नीला।
मोरा–(हिं० सर्व०) मेरा।
मोराना–(हिं०क्रि०) चारों ओर घुमाना फिराना।
मोरी–(हिं० स्त्री०) मैला पानी बहने की नाली, परनाली, मोहरी।
मोर्चा–(हिं० पुं०) देखो मोरचा।
मोल–(हिं० पुं०) मूल्य, दाम।
मोलाना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु का दाम पूछना अथवा मूल्य स्थिर करना।
मोवना–(हिं० क्रि०) देखो मोना।
मोष–(सं० पुं०) चोरी, लूट, ठगी; (हिं० पुं०) देखो मोक्ष। **मोषक**–(सं० पुं०) तस्कर, चोर। **मोषण**–(सं० पुं०) लूटना, चोरी करना, वध करना।
मोह–(सं० पुं०) अविद्या, मूर्छा, अज्ञान, भ्रान्ति, भ्रम। **मोहक**–(सं० वि०) मोह उत्पन्न करनेवाला।
मोहकर–(हिं० पुं०) घड़े का मोहड़ा।
मोहजनक–(सं०वि०) मोह उत्पन्न करनेवाला।
मोहड़ा–(हिं० पुं०) किसी पात्र का मुख या खुला भाग।
मोहन–(सं० पुं०) जिसको देखकर मन लुभा जावे, श्रीकृष्ण; (हिं० वि०) मोह उत्पन्न करनेवाला। **मोहनभोग**–(सं० पुं०) एक प्रकार का हलुआ।
मोहनमाला–(सं०स्त्री०) सोने के दानों की बनी हुई माला।
मोहना–(हिं० क्रि०) किसी पर अनुरक्त होना या रीझना, मूर्छित होना, लुभाना।
मोहनीय–(सं० वि०) मोह करने योग्य।
मोहयिता–(सं० वि०) मोहकारक।
मोहरा–(हिं० पुं०) किसी पात्र का मुख या खुला हुआ भाग, सेना की अगली पंक्ति, किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग।
मोहरी–(हिं० स्त्री०) किसी पात्र का छोटा मुख।
मोहल्ला–(हिं० पुं०) देखो मुहल्ला।
मोहार–(हिं० पुं०) द्वार, मोहड़ा, अगला भाग।
मोहारनी–(हिं० स्त्री०) पाठशाला में बालकों का एक साथ खड़े होकर पहाड़े पढ़ना।
मोहिं–(हिं० सर्व०) मुझे, मुझको।
मोहित–(सं० वि०) भ्रम में पड़ा हुआ।

मोहिनी–(सं० वि०) मोहनेवाली ।
मोही–(हिं० वि०) मोहित करनेवाला, प्रेम करनेवाला, अज्ञानी ।
मोहुक–(सं० वि०) मोह करनेवाला ।
मौक्तिक–(सं० पुं०) मुक्ता, मोती ।
मौखर्य–(सं० पुं०) बहुत अधिक बढ़-बढ़कर बोलना ।
मौखिक–(सं०वि०) मुख सम्बन्धी, मुख का ।
मौख्य–(सं० पुं०) प्रधानता ।
मौगा–(हिं०पुं०) निर्बुद्धि, हिजड़ा ।
मौजी–(हिं०वि०) मनमाना काम करनेवाला ।
मौञ्जी–(हिं० वि०) मूँज की बनी हुई मेखला ।
मौड़ा–(हिं० पुं०) देखो मौंड़ा ।
मौन–(सं० पुं०) न बोलने की क्रिया या भाव, चुप्पी ; (वि०) चुप, जो न बोले ।
मौना–(हिं० पुं०) घी या तेल रखने का पात्र, मूँज की बनी हुई पिटारी ।
मौनित्व–(सं० पुं०) मौन ।
मौनी–(हिं०वि०) मौन व्रत धारण करनेवाला, चुप रहनेवाला ।
मौर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का शिरोभूषण जो विवाह के समय पहनाया जाता है, शिरोमणि, प्रधान, गरदन का पिछला भाग ।
मौरना–(हिं० क्रि०) वृक्षों पर मंजरी लगना ।
मौरी–(हिं० स्त्री०) छोटा मौर ।
मौर्ख्य–(सं० पुं०) मूर्खता का भाव ।
मौलि–(सं०पुं०) मस्तक, सिर, किरीट, प्रधान व्यक्ति । **मौलिक**–मूल सम्बन्धी ।
मौसा–(हिं०पुं०) माता की बहिन का पति
मौसियाउत, मौसियायत–(हिं० वि०) मौसेरा ।
मौसी–(हिं०स्त्री०) माता की बहिन, मौसी
मौसेरा–(हिं०वि०) मौसी के सम्बन्ध का ।
म्यांव–(हिं० स्त्री०) बिल्ली की बोली ।
म्यान–(हिं० पुं०) तलवार कटार आदि के फल को सुरक्षित रखन की खोली ।
म्याना–(हिं० क्रि०) म्यान में रखना ।
म्यों–(हिं० स्त्री०) बिल्ली की बोली ।
म्रियमाण–(सं०वि०) मृतकल्प, मृतप्राय ।
म्लान–(सं० वि०) कुम्हलाया हुआ; (पुं०) ग्लानि, शोक । **म्लानता**–मलिनता ।
म्लेच्छ–(सं० पुं०) वर्णाश्रमहीन जाति; (वि०) नीच, सर्वदा पाप करनेवाला ।
म्हा–(हिं० सर्व०) मुझे ।
म्हारा–(हिं० सर्व०) हमारा ।

य

य–हिन्दी वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान तालु है, यह स्पर्श वर्ण और ऊष्म वर्ण के बीच का वर्ण है इसलिये इसको अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं ।
य–(सं० पुं०) यश, योग, यान, संयम, प्रकाश, त्याग ।
यकअंगी–(हिं० वि०) एक अंगवाला ।
यकार–(सं० पुं०) 'य' स्वरूप वर्ण ।
यकृत्–(सं० स्त्री०) पेट की दाहिनी ओर की एक थैली जिसमें पाचन रस रहता है
यक्ष–(सं० पुं०) देवयोनि-विशेष ।
यक्षिणी–(सं० स्त्री०) यक्ष की पत्नी ।
यक्ष्मा–(सं० पुं०) क्षय नामक रोग ।
यगण–(सं० पुं०) छन्दःशास्त्र के आठ गणों में से एक जिसमें पहिला वर्णलघु तथा बाद के दो वर्ण गुरु होते हैं ।
यग्य–(हिं०पुं०) देखो यज्ञ । **यच्छ**–(हिं० पुं०) देखो यक्ष ।
यच्छिनी–(हिं० स्त्री०) देखो यक्षिणी ।

यजन–(सं० पुं०) यज्ञ करना।
यजनीय–(सं० वि०) यजन करने योग्य।
यजमान–(सं० पुं०) ब्राह्मणों को दान देनेवाला। **यजमानी**–(हिं० स्त्री०) यजमान का भाव या धर्म।
यजिष्ण–(सं० वि०) यज्ञ करनेवाला।
यजुर्वेद–(सं० पुं०) चार प्रसिद्ध वेदों में से एक जिसमें विशेष करके यज्ञ कर्म का विस्तृत वर्णन है। **यजुर्वेदी**-(हिं०वि०) यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करनेवाला।
यज्ञ–(सं० पुं०) वह वैदिक कार्य जिसमें सभी देवताओं का पूजन तथा हवन होता है।
यज्ञकुण्ड–(सं० पुं०) वह कुण्ड या वेदी जिसमें हवन किया जाता है।
यज्ञपशु–(सं० पुं०)वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाता है। **यज्ञपात्र**–(सं० पुं०) काठ के बने हुए पात्र जो यज्ञ में काम आते हैं।
यज्ञभूमि–(सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर यज्ञ होता है, यज्ञस्थान। **यज्ञमन्दिर**–(सं० पुं०) यज्ञशाला।
यज्ञयूप–(सं० पुं०) वह खंभा जिसमें यज्ञ का बलि-पशु बाँधा जाता है।
यज्ञशाला–(सं० स्त्री०) यज्ञगृह, यज्ञ करने का स्थान।
यज्ञसदन–(सं० पुं०) यज्ञस्थान। **यज्ञसूत्र**–(सं० पुं०) यज्ञोपवीत, जनेऊ।
यज्ञस्तम्भ, यज्ञस्थाणु–(सं० पुं०) देखो यज्ञयूप।
यज्ञागार–(सं० पुं०) यज्ञशाला।
यज्ञाशन–(सं० पुं०) देवता।
यज्ञोपवीत–(सं० पुं०) ब्रह्मसूत्र, उपनयन, व्रतबन्ध, जनेऊ।
यज्य–(सं० वि०) यजन करने योग्य।
यतन–(हिं० पुं०) देखो यत्न। **यतनीय**–(सं० वि०) यत्न करने योग्य।
यतमान–(सं० वि०) यत्न करता हुआ।
यति–(सं० पुं०) संन्यासी, योगी, ब्रह्मचारी; (स्त्री०) पढ़ते पढ़ते जहाँ पर विश्राम किया जाता है।
यतिनी–(सं० स्त्री०) संन्यासिनी।
यती–(सं०स्त्री०)देखो यति, जितेन्द्रिय।
यत्किञ्चित्–(सं० वि०) थोड़ा-सा।
यत्न–(सं०पुं०) उद्योग, उपाय, उपचार।
यत्नवान्–(सं०वि०) यत्न करनेवाला।
यत्रतत्र–(सं० अव्य०) जहाँ तहाँ। **यथा**–(सं० अव्य०) जैसे, ज्यों।
यथाकाम–(सं० अव्य०) इच्छानुसार।
यथाकामी–(सं० वि०) स्वेच्छाचारी।
यथाकाल–(सं० पुं०) उपयुक्त समय में।
यथाक्रम–(सं० अव्य०) क्रमानुसार, क्रमशः। **यथाक्षम**–(सं० अव्य०) यथाशक्ति। **यथागत**–(सं०क्रि०वि०)जैसा आया है वैसा। **यथागम**–(सं० अव्य०) शास्त्र के अनुरूप। **यथागुण**–(सं० अव्य०)गुण के अनुरूप। **यथाचार**–(सं० अव्य०)रीति के अनुसार। **यथाचारी**–(सं०क्रि०वि०) पूर्व आचार के अनुसार चलनेवाला। **यथाजात**–(सं० वि०) मूर्ख, नीच।
यथाज्ञान–(सं० अव्य०)ज्ञान के अनुसार।
यथातथ–(सं० अव्य०)यथार्थ, उचित।
यथादिष्ट–(सं०वि०)जैसा कहा गया हो।
यथाधर्म–(सं० अव्य०) धर्म के अनुसार।
यथानियम–(सं०अव्य०) नियमानुसार।
यथान्याय–न्याय के अनुसार।
यथाप्रदिष्ट–(सं० वि०) जैसी आज्ञा दी गई हो। **यथापूर्व**–(सं०अव्य०) पहिले के समान, ज्यों का त्यों।
यथाभिरुचि–(सं०अव्य०) इच्छानुसार।
यथाभिलिखित–(सं० अव्य०)लिखित के

अनुसार। **यथाभिलषित**–(सं० वि०) इच्छानुसार। **यथामति**–(सं०अव्य०) बुद्धि के अनुसार। **यथायथ**–(सं० अव्य०) तुल्य, समान।
यथायोग्य–(सं० अव्य०)योग्यतानुसार।
यथारुचि–(सं०अव्य०)रुचि के अनुसार।
यथारूप–(सं० अव्य०) रूप के समान।
यथार्थ–(सं० अव्य०) ठीक जैसा होना चाहिये वैसा, सत्य, ठीक, स्थिर।
यथावकाश–(सं० अव्य०) अवकाश के अनुसार। **यथावत्**–(सं०अव्य०) पूर्ववत्, जैसा चाहिए वैसा,अच्छी तरह से।
यथावस्थित–(सं० अव्य०) सत्य, ठीक, स्थिर। **यथाविधि**–(सं०अव्य०)विधिपूर्वक।
यथाशक्ति–(सं० अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, जितना हो सके।
यथासमय–(सं० अव्य०) समय के अनुसार, जैसा समय हो वैसा। **यथासम्भव** –(सं० अव्य०) जहाँ तक हो सके।
यथासाध्य–(सं० अव्य०) यथाशक्ति।
यथास्थान–(सं०अव्य०)ठीक स्थान पर।
यथेच्छ–(सं० अव्य०)इच्छानुसार, मनमाना।
यथेच्छा–(सं० स्त्री०) इच्छानुसार, मनमाना। **यथेच्छाचार**–(सं० पुं०) जो मन में आवे सो करना।
यथेच्छाचारी–(सं० वि०) मनमौजी।
यथेप्सित–(सं० अव्य०) जैसी इच्छा हो वैसा।
यथेष्ट–(सं०अव्य०)जितना चाहिए उतना
यथोचित–(सं० अव्य०) जैसा चाहिये वैसा, ठीक।
यथोद्दिष्ट–(सं०वि०)जैसा कहा गया हो।
यथोपदिष्ट–(स० वि०) जैसा उपदेश दिया गया हो।
यदपि–(हिं० अव्य०) देखो यद्यपि।
यदा–(सं० अव्य०) जिस समय, जब, जहाँ। **यदाकदा**–(सं०अव्य०) कभी।
यदि–(सं० अव्य०) यद्यपि, संशय या अपेक्षा सूचित करने के लिये वाक्य के आरंभ में प्रयुक्त होता है।
यदिच, यदिचेत्–(सं० अव्य०) यद्यपि।
यदिच्छा–(सं० स्त्री०) जैसी इच्छा।
यद्यपि–(सं० अव्य०) यदि।
यदृच्छया–(सं० क्रि० वि०) अकस्मात्, दैवयोग से। **यदृच्छा**–(सं० स्त्री०) आकस्मिक संयोग।
यद्वातद्वा–(सं० अव्य०) कभी कभी।
यन्त्र–(सं० पुं०) किसी विशेष कार्य के लिये बनाया हुआ उपकरण। **यन्त्रगृह**–(सं० पुं०) वेधशाला।
यन्त्रण–(सं० पुं०) रक्षण, नियम।
यन्त्रणा–(सं०स्त्री०)वेदना, यातना,कष्ट
यन्त्रविद्या–(सं० स्त्री०) कलों के बनाने और चलाने की विद्या।
यन्त्रशाला–(सं० स्त्री०) वेधशाला।
यन्त्रालय–(सं०पुं०)मुद्रणालय,छापाखाना।
यन्निमित्त–(सं०अव्य०)जिस कारण से।
यम–(सं० पुं०) मृत्यु के देवता, मन तथा इन्द्रियों को वश में करना।
यमज–(सं० वि०) एक गर्भ से एक साथ उत्पन्न होनेवाली दो सन्तान, जुड़वाँ।
यमदूत–(सं० पुं०) यम के दूत।
यमद्वितीया–(सं० स्त्री०) कातिक शुक्ला द्वितीया, भाईदूज।
यमन–(सं० पुं०) रोकना, बन्द करना, बाँधना।
यमनिका–(सं० स्त्री०) यवनिका, नाटक का परदा।
यमयातना–(सं०स्त्री०)मृत्युसमय का कष्ट
यमरथ–(सं० पुं०) यम का वाहन, भैंसा।

यमल–(सं० पुं०) युग्म, जोड़ा, यमज।
यमहन्ता–(सं०पुं०) काल का नाश करनेवाला।
यमालय–(सं० पुं०) यमपुर।
यमी–(सं० पुं०) संयमी।
यव–(सं० पुं०) जव नाम का अन्न, चार धान या छ सरसों की तौल का मान।
यवक्षार–(सं० पुं०) जवाखार।
यवन–(सं० पुं०) यूनान देश का निवासी, मुसलमान।
यवनिका–(सं० स्त्री०) नाटक का परदा।
यवनी–(सं०स्त्री०) यवन जाति की स्त्री।
यवमद्य–(सं० पुं०) जव की मदिरा।
यवशक्तु–(सं० पुं०) जव का सत्तू।
यश–(हिं०पुं०) प्रशंसा, ख्याति, कीर्ति।
यशद–(सं०पुं०) एक धातु विशेष, जस्ता।
यशस्कर–(सं० वि०) कीर्तिकारक।
यशस्करी–(सं० स्त्री०) यश बढ़ानेवाली विद्या। **यशस्काम**–(सं० वि०) यश की कामना करनेवाला।
यशस्कृत, यशस्य–(सं०वि०) यश चाहनेवाला।
यशस्वत–(सं०वि०) यशस्वी। **यशस्वी**–(हिं०वि०) कीर्तिमान्, जिसका बहुत यश हो। **यशस्विनी**–(सं०स्त्री०) कीर्तिमती।
यशी–(सं० वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशोधन–(सं० वि०) यश ही जिसका एकमात्र धन है।
यशोधर–(सं०वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशोमती–(सं० स्त्री०) यशस्विनी।
यष्टि–(सं० पुं०) लाठी, छड़ी; (स्त्री०) शाखा, टहनी, हार, मुलेठी, बाहु, बाँह।
यष्टिका–(सं० स्त्री०) हाथ में रखने की छड़ी या लाठी।
यह–(हिं० सर्व०) निकट की वस्तु का निर्देश करनेवाला एक सर्वनाम जो वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त जीवों या पदार्थों के लिये प्रयोग किया जाता है।
यहाँ–(हिं० क्रि० वि०) इस स्थान में।
यहि–(हिं० वि० सर्व०) "यह" का वह रूप जो प्राचीन हिन्दी में किसी विभक्ति लगाने के पूर्व प्रयुक्त होता था, 'ए' का विभक्तियुक्त रूप, इसको।
यही–(हिं०अव्य०) निश्चित रूप से यह, यह ही।
यहूदी–(हिं० पुं०) पश्चिम एशियावासी एक प्राचीन जाति।
याँ–(हिं० क्रि० वि०) यहाँ।
यांत्रिक–(हिं० वि०) यन्त्र संबंधी।
या–(सर्व०) व्रजभाषा में कारक का चिह्न लगाने के पहले का 'यह' का रूप।
याग–(सं० पुं०) यज्ञ। **यागकर्म**–(सं० पुं०) यज्ञ का कार्य। **यागकाल**–(सं०पुं०) यज्ञ करने का उपयुक्त समय।
याचक–(सं०वि०) माँगनवाला, भिक्षुक।
याचन–(सं० पुं०) याञ्चा, प्रार्थना।
याचना–(सं० स्त्री०) प्रार्थना; (हिं० क्रि०) माँगना। **याचनीय**–(सं० वि०) माँगने योग्य। **याचमान**–(सं० वि०) माँगनवाला। **याचित**–(सं० वि०) माँगी हुई वस्तु। **याचितक**–(सं० पुं०) माँगी हुई वस्तु। **याचितव्य**–(सं० वि०) माँगन योग्य।
याची–(सं० पुं०) भिक्षुक, भिखमंगा।
याचिष्णु–(सं० वि०) माँगनवाला।
याजन–(सं० पुं०) यज्ञ की क्रिया।
याजनीय–(सं०वि०) यज्ञ करने योग्य।
याज्ञ–(सं० वि०) यज्ञ संबंधी।
याज्य–(सं० वि०) यज्ञ करने योग्य।
याज्या–(सं० स्त्री०) गंगा।
यात–(सं० वि०) पाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ।

यातना–(सं० स्त्री०) बहुत अधिक कष्ट या वेदना।
यातायात–(सं० पुं०) आना जाना।
यातु–(सं० पुं०) मार्ग चलनेवाला; (पुं०) राक्षस।
यातुधान–(सं० पुं०) राक्षस।
यात्रा–(सं० स्त्री०) प्रस्थान, प्रयाण, पर्यटन। **यात्राकार**–(सं० पुं०) यात्रा करनेवाला। **यात्रावाल**–(हिं० पुं०) यात्रियों को दर्शन आदि करानेवाला पंडा।
यात्रिक–(सं० वि०) यात्री सम्बन्धी।
यात्री–(सं० वि०) यात्रा करनवाला।
याथातथ्य–(सं०पुं०) यथार्थता।
याथार्थ्य–(सं० पुं०) यथार्थता।
यादृश–(सं०वि०) जिस प्रकार का, जैसा।
यादृशी–(सं० वि० स्त्री०) जिस प्रकार की। **यान**–(सं० पुं०) घोड़ा, हाथी रथ आदि सवारी, विमान, वाहन। **यानपात्र**–(सं० पुं०) जहाज। **यानभंग**–(सं० पुं०) जहाज का नष्ट होना।
यापन–(सं० पुं०) चलाना, समय बिताना। **यापना**–(सं० स्त्री०) कालक्षेप, व्यवहार। **यापनीय**–(सं०वि०) प्राप्त करने योग्य।
याम–(सं० पुं०) तीन घंटे का समय, प्रहर; (हिं० स्त्री०) रात्रि, रात।
यामल–(सं० पुं०) यमज, जुड़वाँ लड़के।
यामिक–(सं० पुं०) पहरा देनेवाला, चौकीदार। **यामिका, यामिनी**–(सं० स्त्री०) रात। **यामिनीपति**–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
याम्योत्तरदिगंश–(सं० पुं०) भगोल में लम्बांश या दिगंश। **याम्योत्तर-रेखा**–(सं० स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और मेरु से होती हुई भूगोल के चारो ओर जाती है।
यायी–(सं०वि०) गमनशील, जानेवाला; (पुं०) अभियोग चलानेवाला।
यावज्जन्म–(सं० अव्य०) जन्म भर।
यावत्–(सं० अव्य०) जब तक, अवधि या मर्यादा तक।
यावन–(सं०वि०) यवन संबंधी।
यावनी–(सं० वि०) यवन संबंधी।
यावन्मात्र–(सं० अव्य०) थोड़ा थोड़ा।
यासु–(हिं० सर्व०) देखो जासु।
याहि–(हिं० सर्व०) इसको, इसे।
यियक्षु–(सं०वि०) यज्ञ करने का इच्छुक।
युक्त–(सं० वि०) न्याय्य, उचित, ठीक, मिला हुआ, जुटा हुआ।
युक्ति–(सं० स्त्री०) नीति, उपाय, ढंग, तर्क, अनुमान, रीति, कारण, हेतु। **युक्तियुक्त**–(सं० अव्य०) उपयुक्त, तर्क के अनुसार। **युक्तिशास्त्र**–(सं० पुं०) प्रमाण शास्त्र।
युग–(सं० पुं०) युग्म, जोड़ा, जुआ, समय, काल। **युगयुग**–(सं० अव्य०) अनन्त काल तक।
युगति–(हिं० पुं०) प्रलय।
युगपत्–(सं० अव्य०) एक ही समय में।
युगम–(हिं० पुं०) देखो युग्म।
युगल–(सं० पुं०) युग्म, जोड़ा।
युगाद्या–(सं० स्त्री०) वह तिथि जिसमें कोई युग आरंभ हुआ था, यथा–वैशाख शुक्ला तृतीया में सतयुग, कार्तिक शुक्ला नवमी को त्रेता, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को द्वापर तथा पौष मास की पूर्णिमा को कलियुग का आरंभ माना जाता है।
युगान्त–(सं० पुं०) युग का अन्तिम समय, प्रलय। **युगान्तर**–(सं०पुं०) दूसरा युग।
युग्म–(सं० पुं०) युगल, द्वन्द्व, जोड़ा। **युग्मज**–(सं० पुं०) जुड़वाँ लड़के।
युत–(सं० वि०) युक्त, सहित।

युद्ध–(सं० पुं०) रण, समर, संग्राम। युद्धस्थल–(सं० पुं०) रणभूमि। युद्धावसान–(सं० पुं०) युद्ध का शेष। युद्धोन्मत्त–(सं० वि०) युद्ध करने के लिये उतावला। युद्धोपकरण–(सं० पुं०) युद्ध की सामग्री।
युयुत्सा–(सं० स्त्री०) युद्ध करने की लालसा। युयुत्सु–(सं० वि०) लड़ने की इच्छा करनेवाला।
युयुधान–(सं० पुं०) क्षत्रिय, योद्धा।
युवक–(सं० पुं०) सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष के वय का मनुष्य।
युवति, युवती–(सं० स्त्री०) जवान स्त्री।
युवराई–(हि० स्त्री०) युवराज का पद।
युवराज–(स० पुं०) राजा का वह राजकुमार जो राज्य का उत्तराधिकारी होता है। युवराजी–(हि० स्त्री०) युवराज का पद।
युवा–(हि० वि०) युवक।
यूं–(हि० अव्य०) यों, इस प्रकार से।
यूक, यूका–(सं० पुं० स्त्री०) जुवाँ, ढील।
यूकाण्ड–(सं० पुं०) चीलर, लीख।
यूथ–(सं० पुं०) झुण्ड, दल, सेना। यूथपति–(सं० पुं०) सेनानायक।
यूप–(सं० पुं०) यज्ञ में वह खम्भा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।
यूह–(हि० पुं०) यूथ, झुण्ड, समूह।
ये–(हि० सर्व०) 'यह' के बहुवचन का रूप, यह सब।
येई–(हि० सर्व०) देखो यही। येऊ–(हि० सर्व०) यह भी। येती–(हि० वि०) देखो एतो। येह–(हि० अव्य०) यह भी।
यों–(हि० अव्य०) इस तरह, इस प्रकार से।
योंही–(हि० अव्य०) ऐसे ही, इसी प्रकार से, व्यर्थ ही।
योग–(सं० पुं०) संयोग, मेल, उपाय, युक्ति, संगति, ध्यान, गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़, युक्ति या मोक्ष का उपाय, चित्त की चंचलता को रोकना। योगपथ–(सं० पुं०) योगमार्ग।
योगफल–(सं० पुं०) दो या अधिक संख्याओं का जोड़। योगबल–(सं० पुं०) तपोबल। योगरूढ़ि (सं० स्त्री०) दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जिसका विशेष अर्थ होता है, यथा 'मण्डप' शब्द का अर्थ "माँड़ पीनेवाला" नहीं होता, परन्तु 'गृह' बोधक है। योगवह–(सं० वि०) मिलावट से तैयार किया हुआ।
योगाकर्षण–(सं० पुं०) वह आकर्षण-शक्ति जिसके कारण परमाणु आपस में मिले रहते हैं अलग नहीं होते।
योगान्तर–(सं० पुं०) भिन्न-भिन्न वस्तुओं का संयोग।
योगिनी–(सं० स्त्री०) योगाभ्यासिनी।
योगिराज–(सं० पुं०) बहुत बड़ा योगी।
योगी–(सं० पुं०) आत्मज्ञानी। योगीन्द्र–(सं० पुं०) योगीश्वर।
योग्य–(सं० वि०) प्रवीण, चतुर, श्रेष्ठ, उपयुक्त, आदरणीय, उचित, सुन्दर, उपाय लगानेवाला, ठीक। योग्यता–(सं० स्त्री०) सामर्थ्य, अनुकूलता।
योजक–(सं० वि०) संयोगकारक, मिलानेवाला; (पुं०) भूडमरूमध्य।
योजन–(सं० पुं०) एक में मिलाने की क्रिया या भाव, संयोग, मिलान, लीलावती के अनुसार बत्तीस हजार हाथ की दूरी।
योजना–(सं० स्त्री०) किसी काम में लगाने की क्रिया या भाव, जोड़, मिलान व्यवस्था, आयोजन, व्यवहार।

योजित–(सं०वि०) रचा हुआ,बनाया हुआ
योज्य–(सं०वि०) व्यवहार करने योग्य; (पुं०) जोड़ी जानेवाली संख्याएँ।
योद्धा–(हिं०पुं०) युद्ध करनेवाला सिपाही।
योधा–(हिं०पुं०) देखो योद्धा।
योध्य–(सं० वि०) युद्ध करन योग्य।
योनि–(सं०पुं०, स्त्री०) आकर, खान, प्राणियों का उत्पत्ति-स्थान। योनिज–(सं० पुं०) जरायुज।
योषिता–(सं० स्त्री०) नारी, स्त्री।
यौ–(हिं० अव्य०) देखो यों।
यौ–(हिं० सर्व०) यह।
यौक्तिक–(सं० वि०) जो युक्ति के अनुसार ठीक हो।
यौगपद, यौगपद्य–(सं० पुं०) समकालीन।
यौगिक–(सं० वि०) मिश्रित, मिला हुआ, प्रकृति, प्रत्ययादि से बना हुआ शब्द, वह शब्द जो शब्दों से मिलकर बना हो।

र

र–हिन्दी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यंजनवर्ण इसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्धा के साथ कुछ स्पर्श करने से होता है यह स्पर्श वर्ण और ऊष्म वर्ण के मध्य का वर्ण है।
र–(सं० पुं०) अग्नि; (वि०) तीक्ष्ण, तीखा।
रंक–(हिं० वि०) धनहीन।
रंग–(हिं० पुं०) देखो रङ्ग, राँगा, नृत्य, दृश्य पदार्थ का वह गुण जो केवल आँखों से जाना जाता है यथा–लाल, काला, पीला, रँगने के लिये व्यवहार में आनेवाला पदार्थ, वर्ण, मुख की आकृति, आनन्द, चाल-ढाल, प्रेम, प्रभाव, शोभा, महत्व का प्रभाव, आनन्द का उत्सव।
रंगत–(हिं० स्त्री०) आनन्द, दशा।
रँगना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना, किसी को अपने अनुकूल करना, किसी पर अपना प्रभाव डालना।
रंगबिरंग, रंगबिरंगा–(हिं० वि०) कई रंगों का, तरह तरह का।
रंगभरिया–(हिं० वि०) रंगसाज, चित्रकार।
रंगभवन, रंगमहल–(हिं० पुं०) भोगविलास का स्थान।
रंगमार–(हिं० पुं०) ताश का एक खेल।
रंगरली–(हिं० स्त्री०) आमोद-प्रमोद।
रंगरस–(हिं० पुं०) आनन्द मंगल।
रंगरूट–(हिं० पुं०) वह सिपाही जो पुलिस या सेना में नया भरती हुआ हो, वह मनुष्य जो किसी काम के सीखने में लगा हो।
रंगरेज–(हिं० पुं०) कपड़ा रँगने का काम करनेवाला।
रँगवाई–(हिं० स्त्री०) रँगने का काम।
रँगवाना–(हिं० क्रि०) दूसरे से रँगने का काम कराना।
रंगशाला–(हिं० स्त्री०) नाटक घर।
रँगाई–(हिं० स्त्री०) रँगने का काम, रँगने की क्रिया या वेतन।
रँगाना–(हिं० क्रि०) रँगने का काम दूसरे से कराना। रँगावट–(हिं० स्त्री०) रँगाई।
रंगिया–(हिं० पुं०) रंगरेज, रंगसाज।
रंगी–(हिं० वि०) आनन्दी।
रँगीला–(हिं० वि०) आनन्दी, प्रेमी।
रँगया–(हिं० पुं०) रँगनेवाला।
रंच–(हिं० वि०) अल्प, थोड़ा।
रंजक–(हिं० वि०) प्रसन्न करनेवाला;

(हिं० स्त्री०) बत्ती लगाने के लिये बन्दूक की प्याली में रखी जानेवाली थोड़ी-सी बारूद।
रंजना–(हिं०क्रि०) प्रसन्न करना, रँगना।
रँडापा–(हिं० पुं०) वैधव्य, विधवा होने की दशा।
रँडुआ, रडुवा–(हिं० पुं०) वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो।
रंत–(हिं० वि०) रत, अनुरक्त।
रंदना–(हिं० क्रि०) लकड़ी की सतह को रंदे से छीलकर चिकना करना। **रंदा**–(हिं०पुं०) बढ़ई का वह औजार जिससे वह लकड़ी के तल को छीलकर चिकनी करता है।
रंधन–(हिं० पुं०) रसोई बनाना।
रंध्र–(हिं० पुं०) छिद्र।
रंभा–(हिं० पुं०) देखो रम्भा, केला।
रँभाना–(हिं०पुं०) गाय का शब्द करना।
रँहचटा–(हिं० पुं०) लालसा, लालच।
रइअत–(हिं० स्त्री०) देखो रयत।
रइकौ–(हिं०क्रि०वि०) कुछ भी, थोड़ा भी।
रइनि–(हिं०स्त्री०) रजनी, रात्रि, रात।
रई–(हिं०स्त्री०) गेहूँ का मोटा दरदरा आटा, सूजी।
रउताई–(हिं०स्त्री०) स्वामित्व।
रउरे–(हिं०सर्व०) मध्यम पुरुष का आदरसूचक शब्द, आप।
रकछ–(हिं०पुं०) पत्तों की बनी हुई पकौड़ी।
रकत–(हिं०पुं०) देखो रक्त, रुधिर; (वि०) लाल रंग का।
रकार–(सं०पुं०) "र" वर्णका बोधक वर्ण।
रक्त–(सं० पुं०) लाल कमल, रुधिर; (वि०) लाल रंग का, अनुरक्त, रँगा हुआ
रक्तगर्भा–(सं०स्त्री०) मेंहदी का पेड़।
रक्तचञ्चु–(सं०पुं०) शुक, तोता।
रक्तचन्दन–(सं० पुं०) लाल चन्दन।
रक्तता–(सं०स्त्री०) लालिमा, ललाई।
रक्तधातु–(सं०पुं०) गैरिक, गेरू।
रक्तनयन–(सं०पुं०) कबूतर, चकोर।
रक्तपद्म–(सं०पुं०) लाल कमल।
रक्तपर्ण, रक्तपल्लव–(सं०पुं०) लाल पत्ता
रक्तपा–(सं०स्त्री०) जोंक। **रक्तपात**–(सं०पुं०) रक्तस्राव, रुधिर का बहना। **रक्तपायी**–(सं०पुं०) मत्कुण, खटमल; (वि०) रुधिर पीनेवाला। **रक्तबीज**–(सं०पुं०) दाड़िम, अनार। **रक्तवर्ण**–(सं०पुं०) प्रवाल, मूँगा; (वि०) लाल रंग का। **रक्तवासस**–(सं०स्त्री०) लाल कपड़ा पहननेवाला। **रक्तस्राव**–(सं० पुं०) शरीर के किसी अंग से रुधिर का बहना। **रक्ताब्ज**–(सं०पुं०) लाल कमल।
रक्तिका–(सं०स्त्री०) गुंजा, घुँमची, रत्ती।
रक्तिमा–(सं०स्त्री०) ललाई।
रक्तोत्पल–(सं० पुं०) लाल कमल।
रक्ष–(सं०वि०) रक्षा, राक्षस।
रक्षक–(सं० पुं०) रक्षा करनेवाला, पहरेदार। **रक्षण**–(सं० पुं०) रक्षा, पालन-पोषण। **रक्षणीय**–(सं० वि०) रक्षा करने योग्य।
रक्षपाल–(सं० पुं०) रक्षा करनेवाला।
रक्षस–(हिं० पुं०) राक्षस, दानव।
रक्षा–(सं०स्त्री०) कष्ट-नाश या आपत्ति से बचाना, अनिष्ट-निवारण के लिये हाथ में बाँधा हुआ सूत्र।
रक्षागृह–(सं० पुं०) सूतिकागृह। **रजापति**-नगरवासियों की रक्षा करनेवाला। **रक्षापुरुव**–(सं०पुं०) पहरेदार। **रक्षाबन्धन**–(सं०पुं०) श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होनेवाला हिन्दुओं का एक त्योहार। **रक्षामणि**–(सं०पुं०) वह रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से बचन के लिये पहना जाय।

रक्षित–(सं०वि०) रक्षा किया हुआ, पाला-पोसा हुआ। रक्षितव्य–(सं०वि०) रक्षा करने योग्य।
रक्ष्य–(सं०वि०) रक्षणीय, रक्षा करने योग्य
रखना–(हिं०क्रि०) ठहराना, निर्वाह करना, सौंपना, नियुक्त करना।
रखनी–(हिं०स्त्री०) रखेली, सुरैतिन।
रखया–(हिं० वि०) रक्षा करनेवाली।
रखवाई–(हिं०स्त्री०) खेतों की रखवाली, चौकीदारी। रखवाना–(हिं० क्रि०) रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखवार–(हिं०पुं०) रखवाला, चौकीदार। रखवारी–(हिं०स्त्री०) रखवाली। रखवाला–(हिं०पुं०) चौकीदार। रखवाली–(हिं०स्त्री०) रक्षा करने की क्रिया या भाव।
र ान–(हिं०स्त्री०) चराई की भूमि। रखाना–(हिं०क्रि०) रखवाली करना। रखिया–(हिं०पुं०) रखनेवाला। रखियाना–(हिं०क्रि०) पात्रों को राख से माँजना।
रखी–(हिं०पुं०) देखो ऋषि, मुनि।
रखीसर–(हिं०पुं०) ऋषीश्वर।
रखेली–(हिं०स्त्री०) रखनी, सुरैतिन।
रखैया–(हिं०पुं०) देखो रक्षक।
रगंड–(हिं०पुं०) हाथी का कपोल।
रगड़–(हिं०स्त्री०) घर्षण, रगड़ने से उत्पन्न चिह्न, बड़ा परिश्रम, झगड़ा। रगड़ना–(हिं०क्रि०) घसना, पीसना, अभ्यास करने के लिय कोई काम बारम्बार करना। रगड़वाना–(हिं०क्रि०) दूसरे को रगड़ने में प्रवृत्त करना। रगड़ा–(हिं०पुं०) रगड़, अत्यन्त परिश्रम, वह झगड़ा जो शीघ्र समाप्त न हो। रगड़ान–(हिं०स्त्री०) रगड़ने की क्रिया या भाव।

रगत–(हिं०पुं०) देखो रक्त, रुधिर।
रगर–(हिं०पुं०) देखो रगड़। रगरा–देखो रगड़ा।
रगवाना–(हिं०क्रि०) शान्त कराना।
रगाना–(हिं०क्रि०) शांत होना या करना।
रगीला–(हिं०पुं०) हठी, दुष्ट।
रगेद–(हिं०स्त्री०) दौड़ने या भागने की क्रिया। रगदना–(हिं०क्रि०) भगा देना।
रग्गी–(हिं०स्त्री०) अधिक वर्षा के बाद होनेंवाली धूप।
रघु–(सं०पुं०) सूर्यवंशीय राजा दिलीप के पुत्र जो श्रीरामचन्द्र के प्रपितामह थे। रघुराई–(हिं०पुं०) श्रीरामचन्द्र। रघुवंशतिलक–(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र। रघुवर–(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र। रघुवीर–(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र।
रङ्क–(सं०पुं०) कृपण, कंजूस, मन्द, धनहीन, गरीब।
रङ्ग–(सं०पुं०) राँगा, नृत्य, नाच, रँगने की वस्तु, नाटकघर, मन की तरंग, प्रभाव, शोभा, सौन्दर्य, दशा, स्थिति। रङ्गकार–(सं०पुं०) चित्रकार। रङ्गक्षेत्र–(सं०पुं०) नाटकघर। रङ्गभवन–(सं० पुं०) रंगमहल। रङ्गभूमि–(सं०स्त्री०) अखाड़ा। रङ्गशाला–(सं०स्त्री०) नाटयगृह। रङ्गी–(सं०स्त्री०) रँगा हुआ।
रचक–(सं०पुं०) रचयिता। रचन–(सं० पुं०) निर्माण। रचना–(सं० स्त्री०) यथाक्रम रखना, स्थापित करना, वाक्य-विन्यास, चमत्कारयुक्त गद्य या पद्य।
रचना–(हिं०क्रि०) हाथों से बनाकर प्रस्तुत करना, ग्रन्थ आदि लिखना, सजाना, अनुरक्त होना, उत्पन्न करना, क्रम में रखना।
रचनीय–(सं०वि०) रचना करने योग्य।

रचयिता–(सं०वि०) निर्माता, रचनेवाला। रचवाना–(हिं० क्रि०) रचने का काम दूसरे से कराना। रचाना–(हिं०क्रि०) बनाना, रचवाना। रचित–(सं०वि०) रचा हुआ, गूँथा हुआ।
रचिपचि–(हिं०क्रि०वि०) परिश्रम से।
रच्छस–(हिं०पु०) देखो राक्षस।
रच्छा–(हिं०स्त्री०) देखो रक्षा।
रज–(सं०पुं०) पराग, धूल; (हिं०पुं०) ज्योति, प्रकाश।
रजक–(सं०पुं०) धावक, धोबी।
रजतंत–(हिं०स्त्री०) शूरता, वीरता।
रजत–(सं०पुं०) चाँदी; (वि०) सफेद रंग का। रजतमय–(सं०वि०) चाँदी का बना हुआ। रजताई–(हिं०स्त्री०) सफेदी।
रजधानी–(हिं०स्त्री०) देखो राजधानी।
रजना–(हिं०क्रि०) रँगना, रँगा जाना।
रजनि–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
रजनी–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात। रजनीकर–(सं०पुं०) चन्द्रमा। रजनीचर–(सं०पुं०) चन्द्रमा, राक्षस; (वि०) रात में चलनवाला। रजनीपति–(सं०पुं०) चन्द्रमा। रजनीमुख–सन्ध्या।
रजबलाह–(हिं०पुं०) मेघ, बादल।
रजबली–(हिं०पुं०) भूपति, राजा।
रजवाड़ा–(हिं०पुं०) देशी राज्य।
रजवार–(हिं०पुं०) राजा की सभा।
रजाई–(हिं०स्त्री०) जाड़े में ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसमें रुई भरी होती है।
रजाना–(हिं०क्रि०) राज्य-सुख भोगना।
रजायस–(हिं०स्त्री०) आज्ञा, इच्छा।
रजोकुल–(हिं०पुं०) देखो राजकुल।
रजोगुण–(सं० पुं०) जीवधारियों की प्रकृति का वह स्वभाव जिससे उनमें भोग विलास तथा दिखावटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है।
रजोरस–(सं० पुं०) अन्धकार, अँधेरा।
रज्ज–(सं०स्त्री०) रस्सी, बागडोर।
रञ्जित–(सं० वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
रट–(हिं०स्त्री०) बारंबार किसी शब्द को उच्चारण करने की क्रिया। रटन–(सं०पुं०) कथन, कहना; (हिं०स्त्री०) रटने की क्रिया या भाव।
रटना–(हिं०क्रि०) किसी शब्द को बारंबार कहना, कण्ठ करने के लिये बारंबार दोहराना। रटन्त–(हिं०स्त्री०) रटने की क्रिया या भाव। रटित–(सं० वि०) कथित, कहा हुआ।
रठ–(हिं०वि०) शुष्क, सूखा।
रढ़ना–(हिं०क्रि०) देखो रटाना।
रण–(सं०पुं०) युद्ध, लड़ाई। रणदुन्दुभि–(सं०पुं०) युद्ध का नगाड़ा। रणन–(सं० पुं०) कोलाहल, शब्द। रणमुख–(सं० पुं०) सेना का अग्रभाग। रणशिक्षा–(सं०स्त्री०) युद्धाभ्यास। रण॰शूर–(सं० पुं०) वह जो युद्ध में वीरता दिखलाता हो। रणसिंघा, रणसिंहा–(हिं० पुं०) नरसिंघा, तुरही। रणाजिर–(सं०पुं०) युद्धक्षेत्र। रणातोद्य–(सं०पुं०) लड़ाई का डंका।
रण्डा–(सं०स्त्री०) विधवा, राँड़।
रत–(सं०वि०) अनुरक्त, कार्य में लगा हुआ, लिप्त।
रतजगा–(हिं० पुं०) रात भर होनेवाला आनन्दोत्सव।
रतन–(सं०पुं०) देखो रत्न।
रतनाकर–(हिं०पुं०) देखो रत्नाकर।
रतनागर–(हिं०पुं०) समुद्र।
रतनागरभ–(हिं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
रतनार, रतनारा–(हिं०वि०) कुछ लाल।
रतनारी–(हिं०स्त्री०) लाली, लालिमा।
रताना–(हिं०क्रि०) लीला करना।

रतालू–(हि॰पुं॰) पिण्डालू, बाराहीकन्द।
रति–(सं॰स्त्री॰) प्रेम, संभोग, सौभाग्य, छवि, शोभा।
रती–(हि॰स्त्री॰) आठ चावल का मान। **रत्ती**–देखो रती; (वि॰) थोड़ा, कम; (क्रि॰वि॰) जरा सा, रत्तीभर।
रतोपल–(हि॰पुं॰) लाल सुरमा, लाल खड़िया, गेरू।
रतौंधी–(हि॰स्त्री॰) आँख का वह रोग जिसमें रोगी को रात के समय कुछ देख नहीं पड़ता।
रत्त–(हि॰वि॰) देखो रक्त।
रत्ती–(हि॰स्त्री॰) आठ चावल का मान या बाँट, गुंजा; (वि॰) बहुत थोड़ा।
रत्थी–(हि॰स्त्री॰) लकड़ी या बाँस का ढाँचा अथवा संदूक जिसमें शव को रखकर अन्तिम संस्कार के लिये ले जाते हैं, टिकठी।
रत्न–(सं॰पुं॰) खनिज पदार्थ या पत्थर, मणि, नगीना, वह जो अपन वर्ग या जाति में श्रेष्ठ हो। **रत्नगर्भ**–(सं॰पुं॰) समुद्र। **रत्नगर्भा**–(सं॰स्त्री॰) पृथ्वी, भूमि। **रत्नद्रुम**–(सं॰पुं॰) प्रवाल, मूँगा। **रत्नपरीक्षक**–(सं॰पुं॰) जौहरी। **रत्नपारखी**–(सं॰पु॰) जौहरी। **रत्नप्रभा**–(सं॰स्त्री॰) पृथ्वी। **रत्नमुख्य**–(सं॰ पुं॰) हीरा। **रत्नाकर**–(सं॰पुं॰) रत्नों का समूह, समुद्र। **रत्नालंकार**–(सं॰ पुं॰) रत्न का गहना। **रत्नावली**–(सं॰ स्त्री॰) मोती की माला, मणियों की माला।
रथ–(सं॰पुं॰) प्राचीन काल का एक प्रकार का यान जिसमें दो या अधिक पहिये होते थे, गाड़ी। **रथकार**–(सं॰पुं॰) रथ बनानेवाला बढ़ई।
रथघोष–(सं॰ पुं॰) रथ का शब्द।
रथचक्र–(सं॰पुं॰) रथ का पहिया। **रथपथ**–(सं॰पुं॰) जिस मार्ग पर रथ चल सके। **रथयात्रा**–(सं॰स्त्री॰) एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है। **रथयुद्ध**–(सं॰ पुं॰) रथ पर चढ़कर युद्ध करना। **रथवाहक**–(सं॰पुं॰) रथ हाँकनेवाला। **रथस्वन**–(सं॰पुं॰) रथ का शब्द।
रथारथि–(सं॰अव्य॰) परस्पर रथ द्वारा युद्ध करना।
रथारोह–(सं॰ वि॰) रथ पर बैठकर युद्ध करनेवाला।
रथाश्व–(सं॰पुं॰) रथ में जोतने का घोड़ा।
रथिक–(सं॰पुं॰) रथ पर सवार होनेवाली।
रथी–(सं॰वि॰) रथ पर चढ़कर लड़नेवाला योद्धा; (हि॰स्त्री॰) अरथी, शव को ले जाने का ढाँचा।
रथोत्सव–(सं॰पुं॰) रथयात्रा नामक उत्सव।
रथ्या–(सं॰स्त्री॰) रथ का मार्ग।
रद–(सं॰पुं॰) दन्त, दाँत।
रदन–(सं॰पुं॰) दन्त, दाँत। **रदनच्छद**–(सं॰ पुं॰) ओंठ।
रदपट–(सं॰पुं॰) ओष्ठ, ओंठ।
रद्दा–(हि॰पुं॰) भीत की पूरी लंबाई में एक बार रक्खी हुई ईंटों की जोड़ाई, मिट्टी की भीत उठाने में उतना अंश जितना एक बार में उठाया जाता है, वस्तुओं की एक के ऊपर एक रक्खी हुई तह।
रद्दी–(हि॰वि॰) वह पदार्थ जो काम में न आवे।
रन–(हि॰पुं॰) रण, युद्ध, लड़ाई, वन।
रनकना–(हि॰क्रि॰) घुंघरू आदि का धीमा शब्द होना।

रनछोर–(हिं०पुं०) देखो रणछोर।
रनना–(हिं०क्रि०) बजना, झनकार होना।
रनबंका, रनबांकुरा–(हिं० पुं०) योद्धा, शूरवीर।
रनवादी–(हिं०वि०) शूर, योद्धा।
रनवास–(हिं०पुं०) महल में रानियों के रहने का स्थान, अन्तःपुर। **रनित**–(हिं०वि०) झन्-झन् शब्द करता हुआ।
रनी–(हिं०पुं०) योद्धा, लड़नेवाला।
रन्धन–(सं०पुं०) रसोई बनाने की क्रिया।
रन्ध्र–(सं०पुं०) छिद्र।
रपट–(हिं०स्त्री०) अभ्यास, रपटने की क्रिया या भाव, दौड़, सूचना। **रपटना**–(हिं०क्रि०) वेग से चलना, झपटना, किसी काम को झटपट पूरा करना। **रपटाना**–(हिं० क्रि०) सरकाना, फिसलाना। **रपट्टा**–(हिं० पुं०) फिसलाव, झपट्टा, दौड़-धूप।
रपुर–(हिं०स्त्री०) स्वर्ग।
रफल–(हिं०पुं०) ऊनी चादर।
रफूचक्कर–(हिं०वि०) चम्पत।
रबड़ना–(हिं०क्रि०) घुमाना, चलाना।
रबड़ी–(हिं०स्त्री०) औंटाकर गाढ़ा और लच्छदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिलाई रहती है, बसौंधी।
रबदा–(हिं०पुं०) थकावट, कीचड़।
रबरी–(हिं०स्त्री०) देखो रबड़ी।
रबी–(हिं०स्त्री०) वसन्त ऋतु, वसन्त ऋतु में काटी जानेवाली फसल।
रभस–(सं०पुं०) वेग, हर्ष, उत्सुकता।
रमक–(हिं०स्त्री०) झूले की पेंग, झकोरा।
रमकना–(हिं०क्रि०) इतराते हुए चलना।
रमचकरा–(हिं०पुं०) बसन की मोटी रोटी
रमण–(सं० पुं०) क्रीड़ा, विलास, घूमना-फिरना; (वि०) सुन्दर, मनोहर, आनन्द देनेवाला।
रमणा, रमणी–(सं०स्त्री०) नारी, सुन्दर स्त्री।
रमणीक, रमणीय–(सं०वि०) रमणीक, सुन्दर।
रमणीयता–(सं०स्त्री०) सुन्दरता।
रमता–(हिं०वि०) घूमता-फिरता।
रमन–(हिं०पुं०) देखो रमण। **रमनक**–(हिं० पुं०) देखो रमणक।
रमना–(हिं०क्रि०) व्याप्त होना, इधर-उधर घूमना, अनुरक्त होना, आनन्द करना; (पुं०) वह सुरक्षित स्थान जहाँ पशु मृगया के लिये छोड़े जाते हैं।
रमनी–(हिं०स्त्री०) देखो रमणी।
रमनीक–(हिं०वि०) देखो रमणीक।
रमा–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी। **रमाकान्त**–(सं०पुं०) विष्णु।
रमाना–(हिं०क्रि०) मोहित करना, संयुक्त करना।
रमानाथ, रमापति–(सं० पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण।
रमाप्रिय–(सं०पुं०) पद्म, कमल, विष्णु।
रमित–(हिं०वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ।
रम्भा–(सं०स्त्री०) कदली, केला; (हिं० पुं०) पेशराज का लोहे का छोटा डंडा।
रम्भाना–(हिं०क्रि०) गाय का शब्द करना।
रम्भाफल–(सं०पुं०) कदलीफल, केला।
रम्भित–(सं०वि०) शब्द किया हुआ।
रम्भोरू–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जाँघ केले के खंभे के समान हो।
रम्य–(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर, रमणीय
रम्यता–(सं०स्त्री०) सौन्दर्य।
रम्हाना–(हिं०क्रि०) गाय का बोलना।
रयन–(हिं०स्त्री०) रात्रि, रात।
रयना–(हिं०क्रि०) बोलना, मिलाना, रँगना।
रयि–(सं०पुं०) धन, ऐश्वर्य।

ररंकार–(हिं०पुं०) रकार की ध्वनि।
रर–(हिं०स्त्री०) रट, रटन।
ररकना–(हिं०क्रि०) कष्ट देना।
ररना–(हिं०वि०) रटना।
ररिहा–(हिं०पुं०) रटनेवाला, भिखमंगा।
ररीं–(हिं०वि०) झगड़ालू।
रलना–(हिं०क्रि०) एक में एक मिल जाना
रलाना–(हिं०क्रि०) एक में एक मिलाना।
रली–(हिं०स्त्री०) आनन्द, प्रसन्नता।
रल्ल–(हिं०पुं०) कोलाहल, हल्ला।
रव–(सं०पुं०) शब्द, ध्वनि, गुंजार।
रवकना–(हिं०क्रि०) लपकना, उछलना।
रवताई–(हिं०स्त्री०) राजा होने का भाव।
रवना–(हिं०क्रि०) क्रीड़ा करना, शब्द करना; (हिं०पुं०) देखो रावण।
रवनि, रवनी–(हिं०स्त्री०) रमणी, सुन्दरी
रवन्ना–(हिं०पुं०) चुङ्गी आदि की वह रसीद जो किसी भेजी जानेवाली वस्तु के साथ रहती है।
रवा–(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का बहुत छोटा टुकड़ा, कण, सूजी।
रवि–(सं०पुं०) सूर्य, नायक, सरदार।
रविकर–(सं०पुं०) सूर्य की किरण।
रविदिन–(सं०पुं०) इतवार। रविन्द–(सं०पुं०) पद्म, कमल। रविबिम्ब–(सं०पुं०) सूर्य का मण्डल। रविमण्डल–(सं० पुं०) वह लाल मण्डल जो सूर्य के चारों ओर देख पड़ता है।
रविरत्न–(सं० पुं०) सूर्यकान्त मणि।
रवैया–(हिं०पुं०) चाल-चलन, ढंग।
रशना–(सं०स्त्री०) करधनी, जीभ।
रश्मि–(सं०पुं०) किरण, घोड़े की लगाम। रश्मिकेतु–(सं०पुं०) एक प्रकार का पुच्छल तारा।
रस–(सं०पुं०) किसी वस्तु के खाने का स्वाद, शरीरस्थ धातु-विशेष, कोई तरल पदार्थ, गुण, किसी पदार्थ का सार, आनन्द, प्रेम, जलीय अंश, धातुओं को फूंककर बनाया हुआ भस्म।
रसकपूर–(सं०पुं०) एक सफेद उपधातु।
रसकोरा–(हिं०पुं०) रसगुल्ला नाम की मिठाई। रसखीर–(हिं०स्त्री०) मीठा भात। रसगुल्ला–(हिं०पुं०) एक प्रकार की छेने की मिठाई।
रसज्ञ–(सं०वि०) काव्य के रस को जाननेवाला, निपुण, कुशल।
रसता–(सं०स्त्री०) रस का भाव या धर्म।
रसद–(सं०वि०) स्वादिष्ठ, सुखद।
रसदार–(हिं०वि०) जिसमें किसी प्रकार का रस हो, स्वादिष्ठ।
रसना–(सं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ, करधनी, लगाम, रस्सी।
रसना–(हिं०क्रि०) धीरे-धीरे बहना, टपलना, स्वाद लेना, प्रेम में अनुरक्त होना, तन्मय होना।
रसनाथ–(सं०पुं०) पारद, पारा।
रसनीय–(सं०वि०) स्वादिष्ठ।
रसनेन्द्रिय–(सं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ।
रसभरी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का वसंत ऋतु में होनेवाला मीठा फल।
रसभस्म–(सं०पुं०) पारे का भस्म।
रसभीना–(हिं०वि०) आनंद में मग्न।
रसमसा–(हिं०वि०) आनन्द में मग्न, गीला, श्रान्त।
रसमि–(हिं०स्त्री०) रश्मि, किरण।
रसमुंडी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बँगला मिठाई।
रसराज–(सं०पुं०) पारद, पारा, रसौत।
रसराय–(हिं०पुं०) देखो रसराज।
रसरी–(हिं०स्त्री०) देखो रस्सी।
रसल–(हिं०वि०) रसयुक्त, रसीला।
रसवंत–(हिं०वि०) रसीला; (पुं०)

रसिक, प्रेमी।
रसशास्त्र–(सं०पुं०) रसायन शास्त्र।
रससम्भव–(सं०पुं०) रुधिर। **रससार**–(सं०पुं०) मधु, विष।
रसा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, रसना, जीभ।
रसाइन–(हिं०पुं०) देखो रसायन।
रसाइनी–(हिं०पुं०) रसायन विद्या जाननेवाला।
रसातल–(सं० पुं०) पुराण के अनुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में छठा लोक।
रसाधिक्‍–(सं०पुं०) अधिक रस।
रसान्तर–(सं०पुं०) भिन्न रस।
रसापायी–(हिं०पुं०) वह जन्तु जो जीभ से पानी पीता है, कुत्ता।
रसायन–(सं०पुं०) वह औषध जिसके सेवन से सब रोग हट जाते हैं और बुढ़ापा दूर होता है तथा शरीर पुष्ट होता है, पदार्थों के तत्वों का ज्ञान, धातु विद्या। **रसायनविज्ञान**–(सं०पुं०) वैज्ञानिक उपाय से तत्त्वों का ज्ञान।
रसाल–(सं०वि०) रसीला, मीठा, स्वादिष्ठ, शुद्ध; (पुं०)आम।
रसालय–(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के रस बनाये जाते हों।
रसाव–(हिं०पुं०) रसने की क्रिया या भाव।
रसिआउर–(हिं० पुं०) ऊख का रस।
रसिक–(सं०वि०) जो रस का स्वाद लेता हो, काव्यमर्मज्ञ, आनन्दी, प्रेमी, रसिया। **रसिकता**–(सं०स्त्री०) रसिक होने का भाव या धर्म।
रसिया–(हिं०पुं०) रस लेनेवाला, रसिक
रसियाव–(हिं० पुं०) ऊख के रस में पका हुआ चावल।
रसी–(हिं०पुं०) देखो रसिक।
रसील, रसीला–(हिं० वि०) रस भरा हुआ, स्वादिष्ठ, आनन्द लेनेवाला।
रसेन्द्र–(सं०पुं०) पारद, पारा।
रसेस–(हिं०पुं०) पारद, पारा।
रसोइया–(हिं०पुं०) रसोई बनानेवाला।
रसोइ, रसोई–(हिं०पुं०) पकाया हुआ खाद्य पदार्थ, पाकशाला। **रसोईघर**–(हिं० पुं०) पाकशाला। **रसोईदार**–(हिं० पुं०) रसोई बनानेवाला; **रसोईदारी**–(हिं०स्त्री०) भोजन बनाने का काम।
रसौर–(हिं०पुं०) ऊख के रस में पकाया हुआ चावल।
रस्ता–(हिं०पुं०) मार्ग।
रस्मि–(हिं०स्त्री०) देखो रश्मि, किरण।
रस्सा–(हिं०पुं०) मोटी रस्सी।
रस्सी–(हिं०स्त्री०) रज्जु, डोरी।
रस्सीवाट–(हिं०पुं०)रस्सी बनानेवाला।
रहँकला–(हिं०पुं०)तोप लादने की गाड़ी।
रहँचटा–(हिं०पुं०) अभिलाषा, चसका।
रहँट–(हिं०पुं०) कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र।
रहँटी–(हिं०स्त्री०) कपास ओटने की चरखी।
रहठा–(हिं०पुं०)अरहर के पौधे का सूखा डंठल।
रहन–(हिं०स्त्री०) रहने की क्रिया या भाव, रहने का ढंग, व्यवहार। **रहना**–(हिं०क्रि०) ठहरना, रुकना, बचना, बसना, टिकना, उपस्थित होना, थमना। **रहा-सहा**-बचा हुआ।
रहनि–(हिं०स्त्री०) चाल-ढाल।
रहर–(हिं०स्त्री०) देखो अरहर।
रहस–(हिं०पुं०) निर्जन स्थान, गुप्त भेद, छिपी बात। **रहसना**–(हिं० क्रि०) आनन्दित होना, प्रसन्न होना।
रहसि–(हिं०स्त्री०) एकान्त स्थान।
रहाई–(हिं०स्त्री०)रहने की क्रिया या भाव

रहावन–(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर गाँव भर के पशु इकट्ठा खड़े हों।
रहा-सहा–(हिं०वि०)बचा हुआ।
रहित–(सं०वि०) वर्जित, बिना।
रहिला–(हिं०पुं०) चना।
राँकड़–(हिं०स्त्री०) कंकरीली भूमि जिसमें बहुत कम अन्न उत्पन्न होता है।
राँगा–(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम होता है, इसका रंग सफेद होता है।
राँचना–(हिं०स्त्री०) चाहना, प्रेम करना, रंग चढ़ाना।
राँड़–(हिं०वि०स्त्री०) विधवा स्त्री।
राँढना–(हिं०क्रि०) रोना।
राआ–(हिं०पुं०) राजा।
राइ–(हिं०पुं०) छोटा राजा, राय।
राइता–(हिं०पुं०) देखो रायता।
राई–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों, बहुत थोड़ी मात्रा।
राउ–(हिं०पुं०) राजा, नृप। **राउत**–(हिं०पुं०) राजवंश का कोई पुरुष।
राउर–(हिं०पुं०) अन्तःपुर; (वि०) आपका, श्रीमान् का।
राकस–(हिं०पुं०) राक्षस; (हिं०स्त्री०) राक्षसी, निशाचरी।
राका–(सं०स्त्री०) पूर्णिमा की रात।
राकेश–(सं०पुं०) पूर्ण चन्द्रमा।
राक्षस–(सं०पुं०)दैत्य, असुर, निशाचर।
राक्षसता–(सं०स्त्री०) राक्षस का भाव या धर्म। **राक्षसी**–(सं०स्त्री०) असुर की स्त्री। **राक्षसेन्द्र**–(सं० पुं०) रावण।
राक्षा–(हिं०स्त्री०) लाक्षा, लाह।
राख–(हिं०स्त्री०) भस्म।
राखना–(हिं०क्रि०) रक्षा करना, बचाना, छिपाना, देखो रखना।
राखी–(हिं०स्त्री०) हाथ की कलाई पर बाँधने का मंगल-सूत्र, देखो राख।
राग–(सं०पुं०) अनुराग, मोह, प्रीति, प्रेम, ईर्ष्या, द्वेष, सुगन्धित लेप जो शरीर में लगाया जाता है।
रागना–(हिं०क्रि०) अलापना, गाना, प्रेम करना।
रागान्ध–(सं०वि०) अति क्रोधी।
रागी–(हिं०स्त्री०)अनुरक्त,अनुरागी,प्रेमी।
राघव–(सं०पुं०) रघु के वंश में उत्पन्न।
राचना–(हिं० क्रि०) रचना, बनाना, रचा जाना, बनना, रँगा जाना।
राछस–(हिं०पुं०) देखो राक्षस।
राज–(हिं०वि०)प्रजापालन की व्यवस्था, शासन, पूर्ण अधिकार, देश, जनपद, राजा, घर आदि बनानेवाला राज-गीर, थवई। **राजकाज**–राज्य-प्रबन्ध **राजपाट**–शासन-व्यवस्था।
राजक–(सं०पुं०) राजा; (वि०) चम-कानेवाला।
राजकथा–(सं० स्त्री०) राजाओं का इतिहास। **राजकन्या**–(सं०स्त्री०) राजा की पुत्री। **राजकर**–(सं०पुं०) वह कर जो प्रजा से राजा को मिलता है।
राजकर्ता–(सं० पुं०) वह पुरुष जो दूसरे को राजसिंहासन पर बैठाता है।
राजकीय–राजा संबंधी, राज्य संबंधी।
राजकुँअर–(हिं०पुं०) राजकुमार, राजा का पुत्र।
राजकुमारिका–(सं०स्त्री०) राजाकी पुत्री।
राजकुल–(सं०स्त्री०) राजवंश।
राजगद्दी–(हिं० स्त्री०) राजसिंहासन, राज्याभिषेक।
राजगीर–(हिं० पुं०) घर बनानेवाला, राज, थवई।
राजगुरु–(सं०पुं०) राजा का गुरु या उपदेशक।

राजगृह–(सं०पुं०) राजभवन।
राजगेह–(सं०पुं०) राजभवन।
राजतनय–(सं०पुं०) राजपुत्र।
राजतिलक–(हिं० पुं०) किसी नये राजा के राजसिंहासन पर बैठने का संस्कार। **राजत्व**–(सं०पुं०) राजा का पद। **राजदण्ड**–(सं०पुं०) वह दण्ड जो राजा की आज्ञा के अनुसार दिया जाय। **राजदन्त**–(सं० पुं०) दाँतों की पंक्ति के बीच का वह दाँत जो औरों से चौड़ा होता है। **राजदुहिता**–(सं०स्त्री०) राजा की कन्या। **राजदूत**–(सं०पुं०) वह पुरुष जो एक राज्य की ओर से अन्य राज्य में किसी प्रकार का संदेश लेकर भेजा जाता है। **राजद्रोह**–(सं० पुं०) राजा अथवा राज्य के प्रति किया हुआ द्रोह। **राजद्रोही**–(सं०वि०) राजा या राज्य द्रोही। **राजद्वार**–(सं० पुं०) राजा की ड्योढ़ी, न्यायालय। **राजधानी**–(सं०स्त्री०) वह प्रधान नगर जहाँ किसी देश का राजा या शासक रहता है।
राजना–(हिं० क्रि०) शोभित होना, सोहना।
राजनीति–(सं०स्त्री०) वह नीति जिसके अनुसार राजा अपने राज्य का शासन तथा प्रजा की रक्षा करता है। **राजनैतिक**–(सं० वि०) राजनीति सम्बन्धी।
राजन्य–(सं०पुं०) क्षत्रिय, राजपुत्र।
राजपति–(सं०पुं०) राजाधिराज, सम्राट्।
राजपथ–(सं०पुं०) वह चौड़ा मार्ग जिस पर हाथी घोड़े रथ आदि सुगमता से चल सकते हों। **राजपद्धति**–(सं० स्त्री०) राजनीति।
राजपुत्र–राजा का पुत्र, युवराज।
राजपुत्री–(सं०स्त्री०) राजकन्या।
राजपुरुष–(सं०पुं०) राज्य का कोई अधिकारी।
राजभक्त–(सं०वि०) राजा का भक्त।
राजभक्ति–(सं०स्त्री०) राजा या राज्य के प्रति भक्ति।
राजभट–(सं०पुं०) राजसैनिक।
राजभवन–(सं०पुं०) राजा का प्रासाद।
राजभाण्डार–(सं०पुं०) राजा का कोष।
राजभूय–(सं०पुं०) राजत्व, राज्य।
राजभ्रातृ–(सं०पुं०) राजा का भाई।
राजमण्डल–(सं०पुं०) किसी बड़े राज्य के आसपास का राज्य।
राजमणि–(सं०पुं०) बहुमूल्य रत्न।
राजमन्दिर–(सं०पुं०) राजभवन।
राजमराल–(सं०पुं०) राजहंस।
राजमाता–(सं०स्त्री०) राजा की माता।
राजमार्ग–(सं० पुं०) राजपथ, चौड़ी सड़क। **राजयक्ष्मा**–(हिं०पुं०) क्षयरोग। **राजराज, राजराजेश्वर**–(सं० पुं०) अधिराज, राजाओं का राजा, चन्द्रमा। **राजरोग**–(हिं०पुं०) राजयक्ष्मा, क्षयरोग। **राजर्षि**–(सं०पुं०) वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो।
राजलक्ष्म–(सं०पुं०) राजचिह्न। **राजलक्ष्मी**–(सं०स्त्री०) राजश्री, राजवैभव राजा की शोभा। **राजवंश**–(सं०पुं०) राजा का कुल। **राजवसति**–(सं०स्त्री०) राजभवन। **राजवार**–(हिं०पुं०) राजद्वार। **राजविद्या**–(सं०स्त्री०) राजनीति। **राजविद्रोह**–(सं०पुं०) राजविप्लव। **राजविद्रोही**–(सं०पुं०) राजा से विद्रोह करनेवाला। **राजवीथी**–(सं० स्त्री०) चौड़ी सड़क। **राजवेश्म**–(सं० पुं०) राजा का भवन। **राजवेष**–(सं०पुं०) राजा का पहिनावा।

राजस–(सं०वि०) वह शक्ति जो गुण से उत्पन्न हो, आवेश, क्रोध। **राजसत्ता**–(सं०स्त्री०) राजशक्ति, राज्य की सत्ता। **राजसभा**–(सं०स्त्री०) वह सभा जिसमें अनेक राजा बैठे हों। **राजसमाज**–(सं०पुं०) राजमण्डली। **राजसिंहासन**–(सं० पुं०) राजा के बैठने का सिंहासन। **राजसिक**–(सं० वि०) रजोगुण से उत्पन्न, राजस। **राजसिरी**–(हिं०स्त्री०) देखो राजश्री। **राजसी**–(वि०) राजा के योग्य, ठाटदार, भड़कीला। **राजसुत**–(सं०पुं०) राजा का लड़का, राजपुत्र। **राजसुता**–(सं०स्त्री०) राजकन्या, राजा की लड़की। **राजसूय**–(सं०पुं०) वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राट् को होता है। **राजसेवक**–(सं०पुं०) राजा की सेवा करनेवाला भृत्य। **राजसेवा**–(सं०स्त्री०) राजा की सेवा। **राजस्व**–(सं०पुं०) भूमि आदि का वह कर जो राजा को दिया जाता है।

राजा–(सं०पुं०) नरपति, अधिपति, स्वामी, प्रिय व्यक्ति। **राजाज्ञा**–(सं० स्त्री०) राजा की आज्ञा।

राजाधिकारी–(सं०पुं०) न्यायालय में बैठकर विचार करनेवाला।

राजाधिष्ठान–(सं० पुं०) किसी राजा की राजधानी।

राजासन–(सं० पुं०) राजाओं के बैठने का आसन।

राजि–(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, लकीर।

राजित–(सं०वि०) विराजमान।

राजिव–(हिं०पुं०) राजीव, कमल।

राजीव–(सं०पुं०) पद्म, कमल, नील कमल, हाथी। **राजीवलोचन**–(सं०वि०) कमल ... आँखोंवाला।

राजेन्द्र–(सं०पुं०) राजश्रेष्ठ, राजाओं का राजा, सामन्त।

राजेश्वर–(सं०पुं०) राजाओं में श्रेष्ठ।

राजोपजीवी–(सं०पुं०) राजकर्मचारी।

राज्ञी–(सं०स्त्री०) राजपत्नी, रानी।

राज्य–(सं०पुं०) राष्ट्र, जनपद। **राज्यकर्ता**–(सं०पुं०) राज्य के शासन-विभाग का कर्मचारी। **राज्यच्युत**–(सं०वि०) राजसिंहासन से उतारा हुआ। **राज्यतन्त्र**–(सं० पुं०) राज्य की शासन-प्रणाली। **राज्याभिषेक**–(सं०पुं०) किसी नये राजा का राज-सिंहासन पर बैठाया जाना, राजगद्दी।

राठ–(हिं०पुं०) राज्य, राजा।

राढ़–(हिं०स्त्री०) झगड़ा; (वि०) नीच।

राणा–(हिं०पुं०) राजा, इस शब्द का प्रयोग राजपूताना के कुछ राज्यों तथा नेपाल के सरदारों के लिये होता है।

रात–(हिं०स्त्री०) रात्रि, रजनी।

रातना–(हिं० क्रि०) अनुरक्त होना, रँगा जाना।

राता–(हिं०वि०) रँगा हुआ, लाल रंग का।

रातिचर–(हिं०पुं०) निशाचर, राक्षस।

रात्रि–(सं०पुं०) रात्रि, रात, निशा, रजनी।

रात्रिचर–(सं०पुं०) राक्षस। **रात्रिचर्या**–(सं०स्त्री०) रात में करने का कर्तव्य। **रात्रिज**–(सं०पुं०) नक्षत्र तारे आदि। **रात्रिजल**–(सं०पुं०) कुहरा। **रात्रि-जागरण**–(सं०पुं०) रतजगा।

रात्री–(सं०स्त्री०) रात।

रात्र्यन्ध–(सं० वि०) जिसको रात में न देख पड़ता हो।

राधना–(हिं०क्रि०) सिद्ध करना, पूरा करना, साधना, काम निकालना।

राध्य–(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।

राना–(हिं०पुं०) देखो राणा; (क्रि०)

अनुरक्त होना। रानी–(हि०स्त्री०) राजा की पत्नी, स्वामिनी, मालकिन, स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द।
राब–(हि० स्त्री०) आँच पर औटाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।
राबड़ी–(हि० स्त्री०) औटाकर तथा चीनी मिलाकर गाढ़ा किया हुआ दूध, बसौंधी।
राम–(सं०पुं०) राजा दशरथ के पुत्र जो अवतार माने जाते हैं।
रामजना–(हि०पुं०) एक संकर जाति जिसकी कन्यायें वेश्यावृत्ति करती हैं।
रामजनी–(हि०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रामतरोई–(हि०स्त्री०) भिंडी नाम की एक तरकारी।
रामदल–(सं०पुं०) श्री रामचन्द्र की बन्दरों की सेना, एसी प्रबल सेना जिसको हराना कठिन हो।
रामदाना–(हि०पुं०) मरसे या चौराई की जाति का एक पौधा जिसमें बहुत छोटे सफेद दाने लगते हैं।
रामदूत–(सं०पुं०) हनुमान् जी।
रामना–(हि०क्रि०) देखो रमना।
रामनामी–(हि०पुं०) वह चादर या दुपट्टा जिस पर 'राम राम' छपा रहता है, एक प्रकार का गले का हार जिसके बीच के पान में 'राम' अंकित रहता है।
रामफल–(हि०पुं०) सीताफल, शरीफा।
रामबँटाई–(हि०स्त्री०) आध आध का विभाग।
रामबान–(हि०पुं०) तुरत प्रभाव दिखानेवाला।
रामबाँस–(हि०पुं०) एक प्रकार का मोटा बाँस जो पालकी के डंडे बनाने के काम में आता है, केवड़े की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियों के रेशे से रस्से बनाये जाते हैं।
रामरज–(सं०स्त्री०) एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं।
रामरस–(हि०पुं०) नमक।
रामराज्य–(सं०पुं०) रामचन्द्र का शासन जो प्रजा के लिये अत्यन्त सुखदायक था।
रामराम–(हि०पुं०) प्रणाम, नमस्कार, भेंट।
रामलीला–(सं०स्त्री०) रामजी के जीवनकाल के किसी कृत्य का अभिनय या नाटक।
रामबाण–(हि०वि०) तुरत प्रभाव दिखलानेवाली (औषधि)।
रामसेतु–(सं०पुं०) दक्षिण भारत की अंतिम सीमा पर रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।
रामा–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
रामायण–(सं० पुं०) वाल्मीकि ऋषि का संस्कृत में रचा हुआ भारतवर्ष का आदि काव्य।
रामायन–(हि०पुं०) देखो रामायण।
रामेश्वर–(सं०पुं०) दक्षिण भारत के समुद्रतट पर का एक स्थान जहाँ पर श्री रामचन्द्रजी का स्थापित एक शिवलिङ्ग है।
राय–(सं०पुं०) छोटा राजा या सरदार, बन्दीजन।
रायता–(हि०पुं०) दही में मिलाया हुआ साग, कुम्हड़ा, लौवा, बुँदिया आदि जिसमें नमक, मिर्च आदि मिलाया रहता है।
रायरासि–(हि०स्त्री०) राजा का कोष।
रार–(हि०पुं०) झगड़ा।
राल–(सं०पुं०) धूना का वृक्ष, वह तरल गोंद जो इस वृक्ष से निकाला जाता है।

राव–(सं०पुं०) ध्वनि, शब्द; (हिं०पुं०) राजा, सरदार, श्रीमान्, धनिक ।
रावट–(हिं०पुं०) राजभवन ।
रावटी–(हिं०स्त्री०) छोलदारी, ओसारी ।
रावत–(हिं०पुं०) छोटा राजा, सरदार ।
रावना–(हिं०क्रि०) रुलाना ।
रावर–(हिं०वि०) भवदीय, आपका; (पुं०) अन्तःपुर, रनिवास ।
रावल–(हिं०पुं०) राजा, प्रधान, सरदार, एक प्रकार का आदरसूचक संबोधन का शब्द ।
राशि–(सं०पुं०) पुंज, समच्चय, ढेर, राशिचक्र का बारहवाँ भाग ।
राशिचक्र–(सं०पुं०) ग्रहों के चलने का मार्ग या वृत्त ।
राशीकृत–(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ
राष्ट्र–(सं०पुं०) राज्य, देश, प्रजा ।
राष्ट्रतन्त्र–(सं०पुं०) राज्य का शासन करने की प्रणाली । राष्ट्रपति–(सं० पुं०) किसी राष्ट्र का स्वामी, आधुनिक प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली में बहुमत से चुना हुआ शासक ।
राष्ट्रपाल–(सं०पुं०) राष्ट्रपति । राष्ट्रभङ्ग–(सं०पुं०) राज्य का नाश ।
राष्ट्रविप्लव–(सं०पुं०) विद्रोह, बलवा ।
राष्ट्रान्तपालक–(सं०वि०) राज्य की सीमा का रक्षक ।
राष्ट्रीय–(सं०वि०) राष्ट्र संबंधी ।
रास–(सं०पुं०) कोलाहल, ध्वनि, गूँज, गोपियों की वह क्रीड़ा जिसमें वे श्रीकृष्ण के साथ घेरा बाँधकर नाचती थीं; (हिं०स्त्री०) ढेर, समूह, जोड़, झुंड, सूद, ब्याज ।
रासधारी–(सं०पुं०) वह मण्डली या व्यक्ति जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है ।
रासना–(हिं०पुं०) देखो रास्ना ।
रासभ–(सं० पुं०) गर्दभ, अश्वतर, खच्चर । रासभी–(सं०स्त्री०) गदही ।
रासभूमि–(सं०स्त्री०) रासक्रीड़ा का स्थान ।
रासमण्डल–(सं० पुं०) रासक्रीड़ा का स्थान, रासलीला करनेवालों का समूह ।
रासलीला–(सं०स्त्री०) वह क्रीड़ा या नृत्य जो श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ शरत्पूर्णिमा को आधीरात के समय किया था ।
रासबिहारी–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण ।
रासायनिक–(सं०वि०) रसायन शास्त्र संबंधी, रसायन शास्त्र का जानकार ।
रासि–(हिं०स्त्री०) देखो राशि ।
रासी–(हिं०वि०) कृत्रिम, बुरा, छोटी नाप का ।
रासो–(हिं०पुं०) किसी राजा का पद्यमय जीवनचरित्र ।
राहरीति–(हिं०स्त्री०) परिचय ।
राहना–(हिं०क्रि०) मोटी रेती से रगड़कर चिकना करना ।
राहा–(हिं०पुं०) चक्की के नीचे का मिट्टी का चबूतरा ।
राहु–(सं० पुं०) नवग्रहों में से एक ग्रह ।
रिंगन–(हिं०स्त्री०) घुटनों के बल चलना ।
रिंगना–(हिं०क्रि०) रेंगना, घुमाना, फिराना ।
रिकाबी–(हिं०स्त्री०) कटोरी ।
रिक्त–(सं०वि०) शून्य, खाली, निर्धन ।
रिक्तता–(सं०स्त्री०) शून्यता ।
रिक्तपाणि–(सं०वि०) खाली हाथ ।
रिक्तमति–(सं०वि०) शून्यचित्त ।
रिक्तहस्त–(सं०वि०) जिसके पास एक पैसा भी न हो ।
रिक्थ–(सं० पुं०) वंश-परंपरा में मिला हुआ धन या सम्पत्ति ।

रिक्ष–(हिं०पुं०) देखो ऋक्ष, रीछ, भालू।
रिक्षा–(सं०स्त्री०) लीख।
रिचा–(हिं०स्त्री०) देखो ऋचा।
रिच्छ–(हिं०पुं०) भालू।
रिजु–(हिं०वि०) देखो ऋजु।
रिझाना–(हिं०क्रि०) अपने ऊपर किसी को प्रसन्न कर लेना, लुभाना। रिझायल–(हिं०वि०) रीझनेवाला।
रिझाव–(हिं०पुं०) किसी का अपने ऊपर प्रसन्न होने का भाव। रिझावना–(हिं०क्रि०) देखो रिझाना।
रित, रितु–(हिं०स्त्री०) देखो ऋतु।
रितवना–(हिं०क्रि०) खाली करना।
रिद्ध–(सं०वि०) पका या रींधा हुआ।
रिन–(हिं०पुं०) देखो ऋण।
रिनबंधी–(हिं०पुं०) ऋणी।
रिनिआँ–(हिं०पुं०) ऋणी।
रिनी–(हिं०वि०) देखो ऋणी।
रिपु–(हिं०पुं०) शत्रु, वैरी। रिपुघाती–(सं०वि०) शत्रुओं का नाश करनेवाला। रिपुता–(सं०स्त्री०) शत्रुता।
रिमझिम–(हिं०स्त्री०) छोटी छोटी जल की बूंदों का निरन्तर गिरना।
रिरक्षा–(सं०स्त्री०) रक्षा करने की इच्छा।
रिर–(हिं०पुं०) हठ।
रिरना–(हिं०क्रि०) हठ करना।
रिरहा–दीनतापूर्वक भिक्षा माँगनेवाला।
रिस–(हिं०स्त्री०) क्रोध, रोष।
रिसना–(हिं०क्रि०) छनकर बाहर टपकना। रिसवाना–(हिं०क्रि०) क्रोध दिलाना।
रिसहा–(हिं०वि०) क्रोधी।
रिसाना–(हिं० क्रि०) किसी पर क्रुद्ध होना।
रिसि–(हिं०स्त्री०) रिस, क्रोध।
रिसौहाँ–(हिं०वि०) क्रोध से भरा हुआ।
रींधना–(हिं०क्रि०) उबालना, तलना या पकाना।
री–(हिं०अव्य०) सखियों के लिये संबोधन का शब्द, अरी।
रीछ–(हिं०पुं०) भालू।
रीझ–(हिं०स्त्री०) रीझने की क्रिया या भाव, प्रसन्न होना, मोहित होने का भाव। रीझना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, मोहित या मुग्ध होना।
रीढ़–(हिं०स्त्री०) पीठ के बीचोबीच की लंबी हड्डी जो गरदन से कमर तक जाती है, मेरुदण्ड, पृष्ठवंश।
रीढ़ा–(सं०स्त्री०) अवज्ञा, अपमान।
रीत–(हिं०स्त्री०) देखो रीति।
रीतना–(हिं०क्रि०) रिक्त होना, रिक्त करना।
रीता–(हिं०वि०) जिसके भीतर कुछ न हो, खाली।
रीति–(सं०स्त्री०) ढंग, परिपाटी, नियम, प्रकार, तरह, प्रकृति, स्तुति।
रीस–(हिं०स्त्री०) स्पर्धा, डाह, ईर्ष्या।
रीसना–(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना।
रुँदवाना–(हिं०क्रि०) पैर से कुचलवाना।
रुँधना–(हिं०क्रि०) उलझना, रुकना, फँस जाना।
रुआ–(हिं०पुं०) देखो रोआँ, रोम।
रुईदार–(हिं०वि०) रुई भरा हुआ।
रुकना–(हिं०क्रि०) आगे न बढ़ सकना, ठहर जाना।
रुकवाना–(हिं०क्रि०) दूसरे को रोकने में प्रवृत्त करना।
रुकाव, रुकावट–(हिं०पुं०) रुकने का भाव, रुकावट।
रुक्ख–(हिं०पुं०) देखो वृक्ष, पेड़।
रुक्म–(सं० वि०) दीप्तिमान्, रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्ष–(सं०वि०) रूखा, नीरस, सूखा।
रुक्षता–(सं०स्त्री०) रुखाई, रूखापन।
रुखाई–(हिं०स्त्री०) रूखा होने का भाव। रुखाना–(हिं०क्रि०) रूखा होना, सूखना। रुखानी–(हिं०स्त्री०) बढ़इयों का एक धारदार अस्त्र।
रुखावट, रुखाहट–(हिं० स्त्री०) रूखापन, रुखाई।
रुखौहाँ–(हिं०वि०) रुखाई लिये हुए।
रुग्न–(हिं०पुं०) रुग्ण, रोगग्रस्त। रुग्नता–(हिं०स्त्री०) रोगी होने का भाव।
रुच–(हिं०स्त्री०) देखो रुचि।
रुचना–(हिं०क्रि०) अनुकूल होना।
रुचा–(सं०स्त्री०) दीप्ति, प्रकाश, शोभा।
रुचि–(सं० स्त्री०) अनुराग, प्रेम, आसक्ति, प्रवृत्ति, भूख, स्वाद। रुचिकर–(सं०वि०) अच्छा लगनेवाला। रुचिकारक–(सं० वि०) स्वादिष्ठ। रुचिकारी–(सं० वि०) मनोहर। रुचित–(सं०वि०) अभिलषित।
रुचिर–(सं०वि०) सुन्दर, अच्छा।
रुचिराई – (हिं० स्त्री०) मनोहरता, सुन्दरता।
रुची–(हिं०स्त्री०) देखो रुचि।
रुच्छ–(हिं०वि०) देखो रूक्ष, रूखा।
रुज–(सं० पुं०) क्षत, घाव, वेदना, भंग, कष्ट; (सं०वि०) रोगग्रस्त।
रुजा–(सं०स्त्री०) रोग, पीड़ा।
रुजी–(हिं०वि०) अस्वस्थ, रोगी।
रुझना–(हिं०क्रि०) घाव आदि का पूजना।
रुठ–(हिं० पुं०) क्रोध, रोष।
रुठना–(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना।
रुठना–(हिं०क्रि०) रूठन में प्रवृत्त करना।
रुणित–(सं०वि०) शब्द करता हुआ।
रुण्ड–(सं०पुं०) कबन्ध जिसका हाथ-पैर छिन्न हो।
रुत्–(सं० पुं०) पक्षियों का कलरव, शब्द, ध्वनि।
रुदन–(सं० पुं०) क्रन्दन, रोने की क्रिया।
रुदराछ–(हिं०पुं०) देखो रुद्राक्ष।
रुदित–(सं०वि०) रोता हुआ।
रुद्ध–(हिं०वि०) रोका हुआ।
रुद्ध–(सं०वि०) आवृत, वेष्टित, घिरा हुआ, फँसा हुआ। रुद्धकण्ठ–(सं०वि०) जिसका गला भर आया हो, जो बोल न सकता हो।
रुद्र–(सं०पुं०) एक प्रकार के गण-देवता जो संख्या में ग्यारह हैं।
रुद्रपति–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
रुद्रपत्नी–(सं०स्त्री०) दुर्गा। रुद्रप्रिया–(सं० स्त्री०) पार्वती।
रुद्राक्ष–(सं०पुं०) एक बड़ा वृक्ष जिसके गोल फल की माला बनाकर शैव लोग पहनते और जप के व्यवहार में लाते हैं।
रुद्राणी–(सं०स्त्री०) रुद्र की पत्नी, पार्वती।
रुद्री–(सं०स्त्री०) वेद के रुद्रानुवाक् या अघमर्पण सूक्त की बारह आवृत्तियाँ।
रुधिर–(सं० पुं०) रक्त, शोणित।
रुधिरपायी–(हिं०पुं०) लोहू पीनेवाला, राक्षस।
रुधिरावक्त–(सं०वि०) रुधिर से भीगा हुआ।
रुनझुन–(हिं०स्त्री०) नूपुर, मंजीर, झनकार।
रुनाई–(हिं०स्त्री०) लालिमा।
रुनित–(हिं०वि०) बजता हुआ।
रुनुक झुनुक–(हिं० स्त्री०) नूपुर का शब्द, रुनझुन।
रुपया–(हिं०पुं०) चाँदी की सबसे बड़ी मुद्रा जो भारतवर्ष में प्रचलित है, यह तौल में दस माशे होता है, धन, सम्पत्ति।
रुपहला–(हिं०वि०) चाँदी के रंग का।

रुमंच–(हिं०पुं०) देखो रोमांच।
रुराई–(हिं०स्त्री०) सुन्दरता।
रुरु–(सं०पुं०) काला मृग, कस्तूरी मृग।
रुरुआ–(हिं०पुं०) एक बड़ी जाति का उल्लू जिसकी बोली बड़ी कर्कश होती है।
रुरुक्षु–(सं०वि०) रुक्ष, रूखा।
रुलना–(हिं०क्रि०) व्यर्थ मारे फिरना।
रुलाई–(हिं०स्त्री०) रोने की क्रिया या भाव। रुलाना–(हिं०क्रि०) रोने में दूसरे को प्रवृत्त कराना।
रुवाई–(हिं०स्त्री०) देखो रुलाई।
रुष–(सं०पुं०) क्रोध, रोष।
रुषित,रुष्ट–(सं० वि०) रोषयुक्त, क्रुद्ध। रुष्टता–(सं०स्त्री०) रुष्ट होने का भाव, अप्रसन्नता।
रुष्टपुष्ट–(हिं०वि०) देखो हृष्ट-पुष्ट।
रुसना–देखो रूठना।
रुसवाई–(हिं०स्त्री०)अपमान और दुर्गति।
रुसित–(हिं०वि०) रुष्ट, अप्रसन्न।
रुँदना–(हिं०क्रि०) देखो रौंदना।
रुँध–(हिं०वि०) अवरुद्ध, रुका हुआ।
रुँधना–(हिं०क्रि०) रोकना, छेकना।
रूई–(हिं०स्त्री०) कपास के कोष या ढोंढ़ के भीतर का घुआ जिसको कातकर सूत बनता है जिससे कपड़े बुने जाते हैं।
रूक्ष–(हिं० पुं०) देखो रूख।
रूक्षता–(सं०स्त्री०) रूखापन।
रूख–(हिं०पुं०) वृक्ष, पेड़; (वि०) रूखा।
रूखना–(हिं० क्रि०) रूठना।
रूखा–(हिं०वि०)परुष, कठोर, विरक्त, उदासीन। रूखापन–(हिं०पुं०) रुखाई, कठोरता, नीरसता।
रूचना–(हिं०क्रि०)रुचना, अच्छा लगना।
रूझना–(हिं० क्रि०) देखो उलझना।
रूठ, रूठन–(हिं० स्त्री०) रूठने की क्रिया या भाव।
रूठना–(हिं०क्रि०) अप्रसन्न होना।
रूठनि–(हिं०स्त्री०) देखो रूठन।
रूड़, रूड़ा–(हिं० वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
रूढ़–(सं०वि०)उत्पन्न, प्रचलित,प्रसिद्ध, आरूढ़, जिसका विभाग न किया गया हो, कठोर; (पुं०) वह शब्द जो प्रकृति और प्रत्यय की किसी प्रकार की अपेक्षा न करके अर्थ का बोध करता हो।
रूढ़ि–(सं०स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति, वृद्धि, प्रसिद्धि, प्रादुर्भाव, रूढ़ शब्द की वह शक्ति जो यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ को बतलाती है।
रूप–(सं०पुं०) स्वभाव, प्रकृति, सुन्दरता, दशा, अवस्था, भेस, शब्द या वर्ण का वह रूपान्तर जो उसमें विभक्ति प्रत्ययादि लगाने से बनता है। रूप-रेखा–आकृति।
रूपक–(सं०पुं०) मूर्ति, प्रतिकृति, वह अलंकार जिसमें प्रकृत विषय को न छिपाकर उपमेय में उपमान का आरोप होता है।
रूपकार–(सं०पुं०) मूर्ति बनानेवाला।
रूपण–(सं० पुं०) आरोग्य, परीक्षा, प्रमाण।
रूपतम–(सं०वि०) बड़ा सुन्दर। रूपता–(सं०स्त्री०) सुन्दरता।
रूपधर–(सं०वि०) सुन्दर। रूपधारी–(हिं०वि०) बहुरूपिया।
रूपमनी–(हिं०वि०) रूपवती, सुन्दर।
रूपमय–(हिं० वि०) बहुत सुन्दर।
रूपमान–(हिं० वि०) देखो रूपवान्।
रूपया–(हिं०पुं०) देखो रुपया।
रूपवती–(सं०स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।
रूपवन्त, रूपवान्–(सं० वि०) रूपवान्, सुन्दर।

रूपहानि–(सं०स्त्री०) रूप का नाश।
रूपा–(हिं०पुं०) चाँदी, घटिया चाँदी जिसमें कुछ मिलावट हो।
रूपाजीवा–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रूपावली–(सं०स्त्री०) शब्द की विभक्तियों का वर्णन।
रूपी–(हिं०वि०) रूपयुक्त, रूपवाला।
रूपोपजीवी–(हिं०वि०) बहुरूपिया।
रूमना–(हिं०क्रि०) झूलना, झूमना।
रूरना–(हिं०क्रि०) चिल्लाना, कोलाहल करना।
रूसना–(हिं०क्रि०) रूठना, क्रुद्ध होना।
रूसी–(हिं०वि०) रूस देश का रहनेवाला, रूस संबंधी; (स्त्री०) रूस देश की भाषा, सिर पर जमनेवाला भूसी के समान छिलका।
रूहड़–(हिं०स्त्री०) पुरानी रुई जो एक बार कपड़े आदि में भरी जा चुकी हो।
रूहना–(हिं०क्रि०) घरना।
रेंकना–(हिं०क्रि०) गदहे का बोलना।
रेंगटा–(हिं०पुं०) गदहे का बच्चा।
रेंगना–(हिं०क्रि०) कीड़े या चिउँटी का चलना, धीरे-धीरे चलना।
रेंट–(हिं०पुं०) नाक का मल, नकटी।
रेंड़–(हिं०पुं०) एक पौधा जिसके बीज का तेल गाढ़ा और रेचक होता है।
रेंड़ी–(हिं०स्त्री०)अरंडी या रेंड़ के बीज।
रेंरें–(हिं०पुं०)बच्चों के रोने का शब्द।
रे–(सं०अव्य०) एक संबोधन जिससे आदर का अभाव सूचित होता है।
रेउता–(हिं०पुं०) व्यजन, बना, पंखा।
रेख–(हिं०स्त्री०) रेखा, लकीर, चिह्न, नई निकलती हुई मूँछें।
रेखांश–(सं०पुं०) याम्योत्तरवृत्तकाएकअंश
रेखा–(सं०स्त्री०)लकीर, गणना, गिनती, आकृति, आकार।
रेखागणित–(सं० पुं०) गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये गये हों।
रेच–(हिं०पुं०) ऐंठन, दोष।
रेचन–(सं०पुं०) कोष्ठ-शुद्धि।
रेचना–(हिं०क्रि०) अधोवायु या मल को बाहर निकालना।
रेचनीय–(सं०वि०) शौच लानेवाला।
रेचित–(सं०वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
रेणु–(सं०पुं०) धूल, बालू, कणिका।
रेणुका–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, रज, धूल, बालू।
रेत–(हिं०पुं०) लोहा रेतने का एक अस्त्र (स्त्री०) बालू, मरुस्थल।
रेतना–(हिं०क्रि०) रेती के द्वारा किसी वस्तु को रगड़कर उसमें से महीन कण गिराना।
रेतला–(हिं०वि०) रेतीला।
रेतिया–(हिं०पुं०) रेतनेवाला।
रेता–(हिं०स्त्री०) बालू।
रेती–(हिं०स्त्री०) लोहा, लकड़ी आदि रेतने का लोहे का एक अस्त्र, नदी या समुद्र के किनारे की बलुई भूमि।
रेतीला–(हिं०वि०) बालुकामय, बलुआ।
रेनु–(हिं०पुं०) देखो रेणु।
रेफ–(सं०पुं०) रकार, रवर्ग, रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहिले आने से उस अक्षर में माथे पर रखा जाता है "र्", राग, शब्द।
रेरुआ–(हिं०पुं०) बड़ा उल्लू पक्षी।
रेल–(हिं०स्त्री०) बहाव, धारा, अधिकता
रेलना–(हिं० क्रि०) आग की ओर झोंकना।
रेला–(हिं०पुं०) पंक्ति, समूह, धक्का-मुक्का, अधिकायत।
रेवड़ी–(हिं०स्त्री०) पगी हुई चीनी का

टुकड़ा जिस पर सफेद तिल चपकाया होता है।
रेह–(हिं०स्त्री०) खार मिली हुई मिट्टी जो ऊसर में पाई जाती है।
रेहुआ–(हिं०वि०) जिसमें रेह बहुत हो।
रैअत–(हिं०पुं०) प्रजा।
रैतुआ–(हिं०पुं०) देखो रायता।
रैदास–(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध भक्त जो जाति का चमार था।
रैदासी–(हिं०पुं०) रैदास भक्त के सम्प्रदाय का।
रैन, रैनि–(हिं०स्त्री०) रात्रि, रात।
रैनिचर–(हिं०पुं०) राक्षस।
रैयाराव–(हिं० पुं०) छोटा राजा, सरदार।
रैल–(हिं०स्त्री०) समूह।
रैहर–(हिं०पुं०) झगड़ा, लड़ाई।
रोंग–(हिं०पुं०) लोम, रोवाँ।
रोंगटा–(हिं०पुं०) संपूर्णशरीर पर के रोवें।
रोंव–(हिं०पुं०) रोआँ, लोम।
रोक–(हिं०स्त्री०) बाधा, अटकाव, निषेध, मनाही।
रोकड़–(हिं०स्त्री०) नगद रुपया-पैसा।
रोकड़िया–(हिं०पुं०) कोषाध्यक्ष।
रोकना–(हिं०क्रि०) बाधा डालना, मना करना।
रोख–(हिं०पुं०) देखो रोष।
रोग–(सं०पुं०) व्याधि। **रोगकारक**–(सं०वि०) रोग उत्पन्न करनेवाला।
रोगाक्रान्त–(सं० वि०) व्याधिग्रस्त।
रोगातुर–(सं० वि०) व्याधित, पीड़ित।
रोगिया–(हिं०पुं०) रोगी। **रोगी**–(हिं० वि०) व्याधिग्रस्त, रुग्ण।
रोचक–(सं०वि०) रुचिकारक, मनोरंजक। **रोचकता**–(सं०स्त्री०) मनोहरता।
रोचि–(सं०स्त्री०) प्रभा, दीप्ति, किरण।
रोचित–(सं०वि०) सुशोभित।
रोचिष्णु–(सं०वि०) रोचक, चमकदार।
रोट–(हिं०पुं०) गेहूँ के आटे की बहुत मोटी रोटी, लिट्टी।
रोटका–(हिं०पुं०) बाजरा।
रोटिहा–(हिं० पुं०) वह सेवक जो भोजन पर काम करता है।
रोटी–(हिं०स्त्री०) गुँधे हुए आटे की टिकिया जो आँच पर सेंकी गई हो।
रोड़ा–(हिं०पुं०) बड़ा कंकड़, ईंट या पत्थर का ढेला।
रोदन–(सं० पुं०) क्रन्दन, रोना।
रोदसी–(हिं०स्त्री०) पृथ्वी।
रोदा–(हिं०पुं०) कमान की डोरी।
रोध–(सं०पुं०) किनारा, तट, रुकावट।
रोधक–(सं०वि०) रोकनेवाला।
रोधना–(हिं० क्रि०) रुकावट करना, रोकना।
रोधित–(हिं०वि०) रोका हुआ।
रोधी–(सं०वि०) रोकनेवाला।
रोना–(हिं०क्रि०) दुःख करना, पछताना, बुरा मानना, चिढ़ना; (पुं०) दुःख; (वि०) रोनेवाला।
रोपक–(सं०वि०) वृक्ष लगानेवाला, उठानेवाला।
रोपना–(हिं०क्रि०) जमाना, लगाना, ठहराना, अड़ाना, किसी वस्तु को लेने के लिये हथेली या कोई पात्र आगे करना।
रोपित–(सं०वि०) जमाया हुआ, लगाया हुआ, रक्खा हुआ।
रोम–(सं०पुं०) लोम, शरीर के बाल, रोआँ।
रोमकूप–(सं०पुं०) शरीर के महीन छिद्र।
रोमन्थ–(सं०पुं०) पागुर करना।
रोमपाट–(सं०पुं०) ऊनी वस्त्र, दुशाला।
रोमपुलक–(सं०पुं०) रोमाञ्च।

रोमश–(सं०पुं०) मेष, भेड़ा, सुअर।
रोमहर्ष, रोमहर्षण–(सं०पुं०) रोमांच, रोंवा खड़ा होना।
रोमहर्षित–(सं०वि०) पुलकित।
रोमाञ्च–(सं०पुं०) आनन्द या भय से रोंगटे खड़े होना, पुलक।
रोमाञ्चित–(सं०वि०) जिसके रोंगटे खड़े हों।
रोमाली–(सं०स्त्री०) देखो रोमावली।
रोमावलि, रोमावली–(सं०स्त्री०) रोमों की पंक्ति जो पेट के बीच में नाभि के ऊपर होती है, रोमाञ्च, पुलक।
रोमोद्गम–(सं०पुं०) रोवें का खड़ा होना।
रोयाँ–(हिं०पुं०) शरीर पर के बाल।
रोर–(सं०स्त्री०) कलकल, कोलाहल, घमासान, चिल्लाहट का शब्द; (वि०) प्रचण्ड, उपद्रवी, अत्याचारी।
रोरी–(हिं०स्त्री०) हलदी-चूने से बनी हुई लाल रंग की बुकनी जिसका तिलक लगाया जाता है, रत्न।
रोल–(हिं०पुं०) पानी का तोड़, बहाव; (स्त्री०) कोलाहल।
रोलम्ब–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा।
रोला–(हिं०पुं०) कोलाहल, घमासान युद्ध।
रोली–(हिं०स्त्री०) देखो रोरी।
रोवनहार–(हिं०पुं०) रोनेवाला।
रोवना–(हिं०वि०) देखो रोना; (वि०) हँसी या खेल में बुरा माननेवाला।
रोवनी-धोवनी–(हिं०स्त्री०) रोने-धोने का काम।
रोवासा–(हिं०वि०) जो रोने पर तैयार हो।
रोष–(सं०पुं०) क्रोध, कुढ़न, विरोध।
रोस–(हिं०पुं०) देखो रोष, क्रोध।
रोहण–(सं०पुं०) चढ़ना, चढ़ाई।
रोहना–(हिं०क्रि०) चढ़ना, ऊपर करना, सवार कराना।
रोहा–(हिं०पुं०) आँख की पलक के भीतर दाने पड़ जाने का रोग।
रोहिताक्ष–(सं०पुं०) लाल आँख।
रोहिताश्व–(सं०पुं०) अग्नि।
रोही–(हिं०वि०) चढ़नेवाला।
रोहू–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी मछली।
रौंद–(हिं०स्त्री०) रौंदने की क्रिया या भाव, चक्कर। रौंदन–(हिं०पुं०) रौंदने की क्रिया, मर्दन। रौंदना–(हिं० क्रि०) पैरों से कुचलना, लातों से मारना. खूब पीटना।
रौक्ष्य–(सं०पुं०) रुक्षता, रूखापन।
रौद्रकर्म–(सं०पुं०) भयंकर कर्म।
रौद्रता–(सं०स्त्री०) प्रचण्डता, डरावनापन
रौना–(हिं०पुं०) देखो रोना। रौनी–(हिं०स्त्री०) देखो रमणी।
रौप्य–(सं०पुं०) चाँदी, रूपा।
रौप्यमुद्रा–(सं०स्त्री०) चाँदी की मुद्रा।
रौरव–(सं०पुं०) एक नरक का नाम।
रौरा–(हिं०पुं०) हल्ला, कोलाहल, ऊधम। (सर्व०) आपका।
रौराना–(हिं०क्रि०) बक-झक करना।
रौरी–(हिं०स्त्री०) कोलाहल।
रौरे–(हिं०सर्व०) आप, संबोधन का शब्द।
रौला–(हिं०पुं०) हल्ला, ऊधम।
रौलि–(हिं०स्त्री०) चपत, धौल।

ल

ल–व्यंजन वर्ण का अट्ठाईसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
ल–(सं० पुं०) पृथ्वी, इन्द्र।
लंकेश–(हिं०पुं०) रावण।
लंगड़, लंगड़ा–(हिं०वि०) जिसका पैर टूटा या बेकाम हो; (पुं०) एक प्रकार का बहुत बढ़िया कलमी आम।

लँगड़ाना–(हिं० क्रि०) लँगड़ाते हुए या भचककर चलना।
लँगड़ी–(हिं०वि०) वह स्त्री जिसके पैर टूट गये हों।
लंगूर–(हिं०पुं०) एक विशेष प्रकार का बन्दर जिसका मुंह काला और पूंछ लंबी होती है।
लंगूल–(हिं०पुं०) पूंछ, दुम।
लँगोट–(हिं०पुं०) एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जो कमर में लपेटा जाता है, जिससे केवल उपस्थ ढँप जाता है, रुमाली। लँगोटी–(हिं०स्त्री०) कौपीन, कछनी।
लंघना–(हिं०क्रि०) देखो लांघना।
लंठ–(हिं०वि०) मूर्ख, उद्दण्ड।
लंबतड़ंग–(हिं०वि०) लंबे आकार का।
लंबा–(हिं०वि०) विशाल, बड़ा, दीर्घ।
लंबाई–(हिं०स्त्री०) लंबापन, लंबा होने का भाव।
लंबी–(हिं०वि०स्त्री०) लंबा शब्द का स्त्रीलिंग का रूप।
लंबोतरा–(हिं०वि०) लंबे आकार का।
लकड़बग्घा–(हिं०पुं०) एक जंगली मांसाहारी पशु जो भेड़िये से कुछ बड़ा होता है, लग्घड़।
लकड़हारा–(हिं०पुं०) वह जो जंगल से लकड़ी लाकर नगर में बेचता हो।
लकड़ा–(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा कुन्दा, जुआर बाजरे आदि का सूखा डंठल।
लकड़ी–(हिं०स्त्री०) काठ, इन्धन, छड़ी, लाठी।
लकसी–(हिं०स्त्री०) फल आदि तोड़ने की लग्घी जिसके सिरे पर लोहे का चन्द्राकार फल लगा होता है।
लकार–(सं०पुं०) 'ल' स्वरूप वर्ण।
लकीर–(हिं०स्त्री०) रेखा, धारी, पंक्ति।
लकुट–(हिं०पुं०) लगुड़, लाठी; (हिं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसका जामुन के आकार का फल वर्षा ऋतु में पकता है।
लकुटी–(हिं०स्त्री०) छोटी लाठी, छड़ी।
लक्कड़–(हिं०पुं०) काठ का बड़ा कुन्दा।
लक्खी–(हिं०वि०) लाख के रंग का।
लक्तक–(सं०पुं०) अलता।
लक्ष–(सं०पुं०) व्याज, बहाना, चिह्न, पर; (वि०) एक लाख, सौ हजार।
लक्षण–(सं०पुं०) चिह्न, नाम, शरीर में देख पड़नेवाले रोग के चिह्न।
लक्षणा–(सं०स्त्री०) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसके अभिप्राय का बोध होता है।
लक्षणी–(सं०वि०) लक्षण जाननेवाला।
लक्षणीय–(सं०वि०) लक्षण द्वारा जाना हुआ।
लक्षित–(सं०वि०) आलोचित, विचारा हुआ, अनुमान से जाना हुआ।
लक्ष्म–(सं० पुं०) चिह्न।
लक्ष्मी–(सं०स्त्री०) विष्णु की पत्नी पद्मा, शोभा, सौंदर्य, सम्पत्ति, लक्ष्मी। लक्ष्मीधर–(सं०पुं०) विष्णु। लक्ष्मीफल–(सं०पुं०) बेल। लक्ष्मीसुख–(सं०पुं०) राजा या धनवान् पुरुष।
लक्ष्य–(सं० पुं०) निशाना लगाने का स्थान, जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय, उद्देश्य।
लखघर–(हिं०पुं०) देखो लाक्षागृह।
लखन–(हिं०पुं०) लक्ष्मण; (हिं०स्त्री०) लखने या देखने की क्रिया या भाव।
लखना–(हिं०क्रि०) अनुमान कर लेना।
लखपती–(हिं०पुं०) जिसके पास लाखों रुपये की सम्पत्ति हो।
लखलुट–(हिं०वि०) धन लुटानेवाला अपव्ययी।

लखाना–(हि॰क्रि॰) दिखलाना, समझादेना।
लखाव–(हि॰पुं॰) देखो लखाउ।
लखिमी–(हि॰स्त्री॰) देखो लक्ष्मी।
लखिया–(हि॰वि॰) अनुमान करनेवाला।
लखेदना–(हि॰क्रि॰) भगाना।
लखौरी–(हि॰स्त्री॰) भारतवर्ष की पुराने ढंग की छोटी पतली ईंट, किसी देवता को एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना।
लग्रंत–(हि॰स्त्री॰) लगन होने की क्रिया।
लग–(हि॰क्रि॰वि॰) पास, पर्यन्त, तक; (स्त्री॰) लगन, प्रेम; (अव्य॰) लिये, साथ, संग।
लगढग–(हि॰क्रि॰वि॰) देखो लगभग।
लगन–(हि॰स्त्री॰) लगाव, प्रवृत्ति का किसी ओर लगना, प्रेम, लौ, देखो लग्न।
लगनपत्री–(हि॰ स्त्री॰) विवाह के मुहूर्त का पत्र जो कन्या का पिता वर के पिता के पास भेजता है।
लगना–(हि॰क्रि॰) मिलना, सटना, चिपकाया जाना, जमना, उगना, स्थापित होना, चोट पहुँचाना, संबंध में कोई होना, किनारे पर ठहरना, जान पड़ना, गड़ना, चुभना, किसी कार्य में तत्पर होना, निश्चय होना, गाय, भैंस आदि का दुहा जाना, ठीक बैठना, जलना, इकट्ठा होना, मूल्य निर्धारित होना, सधना, जान पड़ना, प्रभाव पड़ना, मड़ना, गलना, किसी पदार्थ का तल में बैठना, मला जाना।
लगनि–(हि॰स्त्री॰) देखो लगन।
लगनी–(हि॰ स्त्री॰) छोटी थाली।
लगभग–(हि॰क्रि॰वि॰) प्रायः।
लगमात–(हि॰स्त्री॰) स्वरों के चिह्न जो उच्चारण के लिए व्यञ्जनों में जोड़े जाते हैं।
लगर–(हि॰पुं॰) लग्घड़ नाम का पक्षी।
लगव–(हि॰वि॰) मिथ्या, झूठ, असत्य।
लगवाना–(हि॰क्रि॰) लगाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को लगाने मे प्रवृत्त करना।
लगातार–(हि॰क्रि॰वि॰) एक के बाद एक।
लगान–(हि॰पुं॰) लगने या लगाने की क्रिया, भूमिकर जो किसान भूस्वामी को देता है।
लगाना–(हि॰क्रि॰) मिलाना, चिपकाना, जोड़ना, नियुक्त करना, प्रवृत्त करना, फैलाना, नाव या जहाज को छिछले किनारे पर चढ़ाना, चिह्नित करना, किसी के प्रति दुर्भाव उत्पन्न करना, छुआना, आँकना, धँसाना, गाय भैंस को दुहना, क्रम में रखना, चोट पहुँचाना, अभिमान करना, वृक्ष जमाना, दाँव पर रखना।
लगाम–(फा॰स्त्री॰) घोड़े के मुँह में रखने की बाग, रास।
लगाय–(हि॰स्त्री॰) प्रेम।
लगार–(हि॰स्त्री॰) बंधज, लगाव, मेल, लगन, प्रीति, टिकान, किसी घर के ऊपरी भाग से मिला हुआ कोई एसा स्थान जहाँ से वहाँ कोई आ-जा सकता ह
लगालगी–(हि॰स्त्री॰) लाग, संबंध, मेल
लगाव–(हि॰पुं॰) संबंध। **लगावट**–(हि॰स्त्री॰) प्रीति, प्रेम, संबंध।
लगावन–(हि॰क्रि॰) देखो लगाना।
लगित–(सं॰वि॰) संयुक्त, मिला हुआ।
लगुड़–(सं॰पुं॰) दण्ड, डंडा, लाठी।
लगूर–(हि॰स्त्री॰) लाङ्गूल, पूँछ।
लगौहाँ–(हि॰वि॰) जिसको लगन लगाने की अभिलाषा हो।
लग्गा–(हि॰पुं॰) लंबा बाँस।

लग्गी–(हि० स्त्री०) लंबा बांस ।

लग्घड़–(हि०पुं०) श्येन पक्षी, बाज, लकड़बग्घा ।

लग्घा, लग्घी–(हि०) देखो लग्गा, लग्गी

लग्न–(सं० पुं०) वह शुभ मुहूर्त जिसमें कोई शुभ कार्य किया जाता है, विवाह का समय; (वि०) लगा हुआ, मिला हुआ

लघिमा–(सं०स्त्री०) लघुत्व, छोटापन ।

लघीयस–(सं०वि०) बहुत छोटा या हलका

लघु–(सं० पुं०) व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है यथा–अ, इ, उ, ए, ओ आदि; (वि०) हलका, छोटा । **लघुकाय**–(सं०पुं०) नाटे शरीर का । **लघुक्रिया**–(सं०स्त्री०) तुच्छ कार्य । **लघुता**–(सं० स्त्री०) तुच्छता, हलकापन । **लघुतुपक**–(सं० स्त्री०) तमंचा, पिस्तौल ।

लघुतमसमापवर्त्य–(सं०पुं०) वह सबसे छोटी संख्या जो दो या अधिक संख्याओं से बिना शेष के विभाजित हो सके ।

लघुत्व–(सं०पुं०) तुच्छता, छोटापन, हलकापन । **लघुदुन्दुभि**–(सं०पुं०) डुगडुगी । **लघुद्राक्षा**–(सं०स्त्री०) किशमिश । **लघुभोजन**–(सं० पुं०) हलका भोजन । **लघुमति**–(सं०वि०) छोटी बुद्धिवाला, मूर्ख । **लघुराशि**–(सं०स्त्री०) छोटी संख्या । **लघुशंका**–(सं० स्त्री०) मूत्रोत्सर्ग । **लघुशंख**–(सं०पुं०) घोंघा । **लघुहृदय**–(सं० वि०) चंचल चित्तवाला।

लघूकरण–(सं०पुं०) काटना, छाँटना ।

लघूक्ति–(सं०स्त्री०) कम बोलना ।

लघ्वाशी–(सं०वि०) कम खानेवाला ।

लघ्वाहार–(सं०पुं०) हलका भोजन ।

लङ्क–(सं०स्त्री०) कटि, कमर ।

लङ्कनाथ–(सं०पुं०) रावण ।

लङ्का–(सं०स्त्री०) रावण का राज्य ।

लङ्केश, लङ्केश्वर–(सं०पुं०) रावण ।

लङ्गूल–(सं० पुं०) लांगूल, पूँछ ।

लङ्घक–(सं०वि०) लाँघनेवाला, सीमा के बाहर जानेवाला ।

लङ्घन–(सं०पुं०) अनाहार, उपवास ।

लङ्घना–(सं०स्त्री०) उपेक्षा ।

लङ्घनीय–(सं०वि०) लाँघने योग्य ।

लङ्घित–(सं०वि०) जो लाँघा गया हो ।

लचक–(हि०स्त्री०) लचकने की क्रिया या भाव, झुकाव । **लचकना**–(हि०क्रि०) झुकना, लचना । **लचकनि**–लचक, लचीलापन ।

लचकाना–(हि०क्रि०) झुकाना ।

लचकीला–(हि०वि०) लचकने योग्य ।

लचन–(हि०स्त्री०) देखो लचक ।

लचना–(हि०क्रि०) लचकना ।

लचनि–(हि०स्त्री०) लचक । **लचलचा**–(हि०वि०) लचीला ।

लचाना–(हि०क्रि०) लचकाना, झुकाना।

लच्छ–(हि०पुं०) लक्ष्य, बहाना, सौ हजार की संख्या, लाख ।

लच्छण–(हि०पुं०) स्वभाव, लच्छन ।

लच्छन–(हि०पुं०) देखो लक्षण ।

लच्छना–(हि०क्रि०) देखो लखना ।

लच्छमी–(हि०स्त्री०) देखो लक्ष्मी ।

लच्छा–(हि०पुं०) झुप्पा, गुच्छा ।

लच्छि–(हि०पुं०) एक लाख की संख्या (स्त्री०) लक्ष्मी । **लच्छिनाथ**–(हि० पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु । **लच्छित**–लक्ष्य किया हुआ, देखा हुआ ।

लच्छी–(हि०स्त्री०) कलाबत्तू, सूत, रेशम आदि की लपेटी हुई अंटी ।

लछन–(हि०पुं०) देखो लक्षण ।

लछना–(हि०क्रि०) देखो लखना ।

लछमन–(हि० पुं०) देखो लक्ष्मण ।

लछमी–(हि०स्त्री०) देखो लक्ष्मी ।

लछारा–(हिं०वि०) लंबा ।
लज–(हिं०स्त्री०) देखो लाज, लज्जा ।
लजना–(हिं०क्रि०) लजाना । लजवाना–(हिं०क्रि०) दूसरे को लज्जित करना ।
लजाधुर–(हिं०वि०) लजालू नाम का पौधा । लजाना–(हिं०क्रि०) लज्जित होना या करना ।
लजारू, लजालू–(हिं० पुं०) लजाधुर नाम का पौधा ।
लजावन–(हिं०क्रि०) लजाना ।
लजियाना–(हिं०क्रि०) लजाना ।
लजीला–(हिं०वि०) लज्जायुक्त ।
लजुरी–(हिं०स्त्री०) कुवें से पानी निकालने की रस्सी ।
लजोर–(हिं०वि०) लज्जावान् ।
लज्जा–(सं०स्त्री०) अन्त:करण की वह स्थिति जिसके कारण दूसरे के सामने वृत्तियाँ संकुचित हो जाती हैं, लाज ।
लज्जालु–(हिं०वि०) लज्जाशील ।
लज्जाशील–(सं०वि०) जो बात बात में लज्जा करता हो । लज्जाशून्य–(सं०वि०) निर्लज्ज । लज्जाहीन–(सं०वि०) निर्लज्ज । लज्जित–(सं० वि०) लजाया हुआ ।
लञ्चा–(सं०स्त्री०) उत्कोच, घूस ।
लट–(हिं०स्त्री०) सिर के बालों का समूह जो नीचे तक लटका रहता है, बालों का गुच्छा ।
लटक–(हिं०स्त्री०) झुकाव, लचक ।
लटकन–(हिं०पुं०) नीचे की ओर लटकाने की क्रिया या भाव, लगे हुए रत्नों का गुच्छा, नाक में पहिनने का झुमका, एक वृक्ष जिसके फूलों से लाल रंग निकलता है ।
लटकना–(हिं०क्रि०) झूलना, टँगना, लचकना, झुकना, दुबिधा में पड़े रहना, नम्र होना । लटकवाना–(हिं०क्रि०) लटकाने का काम दूसरे से कराना ।
लटका–(हिं०पुं०) गति, चाल, किसी शब्द या वाक्य का बारंबार प्रयोग, बनावटी चेष्टा, हाव-भाव । लटकाना–(हिं० क्रि०) लचकाना, झुकाना या आसरे में रखना । लटकीला–(हिं० वि०) झूमता हुआ ।
लटकौंवा–(हिं०वि०) लटकानेवाला ।
लटना–(हिं०क्रि०) ढीला पड़ना, शिथिल होना, व्याकुल होना, दुर्बल होना, लचाना ।
लटपटा–(हिं०वि०) लड़खड़ाता हुआ, टूटा-फूटा, अशक्त, अव्यवस्थित ।
लटपटान–(हिं०स्त्री०) लड़खड़ाहट ।
लटपटाना–(हिं०क्रि०) लड़खड़ाना, लुभाना, डिगना ।
लटालु–(हिं०वि०) लोलुप, लंपट, बुरा ।
लटापटी–(हिं०स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा ।
लटापोट–(हिं०वि०) मुग्ध, मोहित ।
लटिया–(हिं०स्त्री०) सूत आदि का लच्छा, आँटी ।
लटी–(हिं०स्त्री०) असत्य वार्ता ।
लटुआ–(हिं०पुं०) देखो लट्टू ।
लटूरी–(हिं०स्त्री०) अलक, केश ।
लट्टू–(हिं०पुं०) गोल बट्टे के आकार का एक खिलौना जिसमें सूत लपेटकर तथा फेंककर उसे पृथ्वी पर नचाते हैं, लट्टू के आकार की कोई वस्तु ।
लट्ठ–(हिं०पुं०) बड़ी लाठी, सोंटा ।
लट्ठबाज–(हिं०वि०) लाठी लड़नेवाला, बड़ी लाठी बाँधनेवाला ।
लट्ठबाजी–(हिं०स्त्री०) लाठियों की लड़ाई । लट्ठमार–(हिं०वि०) अप्रिय, कठोर, कर्कश ।
लट्ठा–(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा लंबा टुकड़ा ।

लठियल–(हिं०वि०)लाठी बाँधनेवाला।
लठैत–(हिं०पुं०) लाठी लड़नेवाला ।
लड़ंत–(हिं०स्त्री०) लड़ाई, सामना ।
लड़–(हिं०स्त्री०) पंक्ति, माला, रस्सी का एक तार।
लड़कई–(हिं०स्त्री०) बाल्यावस्था।
लड़कखेल–(हिं०पुं०) बालकों का एक खेल, अति सहज कार्य। लड़कपन–(हिं०पुं०) बाल्यावस्था। लड़कबुद्धि–(हिं०स्त्री०) बालकों के समान बुद्धि।
लड़का–(हिं०पुं०) बालक, पुत्र, बेटा ।
लड़की–(हिं०स्त्री०) बालिका, बेटी ।
लड़कोरी–(हिं०वि०स्त्री०)जिस स्त्रीकी गोद में लड़का हो ।
लड़खड़ाना–(हिं०क्रि०) डगमगा कर गिरना, झोंका खाकर नीचे आ जाना।
लड़खड़ी–(हिं०स्त्री०) डगमगाहट ।
लड़ना–(हिं०क्रि०)झगड़ा करना,भिड़ना, मल्लयुद्ध करना, एक दूसरे को कठोर शब्द कहना, टक्कर खाना, वाद-विवाद करना, टकराना।
लड़बड़ाना–(हिं०क्रि०)देखो लड़खड़ाना।
लड़बावरा–(हिं०वि०) गवाँर, अल्हड़, अनाड़ी।
लड़ाई–(हिं०पुं०) एक दूसरे पर चोट पहुँचाने की क्रिया या भाव, विवाद, कलह, झगड़ा, विरोध।
लड़ाका, लड़ाकू–(हिं०वि०) लड़नेवाला योद्धा, झगड़ालू ।
लड़ाना–(हिं०क्रि०) दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना, कलह के लिये उद्यत करना।
लड़ी–(हिं०स्त्री०) देखो लड़, पंक्ति ।
लड़वा,लड़ुवा–(हिं०पुं०) मोदक, लड्डू
लड़ता–(हिं०वि०) लाड़ला, दुलारा ।
लड्डू–(हिं०पुं०) मोदक।
लढ़िया–(हिं०स्त्री०) बैलगाड़ी ।

लत–(हिं०स्त्री०) दुर्व्यसन, बुरी टेव।
लतखोर, लतखोरा–(हिं०वि०) वह जो सर्वदा लात खाता हो, नीच, दुष्ट, द्वार पर पड़ा हुआ, पैर पोंछने का टाट।
लतड़ी–(हिं०स्त्री०)केसारी नामक अन्न।
लतपत–(हिं०वि०) देखो लथपथ।
लतमर्दन–(हिं०स्त्री०) पैरों से रौंदने की क्रिया।
लतर–(हिं०स्त्री०) बेल, वल्ली, लता।
लतरी–(हिं०स्त्री०) मोठ, खेसारी।
लता–(सं०स्त्री०) वल्ली, बेल, कोमल शाखा।
लताकुञ्ज–(सं०पुं०) लताओं से छाया हुआ स्थान । लतागृह–(सं०पुं०) लतामण्डप।
लताड़ना–(हिं०क्रि०) लात मारना।
लतापता–(हिं०पुं०) जड़ी-बूटी।
लताभवन–(सं०पुं०) लताओं का कुंज।
लतामणि–(सं०पुं०) प्रवाल, मूँगा।
लतियर, लतियल–(हिं०वि०)जो सर्वदा लात खाता हो, लतखोर।
लतियाना–(हिं०क्रि०) पैरों से रौंदना, लात मारना।
लतिहर, लतिहल–(हिं०वि०)लतखोर।
लत्ता–(हिं०पुं०) फटा-पुराना वस्त्र, चियड़ा।
लत्ती–(हिं०स्त्री०) पशुओं की लात मारने की क्रिया, कपड़े की लंबी धज्जी।
लथपथ–(हिं०वि०) जो भींगकर भारी हो गया हो।
लथाड़–(हिं०वि०) भूमि पर पटककर घसीटने की क्रिया, चपेट, हानि।
लथाड़ना, लथेड़ना–(हिं०क्रि०) भूमि पर पटककर घसीटना, हराना, शिथिल करना, थकाना, डाँटना।
लदन–(हिं०स्त्री०) लदाव।

(हि०क्रि०)परिपूर्ण होना, बोझ रखा जाना, बंदी होना।
लदलद–(हि०क्रि०वि०) किसी गीली वस्तु के गिरने के शब्द का अनुकरण।
लदवाना–(हि०क्रि०) लादने का काम दूसरे से कराना।
लदाऊ–(हि०वि०) देखो लदाव।
लदाना–(हि०क्रि०) लादने का काम दूसरे से कराना।
लदाफँदा–(हि०वि०) बोझ से भरा हुआ।
लदाव–(हि०पुं०) भार, बोझ।
लदुवा, लद्दू–(हि० वि०) बोझ ढोनेवाला, जिस पर भार रखा जावे।
लद्धड़–(हि०वि०) आलसी।
लद्धना–(हि०क्रि०)प्राप्त करना, पाना।
लप–(हि०पुं०), (स्त्री०) लचीली वस्तु को पकड़कर हिलाने से उत्पन्न शब्द।
लपक–(हि०स्त्री०)ज्वाला, लपट। लपकना–(हि०क्रि०) दौड़ पड़ना, झपटना, किसी वस्तु को लेने के लिये झट से हाथफैलाना। लपककर–(क्रि०वि०) बड़े वेग के साथ।
लपझप–(हि०वि०)चंचल,चपल,अधीर।
लपट–(हि०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला, वायु में फैली हुई गरमी, गन्ध।
लपटना–(हि०क्रि०) आलिंगन करना, उलझना, फँसना, घिर जाना।
लपटा–(हि०पुं०)कोई गाढ़ी गीली वस्तु, कढ़ी, लेई, लपसी।
लपटाना–(हि०क्रि०)गलेलगाना,लपेटना।
लपना–(हि०क्रि०) झुकना, लचना।
लपलपाना–(हि०क्रि०) झोंके के साथ इधर-उधर लचना, किसी कोमल वस्तु का हिलना, चमकना। लपलपाहट–(हि०स्त्री०) प्रकाश की चमक, झलक।
लपसी–(हि०स्त्री०)कोई गीली गाढ़ी वस्तु
लपाना–(हि०क्रि०) लचीली वस्तु को झोंक से इधर-उधर फटकारना।
लपेट–(हि०स्त्री०) ऐंठन, मरोड़, उलझन, फँसाव, पकड़, बन्धन, चक्कर।
लपेटन–(हि० स्त्री०) लपेट, ऐंठन, मरोड़, फँसाव। लपेटना–(हि०क्रि०) घुमाव या फेर के साथ चारों ओर फँसाना, फैली हुई वस्तु को गठरी के रूप में करना, फँसाना, लेप करना, पोतना।
लपेटवाँ–(हि० वि०) लपेटकर बनाया हुआ, घुमाव-फिराव का, गूढ़ अर्थ का।
लप्पा–(हि०पुं०)छत की धरन में लगाई हुई लकड़ी।
लबड़धोंधों–(हि०स्त्री०) गड़बड़ी,अन्याय; अनीति।
लबड़ना–(हि०क्रि०) झूठ बोलना।
लबदा–(हि०पुं०) मोटा बेडौल डंडा।
लबदी–(हि०स्त्री०)छोटी पतली छड़ी।
लबरा–(हि०वि०) झूठ बोलनेवाला, गप हाँकनेवाला।
लबार–(हि०वि०) मिथ्यावादी, झूठ बोलनेवाला, गप्पी। लबारी–(हि० वि०) झूठा।
लबी–(हि०स्त्री०) ऊख का पका हुआ गाढ़ा रस, राब।
लबेद–(हि०पुं०) दन्तकथा, लोकाचार।
लबदा–(हि०पुं०) मोटा बड़ा डंडा।
लबेदी–(हि०स्त्री०) मोटा छोटा डंडा।
लब्ध–(सं० वि०) प्राप्त, उपार्जित, कमाया हुआ, गणित में भाग करने से आया हुआ फल। लब्धकाम–(सं०वि०) जिसकी मनोकामना पूरी हो गई हो।
लब्धकीर्ति–(सं०वि०)विख्यात, प्रसिद्ध।
लब्धचेतन–(सं०वि०) जिसने पुनः ज्ञान प्राप्त किया हो।

लब्धांक–(सं०पुं०) गणित करने पर जो अंक प्राप्त हो।

लब्धावकाश, लब्धावसर–(सं०वि०) जिसने अवकाश या छुट्टी पाई हो।

लब्धि–(सं०स्त्री०) लाभ, प्राप्ति, प्राप्त संख्या।

लब्धोदय–(सं०वि०) सौभाग्य-प्राप्त।

लभन–(सं०पुं०) प्राप्ति।

लभ्य–(सं०वि०) उचित, पाने योग्य।

लमकना–(हिं०क्रि०) उत्कण्ठित होना, लपकना।

लमछड़–(हिं०वि०) लंबा और पतला।

लमतड़ंग–(हिं०वि०) बहुत लंबा तथा ऊँचा।

लमधी–(हिं०पुं०) समधी का पिता।

लमाना–(हिं०क्रि०) दूर चले जाना, लंबा होना।

लम्पट–(सं०पुं०) व्यभिचारी, कामुक।

लम्फ–(सं०पुं०) उछाल।

लम्ब–(सं०पुं०) उत्कोच, विषुवत् रेखा के समानान्तर रेखा; (वि०) दीर्घ, लंबा। **लम्बतड़ंग**–(हिं० वि०) ताड़ के समान लंबा।

लम्बन–(सं०पुं०)आश्रय,झूलने की क्रिया

लम्बमान–(सं०वि०)लंबायमान(पदार्थ)

लम्भ–(सं०पुं०) लाभ। **लम्भक**–(सं० वि०) लाभ करनेवाला। **लम्भन**–(सं०पुं०) प्रतिलम्भ, लाभ।

लय–(सं०पुं०) विनाश, लोप, प्रलय, गाने और बजाने का मेल, मूर्छा, गूढ़-अनुराग, लगन।

लयन (सं०पुं०) विश्राम, शान्ति।

लरकई–(हिं०स्त्री०) लड़कपन।

लरकना–(हिं०क्रि०) देखो लटकना।

लरकिनी–(हिं०स्त्री०) देखो लड़की।

लरखराना–(हिं०स्त्री०) लडखड़ाना।

लरजना–(हिं०क्रि०) हिलना, काँपना।

लरझर–(हिं०वि०) प्रचुर, बहुत अधिक।

लरना–(हिं०क्रि०) देखो लड़ना।

लरनि–(हिं०स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा।

लराई–(हिं०स्त्री०) लड़ाई।

लरिकई–(हिं०स्त्री०) लड़कपन।

लरिक सलोरी–(हिं०स्त्री०) लड़कपन।

लरिका–(हिं० पुं०) देखो लड़का।

लरिकाई–(हिं० स्त्री०) लड़कपन।

लरी–(हिं०स्त्री०) देखो लड़ी।

ललक–(हिं० स्त्री०) प्रबल इच्छा। **ललकना**–(हिं०क्रि०) ललचना, उमंग से भरना।

ललकार–(हिं०स्त्री०) लड़ने के लिये बढ़ावा। **ललकारना**–(हिं० क्रि०) लड़ने के लिये बढ़ावा देना, उत्साहित करना।

ललचना–(हिं०क्रि०) लालच करना, लालसा करना, अधीर होना। **ललचाना**–(हिं०क्रि०) किसी के मन में लालसा उत्पन्न करना। **ललचौंहाँ**–(हिं०वि०) लालच से भरा हुआ।

ललन–(सं० पुं०) केलि, क्रीड़ा; (पुं०) दुलारा लड़का।

ललना–(सं०स्त्री०)कामिनी, स्त्री, जीभ।

लला–(हिं०पुं०) प्यारा पुत्र, बच्चों के लिये प्यार का शब्द।

ललाई–(हिं०स्त्री०) लालिमा, लाली।

ललाट–(सं० पुं०) मस्तक, माथा, भाग्य का लेख; **ललाटपटल**–(सं० पुं०) मस्तक।

ललाना–(हिं०क्रि०) ललचाना।

ललाम–(सं०वि०)सुन्दर, मनोहर, लाल, प्रधान, श्रेष्ठ; (सं०पुं०) चिह्न, सींग।

ललित–(सं०वि०) मनोहर, सुन्दर। **ललितकला**–(सं० स्त्री०)वे कलाएँ या

विद्याएँ जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौंदर्य की अपेक्षा होती है।
ललिता–(सं०स्त्री०) कस्तूरी।
लली–(हि०स्त्री०) लड़की के लिये प्रेम का शब्द, दुलारी लड़की।
ललौंहाँ–(हि०वि०) ललाई लिये हुए।
लल्ला–(हि०पुं०) देखो लला।
लल्लो–(हि० स्त्री०) जिह्वा, जीभ।
लल्लोचप्पो, लल्लोपत्तो–(हि० स्त्री०) ठकुरसुहाती।
लव–(सं०पुं०) बहुत छोटी मात्रा, खेत की कटाई, अल्प समय।
लवंग–(सं० पुं०) एक वृक्ष जिसकी कली लौंग कहलाती है। लवंगलता–(सं० स्त्री०) समोसे के आकार की एक बँगला मिठाई।
लवण–(सं० पुं०) नमक, नोन।
लवणता–(सं०स्त्री०) नमकपन।
लवणाकर–(सं० पुं०) नमक की खान।
लवन–(सं० पुं०) छेदन, खेत की उपज की कटाई, लुनाई; (हि०क्रि०) पके हुए अन्न के पौधों को खेत में से काटकर इकट्ठा करना; (हि० स्त्री०) लुनाई, अन्न काटने का शुल्क।
लवर–(हि०स्त्री०) अग्नि की लपट या ज्वाला।
लवलासी–(हि०स्त्री०) प्रेम का लगाव।
लवलीन–(हि०वि०) तन्मय, निमग्न।
लवलेश–(हि०पुं०) अत्यन्त थोड़ी मात्रा, थोड़ा संसर्ग।
लवाई–(हि०स्त्री०) खेत की उपज की कटाई, लवने का शुल्क।
लवासी–(हि० वि०) बकवादी।
लवित्र–(सं०पुं०) हँसिया, हँसुआ।
लशुन–(सं० पुं०) लहसुन।
लषना–(हि०क्रि०) देखो लखना।
लस–(सं०पुं०) चिपकने या चिपकाने का गुण।
लसना–(हि०क्रि०) चिपकाना, सटाना, शोभित होना।
लसनि–(हि०स्त्री०) स्थिति, शोभा।
लसम–(हि०वि०) जो खरा न हो, दूषित।
लसलसा–(हि० वि०) लसदार, चिपचिपा।
लसलसाना–(हि० क्रि०) चिपचिपाना; (स्त्री०) लसदार होने का भाव।
लसित–(हि०वि०) शोभित।
लसी–(हि०स्त्री०) लस मिला हुआ, लगाव, दही और पानी का पेय।
लसीला–(हि०वि०) लसदार, चिपचिपा।
लसुन–(हि०पुं०) देखो लशुन।
लस्टम, पस्टम–(हि०क्रि०वि०) किसी न किसी प्रकार से।
लस्त–(हि० वि०) अशक्त, थका हुआ, साहसहीन।
लस्सी–(हि०स्त्री०) लस, चिपचिपाहट, छाछ, मठा।
लहँगा–(हि०पुं०) स्त्रियों का कमर के नीचे का भाग ढाँपने का घेरेदार पहनावा।
लहक–(हि०स्त्री०) चमक, आग की लपट, छवि, शोभा; (हि०क्रि०) आग का दहकना, उत्कंठित होना। लहकाना (हि०क्रि०) झोंका देना, भड़काना।
लहकारना–(हि०क्रि०) ताव दिलाना, ललकारना।
लहना–(हि०क्रि०) प्राप्त करना; (पुं०) उधार दिया हुआ धन, किसी कारण मिलनेवाला धन।
लहनी–(हि०स्त्री०) प्राप्ति, फल, भोग।
लहबर–(हि०पुं०) ढीला-ढाला पहनावा, चोगा, झंडा।
लहर–(हि०स्त्री०) बड़ा हिलोरा, उमंग;

वक्रगति, मन की मौज, शरीर में रह-रहकर उठनेवाली पीड़ा, आनन्द की उमंग।
लहरना–(हिं०क्रि०) देखो लहराना।
लहरा–(हिं०पुं०) लहर, तरंग, मौज।
लहराना–(हिं० क्रि०) वायु के वेग से इधर-उधर हिलना-डुलना, उत्कंठित होना
लहरिया–(हिं०वि०) ऐसी समानान्तर रेखाओं का समूह जो सीधी न जाकर क्रम से मुड़ती हुई जाती हैं।
लहरी–(सं०स्त्री०) लहर, तरंग; (वि०) तरंगी, मनमौजी।
लहलह–(हिं०वि०) लहलहाता हुआ, आनन्द से फूला हुआ। लहलहा–(हिं० वि०) आनन्दी। लहलहाना–(हिं० क्रि०) प्रफुल्ल होना, सूखे पेड़-पौधों में नई पत्तियाँ निकलना।
लहसुन–(हिं०पुं०) एक पौधा जिसकी जड़ में गोल गाँठ होती है।
लहसुनिया–(हिं०पुं०) धूमिल रंग का एक बहुमूल्य रत्न।
लहा–(हिं०पुं०) देखो लाह।
लहालोट–(हिं०वि०) हँसी में मग्न, मोहित। लहास–(हिं०पुं०) शव।
लहासी–(हिं०स्त्री०) नाव या जहाज बाँधने की मोटी रस्सी।
लहि–(हिं० अव्य०) पर्यन्त, तक।
लहु–(हिं०अव्य०) देखो लौ।
लहुरा–(हिं०वि०) वय में छोटा।
लहू–(हिं०पुं०) रक्त, रुधिर।
लाँक–(हिं०पुं०) कटि, कमर।
लाँग–(हिं०स्त्री०) धोती का वह भाग जो कमर में पीछे की ओर खोंसा जाता है, काछ।
लाँगल–(हिं०पुं०) खेत जोतने का हल, पूँछ। लाँगूली–(हिं०पुं०) बन्दर।
लाँघना–(हिं०क्रि०) उछलकर पार करना, डाँकना।
लाँच–(हिं०स्त्री०) उत्कोच, घूस।
लांछन–(हिं०पुं०) देखो लाञ्छन।
लाँबा–(हिं०वि०) देखो लंबा।
लाइ–(हिं०पुं०) लुक, अग्नि।
लाइची–(हिं०स्त्री०) देखो इलाइची।
लाई–(हिं०स्त्री०) धान का लावा, चुगली।
लाकड़ी–(हिं०स्त्री०) देखो लकड़ी।
लाक्षणिक–(सं०पुं०) वह जो लक्षणों को जानता हो; (वि०) लक्षण संबंधी।
लाक्षा–(सं०स्त्री०) लाख, लाह।
लाक्षारस–(सं०पुं०) महावर।
लाख–(हिं०वि०) सौ हजार, बहुत अधिक; (पुं०) सौ हजार की संख्या।
लाखना–(हिं० क्रि०) लाख लगाकर किसी वस्तु का छेद बन्द करना।
लाखपति–(हिं०पुं०) देखो लखपती।
लाग–(हिं०स्त्री०) संपर्क, युक्ति, उपरा-चढ़ी, विशेष कौशल का स्वाँग जिसकी रचना जल्दी समझ में न आवे, वैर; (क्रि०वि०) पर्यन्त, तक। लागडाँट–(हिं०स्त्री०) प्रतिस्पर्धा, शत्रुता।
लागत–(हिं०स्त्री०) वह व्यय जो किसी वस्तु के तैयार करने में लगे।
लागना–(हिं०क्रि०) देखो लगना।
लागि–(हिं०अव्य०) निमित्त, लिये, हेतु, से; (क्रि० वि०) पर्यन्त, तक।
लाग–(हिं०वि०) लगन या प्रयोग में आने योग्य।
लागे–(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।
लाघव–(सं०पुं०) अल्पत्व, कमी, लघुता, अल्पता, हाथ की चातुरी।
लाङ्गूल–(सं०पुं०) पूँछ।
लाङ्गूली–(सं०पुं०) बन्दर।

लाची–(हिं०स्त्री०) इलायची ।
लाज–(हिं०स्त्री०) लज्जा ।
लाजक–(सं०पुं०) धान का लावा ।
लाजना–(हिं०क्रि०) लज्जित होना ।
लाजभक्त–(सं०पुं०) लावे का भात ।
लाजमण्ड–(सं० पुं०) लावा पकाकर इसमें से निकाला हुआ माँड़ ।
लाजवंत–(हिं०वि०) जिसको लज्जा हो ।
लाजशक्तु–(सं०पुं०) लावे का सत्तू ।
लाजा–(सं०स्त्री०) भूना हुआ धान, लावा ।
लाञ्छन–(सं०पुं०) चिह्न, दोष, कलंक ।
लाट–(हिं०स्त्री०) मोटा ऊँचा खंभा ।
लाटी–(हिं०स्त्री०) ओठों तथा मुख का सूख जाना ।
लाठ–(हिं०पुं०) देखो लाट ।
लाठी–(हिं०स्त्री०) लकड़ी, डंडा ।
लाड़–(हिं०पुं०) बच्चों का प्यार या दुलार ।
लाड़ला–(हिं०वि०) दुलारा ।
लाड़ली–(हिं०वि०स्त्री०) दुलारी ।
लाड़ू–(हिं०पुं०) लड्डू, मोदक ।
लात–(हिं०स्त्री०) पर, पाँव, पैर का आघात ।
लाद–(हिं०स्त्री०) लादने की क्रिया, आँत, अँतड़ी ।
लादना–(हिं०क्रि०) पीठ पर भार रखना, पीठ पर उठा लेना ।
लादिया–(हिं०पुं०) बोझ लादनेवाला ।
लादी–(हिं०स्त्री०) कपड़ों की गठरी जो पशु की पीठ पर लादी जाती है ।
लाधना–(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, पाना ।
लाना–(हिं०क्रि०) साथ लेकर आना, उत्पन्न करना ।
लान–(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये ।
लाप–(सं०पुं०) कथन, वार्ता ।
लापी–(सं०वि०) कहनेवाला ।
लाभ–(सं० पुं०) प्राप्ति, उपकार, भलाई । लाभकारक–(सं०वि०) लाभदायक । लाभकारी–(सं०वि०) लाभ करनेवाला । लाभदायक–(सं० वि०) गुणकारी ।
लाम–(हिं०पुं०) सेना, बहुत से मनुष्य का समूह ।
लामे–(हिं०क्रि० वि०) दूर पर ।
लायची–(हिं०स्त्री०) देखो इलायची
लार–(हिं०स्त्री०) वह पतला लसदार थूक जो मुँह में से तार के रूप में निकलता है; (क्रि०वि०) पीछे, साथ
लारू–(हिं०पुं०) लड्डू ।
लाल–(हिं०पुं०) छोटा प्रिय बालक, दुलार, प्यार, लाल रंग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया, मानिक नाम का रत्न (वि०) लाल रंग का, अति क्रुद्ध ।
लालच–(हिं०पुं०) तीव्र लालसा, लोभ ।
लालची–(हिं०वि०) अति लोभी ।
लालन–(सं० पुं०) प्रेमपूर्वक बालकों का आदर, लाड़-प्यार; (हिं० पुं०) प्रिय बालक । लालना–(हिं०क्रि०) लाड़ करना ।
लालमन–(हिं० पुं०) एक प्रकार का लाल तोता जिसका शरीर लाल, डैने हरे, चोंच गुलाबी और दुम काली होती है
लालमिर्च–(हिं०स्त्री०) मिरचा, मरचा ।
लालयितव्य–(सं०वि०) लालन-पालन करने योग्य ।
लालसा–(सं०स्त्री०) अधिक अभिलाषा, उत्सुकता ।
लालसिखी–(हिं०पुं०) मुरगा ।
लालसी–(हिं०वि०) अभिलाषी, उत्सुक ।
लाला–(सं०स्त्री०) मुख से निकलनेवाली लार, थूक; (हिं०पु०) आदरसूचक एक संबोधन का शब्द, महाशय,

इस शब्द का व्यवहार पंजाब में अधिकतर होता है, कायस्थ जाति सूचक शब्द, छोटे प्रिय बच्चे के लिये संबोधन ।
लालायित–(सं०वि०) ललचाया हुआ ।
लालित्य–(सं०पुं०) ललित होने का भाव, मनोहरता, सुन्दरता, अरुणाई, ललाई ।
लाली–(सं०स्त्री०) लाल होने का भाव ।
लाले–(हिं०पुं०) लालसा, अभिलाषा ।
लावण्य–(सं० पुं०) लवणत्व, अत्यन्त सुन्दरता ।
लावनता–(हिं०स्त्री०) देखो लावण्य ।
लावना–(हिं०क्रि०) लगाना, स्पर्श करना, देखो लाना ।
लावनि–(सं०स्त्री०) सौंदर्य, लावण्य ।
लावा–(हिं०पुं०) भूना हुआ धान ।
लषना–(हिं०क्रि०) देखो लखना ।
लास–(सं०पुं०) एक प्रकार का नाच, मटक, जूस ।
लासक–(सं०पुं०) नाचनेवाला, मोर ।
लासा–(हिं०पुं०) कोई लसदार या चिपचिपी वस्तु, वह चिपचिपा पदार्थ जिससे बहेलिये चिड़ियों को फँसाते हैं ।
लास्य–(सं० पुं०) भाव और तालसहित नाच ।
लाह–(हिं०स्त्री०) लाख, चपड़ा; (पुं०) लाभ ।
लाही–(हिं०स्त्री०) लाल रंग का वह छोटा कीड़ा जो वृक्षों पर लाह उत्पन्न करता है (वि०) मटमैले लाल रंग का ।
लाहु–(हिं०पुं०) लाभ ।
लिए–(हिं०) हिंदी के कारक का एक चिह्न जो संप्रदान में प्रयोग किया जाता है, जिस शब्द के साथ यह लगाया जाता है उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित होता है, यथा–मैं तुम्हारे लिए पुस्तक लाया हूँ ।
लिक्खाड़–(हिं०पुं०) बहुत लिखनेवाला, बड़ा भारी लेखक ।
लिक्षा–(सं०स्त्री०) जूं का अंडा, लीख ।
लिखत–(हिं०स्त्री०) लिखी हुई बात ।
लिखन–(सं० पुं०) लिपि, लिखावट ।
लिखना–(हिं० क्रि०) किसी नुकीली वस्तु से रेखा रूप में चिह्नित करना, अंकित करना, स्याही में डुबाकर लेखनी से आकृति बनाना ।
लिखनी–(हिं०स्त्री०) देखो लेखनी ।
लिखवाई–(हिं०स्त्री०) देखो लिखाई ।
लिखवाना–(हिं०क्रि०) लिखने का काम दूसरे से कराना । **लिखाई**–(हिं० स्त्री०) लिखने का कार्य, लिखने का ढंग, लिखावट, लिखने का शुल्क ।
लिखाना–(हिं०क्रि०) अंकित कराना, दूसरे से लिखने का काम कराना ।
लिखापढ़ी–(हिं०स्त्री०) पत्र-व्यवहार ।
लिखावट–(हिं०स्त्री०) लिखने का ढंग । **लिखित**–(सं० वि०) लिखा हुआ (पुं०) लिपि, लेख, प्रमाणपत्र ।
लिङ्ग–(सं० पुं०) चिह्न, लक्षण, हेतु, व्याकरण में वह भेद जिससे स्त्री पुरुष का पता लगता है । **लिङ्गशरीर**–(सं० पुं०) सूक्ष्म शरीर । **लिङ्गविपर्यय**–(सं०पुं०) व्याकरण में लिङ्ग का परिवर्तन ।
लिङ्गानुशासन–(सं० पुं०) व्याकरण में शब्दों के लिङ्गनिरूपण करने के नियम ।
लिटाना–(हिं० क्रि०) लेटने की क्रिया कराना ।
लिट्ट–(हिं०पुं०) रोटी जो विना तवे के आग पर ही सेंकी जावे, बाटी ।
लिपटना–(हिं० क्रि०) चिपटना, सट जाना, तन्मय होना । **लिपटाना**–(हिं० क्रि०) चिमटाना, गले लगाना ।

लिपना–(हिं०क्रि०) किसी रंग या गीली वस्तु से पोता जाना, किसी गीली वस्तु का फैल जाना। लिपवाना–(हिं०क्रि०) लीपने-पोतने का काम दूसरे से कराना। लिपाई–(हिं०स्त्री०) लीपने-पोतने की क्रिया या भाव। लिपाना–(हिं०क्रि०) रंग अथवा किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना।

लिपि–(सं०स्त्री०) लिखावट, वर्ण अंकित करने की पद्धति, लिखे हुए अक्षर। लिपिकार–(सं०पुं०) लेखक। लिपि-बद्ध–(सं०वि०) लिखित, लिखा हुआ।

लिप्त–(सं०वि०) पोता हुआ, मिला हुआ, अनुरक्त, तत्पर, संलग्न।

लिप्सा–(सं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा, लालच। लिप्सु–(सं०वि०) लाभ की इच्छा करनेवाला।

लिबड़ी–(हिं०स्त्री०) कपड़ा-लत्ता।

लिलाट, लिलार–(हिं०पुं०) देखो ललाट।

लिवाना–(हिं०क्रि०) लेने का काम दूसरे से कराना।

लिवाल–(हिं०पुं०) मोल लेनेवाला।

लिवया–(हिं०पुं०) लेनेवाला।

लिहाड़ा–(हिं०वि०) नीच, निकम्मा।

लिहाड़ी–(हिं०स्त्री०) उपहास, निन्दा।

लिहित–(हिं०वि०) चाटता हुआ।

लीक–(हिं०स्त्री०) चिह्न, लकीर, रेखा, झुर्री, गिनती के लिए लगाया हुआ चिह्न, हद, रीति, प्रथा।

लीख–(हिं०स्त्री०) जूं का अण्डा।

लीचड़–(हिं०वि०) जल्दी से न छोड़नेवाला।

लीची–(हिं०स्त्री०) एक सदाबहार वृक्ष जिसका फल खाने में मीठा होता है।

लीद–(हिं०स्त्री०) घोड़े, गधे, ऊँट, हाथी आदि पशुओं का मल।

लीन–(सं०वि०) तन्मय, मग्न।

लीनता–(सं०स्त्री०) तत्परता।

लीपना–(हिं०क्रि०) मिट्टी गोबर आदि की पतली तह चढ़ाना, पोतना।

लील–(हिं०वि०) नीला, नीले रंग का; (पुं०) नील।

लीलना–(हिं०क्रि०) निगलना।

लीला–(सं०स्त्री०) क्रीड़ा, खल, विचित्र कार्य, अवतारों का अभिनय; (हिं०पुं०) काले रंग का घोड़ा।

लीलाब्ज–(सं० पुं०) नीला कमल।

लीलावतार–(सं० पुं०) वह अवतार जिसमें विष्णु ने लीला दिखलाई थी। लीलामनुष्य–(सं० पुं०) छद्मवेशी मनुष्य।

लीलावती–(सं०स्त्री०) प्रसिद्ध ज्योतिविद भास्कराचार्य की पत्नी का नाम जिन्होंने गणित की एक पुस्तक लिखी थी।

लीली–(हिं०वि०) देखो नीली।

लुंगाड़ा–(हिं०पुं०) नीच, लुच्चा।

लुंगी–(हिं०स्त्री०) कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा।

लुंज–(हिं०वि०) बिना हाथ पैर का, लँगड़ा, लूला। लुंडमुंड–(हिं०पुं०) बिना सिर का धड़, कबंध।

लुंडा–(हिं०वि०) जिसकी पूंछ पर बाल न हों।

लुआठा–(हिं०पुं०) वह लकड़ी जिसका एक छोर जलता हो; लुआठी–(हिं० स्त्री०) सुलगती हुई लकड़ी।

लुआर–(हिं०स्त्री०) लू।

लुक–(हिं०पुं०) आग की लपट, लौ।

लुकठी–(हिं०स्त्री०) देखो लुआठी।

लुकना–(हिं०क्रि०) आड़ में छिप जाना।

लुकाना, लुकोना–(हिं० क्रि०) आड़ में रखना, छिपाना।

लुक्कायित–(सं० बि०) लुकाया हुआ, छिपाया हुआ ।
लुखिया–(हिं०स्त्री०) धूर्त स्त्री, वेश्या ।
लुगदा–(हिं०पुं०) किसी गीली वस्तु का लोंदा । लुगदी–(हिं०स्त्री०)गीली वस्तु का छोटा गोला ।
लुगरी–(हिं०स्त्री०) फटी पुरानी धोती ।
लुगा–(हिं०स्त्री०) पुराना वस्त्र ।
लुगाई–(हिं०स्त्री०) स्त्री ।
लुगा–(हिं०पुं०) देखो लूगा, वस्त्र ।
लुचकना–(हिं०क्रि०) झटके से खींचना । लुचवाना–(हिं०क्रि०) नोचवाना ।
लुचुई–(हिं०स्त्री०) मदे की पतली पूरी, लूची ।
लुच्चा–(हिं०वि०)दुराचारी, कुचाली ।
लुच्ची–(हिं०वि०स्त्री०) खोटी, नीच ।
लुञ्चन–(सं० पुं०) उखाड़ना, नोचना ।
लुञ्चित–(सं०वि०) नोचा हुआ ।
लुटंत–(हिं०स्त्री०) लूट ।
लुटकना–(हिं०क्रि०) देखो लटकना ।
लुटना–(हिं०क्रि०) लूटा जाना ।
लुटाना- (हिं०क्रि०) दूसरे को लूटने देना, व्यर्थ फेंकना या व्यय करना, अति दान करना ।
लुटिया–(हिं०स्त्री०)धातु का छोटा लोटा
लुटेरा–(हिं०पुं०) डाकू ।
लुठना–(हिं०क्रि०) भूमि पर लोटना, लुड़ना । लुड़कना–(हिं०क्रि०) देखो लुढ़कना । लुड़खुड़ाना–(हिं०क्रि०) देखो लड़खड़ाना ।
लुढ़कना–(हिं०क्रि०) चक्कर खाना, ढुलकना । लुढ़काना–(हिं०क्रि०)भूमि पर इस प्रकार चलाना कि नीचे-ऊपर होता हुआ कुछ दूर तक बढ़ता जाय ।
लुढ़ियाना–(हिं०क्रि०) गोल बत्ती की तरह की सिलाई करना ।
लुण्टक–(सं०पुं०) एक प्रकार का साग ।
लुण्ठक–(सं०पुं०) लुटेरा । लुण्ठन–(सं०पुं०) लूटना, चुराना ।
लुण्ड–(सं०वि०)बिना हाथ-पैर का,लँगड़ा
लुण्डी–(सं०स्त्री०) लपेटे हुए सूत की गोली ।
लुतरा–(हिं०वि०)पिशुन,नटखट । लुतरी–(हिं०वि०स्त्री०) पिशुन स्त्री ।
लुनना–(हिं०क्रि०) खेत की तैयार उपज को काटना ।
लुनेरा–(हिं०पुं०)खेतकीउपज काटनेवाला
लुप्त–(सं०वि०) छिपा हुआ, अदृश्य ।
लुबुध–(हिं०वि०) देखो लुब्ध । लुबुधा–(हिं०वि०) लोभी, लालची ।
लुब्ध–(सं०वि०) लोभयुक्त, मोहित ।
लुब्धक–(सं०पुं०)व्याध, बहेलिया,लम्पट ।
लुभाना–(हिं०क्रि०) लुब्ध होना, मोह में पड़ना, लालच में पड़ना, मोहित करना, ललचाना ।
लुभित–(सं०वि०) लुभाया हुआ ।
लुटकी, लुरकी–(हिं०स्त्री०) कान में पहनने की छोटी बाली, मुरकी ।
लुरना–(हिं०क्रि०) लहराना, झूलना ।
लुरयाना–(हिं०क्रि०) सहसा आ जाना ।
लुलना–(हिं०क्रि०) देखो लुरना ।
लुलित–(सं०वि०) झूलता हुआ ।
लुवार–(हिं०पुं०)वेग की गरम हवा, लू ।
लुहना–(हिं०क्रि०) देखो लुभाना ।
लुहार–(सं०पुं०) लोहे की वस्तुओं को बनानेवाला । लुहारिन–(हिं०स्त्री०) लुहार की स्त्री । लुहारी–(हिं०स्त्री०) लोहे की वस्तु बनाने का काम ।
लू–(हिं०स्त्री०)ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा ।
लूक–(हिं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला, लुआठी, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा, उल्का, टूटता तारा ।

लूकर–(हिं०पुं०) लुआठी।
लूकना–(हिं०क्रि०) आग लगाना।
लूका–(हिं०पुं०) अग्नि की ज्वाला या लपेट, लुआठी।
लूकी–(हिं०स्त्री०) स्फुलिंग, चिनगारी।
लूक्ष–(हिं०वि०) रूखा, रूक्ष।
लूगा–(हिं०पुं०) वस्त्र, कपड़ा।
लूट–(हिं०स्त्री०) डकैती, लूटने से मिला हुआ माल। लूटना–(हिं०क्रि०) छीनना, धोखे से या अन्यायपूर्वक किसी का धन हर लेना।
लूटमार, लूटपाट–(हिं०पुं०) मार-पीट-कर किसी का धन छीन लेना।
लूता–(सं०स्त्री०) मकड़ी; (हिं०पुं०) लुआठी। लूतातन्तु–(हिं०पुं०) मकड़े का जाला।
लूतक–(सं०स्त्री०) मकड़ी।
लूती–(सं०स्त्री०) लुआठी।
लूमना–(हिं०क्रि०) लटकना।
लूमविष–(सं०पुं०) बिच्छू।
लूला–(हिं०वि०) जिसका हाथ कट गया हो या बेकाम हो गया हो, लूंजा।
लूल–(हिं०वि०) मूर्ख।
लेंड़–(हिं०पुं०) बँधी हुई मल की बत्ती।
लेंड़ी–(हिं०स्त्री०) बकरी, ऊँट आदि की मेंगनी।
लेंहड़, लेंहड़ा–(हिं०पुं०) भेंड़ आदि का झुंड।
ले–(हिं०अव्य०) आरंभ होकर, तक, पर्यन्त।
लेई–(हिं०स्त्री०) अवलेह, गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ, लपसी।
लेख–(सं०पुं०) लिपि, लिखी हुई बात, लिखाई, लिखावट; (हिं० स्त्री०) पक्की बात, लकीर। लेखक–(सं० पुं०) लिखनेवाला, ग्रन्थकार। लेखन–(सं०पुं०) लिखने का कार्य, चित्र बनाना। लेखना–(हिं०क्रि०) लिखना, गिनना, चित्र बनाना।
लेखनी–(सं०स्त्री०) लिखने का साधन, कलम।
लेखनीय–(सं०वि०) लिखने योग्य; (सं० पुं०) लिखा हुआ कागज। लेखपत्रिका–(सं०स्त्री०) लिखे हुए आवश्यक पत्र। लेखप्रणाली–(सं०स्त्री०) लिखने का ढंग। लेख-हार–(सं०पुं०) पत्रवाहक, चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला।
लेखा–(सं०स्त्री०) लिखावट, रेखा; (हिं०पुं०) हिसाब, किताब, गिनती, कूत, अनुमान, आय-व्यय आदि का विवरण।
लेखा बही–(हिं०स्त्री०) वह बही जिसमें रोकड़ के लेन-देन का हिसाब लिखा जाता है।
लेखिका–(सं०स्त्री०) पुस्तक लिखनेवाली
लेखित–(सं०वि०) लिखा या लिखवाया हुआ।
लेख्य–(सं०वि०) लेखनीय, लिखा जानेयोग्य
लेख्यस्थान–(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर लिखने-पढ़ने का काम होता है।
लेजुर, लेजुरी–(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी।
लेट–(हिं०स्त्री०) चूना और कंकड़ पीटी हुई छत।
लेटना–(हिं०क्रि०) हाथ पैर तथा संपूर्ण शरीर भूमि या बिस्तर पर पड़ा रखना।
लेटाना–(हिं०क्रि०) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।
लेन–(हिं० पुं०) लेने की क्रिया या भाव, लहना।
लेन-देन–(हिं०पुं०) लेने और देने का व्यवहार, महाजनी। लेनहार–(हिं० वि०) लेनेवाला, लहनेदार।

लेना–(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, थामना, स्वीकार करना, संचय करना, पहुँचना, अगवानी करना, ऋण लेना, जीतना, मोल लेना, अधिकार में करना।

लेप–(सं०पुं०) लेई के समान कोई गाढ़ी वस्तु जो किसी वस्तु के ऊपर फैलाकर चढ़ाई जाती है, उबटन। **लेपना**–(हिं०क्रि०) फैलाकर पोतना।

लेर–(हिं०स्त्री०) लहर।

लेव–(हिं०पुं०) लेप, कहगिल, लेवा।

लेवा–(हिं०पुं०) मिट्टी का गिलावा, कहगिल, लेप। **लेवाल**–(हिं०पुं०) लेनेवाला।

लेश–(सं०पुं०) कण, अणु, सूक्ष्मता।

लेषना–(हिं०क्रि०) देखो लेखना, लिखना

लेसना–(हिं०क्रि०) जलाना, चिपकाना, सटाना, पोतना, चुगली खाना, उत्तेजित करना।

लेहना–(हिं०पुं०) खेत में कटी हुई उपज का वह अंश जो काम करनेवालों को दिया जाता है।

लेहाड़ी–(हिं०स्त्री०) अप्रतिष्ठा, अपमान।

लैं–(हिं०अव्य०) पर्यन्त, तक।

लों–(हिं०अव्य०) तक।

लोंदा–(हिं०पुं०) किसी गीले पदार्थ का बँधा हुआ गोला।

लो–(हिं० अव्य०) इसका प्रयोग श्रोता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिये होता है।

लोइ–(हिं०पुं०) लोग, जन।

लोई–(हिं०स्त्री०) गूंधे हुए आटे की गोली जिसको बलकर रोटी बनाई जाती है, एक प्रकार का कम्बल।

लोइन–(हिं०पुं०) लावण्य।

लोक–(सं०पुं०) भुवन, प्राणी, जन, मनुष्य, प्रदेश, दिशा, यश, कीर्ति, संसार। **लोककंटक**–(सं०पुं०) दुष्ट मनुष्य। **लोककथा**–(सं०स्त्री०) जनश्रुति। **लोकगति**–(सं०स्त्री०) जीवनयात्रा। **लोकगाथा**–(सं० स्त्री०) जन श्रुति।

लोकगुरु–(सं०पुं०) जगद्गुरु।

लोकचरित्र–(सं० पुं०) मनुष्य के जीवन का इतिहास। **लोकष्टी**–(हिं०स्त्री०) लोमड़ी। **लोकतन्त्र**–(सं० पुं०) संसार का इतिहास।

लोकधुनि–(सं० स्त्री०) जनश्रुति।

लोकना–(हिं०क्रि०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथ से पकड़ लेना।

लोकपति–(सं०पुं०) विष्णु, लोकपाल।

लोकपथ–(सं०पुं०) साधारण पथ या उपाय। **लोकपाल**–(सं०पुं०) दिक्पाल।

लोकप्रवाद–(सं० पुं०) जनप्रवाद, जनश्रुति। **लोकमार्ग**–(सं०पुं०) प्रचलित रीति, साधारण पन्थ। **लोकयात्रा**–(सं०स्त्री०) संसारयात्रा, व्यापार। **लोकरञ्जन**–(सं० पुं०) जनता को प्रसन्न करनेवाला। **लोकरव**–(सं० पुं०) जनश्रुति। **लोकरा**–(हिं०पुं०) चिथड़ा।

लोकलोचन–(सं०पुं०) सूर्य।

लोकवचन–(सं० पुं०) जनप्रवाद।

लोकवाद–(सं०पुं०) जनश्रुति। **लोकवार्ता**–(सं०स्त्री०) जनरव।

लोकवृत्त–(सं० पुं०) लौकिक आचार। **लोकवृत्तान्त**–(सं०पुं०) मनुष्य-चरित्र, इतिहास। **लोकव्यवहार**–(सं०पुं०) सर्व साधारण में प्रचलित रीति। **लोकश्रुति**–(सं०स्त्री०) जनश्रुति। **लोकसिद्ध**–(सं०वि०) प्रचलित, प्रसिद्ध। **लोकस्थिति**–(सं० स्त्री०) प्रचलित नियम। **लोकहित**–(सं०पुं०) संसार

को भलाई । लोकाचार–(सं०पुं०) जन-समूह का आचार।
लोकाधिप लोकाधिपति–(सं० पुं०) लोकपाल, देवता ।
लोकाना–(हिं०क्रि०)फेंकना, उछालना।
लोकानुग्रह–(सं०पुं०)संसार की भलाई।
लोकानुराग–(सं०पुं०) संसार का प्रेम ।
लोकान्तर–(सं० पुं०) परलोक ।
लोकापवाद–(सं० पुं०) लोक-निन्दा, जनापवाद ।
लोकोक्ति–(सं०स्त्री०) कहावत ।
लोकोत्तर–(सं०वि०)अद्‌भुत, विलक्षण।
लोखर–(हिं०पुं०) नाई, बढ़ई, लुहार आदि के औजार ।
लोग–(हिं०पुं०) जन, मनुष्य ।
लोगाई–(हिं०स्त्री०) देखो लुगाई, स्त्री।
लोच–(हिं०पुं०) लचक, कोमलता, अभिलाषा ।
लोचन–(सं० पुं०) आँख, नेत्र ।
लोचन-पथ–(सं०पुं०) दृष्टि-मार्ग ।
लोचन-हित–(सं० वि०) नेत्रों के लिये लाभदायक । लोचना–(हिं० क्रि०) प्रकाशित करना,शोभितहोना,ललचाना।
लोचून–(हिं०पुं०) लोहे का चूर ।
लोट–(हिं स्त्री०) लोटने की क्रिया या भाव ।
लोटना–(हिं० क्रि०) लुढ़कना, विश्राम करना, लेटना, चकित होना ।
लोटा–(हिं०पुं०) पानी आदि रखनें का धातु का बना हुआ छोटा पात्र।
लोटिया–(हिं०स्त्री०) छोटा लोटा ।
लोटी–(हिं०स्त्री०) छोटा लोटा ।
लोढ़ा–(हिं०पुं०) सिल पर किसी वस्तु को पीसने का पत्थर का गोल लंबोतरा टुकड़ा, बट्टा। लोढ़िया–(हिं० स्त्री०) छोटा लोढ़ा, बट्टा।
लोथ–(हिं०स्त्री०) शव ।
लोथड़ा–(हिं०पुं०) मांस का बड़ा पिण्ड जिसमें हड्डी न हो।
लोन–(हिं०पुं०) लवण, नमक ।
लोना–(हिं०वि०) नमकीन, सुन्दर ।
लोनाई–(हिं०स्त्री०)लावण्य, सुन्दरता।
लोनार–(हिं०स्त्री०) नमक बनाने का स्थान
लोप–(सं०पुं०) विच्छेद, क्षय, नाश, अभाव, अदर्शन, व्याकरण का वह नियम जिसके अनुसार शब्द-साधन में कोई वर्ण हटा दिया जाता है । लोपक–(सं०वि०) विघ्न या बाधा डालनेवाला।
लोपना–(हिं०क्रि०) लुप्त होना, छिनना, मिटाना ।
लोप्त्र–(सं० पुं०) चोरी का माल ।
लोवा–(हिं०स्त्री०) लोमड़ी ।
लोभ–(सं०पुं०)लालच,आकांक्षा, लिप्सा ।
लोभना–(हिं०क्रि०) मुग्ध करना ।
लोभनीय–(सं०वि०) लोभ के योग्य ।
लोभाना–(हिं०क्रि०) मुग्ध होना, मोहित करना । लोभित–(सं०वि०) लुब्ध ।
लोभी–(सं० वि०) अधिक लोभ करनेवाला, लालची ।
लोम–(सं० पुं०) शरीर के रोवें, रोवाँ, बाल; (हिं०पुं०) लोमड़ी । लोमकूप–(सं०पुं०) शरीर में रोम की जड़ में का छिद्र ।
लोमघ्न–(सं०वि०) लोमनाशक ।
लोमड़ी–(हिं०स्त्री०) कुत्ते या गीदड़ की जाति का एक वन्य पशु ।
लोमविवर–(सं० पुं०) रोमकूप ।
लोमश–(सं० वि०) बड़े बड़े रोवेंवाला।
लोमहर्ष–(सं०पुं०) रोमांच, पुलक ।
लोमास–(सं०पुं०) गीदड़ ।
लोय–(हिं०पुं०) नयन, आँख; (स्त्री०) आग की लौ,लपट; (अव्य०) देखो लौं ।

लोयन–(हिं०पुं०) नयन, नेत्र।
लोर–(हिं०पुं०) कान का कुण्डल, लटकन, आँसू; (वि०) उत्सुक, चंचल।
लोरना–(हिं०क्रि०) चंचल होना।
लोल–(सं० वि०) चंचल, हिलता-डोलता हुआ, अति उत्सुक।
लोलक–(सं० पुं०) बाली में पहनाने का लटकन, घंटी में का लटकन।
लोलना–(हिं०क्रि०) हिलना।
लोला–(सं० स्त्री०) जिह्वा, जीभ, चंचल स्त्री।
लोलित–(सं०वि०) शिथिल, ढीला।
लोलिनी–(सं०स्त्री०) चंचल प्रकृति की स्त्री।
लोलुप–(सं०वि०) बड़ा लोभी, चटोरा, परम उत्सुक। लोलुपता–(सं०स्त्री०) लालच।
लोवा–(हिं०स्त्री०) लोमड़ी।
लोष्ट–(सं०पुं०) ईंट या पत्थर का टुकड़ा, ढेला।
लोहँड़ा–(हिं० पुं०) लोहे की छोटी कड़ाही, तसला।
लोह–(सं०पुं०) लोहा नामक धातु।
लोहकान्त–(सं० पुं०) चुंबक।
लोहकार–(सं०पुं०)लोहार। लोहकिट्ट–(सं० पुं०) लोहे की मैल।
लोहचूर्ण–(सं० पुं०) लोहे का बुरादा।
लोहनाल–(सं०पुं०) नाराच नाम का अस्त्र। लोहपाश–(सं०पुं०) लोहे की जंजीर। लोहवर्म–(सं० पुं०) लोहे का कवच। लोहशंकु–(सं० पुं०) लोहे का खूँटा।
लोहसार–(सं०पुं०) पक्का लोहा।
लोहांगी–(हिं०स्त्री०) वह छड़ी जिसके किनारे पर लोहा लगा रहता है।
लोहा–(हिं०पुं०) इस नाम का प्रसिद्ध धातु, अस्त्र, लोहे की बनी वस्तु, लाल रंग का बैल; (वि०) लाल, बहुत कड़ा।
लोहाना–(हिं०स्त्री०) लोहे की वस्तु में खाद्य पदार्थ रखने से लोहे का रंग या स्वाद आ जाना।
लोहार–(हिं० पुं०) एक जाति जो लोहे की चीजें बनाती है। लोहारी–(हिं० स्त्री०) लोहार का काम।
लोहित–(सं०वि०) लाल रंग का।
लोहिताक्ष–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल; (वि०) जिसकी आँखें लाल हों।
लोहितोत्पल–(सं०पुं०) लाल कमल।
लोहितोर्ण–(सं०वि०) जिसके ऊन लाल रंग के हों।
लोहिया–(हिं०पुं०) लोहे का व्यापार करनेवाला, लाल रंग का बैल।
लोहू–(हिं०पुं०) रक्त, रुधिर।
लौं–(हिं०अव्य०) पर्यंत, तक, तुल्य, समान।
लौंकना–(हिं०क्रि०) चमकना, देख पड़ना।
लौंग–(हिं०पुं०) एक वृक्ष की कली जो खिलने के पहले ही तोड़ ली जाती है, लौंग के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं।
लौंडा–(हिं०पुं०) छोकरा, बालक (वि०) अबोध, छिछोरा। लौंडापन–(हिं०पुं०) लड़कपन।
लौंड़ी–(हिं०स्त्री०) दासी।
लौंन–(हिं०पुं०) देखो लवन।
लौ–(हिं०स्त्री०) आग की लपट, ज्वाला, दीपक की टेम, आशा, कामना।
लौलीन–ध्यान में मग्न।
लौआ–(हिं०पुं०) कद्दू, घीआ।
लौकना–(हिं०क्रि०) दूर से देख पड़ना।
लौकिक–(सं०वि०) व्यावहारिक, सांसारिक, लोक संबंधी।
लौकी–(हिं०स्त्री०) कद्दू, घीया।

लौट–(हिं०स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव। लौटना–(हिं०क्रि०) कहीं पर जाकर फिर से वापस आना, पलटना।
लौटान–(हिं०स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव। लौटाना–(हिं०क्रि०) फेरना, पलटाना।
लौटानी–(हिं०क्रि०वि०) लौटती समय।
लौनहार–(हिं०पुं०) खेत की लवन करनेवाला, खेत काटनेवाला।
लौन–(हिं०पुं०) लवण, नमक।
लौना–(हिं०पुं०) खेत काटने का काम।
लौनी–(हिं०स्त्री०) कृपिकाल की कटाई, लहना।
लौरी–(हिं०स्त्री०) बछिया।
लौल्यता–(सं०स्त्री०) चंचलता, उत्कट इच्छा।
लौहकार–(सं०पुं०) लुहार। लौहकिट्ट–(सं०पुं०) मण्डूर। लौहयन्त्र–(सं०पुं०) लोहे की कल।
ल्याना–(हिं०क्रि०) देखो लाना।
ल्यारी–(हिं०पुं०) भेड़िया।
ल्यावना–(हिं०क्रि०) देखो लाना।
ल्वारि–(हिं०स्त्री०) देखो लू, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा।

व

व–हिन्दी या संस्कृत वर्णमाला का उनतीसवाँ व्यञ्जन वर्ण, यह अन्तस्थ अर्ध व्यञ्जन माना जाता है, इसका उच्चारण-स्थान दंत अथवा दन्तोष्ठ माना जाता है।
व–(सं०पुं०) वायु, बाहु, अस्त्र, मद्य, वृक्ष; (वि०) बलवान्; (अव्य०) ऐसा।
वंक, वंकट–(हिं० वि०) वक्र, टेढ़ा।
वंकिम–(हिं०वि०) झुका हुआ, टेढ़ा।
वंग–(हिं०पुं०) वङ्ग, राँगा।
वंचक, वंचना, वंचित–देखो वञ्चक, वञ्चना, वञ्चित। वंदन, वंदित, वंदी–देखो वन्दन, वन्दित, वन्दी।
वंश–(सं०पुं०) सन्तति, गोत्र, कुल, जाति, पीठ की रीढ़, वर्ग।
वंशकर–(सं०पुं०) वह पुरुष जिससे किसी वंश का आरंभ होता है।
वंशकीर्ति–(सं०स्त्री०) वंश का गौरव।
वंशक्षय–(सं०पुं०) वंश का नाश।
वंशचरित्र–(सं०पुं०) वंश का इतिहास।
वंशज–(सं० पुं०) जिसका जन्म कुल में हुआ हो।
वंशधर–(सं०स्त्री०) सन्तति, सन्तान।
वंशधारा–(सं०स्त्री०) कुलपद्धति।
वंशपूरक–(सं०पुं०) ईख की आँख।
वंशमय–(सं०वि०) बाँस का बना हुआ।
वंशराज–(सं० पुं०) सबसे बड़ा बाँस।
वंशलोचन–(सं०पुं०) बंसलोचन।
वंशवर्धन–(सं०वि०) कुल का गौरव बढ़ानेवाला।
वंशस्थिति–(हिं०स्त्री०) वंश की मर्यादा।
वंशागत–(सं० वि०) वंश-परंपरा से आया हुआ।
वंशहीन–(सं०वि०) निःसन्तान।
वंशानुक्रम–(सं०पुं०) वंश-परम्परा।
वंशावली–(सं०स्त्री०) पूर्व पुरुषों की नामावली।
वंशिका–(सं०स्त्री०) बाँसुरी।
वंशी–(सं०स्त्री०) मुरली बाँसुरी।
वक–(सं०पुं०) बगला नामक पक्षी।
वकयन्त्र–(सं० पुं०) अर्क उतारने का भभका।
वकवृत्ति–(सं०पुं०) अपना काम निकालने के लिये घात में रहना।
वकव्रत–(सं०पुं०) कपटी मनुष्य।
वकुल–(सं०पुं०) मौलसिरी।

वक्तव्य–(सं०वि०) कहने योग्य; (पुं०) वचन, कथन, निन्दा। **वक्तव्यता**–(सं०स्त्री०) कथन, योग्यता।

वक्ता–(सं०वि०) बोलनेवाला, बोलने में निपुण, वाग्मी; (पुं०) कथा कहनेवाला व्यास।

वक्तुकाम–(सं०वि०) बोलने का अभिलाषी।

वक्तृता–(सं०स्त्री०) व्याख्यान, कथन।

वक्तृत्व–(सं० पुं०) व्याख्यान, कथन।

वक्त्र–(सं० पुं०) मुख, आनन, बीजगणित में प्रथम गृहीत संख्या। **वक्त्रद्वार**–(सं० पुं०) मुख, विवर।

वक्रगति–(सं०स्त्री०) टेढ़ी चाल। **वक्रगामी**–(सं० क्रि०) कुटिल। **वक्रता**–(सं० स्त्री०) क्रूरता। **वक्रतुण्ड**–(सं० पुं०) गणेश, जिसके ओंठ टेढ़े हों।

वक्रदृष्टि–(सं०स्त्री०) क्रोध की दृष्टि।

वक्रपुच्छ–(सं०पुं०) कुत्ता। **वक्रभाव**–(सं० पुं०) कुटिलता।

वक्ररेखा–(सं०स्त्री०) टेढ़ी रेखा।

वक्रित–(सं०वि०) जो टेढ़ा हो गया हो।

वक्री–(हिं०पुं०) वह जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों; (वि०) अपने मार्गको छोड़कर पीछे हटनेवाला। **वक्रीभाव**–(सं० पुं०) टेढ़ापन, कपट।

वक्रोक्ति–(सं०स्त्री०) व्यंग वचन।

वक्ष–(हिं०पुं०) वक्षःस्थल, हृदय, छाती।

वक्षोज, वक्षोरुह–(सं० पुं०) स्तन, कुच।

वक्ष्यमाण–(सं०वि०) वक्तव्य, कहने योग्य।

वंक–(सं०पुं०) नदी का तोड़।

वंकिम–(सं०वि०) कुछ टेढ़ा, झुका हुआ

वंग–(सं० पुं०) राँगा नामक धातु।

वंगन–(सं०पुं०) बैगन।

वंगीय–(सं०वि०) वंग देश का।

वचन–(सं० पुं०) मुख से निकला हुआ सार्थक शब्द, वाक्य, वाणी, भाषा, उक्ति, व्याकरण में शब्द का वह विधान जिससे एक या अनेक अर्थ का बोध होता है।

वचनकर–(सं०वि०) वह जो अपने वचन पर दृढ़ रहे। **वचनकारी**–(सं० क्रि०) आज्ञाकारी। **वचनविरुद्ध**–(सं०वि०) शास्त्रविरुद्ध। **वचनविरोध**–(सं०क्रि०) शास्त्रवाक्य जो प्रमाण के विरुद्ध हो।

वचनानुग–(सं०वि०) वचन के अनुसार चलनेवाला।

वचनीकृत–(सं०वि०) तिरस्कार किया हुआ।

वचनीयता–(सं०स्त्री०) लोकापवाद।

वचनोपक्रम–(सं०पुं०) वाक्यारम्भ।

वच्छ–(हिं०पु०) देखो वक्ष, छाती।

वज्र–(सं०पुं०) इन्द्र का आयुध विशेष, हीरा, बिजली, पक्का लोहा; (वि०) बहुत कड़ा या पुष्ट, भयंकर।

वज्रचञ्चु–(सं०पुं०) गीध। **वज्रधर**–(सं०पुं०) इन्द्र। **वज्रपाणि**–(सं०पुं०) इन्द्र। **वज्रमय**–(सं० वि०) वज्र के समान; **वज्रलौह**–(सं०त्रि०) चुंबक। **वज्रसार**–(सं०पुं०) हीरा।

वज्राकर–(सं०पुं०) हीरे की खान।

वज्राघात–(सं०पुं०) आकस्मिक दुर्घटना।

वज्राभ्यास–(सं०पुं०) गणित में गुणा करने की एक विधि।

वञ्चक–(सं०पुं०) चोर, ठग, धूर्त।

वञ्चना–(सं० स्त्री०) धोखा, छल

वञ्चनीय–(स०वि०) ठगने योग्य।

वञ्चित–(सं० वि०) धोखे में आया हुआ।

वट–(सं०पुं०) बरगद का पेड़।

वटक–(सं०पुं०) बड़ा, पकौड़ा, बड़ी टिकिया या गोला।
वटिका, वटी–(सं०स्त्री०) बटी, गोली, टिकिया।
वटु, वटुक–(सं०पुं०) बालक, ब्रह्मचारी।
बड़वा–(सं०स्त्री०) घोड़ी। वड़वाग्नि–(सं०पुं०) बड़वानल।
वड़ा–(सं०स्त्री०) वटक, बड़ा।
वणिक–(सं०पुं०) व्यवसायी, बनिया।
वणिकपथ–(सं०पुं०) वाणिज्य, व्यवसाय। वणिक्जन–(सं०पुं०) बनिया।
वतंस–(हिं०पुं०) देखो अवतंस, शिरोभूषण।
वतायन–(सं०पुं०) वातायन, झरोखा।
वत्–(सं०पुं०) समान, तुल्य।
वत्स–(सं०पुं०) शिशु, बालक। वत्सतरी-(सं० स्त्री०) तीन साल की बछिया, कलोर।
वत्सपाल–(सं०पुं०) बच्चा पालनेवाला।
वत्सल–(सं०वि०) सन्तान के लिये प्रेमपूर्ण।
वत्सा–(सं०स्त्री०) बछिया।
वदन–(सं०पुं०) मुख, अगला भाग।
वदाम–(सं०पुं०) बादाम का फल।
वदि–(हिं०पुं०) कृष्ण पक्ष।
वदितव्य–(सं०वि०) कहने योग्य।
वध–(सं०पुं०) हत्या, मारण, हनन।
वधक–(सं०वि०) वध करनेवाला।
वधदण्ड–(सं०पुं०) प्राणदण्ड।
वधार्ह–(सं०वि०) वध करने योग्य।
वधुका–(सं०स्त्री०) पुत्र की स्त्री, पतोहू।
वधुटी–(सं०स्त्री०) अविवाहित कन्या।
वधू–(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री, पुत्रवधू, पतोहू, भार्या, पत्नी। वधूटी–(सं० स्त्री०) पुत्रवधू, पतोहू।
वध्य–(सं० स्त्री०) वध करने योग्य।

वन–(सं०पु०) जंगल, राशि, किरण, फूलों का गुच्छा। वनकाम–(सं० वि०) जंगल में घूमनवाला। वनकुक्कुट–(सं०पुं०) जंगली मुर्गा। वनकुञ्जर–(सं०पुं०) जंगली हाथी।
वनगो–(सं०स्त्री०) नीलगाय।
वनगोचर–(सं०पुं०) व्याध।
वनचर–(सं०वि०) जंगल में घूमनेवाला।
वनज–(सं०वि०) जो वन में उत्पन्न हो।
वनजीवी–(सं०पुं०) लकड़हारा।
वनद–(सं०पुं०) मेघ, बादल।
वनपन्नग–(सं०पुं०) जंगली सर्प।
वनपांशुल–(सं०पुं०) व्याध, शिकारी।
वनपादप–(सं०पुं०) जंगली वृक्ष।
वनमानुष–(हिं०पुं०) बिना पूंछ का बड़ा बन्दर जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता है।
वनमाला–(सं०स्त्री०) जंगली फूलों की माला। वनमाली–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
वनराज–(सं०पुं०) सिंह। वनवह्नि–(सं०पुं०) दावानल।
वनवास–(सं०पुं०) जंगल में निवास।
वनवासी–(सं० वि०) बस्ती छोड़कर वन में रहनेवाला।
वनस्थ–(सं०वि०) वनवासी। वनस्थली–(सं०स्त्री०) वनभूमि, जंगली प्रदेश।
वनस्पति–(सं०पुं०) वह वृक्ष जिसमें फूल न हों केवल फल ही हों।
वनहरि–(सं०पुं०) सिंह।
वनाटन–(सं०पुं०) जंगल में घूमना।
वनिता–(सं०स्त्री०) प्रियतमा, अनुरक्त स्त्री, औरत।
वनेचर–(सं०वि०) वन में घूमनेवाला।
वनोद्देश–(सं०पुं०) वन के बीच का स्थान।
वनोद्भव–(सं०पुं०) वन में उत्पन्न।
वनौषध–(सं०स्त्री०) जंगली जड़ी-बूटी।

बन्दक–(सं०वि०) स्तुति करनेवाला।
बन्दन–(सं०पुं०) प्रणाम, स्तुति।
बन्दनमाला–(सं० स्त्री०) तोरण, बन्दनवार।
बन्दना–(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रणाम।
बन्दनीय–(सं०वि०) आदर करने योग्य।
बन्दी–(हिं०पुं०) स्तुति-पाठक, भाट।
बन्दीपाल–(सं०पुं०) कारागृह का रक्षक।
बन्द्य–(सं०वि०) वन्दना करने योग्य।
बन्य–(सं०वि०) जंगल में उत्पन्न होनेवाला, जंगली। **बन्यद्विप**–(सं० पुं०) जंगली हाथी।
बपनीय–(सं०वि०) बोने योग्य।
बपा–(सं०स्त्री०) छिद्र, छद, बसा, बाँबी
बपु–(हिं०पुं०) शरीर, देह।
बपुमान–(हिं०वि०) शरीरधारी।
बप्तव्य–(सं०वि०) बोने योग्य।
बप्ता–(सं०वि०) बीज बोनेवाला।
बम, बमन–(सं०पुं०) उल्टी, कै।
बयःक्रम–(सं०पुं०) आयुष्य।
बयन–(सं०पुं०) बुनने की क्रिया या भाव।
बयस–(सं०पुं०) जीवनकाल, अवस्था।
बयस्क–(सं०वि०) पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ।
बयस्य–(सं०पुं०) समान वय का, हमजोली, मित्र।
बयःसम–(सं०वि०) समान वयवाला।
बयोगत–(सं०पुं०) बुढ़ापा।
बयोवस्था–(सं०स्त्री०) जीवन-काल।
बयोवृद्ध–(सं०वि०) जो अवस्था में बड़ा हो।
बरंच–(हिं०अव्य०) परन्तु।
बर–(सं०पुं०) किसी देवी देवता से माँगा हुआ मनोरथ, फल या सिद्धि; (वि०) श्रेष्ठ।

वरट–(सं०पुं०) भिड़, बर्रे।
वरणीय–(सं०वि०) प्रार्थनीय, श्रेष्ठ, बड़ा
वरतनु–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वरद–(हिं०वि०) वर देनेवाला, अभीष्ट देनेवाला। **वरदान**–(सं०पुं०) किसी देवता आदि का प्रसन्न होकर माँगी हुई वस्तु का देना, फलप्राप्ति। **वरदानी**–(सं०पुं०) मनोरथ पूर्ण करनेवाला।
वरन्–(हिं०अव्य०) ऐसा न हो कि।
वरनारी–(सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वरपक्ष–(सं०पुं०) वरयात्रा, बारात।
वरयात्रा–(सं०स्त्री०) बारात।
वरवर्णिनी–(सं०स्त्री०) अत्युत्तमा स्त्री।
वरवारण–(सं०पुं०) सुन्दर हाथी।
वरांगना–(सं० स्त्री०) सर्वाङ्ग सुन्दर स्त्री।
वरानना–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वरासन–(सं०पुं०) श्रेष्ठ आसन, सिंहासन।
वराह–(सं०पुं०) शिशुमार, सूँस।
वरिष–(सं०पुं०) वत्सर, वर्ष।
वरिषा–(सं०स्त्री०) वर्षा।
वरिषाप्रिय–(सं०पुं०) चातक पक्षी।
वरिष्ठ–(सं०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, विस्तीर्ण।
वरुण–(सं०पुं०) जल, पानी, जलदेवता। **वरुणग्रस्त**–(सं०वि०) जल में डूबा हुआ।
वरुणालय, वरुणावास–(सं०पुं०) समुद्र।
वरुणोद–(सं०पुं०) सागर, समुद्र।
वरेश–(सं०पुं०) सर्वेश्वर, भगवान्।
वरोरु–(सं०वि०) सुन्दर जाँघवाली स्त्री।
वर्कर–(सं०पुं०) भेड़ का बच्चा, मेमना।
वर्ग–(सं०पुं०) एक तरह के अनेक पदार्थों का समूह, समान धर्मवाले पदार्थों का समूह, व्याकरण में एक ही स्थान से उच्चारण होनेवाले व्यञ्जन वर्णों का समूह,

प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद, जाति, श्रेणी, समान अंक या राशियों का गुणनफल, रेखगणित में वह क्षेत्र जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो तथा जिसके चारों कोण समकोण हों।

वर्गघन–(सं०पुं०) किसी वर्ग राशि का घनफल। **वर्गण**–(सं०स्त्री०) गुणन।

वर्गपद–(सं०पुं०) वर्गमूल। **वर्गफल**–(सं० पुं०) वह अंक जो किसी अंक के साथ गुणा करने से प्राप्त हो।

वर्गमूल–(सं० पुं०) किसी वर्गाङ्क का वह अंक जिसको यदि उसी से गुणा करें तो गुणनफल वही वर्गांक हो।

वर्गीय–(सं०वि०) वर्ग संबंधी।

वर्चस्–(सं० पुं०) तेज, अन्न।

वर्चस्क–(सं०पुं०) दीप्ति, तेज।

वर्चस्वी–(सं०वि०) दीप्तियुक्त।

वर्जन–(सं० पुं०) त्याग। **वर्जनीय**–(सं० वि०) छोड़ने योग्य, निषिद्ध। **वर्जित**–(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

वर्ण–(सं०पुं०) जाति यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, पदार्थों के लाल, काले, पीले आदि का भेद, रूप, अक्षर, व्याकरण के अनुसार आकारादि शब्दों के चिह्न या संकेत। **वर्णक्रम**–(सं०पुं०) जाति-परंपरा, अक्षर-श्रेणी। **वर्णज**–(सं०वि०) वर्णोद्भव जाति। **वर्णतूलि**–(सं० स्त्री०) चित्रकार की कूंची। **वर्णधर्म**–(सं०पुं०) वर्णाश्रम धर्म

वर्णन–(सं०स्त्री०) गुणकथन, स्तुति, प्रशंसा।

वर्णनीय–(सं०वि०) वर्णन करने योग्य।

वर्णपात्र–(सं०पुं०) चित्रकार का रंग रखने का पात्र।

वर्णमाला–(सं०स्त्री०) वर्ण, श्रेणी, किसी भाषा के क्रम[illegible] अक्षर।

वर्णराशि–(सं०पुं०) वर्ण-समूह।

वर्णलिपि–(सं०स्त्री०) अक्षर, प्रकाशक लेखन-प्रणाली।

वर्णविलोड़क–(सं०पुं०) वह जो दूसरे के लिखे हुए लेख को अपना बतलाता हो।

वर्णवृत्त–(सं० पुं०) वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या तथा लघु-गुरु के क्रमों में समानता हो।

वर्णश्रेष्ठ–(सं०पुं०) चारों वर्णों में श्रेष्ठ ब्राह्मण।

वर्णसंकर–(सं०पुं०) ब्राह्मणादि वर्ण के अनुलोम या प्रतिलोम से उत्पन्न जाति।

वर्णस्थान–(सं० पुं०) वर्ण या शब्द आदि का उच्चारण-स्थान।

वर्णाश्रम–(सं०पुं०) चारों वर्ण का आश्रम।

वर्णित–(सं०वि०) वर्णन किया हुआ, कहा हुआ।

वर्णी–(सं० पुं०) लेखक, चित्रकार ब्रह्मचारी, ब्राह्मण।

वर्तन–(सं० पुं०) व्यवसाय, जीवनवृत्ति, उलटफेर, व्यवहार, पात्र।

वर्तना–(हिं०क्रि०) देखो बरतना।

वर्तमान–(सं०पुं०) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया अभी चली जाती है समाप्त नहीं हुई है, वृत्तान्त; (वि०) विद्यमान, उपस्थित।

वर्तमानता–(सं०स्त्री०) उपस्थिति।

वर्ति–(सं०स्त्री०) दीपशिखा, बत्ती।

वर्तित–(सं० वि०) सम्पादित, चलाया हुआ, प्रस्तुत।

वर्ती–(हिं० वि०) बरतने योग्य।

वर्तुल–(सं०वि०) वृत्ताकार, गोल।

वर्त्म–(सं०पुं०) मार्ग, पथ, आधार।

वर्धक–(सं०वि०) पूरक, बढ़ानेवाला।

वर्धन–(सं० वि०) बढ़ानेवाला।

वर्धनी–(सं०स्त्री०) सम्मार्जनी, झाड़ू।
वर्धनीय–(सं०वि०) बढ़ाने योग्य।
वर्धापन–(सं०पुं०) कर्णवेध, कनछेदन।
वर्धमान–(सं० वि०) बढ़नेवाला, बढ़ता हुआ।
वर्धित–(सं०वि०) वृद्धिप्राप्त, बढ़ा हुआ।
वर्धिष्णु–(सं०वि०) बढ़नेवाला।
वर्म–(सं०पुं०) तनुत्राण, कवच। वर्मधर–(सं०वि०) कवचधारी। वर्मा–(सं०पुं०) क्षत्रियों की उपाधि जो नाम के अन्त में लगाई जाती है।
वर्य–(सं०वि०) प्रधान, श्रेष्ठ।
वर्वर–(सं०पुं०) घुंघराले बाल; (वि०) दुष्ट, नीच।
वर्ष–(सं०पुं०) किसी द्वीप का प्रधान भाग, वृष्टि, वर्षा, मेघ, बादल, संवत्सर, बारह महीने का काल। वर्षकाम–वृष्टि की कामना करनेवाला।
वर्षगाँठ–(हिं० पुं०) जन्मदिन का उत्सव।
वर्षज–(सं०वि०) वृष्टि से उत्पन्न।
वर्षण–(सं०पुं०) वृष्टि। वर्षप्रिय–(सं०पुं०) चातक पक्षी, पपीहा।
वर्षवृद्ध–(सं०वि०) जो वय में बड़ा हो।
वर्षवृद्धि–(सं०स्त्री०) वय की वृद्धि।
वर्षशत–(सं०पुं०) सौ वर्ष। वर्षसहस्र–(सं०वि०) हजार वर्ष।
वर्षा–(सं०स्त्री०) पानी बरसने का ऋतु, पानी बरसने की क्रिया।
वर्षाप्रिय–(सं०पुं०) पपीहा। वर्षाभव–(सं०वि०) वर्षा में उत्पन्न।
वर्षावत्–(सं०वि०) वर्षा के समान।
वर्षावसान–(सं०पुं०) शरद ऋतु।
वर्षासमय–(सं०पुं०) वर्षाकाल।
वार्षिक–(सं०वि०) वर्षा संबंधी।
वर्षीय–(सं०वि०) वर्ष संबंधी।
वर्षेश–(सं०पुं०) वर्ष का स्वामी।
वर्ह–(सं० पुं०) मोर का पंख, मोर।
वर्हण–(सं०पुं०) पत्ता।
वर्हिण–(सं०पुं०) मयूर, मोर। वर्हो–(हिं० स्त्री०) मयूर, मोर।
वलभी–(सं०स्त्री०) घर की चोटी, घर के शिखर पर का मण्डप।
वलम्ब–(सं०पुं०) सीधी रेखा के ऊपर खड़ी हुई लम्ब रेखा।
वलय–(सं०पुं०) वेष्टन, कंकण, चूड़ी।
वलयित–(सं०वि०) घिरा हुआ।
वलसूदन–(सं०पुं०) इन्द्र।
वलाहक–(सं०पुं०) मेघ, बादल।
वलि–(सं० पुं०) रेखा, लकीर, पेट में पड़ी हुई सिकुड़न, देवी देवता को अर्पण करने की वस्तु, श्रेणी, पंक्ति।
वलित–(सं०वि०) बल खाया हुआ, लचका हुआ, झुकाया हुआ या मोड़ा हुआ।
वली–(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, रेखा।
वलीमुख–(सं०पुं०) बन्दर।
वल्कल–(सं० पुं०) वृक्ष की छाल, इसका बना हुआ वस्त्र।
वल्कली–(सं०वि०) वल्कलधारी।
वल्मीक–(सं०पुं०) दीमक का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर, बाँबी।
वल्लकी–(सं०स्त्री०) वीणा, बीन।
वल्लभ–(सं०वि०) प्रिय, प्यारा; (पुं०) प्यारा मित्र, पति।
वल्लभा–(सं०स्त्री०) प्यारी स्त्री; (वि०) प्रियतमा।
वल्लरि, वल्लरी–(सं०स्त्री०) वल्ली, मंजरी, लता।
वल्लि–(सं०स्त्री०) लता, पृथ्वी।
वश–(सं०पुं०) एक व्यक्ति का दूसरे पर प्रभाव। वशकर–(सं०वि०) वशीभूत।
वशगामी–(सं०वि०) वश में लाया हुआ।

वशता–(सं०स्त्री०) वश का भाव या धर्म
वशनीय–(सं०वि०) वश में करने योग्य।
वशवर्ती–(सं०वि०) वशीभूत।
वशिता–(सं०स्त्री०) मोहनेकी क्रिया याभाव
वशी–(सं०वि०) जितेन्द्रिय, अपने को वश में करनवाला। **वशीकरण**–(सं० पुं०) किसी को अपने वश में करने का प्रयोग।
वशीकृत–(सं०वि०) मोहित, मुग्ध।
वशीभूत–(सं०वि०) वश में लाया हुआ।
वश्य–(सं०वि०) किसी की इच्छा के अधीन; (पुं०) दास, सेवक। **वश्यता**–(सं०स्त्री०) वश में होने की अवस्था।
वश्या–(सं०स्त्री०) वशीभूत, स्त्री।
वसंत–देखो वसन्त।
वसंती–(हिं०पुं०) सरसों के फूलों का रंग।
वसती–(सं०स्त्री०) वासस्थान।
वसन–(सं० पुं०) वस्त्र, आवरण, ढांपने की वस्तु, निवास।
वसन्त–(सं०पुं०) चैत्र और वैशाख का महीना। **वसन्त पंचमी**–(सं०स्त्री०) माघ शुक्ला पंचमी, श्रीपंचमी।
वसन्तरोग–(सं०पुं०) मसूरिका, चेचक।
वसन्तव्रत–(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।
वसा–(सं०स्त्री०) मेदा, धातु।
वसारोह–(सं० पुं०) छत्रक, कुकुरमुत्ता।
वसितव्य–(सं०वि०) पहनने योग्य।
वसुंधरा–(हिं० स्त्री०) पृथ्वी।
वसु–(सं०पुं०) अग्नि, किरण, देवताओंका एक गण, रत्न, धन, सुवर्ण, जल।
वसुदा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी। **वसुदान**–(सं० पुं०) धनदान।
वसुधा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी; (वि०) धनदाता। **वसुधाधर**–(सं०पुं०) पर्वत, विष्णु। **वसुधाधिप**–(सं०पुं०) राजा, पृथ्वीपति।
वसुभरित–(सं०वि०) धनपूर्ण।
वसुमति–(सं०स्त्री०) पृथ्वी।
वसूत्तम–(सं०स्त्री०) बहुत बड़ा धनी।
वसूमती–(सं०स्त्री०) पृथ्वी।
वस्त–(हिं०पुं०) वस्तु।
वस्तव्य–(सं०वि०) वास के योग्य।
वस्ति–(सं०स्त्री०) पेट की नाभि के नीचे का भाग, पेड़ू, मूत्राशय।
वस्तिकर्म–(सं०पुं०) पिचकारी द्वारा औषधि का जल गुदा में चढ़ाने की क्रिया।
वस्तु–(सं० पुं०) वह जिसकी सत्ता या अस्तित्व हो, गोचर पदार्थ, वृत्तान्त, कथावस्तु, नाटक का आख्यान।
वस्तुतः–(सं०अव्य०) यथार्थ में, सचमुच।
वस्तुबल–(सं० पुं०) किसी पदार्थ का गुण।
वस्तुभाव–(सं०पुं०) वस्तु का धर्म या गुण।
वस्तुभेद–(सं०पुं०) वस्तु का प्रकार।
वस्तुशून्य–(सं०वि०) द्रव्यहीन।
वस्त्र–(सं० पुं०) कपड़ा।
वस्त्रगृह–(सं० पुं०) छोलदारी।
वस्त्रभवन–(सं०पुं०) रावटी।
वस्त्रवेश–(सं०पुं०) कपड़े का बना हुआ घर, खेमा।
वस्त्रवेष्टित–(सं०वि०) कपड़ा लपेटा हुआ।
वस्त्रागार–(सं०पुं०) कपड़े की दूकान।
वस्त्राञ्चल–(सं०पुं०) कपड़े का छोर।
वह–(हिं० सर्व०) इस शब्द से किसी तीसरे मनुष्य का संकेत होता है, कर्ताकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम का एकवचन (बहुवचन-वे), इस शब्द से दूर या परोक्ष की वस्तु का निर्देश होता है।
वहन–(सं० पुं०) भार ले जाने का कार्य अपने ऊपर लेना। **वहनीय**–(सं० वि०) ले जाने योग्य।
वहाँ–(हिं० अव्य०) उस स्थान पर।

वहिः–(सं०अव्य०) बाहर, जो भीतर न हो
वहित–(सं०वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात ।
वहित्र–(सं० पुं०) नौका, नाव ।
वहिरंग–(सं० पुं०) शरीर का बाहरी भाग, वह मनुष्य जो अपने मण्डल का न हो; (वि०) ऊपरी, बाहरी ।
वहिरिन्द्रिय–(सं०स्त्री०) कर्मेन्द्रिय ।
वहिर्गत–(सं० वि०) बाहर किया हुआ ।
वहिर्गमन–(सं० पुं०) किसी काम से घर के बाहर जाना ।
वहिर्जगत्–(हिं०पुं०) दृश्यमान जगत् ।
वहिर्देश–(सं०पुं०) विदेश, परदेश ।
वहिर्द्वार–(सं० पुं०) घर का बाहरी फाटक, तोरण ।
वहिर्भवन–(सं० पुं०) बाहर का घर ।
वहिर्भाव–(सं० पुं०) बाह्य भाव ।
वहिर्भूत–(सं०वि०) वहिर्गत, बाहर किया हुआ । वहिर्मुख–(सं० वि०) बाहरी, विमुख । वहिर्लम्ब–(सं०पुं०) रेखागणित में वह लम्ब जो किसी क्षेत्र के बाहर गिरता हो । वहिर्लापिका–(सं० स्त्री०) प्रहेलिका, पहेली ।
वहिष्कार–(सं० पुं०) दूर करना ।
वहिष्कृत–(सं०वि०) बाहर किया हुआ, त्यागा हुआ, निकाला हुआ ।
वहीं–(हिं०अव्य०) उसी स्थान पर ।
वही–(हिं०सर्व०) पूर्वोक्त व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जा चुका हो, निर्दिष्ट व्यक्ति ।
वहेलिया–(हिं०पुं०) एक व्याध जाति ।
वह्नि–(सं० पुं०) अग्नि, आग । वह्नि-चूड़–(सं० पुं०) आग की लपट । वह्नि-दग्ध–(सं०वि०) आग से जला हुआ वह्निमित्र–(सं० पुं०) वायु, हवा वह्निमुख–(सं० पुं०) देवता ।
वह्यक–(सं० वि०) वाहक, ढोनेवाला ।
वाँ–(हिं०अव्य०) वहाँ, उस जगह ।
वांछा, वांछित–देखो वाञ्छा, वाञ्छित ।
वा–(सं०अव्य०) या, अथवा; (हिं०सर्व०) व्रज भाषा में प्रथम पुरुष के एक वचन का वह रूप जिसमें कारक के चिह्न लगाये जाते हैं ।
वाक्–(सं० पुं०) वाणी, वाक्य, बोलने की इन्द्रिय ।
वाक्कलह–(सं०पुं०) बातों का झगड़ा ।
वाक्चपल–(सं०पुं०) वाचाल, बकवादी ।
वाक्पटु–(सं०वि०) बोलचाल में चतुर । वाक्पटुता–(सं०स्त्री०) बात करने में चातुरी ।
वाक्य–(सं० पुं०) पदों का वह समूह जिससे श्रोता को वक्ता का अभिप्राय जताया जाता है जिसमें उद्देश्य का होना आवश्यक होता है । वाक्यकर–(सं० पुं०) बातें बनानेवाला । वाक्यालंकार–(सं०पुं०) वाक्य की शोभा । वाक्य-सिद्धि–(सं० पुं०) वाणी की सिद्धि, ऐसी सिद्धि या शक्ति आ जाना कि जो बात मुख से निकले वह सच्ची घट जावे ।
वागीश–(सं०वि०) अच्छा बोलनेवाला ।
वागुलि–(सं०पुं०) डिब्बा ।
वागुलिक–(सं०पुं०) राजा का खवास ।
वाग्जाल–(सं० पुं०) लपेट की बात
वाग्डम्बर–(सं० पुं०) बातों की लपेट ।
वाग्दण्ड–(सं०पुं०) झटकार, डाँट-डपट ।
वाग्दत्त–(सं०वि०) किसी वस्तु को देने के लिये वचन दिया हुआ या कहा हुआ
वाग्दरिद्र–(सं० पुं०) मितभाषी, कम बोलनेवाला ।
वाग्दान–(सं० पुं०) कन्या के पिता का किसी से यह कहना कि मैं तुम्हें अपनी कन्या ब्याह दूंगा ।

वाग्देवता, वाग्देवी–(सं० स्त्री०) वाणी, सरस्वती ।
वाग्दोष–(सं० पुं०) व्याकरण संबंधी दोष या त्रुटि, निन्दा ।
वाग्मी–(सं०पुं०) वाचाल, अच्छा बोलनेवाला, पण्डित, बृहस्पति ।
वाग्विदग्ध–(सं०वि०) बोलचाल में प्रवीण ।
वाग्विलास–(सं० पुं०) आनन्दपूर्वक आपस में वार्तालाप ।
वाङ्मय–(सं०वि०) वचन संबंधी, पढ़ने लिखने के विषय का ।
वाङ्मुख(सं० पुं०) उपन्यास ।
वाच्–(सं०स्त्री०) वाणी, वाक् ।
वाचक–(सं०वि०) सूचक, द्योतक, बोधक
वाचन–(सं० पुं०) उच्चारण करना, पढ़ना, बाँचना ।
वाचनालय–(सं०पुं०) पुस्तक, समाचार-पत्र आदि पढ़ने का स्थान ।
वाचा–(सं०स्त्री०) वाणी, वचन, शब्द
वाचाट–(सं०वि०) बक्की, बकवादी ।
वाचापत्र–(सं० पुं०) प्रतिज्ञा-पत्र ।
वाचाबन्धन–(सं०पुं०) प्रतिज्ञाबद्ध होना
वाचाबद्ध–(सं०वि०) वचन देने से विवश ।
वाचाल–(सं०वि०) बोलने में चतुर ।
वाचालता–(सं०स्त्री०) बात करने मे निपुणता ।
वाचिक–(सं०वि०) वाणी संबंधी, संकेत द्वारा सूचित ।
वाची–(हिं०वि०) बोध करनेवाला, सूचक, यह शब्द समस्त पद के अन्त में प्रयुक्त होता है ।
वाच्य–(सं०वि०) कहने योग्य । **वाच्यता**–(सं०स्त्री०) वाच्य का भाव या धर्म । **वाच्यार्थ**–(सं०पुं०) वह तात्पर्य जो शब्दों के स्थिर या नियत अर्थ से सूचित हो ।
वाजसनि–(सं०पुं०) सूर्य ।
वाजि–(हिं०पुं०) घोड़ा ।
वाजिमेध–(सं०पुं०) अश्वमेध ।
वाजिशाला–(सं०क्रि०) अश्वशाला ।
वाजी–(हिं०पुं०) घोड़ा ।
वाञ्छनीय–(सं०वि०) चाहने योग्य । **वाञ्छा**–(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा । **वाञ्छित**–(सं०वि०) अभिलषित ।
वाट–(सं०पुं०) मार्ग, मण्डप ।
वाटिका–(सं०स्त्री०) बाग, बगीचा ।
वाटुक–(सं० पुं०) भूना हुआ जव, बहुरी ।
वाड़वाग्नि–(सं० पुं०) समुद्र के भीतर की अग्नि, बड़वानल ।
वाढम्–(सं०अव्य०) पर्याप्त, बस ।
वाण–(सं०पुं०) धनुष पर छोड़ने का तीर ।
वाणतूण–(सं०पुं०) तरकश ।
वाणावली–(सं०स्त्री०) तीरों की वर्षा ।
वाणिज्य–(सं० पुं०) देखो बाणिज्य ।
वाणी–(सं०स्त्री०) वचन, सरस्वती, जीभ, स्वर, वाक्शक्ति ।
वात–(सं०पुं०) वायु, हवा, वैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु जो शरीर के सब धातुओं को गतियुक्त करती है । **वातज**–(सं०वि०) वायु से उत्पन्न । **वायुप्रकोप**–(सं०पुं०) शरीर में वायु का अधिक हो जाना । **वातव्याधि**–(सं० पुं०) गठिया रोग । **वातसख**–(सं० पुं०) अग्नि ।
वाताम–(सं०पुं०) बादाम ।
वातायन–(सं०पुं०) गवाक्ष, झरोखा, छोटी खिड़की ।
वातावरण–(हिं०पुं०) सामान्य परिस्थिति, चारों ओर की व्यवस्था ।

वात्सल्य–(सं० पुं०) माता-पिता का अपनी सन्तति पर प्रेम।
वाद–(सं०पुं०) तर्क, शास्त्रार्थ। **वादक**–(सं०पुं०) बाजा बजानेवाला, वक्ता, शास्त्रार्थ करनेवाला।
वादयुद्ध–(सं०पुं०) शास्त्रीय झगड़ा।
वादानुवाद–(सं०पुं०) तर्क, वितर्क, शास्त्रार्थ।
वादिक–(सं०पुं०) तार्किक; शास्त्रार्थ करनेवाला।
वादित–(सं०वि०) बजाया हुआ।
वादित्र–(सं०पुं०) वाद्य, बाजा।
वादी–(सं०पुं०) वक्ता, बोलनेवाला।
वाद्य–(सं०पुं०) बाजा। **वाद्यक**–(सं० पुं०) बाजा बजानेवाला।
वान–(हि०पुं०) देखो बाण।
वानप्रस्थ–(सं० पुं०) आर्यों की प्राचीन पद्धति के अनुसार मनुष्य के जीवन का तीसरा आश्रम।
वानर–(सं०पुं०) बन्दर।
वानीरक–(सं०पुं०) मूँज।
वान्ति–(सं०स्त्री०) वमन, उल्टी।
वापक–(सं०वि०) बीज बोनेवाला।
वापन–(सं०पुं०) बीज बोना।
वापिका–(सं०स्त्री०) वापी, बावली।
वापित–(सं०वि०) बोया हुआ।
वापी–(सं०स्त्री०) छोटा जलाशय, बावली।
वाम–(सं०वि०) बायाँ, प्रतिकूल, विरुद्ध, दुष्ट, कुटिल, बुरा।
वामन–(सं०वि०) छोटे डील-डौल का, नाटा, बौना।
वामनी–(सं०स्त्री०) बौनी स्त्री।
वामनेत्र–(सं०पुं०) बाईं आँख।
वाममार्ग–(सं०पुं०) एक तांत्रिक मत।
वामलोचना–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वामा–(सं०स्त्री०) दुर्गा, स्त्री।
वामाक्षी–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वामेतर–(सं०वि०) बायें का उलटा, दाहिना।
वामोरु–(सं० वि०) सुन्दर जाँघ।
वामोरू–(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वायव्य–(सं०वि०) वायु संबंधी; (पुं०) पश्चिमोत्तर दिशा।
वायस–(सं०पुं०) काक, कौवा।
वायु–(सं०पुं०) हवा, वात। **वायुकोण**–(सं०पुं०) पश्चिमोत्तर दिशा।
वायुगुल्म–(सं०पुं०) चक्रवात, बवंडर।
वायुमण्डल–(सं०पुं०) वायुलोक, आकाश।
वायुवाह–(सं०पुं०) धुवाँ।
वायुसख–(सं०पुं०) अग्नि।
वारंवार–(हि०अव्य०) देखो बारबार।
वार–(सं०पुं०) द्वार, अवरोध, रुकावट, क्षण, सप्ताह का कोई दिन।
वारक–(सं०वि०) निषेध करनेवाला।
वारकन्या–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारण–(सं० पुं०) निषेध, बाधा, हाथी, अंकुश।
वारणीय–(सं०वि०) निषेध करने योग्य।
वारणेन्द्र–(सं०पुं०) सुन्दर हाथी।
वारतिय–(हि०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारद–(हि०पुं०) मेघ, बादल।
वारन–(हि०स्त्री०) निछावर, बलि; (पुं०) बन्दनवार, तोरण।
वारना–(हि०क्रि०) निछावर करना।
वारपार–(हि०पुं०) पूरा विस्तार, इधर-उधर का छोर; (अव्य०) इस किनारे से उस किनारे तक।
वारा-फेर–(हि०स्त्री०) निछावर, बलि।
वारमुखी–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारम्वार–(सं०अव्य०) फिर फिर।

वारयितव्य–(सं०वि०) निवारण करने योग्य।
वारयुवती–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारविलासिनी, वारसुन्दरी, वारस्त्री–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारनिधि–(सं०पुं०) समुद्र।
वारा–(हिं०पुं०) लाभ, व्यय की बचत; (वि०) उत्सर्ग या निछावर किया हुआ, सस्ता।
वाराङ्गना–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वाराणसी–(सं०स्त्री०) काशी का प्राचीन नाम।
वारान्यारा–(हिं०पुं०) निर्णय, निबटारा।
वाराह–(सं०पुं०) शूकर, सुअर।
वारि–(सं०पुं०) जल, पानी।
वारिजात–(सं०वि०) जल में उत्पन्न।
वारिज–(सं०पुं०) कमल, मछली, शंख, कौड़ी।
वारित–(सं०वि०) रोका हुआ।
वारिद–(सं०पुं०) मेघ, बादल।
वारिद्र–(सं०पुं०) चातक, पपीहा।
वारिधर–(सं०पुं०) देखो वारिद।
वारिधारा–(सं०स्त्री०) जल की धारा
वारिनाथ, वारिधि–(सं०पुं०) जलनिधि, समुद्र। वारियन्त्र–(सं०पुं०) जलयन्त्र।
वारियाँ–(हिं०स्त्री०) निछावर, बलि।
वारीफेरी–(हिं०स्त्री०) देखो वारफेर, निछावर।
वारीश–(सं०पुं०) समुद्र।
वारुणी–(सं०स्त्री०) मदिरा।
वार्ता–(सं०स्त्री०) वृत्तान्त, समाचार, प्रसंग, विषय, बात।
वार्तायन–(सं०पुं०) दूत।
वार्तालाप–(सं०पुं०) बातचीत।
वार्तावह–(सं०पुं०) समाचार ले जानेवाला, दूत।
वार्तिक–(सं०पुं०) दूत, चर, किसी ग्रन्थ के अर्थों को स्पष्ट करनेवाले वाक्य।
वार्वट–(सं०पुं०) नौका, नाव का बेड़ा।
वार्षिक–(सं०वि०) प्रति वर्ष होनेवाला, वर्षा ऋतु का।
वालुका–(सं०स्त्री०) रेती, बालू।
वालुकायन्त्र–(सं०वि०) औषधि बनाने का एक यन्त्र।
वालेय–(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा, पुत्र।
वाश्र–(सं०पुं०) मन्दिर, चौराहा।
वाष्प–(सं०पुं०) अश्रु, आँसू, लोहा, भाप।
वास–(सं०पुं०) अवस्थान, गृह, घर।
वासगृह–(सं०पुं०) शयनागार, अन्तःपुर। वासगेह–(सं० पुं०) देखो वासगृह।
वासना–(सं०स्त्री०) ज्ञान संस्कार, कामना, इच्छा; (हिं०क्रि०) देखो वासना।
वासान्तक–(सं०वि०) वसन्तऋतुसम्बन्धी।
वासन्तिक–(सं०पुं०) भाँड़, विदूषक।
वासन्ती–(सं०स्त्री०) माधवी लता, जूही। वासभवन–(सं०पुं०) वासगृह।
वासभूमि–(सं०स्त्री०) वासस्थान।
वासर–(सं०पुं०) दिवस, दिन।
वासराधीश, वासरेश–(सं०पुं०) सूर्य।
वासवेश्म–(सं०पुं०) रहने का घर।
वासि–(सं०पुं०) कुठार, बसुला।
वासित–(सं०वि०) सुगन्धित किया हुआ, वस्त्र से ढँपा हुआ।
वासी–(हिं०वि०) बसनेवाला, रहनेवाला
वास्तव–(सं०वि०) सत्य, यथार्थ; (क्रि० वि०) वास्तव में, सचमुच। वास्तविक–(सं०वि०) प्राकृत, यथार्थ, सत्य, ठीक।
वास्तव्य–(सं०वि०) बसने या रहने योग्य, बसनेवाला; (पुं०) बस्ती।
वास्तु–(सं०पुं०) वह स्थान जिस पर घर बनाया जाता है।

वास्प–(हिं०पुं०) गरमी, भाफ।
वाह–(सं०पुं०) वाहन, सवारी।
वाहक–(सं०पुं०) बोझ ढोने या ले जानेवाला, सारथी।
वाहन–(सं०पुं०) यान।
वाहनीय–(सं०वि०) वहन करने योग्य।
वाहिक–(सं०पुं०) गाड़ी, छकड़ा।
वाहित–(सं०स्त्री०) चलाया हुआ।
वाहिनी–(सं०स्त्री०) सेना।
वाहिनीपति–(सं०पुं०) सेनापति।
वाहु–(सं०स्त्री०) भुजदण्ड, रेखागणित में क्षेत्र के किनारे की रेखा, भुजा। वाहुमूल–काँख।
वाहुल्य–(सं०पुं०) अधिकता, आधिक्य।
वाह्य–(सं०क्रि०वि०) वाहर, अलग, पृथक्। वाह्यक–(सं०पुं०) वाहक, गाड़ी, छकड़ा।
वाह्यान्तर–(सं०वि०) भीतर और वाहर का।
वाह्येन्द्रिय–(सं०पुं०) शरीर की पाँचों इन्द्रियाँ यथा–आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।
विंदु–देखो विन्दु।
विंदुर–(हिं०पुं०) छोटे चिह्न, बुन्दकी।
विंश–(सं०पुं०) बीसवाँ।
विंशति–(सं०स्त्री०) बीस की संख्या।
वि–(सं०अव्य०) यह शब्द विशेष, निषेध तथा वैरूप्य अर्थ में शब्दों में लगाया जाता है; (पुं०) आकाश, नेत्र, अन्न।
विकच–(हिं०वि०) केशरहित।
विकट–(सं०वि०) विकराल, भयंकर, विशाल, दुर्गम, दुःसाध्य, वक्र।
विकत्थन–(सं०पुं०) झूठी प्रशंसा।
विकत्थना–(सं०स्त्री०) आत्मश्लाघा।
विकत्था–(सं०स्त्री०) आत्म-प्रशंसा।
विकथा–(सं० स्त्री०) बुरी कथा।
विकम्पन–(सं०पुं०) बड़ी कँपकँपी।
विकरार–(हिं०वि०) विकराल, भयंकर।
विकराल–(सं०वि०) भयंकर, डरावना। विकरालता–(सं०स्त्री०) भयंकरता।
विकर्म–(सं०पुं०) दुराचरण।
विकर्षण–(सं० पुं०) आकर्षण, खींचना।
विकल–(सं०वि०) व्याकुल, असमर्थ। विकलता–(सं०वि०) व्याकुलता।
विकलाङ्ग–(सं०वि०) जिसका कोई अङ्ग टूटा-फूटा हो।
विकला–(सं०स्त्री०) कला का साठवाँ भाग, अति सूक्ष्म काल।
विकलाना–(हिं०क्रि०) व्याकुल होना।
विकलित–(सं०वि०) व्यग्र, व्याकुल।
विकलेन्द्रिय–(सं०वि०) जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में न हों।
विकल्प–(सं०पुं०) भ्रान्ति, धोखा, भ्रम, विरुद्ध कल्पना, अनेक विधियों का सम्मिलित होना, व्याकरण में किसी नियम के दो या अधिक भेदों में से इच्छानुसार किसी एक का ग्रहण। विकल्पित–(सं०वि०) अनियमित, सन्दिग्ध। विकल्पी–(सं०वि०) विकल्पयुक्त।
विकल्मष–(सं० वि०) पाप-रहित।
विकवच–(सं०वि०) कवच-रहित।
विकसन–(सं०पुं०) फूटना, खिलना।
विकार–(सं०पुं०) किसी वस्तु के रूप रंग आदि में परिवर्तन, बुराई, दोष, अवगुण। विकारी–(हिं० वि०) बुरी वासनावाला, जिसमें उलटफेर हुआ हो।
विकाल–(सं०पुं०) अतिकाल, देर।
विकाश–(सं० पुं०) विस्तार, बढ़ती, प्रकाश, फैलाव, खिलना। विकास–(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, पुष्प आदि का खिलना, क्रम से उन्नति को प्राप्त करना। विकासन–(सं० पुं०)

प्रकाशन । विकासना–(हिं० क्रि०) प्रकट करना ।
विकीर्ण–(सं०वि०) प्रसिद्ध, चारों ओर फैला हुआ ।
विकुण्ठ–(हिं०पुं०) देखो वैकुण्ठ, स्वर्ग ।
विकुण्ठन–(सं० पुं०) दुर्बलता ।
विकुण्डल–(सं०वि०) कुण्डल-रहित ।
विकुत्सा–(सं०स्त्री०) विशेष निन्दा ।
विकूजन–(सं०पुं०) वेग से शब्द करना ।
विकृत–(सं०वि०) बिगड़ा हुआ, कुरूप, भद्दा, अपूर्ण, अधूरा, विचित्र, रोगी, विद्रोही । विकृतदृष्टि–(सं०पुं०) ऐंचा । विकृति–(सं०पुं०) विकार, बिगाड़, मन का क्षोभ, शत्रुता ।
विकृष्ट–(सं०वि०) आकृष्ट, खिंचा हुआ ।
विक्रम–(सं०पुं०) बल या शक्ति की अधिकता, पराक्रम, गति ।
विक्रमाब्द–(सं०पुं०) विक्रमादित्य का चलाया हुआ संवत् ।
विक्रमी–(हिं०वि०) बड़ा पराक्रमी ।
विक्रय–(सं०पुं०) बेचने का कार्य, बिक्री । विक्रयक–(सं० पुं०) विक्रेता, बेचनेवाला । विक्रयन–(सं० पुं०) बिक्री । विक्रयी–(सं०पुं०) बेचनेवाला ।
विक्रान्ति–(सं०पुं०) शूरता, वीरता ।
विक्री–(हिं०स्त्री०) बेचन की क्रिया या भाव । विक्रीत–(सं०वि०) बेचा हुआ । विक्रेता–(सं०पुं०) बेचने या बिक्री करनेवाला । विक्रेय–(सं० वि०) बिकनेवाला ।
विक्लिष्ट–(सं०वि०) बहुत थका हुआ ।
विक्लेद–(सं०पुं०) आर्द्रता, गीलापन ।
विक्षत–(सं०वि०) बुरी तरह से घायल ।
विक्षिप्त–(सं०वि०) फेंका हुआ, व्याकुल, पागल ।
वक्षुब्ध–(सं०वि०) जिसका मन चंचल हो।
विक्षेप–(सं०पुं०) इधर-उधर फेंकना, चित्त को इधर-उधर भटकाना, बाधा, विघ्न ।
विक्षेपण–(सं०पुं०) इधर-उधर फेंकने का काम ।
विक्षोभ–(सं०पुं०) चित्त की उद्विग्नता ।
विख–(हिं०पुं०) देखो विष ।
विखनन–(सं०पुं०) खोदने का काम ।
विखान–(हिं०पुं०) देखो विषाण, सींग ।
विखायँध–(हिं०स्त्री०) कड़वी गन्ध ।
विख्यात–(सं०वि०) प्रसिद्ध । विख्याति–(सं०स्त्री०) प्रसिद्धि ।
विगणन–(सं०वि०) हिसाब करना, लेखा करना ।
विगत–(सं०वि०) जो बीत गया हो । विगतभय–(सं०वि०) निर्भीक, निडर । विगतशोक–(सं०वि०) शोक-रहित । विगतस्पृह–(सं०वि०) देखो निस्पृह ।
विगति–(सं०पुं०) दुर्गति, दुर्दशा ।
विगन्ध–(सं०वि०) दुर्गन्धी, गन्धहीन ।
विगर्ह–(सं०पुं०) निन्दा । विगर्हणा–(सं० पुं०) डाँट-डपट, धिक्कार । विगर्हित–(सं०वि०) निन्दनीय । विगर्ही–(सं०वि०) निन्दाकारक ।
विगलन–(हिं०पुं०) नाश ।
विगलित–(सं०वि०) बिगड़ा हुआ, शिथिल ।
विगन्ध–(सं०वि०) जिसमें किसी प्रकार की गन्ध न हो ।
विगुण–(सं०वि०) विकृत, गुणहीन । विगुणता–(हिं०स्त्री०) गुणहीनता ।
विगूढ़–(सं० वि०) निन्दित, गुप्त ।
विग्रह–(सं०पुं०) विभाग, दूर करना, व्याकरण में यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों को अलग करना, युद्ध, कलह ।
विग्रही–(हिं०वि०) युद्ध करनेवाला ।

विघटन–(सं० पुं०) तोड़ना, फोड़ना। अलगाना। **विघटित**–(सं०वि०) तोड़ा फोड़ा हुआ।
विघन–(हिं०पुं०) देखो विघ्न।
विघट्टन–(सं०पुं०) रगड़ान।
विघात–(सं०पुं०) आघात, प्रहार, चोट।
विघातक–(सं०वि०) नाश करनेवाला।
विघातन–(सं०पुं०) हत्या।
विघाती–(हिं०वि०) हत्या करनेवाला।
विघ्न–(सं०पुं०) बाधा, अड़चन। **विघ्नक, विघ्नकर**–(सं०वि०) बाधा डालनेवाला। **विघ्नकारी**–(सं०वि०) विघ्न करनेवाला।
विचकित–(सं०वि०) घबड़ाया हुआ।
विचक्षण–(हिं०वि०) निपुण, चतुर, बुद्धिमान्, पंडित।
विचच्छन–(हिं०पुं०) देखो विचक्षण।
विचक्षु–(सं०वि०) जिसकी आँख नष्ट हो गई हो।
विचय–(सं०पुं०) एकत्र करना, परीक्षा।
विचरण–(सं०पुं०) घूमना, फिरना।
विचरनि–(हिं०क्रि०) घूमना, चलना फिरना।
विचरनि–(हिं०स्त्री०) चलने-फिरने की क्रिया।
विचल–(सं०वि०) अस्थिर, हिलता डोलता हुआ। **विचलता**–(सं०स्त्री०) चंचलता।
विचलना–(हिं०क्रि०) अपने स्थान से हट जाना, अधीर होना। **विचलाना**–(हिं०क्रि०) इधर-उधर हटाना। **विचलित**–(सं०वि०) अस्थिर, चंचल।
विचार–(सं०पुं०) भावना, न्यायालय का वादी प्रतिवादी के विषय में निश्चय। **विचारक**–(सं०पुं०) विचार करनेवाला, न्यायाधीश। **विचारणीय**–(सं०वि०) विचार करने योग्य। **विचारना**–(हिं० क्रि०) सोचना, समझना, ढूंढ़ना, पता लगाना। **विचारपति**–(सं०पुं०) न्यायाधीश।
विचारवान्–(सं०पुं०) वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो। **विचारशक्ति**–(सं०स्त्री०) भला बुरा पहिचानने की शक्ति, विचारशास्त्र। **विचारस्थल**–(सं० पुं०) न्यायालय। **विचाराध्यक्ष**–(सं०पुं०) न्यायाधीश। **विचारालय**–(सं०पुं०) विचारस्थल। **विचारित**–(सं०वि०) सोचा विचारा हुआ।
विचारी–(हिं०पुं०) विचार करनेवाला। **विचार्यमाण**–(सं०वि०) विचार करने योग्य।
विचालन–(सं०पुं०) अच्छी तरह हटाना, चलाना।
विचिति–(सं०स्त्री०) अनुसन्धान।
विचित्ति–(सं०पुं०) चित्त ठिकाने न रहने की अवस्था।
विचित्र–(सं०वि०) विलक्षण, असाधारण, रमणीय, सुन्दर। **विचित्रता**–(सं० स्त्री०) विलक्षणता। **विचित्रशाला**–(सं०स्त्री०) अजायबघर।
विचिन्तन–(सं०पुं०) चिन्ता करना, सोचना। **विचिन्तनीय**–सोचने योग्य।
विचिन्ता–(सं० स्त्री०) सोच-विचार। **विचिन्तित**–(सं०वि०) सोचा विचारा हुआ। **विचिन्त्यमान**–(सं० वि०) विचार किया हुआ।
विचेतन–(सं०वि०) अचेत।
विचेता–(सं०वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
विचेष्टन–(सं०पुं०) इधर-उधर लोटना।
विचेष्टा–(सं०स्त्री०) मुंह बनाना।
विचेष्टित–(सं० वि०) विशेष चेष्टा युक्त।

विच्छित्ति–(सं० स्त्री०) त्रुटि, कमी, अलगाव।
विच्छिन्न–(सं०वि०) काट कर अलगाया हुआ, पृथक्, अलग।
विच्छेद–(सं०पुं०) विरह, वियोग, नाश, काटने या अलगाने की क्रिया।
विच्छेदक–(सं०पुं०) काट कर अलग करनेवाला। विच्छेदन–(सं० पुं०) अलग करने की क्रिया, नाश। विच्छेदनीय–(सं०वि०) काट कर अलगाने योग्य। विच्छेदी–(सं० वि०) काटनेवाला।
विछलना–(हिं०क्रि०) विचलित होना, फिसलना।
विछेद–(हिं०पुं०) वियोग, बिछोह।
विछोई–(हिं०पुं०) वियोगी।
विछोह–(हिं०पुं०) प्रिय से अलग होना।
विजंघ–(हिं०वि०) बिना जाँघ का।
विजई–(हिं०पुं०) देखो विजयी।
विजन–(सं०वि०) जनशून्य, एकान्त; (हिं०पुं०) वीजन, पंखा, बेना। विजनता–(सं०स्त्री०) एकान्तता।
विजनन–(सं०पुं०) प्रसव।
विजना–(हिं०पुं०) पंखा, बेना।
विजन्मा–(हिं०पुं०) जारज, दोगला।
विजय–(सं०पुं०) जय, जीत। विजयक–(सं०वि०) सर्वदा जीतनेवाला। विजयकण्टक–(सं०पुं०) विजय में विघ्न डालनेवाला। विजयपताका–(सं०स्त्री०) वह झंडा जो सेना से विजय प्राप्त करने पर फहराया जाता है।
विजया–(सं०स्त्री०) एक मातृक छन्द का नाम। विजयादशमी–(सं०स्त्री०) आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी।
विजयी–(हिं०पुं०) वह जिसने विजय प्राप्त की हो, जीतनेवाला।
विजयेश–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
विजर–(सं०वि०) जरा-रहित, जिसको बुढ़ापा न हो।
विजर्जर–(सं०वि०) अन्यन्त जर्जर।
विजल–(सं०पुं०) वर्षा न होना, सूखा पड़ना।
विजल्प–(सं०पुं०) व्यर्थ की बहुत सी बकवाद।
विजाग–(हिं०पुं०) विमोह। विजागी–(हिं०पुं०) वियोगी।
विजात–(सं०वि०) वर्णसंकर, दोगला।
विजाति–(सं०वि०) भिन्न जाति का। विजातीय–(सं०वि०) जो अपनी जाति से भिन्न हो।
विजिगीषा–(सं०पुं०) विजय प्राप्त करने की अभिलाषा, उन्नति।
विजित–(सं०वि०) जीता हुआ।
विजिह्म–(सं०वि०) वक्र, कुटिल।
विजृम्भण–(सं०पुं०) जँभाई लेना, भौंह सिकोड़ना। विजृम्भा–(सं०स्त्री०) जँभाई
विजेतव्य–(सं०वि०) जो जीतन योग्य हो।
विजेता–(हिं०पुं०) विजय करनेवाला। विजेय–(सं०वि०) जीता जाने योग्य। विजै–(हिं०पुं०) देखो विजय।
विजोग–देखो वियोग।
विजोर–(हिं०वि०) निर्बल।
विज्जु–(हिं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
विज्जुल–(हिं०पुं०) त्वचा, छिलका।
विज्जुलता–(हिं०स्त्री०) विद्युल्लता, बिजली।
विज्ञ–(सं०पुं०) बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान्। विज्ञता–(सं०स्त्री०) पाण्डित्य।
विज्ञप्त–(सं०वि०) सूचित किया हुआ।
विज्ञप्ति–(सं०स्त्री०) विज्ञापन।
विज्ञात–(सं०वि०) प्रसिद्ध। विज्ञाता–(हिं०पुं०) जाननेवाला।

विज्ञान–(सं०पुं०) ज्ञान, किसी विषय के सिद्धान्तों का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह किया गया हो, निश्चयात्मक बुद्धि। विज्ञानी–(हिं०पुं०) वह जिसको किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक।

विज्ञापक–(सं०पुं०) समझाने या बतलाने वाला। विज्ञापन–(सं०पुं०) किसी बात को जताने की क्रिया, सूचना देना, वह पत्र जिसके द्वारा कोई बात बतलाई जाती है।

विट–(सं०पुं०) लम्पट, कामुक, धूर्त।

विटप–(सं०पुं०) वृक्ष या लता की नई शाखा, झाड़ी, कोपल, पेड़।

विडम्बक–(सं०पुं०) ठीक ठीक अनुकरण करनेवाला, चिढ़ानेवाला।

विडम्बना–(सं०स्त्री०) अनुकरण करना, हँसी उड़ाना। विडम्बनीय–(सं०वि०) अनुकरण करने योग्य, चिढ़ाने लायक। विडम्बित–(सं०वि०) उपहास किया हुआ, ठगा हुआ। विडम्बी–(सं०पुं०) अनुकरण करनेवाला।

विडरना–(हिं० क्रि०) इधर-उधर या तितर-बितर होना।

विडारना, विडराना–(हिं०क्रि०) छितराना, दौड़ना, भगाना।

विड़ाल–(सं०पुं०) मार्जार, बिल्ली।

विड़ौजा–(सं०पुं०) इन्द्र का एक नाम।

वितण्डा–(सं०स्त्री०) दूसरे के पक्ष को दबाकर अपने पक्ष का स्थापन।

वित–(हिं०पुं०) चतुर, ज्ञाता, निपुण।

वितत–(सं०वि०) विस्तृत, फैला हुआ।

विततताना–(हिं०क्रि०) व्याकुल होना।

वितति–(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव।

वितथ–(सं०वि०) मिथ्या, झूठ, निरर्थक।

वितनु–(सं०वि०) अति सूक्ष्म।

वितपन्न–(हिं०वि०) व्युत्पन्न, दक्ष, प्रवीण।

वितरक–(हिं०वि०) बाँटनेवाला।

वितरण–(सं०पुं०) बाँटना।

वितरन–(हिं०पुं०) वितरण।

वितरना–(हिं०क्रि०) वितरण करना।

वितरिक्त–(हिं० अव्य०) अतिरिक्त, सिवाय।

वितरित–(सं०वि०) बाँटा हुआ।

वितरेक–(हिं० क्रि० वि०) व्यतिरिक्त, छोड़कर, सिवाय।

वितर्क–(सं०पुं०) एक तर्क के बाद दूसरा तर्क।

वितान–(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, बड़ा चँदवा, समूह।

वितानक–(सं०पुं०) बड़ा चँदवा, समूह, जमघट।

वितानना–(हिं०क्रि०) चँदवा आदि तानना।

वितिक्रम–(हिं०पुं०) देखो व्यतिक्रम।

वितिमिर–(सं०वि०) अन्धकारशून्य।

वितीत–(हिं०वि०) व्यतीत, बीता हुआ

वितीपाती–(हिं०वि०) उपद्रवी।

वितुंड–(हिं० पुं०) गज, हाथी।

वितु–(हिं०पुं०) वित्त, धन, सम्पत्ति।

वितृण–(सं०वि०) तृणहीन।

वितृप्त–(सं०वि०) जो तृप्त न हो।

वितृष्ण–(सं०वि०) तृष्णा से रहित।

वितृष्णा–(सं०स्त्री०) तृष्णा का अभाव।

वितोय–(सं०वि०) जलहीन।

वित्त–(सं०पुं०) सम्पत्ति, धन; (वि०) जाना हुआ, प्रसिद्ध। वित्तकोश -रुपया-पैसा रखने की थैली। वित्तहीन–(सं० स्त्री०) धनहीन, दरिद्र।

वित्रप–(सं०वि०) निर्लज्ज।

वित्रस्त–(सं०वि०) बहुत डरा हुआ।

वित्रास–(सं० पुं०) भय, डर।

विथकना–(हिं०क्रि०) शिथिल होना ।
विथकित–(हिं०वि०) शिथिल,थका हुआ।
विथराना–(हिं०क्रि०) छितराना ।
विथा–(हिं०स्त्री०) व्यथा, पीड़ा, रोग ।
विथित–(हिं०वि०) व्यथित, पीड़ायुक्त, दुखी ।
विदग्ध–(सं०पुं०) विद्वान्, पण्डित,चतुर; (वि०) जला हुआ। विदग्धता–(सं० स्त्री०) पाण्डित्य, चतुराई।
विदरण–(सं० पुं०) विदारण करना, फाड़ना। विदरना–(हिं०क्रि०) विदीर्ण होना, फटना ।
विदल–(सं०वि०) बिना दल का, जिसमें दल न हों।
विदलन–(सं०पुं०) टुकड़े करना, फटना, फाड़ना । विदलना–(हिं०क्रि०) नष्ट करना, फाड़ना। विदलित–(सं०वि०) फाड़ा हुआ, टुकड़े किया हुआ, रौंदा हुआ।
विदा–(हिं०पुं०) प्रस्थान, कहीं जाने की आज्ञा। विदाई–(हिं०स्त्री०) विदा होन की अनुमति । विदाय–(हिं०पुं०) विसर्जन, प्रस्थान ।
विदार–(सं०पुं०) समर, युद्ध ।
विदारक–(सं०वि०) फाड़ डालनेवाला। विदारण–(सं० पुं०) हत्या, समर, युद्ध । विदारना–(हिं०क्रि०) फाड़ना, टुकड़ा करना । विदारित–(सं०वि०) विदीर्ण, फाड़ा हुआ ।
विदारी–(हिं०वि०) फाड़नेवाला ।
विदाह–(सं० पुं०) हाथ-पैर में होनेवाली जलन ।
विदाही–(हिं०पुं०) दाह उत्पन्न करनेवाला पदार्थ ।
विदित–(सं०वि०) ज्ञात, जाना हुआ ।
विदिय–(हिं०पुं०) पण्डित्त, विद्वान् ।
विदिश–(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच का कोण ।
विदीर्ण–(सं०वि०) बीच से फाड़ा हुआ।
विदुर–(सं०पुं०) पण्डित, ज्ञानी, जानकार
विदुष–(सं० पुं०) विद्वान्, पंडित । विदुषी–(सं०स्त्री०)स्त्री,विद्वान् स्त्री ।
विदूर–(सं०वि०) जो बहुत दूर हो।
विदूषक–(सं०पुं०) बातचीत करके दूसरों को हँसानेवाला, भाँड़ ।
विदूषण–(सं०पुं०)दोष लगाने का कार्य।
विदूषना–(हिं०क्रि०) कष्ट देना, दोषी ठहराना, दुःखी होना ।
विदेश–(सं०पुं०) परदेश । विदेशी–(हिं० वि०) परदेशी ।
विदेह–(सं०पुं०) वह जो शरीर-रहित। हो, राजा जनक का एक नाम ।
विदोष–(सं०वि०) दोष-रहित ।
विद्ध–(सं०वि०) छदा हुआ, फेंका हुआ ।
विद्यमान–(सं०वि०)वर्तमान, उपस्थित । विद्यमानता–(सं०स्त्री०) उपस्थिति ।
विद्या–(सं०स्त्री०) शिक्षा आदि द्वारा उपार्जित ज्ञान, किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान। विद्यागम–(सं० पुं०) विद्यालाभ । विद्यागुरु–(सं० पुं०) शिक्षक । विद्यागृह–(सं०पुं०) विद्यालय, पाठशाला । विद्यादान–(सं० पुं०) विद्या पढ़ाना, शिक्षा देना । विद्यादेवी–(सं०स्त्री०) सरस्वती ।
विद्याधर–(सं० पुं०) एक प्रकार की देवयोनि । विद्याधरी–(सं०स्त्री०) किन्नरी ।
विद्याधार–(सं०पुं०) विद्वान्, पंडित । विद्याधिप–(सं० पुं०) गुरु, शिक्षक, विद्वान्। विद्यारम्भ–(सं०पुं०) बालकों को विद्या पढ़ाना, प्रारम्भ करने का संस्कार । विद्याभृत्–(सं० पुं०)

विद्वान् । विद्यार्थी–(हिं०पुं०) विद्या पढ़नेवाला छात्र, शिष्य । विद्यालय–(सं०पुं०) पाठशाला । विद्यावान्–(सं०पुं०) विद्वान्, पण्डित । विद्यावेश्म–(सं० पुं०) विद्यालय । विद्यासागर–(सं०वि०) सब शास्त्रों को जाननेवाला ।
विद्युता–(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली ।
विद्युत्–(सं०स्त्री०) बिजली । विद्युत्पात–(सं०पुं०) बिजली का गिरना । विद्युत्-मापक–(सं० पुं०) वह यन्त्र जिसके द्वारा बिजली के बल, प्रवाह आदि के विषय में जाना जाता है । विद्युन्माला–(सं०स्त्री०) बिजली का समूह ।
विद्युल्लता–(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली ।
विद्योतन–(सं०वि०) दीप्तियुक्त ।
विद्योती–(सं०वि०) प्रभावशाली ।
विद्रथ–(सं०वि०) मोटा, पुष्ट ।
विद्राव–(सं०पुं०) बहना, पिघलना ।
विद्रावण–(सं०पुं०) पिघलना, भीगना ।
विद्रावित–(सं०वि०) भीगा हुआ ।
विद्रावी–(सं०वि०) भागनेवाला, गलनेवाला ।
विद्रुत–(सं०वि०) गला हुआ, भीगा हुआ ।
विद्रुम–(सं०पुं०) प्रवाल, मूंगा ।
विद्रोह–(सं०पुं०) द्वेष, राज्य को हानि पहुँचानेवाला उपद्रव । विद्रोही–(सं०वि०) राज्य को हानि पहुँचानेवाला ।
विद्वत्तम–(सं०वि०) विद्वानों में श्रेष्ठ ।
विद्वत्ता–(सं०स्त्री०) पाण्डित्य, पंडिताई ।
विद्वत्व–(सं०पुं०) पाण्डित्य ।
विद्वान्–(सं०पुं०) वह जिसने बहुत विद्या पढ़ी हो, पण्डित, सर्वज्ञ ।
विद्विष–(सं०पुं०) शत्रु, वैरी ।
विद्वेष–(सं० वि०) शत्रु । विद्वेषिता–(सं०स्त्री०) शत्रुता करनेवाला, वैरी ।
विधंस–(हिं०पुं०) विध्वंस, नाश ।
विध–(हिं०पुं०) विधि, ब्रह्मा ।
विधनता–(सं०स्त्री०) निर्धनता ।
विधना–(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, अपने ऊपर लेना; (हिं०स्त्री०) भवितव्यता; (हिं०पुं०) विधि, ब्रह्मा ।
विधर–(हिं०क्रि०वि०) देखो उधर, उस ओर ।
विधरण–(सं०पुं०) रोकना, पकड़ना ।
विधर्म–(सं०पुं०) वह धर्म जो अपना न हो, पराये का धर्म; (वि०) गुणहीन । विधर्मिक, विधर्मी–(हिं०पुं०) वह जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी है ।
विधवा–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, राँड़ । विधवापन–(हिं०पुं०) रँड़ापा, वैधव्य । विधवा-आश्रम–(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ निराश्रय विधवाओं के पालन-पोषण आदि का प्रबन्ध रहता है ।
विधांसना–(हिं०क्रि०) नष्ट करना, इधर-उधर करना ।
विधातव्य–(सं०वि०) कर्तव्य, करने योग्य ।
विधाता–(हिं०पुं०) व्यवस्था करनेवाला, प्रबन्ध करनेवाला, जगत् की रचना करनेवाला ।
विधात्री–(सं०स्त्री०) विधान करनेवाली ।
विधान–(सं० पुं०) किसी कार्य का आयोजन, अनुष्ठान, प्रबन्ध, विधि, पद्धति, प्रणाली, ढंग, उपाय, पूजा, व्यवस्था, रचना । विधानक–(सं०वि०) विधि या रीति जाननेवाला ।
विधानी–(हिं० पु०) विधिपूर्वक कार्य करनेवाला ।
विधायक–(सं०पुं०) बनाने या रचनेवाला ।
विधि–(सं०स्त्री०) [illegible] करने की रीति,

ढंग, नियम, व्यवस्था, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे कोई आज्ञा दी जाती है।
विधिज्ञ–(सं० विं) शास्त्रोक्त विधान को जाननेवाला।
विधिदृष्ट–(सं०वि०) शास्त्र विहित।
विधिना–(हिं०पुं०) विधि, ब्रह्मा।
विधिपूर्वक–(सं० वि०) नियम के अनुसार।
विधिरानी–(हिं०स्त्री०) सरस्वती।
विधिलोक–(सं०पुं०) ब्रह्मलोक।
विधिवत्–(सं०अव्य०) विधिपूर्वक।
विधिबद्ध–(सं०वि०) नियमबद्ध।
विधिशास्त्र–(सं० पुं०) व्यवहारशास्त्र, स्मृतिशास्त्र।
विधुन्तुद–(हिं०पुं०) राहु।
विधु–(सं०पुं०) चन्द्रमा। विधुप्रिया–(सं०स्त्री०) कुमुदिनी।
विधुबदनी–(हिं०स्त्री०) चन्द्रमुखी, सुन्दर स्त्री।
विधुमणि–(हिं०स्त्री०) चन्द्रकान्त मणि।
विधुर–(सं०वि०) व्यग्र, व्याकुल।
विधुवदनी–(सं०स्त्री०) चन्द्रमा के समान मुखवाली स्त्री, सुन्दर स्त्री।
विधूत–(सं०वि०) काँपता हुआ, हटाया हुआ, दूर किया हुआ।
विधूम–(सं०वि०) बिना धुवें का।
विधेय–(सं०वि०) कर्तव्य, जिस कार्य का करना उचित हो, होनवाला, व्याकरण में वह वाक्य जिसके द्वारा किसी के विषय में कुछ कहा जाय।
विध्वंस–(सं०पुं०) नाश, अनादर, वैर।
विध्वंसक–(सं०वि०) नाश करनेवाला।
विध्वंसि–(हिं०वि०) नाश करनेवाला।
विध्वस्त–(सं०वि०) नाश किया हुआ।
विन–(हिं०सर्वं०) [illegible]य०) बिना।

विनत–(सं०वि०) विनीत, नम्र, शिष्ट, झुका हुआ।
विनतड़ी–(हिं०स्त्री०) देखो विनति।
विनति–(सं०स्त्री०) नम्रता, शिष्टता, सुशीलता, प्रार्थना।
विनती–(हिं०स्त्री०) देखो विनति।
विनमन–(सं०पुं०) झुकाना, नवाना।
विनम्र–(सं०वि०) अति विनीत, सुशील।
विनय–(सं०स्त्री०) नम्रता, प्रार्थना।
विनयपत्र–(सं०पु०) प्रार्थनापत्र।
विनयवान्–(सं०वि०) नम्र, शिष्ट।
विनयशील–(सं०वि०) विनययुक्त, सुशील।
विनयी–(हिं०वि०) विनीत, नम्र।
विनशन–(सं०पुं०) नाश।
विनश्वर–(सं०वि०) अनित्य, नष्ट होने वाला। विनश्वरता–(सं० स्त्री०) अनित्यता।
विनष्ट–(सं०वि०) जो नष्ट हो गया हो।
विनस–(सं०वि०) बिना नाक का।
विनसना–(हिं०क्रि०) नष्ट होना।
विनसाना–(हिं०क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना।
विना–(सं०अव्य०) अभाव में।
विनती–(सं० स्त्री०) विनय, प्रार्थना।
विनाथ–(सं०वि०) बिना रक्षक का।
विनाश–(सं०पुं०) ध्वंस, नाश।
विनाशक–(सं०वि०) नाश करनेवाला।
विनाशन–(सं०पुं०) संहार, नाश।
विनाशित–(सं०वि०) नाश किया हुआ।
विनास–(हिं०पुं०) विनाश। विनासना–(हिं०क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना।
विनिःसृत–(सं०वि०) बाहर निकाला हुआ।
विनिक्षिप्त–(सं०वि०) परित्यक्त।
विनिग्रह–(सं०पुं०) प्रतिबंध, बंधेज।
विनिघ्न–(सं०वि०) गुणा किया हुआ।

विनिद्र–(सं॰वि॰) निद्रारहित।
विनिद्रत्व–(सं॰पुं॰) जागरण।
विनिध्वस्त–(सं॰वि॰) ध्वंस-प्राप्त।
विनिन्दक–(सं॰पुं॰) अत्यन्त निन्दा करनेवाला। विनिन्दित–(सं॰ वि॰) बहुत निन्दा किया हुआ।
विनिपात–(सं॰पुं॰) ध्वंस, हत्या। विनिपातक–(सं॰वि॰) संहार या अपमान करनेवाला।
विनिपातित–(सं॰वि॰) फेंका हुआ।
विनिमय–(सं॰पुं॰) परिवर्तन, अदलबदल, बंधक, गिरवी।
विनियुक्त–(सं॰वि॰) नियोजित।
विनियोग–(सं॰पुं॰) किसी फल की आकांक्षा से किसी वस्तु का उपयोग। विनियोजित–(सं॰वि॰) प्रेरित, नियुक्त
विनिर्गत–(सं॰वि॰) निकाला हुआ, बीता हुआ।
विनिर्गम–(सं॰पुं॰) प्रस्थान।
विनिर्जित–(सं॰वि॰) पराभूत, पराजित।
विनिर्भय–(सं॰वि॰) भयरहित।
विनिर्मल–(सं॰वि॰) अति निर्मल।
विनिर्मित–(सं॰वि॰) अच्छी तरह से बना हुआ।
विनिर्मुक्त–(सं॰वि॰) छुटकारा पाया हुआ।
विनिर्मोक–(सं॰वि॰) वस्त्ररहित।
विनिवर्तित–(सं॰वि॰) लौटा हुआ।
विनिश्चल–(सं॰वि॰) विशेष रूप से स्थिर।
विनिहत–(सं॰वि॰) आहत, चोट खाया हुआ।
विनीत–(सं॰वि॰) सुशील, शिष्ट, नम्र।
विनीतता–(सं॰स्त्री॰) नम्रता।
विनीति–(सं॰ स्त्री॰) सुशीलता, सम्मान।
विनु–(हिं॰अव्य॰) देखो बिना।
विनूठा–(हिं॰वि॰) अपूर्व, अनूठा।
विनोद–(सं॰पुं॰) कौतूहल, खेल-कूद, क्रीड़ा, प्रसन्नता, आनन्द। विनोदित–(सं॰वि॰) हर्षित, प्रसन्न। विनोदी–(हिं॰वि॰) क्रीड़ा करनेवाला, हँसी करनेवाला।
विन्दु–(सं॰पुं॰) बूंद, बुंदकी, अनुस्वार।
विन्दुर–(हिं॰पुं॰) छोटी बिन्दी, बुनकी।
विन्यस्त–(सं॰वि॰) स्थापित, रक्खा हुआ
विन्यास–(सं॰पुं॰) ठीक स्थान पर रखना या बैठाना, जड़ना।
विपक्ष–(सं॰पुं॰) प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु, विरोध, खण्डन, व्याकरण में बाधक नियम या अपवाद; (वि॰) विरुद्ध, प्रतिकूल, बिना पक्ष या डैने का।
विपक्षता–(सं॰ स्त्री॰) विपक्ष होने की क्रिया या भाव।
विपक्षी–(सं॰वि॰) विरुद्ध पक्ष का।
विपत्ति–(सं॰पुं॰) आपत्ति, क्लेश, संकट की अवस्था, कठिनाई।
विपथ–(सं॰पुं॰) कुमार्ग, बुरा मार्ग।
विपद–(सं॰स्त्री॰) आपत्ति, संकट।
विपद–(हिं॰स्त्री॰) विपत्ति, संकट, दुःख।
विपरीत–(सं॰वि॰) विरुद्ध।
विपर्यय–(सं॰पुं॰) व्यतिक्रम, मिथ्या ज्ञान, उलटफेर, अव्यवस्था, भ्रम।
विपर्यस्त–(सं॰वि॰) उलटा-पुलटा हुआ।
विपर्यास–(सं॰पुं॰) व्यतिक्रम, मिथ्या ज्ञान।
विपल–(सं॰पुं॰) पल का साठवाँ भाग।
विपश्चित्–(सं॰पुं॰) विद्वान्, पण्डित।
विपाक–(सं॰पुं॰) भोजन का पेट में पचना।
विपाटित–(सं॰वि॰) उखाड़ा हुआ।
विपावित–(सं॰वि॰) नष्ट किया।

विपिन–(सं०पुं०) उपवन, वाटिका, जंगल। **विपिनबिहारी**–(सं०वि०) जंगल में विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण का एक नाम।
विपुत्र–(सं०वि०) पुत्रहीन, पुत्ररहित।
विपुत्रा–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसको कोई पुत्र न हो।
विपुल–(सं०वि०) बृहत्, अगाध संख्या या परिमाण में अधिक।
विपुलता–(सं०स्त्री०) अधिकता।
विपुलमति–(सं०पुं०) बहुत बुद्धिमान्।
विपुला–(सं०स्त्री०) वसुन्धरा, पृथ्वी।
विपुलाई–(हिं०स्त्री०) विपुलता, अधिकता।
विपुष्ट–(सं०वि०) बड़ा पुष्ट या दृढ़।
विपुष्प–(सं०वि०) बिना फूल का।
विपोहना–(हिं० क्रि०) लीपना-पोतना, नाश करना।
विप्र–(सं०पुं०) ब्राह्मण, पुरोहित।
विप्रकर्ष–(सं०पुं०) दूर से खींच लेना।
विप्रकर्षण–(सं० पुं०) दूर से खींचने की क्रिया।
विप्रकीर्ण–(सं०वि०) छितराया हुआ, बिखरा हुआ।
विप्रकृष्ट–(सं०वि०) खींचकर दूर किया हुआ।
विप्रजन–(सं०पुं०) ब्राह्मण, पुरोहित।
विप्रतारक–(सं०वि०) धोखा देनेवाला।
विप्रतिपत्ति–(सं०पुं०) विरोध।
विप्रमत्त–(सं०वि०) अति प्रमत्त।
विप्रयुक्त–(सं०वि०) बिछुड़ा हुआ।
विप्रयोग–(सं०पुं०) वियोग।
विप्रलब्ध–(सं०वि०) धोखा दिया हुआ, वंचित।
विप्रलम्भ–(सं०पुं०) प्रिय वस्तु का न मिलना। **विप्रलम्भक**–(सं०वि०) छली, धूर्त।
विप्रलाप–(सं०पुं०) व्यर्थ की बकवाद।
विप्रलीन–(सं०वि०) चारों ओर बिखरा हुआ।
विप्रलोप–(सं०पुं०) पूर्ण लोप, नाश।
विप्रलोभी–(सं०वि०) बड़ा लालची, ठग।
विप्रषित–(सं०वि०) बाहर भेजा हुआ।
विप्लव–(सं०पुं०) उपद्रव, हलचल, विपत्ति, अव्यवस्था।
विप्लावक–(सं० पुं०) राज्यद्रोही।
विप्लावी–(हिं०वि०) उपद्रव करनेवाला।
विप्लुत–(सं०वि०) आकुल, घबड़ाया हुआ।
विप्लुति–(सं०स्त्री०) उपद्रव, विप्लव।
विफल–(सं०वि०) व्यर्थ, निष्फल।
विबुद्ध–(सं०वि०) जागृत, जागता हुआ।
विबुध–(सं०पुं०) बुद्धिमान्, पण्डित।
विबुधाधिप, विबुधाधिपति–(हिं० पुं०) इन्द्र।
विबुधान–(सं०पुं०) आचार्य, देवता।
विबुधेतर–(सं०पुं०) असुर, दैत्य।
विबोध–(सं०पुं०) जागरण, अच्छा ज्ञान। **विबोधन**–(सं०पुं०) समझाना, बुझाना। **विबोधित**–(सं०वि०) बतलाया हुआ।
विभंग–(सं०पुं०) विभाग, भ्रूभङ्ग।
विभक्त–(सं०वि०) अलग किया हुआ, बाँटा हुआ।
विभक्ति–(सं०स्त्री०) विभाग, बाँट, व्याकरण में शब्द में लगाया हुआ वह प्रत्यय जिससे उस पद का क्रियापद से संबंध सूचित होता है।
विभग्न–(सं०वि०) टूटा-फूटा हुआ।
विभव–(सं०पुं०) ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति।
विभवमद–(सं०पुं०) धन का अहंकार।
विभववान्–(सं०वि०) शक्तिशाली।
विभवशाली–(सं०वि०) ऐश्वर्ययुक्त।
विभा–(सं०स्त्री०) प्रभा, कान्ति, शोभा।

विभाग–(सं०पुं०) बाँटने की क्रिया या भाव, बँटवारा।
विभागी–(हिं०पुं०) विभाग करनेवाला।
विभाजक–(सं०पुं०) विभाग करनेवाला, गणित में वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या में भाग दिया जाता है।
विभाजन–(सं० पुं०) भाग करने या बाँटने की क्रिया। विभाजित–(सं० वि०) भाग किया हुआ, बाँटा हुआ।
विभाज्य–(सं०वि०) विभाग करने योग्य।
विभात–(सं० पुं०) प्रभात, सबेरा।
विभाति–(हिं०पुं०) शोभा, सुन्दरता।
विभाना–(हिं०क्रि०) सुशोभित होना।
विभारना–(हिं०क्रि०) चमकना।
विभावन–(सं०पुं०) विशेष रूप से चिन्तन
विभावनीय–(सं०वि०) चिन्तन करने योग्य।
विभावरी–(सं०स्त्री०) रात्रि, वह रात जिसमें तारे चमकते हों।
विभावित–(सं०वि०) चिन्तित, सोचा हुआ।
विभिन्न–(सं०वि०) अलग अलग, अनेक प्रकार का, उलटा। विभिन्नता–(सं० स्त्री०) भेद।
विभीत–(सं०वि०) डरा हुआ।
विभीति–(सं०स्त्री०) भय, डर, शंका।
विभीषक–(सं०वि०) डरानेवाला।
विभीषण–(सं०वि०) बड़ा भयंकर या डरावना।
विभु–(सं०पुं०) वह जो सर्वव्यापक हो, नित्य, अचल, शक्तिमान्; (पुं०) आत्मा, विभुवर, स्वामी।
विभुग्न–(सं०वि०) कुछ टूटा हुआ।
विभूता–(सं०पुं०) ऐश्वर्य, प्रभुता, शक्ति।
विभूति–(सं०स्त्री०) वृद्धि, ऐश्वर्य, बड़ाई।
विभूतिमान्–(सं०पुं०) ऐश्वर्यशाली।
विभूषण–(सं० पुं०) अलंकार, गहना।
विभूषणा–(सं०स्त्री०) शोभा। विभूषना–(हिं० क्रि०) अलंकृत, सजाया हुआ। विभूषित–(सं० वि०) सुशोभित, गुणों से युक्त।
विभूषा–(सं०स्त्री०) अलंकार, गहना।
विभेटन–(हिं०पुं०) गले लगाना।
विभेत्ता–(सं०वि०) डरानेवाला।
विभेद–(सं०पुं०) विभिन्नता। विभेदक–(सं०वि०) काटनेवाला। विभेदकारी–(सं०वि०) फूट उत्पन्न करनेवाला। विभेदना–(हिं०क्रि०) छेदना, काटना, प्रवेश करना। विभेदी–(हिं० वि०) छेदकर घुसनेवाला।
विभो–(हिं०पुं०) हे प्रभु।
विभोर–(हिं०वि०) डूबा हुआ।
विभौ–(हिं०पुं०) देखो विभव।
विभ्रंशित–(सं०वि०) पतित, विलुप्त।
विभ्रम–(सं०पुं०) भ्रम, संशय, सन्देह।
विभ्रमी–(सं०वि०) विभ्रमयुक्त।
विभ्रान्त–(सं०वि०) भ्रम में पड़ा हुआ।
विभ्रान्ति–(सं०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
विमण्डन–(सं० पुं०) आभूषण।
विमण्डित–(सं०वि०) सुशोभित, सजा हुआ।
विमत–(सं०पुं०) विरुद्ध मत या सिद्धांत।
विमति–(सं०पुं०) कुमति।
विमत्सर–(सं०पुं०) अधिक अहंकार।
विमद–(सं०वि०) मदरहित।
विमन, विमनस्क–(सं० वि०) उदास, खिन्न।
विमन्यु–(सं०वि०) क्रोधरहित।
विमर्द–(सं०पुं०) पीसना, झगड़ा, विनाश, युद्ध। विमर्दन–(सं०पुं०) नष्ट करना, मार डालना विमर्दित–(सं० वि०) कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ।

विमर्श–(सं०पुं०) समालोचना, परामर्श
विमल–(सं०वि०) निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष। **विमलता**–(सं०स्त्री०) पवित्रता, मनोहरता। **विमलत्व**–(सं०पुं०) स्वच्छता, निर्मलता।
विमाता–(सं०स्त्री०) सौतेली माँ।
विमातृज–(सं०पुं०) सौतेला भाई।
विमान–(सं०पुं०) वायुयान।
विमानना–(हिं० स्त्री०) अपमान, तिरस्कार।
विमार्ग–(सं०पुं०) बुरा मार्ग, कुचाल।
विमुक्त–(सं०वि०) भली भाँति मुक्त, स्वतंत्र, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ। **विमुक्ति**–(सं०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा।
विमुख–(सं०वि०) मुखरहित, निवृत्त, विरुद्ध, निराश। **विमुखता**–(सं०स्त्री०) विरोध, अप्रसन्नता।
विमुग्ध–(सं०वि०) मोहित, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
विमूढ़–(सं०वि०) मोह-प्राप्त, भ्रम में पड़ा हुआ, बेसुध, अचेत।
विमूल–(सं०वि०) निर्मल, बिना जड़ का।
विमलन–(सं० पुं०) नाश, ध्वंस।
विमृश–(सं० पुं०) आलोचना।
विमृष्ट–(सं०वि०) जिस पर तर्क-वितर्क किया गया हो।
विमोक–(सं०पुं०) मुक्ति, छुटकारा।
विमोघ–(हिं०वि०) अमोघ। **विमोचक**–(सं० वि०) बन्धन खोलनेवाला।
विमोचन–(सं० पुं०) बन्धन खोलना।
विमोचना–(हिं० क्रि०) बन्धन खोलना, मुक्त करना। **विमोचित**–(सं०वि०) मुक्त किया हुआ, खुला हुआ।
विमोह–(सं०पुं०) भ्रम, अज्ञान।
विमोहक–(सं०पुं०) चित्त को लुभानेवाला। **विमोहना**–(हिं०क्रि०) मोहित होना या करना।
विमोहित–(सं०वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ, मूर्छित। **विमोही**–(सं०स्त्री०) लुभानेवाला।
विमौन–(सं०वि०) मौनरहित।
विम्बित–(सं०वि०) प्रतिबिम्बित।
विय–(हिं०वि०) दो, जोड़ा।
वियत्–(सं०पुं०) आकाश, वायुमण्डल।
वियुत–(सं०वि०) रहित, अलग, हीन।
वियुक्त–(सं०वि०) बिछुड़ा हुआ, रहित।
वियोग–(सं०पुं०) विरह, अलगाव।
वियोगी–(हिं०पुं०वि०) विरही पुरुष।
वियोजक–(सं०पुं०) गणित में वह संख्या जो किसी बड़ी संख्या में से घटाई जाने वाली हो।
वियोजन–(सं०पुं०) पृथक् करना, बाकी निकालना। **वियोजित**–(सं० वि०) अलगाया हुआ।
विरंचि–(सं०पुं०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।
विरक्त–(सं०वि०) विमुख, अप्रसन्न, उदासीन। **विरक्ति**–(सं०स्त्री०) उदासीनता।
विरचन–(सं०पुं०) निर्माण। **विरचना**–(हिं०क्रि०) निर्माण करना। **विरचित**–(सं०वि०) निर्मित, बनाया हुआ।
विरज–(हिं०वि०) स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष।
विरत–(सं०वि०) विमुख, विरक्त।
विरति–(सं०पुं०) उदासीनता, वैराग्य।
विरथ–(सं०वि०) बिना रथ का, पैदल, रथ से गिरा हुआ।
विरद–(हिं०पुं०) प्रसिद्धि, यश, कीर्ति; (वि०) बिना दाँत का।
विरदावली–(सं०स्त्री०) यश की कथा।
विरदैत–(हिं०वि०) यशस्वी।

विरमना–(हिं०क्रि०) विराम करना, ठहरना। विरमाना–(हिं०क्रि०) अनुरक्त करना, फँसाना।
विरल–(सं०वि०) जो घना न हो, दूर दूर पर हो। विरलता–(हिं० स्त्री०) पतलापन।
विरव–(सं०वि०) शब्दरहित।
विरश्मि–(सं०वि०) बिना कारण का।
विरस–(सं०वि०) नीरस, फीका, बिना स्वाद का।
विरह–(सं०पुं०) वियोग।
विरहा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का गीत जिसको अहीर गड़रिये गाते हैं।
विरहित–(सं०वि०)रहित,शून्य, बिना।
विराग–(सं० पुं०) उदासीनभाव, वैराग्य।
विरागी–(हिं०वि०) विरक्त, संसारत्यागी।
विराजना–(हिं०क्रि०) उपस्थित रहना, शोभित होना।
विराजमान–(हिं०वि०) सुशोभित, बैठा हुआ।
विराजित–(सं०वि०) बैठा हुआ, उपस्थित, चमकता हुआ।
विराम–(सं०पुं०) ठहराव, विश्राम, बोलते समय वाक्य में वह स्थान जहाँ ठहरना पड़ता हो।
विरावी–(हिं०वि०) कोलाहल करनेवाला।
विरास, विरासी–(हिं०) देखो विलास, विलासी।
विरिंच–(हिं०पुं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु।
विरुज–(सं०वि०) रोगरहित, नीरोग।
विरुझना–(हिं०क्रि०) उलझना।
विरुत–(सं०वि०)कूजित, गूंजता हुआ।
विरुद–(सं०पुं०) यश, कीर्ति, गुण।
विरुदावली–(सं०स्त्री०) किसी के प्रताप, पराक्रम आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन।
विरुद्ध–(सं०वि०) प्रतिकूल, विपरीत।
विरुद्धता–(सं० स्त्री०) प्रतिकूलता, उलटापन।
विरुधिर–(सं०वि०) रक्तहीन।
विरूप–(सं०वि०) कुरूप, भद्दा, विरुद्ध, भिन्न। विरूपता–(सं०स्त्री०) कुरूपता, भद्दापन।
विरूपाक्ष–(सं०वि०) डरावने नेत्रवाला।
विरूपी–(हिं०वि०) कुरूप।
विरेचक–(सं०वि०) शौच लानेवाला। विरेचन–(सं०पुं०) शौच लानेवाली औषधि।
विरेफ–(सं०वि०) रेफशून्य।
विरोध–(सं०पुं०) भाव विपरीत, वैर।
विरोधक–(सं०वि०) विरोध करनवाला।
विरोधना–(हिं०क्रि०) विरोध करना, शत्रुता करना।
विरोधाचरण–(सं०पुं०) शत्रुता का व्यवहार।
विरोधित–(सं०वि०) जिसका विरोध किया हुआ हो।
विरोधिता–(सं०स्त्री०) शत्रुता, वर।
विरोधिनी–(सं०स्त्री०) विरोध करनेवाली।
विरोधी–(हिं०वि०) विरोध करनेवाला, विपक्षी, शत्रु।
विरोधोक्ति–(सं०स्त्री०)परस्पर विरोधी वचन।
विरोम–(सं०वि०) रोमरहित, बिना रोवें का।
विरोष–(सं०वि०) क्रोधरहित।
विरोहण–(सं०पुं०) एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में लगाना।
विरोही–(हिं०पुं०) पौधा लगानेवाला।

वितं–(हि०पुं०) देखो वृत्ति।
विलंघनीय–(सं०वि०) लाँघने योग्य।
विल–(सं०पुं०) छिद्र, कन्दरा।
विलक्षण–(सं०पुं०) अपूर्व, अद्भुत।
विलक्षणता–(सं०स्त्री०) अनोखापन।
विलखना–(हिं०क्रि०) दुखी होना।
विलखाना–(हिं०क्रि०) घबड़ाना।
विलग–(सं०वि०) अलग, पृथक्; (पुं०) भेद। विलगाना–(हिं०क्रि०) अलग होना या करना।
विलग्न–(सं०वि०) संलग्न, लगा हुआ।
विलंघी–(सं०वि०) नियम का उल्लंघन करनवाला।
विलच्छन–(हिं०वि०) देखो विलक्षण।
विलज्ज–(सं०वि०) लज्जारहित।
विलपन–(सं०पुं०) विलाप, वार्तालाप।
विलपना–(हिं०क्रि०) विलाप करना, रोना। विलपाना–(हिं०क्रि०) रुलाना।
विलम्ब–(सं०पुं०) अति काल, देर।
विलम्बन–(सं०पुं०) विलंब करना, सहारा लेना। विलम्बना–(हिं०क्रि०) देर करना, सहारा लेना। विलम्बित–(सं०वि०) लटकता हुआ, जिसको देर हुई हो।
विलम्बी–(सं०वि०) देर करनेवाला।
विलम्भ–(सं०पुं०) उदारता, उपहार।
विलय–(सं०पुं०) प्रलय, लोप, नाश, मृत्यु।
विलसन–(सं०पुं०) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा। विलसना–(हिं०क्रि०) विलास करना, शोभा प्राप्त करना।
विलाप–(सं०पुं०) क्रन्दन, विकल होकर रोने की क्रिया। विलापना–(हिं०क्रि०) विलाप करना, रोना।
विलास–(सं०पुं०) हर्ष, आनन्द, सुख, मनोरंजन, हावभाव।
विलासभवन, विलासमन्दिर–(सं० पुं०) क्रीड़ाघर, नाचघर।
विलासिनी–(सं० स्त्री०) सुन्दर युवा स्त्री, वेश्या।
विलासी–(हिं०पुं०) कामी पुरुष।
विलिखित–(सं०वि०) लिखा हुआ।
विलिप्त–(सं०वि०) लिपा-पुता हुआ।
विलीक–(सं०वि०) अनुचित, अयोग्य।
विलीन–(सं०वि०) लिप्त, छिपा हुआ।
विलुप्त–(हिं०वि०) जो देख न पड़ता हो।
विलुलित–(हिं०वि०) लहराता हुआ।
विलन–(सं०वि०) अलग किया हुआ।
विलेप–(सं०पुं०) लेप। विलेपन–(सं० पुं०) लेप करने की क्रिया।
विलोक–(सं०पुं०) दृष्टि। विलोकना–(हिं०क्रि०) देखना। विलोकनीय–(सं०वि०) देखने योग्य।
विलोकित–(सं०वि०) देखा हुआ।
विलोचन–(सं०पुं०) नयन, नेत्र, आँख।
विलोप–(सं०पुं०) नाश, हानि। विलोपक–(सं०वि०) नाश करनेवाला।
विलोपना–(हिं०क्रि०) लोप करना, बाधा डालना।
विलोपी–(सं०वि०) नाश करनेवाला।
विलोभ–(सं०पुं०) मोह, भ्रम, माया।
विलोभन–(सं०पुं०) मोहित करने का व्यापार।
विलोल–(सं०वि०) चंचल, चपल।
विल्व–(सं०पुं०) बेल का पेड़ विल्वपत्र–(सं०पुं०) बेल का पत्ता।
विवंश–(सं०वि०) वंशरहित। विव–(हिं०वि०) दो, दूसरा।
विवेचन–(सं०पुं०) कथन।
विवक्ता–(हिं० पुं०) कहनेवाला, संशोधक।
विवक्षा–(सं०स्त्री०) बोलने की इच्छा,

आशय, तात्पर्य, अर्थ। विवक्षित–(सं० वि०) इच्छा किया हुआ।
विवदना–(हिं०क्रि०) शास्त्रार्थ करना।
विवर–(सं०पुं०) बिल, छेद, गुहा।
विवरण–(सं०पुं०) सविस्तर वर्णन, व्याख्या, भाष्य, टीका।
विवर्जन–(सं०पुं०) परित्याग, उपेक्षा।
विवर्जनीय–(सं०वि०) त्याग करने योग्य।
विवर्जित–(सं०वि०) निषिद्ध, उपेक्षित।
विवर्ण–(सं०वि०) नीच, कान्तिहीन।
विवर्तन–(सं०पुं०) परिभ्रमण।
विवर्तित–(सं०वि०) बदला हुआ।
विवर्धन–(सं०पुं०) वृद्धि, बढ़ती।
विवश–(सं०वि०) पराधीन, परवश।
विवशता–(सं०स्त्री०) पराधीनता।
विवस–(हिं०वि०) देखो विवश।
विवस्त्र–(सं०वि०) वस्त्रहीन, नंगा।
विवाद–(सं० पुं०) वाक्युद्ध, झगड़ा, कलह, मतभेद। **विवादक**–(सं०पुं०) झगड़ालू। **विवादास्पद**–(सं० वि०) जिस पर विवाद या झगड़ा हो।
विवाह–(सं०पुं०) पाणिग्रहण, परिणय, ब्याह, दारकर्म। **विवाहना**–ब्याह करना।
विवाहित–(सं०वि०) जिसका विवाह हो चुका हो। **विवाहिता**–(सं०वि०, स्त्री०) ब्याही हुई स्त्री।
विवि–(हिं०वि०) दो, दूसरा।
विविक्त–(सं०वि०) बिलगा हुआ।
विवित्सा–(सं०स्त्री०) जानने की इच्छा।
विवित्सु–(सं०वि०) जानने के लिये उत्सुक।
विविध–(सं०वि०) अनेक प्रकार का।
विविर–(सं०पुं०) खोह, गुहा, बिल।
विवुध–(सं०पुं०) देवता, ज्ञानी, पंडित।
विवृत्त–(सं०वि०) घमा हुआ।
विवृति–(सं०स्त्री०) परिभ्रमण, भाष्य, टीका।

विवेक–(सं०पुं०) भली बुरी वस्तु का ज्ञान। **विवेकज्ञान**–(सं०पुं०) तत्व-ज्ञान, सच्चा ज्ञान। **विवेकी**–(हिं० पुं०) भला, बुद्धिमान्, ज्ञानी, न्यायाधीश।
विवेचन–(सं०पुं०) परीक्षा, जाँच, निर्णय, अनुसन्धान।
विवेचित–(सं०वि०) निश्चित।
विशंक–(सं०वि०) निर्भय, निडर।
विशंकनीय–(सं०वि०) डरपोक।
विशंका–(सं०स्त्री०) अविश्वास।
विशंकी–(सं०वि०) जिसको किसी का भय हो।
विशस्पति, विशाम्पति–(सं०पुं०) राजा।
विशारद–(सं०पुं०) किसी विषय का अच्छा विद्वान्, दक्ष, कुशल; (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रसिद्ध।
विशाल–(सं०वि०) अति विस्तृत और बड़ा भव्य, प्रसिद्ध।
विशिष्ट–(सं०वि०) विलक्षण, अद्भुत, यशस्वी, कीर्तिमान्। **विशिष्टता**–(सं० स्त्री०) विशेषता।
विशीर्ण–(सं०वि०) जीर्ण, बहुत पुराना।
विशीर्ष–(सं०वि०) बिना सिर का।
विशुद्ध–(सं०वि०) अति शुद्ध।
विशुद्धगणित–(सं०पुं०) वह गणित जिसमें पदार्थ का कोई संबंध रखते हुए केवल राशि का विचार किया जाता है।
विशुद्धचरित्र–(सं०पुं०) शुद्ध आचरण का।
विशुद्धता–(सं०स्त्री०) पवित्रता।
विशेष–(सं०पुं०) अन्तर, भेद, समानता, विचित्रता, नियम, तत्त्व, अधिकता, पदार्थ, अवयव, अङ्ग, वैशेषिक।
विशेषक–(सं०वि०) विशेषता उत्पन्न करनेवाला।
विशेषज्ञ–(सं०पुं०) किसी विषय का अच्छा जानकार।

विशेषण–(सं०पुं०) वह जो किसी प्रकार की विशेषता दिखलाता हो, व्याकरण में वह शब्द जो किसी संज्ञा या क्रिया की विशेषता सूचित करता है।
विशेषता–(सं०स्त्री०) विशेष का भाव या धर्म। विशषना–(हिं० क्रि०) निश्चय करना। विशेषित–(सं०वि०) जो विशेष रूप से अलग किया हो।
विशेष्य–(सं०पुं०) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा रहता है।
विशोक–(सं०वि०) शोकरहित।
विशोध–(सं०वि०) विशुद्ध करने योग्य।
विशोधी–(सं०वि०) अच्छी तरह से शुद्ध करनेवाला।
विशोषण–(सं०पुं०) अच्छी तरह सोखना।
विश्रम्भ–(सं०पुं०) विश्वास, प्रम।
विश्रब्ध–(सं०वि०) विश्वसनीय, शान्त, निर्भय, निडर।
विश्रान्त–(सं०वि०) जिसकी थकावट दूर हो गई हो। विश्रान्ति–(सं०पुं०) विश्राम, आराम।
विश्राम–(सं०पुं०) थकावट दूर करना, सुख, ठहरने का स्थान।
विश्रुत–(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।
विश्लिष्ट–(सं०वि०) अलग किया हुआ, प्रकाशित, विकसित, शिथिल।
विश्लेष–(सं०पुं०) शिथिलता, विकास, वियोग, विछोह। विश्लेषण–(सं० पुं०) किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को पृथक् करना।
विश्व–(सं० पुं०) समस्त ब्रह्माण्ड; (वि०) समस्त, अधिक।
विश्वकथा–(सं०स्त्री०) संसार संबंधी कथा। विश्वकर्ता–(सं०पुं०) परमेश्वर।
विश्वकर्मा–(सं०पुं०) संपूर्ण संसार की रचना करनेवाला, ईश्वर, ब्रह्मा, बढ़ई, लोहार।
विश्वकोश–(सं०पुं०) वह ग्रन्थ जिसमें संसार के सब विषयों का विस्तृत वर्णन रहता है।
विश्वक्षय–(सं०पुं०) प्रलय।
विश्वतोमुख–(सं०पुं०) परमेश्वर।
विश्वदेव–(सं०पुं०) वह देवता जिनकी पूजा नान्दीमुख श्राद्ध में होती है।
विश्वधर–(सं०पुं०) विष्णु। विश्वनाथ –(सं०पुं०) शिव, महादेव।
विश्वम्भर–(सं० पुं०) परमेश्वर।
विश्वयोनि–(सं०पुं०) ब्रह्मा।
विश्वविद्–(सं०वि०) बहुत बड़ा पंडित।
विश्वविद्यालय–(सं०पुं०) वह संस्था जिसमें सब प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती है।
विश्वविधाता–(सं०पुं०) सृष्टिकर्ता।
विश्वविश्रुत–(सं०वि०) संसार भर में प्रसिद्ध।
विश्वव्यापी–(सं०वि०) जो संपूर्ण विश्व में व्याप्त हो।
विश्वसन–(सं०पुं०) विश्वास।
विश्वसनीय–(सं०पुं०) विश्वास करने योग्य।
विश्वसित–(सं०वि०) विश्वास करने योग्य।
विश्वस्त–(सं०वि०) विश्वसनीय।
विश्वा–(हिं०पुं०) बीस पल का एक मान।
विश्वास–(सं०पुं०) मन का दृढ़ निश्चय।
विश्वासकारक–(सं० वि०) मन में विश्वास उत्पन्न करनेवाला।
विश्वासघात–(सं० पुं०) जिस पर भरोसा न किया जावे। विश्वासन–(सं०पुं०) विश्वासपात्र। विश्वास–

पात्र–(सं०वि०) विश्वास का पात्र। विश्वासी–(हिं०वि०) वह जिस पर विश्वास किया जाय।

विष–(सं०पुं०) वह पदार्थ जो प्राणी के शरीर में प्रविष्ट होनेपर प्राण ले लेता है अथवा स्वास्थ्य नष्ट कर देता है।

विषक्त–(सं०वि०) संलग्न, आसक्त।

विषघ्न–(सं०वि०) विष नाश करनेवाला।

विषण्ण–(सं०वि०) चिन्तित, दुःखी। विषण्णता–(सं०स्त्री०) मूर्खता।

विषद–(सं०वि०) निर्मल, स्वच्छ।

विषम–(सं०वि०) जो समान या बराबर न हो, वह संख्या जो दो से बराबर विभक्त न हो, ताख, बहुत तीव्र, अति कठिन, भयंकर।

विषमकर्ण–(सं०पुं०) समकोण चतुर्भुज में किसी दो बराबर के कोणों के सामने की रेखा। विषमकोण–(सं० पुं०) समकोण से भिन्न कोण। विषमचतुरस्त्र–(सं०पुं०) वह असमान बाहु का चतुष्कोण क्षेत्र जिसके सामने की भुजा समानान्तर हो। विषम चतुष्कोण–(सं० पुं०) विषम कोणवाला चतुष्कोण क्षेत्र। विषमज्वर–(सं० पुं०) वह ज्वर जो प्रतिदिन आता है परन्तु इसके आने का कोई नियत समय नहीं होता तथा तापमान भी प्रतिदिन समान नहीं होता।

विषमता–(सं०स्त्री०) असमानता, द्रोह, वर। विषम त्रिभुज–(सं०पुं०) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजा समान न हों।

विषमराशि–(सं०स्त्री०) अयुग्म राशि। विषमरूप–(सं०वि०) जो सम रूप का न हो। विषम भाग–(सं०पुं०) असमान अंश।

विषमशील–(सं०वि०) उद्धत, उद्दण्ड।

विषय–(सं०पुं०) वह जिस पर कुछ विचार किया जाय, सम्पत्ति, बड़ा प्रदेश या राज्य।

विषयक–(सं०वि०) विषय संबंधी।

विषय कर्म–(सं०पुं०) सांसारिक कार्य।

विषयता–(सं०स्त्री०) विषय का भाव या धर्म।

विषयवासी–(सं०वि०) जनपदवासी।

विषयात्मक–(सं०वि०) विषय स्वरूप।

विषयाधिप–(सं०पुं०) शासन करनेवाला।

विषाङ्कुर–(सं०पुं०) शल्य, तीर।

विषाण–(सं०पुं०) हाथी का दाँत, पशु का सींग, सुअर का दाँत।

विषाद–(सं०पुं०) दुःख, खेद, मूर्खता।

विषादी–(हिं०पुं०) वह जिसको विषाद हो।

विषान्न–(सं०पुं०) विष मिला हुआ भोजन।

विषुव–(सं०पुं०) ज्योतिष के अनुसार वह काल जब सूर्य विषुवत् रेखा पर पहुँचता है और दिन रात बराबर होते हैं।

विषुवत् रेखा–(सं०स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वीतल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम में चारों ओर जाती हुई मानी जाती है।

विष्कम्भ–(सं०पुं०) विस्तार, विघ्न।

विष्टप्–(सं०पुं०) स्वर्गलोक।

विष्टम्भ–(सं० पुं०) बाधा, रुकावट, आक्रमण। विष्टम्भन–(सं० पुं०) रोकने या संकुचित करने की क्रिया।

विष्टर–(सं०पुं०) कुशा का आसन।

विष्ठा–(सं०स्त्री०) मल।

विष्णु–(सं०पुं०) प्रधान देवता जो सृष्टि के पालन-पोषण करनेवाले माने जाते हैं।

विसंज्ञ–(सं०वि०) संज्ञाशून्य।

विसंवाद–(सं०पुं०) विरोध, डाँट-डपट।

विसंशय–(सं०वि०) संशयरहित।

विसदृश–(सं०वि०) विपरीत, विरुद्ध।
विसम–(हिं०वि०) देखो विषम। विसमता–(हिं०स्त्री०) देखो विषमता।
विसयना–(हिं०क्रि०) अस्त होना।
विसरण–(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव।
विसर्ग–(सं०पुं०) त्याग, दान, वियोग, व्याकरण में वह वर्ण (:) जिसका उच्चारण आधे "ह" के समान होता है, प्रलय।
विसर्जन–(सं०पुं०) परित्याग, बिदाई, अन्तिम उपचार, समाप्ति।
विसर्पण–(सं०पुं०) फलना, फेंकना।
विसर्पी–(सं०वि०) फैलनेवाला।
विसार–(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, प्रवाह। विसारित–(सं०वि०) फैलाया हुआ।
विसाल–देखो विशाल।
विसूचिका–(सं०स्त्री०) हैजा नामक रोग।
विसूय–(सं०वि०) सूर्यरहित।
विसृत–(सं०वि०) विस्तृत, चौड़ा।
विसृष्ट–(सं०वि०) त्यागा हुआ, फेंका हुआ।
विस्तर–(हिं०पुं०) देखो विस्तार, आधार, समूह, आसन।
विस्तार–(सं० पुं०) लंब चौड़े होने का भाव, फैलाव। विस्तारित–(सं० वि०) फैलाया हुआ।
विस्तीर्ण–(सं०वि०) विस्तृत, विशाल।
विस्तृत–(सं०वि०) विशाल, विस्तारवाला।
विस्तृति–(सं०वि०) विस्तार, फैलाव।
विस्फार–(सं०पुं०) धनुष की टंकार।
विस्फुरित–(सं०वि०) अस्थिर, चंचल। विस्फूर्जन–(सं०पुं०) किसी पदार्थ का फैलना या बढ़ाना।
विस्फुलिंग–(सं०पुं०) आग की चिनगारी।
विस्फोट–(सं०पुं०) किसी पदार्थ का वेग से फूट पड़ना। विषैला फोड़ा। विस्फोटक–(सं०पुं०) शीतला रोग, चेचक।
विस्फोटन–(सं०पुं०) धड़ाके का शब्द।
विस्मय–(सं०पुं०) आश्चर्य।
विस्मरण–(सं० पुं०) स्मरण न रखना, भूल जाना।
विस्मारक–(सं०वि०) भुलानेवाला।
विस्मित–(सं०वि०) चकित।
विस्मृत–(सं०वि०) भूला हुआ।
विस्मति–(सं०पुं०) विस्मरण, भूल जाना।
विस्रम्भ–(सं०पुं०) विश्वास।
विस्राम–(सं०पुं०) देखो विश्राम।
विहंग–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, बाण, तीर।
विहंगम–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, सूर्य।
विहंगिका–(सं०स्त्री०) बहंगी।
विहग–(सं०पुं०) देखो विहंग।
विहत–(सं० वि०) विफल, टूटा हुआ।
विहति–(सं०स्त्री०) नाश, ध्वंस।
विहनन–(सं० पुं०) हिंसा, त्याग।
विहन्ता–(सं०वि०) नाश करनेवाला।
विहरण–(सं० पुं०) घूमना, फिरना, फैलना।
विहँसना–(हिं० क्रि०) मुसकाना।
विहायस–(सं०पुं०) आकाश, पक्षी।
विहार–(स०पुं०) क्रीड़ा, संभोग, संभोग करने का स्थान, बौद्धों का मठ, मनोरंजन के लिये इधर-उधर घूमना।
विहारी–(हिं० पुं०) विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण का एक नाम।
विहित–(सं०वि०) किया हुआ।
विहिंसक–(सं०वि०) नाश करनेवाला।
विहीन–(सं०वि०) त्यागा हुआ, रहित।
विहीनता–(सं०स्त्री०) विहीन होने का भाव।

विह्वल–(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ। **विह्वलता**–(सं०स्त्री०) व्याकुलता। **विह्वली**–(हिं०पुं०) वह जो बहुत घबड़ा गया हो।
वीक्षण–(सं० पुं०) देखने की क्रिया।
वीक्षणीय–(सं०वि०) दर्शनीय, देखने योग्य। **वीक्षा**–(सं०स्त्री०) देखने की क्रिया। **वीक्षित**–(सं०वि०) अच्छी तरह देखा हुआ।
वीचि–(सं०स्त्री०) तरंग, लहर।
वीचिमाली–(सं०पुं०) सूर्य।
वीची–(सं०स्त्री०) तरंग, लहर।
वीज–(सं०पुं०) मूल कारण, तत्त्व, मूल, बीज, अंकुर।
वीजकोश–(सं०पुं०) वह फल जिसमें बीज रहते हैं।
वीजगणित–(सं० पुं०) वह गणित जिसमें अज्ञात राशियों के लिये अक्षरों का प्रयोग होता है।
वीजगर्भ–(सं०पुं०) परवल।
वीजन–(सं० पुं०) व्यजन, पंखा।
वीणा–(सं०स्त्री०) प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा, बीन।
वीत–(सं०वि०) छोड़ा हुआ, मुक्त, समाप्त, निवृत्त। **वीतराग**–(सं०वि०) निस्पृह।
वीथिका, वीथी–(सं०स्त्री०) मार्ग।
वीप्सा–(हिं०स्त्री०) व्याप्ति।
वीर–(सं०वि०) साहसी और बलवान्, शूर, सैनिक। **वीरकुक्षि**–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो वीर पुरुष जनमाती है। **वीरकेशरी**–(सं०पुं०) वीरों में अति श्रेष्ठ। **वीरगति**–(सं० स्त्री०) वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने पर प्राप्त होती है। **वीरता**–(सं० स्त्री०) शूरता। **वीरमाता**–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो वीर पुत्र जनमाती है।
वीरवर–(सं०वि०) अति वीर।
वीरव्रत–(सं०वि०) दृढ़ संकल्प।
वीरशय्या–(सं०स्त्री०) रणभूमि।
वीर्य–(सं० पुं०) शुक्र, बीज, पराक्रम, बल, शक्ति।
वृंहण–(सं०वि०) पुष्टिकारक।
वृंहित–(सं०पुं०) हाथी की चिग्घाड़।
वृक–(सं०पुं०) भेड़िया, हुँड़ार।
वृक्क–(सं०पुं०) गुरदा। **वृक्का**–(सं० स्त्री०) हृदय।
वृक्ष–(सं० पुं०) पेड़। **वृक्षचर**–(सं० पुं०) बन्दर।
वृक्षायुर्वेद–(सं० पुं०) वृक्षों का चिकित्साशास्त्र।
वृज–(हिं०पुं०) देखो व्रज।
वृत्त–(सं० पुं०) चरित्र, वार्ता; (पुं०) समाचार, वृत्तान्त, गोल परिधि का क्षेत्र, मण्डल; (वि०) बीता हुआ, गोल, वर्तुल। **वृत्तखण्ड**–(सं०पुं०) वृत्त का कोई खण्ड, कमान।
वृत्तस्थ–(सं०वि०) सदाचारी।
वृत्तानुवर्ती–(सं०पुं०) सदाचारी।
वृत्तान्त–(सं०पुं०) समाचार।
वृत्ति–(सं०स्त्री०) जीविका, व्यवहार, व्यापार। **वृत्तिकार**–(सं०पुं०) वह जिसने किसी सूत्रग्रन्थ पर वृत्ति लिखी हो।
वृत्युपाय–(सं०पुं०) अपने शरीर अथवा कुटुम्ब के भरण-पोषण का उपाय।
वृथा–(सं०अव्य०) व्यर्थ, निरर्थक।
वृद्ध–(सं०वि०) जीर्ण, जर्जर, बुड्ढा। **वृद्धकाल**–(सं०पुं०) बुढ़ापा। **वृद्धता**–(सं०स्त्री०) बुढ़ापा।
वृद्धा–(सं०स्त्री०) बुड्ढी स्त्री।
वृद्धि–(सं०स्त्री०) अधिकता, बढ़ती, सूद, समृद्धि। **वृद्धिजीवक**–(सं०वि०) सूदखोर।

वृन्द–(सं०पुं०) समूह; (पुं०) सौ करोड़ की संख्या।
वृन्दार–(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
वृष–(सं०पुं०) बैल, साँड़।
वृषण–(सं०पुं०) अण्डकोष।
वृषभ–(सं०पुं०) बलीवर्द, बैल, साँड़।
वृषल–(सं०पुं०) शूद्र, घोड़ा।
वृषोत्सर्ग–(सं०पुं०) शास्त्रोक्त विधिपूर्वक साँड़ को दागकर छोड़ना।
वृष्टि–(सं०स्त्री०) मेघों से जल का टपकना, वर्णन, वर्षा। वृष्टिजीवन–(सं०पुं०) चातक पक्षी।
वृष्णि–(सं०पुं०) मेघ, यादव, यदुवंश।
वृंह–(सं०पुं०) ध्वनि, हाथी की चिग्घाड़।
वृहत्–(सं०वि०) विपुल, बड़ा, महान्, भारी।
वृहती–(सं०स्त्री०) उतरीय वस्त्र, दुपट्टा।
वृहद्राव–(सं०पुं०) उलक, उल्लू।
वृहन्नल–(सं०पुं०) बाहु, बाँह।
वे–(हिं०सर्व०) "वह" शब्द का बहुवचन।
वेक्षण–(सं० पुं०) अच्छी तरह से खोजना या ढूँढ़ना।
वेग–(सं०पुं०) प्रवाह, धारा, शीघ्रता वृद्धि।
वेगवान्–(सं०वि०) वेग से चलनेवाला।
वेगी–(हिं०वि०) वेगवान्।
वेड़–(सं०पुं०) वृत्त की परिधि।
वेड़ा–(सं०स्त्री०) नौका, नाव, देखो बेड़ा।
वेणि–(सं०स्त्री०) स्त्रियों के बालों की गुथी हुई चोटी।
वेणी–(सं०स्त्री०) बालों की गुथी हुई चोटी, कवरी।
वेणु–(सं०पुं०) वंश, बाँस, बाँस की बाँसुरी। वेणुकार–(सं०पुं०) वंशी बनानेवाला।
वेतन–(सं०पुं०) वह धन जो किसी को काम करने के लिये दिया जाता है। जीवन का आश्रय। वेतनभोगी–(सं० वि०) वेतन पर काम करनेवाला।
वेतस–(सं०पुं०) बेंत।
वेताल–(सं०पुं०) द्वारपाल, सन्तरी।
वेत्ता–(हिं०वि०) ज्ञाता, जाननेवाला।
वेत्र–(सं०पुं०) बेंत। वेत्रक–(सं० पुं०) सरपत। वेत्रकार–(सं०पुं०) बेंत के पात्र आदि बनानेवाला। वेत्रधर–(सं०पुं०) द्वारपाल, सन्तरी।
वेत्रासन–(सं० पुं०) बेंत का बना हुआ आसन।
वेद–(सं०पुं०) श्रुति, निगम।
वेदक–(सं०वि०) परिचय करानेवाला।
वेदध्वनि–(सं०पुं०) देखो वेदघोष।
वेदना–(सं०स्त्री०) व्यथा, पीड़ा।
वेदनिन्दक–(सं०पुं०) वेदों की निन्दा करनेवाला, नास्तिक।
वेदनीय–(सं०वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य।
वेदमूर्ति–(सं०पुं०) सूर्य नारायण।
वेदरहस्य–(सं० पुं०) उपनिषद्।
वेदसम्मत–(सं०वि०) वेदोक्त मत के अनुसार।
वेदहीन–(सं०वि०) जिसको वेद में अधिकार नहीं है।
वेदाङ्ग–(सं०पुं०) वेद के अंग या शास्त्र।
वेदान्त–(सं०पुं०) वेद का अवशिष्ट अंश अर्थात् उपनिषद् और अरण्यक।
वेदान्ती–(सं०पुं०) वेदान्त शास्त्र को अच्छी तरह जाननेवाला, ब्रह्मवादी।
वेदित–(सं०वि०) ज्ञापित, जाना हुआ।
वेदितव्य–(सं०वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य।
वेदी–(सं०स्त्री०) किसी शुभ कार्य के लिये तैयार की हुई भूमि।

वेदोक्त, वेदोचित–(सं०वि०) वेद में कहा हुआ।
वेद्य–(सं०वि०) वेदितव्य, जानने योग्य।
वेध–(सं०पुं०) छेदन की क्रिया, वेधना, यन्त्रादि की सहायता से ग्रह, नक्षत्र तथा तारों को देखना।
वेधक–(सं०वि०) वेध करनेवाला।
वेधनी–(सं०स्त्री०) अंकुश।
वेधशाला–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनकी दूरी, गति आदि जानने के यन्त्र हों।
वेधालय–(सं०पुं०) देखो वेधशाला।
वेधित–(सं०वि०) छिद्रित, छेदा हुआ।
वेधी–(हि०वि०) वेधनवाला, छेदनेवाला।
वेध्य–(सं०वि०) वेधनीय, छदने योग्य।
वेपथु–(सं०पुं०) कम्प, कँपकँपी।
वेपन–(सं० पुं०) कम्पन, काँपना।
वेपमान–(सं०वि०) काँपता हुआ।
वेलदार–(हि०पुं०) भूमि खोदनेवाला।
वेला–(सं०स्त्री०) समय, क्षण, काल, अवसर, समुद्र का किनारा।
वेल्ली–(सं०स्त्री०) वेल, लता।
वेश–(सं०पुं०) वस्त्र आदि पहनने का ढंग, पहनने के वस्त्र, वस्त्रगृह।
वेषभूषा–(सं०स्त्री०) पहनावा।
वेशी–(हि०वि०) वेष धारण करनेवाला।
वेश्म–(सं०पुं०) गृह, घर।
वेश्मवास–(सं०पुं०) रहने का घर।
वेश्या–(सं०स्त्री०) गणिका, रंडी।
वेष–(सं०पुं०) नेपथ्य।
वेष्टक–(सं०वि०) घेरनेवाला।
वेष्टन–(सं०पुं०) घेरने या लपेटने की क्रिया
वेष्टित–(सं०वि०) लपेटा हुआ।
वेसन–(सं०पुं०) देखो बेसन।
वेकटिक–(सं०पुं०) रत्न-परीक्षक.जौहरी।
वैकट्य–(सं०पुं०) विकटता।
वैकल्प–(सं०पुं०) विकल्प का भाव।
वैकल्पिक–(सं०वि०) जिसमें किसी प्रकार का सन्देह हो।
वैकल्य–(सं०पुं०) विकलाहट, घबड़ाहट।
वैकालिक–(सं०वि०) उपयुक्त समय पर न होनेवाला।
वैकुण्ठ–(सं०पुं०) स्वर्ग।
वैक्रमीय–(सं०वि०) विक्रम संबंधी।
वैक्रान्त–(सं०पुं०) मणि विशेष, चुन्नी।
वैखानस–(सं०पुं०) वानप्रस्थ, वनचारी।
वैचित्र, वैचित्र्य–(सं०पुं०) विचित्रता।
वैजयन्त–(सं०पुं०) इन्द्रपुरी।
वजयन्तिक–(सं०वि०) झंडा उठानेवाला।
वैजयन्तिका–(सं०स्त्री०) झंडा, पताका।
वैजयन्ती–(सं०स्त्री०) पताका, झंडा।
वैज्ञानिक–(सं०वि०) विज्ञान संबंधी, निपुण,दक्ष; (पुं०) वह जो विज्ञान अच्छा जानता हो।
वैतथ्य–(सं०पुं०) विफलता।
वतनिक–(सं०पुं०) वेतन लेकर काम करनेवाला।
वैतरणी–(सं०स्त्री०) यमद्वार पर की एक नदी का नाम।
वैताल–(सं०पुं०) स्तुतिपाठक।
वदक–(हि०पुं०) देखो वैद्यक।
वैदग्ध–(सं०पुं०) पाण्डित्य, चतुराई।
वैदिक–(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जो वेद जानता हो; (वि०) वेद संबंधी।
वैदूर्य–(सं०पुं०) लहसुनियाँ नाम का रत्न।
वैदेशिक–(सं०वि०) विदेश संबंधी।
वैद्य–(सं०पुं०) आयुर्वेद के अनुसार चिकित्सा करनेवाला। वैद्यक–(सं० पुं०) चिकित्साशास्त्र।
वैद्युत–(सं०वि०) विद्युत् संबंधी।
वैद्रुम–(सं०वि०) विद्रुम संबंधी।

वैधर्म्य–(सं०पुं०) विधर्मी होने का भाव, नास्तिकता।
वैधव्य–(सं०पुं०) रँड़ापा।
वैधेय–(सं०वि०) विधि संबंधी, मूर्ख।
वैपरीत्य–(सं०पुं०) प्रतिकूलता।
वैपार,वैपारी–(हिं०पुं०)देखो व्यापार।
वैपुल्य–(सं०पुं०) विपुलता, अधिकता।
वैफल्य–(सं०पुं०) विफल होने का भाव।
वैभव–(सं०पुं०)विभव, महिमा, महत्त्व।
वैभवशाली–(सं०वि०) जिसके पास बहुत धन हो।
वैमनस्य–(सं०पुं०) द्वेष, शत्रुता।
वैमात्र–(सं०वि०) विमाता से उत्पन्न, सौतेला।
वैयाकरण–(सं०पुं०) वह जो व्याकरण शास्त्र अच्छी तरह जानता हो।
वैर–(सं०पुं०) विरोध, द्वेष, शत्रुता।
वैरता–(हिं०स्त्री०) शत्रुता।
वैराग–(हिं०पुं०) देखो वैराग्य।
वैरागी–(हिं०पुं०) विरक्त, उदासीन।
वैराग्य–(सं०पुं०) विरक्ति, चित्त की वह वृत्ति जिसके अनुसार संसार की विषय-वासना तुच्छ जान पड़ती है और लोग संसार के प्रपञ्च को त्यागकर एकान्त में जाकर ईश्वर का भजन करते हैं।
वैरिता–(सं०स्त्री०) शत्रुता।
वैवर्त–(सं०पुं०) किसी पदार्थ का चक्कर खाते हुए घूमना।
वैवश्य–(सं०पुं०) विवशता।
वैवाहिक–(सं०वि०) विवाह संबंधी।
वैशाख–(सं० पुं०) चैत्र के बाद का महीना जो जेठ के पहले होता है,वैसाख।
वैश्य–(सं०पुं०) भारतवर्ष की चार जातियों के वर्गों में से तृतीय वर्ण, वणिक, बनिया।
वैश्वदेव–(सं०पुं०) विश्वदेव के उद्देश्य से किया जानेवाला होम या यज्ञ।
वैश्वानर–(सं०पुं०) परमात्मा, अग्नि।
वैषम, वैषम्य–(सं० पुं०) विषमता।
वैष्णव–(सं०वि०)विष्णु संबंधी; (पुं०) विष्णु-भक्त।
वैष्णवी–(सं०स्त्री०) विष्णु की शक्ति।
वैसा–(हिं०क्रि०वि०) उस प्रकार या तरह का। **वैसे**–उसी प्रकार से।
वैस्तारिक–(सं०वि०) विस्तार संबंधी।
वैहंग–(सं०वि०) पक्षी संबंधी।
वैहायस–(सं०वि०) आकाश सम्बन्धी।
वोक–(हिं० अव्य०) ओर।
वोछा–(हिं०वि०) देखो ओछा।
वोढव्य–(सं०वि०) ढोने लायक।
व्यंग, व्यंजन–देखो व्यङ्ग, व्यंजन।
व्यक्त–(सं०वि०) स्पष्ट, प्रकट, प्रकाशित, देखा हुआ, अनुमान किया हुआ।
व्यक्तगणित–(सं० पुं०) अंकविद्या।
व्यक्तराशि–(सं०स्त्री०) गणित में ज्ञात राशि।
व्यक्ति–(सं०स्त्री०) किसी शरीरधारी का सम्पूर्ण शरीर जिसकी सत्ता अलग मानी जाती है और जो किसी समाज का अंग समझा जाता है, मनुष्य, जीव, शरीर, वस्तु, पदार्थ। **व्यक्तिगत**–निजी।
व्यक्तीकृत, व्यक्तीभूत–(सं०वि०) प्रकाशित, प्रकट किया हुआ।
व्यक्तीभूत–(सं०वि०)प्रकट किया हुआ।
व्यक्तोदित–(सं०वि०)स्पष्ट कहा हुआ।
व्यग्र–(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ। **व्यग्रता**–(सं०स्त्री०)व्याकुलता, घबड़ाहट।
व्यङ्ग–(सं०पुं०) ताना। **व्यंगित**–(सं० वि०) विकल, घबड़ाया हुआ।

व्यजन–(सं०पुं०)हवा करने का पंखा,वेना।
व्यञ्जक–(सं०वि०) प्रकाशक।
व्यञ्जन–(सं० पुं०) तरकारी, शाक आदि जो रोटी दाल चावल के साथ खाया जाता है, पकाया हुआ भोजन, वर्ण-माला के वे अक्षर जो बिना स्वर की सहायता के उच्चारण नहीं किये जा सकते।
व्यञ्जना–(सं०स्त्री०) प्रकट करने की क्रिया।
व्यतिकर–(सं० पुं०) व्याप्ति, समूह, व्यसन, सम्बन्ध, मिलावट।
व्यतिक्रम–(सं०पुं०) विपर्यय, उलट-फेर, विघ्न-बाधा। **व्यतिक्रमण**–(सं० पुं०) क्रम में उलट-फेर होना।
व्यतिचार–(सं०पुं०) पापाचरण।
व्यतिपात–(सं०पुं०)बड़ा उपद्रव,अपमान।
व्यतिरिक्त–(सं०वि०) विभिन्न, अलग; (क्रि०वि०) अतिरिक्त। **व्यतिरेक**–(सं०पुं०) अभाव, भिन्नता।
व्यतीत–(सं०वि०) बीता हुआ।
व्यतीपात–(सं०पुं०)कोई अमंगलसूचक उत्पात, अपमान।
व्यत्यय–(सं०पुं०) व्यतिक्रम, विपर्यय।
व्यथक–(सं०वि०) पीड़ा देनेवाला।
व्यथन–(सं० पुं०) व्यथा, पीड़ा।
व्यथा–(सं०स्त्री०) दुःख, पीड़ा, भय, क्लेश।
व्यथित–(सं०वि०) दुःखित, पीड़ित।
व्यपदेश–(सं०पुं०) कपट, छल, कुल, वंश, निन्दा।
व्यपनीत–(सं०वि०) दूर किया हुआ।
व्यपोह–(सं०पुं०) विनाश।
व्यभिचार–(सं०पुं०) भ्रष्ट आचरण।
व्यय–(सं०पुं०) खर्च, परित्याग, नाश। **व्ययकर**–(सं०वि०) व्यय करनेवाला।
व्यर्थ–(सं०वि०) निरर्थक, बिना आशय का; (क्रि० वि०)निष्फल। **व्यर्थता**–(सं०स्त्री०) निष्फलता।
व्यलीक–(सं० पुं०) विलक्षणता, दुःख, कष्ट; (वि०) कष्टकारक, अप्रिय।
व्यवकलन–(सं० पुं०) गणित में किसी संख्या में दूसरी संख्या को घटाने का कार्य। **व्यवकलित**–(सं०वि०) घटाया हुआ।
व्यवकीर्ण–(सं०वि०) मिलाया हुआ।
व्यवच्छिन्न–(सं०वि०) विभक्त, अलगाया हुआ।
व्यवच्छेद–(सं०पुं०) पृथकत्व, अलगाव। **व्यवच्छेदक**–(सं०वि०)अलगानेवाला।
व्यवधान–(सं०पुं०) विभाग,आच्छादन। **व्यवधायक**–(सं०वि०) छिपानेवाला।
व्यवसाय–(सं०पुं०) उपजीविका, उद्यम, व्यापार।
व्यवसायी–(हिं० पुं०) व्यवसाय करनेवाला।
व्यवसित–(सं०वि०) उद्यत, तत्पर।
व्यवस्था–(सं०स्त्री०) नियम, स्थिति, शास्त्र-निरूपित विधि। **व्यवस्थापक**–(सं० वि०) नियमपूर्वक किसी कार्य को चलानेवाला। **व्यवस्थापत्र**–(सं० पुं०) वह पत्र जिसमें किसी शास्त्रीय व्यवस्था का विधान लिखा हो। **व्यवस्थापन**–(सं० पुं०) निर्धारण। **व्यवस्थापिका सभा**–(सं०स्त्री०)नियम बनानेवाली सभा। **व्यवस्थापित**–(सं० वि०) निर्धारित, नियमित।
व्यवस्थित–(सं० वि०) व्यवस्था या नियम के अनुसार।
व्यवहर्ता–(सं०पुं०) न्यायकर्ता।
व्यवहार–(सं०पुं०) व्यापार, लेन-देन का काम। **व्यवहारविधि**–(सं०

स्त्री०) वह शास्त्र जिसमें व्यवहार संबंधी बातों का उल्लेख हो।
व्यवहारशास्त्र–(सं० पुं०) धर्मशास्त्र।
व्यवहारिक–(सं०पुं०) जो व्यवहार के लिये उपयुक्त हो।
व्यवहारी–(हिं०वि०) व्यवहार करनेवाला।
व्यवहृत–(सं० वि०) जो काम में लाया गया हो।
व्यसन–(सं०पुं०) आपत्ति, दुःख, कष्ट, निष्फल प्रयत्न, लत, काम और क्रोध जनित दोष, किसी बात का प्रेम।
व्यसनी–(हिं०वि०) जिसको किसी प्रकार का व्यसन हो।
व्यस्त–(सं०वि०) फैला हुआ, व्याकुल।
व्याकरण–(सं०पुं०) वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शब्दरूप तथा वाक्यों में इनके शुद्ध व्यवहार आदि के नियमों का वर्णन रहता है।
व्याकीर्ण–(सं०वि०) चारों ओर फैलाया हुआ।
व्याकुल–(सं०वि०) व्यग्र, विकल, घबड़ाया हुआ। व्याकुलता–(सं०स्त्री०) विकलता, घबड़ाहट।
व्याकृति–(सं०स्त्री०) प्रकाशन, व्याख्यान।
व्याक्रोश–(सं० पुं०) तिरस्कार करते हुए कटूक्ति कहना, चिल्लाना।
व्याक्षेप–(सं०पुं०) विलम्ब, देर, व्याकुलता।
व्याख्या–(सं०स्त्री०) वह वाक्य जो कठिन शब्दों के अर्थ सरल भाषा में स्पष्ट करता हो, टीका, वर्णन। व्याख्यात–(सं०वि०) जिसकी व्याख्या की गई हो। व्याख्याता–(सं०वि०) व्याख्या करनेवाला, व्याख्यान देनेवाला।
व्याख्यान–(सं०पुं०) किसी विषय की व्याख्या या टीका करने का काम, भाषण, वक्तृता।
व्याघ्र–(सं०पुं०) चित्रक, चीता, बाघ।
व्याघ्रनायक–(सं०पुं०) शृगाल, सियार।
व्याघ्रमुख–(सं०पुं०) बिल्ली।
व्याज–(सं०पुं०) कपट, छल, विघ्न, बाधा, विलम्ब, देर।
व्याजी–(सं०पुं०) जंगली पशुओं को मारकर निर्वाह करनेवाला।
व्याधि–(सं०स्त्री०) रोग, पीड़ा, आपत्ति।
व्याधित–(सं०वि०) रोगी।
व्याधूत–(सं०वि०) कम्पित, काँपा हुआ।
व्यान–(सं० पुं०) शरीर में रहनेवाली पाँच वायु में से एक जो सम्पूर्ण शरीर में संचार करनेवाली मानी जाती है।
व्यापक–(सं०वि०) चारों ओर फैला हुआ।
व्यापन–(हिं०क्रि०) व्याप्त होना, किसी वस्तु के भीतर फैलना।
व्यापादित–(सं०वि०) मारा हुआ।
व्यापार–(सं०पुं०) काम, व्यवसाय, बेंचा-बिक्री।
व्यापी–(हिं०वि०) जो व्याप्त हो, व्यापक।
व्यापृत–(सं०वि०) किसी कार्य में लीन।
व्याप्त–(सं०वि०) सम्पूर्ण, परिपूरित।
व्याप्ति–(सं०स्त्री०) सर्वत्र फैला होना।
व्याप्य–(सं०पुं०) व्याप्त करने योग्य।
व्यामोह–(सं०पुं०) मोह, अज्ञात।
व्यायाम–(सं०वि०) शरीर पुष्ट करने के लिये किया हुआ शारीरिक श्रम।
व्यायामी–(हिं०वि०) व्यायाम करनेवाला।
व्याल–(सं०पुं०) सर्प, व्याघ्र, कोई हिंसक पशु।
व्याल–(हिं०पुं०) रात्रि का भोजन।
व्यालोल–(सं०वि०) थोड़ा हिलता हुआ।

व्यावर्तक–(सं०वि०) पीछे की ओर लौटनेवाला।
व्यावर्त्य–(सं०वि०) त्यागने योग्य।
व्यावहारिक–(सं०वि०) व्यवहार संबंधी।
व्यावृत्त–(सं०वि०) निषिद्ध, खण्डित।
व्यावृत्ति–(सं०स्त्री०) खण्डन, निषेध, निवृत्ति।
व्यास–(सं० पुं०) विस्तार, फैलाव, गोल वस्तु की मध्य रेखा।
व्यासार्ध–(सं०पुं०) किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग।
व्याहत–(सं०वि०) विशेष रूप में आहत।
व्याहरण–(सं०पुं०) कथन, उक्ति।
व्याहार–(सं०पुं०) वाक्य।
व्याहृत–(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
व्याहृति–(सं०स्त्री०) कथन, उक्ति।
व्युत्क्रम–(सं०पुं०) क्रम में उलटफेर होना
व्युत्पत्ति–(सं०स्त्री०) किसी पदार्थ की विशिष्ट उत्पत्ति, ज्ञान विशेष, किसी शब्द का वह मूल रूप जिससे वह निकला हो।
व्युत्पन्न–(सं०वि०) किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता।
व्युत्पादक–(सं०वि०) उत्पन्न करनेवाला।
व्युत्पादन–(सं०पुं०) व्युत्पत्ति।
व्युत्पादित–(सं०वि०) उत्पन्न किया हुआ।
व्युपदेश–(सं०पुं०) छल, वंचना।
व्यूह–(सं०पुं०) समूह, निर्माण रचना।
व्योम–(हिं०पुं०) आकाश, बादल, जल।
व्योमचारी–(सं०पुं०) देवता, पक्षी।
व्योमयान–हवाई जहाज।
व्रज–(सं०पुं०) व्रजन, गमन, समूह, झुंड।
व्रजन–(सं०पुं०) गमन, चलना, जाना।
व्रजभाषा–(सं०स्त्री०) मथुरा आगरा तथा इसके आसपास के प्रदेश में बोली जानेवाली भाषा।
व्रजमण्डल–(सं०पुं०) व्रजभूमि, व्रज और इसके आस पास के प्रदेश।
व्रण–(सं०पुं०) क्षत, फोड़ा।
व्रणस्राव–(सं० पुं०) घाव या फोड़े में से पीव निकलना।
व्रत–(सं०पुं०) किसी पुण्य तिथि में पुण्य प्राप्त करने के निमित्त उपवास करना, संकल्प।
व्रतचर्या–(सं० स्त्री०) व्रत का अनुष्ठान।
व्रती–(हिं०पुं०) जिसने किसी प्रकार का व्रत किया हो, ब्रह्मचारी।
व्रात्य–(सं० वि०) उपनयन संस्कार-रहित, वर्णसंकर, दोगला।
व्रीड–(सं० पुं०) व्रीडन, लज्जा।
व्रीडा–(सं० स्त्री०) लज्जा।

श

श- हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान तालु है–इसी से यह "तालव्य श" कहलाता है।
शं–(सं० पुं०) शिव, महादेव, शास्त्र, शस्त्र; (पुं०) शुभ, कल्याण, मंगल, सुख।
शंकना–(हिं० क्रि०) सन्देह करना।
शंबर–(सं० पुं०) जल, पानी।
शंबूक–(सं० पुं०) घोंघा।
शंसन–(सं० पुं०) कथन, प्रार्थना, हिंसन।
शंसनीय–(सं० वि०) प्रार्थनीय।
शंसित–(सं० वि०) निश्चित, वांछित।
शंस्य–(सं० वि०) स्तुति करने योग्य।
शकट–(सं० पुं०) बैलगाड़ी, छकड़ा,
शकटाक्ष–(सं० पुं०) गाड़ी का धुरा।
शकटि–(सं० स्त्री०) छोटी गाड़ी।
शकटिक–(सं०वि०) शकट संबंधी।
शकटिका–(सं०स्त्री०) बच्चों के खेलने

की गाड़ी। शकटी–(सं० स्त्री०) छोटी गाड़ी।
शकठ–(सं० पुं०) मचान।
शकर–(हिं०पुं०) शक्कर, कच्ची चीनी।
शकरकन्द–(हिं०पुं०) एक प्रकार का मीठा कन्द।
शकरपाला–(फा० पुं०) एक प्रकार का पकवान।
शकल–(सं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा।
शकलेन्दु–(सं० पुं०) अपूर्ण चन्द्रमा।
शकाब्द–(सं० पुं०) शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्।
शकार–(सं० पुं०) श स्वरूप वर्ण।
शकुन–(सं०पुं०) शुभाशुभ-सूचक लक्षण; (पुं०) पक्षी, चिड़िया।
शकुनिवाद–(सं० पुं०) प्रातःकाल के समय पक्षियों का शब्द करना।
शकुनी–(हिं० पुं०) शकुनों का शुभाशुभ फल जाननेवाला।
शकुन्त–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया।
शकृत्–(सं० पुं०) विष्ठा, गोबर।
शक्त–(सं० वि०) समर्थ।
शक्ति–(सं० स्त्री०) सामर्थ्य, बल, शौर्य, पराक्रम। शक्तितः–(सं०अव्य०) शक्ति के अनुसार। शक्तिमत्ता–(सं० स्त्री०) शक्तिमान् होने का भाव या धर्म।
शक्तिहीन–(सं० वि०) निर्बल, नपुंसक।
शक्य–(सं० वि०) समर्थनीय, किया जाने योग्य, सम्भव।
शक्र–(सं०पुं०) इन्द्र। शक्रचाप–(सं० पुं०) इन्द्रधनुष।
शक्रधनु–(सं० पुं०) इन्द्रधनुष। शक्रवाहन–(सं० पुं०) मेघ, बादल।
शक्रशरासन–(सं० पुं०) इन्द्रधनुष।
शक्करी–(सं० स्त्री०) अंगुलि, मेखला।
शगुन–(हिं० पुं०) देखो शकुन।
शगुनियाँ–(हिं०पुं०) शुभाशुभ शगुनों का विचार करनेवाला व्यक्ति।
शगून, शगूनियाँ–(हिं०पुं०) देखो शकुन, शकुनियाँ।
शङ्क–(सं० पुं०) आशंका, भय, डर।
शङ्कनीय–(सं० पुं०) शंका करने योग्य।
शङ्कर–(सं०पुं०) शिव, महादेव; (वि०) कल्याण करनेवाला, लाभदायक।
शङ्करालय, शङ्करावास–(सं०पुं०) कैलास।
शङ्करीय–(सं० वि०) शंकर सम्बन्धी।
शङ्का–(सं० स्त्री०) संशय, आशंका।
शङ्कामय–(सं०वि०) शंकायुक्त।
शङ्कित–(सं०वि०) अनिश्चित, सन्देहयुक्त।
शङ्कितव्य–(सं०वि०) शंकर के योग्य।
शङ्कु–(सं० पुं०) कोई नुकीली वस्तु, बरछा, भाला, खूंटा, मेख, कील।
शङ्कुला–(सं०स्त्री०) सुपारी काटने का सरौता।
शङ्ख–(सं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है।
शङ्खज–(सं०पुं०) मोती। शङ्खधर–(सं०पुं०) विष्णु। शङ्खपाणि–(सं० पुं०) विष्णु। शङ्खमुख–(सं० पुं०) घड़ियाल।
शङ्खास्थि–(सं०स्त्री०) सिर की हड्डी।
शचि, शची–(सं०स्त्री०) इन्द्र की पत्नी।
शचीपति–(सं०पुं०) इन्द्र।
शचीश–(सं०पुं०) इन्द्र।
शठ–(सं०वि०) धूर्त, दुष्ट, वंचक।
शठता–(सं०स्त्री०) धूर्तता। शठत्व–(सं० पुं०) शठता।
शण–(सं०पुं०) सन नाम का पौधा।
शणई–(हिं०स्त्री०) देखो सनई।
शण्ड–(सं०पुं०) नपुंसक, हिजड़ा। शण्डा–(सं०पुं०) फटा हुआ दूध।
शत–(सं०वि०) दस का दस गुना, सौ।

शतक–(सं०पुं०) एक ही प्रकार की सौ वस्तुओं का संग्रह, सौ वर्षों का समूह, शताब्दी । शतक्रतु–(सं०पुं०) इन्द्र
शतखण्ड–(सं० पुं०) सुवर्ण, सोना ।
शतगुण–(सं०वि०) सौ गुना ।
शतघ्नी–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का प्राचीन शास्त्र ।
शतचण्डी–(सं०स्त्री०) सौ बार चण्डी पाठ ।
शतच्छद–(सं०पुं०) सौ पंखाड़ियों का कमल । शतदला–(सं०स्त्री०) सेवती, गुलाब ।
शतधौत–(सं०वि०) सौ बार धोया हुआ ।
शतपत्र–(सं०पुं०) कमल, पद्म; (वि०) सौ पत्तोंवाला, सौ पंखवाला ।
शतपथ–(सं०वि०) सैकड़ों मार्ग या शाखावाला ।
शतपद–(सं०पुं०) कनखजूरा, गोजर ।
शतपोर–(सं०पुं०) पौंढ़ा, गन्ना ।
शतमख–(सं०पुं०) शतक्रतु, इन्द्र ।
शतलक्ष–(सं० पुं०) सौ लाख, करोड़ ।
शतवार्षिक–(सं० वि०) प्रति सौ वर्ष पर होनेवाला ।
शतशः–(सं०अव्य०) सौ बार ।
शत संवत्सर–(सं०पुं०) सौ वर्ष ।
शतसहस्र–(सं०पुं०) एक लाख ।
शतांश–(सं०पुं०) सौवाँ भाग ।
शतानन–(सं०पुं०) बिल्व, बेल ।
शतानीक–(सं०पुं०) वृद्ध पुरुष ।
शताब्दी–(सं०स्त्री०) सौ वर्ष का समय ।
शतायु–(सं०पुं०) वह मनुष्य जिसकी आयु सौ वर्ष की हो ।
शतायुध–(सं०वि०) जो सौ अस्त्र धारण करता हो ।
शतार–(सं०पुं०) वज्र, सुदर्शन चक्र ।
शतार्ध–(सं०पुं०) पचास की संख्या ।
शतावधान–(सं०पुं०) वह मनुष्य जो एक साथ बहुत-सी बातों को सुनकर उनको क्रम से याद रखता हो ।
शतावधानी–(सं०पुं०) शतावधान का काम करनेवाला ।
शताष्टक–(सं०पुं०) एक सौ आठ ।
शती–(हिं०वि०) सौ की संख्या का ।
शतेश–(सं०पुं०) सौ गाँव का अधिपति ।
शत्रु–(सं०पुं०) रिपु, वैरी, अरि, द्वेषी । शत्रुता–(सं०स्त्री०) वैरभाव । शत्रु-बल–(सं०पुं०) शत्रु की सेना । शत्रु-ताई–(हिं०स्त्री०) शत्रुता । शत्रु-बाधक–(सं०वि०) शत्रु को पीड़ा देने-वाला । शत्रुमर्दन–(सं०पुं०) शत्रुओं का नाश करनेवाला । शत्रुवत्–(सं० अव्य०) शत्रु के समान ।
शत्रुसाल–(हिं०वि०) शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला ।
शत्रुहन्ता–(सं०वि०) शत्रु का नाश करनेवाला ।
शन्–(हिं०अव्य०) थोड़ा-थोड़ा, धीरे-धीरे ।
शनि–(सं०पुं०) शनैश्चर ग्रह । शनिवार–(सं०पुं०) वह वार जो शुक्रवार के बाद तथा रविवार के पहले पड़ता है ।
शनैः–(सं०अव्य०) धीरे-धीरे ।
शनैश्चर–(सं०पुं०) शनि ग्रह ।
शन्तन–(सं०वि०) सुन्दर शरीरवाला ।
शपथ–(सं०पुं०) सौगन्ध ।
शपथपत्र–(सं०पुं०) सौगन्ध खाकर लिखित पत्र ।
शप्त–(सं०पुं०) वह मनुष्य जिसको शाप दिया गया हो । शप्ता–(हिं०वि०) शाप देनेवाला ।
शफ–(सं०पुं०) पशु का खुर, वृक्ष की जड़ ।
शबर–(सं०वि०) चितकबरा ।

शबरक–(सं०वि०) रंगबिरंगा, चितकबरा।
शबलता–(सं०स्त्री०) चितकबरापन।
शबलित–(सं०वि०) चितकबरा।
शब्द–(सं०पुं०) ध्वनि, नाद, वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव का बोध होता है। शब्दकर–(सं०वि०) ध्वनिकारक। शब्दकारी–(सं०वि०) शब्द करनेवाला। शब्दचातुर्य–(सं० पुं०) बोलचाल की प्रवीणता। शब्दचित्र–(सं०पुं०) अनुप्रास। शब्दप्रमाण–वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के आधार पर हो। शब्दविरोध–(सं० पुं०) वह विरोध जो केवल शब्दों में जान पड़ता हो। शब्दविशेषण–(सं० पुं०) विशेषण शब्द। शब्दबोध–(सं० पुं०) वह ज्ञान जो मौखिक साक्षी से प्राप्त हो। शब्दब्रह्म–(सं० पुं०) ॐकार, वेद, श्रुति। शब्दभेदी–(सं०पुं०) शब्दवेधी बाण। शब्दविद्या–(सं० स्त्री०) व्याकरण। शब्दविज्ञान–(सं० पुं०) वह वैज्ञानिक प्रक्रिया जिसके द्वारा शब्द-विषयक तत्वज्ञान जाना जाता है। शब्दविरोध–(सं०पुं०) विरुद्ध शब्द का व्यवहार। शब्दवेधी–(सं०पुं०) वह मनुष्य जो आँखों से बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी व्यक्ति या वस्तु को बाण से मारता है। शब्दशासन–(सं०पुं०) व्याकरण के नियम। शब्दशास्त्र–(सं० पुं०) व्याकरण। शब्दसाधन–(सं०पुं०) व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन होता है। शब्दहीन–(सं० वि०) शब्दरहित। शब्दाडम्बर–(सं० पुं०) शब्दजाल। शब्दानुशासन–(सं० पुं०) व्याकरण। शब्दायमान–(सं० वि०) शब्द करता हुआ। शब्दार्थ–(सं० पुं०) किसी शब्द का अर्थ। शब्देन्द्रिय–(सं०पुं०) कर्ण, कान।
शम–(सं०पुं०) शान्ति, मोक्ष, निवृत्ति, क्षमा, उपचार, अन्तःकरण अथवा इन्द्रियों का निग्रह। शमता–(सं०स्त्री०) शान्ति, उपशमन।
शमन–(सं०पुं०) चित्त की स्थिरता, शान्ति, हिंसा, तिरस्कार।
शमित–(सं०वि०) शान्त किया हुआ।
शम्ब–(सं०पुं०) इन्द्र का वज्र।
शम्बर–(सं०पुं०) जल, पानी, बादल।
शम्बल–(सं०पुं०) तट, किनारा।
शम्बु–(सं०पुं०) घोंघा, सीप।
शम्बुक–(सं०पुं०) हाथी के सूँड़ का अगला भाग, शंख।
शम्भु–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
शम्भुलोक–(सं०पुं०) कैलास।
शम्भुबीज–(सं०पुं०) पारद, पारा।
शयन–(सं०पुं०) निद्रा, शय्या। शयनगृह–(सं०पुं०) सोने का कमरा या घर। शयनागार–(सं०पुं०) शयनगृह।
शयनीय–(सं०वि०) शयन के योग्य।
शयान–(सं०पुं०) निद्रित, जो सोया हो। शयालू–(सं०वि०) जिसको नींद आती हो।
शय्या–(सं०स्त्री०) खटिया, पलंग, खाट। शय्यागत–(सं०वि०) बिछौने पर सोनेवाला। शय्यादान–(सं०पुं०) मृतक के उद्देश्य से चारपाई, बिछावन आदि का दान।
शर–(सं०पुं०) बाण, तीर, सरकंडा, नरकट, जल।
शरच्चन्द्र, शरच्छशी–(सं०पुं०) शरदकाल का चन्द्रमा।

शरण–(सं०स्त्री०) आश्रय, रक्षा, घर। शरणागत, शरणापन्न–(सं०वि०) शरण में आया हुआ। शरणार्थी–(सं०वि०) आश्रय चाहनेवाला। शरणालय–(सं० पुं०) आश्रय-स्थान।
शरण्य–(सं०वि०) शरणागत की रक्षा करनेवाला।
शरत्–(सं०स्त्री०) शरद ऋतु जो कुवार और कार्तिक महीने में मानी जाती है। शरत्काल–(सं०पुं०) शरद ऋतु।
शरद–(सं०स्त्री०) शरत् ऋतु।
शरदण्ड–(सं०पुं०) सरकंडा, चाबुक।
शरदिन्दु–(सं०पुं०) शरत् ऋतु का चन्द्रमा
शरधि–(सं०पुं०) तूण, तरकस।
शरबती–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पीला रंग, मीठा नीबू या फालसा।
शरभ–(सं०पुं०) सिंह, हाथी का बच्चा, टिड्डी।
शरमुख–(सं०पुं०) बाण का अग्र भाग।
शरवत्–(सं०वि०) बाण के तुल्य।
शरवारण–(सं० पुं०) ढाल।
शरवृष्टि–(सं०स्त्री०) बाणों की वर्षा।
शरशय्या–(सं०स्त्री०) बाण की बनी हुई शय्या।
शराघात–(सं०पुं०) बाण का आघात।
शराटि–(सं०पुं०) टिटिहिरी नामक पक्षी।
शरापना–(हिं०क्रि०) शाप देना।
शराभ्यास (सं०पुं०) बाण शिक्षा।
शरारोप–(सं०पुं०) धनुष, कमान।
शराव–(सं०पुं०) मिट्टी का पात्र, पुरवा, एक सेर का परिमाण।
शरासन–(सं०पुं०) धनुष, कमान, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
शरिष्ठ–(हिं०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
शरीफा–(हिं०पुं०) सीताफल, श्रीफल।
शरीर–(सं०पुं०) गात्र, कलेवर, देह। शरीरवृत्ति–(सं०स्त्री०) जीविका। शरीरशास्त्र–(सं० पुं०) शरीरविज्ञान, वह शास्त्र जिसमें शरीर के सब अवयवों की रचना और इनके कार्य का विवेचन होता है। शरीर-शुश्रूषा–(सं० स्त्री०) देह की सेवा। शरीरान्त–(सं० पुं०) मृत्यु। शरीरी–(हिं०पुं०) प्राणी, जन्तु, जीवधारी।
शर्कर–(सं०पुं०) कंकड़, बालू का कण। शर्करा–(सं०स्त्री०) शक्कर, खाँड़, चीनी।
शर्मकृत–(सं०वि०) मंगलकारी।
शर्मद–(सं०वि०) आनन्द देनेवाला।
शर्मन–(सं०पुं०) सुख, आनन्द; (पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्मा–(सं०पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्व–(सं०वि०) शिव, महादेव। शर्वरी–(सं०स्त्री०) निशा, रात्रि, रात।
शलक–(सं०पुं०) साही का काँटा।
शलभ–(सं०पुं०) शरभ, टिड्डी।
शलल–(सं०पुं०) साही का काँटा।
शलाक–(सं०पुं०) देखो शलाका।
शलाका–(सं०स्त्री०) लोहे, लकड़ी आदि की लंबी सलाई, सींक, सलाई, मैना पक्षी, छाते की कमानी, शर, बाण, चित्रकार की कूँची, सुरमा लगाने की सलाई।
शली–(हिं०स्त्री०) साही नामक पशु।
शल्क–(सं०पुं०) वल्कल, छिलका।
शल्मलि–(सं०पुं०) सेमल का वृक्ष।
शल्य–(सं० पुं०) बाण, भाले के आकार का एक अस्त्र, हड्डी, अस्त्र-चिकित्सा।
शल्यक्रिया–(सं०स्त्री०) शस्त्र-चिकित्सा, चीर-फाड़ करने की विधि।
शल्ल–(सं० पुं०) त्वचा, चमड़ा, वृक्ष की छाल। शल्लकी–(सं०स्त्री०) साही नामक पशु।

शव–(सं०पुं०) मृतशरीर।
शवदाह–(सं०पुं०) मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया। **शवभस्म**–(सं० पुं०) चिता की भस्म, शव।
शवमन्दिर–(सं०पुं०) मरघट। **शवयान**–(सं०पुं०) शव ले जाने की अरथी।
शवल–(सं०वि०) चितकबरा। **शवलित**–(सं०वि०) मिश्रित, मिलाया हुआ।
शश–(सं०पुं०) खरहा, चन्द्रमा का लांछन या कलंक। **शशक**–(सं०पुं०) खरहा। **शशधर**–(सं०पुं०) चन्द्रमा। **शशलक्षण, शशलांछन**–(सं० पुं०) चन्द्रमा। **शशश्रृंग**–(सं० पुं०) कोई अनहोनी या असम्भव बात।
शशाङ्क–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
शशि–(सं०पुं०) चन्द्रमा। **शशिकर**–(सं०पुं०) चन्द्रमा की किरण। **शशिकला**–(सं०स्त्री०) चन्द्रमा की कला। **शशिधर**–(सं०पुं०) महादेव। **शशिप्रभ**–(सं०पुं०) कुमुद, कोईं, मोती; (वि०) चन्द्रमा के समान प्रभावाला।
शशिप्रभा–(सं०स्त्री०) ज्योत्स्ना, चंद्रिका।
शशिप्रिय–(सं०पुं०) मुक्ता, मोती; **शशिभूषण**–(सं०पुं०) महादेव। **शशिमंडल**–(सं०पुं०) चन्द्रमण्डल। **शशिमुख**–(सं०वि०) अति मनोहर। **शशिवदना**–(सं०स्त्री०) चन्द्रमुखी।
शश्वत्–(सं० वि०) बहुत अधिक; (अव्य०) बारंबार।
शष्कुली–(सं०स्त्री०) कर्णरन्ध्र, कान का छेद।
शस्त–(सं० पुं०) कल्याण, भलाई; (वि०) प्रशस्त, उत्तम।
शस्तता–(सं० स्त्री०) प्रस्तार, फैलाव।
शस्ति–(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।
शस्त्र–(सं०पुं०) लोहा, अस्त्र, खड्ग, तलवार
शस्त्रक्रिया–(सं०स्त्री०) चीरा लगाने का काम। **शस्त्रगृह**–(सं०पुं०) शस्त्र रखने का घर। **शस्त्रजीवी**–(सं०वि०) सैनिक।
शस्त्रशास्त्र–(सं०पुं०) धनुर्वेद, शस्त्रशिक्षा; (सं० स्त्री०) शस्त्र चलान की विद्या।
शस्त्रागार–(सं०पुं०) शस्त्रशाला।
शस्त्राभ्यास–(सं०पुं०) शस्त्रशिक्षा।
शस्त्रायध–(सं०वि०) शस्त्रधारी।
शस्त्रोपजीवी–(सं० पुं०) शस्त्र द्वारा अपनी जीविका चलानेवाला।
शस्य–(सं०पुं०) वृक्ष, लता आदि का फल।
शाक–(सं० पुं०) भाजी, तरकारी।
शाकटिक–(सं०पुं०) गाड़ीवान।
शाकभक्षक–(सं०वि०) शाकाहारी।
शाकल–(सं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा, हवन की सामग्री।
शाकाम्ल–(सं०पुं०) इमली।
शाकाहार–(सं०पुं०) अन्न, फूल, फल, पत्तों आदि का भोजन।
शाकाहारी–(सं०वि०) फल, फूल तथा शाक खानेवाला।
शाकुन–(सं०पुं०) शकुन द्वारा मनुष्य का शुभाशुभ कहनेवाला।
शाकुनि–(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया।
शाक्त–(सं०पुं०) शक्ति का उपासक।
शाक्य–(सं०पुं०) बुद्धदेव।
शाखा–(सं०स्त्री०) डाल, टहनी, शरीर का अवयव, अँगुली, किसी मूल वस्तु से निकले हुए भेद, किसी शास्त्र या विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद।
शाखाग्र–(सं० पुं०) शाखा का अगला भाग, अँगुली।
शाखामृग–(सं०पुं०) बन्दर, गिलहरी।
शाखाशिफा–(सं०स्त्री०) वह शाखा जो नीचे की ओर झुककर भूमि में

जड़ पकड़ ले। **शाखास्थि**–(सं० पुं०) हाथ की हड्डी।
शाखोच्चार–(सं०पुं०) विवाह के समय वंशावली का वर्णन।
शाङ्कर–(सं०वि०) शंकर संबंधी।
शाट, शाटक–(सं०पुं०) पट, वस्त्र, कपड़े का टुकड़ा।
शाटिका, शाटी–(सं०स्त्री०) धोती, साड़ी।
शाठ्य–(सं०पुं०) शठता, दुष्टता।
शाण–(सं०पुं०) सन के रेशे का बना हुआ कपड़ा, हथियार पैना करने का पत्थर। **शाणित**–(सं० वि०) सान पर रक्खा हुआ।
शाद्वल–(सं०पुं०) दूब, हरी घास।
शाद्वली–(हिं०वि०) हरा-भरा।
शान्त–(सं०वि०) सौम्य, गंभीर, मौन, चुप, उत्साहरहित, स्थिर, श्रान्त, विघ्न या बाधा रहित।
शान्तात्मा–(सं०वि०) शान्त स्वभाव का।
शान्ति–(सं०स्त्री०) शमन, स्तब्धता, स्वस्थता, गम्भीरता, अमंगल दूर करने का उपचार। **शान्तिकर**–(सं०वि०) शान्ति करनेवाला।
शान्तिकर्म–(सं०पुं०) बाधा, पाप के निवारण का उपाय आदि।
शान्तिप्रद–(सं०वि०) शान्ति देनेवाला।
शाप–(सं०पुं०) आक्रोश, भर्त्सना।
शापग्रस्त–(सं०वि०) जिसको शाप दिया गया हो। **शापमुक्त**–(सं०वि०) जिसके ऊपर से शाप का प्रभाव हट गया हो।
शापित–(सं०वि०) जिसको शाप दिया गया हो। **शापोद्धार**–(सं०पुं०) शाप के प्रभाव से छुटकारा।
शाफरिक–(सं०पुं०) मछुआ, धीवर।
शाब्द–(सं०वि०) शब्द संबंधी।
शाब्दिक–(सं०पुं०) शब्द-शास्त्रवेत्ता, वैयाकरण। **शाब्दी**–(सं०वि०) शब्द सम्बन्धी।
शामी–(हिं०स्त्री०) लोहे पीतल आदि का छल्ला जो छड़ी छाते आदि के छोर पर लगाया जाता है।
शामूल–(सं०पुं०) ऊनी वस्त्र।
शाम्बरिक–(सं०पुं०) जादूगर। **शाम्बक**-(सं०पुं०) घोंघा।
शाम्भव–(सं०वि०) शिव सम्बन्धी।
शायक–(सं०पुं०) बाण, तीर, खड्ग।
शायी–(हिं०वि०) शयनकारी, सोनेवाला।
शारङ्ग–(सं०वि०) चितकबरा।
शारङ्गी–(सं०स्त्री०) सारंगी नामक बाजा।
शारद–(सं०वि०) शरत्काल का।
शारदा–(सं०स्त्री०) सरस्वती, दुर्गा।
शारदी–(सं०स्त्री०) शरत्काल का।
शारिका–(सं०स्त्री०) मैना नामक पक्षी।
शारीरक–(सं०वि०) शरीर से उत्पन्न। **शारीरक मीमांसा**–(सं०स्त्री०) वेदान्त सूत्र। **शारीरक सूत्र**–(सं०पुं०) वेदान्त सूत्र।
शारीर विधान–(सं० पुं०) वह शास्त्र जिसमें जीव के शरीर का ज्ञान उत्पन्न हो।
शारीरिक–(सं०वि०) शरीर सम्बन्धी।
शार्ङ्ग–(सं० पुं०) धनुष। **शार्ङ्गधर**-(सं०पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण। **शार्ङ्गी**–(सं०पुं०) धनुर्धारी। **शार्दूल**–(सं० पुं०) व्याघ्र, बाघ; (वि०) सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।
शार्वरी–(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
शालग्राम–(सं०पुं०) गण्डकी नदी में उपलब्ध एक प्रकार की विष्णु की मूर्ति।
शालन–(सं० पुं०) साग।
शालभञ्जिका, शालभञ्जी–(सं०स्त्री०) कठपुतली।

शालरस–(सं०पुं०) राल, धूना ।
शाला–(सं०स्त्री०) स्थान, गृह, घर ।
शालाद्वार–(सं० पुं०) घर का द्वार ।
शालापति–(सं०पुं०) घर का मालिक ।
शालामुख–(सं०पुं०)घर का अगला भाग।
शालामृग–(सं०पुं०) सियार, कुत्ता ।
शालि–(सं०पुं०) धान्य, धान ।
शालिका–(सं०स्त्री०)देखो शारिका,मैना।
शालिगोप–(सं०पुं०) धान के खेत की रखवाली करनेवाला ।
शालिवाह–(सं०पुं०) अन्न ढोनेवाला बैल । शालिहोत्र–(सं०पुं०) पशुओं की चिकित्सा का शास्त्र ।
शालिहोत्री–(सं०पुं०) पशुओं की चिकित्सा करनेवाला वैद्य ।
शालीन–(सं०त्रि०) विनीत,सदृश, समान, लज्जायुक्त । शालीनता–(सं०स्त्री०) विनय, नम्रता ।
शाल्मलि–(सं०पुं०स्त्री०)सेमल का वृक्ष ।
शाव, शावक–(सं०पुं०) शिशु, पशु आदि का बच्चा ।
शाशक–(सं०वि०) शशक सम्बन्धी ।
शाश्वती–(सं०स्त्री०) पृथ्वी ।
शासक–(सं०पुं०) शासन करनेवाला, अधिकारी ।
शासन–(सं०पुं०) आज्ञा, आदेश, लिखित प्रतिज्ञा, इन्द्रियों का निग्रह ।
शासनपत्र–(सं०पुं०) वह शिला या ताम्रपत्र जिस पर किसी राजा की आज्ञा लिखी या खोदी हुई हो । शासनवाहक–(सं०पुं०) आज्ञावाहक, राजदूत ।
शासनशिला–(सं०स्त्री०) वह शिला जिस पर राजा की कोई आज्ञा खोदी गई हो । शासनीय–(सं०वि०)शासन करने योग्य । शासित–(सं०वि०) शासन किया हुआ, दण्ड दिया हुआ । शासिता,
शास्ता–(सं०पुं०) शासन करनेवाला, राजा ।
शास्त्र–(सं० पुं०) ऋषि-मुनियों के बनाये हुए वे प्राचीन ग्रंथ जिनमें मनुष्यों के हित के लिये अनेक प्रकार के कर्तव्य बतलायें गये हैं, किसी विशिष्ट विषय का क्रमबद्ध ज्ञान, विज्ञान । शास्त्रकार–(सं०पुं०) शास्त्र बनानेवाला । शास्त्रज्ञ–(सं०पुं०) शास्त्र को जाननेवाला ।
शास्त्री–(सं०पुं०) एक उपाधि जो इस नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय से दी जाती है, शास्त्रज्ञ, पण्डित । शास्त्रीय–(सं०वि०) शास्त्र सम्बन्धी ।
शास्त्रोक्त–(सं०वि०) शास्त्रों में कहा हुआ ।
शिशुमार–(सं०पुं०) सूंस नाम का जल-जन्तु ।
शिक्य–(सं०पुं०) छत में लटकाने का छींका, सिकहर ।
शिक्षक–(सं०पुं०) शिक्षा देनेवाला, गुरु । शिक्षण–(सं०पुं०) शिक्षा । शिक्षणीय–(सं०वि०) शिक्षा के उपयुक्त ।
शिक्षा–(सं०स्त्री०)पढ़ने पढ़ाने की क्रिया विद्या का अभ्यास, दक्षता, निपुणता, उपदेश, दण्ड, शासन । शिक्षाकर–(सं० पुं०)सिखलानेवाला । शिक्षाप्रद–(सं० पुं०) उपदेश । शिक्षार्थी–(सं०पुं०) विद्यार्थी । शिक्षालय–(सं० पुं०) पाठशाला ।
शिक्षाविभाग–(सं०पुं०) वह राजकीय विभाग जिसके द्वारा सार्वजनिक शिक्षा का प्रबन्ध होता है । शिक्षाहीन–(सं० वि०) अशिक्षित, बेपढ़ा । शिक्षित–(सं० वि०) जिसने शिक्षा पाई हो, पढ़ालिखा ।

शिखण्ड–(सं०पुं०) मोर की पूंछ, शिखा, चोटी।
शिखण्डिक–(सं०पुं०) कुक्कुट, मुर्गा।
शिखण्डिनी–(सं०स्त्री०) मयूरी, मोरनी।
शिखण्डी–(हिं०पुं०) मोर, मुर्गा, तीर।
शिखर–(सं० पुं०) सिरा, ऊपरी भाग, पहाड़ की चोटी।
शिखरन–(हिं०पुं०) दही और चीनी से बनाया हुआ एक पेय जिसमें केशर, इलायची, मेवे आदि डाले जाते हैं।
शिखरिणी–(सं०स्त्री०) दही का पानी।
शिखरी–(हिं०पुं०) वृक्ष, पहाड़ी, एक प्रकार का मृग।
शिखा–(सं०स्त्री०) आग की लपट, चोटी, शाखा, डाली, पक्षियों के सिर पर की कलँगी, दिये की टेम, नोक, उभड़ा हुआ भाग। शिखाभरण–(सं० पुं०) सिर का आभूषण। शिखामणि–(सं०पुं०) श्रेष्ठ मणि। शिखावृद्धि–(सं० स्त्री०) सूद दर सूद।
शिखि–(सं०पुं०) मयूर, मोर।
शिखी–(सं०पुं०) मोर, अग्नि।
शिखिनी–(सं०स्त्री०) मोरनी, मुर्गी।
शिञ्जिनी–(सं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
शित–(सं०वि०) दुर्बल, नुकीला। शिताफल–(सं०पुं०) सीताफल, शरीफा।
शिति–(सं०वि०) शुक्ल, सफेद। शितिकण्ठ–(सं०पुं०) महादेव, मोर, पपीहा।
शिथिल–(सं०वि०) श्रान्त, थका हुआ, मन्द, धीमा, अदृढ़, अस्पष्ट।
शिथिलता–(सं० स्त्री०) ढिलाई, थकावट, आलस्य। शिथिलाई–(हिं०स्त्री०) शिथिलता। शिथिलाना–(हिं०क्रि०) थकना।
शिफर–(हिं०पुं०) ढाल।
शिफा–(सं०स्त्री०) कोड़े की फटकार।
शिम्बा–(सं०स्त्री०) छीमी, फली।
शिरःकम्प–(सं०पुं०) सिर का काँपना।
शिरःखण्ड–(सं०पुं०) माथे की हड्डी।
शिर–(सं०पुं०) मस्तक, माथा, सिर, खोपड़ी, शिखर, सबसे ऊँचा भाग, प्रधान, अगुआ, चोटी, सिरा।
शिरनेत–(हिं०पुं०) गढ़वाल के आसपास का एक प्रदेश। शिरपेंच–(हिं०पुं०) देखो सिरपेंच। शिरफल–(हिं०पुं०) स्त्रियों का सिर पर पहनने का एक आभूषण। शिरमौर–(हिं०पुं०) शिरोभूषण, मुकुट। शिरसिज, शिरसिरुह–(सं०पुं०) केश, बाल।
शिरस्क–(सं०वि०) मस्तक संबधी।
शिरस्त्र, शिरस्त्राण–(सं० पुं०) युद्ध के समय सिर पर पहनने की लोहे की टोपी।
शिरहन–(हिं०पुं०) सिरहाना, तकिया।
शिरा–(सं०स्त्री०) शरीर में रुधिर-वाहिनी नाड़ी।
शिरामूल–(सं०पुं०) नाभि, ढोंढ़ी।
शिराहर्ष–(सं०पुं०) नसों का झनझनाना।
शिरीष–(सं०पुं०) सिरिस का पेड़।
शिरोगृह–(सं०पुं०) अट्टालिका, कोठा।
शिरोज–(सं०पुं०) केश, बाल।
शिरोधरा–(सं०स्त्री०) गरदन, ग्रीवा।
शिरोधार्य–(सं० वि०) आदरपूर्वक मानने योग्य।
शिरोभाग–(सं०पुं०) अग्रभाग।
शिरोभूषण–(सं० पुं०) मुकुट, चूड़ामणि।
शिरोमणि–(सं०पुं०, स्त्री०) चूड़ामणि, शिरोरत्न, श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरोमाली–(हिं०पुं०) महादेव।
शिरोमौलि–(सं०पुं०) सिर का रत्न।
शिरोरुजा–(सं०स्त्री०) सिर की वेदना।

शिरोरुह–(सं०पुं०) सिर के ऊपर के बाल।
शिरोवेष्टन–(सं०पुं०) पगड़ी, मुरेठा।
शिल–(हिं०पुं०) देखो शिला।
शिला–(सं०स्त्री०) पाषाण, पत्थर का बड़ा टुकड़ा, चट्टान।
शिलाधातु–(सं० पुं०) गेरू, खड़िया मिट्टी। शिलानिचय–(सं०पुं०) पत्थर के ढोंकों का ढेर।
शिलान्यास–(हिं० पुं०) किसी भवन की नींव देने का कार्य।
शिलापद–(सं०पुं०) पत्थर की चट्टान।
शिलालेख–(सं० पुं०) पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख।
शिलावृष्टि–(सं०स्त्री०) आकाश से ओले या पत्थर गिरना। शिलास्थि–(सं०स्त्री०) गरदन में की वह हड्डी जिस पर कपाल स्थिर रहता है।
शिलास्तम्भ–(सं०पुं०) पत्थर का खंभा।
शिली–(सं०स्त्री०) चौखट के नीचे की लकड़ी, डेहरी।
शिल्प–(सं० पुं०) कला संबंधी व्यवसाय। शिल्पकला–(सं०स्त्री०) हस्त-कौशल। शिल्पकार–(सं०पुं०) शिल्पी।
शिल्पकारी–(सं० पुं०) वह जो शिल्प का कार्य करता हो। शिल्पगृह–(सं० पुं०) शिल्पशाला। शिल्पजीवी–(सं०पुं०) शिल्पी। शिल्पता–(सं० स्त्री०) शिल्प-कौशल। शिल्पविद्या–(सं०स्त्री०) शिल्प-विषयक विद्या।
शिल्पशाला–(सं०स्त्री०) शिल्पगृह।
शिल्पशास्त्र–(सं० पुं०) वह शास्त्र जिसमें हाथ से पदार्थों के बनाने का वर्णन लिखा होता है, गृह-निर्माण।
शिल्पिक, शिल्पी–(सं०पुं०) शिल्पकार।
शिव–(सं०पुं०) मंगल, सुख, कल्याण; (पुं०) महादेव, मोक्ष। शिवकारी–(सं०वि०) कल्याण करनेवाला। शिवंकर–(सं०वि०) कल्याण करनेवाला। शिवद्रुम–(सं०पुं०) बेल का पेड़। शिवबीज–(सं०पुं०) पारद, पारा। शिवनिर्माल्य–(सं०पुं०) शिव को अर्पित की हुई वस्तु। शिवरात्रि–(सं०स्त्री०) फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी। शिवरानी–(हिं०स्त्री०) पार्वती। शिवलोक–(सं०पुं०) कैलास। शिववाहन–(सं०पुं०) वृषभ, बैल।
शिवा–(सं०स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, मुक्ति, शृगाली, सियारिन। शिवाक्ष–(सं०पुं०) रुद्राक्ष। शिवारुत–(सं०पुं०) सियार के बोलने का शब्द। शिवालय–(सं०पुं०) वह मन्दिर जिसमें शिव की मूर्ति या लिङ्ग स्थापित हो। शिवाला–(हिं०पुं०) शिवालय।
शिविका–(सं०स्त्री०) पालकी, डोली।
शिविर–(सं०पुं०) डेरा, पड़ाव, छावनी, वस्त्र-मण्डप।
शिशिर–(सं०पुं०) शीतकाल; (वि०) शीतल, ठंडी।
शिशु–(सं०पुं०) बालक, छोटा लड़का।
शिशुकाल–(सं०पुं०) बचपन। शिशुता–(सं०स्त्री०) बचपन। शिशुताई–(हिं० स्त्री०) शिशुता। शिशुपन–(हिं०पुं०) बालकपन। शिशुमार–(सं०पुं०) सूंस नामक जलजन्तु।
शिश्न–(सं०पुं०) उपस्थ, मेढ़्, लिङ्ग।
शिष्ट–(सं०वि०) शान्त, सुशील, विनीत सज्जन; (पुं०) मन्त्री, सभासद।
शिष्टता–(सं०स्त्री०) सज्जनता।
शिष्टसभा–(सं०स्त्री०) राजसभा। शिष्टसमाज–(सं०पुं०) शिष्ट जनों का समाज
शिष्टाचार–(सं०पुं०) विनय, आदर, नम्रता, सभ्य व्यवहार।

शिष्य–(सं०पु०) विद्यार्थी, चेला।
शीकर–(सं०पुं०) तृषा, शीत, जाड़ा।
शीघ्र–(सं० क्रि० वि०) तुरंत, चटपट। शीघ्रकारी–(सं०वि०) शीघ्रता से काम करनेवाला। शीघ्रकोपी–(सं० वि०) जिसको शीघ्र ही क्रोध आता हो। शीघ्रगामी–(सं०वि०) शीघ्र चलनेवाला। शीघ्रता–(सं०स्त्री०) त्वरा। शीघ्रवाही–(सं०वि०) शीघ्र ले जानेवाला। शीघ्रवेधी–(सं०पुं०) शीघ्रता से बाण चलने वाला।
शीत–(सं०पुं०) जाड़ा, तुषार, ओस, जाड़े की ऋतु; (वि०) शीतल, ठंडा। शीत कटिबन्ध–(सं०पुं०) पृथ्वी के उत्तर तथा दक्षिण के खण्ड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३॥ अंश दक्षिण पर माने जाते हैं, इन भागों में जाड़ा बहुत पड़ता है।
शीतकाल–(सं०पुं०) हिम ऋतु। शीतगन्ध–(सं०पुं०) सफेद चन्दन। शीतता–(सं०पुं०) ठंढक। शीतदीधिति–(सं०पुं०) चन्द्रमा। शीतमूलक–(सं० पुं०) उशीर, खस। शीतरश्मि–(सं० पुं०) चन्द्रमा, कपूर।
शीतल–(सं०वि०) ठंढा, शान्त, उद्वेगरहित। शीतलता–(सं०स्त्री०) ठंढापन, सरदी। शीतलताई–(हिं०स्त्री०) ठंढापन।
शीतला–(सं० स्त्री०) वसन्त रोग, चेचक।
शीतांशु–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
शीताम्बु–(सं०पुं०) ठंढा जल।
शीताश्म–(सं०पुं०) चन्द्रकान्त मणि।
शीतेतर–(सं०वि०) उष्ण, गरम।
शीतोष्ण–(सं०वि०) गुनगुना।
शीर्ण–(सं०वि०) दुबला-पतला, टूटा फूटा हुआ, मुरझाया हुआ। शीर्णत्व–(सं०पुं०) कृशता।
शीर्ष–(सं०पुं०) मस्तक, सिर, अग्रभाग, चोटी। शीर्षक–(सं०पुं०) चोटी, वह वाक्य जो विषय-परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर लिखा जाता है। शीर्षच्छेद–(सं०पुं०) सिर काटना। शीर्षतः–(सं०अव्य०) मस्तक पर। शीर्षबिन्दु–(सं०पुं०) सिर के ऊपर की ओर ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान। शीर्षभार–(सं०पुं०) माथे पर का बोझ। शीर्षरक्षण–(सं०पुं०) पगड़ी।
शील–(सं०पुं०) चरित्र, चाल, व्यवहार, स्वभाव, उत्तम आचरण। शीलता–(सं०स्त्री०) शीलत्व, साधुता। शीलधर–(सं०वि०) सच्चरित्र। शीलन–(सं०पुं०) अभ्यास। शीलभ्रंश–(सं० पुं०) शीलता का परित्याग।
शीलवान्–(हिं०वि०) कोमल स्वभाव का।
शीश–(हिं०पुं०) देखो शीर्ष।
शुक–(सं०पुं०) सुग्गा, तोता। शुकतुण्ड–(सं०पुं०) तोते की चोंच।
शुक्ति–(सं०स्त्री०) सीप, सुतुही, शंख।
शुक्तिज–(सं०पुं०) मोती। शुक्तिबीज–(सं०पुं०) मुक्ता, मोती।
शुक्तिवधू–(सं०स्त्री०) सीपी।
शुक्र–(सं०पुं०) वीर्य, शक्ति, बल, सामर्थ्य। शुक्रवार–(सं०पुं०) सप्ताह का छठा दिन।
शुक्ल–(सं०पुं०) श्वेतवर्ण; (पुं०) चांदी, मक्खन। शुक्लता–(सं०स्त्री०) श्वेतता। शुक्लवंश–(सं०पुं०) सफेद बाँस
शुचि–(सं०वि०) स्वच्छ, निर्दोष, पापरहित। शुचिता–(सं०स्त्री०) पवित्रता।
शुण्ठी–(सं०स्त्री०) सोंठ।

शुण्ड–(सं०पुं०) हाथी का सूंड़।
शुण्डादण्ड–(सं०पुं०) हाथी का सूंड़।
शुण्डापान–(सं०पुं०) कलवरिया।
शुण्डार–(सं०पुं०) मद्य बनाने या बेचनेवाला।
शुण्डिक–(सं०पुं०) कलवरिया; (सं० स्त्री०) गले के भीतर की घंटी।
शुद्ध–(सं० वि०) दोषरहित, पवित्र, उज्ज्वल, बिना मिलावट का। शुद्धता–(सं०स्त्री०) निर्दोषता। शुद्ध पक्ष–(सं०पुं०) शुक्ल पक्ष। शुद्धभाव–(सं० पुं०) स्वच्छ भावना। शुद्धान्त–(हिं० वि०) पवित्र स्वभाव का।
शुद्धान्त–(सं०पुं०) अन्तःपुर।
शुद्धावास–(सं०पुं०) स्वर्ग।
शुद्धि–(सं० स्त्री०) स्वच्छता। शुद्धिपत्र–(सं०पुं०) वह पत्र जिसमें छापे की अशुद्धियाँ बतलाई जाती हैं।
शुन–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
शुनि–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता। शुनी–(सं०स्त्री०) कुक्कुरी, कुतिया।
शुभ–(सं०वि०) कल्याणकारी, सुन्दर, उत्तम, सुखी। शुभकर–(सं० वि०) मंगलजनक। शुभकर्म–(सं० पुं०) मंगलजनक कार्य। शुभक्षण–(सं०पुं०) शुभ मुहूर्त। शुभंकर–(सं०वि०) शुभ या मंगल करनेवाला।
शुभचिन्तक–(सं०वि०) हितैषी।
शुभद–(सं०वि०) शुभदायक। शुभदर्शन–(सं०वि०) सुन्दर। शुभदायी–(सं० वि०) शुभ करनवाला। शुभपत्रिका–(सं०स्त्री०) मंगलपत्रिका।
शुभप्रद–(सं०वि०) मंगल करनेवाला।
शुभावह–(सं०वि०) मंगलजनक।
शुभाशय–(सं०वि०) धार्मिक।
शुभ्र–(सं०वि०) उद्दीप्त, सफेद। शुभ्रता–(सं० स्त्री०) शुक्लता।
शुम्बल–(सं०पुं०) जलती हुई लकड़ी, मसाल।
शुल्क–(सं०पुं०) राजकर, दहेज, होड़, किसी कार्य के बदले में दिया जानेवाला धन। शुल्कशाला–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर कर या चुंगी चुकाई जाती है।
शुश्रूषक–(सं० वि०) सेवा-शुश्रूषा करनेवाला। शुश्रूषा–(सं० स्त्री०) सेवा, परिचर्या, टहल।
शुष्क–(सं०वि०) सूखा, नीरस, स्नेहरहित, निर्मोही, निरर्थक, व्यर्थ। शुष्ककण्ठ–(सं०वि०) प्यासा। शुष्कता–(सं० स्त्री०) सूखापन। शुष्कपत्र–(सं०पुं०) सूखा पत्ता। शुष्कमुख–(सं०वि०) कृपण, कंजूस।
शूकर–(सं०पुं०) वराह, सुअर। शूकरशूची–(सं०स्त्री०) सूई।
शूद्र–(सं०पुं०) आर्यों के चार वर्णों में से अन्तिम वर्ण।
शूद्रता–(सं०स्त्री०) शूद्र का भाव या धर्म। शूद्रत्व–(सं०पुं०) शूद्रता।
शूद्रा, शूद्री–(सं०स्त्री०) शूद्र की स्त्री।
शून्य–(सं० पुं०) रिक्तस्थान, आकाश, विन्दु, निर्जन स्थान, अभाव; (वि०) बहुत थोड़ा, असंपूर्ण। शून्यता–(सं० स्त्री०) शून्य भाव।
शून्या–(सं०स्त्री०) वन्ध्या स्त्री।
शून्यालय–(सं०पुं०) एकान्त स्थान।
शूप–(हिं०पुं०) शूर्प, सूप।
शूर–(सं०पुं०) वीर, योद्धा। शूरता–(सं०स्त्री०) वीरता। शूरताई–(हिं० स्त्री०) वीरता।
शूरन–(हिं०पुं०) देखो सूरन।
शूरविद्या–(सं०स्त्री०) युद्ध करने की

विद्या। शूरवीर–(सं०पुं०) अतिशय योद्धा।
शूल–(सं० पुं०) प्राचीन समय का वरछा; (वि०) तीक्ष्ण; (पुं०) शूली जिस पर चढ़ाकर प्राचीन काल में प्राणदण्ड दिया जाता था, त्रिशूल। शूलना–(हिं०पुं०) शूल के समान कष्ट देना। शूलपाणि–(सं०पुं०)शिव,महादेव।
शूलिक–(सं० पुं०) शशक, खरहा।
शूलिका–(सं०स्त्री०) सीकचे में गोदकर भूना हुआ मांस।
शृगाल–(सं०पुं०) गीदड़, सियार।
शृङ्खल–(सं०पुं०) मेखला, करधनी, हथकड़ी, बेड़ी। शृङ्खलता–(सं० स्त्री०) क्रमबद्ध होने का भाव।
शृङ्खला–(सं०स्त्री०) मेखला, करधनी, तागड़ी, श्रेणी, नियम। शृङ्खलाबद्ध–(सं०वि०) क्रमिक, सिकड़ी में बँधा हुआ।
शृङ्ग–(सं० स्त्री०) पर्वत का शिखर, चोटी, गौ, भैंस आदि पशुओं का सींग।
शृङ्गाट, शृङ्गाटक–(सं० पुं०) चौराहा, चौमुहानी, सिंघाड़ा, स्त्रियों का आभूषण, वस्त्र आदि से शरीर को सुशोभित करना, सजावट, शोभा देनेवाली वस्तु।
शृङ्गारना–(हिं० क्रि०) श्रृंगार करना, सजाना। शृङ्गारहाट–(हिं० स्त्री०) वेश्याओं के रहने का स्थान।
शृङ्गारिणी–(सं०स्त्री०) श्रृंगार करनेवाली स्त्री। शृङ्गारित–(सं०वि०) श्रृङ्गार किया हुआ, सँवारा हुआ।
शृङ्गारिया–(हिं०पुं०) देवी देवता का श्रृंगार करनेवाला, बहुरूपिया।
शृत–(सं०पुं०) क्वाथ, काढ़ा।
शेखर–(सं०पुं०) शिरोभूषण, किरीट, मुकुट, चोटी, माथा, श्रेष्ठतावाचक शब्द।
शेष–(सं०पुं०) अनन्त, सर्पराज, समाप्ति, अन्त, परिणाम। शेषधर–(सं० पुं०) शिव, महादेव। शेषनाग–(सं० पुं०) अनन्त। शेषभाग–(सं० पुं०) बचा हुआ भाग। शेषरात्रि–(सं०स्त्री०) रात का पिछला पहर।
शेषोक्त–(सं०वि०)अन्त में कहा हुआ।
शक्या–(सं० पुं०) सिकहर, छींका; (वि०) दृढ़।
शैत्य–(सं०पुं०) शीत, ठंढक।
शैथिल्य–(सं०पुं०) शिथिलता, ढिलाई।
शैल–(सं० पुं०) चट्टान; (पुं०) पर्वत, पहाड़; (वि०) पथरीला, कठोर।
शैलकुमारी–पार्वती।
शैलपति–(सं०पुं०)हिमालय। शैलपथ–(सं०पुं०)पहाड़ का मार्ग। शैलरन्ध्र–(सं०पुं०) पहाड़ी गुफा। शैलराज–(सं०पुं०) हिमालय पर्वत।
शैलश्रृङ्ग–(सं०पुं०) पर्वत का शिखर।
शैली–(सं०स्त्री०) चाल, ढंग, रीति, प्रथा, प्रणाली, परिपाटी, वाक्य-रचना।
शैलेन्द्र–(सं०पुं०) शैलराज, हिमालय।
शैलेय–(सं०पुं०) सेंधा नमक; (पुं०) सिंह, भौंरा; (वि०) पहाड़ी, पथरीला, पत्थर के समान।
शैव–(सं०वि०) शिव संबंधी; (पुं०) शिव का उपासक। शैवपत्र–(सं० पुं०) बिल्वपत्र।
शैवालिनी–(सं०स्त्री०) नदी।
शैवाल–(सं०पुं०) जलनील, सेवार।
शैव्य–(सं०वि०) शिव संबंधी।
शैशव–(सं० पुं०) बाल्यावस्था, बचपन; (वि०) बचपन का।
शैशिर–(सं०वि०) शिशिर संबंधी।
शोक–(सं०पुं०) सोच, खेद। शोककर, शोककारक–(सं०वि०) शोकजनक।

शोकहारी–(सं० वि०) शोक को दूर करनेवाला। शोकाकुल–(सं० वि०) शोक से व्याकुल। शोकातुर–(सं० वि०) दुःख या शोक से व्याकुल।
शोच–(हिं०पुं०) चिन्ता, दुःख। शोचनीय–(सं०वि०) शोक करने योग्य।
शोण–(सं० पुं०) रुधिर, अग्नि, लाल रंग, ललाई। शोणता–(सं०स्त्री०) रक्तता, ललाई। शोणमणि–(सं० स्त्री०) पद्मराग मणि, मानिक।
शोणित–(सं०वि०) लाल रंग का, लाल।
शोणितोत्पल–(सं०पुं०) लाल कमल।
शोथ–(सं०पुं०) किसी अंग में सूजन।
शोध–(सं०पुं०) निर्मलता, परीक्षा, जाँच, अनुसन्धान, खोज, ढूंढ़। शोधक–(सं० वि०) खोजने या ढूँढ़नेवाला, सुधारक; (पुं०) वह संख्या जिसके घटाने से वर्ग-मूल ठीक ठीक निकले। शोधन–(सं० पुं०) शोच, शुद्धता, आचरण सुधारने के लिय दण्ड देना। शोधना–(हिं०क्रि०) शुद्ध करना।
शोधनी–(सं०स्त्री०) सम्मार्जिनी, झाड़ू, बोहारू। शोधनीय–(सं० वि०) शुद्ध करने के योग्य। शोधवाना–(हिं०क्रि०) शोधने का काम दूसरे से कराना। शोधित–(सं० वि०) परिष्कृत, स्वच्छ किया हुआ। शोधैया–शोधनेवाला, सुधारक।
शोफ–(सं०पुं०) सूजन।
शोभन–(सं०पुं०) शुभ, कल्याण, सौंदर्य, आभूषण, रमणीय, सुहावना। शोभना–(हिं०क्रि०) सुशोभित होना। शोभनीय–(सं० वि०) शोभा के योग्य।
शोभा–(सं०स्त्री०) दीप्ति, कांति, छवि, सुन्दरता, गोरोचन, चमेली। शोभाकर–(सं०वि०) शोभा करनेवाला।
शोभान्वित–(सं०वि०) शोभायुक्त।
शोभायमान–(सं०वि०) सुन्दर, सोहाता हुआ।
शोभित–(सं०वि०) शोभायुक्त।
शोष–(सं०पुं०) सूखने का भाव, शोषण, यक्ष्मा रोग, बच्चों का सुखण्डी का रोग।
शोषक–(सं०वि०) सोखनेवाला।
शोषण–(सं० पुं०) सोखना, सुखाना, क्षीण करना।
शोषणीय–(सं०वि०) सुखाने योग्य।
शोषित–(सं० वि०) सुखाया हुआ।
शौक्तिका–(सं०स्त्री०) सीप।
शौच–(सं० पुं०) शुचिता, पवित्रता, वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किये जाते हैं।
शौचत्व–(सं० पुं०) शौच कार्य।
शौचविधि–(सं०स्त्री०) मल-मूत्र आदि का त्याग करना। शौचाचार–(सं० पुं०) शुद्धिकर्म।
शौण्ड–(सं०वि०) मद्य पीकर मतवाला, प्रगल्भ। शौण्डता–(सं०स्त्री०) मत्तता।
शौत–(हिं०स्त्री०) देखो सौत।
शौनिक–(सं०पुं०) आखेट, मृगया।
शौरसेनी–(सं०स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा।
शौर्य–(सं० पुं०) शूरता, वीरता।
श्मशान–(सं०पुं०) शव जलाने का स्थान, मरघट।
श्मश्रु–(सं०पुं०) मुख पर के बाल, दाढ़ी, मूंछ।
श्याम–(सं०वि०) काला, साँवले रंग का; (पुं०) बादल, कोयल, श्रीकृष्ण का एक नाम। श्यामक–(सं०वि०) काले रंग का। श्यामकण्ठ–(सं० पुं०) नीलकण्ठ पक्षी। श्यामता–(सं० स्त्री०) कृष्णता, कालापन।

विद्या। शूरवीर-(सं०पुं०) अतिशय योद्धा।

शूल-(सं० पुं०) प्राचीन समय का बरछा; (वि०) तीक्ष्ण; (पुं०) शूली जिस पर चढ़ाकर प्राचीन काल में प्राणदण्ड दिया जाता था, त्रिशूल।

शूलना-(हिं०पुं०) शूल के समान कष्ट देना। शूलपाणि-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

शूलिक-(सं० पुं०) शशक, खरहा।

शूलिका-(सं०स्त्री०) सीकचे में गोदकर भूना हुआ मांस।

शृगाल-(सं०पुं०) गीदड़, सियार।

शृङ्खल-(सं०पुं०) मेखला, करधनी, हथकड़ी, बेड़ी। शृङ्खलता-(सं० स्त्री०) क्रमबद्ध होने का भाव।

शृङ्खला-(सं०स्त्री०) मेखला, करधनी, तागड़ी, श्रेणी, नियम। शृङ्खलाबद्ध-(सं०वि०) क्रमिक, सिकड़ी में बँधा हुआ।

शृङ्ग-(सं० स्त्री०) पर्वत का शिखर, चोटी, गौ, भैंस आदि पशुओं का सींग।

शृङ्गाट, शृङ्गाटक-(सं० पुं०) चौराहा, चौमुहानी, सिघाड़ा, स्त्रियों का आभूषण, वस्त्र आदि से शरीर को सुशोभित करना, सजावट, शोभा देनेवाली वस्तु।

शृङ्गारना-(हिं० क्रि०) शृंगार करना, सजाना। शृङ्गारहाट-(हिं० स्त्री०) वेश्याओं के रहने का स्थान।

शृङ्गारिणी-(सं०स्त्री०) शृंगार करनेवाली स्त्री। शृङ्गारित-(सं०वि०) शृङ्गार किया हुआ, सँवारा हुआ।

शृङ्गारिया-(हिं०पुं०) देवी देवता का शृंगार करनेवाला, बहुरूपिया।

शृत-(सं०पुं०) क्वाथ, काढ़ा।

शेखर-(सं०पुं०) शिरोभूषण, किरीट, मुकुट, चोटी, माथा, श्रेष्ठतावाचक शब्द।

शेष-(सं०पुं०) अनन्त, सर्पराज, समाप्ति, अन्त, परिणाम। शेषधर-(सं० पुं०) शिव, महादेव। शेषनाग-(सं० पुं०) अनन्त। शेषभाग-(सं० पुं०) बचा हुआ भाग। शेषरात्रि-(सं०स्त्री०) रात का पिछला पहर।

शेषोक्त-(सं०वि०) अन्त में कहा हुआ।

शक्या-(सं० पुं०) सिकहर, छींका; (वि०) दृढ़।

शैत्य-(सं०पुं०) शीत, ठंढक।

शैथिल्य-(सं०पुं०) शिथिलता, ढिलाई।

शैल-(सं० पुं०) चट्टान; (पुं०) पर्वत, पहाड़; (वि०) पथरीला, कठोर।

शैलकुमारी-पार्वती।

शैलपति-(सं०पुं०) हिमालय। शैलपथ-(सं०पुं०) पहाड़ का मार्ग। शैलरन्ध्र-(सं०पुं०) पहाड़ी गुफा। शैलराज-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत।

शैलशृङ्ग-(सं०पुं०) पर्वत का शिखर।

शैली-(सं०स्त्री०) चाल, ढंग, रीति, प्रथा, प्रणाली, परिपाटी, वाक्य-रचना।

शैलेन्द्र-(सं०पुं०) शैलराज, हिमालय।

शैलेय-(सं०पुं०) सेंधा नमक; (पुं०) सिंह, भौंरा; (वि०) पहाड़ी, पथरीला, पत्थर के समान।

शैव-(सं०वि०) शिव संबंधी; (पुं०) शिव का उपासक। शैवपत्र-(सं० पुं०) बिल्वपत्र।

शैवालिनी-(सं०स्त्री०) नदी।

शैवाल-(सं०पुं०) जलनील, सेवार।

शैव्य-(सं०वि०) शिव संबंधी।

शैशव-(सं० पुं०) बाल्यावस्था, बचपन; (वि०) बचपन का।

शैशिर-(सं०वि०) शिशिर संबंधी।

शोक-(सं०पुं०) सोच, खेद। शोककर, शोककारक-(सं०वि०) शोकजनक।

शोकहारी–(सं० वि०) शोक को दूर करनेवाला। शोकाकुल–(सं० वि०) शोक से व्याकुल। शोकातुर–(सं० वि०) दुःख या शोक से व्याकुल।
शोच–(हिं०पुं०) चिन्ता, दुःख। शोचनीय–(सं०वि०) शोक करने योग्य।
शोण–(सं० पुं०) रुधिर, अग्नि, लाल रंग, ललाई। शोणता–(सं०स्त्री०) रक्तता, ललाई। शोणमणि–(सं० स्त्री०) पद्मराग मणि, मानिक।
शोणित–(सं०वि०) लाल रंग का, लाल।
शोणितोत्पल–(सं०पुं०) लाल कमल।
शोथ–(सं०पुं०) किसी अंग में सूजन।
शोध–(सं०पुं०) निर्मलता, परीक्षा, जाँच, अनुसन्धान, खोज, ढूँढ़। शोधक–(सं० वि०) खोजने या ढूँढ़नेवाला, सुधारक; (पुं०) वह संख्या जिसके घटाने से वर्ग-मूल ठीक ठीक निकले। शोधन–(सं० पुं०) शोच, शुद्धता, आचरण सुधारने के लिय दण्ड देना। शोधना–(हिं०क्रि०) शुद्ध करना।
शोधनी–(सं०स्त्री०) सम्मार्जिनी, झाड़ू, बोहारू। शोधनीय–(सं० वि०) शुद्ध करने के योग्य। शोधवाना–(हिं०क्रि०) शोधने का काम दूसरे से कराना। शोधित–(सं० वि०) परिष्कृत, स्वच्छ किया हुआ। शोधैया–शोधनेवाला, सुधारक।
शोफ–(सं०पुं०) सूजन।
शोभन–(सं०पुं०) शुभ, कल्याण, सौंदर्य, आभूषण, रमणीय, सुहावना। शोभना–(हिं०क्रि०) सुशोभित होना। शोभनीय–(सं० वि०) शोभा के योग्य।
शोभा–(सं०स्त्री०) दीप्ति, कांति, छवि, सुन्दरता, गोरोचन, चमेली। शोभाकर–(सं०वि०) शोभा करनेवाला।
शोभान्वित–(सं०वि०) शोभायुक्त।
शोभायमान–(सं०वि०) सुन्दर, सोहाता हुआ।
शोभित–(सं०वि०) शोभायुक्त।
शोष–(सं०पुं०) सूखने का भाव, शोषण, यक्ष्मा रोग, बच्चों का सुखण्डी का रोग।
शोषक–(सं०वि०) सोखनेवाला।
शोषण–(सं० पुं०) सोखना, सुखाना, क्षीण करना।
शोषणीय–(सं०वि०) सुखाने योग्य।
शोषित–(सं० वि०) सुखाया हुआ।
शौक्तिका–(सं०स्त्री०) सीप।
शौच–(सं० पुं०) शुचिता, पवित्रता, वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किये जाते हैं।
शौचत्व–(सं० पुं०) शौच कार्य।
शौचविधि–(सं०स्त्री०) मल-मूत्र आदि का त्याग करना। शौचाचार–(सं० पुं०) शुद्धिकर्म।
शौण्ड–(सं०वि०) मद्य पीकर मतवाला, प्रगल्भ। शौण्डता–(सं०स्त्री०) मत्तता।
शौत–(हिं०स्त्री०) देखो सौत।
शौनिक–(सं०पुं०) आखेट, मृगया।
शौरसेनी–(सं०स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा।
शौर्य–(सं० पुं०) शूरता, वीरता।
श्मशान–(सं०पुं०) शव जलाने का स्थान, मरघट।
श्मश्रु–(सं०पुं०) मुख पर के बाल, दाढ़ी, मूँछ।
श्याम–(सं०वि०) काला, साँवले रंग का; (पुं०) बादल, कोयल, श्रीकृष्ण का एक नाम। श्यामक–(सं०वि०) काले रंग का। श्यामकण्ठ–(सं० पुं०) नीलकण्ठ पक्षी। श्यामता–(सं० स्त्री०) कृष्णता, कालापन।

श्यामल–(सं०पुं०) काले रंग का, साँवला।
श्यामलता–(सं०स्त्री०) साँवलापन।
श्यामसुन्दर–(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
श्यामा–(सं०स्त्री०) बाँझ स्त्री, रात, छाया, कोयल, साँवा नामक अन्न।
श्यामाङ्ग–(सं०पुं०) साँवले रंग का।
श्याल, श्यालक–(सं०पुं०) पत्नी का भाई, साला, भगिनीपति, बहनोई।
श्यालिका–(सं०स्त्री०) पत्नी की बहिन, साली।
श्येन–(सं०पुं०) बाज नामक पक्षी।
श्रद्धास्पद–(सं०वि०) पूजनीय।
श्रद्धेय–(सं०वि०) श्रद्धा के योग्य।
श्रम–(सं०पुं०) प्रयास, अभ्यास, परिश्रम, शास्त्रों का अभ्यास, तपस्या, व्यायाम, पसीना। **श्रमकण**–(सं०वि०) पसीने की बूंद। **श्रमकर**–(सं०पुं०) परिश्रम करनेवाला। **श्रमजल**–पसीना। **श्रमजीवी**–(सं०वि०) परिश्रम करके पेट पालनेवाला। **श्रमण**–(सं० पुं०) बौद्ध संन्यासी। **श्रमबिन्दु**–(सं०पुं०) पसीने की बूंद। **श्रमवारि**–(सं० पुं०) पसीना। **श्रमविनोद**–(सं० पुं०) परिश्रम से होनेवाला सुख। **श्रमविभाग**–(सं०पुं०) परिश्रम या कार्य का विभाग। **श्रमस्थान**–(सं० पुं०) कार्यालय, परिश्रम करने का स्थान। **श्रमाम्बु**–(सं०पुं०) पसीना। **श्रमिक**–(हिं०पुं०) श्रम करनेवाला।
श्रमित–(सं०वि०) शिथिल, थका हुआ।
श्रमी–(हिं०वि०) परिश्रमी, श्रमजीवी।
श्रवण–(सं० पुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान।
श्रवणगोचर–(सं० पुं०) कर्णगोचर।
श्रवणपथ–(सं०पुं०) कान। **श्रवणविद्या**–(सं०स्त्री०) संगीत शास्त्र।
श्रवणीय–(सं०वि०) सुनने योग्य।
श्रवना–(हि०क्रि०) गिरना, बहना।
श्रव्य–(सं०वि०) जो सुना जा सके।
श्राद्ध–(सं० पुं०) वह कर्म जो शास्त्रविधि के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है।
श्रान्त–(सं०वि०) दुःखी, थका हुआ।
श्रान्ति–(सं०स्त्री०) श्रम, खेद, दुःख।
श्राप–(हि०पुं०) देखो शाप।
श्राम–(सं०पुं०) मण्डप, घर।
श्राव–(सं०पुं०) श्रवण, कान।
श्रावक–(सं०पुं०) बौद्ध या जैन संन्यासी।
श्रावण–(सं०पुं०) वर्ष का चौथा महीना।
श्रावणी–(सं०स्त्री०) श्रावण मास की पूर्णिमा, इस दिन ब्राह्मणों का 'रक्षाबन्धन' नामक त्योहार होता है।
श्रावयितव्य–(सं०वि०) सुनाने योग्य।
श्राविता–(सं०त्रि०) श्रोता, सुननेवाला।
श्रित–(सं०वि०) सेवित, आश्रित।
श्रिय–(सं०स्त्री०) मंगल, कल्याण, शोभा।
श्री–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, कीर्ति, कमल, वृद्धि, वेल का वृक्ष, ऐश्वर्य, अधिकार, प्रभा, शोभा, कान्ति, सफेद चन्दन, एक आदरसूचक शब्द जो नाम के आगे लिखा जाता है।
श्रीकण्ठ–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
श्रीकर–(सं०पुं०) लाल कमल।
श्रीकान्त–(सं०पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु।
श्रीकाम–(सं०वि०) धन-धान्य की कामना करनेवाला। **श्रीखण्ड**–(सं० पुं०) हरिचन्दन।
श्रीगर्भ–(सं०पुं०) खड्ग, तलवार।
श्रीघर–(सं०पुं०) शालग्राम, चक्र, विष्णु; (वि०) तेजस्वी, तेजवान्।
श्रीनिकेतन–(सं०पुं०) वैकुण्ठ। **श्रीनिवास**–(सं०पुं०) लक्ष्मी का निवास। **श्रीपञ्चमी**(सं०स्त्री०) वसन्तपंचमी।

श्रीपति–(सं०पुं०) विष्णु, राजा। श्रीफल–(सं०पुं०) बेल का वृक्ष।
श्रीमत्–(सं०वि०) ऐश्वर्यशाली, धनवान्, सुन्दर।
श्रीमती–(सं०स्त्री०) स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द।
श्रीमन्त–(सं०त्रि०) धनवान्, धनाढ्य।
श्रीमान–(हिं०वि०) देखो श्रीयुत,धनवान्
श्रीमाला–(सं०स्त्री०) गले में पहनने का एक आभूषण।
श्रीमुख–(सं०पुं०) सुन्दर मुख।
श्रीमूर्ति–(सं०स्त्री०) विष्णु की प्रतिमा।
श्रीयुक्त–(सं०वि०) श्रीमान्, शोभा सम्पन्न एक आदरसूचक विशेषण जो बड़े आदमियों के नाम के पहले लगाया जाता है। श्रीयुत–(सं०वि०) श्रीयुक्त।
श्रीवन्त–(सं०वि०) सम्पत्तिशाली, धनाढ्य
श्रीवृद्धि–(सं०स्त्री०) भाग्य की वृद्धि।
श्रीहत–(सं० वि०) निस्तेज, शोभारहित।
श्रुत–(सं०वि०) सुना हुआ, ज्ञात।
श्रुतपूर्व–(सं०वि०) जो पहले सुना गया हो।
श्रुति–(सं०स्त्री०) वेद, कर्ण, कान, सुनी हुई बात, वार्ता, ध्वनि, शब्द, त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा, अभिधान, नाम, विद्या। श्रुतिकटु–(सं० पुं०) कठोर या कर्कश शब्द। श्रुतिपथ–(सं०पुं०) श्रवणेन्द्रिय। श्रुतिमार्ग, श्रुतिमण्डल–(सं० पुं०) कर्ण, कान। श्रुतिमाला–(सं०पुं०) ब्रह्मा। श्रुतिमुख–(सं०पुं०) ब्रह्मा।
श्रेणि–(सं०स्त्री०) पंक्ति, परम्परा, शृंखला, मण्डली, समूह, तेल, सेना। श्रेणिबद्ध–(सं० पुं०) क्रम बांधे हुए।
श्रेणी–(सं०स्त्री०) देखो श्रेणि।
श्रेणीधर्म–(सं०पुं०) पंचायत की रीति।
श्रेणीबद्ध–(सं०वि०) क्रम बाँधे हुए।
श्रेय–(हिं०वि०) धर्म, पुण्य, सदाचार, मुक्ति, कल्याण; (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
श्रेयस्–(सं०पुं०) अतिशय मङ्गल।
श्रेयस्कर–(सं०वि०) शुभ करनेवाला।
श्रेयस्काम–(सं०पुं०) मंगल चाहनेवाला।
श्रेष्ठ–(सं०वि०) प्रशस्त, उत्तम, ज्येष्ठ, बड़ा, मुख्य। श्रेष्ठतम–(सं०वि०) सब में श्रेष्ठ।
श्रेष्ठतर–(सं०वि०) वह जो दो व्यक्ति या पदार्थों में प्रधान हो। श्रेष्ठतः–(सं०अव्य०) विशेष करके।
श्रेष्ठता–(सं०स्त्री०) प्रधानता, बड़ाई।
श्रोणि–(सं०स्त्री०) कटिदेश, कमर। श्रोणिबिम्ब–(सं० पुं०) करधनी।
श्रोणिसूत्र–(सं० पुं०) तलवार लटकाने का परतला, कमर की करधनी।
श्रोणी–(सं०स्त्री०) कटि, कमर, नितम्ब।
श्रोत–(हिं०पुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान। श्रोतव्य–(सं०वि०) सुनने योग्य।
श्रोता–(हिं०पुं०) कथा आदि सुननेवाला।
श्रोत्रिय–(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जिसने वेद का अध्ययन किया हो। श्रोत्री–(हिं०पुं०) श्रोत्रिय।
श्रोनित–(हिं०वि०) देखो शोणित।
श्रौत–(सं०पुं०) श्रुति संबंधी।
श्लथ–(सं०वि०) शिथिल, ढीला, दुर्बल।
श्लाघनीय–(सं०वि०) प्रशंसनीय।
श्लाघा–(सं० स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई। श्लाघित–(सं०वि०) प्रशंसित।
श्लाघ्य–(सं०वि०) सराहन योग्य, श्रेष्ठ।
श्लिष्ट–(सं०वि०) मिला हुआ, जुटा हुआ।
श्लीपद–(सं० पुं०) फीलपांव नामक रोग।

श्लील–(सं०वि०) शुभ, मंगलदायक।
श्लेष–(सं० पुं०) संयोग, मिलान, जोड़। श्लेषण–(सं० पुं०) संयुक्त करना, मिलाना, आलिंगन।
श्लेष्मा–(सं०पुं०) कफ।
श्लेष्मिक–(सं०वि०) कफ संबंधी।
श्लोक–(सं०पुं०) पद्य, कविता, अनुष्टुप छन्द, यश, प्रसिद्धि, कीर्ति।
श्वजीविका–(सं०स्त्री०) दासत्ववृत्ति।
श्वन्–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
श्वपच्–(सं०पुं०) चाण्डाल, डोम।
श्वभीरु–(सं०पुं०) शृगाल, सियार।
श्वशुर–(सं०पुं०) पति या पत्नी का पिता, ससुर।
श्वश्रू–(सं०स्त्री०) पति या पत्नी की माता, सास।
श्वसन–(सं०पुं०) सांस लेना, हाँफना।
श्वान–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
श्वास–(सं०पुं०) प्राणवायु, साँस, दम, दमे का रोग। श्वासकास–दमा, खाँसी। श्वासरोध–दम घुटना। श्वासा–(हिं० स्त्री०) साँस, दम, प्राण।
श्वासोच्छ्वास–(सं०पुं०) वेग से साँस खींचना और बाहर निकालना।
श्वेतता–(सं०स्त्री०) सफेदी। श्वेतद्युति–(सं०पुं०) चन्द्रमा। श्वेतधातु–(सं० पुं०) खड़िया। श्वेतनील–(सं० पुं०) बादल।

ष

ष–संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला के व्यञ्जन वर्णों में से इकतीसवाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।
ष–(सं०पुं०) ध्वंस, नाश, अवशेष, मुक्ति, स्वर्ग; (वि०) सुन्दर।

षट्–(सं०वि०) गिनती में छः; (पुं०) ६ की संख्या।
षट्क–छः वस्तुओं का समूह।
षट्कार–(सं०पुं०) षट् शब्द का उच्चारण।
षट्कोण–(सं०पुं०) छः कोने की आकृति; (वि०) छः पहल का।
षट्चक्र–(सं० पुं०) हठयोग के अनुसार कुण्डलिनी के ऊपर ६ चक्र, षड्यन्त्र।
षट्चरण–(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा, खटमल; (वि०) छः पैरवाला।
षट्तिला–(सं०स्त्री०) माघ महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम।
षट्पद–(सं०वि०) छः परवाला।
षट्पदा–(सं० स्त्री०) भ्रमरी, भौंरी, खटमल।
षट्पदी–(सं० वि०) छः पैरवाली; (स्त्री०) भ्रमरी, भौंरी।
षट्रस–(सं०पुं०) छः प्रकार का रस या स्वाद।
षडंग–(सं० पुं०) शरीर के अवयव।
षडंगी–(हिं०वि०) छः अंगवाला।
षडानन–(सं०वि०) छः मुखवाला।
षड्गुण–(सं०पुं०) छः गुणों का समूह।
षड्दर्शन–(सं० पुं०) हिन्दुओं के छः दर्शन शास्त्र यथा–न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त, मीमांसा और योग।
षड्दर्शनी–(हिं०पुं०) दर्शनों को जाननेवाला, ज्ञानी।
षड्यन्त्र–(सं०पुं०) किसी मनुष्य के विरुद्ध गुप्त रीति से कोई कार्य, कपटपूर्ण आयोजन।
षड्रस–(सं०पुं०) छः प्रकार का स्वाद या रस, यथा–मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय।
षड्रिपु–(सं०पुं०) काम, क्रोध आदि मनुष्य के छः विकार।

षण्ड–(सं०पुं०) साँड़, क्लीब, नपुंसक, हिजड़ा।
षण्डत्व–(स०पुं०) हिजड़ापन।
षण्मास–(स०वि०) छः मास, आधा वर्ष।
षत्व–(सं० पुं०) मूर्धन्य "षकार" का भाव, 'ष' होना।
षष्टि–(सं० वि०) साठ संख्या का; (सं० स्त्री०) साठ की संख्या।
षष्टिका–(सं०स्त्री०) साठी धान।
षष्ठ–(सं०वि०) जिसका स्थान पाँच के उपरान्त हो, छठाँ।
षष्ठक–(सं०वि०) छठाँ।
षष्ठांश–(सं०पुं०) छठाँ भाग।
षष्ठी–(सं०स्त्री०) किसी मास की शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठीं तिथि।
षाण्मासिक–(सं०वि०) छः छः महीने पर होनेवाला।
षोडश–(सं०वि०) सोलहवाँ, सोलह की संख्या।
षोड़शविध–(सं०वि०) सोलह प्रकार का।
षोडशी–(सं०वि०स्त्री०) सोलहवीं, सोलह वर्ष की स्त्री, नवयौवना स्त्री।
षोडशोपचार–(सं०पुं०) पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह हैं यथा–आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, पुनराचमनीय, स्नान, वसन, आभरण, गन्ध, पुष्प, धप, दीप, चन्दन और नैवेद्य
ष्ठीवन–(सं०पुं०) थूकना।
ष्ठीवी–(सं०वि०) थूक से भरा हुआ।

स

स– हिन्दी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान दन्त है।
स–(सं०पुं०) ईश्वर, शिव, विष्णु, सर्प, पक्षी, चन्द्रमा, वायु, जीवात्मा, कान्ति, ज्ञान, चिन्ता।
सं–(सं०अव्य०) एक अव्यय जिसका व्यवहार "संगीत, समानता, शोभा आदि" सूचित करने के लिये होता है यथा–संताप, संयोग आदि।
सँइतना–(हिं० क्रि०) लीपना, पोतना, सहेजना।
सँउपना–(हिं०क्रि०) देखो सौंपना।
संक–(हिं०स्त्री०) देखो शंका।
संकत–(हिं०पुं०) देखो संकेत।
संकना–(हिं०क्रि०) सन्देह करना।
संकर–(हिं०पुं०) शंकर, शिव।
सँकरा–(हिं०वि०) जो अधिक विस्तृत न हो, पतला; (पुं०) कष्ट, आपत्ति।
सँकराना–(हिं०क्रि०) संकुचित करना।
संकल–(हिं०स्त्री०) सिकड़ी।
संकलन–(हिं०पुं०) संग्रह।
संकल्पना–(हिं०क्रि०) दृढ़ निश्चय करना, धार्मिक उद्देश्य से कुछ दान देना।
संकष्ट–(हिं०पुं०) संकट।
संकाना–(हिं०क्रि०) शंका करना, डरना।
संकारना–(हिं०क्रि०) संकेत करना।
संकेतना–(हिं०क्रि०) संकट में डालना।
संकोचना–(हिं०क्रि०) संकुचित करना।
संकोची–(हिं०पुं०) संकोच या लज्जा करनेवाला।
संकोपना–(हिं०क्रि०) क्रोध करना।
संक्रम–(सं०पुं०) प्राप्ति, सेतु, पुल, उपाय।
संक्रमण–अतिक्रमण, घूमना, फिरना, सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करना।
संक्रमणिका–(सं०स्त्री०) सीढ़ियों की पंक्ति।
संक्रमित–(सं०वि०) स्थापित, प्रतिबिम्बित।
संक्रान्त–(सं०वि०) युक्त, प्रविष्ट, व्याप्त, प्रतिबिम्बित।

संक्रान्ति (सं०स्त्री०) संचार, गमन, सूर्य का एक राशि में से दूसरी में जाना, व्याप्ति।
संक्रामक–(सं०वि०) संसर्ग या छूत से फैलनेवाला (रोग)।
संक्षिप्त–(सं०वि०) अल्प, थोड़ा।
संक्षेप–(सं० पुं०) थोड़े में कोई बात कहना।
संक्षेपतः–(स०अव्य०) संक्षेप में, थोड़े में।
संख–(हिं०पुं०) देखो शंख।
संखिया–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत विषैला उपधातु या पत्थर।
संगठन–(हिं०पुं०) अलग अलग शक्तियों, लोगों या अंगों आदि को इस प्रकार एक में मिलाना कि उसमें नई शक्ति आ जावे, संस्था या संघ।
संगठित–(हिं०वि०) भली भाँति व्यवस्था करके मिलाया हुआ।
संगति–(हिं०स्त्री०) देखो सङ्गति।
संगसी–(हिं०स्त्री०) देखो सँड़सी।
संगाती–(हिं०पुं०) साथी, संगी, मित्र।
संगृहीत–(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ।
संगोतरा–(हिं०पुं०) एक प्रकार की नारंगी, सन्तरा।
संगोपित–(सं०वि०) छिपाया हुआ।
संग्रह–देखो संग्रह। **संघ**–देखो सङ्घ।
संघाती–(हिं०पुं०) साथी, मित्र; (वि०) प्राण-नाशक।
संजमी–(हिं०पुं०) देखो संयमी।
संजोग–(हिं०पुं०) देखो संयोग।
संज्ञा–(सं०स्त्री०) चेतना, ज्ञान, बुद्धि, संकेत, व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी वस्तु का बोध होता है।
संज्ञान–(सं०पुं०) संकेत।
संज्ञापन–(सं०पुं०) विज्ञापन, कथन।
संज्ञाहीन–(सं०वि०) अचेत, बेसुध।
सँझवाती–(हिं०स्त्री०) संध्या के समय जलाने का दीपक।
संझा–(हिं०स्त्री०) संध्या, सूर्यास्त का समय
संठ–(हिं०पुं०) शठ, धूर्त, नीच।
संड–(हिं०पुं०) साँड़। **संडमुसंड**–(हिं०वि०) हट्टा-कट्टा।
संड़सा–(हिं०पुं०) गरम लोहे को पकड़ने का लोहार का एक औजार।
सँड़सी–(हिं०स्त्री०) छोटा सँड़सा।
संडा–(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट।
संडास–(हिं०वि०) शौचकूप।
संतरा–(हिं०पुं०) बड़ी नारंगी।
संतरी–(हिं०पुं०) द्वारपाल, पहरेदार।
संतोख–(हिं०क्रि०) देखो सन्तोष।
संतोखना–(हिं०क्रि०) संतोष दिलाना, सन्तुष्ट करना।
संद–(हिं०पुं०) दरार, छेद।
संदि–(हिं०स्त्री०) सन्धि, मेल।
संदूख–(हिं०पुं०) देखो सन्दूक।
संदूर–(हिं०पुं०) देखो सिंदूर।
संदेसा–(हिं०पुं०) सन्देश, समाचार।
संनिधानी–(हिं० वि०) अधिकार में रखनेवाला।
संयात–(सं०वि०) प्राप्त, पहुँचा हुआ।
संयुक्त–(सं०वि०) संयुक्त, जुड़ा हुआ।
संयुत–(सं०वि०) लगा हुआ, मिला हुआ।
संयोग–(सं० पुं०) मिलान, मिलाप, समागम, सम्बन्ध, विवाह सम्बन्ध, मत का एक होना, दो या अधिक व्यंजन वर्णों का मेल, जोड़।
संयोगित–(सं०वि०) मेल किया हुआ।
संयोगी–(हिं०वि०) संयोग करनेवाला, मिलानेवाला।
संयोजक–(सं० वि०) जोड़नेवाला, (पुं०) व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है।

संयोजन–(सं० पुं०) जोड़ने या मिलाने की क्रिया। **संयोजना**–(सं०स्त्री०) प्रबन्ध, व्यवस्था। **संयोजित**–(सं० वि०) मिलाया हुआ।
रक्त–(सं०वि०) अनुरक्त, आसक्त।
संरक्षक–(सं०वि०) रक्षा करनेवाला, सहायक, आश्रय देनेवाला।
संरक्षण–(सं०नपुं०) देखरेख, प्रतिबन्ध। **संरक्षणीय**–(सं० वि०) रक्षा करने योग्य। **संरक्षित**–(सं० वि०) भली भाँति रक्षा किया हुआ।
संरम्भ–(सं०पुं०) क्रोध, युद्ध, लड़ाई।
सँपोलिया–(हिं०पुं०) साँप पकड़नेवाला।
सँभलना–(हिं० क्रि०) थाँभा जाना, सचेत होना, चंगा होना।
संभाल–(हिं०स्त्री०) रक्षा, पोषण का भार। **सँभालना**–(हिं०क्रि०) गिरने से बचाना, रोकना, थाँभना, पालन-पोषण करना।
संयत–(सं०वि०) बँधा हुआ, व्यवस्थित, उद्यत।
संयति–(सं०स्त्री०) निरोध।
संयम–(सं०पुं०) वश में करने की क्रिया या भाव, उद्योग, प्रयत्न।
संयमित–(सं०वि०) वश में लाया हुआ, इन्द्रियनिग्रह।
संयमी–(हिं०पुं०) आत्मनिग्रही, योगी।
संरुद्ध–(सं०वि०) आच्छादित, ढँपा हुआ।
संलग्न–(सं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
संलाप–(सं०पुं०) आपस की बातचीत।
संवत्–(सं०पुं०) संवत्सर, वर्ष।
संवरण–(सं० पुं०) छिपाव, ढपना।
सँवरना–(हिं० क्रि०) अलंकृत होना, सजना।
संवर्धक–(सं०वि०) बढ़ानेवाला।
संवर्धन–(सं० पुं०) बढ़ाना, पालना-पोसना। **संवर्धनीय**–(सं०वि०) बढ़ाने या पालने-पोसने योग्य।
संवर्धित–(सं०वि०) बढ़ाया हुआ, पाला-पोसा हुआ।
संवाद–(सं०पुं०) बातचीत, वृत्तान्त, संग, चर्चा। **संवादक**–(सं० क्रि०) संभाषण करनेवाला।
सँवारना–(हिं०क्रि०) अलंकृत करना; सजाना।
संवाही–(हिं० वि०) हाथ-पैर दबानेवाला, ढोनेवाला, पहुँचानेवाला।
संविधान–(सं० पुं०) व्यवस्था, रीति।
संविभाग–(सं०पुं०) बाँट, बँटाई, भाग।
संविष्ट–(सं०वि०) निविष्ट, बैठा हुआ।
संवीत–(सं०वि०) आवृत, ढँपा हुआ।
संवृत–(सं०वि०) आच्छादित,ढँपा हुआ।
संवेग–(सं०पुं०) आवेग, घबड़ाहट, भय।
संवेदन–(सं०पुं०) अनुभव।
संशमन–(सं० पुं०) शांत करना, निवृत्ति करना।
संशय–(सं०पुं०) सन्देह, आशंका।
संशयात्मक–(सं० वि०) सन्देहजनक।
संशयान–(हिं०वि०) संशययुक्त।
संशयित–(सं० वि०) संदिग्ध, अनिश्चित। **संशयी**–(हिं०वि०) सन्देह करनेवाला।
संशोधक–(सं०वि०) शोधन करनेवाला। **संशोधन**–(सं० पुं०) शुद्ध करना, त्रुटि या दोष दूर करना। **संशोधनीय**–(सं० वि०) सुधारने योग्य। **संशोधित**–(सं०वि०) परिष्कृत, सुधारा हुआ।
संश्रय–(सं०पुं०) आश्रय, शरण, संयोग।
संश्लेष्ठ–(सं०वि०) सम्मिलित, मिश्रित।
संश्लेष–(सं०पुं०) आलिंगन, मेल, मिलाप।
संश्लेषण–(सं० पुं०) जुटना, मिलना।

संश्लेषित–(सं०वि०) सटाया हुआ ।
संस, संसई–(हि०पुं०) देखो संशय ।
संसक्त–(सं०वि०) संबद्ध, लगा हुआ ।
संसनाना–(हि०क्रि०) देखो सनसनाना ।
संसय–(हि०पुं०) देखो संशय ।
संसरण–(सं० पुं०) गमन ।
संसर्ग–(सं०पुं०) संबंध, संपर्क, लगाव ।
संसर्गी–(सं०वि०) सहचर, मित्र ।
संसादित–(सं०वि०) एकत्र किया हुआ, सजाया हुआ ।
संसाधन–(सं० पुं०) आयोजन ।
संसार–(सं०पुं०) मर्त्यलोक, जगत्, सृष्टि, गृहस्थी । **संसारी**–(हि० वि०) संसार संबंधी, लौकिक ।
संसिद्ध–(सं०वि०) प्रस्तुत, उद्यत, प्राप्त ।
संसृष्ट–(सं०वि०) परस्पर मिला हुआ, अन्तर्गत । **संसृष्टि**–(सं०स्त्री०) एक साथ उत्पत्ति, परस्पर संबंध, लगाव, घनिष्ठता ।
संस्करण–(सं० पुं०) सुधारना, पुस्तकों की एक बार की छपाई, आवृत्ति ।
संस्कर्ता–(सं०वि०) संस्कार करनेवाला ।
संस्कार–(सं० पुं०) सुधार, अनुभव, मनोवृत्ति या सुझाव का शोधन, इन्द्रियों पर बाह्य विषयों से पड़ा हुआ प्रभाव, पूर्वजन्म की वासना, चित्त पर पड़ा हुआ प्रभाव ।
संस्कृत–(सं०पुं०) भारतवर्ष की प्राचीन पवित्र भाषा, देववाणी; (वि०) संस्कार किया हुआ ।
संस्कृति–(सं०स्त्री०) संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट, सभ्यता ।
संस्तीर्ण–(सं०वि०) छितराया या फैलाया हुआ ।
संस्तुत–(सं० वि०) प्रशंसा किया हुआ ।
संस्था–(सं० स्त्री०) व्यवस्था, नियम, मण्डल, समाज, सभा, समुदाय ।
संस्थान–(सं० पुं०) स्थिति, ठहराव, आयोजन ।
संस्थापक–(सं० वि०) प्रवर्तक, स्थापित करनेवाला, किसी समाज सभा आदि का खोलनेवाला । **संस्थापन**–(सं० पुं०) जमाना, बैठाना, कोई नई बात चलाना ।
संस्मरण–(सं० पुं०) पूर्ण स्मरण ।
संस्मरणीय–(सं०वि०) नाम जपने योग्य ।
संस्मरित–(सं०वि०) याद दिलाया हुआ ।
संहत–(सं०वि०) घना, गठा हुआ, दृढ़, एकत्र ।
संहति–(सं०स्त्री०) समूह, झुण्ड, ढेर, राशि, घनत्व ।
संहरण–(सं०पुं०) बलपूर्वक छीन लेना ।
संहरना–(हि० क्रि०) संहार करना ।
संहर्षण–(सं० पुं०) रोवें का खड़ा होना ।
संहार–(सं०पुं०) संग्रह, संचय, संक्षेप कथन, ध्वंस, नाश, अन्त, प्रलय ।
संहारक–(सं० वि०) नाश करनेवाला ।
संहिता–(सं०स्त्री०) वह ग्रन्थ जिसमें पद पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो, व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का परस्पर मिलकर एक होना, सन्धि ।
संहृत–(सं०वि०) जुटाया हुआ, नष्ट, संक्षिप्त ।
सइ–(हि०अव्य०) से, साथ, विभक्ति का एक चिह्न जो करण और अपादान कारक में प्रयुक्त होता है ।
सई–(हि०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती ।
सउँ–(हि०अव्य०) सो ।
सकट–(हि०पुं०) शकट, गाड़ी, सग्गड़ ।
सकटी–(हि०स्त्री०) छोटा सग्गड़ या गाड़ी ।

सकड़ी–(हिं०स्त्री०) देखो सिकड़ी ।
सकत–(हिं०स्त्री०) शक्ति, बल, सामर्थ्य ।
सकति–(हिं० क्रि० वि०) यथासंभव, भरसक ।
सकती–(हिं०स्त्री०) शक्ति ।
सकना–(हिं०क्रि०) कोई काम करने के योग्य होना ।
सकपकाना–(हिं०क्रि०) चकपकाना, हिचकिचाना ।
सकम्प–(सं०वि०) काँपता हुआ ।
सकरना–(हिं०क्रि०) स्वीकृत होना ।
सकरा–(हिं०वि०) देखो सँकरा ।
सकरुण–(सं०वि०) दयायुक्त ।
सकर्तृक–(सं०वि०) जिसमें कर्ता हो ।
सकर्मक–(सं०पुं०) जिस धातु के कर्म हों, कर्मयुक्त धातु; (वि०) कर्मयुक्त ।
सकल–(सं०वि०) समस्त ।
सकलेन्दु–(सं०पुं०) पूर्णिमा का चन्द्रमा ।
सकसकाना–(हिं०क्रि०) डर के मारे काँपना ।
सकाना–(हिं०क्रि०) शंका करना, 'सकना' का प्रेरणार्थक रूप ।
सकाम–(सं०वि०) फल की कामना से कोई काम करनेवाला ।
सकार–(सं०पुं०) "स" अक्षर ।
सकारण–(सं०वि०) हेतुसहित ।
सकारना–(हिं०स्त्री०) स्वीकार करना ।
सकाश–(सं०पुं०) समीप, निकट ।
सकिलना–(हिं०क्रि०) सरकना, फिसलना ।
सकुच–(हिं०पुं०स्त्री०) संकोच, लज्जा ।
सकुचना–(हिं०क्रि०) संकोच करना ।
सकुचाई–(हिं०स्त्री०) संकोच, लज्जा ।
सकुचाना–(हिं०क्रि०) लज्जित करना ।
सकुचौहाँ–(हिं०वि०) संकोच करनेवाला
सकुन–(हिं०पुं०) शकुन, पक्षी, चिड़िया ।
सकृत–(सं०अव्य०) एक बार, साथ, सदा ।
सकेत–(हिं०पुं०) संकेत, निर्दिष्ट, विपत्ति, कष्ट, दुःख ।
सकेतना–(हिं०क्रि०) सिकुड़ना ।
सकेलना–(हिं०वि०) इकट्ठा करना ।
सकोरा–(हिं०पुं०) मिट्टी का छोटा पात्र, कसोरा ।
सक्ति–(हिं०स्त्री०) देखो शक्ति ।
सक्तु–(सं०पुं०) सत्तू ।
सक्र–(हिं०पुं०) शक्र, इन्द्र ।
सख–(हिं०पुं०) सखा, मित्र, साथी ।
सखत्व–(सं० पुं०) मित्रता ।
सखरा–(हिं०वि०) जल में पकाया हुआ भोजन ।
सखरी–(हिं०स्त्री०) कच्ची रसोई ।
सखा–(हिं०पुं०) साथी, संगी, सहचर ।
सखित्व–(सं०पुं०) बन्धुता, मित्रता ।
सखी–(सं०स्त्री०) सहचरी, सहेली ।
सख्य–(सं०पुं०) सखापन, मित्रता ।
सख्यता–(सं०स्त्री०) मैत्री ।
सगपन–(हिं०पुं०) देखो सगापन ।
सगबग–(हिं०वि०) तराबोर, लथपथ, परिपूर्ण; (क्रि०वि०) झटपट ।
सगबगाना–(हिं० क्रि०) लथपथ होना, तराबोर होना, भयभीत होना ।
सगरा–(हिं०वि०) संपूर्ण, कुल ।
सगल–(हिं०वि०) देखो सकल ।
सगा–(हिं०वि०) एक ही माता से उत्पन्न, सहोदर, निकट के संबंध का ।
सगाई–(हिं०स्त्री०) विवाह से संबंध का निश्चय ।
सगुण–(सं०वि०) गुणयुक्त, गुणवान् ।
सगुन–(हिं०पुं०) देखो शकुन ।
सगुनाना–(हिं०क्रि०) शकुन बतलाना ।
सगुनिया–(हिं०पुं०) शकुन विचारनेवाला ।
सगोती–(हिं०पुं०) एक वंश का, भाई-बन्धु ।
सघन–(सं०वि०) अविरल, घना, ठोस ।

सङ्कट–(सं०पुं०) विपत्ति, दुःख, कष्ट।
सङ्कर–(सं०पुं०) मिश्रित तत्व, मिश्रण, वर्णसंकर जाति। **सङ्करता**–(सं० स्त्री०) मिलावट।
सङ्कर्षण–(सं०पुं०) आकर्षण, खिचाव।
सङ्कल्प–(सं०पुं०) दान-पुण्य अथवा देव-कार्य आरम्भ करने से पहले दृढ़ निश्चय या विचार प्रकट करना।
सङ्काश–(सं०अव्य०) समीप, निकट।
सङ्कीर्ण–(सं०पुं०) भीड़भाड़; (वि०) अपवित्र, संकुचित,सँकरा,तुच्छ,नीच,क्षुद्र।
सङ्कुचित–(सं०वि०) सिकुड़ा या सिमटा हुआ।
सङ्कुल–(सं०पुं०) युद्ध, लड़ाई।
सङ्केत–(सं०पुं०) इङ्गित, चेष्टा, चिह्न।
सङ्कोच–(सं०पुं०) खिचाव, लज्जा, हिचकिचाहट।
सङ्क्रमण–(सं० पुं०) गमन, चलना, सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी में प्रवेश करना।
सङ्क्रान्ति–(सं०स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।
सङ्क्रामक–(सं०वि०) संसर्ग या छूत से फैलनेवाला।
सङ्क्षय–(सं०पुं०) नाश, ध्वंस, प्रलय।
सङ्क्षिप्त–(सं०वि०) संचित किया हुआ, छोड़ा हुआ, जो संक्षेप में कहा गया हो।
सङ्क्षुब्ध–(सं०वि०) व्याकुल,घबड़ाया हुआ
सङ्क्षेप–(सं०पुं०) थोड़े में कोई बात कहना
सङ्क्षेपतः–(सं०अव्य०) संक्षेप में, थोड़े में।
सङ्क्षोभ–(सं०पुं०) चंचलता, गर्व, घमंड।
सङ्ख्या–(सं०स्त्री०) गणना, गिनती।
सङ्ग–(सं०पुं०) संसर्ग, संबंध, बन्धुत्व।
सङ्गति–(सं०स्त्री०) संगम, मेल, संबंध।
सङ्गम–(सं०पुं०) दो नदियों के मिलने का स्थान, मिलाप, सम्मेलन।
सङ्गीत–(सं० पुं०) वह कार्य जिसमें नाचना, गाना, बजाना तीनों हों।
सङ्गृहीत–(सं०वि०) संग्रह किया हुआ।
सङ्ग्रह–(सं० पुं०) वह ग्रन्थ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों।
सङ्ग्रहणी–(सं०स्त्री०) ग्रहणी रोग।
सङ्ग्राम–(सं०पुं०) युद्ध, लड़ाई।
सङ्घ–(सं०पुं०) दल, सभा, समाज।
सङ्घटन–(सं० पुं०) निर्माण, रचना।
सङ्घटित–(सं०वि०) एकत्र किया हुआ।
सङ्घर्ष–(सं०पुं०) रगड़, मर्दन।
सङ्घाती–(सं०पुं०) प्राणनाशक।
सच–(हिं०वि०) यथार्थ, वास्तविक,सत्य।
सचना–(हिं०क्रि०) इकट्ठा करना।
सचमुच–(हिं० अव्य०) यथार्थ में, वास्तव में।
सचरना–(हिं०क्रि०) प्रचलित होना।
सचराचर–(सं०पुं०) सब चर और अचर प्राणी।
सचल–(सं०वि०) चलायमान।
सचाई–(हिं०स्त्री०) सत्यता, सच्चापन।
सचारना–(हिं०क्रि०) फैलाना।
सचिन्त–(सं०वि०) चिन्तायुक्त, चिन्तित।
सचिव–(सं०पुं०) मन्त्री, सहायक, मित्र।
सची–(सं०स्त्री०) शची, इन्द्राणी।
सचु–(हिं०पुं०) सुख, आनन्द, प्रसन्नता।
सचेत–(हिं०वि०) चेतनायुक्त, सावधान।
सचेती–(हिं०स्त्री०) सावधानी।
सच्चरित–(सं० वि०) जिसका चाल-चलन अच्छा हो।
सच्चा–(हिं०वि०) सत्यवादी, सच बोलनेवाला, यथार्थ, वास्तविक, विशुद्ध, ठीक। **सच्चाई**–(हिं०स्त्री०) सत्यता, सच्चापन।
सच्चापन–(हिं०पुं०) सत्यता, सच्चाई।

सच्चित–(सं० पुं०) सत् और चित् से युक्त ब्रह्म। **सच्चिदानन्द**–(सं०पुं०) नित्य ज्ञान और सुख स्वरूप ब्रह्म।
सच्छन्द–(हिं०वि०) देखो स्वच्छन्द।
सच्छाय–(हिं० वि०) छायायुक्त।
सच्छी–(हिं०पुं०) साक्षी।
सज–(हिं०स्त्री०) सजने की क्रिया या भाव, शोभा, सौन्दर्य।
सजग–(हिं०वि०) सतक, सावधान।
सजदार–(हिं०वि०) अच्छी आकृति का, सुन्दर।
सजधज–(सं०स्त्री०) शृंगार, सजावट।
सजन–(सं०पुं०) भला आदमी।
सजना–(हिं०क्रि०) शृंगार करना, अलंकृत करना, सुशोभित होना।
सजनी–(हिं०स्त्री०) सखी।
सजन्य–(सं०वि०) सजातीय।
सजबज–(हिं०स्त्री०) देखो सजधज।
सजल–(सं०वि०) जल से युक्त, अश्रुपूर्ण।
सजवाई–(हिं०स्त्री०) सजने या सजाने की क्रिया, सजाने का शुल्क। **सजवाना**-(हिं०क्रि०) सजाने का काम दूसरे से कराना।
सजाई–(हिं०स्त्री०) सजाने की क्रिया या भाव।
सजागर–(सं०वि०) जागृत।
सजाति–(सं०पुं०) एक जाति का।
सजातीय–(सं०पुं०)एक जाति या गोत्र का
सजाना–(हिं०क्रि०) शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना।
सजावट–(हिं०स्त्री०) शोभा, तैयारी।
सजावन–(हिं० पुं०) सजाने का भाव या क्रिया।
सजीउ–(हिं०वि०) देखो सजीव।
सजीला–(हिं०वि०) सजधज के साथ रहनेवाला।
सजीव–(सं०वि०) जीवित, जिसमें प्राण हो; (पुं०) जीवधारी।
सजीवन, सजीवन बूटी–(हिं०पुं०) संजीवनी नामक बूटी।
सजोना–(हिं०क्रि०) देखो सजाना।
सज्ज–(सं०वि०) सज्जित, सजा हुआ।
सज्जन–(सं०पुं०)सत्पुरुष, भला आदमी, अच्छे कुल का मनुष्य। **सज्जनता, सज्जनताई**–(हिं०स्त्री०) भलमनसी।
सज्जा–(सं०स्त्री०) वेशभूषा, सजावट; (हिं०स्त्री०) चारपाई, शय्या।
सज्जित–(सं० वि०) विभूषित, सजा हुआ।
सज्ञान–(सं०वि०) ज्ञानयुक्त।
सञ्चय–(सं०पुं०) संग्रह, समूह, ढेर। **सञ्चयी**–(सं०वि०) संचय करनेवाला, कृपण, कंजूस।
सञ्चलन–(सं० पुं०) हिलना-डोलना, चलना-फिरना।
सञ्चार–(सं० पुं०) गमन, चलना, विस्तार।
सञ्चारक–(सं०पुं०) चलानेवाला।
सञ्चारण–(सं०पुं०) प्रसारण, फैलाव।
सञ्चारित–(सं०वि०) फैलाया हुआ।
सञ्चालक–(सं०पुं०) गति देने या चलानेवाला। **सञ्चालन**–(सं० पुं०) प्रतिपादन।
सञ्चित–(सं०वि०) संचय किया हुआ।
सञ्जल्प–(सं०पुं०)कथावार्ता, बातचीत।
सञ्जात–(सं०वि०) प्राप्त, उत्पन्न।
सञ्जीवनी–(सं० स्त्री०) जीवनदायिनी औषधि।
सटक–(हिं० स्त्री०) खिसकने का व्यापार, तमाखू पीने का लंबा नैचा, पतली लचकनेवाली छड़ी। **सटकना**–(हिं०क्रि०) धीरे से भाग जाना।

सटकाना–(हिं०क्रि०) किसी को कोड़े, छड़ी आदि से मारना। सटकार–(हिं०स्त्री०) सटकाने की क्रिया या भाव। सटकारना–(हिं०क्रि०) किसी लचीली वस्तु से किसी को मारना।
सटना–(हिं०क्रि०) मिलना, चिपकना।
सटपट–(हिं०स्त्री०) चकपकाहट, असमंजस, संकट, दुविधा।
सटरपटर–(हिं०वि०) अत्यन्त साधारण, तुच्छ।
सटसट–(हिं०क्रि०वि०) अति शीघ्र,तुरत।
सटा–(सं०स्त्री०) जटा, शिखा, केशर।
सटान–(हिं० स्त्री०) मिलान। सटाना–(हिं०क्रि०) मिलाना, जोड़ना।
सटीक–(सं०वि०) टीका या व्याख्यासहित; (हिं०वि०) ठीक ठीक, जैसा चाहिये वैसा।
सट्टा–(हिं०पुं०) किसी काम को निश्चित करने के लिये लिखा हुआ प्रतिज्ञापत्र।
सट्टी–(हिं०स्त्री०) वह हाट जिसमें फल तरकारी आदि बिकती है।
सठ–(हिं०पुं०) देखो शठ, दुष्ट, पाजी। सठता–(हिं०स्त्री०) शठता, दुष्टता।
सठियाना–(हिं० क्रि०) वृद्धावस्था के कारण विवेक तथा बुद्धि का कम होना।
सड़क–(हिं०स्त्री०) राजमार्ग।
सड़न–(हिं०स्त्री०) सड़ने का भाव या क्रिया। सड़ना–(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ में खमीर उठना या दुर्दशा में पड़ना।
सड़सठ–(हिं०वि०) साठ और सात की संख्या का; (पुं०) जो गिनती में साठ और सात हो ६७। सड़सठवाँ–(हिं० वि०) गिनती में सड़सठ के स्थान पर रहनेवाला।
सड़सी–(हिं०स्त्री०) देखो सँड़सी।
सड़ा–(हिं०वि०) सड़ी हुई वस्तु सम्बन्धी।
सड़ाइंध–(हिं०स्त्री०) सड़ाहट की दुर्गन्धवाला।
सड़ाक–(हिं०पुं०) कोड़े आदि के फटकार का शब्द, शीघ्रता।
सड़ान–(हिं०स्त्री०) सड़ने की क्रिया।
सड़ाना–(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।
सड़ायँध–(हिं०स्त्री०) सड़ी हुई वस्तु की गन्ध।
सड़ाव–(हिं०पुं०) सड़ने की क्रिया या भाव
सड़ियल–(हिं०वि०) सड़ा गला हुआ, तुच्छ, नीच।
सण्ड–(हिं०पुं०) षण्ड, साँड़।
सत–(हिं० पुं०) सत्व, किसी पदार्थ का मूल भाग, सार, तत्व, सार भाग। सतशक्ति–(वि०) सात का संक्षिप्त रूप।
सतकार–(हिं०पुं०) देखो सत्कार।
सतगुरु–(हिं०पुं०) अच्छा गुरु, परमात्मा।
सतजुग–(हिं०पु०) देखो सत्ययुग।
सतत–(सं०अव्य०) सर्वदा, निरन्तर।
सतनज–(हिं०पुं०) सात प्रकार के अन्नों का मेल।
सतपुतिया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की तरोई जो वर्षा ऋतु में होती है।
सतभाव–(हिं०पुं०) सज्जनता, सच्चाई।
सतमासा–(हिं०पुं०) सात महीने पर उत्पन्न होनेवाला बच्चा।
सतयुग–(हिं०पुं०) देखो सत्ययुग।
सतरंगा–(हिं०वि०) जिसमें सात रंग हों।
सतरह–(हिं०पुं०) देखो सत्तरह।
सतर्क–(सं०वि०) तर्कयुक्त, सावधान।
सतलड़ा–(हिं०वि०) सात लड़ियों का हार।
सतवंती–(हिं०स्त्री०) सती, पतिव्रता स्त्री।
सतसंग–(हिं०पुं०) देखो सत्सङ्ग।
सतसई–(हिं०स्त्री०) सात सौ पद्यों का समूह।

सतहत्तर–(हिं०वि०) सत्तर और सात की संख्या का; (पुं०) सत्तर और सात की संख्या ७७ । **सतहत्तरवाँ**–(हिं० वि०) वह जो क्रम से सतहत्तर के स्थान पर हो ।

सतालू–(हिं०पुं०) एक छोटा वृक्ष जिसके गोल फल खाये जाते हैं, आड़ू ।

सतासी–(हिं०वि०) अस्सी और सात की संख्या ८७ । **सतासीवाँ**–(हिं०वि०) जिसका स्थान अस्सी और सात पर पड़ता हो ।

सती–(सं०स्त्री०) पतिव्रता स्त्री, वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले ।

सतुआ–(हिं०पुं०) सत्तू । **सतुआसंक्रान्ति**–(हिं०पुं०) मेष संक्रान्ति ।

सतुष–(सं० वि०) भूसासहित, अन्न ।

सतृष्ण–(सं०वि०) पिपासित, प्यासा ।

सतेज–(हिं०वि०) तेजस्वी, बलवान् ।

सतोगुण–(हिं०पुं०) देखो सत्वगुण ।

सत्कर्म–(सं०पुं०) अच्छा कार्य, पुण्य ।

सत्कवि–(सं०पुं०) श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि ।

सत्कार–(सं० पुं०) आदर, सम्मान, पूजा, आतिथ्य ।

सत्कार्य–(सं०पुं०) सत्कर्म, अच्छा काम ।

सत्कीर्ति–(सं०स्त्री०) उत्तम कीर्ति ।

सत्कुल–(सं० पुं०) उत्तम कुल ।

सत्कृत–(सं०वि०) जिसका सत्कार किया गया हो । **सत्कृति**–(सं०स्त्री०) सत्कार

सत्त–(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का सार भाग, तत्व ।

सत्तर–(हिं०वि०) साठ और दस की संख्या का; (पुं०) साठ और दस की संख्या ७० । **सत्तरवाँ**–(हिं०वि०) जो क्रम से सत्तर के स्थान पर हो ।

सत्ता–(सं०स्त्री०) विद्यमानता, अस्तित्व, प्रभुत्व, शक्ति, गुण; (हिं०स्त्री०) ताश या गंजीफ का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों ।

सत्ताईस–(हिं०वि०) बीस और सात की संख्या का; (पुं०) बीस और सात की संख्या २७ । **सत्ताईसवाँ**–(हिं०वि०) जो क्रम से सत्ताईस के स्थान पर पड़ता हो ।

सत्तानबे–(हिं०वि०) नब्बे और सात की संख्या का; (पुं०) नब्बे और सात की संख्या ९७ ।

सत्तावन–(हिं०वि०) पचास और सात की संख्या का; (पुं०) पचास और सात की संख्या ५७ । **सत्तावनवाँ**–(हिं० वि०) जो क्रम से सत्तावन के स्थान पर पड़ता हो ।

सत्तासी–(हिं०वि०) अस्सी और सात की संख्या का; (पुं०) अस्सी और सात की संख्या ८७ ।

सत्तू–(हिं०वि०) सतुआ ।

सत्पथ–(सं०पुं०) उत्तम मार्ग ।

सत्पात्र–(सं० पुं०) श्रेष्ठ, सदाचारी मनुष्य ।

सत्पुत्र–(सं०पुं०) उत्तम सन्तान ।

सत्पुरुष–(सं०पुं०) पूज्य पुरुष ।

सत्य–(सं० पुं०) यथार्थ, ठीक ।

सत्यतः–(सं०अव्य०) वास्तव में, यथार्थ में, सचमुच । **सत्यता**–(सं०स्त्री०) सचाई । **सत्यनारायण**–(सं० पुं०) सत्यदेव, विष्णु ।

सत्यप्रतिज्ञ–(सं०वि०) सत्यवादी, वचन का सच्चा । **सत्यभाषण**–(सं० पुं०) सच बात कहना ।

सत्ययुग–(सं० पुं०) चार युगों में से पहिले युग का नाम । **सत्ययुगी**–(सं० वि०) सच्चरित्र, अति प्राचीन ।

सत्यवादी–(सं०वि०) यथार्थ वक्ता ।
सत्याग्रह–(सं० पुं०) किसी न्यायपूर्ण पक्ष के लिये निरन्तर शान्तिपूर्वक हठ करना ।
सत्यानास–(हिं०पुं०) सर्वनाश, ध्वंस ।
सत्यानासी–(हिं०वि०) नाश करनेवाला, अभागा ।
सत्यतर–(सं०वि०)सत्य से भिन्न, झूठा ।
सत्र–(सं० पुं०) यज्ञ, घर, वह स्थान जहाँ पर अनाथों को भोजन दिया जाता है ।
सत्व–(सं०पुं०) अस्तित्व, सत्ता, तत्व, चैतन्य, प्राण ।
सत्वर–(सं०अव्य०)शीघ्र, तुरन्त, झटपट ।
सत्संग–(सं०पुं०) साघु सज्जन के साथ उठना बैठना ।
सथिया–(हिं०पुं०)स्वस्तिक, एक मंगलसूचक चिह्न जो समकोण पर काटती हुई दो रेखाओं के रूप में वनता है ।
सद–(हिं०अव्य०स्त्री०) तुरत; (वि०) नवीन; (स्त्री०) प्रकृति, अभ्यास ।
सदई–(हिं०अव्य०) सर्वदा ।
सदन–(सं०पुं०) घर, स्थिरता ।
सदना–(हिं०क्रि०)छेद में से रसना, चूना ।
सदय–(सं०वि०) दयालु, दयायुक्त ।
सदसत्–(सं०वि०) सच और झूठ ।
सदस्य–(सं०पुं०) किसी सभा या समाज का सभासद् ।
सदा–(सं०अव्य०) सर्वदा, निरन्तर ।
सदाचरण–(सं०पुं०)अच्छा चाल-चलन ।
सदाचार–(सं०पुं०) भलमनसी । सदाचारी–(सं०पुं०)धर्मात्मा, पुण्यात्मा ।
सदातन–(सं०वि०) नित्य ।
सदानन्द–(सं०वि०) सर्वदा प्रसन्न रहनेवाला ।
सदाबरत–(हिं०पुं०) देखो सदावर्त ।
सदाबहार–(हिं०वि०) जो सर्वदा हरा बना रहे ।
सदाभव–(सं०वि०) सदा रहनेवाला ।
सदावर्त–(सं०पुं०) वह भोजन जो दीन दुखियों को प्रतिदिन बाँटा जाय ।
सदाशय–(सं०वि०) उच्च विचार का ।
सदाशिव–(सं०वि०) सर्वदा कल्याण करनेवाला ।
सदुपदेश–(सं०पुं०) उत्तम शिक्षा ।
सदृश–(सं०वि०) तुल्य, अनुरूप, समान ।
सदेह–(सं०क्रि०वि०) बिना शरीर त्यागे हुए ।
सदैव–(सं०अव्य०) सर्वदा ।
सदोष–(सं०वि०) दोषसहित, अपराधी ।
सद्गति–(सं०स्त्री०) उत्तम गति, मुक्ति, अच्छा व्यवहार ।
सद्गुण–(सं० पुं०) उत्तम गुण ।
सद्गुरु–(सं०पुं०) अच्छा गुरु, परमेश्वर ।
सद्ग्रन्थ–(सं०पुं०) अच्छा ग्रन्थ ।
सद्द–(हिं०पुं०) देखो शब्द; (अव्य०) सद्यः, तुरत ।
सद्भाव–(सं०पुं०) मैत्री, मेलजोल ।
सद्म–(सं०पुं०) पृथ्वी, घर ।
सद्यः–(सं०अव्य०) अभी, तुरत ।
सद्वंश–(सं०पुं०) उत्तम वंश ।
सद्विद्या–(सं०स्त्री०)ब्रह्मविद्या,ब्रह्मज्ञान ।
सधना–(हिं० क्रि०) सिद्ध होना, लक्ष्य ठीक होना ।
सधर्म–(सं०वि०) तुल्य, समान । सधर्मचारिणी–(सं०स्त्री०) भार्या । सधर्मा, सधर्मी–(सं०वि०) समान, तुल्य ।
सधवा–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सुहागिन ।
सन–(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध पौधे की छाल जिससे दृढ़ रस्सियाँ बनाई जाती हैं ।

सनई–(हिं०स्त्री०) सन का पौधा या बीज।
सनक–(हिं०स्त्री०) किसी बात की धुन, उन्माद। **सनकारना, सनकियाना**–(हिं० क्रि०) संकेत करना।
सनना–(हिं०क्रि०) जल के योग से किसी वस्तु के चूर्ण-कणों का परस्पर मिलना।
सननी–(हिं०स्त्री०) देखो सानी।
सनमान–(हिं०पुं०) सम्मान, प्रतिष्ठा।
सनमुख–(हिं०क्रि०वि०) देखो सन्मुख।
सनसनाना–(हिं०क्रि०) हवा के वेग से शब्द होना, खौलते हुए पानी का शब्द होना। **सनसनाहट**–(हिं०पुं०) वायु का शब्द। **सनसनी**–(हिं०स्त्री०) उद्वेग, खलबली।
सनसय–(हिं०पुं०) देखो संशय, सन्देह।
सनातन–(सं०पुं०) प्राचीन काल से आता हुआ क्रम; (वि०) परम्परागत।
सनातनी–(हिं०पुं०) सनातन धर्म का अनुयायी।
सनाथ–(सं०वि०) जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो।
सनाभ–(सं०पुं०) सहोदर भाई।
सनाम–(सं०वि०) एक नाम का।
सनाह–(हिं०पुं०) कवच।
सनित–(हिं०वि०) सना हुआ।
सनिद्र–(सं०वि०) निद्रायुक्त।
सनीचर–(हिं०पुं०) देखो शनैश्चर।
सनह–(हिं०पुं०) देखो स्नेह, प्रेम।
सनेही–(हिं०वि०) प्रेमी।
सन्त–(सं०पुं०) साधु, संन्यासी, महात्मा।
सन्तति–(सं०स्त्री०) सन्तान, बाल-बच्चे, विस्तार, फैलाव।
सन्तप्त–(सं०वि०) जला हुआ, दुःखी, पीड़ित।
सन्तान–(सं०पुं०) बाल-बच्चे, वंश, कुल।
सन्ताप–(सं०पुं०) जलन, कष्ट, दुःख।
सन्तापी–(सं०पुं०) दुःख या सन्ताप देनेवाला।
सन्तुष्ट–(सं०वि०) जिसकी तृप्ति हो गई हो।
सन्तोष–(सं०पुं०) शान्ति, तृप्ति, प्रसन्नता, हर्ष।
सन्तोषी–(सं०वि०) सन्तुष्ट।
सन्दर्भ–(सं०पुं०) प्रबन्ध, संग्रह, विस्तार, परम्परान्वित रचना।
सन्दिग्ध–(सं०वि०) सन्देहयुक्त।
सन्दिग्धार्थ–(सं०पुं०) वह अर्थ जिसमें सन्देह हो।
सन्दीपन–(सं० पुं०) उद्दीप्त करने की क्रिया। **सन्दीपित**–(सं०वि०) प्रज्वलित, जलाया हुआ।
सन्देश–(सं० पुं०) संवाद, समाचार, एक प्रकार की बँगला मिठाई।
सन्देसा–(हिं०पुं०) समाचार।
सन्देह–(सं०पुं०) संशय, द्विधाभाव।
सन्धान–(सं० पुं०) संघटन-अन्वेषण, खोज, सन्धि, मेल, धनुष पर बाण रखना।
सन्धि–(सं०पुं०) आपस का मिलना, एक राजा का दूसरे विपक्षी राजा के साथ विशेष नियम से आबद्ध होकर मिलना, शरीर की हड्डियों का जोड़, संयोग, व्याकरण में दो वर्णों के स्वरों का मिला हुआ रूप।
सन्धिभंग–(सं०पुं०) शरीर के किसी जोड़ का टूटना।
सन्धिवेला–(सं०स्त्री०) सन्ध्या का समय।
सन्ध्या–(सं०स्त्री०) दिन और रात के टिकने का समय, संझा। **सन्ध्याकाल**–(सं०पुं०) सन्ध्योपासन करने का समय।
सन्न–(सं०वि०) स्तम्भित, भौंचक।
सन्नद्ध–(सं०वि०) बँधा हुआ, कसा हुआ।

सन्नाटा–(हिं०पुं०) निःशब्दता, एकान्तता।
सन्निकट–(सं०अव्य०) समीप, पास।
सन्निकर्ष–(सं०पुं०) समीपता।
सन्निधान–(सं०वि०) निकटता, समीपता।
सन्निधि–(सं०स्त्री०) समीपता, निकटता।
सन्निपात–(सं०पुं०) समूह, संयोग, युद्ध, नाश, वात, पित्त, कफ का एक साथ बिगड़ना।
सन्निबद्ध–(सं०वि०) एक साथ जकड़ा हुआ।
सन्निमग्न–(सं०वि०) खूब डूबा हुआ।
सन्निविष्ट–(सं०वि०) उपस्थित, पास का, लगा हुआ, रक्खा हुआ, आया हुआ।
सन्निवेश–(सं० पुं०) व्यवस्था, योजना, समाज, समूह।
सन्निहित–(सं०वि०) समीप का, निकट का
सन्मान–(हिं०पुं०) देखो सम्मान।
सन्मुख–(हिं०अव्य०) देखो सम्मुख।
सन्यस्त–(सं०वि०) समर्पित।
संन्यास–(सं०पुं०) चतुर्थ आश्रम, संसार के प्रपंच से अलग होने की अवस्था, त्याग।
संन्यासी–(हिं०पुं०) जिसने संन्यास ग्रहण किया हो, वैरागी, त्यागी।
सपक्ष–(सं०वि०) तुल्य, समान, समर्थक, अनुकूल।
सपक्षता–(सं०स्त्री०) अनुकूलता।
सपत्नी–(सं०स्त्री०) पत्नी-सहित।
सपथ–(हिं०स्त्री०) सौगन्ध।
सपदि–(सं०अव्य०) तुरत, शीघ्र।
सपना–(हिं०पुं०) स्वप्न।
सपरना–(हिं०क्रि०) निबटना, तैयार होना।
सपराना–(हिं०क्रि०) काम पूरा करना।
सपरिकर–(सं०वि०) अनुचर वर्ग के साथ।
सपर्या–(सं०स्त्री०) आराधना, उपासना।
सपाट–(हिं०वि०) समतल, चिकना।
सपाटा–(हिं०पुं०) दौड़ने या चलने का वेग, झोंक, झपट।
सपाद–(सं०वि०) पादयुक्त, जिसमें एक का चौथाई मिला हो।
सपिण्ड–(सं०पुं०) सात पुरुष तक की ज्ञाति।
सपूत–(हिं०पुं०) अच्छा पुत्र।
सपूती–(हिं०स्त्री०) योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।
सपेद–(हिं०वि०) श्वेत।
सपेरा–(हिं०पुं०) देखो सँपेरा।
सपोला–(हिं०पुं०) साँप का छोटा बच्चा।
सप्त–(सं०वि०) वह जो गिनती में सात हो। **सप्तक**–(सं०वि०) सातवाँ, जिसमें सात की संख्या हो।
सप्तजिह्व–(सं०पुं०) अग्नि।
सप्तम–(सं०वि०) सातवाँ।
सप्तमी–(सं०स्त्री०) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की सातवीं तिथि।
सप्तर्षि–(सं०पुं०) ब्रह्मा के सात मानस पुत्र जो ऋषि थे।
सप्तशती–(सं०स्त्री०) सात सौ श्लोकों का देवी-माहात्म्य।
सप्ताह–(सं०पुं०) सात दिनों का काल।
सप्रभाव–(सं०वि०) तेजस्वी, पराक्रमी।
सप्रमाण–(सं०वि०) प्रामाणिक।
सफल–(सं०वि०) सार्थक, कृतकार्य।
सफलता–(सं०स्त्री०) पूर्णता, सिद्धि।
सफलीभूत–(सं०वि०) जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।
सफाचट–(हिं०वि०) एकदम स्वच्छ, उखाड़कर अलग किया हुआ, जो बिलकुल चिकना हो।
सब–(हिं०वि०) समस्त, जितने हों वे कुल, पूरा।
सबद–(हिं०पुं०) देखो शब्द।
सबल–(सं०वि०) बलवान्, सैन्ययुक्त।
सबेरा–(हिं०पुं०) प्रातःकाल।

सभर्तृका–(सं०स्त्री०) सधवा।
सभा–(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर बहुत से लोग बैठकर किसी बात पर परामर्श करते हैं, परिषद्, समिति। **सभापति**-(सं०पुं०) सभा या समाज का नेता।
सभासद-(सं०पुं०) वह जो किसी सभा में सम्मिलित हो।
सभ्य–(सं०पुं०) सभासद, सदस्य, वह जिसका आचरण अच्छा हो; (वि०) सभा संबंधी।
सभ्यता–(सं०स्त्री०) भलमनसी, सज्जनता।
सम–(सं०वि०) कुल, समान, तुल्य, बराबर, समतल, जूस संख्या; (पुं०) गणित में वह सीधी रेखा जो उस अंक पर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है।
समकोण–(सं० वि०) रेखागणित में वह आकृति जिसके आमने-सामने के कोण बराबर हों।
समक्ष–(सं०अव्य०) सम्मुख, सामने।
समग्र–(सं०वि०) सम्पूर्ण, पूरा।
समचतुष्कोण–(सं० पुं०) वह क्षेत्र जिसके चारों कोण समान हों।
समचर–(सं०वि०) समान आचरणवाला।
समचित–(सं० पुं०) वह जिसका चित्त सब अवस्था में समान रहता हो।
समजातीय–(सं०वि०) एक ही जाति का।
समञ्जस–(सं०वि०) उचित, ठीक।
समझ–(हिं०पुं०) ज्ञान, बुद्धि।
समझदार–(हिं०वि०) बुद्धिमान्।
समझना–(हिं०क्रि०) किसी बात को अच्छी तरह ध्यान में लाना। **समझाना**–(हिं०क्रि०) दूसरे को समझाने में प्रवृत्त करना। **समझौता**–(हिं० पु०) आपस का निबटारा।
समतल–(सं०वि०) जिसका तल बिलकुल बराबर हो।
समता–(सं०स्त्री०) बराबरी।
सम त्रिभुज–(सं०पुं०) वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज बराबर हों।
समद–(सं०वि०) अभिमानी।
सम द्विभुज–(सं०वि०) दो समान भुजवाला त्रिभुज।
समधियाना–(हिं०पुं०) समधी का घर।
समधी–(हिं०पुं०) पुत्र या कन्या का ससुर।
समन्त–(सं०पुं०) सीमा, प्रान्त, किनारा।
समन्वय–(सं०पुं०) संयोग, मिलाप।
समन्वित–(सं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ।
सम भाग–(सं०पुं०) समान भाग।
समय–(सं०पुं०) काल, अवसर, अवकाश, अन्तिम काल।
समया–(सं०स्त्री०) निकट, समीप, पास।
समर–(सं० पुं०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।
समरजित–(सं०पुं०) युद्ध में जीतनेवाला।
समरथ–(हिं०वि०) देखो समर्थ।
समरपोत–(सं०पुं०) लड़ाई का जहाज।
समरभू, समरभूमि–(सं०स्त्री०) लड़ाई का मैदान।
समरांगण–(सं०पुं०) युद्धस्थल, समरभूमि।
समर्घ–(सं०वि०) कम मूल्य का, सस्ता।
समर्थ–(सं०वि०) बलवान्, योग्य, अनुकूल। **समर्थक**–(सं०पुं०) समर्थन करनेवाला। **समर्थन**–(सं०पुं०) किसी मत का पोषण, विवेचन।
समर्थनीय–(सं०वि०) समर्थन करने योग्य। **समर्थित**–(सं० वि०) स्थिर किया हुआ।
समर्पक–(सं०वि०) समर्पण करनेवाला।
समर्पण–(सं०पुं०) किसी को कोई वस्तु आदरपूर्वक भेंट करना।

सर्मपित–(सं०वि०) समर्पण किया हुआ।
समवृत्त–(सं०वि०) समान गोल, समान गोलाई का।
समवेक्षण–(सं०पुं०) भली भाँति देखना।
समवेदना–(हिं०स्त्री०) सहानुभूति।
समशीतोष्ण कटिबन्ध–(सं० पुं०) पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबन्ध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक पड़ते हैं—इन स्थानों में न तो बहुत सरदी पड़ती है और न बहुत गरमी।
समष्टि–(सं०स्त्री०) सबका समूह।
समसंख्यात–(सं०वि०) समान अंकवाला।
समस्त–(सं०वि०) समग्र, कुल।
समस्या–(सं०स्त्री०) किसी श्लोक या छन्द आदि का वह अन्तिम पद जो श्लोक या छन्द बनाने के लिए किसी को दिया जाता है जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छन्द बनाया जाता है, संघटन, मिश्रण।
समाई–(हिं०स्त्री०) शक्ति।
समाक्रान्त–(सं०वि०) व्याप्त, फैला हुआ।
समागत–(सं०वि०) उपस्थित, मिलित।
समागम–(सं०पुं०) आगमन, भेंट।
समागमन–(सं०पुं०) आना, पहुँचना।
समाघात–(हिं०पुं०) युद्ध, लड़ाई।
समाचार–(सं०पुं०) संवाद।
समाचारपत्र–(सं०पुं०) समाचार का पत्र।
समाज–(सं०पुं०) संघ, सभा, समुदाय। **समाजवाद**–साम्यवाद।
समाधान–(सं०पुं०) चित्त को एकाग्र करके ब्रह्म की ओर लगाना, किसी प्रश्न का सन्तोषकारक उत्तर, निष्पत्ति, निबटारा, समर्थन।
समाधि–(सं०पुं०) समर्थन, नियम, योग, ध्यान, एकाग्रता।
समाधिक्षेत्र–(सं०पुं०) कब्रिस्तान।
समान–(सं०वि०) सम, तुल्य, बराबर, गर्वसहित, शरीरस्थ, वायु विशेष।
समानतः–(सं०अव्य०) समान भाव में।
समानता–(सं०स्त्री०) तुल्यत्व।
समाना–(हिं०क्रि०) भरना, अँटना।
समानाधिकरण–(सं०पुं०) व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है।
समानार्थ–(सं०वि०) तुल्य अर्थवाला।
समानीत–(सं०वि०) आदर या यत्नपूर्वक लाया हुआ।
समानोदक–(सं०पुं०) जिसकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों।
समान्तक–(सं०पुं०) दो सरल रेखा जो बहुत दूर तक जाकर भी एक दूसरे से न मिलें।
समापक–(सं०वि०) समाप्त करनेवाला।
समापिका–(सं०स्त्री०) व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त होना सूचित होता है।
समापित–(सं०वि०) समाप्त किया हुआ।
समाप्त–(सं०वि०) जिसका अन्त हो गया हो। **समाप्ति**–(सं०स्त्री०) अवसान, अन्त।
समारम्भ–(सं०पुं०) आरम्भ।
समारोह–(सं०पुं०) धूमधाम, आडम्बर, आरोहण होना।
समालोचक–(सं०वि०) किसी वस्तु के गुण-दोष को देखकर बतलानेवाला। **समालोचन**–(सं० पुं०) गुण-दोष की अच्छी तरह से आलोचना। **समालोचना**–(सं० स्त्री०) गुण-दोष की विवेचना, आलोचना। **समालोची**–(सं०वि०) समालोचना करनेवाला।

समावर्तन–(सं० पुं०) वेदाध्ययन के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का कार्य।
समावेश–(सं०पुं०) एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अन्तर्गत होना।
समाश्रय–(सं०पुं०) अवलम्बन, रक्षा।
समाश्वासन–(सं० पुं०) आश्वासन, धीरज। **समास**–(सं०पुं०) संग्रह, संक्षेप, समर्थन, व्याकरण में दो या अधिक पदों को मिलाकर एक पद बनाना।
समासादित–(सं० वि०) प्राप्त, पाया हुआ, लाया हुआ, उद्धृत, लिखा हुआ।
समासीन–(हिं०वि०) प्रतिष्ठित।
समासोक्त–(सं०वि०) संक्षेप रूप से कहा हुआ।
समाहत–(सं०वि०) आहत।
समाहार–(सं०पुं०) संग्रह, मिलान, समास का एक भेद। **समाहार द्वन्द्व**–(सं०पुं०) द्वन्द्व समास का वह भेद जिसमें उसके पदों के अर्थ के सिवाय कोई विशेष अर्थ भी सूचित होता है, जसे दाल रोटी, हाथ पाँव इत्यादि।
समाहृत–(सं०वि०) संग्रह किया हुआ।
समिता–(सं०वि०) प्रदीप्त, जला हुआ।
समिति–(सं०स्त्री०) सभा, समाज।
समिधा–(हिं०स्त्री०) अग्नि जलाने का काठ, इन्धन, यज्ञ में जलाने की लकड़ी।
समीकरण–(सं० पुं०) तुल्य या बराबर करने की क्रिया, गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से किसी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।
समीकृत–(स०वि०) बराबर किया हुआ।
समीक्ष, समीक्षण–(सं० पुं०) अच्छी तरह देखने की क्रिया, अन्वेषण।
समीक्षा–(सं०स्त्री०) यत्न, अच्छी तरह से देखने की क्रिया।
समीचीन–(सं०वि०) यथार्थ, ठीक, उचित।
समीप–(सं०त्रि०) निकट, पास।
समीपग–(सं०वि०) जो समीप हो गया हो।
समीपता–(सं०स्त्री०) निकटता।
समीपवर्ती–(सं० वि०) निकटगामी, पास का। **समीपस्थ**–(सं०वि०) पास के।
समीर–(सं०पुं०) वायु, हवा।
समीरण–(सं०पुं०) वायु, हवा, पथिक।
समुंदर–(हिं०पुं०) समुद्र।
समुचय–(सं०पुं०) समाहार, समूह।
समुचित–(सं०वि०) उचित, योग्य, ठीक।
समुझ–(हिं०स्त्री०) बुद्धि।
समुत्कीर्ण–(सं०वि०) विदीर्ण, टूटा हुआ।
समुत्तर–(सं०पुं०) ठीक उत्तर।
समुत्थान–(सं०पुं०) आरंभ, उदय, उत्पत्ति। **समुत्थित**–(सं०वि०) अच्छी तरह उठा हुआ।
समुत्पन्न–(सं०वि०) घटित, उत्पन्न।
समुत्पाटित–(सं०वि०) जड़ से उखाड़ा हुआ
समुदाय–(सं०पुं०) समूह, ढेर, झुंड।
समुदाव–(हिं०पुं०) समुदाय।
समुदित–(सं०वि०) उठा हुआ, उन्नत।
समुदीरित–(सं०वि०) उच्चारण किया हुआ।
समुद्धत–(हिं०वि०) चंचल।
समुद्यत–(हिं०वि०) प्रस्तुत।
समुद्र–(सं०पुं०) जल का बड़ा समूह, अम्बुधि, सागर।
समुन्नत–(सं०वि०) अति उन्नत, बहुत ऊँचा। **समुन्नति**–(सं०स्त्री०) महत्त्व, बड़ाई।
समुन्नद्ध–(सं०वि०) गर्वित, अभिमानी।
समुन्नयन–(सं० पुं०) लाभ, प्राप्ति।
समुन्मूलन–(सं०पुं०) पूर्ण रूप से नाश।
समुपालम्भ–(सं०पुं०) तिरस्कार।

समुल्लसित–(सं०वि०) आनन्दित।
समुल्लास–(सं०पुं०) आनन्द, प्रसन्नता, ग्रन्थ का प्रकरण या परिच्छेद।
समुल्लेखन–(सं०पुं०) खनना, खोदना, छीलना।
समुहा–(हिं०वि०) सामने का।
समुहाना–(हिं०क्रि०)सामने आ जाना।
समूल–(सं०पुं०) मूलयुक्त, जड़वाला, जिसका कोई हेतु हो; (क्रि०वि०) मूल-सहित।
समूह–(सं०पुं०) समुदाय, ढेर।
समृद्ध–(सं०वि०)जिसके पास अधिक हो।
समृद्धि–(सं०स्त्री०) ऐश्वर्य, उन्नति, सम्पत्ति।
समेटना–(हिं० क्रि०) बिखरी हुई वस्तु को इकट्ठा करना।
समेत–(सं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ; (अव्य०) सहित, साथ।
समोरिया–(हिं०वि०) समवयस्क।
समोह–(सं०पुं०) संग्राम, युद्ध; (वि०) मोहयुक्त।
सम्पत्ति–(सं०स्त्री०) ऐश्वर्य, धन।
सम्पद्–(सं०स्त्री०) सम्पत्ति, ऐश्वर्य, विभव।
सम्पदा–(हिं०स्त्री०) धन, ऐश्वर्य।
सम्पन्न–(सं०वि०)साधित,पूरा किया हुआ।
सम्पर्क–(सं०पुं०) मिश्रण, संयोग, मिलाप, संसर्ग।
सम्पात–(सं०पुं०) प्रवेश, संगम।
सम्पादक–(सं०पुं०) किसी काम को पूरा करनेवाला, किसी समाचार-पत्र या पुस्तक को क्रम से लिखनेवाला। **सम्पादकीय**–(सं०वि०) सम्पादक संबंधी।
सम्पादन–(सं० पुं०)ठीक करना, पुस्तक आदि को प्रकाशित करना। **सम्पादनीय**–(सं०वि०)सम्पादन करने योग्य।
सम्पादित–(सं० वि०) प्रस्तुत, क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ।
सम्पाद्य–(सं०क्रि०) सम्पादन करने योग्य, ज्यामिति शास्त्र की उद्देश्य साधक प्रतिज्ञा।
सम्पुट–(सं०पुं०) दोना, डिब्बा, अंजलि।
सम्पूर्ण–(सं०वि०) पूर्ण रूप से युक्त।
सम्पूर्णता–(सं०स्त्री०) समाप्ति।
सम्प्रति–(सं०अव्य०) इस समय, अभी।
सम्प्रदान–(सं० पुं०) देने की क्रिया या भाव, भेंट, व्याकरण में चतुर्थी विभक्ति जिसका हिन्दी में चिह्न 'को' 'के लिये' होता है।
सम्प्रदाय–(सं०पुं०) कोई विशेष धर्म संबंधी मत, मार्ग, पंथ, रीति।
सम्प्रदायी–(हिं०वि०) मतावलम्बी।
सम्प्राप्त–(सं० वि०) पाया हुआ। उपस्थित, पहुँचा हुआ।
सम्बद्ध–(सं०वि०)बँधा हुआ, जुटा हुआ,
सम्बन्ध–(सं०पुं०) संसर्ग, संपर्क, लगाव, नाता, संयोग, मेल, योग्यता, व्याकरण में वह कारक जिसके चिह्न 'का की के'हैं।
सम्बन्धी–(सं०पुं०) नातेदार।
सम्बुद्ध–(सं०वि०) ज्ञान प्राप्त, पूर्ण रूप से जाना हुआ।
सम्बोध–(सं०पुं०) ज्ञान, पूरा बोध।
सम्बोधन–(सं०पुं०) नींद से उठाना, जगाना, समझाना, व्याकरण में वह कारक जो किसी को पुकारने के लिये प्रयोग किया जाता है। व्याकरण में वह कारक जिससे युक्त शब्द का किसी को पुकारने के लिये प्रयोग किया जाता है।
सम्भव–(सं०पुं०) हेतु, कारण, जन्म, उत्पत्ति, प्रसंग, संभावना, संकेत।
सम्भवतः–(सं० अव्य०) हो सकता है।
सम्भवनीय–(सं०वि०) जो हो सकता

हो। **सम्भावनीय**–(सं०वि०) कल्पना के योग्य। **सम्भावित**–(सं०वि०) मन में लाया या उपस्थित किया हुआ।

सम्भाषण–(सं० पुं०) बातचीत।

सम्भाषणीय–(सं०वि०) संभाषण करने योग्य।

सम्भूत–(सं०वि०) उत्पन्न।

सम्भूति–(सं०स्त्री०) क्षमता, शक्ति।

सम्भृत–(सं०वि०) हृष्ट-पुष्ट, पाया हुआ।

सम्भोग–(सं०पुं०) किसी वस्तु का भली भाँति उपयोग।

सम्भोजन–(सं० पुं०) एक साथ बैठकर भोजन।

सम्भ्रम–(सं०पुं०) व्याकुलता, भ्रान्ति, भूल, आतुरता, उत्कण्ठा।

सम्भ्रान्त–(सं०वि०) उद्विग्न, घबड़ाया हुआ, चक्कर दिया हुआ। **सम्भ्रान्ति**–(सं०स्त्री०) उद्वेग, घबड़ाहट।

सम्मत–(सं०वि०) अभिमत, जिसकी राय मिली हो।

सम्मति–(सं०स्त्री०) इच्छा, अनुमति, आज्ञा, आदेश।

सम्मान–(सं०पुं०) प्रतिष्ठा, मान। **सम्मानना**–(हिं० क्रि०) आदर-सत्कार करना। **सम्माननीय**–(सं० वि०) आदर के योग्य। **सम्मानित**–(सं०वि०) आदर किया हुआ।

सम्मार्जिनी–(सं०स्त्री०) झाड़ू, बुहारी।

सम्मिलन–(सं० पुं०) मिलन, मिलाप।

सम्मिलित–(सं०वि०) युक्त, मिला हुआ।

सम्मिश्रण–(सं०पुं०) मिलावट।

सम्मुख–(सं०वि०) आगे, सामने।

सम्मेलन–(सं०पुं०) मनुष्यों का एकत्रित समाज, जमघट, मेल।

सम्मोह–(सं०पुं०) भ्रम, सन्देह, मूर्छा।

सम्मोहक–(सं०वि०) लुभानेवाला।

सम्मोहन–(सं०पुं०) मोहित करने की क्रिया।

सम्यक्ज्ञान–(सं०पुं०) पूरा ज्ञान।

सम्राट्–(सं०पुं०) राजाधिराज।

सयत्न–(सं०वि०) यत्न-सहित।

सयानपन–(हिं०पुं०) चतुराई, दक्षता।

सयाना–(हिं०वि०) अधिक वय का, बुद्धिमान्, धूर्त।

सर–(सं०पुं०) सरोवर, तालाब।

सरई–(हिं०स्त्री०) सरहरी।

सरकंडा–(हिं०पुं०) सरपत का डंठल।

सरक–(हिं०पुं०) सरकने की क्रिया; (वि०) गतियुक्त। **सरकना**–(हिं० क्रि०) खिसकना, निर्वाह होना, किसी ओर बढ़ना।

सरग–(सं०पुं०) देखो स्वर्ग।

सरगम–(हिं० पुं०) स्वर-ग्राम, संगीत, सातों स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम।

सरजना–(हिं० क्रि०) सृष्टि करना, बनाना।

सरजीवन–(हिं० वि०) जिलानेवाला।

सरण–(सं०पुं०) गमन, आगे बढ़ना।

सरणि-सरणी–(सं०स्त्री०) पंक्ति, पगडंडी, लकीर।

सरताज–(हिं०पुं०) श्रेष्ठ व्यक्ति।

सरधर–(हिं०पुं०) तरकस, तूणीर।

सरन–(हिं०स्त्री०) देखो शरण।

सरनी–(हिं०स्त्री०) मार्ग।

सरन्ध्र–(सं०वि०) छिद्र-सहित, छेददार।

सरपट–(हिं०वि०) घोड़े की बहुत वेग से चलने की चाल या दौड़।

सरपत–(हिं०पुं०) कुश की तरह की एक घास।

सरबंधी–(हिं०पुं०) धनुर्धारी, देखो सम्बन्धी।

सरब–(हिं०वि०) देखो सर्व।

सरबत्तर–देखो सर्वत्र ।
सरबदा–देखो सर्वदा ।
सरबस–(हिं०पुं०) देखो सर्वस्व ।
सरराना–(हिं०क्रि०) हवा बहने या हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द ।
सरल–(सं०वि०) सीधा, सहज, कपट-रहित ।
सरलता–(सं०स्त्री०) सिधाई, सीधापन, सुगमता । **सरलित**–(सं०वि०) सीधा किया हुआ ।
सरवर–(हिं०पुं०) देखो सरोवर, तालाब ।
सरवरि–(हिं०स्त्री०) बराबरी, सादृश्य ।
सरवाक–(हिं०पुं०) दीया, कसोरा ।
सरिवान–(हिं०पुं०) तंबू ।
सरस–(सं० वि०) रसयुक्त, रसीला, स्वादिष्ठ, मधुर, नया, मनोहर, सुन्दर ।
सरसई–(हिं०स्त्री०) हरापन, सरसता ।
सरसठ–(हिं०पुं०) देखो सड़सठ ।
सरसता–(सं०स्त्री०) रसयुक्तता ।
सरसना–(हिं०क्रि०) बढ़ना, पनपना ।
सरसर–(हिं०पुं०) भूमि पर रेंगने का शब्द । **सरसराना**–(हिं०क्रि०) वायु वेग से चलना । **सरसराहट**–(हिं०स्त्री०) साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न शब्द, वायु के बहने का शब्द, खुजली ।
सरसाई–(हिं०स्त्री०) सरसता, अधिकता । **सरसाना**–(हिं०क्रि०) रसपूर्ण करना, हरा-भरा करना ।
सरसिज–(सं०पुं०) पद्म, कमल ।
सरसेटना–(हिं०क्रि०) भला-बुरा कहना ।
सरसों–(हिं०स्त्री०) सर्षप, एक धान्य जिसके छोटे गोल बीजों से तेल निकाला जाता है ।
सरसौंहां–(हिं०वि०) सरस बनाया हुआ ।
सरहज–(हिं०स्त्री०) साले की स्त्री ।
सरहदा–(हिं०वि०) सीधा, फिसलनेवाला ।
सरहरी–(हिं०स्त्री०) सरपत की जाति का एक पौधा ।
सराई–(हिं०स्त्री०) शलाका, सलाई ।
सराध–(हिं०पुं०) देखो श्राद्ध ।
सराना–(हिं०क्रि०) किसी काम को पूरा करना ।
सराप–(हिं०पुं०) देखो शाप ।
सरापना–(हिं०क्रि०) शाप देना ।
सराफ–(हिं०पुं०) रुपये-पैसे या सोने चाँदी का लेन-देन करनेवाला महाजन । **सराफा**–(हिं०पुं०) सराफों की हाट ।
सराबोर–(हिं०वि०) भींगा हुआ ।
सराव–(सं०पुं०) पीने का पात्र, कसोरा ।
सराह–(हिं०स्त्री०) श्लाघा, प्रशंसा । **सराहना**–(हिं०क्रि०) प्रशंसा करना । **सराहनीय**–(हिं०वि०) प्रशंसा करने योग्य ।
सरि–(हिं०स्त्री०) सरिता, नदी, समता; (वि०) सदृश, समान ।
सरित, सरिता–(सं०स्त्री०) जल की धारा, नदी ।
सरित्पति–(सं०पुं०) समुद्र ।
सरियाना–(हिं० क्रि०) बिखरी हुई वस्तुओं को ढंग से समेटना ।
सरिल–(सं०पुं०) देखो सलिल, जल ।
सरिवरि–(हिं०स्त्री) समता, बराबरी ।
सरिस–(हिं०वि०) देखो सदृश, समान ।
सरिसता–(हिं०स्त्री०) भाग ।
सरीखा–(हिं०वि०) तुल्य, सदृश, समान ।
सरीफा–(हिं०पुं०) सीताफल ।
सरीर–(हिं०पुं०) देखो शरीर, देह ।
सरीसृप–(सं०पुं०) साँप ।
सरुज्–(सं०वि०) रोगयुक्त, रोगी ।
सरुष–(सं०वि०) क्रोधयुक्त, कुपित ।
सरूप–(सं०वि०) सदृश, समान आकार-

वाला। **सरूपता**–(सं०स्त्री०) समानता; (हिं०पुं०) देखो स्वरूप।
सरूहना–(हिं०क्रि०) अच्छा होना।
सरेख–(हिं०वि०) बुद्धिमान्, श्रेष्ठ।
सरेखना–(हिं०क्रि०) देखो सहेजना।
सरेफ–(सं०वि०) रेफयुक्त।
सरो–(हिं०पु०) एक सीधा वृक्ष जो बगीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है; बनझाऊ।
सरोग–(सं०वि०) रोगयुक्त, रोगी।
सरोज–(सं०पुं०) पद्म, कमल।
सरोजिनी–(सं०स्त्री०) पद्म, कमल।
सरोरुह–(सं०पुं०) पद्म, कमल।
सरोवर–(सं०पुं०) तालाब, झील।
सरोष–(सं०वि०) रोषयुक्त, कुपित।
सरौता–(हिं०पुं०) सँड़सी के आकार का सुपारी काटने का एक यंत्र।
सर्ग–(सं०पुं०) आज्ञा, प्रकृति, स्वभाव, परिच्छेद, उत्साह, मूर्छा, परित्याग प्रयत्न, गति, सन्तति।
सर्जन–(सं०पुं०) विसर्जन, त्याग।
सर्प–(सं०पुं०) साँप। **सर्पगति**–(सं० स्त्री०) कुटिल गति। **सर्पिणी**–(सं० स्त्री०) साँपिनी।
सर्पिस–(सं०पुं०) हवि, घृत।
सर्पी–(हिं०वि०) धीरे-धीरे चलनेवाला
सर्व–(सं०पुं०) शिव, महादेव; (सं० वि०) सम्पूर्ण, समग्र, सब।
सर्व–(सं०अव्य०) सब जगह, हर एक स्थान में। **सर्वगामी**–(सं० वि०) व्यापक।
सर्वस–(हिं०वि०) देखो सर्वस्व।
सर्वसह–(सं०वि०) सब प्रकार का क्लेश हरनेवाला।
सर्वहर–(सं०वि०) सब कुछ हरण करनेवाला।
सर्वगत–(सं०वि०)सर्वव्यापी।
सर्वग्रास–वह ग्रहण जिसमें सूर्य, चन्द्र का संपूर्ण मण्डल छिप जाता है।
सर्वजन–(सं०पुं०) सब लोग। **सर्वजनता**–(सं०स्त्री०) सामान्य लोग। **सर्वजनप्रिय**–(सं०वि०) सबका प्रिय। **सर्वजनीन**–(सं०वि०) सर्वजन संबंधी। **सर्वजित्**–(सं०पुं०) काल, मृत्यु।
सर्वज्ञ–(सं०पुं०) शिव, विष्णु, सब कुछ जाननेवाला, ईश्वर, देवता। **सर्वज्ञानी**–(सं०पुं०) सब कुछ जाननेवाला।
सर्वतन्त्र–(सं०वि०) जिसको सब शास्त्र मालूम हों।
सर्वत्र–(सं०अव्य०) सब ओर, चारों ओर, पूर्ण रूप से।
सर्वतोमुख–(सं०पुं०) जल; आकाश; (वि०) जिसका रुख चारों ओर व्यापक हो।
सर्वथा–(सं०अव्य०) सब प्रकार से।
सर्वदर्शी–(सं०पुं०) सब कुछ देखने वाला, परमेश्वर।
सर्वदा–(सं०अव्य०) सब काल में।
सर्वनाम–(सं०पुं०) सबका नाम या व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयोग किया जाता है–यथा मैं, तू, वह।
सर्वनाश–(सं०पु०) सत्यानास।
सर्वनाशी–(सं०वि०) सब का नाश करनेवाला।
सर्वनिधन–(सं०पुं०) सबका नाश या वध। **सर्वनियन्ता**–(सं०वि०) सबको वश में करनेवाला।
सर्वप्रद–(सं०वि०) सब कुछ देनेवाला।
सर्वप्रिय–(सं०वि०) सबका प्यारा।
सर्वभक्ष, सर्वभक्षी–(सं०वि०) सब कुछ खानेवाला। **सर्वभूतहित**–(सं०पुं०) सब

प्राणियों की भलाई। **सर्वभोगी**–(हिं० वि०) सबका आनन्द लेनेवाला, सब कुछ खानेवाला। **सर्वमंगला**–(सं० स्त्री०) सब प्रकार का मंगल करनेवाली, दुर्गा, लक्ष्मी।
सर्वरी–(सं०स्त्री०) शर्वरी, रात्रि।
सर्वलिङ्गी–(हिं० वि०) आडम्बरी, पाखण्डी।
सर्ववित्–(सं०पुं०) परब्रह्म, परमेश्वर, ओंकार; **सर्वविद्य**–(सं०वि०) सब विषय में विद्वान्। **सर्वव्यापी**–(सं० वि०) सब में रहनेवाला। **सर्वशक्तिमान्**– जिसमें सब कुछ करने का सामर्थ्य हो।
सर्वशः–(सं०अव्य०) पूर्ण रूप से।
सर्वश्रेष्ठ–(सं०वि०) सबसे उत्तम।
सर्वस–(हि०वि०) देखो सर्वस्व।
सर्वसह–(सं०वि०) सब कुछ सहनेवाला।
सर्वसाधारण–(सं०वि०) सामान्य, जो सब में पाया जावे; (पुं०) साधारण लोग, जनता।
सर्वस्व–(सं०पुं०) सम्पूर्ण सम्पत्ति, सब कुछ, कुल।
सर्वहर–(सं०पुं०) सब कुछ हरनेवाला, यमराज।
सर्वाङ्ग–(सं०पुं०) सम्पूर्ण शरीर, सब अवयव।
सर्वाधिकार–(सं०पुं०) पूर्ण प्रभुत्व। **सर्वाधिकारी**–(सं०पुं०) पूरा अधिकार रखनेवाला। **सर्वाधिपत्य**–(सं० पुं०) सबके ऊपर प्रभुत्व।
सर्वानन्द–(सं० वि०) जिसको सभी विषय में आनन्द हो।
सर्वार्थ–(सं०पुं०) सकल प्रयोजन।
सर्वेश, सर्वेश्वर–(सं०पुं०) सबका स्वामी, ईश्वर, चक्रवर्ती राजा।
सर्वोत्तम–(सं०वि०) सर्वश्रेष्ठ।
सर्षप–(सं०पुं०) सरसों, सरसों भर का परिमाण।
सर्सों–(हिं०स्त्री०) देखो सरसों।
सलई–(हिं०स्त्री०) चीड़ का पेड़।
सलक्षण–(सं०वि०) लक्षणयुक्त।
सलज–(हिं०वि०) समूचा, पूरा।
सलज्ज–(सं०वि०) जिसको लज्जा हो।
सलना–(हिं०क्रि०) छिदना, साला जाना।
सलसलाना–(हिं०क्रि०) सरसराना, खुजलाना, गुदगुदी होना, तर होना।
सलसलाहट–(हिं० स्त्री०) खुजली, गुदगुदी। **सलाई**–(हिं० स्त्री०) धातु की बनी हुई पतली छोटी छड़ी, दियासलाई, सलाने की क्रिया या भाव।
सलिल–(सं०पुं०) जल, पानी।
सलीता–(हिं०पुं०) गज्जी की तरह का मोटा कपड़ा।
सलीपर–(हिं० पुं०) बिना एड़ी की जूती, रेल की पटरियों के नीचे बिछाने का लकड़ी का पटरा।
सलूक–(हिं०पुं०) एक प्रकार की जनानी साड़ी।
सलोतर, सलोतरी–(हिं० पुं०) घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला, शालिहोत्री।
सलोना–(हिं० वि०) नमकीन, रसीला, सुन्दर।
सलोनी–(हिं०पुं०) रक्षाबन्धन।
सल्लकी–(सं० स्त्री०) सलई का वृक्ष।
सवत–(हिं०स्त्री०) देखो सौत।
सवत्स–(सं०वि०) जिसके साथ बच्चा हो।
सवन–(सं०पुं०) यज्ञस्थान, प्रसव।
सवर्ण–(सं०वि०) सदृश, समान, समान वर्ण या जाति का।
सवा–(हिं० स्त्री० वि०) सम्पूर्ण और एक का चतुर्थांश, चौथाई सहित। **सवाई**–(हिं०स्त्री०) एक और चौथाई, सवा।

सवाँग–(हिं०पुं०) देखो स्वाँग।
सवाद–(हिं०पुं०) देखो स्वाद।
सवादिक–(हिं०वि०) स्वाद लेनेवाला।
सविता–(सं०पुं०) दिवाकर, सूर्य।
सवित्री–(सं० स्त्री०) प्रसव करनेवाली।
सविनय–(सं० वि०) विनयसहित। **सविनय-अवज्ञा**–राज्य की किसी आज्ञा को न मानना तथा शान्ति रखना।
सवेरा–(हिं०पुं०) सूर्योदय का समय।
सवैया–(हिं०पुं०) सवा सेर का बाँट, वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या का सवाया रहता है।
सव्य–(सं०वि०) वाम, बायाँ, प्रतिकूल।
सव्रत–(सं०वि०) नियमयुक्त।
सशंक–(सं०वि०) शंकायुक्त, भयभीत।
सशब्द–(सं०वि०) शब्दयुक्त।
सशरीर–(वि०) शरीरधारी।
ससक–(हिं०पुं०) शशक, खरहा।
ससत्वा–(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।
ससरना–(हिं०क्रि०) सरकना, घिसकना।
ससि–(हिं०पुं०) शशि, चन्द्रमा।
ससी–(हिं०स्त्री०) देखो शची।
ससुर–(हिं०पुं०) पति या पत्नी का पिता, श्वसुर। **ससुरा**–(हिं० पुं०) श्वसुर, एक प्रकार की गाली।
ससुराल–(हिं० स्त्री०) पति या पत्नी के पिता का घर।
सस्ता–(हिं०वि०) कम मूल्य का, जो महँगा न हो, साधारण, घटिया। **सस्ताना**–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु का दाम कम होना। **सस्ती**–(हिं०स्त्री०) सस्ता होने का भाव, सस्तापन।
सस्त्रीक–(सं०वि०) सपत्नीक। **सस्नेह**–(सं०वि०) प्रीतियुक्त।
सस्य–(सं०पुं०) धान्य।
सस्वर–(सं०वि०) स्वरसहित, स्वरयुक्त।
सह–(सं०अव्य०) सहित, समेत; (वि०) विद्यमान, उपस्थित, सहनशील; (पुं०) समानता, बराबरी। **सहकार**–(सं० पुं०) सहायक। **सहकारिता**–(सं० स्त्री०) सहायता। **सहकारी**–(सं० पुं०) सहायक।
सहगमन–(सं० पुं०) सती होना। **सहगामी**–(सं०पुं०) साथी, अनुयायी। **सहगामिनी**–(सं०स्त्री०) सहचरी, पत्नी।
सहचर–(सं० पुं०) भृत्य, दास, मित्र। **सहचरी**–(सं० स्त्री०) पत्नी, भार्या, सखी।
सहज–(सं० पुं०) सगा भाई, स्वभाव; (वि०) स्वाभाविक, साधारण, सरल, सुगम, साथ उत्पन्न होनेवाला।
सहजन्म–(सं० वि०) सहोदर, सगा, जुड़वाँ।
सहजात–(सं०वि०) सहोदर, यमज।
सहजीवी–(हिं०वि०) एक साथ जीवन धारण करनेवाले।
सहत–(हिं०पुं०) देखो शहद।
सहतूत–(हिं०पुं०) देखो शहतूत।
सहताना–(हिं०क्रि०) सुस्ताना।
सहधर्मचरी–(सं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
सहधर्मिनी–(हिं०स्त्री०) पत्नी।
सहन–(सं० पुं०) क्षान्ति, क्षमा।
सहनशील–(सं०वि०) सन्तोषी।
सहनशीलता–(सं०स्त्री०) सन्तोष।
सहना–(हिं०क्रि०) झलना, भोगना।
सहनीय–(सं०वि०) सहन करने योग्य।
सहपाठ–(सं०स्त्री०) एक साथ पढ़ना।
सहपाठी–(सं० वि०) जो साथ में पढ़ा हो। **सहपान**–(सं० पुं०) एक साथ मदिरा पीना। **सहभक्ष**–(सं० पुं०) साथ भोजन करना। **सहभोज, सह-भोजन**–(हिं० पुं०) एक साथ बैठकर

भोजन करना। **सहभोजी**–(हिं०वि०) साथ बैठकर भोजन करनेवाले। **सहमत**–(सं०वि०) जिसका मत दूसरे से मिलता हो। **सहमना**–(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना। **सहमरण**–(सं० पुं०) सती होना।

सहमान–(सं०वि०) मर्यादा या मान के साथ।

सहमल–(सं०वि०) समूल, मूलयुक्त।

सहयोग–(सं० पुं०) साथ मिलकर काम करने का भाव, आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से मिलकर काम करने का सिद्धान्त। **सहयोगी**–(सं० पुं०) सहायक, साथ में काम करनेवाला।

सहराना–(हिं०क्रि०) डर के मारे काँपना।

सहर्ष–(सं०वि०) हर्षयुक्त, हर्ष-सहित।

सहलाना–(हिं० क्रि०) सुहराना, मलना।

सहवास–(सं०पुं०) मैथुन।

सहस–(हिं०वि०) सहस्र, सौ।

सहसा–(सं०अव्य०) एकाएक, अचानक, अकस्मात्।

सहस्र–(सं०पुं०) दस सौ अथवा एक हजार की संख्या। **सहस्रगुणित**–(सं०वि०) हजार से गुणा किया हुआ।

सहस्रधा–(सं०अव्य०) हजारों प्रकार से। **सहस्रधी**–(सं०वि०) बड़ा चतुर।

सहस्रशः–(सं०अव्य०) हजार बार।

सहस्रशीर्ष–(सं०पुं०) विष्णु।

सहाइ, सहाय–(हिं० वि०) सहायक; (स्त्री०) सहायता।

सहादर–(सं०अव्य०) आदर के साथ।

सहाध्ययन–(सं०पुं०) एक साथ पढ़ना।

सहाध्यायी–(सं०पुं०) सहपाठी।

सहानुभूति–(सं०स्त्री०) किसी के कष्ट को देखकर स्वयं दुःखी होना।

सहाय–(सं०पुं०) सहायता, आश्रय।

सहायक–(सं०वि०) सहायता करनेवाला।

सहायता–(सं०स्त्री०) आर्थिक अथवा शारीरिक साहाय्य।

सहायी–(सं०वि०) सहायता देनेवाला।

सहार–(हिं०पुं०) सहनशीलता।

सहारना–(हिं०क्रि०) सहन करना।

सहारा–(हिं०पुं०) सहायता, भरोसा।

सहार्द–(सं०वि०) प्रेमयुक्त, स्नेहसहित।

सहित–(सं०वि०) संयुक्त, साथ, समेत।

सहितव्य–(सं०स्त्री०) सहन करने योग्य।

सहिष्णु–(सं०वि०) सहनशील।

सहिष्णुता–(सं०स्त्री०) सहनशीलता।

सहुँ–(हिं०अव्य०) सन्मुख, सामने।

सहृदय–(सं०वि०) दयालु, प्रसन्नचित्त।

सहेजना–(हिं०क्रि०) अच्छी तरह जाँचना। **सहेजवाना**–(हिं०क्रि०) सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेतु, सहेतुक–(सं० वि०) हेतुयुक्त।

सहेली–(हिं०स्त्री०) अनुचरी, संगिनी।

सहैया–(हिं० वि०) सहन करनेवाला।

सहोदर–(सं०पुं०) एक ही माता के पुत्र; (वि०) सगा।

सह्य–(सं०वि०) सहने योग्य।

साईं–(हिं०पुं०) परमेश्वर, स्वामी।

साँकड़–(हिं०पुं०) श्रृंखला, सीकड़।

साँकड़ा–(हिं०पुं०) पैर में पहनने का चाँदी का एक प्रकार का आभूषण।

साँकर–(हिं०स्त्री०) श्रृंखला; (वि०) सँकरा, दुःखमय।

साँकरा–(हिं०वि०) देखो साँकरा, साँकड़ा

सांक्रामिक–(सं० वि०) छूत से उत्पन्न होनेवाला।

साँग–(हिं०वि०) सम्पूर्ण, पूरा।

साँगी–(हिं०स्त्री०) बरछी।

सांघातिक–(सं०वि०) मारक।

सांच–(हि०वि०) सत्य, यथार्थ, ठीक।
साँचला–(हिवि०) सत्यवादी, सच्चा।
सांचा–(हि०पुं०) वह उपकरण जिसमें कोई तरल पदार्थ या गीला पदार्थ रखकर कोई विशेष आकार की कोई वस्तु बनाई जाती है, ठप्पा, छप्पा।
साँचिया–(हि०पुं०) किसी पदार्थ का साँचा बनानेवाला।
सांची–(हि० पुं०) एक प्रकार का पान, पुस्तकों की छपाई का वह प्रकार जिसमें पंक्तियाँ बेंड़े बल में होती हैं तथा पन्ने अलग-अलग रहते हैं।
सांझ–(हि०स्त्री०) सन्ध्या, शाम।
साँझा–(हि० पुं०) साझा।
सांट–(हि०स्त्री०) शरीर पर का चाबुक, कोड़े आदि की मार का चिह्न।
सांटा–(हि०पुं०) कोड़ा।
सांटी–(हि०स्त्री०) बाँस की खमाची, शाखा, बदला।
साँठ–(हि०पुं०) देखो साँकड़ा, सरकंडा।
सांठी–(हि०स्त्री०) पूंजी, मूलधन।
सांड़–(हि०पुं०) वह घोड़ा या बैल जो बधिया नहीं किया जाता, वृषभ; (वि०) बलिष्ठ।
सांड़नी–(हि०स्त्री०) ऊँटनी जो वेग से चलती है और सवारी के काम में आती है।
साँथरी–(हि०स्त्री०) चटाई, विछौना।
सांधना–(हि०क्रि०) रस्सियों आदि में जोड़ लगाना, मिलाना, साधना।
सांप–(हि०पुं०) भुजंग, सर्प, बड़ा दुष्ट मनुष्य।
सांपिन–(हि०स्त्री०) साँप की मादा।
सांवत्स, सांवत्सरक–(सं० पुं०) गणक, ज्योतिषी। **सांवत्सरिक**– (सं०वि०) वार्षिक।
सांवलताई–(हि०स्त्री०)श्यामता,साँवलापन।
सांवला–(हि०वि०) श्याम वर्ण का।
सांवलापन–(हि०पुं०)साँवला होन का भाव
सांवा–(हि०पुं०) कंगनी या चेना जाति का एक अन्न।
सांस–(हि०स्त्री०) श्वास, दम, अवकाश, छुट्टी, वह दरार जिसमें से हवा आ-जा सकती है, श्वास का रोग।
सांसत–(हि०स्त्री०) अधिक कष्ट या पीड़ा, झंझट।
सांसतघर–(हि०पुं०) कारागार में बहुत छोटी अंधेरी कोठरी।
सांसना–(हि०क्रि०) कष्ट देना, दुःख पहुँचाना।
साँसा–(हि०पुं०) श्वास, प्राण, जीवन, बड़ा कष्ट।
सांसारिक–(सं०वि०) लौकिक।
सांस्कारिक–(सं०वि०)संस्कार के उपयोगी
सा–(हि०अव्य०) तुल्य, समान, सदृश।
साइत–(अ०स्त्री०) शुभ, लग्न, मुहूर्त।
साइयाँ–(हि०पुं०) देखो साइँ।
साइँ–(हि०पुं०) ईश्वर, मालिक, पति।
साइंस–(हि०पुं०) घोड़े की सेवा करनेवाला नौकर।
साउज–(हि०पुं०) आखेट के पशु।
साक–(हि०पुं०)शाक, तरकारी, भाजी।
साकट–(हि०पुं०) देखो शक्ति।
साकर–(हि०स्त्री०) देखो साँकल।
साकल्य–(सं०पुं०) समुदाय।
साका–(हि०पुं०)संवत्, शाखा, प्रसिद्धि, धाक, अवसर।
साकार–(सं०वि०) मूर्तिमान्, साक्षात्।
साक्षत–(सं०वि०) अक्षत - सहित।
साक्षर (सं०पुं०) विद्वान्, जो लिखना-पढ़ना जानता हो।

साक्षात्–(सं०अव्य०) प्रत्यक्ष, स्वयं, तुल्य; (पुं०) भेंट। **साक्षात्कार**–(सं०पुं०) भेंट, पदार्थों का वह ज्ञान जो इन्द्रियों द्वारा होता है।
साक्षी–(सं०पुं०) वह जिसने किसी घटना को अपनी आँखों से देखा हो, दर्शक; (स्त्री०) साखी। **साक्ष्य**–(सं० पुं०) साक्षी का काम।
साख–(हिं०पुं०) गवाही, मर्यादा, धाक, लेन-देन का खरापन।
साखर–(हिं०वि०) देखो साक्षर।
साखा–(हिं०स्त्री०) देखो शाखा।
साखी–(हिं०पुं०) साक्षी, गवाह; (स्त्री०) गवाही, ज्ञान सम्बन्धी कविता या पद; (पुं०) वृक्ष, पेड़।
साग–(हिं०पुं०) शाक, भाजी, तरकारी।
सागर–(सं०पुं०) उदधि, समुद्र, बड़ा जलाशय।
सागदाना–(हिं०पुं०) सागू नामक वृक्ष के तने के गूदे से तैयार किये हुए दाने, साबूदाना।
साग्रह–(सं०वि०) आग्रह-सहित।
सांकर्य–(सं०पुं०) मिश्रण, मिलावट।
सांकेतिक–(सं०वि०) संकेत संबंधी।
साँग–(सं० वि०) अंगयुक्त, सम्पूर्ण।
साजन–(हिं०पुं०) स्वामी, पति, प्रेमी।
साजना–(हिं०क्रि०) सजावट करना।
साजबाज–(हिं०पुं०) घनिष्ठता, मेलजोल।
साजुज्य–(हिं०पुं०) देखो सायुज्य।
साझी–(हिं०पुं०) हिस्सा, बाँट। **साझीदार**–(हिं०पुं०) हिस्सेदार, साझी।
साझेदारी–(हिं०स्त्री०) हिस्सेदारी।
साटक–(हिं०पुं०) छिलका, भूसी।
साटन–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बढ़िया एकरुखा रेशमी कपड़ा।
साटना–(हिं०क्रि०) दो वस्तुओं को परस्पर मिलाना, जोड़ना।
साठ–(हिं०वि०) पचास और दस संख्या का; (पुं०) पचास और दस की संख्या ६०।
साठा–(हिं०वि०) साठ वर्ष के वय का।
साड़ी–(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहनने की किनारेदार धोती।
साढ़ी–(हिं०स्त्री०) दूध के ऊपर जमनेवाली मलाई।
साढ़ू–(हिं०पुं०) साली का पति।
साढ़ेसाती–(हिं०स्त्री०) शनि ग्रह के साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने या साढ़े सात दिन की दशा जो अशुभ मानी जाती है।
सात–(हिं०वि०) पाँच और दो की संख्या का; (पुं०) पाँच और दो की संख्या ७।
सात्मक–(सं०वि०) आत्मा के सहित।
सात्म्य–(सं०पुं०) सरूपता, सारूप्य।
सात्त्विक–(सं०पुं०) वह भाव जिसमें सत्त्व गुण प्रबल हो; (वि०) सत्वगुणयुक्त।
साथ–(हिं०पुं०) मिलकर या संग रहने का भाव, सहचार, घनिष्ठता, मेल-मिलाप; (अव्य०) सहित, प्रति, से।
साथरा–(हिं०पुं०) बिछौना, चटाई।
साथी–(हिं०पुं०) साथ रहनेवाला, मित्र।
सादन–(सं० पुं०) उच्छेदन, विनाश।
सादर–(सं०वि०) आदर-सहित।
सादित–(सं०वि०) छिन्न-भिन्न।
सादृश्य–(सं०पुं०) एकरूपता, समानता।
साध–(हिं०स्त्री०) अभिलाष, कामना।
साधक–(सं० पुं०) साधन करनेवाला, सहायक।
साधन–(सं०पुं०) हेतु, कारण, विधान, गति, उपासना। **साधना**–(हिं०क्रि०) पूरा करना, पक्का करना, ठहरना, नापना, शुद्ध करना, वश में करना।

साधनी–(हिं०स्त्री०) राजगीर का भूमि चौरस करने का एक औजार।
साधन्त–(सं०पुं०) भिक्षुक, भिखमंगा।
साधयितव्य–(सं०वि०) साधने योग्य।
साधयिता–(सं०पुं०) साधनेवाला।
साधर्म्य–(सं० पुं०) एकधर्मता।
साधार–(सं०वि०) आधारयुक्त।
साधारण–(सं०वि०) सामान्य, सदृश, सहज, सार्वजनिक।
साधारणतः–(सं०अव्य०) सामान्य रूप से, बहुधा, प्रायः।
साधित–(सं०वि०) साधा हुआ, शोधित।
साधु–(सं०पुं०) सज्जन, धार्मिक; (वि०) योग्य, निपुण, उचित, उत्तम। **साधुता**–(सं०स्त्री०) सज्जनता, भलाई, सीधापन। **साधुभाव**–(सं०पुं०) सज्जनता। **साधुवाद**–(सं०पुं०) प्रशंसावाद।
साधुवादी–(सं०वि०) सच बोलनेवाला।
साधुवृत्त–(सं०वि०) अच्छे चरित्रवाला।
साधू–(हिं०पुं०) धार्मिक पुरुष, सन्त, सज्जन।
साधो–(हिं०पुं०) सन्त, साधु।
साध्य–(सं०वि०) साधन करने योग्य, सरल, सहज, प्रतिपाद्य।
साध्वी–(सं०स्त्री०) पतिव्रता स्त्री।
सान–(हिं०पुं०) अस्त्रादि की धार पैनी करने का पत्थर सा चाक, शाण।
सानना–(हिं०क्रि०) मिलाना, लपेटना, गूँधना।
सानन्द–(सं०वि०) आनन्द-सहित।
सानी–(हिं०स्त्री०) वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जाता है।
सान्त्वन–(सं० पुं०) आश्वासन, ढाढ़स।
सान्द्र–(सं०वि०) स्निग्ध, चिकना, सुंदर।
सान्ध्य–(सं०वि०) सन्ध्या काल में करने योग्य।
सान्निध्य–(सं० पुं०) समीपता।
सान्वय–(सं०वि०) अन्वय-सहित।
साप–(हिं०पुं०) शाप।
सापत्न्य–(सं० पुं०) सौतपन; (पुं०) सौत का लड़का।
सापत्य–(सं०वि०) सन्तानयुक्त।
सापना–(हिं०क्रि०) शाप देना, गाली देना।
सापेक्ष–(हिं०वि०) परस्पर निर्भर रहनेवाला।
साफल्य–(सं० पुं०) लाभ, सफलता।
साबल–(हिं०पुं०) बरछी, भाला।
साबूदाना–(हिं०पुं०) देखो सागूदाना।
सामग्री–(सं०स्त्री०) किसी विशेष कार्य में उपयोग आनेवाले पदार्थ।
सामना–(हिं० पुं०) किसी वस्तु का अगला भाग, विरोध।
सामने–(हिं०क्रि०वि०) सन्मुख, आगे।
सामन्त–(सं०पुं०) श्रेष्ठ, राजा।
सामयिक–(सं०वि०) समयोचित, समय के अनुसार, समय सम्बन्धी, वर्तमान समय का।
सामरथ–(हिं० स्त्री०) देखो सामर्थ्य।
सामरिक–(सं०वि०) समर सम्बन्धी। **सामरिक पोत**–(सं०पुं०) युद्ध का जहाज।
सामर्थ्य–(सं०पुं०) शक्ति, बल, योग्यता।
सामवाद–(सं०पुं०) प्रिय वचन।
सामवायिक–(सं०पुं०) मन्त्री; (वि०) जिसमें नित्य सम्बन्ध हो।
सामाजिक–(सं०वि०) समाज से संबंध रखनेवाला, सभा से सम्बन्ध रखनेवाला। **सामाजिकता**–(सं० स्त्री०) लौकिकता।
सामान्य–(सं०वि०) साधारण।
सामान्यतः–(सं०अव्य०) साधारण रीति से। **सामान्य भविष्यत्**–(सं० पुं०)

व्याकरण में भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप से बतलाया जाता है।
सामान्यभूत–(सं०पुं०) भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती; जैसे—गया, उठा आदि।
सामान्य वर्तमान–(सं० पुं०) वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना वर्णन किया जाता है। **सामान्य विधि**–(सं०स्त्री०) साधारण आज्ञा, यथा–चोरी मत करो।
सामिग्री–(हिं०स्त्री०) देखो सामग्री।
सामिष–(सं०वि०) मछली मांस आदि के साथ।
सामी–(हिं०पुं०) देखो स्वामी, शामी।
सामीप्य–(सं०पुं०) निकटता।
सामीर–(हिं०पुं०) समीर, पवन।
सामुझि–(हिं०स्त्री०) देखो समझ।
सामुदायिक–(सं०वि०) समुदाय संबंधी।
सामुद्र–(सं०वि०) समुद्र सम्बन्धी।
सामुद्रिक–(सं० वि०) समुद्र संबंधी; (पुं०) फलित ज्योतिष का वह विभाग जिसमें हाथ पैर ललाट आदि स्थानों पर की रेखाओं से मनुष्य का शुभाशुभ फल जाना जाता है।
सामुहाँ–(हिं०पुं०) आगे का भाग।
सामुहें–(हिं०क्रि०वि०) सामने।
सामूहिक–(सं०वि०) समूह सम्बन्धी।
साम्प्रत–(सं०अव्य०) इस समय, अभी।
साम्प्रतिक–(सं०वि०) वर्तमान काल का।
साम्प्रदायिक–(सं०वि०) संप्रदाय संबंधी।
साम्य–(सं०पुं०) समता, तुल्यता।
साम्यता–(सं०स्त्री०) तुल्यता।
साम्यवाद–(सं०पुं०) एक पाश्चात्य सामाजिक सिद्धान्त जिसके प्रचारक यह चाहते हैं कि सब लोगों के पास बराबर धन हो जावे, भगवान् और दरिद्र का भेद न रह जावे।
साम्यावस्था–(सं०स्त्री०) समान अवस्था।
साम्राज्य–(सं०पुं०) वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों।
सायंकाल–(सं०पुं०) सन्ध्या समय।
सायंकालीन–(सं०वि०) सन्ध्या समय का।
सायक–(सं०पुं०) बाण, तीर।
सायन–(सं०स्त्री०) सूर्य की एक गति जिसमें अयन (ग्रह आदि) हों।
सायास–(सं०वि०) कष्ट-सहित।
सायुज्य–(सं०पुं०) एकत्व, पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसमें मुक्त पुरुष ब्रह्म में लीन हो जाता है।
सारंग–(सं०पुं०) हरिण, हाथी, कोयल, शिव, दीपक, बाण, मेघ, ज्योति, पृथ्वी, फूल, आभरण, केश, मोर, चितकबरा मृग, बिजली, हल, मेढक, आकाश, नक्षत्र, कौवा, छप्पय, शोभा, भूमि, सारंगी नामक वाद्य यन्त्र; (वि०) सुन्दर, सुहावना, रंगा हुआ।
सारंगा–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी नाव जो एक लकड़ी की बनी होती है।
सारंगिया–(हिं०पुं०) सारंगी बजानेवाला।
सारंगी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा।
सार–(सं०पुं०) जल, पानी, धन, अमृत, जंगल; (पुं०) बल, अभिप्राय, मज्जा, वायु, परिणाम, फल, लकड़ी की हीर।
सार–(हिं० पुं०) पालन-पोषण, रक्षा, लोहा।
सारखा–(हिं०वि०) समान, सदृश।
सारगन्ध–(सं०पुं०) चन्दन।
सारणी–(सं०स्त्री०) प्रसारणी, नदी।

सारथि–(सं०पुं०) रथ हाँकनेवाला।
सारद–(हि०स्त्री०) शारदा, सरस्वती।
सारदा–(हि०स्त्री०) देखो शारदा।
सारदूल–(हि०पुं०) देखो शार्दूल।
सारना–(हिं०क्रि०) समाप्त करना, साधना, बनाना, सँभालना, सुशोभित करना, रक्षा करना।
सारभूत–(सं०वि०) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।
सारमेय–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
साररूप–(सं०वि०) उत्तम रूपवाला।
सारल्य–(सं०पुं०) सरलता।
सारवस्तु–(सं०पुं०) श्रेष्ठ वस्तु।
सारस–(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध सुन्दर बड़ा पक्षी।
सारसन–(सं०पुं०) कटिबन्ध।
सारसुता–(हिं०स्त्री०) यमुना। सारसुती–(हिं०स्त्री०) देखो सरस्वती।
सारसैन्धव–(सं०पुं०) सेंधा नमक।
सारांश–(सं०पुं०) संक्षेप, सार, तात्पर्य।
सारा–(हि०पुं०) साला; (हिं० वि०) सम्पूर्ण, समूचा।
सारिउँ, सारिका–(हिं० स्त्री०) मैना पक्षी।
सारिखा–(हिं०वि०) सरीखा, तुल्य।
सारिष्ट–(हिं०वि०) सबसे सुन्दर, सबसे श्रेष्ठ।
सार्थ–(सं०वि०) अर्थसहित।
सार्थक–(सं०वि०) अर्थयुक्त, सफल।
सार्थकता–(सं०स्त्री०) सफलता।
सार्थवाह–(सं०पुं०) वणिक्, बनियाँ।
सार्थिक–(सं०वि०) सफल।
सार्थी–(हि०पुं०) देखो सारथी।
सार्द्र–(सं०वि०) आर्द्र, भींगा, गीला।
सार्दूल–(हि० पुं०) देखो शार्दूल, सिंह।
सार्ध–(सं०वि०) जिसमें पूरे के अतिरिक्त आधा भी मिला हो।

सार्व–(वि०) सबसे सम्बन्ध रखनेवाला।
सार्वकालिक–(सं०वि०) जो सब कालों में होता हो। सार्वजनिक–(सं०वि०) सर्वसाधारण सम्बन्धी।
सार्वजनीन–(सं०वि०) सब लोगों से सम्बन्ध रखनेवाला। सार्वदेशिक–(सं० वि०) सम्पूर्ण देशों का।
सार्वभौतिक–(सं०वि०) सब भूतों से सम्बन्ध रखनेवाला। सार्वभौम–(सं० पुं०) चक्रवर्ती राजा।
सार्वराष्ट्रिय–(सं०वि०) अनेक राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला। सार्वलौकिक–(सं०वि०)सब लोगों से सम्बन्ध रखनेवाला।
सालई–(हिं०स्त्री०) देखो सलई।
सालक–(हिं०वि०) सालनेवाला, दुःख देनवाला।
सालग्राम–(हिं०पुं०) देखो शालग्राम।
सालन–(हिं०पुं०) मांस मछली या शाकभाजी की मसालेदार तरकारी।
सालना–(हिं०क्रि०) गड़ाना, छेद में बैठाना।
सालमञ्जिका–(सं०स्त्री०)गुड़िया,पुतली।
सालरस–(सं०पुं०) राल, धूना।
साला–(हिं०स्त्री०) शाला, गृह, घर; (हिं०पुं०) पत्नी का भाई।
साली–(हिं०स्त्री०) पत्नी की बहिन।
सालु–(हिं०पुं०) ईर्षा, डाह, कष्ट।
सालू–(हिं०पुं०) एक प्रकार की लाल रंग की साड़ी जो मांगलिक कार्यों में पहनी जाती है।
सालेय–(सं०पुं०) मधुरिका, सौंफ।
सालोक्य–(सं० पुं०) पाँच प्रकार की मुक्ति में से एक, इसके मुक्त भगवान् के साथ एक लोक में वास करते हैं।
साल्मली–(हिं०पुं०) देखो शाल्मली।

सावन्त–(हिं०पुं०) देखो सामन्त, योद्धा।
साव–(हिं०पुं०) देखो साहु, बालक, पुत्र।
सावक–(हिं०पुं०) शावक, शिशु, बच्चा।
सावकाश–(सं० पुं०) अवकाश, छुट्टी; (क्रि०वि०) सुविधा से।
सावचेत–(हिं०त्रि०) सावधान, सचेत।
सावधान–(सं०वि०) सचेत, सतर्क।
सावधानी–(हिं०स्त्री०) सचेतता।
सावन–(हिं०पुं०) श्रावण मास।
सावनी–(हिं०स्त्री०) देखो श्रावणी; (वि०) सावन महीने का।
सावयव–(सं०वि०) अवयवयुक्त।
सावशेष–(सं०त्रि०) अवशेषयुक्त।
सावित्री–(सं०स्त्री०) सोहागिन स्त्री।
साशंक–(हिं०वि०) आशंकायुक्त।
साष्टांग–(सं०वि०) आठों अंग-सहित।
सास–(हिं०स्त्री०) पति या पत्नी की माता।
सासण–(हिं०पुं०) देखो शासन।
सासति–देखो शासन।
सासना–(हिं०स्त्री०) देखो शासन।
सासव–(सं०वि०) मद्ययुक्त।
सासरा–(हिं०पुं०) देखो ससुराल।
सासा–(हिं०पुं०) श्वास, साँस, सन्देह।
सासुर–(हिं०पुं०) ससुर, ससुराल।
सास्ना–(सं०स्त्री०) गौ का गलकम्बल।
साह–(हिं०पुं०) साधु, सज्जन, महाजन, सेठ।
साहचर्य–(सं०पुं०) सहगमन, संग, साथ।
साहनी–(हिं०स्त्री०) सेना, साथी, संगी।
साहस–(सं० पुं०) बलपूर्वक कार्य करने की क्रिया, अत्याचार, क्रूरता।
साहसिक–(सं० पुं०) साहस करनेवाला, निडर, हठी। **साहसिकता**–(सं०स्त्री०) निर्भीकता।
साहसी–(सं०पुं०) जो साहस करता हो।
साहस्र–(सं०वि०) सहस्र संबंधी, हजार का।
साहा–(हिं०पुं०) साधु, राजा।
साहाय्य–(सं०पुं०) सहायता।
साहि–(हिं०पुं०) राजा।
साहित्य–(सं०पुं०) गद्य-पद्य के उन ग्रन्थों का समूह जिनमें लोकहित संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं, वे सब पुस्तकें जिनमें नैतिक सत्य तथा मानव भाव, व्यापकता तथा बुद्धिमानी से प्रकट किये रहते हैं। **साहित्यिक**–(सं० त्रि०) साहित्य संबंधी।
साही–(हिं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध चौपाया जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं।
साहू–(हिं०पुं०) सज्जन, महाजन, धनी; **साहूकार**–(हिं०पुं०) बड़ा महाजन, कोठीवाल। **साहूकारी**–(हिं०स्त्री०) रुपये का लेनदेन, महाजनी।
साहों–(हिं०स्त्री०) बाँह, भुजा; (अव्य०) सन्मुख, सामने।
सिंकना–(हिं०क्रि०) आँच पर पकना।
सिंगा–(हिं०पुं०) तुरही।
सिंगार–(हिं०पुं०) श्रृङ्गार, सजावट, शोभा। **सिंगारदान**–(हिं० पुं०) वह छोटी पेटी जिसमें श्रृङ्गार की सामग्री रक्खी जाती है। **सिंगारना**–(हिं० क्रि०) सँवारना, सजाना। **सिंगारिया**–(हिं०पुं०) किसी देवमूर्ति का श्रृंगार करनेवाला पुजारी। **सिंगारी**–(हिं० पुं०) श्रृंगार करनेवाला, सजानेवाला।
सिंगासन–(हिं०पुं०) देखो सिंहासन।
सिंगिया–(हिं०पुं०) एक पौधा जिसकी जड़ बड़ी विषैली होती है।
सिंगी–(हिं०पुं०) सींग का बना हुआ फूंककर बजाने का बाजा।
सिंघ–(हिं०पुं०) सिंह।
सिंघाड़ा–(हिं०पुं०) पानी में फैलनेवाली एक लता जिसका तिकोना फल मीठा

होता है, समोसा नामक नमकीन पकवान।
सिघासन–(हिं०पुं०) देखो सिंहासन।
सिंघिनी–(हिं०स्त्री०) देखो सिंहिनी।
सिंघिया–(हिं०पुं०) देखो सिंगिया।
सिंचना–(हिं०क्रि०) सींचा जाना।
सिंचाई–(हिं०स्त्री०) भूमि को जल से तर करने की क्रिया।
सिंचाना–(हिं०क्रि०) पानी छिड़काना।
सिंजित–(हिं०स्त्री०) ध्वनि, झनकार।
सिंदन–(हिं०पुं०) देखो स्यन्दन।
सिंदूरदान–(हिं०पुं०) सिन्दूर रखने की डिबिया। **सिंदूरिया**–(हिं०वि०) सिंदूर के रंग का, बहुत लाल।
सिंदूरी–(हिं०वि०) सिंदूर के रंग का।
सिंह–(सं०पुं०) मृगेन्द्र, पशुराज।
सिंहद्वार–(सं०पुं०) भवन आदि का प्रधान द्वार जहाँ पर सिंह की मूर्ति बनी हो। **सिंहध्वनि**–(सं०पुं०) सिंहनाद।
सिंहरव–(सं०पुं०) सिंह की गरज।
सिंहावलोकन–(सं०पुं०) आगे बढ़ने के पहिले पिछली बातों को संक्षेप में कहना।
सिंहासन–(सं०पुं०) राजाओं का श्रेष्ठ आसन, देवता को बैठाने की चौकी आदि।
सिंहिनी–(सं०स्त्री०) मादा सिंह, शेरनी।
सिंही–(सं०स्त्री०) शेरनी, सिंघा नाम का बाजा।
सिअरा–(हिं०पुं०) छाया, परछाहीं।
सिआना–(हिं०क्रि०) देखो सिलाना।
सिआर–(हिं०पुं०) शृगाल, गीदड़।
सिकंजा–(हिं०पुं०) देखो शिकंजा।
सिकटा–(हिं०पुं०) खपड़े या मिट्टी के टूटे हुए पात्रों का छोटा टुकड़ा।
सिकड़ी–(हिं०स्त्री०) साँकल, श्रृंखला के आकार का गले में पहनने का गहना, करधनी, तगड़ी।
सिकता–(सं०स्त्री०) बलुई भूमि, बालू।
सिकरी–(हिं०स्त्री०) देखो सिकड़ी।
सिकली–(हिं०स्त्री०) धारदार हथियारों को माँजने और उन पर सान चढ़ाने की क्रिया।
सिकहर–(हिं०पुं०) छींका।
सिकहुली–(हिं०स्त्री०) कास या मूंज की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकार–(हिं०पुं०) देखो शिकार।
सिकारी–(हिं०वि०) देखो शिकारी।
सिकुड़न–(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु का सिमटकर थोड़े स्थान में होना।
सिकुड़ना–(हिं०क्रि०) सिमटना।
सिकुरना–(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सिकोड़ना–(हिं०क्रि०) बटोरना, समेटना।
सिकोरना–(हिं०क्रि०) देखो सिकोड़ना।
सिकोरा–(हिं०क्रि०) देखो कसोरा।
सिघकोली–(हिं०स्त्री०) कास, मूंज आदि की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकोही–(हिं०वि०) गर्बीला, घमंडी।
सिक्कड़–(हिं०पुं०) देखो सिकड़ू।
सिक्का–(अ०पुं०) मुद्रा, छाप, मुहर।
सिक्त–(सं०वि०) सिंचित, सींचा हुआ।
सिक्ता–(सं०स्त्री०) सिकता, बालुका।
सिखंड–(हिं०पुं०) देखो शिखण्ड।
सिख–(हिं०स्त्री०) शिक्षा, उपदेश, सीख।
सिखना–(हिं०क्रि०) देखो सीखना।
सिखर–(हिं०पुं०) देखो शिखर।
सिखरन–(हिं०स्त्री०) दही में चीनी मिलाकर बनाया हुआ शर्बत।
सिखलाना–(हिं०क्रि०) देखो सिखाना।
सिखा–(हिं०स्त्री०) देखो सिखा, चुटिया, चुंदी। **सिखाना**–(हिं०क्रि०) उपदेश देना, शिक्षा देना, पढ़ाना, बतलाना।
सिखापन–(हिं०पुं०) उपदेश, शिक्षा।
सिखावन–(हिं०पुं०) उपदेश, शिक्षा।
सिखिर–(हिं०पुं०) शिखर।

सिगरा–(हिं०वि०) सम्पूर्ण, समग्र, सब।
सिच्छक–देखो शिक्षक।
सिच्छा–(हिं०स्त्री०) देखो शिक्षा।
सिजल–(हिं०पुं०) जो देखने में सुन्दर हो।
सिझना–(हिं०क्रि०) आँच पर पकाना, सिझाया जाना। **सिझाना**–(हिं०क्रि०) रींधना, उबालना।
सिञ्चन–(सं०पुं०) सींचना।
सिञ्चित–(सं०वि०) सींचा हुआ।
सिटकिनी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पतली छड़ जो किवाड़ बंद करने के लिये लगाई जाती है, चटखनी।
सिटपिटाना–(हिं०क्रि०) सकुचाना।
सिट्टी–(हिं०स्त्री०) बहुत बढ़ बढ़कर बोलना
सिठना–(हिं०पुं०), **सिठनी**–(हिं०स्त्री०) विवाह के समय गाई जानेवाली गाली।
सिठाई–(हिं०स्त्री०) फीकापन, नीरसता।
सिड़–(हिं०स्त्री०) उन्माद, पागलपन। **सिड़पन**–(हिं०पुं०) पागलपन, **सिड़ी**–(हिं०वि०) पागल, सनकी, उन्मत्त।
सित–(सं०वि०) श्वेत, उजला। **सितपक्ष**–(सं०पुं०) शुक्ल पक्ष।
सितमणि–(सं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर।
सितार–(हिं०पुं०) एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो इसमें लगे हुए तारों को उँगली से झनकारने से बजता है।
सितालिका–(सं०स्त्री०) ताल की सीप, सुतुही।
सिति–(सं०वि०) कृष्ण, काला। **सितिकण्ठ**–(सं०पुं०) नीलकण्ठ।
सितुई, सितुही–(हिं०स्त्री०) सुतुही।
सितोपल–(सं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर। **सितोपला**–(सं०स्त्री०) शर्करा, चीनी, मिश्री।
सिथिल–(हिं०वि०) देखो शिथिल।
सिद्ध–(सं०वि०) प्रसिद्ध, सम्पन्न, सफल, अनुकूल किया हुआ, लक्ष्य पर पहुँचाया हुआ, निर्णीत, जिसका तप या योग साधन पूरा हो चुका हो, जिसका अर्थ हो, जो ठीक घटा हो, जो प्रमाण द्वारा निश्चित हो, शोधा हुआ, आँच पर पकाया हुआ।
सिद्धक–(सं०वि०) काम पूरा करनेवाला। **सिद्धगुरु**–(सं०पुं०) वह गुरु जिसकी मन्त्रसिद्धि हुई हो। **सिद्धजन**–(सं०पुं०) सिद्ध मनुष्य। **सिद्धजल**–(सं०पुं०) पकाया हुआ जल।
सिद्धता–(सं०स्त्री०) सिद्धि, पूर्णता।
सिद्धपक्ष–(सं०पुं०) प्रमाणित बात। **सिद्धपथ**–(सं०पुं०) आकाश, प्रसिद्ध मार्ग। **सिद्धपीठ**–(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर प्रयाण करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। **सिद्धसंकल्प**–(सं०वि०) जिसकी सब कामनायें पूरी हों।
सिद्धहस्त–(सं०वि०) जिसका हाथ कोई काम करने में मँजा हो।
सिद्धाई–(हिं०स्त्री०) सिद्ध होने की अवस्था।
सिद्धादेश–(सं०पुं०) सफल वाक्य।
सिद्धान्त–(सं०पुं०) तत्त्व की बात, निर्णीत विषय, किसी शास्त्र पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक। **सिद्धान्तज्ञ**–(सं०पुं०) तत्त्वज्ञ। **सिद्धान्ती**–(हिं० पुं०) शास्त्र के तत्त्व को जाननेवाला।
सिद्धान्न–(सं०पुं०) पका हुआ अन्न, भात।
सिद्धार्थ–(सं०वि०) जिसकी सब कामनायें पूर्ण हो गई हों।
सिद्धि–(सं०स्त्री०) निवटारा, भाग्योदय, मुक्ति, सफलता, प्रवीणता, कौशल, भाँग, पूर्णता। **सिद्ध-सिद्धिदाता**–(सं० वि०) सिद्धि देनेवाला। **सिद्धिमार्ग**–(सं०पुं०) मोक्षपथ।

सिद्धौषध–(सं०पुं०) वह औषध जिसके सेवन करने से रोग निवृत्त होता है।
सिधाई–(हिं०स्त्री०) सरलता, सीधापन।
सिधाना, सिधारना–(हिं०क्रि०) प्रस्थान करना, स्वर्गवास होना।
सिधि–(हिं०स्त्री०) देखो सिद्धि।
सिनक–(हिं०स्त्री०) नाक की मैल, नेटा।
सिनकना–(हिं०क्रि०) नाक का मैल वेग से निकालकर बाहर फेंकना।
सिन्दुर–(सं०पुं०) सेंदुर। **सिन्दूरदान**–(हिं०पुं०) सिन्दूर रखने की डिबिया।
सिन्धी–(हिं०स्त्री०) सिन्ध देश की भाषा।
सिन्धु–(सं०पुं०) समुद्र, सागर, सिन्ध प्रदेश।
सिन्धुल–(सं०पुं०) हाथी।
सिधौरा–(हिं०पुं०) सिन्दूर रखने की डिबिया।
सिप्पा–(हिं०पुं०) लक्ष्यवेध, युक्ति, ढंग।
सिमंत–(हिं०पुं०) देखो सीमान्त।
सिमई–(हिं०स्त्री०) देखो सिवई।
सिमट–(हिं०स्त्री०) सिमटने की क्रिया या भाव। **सिमटना**–(हिं०क्रि०) सिकुड़ना, बटुरना, व्यवस्थित होना।
सिमाना–(हिं०पुं०) सिवाना, हद।
सिमिटना–(हिं०क्रि०) देखो सिमटना।
सिमृती–(हिं०स्त्री०) देखो स्मृति।
सिमेटना–(हिं०क्रि०) लपेटना।
सिम्बी–(सं०स्त्री०) फली, छीमी।
सिय–(हिं०स्त्री०) सीता, जानकी।
सियरा–(हिं०वि०) शीतल, ठंढा, कच्चा।
सियराई–(हिं०स्त्री०) ठंढापन।
सियराना–(हिं०क्रि०) ठंढा करना।
सिया–(हिं०स्त्री०) जानकी, सीता।
सियाना–(हिं०क्रि०) देखो सिलवाना।
सियापा–(हिं०पुं०) मृत व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक बहुत-सी स्त्रियों का प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोने की चाल।
सियार–(हिं०पुं०) शृगाल, गीदड़।
सियाल–(हिं०पुं०) देखो सियार।
सियाला–(हिं०पुं०) जाड़े की ऋतु।
सिर–(हिं०पुं०) शिर, कपाल, खोपड़ी, सिरा, चोटी, ऊपरी छोर।
सिरई–(हिं०स्त्री०) चारपाई में सिरहाने की पट्टी।
सिरकटा–(हिं०वि०) जिसका सिर कट गया हो।
सिरकी–(हिं०स्त्री०) सरकंडा, सरई।
सिरखप–(हिं०वि०) परिश्रमी।
सिरखपी–(हिं०स्त्री०) परिश्रम, व्यग्रता।
सिरचन्द–(हिं०पुं०) एक प्रकार का अर्धचन्द्राकार गहना जो हाथी के मस्तक पर पहिनाया जाता है।
सिरजनहार–(हिं०पुं०) सृष्टिकर्ता, परमेश्वर।
सिरजना–(हिं०क्रि०) सृष्टि करना, निर्माण करना।
सिरजित–(हिं०वि०) निर्मित, रचा हुआ।
सिरताज–(हिं०पुं०) सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, शिरोमणि।
सिरत्राण–(हिं०पुं०) देखो शिरस्त्राण।
सिरदार–(हिं०पुं०) देखो सरदार।
सिरनेत–(हिं०पुं०) पगड़ी, पटका, चीरा।
सिरफूल–(हिं०पुं०) स्त्रियों का एक आभूषण जिसको वे सिर पर पहनती हैं।
सिरफेंटा, सिरबन्द–(हिं०पुं०) पगड़ी, मुरेठा।
सिरबंदी–(हिं०स्त्री०) मस्तक पर पहिनने का स्त्रियों का एक आभूषण।
सिरमनि–(हिं०पुं०) देखो शिरोमणि।
सिरमौर–(हिं०पुं०) सिर पर का मुकुट।
सिररुह–(हिं०पुं०) देखो शिरोरुह।
सिरहाना–(हिं०पुं०) चारपाई में सिर की ओर का भाग।

सिरा–(हिं०स्त्री०) शिरा; (हिं० पुं०) अन्त, छोर, टोका।
सिराना–(हिं०क्रि०) ठंढा होना, अवकाश मिलना, समाप्त होना।
सिरी–(हिं०स्त्री०) श्री, लक्ष्मी, शोभा।
सिरोना–(हिं०पुं०) इंडुरी, बिड़वा।
सिरोमनि–(हिं०पुं०) देखो शिरोमणि।
सिरोरुह–(हिं०पुं०) देखो शिरोरुह।
सिल–(हिं०स्त्री०) शिला; पत्थर, चट्टान, पत्थर की पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसा जाता है।
सिलगना–(हिं०क्रि०) देखो सुलगना।
सिलप–(हिं०पुं०) देखो शिल्प।
सिलपट–(हिं०वि०) चौरस, बराबर, नष्ट, चौपट।
सिलवट–(हिं०स्त्री०) लकीर।
सिलवाना–(हिं०क्रि०) सिलने का काम दूसरे से कराना।
सिलहिला–(हिं०वि०) फिसलने योग्य।
सिला–(हिं० स्त्री०) शिला।
सिलाई–(हिं०स्त्री०) सीने का काम या ढंग, टाँका, सीवन।
सिलाना–(हिं०क्रि०) सिलने का काम दूसरे से कराना।
सिलावट–(हिं०पुं०) पत्थर गढ़नेवाला।
सिलिप–(हिं०पुं०) देखो शिल्प।
सिलीमुख–(हिं०पुं०) देखो शिलीमुख।
सिलेट–(हिं०स्त्री०) काले पत्थर की पतली पट्टी जिस पर लड़के लिखते हैं।
सिलौट, सिलौटा–(हिं०पुं०)पत्थर का चिकना टुकड़ा। **सिलौटी**–(हिं०स्त्री०) छोटी सिल।
सिल्प–(हिं०पुं०) देखो शिल्प।
सिल्ली–(हिं०स्त्री०) पत्थर की छोटी पतली पटिया, पटरी।
सवई–(हिं०स्त्री०) गुंधे हुए मैदे के सूत के समान सूखे हुए महीन लच्छे जो दूध में पकाकर खाये जाते हैं।
सिवान–(हिं०पुं०) गाँव के छोर पर की भूमि।
सिवार, सिवाल–(हिं०पुं०) शैवाल, जल में फैलनेवाली एक घास।
सिवि, सिविर–(हिं०पुं०) देखो शिवि, शिविर।
सिस–देखो शिशु।
सिसकना–(हिं०क्रि०)रोक-रोककर लंबी साँस लेते हुए भीतर ही भीतर रोना।
सिसकारना–(हिं०क्रि०) मुख से सीटी के समान शब्द निकालना, लहकाना।
सिसकारी–(हिं०स्त्री०) सिसकारने का शब्द, सिसकारी।
सिसकी–(हिं०स्त्री०) सिसकारी।
सिसिर–(हिं०पुं०) देखो शिशिर।
सिसु–(हिं०पुं०) देखो शिशु, बालक।
सिसुमार–(हिं०पुं०) सुइस।
सिहरना–(हिं०क्रि०) रोंगटे खड़े होना।
सिहराना–(हिं०क्रि०) ठंढ से काँपना।
सिहरी–(हिं०स्त्री०) ठंढ के कारण कँपकँपी।
सिहाना–(हिं०क्रि०) ईर्षा करना।
सिहारना–(हिं०क्रि०) अन्वेषण करना।
सिहिकना–(हिं०क्रि०) सूखना।
सिहिटि–देखो सृष्टि।
सींक–(हिं०पुं०) किसी तृण का महीन काण्ड, तिनका।
सींकिया–(हिं०पुं०)एक प्रकार का महीन कपड़ा जिसमें महीन धारियाँ रहती हैं।
सींग–(हिं०पुं०) शृङ्ग।
सींगी–(हिं०स्त्री०) हरिन के सींग का बना हुआ बाजा, वह पोली सींग जिसके द्वारा दूषित रक्त को चूसकर निकाला जाता है।

सींच–(हिं०स्त्री०) सींचने की क्रिया, सिंचाई। **सींचना**–(हिं०क्रि०) पानी देना, भिगोना।
सींव–(हिं०पुं०) सीमा, सरहद।
सी–(हिं०वि०स्त्री०) समान, तुल्य, सीत्कार।
सीउ–(हिं०पुं०) शीत, ठंढक।
सींकना–(हिं०पुं०) छड़।
सीकर–(सं०पुं०) पानी का बूंद, छींटा।
सीका–(हिं०पुं०) देखो छीका।
सीख–(हिं०स्त्री०) शिक्षा, परामर्श।
सीखन–(हिं०स्त्री०) शिक्षा। **सीखना**–(हिं०क्रि०) किसी से किसी कार्य करने की विधि जानना।
सीखा–(हिं०स्त्री०) शिखा, चोटी।
सीझ–(हिं०स्त्री०) सीझने की क्रिया या भाव। **सीझना**–(हिं०क्रि०) आँच या गरमी से पकना, कष्ट सहना।
सीट–(हिं०स्त्री०) अभिमान करने के शब्द, डींग। **सीटना**–(हिं०क्रि०) डींग मारना। **सीटपटांग**–(हिं० स्त्री०) घमंड भरी हुई बात।
सीटी–(हिं०स्त्री०) वह महीन शब्द जो ओठों को गोल सिकोड़कर नीचे को वेग से वायु निकालने पर उत्पन्न होता है, वह बाजा जिसको फूंकन से इसी प्रकार का शब्द निकलता है।
सीठना–(हिं०पुं०) अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं।
सीठा–(हिं०वि०) नीरस, फीका।
सीठापन–(हिं०स्त्री०) फीकापन।
सीठी–(हिं०स्त्री०) खूद, निःसार पदार्थ।
सीड़–(हिं०स्त्री०) साल, तरी, नमी।
सीढ़ी–(हिं०स्त्री०) निसैनी।
सीत–(हिं०पुं०) देखो शीत, ठंढक।
सीतल–(हिं०वि०) देखो शीतल, ठंढा।
सीतलपाटी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चिकनी चटाई। **सीतल बुकनी**-(हिं०स्त्री०) सत्तू।
सीतला–(हिं०स्त्री०) देखो शीतला।
सीताफल–(सं०पुं०) शरीफा।
सीत्कार–(सं०पुं०) सिसकारी।
सीद–(सं०पुं०) ब्याज पर रुपया देना।
सीदना–(हिं०क्रि०) दुःख पाना, कष्ट देना।
सीध–(हिं०स्त्री०)ठीक सामने की स्थिति।
सीधा–(हिं०वि०) जो टेढ़ा न हो, बिना पका हुआ अन्न, शान्त, शिष्ट, सहज, दाहिना; (क्रि० वि०) सम्मुख, ठीक सामने की ओर। **सीधापन**–(हिं०पुं०) भोलापन।
सीधे–(हिं०क्रि०वि०) सम्मुख, सामने की ओर।
सीना–(हिं०क्रि०) कपड़े, चमड़े आदि के टुकड़ों को डोरे से जोड़ना।
सीप–(हिं०पुं०) शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजन्तु, सुतुही।
सीपति–(हिं०पुं०) देखो श्रीपति, विष्णु।
सीपर–(हिं०पुं०) ढाल।
सीपी–(हिं०स्त्री०) देखो सीप।
सीबी–(हिं०स्त्री०) सिसकारी।
सीमन्त–(सं०पुं०) स्त्रियों की माँग।
सीमन्तक–(सं०पुं०) सिन्दूर। **सीमन्तिनी**–(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री।
सीमा–(सं०स्त्री०) किसी प्रवेश या वस्तु के विस्तार का अन्तिम स्थान, स्थिति।
सीमातिक्रम–(सं०पुं०)सीवान को डाँकना।
सीमाधिप–(सं०पुं०)सीमा का अध्यक्ष।
सीमाबद्ध–(सं०वि०) रेखा से घिरा हुआ।
सीय–(हिं०स्त्री०) सीता, जानकी।
सीयन–(हिं०स्त्री०) देखो सीवन।

सीर–(सं०पुं०) हल, जोतनेवाला, बैल; (हिं०स्त्री०) वह भूमि जिसको भूस्वामी स्वयं बहुत दिनों से जोतता चला आता हो।
सीरख–(हिं०पुं०) देखो शीर्ष।
सीरवाह, सीरवाहक–(सं०पुं०) हरवाहा।
सीरष–(हिं०पुं०) देखो शीर्ष।
सीरा–(हिं०पुं०) पकाकर मधु के समान गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस, चाशनी।
सील–(हिं०स्त्री०) आर्द्रता, सीड़, तरी; (हिं०पुं०) देखो शील।
सीवड़ी–(हिं०पुं०) गाँव की सीमा।
सीवन–(सं०पुं०) सीने का काम, सिलाई, सन्धि, दरार।
सीवना–(हिं०पुं०) देखो सिवाना, सीना।
सीस–(हिं०पुं०) मस्तक, माथा।
सीसत्रान–(हिं०पुं०) शिरस्त्राण, टोप।
सीसफूल–(हिं०पुं०) फूल के आकार का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है।
सीसा–(हिं०पुं०) एक मूल धातु जो बहुत भारी होती है, जिसका रंग नीलापन लिये काला होता है।
सीसी–(हिं०स्त्री०) सीत्कार, सिसकारी।
सुं–(हिं०प्रत्य०) देखो सों।
सुंघनी–(हिं०स्त्री०) तमाखू के पत्ते की महीन बुकनी जो सूँघी जाती है।
सुंघाना–(हिं०क्रि०) सुंघान की क्रिया कराना।
सुंघावट–(हिं०स्त्री०) सोंधापन, सोंधी महँक।
सुंबी, सुंभी–(हिं०स्त्री०) छेनी जिससे लोहे में छेद किया जाता है।
सु–(सं०उप०) वह उपसर्ग जिसको संज्ञा में जोड़ने से "उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर आदि अर्थ को सूचित करता है"; (वि०) अच्छा उत्तम, श्रेष्ठ; (सर्व०) वह, सो।
सुअटा–(हिं०पुं०) शुक, सुग्गा का बच्चा।
सुअन–(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा, देखो सुमन।
सुअना–(हिं०क्रि०) उत्पन्न होना।
सुअर–(हिं०पुं०) शूकर, सूअर।
सुअवसर–(सं०पुं०) अच्छा अवसर।
सुआउ–(हिं०वि०) दीर्घायु, दीर्घजीवी।
सुआमी–(हिं०पुं०) देखो स्वामी।
सुआर–(हिं०पुं०) सूपकार, रसोइयादार।
सुआसन–(सं०पुं०) बैठने का सुन्दर आसन।
सुआसिनी–(हिं०स्त्री०) देखो सुवासिनी।
सुई–(हिं०स्त्री०) देखो सूई।
सुकचाना–(हिं०क्रि०) देखो सकुचाना।
सुकड़ना–(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकण्ठ–(सं०वि०) सुरीला।
सुकथा–(सं०स्त्री०) उत्तम कथा, सुवाक्य।
सुकर–(सं०वि०) सुसाध्य, जो सहज में किया जा सके। **सुकरता**–(सं०स्त्री०) सौंदर्य, सुन्दरता।
सुकर्म–(सं०पुं०) सत्कर्म, अच्छा काम।
सुकर्मी–(सं०वि०) सदाचारी।
सुकल्प–(सं०वि०) अति निपुण। **सुकल्पित**–(सं०वि०) अच्छी तरह से बनाया हुआ।
सुकान्त–(हिं०क्रि०) अचंभे में आ जाना।
सुकान्ति–(सं०वि०) सुन्दर कान्तिवाला।
सुकाल–(सं०पुं०) सुसमय, उत्तम समय।
सुकीया–(हिं०स्त्री०) देखो स्वकीया।
सुकी–(हिं०स्त्री०) सुग्गी, सारिका।
सुकीर्ति–(सं०स्त्री०) अच्छी कीर्ति।
सुकुआर–(हिं०वि०) देखो सुकुमार।
सुकुड़ना–(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकुति–(हिं०स्त्री०) शुक्ति, सीप।
सुकुमार–(सं०वि०) जिसके अंग कोमल हों। **सुकुमारता**–(सं०स्त्री०) कोमलता।
सुकुमारी–(सं०वि०) कोमलाङ्गी, कोमल अंगवाली।

सुकुरना–(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना ।
सुकुल–(सं०पुं०) उत्तम वंश या कुल; (वि०) जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो ।
सुकुवार–(हिं०वि०) देखो सुकुमार ।
सुकृत–(सं० पुं०) सत्कार्य, पुण्य ।
सुकृतात्मा–(सं०वि०) पुण्यात्मा, धर्मात्मा ।
सुकृति–(सं०स्त्री०) शुभ कार्य ।
सुकृती–(सं०वि०) धार्मिक, पुण्यवान् ।
सुकेशी–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों ।
सुक्कान–(हिं०पुं०) तलवार ।
सुक्ख–(हिं०पुं०) देखो सुख ।
सुक्ति–(सं०स्त्री०) शुक्ति, सिप्पी ।
सुक्र–(हिं०पुं०) देखो शुक्र । **सुक्रित**–(हिं०वि०) देखो सुकृत । **सुक्षम**–(हिं० वि०) देखो सूक्ष्म ।
सुखंडी–(हिं०स्त्री०) बच्चों का एक रोग जिसमें उनका संपूर्ण शरीर सूख जाता है ।
सुख–(सं० पुं०) आत्मा या मनोवृत्ति का वह गुण जिसकी सबको अभिलाषा रहती है । **सुखकर**–(सं०वि०) सुख देनेवाला । **सुखजनक**–(सं०वि०) आनंददायक । **सुखजात**–(सं०वि०) प्रसन्न; (वि०) सुख देनेवाला । **सुखद**–(हिं० वि०) आनन्द देनेवाला, सुखदायी ।
सुखदा–(सं० स्त्री०) सुख देनेवाली ।
सुखदायी–(सं० क्रि०) सुखद, सुख देनेवाला ।
सुखधाम–(सं० पुं०) आनन्द का घर, स्वर्ग । **सुखप्रद**–(सं०वि०) सुख देनेवाला । **सुखभेद्य**–(सं० वि०) शीघ्र टूटनेवाला । **सुखमा**–(हिं० स्त्री०) शोभा, छवि ।
सुखलाना–(हिं०क्रि०) देखो सुखाना ।
सुखवन–(हिं० पुं०) वह न्यूनता या कमी जो किसी वस्तु के सूखने पर होती है ।
सुखवह–(सं०वि०) आनन्द देनेवाला ।
सुखसाध्य–(सं० वि०) जिसके साधन करने में कोई कष्ट न हो, सहज ।
सुखाना–(हिं०क्रि०) अग्नि या धूप से किसी वस्तु का गीलापन दूर करना ।
सुखानी–(हिं०पुं०) मल्लाह, माँझी ।
सुखान्त–(सं०पुं०) वह जिसका अन्त सुखमय हो ।
सुखारा,सुखारी–(हिं०वि०) सुख देनेवाला ।
सुखार्थी–(हिं०वि०) सुख चाहनेवाला ।
सुखाराध्य–(सं०वि०) सुख से आराधनीय ।
सुखाला–(हिं०वि०) आनन्ददायक ।
सुखासन–(सं० पुं०) वह आसन जिस पर बैठने से सुख मिलता हो, पालकी, डोली । **सुखासीन**–(सं०वि०) सुख से बैठा हुआ ।
सुखित–(हिं०वि०) सुखी ।
सुखिया–(हिं०वि०) सुखी, प्रसन्न ।
सुखी–(हिं०वि०) आनन्दित ।
सुख्याति–(सं०स्त्री०) प्रशंसा, यश, प्रसिद्धि ।
सुगणक–(सं०पुं०) अच्छी गणना करनेवाला
सुगति–(सं०स्त्री०) उत्तम गति, मोक्ष ।
सुगन्ध–(सं०वि०) सुवासित ।
सुगन्धमय–(सं०वि०) सुगन्धपूर्ण ।
सुगन्धरा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का फूल ।
सुगन्धि–(सं०पुं०) सुगन्ध, अच्छी महक ।
सुगना–(हिं०पुं०) सुग्गा ।
सुगम–(सं०वि०) सरल, सहज ।
सुगमता–(सं०स्त्री०) सरलता ।
सुगात्र–(सं०वि०) सुन्दर शरीरवाला ।
सुगाना–(हिं०क्रि०) सन्देह करना ।
सुगीति–(सं०स्त्री०) सुन्दर गान ।
सुगुप्त–(सं०वि०) अच्छी तरह से रखा हुआ ।

सुगूढ़–(सं०वि०) अच्छी तरह से गुप्त ।
सुग्गा–(हिं०पुं०) शुक, तोता ।
सुघट–(सं०वि०) जो सहज में बन सकता हो, सुडौल, सुन्दर ।
सुघटित–(सं०वि०) अच्छी तरह से बना हुआ ।
सुघड़–(हिं०वि०) प्रवीण, निपुण, कुशल ।
सुघड़ई–(हिं०स्त्री०) निपुणता । **सुघड़ता**–(हिं० स्त्री०) सुन्दरपन । **सुघड़ाई, सुघड़ापा**–(हिं०) सुंदरता, सुडौलपन, कुशलता ।
सुघर–(हिं०वि०) देखो सुघड़ ।
सुघराई–(हिं०स्त्री०) सुघड़ाई ।
सुघरी–(हिं०स्त्री०) शुभमय, अच्छा मुहूर्त; (वि०) सुन्दर, सुडौल ।
सुच–(हिं०वि०) देखो शुचि, शुद्धता ।
सुचतुर–(सं०वि०) अति चतुर ।
सुचरित–(सं०पुं०) सच्चरित्र ।
सुचरित्रा–(सं०स्त्री०) पतिपरायणा स्त्री ।
सुचाना–(हिं० क्रि०) किसी को सोचने समझने में प्रवृत्त करना ।
सुचार–(हिं०वि०) सुंदर, मनोहर, सुचाल ।
सुचारु–(सं०वि०) अति मनोहर, बहुत सुंदर ।
सुचाल–(हिं०स्त्री०) सदाचार । **सुचाली**–(हिं० वि०) अच्छे चालचलन का ।
सुचि–(हिं०वि०) शुचि; (स्त्री०) सूई ।
सुचिताई–(हिं०स्त्री०) निश्चिन्तता, एकाग्रता, स्थिरता । **सुचिति**–(हिं० वि०) निश्चिन्त ।
सुचित–(सं०वि०) स्थिरचित्त, शान्त, जो किसी काम से निवृत्त हो गया हो ।
सुचिमंत–(हिं०पुं०) सदाचारी ।
सुचिन्तित–(सं०वि०) भली भाँति सोचा विचारा हुआ ।
सुच्छन्द–(हिं०वि०) देखो स्वच्छन्द ।
सुच्छम–(हिं०वि०) सूक्ष्म, थोड़ा ।
सुजड़ी–(हिं०स्त्री०) कटारी ।
सुजन–(सं०पुं०) सज्जन, भद्रपुरुष ।
सुजनता–(सं०स्त्री०) सौजन्य, भलमनसी ।
सुजन्मा–(सं०वि०) अच्छ कुल में उत्पन्न ।
सुजल्प–(सं०पुं०) उत्तम भाषण । **सुजस**–(हिं०पुं०) देखो सुयश ।
सुजागर–(हिं०वि०) सुशोभित ।
सुजात–(सं०वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, सुंदर ।
सुजाति–(सं०स्त्री०) उत्तम जाति का; (वि०) अच्छे कुल का ।
सुजातिया–(हिं०वि०) अच्छे कुल का ।
सुजान–(हिं०वि०) चतुर, निपुण, सज्जन; (पुं०) पति या प्रेमी ।
सुजानता–(सं०स्त्री०) सुजान होने का भाव या धर्म ।
सुजानी–(हिं०वि०) ज्ञानी, पण्डित ।
सुजिह्व–(सं०वि०) मधुरभाषी ।
सुजोग–(हिं०पुं०) सुअवसर, अच्छा अवसर ।
सुजोधन–(हिं०पुं०) देखो सुयोधन ।
सुजोर–(हिं०वि०) दृढ़ ।
सुज्ञान–(सं०पुं०) उत्तम ज्ञान ।
सुझाना–(हिं०क्रि०) दिखलाना ।
सुटकना–(हिं०क्रि०) सिकुड़ना, चाबुक लगाना ।
सुठहर–(हिं०पुं०) अच्छा स्थान ।
सुठार–(हिं०वि०) सुडौल, सुंदर आकृति का ।
सुठि, सुठोना–(हिं०वि०) सुंदर, बढ़िया; (अव्य०) पूरा पूरा ।
सुडौल–(हिं०वि०) सुन्दर आकृति का ।
सुढंग–(हिं०पुं०) अच्छी रीति या ढंग ।
सुढर–(हिं०वि०) सुडौल ।
सुढार–(हिं०वि०) सुडौल, सुन्दर ।
सुतंत, सुतंत्र–(हिं०वि०) स्वतन्त्र ।
सुत–(सं०पुं०) आत्मज, पुत्र, बेटा ।

सुतनु–(हिं०स्त्री०)सुन्दरशरीरवाली स्त्री।
सुतनुता–(सं०स्त्री०)शरीरकी सुन्दरता।
सुतप्त–(सं०वि०) अत्यन्त गरम।
सुतरां–(हिं०अव्य०) अतः निदान।
सुतरी–(हिं०स्त्री०) देखो सुतली।
सुतली–(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी।
सुतवाना–(हिं०क्रि०) सुलवाना।
सुतही–(हिं०स्त्री०) देखो सुतुही।
सुता–(सं०स्त्री०)कन्या, पुत्री, लड़की।
सुतात्मज–(सं०पुं०) नाती, पोता।
सुतापति–(सं०पुं०)दामाद,जामाता।
सुतार–(सं०वि०) अत्यन्त उज्ज्वल, उत्तम, अच्छा।
सुतार्थी–(सं०वि०) पुत्र की कामना करनेवाला।
सुतिन–(हिं०स्त्री०) रूपवती स्त्री।
सुतिनी–(सं०स्त्री०) पुत्रवती स्त्री।
सुतीक्ष्ण–(सं०वि०) अति तीक्ष्ण।
सुतीच्छन–(हिं०वि०) देखो सुतीक्ष्ण।
सुतुही–(हिं०स्त्री०) शुक्ति, सीपी।
सुतेजित–(सं०वि०) सुतीक्ष्ण।
सुथरा–(हिं०वि०) स्वच्छ, निर्मल।
सुथराई–(हिं०स्त्री०) स्वच्छता।
सुदरसन–(हिं०पुं०) देखो सुदर्शन।
सुदि–(सं०स्त्री०) देखो सुदी।
सुदिन–(सं०पुं०)शुभ दिन, अच्छा दिन।
सुदिवस–(सं०पुं०) देखो सुदिन।
सुदी–(हिं०स्त्री०) शुक्ल पक्ष।
सुदीपति–(हिं०स्त्री०) सुदीप्ति।
सुदीधिति–(सं०वि०)बहुत चमकीला।
सुदीप्ति–(सं०स्त्री०) अधिक प्रकाश।
सुदीर्घ–(सं०वि०) बहुत लंबा।
सुदूर–(सं०वि०) बहुत दूर।
सुदृढ़–(सं०वि०) बहुत दृढ़।
सुदृश्य–(सं०वि०) देखने में सुन्दर।
सुदृष्ट–(सं०वि०)अच्छी तरह देखा हुआ।
सुदेश–(सं०पुं०) उत्तम देश।
सुदेस–(हिं०पुं०) स्वदेश।
सुदेह–(सं०पुं०) सुन्दर शरीर; (त्रि०) सुन्दर।
सुदैव–(सं०पुं०)सौभाग्य, अच्छा भाग्य।
सुद्ध–(हिं०वि०) देखो शुद्ध।
सुद्धि–(सं०स्त्री०) देखो शुद्धि।
सुधंग–(हिं०पुं०) अच्छा ढंग।
सुध–(हिं०स्त्री०)स्मरण, स्मृति, चेतना।
सुधबुध–(हिं०स्त्री०) चेतना, ज्ञान।
सुधरना–(हिं०क्रि०) संशोधन होना, बिगड़ हुए को बनाना। सुधराई–(हिं० स्त्री०) सुधरने की क्रिया।
सुधर्मी–(हिं०वि०)धर्मपरायण,धर्मनिष्ठ।
सुधवाना–(हिं०क्रि०) शोधन कराना।
सुधांशु–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
सुधा–(सं०स्त्री०) अमृत, बिजली, दूध, जल, पृथ्वी। सुधाई–(हिं०स्त्री०)सीधा-पन। सुधाकर–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
सुधातु–(सं०पुं०) स्वर्ण, सोना।
सुधादीधिति–(सं०पुं०)सुधांशु, चन्द्रमा।
सुधाधर–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
सुधाना–(हिं०क्रि०) ठीक कराना।
सुधानिधि–(सं०पुं०) चन्द्रमा, समुद्र।
सुधामय–(सं०वि०) अमृत से भरा हुआ। सुधामयूख–(सं०पुं०)चन्द्रमा।
सुधायोनि–(सं०पुं०) चन्द्रमा।
सुधार–(सं०पुं०) सुधारने या दोष दूर करने की क्रिया, संस्कार। सुधारक–(हिं०पुं०) त्रुटियों का संशोधन करने-वाला, संशोधक। सुधारना–(हिं० क्रि०) संशोधन करना।
सुधारा–(हिं०वि०) सरल, सीधा।
सुधाव–(हिं०पुं०) संशोधन, सुधार।
सुधासिन्धु–(सं०पुं०) अमृत-समुद्र।
सुधि–(हिं०स्त्री०) देखो सुध।

सुधिति–(सं०स्त्री०) कुठार, कुल्हाड़ी।
सुधी–(सं०पुं०) पण्डित, विद्वान्।
सुधीर–(सं०वि०) जिसमें बहुत धैर्य हो।
सुधृत–(सं०वि०) दृढ़ता से पकड़ा हुआ।
सुन–(हिं०वि०) देखो सुन्न।
सुनकिरवा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का हरे रंग का फतिंगा।
सुनगुन–(हिं०स्त्री०) टोह, कानाफुसी।
सुनना–(हिं०क्रि०) श्रवण करना।
सुनबहरी–(हिं०स्त्री०) श्लीपद, फीलपाँव का रोग।
सुनय–(सं०पुं०) उत्तम नीति।
सुनयन–(सं०वि०) सुन्दर आँखोंवाला।
सुनवाई–(हिं०स्त्री०) सुनने की क्रिया या भाव। **सुनवैया**–(हिं०वि०) सुनने या सुनानेवाला।
सुनसान–(हिं०वि०) निर्जन, उजाड़।
सुनहरा, **सुनहला**–(हिं०वि०) सोने के रंग का।
सुनहर–(हिं०पुं०) श्वान, कुत्ता।
सुनाई–(हिं० स्त्री०) देखो सुनवाई।
सुनाना–(हिं०क्रि०) कर्णगोचर कराना।
सुनाम–(सं०पुं०) यश, कीर्ति।
सुनामा–(हिं०वि०) यशस्वी।
सुनार–(सं०पुं०) सोने-चाँदी का गहना बनानेवाला। **सुनारी**–(हिं० स्त्री०) सुनार का काम।
सुनावनी–(हिं०स्त्री०) परदेश से किसी सम्बन्धी आदि की मृत्यु का समाचार आना।
सुनिद्र–(सं०वि०) अच्छी तरह सोया हुआ। **सुनिद्रा**–(सं०स्त्री०) गहरी नींद।
सुनिरूपित–(सं०वि०) अच्छी तरह निर्णय किया हुआ।
सुनिर्मल–(सं०वि०) अति स्वच्छ।
सुनिर्मित–(सं०वि०) अच्छी तरह से बना हुआ।
सुनिश्चय–(सं० पुं०) दृढ़ निश्चय।
सुनिश्चित–(सं०वि०) अच्छी तरह निश्चित किया हुआ।
सुनिषण्ण–(सं०वि०) अच्छी तरह से बैठा हुआ।
सुनीति–(सं०स्त्री०) अच्छी नीति।
सुनैया–(हिं०वि०) सुननेवाला।
सुन्दर–(सं०वि०) मनोहर, अच्छा, श्रेष्ट, बढ़िया। **सुन्दरता**–(सं० स्त्री०) मनोहरता।
सुन्दरी–(सं०स्त्री०) रूपलावण्यसम्पन्न स्त्री।
सुन्न–(हिं०वि०) निर्जीव, निःस्तब्ध; (पुं०) शून्य।
सुन्नसान–(हिं०वि०) देखो सूनसान।
सुन्ना–(हिं०पुं०) शून्य, बिन्दु।
सुपक्ष–(सं०वि०) सुन्दर पंखोंवाला।
सुपच–(हिं०पुं०) श्वपच, चाण्डाल, डोम।
सुपट–(सं०पुं०) सुन्दर वस्त्र।
सुपथ–(सं०पुं०) सन्मार्ग, अच्छा मार्ग।
सुपथ्य–(सं०पुं०) वह आहार या भोजन जो रोगी के लिए हितकर हो।
सुपद–(सं०वि०) सुन्दर पैरोंवाला।
सुपन–(हिं०पुं०) स्वप्न, सपना।
सुपना–(हिं०पुं०) स्वप्न, सपना।
सुपनाना–(हिं०क्रि०) स्वप्न दिखलाना।
सुपरकास–(हिं०पुं०) ताप, गरमी।
सुपरस–(हिं०पुं०) देखो स्पर्श।
सुपर्ण–(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया; (वि०) सुन्दर पत्तोंवाला, सुन्दर परोंवाला।
सुपवित्र–(सं०पुं०) अति पवित्र।
सुपह–(हिं०पुं०) राजा।
सुपात्र–(सं०पुं०) अच्छा पात्र, वह जो किसी कार्य के लिये उपयुक्त हो।
सुपारी–(हिं०स्त्री०) नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसके फल टुकड़े-टुकड़े काटकर पान के साथ खाये जाते हैं।

सुपास–(हि०पुं०) सुख, सुविधा।
सुपासी–(हि०वि०) आनन्ददायक।
सुपुरुष–(सं०पुं०) सत्पुरुष, सज्जन।
सुपूत–(सं०वि०) अत्यन्त पवित्र।
सुपूत–(हि०पुं०) अच्छा पुत्र। **सुपूती**–(हि०स्त्री०) सुपूत होने का भाव।
सुपेद–(हि०वि०) श्वेत। **सुपेदी**–(हि०स्त्री०) सफेदी।
सुप्त–(सं०वि०) निद्रित, सोया हुआ।
सुप्तज्ञान–(सं० पुं०) स्वप्न, सपना।
सुप्ति–(सं०स्त्री०) निद्रा, नींद, उँघाई।
सुप्रकाश–(सं०वि०) उत्तम प्रकाशयुक्त।
सुप्रजा–(सं०स्त्री०) अच्छी सन्तान, उत्तम प्रजा।
सुप्रज्ञ–(सं०वि०) बहुत बुद्धिमान्।
सुप्रतिज्ञ–(सं०वि०) जो अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे। **सुप्रतिज्ञा**–(सं०स्त्री०) दृढ़ प्रतिज्ञा।
सुप्रतिष्ठ–(सं०वि०) बहुत प्रसिद्ध।
सुप्रतिष्ठा–(सं०स्त्री०) प्रसिद्धि, सुनाम।
सुप्रतिष्ठित–(सं० वि०) उत्तम रूप से प्रतिष्ठित।
सुप्रबुद्ध–(सं०वि०) जिसको अच्छा बोध या ज्ञान हो।
सुप्रभ–(सं०वि०) सुन्दर।
सुप्रभात–(सं० पुं०) मंगल-सूचक प्रातःकाल।
सुप्रलम्भ–(सं०वि०) सहज में मिलने योग्य।
सुप्रलाप–(सं०पुं०) सुन्दर भाषण।
सुप्रसन्न–(सं०वि०) अत्यन्त निर्मल, बहुत प्रसन्न।
सुप्रसिद्ध–(सं०वि०) अति विख्यात।
सुफल–(सं० पुं०) सुन्दर फल, अच्छा परिणाम; (वि०) सुन्दर फलवाला, कृतार्थ।
सुफेद–(हि०पुं०) देखो सफेद।
सुबन्धु–(सं०पुं०) अच्छा मित्र।
सुबास–(हि०स्त्री०) सुगन्ध, सुन्दर निवास।
सुबासना–(हि०स्त्री०) सुगन्ध; (हि०क्रि०) सुगन्धित करना, महँकना।
सुबाहु–(सं०वि०) दृढ़ या सुन्दर बाहुवाला।
सुबिस्ता, सुबीता–(हि०पुं०) देखो सुभीता
सुबुद्धि–(सं०वि०) बुद्धिमान्; (स्त्री०) उत्तम बुद्धि।
सुबोध–(सं०वि०) उत्तम ज्ञानयुक्त, अच्छी बुद्धिवाला।
सुबोधिनी–(सं०स्त्री०) अच्छी ज्ञानवाली।
सुभ–(हि०वि०) देखो शुभ।
सुभग–(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर, भाग्यवान्। **सुभगा**–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो पति की प्यारी हो।
सुभट–(सं०पुं०) बड़ा योद्धा, अच्छा सैनिक।
सुभड़–(हि०पुं०) शूर, वीर।
सुभद्र–(सं०पुं०) कल्याण, सौभाग्य।
सुभाई, सुभाउ–(हि०पुं०) देखो स्वभाव; (क्रि०वि०) स्वभावतः, सहज भाव से।
सुभाग–(हि०पुं०) सौभाग्य, भाग्यवान्।
सुभागी–(हि०वि०) भाग्यवान्, भाग्यशाली।
सुभाना–(हि०क्रि०) शोभित होना।
सुभाय–(हि० पुं०) स्वभाव।
सुभाव–(हि०पुं०) स्वभाव।
सुभाषण–(सं०पुं०) सुन्दर भाषण।
सुभाषित–(सं० वि०) अच्छी तरह कहा हुआ। **सुभाषी**–(हि०वि०) मधुर बोलनेवाला।
सुभिक्ष–(सं०पुं०) ऐसा समय जिसमें भोजन प्रचुर मिले और अन्न प्रचुर हो।

सुभीता-(हिं०पुं०) सुगमता, सुयोग्य ।
सुभीम-(सं०वि०) बहुत डरावना ।
सुभीरु-(सं०वि०) बड़ा डरपोक ।
सुभुक्त-(सं०वि०) अच्छी तरह खाया हुआ ।
सुभुज-(सं०वि०) सुन्दर भुजाओंवाला ।
सुभुति-(सं०स्त्री०) उन्नति ।
सुभूमि-(सं०स्त्री०) अच्छी भूमि ।
सुभूषण-(सं० पुं०) उत्तम अलंकार ।
सुभेषज-(सं० पुं०) उत्तम औषधि ।
सुभोज-(सं० पुं०) उत्तम भोजन ।
सुभौटी-(हिं०स्त्री०) शोभा ।
सुभ्र-(सं० पुं०) देखो शुभ्र ।
सुभ्रु-(सं०स्त्री०) सुन्दर भौंह ।
सुमति-(सं०पुं०) सुबुद्धि, अच्छी मति; (वि०) अत्यन्त बुद्धिमान् ।
सुमन-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर ।
सुमनस्क-(सं०वि०) प्रसन्न, सुखी ।
सुमनोहर-(सं०वि०) बड़ा सुन्दर ।
सुमन्त्रित-(सं०वि०) अच्छी तरह से मन्त्रणा किया हुआ ।
सुमन्त्री-(सं०पुं०) कुशल मन्त्री ।
सुमन्द्र-(सं०पुं०) मधुर ध्वनि ।
सुमरन-(हिं०पुं०) देखो सुमरनी ।
सुमरना-(हिं०क्रि०) स्मरण करना ।
सुमरनी-(हिं० स्त्री०) नाम जपने की छोटी माला ।
सुमार्ग-(सं०पुं०) उत्तम मार्ग ।
सुमिरण-(हिं०पुं०) देखो स्मरण ।
सुमिरना-(हिं०क्रि०) नाम जपना ।
सुमुख-(सं०पुं०) सुन्दर मुख; (वि०) सुन्दर, मनोहर ।
सुमुखी-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री ।
सुमुहूर्त-(सं०पुं०) शुभ समय ।
सुमृति-(हिं०स्त्री०) देखो स्मृति ।
सुमृत्यु-(सं०पुं०) अच्छी मृत्यु ।
सुमेध, सुमेधा-(सं०वि०) बुद्धिमान् ।
सुम्मी-(हिं०स्त्री०) धातु में ठोंककर छिद्र करने का अस्त्र ।
सुयश-(सं०वि०) अति यशस्वी; (पुं०) सुकीर्ति, अच्छा यश ।
सुयोग-(सं०पुं०) अच्छा अवसर ।
सुयोग्य-(सं०वि०) बहुत योग्य ।
सुर-(सं०पुं०) देवता, ऋषि, मुनि ।
सुरकना-(हिं०क्रि०) वायु के साथ धीरे धीरे ऊपर की ओर खींचना ।
सुरक्ष-(सं०वि०) अच्छी तरह रक्षा किया हुआ । सुरक्षण-(सं०पुं०) रखवाली । सुरक्षित-(हिं०वि०) अच्छी तरह से रक्षा किया हुआ ।
सुरग-(हिं०पुं०) स्वर्ग ।
सुरगी-(हिं०पुं०) देखो स्वर्गीय, देवता ।
सुरगी नदी-(हिं०स्त्री०) गंगा ।
सुरगुरु-(सं०पुं०) बृहस्पति ।
सुरगैया-(हिं०स्त्री०) कामधेनु ।
सुरङ्ग-(हिं०स्त्री०) भूमि या पहाड़ खोदकर बनाया हुआ मार्ग, सेंध ।
सुरज-(हिं०पुं०) देखो सूर्य ।
सुरजन-(सं०पुं०) देवताओं का समूह, सज्जन, चतुर ।
सुरझन-(हिं०स्त्री०) देखो सुलझन ।
सुरझना-(हिं०क्रि०) देखो सुलझना ।
सुरत-(हिं०स्त्री०) ध्यान, याद ।
सुरता-(हिं०स्त्री०) चिन्ता, ध्यान, चेत, सुध ।
सुरतान-(हिं०स्त्री०) स्वर का अलाप ।
सुरति-(हिं०स्त्री०) स्मरण, सुध, चेत ।
सुरती-(हिं० स्त्री०) तमाखू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ खाया जाता है ।
सुरथान-(हिं०पुं०) स्वर्ग ।
सुरदीर्घिका-(सं०स्त्री०) आकाशगंगा,

मन्दाकिनी। सुरदुन्दुभि-(सं०स्त्री०) देवताओं का नगाड़ा।
सुरदेश-(हिं०पुं०) देवलोक, स्वर्ग।
सुरद्रुम-(सं०पुं०) कल्पवृक्ष।
सुरपथ-(सं०पुं०) आकाश।
सुरबृच्छ-(हिं०पुं०) देखो सुरवृक्ष।
सुरबेल-(हिं०स्त्री०) कल्पलता।
सुरभवन-(सं०पुं०) सुरपुरी, अमरावती।
सुरभान-(हिं०पुं०) इन्द्र, सूर्य।
सुरभि-(सं०पुं०) सुगन्ध; (वि०) सुगंधित, सुन्दर।
सुरभित-(सं०वि०) सुगंधित।
सुरभूप-(सं०पुं०) इन्द्र, विष्णु।
सुरभोग-(सं०पुं०) अमृत।
सुरभौन-(हिं०पुं०) देखो सुरभवन।
सुरमणि-(सं०पुं०) चिन्तामणि।
सुरम्य-(सं०वि०) बहुत सुन्दर।
सुरयान-(सं०पुं०) देवताओं का रथ।
सुररुख-(हिं०पुं०) कल्पवृक्ष।
सुरलासिका-(सं०स्त्री०) बंसी की ध्वनि
सुरलोक-(सं०पुं०) स्वर्ग।
सुरलोकसुन्दरी-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुरवाणी-(सं०स्त्री०) संस्कृत भाषा।
सुरवास-(सं०पुं०) देवस्थान, स्वर्ग।
सुरवाहिनी-(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
सुरविटप-(सं०पुं०) कल्पवृक्ष।
सुरस-(सं०वि०) स्वादिष्ठ, सुन्दर, रसीला।
सुरसती-(हिं०स्त्री०) देखो सरस्वती।
सुरसिन्धु-(सं०पुं०) गंगा।
सुरसुत-(सं०पुं०) देवपुत्र।
सुरसुन्दर-(सं०वि०) अत्यन्त सुन्दर।
सुरसुन्दरी-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुरसुरभी-(सं०स्त्री०) कामधेनु।
सुरसुराना-(हिं०क्रि०) खुजली होना।
सुरसुराहट, सुरसुरी-(हिं०स्त्री०) खुजली, गुदगुदी।
सुरसेना-(सं०स्त्री०) देवताओं की सेना।
सुरहरा-(हिं०वि०) सुरसुर शब्द से युक्त।
सुरही-(हिं०स्त्री०) सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जुआ खेला जाता है।
सुरा-(सं०स्त्री०) मद्य, जल, पानी।
सुराई-(हिं०स्त्री०) शूरता, वीरता।
सुराग-(हिं०पुं०) सुन्दर राग, अत्यंत प्रेम।
सुरगाय-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जंगली गाय जिसकी पूंछ का चमर बनता है। सुरागार, सुरागृह-(सं० पुं०) मद्यगृह।
सुराङ्गना-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुराचार्य-(सं०पुं०) बृहस्पति।
सुराज-(हिं०पुं०) देखो स्वराज्य।
सुराज्य-(सं०पुं०) वह राज्य या शासन जिसमें प्रजा को सुख और शांति मिले।
सुराधिप, सुराधीश-(सं०पुं०) इन्द्र।
सुरानीक-(सं०पुं०) देवताओं की सेना।
सुरापान-(सं०पुं०) मद्य पीना।
सुरापगा-(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
सुरासार-(सं०पुं०) मद्यसार।
सुरासुर-(सं०पुं०) देवता और दानव।
सुरीला-(हिं०वि०) मीठे सुरवाला।
सुरुख-(हिं०वि०) सदय, अनुकूल।
सुरुचि-(सं०पुं०) उत्तम रुचि, अत्यन्त प्रसन्नता।
सुरुचिर-(सं०वि०) अति मनोहर।
सुरुजमुखी-(हिं०पुं०) सूर्यमुखी।
सुरूप-(सं०वि०) सुन्दर, विद्वान्।
सुरूपता-(सं०स्त्री०) सुन्दरता।
सुरूपा-(सं०वि०) सुन्दर रूपवाली।
सुरेन्द्रचाप-(सं०पुं०) इन्द्रधनुष।
सुरैत-(हिं०स्त्री०) रखेली, उपपत्नी।
सुरैतिन-(हिं०स्त्री०) रखनी, रखेली।
सुरोचि-(हिं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुरौकस-(सं०पुं०) स्वर्ग।

सुर्ती, सुर्मा–देखो सुरती, सुरमा।
सुलक्षण–(सं०वि०) शुभ लक्षणों से युक्त, भाग्यवान्।
सुलगना–(हिं०क्रि०) प्रज्वलित होना, दहकना। सुलगाना–(हिं०क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना, दुःखी करना।
सुलग्न–(सं०पुं०) शुभ मुहूर्त।
सुलच्छ–(हिं०वि०) सुन्दर।
सुलझन–(हिं०स्त्री०) सुलझाने की क्रिया या भाव। सुलझाना–(हिं०क्रि०) उलझन दूर करना। सुलझाव–(हिं० पुं०) सुलझने की क्रिया।
सुलभ–(सं० वि०) सहज में मिलनेवाला, सुगम। सुलभता–(सं०स्त्री०) सुगमता।
सुलभेतर–(सं०वि०) दुर्लभ, कठिन, महँगा।
सुलभ्य–(सं०वि०) सहज में मिलनेवाला।
सुललित–(सं०वि०) अत्यन्त सुन्दर।
सुलाना–(हिं०क्रि०) सोने में प्रवृत्त करना।
सुलिखित–(सं०वि०) अच्छी तरह लिखा हुआ।
सुलेख–(सं०पुं०) सुन्दर लिखावट।
सुलेखक–(सं०पुं०) अच्छा लेख या निबन्ध लिखनेवाला।
सुलोक–(सं०पुं०) स्वर्ग।
सुलोचन–(सं०वि०) सुन्दर आँखोंवाला।
सुलोचनी–(हिं०वि०) सुन्दर नेत्रवाली।
सुवक्ष–(सं०वि०) जिसकी छाती सुन्दर और चौड़ी हो।
सुवदन–(सं०वि०) सुन्दर मुखवाला।
सुवना–(हिं०पुं०) सुग्गा।
सुवर्ण–(सं०पुं०) सोना, कांचन।
सुवर्णकर्ता, सुवर्णकार–(सं०पुं०) सोनार।
सुवर्तुल–(सं०वि०) एकदम गोल।
सुवर्त्म–(सं०पुं०) सीधा पथ।
सुवसन–(सं०पुं०) उत्तम वस्त्र।
सुवा–(हिं०पुं०) सुग्गा।
सुवाक्य–(सं०पुं०) मधुर भाषा।
सुवास–(सं०पुं०) अच्छी गन्ध, सुन्दर घर।
सुवासित–(सं०वि०) सुगन्धयुक्त।
सुवासिनी–(सं०स्त्री०) सधवा स्त्री।
सुविक्रम–(सं०वि०) अत्यन्त साहसी।
सुविचक्षण–(सं०वि०) बहुत बुद्धिमान्।
सुविख्यात–(सं०वि०) बहुत प्रसिद्ध।
सुविचार–(सं०पुं०) उत्तम विचार।
सुवितत–(सं०वि०) अच्छी तरह फैला हुआ।
सुविदग्ध–(सं०वि०) बहुत चतुर।
सुविदित–(सं०वि०) अच्छी तरह जाना हुआ।
सुविधा–(हिं०स्त्री०) देखो सुभीता।
सुविधान–(सं०पुं०) अच्छा नियम।
सुविनीत–(सं०वि०) अत्यन्त नम्र।
सुवेश–(सं०वि०) सुन्दर वेश से सुसज्जित।
सुवैया–(हिं०वि०) सोनेवाला।
सुवो–(हिं०पुं०) शुक, सुग्गा।
सुव्यक्त–(सं०वि०) बहुत स्पष्ट।
सुव्यवस्थित–(सं०वि०) जिसकी व्यवस्था अच्छी तरह से की गई हो।
सुव्याहृत–(सं०वि०) अच्छी तरह से कहा हुआ।
सुशरीर–(सं०वि०) सुडौल शरीरवाला।
सुशासित–(सं०वि०) अच्छी तरह से शासित।
सुशिक्षित–(सं०वि०) उत्तम रूप से शिक्षित।
सुशील–(सं०वि०) विनीत, नम्र, सरल, सीधा। सुशीलता–(सं०स्त्री०) नम्रता।
सुशोभन–(सं०वि०) अत्यन्त शोभायुक्त, दिव्य। सुशोभित–(सं०वि०) अत्यन्त शोभायमान।
सुश्रुत–(सं०वि०) प्रसिद्ध।

सुश्रुखा–(हिं०स्त्री०) देखो शुश्रूषा।
सुश्रुव–(सं०वि०) प्रसिद्ध।
सुश्रूषा–(हिं०स्त्री०) देखो शुश्रूषा।
सुश्लिष्ट–(सं०वि०) अति दृढ़।
सुष–(हिं०पुं०) देखो सुख।
सुषमा–(सं०स्त्री०) परम शोभा, अत्यंत सुन्दरता।
सुषमाशाली–(सं०वि०) जिसमें अधिक शोभा हो।
सुषुप्त–(सं०वि०) गहरी नींद में सोता हुआ। सुषुप्ति–(सं०स्त्री०) गहरी नींद।
सुषोपति–(हिं०स्त्री०) देखो सुषुप्ति।
सुषोपित–(सं०वि०) गहरी नींदयुक्त।
सुष्ठुता–(सं० स्त्री०) सौभाग्य, कल्याण, सुन्दरता।
सुसकना–(हिं०क्रि०) देखो सुसुकना।
सुसङ्ग–(सं०पुं०) उत्तम संगति।
सुसङ्गति–(सं०वि०)सत्संग, अच्छी संगत।
सुसङ्गृहीत–(सं०वि०) अच्छी तरह से संग्रह किया हुआ।
सुसज्जित–(सं०वि०) अच्छी तरह से सजाया हुआ।
सुसताना–(हिं०क्रि०) श्रम मिटाना।
सुसर, सुसुर–(हिं०पुं०) देखो ससुर।
सुसराल–(हिं०स्त्री०) ससुर का घर।
सुसरित–(हिं०पुं०) मन्दाकिनी, गंगा।
सुसा–(हिं०स्त्री०) स्वसा, बहन।
सुसाध्य–(सं०वि०) जिसका साधन सहज में किया जा सके।
सुसाना–(हिं०क्रि०) सिसकना।
सुसिकता–(सं०स्त्री०) उत्तम बालू।
सुसीत–(हिं०वि०) शीतल, ठंढा।
सुसुकना–(हिं०क्रि०) देखो सिसकना।
सुसूक्ष्म–(सं०वि०) अति सूक्ष्म।
सुस्थ–(हिं०वि०) नीरोग, स्वस्थ।
सुस्थता–(सं०स्त्री०)आरोग्य, आनन्द।
सुस्थित–(सं०वि०)अविचल, दृढ़, स्वस्थ, नीरोग। सुस्थिति–(सं० स्त्री०) आनन्द। सुस्थिर–(सं०वि०) प्रसन्न, अविचल, दृढ़।
सुस्वन–(सं०वि०)उत्तम शब्द या ध्वनि
सुस्वप्न–(सं०पुं०) शुभ स्वप्न।
सुस्वर–(सं० पुं०) उत्तम स्वर, सुरीला।
सुहंगम–(हिं०वि०) सहज, सरल।
सुहटा–(हिं०वि०) सुन्दर, सुहावना।
सुहड़–(हिं०पुं०) सुभट, शूर, वीर।
सुहाग–(हिं०पुं०) स्त्री की सधवा रहने की अवस्था, सौभाग्य। सुहागिन–(हिं०स्त्री०) सधवा स्त्री। सुहागिनी, सुहागिन–(हिं०स्त्री०) सुहागिन।
सुहाना–(हिं०क्रि०) शोभा देना, अच्छा लगना।
सुहाल–(हिं०पुं०)मैदे का बना हुआ एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव–(हिं०वि०) सुन्दर, सुहावना।
सुहावन, सुहावना–(हिं० वि०) सुन्दर, रमणीक।
सुहास, सुहासी–(हिं० वि०) सुन्दर मुस्कानवाली।
सुहू–(सं०पुं०) उग्रसेन के एक पुत्र।
सुहृत्, सुहृद्–(सं०पुं०)मित्र, बन्धु,सखा; (वि०) अच्छे हृदयवाला।
सुहृदय–(सं०वि०) सहृदय, स्नेहशील।
सुहेला–(हिं० वि०) सुखदायक, सुन्दर।
सूं–(हिं०अव्य०) तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिह्न, सों, से।
सूंघना–(हिं०क्रि०) महँक लेना।
सूंघा–(हिं०पुं०) भेदिया।
सूंड़–(हिं०पुं०) हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती है और भूमि तक लटकती रहती है, शुण्डादण्ड, शुण्ड।
सूंडा–(हिं०पुं०) हाथी का सूंड़।

सूंस–(हि०स्त्री०) एक बड़ा जलजन्तु ।
सूंह–(हि०अव्य०) सन्मुख, सामने ।
सूअर–(हि०पुं०) शूकर ।
सूआ–(हि०पुं०) बड़ी सूई, सूजा, सुग्गा ।
सूई–(हि०स्त्री०) महीन काँटा, कपास अनाज आदि का अँखुआ, सूई के आकार की कोई वस्तु ।
सूक–(हि०पुं०) देखो शुक्र ।
सूकना–(हि०क्रि०) सूखना ।
सूकर–(सं०पुं०) शूकर, सूअर ।
सूकरी–(सं०स्त्री०) शूकरी, सुअरी ।
सूका–(हि०पुं०) चार आने के मूल्य की मुद्रा, चवन्नी ।
सूक्त–(सं०वि०) अच्छी तरह कहा हुआ; (पुं०) उत्तम कथन, उत्तम भाषण ।
सूक्षम–(हि०वि०) देखो सूक्ष्म ।
सूक्ष्म–(सं०वि०) बहुत महीन; (पुं०) परिमाण । **सूक्ष्मकोण**–(हि०पुं०) समकोण से छोटा कोण ।
सूक्ष्मदर्शक यन्त्र–(सं०पुं०) अणुवीक्षण यन्त्र, वह यन्त्र जिससे सूक्ष्म पदार्थ बड़े देख पड़ते हैं ।
सूक्ष्मदर्शिता–(सं० स्त्री०) सूक्ष्म बातों को सोचन-समझने का गुण । **सूक्ष्मदर्शी**–(सं०वि०) सूक्ष्म बातों को समझनेवाला । **सूक्ष्मदृष्टि**–(सं०स्त्री०) वह जो सूक्ष्मता समझता हो ; **सूक्ष्ममति**–(सं०वि०) तीक्ष्णबुद्धि । **सूक्ष्मवस्त्र**–(सं० पुं०) महीन कपड़ा ।
सूखना–(हि०क्रि०) गीलापन हट जाना, रसहीन होना, नष्ट होना, दुर्बल होना ।
सूखा–(हि०वि०) जिसमें जल का अंश न रह गया हो, तेजरहित, कठोर, केवल; (पुं०) पानी का न बरसना, दुर्बलता, जलहीन स्थान ।
सूचक–(सं० वि०) सूचना देनेवाला, ज्ञापक, बोधक, गुप्तचर, भेदिया ।
सूचना–(सं०स्त्री०) विज्ञप्ति, ज्ञापन ।
सूचनापत्र–(सं०पुं०) विज्ञापन, विज्ञप्ति ।
सूचनीय–(सं०वि०) सूचना करने योग्य ।
सूचि–(हि०वि०) पवित्र, शुद्ध । **सूचिक**–(सं० पुं०) दरजी । **सूचिका**–(सं० स्त्री०) सूई ।
सूचित–(सं०वि०) ज्ञापित, बतलाया हुआ ।
सूचिभेद्य–(सं०वि०) बहुत घना ।
सूची–(सं० स्त्री०) सूई, तालिका, दृष्टि, भेदिया । **सूचीकर्म**–(सं०पुं०) सिलाई का काम । **सूचीपत्र**–(सं०पुं०) तालिका ।
सूच्छम, सूच्छिम–(हि०वि०) देखो सूक्ष्म ।
सूच्याकार–(सं०वि०) सूई के आकार का लंबा और नुकीला ।
सूछम–(हि०वि०) देखो सूक्ष्म ।
सूजन–(हि०स्त्री०) शोथ, फुलाव ।
सूजना–(हि० क्रि०) शोथ होना ।
सूजा–(हि०पुं०) मोटी बड़ी सूई ।
सूजी–(हि०स्त्री०) गहूँ का दरदरा आटा ।
सूझ–(सं०स्त्री०) दृष्टि, उद्भावना । **सूझना**–(हि०क्रि०) देख पड़ना, ध्यान में आना ।
सूत–(सं०पुं०) सारथि, बढ़ई, सूत्रकार ।
सूत–(हि०पुं०) कपड़ा बुनने का धागा, तार, तन्तु, तागा ।
सूतक–(सं०पुं०) वह अशौच जो सन्तान होने पर परिवारवालों को होता है, मरणाशौच जो परिवार में किसी के मरने पर होता है ; **सूतकी**–(सं० स्त्री०) जिसको सूतक लगा हो ।
सूतधार–(हि०पुं०) बढ़ई ।
सूतना–(हि०क्रि०) निद्रा लेना, सोना ।
सूता–(हि०पुं०) तन्तु, सूत; (स्त्री०) वह स्त्री जिसने बच्चा जना हो ।

सूतिका–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो। **सूतिकागार, सूतिकागृह**–(सं०पुं०) प्रसवगृह, सौरी।
सूतिगृह–(सं०पुं०) देखो सूतिकागार।
सूती–(हिं०वि०) सूत का बना हुआ।
सूत्र–(सं०पुं०) तन्तु, सूत, तागा, जनेऊ, व्यवस्था, नियम, कारण, मूल, पता, थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो। **सूत्रकार**–(सं०पुं०) सूत्रों की रचना करनेवाला, बढ़ई। **सूत्रग्रन्थ**–(सं० पुं०) मूल सूत्र में रचित ग्रन्थ।
सूत्रधार–(सं० पुं०) नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट।
सूथनी–(हिं०स्त्री०)स्त्रियों के पहनने का पायजामा, सुथना।
सूथार–(हिं०पुं०) बढ़ई, सुनार।
सूद–(सं० पुं०) सूपकार, रसोइयादार।
सूदक–(सं०वि०) नाश करनेवाला।
सूदशाला–(हिं०स्त्री०) रसोईघर।
सूदन–(सं०पुं०)अंगीकार करने की क्रिया, वध, नाश।
सूदना–(हिं०क्रि०) नाश करना।
सूदशाला–(सं०स्त्री०) पाकशाला।
सूदी–(हिं०वि०) ब्याज पर लिया हुआ।
सूधा–(हिं०वि०) सीधा, सरल। **सूधे**–(हिं०क्रि०वि०) सीधे से।
सून–(सं०पुं०) प्रसव, फल, पुत्र; (वि०) फूला हुआ, विकसित, उत्पन्न।
सूनसान–(हिं०वि०) निर्जन।
सूना–(हिं०वि०) जनहीन; (पुं०) निर्जन स्थान। **सूनापन**–(हिं०पुं०) एकान्त।
सूनु–(सं०पुं०) सूर्य, पुत्र, बेटा।
सूनृत–(सं०वि०)सत्य और प्रिय, दयालु। **सूनृता**–(सं०स्त्री०) सत्य और प्रिय भाषण, सत्य।

सूप–(सं० पुं०) पकी हुई दाल, रसदार तरकारी, बाण, तीर; (हिं० पुं०) अनाज फटकने का सींक का डगरा।
सूपक–(हिं०पुं०) रसोइयादार।
सूपनखा–(हिं०स्त्री०) देखो शूर्पनखा।
सूपशास्त्र–(सं० पुं०) पाकशास्त्र। **सूपस्थान**–(सं०पुं०) पाकशाला।
सूपा–(हिं०पुं०) शूर्प, सूप।
सूभर–(हिं०वि०) शुभ्र, सुन्दर, सफेद।
सूर–(हिं०वि०) शूरवीर; (हिं०पुं०) सूर्य। **सूरकन्द**–(सं०पुं०) जमीकन्द, सूरन।
सूरजमुखी–(हिं०पुं०) एक पौधा जिसमें पीले रंग के बड़े फूल लगते हैं, सूर्यास्त के समय यह फूल नीचे को झुकता जाता है और सूर्योदय होने पर फिर से उठने लगता है।
सूरण–(सं०पुं०) जमीकन्द, ओल।
सूरता,सूरताई–(हिं०स्त्री०) देखो शूरता।
सूरति–(हिं० स्त्री०) स्मरण, सुध सूरत।
सूरन–(हिं०पुं०) जमीकन्द, ओल।
सूरि–(सं०पुं०) पण्डित, विद्वान्, सूर्य।
सूरी–(सं०स्त्री०) पंडिता, विदुषी।
सूरुज–(हिं० पुं०) देखो सूर्य।
सूर्प–(सं०पुं०) शूर्प, सूप।
सूर्य–(सं० पुं०) रवि ग्रह, सूरज। **सूर्यकमल**–(सं०पुं०) सूरजमुखी का फूल। **सूर्यकान्त**–(सं०पुं०) सूर्यमणि। **सूर्यपत्नी**–(सं० स्त्री०) छाया। **सूर्यपात**–(सं० पुं०)सूर्य की किरण। **सूर्यमण्डल**–(सं०पुं०) सूर्य का घरा।
सूर्यरश्मि–(सं०पुं०) सूर्य की किरण।
सूर्यवल्लभा–(सं०स्त्री०) कमलिनी।
सूर्यवार–(सं०पुं०) रविवार।

सूर्यास्त–(सं०पुं०) सूर्य के डूबने का समय। **सूर्योदय**–(सं०पुं०) सूर्य के निकलने का समय, प्रातःकाल।
सूल–(हिं० पुं०) बरछा, भाला, कोई चुभनेवाली नुकीली वस्तु, भाला चुभने के समान पीड़ा। **सूलना**–(हिं०क्रि०) भाले से छेदना या छिदना, पीड़ित होना।
सूली–(हिं०स्त्री०) प्राणदण्ड देने की एक प्राचीन रीति जिसमें अपराधी नुकीले डंडे के ऊपर बैठा दियां जाता था और उसके मस्तक पर चोट दी जाती थी, फाँसी।
सूवना–(हिं०क्रि०) बहना।
सूवा–(हिं०पुं०) शुक, सुग्गा।
सूस, सूसभार–(हिं०पुं०) शिशुमार।
सूसृंखला–(हिं०स्त्री०) देखो शृंखला।
सृङ्ग–(हिं०पुं०) देखो शृंग।
सृक–(सं०पुं०) माला।
सृगाल–(सं०पुं०) सियार, गीदड़।
सृगालिनी, सृगाली–(सं० स्त्री०) सियारिन, लोमड़ी।
सृजक–(हिं०पुं०) सृष्टि करनेवाला।
सृजन–(हिं०पुं०) सृष्टि करने की क्रिया।
सृजनहार–(हिं०पुं०) सृष्टिकर्ता।
सृजना–(हिं०क्रि०) सृष्टि करना।
सृष्टि–(सं०स्त्री०) निर्माण, रचना, जगत् की उत्पत्ति, संसार। **सृष्टि-कर्ता**–(सं०पुं०) संसार की रचना करने-वाले ब्रह्मा, ईश्वर। **सृष्टिविज्ञान**–(सं०पुं०) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि-रचना आदि का विचार हो।
सेंक–(हिं० स्त्री०) भूनने या सेंकने की क्रिया या भाव। **सेंकना**–(हिं० क्रि०) आँच के समीप अथवा आग पर रखकर भूनना।
सेंगरा–(हिं०पुं०) वह मोटा डंडा जिसपर लटकाकर भारी पत्थर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।
सेंत–(हिं०स्त्री०) कुछ व्यय न होना, पास का कुछ न लगना।
सेंथी–(हिं०पुं०) बरछी, भाला।
सेंदुर–(हिं०पुं०) देखो सिन्दूर।
सेंध–(हिं० स्त्री०) चोरी करने के लिये भीत तोड़कर बनाया हुआ छेद।
सेंधा–(हिं०पुं०) सैन्धव, लाहौरी नमक।
सेंधिया–(हिं०वि०) भीत में सेंध लगाने-वाला।
सेंधुर–(हिं०पुं०) देखो सेंदुर, सिन्दूर।
सेंवई–(हिं०स्त्री०) मैदे के सुखाये हुए सूत के समान महीन लच्छे जो घी में तलकर तथा दूध में खीर बनाकर खाये जाते हैं।
सेंहुड़–(हिं० पुं) थूहर।
से–(हिं०) करण और अपादान कारक का चिह्न, तृतीया और पंचमी की विभक्ति; (हिं०वि०) समान, सदृश; (सर्व०) वे; (स्त्री०) सी।
सेउ–(हिं०पुं०) देखो सेब।
सेक–(सं०पुं०) जलसिञ्चन, सिचाव।
सेकतव्य–(सं०वि०) सींचनेयोग्य।
सेखर–(हिं०पुं०) देखो शेखर।
सेचक–(सं०वि०) सींचनेवाला; (पुं०) मेघ, बादल। **सेचन**–(सं० पुं०) सिंचाई, छिड़काव। **सेचनीय**–(सं०त्रि०) सींचने योग्य। **सेचित**–(सं० त्रि०) सींचा हुआ।
सेज–(सं०स्त्री०) शय्या, पलंग, बिछौना।
सेझना–(हिं०क्रि०) दूर होना, हटना।
सेटना–(हिं०क्रि०) समझना, बूझना।
सेठ–(हिं०पुं०) महाजन, साहूकार।
सेत–(हिं०पुं०) देखो सेतु, श्वेत।
सेतही, सेतवाह–(हिं० पुं०) चन्द्रमा।

सेतु–(सं०पुं०) बाँध, मेंड़, पुल, सीमा, मर्यादा, व्यवस्था, टीका। **सेतुकर**–(सं० वि०) पुल बनानेवाला।
सेद–(हि० पुं०) देखो स्वेद, पसीना।
सेनप–(सं०पुं०) सेनापति।
सेना–(सं०स्त्री०) युद्ध की शिक्षा पाये हुए अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित मनुष्यों का समूह; (हिं०क्रि०) सेवा-टहल करना, लिये बैठे रहना, चिड़ियों का अंडे पर बैठना। **सेनाजीवी**–(सं० पुं०) सैनिक, योद्धा। **सेनाधिप**–(सं०पुं०) सेनापति। **सेनानायक**–(सं०पुं०) सेनापति। **सेनापति**–(सं०पुं०) सेनानायक।
सेनि–(हि० स्त्री०) देखो श्रेणी।
सेन्द्रिय–(सं०वि०) जिसमें इन्द्रियाँ हों, सजीव।
सेम–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।
सेर–(हिं०पुं०) सोलह छटाँक या अस्सी तोल की तौल, मन का चालीसवाँ भाग, एक प्रकार का धान, सिंह; (वि०) तृप्त।
सेराना–(हिं०क्रि०) ठंडा होना, तृप्त होना।
सेल–(हिं०पुं०) भाला, बरछा।
सेलखड़ी–(हिं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
सेलना–(हिं०क्रि०) मर जाना।
सेला–(हिं०पुं०) रेशमी चादर या दुपट्टा, साफा।
सेली–(हिं० स्त्री०) छोटा भाला, बरछी।
सेल्हा–(हिं०पुं०) देखो सेला।
सेल्ही–(हिं०स्त्री०) छोटा डुपट्टा, गाँती।
सेवईं–(हिं०स्त्री०) गूंथे हुए मैदे के सूत के समान लच्छे जो घी में भूनकर तथा दूध में खीर की तरह पकाकर खाये जाते हैं।
सेव–(हिं०पुं०) सूत के रूप का बेसन का बना हुआ एक पक्वान्न।
सेवक–(सं०पुं०) भृत्य, भक्त, उपासक।
सेवकाई–(हिं०स्त्री०) सेवा, टहल।
सेवड़ा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा सेव।
सेवति–(हिं०स्त्री०) देखो स्वाती।
सेवती–(सं०स्त्री०) गुलाब का एक भेद जो सफेद होता है।
सेवन–(सं० पुं०) सीना, आराधना, पूजन, उपभोग, प्रयोग, सेवा, परिचर्या।
सेवना–(हिं०पुं०) देखो सेना।
सेवनी–(हिं०स्त्री०) सूची, सूई, टाँका, दासी।
सेवा–(सं०स्त्री०) टहल, चाकरी, आराधना, पूजा। **सेवाजन**–भृत्य। **सेवाटहल**–(हिं०पुं०) परिचर्या, शुश्रूषा।
सेवाती–(हिं०स्त्री०) देखो स्वाती।
सेवाधारी–(हिं०पुं०) पुजारी।
सेवापन–(हिं०पुं०) दासत्व, टहल।
सेवार, सेवाल–(हिं० स्त्री०) बालों के लच्छों की तरह पानी में फैलनेवाली एक प्रकार की घास, शेवाल।
सेवावृत्ति–(सं०स्त्री०) दासत्व।
सेवित–(सं०वि०) परिचर्या या सेवा किया हुआ, आराधित। **सेवितव्य**–(सं०वि०) सेवा के योग्य।
सेवी–(सं०वि०) सेवा या आराधना करनेवाला।
सेव्य–(सं०वि०) आराधना करने योग्य।
सेस–(हिं०वि०) देखो शेष।
सेसनाग–(हिं०पुं०) देखो शेषनाग।
सेसर–(हिं०पुं०) छल, कपट।
सेसरिया–(हिं०पुं०) छल से दूसरे का धन अपहरण करनेवाला।
सेहथना–(हिं०क्रि०) झाड़ना, बुहारना।
सेहरा–(हिं०पुं०) विवाह का मुकुट, मौर।

सेहुँआ–(हिं०पुं०)एक प्रकार का चर्म रोग जिसमें शरीर पर भूरे चिह्न पड़ जाते हैं।
सेहुँड़–(हिं०पुं०) थूहर।
सैंतना–(हिं०क्रि०)संचित करना, बटोरना।
सैंतालिस–(हिं० वि०) जो संख्या में चालीस और सात हो; (पुं०) चालीस और सात की संख्या। **सैंतालीसवाँ**–(हिं० वि०) जिसका स्थान सैंतालिस पर हो।
सैंतिस,सैंतीस–(हिं० वि०) जो संख्या में तीस और सात हो; (पुं) तीस और सात की संख्या ३७। **सैंतीसवाँ**–(हिं०वि०) जिसका स्थान सैंतीस पर हो।
सैंथी–(हिं०स्त्री०) भाला।
सैंत–(हिं०स्त्री०)तत्त्व, सार, शक्ति, लाभ, वृद्धि, वढ़ती; (पुं०) शत, सौ।
सैंकड़ा–(हिं०पुं०) सौ का समूह। **सैंकड़े**–(हिं०क्रि०वि०) प्रतिशत। **सैंकड़ों**–(हिं० वि०) कई सौ, गिनती में बहुत।
सैंन–(हिं०स्त्री०) संकेत, इंगित, चिह्न।
सैंनपति–(हिं०पुं०) सेनापति।
सैंना–(हिं० स्त्री०) सेना। **सैनानीक**–(हिं० पुं०) सेना का अग्र भाग।
सैनिक–(सं० पुं०) सेना का सिपाही; (वि०) सेना संबंधी।
सैनू–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा।
सैन्धव–(सं०पुं०) सेंधा नमक।
सैन्य–(सं०पुं०) सेना, शिविर, छावनी; (वि०) सेना संबंधी। **सैन्यनायक**–(सं० पुं०) सेनापति।
सैयाँ–(हिं०पुं०) स्वामी, पति।
सैल–(हिं० पुं०) देखो शैल, जल की बाढ़, स्रोत, बहाव।
सैला–(हिं० पुं०) लकड़ी का छोटा डंडा, मेख, गुल्ली, मुंगरी, चैला।
सैलानी–(हिं०वि०)आनन्दी, मनमौजी।
सैली–(हिं०स्त्री०) छोटा सैला, टोकरी।
सैसव–(हिं०पुं०) देखो शैशव।
सैहथी–(हिं० स्त्री०) शक्ति, बरछी।
सों–(हिं०अव्य०)देखो सौंह; (क्रि०वि०) संग, साथ; (सर्व०) सो; (प्रत्य०) द्वारा, से।
सोंच–(हिं० पुं०) देखो सोच।
सोंचर नमक–(हिं०पुं०) काला नमक।
सोंटा–(हिं०पुं०) मोटा डंडा, लाठी।
सोंठ–(हिं०स्त्री०) सुखाया हुआ अदरख।
सोंधा–(सं०वि०) सुगन्धित।
सोंपना–(हिं०क्रि०) देखो सौंपना।
सो–(हिं०सर्व०)वह; (अव्य०) अतएव, इसलिये।
सोऽहम्–(सं०) संस्कृत का एक वाक्य जिसका अर्थ "वही मैं हूँ"।
सोअना–(हिं०क्रि०) निद्रा लेना।
सोई–(हिं०स्त्री०) वह गड्ढा जहाँ पर बरसात या बाढ़ का पानी रुक जाता है, डाबर; (सर्व०)वही; (अव्य०)देखो सो।
सोक–(हिं०पुं०) देखो शोक। **सोकना**–(हिं०क्रि०)देखो सोखना, शोक करना।
सोखन–(हिं० वि०) सोखनेवाला।
सोखना–(हिं० क्रि०) रस खींच लेना, चूस लेना। **सोखाई**–(हिं० स्त्री०) सोखने की क्रिया या भाव।
सोगन–(सं०स्त्री०) सौगंद, शपथ।
सोगनी–(हिं०स्त्री०) शोक करनेवाली।
सोगी–(हिं०पुं०) चिन्ता, दुःख, पश्चाताप। **सोचना**–(हिं० क्रि०) चिन्ता करना, विचार करना, दुःख करना।
सोटा–(हिं०पुं०) देखो सोंटा।
सोढर–(हिं०पुं०) मूर्ख।
सोढव्य–(सं०वि०) सहन करने योग्य।
सोणित–(हिं० पुं०) रुधिर।
सोत–(हिं०पुं०) देखो स्रोत, सोता।

सोता–(हिं०पुं०) जल की निरन्तर बहनेवाली छोटी धारा, झरना, शाखा, सोती।
सोदर–(सं०पुं०) सहोदर, सगा भाई।
सोदरा, सोदरी–(सं०स्त्री०) सगी बहिन।
सोद्वेग–(सं०वि०) विचलित, चिन्तित।
सोधक–(हिं०पुं०) शोधनेवाला।
सोधन–(हिं०पुं०) ढूंढ़। **सोधना**–(हिं० क्रि०) शुद्ध करना, दोष हटाना।
सोधाना–(हिं० क्रि०) शुद्ध कराना।
सोनहला–(हिं०पुं०) देखो सुनहला।
सोना–(हिं०पुं०) सुवर्ण, अत्यन्त बहुमूल्य वस्तु, बहुत महँगी वस्तु; (हिं०क्रि०) नींद लेना
सोनार–(हिं०पुं०) देखो सुनार।
सोनत–(हिं० पुं०) देखो सुनार।
सोनित–(हिं०पुं०) देखो शोणित, रुधिर।
सोपम–(हिं०पुं०) सुविधा, सुख का प्रबंध।
सोपम–(सं०वि०) उपमायुक्त।
सोपान–(सं०पुं०) सीढ़ी।
सोपि–(सं०अव्य०) वही, वह भी।
सोफता–(हिं०पुं०) एकान्त या निर्जन स्थान।
सोभ–(हिं०पुं०) देखो शोभा। **सोभन**–(हिं०पुं०) देखो शोभन। **सोभना**–(हिं०क्रि०) शोभित होना।
सोभा–(हिं०स्त्री०) देखो शोभा।
सोम–(सं०पुं०) स्वर्ग, आकाश; (पुं०) सोमवार, चन्द्रमा, अमृत। **सोमकान्त**–(सं० पुं०) चन्द्रकांत मणि। **सोमक्षय**–(सं०पुं०) अमावस्या।
सोमल–(हिं०पुं०) संखिया विष का एक भेद।
सोमवार–(सं०पुं०) चन्द्रवार।
सोमवारी–(हिं०स्त्री०) सोमवार संबंधी।
सोय–(हिं०सर्व०) सो, वही।
सोर–(हिं० स्त्री०) मूल, जड़।
–**सोरठा**(हिं०पुं०) अड़तालीस मात्राओं का एक छन्द।
सोरह–(हिं०वि०) देखो सोलह।
सोरही–(हिं०स्त्री०) वे सोलह कौड़ियां जिनसे जुआ खेला जाता है।
सोरा–(हिं०पुं०) शोरा।
सोरी–(हिं०स्त्री०) पात्र में महीन छेद जिसमें से होकर पानी टपककर बह जाता है।
सोलह–(हिं०वि०) दस और छ की संख्या का; (पुं०) दस और छ की संख्या १६। **सोलहवां**–जिसका स्थान पन्द्रह के बाद हो।
सोलाना–(हिं०क्रि०) देखो सुलाना।
सोल्लास–(सं० वि०) आनन्दपूर्वक।
सोवना–(हिं०स्त्री०) निद्रा लेना।
सोवाना–(हिं०क्रि०) देखो सुलाना।
सोवैया–(हिं०पुं०) सोनेवाला।
सोहन–(हिं०वि०) शोभन, अच्छा लगनेवाला।
सोहन पपड़ी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरे के रूप में बनाई जाती है। **सोहन हलवा**–(हिं० पुं०) एक प्रकार की मेवा आदि पड़ी हुई मिठाई।
सोहना–(हिं०क्रि०) शोभित होना, सजना, खेत में उगी हुई घास को काटकर अलग करना, निराना।
सोहनी–(हिं०स्त्री०) झाड़, बुहारी, खेत में की घास निकालने की क्रिया।
सोहर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का गीत जिसको स्त्रियाँ घर में बच्चा पैदा होने पर गाती हैं।
सोहराना–(हिं०क्रि०) शरीर पर हाथ फेरना।
सोहला–(हिं०पुं०) मांगलिक गीत, सोहर।
सोहाइन–(हिं०वि०) सुहावना, सुन्दर।

सोहाई–(हिं०स्त्री०) निराने का वेतन।
सोहाग–(हिं०पुं०) सुहाग, सौभाग्य।
सोहागा–(हिं०पुं०) टंकण क्षार।
सोहागिन, सोहागिनी–(हिं०स्त्री०) देखो सुहागिन।
सोहाता–(हिं०वि०) सुहावना, अच्छा।
सोहाना–(हिं०क्रि०) शोभित होना, सजना।
सोहारद–(हिं०पुं०) देखो सौहार्द।
सोहाल–(हिं०पुं०) देखो सुहाल।
सोहिनी–(सं०स्त्री०) शोभायमान, सुन्दर।
सोहीं, सोहैं–(हिं०क्रि०वि०) सन्मुख, सामने।
सौं–(हिं०स्त्री०) सौंहे; (प्रत्य०) सौ, सा।
सौंचना–(हिं०क्रि०) मल त्याग करना, हाथ-पैर धोना।
सौंतुख–(हिं०पुं०) प्रत्यक्ष, सन्मुख; (क्रि०वि०) आँख के सामने।
सौंदना–(हिं०स्त्री०) कपड़ों को रेह के पानी में भिगोना।
सौंदर्ज–(हिं०पुं०) देखो सौन्दर्य।
सौंदर्य–(हिं०पुं०) सुन्दरता।
सौंपना–(हिं०क्रि०) सहेजना।
सौंर–(हिं० पुं०) देखो सौरी।
सौंराना–(हिं०क्रि०) सँवारना।
सौंह–(हिं०पुं०) शपथ, सौगन्ध।
सौ–(हिं०वि०) नब्बे और दस की संख्या का; (पुं०) नब्बे और दस की संख्या।
सौकर्य–(सं०पुं०) सुविधा, सुकरता।
सौकुमार्य–(सं०पुं०) सुकुमारता, कोमलता।
सौख्य–(सं०पुं०) सुख, सुखता।
सौगन्द–(हिं०स्त्री०) शपथ।
सौगन्ध–(सं०पुं०) सुगन्ध।
सौगम्य–(सं०पुं०) सुगमता।
सौगात–(सं०स्त्री०) इष्ट मित्रों को देने के लिये परदेश से लाई हुई वस्तु।
सौच–(हिं०पुं०) देखो शौच।
सौचिक–(सं०पुं०) दरजी।
सौज–(हिं०स्त्री०) उपकरण, सामग्री; (वि०) बलवान्।
सौजन्य–(सं०पुं०) सुजनता, भलमनसी।
सौजन्यता–(हिं०पुं०) देखो सौजन्य।
सौत–(हिं०स्त्री०) किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका।
सौतुक–(हिं० पुं०) सन्मुख, सामने।
सौतेला–(हिं०वि०) सौत से उत्पन्न।
सौदामिनी–(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
सौवना–(हिं०क्रि०) नाना।
सौनिक–(सं०पुं०) मांस बेचनेवाला, बहेलिया।
सौन्दर्य–(सं०पुं०) सुन्दरता।
सौपना–(हिं०क्रि०) देखो सौंपना।
सौभागिनी–(हिं०स्त्री०) सोहागिन।
सौभाग्य–(सं० पुं०) अच्छा भाग्य, सुख, आनन्द, स्त्री का सधवा होना, सुन्दरता, ऐश्वर्य।
सौभाग्यवती–(सं०वि०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, अच्छे भाग्यवाली।
सौभाग्यवान्–(सं०वि०) अच्छे भाग्यवाला।
सौरी–(हिं०स्त्री०) प्रसूतिका-गृह।
सौलभ्य–(सं०पुं०) सुलभता।
सौशील्य–(सं०पुं०) शुद्ध स्वभाव, साधुता।
सौश्रय–(सं० पुं०) ऐश्वर्य, विभव।
सौष्ठव–(सं०पुं०) उपयुक्तता, सुन्दरता।
सौहं–(हिं०स्त्री०) शपथ; (क्रि०वि०) सामने, आगे।
सौहार्द–(सं०पुं०) मित्रता, मैत्री।
सौहृद–(सं०पुं०) मित्रता; (वि०) मित्र संबंधी।
स्कन्दफला–(सं० स्त्री०) खजूर।
स्कन्दित–(सं०वि०) पतित, गिरा हुआ।
स्कन्दी–(सं० वि०) उछलने-कूदनेवाला।

स्कन्ध–(सं०पुं०) कन्धा, वृक्ष का तना। **स्कन्धपथ**–(हिं०पुं०) पगडंडी।
स्कन्धचाप–(सं०पुं०) बहँगी जिस पर कहार बोझ ढोते हैं।
स्खलित–(सं०वि०) गिरा हुआ, विचलित, फिसला हुआ।
स्तन–(सं० पुं०) स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें दूध रहता है, कुच। **स्तनदात्री**–(सं० स्त्री०) छाती का दूध पिलानेवाली। **स्तनय**–(सं०पुं०) दूध पीता बच्चा। **स्तनपान**–(सं०पुं०) स्तन का दूध पीना। **स्तनपायी**–(सं० वि०) जो माता के स्तन का दूध पीता हो।
स्तन्यप–(सं०पुं०) दूध पीता बच्चा।
स्तब्ध–(सं०वि०) स्तम्भित, स्थिर, दृढ़, धीमा, अभिमानी, हठी। **स्तब्धकर्ण**–(सं० क्रि०) बहरा। **स्तब्धता**–(सं० स्त्री०) स्थिरता, दृढ़ता, बहरापन।
स्तबक–(सं०पुं०) गुच्छा।
स्तम्भ–(सं० पुं०) खंभा, थूनी, प्रतिबन्ध, जड़ता, पेड़ का तना। **स्तम्भता**–(सं० स्त्री०) जड़ता। **स्तम्भन**–(सं०पुं०) अवरोध, रुकावट।
स्तम्भिका–(सं०स्त्री०) छोटा खंभा, खँभिया।
स्तम्भित–(सं० वि०) जड़ीभूत, निश्चल, स्थिर। **स्तम्भी**–(सं०वि०) रोकनेवाला।
स्तर–(सं०पुं०) तह, तबक, परत, शय्या, सेज। **स्तरण**–(सं०पुं०) फैलाने की क्रिया, बिछौना। **स्तरणीय**–(सं० वि०) फैलाने योग्य।
स्तव–(सं० पुं०) स्तोत्र, स्तुति, गान।
स्तवक–(सं०पुं०) फूलों का गुच्छा, स्तोत्र, ढेर, समूह, पुस्तक का अध्याय, परिच्छेद।
स्तवन–(सं० पुं०) स्तुति। **स्तवनीय**–(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।
स्तवितव्य–(सं०वि०) प्रशंसा के योग्य।
स्तविता–(सं०वि०) स्तुति करनेवाला।
स्तव्य–(सं०वि०) स्तुति करने के योग्य।
स्तमिति–(सं० वि०) निश्चल, स्थिर।
स्तीर्ण–(सं०वि०) विस्तीर्ण, फैलाया हुआ।
स्तुत–(सं०वि०) प्रशंसित। **स्तुति**–(सं० स्त्री०) गुण-कीर्तन, प्रशंसा। **स्तुतिपाठक**–(सं० पुं०) चारण, भाट। **स्तुतिवाद**–(सं०पुं०) गुणगान।
स्तुतिवादक–(सं०वि०) प्रशंसा करनेवाला, प्रशंसक।
स्तुत्य–(सं० वि०) प्रशंसनीय।
स्तूप–(सं० पुं०) मिट्टी आदि का ढेर, ऊँचा टीला।
स्तेय–(सं० पुं०) चौर्य, चोरी।
स्तेयी–(सं० पुं०) सुनार, चूहा, मूसा।
स्तोक–(सं०वि०) थोड़ा, कम।
स्तोतव्य(सं०वि०) स्तुति के योग्य।
स्तोता–(सं०वि०) स्तुति करनेवाला।
स्तोत्र–(सं०पुं०) कविता रूप से किसी देवता का वर्णन, स्तुति। **स्तोत्रीय**–(सं०वि०) स्तोत्र संबंधी।
स्त्री–(सं०स्त्री०) नारी, पत्नी। **स्त्रीगुरु**–(सं० पुं०) दीक्षा देनेवाली स्त्री। **स्त्रीघातक**–(सं० क्रि०) स्त्री की हत्या करनेवाला। **स्त्रीचोर**–(सं० पुं०) स्त्री को चुरानेवाला। **स्त्रीजनन्नी**–(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो केवल कन्या उत्पन्न करती है। **स्त्रीधन**–(सं०पुं०) वह सम्पत्ति या धन जिस पर स्त्री का पूर्ण अधिकार हो। **स्त्रीधर्म**–(सं०पुं०) स्त्री का रजस्वला होना। **स्त्रीराज्य**–(सं० पुं०) वह देश जहाँ स्त्रियों का राज्य हो। **स्त्रीलिंग**–(सं० पुं०)

व्याकरण में स्त्रीवाचक शब्द। **स्त्रीव्रत**–अपनी पत्नी के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना।

स्त्रैण–(सं०वि०) स्त्री संबंधी।

स्थ–(सं०प्रत्य०) उपस्थित, स्थित, निवास तथा लीन अर्थ में शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है।

स्थकित–(सं०वि०) शिथिल, थका हुआ।

स्थगित–(सं०वि०) गुप्त, रोका हुआ।

स्थगु–(सं०पुं०) पीठ पर का कूबड़।

स्थण्डिल–(सं०पुं०) यज्ञ के लिये स्वच्छ की हुई भूमि।

स्थपति–(सं० पुं०) भवन-निर्माण-कला में निपुण, रथ हाँकनेवाला।

स्थल–(सं०पुं०) भू-भाग, भूमि, स्थान, पुस्तक का अंश या परिच्छेद। **स्थलचर**–(सं० वि०) स्थल पर रहने या विचरनेवाला। **स्थलयुद्ध**–(सं०पुं०) भूमि पर होनेवाली लड़ाई। **स्थलविहंग**-(सं०पुं०) भूमि पर विचरनेवाला पक्षी।

स्थली–(सं० स्त्री०) जलशून्य भूमि, स्थान। **स्थलीय**–(सं०वि०) स्थलसंबंधी।

स्थविर–(सं०पुं०) वृद्ध, बुड्ढा, भिक्षुक।

स्थविरा–(सं०स्त्री०) बुड्ढी स्त्री।

स्थाई–(हिं०वि०) देखो स्थायी।

स्थाणु–(सं०पुं०) वृक्ष का तना, खंभा, थूनी।

स्थान–(सं०पुं०) भूमिभाग, मैदान, ठौर, वेदी, डेरा, पद, राज्य, देश, अवसर, अवस्था। **स्थानक**–(सं०पुं०) नगर, पेड़ का थाला। **स्थानच्युत**–(सं० वि०) अपने स्थान से गिरा हुआ, अपने पद से हटाया हुआ।

स्थानान्तर–(सं०पुं०) दूसरा स्थान।

स्थानापन्न–(सं०वि०) दूसरे के स्थान पर स्थायी रूप से काम करनेवाला।

स्थानीय–(सं०वि०) स्थान संबंधी।

स्थापक–(सं०वि०) रखने या खड़ा करनेवाला, संस्थापक।

स्थापत्य–(सं०पुं०) अन्तःपुर का रक्षक; (पुं०) भवन-निर्माण।

स्थापन–(सं० पुं०) प्रतिपादन, निरूपण, नया काम आरंभ करना, खड़ा करना, बैठाना। **स्थापना** – (हिं०स्त्री०) प्रतिष्ठित करना, बैठाना। **स्थापनीय**–(सं० वि०) स्थापित करने योग्य। **स्थापित**–(सं०वि०) निर्दिष्ट, व्यवस्थित।

स्थायित्व–(सं०पुं०) स्थिरता, दृढ़ता।

स्थायी–(सं०वि०) ठहरनेवाला, विश्वस्त। **स्थायी समिति**–(हिं०पुं०) किसी सभा का संचालन करनेवाली दो अधिवेशनों के बीच में होनेवाली कार्यकारिणी सभा।

स्थाल–(सं०पुं०) थाल, परात, थाली।

स्थाली–(सं०स्त्री०) मिट्टी की कटोरी, हँड़िया।

स्थावर–(सं० पुं०) पर्वत, धनुष की डोरी, अचल सम्पत्ति; (वि०) एक ही स्थान में रहनेवाला, स्थायी।

स्थित–(सं०वि०) ठहरा हुआ, टिका हुआ, विद्यमान, बसा हुआ, स्थित। **स्थितधी**–(सं०वि०) जिसका चित्त सर्वदा स्थिर रहे।

स्थितप्रज्ञ–(सं०वि०) आत्मसन्तोषी।

स्थिति–(सं०स्त्री०) अस्तित्व, स्थिरता, अवस्था, नियम, निवास, अवस्था, दशा। **स्थिरचित्त**–(सं०वि०) जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो। **स्थिरच्छाय**–(सं० वि०) निश्चल छायायुक्त। **स्थिरता**–(सं०स्त्री०) दृढ़ता, धैर्य। **स्थिरबुद्धि**–(सं०वि०) दृढ़चित्त। **स्थिरमति**–(सं०स्त्री०) स्थिरबुद्धि।

स्थिरा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी।

स्थिरायु–(सं०पुं०) चिरंजीवी।
स्थूणा–(सं०स्त्री०) खंभा, थूनी, निहाई।
स्थूल–(सं०वि०) पीवर, मोटा। **स्थूलता**–(सं०स्त्री०) मोटापन, भारीपन।
स्थूलपट–(सं०पुं०) मोटा कपड़ा। **स्थूलपाद**–(सं० पुं०) फीलपाव रोगवाला।
स्थैर्य–(सं०पुं०) स्थिरता।
स्थौल्य–(सं०पुं०) स्थूलत्व, स्थूलता।
स्नपित–(सं०वि०) नहाया हुआ।
स्नात–(सं०वि०) नहाया हुआ। **स्नातक**–(सं०पुं०) वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत के समाप्त होने पर स्नान करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो।
स्नान–(सं०पुं०) शरीर को जल से धोना अथवा जल की बहती हुई धारा में प्रवेश करना। **स्नानगृह**–(सं० पुं०) जिस कोठरी में स्नान किया जाता है। **स्नानीय**–(सं०वि०) नहाने योग्य। **स्नानोदक**–(सं०पुं०) स्नान करने का जल।
स्नायी–(सं०वि०) स्नान करनेवाला।
स्नायु–(सं०स्त्री०) शरीर में की वायुवाहिनी महीन महीन शिरा, नाड़ी।
स्निग्ध–(सं०वि०) चिकना, तैलयुक्त। **स्निग्धता**–(सं०स्त्री०) चिकनापन।
स्नुषा–(सं०स्त्री०) पुत्रवधू।
स्नेह–(सं०पुं०) प्रेम, प्यार, चिकना पदार्थ।
स्नेहपात्र–(सं०पुं०) जिससे प्रेम किया जाय।
स्नेही–(हिं०पुं०) मित्र, बन्धु; (वि०) स्नेहयुक्त।
स्पन्द–(सं०पुं०) किसी वस्तु का धीरे धीरे हिलना या काँपना, शरीर का फड़कना। **स्पन्दी**–(हिं०वि०) काँपनेवाला।
स्पर्धा–(सं०स्त्री०) ईर्ष्या, साम्य। **स्पर्धी**–(सं०वि०) स्पर्धा करनेवाला।
स्पर्श–(सं०पुं०) वर्गाक्षर, छूना, व्याकरण में उच्चारण-भेद से 'क' से लेकर 'म' तक के पचीस व्यंजन वर्ण।
स्पर्शकोण–(सं०पुं०) रेखागणित में वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा के बीच में बनता है। **स्पर्शजन्य**–(सं० पुं०) स्पर्श से उत्पन्न। **स्पर्शन**–(सं०पुं०) छूने की क्रिया। **स्पर्शनेन्द्रिय**–(सं०पुं०) छूने की इन्द्रिय, त्वचा। **स्पर्शमणि**–(सं०पुं०) पारस पत्थर। **स्पर्शरेखा**–(सं०स्त्री०) गणित में वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त की परिधि के किसी एक बिन्दु को स्पर्श करती हुई खींची जाय।
स्पर्शी–(हिं०वि०) छूनेवाला।
स्पर्शेन्द्रिय–(सं०पुं०) वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है, त्वचा। **स्पर्शोपल**–(सं०पुं०) पारस पत्थर।
स्पष्ट–(सं०वि०) जिसके समझने या देखने में कोई कठिनता न हो। **स्पष्टता**–(सं०स्त्री०) स्पष्ट होने का भाव। **स्पष्टवक्ता**–(सं०पुं०) ठीक ठीक बात कहनेवाला। **स्पष्टवादी**–(सं०पुं०) बिना संकोच के बोलनेवाला। **स्पष्टीकरण**–(सं०पुं०) स्पष्ट करने की क्रिया।
स्पृश्य–(सं०वि०) स्पर्श करने या छूने योग्य।
स्पृष्ट–(सं०वि०) स्पर्श किया हुआ।
स्पृहणीय–(सं०वि०) वांछनीय।
स्पृहा–(सं०स्त्री०) वांछा, कामना।
स्पृही–(सं०वि०) अभिलाषा करनेवाला।
स्फटिक–(सं०पुं०) बिल्लौर, सूर्यकान्त मणि।
स्फटिका–(सं०स्त्री०) फिटकिरी।
स्फटी–(सं०स्त्री०) फिटकिरी।
स्फार–(सं०वि०) विपुल, विकट, प्रचुर।

स्फाल–(सं०पुं०) स्फूर्ति, तीव्रता।
स्फीत–(सं०वि०) समृद्ध, फूला हुआ।
स्फीति–(सं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।
स्फुट–(सं०वि०) प्रकाशित, स्पष्ट।
स्फुटित–(सं०वि०) विकसित, खिला हुआ।
स्फुटीकरण–(सं०पुं०) प्रकाशन।
स्फुट,स्फुरण–(सं०पुं०) अंग का फड़कना।
स्फुरति–(हिं०स्त्री०) देखो स्फूर्ति।
स्फुरित–(सं०वि०) हिलने या फड़कनेवाला।
स्फुल–(सं०पुं०) तंबू।
स्फुलिंग–(सं०पुं०) आग की चिनगारी।
स्फूर्ति–(सं०स्त्री०) स्फुरण, हिलना।
स्फोट–(सं०पुं०) फोड़ा, फुन्सी, किसी वस्तु का फूटना। **स्फोटन**–(सं०पुं०) विदारण, फाड़ना।
स्मय–(सं०पुं०) गर्व, अभिमान।
स्मर–(सं०पुं०) कामदेव, स्मरण।
स्मरण–(सं०पुं०) स्मृति, किसी बात की याद। **स्मरणपत्र**–(सं०पुं०) वह पत्र जो किसी को कोई बात याद दिलाने के लिये लिखा जावे। **स्मरणशक्ति**–(सं०स्त्री०) स्मरण करने की शक्ति।
स्मरणीय–(सं०वि०) याद करने योग्य।
स्मरना–(हिं०क्रि०) याद करना।
स्मर्ण–(हिं०पुं०) देखो स्मरण।
स्मर्तव्य–(सं०वि०) स्मरण करने योग्य।
स्मशान(सं० पुं०) देखो श्मशान।
स्मारक–(सं०वि०) स्मरण करानेवाला; (पुं०) वह पदार्थ या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिये बनाया जावे।
स्मार्त–(सं०वि०) स्मृति सम्बन्धी।
स्मित–(सं० पुं०) मन्दहास, धीमी हँसी; (वि०) विकसित, खिला हुआ।
स्मृति–(सं० स्त्री०) संस्कारजन्य ज्ञान, चिन्तित, ध्यान, धर्मशास्त्र। **स्मृतिकार**–(सं०पुं०) धर्मशास्त्र बनानेवाला।
स्मृतिभ्रम–(सं० पुं०) स्मरणशक्ति का नाश।
स्मृतिविभ्रम–(सं०पुं०) स्मरण-शक्ति का नाश, धर्मशास्त्र के विपरीत। **स्मृतिशास्त्र**–(सं० पुं०) धर्मशास्त्र।
स्मृतिसम्मत–(सं० वि०) धर्मशास्त्र से अनुमोदित।
स्पन्द,स्पन्दन–(सं०पुं०) टपकना, चूना, पसीजना, निकलना।
स्पन्दनिका–(सं०, स्त्री०) छोटी नदी, नहर।
स्यात्–(सं०अव्य०) कदाचित्।
स्याद्वाद–(सं०पुं०) जैन दर्शन।
स्यान–(हिं०वि०) देखो स्याना।
स्यानपन–(हिं० पुं०) चतुरता।
स्याना–(हिं०वि०) चतुर, धूर्त, वयस्क, जो बालक न हो। **स्यानापन**–(हिं०पुं०) चतुराई, धूर्तता।
स्यामता–(हिं० स्त्री०) देखो श्यामता।
स्यामलिया–(हिं०वि०) साँवले रंग का।
स्यामा–(हिं०स्त्री०) देखो श्यामा।
स्यार–(हिं०पुं०) शृगाल, गीदड़, सियार। **स्यारपन**–(हिं० पुं०) भीरुता।
स्यारी–(हिं०स्त्री०) शृगाली, सियारिन। **स्याल, स्यालक**–(सं० पुं०) पत्नी का भाई, साला।
स्यों,स्यो–(हिं०अव्य०) सहित, समीप, पास।
स्रंस–(सं०पुं०) भ्रंश, नाश।
स्रक–(सं०पुं०,स्त्री०) फूलों की माला।
स्रग्धर–(सं०वि०) माला पहननेवाला।
स्रज–(हिं० स्त्री०) माला। **स्रजना**–(हिं० क्रि०) देखो सृजना।
स्रद्दा–(हिं०स्त्री०) देखो श्रद्धा। **स्रम**–(हिं० पुं०) देखो श्रम। **स्रमित**–(सं० वि०) देखो श्रमित।

स्रवण–(सं० पुं०) पसीना, गर्भपात।
स्रवन–(हिं०पुं०) देखो श्रवण। स्रवना–(हिं० क्रि०) बहना, टपकना।
स्रष्टा–(सं०पुं०) सृष्टि करनेवाला।
स्रापित–(हिं०वि०) देखो शापित।
स्राव–(सं०पुं०) क्षण, झरना। स्रावक–(सं० पुं०) चूने या टपकनेवाला।
स्रावित–(सं० वि०) टपककर निकाला हुआ। स्रावी–(सं०वि०) रसनेवाला।
स्राव्य–(सं०वि०) बहने योग्य।
स्रिय–(हिं०स्त्री०) देखो श्रिय।
स्रुत–(हिं०वि०) देखो श्रुत, बहता हुआ।
स्रुति–(सं०स्त्री०) देखो श्रुति।
स्रुवा–(सं०स्त्री०) हवन करने की लकड़ी की बनी हुई छोटी करछी।
स्रेनी–(हिं०स्त्री०) देखो श्रेणी।
स्रोत–(सं०पुं०) पानी का झरना या सोता।
स्रोनत–(हिं० पुं०) देखो शोणित।
स्व–(सं० पुं०) धन; (पुं०) आप, निज, जाति, बन्धु। स्वक–(सं०वि०) निजी।
स्वकर्म–(सं० पुं०) अपना काम।
स्वकर्मी–(सं०वि०) स्वार्थी।
स्वकामी–(सं०वि०) केवल अपने लिये काम करनेवाला।
स्वकुल–(सं०पुं०) अपना वंश। स्वगत–(सं०पुं०) आप ही आप, अपने आपसे।
स्वगृह–(सं०पुं०) निज का घर।
स्वच्छ–(सं०वि०) उज्ज्वल, निर्मल, पवित्र।
स्वच्छता–(सं०स्त्री०) निर्मलता।
स्वच्छन्द–(सं०वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र।
स्वच्छन्दचारी–(सं० वि०) मनमौजी।
स्वच्छन्दता–(सं० स्त्री०) स्वतन्त्रता।
स्वच्छना–(हिं० क्रि०) निर्मल करना।
स्वच्छी–(हिं०वि०) स्वच्छ।
स्वज–(सं० पुं०) पुत्र, बेटा, पसीना; (वि०) आप से आप उत्पन्न।
स्वजन–(सं०पुं०) सम्बन्धी, आत्मीय जन।
स्वजनता–(सं० स्त्री०) जाति सम्बन्ध।
स्वजन्मा–(सं० वि०) अपने आप से उत्पन्न। स्वजात–(सं० वि०) पुत्र, बेटा। स्वजाति–(सं० स्त्री०) अपनी जाति। स्वजातीय–(सं० वि०) अपनी जाति का, एक ही जाति का।
स्वतन्त्र–(सं० वि०) स्वेच्छाचारी, भिन्न, पृथक्। स्वतन्त्रता–(सं० स्त्री०) स्वाधीनता। स्वतन्त्री–(सं० वि०) स्वाधीन।
स्वतः–(सं० अव्य०) अपने आप।
स्वत्व–(सं० पुं०) अधिकार।
स्वत्वाधिकारी–(सं० पुं०) अधिकारी।
स्वदन–(सं० पुं०) चखना।
स्वदेश–(सं० पुं०) मातृभूमि। स्वदेशी–(सं० वि०) अपने देश का, अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।
स्वधीत–(सं० वि०) अच्छी तरह पढ़ा हुआ।
स्वन–(सं० पुं०) ध्वनि, शब्द।
स्वनाम–(सं० पुं०) अपना नाम।
स्वनामा–(सं० पुं०) जो अपने नाम से प्रसिद्ध हो।
स्वनित–(सं० पुं०) शब्द।
स्वनिष्ठ–(सं० वि०) अपना काम स्वयं करनेवाला।
स्वनिष्ठित–(सं० वि०) उत्तम रूप में किया हुआ।
स्वपन–(हिं० पुं०) निद्रा, नींद।
स्वपूर्ण–(सं०वि०) जो आप ही पूर्ण हो।
स्वप्न–(सं० पुं०) निद्रा, निद्रावस्था में वस्तु दर्शन, नींद।
स्ववरन–(हिं० पुं०) देखो सुवर्ण।
स्वभाउ–(हिं० पुं०) देखो स्वभाव।
स्वभाव–(सं० पुं०) मन की प्रवृत्ति, प्रकृति, बान। स्वभावज–(सं० वि०)

प्रकृति से उत्पन्न, सहज। **स्वभावतः**-(सं० अव्य०) स्वभाव से। **स्वभाव-सिद्ध**-(सं० वि०) स्वाभाविक, सहज।
स्वभूमि-(सं० स्त्री०) अपनी भूमि।
स्वयं-(हिं० अव्य०) आपसे आप, आप ही। **स्वप्रमाण**-(सं० वि०) जिसके लिये दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो। **स्वयंभू**-(सं० वि०) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो। **स्वयंवर**-(सं० पुं०) भारतवर्ष की एक प्राचीन रीति जिसमें विवाह योग्य कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपना वर चुन लेती थी। **स्वयंवरा**-(सं०स्त्री०) अपने लिये स्वयं-वर चुननेवाली स्त्री।
स्वयंसिद्ध-(सं० वि०) जिसकी सिद्धि के लिये दूसरे तर्क प्रमाण आदि की आवश्यकता न हो। **स्वयंसेवक**-(सं० पुं०) वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के कोई कार्य करता हो।
स्वयम्-(सं० अव्य०) आप, आप ही आप।
स्वयमधिगत-(सं० वि०) स्वयं प्राप्त।
स्वयम्भुव-(सं० पुं०) ब्रह्मा, शिव, वेद आदि। **स्वयम्भू**-(सं०पुं०) विष्णु, शिव, कामदेव, काल।
स्वयमेव-(सं० क्रि० वि०) आप ही आप।
स्वर्-(सं०पुं०) स्वर्ग, आकाश, परलोक।
स्वर-(सं० पुं०) वह ध्वनि जो किसी प्राणी के मुख से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने से उत्पन्न हो, व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप होता है। **स्वरभंग**-(सं० पुं०) गला बैठने का रोग। **स्वरभंगी**-(सं० पुं०) जिसका गला बैठ गया हो।
स्वरस-(सं० पुं०) फल फूल पत्ती आदि को कूट-पीसकर निकाला हुआ रस।
स्वराज्य-(सं० पुं०) वह राज्य जिसमें उसी देश के निवासी स्वयं अपने देश के सब प्रबन्ध करते हैं।
स्वरान्त-(सं० वि०) जिसके अन्त में कोई स्वर हो।
स्वरापगा-(सं० स्त्री०) मन्दाकिनी, गंगा।
स्वराष्ट्र-(सं० पुं०) अपना राज्य।
स्वरित-(सं० पुं०) स्वर का वह उच्चारण जो न बहुत तीव्र हो और न बहुत धीमा।
स्वरुचि-(सं० पुं०) स्वेच्छा, अपनी इच्छा।
स्वरूप-(सं० पुं०) आकृति, आकार, मूर्ति या चित्र, स्वभाव।
स्वरूपवान-(सं० वि०) सुन्दर।
स्वरूपी-(हिं० वि०) स्वरूपयुक्त, जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।
स्वरोदय-(सं० पुं०) वह शास्त्र जिसमें स्वर द्वारा शुभाशुभ फल बतलाया जाता है।
स्वर्ग-(सं०पुं०) देवलोक, सुरलोक। **स्वर्गद**-(सं० वि०) स्वर्ग देनेवाला।
स्वर्गवधू-(सं० स्त्री०) अप्सरा। **स्वर्ग-वाणी**-(सं० स्त्री०) आकाशवाणी।
स्वर्गवास-(सं० पुं०) स्वर्ग में रहना, मरना। **स्वर्गवासी**-(सं० क्रि०) मृत, जो मर गया हो।
स्वर्गी-(सं० वि०) स्वर्गगामी।
स्वर्गीय-(सं० वि०) स्वर्ग सम्बन्धी।
स्वर्णकाय-(सं० पुं०) गरुड़।
स्वर्णकार-(सं० पुं०) सुनार।
स्वर्णदीधिति-(सं० पुं०) अग्नि।
स्वर्णनिभ-(सं० वि०) सोने के समान।
स्वर्णमुद्रा-(सं० स्त्री०) सोने की मुद्रा।
स्वर्णाकर-(सं० पुं०) सोने की खान।
स्वर्धुनी-(सं० स्त्री०) गङ्गा।
स्वर्लोक-(सं० पुं०) स्वर्ग।
स्वर्वधू, स्ववेंश्या-(सं०स्त्री०) अप्सरा।

स्वल्प–(सं० वि०) अत्यल्प, बहुत थोड़ा। **स्वल्पकेशी**–(सं० पुं०) जिसको बहुत कम बाल हों। **स्वल्पदृश**–(सं० वि०) बहुत कम देखनेवाला। **स्वल्पशरीर**–(सं० पुं०) छोटा शरीर।
स्ववरन–(हिं० पुं०) देखो सुवर्ण।
स्ववश–(सं०पुं०) जितेन्द्रिय।
स्वश्लाघा–(सं० स्त्री०) आत्माभिमान।
स्वसम्भव–(सं० वि०) जो अपने से उत्पन्न हो।
स्वसा–(सं० स्त्री०) भगिनी, बहन।
स्वसिद्ध–(सं० वि०) स्वयं सिद्ध।
स्वसुर, स्वसुराल–(हिं०) देखो ससुर, ससुराल।
स्वस्ति–(सं० अव्य०) एक आशीर्वाद का शब्द, कल्याण हो; (स्त्री०) कल्याण, मंगल, सुख। **स्वस्तिमुख**–(सं०पुं०) स्तुति पाठक। **स्वस्तिवाचन**–(सं०पुं०) मांगलिक कार्यों के आरंभ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य। **स्वस्तिवाद**–(सं०पुं०) आशीर्वाद।
स्वस्थ–(सं० वि०) रोग-विमुक्त, सावधान। **स्वस्थचित्त**–(सं० वि०) शान्त-चित्त।
स्वाँग–(हिं०पुं०) सवाँग। **स्वास**–(हिं० स्त्री०) देखो साँस।
स्वाक्षर–(सं० पुं०) अपना हस्ताक्षर।
स्वाक्षरित–(सं०वि०) अपना हस्ताक्षर किया हुआ।
स्वाख्यात–(सं० वि०) अच्छी तरह कहा हुआ।
स्वागत–(सं० पुं०) अगवानी। **स्वागतकारिणी सभा**–(सं० स्त्री०) स्थानीय जनों की वह सभा जो किसी बड़ी सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों का स्वागत, ठहरने तथा भोजन आदि का प्रबन्ध करने के लिये संघटित होती है। **स्वागतकारी**–(सं० वि०) अगवानी करनेवाला।
स्वागत–(सं० पुं०) अभिनन्दन।
स्वाङ्ग–(सं०पुं०) अनुकरण-लीला।
स्वाङ्गी (सं०पुं०) अनुकरण करनेवाला, बहुरूपिया।
स्वातन्त्र्य–(सं० पुं०) स्वतन्त्रता।
स्वात्मवध–(सं० पुं०) आत्महत्या।
स्वाद–(सं० पुं०) रसानुभूति, इच्छा।
स्वादक–(सं०पुं०) विवेकी, वह जो भोज्य पदार्थों के तैयार हो जाने पर चखता है।
स्वादित–(सं० वि०) चखा हुआ।
स्वादिष्ठ–(सं० वि०) जो खाने में अच्छा जान पड़े।
स्वादी–(सं० वि०) स्वाद चखनेवाला, रसिक।
स्वादु–(सं० वि०) मीठा, मधुर, सुन्दर।
स्वाद्य–(सं० वि०) स्वाद लेने या चखने योग्य।
स्वाधीन–(सं० वि०) स्वतन्त्र, किसी का बन्धन न माननेवाला। **स्वाधीनता**–(सं० स्त्री०) स्वतन्त्रता।
स्वाध्याय–(सं० पुं०) वेदों का नियमपूर्वक अध्ययन, किसी विषय का अनुशीलन, अध्ययन।
स्वाध्यायी–(सं० पुं०) वेदपाठक।
स्वान–(सं० पुं०) शब्द, घड़घड़ाहट।
स्वानुभव–(सं० पुं०) अपना अनुभव।
स्वानुरूप–(सं० वि०) अपने समान।
स्वाप–(सं० पुं०) निद्रा, नींद, स्वप्न।
स्वापक–(सं० वि०) नींद लेनेवाला।
स्वाभाविक–(सं० वि०) नैसर्गिक, प्राकृतिक।
स्वामि–(हिं० पुं०) देखो स्वामी।

स्वामिता, स्वामित्व–(सं०पुं०) प्रभुत्व।
स्वामिन, स्वामिनी–(हिं० स्त्री०) मालकिन।
स्वामी–(हिं० पुं०) मालिक, प्रभु, पति, ईश्वर, राजा।
स्वाम्य–(सं०पुं०) स्वामित्व, मालिकपन।
स्वायत्त–(सं० वि०) जिस पर अपना अधिकार हो। **स्वायत्त शासन**–(सं०पुं०) स्थानिक स्वराज्य।
स्वाराज्य–(सं०पुं०) वह शासन-प्रबन्ध जिसका संचालन अपने ही देश के लोगों के हाथ में हो।
स्वारी–(हिं० स्त्री०) देखो सवारी।
स्वार्थ–(सं० पुं०) अपना उद्देश्य, अपना लाभ। **स्वार्थत्याग**–(सं० पुं०) किसी अच्छे काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ देना। **स्वार्थत्यागी**–(सं०वि०) दूसरे के भले के लिये अपने हित को निछावर कर देनेवाला। **स्वार्थपर**–(सं० वि०) जो केवल अपना ही स्वार्थ देखता हो। **स्वार्थपरता**–(सं० स्त्री०) स्वार्थपन।
स्वार्थसाधन–(सं० पुं०) अपना अर्थ साधना।
स्वार्थान्ध–(सं० वि०) वह जो अपने हित या लाभ के सामने और किसी की बात पर विचार नहीं करता।
स्वार्थी–(सं० वि०) अपना ही अर्थ देखनेवाला।
स्वास–(हिं० पुं०) देखो श्वास, साँस।
स्वासा–(हिं० स्त्री०) श्वास, साँस।
स्वासीन–(सं०वि०) सुख से बैठा हुआ।
स्वास्थ्य–(सं० पुं०) नीरोगता, आरोग्य।
स्वास्थ्यकर–(सं०वि०) आरोग्यवर्धक।
स्विन्न–(सं०वि०) सीझा हुआ, उबाला हुआ
स्वीकरण–(सं० पुं०) अंगीकार।
स्वीकरणीय–(सं० वि०) मानने योग्य।
स्वीकार–(सं० पुं०) अंगीकार, प्रतिज्ञा-वचन।
स्वीकृत–(सं० वि०) अंगीकृत।
स्वीकृति–(सं० स्त्री०) सम्मति।
स्वीय–(सं०वि०) स्वकीय, अपना, निजी।
स्वेच्छा–(सं० स्त्री०) अपनी इच्छा। **स्वेच्छाचार**–(सं० पुं०) मनमाना काम करना, जो जी में आवे वही करना। **स्वेच्छाचारी**–(सं०वि०) अपने इच्छानुसार चलनेवाला। **स्वेच्छासेवक**–(सं० पुं०) बिना किसी पुरस्कार या वेतन के अपनी इच्छा से कोई काम करनेवाला।
स्वेद–(सं०पुं०) घर्म, पसीना। **स्वेदज**–(सं० वि०) पसीना से उत्पन्न होनेवाला जीव। **स्वेदजल**–(सं० पुं०) पसीना।
स्वेदाम्बु–(सं०पुं०) स्वेदजल, पसीना।
स्वै–(हिं० वि०) अपना, निजी।
स्वैर–(सं० वि०) ऐच्छिक, यथेच्छ।
स्वैरगति–(सं० स्त्री०) स्वाधीनगति।
स्वैरता–(सं० स्त्री०) स्वच्छन्दता।
स्वैरी–(सं० वि०) स्वतन्त्र, स्वाधीन।
स्वोपार्जित–(सं० वि०) अपना कमाया हुआ।

ह

ह-संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यञ्जन, उच्चारण विभाग के अनुसार यह ऊष्म वर्ण कहलाता है, इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है।
ह–(सं० पुं०) मंगल, शुभ, आकाश; (सं० अव्य०) क्रोध का शब्द।
हँक–(हिं० स्त्री०) देखो हाँक, पुकार।
हँकड़ना–(हिं० क्रि०) ललकारना।

हँकरना–(हिं० क्रि०) दर्प के साथ बोलना। हँकवाना–(हिं० क्रि०) हाँक लगवाना।
हँकवैया–(हिं०पुं०) हाँकनेवाला।
हँका–(हिं० स्त्री०) ललकार, डपट।
हँकाई–(हिं० स्त्री०) हाँकने की क्रिया या भाव।
हँकना–(हिं० क्रि०) पशुओं को चिल्लाकर हटाना या एक ओर ले जाना।
हँकार–(हिं० स्त्री०) पुकारकर बुलाने की क्रिया; (पुं०) ललकार।
हँकारना–(हिं० क्रि०) पुकारना।
हँकारा–(हिं० पुं०) पुकार, बुलाहट।
हँकारी–(हिं० पुं०) बुलाकर लानेवाला, दूत।
हँगामा–(फा० पुं०) उपद्रव, कोलाहल।
हँड़ना–(हिं० क्रि०) घूमना, फिरना।
हँड़िया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का लोटे के आकार का चौड़े मुँह का पात्र, हाँड़ी; इस आकार का काँच का पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।
हंडी–(हिं० स्त्री०) देखो हँड़िया।
हँथौरा–(हिं० पुं०) देखो हथौड़ा।
हंस–(सं० पुं०) एक प्रकार का जलचर पक्षी, सूर्य, शुद्ध आत्मा, परब्रह्म।
हंसगति–(सं० स्त्री०) हंस के समान सुन्दर धीमी चाल। हंसगामिनी–(सं० स्त्री०) हंस के समान मन्दगति से चलनेवाली स्त्री।
हँसन–(हिं०स्त्री०)हँसने की क्रिया या भाव
हँसना–(हिं० क्रि०) खिलखिलाना, आनन्द मानना, ठिठोली करना।
हंसनादिनी–(सं०स्त्री०) मधुरभाषिणी।
हँसनि, हँसनी–(हिं०स्त्री०) देखो हँसी।
हँसमुख–(हिं० वि०) प्रसन्नवदन, जिसके मुख से प्रसन्नता झलकती हो, विनोदप्रिय।
हँसली–(हिं० स्त्री०) गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी, गले में पहनने का एक मण्डलाकार गहना।
हँसाई–(हिं० स्त्री०) उपहास, लोकनिन्दा।
हँसाना–(हिं० क्रि०) दूसरों को हँसने में प्रवृत्त करना।
हँसिया–(हिं० पुं०) एक धारदार अर्द्ध-चन्द्राकार लोहे का औजार जिससे खेत की उपज काटी जाती है, गरदन के नीचे की हड्डी।
हँसी–(हिं० स्त्री०) ठिठोली, विनोदपूर्ण उक्ति, निन्दा।
हँसुआ, हँसुवा–(हिं०पुं०)देखो हँसिया।
हँसोड़–(हिं० वि०) ठिठोलिया।
हँसौआ–(हिं० वि०) थोड़ा हँसता हुआ, हँसी से भरा हुआ।
हँहो–(सं० अव्य०) सम्बोधन, दर्प, घमंड।
हई–(हिं० स्त्री०) आश्चर्य, अचरज।
हऊँ–(हिं० सर्व०) देखो हौं।
हकबकाना–(हिं० क्रि०) घबड़ाना।
हकलाना–(हिं० क्रि०) बोलने में अटकना।
हकार–(सं० पुं०) 'ह' अक्षर या वर्ण।
हकारना–(हिं० क्रि०) पाल तानना, झंडा उठाना।
हक्काबक्का–(हिं०क्रि०) घबड़ाया हुआ।
हक्कार–(सं० पुं०) पुकार।
हगना–(हिं० क्रि०) मल त्याग करना।
हचकना–(हिं० क्रि०) धक्के से हिलना-डोलना।
हचका–(हिं० पुं०) धक्का, झोंका।
हचकाना–(हिं० क्रि०) झोंका देकर हिलाना।
हचना–(हिं० क्रि०) देखो हिचकना।
हज्जाम–(हिं०पुं०) हजामत बनानेवाला नाई।

हटकन–(हिं० स्त्री०) चौपायों के हाँकने की छड़ी। **हटकना**–(हिं० क्रि०) निषेध करना, मना करना।
हटना–(हिं०क्रि०) एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान में जाना।
हटवया' हटवा–(हिं०वि०) हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला, दूकानदार।
हटवाई–(हिं० स्त्री०) क्रय-विक्रय।
हटवाना–(हिं० क्रि०) हटाने का काम दूसरे से कराना।
हटाना–(हिं० क्रि०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना, खिसकाना।
हटुआ–(हिं० पुं०) दूकानदार, अन्न तौलनेवाला, बया।
हट्ट–(सं० पुं०) हाट, दुकान।
हट्टाकट्टा–(हिं० वि०) हृष्टपुष्ट, मोटा-ताजा।
हट्टाध्यक्ष–(सं० पुं०) हाट का अध्यक्ष।
हट्टी–(हिं० स्त्री०) दूकान।
हठ–(सं० पुं०) दुराग्रह, टेक, दृढ़ प्रतिज्ञा। **हठधर्म**–(सं० पुं०) दुराग्रह, कट्टरपन। **हठधर्मी**–(सं० स्त्री०) अपने मत या सम्प्रदाय पर अड़ने की प्रकृति। **हठना**–(हिं० क्रि०) दुराग्रह करना। **हठकर**–(हिं० क्रि० वि०) दुराग्रह से।
हठशील–(सं० वि०) हठी।
हठात्–(सं० अव्य०) हठपूर्वक, दुराग्रह से, अवश्य।
हठी–(हिं० वि०) हठ करनेवाला। **हठीला**–(हिं० वि०) अपनी प्रतिज्ञा का पक्का।
हड़कना–(हिं० वि०) व्याकुल होना। **हड़गीला**–(हिं० वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
हड़ताल–(हिं० स्त्री०) किसी बात पर असन्तोष प्रकट करने के लिये दूकान बंद करना अथवा काम करनेवालों का काम बन्द करना।
हड़प–(हिं० वि०) निगला हुआ, अनुचित रीति से लिया हुआ। **हड़पना**–(हिं० क्रि०) दूसरे की वस्तु को अनुचित रूप से ले लेना।
हड़फूटन–(हिं०स्त्री०) शरीर की भीतरी व्यथा, हड्डियों में पीड़ा।
हड़बड़–(हिं०स्त्री०) उतावलापन, आतुरता
हड़बड़ाना–(हिं० क्रि०) आतुर होना।
हड़बड़िया–(हिं० वि०) उतावला।
हड़बड़ी–(हिं० स्त्री०) उतावलापन।
हड़हड़ाना–(हिं० क्रि०) उतावलेपन से दूसरे को व्यग्र करना।
हड़हा–(हिं० पुं०) जंगली बैल; (वि०) अति दुर्बल, जिसके शरीर में केवल हड्डी रह गई हो।
हड़ावल–(हिं० स्त्री०) हड्डी का ढाँचा।
हड़ीला–(हिं० वि०) जिसमें हड्डी हो।
हड्डा–(हिं० पुं०) भिड़, बर्रे।
हड्डी–(हिं० स्त्री०) अस्थि, वंश।
हण्डा–(हिं० स्त्री०) जल आदि रखने का बड़ा पात्र।
हण्डी–(सं० स्त्री०) हाँड़ी।
हत–(सं० वि०) वध किया हुआ, मारा हुआ, पीड़ित, ग्रस्त, लगा हुआ, गुणा किया हुआ, बिगाड़ा हुआ, आशाहीन।
हतज्ञान–(सं० वि०) ज्ञानशून्य, अचेत।
हतदैव–(सं० वि०) भाग्यहीन, अभागा।
हतना–(हिं० क्रि०) वध करना, मार डालना।
हतप्रभ–(सं० वि०) प्रभारहित। **हतबुद्धि**–(सं० वि०) बुद्धिहीन, मूर्ख। **हतभाग्य**–(सं० वि०) अभागा। **हतवाना**–(हिं० क्रि०) वध कराना। **हतवीर्य**–(सं०वि०) शक्तिहीन, बलहीन।

हतादर–(सं० वि०) जिसका आदर घट गया हो।

हताश–(सं०वि०) आशारहित, निराश।

हताहत–(सं० वि०) मारे गये और चोटैल।

हति–(सं० स्त्री०) व्याघात, हत्या।

हतोत्साह–(सं० वि०) जिसको कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

हतौजस–(सं० वि०) तेजहीन, दुर्बल।

हत्था–(हिं० पुं०) किसी यन्त्र का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता हो, मूठें।

हत्थ–(हिं० क्रि० वि०) हाथ में।

हत्या–(सं०स्त्री०) वध, झंझट, बखेड़ा।

हत्यारा–(हिं० पुं०) हत्या करनेवाला।

हत्यारी–(हिं० स्त्री०) हत्या करनेवाली, हत्या करने का पाप।

हथ–(हिं० पुं०) "हाथ" शब्द का संक्षिप्त रूप, समस्त पदों में इसका व्यवहार होता है। **हथकंडा**–(हिं०पुं०) हस्तलाघव **हथकड़ी**–(हिं० स्त्री०) कैदियों के हाथों में पहनाने का लोहे का कड़ा। **हथकल**–(हिं० पुं०) पेंच ढीली करने या कसन का एक औजार। **हथकोड़ा**–(हिं० पुं०) युक्ति। **हथछुट**–(हिं० वि०) जिसको तुरंत किसी को मार देने का अभ्यास हो। **हथधरी**–(हिं० स्त्री०) सहारा लेने की लकड़ी। **हथनाल**–(हिं० पुं०) वह तोप जो हाथी की पीठ पर रखकर चलती है, गजनाल।

हथनी–(हिं० स्त्री०) मादा हाथी, हथिनी।

हथफूल–(हिं०पुं०) हथेली की दूसरी ओर पहनने का एक प्रकार का गहना।

हथफेर–(हिं० पुं०) थोड़े दिन के लिये बिना लिखापढ़ी के लिया गया ऋण।

हथवांसना–(हिं०क्रि०) व्यवहार में लाना

हथसार–(हिं० स्त्री०) हाथी रखने का स्थान।

हथाहथी–(हिं० अव्य०) हाथों हाथ, झटपट।

हथिनी–(हिं०स्त्री०) मादा हाथी, हथनी।

हथियाना–(हिं०क्रि०) हाथ में लेना या पकड़ना, धोखा देकर दूसरे की वस्तु लेना।

हथियार–(हिं० पुं०) अस्त्र-शस्त्र।

हथुई रोटी–(हिं० स्त्री०) गीले आटे की लोई को हथेलियों से दबाकर बनाई हुई रोटी।

हथेरी–(हिं० स्त्री०) देखो हथेली।

हथेली–(हिं० स्त्री०) करतल।

हथोरी–(हिं० स्त्री०) देखो हथेली।

हथौटी–(हिं० स्त्री०) हस्त-कौशल।

हथौड़ा–(हिं० पुं०) ठोंकने या गढ़ने का लोहे का एक औजार, मारतौल। **हथौड़ी**–(हिं० स्त्री०) छोटा हथौड़ा।

हथ्यार–(हिं० पुं०) देखो हथियार।

हनन–(सं० पुं०) वध, मारण, आघात, गुणा करने की क्रिया।

हनना–(हिं० क्रि०) वध करना, मार डालना। **हनवाना**–(हिं० क्रि०) हनने का कार्य दूसरे से कराना। **हननीय**–(सं० वि०) वध करने योग्य।

हनु–(सं० स्त्री०) हनु, ठुड्ढी।

हन्त–(सं० अव्य०) संभ्रम, विषाद, हर्ष आदि सूचक शब्द।

हन्तव्य–(सं० वि०) मारने योग्य।

हन्ता–(हिं०पुं०) मारनेवाला, हत्यारा।

हप–(हिं० पुं०) मुंह में झट से लेकर ओठों को बन्द करने का शब्द।

हपटाना–(हिं० क्रि०) हाँफना।

हबकाना–(हिं० क्रि०) खाने या काटने के लिये झट से मुख खोलना।

हबर-हबर–(हिं० क्रि० वि०) हड़बड़ी से।
हबराना–(हिं० क्रि०) देखो हबड़ाना।
हब्बा-डब्बा–(हिं० पुं०) बच्चों की पसली चलने का रोग।
हम–(हिं० सर्व०) उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम, "मैं" का बहुवचन का रूप, अहंकार, अभिमान।
हमता–(हिं० स्त्री०) अहंकार।
हमरा–(हिं० सर्व०) देखो हमारा।
हमारा–(हिं०सर्व०) 'हम' का सम्बन्ध कारक का रूप।
हमाहमी–(हिं० स्त्री०) अहंकार।
हमें–(हिं० सर्व०) "हम" का कर्म और सम्प्रदान कारक का रूप, हमको।
हमेव–(हिं० पुं०) अभिमान, अहंकार।
हमैं–(हिं० सर्व०) देखो हमें।
हयना–(हिं० क्रि०) हत्या करना, वध करना।
हयनाल–(हिं० स्त्री०) घोड़ों से खींची जानेवाली तोप। **हयमेध**–(सं० पुं०) अश्वमेध यज्ञ। **हयविद्या**–(सं० स्त्री०) अश्वविद्या। **हयवैरी**–(सं० पुं०) भैंसा। **हयशाला**–(सं० स्त्री०) अश्वशाला, घुड़साल। **हयारोही**–(सं०पुं०) अश्वारोही, घुड़सवार। **हयालय**–(सं०पुं०) अश्वशाला।
हर–(सं० पुं०) शिव, महादेव, गणित में किसी संख्या का भाजक, भिन्न में नीचे की संख्या; (वि०) छीनने या लूटनेवाला।
हरए–(हिं० अव्य०) धीरे-धीरे।
हरक–(सं० वि०) हरण करनेवाला।
हरकना–(हिं० क्रि०) देखो हटकना।
हरकारा–(हिं० पुं०) सन्देश अथवा चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला।
हरख–(हिं० पुं०) देखो हर्ष। **हरखना**–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना। **हरखाना**–प्रसन्न करना।
हरट्ट–(हिं० वि०) हृष्ट-पुष्ट।
हरण–(सं० पुं०) लूटना, छीनना, भाग देना, विभाग करना, ले जाना। **हरणीय**–(सं० वि०) हरण करने योग्य, छीनने लायक।
हरता–(हिं० वि०) देखो हर्ता।
हरताली–(हिं० वि०) उपद्रवी।
हरदिया–(हिं०वि०) हल्दी के रंग का, पीला।
हरदी–(हिं० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।
हरना–(हिं० क्रि०) छीनना, लूटना, हटाना, दूर करना, नाश करना; (हिं० पुं०) देखो हिरन।
हरनी–(हिं० स्त्री०) मादा हरिण, मृगी।
हरनौटा–(हिं० पुं०) हरिण का बच्चा।
हरफा–(हिं० पुं०) कटा हुआ चारा रखने का घर।
हरफारेवड़ी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा खट्टा फल।
हरबर–(हिं० क्रि० वि०) शीघ्र।
हरबराना–(हिं० क्रि०) देखो हड़बड़ाना।
हरबीज–(सं० पुं०) पारद, पारा।
हरबोंग–(हिं०वि०) गँवार, अक्खड़, मूर्ख।
हरवल–(हिं० स्त्री०) हलवाहों को बिना ब्याज के दिया हुआ धन।
हरवाहन–(सं०पुं०) शिव की सवारी, बैल।
हरवाहा–(हिं० पुं०) हल चलानेवाला, श्रमिक। **हरवाही**–(हिं० स्त्री०) हलवाहे का काम या वेतन।
हरष–(हिं० पुं०) देखो हर्ष, प्रसन्नता।
हरषना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना।
हरषाना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना।
हरषित–(हिं० वि०) हर्षित, प्रसन्न।
हरसना–(हिं०क्रि०) हरखना, प्रसन्न होना।
हर्रसिंगार–(हिं०पुं०) पारिजात, पारजात।

हरहाई–वह नटखट गाय जो इधर-उधर भागती फिरती है।
हरांस–(हि० पुं०) मन्द ज्वर।
हरा–(हि० वि०) हरित, घास या पत्ती के रंग का, प्रसन्न, प्रफुल्ल, जो सूखा या मरा न हो, फल-फल जो पका न हो।
हराई–(हि०स्त्री०) हार की स्थिति, हार।
हराना–(हि०क्रि०)पराजित करना,थकाना
हरापन–(हि० पुं०) हरे होने का भाव।
हराभरा–(हि० वि०) प्रफुल्ल, नवीन।
हरि–(सं० पुं०) विष्णु, सिंह, सुग्गा, सर्प, बन्दर, घोड़ा।
हरिअर–(हि० वि०) हरित, हरा।
हरिअरी–(हि० स्त्री०) हरापन, हरियाली। **हरिआली**–(हि० स्त्री०) घास, पेड़, पौधों आदि का विस्तार।
हरिचर्म–(सं० पुं०) व्याघ्रचर्म।
हरिचाप–(सं० पुं०) इन्द्रधनुष।
हरिजन–(सं०पुं०)ईश्वर का भक्त, अछूत।
हरिण–(सं० पुं०) मृग, कुरङ्ग, हरना, सूर्य, भूरा रंग; (वि०) भूरे रंग का।
हरिणनयना–(सं० स्त्री०) हरिण के समान सुन्दर आँखोंवाली स्त्री।
हरिणलाञ्छन–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
हरिणाक्ष–(सं० वि०) हरिण के समान आँखोंवाला। **हरिणाक्षी**–(सं० वि०) हरिण के समान नत्रवाली स्त्री।
हरिणी–(सं० स्त्री०) मृगी, मादा हरिण।
हरित–(सं० वि०) कपिश, भूरे या बदामी रंग का।
हरितमणि–(सं०पुं०) मरकतमणि, पन्ना।
हरिदिन–(सं० स्त्री०) एकादशी।
हरिद्रा–(सं० स्त्री०) हल्दी।
हरिधनुष–(सं०पुं०) इन्द्रधनुष। **हरिधाम**–(सं० पुं०) विष्णु लोक, वैकुण्ठ।
हरिन–(हि० पुं०) हरिण, मृग।
हरिनाम–(सं०पुं०) भगवान् का नाम।
हरिनी–(सं० स्त्री०) मादा हरिण।
हरिन्मणि–(सं० पुं०) मरकतमणि, पन्ना
हरिपद–(सं० पुं०) विष्णुलोक, बैकुण्ठ।
हरिपुर–(सं० पुं०) विष्णुलोक, वैकुण्ठ।
हरिप्रबोधनी–(सं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला एकादशी।
हरियर–(हि० वि०) हरे रंग का, हरा।
हरियाई–(हि० स्त्री०) हरियाली।
हरियाली-(हि० स्त्री०) हरे हरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार।
हरिलोक–(सं० पुं०) विष्णुलोक, वैकुण्ठ।
हरिशयनी–(सं० स्त्री०) आषाढ़ शुक्ला एकादशी।
हरिस–(हि० स्त्री०) हल की वह लंबी लकड़ी जिसके एक सिरे पर फालवाली लकड़ी जड़ी होती है।
हरीतकी–(सं० स्त्री०) हड़, हरँ।
हरीरा–(अ० पुं०) दूध में सूजी, चीनी, इलायची आदि डालकर पकाया हुआ एक पेय पदार्थ जो विशेषकर प्रसूता स्त्री को पिलाया जाता है।
हरीस–(हि० स्त्री०) देखो हरिस।
हरुअ, हरुआ–(हि० वि०) देखो हलका।
हलकई–(हि० स्त्री०) हलकापन, तुच्छता
हलकना–(हि० क्रि०) हिलना, डोलना।
हलका–(हि० वि०) जो तौल में भारी न हो, गहरा न हो, सहज, ओछा, थोड़ा, जो चटकीला न हो, प्रफुल्ल, महीन, छूँछा, घटिया, मन्द।
हलकाई–(हि०स्त्री०)हल्कापन, ओछापन
हलकाना–(हि०क्रि०) हिलोरा देना।
हलकापन–(हि०पुं०)तुच्छ बुद्धि,ओछापन।
हलकारा–(हि० पुं०) देखो हरकारा।
हलकोरा–(हि० पुं०) पानी की लहर।
हलचल–(हि० स्त्री०) अधीरता, व्यग्रता

हिलना-डोलना, कम्प; (त्रि०) डगमगाता हुआ, डोलता हुआ।
हलजीवी–(सं० वि०) हल चलाकर खेती करनेवाला किसान।
हलड़ा–(हिं०पुं०) देखो हलरा।
हलदण्ड–(सं०पुं०) हल का लम्बा डण्डा, हरिस।
हलदी–(हिं० स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसकी ग्रन्थिमय जड़ मसालों में व्यवहार की जाती है।
हलधर–(सं० पुं०) हल धारण करनेवाले, बलरामजी।
हलना–(हिं०क्रि०) हिलना, डोलना, धँसना।
हलन्त–(सं० पुं०) वह शुद्ध व्यञ्जन जिसके उच्चारण में स्वर न मिला हो।
हलफा–(हिं० पुं०) हिलोरा, लहर।
हलबल–(हिं० पुं०) देखो हलचल।
हलबी, हलब्बी–(हिं० वि०) हलब देश का (काँच), बढ़िया (काँच)।
हलभली–(हिं० स्त्री०) शीघ्रता।
हलमुख–(सं० पुं०) हल का फार।
हलराना–(हिं० क्रि०) हिलाना, डुलाना, हाथ पर झुलाना।
हलवाइन–(हिं० स्त्री०) हलवाई की स्त्री। **हलवाई**–(हिं० पुं०) मिठाई बनाने और बेचनेवाला।
हलवाह, हलवाहा–(हिं०पुं०) हल चलाने का काम करनेवाला या नौकर।
हलहल–(हिं० पुं०) किसी वस्तु में भरे हुए जल को हिलाने पर उत्पन्न शब्द।
हलहलाना–(हिं०क्रि०) कंपाना, हिलाना।
हलाहल–(सं० पुं०) बहुत तीव्र विष।
हलुवा–(हिं० पुं०) एक प्रसिद्ध मीठा खाद्य-पदार्थ, मोहन-भोग।
हलेरना–(हिं० क्रि०) हिलाना, डुलाना, मथना।
हलोरा–(हिं० पु०) देखो हिलोरा।
हल्का–(हिं० वि०) देखो हलका।
हल्दी–(हिं० स्त्री०) देखो हलदी।
हल्ला–(हिं०पुं०) कोलाहल, चिल्लाहट।
हवन–(सं० पुं०) होम, किसी देवता के निमित्त अग्नि में घृत, तिल, जव आदि डालने की क्रिया, अग्नि, अग्निकुण्ड।
हवनीय–(सं०वि०) हवन के योग्य; (पुं०) वह पदार्थ जो हवन करने में अग्नि में डाला जावे।
हवाचक्की–(हिं० स्त्री०) आटा पीसने की हवा की शक्ति से चलनेवाली चक्की।
हवि–(सं० पुं०) वह द्रव्य जिसकी आहुति अग्नि में दी जावे।
हविर्दान–(सं० पुं०) यज्ञ में घृत आदि की आहुति।
हविर्भुज–(सं० वि०) अग्नि देवता।
हविष्य–(सं० वि०) जिसकी आहुति दी जानेवाली हो।
हविष्यान्न–(सं० पुं०) वह अन्न जो यज्ञ के समय प्रयोग किया जाय।
हव्य–(सं०पुं०) वह वस्तु जिसकी आहुति अग्नि में दी जावे।
हसन–(सं० पुं०) परिहास, विनोद।
हसिक–(सं०वि०) हँसी-ठिठोली करनेवाला।
हसित–(सं० पुं०) उपहास, हँसी, ठट्ठा; (वि०) विकसित, खिला हुआ।
हस्त–(सं० पुं०) हाथ, हाथी का सूँड़, चौबीस अंगुली की नाप, हाथ की लिखावट, गुच्छा, समूह, एक नक्षत्र।
हस्तक–(सं० पुं०) संगीत का एक ताल, ताली बजाना।
हस्तकार्य–(सं० पुं०) हाथ का काम।
हस्तकौशल–(सं० पुं०) काम करने में हाथ की कुशलता।

हस्तक्षेप–(सं० वि०) किसी काम में हाथ डालना।
हस्तगत–(सं०वि०) हाथ में आया हुआ, प्राप्त।
हस्ततल–(सं० पुं०) हथेली। **हस्तत्राण**–(सं० पुं०) हाथ में पहिनने का कवच। **हस्तलाघव**–(सं० पुं०) हाथ की चतुराई। **हस्तलिखित**–(सं० वि०) हाथ का लिखा हुआ। **हस्तलिपि**–(सं० स्त्री०) हाथ की लिखावट। **हस्तसूत्र**–(सं० पुं०)हाथ में बाँधने का मंगलसूत्र।
हस्ति–(सं० पुं०) गज, हाथी।
हस्तिनी–(सं० स्त्री०) मादा हाथी, हथिनी। **हस्तिप**–(सं० पुं०) महावत।
हस्ते–(हिं० अव्य०) हाथ से।
हहर–(हिं० स्त्री०) कपकँपी, थरथराहट। **हहरना**–(हिं० क्रि०) काँपना, थर्राना। **हहराना**–(हिं०क्रि०) कँपाना।
हहा–(हिं०स्त्री०) हँसने का शब्द, ठट्ठा, बिनती।
हाँ–(हिं० अव्य०) स्वीकृति अथवा सम्मतिसूचक शब्द।
हाँक–(हिं० स्त्री०) चिल्लाकर पुकारने का शब्द, चिल्लाहट, ललकार।
हाँकना–(हिं०क्रि०) चिल्लाकर पुकारना, घोड़े, बैल, ऊँट आदि से गाड़ी चलवाना, चौपायों को किसी स्थान से हटाना, पंखा झलना।
हाँड़ना–(हिं० वि०) व्यर्थ इधर उधर घूमनेवाला।
हाँड़ी–(हिं० स्त्री०) बटलोही के आकार का मिट्टी का पात्र।
हाँपना, हाँफना–(हिं० क्रि०) दौड़ने, परिश्रम करने या रोग के कारण साँस का वेग से चलना।
हाँसना–(हिं० क्रि०) हँसना।
हाँसी–(हिं० स्त्री०) उपहास, निन्दा।
हाँहाँ–(हिं० अव्य०) वह शब्द जिसको बोलकर किसी काम को करने से तुरत रोकते हैं।
हा–(सं० अव्य०) शोक या दुःखसूचक शब्द; (पुं०)वध करनेवाला,मारनेवाला।
हाइ–(हिं० अव्य०) हाय।
हाई–(हिं० स्त्री०) अवस्था, दशा, ढंग।
हाऊ–(हिं०पुं०)बच्चों को डरान का शब्द।
हाट–(हिं० स्त्री०) दूकान, बाजार, बाजार लगने का दिन।
हाटक–(हिं० पुं०) सुवर्ण, सोना।
हाड़–(हिं० पुं०) अस्थि, हड्डी।
हाथ–(हिं० पुं०) किसी पदार्थ को पकड़ने या छूने का अवयव, हस्त, चौबीस अंगुल की नाप, ताश, जुए आदि के खल में एक आदमी के खेलने की बारी, किसी कार्यालय में काम करनेवाला मनुष्य।
हाथकण्डा–(हिं० पुं०) देखो हथकण्डा।
हाथपान, हाथफूल–(हिं० पुं०) हथेली के पीछ की ओर पहनने का एक आभूषण।
हाथा–(हिं० पुं०) किसी अस्त्र की मूँठ।
हाथी–(हिं० पुं०) हस्ती।
हान, हानि–(सं० स्त्री०) नाश, क्षय, अभाव, बुराई, क्षति, घाटा।
हानिकर–(सं० वि०) अनिष्ट करनेवाला। **हानिकारक, हानिकारी**–(सं० वि०)बुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला।
हाफु–(हिं० पुं०) अहिफेन, अफीम।
हामी–(हिं० पुं०) स्वीकृति, स्वीकार।
हाय–(हिं० पुं०) पीड़ा अथवा दुःख सूचित करने का शब्द, आह; (स्त्री०) पीड़ा, दुख, कष्ट।
हायहाय–(हिं० अव्य०) शोक, दुख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द, झंझट।

हार–(हिं० पुं०) सोने चांदी या मोतियों की माला, अंकगणित में भाजक; (हिं० स्त्री०) पराजय, हानि, क्षति।
हारक–(सं० पुं०) चोर, गणित में भाजक, हार, माल हरण करनेवाला।
हारना–(हिं० क्रि०) पराभूत होना, थक जाना, निराश होना, लड़ाई जुए आदि को न जीतना, गँवाना, छोड़ देना।
हारा–(हिं० पुं०) प्राचीन हिन्दी का एक प्रत्यय जो "वाला" अर्थ में शब्दों में प्रयोग होता था।
हारी–(सं०वि०) चुरानेवाला, नाश करनेवाला, जीतनेवाला, मोहित करनेवाला।
हार्दिक–(सं० वि०) हृदय से निकला हुआ, सच्चा।
हाल–(हिं० स्त्री०) लोहे का वह बन्द जो पहिये के घेरे पर चढ़ाया जाता है।
हालना–(हिं०क्रि०) हिलाना, डुलाना।
हालरा–(हिं० पुं०) हिलोरा, झोंका।
हालहूल–(हिं० स्त्री०) हल्लागुल्ला, हलचल।
हालाहल–(सं० पुं०) देखो हलाहल।
हाली–(हिं० अव्य०) शीघ्र, जल्दी से।
हाव–(सं० पुं०) आकर्षण करनेवाली चेष्टायें।
हावभाव–(सं० पुं०) पुरुषों का चित्त आकर्षण करनेवाली स्त्रियों की चेष्टा।
हास–(सं० पुं०) हँसी, उपहास, निन्दा।
हासक–(सं० पुं०) हँसनेवाला।
हासकर–(सं० वि०) हँसानेवाला।
हासी–(हिं० वि०) हँसनेवाला।
हास्य–(सं० पुं०) हँसी, हँसी ठट्ठा, उपहास। हास्यकर–(सं०वि०) हँसानेवाला।
हाहन्त–(सं० अव्य०) अत्यन्त शोकसूचक शब्द।
हाहा–(हिं० पुं०) हँसने का शब्द, गिड़गिड़ाने का शब्द।
हाहाकार–(हिं०पुं०) घबड़ाहट, चिल्लाहट, युद्ध में का कोलाहल।
हाहाठीठी–(हिं० स्त्री०) हँसी ठट्ठा।
हाही–(हिं० स्त्री०) कुछ पाने की उत्कट इच्छा।
हाहू–(हिं० पुं०) कोलाहल, हलचल।
हि–(सं० अव्य०) हेतु, कारण, निश्चय तथा संभ्रम अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है। हिन्दी की एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले सभी कारकों में होता था, परन्तु बाद में इसका प्रयोग ("को" अर्थ में) कर्म और सम्प्रदान में ही होने लगा।
हिंडोरा–(हिं० पुं०) देखो हिंडोला।
हिंडोल–(हिं० पुं०) हिंडोला।
हिंडोला–(हिं० पुं०) पालना, झूला।
हिंदी–(स्त्री०) भारतवर्ष की बोली, हिंदुस्तान की भाषा।
हिंदुस्थान–(हिं० पुं०) देखो भारतवर्ष।
हियाँ–(हिं० अव्य०) यहाँ।
हिंसक–(सं० वि०) घातक, हत्यारा।
हिंसा–(सं०वि०) वध, हत्या, कष्ट।
हिंसाकर्म–(सं०पुं०) किसी को मारने या कष्ट देने का काम।
हित–(सं० वि०) उपकारी, लाभदायक, अनुकूल, प्रिय, अच्छा व्यवहार करनेवाला, पथ्य; (पुं०) लाभ, कल्याण, मित्र संबंधी, अनुकूलता; (अव्य०) निमित्त, वास्ते, लिये, प्रसन्नता के लिय। हितकर–(सं०वि०) उपयोगी, स्वास्थ्यकर। हितकर्त्ता–(सं० पुं०) भलाई करनेवाला। हितकारक–(सं० वि०) लाभ पहुँचानेवाला, स्वास्थ्यकर। हितकारी–(सं०वि०) उपकार

या कल्याण करनेवाला। **हितचिन्तक**–(सं० पुं०) भला चाहनेवाला। **हितचिन्तन**–(सं० पुं०) उपकार की इच्छा। **हितवादी**–(सं० वि०) उपकार या लाभ की बात कहनेवाला।
हिताई–(हिं० स्त्री०) संबंध, नाता।
हिताना–(हिं० क्रि०) अनुकूल होना।
हितानुबन्धी–(हिं०वि०) भलाई चाहनेवाला। **हितार्थी**–(सं० वि०) हित या भलाई चाहनेवाला।
हितू, हीतू–(हिं० वि०) भलाई चाहनेवाला, मित्र, संबंधी, स्नेही।
हितेच्छा–(सं०स्त्री०) उपकार का ध्यान।
हितेच्छु–(सं०वि०) कल्याण मनानेवाला।
हितेषिता–(सं० स्त्री०) कल्याण चाहने की वृत्ति। **हितैषी**--(सं० वि०) भला चाहनेवाला; (पुं०) मित्र।
हितोक्ति–(सं०स्त्री०) भलाई का उपदेश।
हितोपदेश–(सं० पुं०) भलाई के उपदेश।
हिनती–(हिं० स्त्री०) देखो हीनता।
हिन्दुस्तान–(हिं० पुं०) भारतवर्ष।
हिन्दू–(सं० पुं०) आर्यावर्तवासी, वर्णाश्रम धर्मी।
हिमन्त–(हिं० पुं०) देखो हेमन्त।
हिम–(सं०वि०) शीतल, ठंडा; (पुं०) पाला, जाड़े की ऋतु। **हिमउपल**–(सं० पुं०) ओला, पत्थर। **हिमकण**–(सं० पुं०) पाले का महीन टुकड़ा।
हिमपात–(सं० पुं०) पाला पड़ना।
हिमवारि–(सं० पुं०) ठंढा पानी।
हिमवृष्टि–(सं० स्त्री०) पाला गिरना।
हिमाचल–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत।
हिमाद्रि–(सं० पुं०) हिमालय पर्वत।
हिमि–(हिं० पुं०) हिम, पाला।
हिमोदक–(सं० पुं०) ठंढा पानी।
हिय, हियरा–(हिं०पुं०) हृदय, मन, छाती।
हियाँ–(हिं० अव्य०) यहाँ, इस जगह।
हियावो–(हिं० पुं०) हृदय, मन, वक्षःस्थल।
हियाव–(हिं० पुं०) साहस, दृढ़ता।
हिरकना–(हिं० क्रि०) पास में जाना, सटना। **हिरकाना**–(हिं० क्रि०) पास में ले जाना, सटाना।
हिरण–(हिं० पुं०) हरिन, मृग।
हिरण्य–(सं० पुं०) सुवर्ण, सोना, धन, चाँदी। **हिरण्यकार**–(सं० पुं०) सुनार।
हिरदय–(हिं० पुं०) देखो हृदय।
हिरन–(हिं० पुं०) हरिण, मृग।
हिरस–(हिं० पुं०) ईर्षा।
हिराना–(हिं० क्रि०) खो जाना, दूर होना, भूल जाना।
हिलंदा–(हिं० पुं०) मोटा ताजा मनुष्य।
हिलकी–(हिं० स्त्री०) हिचकी, सुसकी।
हिलकोर, हिलकोरा–(हिं० पुं०) तरंग, लहर। **हिलकोरना**–(हिं० स्त्री०) पानी को हिलाकर लहरें उठाना।
हिलग–(हिं० स्त्री०) संबंध, लगाव।
हिलगत–(हिं० स्त्री०) टेव। **हिलगाना**–(हिं०क्रि०) अटकना, लगना, परचाना।
हिलना–(हिं० क्रि०) डोलना, सरकना, ढीला होना, कपना, थरथराना, झूमना, लहराना, उद्योग करना।
हिलाना–(हिं० क्रि०) डुलाना, झुलाना, कपाना, परचाना।
हिलोर, हिलोरा–(हिं०पुं०) तरंग, लहर।
हिलोरना–(हिं०क्रि०) हिलाना, डुलाना, लहराना। **हिलोल**–(हिं० पुं०) देखो हिलोर।
हिवँर, हिवाँर–(हिं० पुं०) पाला।
हिसका–(हिं० पुं०) ईर्ष्या, डाह, स्पर्धा।
हिसाबचोर–(हिं० पुं०) वह जो हिसाब किताब लिखने में चोरी करता हो।

हिसाब बही–(हिं० स्त्री०) वह पुस्तक जिसमें लेनदेन का व्योरा लिखा जाता हो
हिसिषा–(हिं० स्त्री०) ईर्ष्या, स्पर्धा।
हिहि–(स० अव्य०) हँसने का शब्द।
हींग–(हिं० स्त्री०) एक छोटे पौधे का जमाया हुआ गोंद जो मसालों में व्यवहार किया जाता है।
हींछा–(हिं० स्त्री०) इच्छा।
हींड़ना–(हिं० क्रि०) पछताना।
हींहीं–(सं० स्त्री०) हँसने का शब्द।
ही–(सं० अव्य०) वह शब्द जो प्रभाव डालने के लिय अथवा स्वीकृति, परिमिति, निश्चय, अल्पता, शून्यता आदि सूचित करन के लिये प्रयोग किया जाता है।
हीअ–(हिं० पुं०) देखो हिय, हृदय।
हीक–(हिं० स्त्री०) हिचकी, हलकी गन्ध।
हीचना–(हिं० क्रि०) देखो हिचकना।
हीछना–(हिं० क्रि०) इच्छा करना।
हीज (हिं० वि०) आलसी, मट्ठर।
हीठना–(हिं० क्रि०) पास में जाना।
हीन–(सं० वि०) अल्प, तुच्छ, कम, दीन, वंचित, ओछा। हीनकर्म–(सं० वि०) बुरा काम करनेवाला।
हीनकुल–(सं०वि०) नीच कुल का।
हीनचरित–(सं०वि०) जिसका आचरण बुरा हो। हीनज–(सं० वि०) नीच जाति से उत्पन्न। हीनजाति–(सं०वि०) नीच जाति या वर्ण।
हीनता–(सं० स्त्री०) क्षुद्रता, नीचता।
हीनबल–(सं० वि०) शक्तिहीन।
हीनबुद्धि–(सं० वि०) जड़, मूर्ख।
हीनमति–(सं० वि०) बुद्धिशून्य।
हीनमूल्य–(सं० पुं०) कम दाम।
हीनवर्ण–(सं० पुं०) नीच जाति या वर्ण।
हीय, हिया–(हिं० पुं०) हृदय, हिया।
हीर–(हिं०पुं०) सार, गूदा, शक्ति, बल।
हीरा–(हिं० पुं०) एक रत्न जो कड़ाई और चमक के लिये प्रसिद्ध है; (वि०) अति उत्तम वस्तु।
हीरामन–(हिं० पुं०) सुग्गे की एक कल्पित जाति जो सोने के रंग का माना जाता है।
हीही–(हिं०स्त्री०) ही ही करके हँसने की क्रिया। हीहीकार–(सं०पुं०) ही ही शब्द।
हुँ–(हिं०अव्य०) स्वीकृतिसूचक शब्द, हाँ।
हुंकार–(हिं०पुं०) ललकार, गरज।
हुंकारना–(हिं०क्रि०) ललकारना, गरजना।
हुंकारी–(हिं० स्त्री०) "हुँ" करने की क्रिया। एक स्वीकृतिसूचक शब्द।
हुँडार–(हिं० पुं०) वृक, भेड़िया।
हुंडी–(हिं० स्त्री०) रुपया उधार लेने की वह रीति जिसमें लिखनेवाले को १६) का दो साल में २०) और २०) का २५) देना पड़ता है।
हुंत–(हिं० प्रत्य०) प्राचीन हिन्दी की तृतीया और पंचमी विभक्ति, द्वारा वास्ते, लिये।
हुं–(हिं० अव्य०) अतिरिक्त, और भी।
हुंआना–(हिं० क्रि०) सियार की तरह हुआँ हुआँ बोलना।
हुकना–(हिं०क्रि०) विस्मृत होना।
हुकर पुकर–(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, अधीरता।
हुकरना–(हिं० क्रि०) देखो हुंकारना।
हुकार–(सं० पुं०) ललकार, गरज।
हुड़क–(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा ढोल।
हुड़कना–(हिं० क्रि०) बच्चे का रो-रोकर व्याकुल होना।
हुड़का–(हिं० पुं०) किसी प्रिय व्यक्ति के अचानक वियोग से होनेवाली मानसिक व्यथा। हुड़काना-(हिं०क्रि०) ललचाना।
हुड़दंगा–(हिं० पुं०) उपद्रव।

हुत–(सं० वि०) हवन किया हुआ।
हुता–(हि० क्रि०) प्राचीन अवधी हिन्दी में "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप।
हुताश, हुताशन–(सं० पुं०) अग्नि, आग।
हुते–(हि० अव्य०) ओर से, द्वारा।
हुतो–(हि० क्रि०) "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था।
हुदकाना–(हि० क्रि०) उसकाना।
हुदना–(हि० क्रि०) स्तब्ध होना, रुकना।
हुदरना–(हि०क्रि०) रस्सी पर लटकाना।
हुन–(हि० पुं०) सुवर्ण, मुद्रा, सोना।
हुनना–(हि० क्रि०) आहुति देना।
हुन्न–(हि० पुं०) देखो हुन।
हुमकना–(हि० क्रि०) उछलना, कूदना।
हुल्कना–(हि० क्रि०) वमन करना।
हुलना–(हि० क्रि०) लाठी से ठेलना।
हुलसना–(हि० क्रि०) आनन्द से फूलना।
हुलसी–(हि० स्त्री०) आनन्द, हुलास।
हुला–(हि० पुं०) लाठी की नोक या छोर।
हुलाना–(हि०क्रि०) लाठी से ठेलना।
हुलाल–(हि०स्त्री०) तरंग, लहर।
हुलास–(हि०पुं) आनन्द की उमंग, उत्साह
हुलासी–(हि०वि०) उत्साही, आनन्दी।
हुल्लड़–(हि० पुं०) उपद्रव, ऊधम।
हुश–(हि०अव्य०) अनुचित बात बोलने पर रोकने के लिये यह शब्द कहा जाता है।
हूँ–(हि० अव्य०) स्वीकारसूचक शब्द 'है' का उत्तम पुरुष एक वचन का रूप।
हूँठ–(हि०पुं०) साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूँस–(हि०स्त्री०) ईर्ष्या, डाह, टोक, कोस, फटकार।
हूँसना–(हि०क्रि०) फटकारना, कोसना।
हूक–(हि०स्त्री) हृदय की पीड़ा।
हूकना (हि०क्रि०) पीड़ा होना।
हूचक–(हि०पुं०) युद्ध, लड़ाई।
हूटना–(हि०क्रि०) हटना, टलना।
हूठा–(हि०पुं०) भद्दी या गँवारू चेष्टा, ठेंगा
हूड़–(हि०वि०) असावधान, उजड्ड।
हूनना–(हि०क्रि०) आग में डालना।
हूरना–(हि०क्रि०) चुभाना, गड़ाना।
हूल–(हि०स्त्री०) लासा लगा हुआ चिड़िया फँसाने का बाँस, भाले, डंडे छुरे आदि की नोक से भोंकने की क्रिया, कोलाहल।
हूलना–(हि०क्रि०) लाठी भाले आदि के नोक को धँसाना।
हूला–(हि०पुं०) शस्त्र आदि से हूलने की क्रिया।
हूश–(हि०वि०) अशिष्ट, असभ्य, गँवार।
हूह–(हि०स्त्री०) युद्धनाद, कोलाहल।
हूहू–(सं०पुं०) एक प्रकार के गन्धर्व; (हि०पुं०) अग्नि के जलने का शब्द, धाँय-धाँय।
हृच्छूल–(सं०पुं०) हृदय का शूल, रोग।
हृत्–(सं०वि०) हरण किया हुआ।
हृत्कम्प–(सं०पुं०) हृदय का कंप।
हृदय–(सं०पुं०) वक्षःस्थल, अन्तःकरण, मन, विवेक, बुद्धि। **हृदयग्राही**–(सं० वि०) मन को लुभानेवाला।
हृदयंगम–(सं०पुं०) मन में बैठा हुआ।
हृदय प्रिय, हृदय वल्लभ–(सं० पुं०) प्रियतम, प्रेमपात्र। **हृदय विदारक**–अत्यन्त करुण, शोक अथवा दया उत्पन्न करनेवाला। **हृदयस्पर्शी**–(सं० वि०) हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।
हृदयालु–(सं०वि०) सहृदय, सुशील।
हृद्दाह–(सं०पुं०) कलेजे की जलन।
हृद्रुज–(सं०स्त्री०) हृदय की पीड़ा।
हृद्रोग–(सं०पुं०) हृदय का रोग।
हृषित–(सं०वि०) विस्मृत, पुलकित, प्रणत
हृषीकेश–(सं०पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण, हरिद्वार के पास का एक तीर्थस्थान।

हृष्ट–(सं०वि०) हर्षित। **हृष्टपुष्ट**–(सं० वि०) मोटा-ताजा। **हृष्टरोमन्**–(सं० वि०) रोमाञ्चित, पुलकित।
हे–(सं०अव्य०) संबोधन का शब्द जो पुकारन में या नाम लेन के पहिले बोला जाता है।
हेंहें–(हि०पुं०) धीरे-धीरे हँसने का शब्द।
हेंगा–(हि०पुं०) वह चौड़ा पाटा जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर की जाती है। **हेंगी**–(हि०स्त्री०) छोटा हेंगा।
हेकड़–(हि०वि०) उजड्ड, अक्खड़।
हेकड़ी–(हि०स्त्री०) प्रचण्डता, उग्रता।
हेठ–(हि०पुं०) बाधा, पीड़ा।
हेठा–(हि०वि०) तुच्छ, नीचा।
हेठापन–(हि०पुं०) नीचता।
हेठी–(हि०स्त्री०) मानहानि, अप्रतिष्ठा।
हेड़ा–(हि०पुं०) मांस।
हेत–(हि०पुं०) देखो हेतु, कारण।
हेतु–(सं०पुं०) प्रयोजन, कारण।
हेतुमान–(हि०वि०) जिसका कोई हेतु या कारण हो।
हेतुवाद–(सं०पुं०) तर्क, विद्या, नास्तिकता।
हेतुविद्या, हेतुशास्त्र–(सं० स्त्री०) तर्कशास्त्र।
हेम–(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना।
हेमकर्ता–(सं० पुं०) सुनार। **हेमकार**–(सं०पुं०) सुनार।
हेमन्त–(सं०पुं०) अगहन और पूस के महीने।
हेय–(सं०वि०) त्याज्य, छोड़ने योग्य, निकृष्ट, बुरा।
हेर–(हि० स्त्री०) ढूंढ़; (हि० क्रि०) खोजना, जाँच पड़ताल करना।
हेरफर–(हि० पुं०) चक्कर, घुमाव, उलट-फेर।
हेरवा–(हि०पुं०) खोज, अन्वेषण।
हेरवाना–(हि० क्रि०) ढुंढ़वाना।
हेराना–(हि०क्रि०) नष्ट होना, लुप्त हो जाना, मन्द पड़ना।
हेराफेरी–(हि० स्त्री०) अदल-बदल।
हेरिक–(सं०पुं०) भेद लेनेवाला दूत।
हेरी–(हि०स्त्री०) पुकार।
हेल–(हि०पुं०) घनिष्ठता, मेलजोल।
हेलना–(हि० क्रि०) क्रीड़ा करना, विनोद करना, हँसी करना, हँसी उड़ाना।
हेलमेल–(हि०पुं०) घनिष्ठ संबंध, संग-साथ।
हेला–(हि०पुं०) पुकार, चिल्लाहट, आक्रमण, ठेलने का काम, मेहतर।
हेलिन–(हि०स्त्री०) डोमिन।
हेली–(हि०स्त्री०) सहेली, सखी।
हेहे–(सं०अव्य०) सम्बोधनसूचक शब्द।
हेवंत–(हि०पुं०) देखो हेमन्त।
हैं–(हि०अव्य०) एक आश्चर्यसूचक शब्द, असम्मतिसूचक शब्द; (क्रि०) "होना" क्रिया का वर्तमान रूप "है" का बहुवचन।
हैं–(हि०क्रि०) "होना" क्रिया के वर्तमान काल का एक वचन का रूप।
हैकड़–(हि०वि०) देखो हेकड़।
हैकल–(हि०स्त्री०) हुमेल।
हैजम–(हि०स्त्री०) खड्ग, तलवार।
हैबर–(हि०पुं०) अच्छा घोड़ा।
हैहै–(हि०अव्य०) हाय।
हो–(हि०क्रि०) "होना" क्रिया का सम्भाव्य काल का बहुवचन का रूप।
होंठ–(हि०पुं०) ओष्ठ, ओंठ।
हों–(सं०पुं०) पुकारने का शब्द, विस्मय; (हि०क्रि०) "होना" क्रिया का सम्भाव्य काल का तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप, है, था।
होड़–(हि० स्त्री०) स्पर्धा, बराबरी हठ।

होड़ावादी, होड़ा-होड़ी–(हिं० स्त्री०) लाग डाँट।
होत–(हिं०स्त्री०) सामर्थ्य, सम्पन्नता।
होतब–(हिं०पुं०) होनहार, होनेवाला।
होतव्य–(हिं०पुं०) भवितव्य।
होतव्यता–(हिं०स्त्री०) भवितव्यता।
होता–(सं० पुं०) यज्ञादि में आहुति देनेवाला।
होत्री–(सं० स्त्री०) देखो होता।
होनहार–(हिं०वि०) भावी, अच्छे लक्षणों का।
होना–(हिं०क्रि०) अस्तित्व रखना, उपस्थित रहना, भुगतना, घटित किया जाना।
होनी–(हिं० स्त्री०) उत्पत्ति, होनेवाली घटना, वृत्तान्त।
होम–(सं०पुं०) आहुति देने का काम।
होमना–(हिं०क्रि०) हवन करना, छोड़ देना, नष्ट करना।
होर–(हिं०वि०) ठहरा हुआ, रुका हुआ।
होरमा–(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास।
होरसा–(हिं०पुं०) पत्थर की गोल चिकनी चौकी जिस पर चन्दन रगड़ा जाता है अथवा रोटी बनाई जाती है, चौका।
होरहा–(हिं०पुं०) चने का हरा दाना।
होरी–(हिं०स्त्री०) देखो होली।
होलक–(हिं०पुं०) आग पर भूनी हुई हरे चने मटर आदि की फलियाँ।
होला–(सं०स्त्री०) होली का त्यौहार।
होलाष्टक–(सं०पुं०) होली के त्यौहार के पहले के आठ दिन।
होलिका–(सं०स्त्री०) होली का त्यौहार, लकड़ी घास फूस आदि का ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है।
होली–(हिं०स्त्री०) हिन्दुओं का एक त्यौहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
होस–(हिं०पुं०) चेतना।
होहो–(अव्य०वि०) सम्बोधन का शब्द।
हौं–(हिं०अव्य०) वृजभाषा में "मैं" के लिये प्रयोग होता है; (क्रि०) हूँ।
हौंकना–(हिं०क्रि०) आग सुलगाना।
हौ–(हिं० अव्य०) स्वीकृतिसूचक शब्द हाँ, "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था।
हौआ–(हिं०पुं०) लड़कों को डराने के लिये एक भयानक प्राणी का नाम।
हौका–(हिं०पुं०) प्रबल लोभ या तृष्णा।
हौद–(हिं०पुं०) कुण्ड, छोटा जलाशय, नाँद
हौरा–(हिं०पुं०) हल्ला, कोलाहल।
हौली–(हिं०स्त्री०) मदिरा उतारने तथा बेचने का स्थान।
हौले–(हिं०क्रि०वि०) मन्द गति से, धीरे-धीरे।
हौस–(हिं०स्त्री०) चाह, इच्छा, अभिलाषा, प्रबल इच्छा।
ह्याँ–(हिं०अव्य०) यहाँ, इस स्थान पर।
ह्रद–(सं०पुं०) बड़ा तालाब या झील।
ह्रस्व–(सं०वि०) छोट परिमाण का, नाटा, छोटे आकार का, कम, थोड़ा, नीच, तुच्छ; (सं०पुं०) साग, व्याकरण में वे स्वर जो बहुत खींचकर नहीं बोले जाते। ह्रस्वत्व–(सं०स्त्री०) अल्पता, लघुता।
ह्राद–(सं०पुं०) शब्द, ध्वनि, मेघ की गर्जना।
ह्रीमान्–(हिं०वि०) लज्जाशील।
ह्लाद–(सं०पुं०) आनन्द।
ह्लादक–(सं०वि०) प्रसन्न करनेवाला।
ह्लादन–(सं०पुं०) आनन्द।
ह्लादिका–(सं०वि०) प्रसन्न करनेवाली।
ह्वान–(सं०पुं०) आह्वान, बुलावा।
ह्वाँ–(हिं०अव्य०) वहाँ, उस स्थान पर।

अर्थ प्रबन्ध, करविभाग, विनिमय, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, राज-नियम, विधान तथा शासन कार्य संबंधी विविध शब्दों की सूची-जिनके यथोचित अंग्रेज़ी के पर्याय भार्गव कन्साइज़ ऐङ्गलो हिन्दी डिक्शनरी में दिये गये हैं

अ

अंक–हिन्दसा।
अंकगणित–इल्म हिसाब।
अंग–अज़ो।
अंगरखा–लबादा, अचकन।
अंगीकरण–एकरार।
अंगीकार–इकबाल, कबूल, मन्जूर।
अंचल–दामन, हाशिया।
अंश–जुज, सुलस, हिस्सा।
अंशदान–चन्दा।
अंशिका–फातिमा।
अकर्मण्य–नातवाँ।
अकार्य–बेदरद।
अकाल–कहत।
अकीर्तिकर–किल्लती।
अक्षमता–नाकाबिलियत।
अक्षर–हरफ।
अखण्डनीय–लाकलाम।
अक्षम्य–नागवार।
अगोचर–नादीद।
अग्निकुण्ड–आतिशदान।
अग्निचूर्ण–बारूद।
अगण्य–बेशुमार।
अग्रिम–औवल, अगला, कब्ल।
अग्रक्रयाधिकार–हकशफा।
अग्रमन्यता–तरजीह।
अग्रसोची–दूरंदेश।
अग्रिम–पेशगी, मोकद्दम।
अग्रिम प्रदान–बयाना।
अग्निबाण–बमगोला।
अग्निदाह–मकाँसोजी।
अग्न्यस्त्र–तोप, बन्दूक, वगैरह।
अङ्गविकृति–फालिज।
अङ्गीकरण–मन्जूरी।
अचल–नारवाँ।
अचानक–नागहानी।
अचेत–बदहवास, बेहोश।
अजेय–गैर मगलूब।
अज्ञान–अनजान।
अज्ञान–जहालत।
अचल सम्पत्ति–जायदाद, गैरमनकूला।
अण्ड–अंडा।
अणुवीक्षणयन्त्र–खुर्दबीन।
अतिक्रम–पहला हमला।
अतितृप्ति–आसूदगी।
अतिथि–मेहमान।
अतिथि सत्कार–मेहमानदारी।
अतिदुष्टता–शरारत।
अतिभयावह–बड़ा खौफनाक।
अतिरिक्त–फाजिल, मजीद, अलावा।
अतिरिक्तकर–फाजिल महसूल।
अतिशयोक्ति–मुबालगा।
अत्यधिक–बेहद्द।
अत्याचार–जुल्म।

अत्याचारी–जुल्मी, शैतान।
अत्यार्द्र–शराबोर।
अत्युक्ति–मुबालगा।
अत्युत्तम–नफीस।
अदमनीय–गर मगलूब।
अदम्य–हठी।
अद्भुत–अजीब।
अद्भुत कथा–अफसाना, दास्तान।
अधम–जलील, कमीना।
अधिक–जायद, खूब, बालाई।
अधिकता–इफरात, इन्तेहा, ज्यादती।
अधिकृत्य–मजाज।
अधिकार–अख्तियार, दखल, कब्जा।
अधिकारपत्र–वसीका।
अधिकारी–हाकिम।
अधिकारक्षेत्र–अमलदारी।
अधिकारच्युत–बेदखल।
अधिकारपत्र–सनद।
अधिकार भोग–कब्जा, नवैयत।
अधिकारतन्त्र–नौकरशाही हुकूमत।
अधिकांश–कसरत राय।
अधिकोश–बैंक।
अधिनायक–सरदार।
अधिनियम–मसविदा, आईन।
अधिवास–दखल।
अधिपति–अफसर।
अधिराज्य–सलतनत।
अधिवेशन–इजलास।
अध्यक्ष–मीर मजलिस।
अधीनता–मातहती।
अध्यक्षमण्डल–मुदब्बिरों की मजलिस।
अध्यादेशक–सिपहसालार।
अध्यापक–मोअल्लिम।
अध्याय–बाब।
अध्यात्मशास्त्र–इलाहीयात।
अधःपतन–इब्तिजाल।
अनधिकार–प्रवेश मदाखलत बेजा।
अनजाने–इत्तफाकन।
अनशन–फाका।
अनभिज्ञ–नावाकिफ।
अनभिज्ञता–नावाकफियत।
अनलचूर्ण–बारूद।
अनाथ–यतीम।
अनाथालय–यतीमखाना।
अनादर–बेइज्जती।
अनावश्यक–गैरजरूरी।
अनामक–गुमनाम।
अनावृष्टि–खुश्कसाली।
अनिश्चित–नागहाँ, मशकूक।
अनियम–खिलाफ दस्तूर।
अनियमित–बजाप्ता।
अनिष्ट–बजा।
अनिर्णीत–बेफसला।
अनिष्ट–नापसन्द।
अनिष्टशंका–खौफ।
अनुकरण–नकल।
अनुकूल–माकूल।
अनुग्रह–इनायत, मेहरबानी।
अनुगामी–रफीक।
अनुचित–बेजा, नाजायज, बेमुनासिब।
अनुचिन्ता–बाद का ख्याल।
अनुत्पादक भूमि–ऊसर।
अनुपपन्न–नामाकूल।
अनुपरीक्षा–जिरह।
अनुनय–चापलूसी।
अनुपस्थित–गैरहाजिर।
अनुपस्थिति–अदम हाजिरी।
अनुपयुक्त–नावाकिफ।
अनुपात–तनासुब।
अनुप्रास–रदीफ।
अनुबन्ध–तितिम्मा।

अनुभव–तजुर्बा।
अनुमतिपत्र–परवाना।
अनुमान–कयास।
अनुमानपत्र–बजट।
अनुमोदन–ताईद, मंजूरी।
अनुयायी–मुलाजिम।
अनुरूप–माफिक।
अनुरोध–साजिश, सिफारिश, मंजूरी।
अनुवाद–तर्जुमा।
अनुशासन–नजीर।
अनुसन्धान–तबियत, तबीह।
अनुसार–अजरूए, माफिक।
अनुमान–अन्दाजा, तखमीना, कयास।
अनुबन्ध–मुवाहिदा।
अनयायी–फर्माबरदार।
अनुचित–बजा।
अनुप्रति–मुसन्ना।
अनुरूपता–मुशाहेबत, ताल्लुक।
अनुसार–बलिहाज।
अनन्त–बेहद।
अन्त–खत्म।
अन्तिम–आखिरी।
अनथक–नामाकूल।
अन्तर्भूतलाभ–वासलात।
अन्वेषण–तलाशी।
अन्य–दीगर, गर।
अन्यान्य–इस्तराकत।
अन्याय–बेइन्साफी।
अन्यायी–सितमगर।
अनैतिकता–बददियानती।
अपचार–नुकसान।
अपकीर्ति–बदनामी।
अपकर्ष–घाटा।
अपने आप–खुदबखुद।
अपभाषा–खराब उर्दू।
अपमान–बेइज्जती, तौहीनी।
अपवाद–इस्तसना।
अपवित्र–नापाक।
अपर–मजीद।
अपराध–कुसूर, जुर्म, गुनाह।
अपराधी–गुनहगार, मुजरिम।
अपराध संबंधी–फौजदारी।
अपराधपत्र–फर्दजुर्म।
अपराधमुक्ति–रिहाई।
अपराधारोपण–जुर्म लगाना।
अपराधमूलक–मुजरिम।
अपवाद–तोहमत, नालिश।
अपव्यय–फजूलखर्ची।
अपस्मार–मिरगी।
अपक्षपाती–बेतरफदार।
अपहरण–जब्ती, आदमदुन्दी।
अपरिपक्व–खाम, नातमाम।
अपरिष्कृत भूमि–ऊसर।
अपहरण–खयानत।
अपर्याप्त–नाकाफी।
अपूर्ण–नामुकम्मल।
अपूर्व–नादिर।
अपूर्वभूत–बेनजीर, बेमिस्ल।
अपेक्षा–बनिस्बत।
अपेक्षाकृत–दूरतर।
अपुत्र–लावल्द।
अप्रकाश्य–पोशीदा।
अप्रकट–अन्दरूनी।
अपहृति–जब्ती।
अप्रसन्न–नाखुश।
अप्रचलित–मसरूक।
अप्रच्छन्द–दरपरदा।
अप्रतिष्ठा–बेइज्जती।
अप्रत्यक्ष–पोशीदा।
अप्रमाणिक–खोटा।
अप्रमाणित–बातिल।
अप्रयोज्य-नामुवाफिक।

अप्रिय–नापसन्द।
अबाधित–गरमशरूत।
अभद्रता–नाशायस्तगी।
अभयवचन–इतमीनानी।
अभाव–कमी।
अभिधान–लकब।
अभिकर्ता–गुमाश्ता।
अभिनन्दन–मुबारकबादी।
अभिनय–अमल।
अभिन्न–एकसाँ।
अभिप्राय–इरादा।
अभिभव––कमी।
अभिभाषक–वकील।
अभिमत–मनजूर।
अभिमन्त्री–वजीर।
अभागा–कमबख्त।
अभियोग–नालिश, फर्याद, इल्जाम, मोकदमा।
अभियोगपत्र–फर्दजुर्म।
अभियुक्त–मुलजिम।
अभियोगी–मुस्तगीस, फर्यादी।
अभ्यास–मश्क, आदत।
अभिमान–गरूर, शेखी।
अभिमानी–शेखीबाज।
अभिरुचि–पसन्दगी।
अभिवादन–तसलीम।
अभिप्राय–मन्शा, इरादा, मकसद, गरज।
अभिनन्दन–मुबारकबादी।
अभियोक्ता–मुद्दई।
अभिशप्त–बददुआ।
अभियोजक–नालिशदार।
अभिलाषा–खाहिश।
अभेद्य–गरवाजिब।
अभ्यस्त–रेवाजी।
अभ्युदय–तरक्की।
अमार्जित–गन्दा।
अम्लता–खट्टापन।
अमूलक–बेबुनियाद, खामख्याली, वहमी।
अयोग्य–नाकाबिल।
अयोग्यता–नाकाबिलियत।
अमोघ–बहुतायत।
अरक्षित–बेमहफूज।
अराजकता–बदअमनी।
अरुचिकर–नापसन्द, गन्दा।
अर्जन–आमदनी।
अर्थ–माइने।
अर्थदण्ड–जुर्माना, तावान।
अर्थनीति–किफायतशारी।
अर्थवैपरीत्य–मुवारजत।
अर्थविवाद–मोकदमा, नालिश।
अर्थव्यवस्था–महासिल।
अर्थप्रबंधक–महासिल का दीवान।
अर्थसमिति–खिराज मजलिस।
अर्थशास्त्र–इल्मसियासत।
अर्थसदस्य–वजीर मुहासिल।
अर्थविभाग–मोहकमा खिराज।
अर्थागम–आमदनी।
अर्थी–उम्मेदवार।
अलंकार–आराइश।
अलंकारशास्त्र–इल्म कलाम।
अरुणोदय–फर्ज।
अलंघनीय–लाकलाम।
अलौकिक–फैकुल मखलूकात।
अल्पकालिक–चन्दरोज़:।
अल्पकालीन–मुवाफिक वक्त।
अल्पजनसत्ताराज्य–हुकूमत उमरा।
अल्पबुद्धि–नादान।
अल्पवयस्क–कमसिन, नाबालिग।
अलंक्रिया–आराइश।
अवकाश–फुरसत।
अवकाश साहाय्य–वजीफा।
अवज्ञा–हुक्म उदूली।

आचारशास्त्र–इलमइखलाक ।
आचारपत्र का शुल्क–तलबाना ।
आचार्य–मोअल्लिम, मोअज्जिम ।
आच्छादन–चँदवा ।
आच्छादित–पोशीदा ।
आजन्म–जिन्दगी भर ।
आज्ञप्त–हुक्म दिया हुआ ।
आज्ञा–हुक्म, इजाजत ।
आज्ञाकारी–ताबेदार ।
आज्ञानुसार–मुताबिक हुक्म ।
आज्ञापत्र–पर्वानगी, फर्द एहकाम ।
आज्ञा-पालन–फर्माबरदारी, तामीली ।
आज्ञाभंग–हुक्म उदूली ।
आजीवन वृत्ति–सालाना वजीफा ।
आजीवन सम्पत्ति–हीनहयाती ।
आडम्बर–शेखी, फख्र ।
आतंक–हौल ।
आतंकवाद–खौफ ।
आतंकवादी–हैबतकार ।
आततायी–रहजन, खूँखार ।
आत्म–खास, खानगी ।
आत्मगौरव–शेखी ।
आत्मत्याग–खुद तफाज ।
आत्मरक्षा–खुद की हिफाजत ।
आत्मसंयम–जब्त ।
आत्मसमर्पण–खुद कुर्बानी ।
आत्मसम्मान–खुद इज्जत ।
आत्महत्या–खुदकुशी ।
आत्माभिमानी–शेखीबाज ।
आत्मावलंबी–खुदतकवियत ।
आत्मीयता–मसाहेवत ।
आत्मकाधिपात्र–खुदहाकिमी ।
आदर–खातिर, तवाजो ।
आदर्श–बानगी, नमूना ।
आदेश–हुक्म, फर्माइश ।
आदरणीय–बुजुर्ग ।
आदेशात्मक–हासिल इलतिमास ।
आधा–निस्फ ।
आधार–नींव ।
आधार नियम, सभा के–कानून मजलिस ।
आधारभूत–बुनियादी ।
आधिक्य–ज्यादती ।
आधिपत्य–दखल, कब्जा ।
आधिराज्य–मातहत मुल्क ।
आधीकृत–रेहन किया हुआ ।
आधुनिक–हाल का, नया ।
आध्यात्मिक–इलाहियाती ।
आनन्द–लुत्फ, मौज ।
आनन्दात्मक–मौजी ।
आनन्दमग्न–मस्त ।
आन्तरिक–अन्दरूनी ।
आन्तरिक प्रेरणा–जाती अक्ल ।
आन्दोलन–मुबाहसा, झमेला ।
आनन्दध्वनि–हशमत फिरोजी ।
आनुपूर्वी–सिलसिलेवार ।
आनुषंगिक–इत्तेफाकी ।
आपण–दूकान, बाजार ।
आपत्ति–आफत, उज्र ।
आपत्तिकाल–आफत का वक्त ।
आपत्तिजनक–एतराजी ।
आपूप–सूखी कड़ी रोटी ।
आभरण–जेवर ।
आभा–चमक ।
आभारी–एहसानमन्द ।
आभूषण–जेवर ।
आम–अम्बा ।
आम–सर्वसामान्य ।
आमर्ष–बेचैनी, गुस्सा ।
आमल–बुनियादी ।
आमोद–खुशी ।
आमोदी–खुश मिजाजी ।
आय–आमदनी ।

आयकर–आमदनी पर रसूम।
आय-व्यय अनुमानपत्र–बजट।
आयव्यय निरीक्षक–मुहासिब।
आयव्ययिक–मुहासिल हिसाब।
आयात–दर आमद।
आयातकर–चुंगी।
आयात निर्यात कर–महसूल।
आयु–उम्र।
आयुध–हथियार।
आयुधागार–हथियारघर।
आयोजन–तैयारी।
आरब्ध–जारी।
आरम्भ–इब्तेदा।
आरोग्य–तन्दुरुस्ती।
आरोग्यभवन–शफाखाना।
आराजी–भूमि, खेत।
आरोग्यरक्षा–शिफा।
आरोग्यालय–शिफाखाना।
आरोग्यजनक–काबिल इलाज।
आरोप–इलजाम।
आरोपपत्र–फर्दजुर्म।
आरोपित–आयद।
आर्त–तकलीफजदा।
आर्थिक–जर नसब, नगदी।
आर्थिक कल्याण–किफायती खैर वाफियत।
आथिक विषय–किफायती मामला।
आर्थिक स्वराज्य–किफायती सलतनत।
आर्थिक सहायता–जरमदद।
आर्ष प्रयोग–कदीम इवारत।
आलसी–काहिल, सुस्त।
आलिन्द–ओसारा।
आलेख–मसविदा।
आलेखचित्र–फोटो की तस्वीर।
आलोचना–नजरसानी।
आवभगत–इज्जत।
आवरण- परत, जिल्द।
आवरणपृष्ठ–जिल्द।
आवर्त–भँवर।
आवर्त क्षति–कमी वाजगर्द।
आवश्यक–वाजबी, जरूरी।
आवश्यकता–जरूरत।
आवास–डेरा, खेमा।
आविर्भाव–जहूर।
आविभत–पैदा।
आविष्कार–ईजाद।
आविष्कर्त्ता–ईजाद करनेवाला।
आवेदन–दरखास्त।
आवृत्ति–दोहराव।
आवेश–जोश।
आवेशपूर्ण–जोशीला।
आविर्भूति–गालिब।
आशय–मनशा, गरज, मुराद।
आशा–उम्मेद।
आश्चर्य–ताज्जुब, हैरत।
आशीर्वाद–दुआ।
आश्रय–सहारा।
आश्रय–पनाह।
आश्रयस्थान–पनाहगाह।
आश्रित–ताबेदार।
आश्रित–मुलाजिम।
आश्वासन–हिमायत, तकवियत।
आसक्ति–मोहब्बत।
आसन्न–नजदीक, आमद।
आशा–उम्मेद।
आह्वान–पुकार।

इ

इनारा–चाह।
इकता–अकेला।
इकताई–अकेलापन।
इकाई–एकाङ्ग।
इक्का–अकेला।
इक्षु–ईख, गन्ना

इंगित–जाहिर, मन्शा।
इच्छा–इरादा, ख्वाहिश।
इच्छित–पसन्दीदा, मजमूत।
इच्छुक–खाहिशमन्द।
इतिमात्र–सिर्फ।
इतिवृत्त–कहानी , तवारीख।
इत्यादि–वगैरह।
इतिहास–तवारीख।
इन्द्रकोष–बालाखाना।
इन्द्रजालिक–बाजीगर।
इन्द्रजाल–बाजीगरी।
इन्द्रिय–अजो।
इन्द्रिय-निग्रह–परहेजगीरी।
इष्ट–चाहा हुआ।
ईठा–हठ, जिद्द।
ईषत्–चन्द, थोड़ा।
ईर्ष्या–हसद, डाह।
ईश्वर–खुदा।
ईश्वरकृपा–नियामत।
ईश्वरनिन्दक–काफिर।
ईश्वरस्तुति–इबादत, भजन।
ईषदुष्ण–गुनगुना, नीमगरम।

उ

उऋण–जो कर्जदार न हो।
उकृटा–एहसानफरोश।
उक्ति–इजहार।
उगलना–कय करना।
उग्रतावादी–मुखालिफ।
उचित–वाजिब,मुनासिब,लाजिम,जायज।
उच्चपीठ–चौकी।
उच्चजनतंत्र–हुकूमत उमरा।
उच्चारण–लहजा, तलफ्फुज।
उच्चासन–कुर्सी।
उच्छिष्ट–जूठा, दूसरे का इस्तेमाल किया हुआ।
उच्छृंखल–सरकश।
उच्छ्वासित–खिला हुआ।
उचड़ना–सूख जाना।
उजड्ड–नाशाइस्ता।
उजागर–मशहूर।
उजाड़–वीरान।
उजाला–रोशनी, चमक।
उड्डयन–उड़ाना।
उठंगना–सहारा लेना, टेकना।
उठना–उभड़ना, शुरू होना।
उठाईगीरा–उचक्का, चोर।
उठान–उरूज।
उड़नखटोला–हवाई जहाज।
उड़ाऊ–ज्यादा खर्च करनेवाला।
उतार–कीमत कम होना।
उतारू–मशगूल।
उतावल–घबड़ाहट।
उतृण–देखो उऋण।
उत्कट–सरगम।
उत्कण्ठा–हौसला।
उत्कर्ष–तरजीह, सबकत।
उत्कर्षता–तरक्की, नफासत।
उत्कृष्ट ग्रन्थ–बेहतरीन किताब।
उत्कृष्ट रचना–इल्मी तहरीर।
उत्कोच–रिश्वत, घूस।
उत्क्रान्ति–उभाड़, फैलाव।
उत्तम–नफीस, उम्दा, बेहतर।
उत्तमता–खूबी।
उत्तप्त–गरम।
उत्तर–जवाब।
उत्तरकालीन–आइन्दा जमाने का।
उत्तरक्रिया–दफनाना, मुर्दा जलाना।
उत्तरजीवन–बाद में जीना।
उत्तरजीवी–पसजिन्दा।
उत्तरदाता–जवाबदेह।
उत्तरदान–वक्फ।
उत्तरवाद–वकालत।

उत्तरदायित्व–जवाबदेही, जिम्मेदारी।
उत्तरदायी–जवाबदेह, शफी।
उत्तरदायी शासन–जवाबदेह सलतनत।
उत्तरपत्र–वसीयतनामा।
उत्तरभोगी–वारिस।
उत्तरवादी–मुद्दालेह।
उत्तरवाद–उज्र।
उत्तरा–शिमाली।
उत्तराधिकार–बपौती।
उत्तरार्ध–बाद का निस्फ हिस्सा।
उत्तरोत्तर–सिलसिलेवार।
उत्ताप–हरारत।
उत्तेजक–बर्गलानेवाला।
उत्तेजना–तरगीब।
उत्थान–तरक्की, उठान।
उत्पात–हलचल।
उत्पत्ति–पैदाइश।
उत्पादन–पैदाइश; **उत्पादनशाला**–कारखाना।
उत्पादनकर–सौदागरी चीज पर महसूल।
उत्सव–त्योहार।
उत्साह–उमंग।
उत्सुक–खाहिशमन्द।
उदंत–खबर।
उदय–बढ़ती, तरक्की।
उदर–शिकम।
उदार–सुखी।
उदारता–फैज।
उदास–रंजीदा।
उदासीन–बरहम।
उदाहरण–मिसाल।
उद्दण्ड–बखेड़िया, ढीठ।
उद्देश–मसलहत, मनसब।
उद्यान–बाग।
उद्योग–परिश्रम।
उद्यान विद्या–बागबानी।
उद्योगिता–कार्रवाई।
उद्विग्न–फिक्रमन्द।
उन्नति–तरक्की।
उन्मत्त–पागल।
उन्मत्तगृह–पागलखाना।
उन्मूलन–मनसूखी।
उत्पीड़न–जब्र।
उत्पीड़ित वर्ग–दलित जाति।
उत्सग–मखसूलियत।
उत्सर्ग मूल्य–कीमत तफवीज।
उद्धत–ढीठ।
उद्धरण–जिक्र।
उद्भिज शास्त्र–इल्म नबातात।
उद्धार–रिहाई।
उपकण्ठ–नजदीक।
उपकरण–सामान, इहलाक।
उपकार–मदद, एहसान।
उपहारी–फायदेमन्द।
उपक्रम–शुरूआत, हाजरी।
उपक्रमणिका–दीबाचा।
उपचय–तरक्की।
उपचर्या–खिदमत।
उपचार–दवा, तदबीर।
उपदेश–सलाह, तम्बीह।
उपदेशक–मुदर्रिस।
उपद्रव–हलचल।
उपद्रवी–शरीर, खुराफाती।
उपधा–फरेब।
उपधान–मसलन, तकिया।
उपधारा–दफा (कानून की)
उपनाम–लकब, उर्फ।
उपनियम–मखसूस कायदा।
उपनिवेश–नयाबाद।
उपनिवेशवासी–नयाबाद बाशिन्दा
उपनिर्वाचन–दुबारा चुनाव।
उपनेत्र–चश्मा, एनक।

उपन्यास–अफसाना, किस्सा।
उपपत्ति–कयास।
उपपत्नी–रखनी।
उपभोक्ता–मुसरिफ।
उपभोग–बजा, रोश।
उपमा–तशबीह।
उपमान–मुकाबिल।
उपमाता–दूध पिलानेवाली धाय।
उपयुक्त–वाजिब, बरमहल।
उपयोग–इस्तेमाल।
उपयोगवाद–आसूदगी।
उपयोगिता–जरूरत।
उपप्लव–बेदखली, बला।
उपयोगी–कारआमद, माफिक।
उपयोगिता–आसूदगी।
उपविभाग–तकसीमसानी।
उपर्युक्त–बयान किया हुआ।
उपलब्ध–हासिल, मयस्सर।
उपलब्धि–समझ, अन्दाज।
उपवेतन–तनखाह।
उपशासक–छोटे लाट।
उपभूमि–नीचे की जमीन।
उपप्रधान–नायब सर्दार।
उपमन्त्री–नायब दीवान।
उपशिक्षक–नासिह।
उपसचिव–नायब कारपरदाज।
उपसभापति–छोटा मीर मजलिस।
उपसमिति–जमात खुर्द।
उपस्थित–हाजिर, मौजूद।
उपस्थिति–हाजिरी।
उपहास–मजाक।
उपहार–तोहफा, सौगात।
उपाख्यान–अफसाना।
उपाङ्ग–तितिम्मा।
उपाधि–खिताब, लकब।
उपाय–तदबीर, हिकमत।
उपालम्भ–उलाहना।
उपार्जित–हासिल।
उपायरहित–लाचार।
उपेक्षणीय–बेलिहाज।
उपेक्षा–चश्मपोशी।
उबाल–जोश।
उमंग–हौसला।
उर्वरक–खाद।
उर्वरता–जरखेजी।
उर्वरा–जरखेज।
उलखल–ओखली।
उल्का–दुमदार सैयारा।
उल्कापात–शहाव।
उल्लंघन–शिकस्त, अटकाव।
उल्लंघन–खिलाफवर्जी।
उल्लेख–हवाला।
उष्णता–तपिश।
उष्णवात–सूजाक।
उष्णीष–पगड़ी।
ऊपरी–खाम, बाहरी।
ऊष्मांग–गर्मी।
ऊर्ध्वंपातन यन्त्र–डेग।

ऋ

ऋजु–मुवाफिक।
ऋण–कर्ज।
ऋणकर्ता–कर्ज लेनेवाला।
ऋणग्रस्त–मकरूज।
ऋणपत्र–तमस्सुक।
ऋणमुक्त–बिलाकर्ज।
ऋणशेष–बकाया कर्ज।
ऋणशोधन–अदायगी कर्ज।
ऋणांश–बकाया।
ऋणी–कर्जमन्द।
ऋतु–मौसिम।
ऋद्ध–दौलतमन्द।
ऋद्धि–तरक्की, बढ़ती।

ऋनी–कर्जदार।

ए–ऐ

एकत्रित–एकमुश्त।
एकत्रीकरण–इन्जिमाद।
एकत्रीभूत–ढेरी किया हुआ।
एककेन्द्र–हममर्कज।
एकत्व–बराबरी।
एकदेशीय–ममलुकत।
एकपक्षीय एकतरफा।
एकभाव–हमजिन्स।
एकभूत–शामिल, मिला हुआ।
एकरूप–एकसाँ।
एकरूपता–हमवारी।
एकला–तनहा, वाहिद।
एकतन्त्र–खुदमुख्तार।
एकविषयी–हमपेशा।
एकसाँ–इत्तेसाल।
एकांग–इकाई।
एकाकी–तनहा।
एकाधिकार–तनहा अख्तियार।
एकाधिकारी–इजारादार।
एकाधिपति–खुदसर।
एकान्त–पोशीदा।
एकाश्रमी–मुकामी।
एकीकरण–मिलान।
एकीकरण–आमेजिश।
ऐकमत्य–एकराय।
ऐक्य–बन्दिश।
ऐच्छिक–इख्तयारी।
ऐतिहासिक–तवारीखी।
ऐश्वर्य–इकबाल, इरामत।
ऐहिक–दुनयवी।

ओ–औ

ओछा–नाकिस।
ओठ–लब।
ओगल–परती जमीन।
ओजस्वी–आलीशान।
ओप–चमक।
औगुन–ऐब।
औत्सुक्य–शौक।
औचित्य–मुनासिबत।
औद्योगिक–तिजारती।
औद्योगिक अन्वेषण–तिजारती तहकीकात।
औपचारिक–जाहिरी।
औपनिवेशिक–शहर बदर।
औपनिवेशिक राज्य–नयाबादी सलतनत।
औषधालय–दवाखाना।
औषधि–दवा।
औषधिविद्या–इल्मतबाबात।

क

कंकण–कंगन।
कंकाल–ठठरी।
कंगाल–गरीब, भिखमंगा।
कंगाल–मुफलिस।
कंचुक–अंगरखा।
कंडु–खुजली।
कंटक–जहमत।
कंजस–बखील।
कक्ष–कमरा।
कक्षा–दर्जा।
कचहरी–अदालत।
कच्चा–खाम।
कछार भूमि–दर्याबरार।
कञ्चुकी–कनाजर।
कट्टर–जिद्दी।
कट्टरपंथी–दीनदार।
कटाक्ष–तिरछी नजर।
कटाह–कड़ाहा।
कटिवसन–जंघिया।
कटिबन्ध–कमरबन्द।
कठवैद्य–नीमहकीम।

कठिन–सख्त, मुश्किल।
कठिनता–संगदिली।
कठिनाई–तरद्दुद, मुश्किल।
कठोर–सख्त, संगदिल।
कठोर कारावास–सख्त कैद।
कण–जर्रा।
कदाचित्–शायद।
कनौड़ा–ऐबी।
कथन–इजहार, बयान।
कथा–किस्सा, कहानी।
कथित–कहा हुआ।
कदर्थ–फजल।
कन्द–गोल जड़ पौधे की।
कन्दरा–कहफ।
कन्या–बेटी दुख्तर।
कपट–फरेब, दगा।
कपटनय–फरेबी।
कपटी–दगाबाज।
कपालविद्या–इल्म कासाएसर।
कफ–बलगम।
कमनीय–खूबसूरत।
कमनत–तीरन्दाज।
कमी–निहाई, तखफीफ।
कम्पन–थर्राहट।
कम्बल–लोई।
करंड–टोकरी।
कर–महसूल, खेराज।
करचैल–रूमाल।
करग्राह–कलक्टर।
करतब–फर्ज।
करदाता–महसूल देनेवाला।
करम–नसीब।
करमुक्त–माफी।
करमुक्त भूमि–माफी आराजी।
करमुक्ति–हक माफी।
कररहित–लाखेराज।
करसंधान–महसूल बैठाना।
कर संबंधी प्रस्ताव–तसरीह मुत्तसिल महसूल।
करनिर्धारण–तशखीश खेराज।
कर संबंधी आन्दोलन–मोवाहसा निरज खराज।
कराल–खौफनाक।
करियाद–दर्याई घोड़ा।
करुणा–मेहर्बानी।
कर्कश–सख्त, बेरहम।
कर्काटक–परकाल।
कर्णधार–माझी।
कर्त्तव्य–फर्ज।
कर्त्तव्यपालन–अदाय फर्ज।
कर्पट–रूमाल।
कर्पास–रूई।
कर्मचारी–मुलाजिम, अहलकार।
कर्मचारीगण–अमला।
कर्मचारीतंत्र–नौकरशाही इन्तजाम।
कर्महीन–कम्बख्त।
कर्मिष्ठ–मशगूल।
कलंक–तोहमत, इलजाम।
कलंकित–बदनाम।
कलकल–झगड़ा।
कलह–तकरार।
कलहप्रिय–झगड़ालू।
कला–हुनर।
कलाप्रिय–हुनर का शायक।
कलाभवन–हिकमती मदरसा।
कलाविभाग–काबलियत हुनर।
कलाविद्यालय–मदरसा हुनर।
कलेवा–नाश्ता।
कल्पना–कयास।
कल्पित–कयासी, फर्जी।
कल्पित कथा–झूठी कहानी।
कल्याण–मुबारक।

कवच–जिरह बख्तर, तावीज।
कविसम्राट्–बादशाही शायर, कवि (लेखक) का उपनाम, लकब।
कष्ट–दिक्कत, तवालत, सदमा।
कष्टकर–तकलीफदेह।
कष्टदायक–दिक्कततलब।
कहावत–मसल।
क्रम–सिलसिला, तरतीब।
क्रमिक–तरतीबी।
क्रन्दन–कुहराम, रोवापीटी।
क्रमानुगत–सिलसिलेवार।
क्रय–खरीद।
क्रयधन–रकम खरीद।
क्रयलेख–बयनामा।
क्रय-विक्रय–खरीद-फरोख्त।
क्रान्ति–इनकिलाब।
क्रान्तिकारी–गर्दिशी, तबदीले सलतनत।
क्रान्तिविद्रोह–गर्दिश, इनकिलाब सलतनत।
क्रिया–अमल।
क्रियाशील–मशगूल।
क्रूर–जालिम।
क्रेता–मुश्तरी, खरीदार।
क्रोध–गुस्सा।
क्षणिक–चन्दरोजा।
क्षणिक सन्धि–चन्दरोजा सुलह।
क्षति–हरजाना।
क्षतिपूर्ति–मोआवजा।
क्षमता–लियाकत।
क्षम्य–माफ करने लायक।
क्षमा–माफी।
क्षमाप्रदान–आम माफीनामा।
क्षमाप्राप्त साक्षी–सरकारी गवाह।
क्षमायाचना–उज्र ख्वाही।
क्षय–बर्बादी।
क्षेत्र–आराजी, खेत।
क्षेत्रखाद्य–खाद।
क्षेत्रपुस्तक–खसरा।
क्षेत्रफल–रकबा।
क्षेत्रमिति–इल्म पैमाइश।
क्षेपक–तकल्लुवी लफ्ज।
क्षोभ–इततिरार।
काकपक्ष–जुल्फ।
कागजी मुद्रा–कागजी सिक्का।
काचकूपक–बोतल।
काचकोष–लालटेन।
काण्ड–बाब।
कामना–मुराद।
कातर–नामर्द, डरपोक।
कामातुर–आशिक।
कामचारिता–आशनाई।
कायर–बुजदिल।
कायिक–जिस्मानी।
कारण–सबब।
कारागार–कैदखाना।
कारावास–कैद।
कार्य–कारोबार।
कार्यकर्ता–कारोबारी।
कार्यकारिणी–कारगुजारी।
कार्यकाल–मियाद।
कार्यक्रम–याददाश्त बही।
कार्यक्षम–कारसाज।
कार्यक्षेत्र–हल्का।
कार्यदक्षता–तासीरगरी।
कार्यनिर्वाह–कारगुजारी।
कार्यमापक–पैमाइशकदी।
कार्यवाही–अमर, फेल।
कार्यविधि–तज अमल।
कार्यशील पूंजी–सरमाया।
कार्यसाधक संख्या–करनजाम की गरोह।
कार्यस्वतन्त्रता–आजादी कार अमल।
कार्याध्यक्ष–रजिस्ट्रार।
कार्यालय–कारखाना।

कार्यावली–देखो कार्यक्रम।
काल–वक्त।
कालव्यतिक्रम–इख़तिलाफ वक्त।
काला–स्याह।
काल्पनिक–कयासी।
कालोचित–बरवक्त।
कालकोठरी–स्याह चाह।
काष्ठफलक–तख्ता।
किंवदन्ती–गौगा।
किसान–काश्तकार।
कीर्ति–शोहरत।
कीटपाल–थानेदार।
कीलिका–आलपीन।
कक्कुट–मुर्गी।
कुटुम्ब–खानदान।
कुंजिका–ताली।
कुण्ड–हौज।
कुनबा–गृहस्थी।
कुत्सित–ऐबी।
कुप्रतिनिधित्व–तब्रविस
कुपित–खफा।
कुप्रबन्ध–बदइन्तेजामी।
कुप्रसिद्ध–बदनाम।
कुरूप–बदनुमा।
कुवाच्य–बदजबान।
कुल–खान्दान।
कुलपति–मीर मुनसिफ।
कुलपरंपरा–बपौती।
कुलाधिप–रिसालदार।
कुलीन–खान्दानी।
कुव्यवस्था–बद इन्तेजामी।
कुवाँ–चाह।
कुशल–होशियार, माहिर।
कुशासन–बदअमली।
कुपर्क–मस्तूल।
कुष्ठ रोग–कोढ़।
कुसीदक–सूदखोर।
कुसुम–फूल।
कुसुमगुच्छ–फूलों का गुच्छा।
कूटनीति–फितरत, हिकमत।
कूटनीतिज्ञ–हिकमती।
कूटप्रबन्ध–जालसाजी।
कूटपरीक्षा–जिरह।
कूटयुक्ति–साजिश।
कूटसंसर्ग–बन्दिश।
कूप–चाह।
कूर्मपृष्ठ–गुम्मद।
कूडुप–बटन।
कूर्चिका–कुंजी ब्रुश
कृतघ्न–नमकहराम।।
कृतज्ञ–नमकहलाल, एहसानमन्द।
कृतज्ञता–एहसान।
कृत्रिम–मसनूई, बनावटी, नकली।
कृपा–इनायत, मेहर्बानी।
कृपालु–मेहर्बान।
कृषक–काश्तकार।
कृषकदल–किसान लोग।
कृषि–जराअत।
कृषि विभाग–मोहकमा जराअत।
कृषि विज्ञान–इल्म जराअत।
कृषि संबंधी–जराअती।
कृष्णाङ्ग–हबशी।
कृपापात्र–मरगूब।
केन्द्र–मरकज।
केन्द्रशासन–नाफ हुकूमत।
केन्द्रीभूत–हममर्कज।
केन्द्रीय–दर्मियानी।
केन्द्रीय धारा सभा–खास कानूनी मजलिस।
केवट–मल्लाह।
केवल–महज।
केशसम–बाल के समान।
कोई–फलाँ। कोट–किला।

कोटपाल–जिलेदार। कोमल–मुलायम।
कोमलास्थि–चवनी हड्डी।
कोण–गोशा।
कोलाहल–शोरगुल।
कोष–खजाना, लोगत।
कोषाध्यक्ष–खजानची।
कोष्ठक–ब्राकेट।
कोष्ठ–खान्त।
कौतुक–ताज्जुब।
कौतुकागार–अजायबघर।
कौतूहल–अचरज।
कौमार्य–लड़कपन।
कौर–लुकमा।
कौशल–हुनर, करामात।
कौशय–रेशमी कपड़ा।
क्वाथ–दोशाँदा।
क्लिष्ट–दिक्कत तलब।
क्लैब्य–नामर्दी।

ख

खंडकालिक–हिस्सावक्त।
खंडन–इन्फेकाक, मनसूखी।
खंडनीय–रद्द, वासिल।
खद्योत–जुगनू।
खनि–खान।
खनिकविद्या–इल्म मादन।
खपत–तलफ।
खट्टा–तल्ख।
खाद्य–गिजा।
खाद्योक–जौहर गिजा।
खाद्यपेयगृह–नाश्ताघर।
खाद्य सामग्री–खाने का सामान।
ख्याति–शोहरत।
खयापन–इत्तेला।
खिचाव–तनाव।
खेती–काश्त, जराअत।
खेद–अफसोस, गम।
खेदजनक–गमगीन।
खेदयुक्त–गमगीन।
खोज-पड़ताल–सुराग।

ग

गंत्री–गाड़ी।
गंधक–गोगिर्द।
गंभीर–सञ्जीदा।
गँवार–देहकानी।
गण–मजलिस, अदालत।
गणक–मुहासिब।
गणतंत्र–जहूरी सलतनत।
गणना–शुमार, तादाद।
गणनीय–काबिल शुमार।
गढ़–किला।
गढ़पति–किलेदार।
गणितकार–हिसाबदाँ।
गत–गुजश्ता।
गत मास–गुजश्ता माह।
गतसंज्ञ–बेहोश।
गति–हरकत, रफ्तार।
गति अवरोध–मुहलिक।
गतिहीनता–नारवानी।
गतिशील–जुंबिशगर।
गदका–छोटा डंडा।
गन्ना–ऊख।
गर्भपात–इकसात हमल।
गर्भित–पोशीदा।
गर्व–फख्र, मगरूर।
गर्भित शक्ति–मकफी हुकूमत।
गर्भवती–हामला।
गम्भीर–संगीन।
गलस्तन–गले का लटकता हुआ गोश्त।
गलफड़ा–जबड़ा।
गल्प–किस्सा।
गलाघोंट–कसाब कातिल।
गहनता–गहराई।

गाढ़ा–दबीज।
गाथा–आल्हा।
गारा–रेखता।
गिरहकट–जेबकतरा।
गरुड़–उकाब।
गुच्छ–गुलदस्ता।
गुटबंदी–आमजिश।
गुट्ट–जमात।
गुण–वस्फ, सिफत।
गुणागुण-विवेचन–तशखीस।
गुणानुक्रम–सिलसिला।
गुणी–हुनरमन्द।
गुप्त–पोशीदा, खुफिया।
गुप्तचर–जासूस।
गुप्तधन–पोशीदा दौलत।
गुप्तप्रधान–पोशीदाराय।
गुप्तलिपि विज्ञान–पोशीदा तहरीर।
गुप्तविनाश–पोशीदा पायमाली।
गुप्तसंघ–पोशीदा जमाव।
गुप्तसभा–पोशीदा मजलिस।
गुप्तहत्या–पोशीदा कत्ल।
गुफा–कहफ।
गुरुत्वाकर्षण–कूवत जाजिबा।
गूढ़त्व–पोशीदगी।
गृह–इमारत।
गृह उद्योग–घरेलू धंधा।
गृहकार–मेमार।
गृहदाह–मकानसोजी।
गृहनिर्माण–मीमारगीरी।
गृहपति–इमाम, मुजतहिद।
गृहयुद्ध–अन्दरूनी मुखालफत।
गृहरक्षक दल–हिफाजत मकान की करने-वाले लोग।
गृहव्यवस्था विज्ञान–इल्म खानगी इन्ते-जाम।
गृहस्थी–कुनबा।

ग्रन्थ–किताब।
ग्रन्थकर्ता–मुसन्निफ।
ग्रन्थप्रियता–किताबों का शौक।
ग्रन्थपूजा–किताबों की इबादत
ग्रन्थ-विक्रेता–किताब-फरोश।
ग्रन्थ विज्ञान–किताबों का इल्म।
ग्रन्थागार–कदीम नविश्ताखाना।
ग्रन्थमणि–कमाल किताब।
ग्रन्थि–गाँठ।
ग्रहणीय–पसन्दीदा।
गोमांस–गायगोश्त।
ग्राम–मौजा।
ग्राममूर्ख–देहकानी।
ग्रामसम्बन्धी–देहाती।
ग्राम-सुधार–तरक्की देहात।
ग्राम्य–वहशी।
ग्रामीण–देहाती।
ग्रामोत्थान–तरक्की देहात।
ग्रास–लुकमा।
ग्राहक–खरीदार।
ग्राह्य–काबिज।
ग्राह्यता–दाखिली।
गोवध–गोकुशी।
गोचरभूमि–चरागाह।
गोचर–नुमायाँ।
गोत्रज–खान्दानी।
गोदाम–जिन्सखाना।
गोपन–रूपोशी।
गोपनीयता–पोशीदगी।
गोशाला–दूधघर।
गौण–जेरहुक्म।
गौरव–शान, नामवरी।

घ

घटक–दलाल।
घटक–जुज।
घटना–वकुआ, इत्तेफाक।

घटनास्थल–मौका।
घटी–तखफीफ।
घटित होना–वाका होना।
घनीकरण–वस्तगी।
घरफूंकनीति–हिकमत अमली घर फूंकने की।
घर–इमारत।
घर्षण–घिसाव।
घरेलू धंधे–घरेलू रोजगार।
घातक–कातिल।
घातक नीति–तरकी खुदकुशी।
घृणा–नफरत, हिकारत।
घाव–जख्म।
घुमाव–गर्दिश।
घेरा–नाका।
घोर अपराध–संगीन जुर्म।
घोषणा–एलान।
घोषणापत्र–इजहारनामा।
घोषविक्रय–नीलाम।
घोर प्रमाद–गफलत, बेलेहाजीं।

च

चंगुल–पंजा चिड़िया का।
चंचा–विजगाह।
चंडावल–फौज का पीछे का हिस्सा।
चंपत–गायब।
चँपना–शर्माना।
चउहर–चौरहा।
चकबक–घबड़ाया हुआ।
चकला–मुहल्ला।
चँदवा–शामियाना।
चकवेधा–खेराज वसूलकुनिन्दा।
चक्र–गोल चीज।
चक्रनायक–गरोह का सरदार।
चक्रवृद्धि–सूद दर सूद।
चक्राकार–गोल।
चखचख–झगड़ा।
चतुष्पथ–चौक।
चत्वर–चबूतरा।
चञ्चल–चुलबुला।
चटपट–फौरन।
चटशाला–मदरसा।
चतुर–होशियार।
चतुराई–होशियारी
चतुरंग–शतरंज।
चन्द्रिका–चाँदनी।
चपरासी–अर्दली।
चपलता–चुलबुलाहट।
चमक–रौशनी।
चमत्कार–करामात।
चरण–पाँव।
चरचा–जिक्र।
चरम–आखिरी।
चरवाक–होशियार।
चलचित्र–चलती तस्वीर।
चलसम्पत्ति–जायदाद मनकूला।
चलायमान–जारी।
चरित्र–खासलत।
चरित्रालय–दुरुस्तीखाना।
चर्चा–अफवाह, शोहरत।
चर्या–कार्रवाई।
चरमसीमा–आखिरी हद्द।
चलवृणाकार–मुतहर्रिक शफाखाना।
चसक–हलका दर्द।
चसका–बुरी आदत।
चारु लेखनकला–हुनर खुशखत।
चारु–खूबसूरत।
चाण्डालक–लेहँगा।
चाटुकार–खुशामदी।
चाटुकारिता–खुशामद।
चालू–रायज।
चाल–फरेब।
चिकवा–कसाई।

चिकित्सक–हकीम, तिब्बी।
चिकित्सा–इलाज।
चिकित्सा संबंधी–मुतल्लिक शफा।
चिकित्सा विज्ञान–इल्म इलाज, हिकमत।
चिकित्सा शास्त्र–इल्म तिब्बी।
चितेरा–मुसव्वर।
चित्र–तस्वीर।
चित्रकला–मुसव्वरी।
चित्तभ्रम–सिर घूमना।
चिन्तन–ख्याल।
चिन्ता–फिक्र, तरद्दुद।
चिन्ताकुल–फिक्रजदा।
चिरस्थायी–दायमी।
चिरायु–ज्यादा उम्र का।
चिह्न–निशान, अलामत।
चीनी–शक्कर।
चुंगी–शहर के भीतर माल आने का महसूल।
चुरना–पकना।
चुलबुल–नटखट।
चुल्ली–अंगीठी।
चुकौती–कर्ज की अदायगी।
चूड़ामणि–सर्दार, सबसे आला।
चेतावनी–अगाही, तंबीह।
चेष्टा–कोशिश, जिस्म की हालत।
चोंचला–खुदनुमाई।
चैतन्यता–होश।
चुनाव–इन्तखाब।
चौकन्ना–होशियार।
चौधरी–सर्दार।
चौपट–बर्बाद।
च्युत–बर्खास्त, खारिज।

छ

छद्मवेश–नकल।
छन्द–मीजान, नज्म।
छवि–शबीह, आब।
छल–फरेब, दगा।
छली–दगाबाज, फरेबी।
छाँह–साया।
छात्रवृत्ति–वजीफा।
छात्रावास–तालिबिल्म के रहने का घर।
छाद्मिक–नीम हकीम।
छायाचित्ररोपणयन्त्र–कैमरा।
छिद्र–सूराख।
छिद्रपूर्ण–जालीदार।
छिद्रान्वेषण–नुक्ताचीनी।
छिनार–फाहशा।
छुटकारा–रिहाई।
छुट्टी–तातील।
छोटा–खफीफ।

ज

जंगम–मनकूला।
जंगम विज्ञान–इल्म जंगलात।
जंगली–वहशी
जंजाल–उलझन।
जंतर–तावीज।
जटिल–पेचीला।
जटिलता–पेचीदगी।
जंतु–जानवर।
जगत–दुनिया।
जड़–बेजान।
जड़बुद्धि–बेवकूफ।
जड़ता–बेहोशी, जहालत।
जजमान–मेजबान।
जनकल्याण–अवाम की खैरवाफियत।
जनगणना–मर्दुमशुमारी।
जनचोरी–आदम दुजदी।
जनता–आबादी।
जनता चिकित्सालय–शफाखाना आम।
जनता चिकित्साध्यक्ष–सिविल सर्जन।

जनन–पैदाइश।
जनप्रवाद–गौगा।
जनमत ग्रहण–अव्वाम राय।
जनरहित–फ़ैज आम।
जनलिप्त–नाकिस।
जनजागृति–बदारी।
जनतंत्र विरोधी–सलतनत आम के खिलाफ।
जनता–अव्वाम।
जनमनोवृत्ति–इल्म रूह अवाम।
जनपदीय–मुतल्लिक सूबा।
जनश्रुति–मशहूर।
जयघोष–नारा।
जयपत्र–फतवा।
जय स्मारक–निशान फतह।
जन समर्थक–तकवियत आम।
जनसंख्या–आबादी।
जन सम्पर्क–आम इन्तेसार, रिश्ता अव्वाम।
जन-समूह–मजमा।
जन-साधारण–आम लोग।
जन्म–पैदाइश।
जन्मजात–पैदाइशी।
जन्मपत्री–जायचा।
जन्मसिद्ध अधिकार–पैदाइशी हक।
जनशिक्षा–तालीम मजमूआ।
जयपत्र–फतह का परवाना।
जल-निष्कासन प्रणाली–परनाला।
जलपान–नाश्ता।
जल-प्रणाली–नहर।
जल-प्लवन–सैलाब।
जल-प्लावन–तूफान।
जलयान–जहाज।
जलसेना–समुद्री फौज।
जलसेनाध्यक्ष–समुद्री फौज का अफसर।
जलसेनानायक–मीर बहर।
जलावर्त–गिदआब।
जलस्रोत–चश्मा, फौआरा।
जलवायु–आबहवा।
जलाशय–तालाब।
जलीय–आबी।
जाति–कौम।
जाति-बहिष्कार–बिरादरी से खारिज।
जाति-बहिष्कृत–मरदूद।
जाति-विद्वेष–जात नफरत।
जाँच–तशखीश, तहकीकात।
ज्वर–बुखार।
ज्योतिष फलित–इल्म नजूम।
ज्वाला–आग की लपट।
ज्ञान–इल्म।
ज्ञानवान्–दानिशमंद।
ज्ञापन–इस्तकरार।
जानकार–वाकिफ।
जाना–गुजरना।
जारज संतति–हरामजादा।
जाली–बनावटी।
जिज्ञासा–तहकीकात।
जिलाधीश–जिले का मालिक।
जीत–फतह।
जीवविज्ञान–जानवरों का इल्म।
जीवनशास्त्र–इल्म हवानात।
जीवन–जिन्दगी।
जीवहत्या–कत्ल।
जीवनस्तर–अन्दाजा गुजर-बसर।
जीवनसूत्र–मुहरिक।
जीविका–पेशा।
जिह्वा–जबान।
जुगुप्सा–शिकायत।
जृम्भा–जम्हाई।
जोड़–मोजान।

झ

झंझट–बखेड़ा।
झगड़ाल–हुज्जती।

झट–फौरन।
झब्बा–कलाबत्तू का गुच्छा।
झांक–ताक।
झाड़ी–छोटा पौधा।
झुंड–गरोह।
झूट–लगो।
झेंप–शरमिन्दगी।

ट

टंकण–सुहागा।
टंकी–पानी की हौज।
टंच–कंजूस, चालाक।
टई–तरकीब।
टकसाल–सिक्का ढालने का कारखाना।
टका–रुपया-पैसा, दौलत।
टटका–ताजा।
टप्पा–पुराने का हिस्सा।
टलहा–खोटा सिक्का।
टिप्पणी–शरह तफसीर।
टिपका–पानी की बूंद।
टोला–मुहल्ला।
टोली–छोटी बस्ती।

ठ

ठंठ–खुश्क, सूखा।
ठंठपाल–गरीब।
ठकुरसोहाती–सिफारिश।
ठगिया–चालबाज।
ठठोली–हँसी, दिल्लगी।
ठस–सख्त।
ठसक–शेखी।
ठसका–फख्र।
ठिगना–नाटे कद का।
ठिठोलिया–दिल्लगीबाज।
ठूंठ–बिना शाख और पत्ती का दरख्त।
ठूंठ–खिलजी।

ड

डंगर–चौपाया।
डँड़वार–नीची दिवार।
डगना–जुम्बिश होना।
डगर–रास्ता।
डमरू–(भू) मध्य–खाकनाए।
डर–खौफ।
डाबर–तालाब।
डाकू–रहजन।
डकैती–रहजनी।
डामल–जला वतनी।
डिल्ला–कोहान।

ढ

ढंग–तरकीब।
ढंगी–होशियार, चालाक।
ढकोसला–खुदनुमाई।
ढब–उपाय।
ढारस–तसल्ली, दिलासा।
ढिग–नजदीक।
ढिढोरा–मुनादी।
ढूंढ़–तहकीकात।
ढोंग–नखरा।
ढोंगी–मक्कार।

त

तटस्थ–मुसावी, बेपरवाह।
तटस्थ शक्ति–मुसावी ताकत।
तटावरोध–किश्ती चलाने की मनाही।
तंदुल–चावल।
तत्काल–फौरन।
तत्क्षणिक–एक लहमे में किया हुआ।
तत्वज्ञान–अक्लदोस्ती, फलसफा।
तत्पर–मुस्तैद।
तत्वपरीक्षा–खुदीगीरी, नुक्ताचीनी।
तथ्यविषय–असलियत।

तनाव–खिचाव।
तर्क–दलील, मुबाहसा।
तन्तुवाय–जुलाहा।
तर्क-वितर्क–बहस।
तमाल–तंबाकू।
तरण–तिरेंदा, पीपा।
तरणशीलता–तिराव।
तन्तुकील–ढरकी।
तरुण–जवान।
तरलीकरण–पतला करना।
तल्पगृह–सोने का कमरा।
तापमानयन्त्र–थरमामीटर।
ताम्बूल–पान।
तारकचिह्न–तारे का निशान।
तालिका–फिहरिस्त।
ताराग–तंबीह।
तारुण्य–जोबन।
तिमिंगल–ह्वेल मछली।
तिथिहीन–बिना तारीख का।
तिरस्कृत–नाकंदा।
तीक्ष्ण–तेज।
तीक्ष्णधार–चोखा।
तीर्थयात्रा–सियाहत।
तीव्र भर्त्सना–तंबीह।
त्रास–खौफ
त्रिकोणमिति–इल्ममुस्सलस।
त्रिचक्री–तिनपहिया गाड़ी।
त्रुटि–ऐब।
तुच्छ–नाचीज, खफीफ।
तुच्छता–नाचीजी।
तुमुलोत्सव–जशन।
तुलना–मुकाबला।
तुलनात्मक–मुकाबले से तजवीज किया हुआ।
तुलनात्मक अध्ययन–मुकाबले की तालिबिल्मी।
तुल्य–मसाबी, मिस्ल।
तुल्यवय–हमउमर।
तुल्यभार–हमवजनी।
तुला–तराजू।
तूलीपट–रजाई।
तूलिका–तोशक।
तृप्त–मसरूर।
तलान्त–तेलहन।
तोरण–मेहराब, गुम्मज।
त्याग–तर्क परहेज।
त्यागपत्र–इस्तीफा।
तितंत्री–सितार।
त्वरा–आमादगी।

थ

थमना–रुकना।
थवई–मेमार।
थाना–पुलिस की बड़ी चौकी।
थानत–किसी जगह का मालिक।
थाली–तश्तरी।
थोक–एकमुश्त।
थोक-उत्पत्ति–एकमुश्त तैयारी माल।
थोथा–नाचीज।

द

दम्भ–शेखी, फख।
दंभी–मक्कार।
दक्ष–कारगुजार।
दक्षिणी–जनूबी।
दण्ड–सजा।
दण्डविधान–जाब्ता फौजदारी।
दण्डविषयक–फौजदारी के मुतल्लिक।
दण्ड संबंधी–फौजदारी।
दण्डविधि–जाब्ता फौजदारी।
दण्डनीय–सजा तलब।
दण्डनीय मनुष्य-वध–कत्ल की गुनाहगारी।

दण्डाज्ञा–फतवा।
दण्डात्मक–ताजीरी।
दण्डात्मक विधि–ताजीरी तरकीब।
दण्डात्मक कर–ताजीरी टिकट।
दत्तक–मुतबन्ना।
दत्तक विधान–तबन्नी।
दमन–रोक, दबाव।
दया–रहम, शफकत।
दयालु–मेहरबान, सलीम।
दयावान्–रहमदिल।
दयालुता–मेहरबानी।
दयापूर्ण व्यवहार–इनायत।
दर्पण–आइना।
दर्शक–तमाशबीन।
दरार–शिगाफ।
दरिद्रता–गरीबी।
दधि–दही।
दंत विज्ञान–दाँत का इल्म।
दशा–कैफियत, रंगत।
दल–गरोह।
दलपति–सरगना।
दलदूत–गरोह का अगुआ।
दलबंदी–फितना गरोह।
दल समिति–मजलिस गरोह।
दलाल–दरमियानी शख्स।
दलपरिवर्तन–तबदील जिन्स।
दलित-जाति–जलील कौम।
दक्षिणा–बखशीश, इनाम।
दान–खैरात, हिब्बा।
दानग्रहीता–लेनेवाला।
दानपत्र–हिब्बानामा, वसीयतनामा।
दानशील–फयाज।
दायित्व–जिम्मेदारी।
दार्शनिक–फलसूफ।
दास–गुलाम।
दासता–गुलामी।
दासत्व–गुलामी।
दासी–लौंडी।
दाह–सोजिश।
दाहक–जलानेवाला।
दिव्य–बिहिश्ती।
दिग्दर्शकयन्त्र–कम्पास।
दीक्षान्तोत्सव–मजलिस इजितमा।
दीर्घकालीन–दवामी।
दीर्घकालीन अवकाश–दवामी छुट्टी।
दीर्घ जीवन–उम्रदराजी।
दीर्घसूत्री–सुस्त, काहिल।
दीपक–चिराग।
दीपगोलक–रोशनी का कुब्बा।
दीपशलाका–दियासलाई।
दीप्ति–रौनक।
दुग्धशाला–दूध घर।
दुर्ग–किला।
दुर्गनिर्माण–किलाबन्दी।
दुर्गति–आफत।
दुर्गन्ध–बदबू।
दुर्गन्धदार–बदबूदार।
दुर्घटना–हादसा।
दुराचरण–बदचलनी।
दुर्जन–बदजात।
दुर्दम्य–सरकश।
दुर्बल–कमजोर।
दुर्बलता–कमजोरी।
दुर्बलमति–नातवाँ।
दुर्बोध–वायदुलफहम।
दुर्भाग्य–बदबख्ती।
दुर्भाव–बदखोही, बदनीयती।
दुर्भिक्ष–कहत।
दुर्मुख–बदजबान।
दुरुपयोग–बदसलूकी।
दुराग्रह–जिद।
दुराचारी–बदतमीज, शोहदा।

दुर्लभ—नापेद।
दुर्वृत्ति—बदचलन।
दुर्व्यवहार—बदचलनी।
दुष्कर्म—बदअमल।
दुष्ट—काफिर।
दुष्टप्रोत्साहन—जुर्म में तरगीब।
दूत—एलची।
दूतावास—एलची के रहने का मकान।
दूध—शीर।
दूरध्वनिप्रेषक—रेडियो।
दूरदर्शक यन्त्र—दूरबीन।
दूरदर्शिता—दूरन्देशी।
दूरदर्शी—दूरन्देश।
दूराकर्षक यन्त्र—टेलीफोन।
दूष्ट—मरदूद, शरारती।
दुष्टता—शरारत, शैतानी।
दुष्ट विचार—बदनीयती।
दुष्ट स्वभाव—बदमिजाज।
दुष्ट निर्णय—बुरा फसला।
दुःख—तकलीफ, रंज।
दुःखात्मक नाटक—नक्ल गम।
दुःसहायक—जुर्म में तरगीब।
दृढ़ रोग—कड़ा रोग।
दृढ़—मजबूत, चुस्त।
दृढ़वचन—एकरारी।
दृढ़ता—चुस्ती।
दृढ़वाक्य—एकरार
दृढ़गत—मजमूनी।
दृढ़ीकरण—ताईद।
दृढ़ोक्ति—एकरार।
दृष्टान्त—नजीर, मिसाल।
दृष्टि—नजर।
दृष्टिबिन्दु—अंदाजा।
देनी—चन्दा।
देय—वाजिबुल अदा।
देयपत—रुक्का।
देवदूत—फरिश्ता।
देवस्थान—परस्तिशगाह।
देवालय—परस्तिशगाह।
देश—मुल्क।
देशज—वतनी।
देशद्रोही—बादशाह का दुश्मन।
देशनिर्वासन—जलावतन।
देशान्तर—रिवाज।
देशान्तरवास—गैर मुल्क में बसना।
देशी—वतनी।
दैनिक पत्रिका—रोजनामचा।
दैवयोग—इत्तफाक।
दैवात्—इत्तिफाकन।
दैवाधीन—खोदानखास्ता।
दोष—खराबी, रोब, इलजाम।
दोषपूर्ण—नाकिस।
दोषमुक्ति—छुटकारा।
दोषदर्शन—नुक्ताचीनी।
दोषारोपण—नालिश, इलजाम।
दोषी—कसूरवार।
दौत्यकर्म—एलचीगिरी।
दौत्यकार्य—एलची का काम।
द्वार—दरवाजा।
द्वारपाल—दरवान।
द्वारबंदी—दरवाजाबंदी।
द्वारा—बजरिये, मार्फत।
द्विगुण—दोचन्द।
द्विचक्री—पैरगाड़ी।
द्विपाद—दो पैरवाला।
द्विपृष्ठविमान—दो पंख का हवाई जहाज।
द्विवार्षिक—दो साला।
द्विशासन—दो बादशाहों की सल्तनत।
द्वेष—नफरत।
द्वेषी—दुश्मन।
द्वैधशासन—देखो द्विशासन।
द्वैभाषिक—दो जबान का।

ध

धन–जर।
धनविनियोग–जर लगाना।
धनागार–बंक।
धनाढ्य शासन–सल्तनत उमरा।
धनी–मालदार।
धनुराकार–मेहराबदार।
धमकी–तहदीद।
धन्यवाद–शाबाशी।
धनुर्धारी–तीरंदाज।
धर्म–मजहब।
धर्मगुरु–खादिमेदीन।
धब्बा–दाग।
धरन–शहतीर।
धर्म-परिवर्तन–तकलीब।
धर्मप्रचारक–मुल्ला।
धर्मवीर–शहीद।
धर्मशाला–सराय।
धर्मशास्त्र–इल्म इलाही।
धर्मादाय–वक्फ।
धर्मान्ध–मुल आस्सिब।
धर्मोन्माद–तास्सुब।
धातुपरीक्षा–धातु की आजमाइश।
धातुनिर्माणशाला–कारखाना ढलाई का।
धातुमुद्रा–नकद रोकड़।
धातुविद्या–समाया।
धान्य–गल्ला, अनाज।
धान्यभाण्ड–खत्ती।
धाभाई–हमशीर।
धारणा–ख्याल।
धार्मिक–मजहबी।
धारा–दफा।
धारालेखनी–रोशनाई भरी हुई कलम।
धारा शास्त्र–इल्म फिख।
धारा सभा–इजतिहादी मजलिस।
धारा संबंधी–मुत्तसिल कानून।
धिक्कार–फतवा।
धी–कानूनी।
धुरीराष्ट्र–खास रियासत।
धूर्त–मक्कार, मुतफन्नी।
धूर्तता–चालबाजी।
धूम्रकेतु–सायरा। **धूम्ररथ्या**–रेलगाड़ी।
धृष्ट–शोख, बेअदब, गुस्ताख।
धृष्टता–गुस्ताखी।
ध्यान–तवज्जह।
ध्वजारोहण–झंडा फहेराना।
ध्वनि–आवाज।
ध्वनिक्षेपक यन्त्र–रेडियो।
ध्वंस–पायमाली।
ध्वजा–झंडा।
ध्वनिवर्धक यन्त्र–लाउडस्पीकर।
ध्वनिशास्त्र–इल्म आवाज।

न

नखशिखान्त–सर से पैर तक।
नगर–शहर।
नगर निर्माण योजना–शहर की तरक्की की तजवीज।
नगर भवन–शहर की आम इमारत।
नगरवासी–शहर का बाशिन्दा।
नगरशुल्क–चुंगी।
नगरसभा–मर्दुमइजलास।
नगर समिति–शहर जमाल।
नगराध्यक्ष–किलेदार।
नद्धिनी–आलपीन।
नपुंसक–नामर्द।
नभश्चर–उड़ाका।
नरपति–बादशाह।
नरपशु–शैतान।
नरम दल का सदस्य–मुतवास्सित।
नरहत्या–मर्दुमकुशी।

नलिकामुख–बंदूक या तोप का मुंह।
नमस्कार–सलाम।
नवनियुक्ति–नई भरती।
नवसैनिक–नया सिपाही।
नागरिक–शहरी।
नागरिक रक्षक–शहर रखवाल।
नागरिक अधिकार–शहरी हुकूमत।
नागरिकता–शहरी हुकाक।
नागरिक शास्त्र–इल्म जमात।
नागरिक स्वतंत्रता–शहरी आजादी।
नाटकगृह–नकलखाना।
नापित–हज्जाम।
नाम-परिवर्तन–दाखिल खारिज।
नाममात्र–फकत नाम का।
नामावली–फिहरिस्त।
नामान्तर–उर्फ।
नामान्तर करना–दाखिल खारिज।
नारंगी–नारंज।
नारिकेल–नारियल।
नाव–किश्ती।
नाविक–मल्लाह।
नाविकशक्ति–समुद्री ताकत।
नाश–बरबादी, तबाही।
नास्तिक–काफिर।
निकट–नजदीक।
निकटवर्ती–मुत्तसिल।
निकुंज–झाड़ी।
निक्षेप–अमानत, इरसाल।
निक्षेपग्राही–सजावल।
निक्षेपग्राहक–अमानतदार।
निक्षेपी–सुपुर्द करनेवाला।
निगूढ़–पोशीदा।
निघण्टु–लुगत।
निचोल–बुर्का।
निजी–खानगी, खुद का।
निजी खेती–खुद काश्त।
नित्य–दायम।
निन्दा–तोहमत, शिकायत, मलामत।
निन्दात्मक–शिकायती।
निन्दात्मक प्रस्ताव–राय शिकायती।
निन्दात्मक लेख–मलामतनामा।
निन्द्य–मलामत तलब।
निपुण–हिकमती, कामिल।
निपुणता–होशियारी।
निबंध लेख–रिसाला।
निमित्त–मुराद।
निमेष–आँख मिचाना।
निम्नलिखित–हस्बजैल।
निम्न व्यवस्थापक सभा–जरीन अदालत।
नियताहारी–कमखोर।
नियंत्रक–अमीन।
नियंत्रण–जब्त।
नियमकालिक–गर्दशी।
नियम–कायदा, शरायत, आईन, दस्तूर।
नियमतंत्र–इन्तेजाम, बन्दोबस्त।
नियमनिष्ठा–तबियत।
नियमपूर्वक–कायदे के माफिक।
नियमबद्ध–मुत्तफिक।
नियमभंग–कानून शिकनी।
नियमरहित–बकानून।
नियमविरुद्ध–खिलाफ कानून।
नियमहीन–बकायदा।
नियमित–मुन्हसिर।
नियामक–नाजिर।
नियुक्त–मुकर्रर।
नियुक्त समिति–मुकर्रर पंच।
नियुक्ति–मुकर्ररी, तकर्रुरी।
नियोगी–मुतकालेही।
नियोजत्व–पेशकारी।
नियोजित–नामजद।
निर्दिष्ट सहायता–दादरसी।
निरंकुश शासन–जुल्म।

निरंतर–इस्तमरार, लगातार।
निरक्षरता–जिहालत।
निरगमन–निकास।
निरपराध–बेगुनाह।
निरपेक्ष–हलीम।
निरस्त्र नगर–हथियारों से खाली नगर।
निरसन–इखराज, मंसूखी।
निरस्त्रीकरण–बेसिलह करना।
निरर्थक–फजूल।
निरर्थकता–फजूलियत।
निराकरण–मौकूफी।
निराकुलता–इतमीनान।
निराकृति–इनकार।
निराधार–बेबुनियाद।
निरीक्षक–निगरा।
निराश–नाउम्मेद।
निरीक्षण–निगरानी, मोआइना।
निरपेक्ष–वाकई, सरीहन।
निरोध–हिरासत।
निरोधक–मुजाहिम, निरूपण, तशखीस।
निरोधकदल–मुजाहिम गिरोह।
निरुपद्रवी–बेगुनाह।
निर्गमन–रवानगी, कूंच।
निर्णय–फैसला, तसफिया, तजवीज।
निःशेष–बेबाक।
निर्जीव–नाखूद।
निर्णायक–तअय्यन।
निर्णयकर्ता–फैसला करनेवाला।
निर्णय प्रश्न–तनकीह।
निर्णायक मत–कोल एकाती।
निर्णीत–तयशुदा।
निर्णीत धनी–डिगरीदार।
निर्णता–पंच।
निर्दय–खूंखार।
निर्दयी—जालिम।
निर्दिष्ट–मकसूद।
निर्देश–हिदायत।
निर्देशक–मुवहंन।
निर्दयता–बेरहमी, संगदिली।
निर्देशक प्रधान–रहनुमा खास।
निर्दोष–बेऐब।
निर्दोषी–बेकसूर।
निर्धारण–तयशुदा कीमत।
निर्धारित–तयशुदा।
निर्धारित कर–कायम किया हुआ खिराज।
निर्धारित पूंजी–तयशुदा सरमाया।
निर्धारित भाग–हिस्सा, बखरा।
निर्बल–कमजोर।
निबटारा–सुलह।
निर्बुद्धि–बेअक्ल।
निर्मल–साफ, मुसफी।
निर्मल मति–कुशादा दिल।
निर्माण–तामीर।
निर्बन्ध–अदद।
निर्माण कला–इल्म तामीर।
निर्माण विधि–दस्तकारी।
निर्मूल–नेस्तनाबूद।
निर्मूल्य–मुफ्त।
निर्मोही–संगदिल।
निर्यात–मुल्क से बाहर माल भेजना।
निर्यात कर–माल भजने की चुंगी।
निर्लज्ज–बेगैरत।
निर्वाचन–चुनाव, इन्तखाब, पसंदीदगी।
निर्वंश–लावल्द।
निर्वाचनक्षेत्र–चुनाव की जगह।
निर्वाचनपद–चुनाव का अख्तियार।
निर्वाचनसमूह–चुननेवाले लोग।
निर्वाचन अधिकारी–चुनाव का आफिसर
निर्वाचित–चुनाव शुदा।
निर्वाचित समिति–चुनी हुई कमेटी।
निर्वासन–शहर बदल।
निर्वाह–गुजारा।

निर्विवाद–गैर मुतनाजा।
निर्विवादयजि–बेफरेब।
निर्देश–इजहार।
निर्देशसूची–फेहरिस्त।
निर्विरोध समझौता–गैर इतराज।
निर्विवाद–बमुबाहसा।
निर्हस्तक्षेप–दस्तंदाजी न करना।
निर्दिष्ट क्षेत्र–मकसूस जगह।
निर्णयकर्ता–सालिहस।
निर्धारित मुद्रा–तयशुदा सिक्का।
निर्विवाद–बिला शक।
निर्लज्ज–बेशर्म।
निर्लज्जता–बेशर्मी।
निर्वासित–जलावतन।
निर्विवादी–बेमुबाहसा।
निवारिक–रोकनेवाला।
निवासस्थान–सकूनत।
निवासी–बाशिन्दा।
निवेदन–दरख्वास्त, फरियाद।
निवृत्ति–तवक्कुफ।
निवृत्ति पुरस्कार–बख्शीश।
निषेध–मुमानियत।
निषेधक–मुजाहिम।
निषेधाज्ञा–हुक्म इम्तिनाई।
निषिद्ध–नाजायज।
निषेधात्मक–इम्तिनाई।
निष्क्रिय प्रतिरोध–सत्याग्रह।
निषेधार्थक–इनकार के मानी का।
निष्कपट–कुशादा दिल।
निष्कासन–बेदखली।
निष्कृति–रजामन्दी।
निष्पत्ति–इजरा।
निष्पादन–तामील, अंजाम।
निष्ठा–बादशाह के लिये वफादारी।
निष्ठुर–तेज, तल्ख।
निष्पक्ष–बेतरफदार।
निष्पक्षता–बेतरफदारी।
निष्पत्ति–इनफिसाल।
निष्फल–बातिल।
निश्चय–यकीन।
निश्चयात्मक–मुकर्रर।
निश्चित–कायम, मोअय्यन।
निःशस्त्र–बेहथियार।
निश्चिन्त–बफिक्र।
निःशष–बेबाक।
निःशुल्क–माफी।
निःशुल्क व्यापार–मुफ्त का रोजगार।
निःशुल्क शिक्षा–मुफ्त तालीम।
निःसंक्रमण–बीमारी हटाना।
निःसंदेह–बेशक।
निस्तार–छुटकारा।
नीति–अखलाक।
नीतिज्ञ–अहले आईन।
नीतिविरुद्धता–खिलाफ आईन।
नीरस–बदजायका।
नृवंश विज्ञान–इन्सानी कुनबे का इलाज।
नृपहत्या–कत्ल बादशाह।
नृशंस–बेरहम।
नृशंसता–बड़ा गुनाह।
नेतृत्व–सरदारी।
नेता–सरगना।
नैतिक घोषणा–जाहिर अखलाक।
नैतिक–अखलाकी।
नैतिक चरित्र–इल्म अदब।
नैतिक पतन–बदइखलाक।
नैमित्तिक व्यय–खर्च नामुकर्रर।
नैसर्गिक–कुदरती।
नैसर्गिक मृत्यु–कुदरती मौत।
नैसर्गिक साधन–कुदरती तरकीब।
नौका–किश्ती।
नौकाध्यक्ष–कप्तान जहाज।

नौकाभङ्ग–जहाज का टूटना।
नौकुल–जहाजों का बेड़ा।
नौसंचालन–जहाजी इल्म।
न्याय–इन्साफ।
न्याय-विरुद्ध–खिलाफ कायदा।
न्यायव्यवहार–कानूनी सलूक।
न्यायशासन–कानून का इन्साफ।
न्यायशुल्क–अदालती रसूम।
न्यायसभा–अदालत।
न्यायसमिति–जूरी।
न्यायसंगत–जायज, वाजिब।
न्यायसहकारी–असेसर।
न्यायानुकूल–इन्साफनुमा।
न्यायाधिकार–इख्तियारेअदलगुस्तरी।
न्यायाधीश–काजी, मुन्सिफ।
न्यायभवन–दारुल अदालत।
न्याय्य–वाजिब।
न्यायाधीश समूह–काजियों की जमात।
न्यायालय–कचहरी, अदालत।
न्यायालय, सर्वोच्च–अदालत आला।
न्यायालय, लघुवाद संबंधी–अदालत खफीफा।
न्यायालय, सम्पत्ति विषयक–अदालत दीवानी।
न्यायालय, दण्ड विषयक–अदालत फौजदारी।
न्यायालय, राजस्व विषयक–अदालत माल।
न्यायालय, पंचों का–अदालत सालसी।
न्यायासन–मसनद इन्साफ।
न्यायासन–तख्त कानून।
न्यास–अमानत।
न्यासधारी–अमानतदार।
न्यासरक्षक–अमानतदार।
न्यून–कम।
न्यूनता–कमी, तखफीफ।
न्यूनतम–बेहद्‌कमी।
न्यूनाधिक्य–ऐकरारी।
न्यूनीकरण–तखफीफ।

प

पंख–डैना।
पंखेरू–चिड़िया।
पंगत–कतार।
पंच–सालिस।
पंचायत–इनफेसाल।
पंचायती–सालसी।
पंजारा–धुनिया।
पंजिका–जरीदा, सिजिल।
पंजीकार–सरिश्तेदार।
पंडित–अक्लमंद। पंक्ति–कतार।
पंथ–राह, चलन।
पँसवरिया–डयोढ़ीदार।
पंसारी–बनिया।
पक्का–तर्जुबेकार, होशियार।
पकड़–गिरफ्त।
पक्ष–शरीक, जानिब।
पक्षकार–फरीक।
पक्षधारण–वकालत।
पक्षनिवेदन–मुबाहसा, तकरार।
पक्षपात–तरफदारी, हिमायत।
पक्षपातपूर्ण–मुफायसद।
पक्षपाती–तरफदार, मुतस्सिब।
पक्षसमर्थक–वकील।
पक्षसमर्थन–पैरवी।
पक्षाघात–लकवा।
पक्षावलंबी–तरफदार।
पक्षी–चिड़िया।
पक्षीशाला–चिड़ियाखाना।
पगडंडी–पतला रास्ता।
पगतरी–जूता।

पछतावा–नदामत।
पट–कपड़ा, तख्ता।
पटकन–तमाचा, छोटा डंडा।
पटका–कमरबन्द।
पटकार–जुलाहा।
पटकुटी–तम्बू।
पटच्चर–पुराना कपड़ा।
पटसन–पटुआ।
पटह–नगाड़ा।
पटुता, पटुत्व–होशियारी।
पटेल–गाँव का चौधरी।
पट्टिश–संगीन।
पट्टा–तमस्सुक।
पट्टेदार–मुस्तजीर।
पट्ठा–नौजवान। पड़ोस–कुर्वत।
पण–बाजी।
पताका–झंडा।
पति–शौहर। पद्धति–तरीका।
पत्रकार–अखबारनवीस।
पत्रकार कला–अखबारनवीसी का हुनर।
पत्रप्रकोष्ठ–कदीन नविश्ताखाना।
पत्रप्रतिनिधि–अखबारनवीस।
पत्रव्यवहार–खतकिताबत।
पत्रवाहक–चिट्ठीरसाँ।
पत्रसंग्रह–मिसिल।
पत्रस्थान–डाकघर।
पत्रिका–रोजनामा।
पथप्रदर्शक–पेशरौ, राहनुमा।
पथप्रदर्शन–राहनुमाई।
पथभ्रष्ट–गुमराह।
पथिक–मुसाफिर।
पद–फिकरा, मर्तबा, ओहदा।
पदच्युत–बर्खास्त, खारिज, मौकूफ।
पदचिह्न–हुर्मत का निशान।
पदच्युति–वर्खास्तगी।
पदत्याग–इस्तीफा।
पदाधिकारी–ओहदेदार।
पदाभिलाषी–उम्मेदवार।
पद्धति–तरकीब।
पनडुब्बी–समुद्र में गोता लगाकर चलने वाला जहाज।
परख–तशखीश।
परचुन–फुटकर सौदा।
परमानन्द–कमाल आसाइश।
परम सुखद–फाहदबख्स।
परम्परा–मुद्दत से। परन्तु–लेकिन।
पराकाष्ठा–उरुचु, हद्द।
परकार्यसाधक–मुख्तार।
पराङ्मुखता–तनफफूर।
पराधिकार ग्रहण–दस्तंदाजी।
पराजय–शिकस्त।
पराधीन–मातहत।
पराधीनता–मातहती।
परामर्श–मशविरा।
परामर्शदाता–सलाहकार।
परायण–मायल।
पराश्रयी–मुतवक्किल।
परिक्रमण–गर्दिश।
परिक्रमा–गिर्दावरी।
परिगणित जातियाँ–फर्दी कौम।
परिचय–जान-पहिचान।
परिचित–वाकिफ।
परिच्छेद–फिक्रा।
परिणति–तबदीला।
परिणाम–नतीजा।
परिताप–सियासत।
परित्याग–तर्क।
परिधि–दायरा।
परिविस्थ–लश्करी ओहदेदार।
परिपक्वता–तैयारी।
परिपाक–तहलील, हजम।
परिपाटी–रस्मोरवाज।

परिभ्रमण–सैर।
परिमाण–मिकदार।
परिमित साधन–तंगदस्त।
परिवर्तन–तबादला।
परिवर्तन-विरोधी–हिफाजतगर।
परिवर्तनशील–मुतहर्रिक।
परिवर्तनीय–मुमकिन तबदील।
परिवर्धित करना–फैलाना।
परिशोधन–दुरुस्तगी। परिवार–खानदान।
परिश्रम–मशक्कत।
परिश्रमी–मशक्कती।
परिशिष्ट–तितिम्मा।
परिशोधन–बेबाकी।
परिषद्–दीवाने खास।
परिस्थिति–हालत।
परिहास–हँसी, दिल्लगी।
परिहास्य–मजाक।
परीक्षक–मुसाहिब।
परीक्षण–मुलाहजा।
परीक्षा–आजमाइश, तहकीकात, इम्तहान
परीक्षाकाल–इम्तहान का जमाना।
परीक्षात्मक–आजमानेवाला।
परीक्षार्थी–मुमतहिल।
परोपकारी–खैरख्वाह, फैयाज।
पर्यंक–पलंग।
पर्यटन–सैर।
पर्यवेक्षण–तहकीकात।
पर्याप्त–काफी।
पलायन–भगदड़।
पवित्र–पाक, मुकद्दस।
पवित्रता–पाकीजगी।
पशु–मवेशी।
पशुपूजा–परस्तिश मवेशी।
पशुवाटिका–मवेशीखाना।
पशुधन–मवेशी।
पशुचिकित्सा–मवेशियों का इलाज।
पशुपालन–मवेशियों का पालना।
पश्चात्ताप–तोबा।
पश्चिमी–मगरबी।
पहिचान–शिनाख्त। पहिले–कब्ल।
पहुँच–रसाई। पाकशाला–बावर्चीखाना।
पाखण्ड–मक्र, फरेब।
पाखण्डी–मक्कार।
पाठशाला–मदरसा।
पाठचक्रम–पढ़ाने की पुस्तकों की फेहरिस्त।
पाण्डित्य–लियाकत।
पाण्डुलिपि–मसविदा।
पाण्डुलेख–दस्तनविश्ता, मसविदा।
पात्र–बर्तन।
पाप सहाय–गुनाह का साथी।
पारस्परिक–बाहमी।
पारस्परिक संबंध–हमनिस्बत।
पारितोषिक–इनाम।
पारिभाषिक–लुगती।
पारिभाषिक कोष–रिसाला कानून।
पारिश्रमिक–मेहनताना।
पार्थक्य–अलगाव।
पाश्चात्य–पश्चिमी।
पालक–निगरा।
पालन–पर्वरिश।
पिंगल शास्त्र–इल्म अरुज।
पितृहत्या–कत्ले वालिद।
पित्त–सफरा।
पित्तल–पीतल।
पिशुन–चुगलखोर।
पीठ–पुश्त।
पीड़ा–दर्द।
पुण्यात्मा–फैयाज।
पुतला–शबीह।
पुत्री–दुख्तर।
पुनर्ग्रहण–बाजयाफ्त

पुनर्जनन–बाज पैदाइश।
पुनर्जागृति–फिर से तरक्की।
पुर्निर्माण–दुबारा तामीर।
पुर्ननिर्वाचन–दुबारा चुनाव।
पुनरुक्ति–तकरुर।
पुनर्लाभ–बाजयाफ्त।
पुनर्विचार–तजवीज सानी।
पुनर्विचार की प्रार्थना–अपील।
पुनरुत्पत्ति–अजसरनौ पैदाइश।
पुनरुद्धार–हालत, मुजद्दद।
पुनरुत्पादन–दुबारा पैदाइश।
पुनर्निर्माण–पैदाइश अस्सरनौ।
पुनर्नियोग–दस्तूर साबिक।
पुनर्निवेदन–अपील।
पुनर्प्राप्ति–बाजयाफ्त।
पुनरावृत्ति–नजरसानी।
पुनःसंगठन–दुबारा बनावट।
पुनःप्रेषण–फिर भेजना।
पुनः स्थापन–बाददेही।
पुनर्निर्णय–तजवीज आसा।
पुनः संस्थापन–बहाल।
पुर–शहर। **पुरस्कार**–इनाम।
पुराणकथा–तवारीख।
पुराणपंथी–हाफिज।
पुरातत्त्व–कदामत।
पुरातत्त्व विभाग–इल्म कदामत।
पुराना–कदीम।
पुरावृत्त–तवारीख।
पुरुष–शख्स।
पुरोहित–पादरी।
पुष्ट–मजबूत। **पुष्टि**–मजबूती।
पुष्कर–पोखरा। **पुष्प**–गुल।
पुस्तक विज्ञान–किताबों का इल्म।
पुस्तक विक्रेता–किताब फरोश।
पुस्तकालय–कुतुबखाना।
पुस्तिका–छोटी किताब।

पूंजी–सरमाया।
पूजन–इबादत।
पूपशाला–तन्दूरशाला।
पूँजीपति–सरमायादार।
पूजा–इबादत।
पूतिनाशक–सड़ना रोकनेवाली।
पूरक–तितिम्मा।
पूर्ण–मुसल्लम।
पूर्णतः–पूरे तौर से।
पूर्णता–तमामी।
पूर्णस्वामित्व–पूरा हक।
पूर्ण हड़ताल–पूरी हड़ताल।
पूर्ति–तमामी।
पूर्वकथित–पहले से कहा हुआ।
पूर्व कल्पना–पेशबन्दी। **पूर्वकालिक**–कदीमी।
पूर्वक्रम–तफसील।
पूर्वज–मूरिस। **पूर्वकृत**–पेशरफ्त।
पूर्वधारण–पेशबीनी।
पूर्व पीठिक–दीबाचा।
पूर्ववत–पेशरौ।
पूर्वविधान–पहले का इंतिजाम।
पूर्व सेवा वृत्ति–पेंशन।
पूर्वाधिकार–पेशकदरी।
पूर्वाधिकारी–मुकद्दम।
पूर्वानुकूलता–पेश मायल।
पूर्वाभिनय–मुकर बयान।
पूर्वीय–पूरबी।
पूर्वोक्त–मजकूर, साबिक जिक्र।
पृथक्–अलग।
पृथक्त्व–अलहदगी।
पृथक्त्ववाद–अकीदा मुतफर्रिक।
पूंजीवाद–मालदादी मायल।
पूंजीपति–सरमायादार।
पृष्ठवंश–रीढ़।

प्रकट–जाहिर।
प्रकरण–सिलसिला इबारत।
प्रक्रिया–रफ्तार।
प्रकाश–रोशनी।
प्रकाशक–मुश्तरी।
प्रकार–किस्म, नवयत।
प्रकाशगृह–रोशनी घर।
प्रकाशन–तसनीफ।
प्रकाशित–मुश्तहर।
प्रकृति–तबियत, मिजाज।
प्रक्षेप–तकल्लुफी।
प्रकट–जाहिर।
प्रगति—तरक्की।
प्रगतिशीलता–रफ्तार।
प्रगल्भ–शोख।
प्रचलित–जायज, रवाँ।
प्रचलन–निफाज।
प्रचंडता–शिद्दत।
प्रचार–इजरा, गर्दिश।
प्रचार-कार्य–इन्तशार।
प्रचुरता–ज्यादती।
प्रच्छन्न–पोशीदा।
प्रजा–रैयत।
प्रजातंत्र राज्य–सल्तनत औवाम।
प्रणाम–वन्दगी।
प्रणाली–शिरिस्ता।
प्रताप–इकबाल।
प्रतापी–आलीशान।
प्रतारक–धोखबाज।
प्रतिकार–मुजहियत।
प्रतिकल–बरखिलाफ।
प्रतिग्रहण–बाजदावा।
प्रतिग्राह्य–मजाज।
प्रतिघात–मुदाफत।
प्रतिज्ञा–कौल, एकरार।
प्रतिज्ञापत्र–मुचलका।
प्रतिद्वंद्विता–मुखालफत।
प्रतिनिधि–कायम मुकाम, कारिंदा।
प्रतिनिधिपत्र–मुख्तारनामा।
प्रतिनिधि सभा– जमात आम।
प्रतिपक्षी–फरीक सानी।
प्रतिपादक–रवादार।
प्रतिबंध–शर्त।
प्रतिबिंब–अक्स।
प्रतिभा–जेहन।
प्रतिभू–जमानत।
प्रतिभूति–फिलतनामा।
प्रतिमा–बुत।
प्रतिरूप–नमना।
प्रतिरोधक–कज्जाक।
प्रतिरोधी–मुखालिफ।
प्रतिवाद–तरदीद।
प्रतिवादी–मुद्दालेह।
प्रतिविधान–तरतीब।
प्रतिष्ठा–रुतबा, हुरमत।
प्रतिष्ठित–मोअज्जज।
प्रतीक्षा–इन्तजारी।
प्रत्यक्ष–जाहिर।
प्रत्यक्षदर्शी–चश्मदीद।
प्रत्यय–एतकाद।
प्रत्यागत–वापस।
प्रत्याशा–सबकत।
प्रतिपक्षी–बनाम।
प्रतिपत्र–मुसन्ना।
प्रतिपुरुष–वकील।
प्रतिवादी–मुद्दालेह।
प्रथानुसार–बदस्तूर।
प्रदर्शन–दिखाव।
प्रदर्शनी–नुमाइश।
प्रदेश–सूबा।
प्रदेशवासी–गैर मुल्क का बाशिंदा।
प्रधान–खास।

प्रधान मंत्री–वजीरे आजम।
प्रधानाचार्य–मुदर्रिस आजम।
प्रधान स्थान–सदर मुकाम।
प्रधान न्यायालय–हाईकोर्ट।
प्रधान सचिव सभा–दीवान खास।
प्रबन्ध–बन्दोबस्त, इन्तजाम।
प्रबन्धक–मुन्तजिम।
प्रबल–जोरदार।
प्रभाव–असर, तासीर।
प्रभावशाली–जोरावर।
प्रमत्त–बावला।
प्रमाण–सबूत।
प्रमाणपत्र–सनद, दस्तावेज।
प्रमाणयुक्त–हकीकी।
प्रमुख–औवल।
प्रतिलिपि–मुसन्ना।
प्रतिलिपिक–नकलनवीस
प्रतिसाद–जवाबदेही।
प्रतिशोध–मुबादला।
प्रतिरोध–इन्कार।
प्रतिस्पर्धा–हमसारी।
प्रफुल्ल–खुशदिल।
प्रयास–कोशिश।
प्रयोग–आजमाइश।
प्रयोजन–सरोकार।
प्रयोजनीय–जरूरी।
प्रलोभन–लालच।
प्रलय–तबाही।
प्रवर्त–कारगर।
प्रवंचन–दगा।
प्रवधन–इस्पेतेदाद।
प्रवाह–बहाव।
प्रविष्ट–दाखिल।
प्रवीण–हुनरमन्द।
प्रकृति–विधान।
प्रवेश–दरामद दाखिली।
प्रवेशकार–पेशकार।
प्रशंसा–सिफारिश।
प्रशांत–मुसावी।
प्रश्न–सवाल।
प्रष्टव्य–जवाबदेह।
प्रसंग–मौका।
प्रसन्नता–खुशी।
प्रस्ताव–मसविदा।
प्रसिद्धि–शोहरत।
प्रस्तावना–दीबाचा।
प्रस्तुतपत्र–रूपकार।
प्रस्थान–रवानगी।
प्रहार–हमला।
प्राकार–शहरपनाह।
प्राकृतिक–कुदरती।
प्राचीन–कदीम।
प्रातःकाल–फज्र।
प्राप्य–वाजिबुल वसूल।
प्राधान्य–बुजुर्गी।
प्राप्त–हासिल।
प्राप्तयौवन–बालिग।
प्राप्ति–याफ्तनी।
प्रायः–अमूमन्।
प्रारम्भिक–इब्तदाई।
प्रार्थना–इस्तदा, अर्जी।
प्रार्थी–सायल।
पृष्ठ–पुश्त।
प्रासंगिक–माकूल।
प्रोत्साहन–हिमायत।
प्रौढ़–बालिग।

फ

फक्किका–गलत बहस।
फटकार–तंबीह।
फटन–दरार।
फहर–नामाकूल।
फुहावा–इत्तिफाक।

फुफुस–फेफड़ा।

ब

बंदीगृह–कैदखाना।
बंधक–रेहन।
बंधुत्व–भाईचारा।
बधिक–जल्लाद।
बलप्रयोग–जुल्म।
बलात्कार–जिनाबिल जब्र।
बलिदान–कुर्बानी।
बहुतायत–इफरात।
बहुधा–अकसर।
बहुमत–कसरत राय।
बहुनाम–ताजीम।
बहुमूल्य–बेशकीमती।
बाधा–खलल।
बाहुल्य–इफरात।
बाहुयुद्ध–कुश्ती।
बुदबुद–बुल्ला।
ब्यौरा–तफसील।
बेचीपत्र–इत्तखावनामा।

भ

भंगुर–नाजुक।
भगोड़ा–आवारा।
भंडार–खजाना।
भजन–इबादत।
भत्ता–मुशाहरा।
भय–खतरा, खौफ।
भयध्वनि–गोहार।
भयंकर–बेकरार।
भयप्रद–खतरनाक।
भवन–महल।
भविष्यकथा–पेंचबन्दी।
भर्त्सना–मलामत।
भंडार–जिन्सखाना।
भरोसा–इतबार।
भाग्य–किस्मत।
भारतीय दंडविधि–जाब्ता फौजदारी।
भारयुक्त–वजनी।
भावात्मक–दिक्कतअंगेज।
भविष्यवाणी–पेशगोई।
भाषणकला–जबान आवरी।
भाग–तकसीम।
भागदान–हिस्सा रसदी।
भागा हुआ–फरार।
भागी–हिस्सेदार।
भाषण-स्वतंत्रता–बोलने की आजादी।
भूगर्भशास्त्र–इल्म तरतीब जमीन।
भिक्षुक–फकीर।
भिन्न–जुदा, मुख्तलिफ।
भीड़–मजमा।
भीत–दीवार।
भूखण्ड–आराजी।
भूतपूर्व–गुजश्ता।
भूमण्डल– गोला।
भूमापन–पैमाइश जमीन।
भूमि–आराजी, जमीन।
भूमिकर–मालगुजारी।
भूमिका–दीबाचा।
भूमिखण्ड–आराजी।
भूमिगृह–तहखाना।
भूमिप्राप्त–महसूलात जमीन।
भूर्जपत्र–भोजपत्तर।
भूनिहित घर–तहखाना।
भूल–गलती।
भूसम्पत्ति–जमींदारी।
भूमिस्वत्व–आराजी।
भूमि संबंधी–जिरायती।
भूमिसिचन–आबदेही।
भूस्वामी–जमींदार।
भेंट–नजराना।
भेदात्मक कर–जुजियात महसूल।
भेद्य–जरूम पजीर।

भेद–अनवाय।
भेदिया–मुखबिर।
भोगाधिकार–फरागद।
भोज–जाफत।
भोजन विज्ञान–इल्म गिजा।
भोजनालय–होटल।
भौतिक–जिस्मानी।
भौतिक मूल्य–जरूरी कीमत।
भौतिकवाद–इनकारेरूह।
भौतिक विज्ञान–इल्म हिकमत।
भ्रम–शुबहा।
भ्रमणशील–खानाबदोश।
भ्रममूलक–गुमराही।
भ्रष्टाचार–बदजाती।
भ्रष्टता–खराबी।
भ्रान्त वर्णन–खिलाफ बयान।
भ्रान्ति–गलतफहमी, भूल।
भ्रान्तिपूर्ण–फरेबदेह।
भ्रातृक–बरादराना।
भ्रूण–हमल।
भ्रूणहत्या–कत्ल हमल।

म

मक्का–भुट्टा।
मठ–खानकाह।
मठवासी–दर्वेश।
मण्डप–शामियाना।
मण्डल–हल्का।
मण्डलेश्वर–मजिस्ट्रेट।
मंत्रिमंडल–वजीर लोग।
मंच–चबूतरा।
मत–राय।
मतदाता–रायदेहन्दा।
मन्त्री–वजीर।
मन्त्री का कार्य विभाग–मोहकमा वजीर।
मजदूर दल–फिर्का मजदूर।
मजदूर संगठन–मजदूर की जमात।
मत एकत्रीकरण–आजमाइश राय।
मतगणक–राय गिननेवाला।
मत गुटिका–राय देने का कुर्रा।
मत ग्रहण–राय लेना।
मतभेद–इखतिलाफराय।
मतसंग्रह–राय इकट्ठी करना।
मताधिकार–राय देने का हक।
मतिभ्रम–फितूर अक्ल।
मताधिकार प्रदान–मखलसी।
मतक्य–इत्तेहाद।
मदिरालय–शराबखाना।
मधुसेवन–शराबखोरी।
मधुतृण–ईख।
मद्याक–दुरुस्तशुदा शराब।
मध्यम–मामूली।
मध्यम प्रमाण–औसत।
मध्यवर्ती–दर्मियानी।
मध्यमान–औसत।
मध्यस्थ–सालिस।
मध्यस्थतानिर्णय–फैसला सालिस।
मध्यस्थ राज्य–दर्मियानी रियासत।
मनभावना–पसंदीदा।
मनुष्यगणना–मर्दुमशुमारी।
मनुष्यता–आदमियत।
मनुष्यद्रोही–इन्सान दुश्मन।
मनुष्यभक्षी–आदमखोर।
मनोनीत–नामजद।
मनोगम्य–मुतसौवर।
मनोनीत करना–नामजद करना।
मनोयोग–तवज्जह।
मनोरंजन–दिलपसंद।
मनोभंग–दिलशिक्नी।
मनोमालिन्य–रंजीदगी।
मन्दमति–कुन्दजेहन।
मनोविज्ञान–इल्म दिमागी।

मनोवैज्ञानिक–इल्म दिमागी का जानकार।
मनोहर–दिलचस्प, हसीन।
मन्त्रणा–मशविरा, सलाह।
मरणोपान्त–बाद वफात।
मरणोत्तर शवपरीक्षा–बाद वफात मुर्दे की जाँच।
मंत्री–वजीर।
मंत्रीदल–विजारत।
मंत्रीसभा–दीवान खास।
मरणोत्तर–बाद वफात।
मर्मभेदी–कुरीन।
मर्यादा–मनसब, अशमत।
मर्यादित–महदूद।
मल्लभूमि–अखाड़ा।
महत्त्वशाली–बड़ा, आलीशान।
महाकाव्य–दिलेराना बयान।
महाजन–कोठीवाला।
महापराध–बड़ा कसूर।
महान् प्रश्न–बड़ा सवाल।
महाप्रान्त–बड़ा सूबा।
महामात्र–महाफिज दफ्तर।
महामात्र मण्डल–खलवतखाना।
महाविद्यालय–कालिज।
महासंख्यानक–मुनीम आला।
महासभा–जमात मजलिस।
महिमा–वुजुर्गी।
महिला–औरत।
माँग–तलबी।
माँगने पर–इन्दुलतलब।
मांस–गोश्त।
मांसाहारी–दरिन्दा, गोश्तखोर।
मांगलिक–मुबारक।
मांडलिक राज्य–जमींदारों की सल्तनत।
मार्ग–राह, रास्ता।
मार्दव–नजाकत।
माण्डलिक–जागीरदारी।

मार्गकर–रास्ते की चुंगी।
मातृत्व–वालिदापन।
मानदण्ड–पैमाना।
मानसिक–दिमागी।
मानहानि–हतकइज्जत।
माध्यम–बिचला।
माध्यमिक शिक्षा–दर्जाखानी तालीम।
मानचित्र–नकशा।
मानपत्र–पैगाम खास।
मानमर्दन–खिलाफत।
मानव जाति–इनसानियत।
मानव वंश विज्ञान–कौमी कारिसल।
मानव हितकर–इनसान का भला।
मादक वस्तु निषेध–शराब की मुमानियत।
मानसिक संकट–दिमागी तरद्दुद।
माप–पैमाना।
मापन–पैमाइश।
मायावान–उल्फती।
मायावाद–उल्फती।
मानहानि–हतक इज्जत।
माया–धोका।
मार्ग–रास्ता।
मार्गकर–रास्ते का रसूम।
मार्गव्यय–रास्ते का खर्च।
मार्जनी–झाड़ू।
मासिक पत्रिका–माहवारी अखबार।
मितव्ययी–किफायती।
मिताचार–परहेजगीरी।
मिताचारी–मुतदिल।
मिताहारी–कमखोर।
मित्र–दोस्त।
मित्रता–दोस्ती।
मित्रपक्ष–दोस्त लोग।
मिथ्या–गलत।
मिथ्याग्रहण–गबन।
मिथ्याक्षेप–तोहमत।

मिथ्या चर्चा–झूठी बात।
मिथ्यादोषारोप–झूठा इलजाम।
मिथ्या प्रशंसक–चापलूस।
मिथ्याभियोक्ता–झूठी तोहमत लगानेवाला।
मिथ्यावाद–बहूदा हुज्जत।
मिथ्या शपथ–झूठी गवाही।
मिथ्या प्रशंसा–खुशामद।
मिश्रण–मिलावट।
मिश्रधातु–मिली हुई धातु।
मिथ्या लेख–गलत इन्दराज।
मिलाप–आमेजिश।
मिश्रित–मुरक्कब।
मिश्रित–बरी।
मीठा–शीरीं।
मुक्त व्यापार–रोजगार बिना रोक कर।
मुक्ति–रिहाई।
मुक्ति सेना–मखलासी फौज।
मुख्य–खास।
मुखिया–सरदार।
मुख्याध्यापक–पीर मुदर्रिस।
मुदित–खुश।
मूत्रपाथ–पेशाबखाना।
मुद्रण–छपकर मशहूर होना।
मुद्रण नियन्ता–छापे की रुकावट करनेवाला।
मुद्रण-स्वातन्त्र्य–छापेखाने की आजादी।
मुद्रणाधिकार–छापी किताब में हक मुसन्निफ।
मुद्रणालय–छापाखाना।
मुद्रा–मुहरा, सिक्का।
मुद्राकरणप्रवृत्ति–मुतल्लिक सिक्का।
मुद्राधिकार–रुपये-पैसे का अधिकार।
मुद्रानीति–मुरव्वज रुपया-पैसा।
मुद्रा संबंधी–मुतल्लिक सिक्का।
मुद्राशास्त्र–इल्म सिक्का।
मुद्रालय–टकसाल।

मूंगफली–चिनिया बादाम।
मूढ़–अहमक। मूर्ख–बेवकूफ।
मूर्खता–बेवकूफी।
मूर्छा–गश, बेहोशी।
मूर्ति–बुत।
मूर्ति-पूजक–बुतपरस्त।
मूर्ति ध्वंसक–बुतशिकनी।
मूत्राशय–मसाना।
मूत्र–पेशाब।
मूल–अस्ल, बुनियाद।
मूल उद्योग–बुनियादी रोजगार।
मूल निवासी–पुराना बाशिन्दा।
मूल पुरुष–बुजुर्ग।
मूलभूत–मूलधन, जर असल।
मूल मूर्ति–अजीम।
मूलरूप–नमूना।
मूर्तिशास्त्र–इल्मे बुत।
मूल साक्षी–खास गवाह।
मूलाक्षर–हरफ।
मूलोच्छेदन–इस्तसाहा।
मूल्य–कीमत।
मूल्य नियंत्रण–कीमत पर रोक।
मूल्य-निर्धारण–तख्मीना कीमत।
मूल्यवान्–बेशकीमती।
मूल्यवृद्धि अधिदेय–महँगी का भत्ता।
मूल्यांकन–कीमत।
मूल्यानुसार–कीमत के माफिक।
मृत्युदण्ड–फाँसी की सजा।
मृतदेह–लाश।
मृत्यु–मौत।
मृत्युपत्र–वसीयतनामा।
मृत्युदानपत्र–वसीयतनामा।
मृत्युपत्रदानभागी–वसीयतनामा।
मृत्युपत्रप्रमाण–वसीयतनामे को साबित करने का हक।
मेखला–कमरबन्द।

मेल-मिलाप–रजामन्दी ।
मेल–इत्तेफाक ।
मैत्री–दोस्ती ।
मोक्ष–नजात ।
मोचन–इनफिकाक ।
मोदक–लड्डू ।
मौखिक–जवानी ।
मौखिक परीक्षा–जबानी इम्तेहान ।
मौन सम्मति–खामोश राय ।
मौलिक–अस्ली ।
मौलिकता–असालत ।
मौलिक शिक्षा–बुनियादी तालीम ।
मौलिक सिद्धान्त–बुनियादी उसूल ।

य

यत्न–तदबीर ।
यदाकदा–वक्तन फवक्तन ।
यथाक्रम–तरतीववार ।
यथापूर्व–साविका ।
यथायोग्य विभाग–तकसीम ।
यथार्थ–वाजिब, असल ।
यथाशक्ति–हत्तुलइमकान ।
यथाविधि–बाजाब्ता ।
यथार्थवाद–हकीकत ।
यंत्र–आला ।
यंत्रकार–आलासाज ।
यंत्रगति–हरकत अंजन ।
यंत्रशास्त्र–इल्म संवत ।
यंत्रस्यपति–कारसाज ।
यवनिका–पर्दा ।
यक्ष्मा–तपेदिक ।
याजकीय–इयस्तबाणी ।
यातना–सिजत ।
यातायात–बराबरदारी ।
यातायातकर–गैर मुल्क में भेजने का माल पर कर ।
यातायातप्रतिबन्ध–किश्ती खोलने या बाँधने की रोक ।
यात्रानुमति–पर्वाना राहदारी ।
यात्रीगृह–सराय ।
यथायोग्य–काबिल ।
यथोचित–मुताविक ।
याचक–सायल ।
यान–सवारी ।
यात्रा–सफर ।
यावज्जीवन–हीन हयात ।
यद्यपि–बावजूद ।
यथार्थदर्शी–कायल राय ।
यथेष्ट–काफी ।
यदि–अगरचे ।
यान्त्रिक–कारीगर ।
युग–जमाना ।
युक्ति–तदबीर ।
युक्तियुक्त–माकूल ।
युक्तिसंगत–मुनासिब ।
युक्तिहीन–गैर मुनासिब ।
युद्ध–जंग ।
युद्धकारी–जंगावर ।
युद्धकौशल–जंगी फन फरेब ।
युद्धपोत–लड़ाई का जहाज ।
युद्धप्रवृत्ति–जंगी रुझान ।
युद्धयंत्रश्रेणी–मोरचा ।
युद्धरीति–तर्कीबी जंग ।
युद्धविद्यार्थी–पलटन में बिना तनख्वाह काम करनेवाला ।
युद्धविरति–जंग की मौकूफी ।
युद्धशील–लड़ाका ।
युद्धसामग्री–फौज के सामान ।
युद्धाभ्यास–कवायद ।
युद्धोपकरण–जंग के सामान ।
युद्धोपरान्त–जंग के बाद ।
युयुत्सु–लड़ाका ।
युवराज–शाहजादा ।

योग–शमुल ।
योग्य–मुनासिब, काबिल ।
योग्य मूल्य–वाजिब कीमत ।
योग्यता–लियाकत, सलीका ।
योजना–तरकीब ।
योजनाकार–तदबीर गर्दा ।
योजना (चित्र)कार–नक्शा बांधनेवाला
योधन–जंगी ।
योधा–लड़ाका ।
यौवन–जवानी ।

र

रंगभूमि–तमाशे का गोलघर ।
रक्षक–निगाहबान ।
रक्षा–हिफाजत ।
रक्षादल–बदरिका ।
रचना–बनावट ।
रचनातत्त्व–कारीगरी ।
रचनात्मक–तामीर के मुताबिक ।
रत्थी–जनाजा ।
रथ–वहल ।
रणशील–जंगावर ।
रणशीलता–जंगी, झगड़ालूपन ।
रमणीय–दिलचस्प ।
रम्यता–फरहत ।
रसायनशास्त्र–कीमिया ।
रसायनशाला–कारखाना, कीमियाघर ।
रसायनिक–कीमियागर ।
रसायनिक विद्या–कीमिया ।
रसायनिक प्रयोगशाला–कीमियागर का कारखाना ।
रहस्य–पोशीदा बात ।
रहस्यवाद–तसव्वुफ ।
राजकर–महसूल ।
राजकर चोर–महसूलचोर ।
राजकर्मचारी–सरकारी मुलाजिम ।
राजकीय–सरकारी ।
राजकीय अभियोक्ता–सरकारी फरयादी ।
राजकीय आन्दोलन–इन्तजामी हरकत ।
राजकीय ऋण–कर्ज सरकारी ।
राजकीय समाचारपत्र–सरकारी गजट
राजकोष–सरकारी खजाना ।
राजक्षमा–शफकता ।
राजघोषणा–फरमान ।
राजचिह्न–बादशाही लवाजमात ।
राजदूत–एलची ।
राजदूतावास–एलची का मकान ।
राजद्रोह–बगावत ।
राजद्रोही–बगावती ।
राजधानी–दारुलसल्तनत ।
राजनीति–इल्म सेआसत ।
राजनीतिक–तदबीरे सल्तनत ।
राजनीतिज्ञ–इल्मसियासतदान ।
राजनीतिक–मन्सूबाबाज ।
राजनैतिक–मुतल्लिक इल्मरियासत ।
राष्ट्र सेना–कौमी फौज ।
राष्ट्रीय आन्दोलन–कौमी तहरीक ।
राष्ट्रीय आय–सरकारी आमदनी ।
राष्ट्रीय क्रान्ति–कौमी इन्कलाब ।
राष्ट्रीय ऋण–सरकारी कर्ज ।
राष्ट्रीय गीत–कौमी गीत ।
राष्ट्रीय संस्था–कौमी कयाम ।
रिक्त–खाली, उफवाद ।
रिक्त पद–खाली जगह ।
रिक्त स्थान–खाली जगह ।
रिक्थपत्र–वसीयत ।
रीति–दस्तूर, तरीका ।
रुचि–रुझान ।
रुचिकर–पसन्द ।
रुधिर–खून ।
रुधिर क्षय–खून की कमी ।
रूठ–राइज ।
रूक्ष भाषण–खरी बात ।

रूपक–तमसील ।
रूपकरण–गरदान ।
रूपकालंकार–इस्तेआरा ।
रूपरेखा–ढाँचा ।
रूपवान–हसीन ।
रूपान्तर–सूरत बदल ।
रेचक–मोलैयन ।
रोकड़–नकद ।
रोकड़बाकी–बकाया ।
रोकड़िया–खजाञ्ची ।
रोग–मर्ज ।
रोग निदान–तशखीस ।
रोगनाशक–शिफाबख्श ।
रोगी–मरीज ।

ल

लंपट–शोहदा ।
लंपटता–शोहदापन ।
लक्षणालंकार–मजाज मुरशल ।
लक्ष्य–मकसद ।
लघुता–कमी ।
लघु न्यायालय–अदालत खफीफा ।
लघुपुस्तक–कितबिया ।
लघु शब्दकोष–फेहरिस्त ।
लय–काफिया ।
ललित कला–फनून लतीफा ।
लब्धि–तहसील ।
लाघव भावना–कमतरी मुरक्कव ।
लाभ–फायदा, नफा ।
लाभकर–मुफीद ।
लाभांश–बोनस ।
लाभदायक–मुफीद ।
लाभजनक–फायदेमन्द ।
लालसा–अरमान ।
लालायित–शफकत ।
लालित्य–जलवा ।
लाहल–कोयला ।
लिखित–तहरीरी ।
लिखित पत्र–दस्तावेज ।
लिखित प्रश्न–तहरीरी सवाल ।
लिपि–नविश्ता ।
लिपिकार–अहलमद ।
लुप्त–गायब ।
लेखन सामग्री–लिखने का सामान ।
लेखन साहित्य–लिखने का सामान ।
लेखप्रमाणाधिकार–साहिब तहसीक ।
लेख स्थान–नविश्ताखाना ।
लेखरहित–खाली, सादा ।
लेप–मरहम ।
लोक–अवाम ।
लोकतन्त्र–कौमी हुकूमत ।
लोकनिन्दा–अवाम शिकायत ।
लोक निर्माण कार्य–सरकारी इमारत ।
लोक नियन्त्रण–सरकारी रोक ।
लोकप्रदर्शन–दलील अवाम ।
लोक प्रवृत्ति–अवाम की रुझान ।
लोक प्रतिनिधि सभा–मजलिस कानून-साज ।
लोकप्रिय–हरदिल अजीज ।
लोकप्रियता–अवाम दोस्ती ।
लोककल्याण–फायदे अव्वाम ।
लोकमत–अव्वाम की राय ।
लोकमार्ग–आम रास्ता ।
लोक-रचना-विभाग–मोहकमा इमारत अव्वाम ।
लोकराज्य–सल्तनत अव्वाम ।
लोकशासन–सल्तनत अव्वाम ।
लोकशिक्षण–अव्वाम तालीम ।
लोकशिक्षण निर्देशक–मतशिर तालीम अव्वाम ।
लोकसभा–कौमी मजलिस ।
लोक समूह–गरोह ।
लोक सेवा–कौमी खिदमत ।

लोकाचारहीन–गैर माहूद ।
लोप–मौकूफी ।
लौकिक–दुनियादार ।
लोभ–हिर्स ।

व

वंशक्रम–शिजरा ।
वंशज–वारिसान ।
वंशपरंपरा–विरासत ।
वंशवृक्ष–सिजरा ।
वंशानुगत–वरासती ।
वंशावली–शजरा ।
वंशीय–खान्दानी ।
वक्तव्य–इस्तिफसार, बयान ।
वक्तृता–तकरीर ।
वक्ता–खरीब ।
वक्रोक्ति–फरवा की बात ।
वक्त-प्रपंच–तूल कलामी ।
वचन–मंजूरी ।
वचनदाता–मुकिर ।
वंजायस–फौलाद ।
वध–कत्ल ।
वधवेदी–कुन्दा ।
वनकविता–देहाती गीत ।
वनस्पति–नबातात ।
वनवासी–गोशा नशीन ।
वयस्क–बालिग ।
वय–उम्र ।
वयस्कता–अब्द सरियत ।
वयस्क मताधिकार–बालिगों के चुनने का हक ।
वयस्काल–जवानी ।
वरण्डा–बरामदा ।
वरदान–बख्शीश ।
वर्गयुद्ध–जाती झगड़ा ।
वर्गीकरण–तकसीम ।
वर्णन–बयान, तजकिरा ।
वर्णसंकर–दोगला ।
वचस–इज्जत ।
वर्तमान–जमाना हाल ।
वस्तुस्थिति–असलियत ।
वशीभूत–फरेफ्ता ।
वस्त्रकोष–पोशाक की आलमारी ।
वसन–लिबास ।
वस्तुतः–दर असल ।
वस्तु–शय ।
वस्त्रालय–खेमा ।
वस्त्रकार–जुलाहा ।
वाक् कील–वकील ।
वाक्शैली–मुहावरा ।
वाक् स्वतंत्रता–आजादी तकरीर ।
वाक्यखंड–फिकरा ।
वाग्दण्ड–तंबीह ।
वाग्धारा–मोहावरा ।
वागीष्टर–बारिस्टर ।
वाचनालय–कुतुबनामा ।
वाचाल–बातूनी ।
वाणिज्य–तिजारत ।
वाद–मोकदमा ।
वादविवाद–बहस, दलील ।
वादपत्र–अर्जीदावा ।
वादी–मुद्दई ।
वादहेतु–तनकीह ।
वायुयन्त्र–हवाई चक्की ।
वायुभारयन्त्र–बैरोमीटर ।
वायुयान–हवाई जहाज ।
वायुयान-वाहक पोत–हवाई जहाज ले जानेवाला जहाज ।
वायुयान विश्राम-स्थान–हवाई अड्डा ।
वार्तालाप–गुफ्तगू ।
वार्धक्य–जईफी ।
वार्षिक–सालाना ।

वार्षिक वृत्ति–वजीफा।
वार्धक्य संबंधी–जईफी के मुताल्लिक।
वास्तव में–हकीकतन्।
वास्तविक–वाकई, असली।
वास्तविकता–असलियत।
वास्तु-विद्या-विशारद–इंजीनियर।
वाहक–बारबरदार, कासिद।
वाहक संख्या–कोरम।
वाहन–सवारी।
विकत्थन–डींग।
विकास–इन्कलाब।
विकास-क्रण–मजलिस तरक्की।
विकाश–नमूद।
विकास समिति–जमात तरक्की।
विक्रय–फरोख्त।
विकृति–तबदीली।
विक्रयकर्ता–बचनेवाला।
विक्रयपत्र–बयनामा।
विख्यात–मशहूर।
विख्याति–शोहरत।
विगत–गुजश्त, साबिक।
विघ्न–खलल।
विचार–ख्याल, इरादा, गौर, तजवीज।
विचारकर्ता–मुनसिफ।
विचाराधीन–जेरे बहस।
विचारण–तजवीज।
विचारणीय–काबिल लेहाज।
विचारणीय विषय–तनकी।
विचारपूर्वक–दीदेदनिस्ता।
विचारधारा–ख्यालबन्दी।
विचारपति–जज।
विचारपूर्ण–अक्लमन्द।
विचारविमर्श–गौर।
विचारशील–दूरन्देश।
विचार-स्वातन्त्र्य–खयाल करने की आजादी।
विचारहीन–गैर तजवीज।
विचारालय–खयालत खाना।
विचित्र–अजीब।
विचित्रता–खूबी।
विचित्रालय–अजायबघर।
विच्छेद–इनफेकाक।
विच्छिन्न–मौकूफ।
विजय–फतह।
विजयी–फतहमन्द।
विजन्मा–हरामजादा।
विजातीय–गैर जाति का।
विज्ञापन–इश्तेहार।
विज्ञप्ति–इश्तहार।
विज्ञान–इल्म।
विज्ञानवेत्ता–इल्मी।
वितरण–तकसीम।
विदित–जाहिर, मालूम।
विदूषक–मसखरा।
विदेश-गमन–सफर।
विदेशी–गैरमुल्की, बेगाना।
विदेशीय–गैरमुल्की।
विद्यमान–मौजूद।
विद्यालय–मदरसा।
विद्युत्–बिजली।
विद्युत् कुंजिका–स्विच।
विद्युत् ज्योति–बिजली की रोशनी।
विद्रोह–गदर, फसाद।
विद्रोही–बागी।
विद्वत् परिषद्–आलिमों की मजलिस।
विद्वान्–आलिम।
विद्वेष–हसद।
विधवा–बेवा।
विधान–कानून।
विधि–तरीका।
विधि-विरुद्ध–नाजायज।
विविधसंग्रह–आईन का मजमआ।

विधिशास्त्र–फिकर।
विधि सम्मत–जायज।
विधायक–तामरिस।
विधान–दस्तूरुल अमल।
विधान परिषद–कानून बनाने की मजलिस।
विधान (शासन)–हस्बे कानून।
विध्वंस–बरबादी।
विध्वंसक–मुनहदीम।
विध्वंस करना–गारद करना।
विनाश–तल्फी, बरबादी।
विनिमय–तबदीली।
विनिमयपत्र–राशन कार्ड।
विनिमयसाध्य–अहदे वज़ीर।
विनोदकर–तफरीह का टैक्स।
विन्यास–गुमराह।
विपक्षी–मुखालिफ गरोह।
विपत्ति–आफत।
विपरीत–मुखालिफ, बरखिलाफ।
विपाणी–नाश्ता करने की जगह।
विपुलता–बढ़ाई।
विप्लव–गदर, बलवा।
विभक्त–मुतकासिमा, अलग।
विभाग–महकमा।
विभाजन–तकसीम, बँटवारा।
विभाजनपत्र–कुर्रा।
विभिन्न–अलहदा।
विभिन्नता–अलहदगी।
विभ्रम–फितूर दिमाग।
विमल–रोशन।
वियोग–जुदाई।
विरति–मुहलत।
विराट् सभा–बड़ा जलसा।
विराम–रुकावट।
विरुद्ध–मुखालिफत, बरखिलाफ, **बनाम**।
विरुद्ध मत–खिलाफ राय।
विरूप–बदशकल।
विरेचन–जुलाब।
विरोध–इखतिलाफ।
विरोधी–मुखालिफ।
विरोधी अधिकार–कब्जा मुखालफाना।
विरोधी दल का नेता–मुखालिफों का अगुवा।
विरोधी प्रस्ताव–खिलाफवर्जी।
विरोधी स्वार्थ–खिलाफ दिलचस्पी।
विलंब–तवक्कुफ, मौकूफी।
विलंब शुल्क–डिमरेज।
विलंबित–मुल्तवी। **विलाप**–मातम।
विलास सामग्री–ऐशोआराम का सामान।
विवरण–कफियत, सराहत, तफसील।
विवश–लाचार, मजबूर।
विवरण-पत्रिका–नकशा।
विवाद–मुबाहसा।
विवादग्रस्त–मुमकिनुल बहस।
विवादी–हुज्जती, मुद्दई।
विवाह–शादी।
विवाह-विच्छेद–तलाक।
विवाहितावस्था–निकाह।
विविध–फुटकर, मुतफर्रिक़।
विवेक–तमीज, परेशानी।
विवेकपूर्ण–तमीजदार।
विवेचना–एहतियात।
विशेषता–खासियत, तुर्रा, खूबी।
विशारद–आलिम। **विशिष्ट**–खास।
विशुद्ध आय–खालिस।
विशेष–मुफस्सिल, मकसूस।
विशेष आज्ञा–आईन-ए-सार।
विशेषक–फरीक। **विशेषज्ञ**–माहिर।
विशेषाधिकार–पेश-खरीद।
विश्राम–फुरसत। **विश्रान्ति**–आराम।
विशेष अनुग्रहता–तरफदारी।

विश्लेषण–तसरीह।
विश्वकोष–मजमुआए इल्म।
विश्वस्तनीय–खुशादा दिल।
विश्वविद्यालय–यूनिवर्सिटी।
विश्वसनीय–एतबारी, ईमानदारी।
विश्वव्यापी–आलमगीर।
विश्वसनीयता–इतमीनान।
विश्वशान्ति–अमन दुनिया।
विश्वसंघ–अंजुमन दुनिया।
विश्वस्त–एतबारी।
विश्वहितवाद–अहले जदाकी।
विश्वास–यकीन, एतबार।
विश्वासघात–खयानत, दगाबाजी।
विश्वासघाती–दगाबाज।
विश्वासजनक–सबूत से कैल।
विश्वासपत्र–सनद।
विशिष्ट विवरण–तसख्सुस।
विश्राम–आराम।
विश्रामवृत्ति–पेन्शन।
विष–जहर।
विषम सन्धि–चन्दरोजा सुलह।
विषय–अम्र, मजमून।
विषयक–वायस।
विषयासक्त–एयाश।
विषय में–बाबत।
विषादजनक–मुताल्लिक नक्ले गम।
विष विज्ञान–इल्म जहर।
विष संबंधी–मुतल्लिक जहर।
विषय समिति–मजमूनी कमेटी।
विष्ठा–मल।
विसूचिका–हैजा।
विस्तार–गुंजाइश।
विस्तृत वर्णन–तफसील।
विस्फोटक–फूटनेवाला बारूद।
विस्मय–ताज्जुब।
विस्मयाकुल–हैरतजदा।
विस्मरण–भूल।
विस्मृति–चूक।
वीर–बहादुर, दिलेर।
वीरता–दिलेरी, बहादुरी।
वृक्ष–दरख्त।
वृक्ष विज्ञान–इल्म नबातात।
वृक्षारोपण–दरख्त लगाना।
वृक्षावच्छदन–दरख्त काटकर गिराना।
वृत–दायरा।
वृत्तान्त–वाकया।
वृतान्त पत्र–बुलेटिन।
वृत्ति–वजीफा।
वृथा अहंकार–झूठी शेखी।
वृद्ध–जईफ।
वृद्धि–उरूज, इजाफा, तरक्की।
वृहत्काय–कद्दावर।
वेतन–तनख्वाह।
वेतनक्रम–दरजा, ग्रेड।
वेतनभोगी–तनख्वाह पानेवाला।
वेत्ता–माहिर।
वेदी–कुर्बानगाह।
वेश्यालय–चकला।
वेष्टन–गिलाफ।
वैकल्पिक–इख्तियारी।
वैज्ञानिक–इल्मी।
वैदूर्य–फीरोजा।
वैदेशिक मन्त्री–गैरमुल्की वजीर।
वैदेशिक राजदूत–एलची।
वैदेशिक विभाग–गैरमुल्की दफ्तर।
वैध–कानूनी।
वैध राजतन्त्र–महदूद सल्तनत।
वैधशाला–मर्शद।
वैधानिक–हस्व जाब्ता।
वैमानिक आक्रमण–हवाई हमला।
वैमानिक शक्ति–हवाई कूवत।
वैयक्तिक–जाती।

वैरागी–फकीर, दर्वेश ।
वैवाहिक–मुतल्लिक शादी ।
व्यंग–ताना ।
व्यंगचित्र–सवाँग ।
व्यतिक्रम–गुमराही ।
व्यक्त–सरीह ।
व्यक्ति–शख्स ।
व्यक्तिगत–जाती, खास ।
व्यक्तिवाद–वाहिदशय ।
वृत्ति–वजीफा ।
वृथा अहंकार–झूठी शेखी ।
व्यग्र–मशगूल ।
व्यतीत–गुजश्ता ।
व्यतीतकाल–वक्त गुजश्ता ।
व्यभिचार–जिना ।
व्यय–खर्च ।
व्यर्थ–नाकिस, बातिल ।
व्यर्थ विवाद–हुज्जत ।
व्यवधान–मुफासला ।
व्यवसाय–रोजगार, पेशा ।
व्यवसायसंघ–रोजगारियों की जमात ।
व्यवसायिक–रोजगारी ।
व्यवसायी–सौदागर, कारबारी ।
व्यवस्था–कायदा, जाब्ता ।
व्यवस्थापक–मुन्तजिम ।
व्यवस्थापक सभा–मजलिस कानूनसाज ।
व्यवस्थापन–बन्दोबस्त ।
व्यवस्थापिका–कानूनसाज ।
व्यवहार–सलूक, अमल दरामद ।
व्यवहारशास्त्र–कानून ।
व्यवहारसूत्र–कहावत ।
व्यवहारपद–नालिश ।
व्यवहारिक राजनीति–अमली इल्मसियासत
व्यवहारी–मुवक्किल ।
व्यवहारोपयोगी विज्ञान–इल्म अमली ।
व्यवहार्य–कारदानी ।
व्यस्तता–बेतरतीबी ।
व्याकुल–बेहाल ।
व्याकुलता–हैरानी, हैरत ।
व्याख्या–तफसील ।
व्याख्यात्मक–बयानी ।
व्याख्याता–सुखनसाज ।
व्यापक–घेरनेवाला ।
व्यापार–तिजारत ।
व्यापारमण्डल–तिजारतघर ।
व्यापारिक संरक्षण–तिजारती हिफाजत ।
व्यापारी–सौदागर ।
व्यायाम–वर्जिश, कसरत ।
व्यायामशाला–वर्जिशगाह ।
व्युत्पत्ति–इस्तकोल ।
व्यूह–मोर्चा ।
व्यूह विद्या–इल्म जंग ।
व्योमयान–हवाई जहाज ।
व्योरेवार–मुफस्सिल ।

श-ष

शंका–वहम, खामख्याली ।
शंकुला–सरौता ।
शंखनाद–बिगुल ।
शकट–गाड़ी ।
शक्ति–कूवत, ताकत ।
शक्ति समतुलन–ताकत का हमवजन ।
शक्ति एकत्रीकरण–हरकत पजीरी ।
शठ–बदमाश ।
शठता–बदमाशी ।
शणपट–टाट, किरमिच ।
शतघ्नी–तोप ।
शताब्दी–सदी ।
शत्रु–दुश्मन ।
शत्रुता–अदावत, दुश्मनी ।
शपथ–हलफ ।
शपथपत्र–हलफनामा ।
शपथपूर्वक परित्याग–हलफ लेकर छोड़ना ।

शब्द–लफ्ज।
शयनगृह–ख्वाबखाना।
शय्यासक्त–चारपाई से सटा हुआ।
शरण केन्द्र–पनाहगाह।
शरीर–बदन।
शरीर परिच्छद–तसरीह जिस्म।
शरीर विज्ञान–इल्म मौजूदात।
शरणार्थी–पनाहगीर।
शरणार्थी शिविर–खेमा मवासी।
शल्यक्रिया–जर्राही।
शव–लाश।
शवस्थान–मकबरा।
शवयान–जनाजा।
शवाधार–ताबूत।
शस्त्र–हथियार।
शस्त्रागार–सिलहखाना।
शस्त्रशाला–सिलहखाना।
शस्त्रालय–हथियारघर।
शान्त–खामोश, संजीदा।
शांति–अमन, राहत।
शांतिजनक–सालिम।
शांतिप्रिय–हलीम।
शांति भंग–पहला हमला।
शांत्तिवाद–आसयश।
शांति सम्मेलन–अमन सभा।
शान्ति स्थापन–सुलहसाजी।
शाक भाजी–सब्जी।
शाखा–शाख।
शाखा कार्यालय–मातहत दफ्तर।
शाप–बददुआ।
शारीरिक–जिस्मानी।
शारीरिक गठन–जिस्म की गठन।
शारीरिक दण्ड–शराह जिस्मानी।
शारीरिक शिक्षा–जिस्मानी तालीम।
शारीरिक श्रम–जिस्मानी मेहनत।
शारीरिक स्वतन्त्रता–जिस्मानी आजादी।
शाश्वत–दायमी।
शासक–हुक्काम।
शासकवर्ग–हाकिम।
शासकीय–सरकारी।
शासन–अमलदारी, हुकूमत।
शासनकाल–वक्त हुकूमत।
शासन-चतुर–सल्तनतदाँ।
शासन-पद्धति–अमलदारी।
शासन-प्रणाली–हुकूमत।
शास्त्रज्ञ–जानकार इल्म।
शिक्षक–उस्ताद।
शिक्षण–तालीम।
शिक्षा–तालीम, नसीहत।
शिक्षा-परिषद्–मजलिस तालीम।
शिक्षामंत्री–दीवान तालीम।
शिक्षार्थी–तालिबिल्म।
शिक्षा विभाग–मुहकमा तालीम।
शिक्षा सचिव–दीवान तालीम।
शिक्षा शुल्क–तनख्वाह मुर्दारिस।
शिखर–सिर, चोटी।
शिथिल–सुस्त।
शिथिलता–सुस्ती।
शिथिलीकरण–थकाव।
शिरच्छेद–सिर काटना।
शिरस्त्राण–टोप (बख्तर)।
शिलाजीत–नफ्त।
शिलामुद्रण–लिथोग्राफी।
शिल्पकार–कारीगर।
शिल्पशाला–कारखाना।
शिल्पशिक्षा–हिकमती तालीम।
शिल्पविज्ञान–फनूननामा।
शिल्पविषयक–इल्मी।
शिल्पशास्त्र–फनूननामा।
शिल्प संबंधी–इस्तिलाही।
शिल्पी–कारीगर।
शिष्ट मंडल–डेपूटेशन।

शिष्टजनसत्ता राज्य—सल्तनत उमरा।
शिष्टता—तहजीब, शाइस्तगी।
शिष्टाचार—तकल्लुफ मुदारत।
शिष्य—शागिर्द।
शिष्यकारू—हुनर सीखनेवाला।
शिष्टाचार—तकल्लुफ।
शीकर—फौआरा।
शीतकरण—सर्दी।
शीघ्र—जल्द, फौरन।
शीतज्वर—जड़ैया।
शीतल—सर्द।
शीर्षण्य—टोप।
शील संकोच—मुरौवत।
शुक्ल—सफेद।
शुक्लता—सफेदी।
शुद्ध—सही, पाकीजा।
शुद्ध लाभ—मुनाफा खास।
शुद्धि—दुरुस्तगी।
शुद्धिपत्र—गलती का सफा।
शुभदस्त्र—खुशहाली।
शुभपत्र—मुबारकवादी।
शुश्रूषा—देखभाल।
शुल्क—रसूम, उजरत।
शुल्कस्थान—चुंगीघर।
शुल्क सूची—निर्ख चुंगी।
शून्य—सिफर।
शून्यवाद—छुच्छापन।
शेष—समाप्ति।
शेष—बकाया।
शेष संग्रह—लितिफा।
शैत्य—सर्दी।
शैली—तरीका।
शोक—गम, अफसोस।
शोकजनक—गमगीन।
शोक-समाचार—मातम की खबर।
शोधन—सेहत, दुरुस्ती।
शोभा—रौनक, बहार।
शोषकपत्र—सोख्ता।
श्यामपट—काला तख्ता।
श्यामता—स्याही।
शृंखला—जंजीर।
श्रद्धा—एतकाद।
श्रम—मेहनत।
श्रमजीवी—मजदूर।
श्रमजीवी अधिकारवाद—मजदूरी का हक।
श्रमजीवी सत्तावादी—कम्यूनिस्ट।
श्रमनीति—मेहनत की कारगुजारी।
श्रम विनिमय—मेहनत का अदल बदल।
श्रम विभाग—मेहनत की बाँट।
श्रमशक्ति—मेहनत की कूवत।
श्रमिक—मजदूर।
श्रमिकसंघ—मजदूर लोग।
श्रुतलेख—लिखाना।
श्रेणी—दरजा।
श्रेष्ठ—आला।
श्रेष्ठता—तरक्की।
श्रोतागण—समाअत।
श्लीपद—फीलपाँव।
श्लेष्म स्राव—जुकाम।
षट्कोण—छपहल।
षड्यन्त्र—साजिश।

स

संकट—खतरा, जोखिम।
संकट-काल—वक्त मुसीबत।
संकटकालीन अधिकार—खतरे के वक्त का अधिकार।
संकल्प—कस्द।
संकीर्ण—महदूद, तंग।
संकीर्ण बहुमत—कम राय।
संकुचित—चुस्त।
संकेत—इशारा।

संक्रमण–रफ्तनी ।
संक्रमणकाल–वक्त रफ्तनी ।
संक्रामक–उफूनती ।
संकीर्ण–मुतफरिक ।
संकोच–पसोपेश ।
संक्षिप्त–सरसरी, मुख्तसर ।
संक्षिप्त ब्यौरा–मुख्तसर बयान ।
संक्षिप्त सूची–मुख्तसर फिहरिस्त ।
संक्षिप्त लेखन विद्या–मुख्तसर नवीसी ।
संक्षिप्त हस्ताक्षर–मुख्तसर दस्तखत ।
संक्षेप–इख्तेसार, इन्तखाब, मुख्तसर ।
संख्या–अदद, तादाद ।
संख्यानक–मुनीब ।
संख्यान लेखा–हिसाब-किताब ।
संख्याबल–शुमारी ताकती ।
संगत (न्याय)–मुनासिब ।
संगठन–जाब्ता ।
संगठनकर्ता–तरकीबी ।
संगठित–बनाया हुआ ।
संगीत काव्य–गजल, कसीदा ।
संग्रह–मजमुआ खुलासा ।
संग्रह पुस्तक–किताब मजमुआ ।
संग्रहविधि–जाब्ता ।
संघ–अंजुमन, जमात ।
संघ नियम–कायदा जमात ।
संघाटक–अहदी ।
संघीय–अहद मनसून ।
संघटन–तरकीब ।
संचय–मजमा, ढेर ।
संचयी–तहसीलदार ।
संचालक–मोहतमिम ।
संघर्ष–रगड़ ।
संचित–मजमुआ ।
संघवाद–कायदा जमात ।
संघातिक–कातिल ।
संघीय न्यायालय–अहद मन्सूबी अदालत ।
संभ्रम–शोरगुल ।
संज्ञापन–वाकफियत ।
संदिग्ध–मशकूक ।
संतोष–सब्र ।
संबंध–ताल्लुक, रिश्ता, वास्ता ।
संबंधी–नातेदार, रिश्तेदार ।
संयोग–इत्तेफाक ।
संयोजन–वाकया ।
संयोजनीयता–हमवारी ।
संशोधन–दुरुस्ती ।
संश्लेषण–जमाव ।
संरक्षक–सरपरस्त ।
सगोत्रता–करावती ।
सचिव–कारगुजार ।
सचिवालय–दफ्तर दीवान ।
संदर्भ–हवाला ।
संदर्भ ग्रन्थ–हवाले की किताब ।
संतान–औलाद ।
संतुलन–हमवजन ।
संतोषजनक–इतमीनानी ।
संदिग्धता–मुश्तबहा ।
संदेश–खबर ।
संदेह–शंका, अन्देशा ।
संधि–सुलह ।
संधिपत्र की पाण्डुलिपि–सुलहनामे का मसविदा ।
संन्निपात–सिकुड़न ।
संप्रदाय–फिरका ।
संप्रदाय संबंधी—मजहबी ।
संपर्क–रिश्ता ।
संपूरक–तितिम्मा ।
संभावना–इहतिमाल ।
संयम–जब्त, परहेज ।
संयुक्त–मुश्तरका, मुसावी, शामिल ।
संयुक्त कुटुंब–खान्दान शिराकत ।
संयोग–आमेजिश, इत्तेसाल ।

संयुक्त मंत्रिमण्डल–इत्तेफाकी वजारत ।
संयोजक–इकट्ठा करनेवाला ।
संरक्षक–सरपरस्त, वली, महाफिज ।
संरक्षण–हिफाजत ।
संरक्षित राज्य–हिमायती सल्तनत ।
संलग्न–उफ्नती ।
संलाप–गुफ्तगू ।
संवाददाता–खबर भेजनेवाला ।
संवाद परिचालन–खबर फैलाना ।
संवादशील–फैयाज ।
संवादयंत्र–टेलीफोन ।
संविधान सभा–अमली मजलिस ।
संवीक्षक–नाजिर ।
संवेदन–हवास ।
संशयवादी–मुनकिरैंबही ।
संशोधन–तरमीम, इस्लाह ।
संशोधित विधान–सेहत कर्दा कानून ।
संश्लेषण–आमजिश ।
संसर्ग–ताल्लुक ।
संसर्ग प्रतिषेध स्थान–क्वारनटाइन् ।
संसत्–औवाम मजलिस ।
संस्करण–छापा ।
संस्कार–नक्श ।
संस्कृति–आरास्तगी, तरक्की ।
संसार–जहान ।
संस्पर्श–इत्तिसाल ।
संस्था–जमात ।
संस्थापक–बानी ।
संस्थापन–तकर्हरी ।
संस्थापित–कायम ।
संस्पर्श–उफनत ।
संस्मरण–यादगार ।
सकलापराधमुक्ति–अमन माफीनामा ।
सचेत–होशियार ।
सजातित्व–करानत ।
सगोत्री–करावती ।
सगोत्र–हमखून ।
सतत–लगातार ।
सत्ता–हुकूमत ।
सतीत्वभंगीकरण–जिना ।
सतर्कता–दूरंदेशी ।
सन्तोष–रजामन्दी ।
सत्याग्रह–तसकीन ।
सत्वर सैन्य–तेज फौज ।
सदस्य–अहलमजलिस ।
सदाचार–नेकचलनी ।
सद्भाव–नकनीयती ।
सन्दिग्धता–मुश्तबहा ।
सन्दर्भ–सिलसिला ।
सन्निकष–अन्दाजा ।
सन्देश–पैगाम ।
सन्देह–मुश्तबहा ।
सन्तति–औलाद ।
सन्धि–सुलह ।
सन्निहित–मुत्तसिल ।
सन्निधान–इत्तसाल ।
सदृश–माफिक ।
सपरिश्रम कारावास–सख्त कैद ।
सप्ताह–हफ्ता ।
सफल–कामयाब ।
सफलता–कामयाबी ।
सभा–मजलिस ।
सभागृह–महफिलखाना ।
सभाग्रणी–मजलिस पराये ।
सभानता–महरी खिलाफत ।
सभापति–मीर मजलिस ।
सभापति होना–सदरनशीन होना ।
सभाप्रधान–मीर मजलिस ।
सभाभवन–महफ़िलखाना ।
सभासद–अहल मजलिस ।
सभासचिवालय–महाफिजखाना ।
सभ्यता–तहजीब ।

समकालीन–हमवक्त ।
समझौता–राजीनामा ।
समतल–सतह ।
समता–हमसरी ।
समनामधारी–नामरासी ।
समन्वय–मिलान ।
समभूमि–हमवार जमीन ।
समयनिष्ठ–नुकतासाज ।
समयानुरोधी–जमानासाज ।
समयोपयुक्त–बरवक्त ।
समयोचित–काबिल वक्त ।
समर्थ–लायक ।
समर्थक–ताईदी ।
समर्थन–ताईद ।
समर्थन करना–ताईद करना ।
समर्पण–सुपुर्दगी, हवाला ।
समर्पणपत्र–सुपुर्दगी का पर्चा ।
समष्टि–मजमुआ ।
समस्या–मस्ला ।
सम्पत्ति–रकम, दौलत ।
सम्पत्तिसंबंधी–दीवानी ।
सम्पत्ति हरण–तर्क ।
संपर्क–इत्तेसाल ।
सम्प्रदाय–फिरका ।
सम्प्रदायिक–फिरके का ।
सम्पादक–मुअल्लिफ ।
सम्पादन–कारगुजारी ।
सम्पादनकर्ता–अखबार नवीस ।
सम्पूर्ति–रसद ।
सम्बद्धीकरण–मिलाना ।
सम्बद्ध–मिलाया हुआ ।
संबंध–रिश्ता ।
सम्बन्ध-विच्छेद–तिलाक ।
सम्भावना–मुमकिन ।
सम्भाषण–गुफ़्तगू, बातचीत ।
सम्पत्ति–दौलत ।
सम्मति–राय, मंजूरी, रजामन्दी ।
सम्मान–नवाजिश, इज्जत ।
सम्मान चिन्ह–इज्जत की निशानी ।
सम्मिश्रण–मिलावट ।
संमिलित मंत्रिमण्डल–वजीरों की जमात ।
सम्मेलन–जलसा, मुबाहिसा ।
समकक्ष–गुट्ट ।
समागम–भेंट, मुलाकात ।
समुद्रतट–लबेदर्या ।
समुदाय क्रय–कुल खरीद ।
समाचारपत्र–अखबार ।
समाचार समिति–शिरकत अखबार ।
समाज–मुशायरा ।
समाज विज्ञान–इल्म मुशायरा ।
समाधान–तसफिया ।
समान गौरव–हममर्तब ।
समानाधिकारी–पट्टीदार, हिस्सेदार
समाधिशिला–कब्र ।
समानता–बराबरी ।
समाप्त–खतम, रफा ।
समाप्ति–तमामी, मौकूफी ।
समालोचक–नुक्तादाँ ।
समालोचना–नुक्ताचीनी ।
समासादन–रसवाई ।
समिति–जमात ।
समीकरण–जुटाव ।
समीप–नजदीक ।
समुत्थान–उभाड़ ।
समुदाय–औवाम ।
समुन्नति–सर्फराजी ।
सम्पर्क–निस्बत ।
सम्पन्न–लायक ।
सम्मेलन–जलसा ।
सम्मोह–घबड़ाना ।
सर्ग–बाब ।
सर्वग्राह मुद्रा–सरकारी नोट ।

सर्वदल सम्मेलन—जलसा ओवाम।
समूह—गरोह।
सरलता—आसानी।
सर्वप्रधान पत्र-व्यवस्थापक—पोस्ट मास्टर जनरल।
सर्वसत्ताधारी शासन—खुशदार हुकूमत।
सहशायी—हम बिस्तर।
सहभागी—पट्टीदार।
सह विद्यार्थी—हम तालीम।
सहानुभूति—हमदर्दी।
सहायक—इमदादी, मददगार।
सहायता—मदद, दादरसी।
सहायतार्थ दान—जर मदद।
सहभागी—साझीदार।
सहिष्णुता—तहम्मुल।
सह्य—बरदाश्ती।
सांकेतिक—अलामती।
सांकेतिक मुद्रा—निशानी सिक्का।
साक्षरता—इल्मियत।
साक्षी—गवाह।
साक्षी प्रमाण—तसदीक।
साक्षेप का—छोटा रसूम।
साक्ष्य—शहादत।
साख—भाम, ईमान।
सांघातिक—कातिल।
साथ—हमराह।
सादृश्य—मुशाबेहत।
साधन—वसीला।
साधारण—मामूली, अदना।
साधित (गौण)—भसदूर।
साधुता—नेकी, खूबी।
साध्य—होने के लायक।
साध्यता—इमकाल।
सान्त्वना—तसल्ली।
सापराध—मुजरिम।
सामंजस्य—इसफेसाल।
सामयिक विधान—आइनेशर।
सामर्थ्य—इमकान।
सामरिक—फौजी।
सामरिकक्षेत्र—इलाका जंग।
सामाजिक—कौमी।
सामान्य—आम, अदना।
सामान्य जन—अव्वाम।
सामुद्रिक—समुन्दरी।
सामूहिक—मजमुआ।
साम्प्रदायिक—फिरकेवारान।
साम्राज्य—बादशाही।
साम्राज्य संबंधी—शाहंशाही।
साम्राज्यवादी—शाही मुतवस्सिल।
सार—मजमुआ।
सारसंग्रह—मजमुआ।
सारहीन—बेजहार।
सारांश—खुलासा।
सारिणी—नकशा।
सावधान—होशियार।
सावधान !—खबरदार !
सावधानी—होशियारी।
सांसारिक—दुनियावी।
सांस्कृतिक—जिरात।
साहस—जुर्रत, दिलावरी, हिम्मत।
साहसिक—जुर्राती, जोखिमी।
साहसी—हिम्मती।
साहित्य—इल्मियत।
साहित्यिक—इल्मी।
सार्वजनिक—आम।
सार्वजनिक आलोचना—आवाम खुर्दबीनी
सार्वजनिक ऋण—कर्ज अव्वाम।
सार्वजनिक त्रास—नुक्से अव्वाम।
सार्वजनिक दोषारोपण—तोहमत।
सार्वजनिक नियंत्रण—आम चुनाव।
सार्वजनिक शान्ति—अमन अव्वाम।

सार्वजनिक स्वास्थ्य–आम सेहत।
सार्वजनिक स्वास्थ्याधिकारी–अफसर सेहत।
सार्वजनिक हित–अव्वाम का फायदा।
सार्वभौम–शाहंशाह।
सिद्ध–साबित।
सिद्ध नियम–कानून।
सिद्धान्त–उसूल।
सिद्धान्त ज्योतिष–इल्म हैयात।
सिद्धान्तवादी–क्रियासी।
सिद्धान्तमत–कियास, वसूल।
सिद्धि–तकमील।
सिंचाई–आबपाशी।
सीमा–हद।
सीमाकर–सरहद का महसूल।
सीमाकरण–तकसीम।
सीमाचिह्न–सरहद का निशान।
सीमित संघ–लिमिटेड कम्पनी।
सुकुमार–नाजुक।
सुखाधिकार–हकशफा।
सुखसाध्य–आसान।
सुगन्ध–खुशबू।
सुगम–आसान।
सुजन–नेक।
सुजनता–भलमन्सी।
सुधार–दुरुस्ती।
सुधारक–मुसहिल।
सुधारवादी–बेहतर करनेवाला।
सुधारशाला–दुरुस्त करने की जगह।
सुनीति–अदल इन्साफ।
सुन्दर–हसीन।
सुपाठ्य–साफ लिखा हुआ।
सुप्रकट–साफ।
सुयोग्य–होशियार।
सुरक्षा–सलामती।
सुरक्षा परिषद्–सलामती मजलिस।
सुरक्षित–महफूज।
सुरक्षित कोष–हिफाजती खजाना।
सुवर्ण पिण्ड–सोने की ईंट।
सुविधा–सहूलियत।
सुशील–नेक।
सुशीलता–मुरौअत।
सुव्यवस्थित–बाकायदा।
सुसम्पन्न–अमीर।
सुसंस्कृत–साफ किया हुआ।
सुस्वर–खुश आवाज।
सुषुप्तशक्ति–छिपी ताकत।
सूक्ष्म–बारीक
सूक्ष्मता–बारीकी।
सूखा–खुश्क।
सूचना मंत्री–दीवान इत्तिला।
सूचना सदस्य–अहले महफिल इतिला।
सूचना विभाग–मोहकमा इत्तिला।
सूचनापत्र–इत्तिलानामा।
सूची–फिहरिस्त।
सूत्र–मकूला।
सूत्रकोष–सूराज।
सूत्रधार–ओवरसियर।
सूत्रपात–आवाज तालीम।
सूत्र संचालक–उसकानेवाला।
सूप–शोरबा।
सूक्ष्म अनुसंधान–तशखीस।
सेतुबन्ध–पुल।
सेना–लश्कर।
सेना–फौज।
सेनाभंग–फौज की बर्खास्तगी।
सेनामुख–पलटन।
सेना-विभाग–तुमान।
सेंध–नकब।
सेवा–खिदमत।
सेवक–खिदमत करनेवाला।
सेवा पुरस्कार–मेहनताना।
सेवा विवरण पुस्तिका–तकसीर नौकरी

की किताब।
सैद्धान्तिक–कयासी।
सैनिकागार–बरेक।
सैनिकदल–पल्टन।
सैनिक सेवा–फौजी नौकरी।
सैनिक न्यायालय–फौजी अदालत।
सैनिक व्यूह–इल्म जंग।
सैन्य–फौजी।
सैन्य शिक्षण–फौजी तालीम।
सैन्य निरास–सदर।
सैन्य दलपति–कर्नल।
सैन्य भरती–फौजी भरती।
सोच–गौर।
सौजन्य–भलमनसाहत।
सौंदर्य–हुस्न, खूबसूरती।
सौन्दर्य मीमांसा–इल्म हुस्न।
सौभाग्य–खुशनसीबी।
सौहार्द–मिहर्बानी।
स्थगित–मुस्तवी।
स्थगित करण–मुल्तवी करना।
स्थगित करना–मोवत्तिल करना।
स्थगित प्रस्ताव–रोकने का मकसद।
स्थगित वार्षिक वृत्ति–रुका हुआ वसीला।
स्थल–जगह, मौका।
स्थान–जगह।
स्थानान्तर–तबादला।
स्थानान्तरगामी–दूसरी जगह जानेवाला।
स्थानान्तर होना–तबादला होना।
स्थानापन्न–एवजी, जानशीन।
स्थानिक रोग–किसी जगह की बीमारी।
स्थानीय–मुकामी।
स्थानीय भूगोल–सखितुलसावाद।
स्थानीय स्वराज्य–मुकामी सल्तनत।
स्थापत्य–इनजिनियरी।
स्थापित–कायम दायर।
स्थायित्व–कायम।
स्थायी–दवामी, मुस्तकिल, पोख्ता।
स्थायी प्रबन्ध–दवामी बन्दोबस्त।
स्थावर–गैर मनकूला।
स्थिति–नौबत हैसियत।
स्थिर–कायम।
स्थिरदान–वक्फ।
स्थूल–कद्दावर।
स्थूल दर्शन–सरसरी नजर।
स्पर्धी–हमसर।
स्पर्शजन्य–छुतही (बीमारी)।
स्पष्ट–वाज:, साफ, जाहिर।
स्पष्टीकरण–तशरीह।
स्फीति–नफख।
स्फुट–जाहिर।
स्मरण–यादगार।
स्मरण लिपि–याददाश्त।
स्मरणार्थक बही–याददाश्त की किताब।
स्मारक–यादगार।
स्मृति–यादगार।
स्मृतिकार–मुजसहिद।
स्मृतिचिह्न–यादगार की चीज।
स्मृतिशास्त्र–आईन।
स्वकीय–खानगी।
स्वीकार–कबूल।
स्वीकृति–कबूलियत।
स्वच्छ–साफ।
स्वच्छता–सफाई।
स्वच्छन्द शासक–जालिम बादशाह।
स्रोतोञ्जन–सुरमा।
स्वतन्त्र–आजाद।
स्वतन्त्रता–आजादी।
स्वतन्त्र मनुष्य–आजाद शख्स।
स्वतःसिद्ध–वदीह।
स्वत्व–इस्तहाक हक।
स्वत्व-ज्ञान–छुटकारा।

स्वत्व प्रस्तुति–दावा ।
स्वत्व त्याग–तर्के हक ।
स्वत्व समर्पण–तहरीर हाजिरी ।
स्वत्व सूची–फिहरिस्त हकूक ।
स्वदेशभक्ति–हुब्बल वतन ।
स्वदेशी–हमवतन ।
स्वनिध्वंस–पाएमाली ।
स्वयंभू–खुदरो ।
स्वयं–अजखुद, असालतन ।
स्वयंसेवक–अजखुद खिदमती ।
स्वर्ग–बिहिश्त ।
स्वर्गीय दूत–फरिश्ता ।
स्वरविज्ञान–इल्म आवाज ।
स्वर संक्रम–लहजा ।
स्वर संगति–लय, समा ।
स्वविरोधी–वर खिलाफ ।
स्वविक्षण–खुद तालीम ।
स्वस्थ–तन्दुरुस्त, चंगा ।
स्वस्थता–आसूदगी ।
स्वराज्य–खुदमुख्तारी ।
स्वहस्त लेख–दस्तखत ।
स्वाद–लज्जत ।
स्वभाव–खसलत ।
स्वाभाविक–खुदमजाज ।
स्वादिष्ठ–मजेदार, लजीज ।
स्वायत्त शासन–खुदमुख्तारी ।
स्वीकृति–तसलीम, रजामन्दी ।
स्वीकार–मंजूर, कबूल ।
स्वीकृत–मंजूर ।
स्त्रीधन–महर ।
स्त्रीमताधिकार-औरतों को राय देने का हक
स्वमताग्रह–तआस्सुब ।
स्वागत समिति–मेहमानदारी की मजलिस
स्वाधिकारच्युत–बेदखल ।
स्वाधीनता–आजादी ।
स्वामित्व–मिल्कियत ।
स्वामित्व परिवर्तन–तबदीली मालिकान ।
स्वामिभक्त–वफादार ।
स्वामिभक्ति–वफादारी ।
स्वामी–मालिक ।
स्वायत्त शासन–स्वराज्य ।
स्वार्थ–खुदगरजी ।
स्वार्थी–खुदगरज ।
स्वावलम्बन–अपना भरोसा ।
स्वाश्रयी–खुद परवरिश ।
स्वार्थत्याग–खुदकुर्बानी ।
स्वास्थ्य–आसूदगी ।
स्वास्थ्यकर–तन्दुरुस्ती देह ।
स्वास्थ्यकर प्रभाव–तन्दुरुस्ती का असर ।
स्वस्थचित्तता–दुरुस्ती जहन ।
स्वास्थ्य रक्षा–तन्दुरुस्ती ।
स्वास्थ्यविज्ञान–इल्म सेहत ।
स्वास्थ्याधिकारी–सेहत अफसर ।
स्वीकारोक्ति–मंजूरी ।
स्वीकार–एकरार ।
स्वीकृत–मंजूर ।
स्वीकृत सिद्धान्त–हकीकत ।
स्वीकृति–तसलीम, मंजूरी, रजामन्दी ।
स्वेच्छापूर्वक–अपनी खुशी से ।
स्वेच्छाचारी–सरखुद, खुद हाकिम ।

ह

हठधर्मिता–खुदराय ।
हठधर्मी–झक्की ।
हठात्–जबरदस्ती ।
हठी–कट्टर ।
हड़तालभंजक–हड़ताल तोड़नेवाला ।
हत्या–कत्ल ।
हत्याकांड–कत्लेआम ।
हथकंडा–तरीका ।
हरा–सब्ज ।
हलचल–दहशत ।

हरण–गबन ।
हँसोड़–मसखरा ।
हस्तकला शिक्षण–दस्तकारी की तालीम।
हस्तक्षेप–दस्तंदाजी ।
हस्तक्षेप के अयोग्य–दस्तंदाजी न करने लायक ।
हस्तक्षेप योग्य–आजमाने लायक।
हस्तपत्रक–रुक्का, पुरजा ।
हस्तप्रहार–मुक्का ।
हस्तलिपि–हाथ की लिखावट ।
हस्ताक्षर–दस्तखत ।
हस्ताक्षर करना–दस्तखत करना ।
हाट–बाजार।
हाथ बही–पास बुक ।
हाथापाई–झगड़ा।
हानि–नुकसान, हर्ज ।
हानिकर–नुकसानदेह, मुजिर ।
हानिकारक–मुजरंत ।
हावभाव–नखरा ।
हास्यकर चित्र–हँसानेवाली तस्वीर।
हास्यकर–दिल्लगीबाज ।
हिंसा–कत्ल ।
हिंसात्मक–जालिम ।
हितकर–मुफीद ।
हितचिंतक–नेक अन्देश ।
हिताधिकारी–मातहत ।
हृदयग्राही–फरेफ्तगी ।
हृदय–सीना, दिल ।
हृदयस्पर्शी–दिलसोज ।
हृन्मादसूचक यंत्र–स्टेथस्कोप ।
ह्रास–कमी ।
हेत्वाभास–निकाब ।
हेतु–बाइस ।
हेतुवाद–बदला ।
होड़–शर्त, बाजी ।
हृदयंगम–जहननशीन ।

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अ

अंक देना–आलिंगन करना, गले लगाना।

अँकड़ दिखाना–अभिमान करना, गर्व करना।

अक्ल का पुतला–बड़ा बुद्धिमान् पुरुष।

अक्ल पर परदा पड़ना–बुद्धि नष्ट होना, अक्ल मारी जाना।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना–नाना प्रकार के विचार करना।

अक्ल चकराना–बुद्धि काम न करना, समझ में न आना।

अक्ल मारी जाना–बुद्धि भ्रष्ट हो जाना।

अक्ल का दुश्मन–नासमझ, बुद्धिहीन, बेवकूफ।

अक्ल चरने जाना–बुद्धि का काम न करना।

अक्ल पर पत्थर पड़ना–भले बुरे का ज्ञान न होना, मतिभ्रष्ट या विवेक - रहित होना।

अखाड़े में आना (उतरना)–मुकाबला करना।

अखाड़ा मारना–विजय प्राप्त करना।

अखाड़े से भागना–हारकर चले जाना।

अखाड़े जमाना–आमोद-प्रमोद के लिये एकत्रित होना।

अगर मगर करना–तरह-तरह के बहाने करना।

अंग अंग ढीला होना–बहुत थक जाना।

अंग अंग ढीला करना–अति शिथिल कर देना।

अंग अंग मुस्कराना–अति प्रसन्न होना, बहुत खुश होना।

अंग न लगना–भोजन का पुष्टिकारक प्रभाव शरीर में न आना, काफी खाना खाने पर भी दुबला होना।

अंगारे सिर पर धरना–बड़ी आपत्ति को सहन करना।

अंगारों पर लेटना–बहुत व्यग्र होना, बहुत घबड़ाना।

अंगारे बरसाना–धूप बड़ी तेज होना, सूर्य का तीव्र आतप होना।

अगाड़ी पिछाड़ी बाँधना–सब तरह प्रबंध करना।

अँगुलियाँ उठना–बदनाम होना, अपकीर्ति प्राप्त करना।

अँगुलियाँ उठाना–बदनाम करना, अपकीर्ति फैलाना।

अँगुलियों पर नचाना–तंग करना, परेशान करना।

अंजर पंजर ढीला करना–बहुत मारना-पीटना।

अंटी पर चढ़ना–अधिकार में आना।

अजीर्ण होना–कष्टसाध्य होना।

अड़ंगा अड़ाना (देना)–विघ्न डालना, तरकीब लगाना।

अटकलपच्चू–बिना सोच-विचार किये हुए।

अठखेलियाँ करना (सूझना)–उपहास करना।

अड़ंगे पर चढ़ना–अधीन होना।

अड़ंगे पर चढ़ाना–वशीभूत करना।

अड्डा जमाना–अधिकार करना।

अड्डा जमना–एकत्रित होना, इकट्ठा होना।

अण्डा सिखावे बच्चों को चीं चीं न कर–छोटे का अपने बड़ों को उपदेश देना।

अण्डे सेवे और कोई, लेवे दूसरा कोई—कोई करे और उसका फल दूसरा कोई उठावे।

अण्डे होंगे तो बच्चे बहुत होंगे—मूलधन बना रहेगा तो सूद बहुत मिलेगा।

अँतड़ियों में बल पड़ना—हँसते-हँसते पेट में पीड़ा होना।

अन्त करना—जान से मार डालना, समाप्त करना।

अन्त पाना—गुप्त भेद को जान लेना।

अन्त बुरे का बुरा—बुरा काम करने का अन्त बुरा ही होता है।

अन्त समय—मृत्युकाल, मरण का समय।

अँतड़ियाँ टटोलना—भेद या रहस्य का पता लगाना।

अन्धा क्या चाहे, दो आँखें—आवश्यक वस्तु यदि सहज में मिल जाय तो कैसा अच्छा हो।

अन्धा बनाना—धोखा देना।

अन्धा बन जाना—धोखे में आ जाना, धोखा खा जाना।

अन्धाधुन्ध उड़ाना—बिना सोचे-विचारे धन खर्च करना।

अन्धा पीसे कुत्ता खाय—परिश्रम करके धन कोई कमाये और उसका उपभोग कोई दूसरा ही करे।

अन्धा बाँटे रेवड़ी फिर फिर अपने को दे—अधिकार मिलने पर अपने ही वंश, जाति आदि के लोगों का उपकार करना सामान्य बात है।

अन्धे के हाथ बटेर लगना—किसी को किसी वस्तु का सहज में मिल जाना।

अन्धे को अन्धा कहने से बुरा मानता है—कटु वचन सच्चे होनेपर भी सभी को बुरे लगते हैं।

अन्धे को अँधेरे में बड़ी दूर की सूझी—किसी मूर्ख का दूरन्देशी की बात कहना।

अन्धे की लकड़ी—एकमात्र आश्रय।

अन्धेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—अर्थ स्पष्ट है। जहाँ अव्यवस्था है वहाँ भले बुरे एक समान है।

अन्धेर मचाना—अन्याय करना।

अन्न-जल उठ जाना (पूरा होना)—एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना, मर जाना।

अन्धा क्या जाने बसन्त की बहार—जिस मनुष्य ने किसी वस्तु को नहीं देखा वह उसका महत्त्व नहीं जान सकता।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता—अकेला मनुष्य किसी बड़ काम को नहीं कर सकता।

अन्धा बगला कीचड़ खाय—मूर्ख के लिये क्षुद्र वस्तु भी अमूल्य है।

अधजल गगरी छलकत जाय—ओछे मनुष्य बड़ा आडंबर करते हैं।

अति भक्ति चोर का लक्षण—बड़ा आडंबर करनेवाला मनुष्य छली होता है।

अपना सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित होना।

अपना उल्लू सीधा करना—अपना मतलब सिद्ध करना।

अपना घर समझना—किसी तरह का संकोच न करना।

अपना ही राग अलापना—स्वार्थ साधन की बात कहना।

आन के धन पैर लक्ष्मीनारायण—दूसरे की कमाई हुई सम्पत्ति पर अधिकार होना।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—निराले विचार का होना।

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगड़े—नीच लोग अपनी हानि करते हुए भी दूसरों की हानि करते हैं।

अपनी पगड़ी अपने हाथ–अपनी प्रतिष्ठा अपने ही हाथ होती है।
अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता–अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं कहता।
अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनना–अपने मुँह से अपनी शेखी करना।
अपने पाँवों पर आप कुल्हाड़ी मारना–अपने ही हाथों से अपनी हानि करना।
अपने हाथों पापड़ बेलना–जान-बूझकर कष्ट उठाना।
अपने मार्ग में काँटा बोना–ऐसा काम करना जिसमें अपने को हानि पहुँचे।
अमर हो जाना–चिरस्थायी यश प्राप्त करना।
अंगारे उगलना–क्रोध में आकर कठोर वचन बोलना।
अँगुली उठाना–हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना।
अँगुलियों पर गिना जाना–संख्या में बहुत कम होना।
अँगुलियों पर नाचना–वशीभूत होना।
अँगूठा दिखलाना–चिढ़ाना, साफ जवाब देना
अँगूठा चूमना–बड़ी विनती करना।
अग्नि में घी डालना–तकरार बढ़ाना।
अच्छे दिन देखना–आनन्द से जिन्दगी व्यतीत करना।
अँचरा पसारना–भिक्षा माँगना।
अण्डे सेना—बेकार बैठे रहना।
अन्धे को अँधेरे में बड़ी दूर की सूझी–अपने धुन में लगे रहने से मनुष्य को अनोखी बात सूझती है।
अल्पाहारी सदा सुखी–थोड़ा खानेवाला रोगी नहीं होता।
अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया बन्दे ने–ईश्वर अच्छा ही करता है, बुरा काम मनुष्य करता है।
अच्छे घर बैना देना–अपने से अधिक बलवान् से शत्रुता करना।
अक्ल बड़ी कि भैंस–शरीर पुष्ट होने से बुद्धि नहीं बढ़ती।
अटका बनिया देय उधार–दबा हुआ मनुष्य सब कुछ कर सकता है।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप, अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप–किसी बात की अति का होना बुरा होता है।
अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष–अपने ही कुटुम्ब के लोग बुरे हों तो दूसरे को क्यों दोष देना।
अपना वही जो आवे काम–सच्चा मित्र वही है जो समय पर सहायता दे।
अपना खाना अपना कमाना–परिवार से अलग होकर रहना।
अपना घर दूर से सूझता है–अपना फायदा सभी को देख पड़ता है।
अपनी करनी पार उतरनी–जैसी करनी वैसा फल।
अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग–एक साथ मिलकर कोई काम न करने की विधि।
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है–कमजोर भी अपने स्थान पर बलवान होता है।
अस्सी आमद चौरासी का खर्च–आमदनी से अधिक व्यय करना।

आ

आँख उठाना–हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना, बुरी निगाह से देखना।
आँख बचा जाना–सम्मुख उपस्थित न होना।
आँख मिलाना–किसी के सामने देखना।
आँख रखना–किसी से प्रेम करना, देखते रहना।

आंख में शील न होना—निर्लज्ज होना ।
आंख का तिल खो देना—अंधे हो जाना ।
आंख मारना—संकेत करना, सैन करना ।
आंख की पुतली फिर जाना—मरणासन्न होना
आंख न लगना—नींद न आना ।
आंख-कान खोलकर चलना—अति सावधान रहना ।
आंख मैली करना—बेमुरीवत होना ।
आंख मटकाना—सान चलाना, आँखों से संकेत करना ।
आंख भर आना—आँखों में आँसू आ जाना ।
आँख फोड़ना—धोखा देना ।
आँख मुंदना—मृत्यु को प्राप्त होना ।
आँख मूंदना—विचारपूर्वक काम न करना ।
आँख ठंडी होना—शान्ति मिलना, तृप्त होना ।
आँखें चढ़ना—नशे में आँख लाल होना ।
आँख में कांटा होना—असह्य हो जाना ।
आँखों का पानी गिर जाना—निर्लज्ज होना ।
आँख लगना—आसक्त होना ।
आँखें उठना—देखना ।
आँखें फेरना—प्रतिकूल होना ।
आँखें फिरना—बेमुरौवत होना ।
आँखों से गिरना—मान का कम होना ।
आँखें चढ़ाना—क्रोध करना ।
आँखें दिखाना—डाँटना, धमकाना ।
आँखों में धूल झोंकना—धोखा देना ।
आँखों में खटकना—बुरा जान पड़ना ।
आँखें बैठना—अन्धा हो जाना, अनुकूल न होना, पसन्द न आना ।
आँखें बिछाना—प्रेम-सहित आदर करना ।
आँखें झंप जाना—नींद आना ।
आँखों में समा जाना—बहुत प्रिय होना ।
आँखें जमीन में लग जाना—अति लज्जित होना ।
आँखों की पट्टी खुलना—सचेत हो जाना ।
आँखों पर पट्टी बांधना—असावधान होना ।
आँखों तले आना—वशीभूत होना ।
आँखों के सामने नाचना—याद आना ।
आँखों में चरबी छा जाना—बड़ा अभिमान होना ।
आकाश के तारे तोड़ना—कठिन कार्य करने में उद्यत होना ।
आकाश-पाताल एक करना—बड़ा अन्वेषण करना, बड़ी जाँच-पड़ताल करना ।
आकाश में थेगली लगाना—बड़ी चतुराई करना ।
आकाश में छेद हो जाना—अधिक वृष्टि होना
आग लगाकर पानी को दौड़ना—उपद्रव आरंभ करके शान्त करने का प्रयत्न करना।
आग लगने पर कुवाँ खोदना—आपत्ति आ जाने पर उसका उपाय सोचना ।
आग में पानी डालना—क्रोध को शमन करना।
आग में झोंक देना—नष्ट कर देना, आपत्ति में डाल देना ।
आग लगाना—झगड़ा खड़ा करना, उत्तेजित करना ।
आँख उठाकर भी न देखना—ध्यान तक न देना।
आँख ऊँची होना—प्रतिष्ठित होना ।
आँख आना—आँख लाल होकर दुखना ।
आँख ठहरना—रुचिकर होना, पसन्द आना ।
आँख और कान में चार अंगुल का फर्क है—देखी हुई बात को सब कोई मानता है, परन्तु सुनी हुई बात पर कोई विश्वास नहीं करता ।
आँख तरसना—देखने की बड़ी लालसा होना।
आँख के अन्धे नाम नयन सुख—कलम पकड़ने का शऊर नहीं लेखक बनते हैं।
आँख भर रोना—आँखों में आँसू आ जाना ।
आँख ऊँची न होना—शर्मिन्दा होना, लज्जित होना ।
आँख चीर-चीरकर (फाड़कर) देखना—उत्सुक होकर देखना, घूरना ।

आँख न दीदा काढ़े कसीदा–किसी कार्य करने में समर्थ न होकर भी उस कार्य को करने की चेष्टा करना।
आँख न ठहरना–चकाचौंध लगना।
आँख चूकी माल दोस्तों का–अपनी वस्तु यदि सावधानी से न रखोगे तो चोर चुरा ले जायेंगे।
आँख से दूर दिल से दूर–दूर देश में रहने से प्रेमभाव बहुधा कम हो जाता है।
आँख से ओझल न करना–सर्वदा अपने सामने रखना।
आँख बन्द करना–असावधान होना।
आँख लगना–आसक्त होना।
आँख जाना–अन्धा होना।
आँख बदलना–बेमुरौवत होना।
आँख चुराना–लज्जा के कारण सामने न देखना।
आँखें खुलना–सावधान होना।
आँखों में चुभना–बुरा लगना।
आँखें खुल जाना–आश्चर्य होना।
आँख तले न लाना–तुच्छ समझना।
आँखें पथरा जाना–आँखों का निमेष-रहित हो जाना।
आँखों पर ठीकरी धरना–निर्लज्ज होना।
आँखें चार होने से मुहब्बत आ जाती है–अर्थ स्पष्ट है।
आँखें फटना–आश्चर्ययुक्त होना।
आँखों में पालना–अत्यन्त प्रिय रखना।
आँखों के सामने अँधेरा छा जाना–शून्य दिखलाई पड़ना।
आँखों में फिरना–बारंबार याद आना।
आँखों में खटकना–बुरा लगना।
आँखों से काजल चुराना–बड़ी चालाकी करना।
आँखों में खून उतर आना–अति क्रुद्ध होना।
आँखों में जगह मिलना–प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
आँखों में जगह देना–प्रतिष्ठा करना।
आँखों आँखों में उड़ा देना–देखते देखते चुरा लेना।
आँखों में हलका होना–प्रतिष्ठा कम होना।
आँधी के आम–बड़ी सस्ती वस्तु।
आँसू एक नहीं कलेजा टूक-टूक–पाखंड, दिखावटी रुलाई।
आँत भारी तो माथ भारी–आँतों में विकार होने से सिर में पीड़ा होती है।
आई तो रोजी नहीं तो रोजा–आमदनी होने पर सुख से बीतते हैं नहीं तो उपवास ही होता है।
आग लगना–क्रोध आना।
आग लगाकर तमाशा देखना–झगड़ा आरंभ करके प्रसन्न होना।
आग बबूला हो जाना–अत्यन्त उत्तेजित होना।
आग में कूदना–आफत में पड़ना।
आग में ईंधन डालना–क्रोध बढ़ाना।
आग पानी से गुजरना–सब तरह के कष्टों का सहन करना।
आगा रोकना–मुकाबले पर आना।
आगा-पीछा करना–दुबिधा म पड़ना, हिचकिचाना।
आगा-पीछा न सोचना–अपने फायदे नुकसान का ख्याल न करना।
आगे नाथ न पीछे पगहा–किसी संबंधी या संरक्षक का न होना।
आग आगे हो लेना–किसी काम का सहज हो जाना।
आँच अधिक खा जाना–अधिक पक जाना।
आँच खाना–हानि उठाना।
आँच न आने देना–कष्ट को रोकना।
आँट रखना–शत्रुता करना।

आज कल करना–टालमटोल करना।

आटे दाल का भाव मालूम होना–सब प्रकार के कष्टों का अनुभव होना

आठ आठ आंसू रोना–अति विलाप करना।

आठो पहर शूली पर रहना–सर्वदा कष्ट ही कष्ट भोगना।

आठ अठारह कर देना–अति कष्ट देना।

आड़े आना–आश्रय लेना, सहारा लेना।

आड़े हाथ लेना–भला-बुरा कहना।

आड़ी देकर बैठना–जम जाना।

आड़े समय काम आना–विपत्ति-काल में सहायता देना।

आत्मा ठंडी होना–शान्ति प्राप्त करना।

आत्मा मसोसना–दुःखी हो जाना।

आदमी बनना–शिष्टाचार जानना।

आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे–संसर्ग से मनुष्य-चरित्र का पता लगता है, यथा सोने की परीक्षा कसौटी पर कसने से होती है।

आदमी मुश्किल से मिलता है–सच्चे और ईमानदार मनुष्य जल्दी नहीं मिलते।

आदमी की पेशानी दिल का आयना है–मनुष्य के चेहरे से उसके हृदय के भावों का पता चल जाता है।

आदि अन्त सोचना–पूरी तरह से विचार करना।

आधा तीतर आधा बटेर–अस्त-व्यस्त, गड़बड़, अधूरा, अपूर्ण।

आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे–अधिक लालच करने से सर्वथा हानि होती है।

आन निभाना–अपने निश्चय पर अटल रहना

आन की आन में–अति शीघ्र, तुरंत।

आनाकानी करना–बहाना करना।

आप काज महा काज–किसी कार्य को स्वयं ही करना ठीक होता है।

आप बीती कहना–अपने ऊपर बीते हुए कष्ट को दूसरे से कहना।

आप आप करना–अति शुश्रूषा या विनती करना।

आप भला तो जग भला–भला मनुष्य संसार में सभी को सज्जन समझता है।

आपको आसमान पर खींचना–अपने को बहुत बड़ा जानना।

आप ही मियाँ माँगते द्वार खड़े दरवेश–जो स्वयं सहायता चाहता है, वह दूसरे को क्या सहायता दे सकता है।

आपस में गिरह पड़ना–आपस में मन-मुटाव होना।

आपको खींचना–स्वयं अलग हो जाना।

आपा न संभालना–अपना ही निर्वाह न हो सकना, अपना शरीर अपने अधिकार में न होना।

आपा खोना–अभिमान त्याग करना।

आपे में आना–होश संभालना।

आपे से निकल पड़ना–अति व्यग्र होना।

आपे से बाहर होना–क्रोध में आकर बड़े गर्व से बोलना।

आब आब कर मर गये सरहाने रक्खा पानी–किसी से ऐसी भाषा बोलना जिसको वह न समझता हो।

आब देना (चढ़ाना)–चमकाना, पालिश करना।

आ बला गले लग–आपत्ति में जान-बूझ कर पड़ना।

आबरू खाक में मिलाना–मान-मर्यादा खो बैठना, बेइज्जत करना।

आम के आम गुठली के दाम–किसी कार्य में दुगुना फायदा होना।

आम खाने से काम कि गुठली गिनने से काम–मनुष्य को अपने मतलब का काम करना चाहिये, निरर्थक न करना

चाहिये।
आम, ईख, नीबू, बणिक गारे ही रस देत–अर्थ स्पष्ट है।
आसमान पर चढ़ाना–बड़ी प्रशंसा करना।
आसमान देखना–हार जाना।
आँसुओं की झड़ी लगाना–अति विलाप करना
आयँ आयँ करना–बे मतलब बोलना।
आयी को रोकना–मौत से बचाना।
आयी गयी करना–समाप्त करना, खतम करना, माफ करना, छिपाना।
आया है सो जायगा, राजा रंक फकीर–जो उत्पन्न हुआ है वह एक दिन अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।
आयु का पट्टा लिखवाकर लाना–सर्वदा जीवित रहने की इच्छा करना।
आये की खुशी न गये का गम–सर्वदा सन्तुष्ट रहना।
आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास–किसी बड़े काम को करने लगे थे परन्तु तुच्छ कार्य करने लगे।
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा–सामने से सब लुट गया तू देखता ही रह गया।
आरती उतारना–प्रतिष्ठा करना, इज्जत करना।
आरे चलना–अति दुःखी होना।
आर्द्र नेत्र होना–शोकाकुल होना।
आल्हा गाना–जगह-जगह समाचार फैलाते फिरना।
आव देखना न ताव देखना–सोच-विचार कुछ भी न करना।
आवभगत में स्वाहा करना–नीरस व्यवहार करना।
आवभगत करना–अतिथि आदि का सत्कार करना।
आवाज कसना–मर्मभेदी बात कहना।
आवें का आवाँ बिगड़ना–संपूर्ण कुटुम्ब का दुश्चरित्र होना।
आसमान पर दिमाग चढ़ना–बड़ा गर्व करना।
आसमान सिर पर उठाना–बहुत शोर-गुल करना।

इ

इक ते इक माई के लाल पड़े हैं–संसार में एक से एक गुणी और विद्वान् पड़े हैं।
इधर-उधर करना–गप हाँकना।
इधर-उधर देखने लगना–निरुत्तर हो जाना।
इधर-उधर लगाना–चुगलखोरी करना।
इतना नफा खाओ जितना दाल में नोन–थोड़ा ही मुनाफा करना चाहिये।
इन तिलों तेल न होना–मिलने की आशा न होना।
इतनी सी जान और गज भर की जबान–छोटा-सा मुंह और बड़ी-बड़ी बातें।
इन्हीं पावों जाना–तुरत चले जाना।
इज्जत गँवाना–मान-भंग होना।
इज्जत बिगाड़ना–अप्रतिष्ठित करना।
इज्जत दो कौड़ी की न रहना–प्रतिष्ठा खो बैठना।
इति श्री करना–समाप्त करना।
इति श्री होना–समाप्त होना।
इधर उधर करना–बहानेबाजी करना।
इधर की उधर हाँकना–व्यर्थ की बकवाद करना।
इधर-उधर देखना–हिचकिचाना।
इधर का न उधर का–निरर्थक, व्यर्थ, बेफायदा।
इधर की उधर लगाना–कलह उपस्थित करना।
इस कान से सुना उस कान से निकाल दिया–किसी की बात पर ध्यान न देना।

इने गिने–गिनती में बहुत कम, केवल काम चलाने योग्य।

ई

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया–संसार में सर्वत्र भाग्य की विचित्रता देख पड़ती है।

ईंट से ईंट बजाना–नाश होना।

ईंट का घर मिट्टी कर देना–धन और संपत्ति का नाश कर देना।

ईश्वर को प्यारा होना–थोड़ी उमर में मर जाना।

ईंट की लेनी पत्थर की देनी–बदला चुकने चुकाने की विधि, दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार।

ईंधन हो जाना–शक्तिहीन हो जाना।

ईद का चांद होना–बहुत दिनों बाद प्राप्त होना।

ईंटों से निकलकर कीचड़ में पड़ना–एक आपत्ति से छुटकारा पाया और दूसरी आपत्ति में जा गिरा।

उ

उखड़ जाना–स्वीकार न करना।

उखड़ी बातें करना–हृदय से न कहना।

उखाड़ देना–बिगाड़ना, नष्ट करना।

उगल देना–रहस्य या भेद को प्रकाशित करना।

उछल पड़ना–अति प्रसन्न होना।

उठ जाना–मृत्यु को प्राप्त होना, व्यय होना, समाप्त होना।

उठा न रखना–कोई कसर न छोड़ना।

उड़ती चिड़िया पहचानना–मन की भावना को जान लेना।

उड़ा जाना–खा जाना, व्यय कर देना।

उड़ा ले जाना–चुरा लेना, अपहरण करना

उतार जाना–भाव मन्दा होना, तेज न रहना।

उतार चढ़ाव देखना–अनुभव होना, तजुर्बा होना।

उतारू होना–प्रस्तुत होना, तैय्यार होना।

उतावला होना–शीघ्रता करना, जल्दीबाजी करना।

उथल-पुथल करना–उलट-पलट होना।

उदरनिमित्तं बहुकृतवेशः–पेट के लिए मनुष्य सब कुछ (भले बुरे) काम करता है।

उत्तम खेती मध्यम बान, नीच चाकरी भीख निदान–अर्थ स्पष्ट है।

उधार खाये बैठना–प्रतीक्षा करते रहना।

उधार न छोड़ना–कसर रखना।

उधार का खाना और फूस का तापना बराबर है–जिस प्रकार फूस की आग बहुत जल्द बुझ जाती है इसी तरह से उधार खाना भी ज्यादा दिनों तक नहीं चलता।

उधार दिया गाहक छोड़ा–उधार दी हुई वस्तु का दाम मांगने पर ग्राहक उसके पास फिर नहीं आता।

उधेड़ डालना–फाड़ डालना।

उन्नीस बीस का फर्क–बहुत थोड़ा अन्तर।

उपजे पूत अनेक, निज निज गुन बिलगाहीं–किसी मनुष्य की सब सन्तान एक प्रकृति की नहीं होतीं।

उफ न करना–आपत्ति आदि को चुपचाप सह लेना।

उबल पड़ना–क्रुद्ध होना।

उभार पर होना–वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना।

उलट-फेर होना–परिवर्तन होना, उलट-पलट होना।

उखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर–जब किसी कठिन कार्य करने में लगे तो आपत्तियों से क्या डरना।

उछलकर चलना–अभिमान दिखलाना, अपनी शक्ति के बाहर काम करना।

उछलकूद दिखलाना–शेखी हाँकना।
उड़कर पड़ना–बड़ी लालच करना।
उड़ती खबर पाना–अफवाह मिलना।
उड़ा लेना–हर लेना, ठग लेना।
उड़ा देना–खो देना, गड़बड़ी करना।
उधेड़ बुन में लगना–चिन्ता फिक्र करना।
उभारा देना–उत्तेजित करना, उभाड़ना, साहस बढ़ाना।
उभारा लेना–सँभालना।
उमंगें मिटना–उत्साह कम होना।
उलटी बातें कहना–असंगत वार्ता कहना।
उलटा चोर कोतवाल को डाँटे–अपना दोष स्वीकार न करके पूछनेवाले पर क्रोध दिखलाना।
उलटा बाँस बरेली को–विपरीत कार्य करना।
उलटी गंगा बहाना–विपरीत कार्य करना।
उलटी पट्टी पढ़ाना–उचित मार्ग से विचलित करना।
उलटी साँस लेना–मरणासन्न होना।
उलटी माला फेरना–किसी का अनिष्ट चाहना।
उलटी सीधी सुनाना–भला-बुरा कहना।
उलटे पाँव जाना–लौट जाना।
उलझ पड़ना–लड़ पड़ना।
उल्लू बनाना–मूर्ख बनाना।
उल्लू बोलना–किसी स्थान का उजाड़ होना।

ऊ

ऊँचा सुनना–कम सुन पड़ना, कुछ बहरा होना।
ऊँची जगह पाना–प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
ऊंट के गले में बिल्ली बाँधना–बेमेल का काम करना।
ऊँट किस करवट बैठता है–क्या स्थिति उपस्थित होती है।
ऊंट के मुंह में जीरा–आवश्यकता अधिक होने पर अल्प मात्रा देना।
ऊंट की चोरी और झुके झुके–छिपकर बड़ा काम करने का उद्योग।
ऊंच नीच का भेद न रखना–सबके साथ समान व्यवहार करना।
ऊंचा बोल बोलना–श्लाघा करना, अभिमान करना।
ऊंची दुकान फीका पकवान–बहुत-सा आडंबर हो परन्तु तत्त्व कुछ न हो।
ऊटपटाँग हाँकना–बेमतलब की बातें हाँकना।
ऊधम मचाना–उपद्रव करना।
ऊपर पड़ना–दुःख उठाना।
ऊधो का लेना न माधो का देना–स्वार्थ-परायण रहना, निश्चिन्त रहना।
ऊसर में बीज डालना–बिना मतलब का काम करना।

ए

एक अनार सौ बीमार–आवश्यकता से अधिक माँग।
एक और एक ग्यारह होते हैं–एकता में बड़ा सामर्थ्य है।
एक आँख से देखना–समान व्यवहार करना।
एकरस रहना–किसी प्रकार का विकार न होना।
एकटक लगाना–निगाह जमाकर देखना।
एक बात होना–सहज होना।
एक ईंट के लिये महल गिराना–जरा-सी बात के लिये अनथ मचाना।
एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत–आरोग्य रहना सवप्रधान है।
एक को एक खाये जाना–आपस में द्वेष करना।
एक हो जाना–मिल जाना।

एक पर से सौ कौवे बनाना—थोड़ी सी बात को बहुत बढ़ा देना।

एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी—एक तो काम बिगाड़ना दूसरे क्रोध दिखलाना।

एक होना—अद्वितीय होना, भेद-भाव न रखना।

एक ही साँचे में ढलना—समान विचार का होना।

एक न चलना—कुछ न कर सकना।

एक तो तितलौकी दूसरे नीम चढ़ी—एक तो स्वयं नीच दूसरे नीचों का संग।

एक से तीन बनाना—अनुचित लाभ उठाना।

एक थैली के चट्टे बट्टे—एक समान, सब के बराबर होना।

एक तरफा डिगरी देना—पक्षपात दिखलाना, अपूर्ण न्याय करना।

एक दम में हजार दम—एक मनुष्य से हजारों की परवरिश।

एक टाँग से फिरना—बहुत इधर उधर घूमना।

एक न सुनना—कुछ न मानना।

एक एक रग जानना—अच्छी तरह से परिचित होना।

एक सौ चौवालीस लगाना—बोलना बन्द कर देना।

एक न शुद दो शुद—आपत्ति पर आपत्तियाँ आना।

एक पंथ दो काज—किसी एक उद्योग से अन्य कार्य का सफल होना।

एकादशी का खाया द्वादशी को निकालना—एक दिन का दिया हुआ दूसरे दिन लौटाना पड़े।

एक मछली सारे जल को गन्दा करती है—एक व्यक्ति की नीचता से सारे समाज को लाञ्छन लगता है।

एक सूत्र में बाँधना—संगठित करना।

एक हाथ से ताली नहीं बजती—अकेले मनुष्य के किये कोई कार्य नहीं होता।

एक म्यान में दो तलवार नहीं रहती—एक ही स्थान पर दो शक्तिशाली मनुष्य नहीं रहते।

एँड़ी चोटी का पसीना एक करना—बड़ा कठिन परिश्रम करना।

ऐ

ऐंचा तानी में पड़ना—झगड़े में फँसना।

ऐंठ दिखाना—गर्व करना, अभिमान दिखाना।

ऐंठ जाना—असन्तुष्ट होना।

ऐंठ लेना—ठग लेना।

ऐंठ निकलना—गर्व दूर हो जाना।

ऐंठ ढीली करना—गर्व हटाना।

ऐंड़ा बेंड़ा चलना—कुपथ पर चलना।

ऐब करने को भी हुनर चाहिये—बुरा काम करने के लिये भी चतुराई की आवश्यकता होती है।

ऐसा वैसा समझना—सामान्य मनुष्य जानना।

ऐसी तैसी करना—सब भला-बुरा उपाय रचना।

ऐसे जीने से मर जाना अच्छा—अधिक कष्ट मिलने पर मनुष्य मरण को अच्छा समझता है।

ओ

ओछे की प्रीति बालू की भीति—ओछे मनुष्य की मित्रता स्थायी नहीं होती।

ओखली में सिर देना—जान-बूझकर अपने को आपत्ति में डालना।

ओर छोर न मिलना—भेद का पता न चलना।

ओले पड़ना—आपत्तियाँ आना।

ओस चाटे प्यास नहीं जाती—आवश्यकता अधिक होने पर थोड़ी वस्तु से सन्तोष नहीं होता।

ओढ़नी की बतास लगना—स्त्री के प्रेम में फँसना।

औ

औकात पर आना—असली बात प्रकट करना।

औकात पर रहना—शक्ति के अनुसार चलना।

औकात बसर होना—निर्वाह करना।

औघट घाट बचाकर चलना—विपत्तियों से सावधान रहना।

औदक होना—भय के कारण चौंक उठना।

औंधी खोपड़ी—परम मूर्ख मनुष्य।

औंधे मुंह गिरना—हार जाना।

और बात खोटी सही दाल रोटी—जीवन-निर्वाह ही सबसे बढ़कर व्यवसाय है।

औन पौन करना—छल-कपट का व्यवहार करना।

क

कंगाली (मुफलिसी) में आटा गीला—एक आपत्ति रहते हुए दूसरी आपत्ति आ पड़ना।

कच्ची गोलियां खेलना—पूरा अनुभव प्राप्त करना।

कच्चा चिट्ठा—पोल, गुप्त बात।

कड़ाई से गिरा चूल्हे में पड़ा—एक आपत्ति से छूटा दूसरे में गिरा।

कचूमर निकालना—बुरी अवस्था करना।

कञ्चन बरसना—अधिक धन की प्राप्ति।

कटे पर निमक छिड़कना—दुखी मनुष्य को और भी दुखी बनाना।

कण्ठगत करना—खा लेना, याद कर लेना।

कतर ब्योंत करना—काट-छाँट करना।

कतरा के जाना—बचकर भागना।

कदम बढ़ाना—चले जाना, तेज चलन, अग्रसर होना।

कन्धा लगाना—सहायता देना, सहारा देना।

कमर कसना—उद्यत होना, तत्पर होना।

कमर टूटना—निराश होना, उत्साह भंग होना।

कमर सीधी करना—थकावट दूर करने के लिये लेट जाना।

कमान हो जाना—झुक जाना।

करम फूटना—अभागा होना।

करमहीन नर खेती करे मरे बैल या सूखा पड़े—भाग्यहीन पुरुष को किसी कार्य में सिद्धि नहीं होती।

कल ऐंठना—चित्त के भाव में परिवर्तन करना

कल पड़ना—चैन मिलना।

कलम तोड़ना—विलक्षण बातें लिखना।

कलई खुलना—रहस्य उद्घाटन होना, भेद खुलना।

कलई खोलना—गुप्त बातों को प्रकट करना।

कलेजा धक धक होना—व्यग्र होना, घबड़ाना।

कलेजा निकालकर धर देना—मर्म की बातों को कहना।

कलेजा खाना—परेशान करना।

कलेजा ठंडा होना—शान्ति मिलना।

कलेजा फटना—अत्यन्त दुखी होना।

कसर निकालना—बदला लेना।

कसौटी पर कसना—परखना, अन्वेषण करना।

कहा-सुनी हो जाना—झगड़ा-फसाद होना।

कागज काले करना—व्यर्थ की लिखा-पढ़ी करना।

कागजी घोड़े दौड़ाना—समाचार फैलाना, केवल पत्र-व्यवहार करते रहना।

काँटे बोना–हानि पहुँचना।

काँटे से काँटा निकालना–शत्रु का नाश शत्रु से कराना।

काँटों पर पाँव रखना–दुःख या आपत्ति म पड़ना।

काँटों में हाथ पड़ना–आपत्ति में फंसना।

काँटों में घसीटना–अति लज्जित करना।

काट खाने दौड़ना–भयानक रूप धारण करना।

काटो तो बदन में खून नहीं–अति भयभीत होने की दशा।

कान काटना–बड़ी चालाकी करना, धोखा देना।

कान न होना–ग्रहण न करना।

कान खुलना–होश में आना।

कान खोलना–सावधान करना।

कान पकड़ना–किसी बुरे काम को न करने का निश्चय करना।

कान खड़े होना–सावधान होना।

कान में फूंकना–चुपके से सुना देना।

कानाफूसी करना–भेद की बात धीरे से कान में कहना।

कानी कौड़ी पास में न होना–अति दरिद्र होना।

कानों में तेल डालना–किसी बात को सुनने की इच्छा न होना।

कानोंकान खबर न होना–अत्यन्त गुप्त रखना।

कागज की नाव नहीं चलती–बेईमानी अधिक दिन तक नहीं चलती।

काम निकालना–अभीष्ट सिद्ध होना।

काम तमाम करना–जान से मार डालना।

काम को काम सिखाता है–अभ्यास से काम करना आ जाता है।

काला अक्षर भैंस बराबर होना–निरक्षर मूर्ख होना।

कालिख लगना–बदनाम होना।

किनारा करना–अलग हो जाना।

किनारे लगना–पूरा होना, समाप्त होना।

किताब का कीड़ा–अधिक पढ़नेवाला मनुष्य।

किस खेत की मूली–तुच्छ व्यक्ति।

किसी गिनती में न होना–कुछ महत्त्व न रखना।

कींच उछालना–नीचता करना।

कींच में पत्थर फेंकना–नीच पुरुष से झमेला करना।

कुआँ खोदना–हानि करने का उद्योग करना।

कुत्ते की मौत मरना–दुर्दशा में पड़कर मृत्यु होना।

कुत्ते की नींद सोना–अचेत होकर न सोना।

कुप्पा होना–मोटा ताजा हो जाना।

कुलबुला उठना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।

कुल्हिया में गुड़ फोड़ना–गुप्त रूप से कोई काम करना।

कुएँ में भाँग पड़ना–सबकी अक्ल मारी जाना।

कूपमण्डूक बनना–अपने अल्प ज्ञान की श्लाघा करना।

कड़ा बदलना–ढंग बदलना।

कोख उजड़ना–सन्तान का मरण।

कोख की आँच–सन्तान के वियोग का दुःख।

कोख खुलना–प्रथम सन्तान का जन्म।

कोदो देकर पढ़ना–अच्छी तरह पढ़ना-लिखना न जानना।

कोर-कसर–बेशी-कमी।

कोरा टालना–कुछ भी न देना।

कोरा जवाब देना–निराशाजनक उत्तर देना

कोरी पटिया पर लिखना–कोई नया काम आरंभ करना।

कोसों दूर भागना—अरुचि या घृणा होना।
कोल्हू का बैल—दिन-रात काम करने वाला मनुष्य।
कौड़ी काम भी न होना—किसी के काम का न होना।
कौड़ी के तीन होना—बड़ा सस्ता होना, विपत्ति में पड़ना।
क्रोध पी जाना—क्रोध को दबा लेना।

ख

खटपट होना—लड़ाई-झगड़ा होना।
खटका लगा रहना—डर बना रहना।
खटाई में पड़ना—अनिश्चित अवस्था में होना।
खड़े खड़े बुलाना—थोड़े समय के लिये बुलाना।
खप जाना—नष्ट होना।
खबर लेना—सजा देना।
खरी खोटी सुनाना—साफ-साफ बात कहना, भला-बुरा कहना।
खग जाने खग ही की भाषा—जिसकी सोहबत में जो रहता है वह उसके विचार से परिचित रहता है।
खाने को दौड़ना—अति क्रुद्ध होना।
खार खाना—द्वेष करना, कुढ़ना।
खाक छानना—भटकते फिरना।
खाक डालना—छिपा रखना, दबा देना।
खाने के और दिखाने के दाँत और होते हैं—ऊपर से तो शिष्टाचार करना और मन में कपट करना।
खिल उठना—प्रसन्न होना।
खिलखिलाकर हँसना—ठट्ठा मारकर हँसना।
खिसक जाना—चुपके से भाग जाना।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे—लज्जित होने पर क्रोध दिखलाना।
खींचातानी में पड़ना—झगड़े में फंसना।
खुले आम—सबके सन्मुख, सबके सामने।
खुले दिल—उदार हृदय से।
खूंटे के बल बछड़ा कूदे—दूसरे के भरोसे बल दिखलाना।
खून के घूंट पीना—बड़ा कष्ट सहन करना।
खून का प्यासा—हत्या करनेके लिये उद्यत।
खून की नदी बहाना—बहुतेरों की हत्या करना।
खून उबलना (खौलना)—क्रोध उत्पन्न होना, गुस्सा आना।
खेल बिगाड़ना—बना-बनाया कार्य नष्ट कर देना।
खोकर सीखना—हानि उठाकर तजुर्बा होना।
खोद खोदकर पूछना—तर्क-वितर्क करना।
खोपड़ी खाना—बहुत बकवाद करके परेशान करना।
खोपड़ी रँगना—सिर फोड़कर लोहू बहाना।
खोया जाना—नष्ट होना, बरबाद होना।

ग

गंगा नहा लेना—किसी काम से निवृत्त होना।
गंगाजली उठाना—हाथ में गंगाजल लेकर कसम खाना।
गंगालाभ होना—देहान्त होना।
गट कर जाना—जल्दी से पी जाना।
गठरी मारना—माल चुरा ले जाना।
गड़े मुरदे उखाड़ना—बीती हुई बातों को कहकर वैमनस्य जागृत करना।
गढ़े में पड़ना—पतित होना, नष्ट होना।
गत बनाना—दुर्दशा करना।
गड़ जाना—लज्जा से झेंप जाना।
गधे पर चढ़ाना—बेइज्जत करना।
गधे चराना—मूर्ख बने रहना।
गधों को हलवा खिलाना—नीचों का सत्कार करना।
गप्प मारना—बेफायदा की बातें करना, झूठ बोलना।

गम खाना—शान्ति धारण करना।
गया गुजरा जानना—तुच्छ समझना।
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं—समय पर चूकना अच्छा नहीं होता।
गरम होना—क्रोध करना।
गरदन नापना—गरदनियाँ देकर हटा देना।
गरदन पर सवार होना—पीछे पड़ जाना।
गरदन काटना—कष्ट पहुँचाना, हानि पहुँचाना।
गरदन पर छुरी फेरना—अत्याचार करना।
गला काटना—अत्याचार करना, पीड़ा पहुँचाना।
गला सूखना—प्यास लगना।
गला घोंटना—अत्याचार करना, बड़ा कष्ट देना।
गली गली मारे फिरना—दुर्दशा होना।
गले का हार होना—बड़ा प्यारा बनना, चिपट जाना।
गले मढ़ना—इच्छा के विरुद्ध कोई काम किसी को सौंपना।
गले पड़ना—ऊपर आ जाना।
गले से लगाना—प्यार करना।
गहरी चाल चलना—बड़ा छल करना।
गाजर-मूली समझना—तुच्छ जानना।
गाँठ काटना—बहुत महँगा बेचना, जेब काटना
गाँठ खुलना—झंझट दूर होना।
गाँठ में बाँधना—अच्छी तरह याद रखना।
गाँठ लेना—अपने पक्ष में कर लेना।
गाँठ पर गाँठ पड़ना—झंझट बढ़ जाना।
गाँठ का पूरा—बड़ा अमीर।
गाड़ी चल पड़ना—कार्य का आरंभ होना।
गाड़ी रुक जाना—चलता काम बन्द होना।
गाढ़ी छानना—बड़ी मित्रता होना।
गाढ़ी कमाई—परिश्रम से कमाया हुआ धन।
गीत गाना—प्रशंसा करना, तारीफ करना।
गुट बाँधना—दलबन्दी करना।
गुड़ गोबर कर देना—काम को बिगाड़ देना।
गुल खिलना—विचित्र घटना होना।
गुल खिलाना—विचित्र घटना उपस्थित करना।
गुलछर्रे उड़ाना—आनन्द मचाना।
गोरखधंधे में पड़ना—झंझट में पड़ना।
गोद में लड़का शहर भर में ढिंढोरा—पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना।
गौं निकालना—स्वार्थ सिद्ध होना।

घ

घड़ों पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना।
घनचक्कर में पड़ना—आफत में पड़ जाना।
घर उजड़ना—संपूर्ण संपत्ति का नाश होना।
घर की खेती—सहज में मिलनेवाला पदार्थ।
घर की मुर्गी साग बराबर—घर की वस्तु का विशेष आदर नहीं होता।
घर करना—पति बनाना।
घर का रास्ता लेना—भाग जाना।
घर के घर रहना—लाभ हानि बराबर होना।
घर घर पूजा होना—सर्वत्र प्रतिष्ठा होना।
घर बैठे गंगा आना—अनायास धन मिलना।
घर बैठे—बिना बाहर गये।
घर बसना—विवाह होना, घर में स्त्री का आगमन।
घर का आदमी—अपना ही संबंधी।
घर का न घाट का—कहीं का भी न होना।
घर खीर तो बाहर खीर—घर में धन है तो बाहर भी प्रतिष्ठा होगी।
घर के पीरों को तेल का मलीदा—घर के लोगों के साथ तो बुरा व्यवहार किया जाय और बाहर की बड़ी प्रतिष्ठा।
घर बनना—आर्थिक स्थिति सुधरना।
घर फूँक तमाशा—संपत्ति का नाश करके आनन्द मचाना।
घर घर यही लेखा—सभी परिवार में समान स्थिति नहीं रहती है।

घर में चूहे कूदना–अति दरिद्र होना।
घर से बाहर न निकलना–संसार का अनुभव न प्राप्त होना।
घर सिर पर उठाना–बड़ा कोलाहल मचाना।
घर में दिया तो मसजिद में दिया–बाहर की फिक्र करने के पहिले अपने घर की स्थिति सँभालो।
घर में डाल लेना–पत्नी बनाना।
घर तक पहुँचाना–पूर्ण करना।
घर का भेदिया लंका ढाहे–आपस में वैर का बुरा परिणाम होता है।
घाट घाट का पानी पीना–सब तरह के अनुभव प्राप्त करना।
घात में रहना–अर्थ सिद्ध करने के लिये ताक में रहना।
घात लगाना–नुकसान पहुँचाने के लिये मौका ढूंढ़ना।
घाव हरा होना–बीते हुए कष्ट का स्मरण होना।
घाव पर नमक छिड़कना–दुःखी को और भी कष्ट देना।
घास काटना (खोदना)–व्यर्थ के काम में समय गंवाना।
घास खा जाना–पागल होना।
घिग्घी बँधना–बहुत डर के कारण मुख से शब्द न निकलना।
घी कहाँ गया खिचड़ी में–अपनी वस्तु अपने प्रयोग में आना।
घी के दीपक जलाना–हर्ष और आनन्द मचाना।
घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो–मनुष्य को इतना धन खर्च करना चाहिये कि बाहर मान-मर्यादा बनी रहे।
घुट-घुटकर मरना–बड़ा कष्ट भोगकर शरीर छूटना।
घुटने टेक देना–अधीन होना, विनीत भाव दिखलाना, आत्म समर्पण करना।
घुन लगना–किसी भीतरी रोग से अति दुर्बल हो जाना।
घुमाकर नाक पकड़ना–अपने अभिप्राय को लपेट की बात में प्रकट करना।
घुमा-फिराकर बात करना–साफ साफ बात न कहना।
घुल-घुलकर बात करना–घनिष्ठता से प्रेमपूर्वक बातें करना।
घुल जाना–बड़ा दुर्बल होना।
घोड़े बेंचकर सोना–निश्चिन्त होकर सोना।
घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या–व्यापार में मुनाफा न लेने से काम नहीं चलता।
घोड़ा घुड़साल में ही बिकता है–जहाँ की वस्तु वहीं बिकती है।
घोलकर पी जाना–किसी प्रकार की चिन्ता न करना।

च

चंग पर चढ़ाना–उत्तेजित करना।
चंग में फँसना–परवश हो जाना।
चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ–उत्तम वस्तु थोड़ी मात्रा में भली होती है, बुरी वस्तु अधिक भी भली नहीं होती।
चंडूखाने की गप–झूठी बात।
चकमा देना–धोखे में डालना।
चक्कर में पड़ना–धोखे में आ जाना।
चक्की पीसना–बड़ा परिश्रम करना।
चचा बन जाना–अधिक चालाक होना।
चट कर जाना–जल्दी से खा जाना।
चटनी हो जाना–खूब पिस जाना।
चट्टे-बट्टे लड़ाना–इधर-उधर की बातें कहकर झगड़ा खड़ा करना।
चढ़ा जाना–पी जाना।

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय—बड़ा कृपण होना।
चबा-चबाकर बातें करना—साफ खोलकर न कहना।
चल बसना—मर जाना।
चरका देना—धोखा देना।
चम्पत हो जाना—भाग जाना।
चरण छूना—विनती करना, प्रणाम करना।
चरबी बढ़ना—मोटा-ताजा होना।
चलता करना—रवाना करना।
चलती गाड़ी में ओट लगाना—काम में विघ्न डालना।
चहल-पहल मचना—रौनक होना।
चाँदी का जूता मारना—घूस देना।
चाँद पर थूकना—किसी की निन्दा करके स्वयं दूषित होना।
चाँदी होना—अधिक लाभ होना।
चादर उतार डालना—बेशर्म होना।
चादर तानकर सोना—निश्चिन्त हो जाना।
चादर के बाहर पैर फैलाना—आय से अधिक व्यय करना।
चादर देखकर पाँव फैलाना—शक्ति के अनुसार काम करना।
चाकरी में नौकरी क्या—नौकरी करने पर कुछ इनकार नहीं हो सकता।
चार आँसू गिराना—शोक करना।
चार चाँद बढ़ाना—इज्जत बढ़ाना।
चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात—सर्वदा सुख के दिन नहीं रहते।
चार दिन—थोड़े दिन तक।
चारपाई से लग जाना—रोग से अति दुर्बल हो जाना।
चार बातें सुनाना—खरी खोटी सुनाना।
चार पैसे हाथ में होना—आर्थिक स्थिति अच्छी होना।
चाल चलना—धूर्तता करना, दगाबाजी करना, कपट व्यवहार करना।
चाल पड़ना—रिवाज होना, फर्क आना।
चाल में आना—धोखे में पड़ना।
चारों खाने चित्त आना—बुरी तरह से हारना
चिकना घड़ा—जिस पर किसी शिक्षा का प्रभाव न पड़।
चिकनी चुपड़ी बातें करना—मीठा बोलकर धोखा देना।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता—बेहयापर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता।
चिड़िया फँसाना—किसी मालदार असामी को धोखा देकर अपने वश में करना।
चित करना—हानि पहुँचाना, हराना।
चित्त पर चढ़ना—मन को भला लगना।
चिराग गुल होना—मृत्यु होना।
चिराग तले अँधेरा—न्याय के स्थान में अन्याय होना।
चिराग ठंडा होना—पुरुषार्थ का अन्त होना।
चुटकियों में—अति शीघ्र, तुरत।
चुटकियों में उड़ाना—दिल्लगी में टालना।
चुटकी लेना—मर्मवेधी बातें कहना।
चुल्लू भर पानी में डूब मरना—लज्जावश मुँह न दिखलाना।
चूड़ियाँ पहनना—कायर बनना।
चूल्हा न जलना—भोजन न मिलना।
चेहरा उतरना—उदास होना।
चेहरे पर हवाइयाँ उतरना—भयत्रस्त होना।
चैन की छनना (वंशी बजाना)—आनन्द से जीवन व्यतीत करना।
चोचले दिखलाना—इतराना।
चोर की दाढ़ी में तिनका—चोर को सदा सन्देह बना रहता है कि वह कहीं पकड़ा न जावे।

चोर चोर मौसेरे भाई–एक ही स्वभाव और व्यवसायवाले मनुष्य परस्पर मेल रखते हैं।
चोरी का माल मोरी में–बुरी तरह से कमाया हुआ धन बुरे कामों में खर्च होता है।
चौकन्ना होना–सावधान होना।
चौकस रहना–सचेत रहना।

छ

छटा हुआ–प्रसिद्ध, मशहूर।
छक्के छुड़ाना–परास्त करना।
छत्रछाया में रहना–अधीन रहना।
छप्पन टके खर्चा होना–ज्यादा खर्च होना।
छप्पर पर रख देना–त्याग देना, छोड़ देना।
छप्पर फाड़कर मिलना–अनायास प्राप्त होना।
छाती पर सांप लेटना–ईर्ष्या करना, डाह करना।
छाती जलना–दुःख देना।
छाती ठोकना–दिल कड़ा करना।
छाती ठंडी करना–चित्त सन्तुष्ट करना।
छाती पर पत्थर रखना–कष्ट सहना।
छाया तक न पड़ना–कुछ प्रभाव न पड़ना।
छू मन्तर हो जाना–भाग जाना।
छोटे मुंह बड़ी बात–बढ़-बढ़कर बातें करना।

ज

जंगल में मंगल होना–निर्जन स्थान में आनन्द का उत्सव होना।
जगह करना–मकान बनाना, स्थान देना।
जड़ उखाड़ना–नाश करना।
जड़ छोड़ना–जमकर बैठना।
जबान देना–प्रतिज्ञा करना, वचन देना।
जबान में लगाम न होना–अशिष्ट वचन बोलना।
जमीन में गड़ जाना–बड़ा लज्जित होना।
जल में रहकर मगर से बैर–जिसके अधीन रहे उसीसे शत्रुता करना।
जल जलकर भस्म होना–क्रोधवश दुःख पाना।
जली भुनी कहना–कठोर शब्दों का प्रयोग करना।
जले पर नमक छिड़कना–दुखी को और दुख देना।
जहर का घूंट पीना–क्रोध के आवेश को रोकना।
जहर लगना–बुरा मालूम होना।
जबरा मारे रोने न दे–निर्बल को बलवान् सदा कष्ट देता है।
जबरदस्त का ठेंगा सिर पर–निर्बल सदा बलवान् के अधीन रहता है।
जब तक जीना तब तक सीना–जिन्दगी भर संसारी झंझटें बनी रहती हैं।
जागते को जगाना–समझदार को शिक्षा देना।
जादू डालना–अपने मतलब में फँसाना।
जा धमकना–अकस्मात् पहुँच जाना।
जान पर आ बनना–जान का डर होना।
जान पर खेलना–अपने को संकट में डालना।
जान चुराना–काम करने से जी चुराना।
जान खोना–अधिक कष्ट सहना।
जान खाना–बहुत परेशान करना।
जान से हाथ धोना–मृत्यु प्राप्त करना।
जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी–जिसकी जैसी भावना रहती है उसको देवता की वैसी ही मूर्ति देख पड़ती है।
जान का जंजाल हो जाना–अरुचिकर होना।
जाके पांव न फटी बेवाई सो क्या जाने पीर पराई–जिसने स्वयं कष्ट का

अनुभव नहीं किया है वह पराये की पीड़ा को क्या जाने।
जान मारकर काम करना—अपने भरसक पराक्रम करना।
जान में जान आना—सन्तोष मिलना।
जान से जाना—मरना।
जान छूटना—आपत्ति से छुटकारा पाना।
जान छुड़ाना—आपत्ति से बचना।
जान भारी होना—जिन्दगी दुःखमय होना।
जान के लाले पड़ना—जीवन की चिन्ता होना।
जान सूखना—भयभीत होना।
जान का गाहक बन जाना—प्राण लेने के लिये उद्यत होना।
जान-बूझकर मक्खी निगलना—अपने हाथों से अपना अनिष्ट बुलाना।
जान डालना—उत्साहित करना, जोरदार बनाना।
जामे से बाहर होना—बड़ा कुपित होना।
जाल फैलाना—षड्यन्त्र रचना।
जाल डालना—धोखा देना।
जाल में फँसना—धोखे में आ जाना।
जिस हांड़ी में खाना उसी में छेद करना—उपकार के बदले अपकार करना।
जिसकी छाया में बैठना उसी की जड़ काटना—जो अपना हित करे उसका अपकार करना।
जिसकी बँदरिया वही नचावे—जिसका काम वही कर सकता है।
जितने मुँह उतनी बात—भिन्न भिन्न मनुष्यों के पृथक् विचार होते हैं।
जिस डाल पर बैठे उसी को काटे—जो आश्रय दे उसी का अपकार करना।
जिह्वाग्र होना—अच्छी तरह से याद होना।
जिसके हाथ लोई उसका सब कोई—धनी मनुष्य की सब लोग खुशामद करते हैं।
जी उचट जाना—मन न लगना।
जीभ जली पर स्वाद न आया—अच्छा काम किया पर फल उलटा मिला।
जी कँपना—डर लगना।
जी कँपाना—हिम्मत हारना।
जी छोड़ना—सुस्ती करना।
जी छूट जाना—हताश होना।
जी का बोझ हलका होना—चिन्ता से छटना।
जी छोटा करना—उदास होना।
जी जलाना—दुःखी करना।
जी टँगा रहना—खटका बना रहना।
जी टूट जाना—उत्साहहीन होना।
जी दहल जाना—व्यग्र होना, घबड़ाना।
जी न भरना—तृप्त न होना।
जी पक जाना—तंग आ जाना।
जीभ चलते रहना—बकवाद करते रहना।
जीभ पकड़ना—बोलने से रोकना।
जीभ सँभालकर बोलना—शिष्टता से वार्तालाप करना।
जी में जी आना—धैर्ययुक्त होना।
जीवन की घड़ियाँ गिनना—मृत्यु समीप आना।
जी से उतर जाना—अच्छा न लगना।
जी हुजूर बनना—अफसर बनना।
जुल देना—धोखा देना, उभाड़ना।
जुए को कन्धे से उतारना—स्वतंत्र हो जाना।
जूड़ी आना—कष्ट जान पड़ना।
जूता चाटना—चापलूसी करना।
जूता लगाना—लज्जित होना।
जूता लगाना—अपमान करना।
जूतियाँ चटकाते फिरना—बुरा काम करने में व्यग्र रहना।
जूते की नोक पर मारना—अति तुच्छ समझना।
जूते से बात करना—अपमानित करना।
जेब से जाना—ख़र्च होना।

जैसा देश वैसा वेष बनाना–स्थिति के अनुसार चलना।
जैसा दाम वैसा काम–जैसी मजदूरी वैसा काम।
जैसे सांपनाथ वैसे नागनाथ–एक समान होना।
जोड़ न होना–अद्वितीय होना।
जोड़तोड़ करना–उपाय निकालना।
जोर डालना–दबाव डालना।
जौहर खुलना–परीक्षा होना।
जौहर दिखलाना–गुण प्रकट करना।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय–कर्ज अदा न करने पर वह बढ़ता ही जाता है।

झ

झख मारना–व्यर्थ की बकवाद करना, विवश हो जाना।
झगड़ा मोल लेना–जान-बूझकर कलह करना।
झटक लेना–ठग लेना, अपहरण करना।
झटक जाना–शरीर दुर्बल होना।
झड़ी लगा देना–अधिक संख्या या परिमाण में उपस्थित करना।
झण्डा गाड़ना–अधिकार स्थापित करना।
झपट लेना–छीन लेना।
झांसा देना–धोखे में डालना।
झांसे में आना–धोखे में पड़ना।
झाड़ पड़ना–डाँटा जाना।
झाड़ फेरना–नष्ट कर देना।
झाड़ मारना–तिरस्कार करना।
झूठे सच कहना–निन्दा करना।
झूठे का मुंह काला सच्चे का बोल बाला–सच्चे की विजय होती है झूठा हार जाता है।
झूठ के पांव नहीं होते–झूठ मनुष्य को साहस नहीं होता।
झोपड़ी डालना–कुछ देर तक ठहरना।
झोपड़ी में रहे महलों का ख्वाब देखे–बड़ी बड़ी आकांक्षा करना।

ट

टकटकी बांधना–पलक न झिपना।
टकराते फिरना–इधर-उधर खोजते फिरना।
टका सा जवाब देना–स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना।
टकसाल हो जाना–प्रधान स्थान होना।
टकराते फिरना–इधर-उधर खोजते फिरना, भटकना, दुःख उठाते रहना।
टकसाली बात कहना–प्रामाणिक बात कहना।
टक्कर खाना–नुकसान उठाना।
टक्कर का होना–समान होना।
टक्कर लगना–नुकसान पहुँचना।
टका पास न होना–पास में धन न होना।
टका सा मुंह लेकर रह जाना–शर्मिन्दा होना।
टके का सब खेल है–धन से ही संसार में सब काम होता है।
टट्टी की आड़ में शिकार करना–धूर्तता से छिपकर कार्य साधना, छिपकर पाप करना।
टपक पड़ना–अकस्मात् आ पहुँचना।
टरका देना–टालना, बिना कुछ दिये वापस करना।
टस से मस न होना–विनती और शुश्रूषा का प्रभाव न पड़ना।
टाँक लेना–लिख लेना।
टरटर करना–बेफायदा बकबक करना।
टाँका देना–सिलना।
टाँके खोलना–गुप्त बातों को प्रकट करना।
टाँग अड़ाना–विघ्न डालना, हस्तक्षेप करना।

टाँग तले से निकल जाना–पराजय स्वीकार करना।
टाँग तोड़ना–बेकार घूमते फिरना।
टाँग पसारकर सोना–चैन से कालक्षेप करना।
टाँगे रह जाना–चलते चलते शिथिल हो जाना।
टाँय टाँय फिस होना–उद्योग करने पर असफल होना।
टाट उलटना–दीवालिया बन जाना।
टापते रह जाना–कुछ हासिल न होना।
टाँय टाँय करना–व्यर्थ बकबक करना।
टालमटोल करना–बहानेबाजी करना।
टिप्पस लगाना–अपना मतलब साधने के लिये ढंग रचना।
टीका टिप्पणी करना–किसी विषय की समालोचना करना।
टीका भेजना–कन्या पक्ष का वर पक्ष के घर पर विवाह स्थिर होने के निमित्त फल, मिठाई, वस्त्र आदि भेजना।
टीपटाप दिखलाना–गौरव दिखलाना।
टीस होना–शरीर में कहीं पर पीड़ा होना।
टुकड़े लगना–खाने पीने के लिये किसी के आश्रित होना।
टुकड़ा तोड़ना–किसी के आश्रित होकर रहना।
टुकड़ा माँगना–भिक्षा माँगना।
टुकड़गदाई–वह जो भोजन मिलने की आशा से अड़ा रहता है।
टुटपुँजिया–अल्प धनवाला मनुष्य।
टूट पड़ना–आक्रमण करना।

ठ

ठकुरसुहाती कहना–शुश्रूषा करना।
ठठरी होना–अति दुर्बल हो जाना।
ठंढक लगना–सरदी लगना।
ठंडा पड़ जाना–क्रोध चला जाना, उत्साहहीन होना।
ठंडा हो जाना–मृत्यु को प्राप्त होना।
ठंढी साँस लेना–सोच विचार कर उदास हो जाना।
ठाठ बदलना–आडंबर करना।
ठिकाना करना–प्रबंध करना, विवाह करना।
ठिकाने लगाना–अन्त कर देना।
ठिकाने न रहना–स्थायी न रहना।
ठिकाने की बात कहना–उचित बात कहना।
ठीक कर देना–सजा देना।
ठी ठी करना–हँसना।
ठोंकना बजाना–जाँच करना, परीक्षा करना।
ठोकर खाते फिरना–बेकार भटकते फिरना।

ड

डंक मारना–तकलीफ देना।
डंका बजना–शोहरत होना, विस्तार होना।
डंडी मारना–कम तौलना।
डकार जाना–किसी की वस्तु का अपहरण करना।
डट जाना–स्थिर होना।
डाँवाडोल होना–स्थिर न रहना।
डटकर भोजन करना–खूब पेट भर खाना।
डाढें मारना–चिल्लाते हुए रोना।
डुगडुगी पीटना–ढिंढोरा पीटना, प्रसिद्ध करना।
डोर पर लगाना–सीधी राह पर लगाना।
डेरा-डंडा कूच करना–प्रस्थान करना।

ढ

ढब पर चढ़ना–वश में होना।
ढर्रे से बातें करना–बड़े ढंग से बोलना।
ढर्रे पर लगाना–अनुकूल बनाना।

ढब निकालना—उपाय ढूंढ़ना।
ढब पर लाना—उचित मार्ग पर लाना।
ढाक के वही तीन पात—सर्वदा सामान्य स्थिति में रहनेवाला।
ढाई दिन की बादशाहत पाना—थोड़े दिनों की बादशाहत पाना, अधिकारी बनना।
ढील-ढाल करना—देर करना।
ढूढ़कर लड़ाई मोल लेना—जान-बूझकर झगड़ा खड़ा करना।
ढेर कर देना—मार डालना।
ढेर लगा देना—अधिक संख्या में इकट्ठा कर देना।

त

तकदीर आजमाना—भाग्य की परीक्षा करना।
तकदीर फूट जाना—क़िस्मत बिगड़ जाना।
तकदीर चमकना—भाग्य में उन्नति होना।
तकदीर ठोंकना—भाग्य का दोष देना।
तकदीर बनना—क़िस्मत अच्छी होना।
तकदीर सो रहना—बुरे समय का आना।
तख्ता उलटना—भाग्य का विपरीत होना।
तनजाना—परस्पर वैमनस्य उपस्थित होना।
तनकर चलना—गर्व से चलना।
तपस्या निष्फल होना—मेहनत बेकार होना।
तकाजे का हुक्का भी नहीं पिया जाता—उधार ली हुई वस्तु बुरी होती है।
ताल ठोंकना—लड़ने-भिड़ने के लिये तैयार होना।
तालियाँ बजाना—दुर्नाम करना।
तालू से जीभ न लगना—बराबर बकते रहना।
ताव खाना—क्रुद्ध होना।
तिनका भी न रहना—कुछ भी शेष न बचना।
तिनके की ओट में पहाड़—संसार में सब कुछ देखते हुए भी मनुष्य अन्धा बना रहता है।
तबेले की बला बन्दर के सिर—किसी का अपराध दूसरे के सिर पर ठोंकना।
तिल धरने की जगह न होना—बड़ी भीड़ होना।
तिलांजलि देना—सब संबंध तोड़ देना।
तीन-तेरह करना—इधर-उधर करना।
तीनों लोक देख पड़ना—भयंकर स्थिति होना।
तीर बन जाना—दौड़कर भाग जाना।
तीसमार खाँ बन जाना—मिथ्याभिमान दिखाना।
तुल जाना—तत्पर होना।
तू तू मैं मैं करना—गाली-गलौज करना।
तूती बोलना—प्रसिद्ध होना, विख्यात होना।
तूफान खड़ा करना—उपद्रव मचाना।
तू डाल डाल मैं पात पात—चालाक व्यक्ति से बराबरी की चालाकी करना।
तेल जल चुकना—शक्ति पूरी हो जाना।
तेवर बदल जाना—बेमुरौवत होना।
तेवर बिगड़ना—क्रुद्ध होना।
तोताचश्मी करना—बेमुरौवती दिखलाना।
तोते की तरह आँखें फेरना—बेमुरौवत बन जाना।
तोते की तरह पढ़ना—बिना समझे पाठ याद करना।
त्योरियों पर बल पड़ना—क्रुद्ध होना।
त्योरी चढ़ाना—क्रोध करना।
त्राहि-त्राहि करना—सहायता के लिये पुकारना।
त्रिशंकु बन जाना—कहीं का भी न रह जाना।

थ

थरथरी लगना—काँपने लगना।
थर्रा जाना—डर जाना।

थाली का बैंगन–किसी ओर न रहनेवाला।
थाह मिलना–भेद का पता लगना।
थाह लगाना–अन्वेषण करना।
थुड़ी थुड़ी करना–तिरस्कार करना।
थूककर चाटना–अपनी प्रतिज्ञा से डिग जाना।
थू थू करना–घृणा करना।
थक लगाकर छोड़ देना–नीचा दिखलाना।
थैली का मुंह खोलना–अंधाधुंध खर्च करना।
थोड़ा होना–उदास होना।

द

दंड कमंडल उठाना–अपनी सामग्री उठाकर रवाना हो जाना।
दक्षिण भुजा उठाना–सहायक बनना।
दबक जाना–ठिठक जाना, छिप जाना।
दबाव डालना–लाचार करना।
दम उलटना–जी घबड़ाना, अन्तिम साँस लेना।
दम खाना (लेना)–सुस्ताना।
दम खींचना–साँस रोकना।
दमड़ी की घोड़ी छ पसेरी दाना–हैसियत से ज्यादा खर्च।
दम फूलना–साँस फूलना।
दम घोंट-घोंट कर मारना–बड़ी दुर्दशा करके हत्या करना।
दम घोंटना–गला दबा करके हत्या करना।
दम तोड़ना–अन्तिम श्वास निकल जाना, मरना।
दम पर आ बनना–आफत में पड़ना।
दम साधना–साँस रोकना।
दम देना–दिलासा देना, बड़ा प्रिय जानना।
दम में दम आना–जीवित रहना।
दम फूलना–हाँफना।
दम चुराना–मुरदे के समान बन जाना।
दम लेना–आराम करना।
दम नाक तक आ जाना–बहुत व्यय हो जाना।
दम निकलना–आफत पड़ना, मरना।
दम टूटना–थक जाना।
दर्जी की सुई कभी ताश में कभी टाट में–कामकाजी मनुष्य कभी बेकाम नहीं रहता।
दर्यादिल बनना–उदारता दिखलाना।
दर्पन में मुख देखना–अपने ऐब पर ध्यान देना।
दलदल में फँसना–आफत में पड़ना।
दाँत तले अँगुली दबाना–अचरज दिखलाना।
दाँत तले तिनका दबाना–विनीत भाव दिखलाना।
दाँतों में पसीना आ जाना–बहुत मेहनत करना।
दाँव चुकाना–बदला लेना।
दाँव चूकना–हाथ से मौका जाने देना।
दाँयें बायें करना–इधर-उधर छिपना।
दाल न गलना–विवश हो जाना, लाचार होना।
दाल रोटी में खुश–सामान्य रीति से जीवन-निर्वाह होना।
दाल में काला होना–सन्देह होना।
दाहिने आना–अनुकूल होना।
दिन ईद और रात शबेरात–सर्वदा आनन्द में बीतना।
दिन आना–अन्त समय आ जाना।
दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ना–अच्छी तरक्की होना।
दिन भारी हो जाना–जीवन दुःखपूर्ण होना।
दिन दहाड़े–दिन में, सबके जागते हुए।
दिन काटना–कष्ट से जीवन बिताना।

दिन फिर जाना–भाग्योदय होना।
दिमाग बिगड़ना–गर्व करना।
दिमाग लड़ाना–बहुत सोचना।
दिमाग सातवें आसमान में होना–बड़ा घमंड करना।
दिल फटना–घृणा होना।
दिल की दिल में रहना–मन की मन में रहना।
दिल जमाना–किसी काम के करने में मन लगाना।
दिल मिलना–प्रेम करना।
दिल छीन लेना–प्रेमासक्त होना।
दिल खुलना–संकोच हट जाना।
दिल दहलना–भयत्रस्त होना।
दिल खिलना–प्रसन्न होना।
दिल का मैला–कपटी मनुष्य।
दिल न मिलना–प्रेम न होना।
दिल बढ़ाना–उत्साह बढ़ाना।
दिल टूटना–निराश होना, हताश होना।
दिल की दिल में रह जाना–अभिलाषा पूर्ण न होना।
दिल में चुभना–चित्त को बुरा लगना।
दिया लेकर खोजना–इधर-उधर ढूंढ़ना।
दिल में गड़ जाना–अच्छा लगना।
दिल पसीजना–दयायुक्त होना।
दिल फीका रह जाना–मन हट जाना।
दिल चुराना–मोहित करना।
दिल में रखना–गुप्त रखना, प्रिय जानना।
दिल से दिल की राहत होना–घनिष्ठ प्रेम होना।
दिल लगाकर करना–मन लगाकर कोई काम करना।
दिल पक जाना–अत्यन्त पीड़ित होना।
दिल दुखाना–कष्ट पहुँचाना।
दिल की लगी बुझाना–मानसिक कष्ट शान्त करना।
दीपक में बत्ती पड़ना–संध्या होना।
दुनिया की हवा लगना–संसार के प्रपञ्चों में पड़ना।
दुम दबाकर भाग जाना–तेजी से भाग जाना।
दुह लेना–धन का अपहरण करना।
दुरदुर होना–तिरस्कार किया जाना।
दुकान बढ़ाना–दुकान बन्द करना।
दुखड़ा रोना–अपना दुःख दूसरे को सुनाना।
दुपट्टा तानकर सोना–निश्चिन्त रहना।
दुहाई देना–न्याय की प्रार्थना करना।
दूज का चाँद–जो कभी नजर पड़ जावे।
दूध का दूध पानी का पानी–सच्चा न्याय होना।
दूध के दाँत न टूटना–बाल्यावस्था, अनुभव-हीनता।
दूध की नदियाँ बहाना–धन का विभव दिखलाना।
दून की लेना–शेखी करना।
दूर रहना–अलग रहना।
दूर की बात–बुद्धिमानी की बातचीत।
दूसरा रंग न चढ़ना–स्थिर रहना, बातें न बदलना।
दूसरे का मुंह देखना–दूसरे से मदद चाहना।
देख-भालकर पाँव उठाना–सावधानी से काम करना।
देखते रह जाना–चकित होना।
देते ही बनना–लाचार होकर देना।
देना थोड़ा दिलासा बहुत–अर्थ स्पष्ट है।
दो कौड़ी का हो जाना–अपमानित होना।
दो दो बातें करना–थोड़ी सी बातचीत करना।
दो दो दानों को तरसना–अति दुर्दशा में होना।
दो नाव पर पैर रखना–दो पक्षों का समर्थन करना

दोनों तरह से मौत–हर तरह से आपात्त होना।
दोनों हाथों में लड्डू होना–सब तरह की मौज होना।
दोस्ती में लेन-देन बैर का मूल–अर्थ स्पष्ट है
दृष्टि से गिरना–मान-मर्यादा की हानि।
द्वार झाँकना–सहायता की प्रार्थना करना।
द्वार खुल जाना–उपाय निकलना।
द्विविधा में पड़ना–सन्देहयुक्त होना।

ध

धक् से (कलेजा) होना–एकाएक घबड़ा उठना।
धक्का लगना–नुकसान होना, कष्ट मिलना
धक्का खाते फिरना–दुर्दशा होना।
धक्का देना–तिरस्कार करना।
धड़का खुलना–भयहीन होना।
धता बताना–तिरस्कार करना, धूर्तता से टाल देना।
धमा चौकड़ी करना–इकट्ठा होकर शोर-गुल मचाना।
धर दबाना–हराना, जमीन पर पटक देना
धर लेना–पकड़ लेना।
धर-पकड़ करना–गिरफ्तार करना।
धरा रह जाना–व्यर्थ होना।
धर्म निभाना–अपने कर्तव्य का पालन करना।
धाँध देना–फँसा देना।
धाँधली मचाना–बेकार झंझट करना।
धाक बँधना–प्रभाव होना।
धार चढ़ाना–शस्त्र आदि की धार तेज करना।
धारो धार रोना–बहुत आँसू बहाते हुए रोना।
धींगा धींगी करना–व्यर्थ का झगड़ा करना।
धुकधुकी बँधना–डर जाना।
धुन बाँधना–चित्त लगाना।
धुन सवार होना–किसी विषय के लिये पीछे दौड़ना।
धुर्रे उड़ाना–लजाना, टुकड़े-टुकड़े कर देना।
धुन का पक्का–अपने सिद्धान्त का पक्का।
धूनी रमाना–किसी जगह गड़कर बैठना।
धूल में मिल जाना–नष्ट होना।
धूल में मिलाना–नष्ट कर देना।
धूल डालना–छिपा देना।
धूल फाँकना–बुरे काम में लग जाना।
धूल उड़ाना–चेहरा फीका होना, रौनक जाती रहना।
धोखे की टट्टी–भ्रम में डालनेवाला पदार्थ।
धोती ढीली होना–डर जाना।
धो देना–मिटा देना।
धोयेहू सौ बार के काजर होय न सेत–नीच मनुष्य की नीचता कभी नहीं जाती।
ध्यान से उतरना–भूल जाना।

न

नंगे बड़े परमेश्वर से–नीच मनुष्य से सब लोग डरते हैं।
न इधर के रहे न उधर के रहे–निराश्रय होना।
नकेल डालना–वश में करना।
नकेल हाथ में होना–वश में होना।
नक्कू बनना–बदनाम होना।
नख-सिख वर्णन करना–आद्योपान्त वर्णन करना।
नजर लगना–कुदृष्टि का प्रभाव पड़ना।
नजर गिरना–बुरा प्रभाव होना।
नजर में जँचना–पसन्द आना।
नजर पर चढ़ना–प्रिय बनना।
नजरों से गिर जाना–इज्जत बिगड़ना।
नदी नाव संयोग–संयोग से भेंट होना।
नथुने फुलाना–क्रोध दिखलाना।
नटखटी करना–दुष्टता दिखलाना।
नपी तुली कहना–ठीक ठीक बात कहना।

नमक खाना–नौकरी कर लेना ।
नमक मिर्च लगाना–बढ़ाकर बातें कहना ।
नमक (कटे पर) छिड़कना–बड़ी तकलीफ देना ।
नमस्कार करना–त्याग देना, छोड़ना ।
नया गुल खिलना–विलक्षण घटना होना ।
नरक भोगना–दुर्गति होना ।
नस नस में–संपूर्ण शरीर में ।
नसीब न होना–प्राप्त न होना ।
नसीब लड़ाना–भाग्य का अनुकूल होना ।
न तीन में न तेरह में–किसी गिनती में न होना
नाक भौं सिकोड़ना–नाखुश होना ।
नाक में दम आना–बहुत परेशान होना ।
नाक कटना–बदनाम होना ।
नाक रगड़ना–अधीन होना ।
नाक का बाल होना–अति प्रिय होना ।
नाक में दम करना–बहुत परेशान करना ।
नाक कटना–बइज्जत होना ।
नाक पर हाथ धरना–स्वीकार करना ।
नाक रह जाना–प्रतिष्ठा स्थापित रहना ।
नाक न होना–निर्लज्ज होना ।
नाक रखना–प्रतिष्ठा स्थापित रखना ।
नाक रगड़ना–शुश्रूषा करना ।
नाकों चना चबाना–बहुत परेशान करना ।
नाच नचाना–दिक करना, परेशान करना ।
नाक कटी पर घी तो चाटा–बहया का चिह्न होना ।
नादिरशाही होना–बड़ा अत्याचार होना ।
नानी याद आना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना ।
नानी मर जाना–शर्मिन्दा होना ।
नाम लेना छोड़ देना–बिलकुल भूल जाना ।
नाम चलना–प्रसिद्ध होना ।
नाम कमाना–यश प्राप्त करना ।
नाम लेना–याद आना ।
नाम खोना–कलंकित होना ।
नाम निकल जाना–कलंकित होना ।
नाम कर जाना–प्रसिद्ध हो जाना ।
नाम डुबोना–यश खो बैठना ।
नाम का–केवल कहने मात्र का ।
नाम चमकना–यश का फैलना ।
नाम बिकना–अति प्रसिद्ध होना ।
नाम लगाना–अपराधी बनाना ।
निगाह चढ़ना–रुचिकर होना, पसन्द आना ।
निगाहें मोटी करना–अनबन हो जाना ।
निगाह में जँचना–पसन्द आना, लालच में पड़ना ।
नींद हराम होना–निद्रा न आना ।
नीचा दिखाना–लज्जित करना ।
नींव डालना–किसी काम को आरंभ करना ।
नौ दो ग्यारह होना–भाग जाना ।
नौबत बजना–आनन्द के बाजे बजना ।
नौका डूबना–काम बिगड़ जाना ।

प

पंजे में करना–वश में करना ।
पंजा मारना–झपटना ।
पक्का पोढ़ा करना–निश्चय करना ।
पगड़ी उतारना–बेइज्जत करना ।
पगड़ी की लाज रखना–मान-मर्यादा बनाये रखना ।
पगड़ी सँभालना–इज्जत बचाना ।
पगड़ी की लाज गवाना–इज्जत खो बैठना ।
पट हो जाना–नष्ट हो जाना ।
पठरा हो जाना–बहुत हानि पहुँचना ।
पढ़े तो हैं पर गुना नहीं–व्यावहारिक ज्ञान न होना ।
पट्टी में आना–किसी के बहकाने में आना ।
पट्टी पढ़ाना–बहकाना ।
पत्ता खड़कना–कुछ आहट पा लेना ।
पत गंवाना–मान-मर्यादा का नाश होना ।
पत्थर की लकीर बन जाना–दृढ़ होना ।
पत्थर का कलेजा करना–दृढ़ होना, निष्ठुर हो जाना ।

पत रखना–लाज रखना।
पत्थर से पारस होना–निर्धन से धनी बनना।
पत्थर पड़ना–आपत्ति आना।
पत्थर पसीजना–कठोरहृदय मनुष्य में दया होना।
परलोक यात्रा–मरण, मृत्यु।
पराई आग में कूदना–दूसरे के कष्ट में पड़ना।
परदा डालना–किसी बात को गुप्त रखना।
पराये हाथों पड़ना–विवश हो जाना।
पल्ला छुड़ाना–छुटकारा पाना।
पल्ला भारी होना–किसी दल का वलवान् होना।
पल्ला पसारना–किसी से कुछ माँगना।
पलक लगना–नींद लगना।
पसीना बहाना–बड़ी मेहनत करना।
पहाड़ टूटना–आफत आना।
पर्वत से राई करना-बड़े से छोटा बना देना।
प्रथम ग्रास में मक्खी पड़ना—आरंभ में ही विघ्न होना।
पाँव पूजना–इज्जत करना।
पानी पानी करना–बहुत लजा देना।
पानी पानी होना–लज्जित हो जाना।
पानी फेरना–निर्मूल करना, मिटा देना।
पापड़ बेलना–बड़ी विपत्ति सहन करना।
पार उतार देना–काम पूरा करना।
पार लगाना–पूरा कर देना।
पाला पड़ना–संपर्क होना, वास्ता पड़ना।
पासा फेंकना–किसी प्रकार का उद्योग लगाना।
पिंड छूटना–पीछा छूट जाना।
पीछा छुड़ाना–छुटकारा पाना।
पीठ दिखाना–युद्ध में भाग जाना।
पीठ ठोंकना–साहस बँधाना।
पुल बांधना (बातों का)–बातों को बढ़ाकर कहना।
पूछ होना–आदर होना।
पूत आपनो सबको प्यारो–अपनी सन्तान सबको प्यारी लगती है।
पेट का पानी न हिलना–भद को गुप्त रखना।
पेट को मार देना–भूखों मारना।
पेट में घुसना–रहस्य का पता लगाना।
पेट से होना–गर्भवती होना।
पेट काटना–पूरा भोजन न देना।
पेट में बात न पचना–रहस्य को छिपाकर न रखना।
पेट की आग बुझाना–भोजन करना।
पेट में चूहे दौड़ना–भूख लगना।
पेट-पीठ एक हो जाना–अति दुर्बल होना।
पेट में पैठना–भेद का पता लगाना।
पेट पालना–जीवन का निर्वाह।
पैतरे बदलना–छल करना।
पैर उखड़ जाना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
पैर आगे न पड़ना–साहस कम होना।
पैर जमना–अधिकार करना।
पैर के नीचे से निकल जाना–अति व्यग्र होना।
पैसे के तीन अधेले भुनाना–बड़ी कंजूसी दिखलाना।
पैर उखड़ना–हारकर भाग जाना।
पोथे के पोथे रँगना–बहुत-सी पुस्तकें लिख डालना।
पोल खोलना–गुप्त बातों को प्रकाशित करना।
पौ फटना–प्रातःकाल होना।
पौ बारह होना–अच्छा मुनाफा होना।
पौने सोलह आने ठीक–प्रायः दुरुस्त।
प्याज के छिलके उतारना–भेद खोलना।
प्रेम में नेम कहाँ–प्रेम में कोई नियम नहीं रहता।

प्रकाश डालना–स्पष्ट करना।
प्रभुता पाय काहि मद नाहीं–अधिकारी बनने पर सबको अभिमान हो जाता है।
प्रशंसा करते मुंह सूखना–बड़ी शुश्रूषा करना।
प्राण खाना–बहुत परेशान करना।
प्राण निकलना–मृत्यु को प्राप्त होना।
प्राण सूख जाना–बहुत डर जाना।
प्राणदंड देना–फाँसी देना।
प्राण हरना–जान मार डालना।
प्राणों पर बीतना–आफत में पड़ना।
प्राणदान देना–जान बचाना।
प्राणों में प्राण आना–मन सावधान होना।
प्राणपखेरू उड़ना–मृत्यु को प्राप्त होना।

फ

फंदे में पड़ना–छला जाना।
फटे पड़ना–अभिमान करना।
फटा मन फटा दूध नहीं मिलता–अर्थ स्पष्ट है।
फड़क उठना–प्रसन्न होना।
फबतियां उड़ाना–हँसी-दिल्लगी करना।
फल पाना–बदला मिलना।
फलना-फूलना–मनोरथ सिद्ध होना।
फाग खेलना–आनन्द मचाना।
फाड़ खाने को दौड़ना–भयंकर क्रोध दिखलाना।
फांसी लगना–बड़ा कष्ट होना।
फंक से पहाड़ उड़ाना–थोड़ी-सी शक्ति से बड़े काम करने का उद्योग करना।
फाँड़ा बाँधना–तैयार हो जाना।
फाँके पड़ना–भूखों मरना।
फूंक डालना–बरबाद करना।
फिर जाना–साथ छोड़ देना।
फूटी आँख न सुहाना–अच्छा न लगना।
फूट डालना–शत्रुता बढ़ाना।
फूल टहनी में ही अच्छा लगता है–सभी वस्तु अपनी जगह पर ही अच्छी लगती है।
फूट फूट कर रोना–बहुत विलाप करना।
फूल जाना–बहुत खुश होना।
फल बोना–भलाई करना।
फूलकर कुप्पा हो जाना–बहुत खुश होना।
फूल सूंघकर रहना–अनशन करना, कुछ न खाना।
फूलकर बैठना–अपने बड़े अभिमान में रहना।
फूला न समाना–बहुत खुश होना।
फूले अंग न समाना–अति प्रसन्न होना।
फेर में आ जाना–धोखे में पड़ जाना।
फेरे पड़ना–ब्याह होना।

ब

बगलें बजाना–खुशी दिखलाना।
बगुला भगत होना–पाखंड दिखाना।
बकरे की मां कब तक खैर मनावेगी–जिसका नाश होना हो वह नहीं बच सकता।
बचकर खेलना–सचेत होकर काम करना।
बछिया का ताऊ–परम मूर्ख व्यक्ति।
बटन खोल देना–उदार बन जाना।
बट्टा लगना–बेइज्जत होना।
बड़ा बोल बोलना–शेखी हाँकना।
बड़े घर की हवा खाना–बन्दीगृह में जाना।
बढ़ बढ़कर बातें करना–गर्व दिखलाना।
बड़ी बड़ी बातें करना–शेखी दिखलाना।
बत्तीसी गिरना–सब दाँतों का टूट जाना।
बंटाधार करना–नाश करना।
बने रहना–जीवित रहना।
बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है–बलवान् सदा निर्बल को कष्ट देते हैं।
बन्द बन्द अलग करना–टुकड़े टुकड़े करना।
बन्द बन्द जकड़ जाना–सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा होना।
बन्दर घुड़की–झूठा भय दिखलाना।

बड़े बोल का सिर नीचा—बहुत बड़े अभिमानी का अवश्य नाश होता है।
बराबर करना—अन्त करना।
बन्दर के हाथ आइना—जो जिस वस्तु का गुण नहीं जानता वह उसको देना।
बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ तो सुभान अल्लाह—छोटे का बड़े से गुण आदि में बढ़कर होना।
बलि चढ़ना—अपना प्राण देना।
बल निकालना—अभिमान दूर करना।
बन गये तो लालाजी और बिगड़ गये तो बुद्धू—काम बन जाने पर सभी वाह-वाही देते हैं और बिगड़ जाने पर मूर्ख बनाते हैं।
बनिये की सलाम बेगरज नहीं होती—बनिये बड़े स्वार्थी होते हैं।
बहती गंगा में हाथ धोना—सुधरी हालत में अच्छे काम करना।
बहार लूटना—आनन्द लेना।
बहुत-से जोगी मठ उजाड़—काम करनेवाले अनेक परन्तु उसका फल कुछ न होना।
बाँबी में हाथ तू डाल मंत्र मैं पढ़ूँ— किसी दूसरे को आपत्ति में डालना और स्वयं बचे रहना।
बाँसों उछलना—बहुत प्रसन्न होना।
बाँह पकड़ना—आश्रय देना।
बाँयें हाथ का खेल—अति सहज कार्य।
बाई पच जाना—शान्त होना।
बाग उठाना—घोड़े को हाँकना।
बाग ढीली करना—किसी विषय में शिथिलता दिखाना।
बाजार गर्म होना—किसी पदार्थ की अधिकता।
बाजार मन्दा पड़ना—बेंचा-बिक्री का कम होना।
बाजी मारना—कार्य की सिद्धि होना।
बात पर चढ़ना—बहकाने में आ जाना।
बात का बतंगड़ करना—थोड़ी-सी बात को बढ़ा देना।
बात पकड़ना—किसी के कथन में दोष निकालना।
बात की बात में—तुरत, फौरन।
बात पी जाना—बात सुनकर चुप रह जाना।
बात टालना—ठीक जवाब न देना।
बात जाना—इज्जत खोना।
बात न पूछना—सम्मान न करना।
बात रख लेना—इज्जत बचाना।
बात का पूरा होना—दृढ़ संकल्प होना।
बात न पूछना—उपेक्षा करना।
बात काटना—बीच में बोल उठना।
बात में आना—किसी के कहने को मान लेना, धोखे में पड़ना।
बात पक्की होना—निश्चय होना।
बात बढ़ाना—झगड़ा बढ़ाना।
बात तक न पूछना—किसी की इज्जत न करना।
बात खुल जाना—भेद मालूम हो जाना।
बात बनाना—झूठ बोलना।
बातों में उड़ाना—टालमटोल करना।
बातपर न जाना—विश्वास न करना।
बानगी दिखाना—नमूना दिखलाना।
बाप दादों का नाम डुबोना—कुल की मर्यादा को नष्ट करना।
बाघवाई फिरना—इधर-उधर मारे-मारे फिरना।
बारह पत्थर बाहर करना—शहर बाहर निकाल देना।
बाल की खाल निकालना—बड़ी छानबीन करना।
बाल न बांका होना—किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचना।

बाल-बाल बचना–बेलाग बच जाना।
बाल सफेद होना–वृद्ध होना।
बाल बाल मोती पिरोना–बड़ी सजधज करना।
बासी कढ़ी में उबाल आना–वृद्धावस्था में जवानी की उमंग।
बालू की भीत–शीघ्र नष्ट होनेवाला पदार्थ।
बावन तोले पाव रत्ती–एकदम ठीक।
बिगड़ बैठना–अप्रसन्न होना।
बिगड़ जाना–धनहीन हो जाना।
बिजली गिरना–बड़ी विपत्ति आ पड़ना।
बिलख-बिलखकर रोना–बड़ा विलाप करना।
बीड़ा उठाना–किसी बात का दृढ़ निश्चय करना।
बीच-बचाव करना–झगड़ा तय करना।
बीच में पड़ना–हस्तक्षेप करना।
बुखार निकालना–दुश्मनी निकालना।
बुत बने रहना–चुपचाप बैठे रहना।
बुत्ते देना–धोखा देना।
बूढ़े तोते को पढ़ाना–बूढ़े को शिक्षा देना।
बेगार टालना–चित्त लगाकर काम न करना।
बेड़ा पार करना–कार्य समाप्त करना।
बेतुकी हांकना–व्यर्थ की बातें करना।
बेदाग बचना–किसी तरह का नुकसान न होना।
बेपेंदी का लोटा–बिना किसी सिद्धान्त का मनुष्य।
बेवक्त की शहनाई बजाना–बेमौके की बातें करना।
बे सिर पैर की हांकना–बे मतलब की बातें करना।
बैठे बैठाये–बिना किसी वजह के।
बोझ उठाना–किसी काम की जवाबदेही अपने ऊपर लेना।
बोझ हलका होना–चिन्ता कम होना।
बोल जाना–टूट जाना, मर जाना।
बोल बाला होना–इज्जत बढ़ना।
बोलती बन्द करना–चुप कर देना।

भ

भंग खाना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
भँवर में नाव फँसना–विपत्ति में पड़ जाना।
भंडा फोड़ना–भेद खोलना।
भड़क उठना–क्रुद्ध होना।
भनक पड़ना–सुन पड़ना।
भन्ना उठना–उत्तेजित होना।
भबकी देना–धमकाना।
भभूत रमाना–संन्यासी बन जाना।
भर पाना–मिल जाना, प्राप्त करना, बदला मिल जाना।
भरम गँवाना–मान-मर्यादा खोना।
भरम खुलना–रहस्य का प्रकट होना।
भरी थाली में लात मारना–मिली हुई संपत्ति को त्याग देना।
भरे को भरना–धनवान् को धन देना।
भर में आना–किसी के कपट में पड़ जाना।
भाड़े का टट्टू–पैसा लेकर काम करनेवाला।
भाँप लेना–जान लेना।
भाग्य खुलना–अच्छे समय का आना।
भाग्य का पलटा खाना–भाग्य में परिवर्तन होना।
भाग्य चमकना–भाग्योदय होना।
भाड़ में जाना–नाश होना।
भाड़ झोंकना–नीच कार्य करना।
भारी बनके बैठना–बड़ा अभिमान करना।
भीगी बिल्ली बन जाना–डर से दब जाना।
भीतर ही भीतर–चित्त में।
भुजा उठाना–प्रतिज्ञा करना।
भुजा टूटना–भाई की मृत्यु।
भीष्म प्रतिज्ञा करना–कठिन प्रतिज्ञा लेना।

भुरकुस निकालना–खूब मारपीट करना।
भूत चढ़ना–बहुत क्रोध आना।
भूत झाड़ना–अभिमान हटाना।
भोर का मुर्गा बोला, पक्षी मुँह खोला–प्रातःकाल हुआ और पेट भरने की चिन्ता लगी।
भूलभुलैया में पड़ना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
भेड़िया धसान मचाना–बिना सोचे-विचारे पीछा करना।
भैंस के आगे बीन बजावे, भैंस लगी पगुराय–मूर्ख के आगे बुद्धिमानी की बातें कहना निष्फल होता है।
भौंर न छाड़े केतकी तीखे कंटक जान–अनेक आपत्तियों के होने पर भी प्रेमियों का प्रेम नहीं हटता।

म

मन मैला करना–उदास होना।
मन रीझना–चित्त प्रसन्न होना।
मन मानी घर जानी करना–जो कुछ इच्छा हो उसको करना।
मर मिटना–किसी काम के करने में बड़ा क़ष्ट उठाना।
मरता क्या न करता–मृत्यु की आशंका होने पर मनुष्य सभी काम करता है।
मरने पर वैद्य बुलाना–काम खराब हो जाने पर सुधारने का प्रयत्न करना।
मरम्मत करना–मारना।
मल-मलकर पैसा देना–बड़ी कृपणता दिखलाना।
मलयागिरि की भीलनी चन्दन देत जराय–जहाँ पर कोई वस्तु बहुतायत से होती है वहाँ उसकी कदर नहीं होती।
मलार गाना–आनन्द मचाना।
मसक जाना–जीर्ण वस्त्र का दबकर फट जाना।
महाभारत होना–लड़ाई-झगड़ा होना।
माँग उजड़ना–विधवा होना।
माँगी मौत भी न मिलना–अभिलषित वस्तु का प्राप्त न होना।
माँगे हरड़ दे बहेड़ा–बुद्धि विपरीत होना।
माता का दूध लजाना–डरपोक होना।
माथा ठनकना–सन्देह उत्पन्न होना।
माथा रगड़ना–बिनती करना।
माथा खाली करना–बहुत बकवाद करना।
माथा पटकना–व्यर्थ का प्रयत्न करना।
मान न मान मैं तेरा मेहमान–इच्छा के विरुद्ध होना।
मार के आगे भूत भागे–मार से सभी डरते हैं।
मारा जाना–बड़ी तकलीफ पहुँचना।
मानो तो देव नहीं पत्थर–विश्वास ही फलदायक होता है।
मार-मारकर वैद्य बनाना–जबरन् योग्य बनाने का प्रयत्न करना।
माल उड़ाना–धन का अपव्यय करना।
माल मुफ्त दिल बेरहम–दूसरे का धन उड़ाने में संकोच न रहना।
मिजाज न मिलना–बड़ा अभिमान करना।
मिट्टी हो जाना–नष्ट होना।
मिट्टी पलीद करना–दुर्दशा करना।
मिट्टी देना–शव को गाड़ना।
मिट्टी खराब करना–बेइज्जत करना।
मिट्टी में मिल जाना–नष्ट हो जाना।
मिरचा लगना–बुरा लगना।
मीठा दर्द–हल्की पीड़ा।
मीठी मार मारना–भला बनकर बुराई करना।
मीठी छुरी–मित्र बनकर हानि पहुँचाने वाला।
मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी–दोनों पक्ष को यदि अभिमत है तो झगड़ा काहे का।

मुंह खराब करना—गाली बकना।
मुंह काला करना—कलंकित होना।
मुंह की खाना—कठोर उत्तर मिलना।
मुंह पकड़ना—बोलने न देना।
मुंह देखे की मुहब्बत—झूठा प्रेम।
मुंह चाटना—खुशामद करना।
मुंह चढ़ाना—ढीठ बनाना।
मुंह ताकना—कुछ पाने की अभिलाषा करना।
मुंह में पानी भर आना—लालच उत्पन्न होना।
मुंह पर हवाई उड़ना—चेहरा फीका पड़ जाना।
मुंह मीठा करना—मिठाई खिलाना।
मुट्ठी गरम करना—घूस देना।
मुट्ठी में आना—वशीभूत होना।
मुहरमी सूरत—रोनी सूरत।
मोछों पर ताव देना—शेखी दिखलाना।
मैदान मारना—विजय प्राप्त करना।
मृदंग बजाना—आनन्द करना।
मेढ़े लड़ाना—झगड़ा खड़ा करना।
मोची का मोची रह जाना—मूर्ख का मूर्ख बने रहना।
मोम हो जाना—मृदु होना।
मोरचा मारना—विजय प्राप्त करना।
मौत के दिन पूरे करना—दुःख से जिन्दगी बिताना।
म्याऊं का ठौर कौन पकड़े—भय के स्थान में कौन जावे।
म्यान के बाहर हो जाना—क्रोधवश होना।

य

यज्ञ में आहुति देना—क्रोध भड़काना, अच्छे काम में लगना।
यज्ञ सफल होना—अच्छा काम पूरा होना।
युग बीत जाना—बहुत काल व्यतीत होना।
यथा नाम तथा गुण—जैसा नाम वैसा गुण।
यमपुर जाना—मृत्यु को प्राप्त होना।
यमपुर भेजना—मार डालना।
योग देना—सहायता देना।

र

रंग उड़ना—मुख फीका पड़ जाना।
रंग जमना—प्रभाव होना।
रंग भंग होना—मजा बिगड़ जाना।
रंग लाना—प्रभाव दिखलाना।
रंग चढ़ना—नशे में चूर होना।
रंग बांधना—प्रभाव दिखलाना।
रंग देखना—नतीजा देखना।
रकाब में पैर रखना—तैयार हो जाना।
रग रग जानना—अच्छी तरह से पहिचानना।
रस्सी जल गई ऐंठन न गई—नाश हो जाने पर भी हठ न गया।
रक्त की नदी बहाना—बड़ा युद्ध होना।
रफू चक्कर होना—भाग जाना।
रसातल को पहुंचा देना—सर्वनाश करना।
रहा-सहा—बचा हुआ।
रह रह करके—थोड़ी थोड़ी देर बाद।
रस्सी का सांप बनाना—बेमतलब की झंझट खड़ा करना।
राई का पर्वत करना—छोटी सी बात को बहुत बढ़ाकर कहना।
राई रत्ती से जानकारी—पूरी तरह से जानकारी।
रात-दिन एक करना—निरन्तर परिश्रम करना।
रामकहानी कहना—अपना दुखड़ा रोना।
रामराज्य—सुखपूर्ण राज्य।
राम राम करके प्राण बचाना—बड़ी कठिनाई से जान बचाना।
राम राम जपना पराया माल अपना—देखने में सीधा-सादा परन्तु हृदय का कुटिल होना।

राह ताकना–इन्तजारी करना।
राह पर लाना–सुधारना।
रुपया ठीकरी करना–धन का दुरुपयोग करना।
रुपया परखे बार-बार आदमी परखे एक बार–मनुष्य एक ही बार जाँचा जाता है, रुपया कई बार परखा जाता है।
रोज कुवाँ खोदना रोज पानी पीना–रोज कमाना रोज खाना।
रोटी तोड़ना–बिना मेहनत के जीविका चलाना।
रोकड़ मिलाना–आय-व्यय का हिसाब करना।
रोजगार चमकना–रोजगार में लाभ होना।

ल

लंगड़ लड़ाना–झगड़ा खड़ा करना।
लँगोटिया यार–बाल्यावस्था का मित्र।
लँगोटी बाँध देना–दरिद्र कर देना।
लंगर डालना–हिम्मत हारना।
लंगर उठाना–जहाज को चालू करना।
लँगोटी पर फाग खेलना–दरिद्रता में आनन्द मचाना।
लंबी चौड़ी हाँकना–शेखी हाँकना।
लकीर पीटना–समय चूकने पर वृथा उद्योग करना।
लकड़ी के बल बंदरिया नाचे–भय दिखलाकर काम कराना।
लकीर का फकीर होना–पुरानी बातों को ढोना।
लग्गा लगाना–उपाय सोचना।
लगे हाथ करना–सिलसिले में कोई काम कर डालना।
लटके रहना–अनिश्चित अवस्था में रहना।
ल पेट में आना–विपत्ति में फंस जाना।
लंबी तानना–सो जाना।
लंबी चौड़ी हाँकना–शेखी की बातें कहना।
लगाव रखना–संबंध रखना।
लल्लो चप्पो करना–बिनती करना।
लहू के घूंट पीना–बड़ी आपत्ति सहन करना।
लहू पसीना एक करना–बहुत मेहनत करना।
लहू सूख जाना–बहुत भयभीत होना।
लहू लगाकर शहीदों में भरती–थोड़ा-सा काम करके नामवरी चाहना।
लहू चूसना–बहुत परेशान करना।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते–नीच मनुष्य बिना मार खाये सीधा नहीं होता।
लाख का घर खाक होना–बड़ी संपत्ति का नाश होना।
लागडांट करना–शत्रुता करना।
लाल झंडी दिखाना–काम में रुकावट डालना।
लात मारना–तिरस्कार करना।
लासा लगाना–धोखे में फँसाना।
लीपापोती करना–ऐब छिपाने का प्रयत्न करना।
लुटिया डुबोना–काम बिगाड़ना।
लेने के देने पड़ना–लाभ के बदले हानि होना।
ले मरना–आफत में डालना।
लोटपोट हो जाना–अति प्रसन्न हो जाना।
लोहा लेना–युद्ध करना।
लोहा मानना–किसी के पराक्रम को स्वीकारु करना।
लोहे के चने चबाना–परिश्रम का काम करना।
लौ लगाना–धुन लगाना।

व

वकीलों के हाथ पराये जेब में–वकील लोग दूसरे से धन लेन का सर्वदा प्रयत्न करते हैं।

वचन तोड़ना–अपनी प्रतिज्ञा से हट जाना।
वज्र बहिरा–बिलकुल बहिरा।
वसन्त की खबर न होना–जानकार न होना।
वह गुड़ नहीं जो चींटी खाय–हम बड़े सचेत हैं, दूसरा हमको ठग नहीं सकता।
वहम की दवा लुकमान के पास नहीं है–सन्देह की कोई औषधि संसार में नहीं है।
वार देना–न्यौछावर करना।
वाहवाही करना–प्रशंसा करना।
विभीषण बनना–घर का भेदिया होना।
विष उगलना–विपरीत बोलना।
विष के घूंट पीना–कटु वचन सहन करना।
वीर गति प्राप्त करना–वीरता से लड़कर मरना।
वेदवाक्य समझना–प्रामाणिक मानना।
वैकुण्ठवास–मृत्यु।

श

शरीर में बिजली दौड़ना–उत्तेजित होना।
शस्त्र ढीले होना–साहस टूट जाना।
शरीर में आग लगना–तीव्र क्रोध उत्पन्न होना।
शह देना–उभाड़ना, भड़काना।
शहद लगाकर चाटना–बेकाम समझकर रख छोड़ना।
शान दिखलाना–गर्व करना।
शिकंजे में पड़ना–आफत में पड़ना।
शिकार हाथ लगना–असामी मिल जाना।
शिकार होना–फन्दे में पड़ना।
शीशे में उतरना–वश में करना।
शेखी बघारना–अभिमान दिखलाना।
शेर और बकरी को एक घाट पानी पिलाना–बिना पक्षपात का न्याय करना।
शेर के मुंह में हाथ डालना–साहस का काम करना।
शैतान के कान काटना–भेद का पता लगाना।
श्रीगणेश करना–किसी कार्य को आरंभ करना।

ष

षड्यन्त्र रचना–छिपकर किसी भयंकर कार्य को करने का उद्योग करना।
षट्राग में पड़ना–आपत्ति में पड़ना।
षड्रस भोजन करना–आनन्द से समय बिताना।
षोडश शृंगार करना–खूब सिगार-पटार करना।

स

सइयाँ भये कोतवाल अब भय काहे का–किसी को उच्च पद मिल जावे तो उसके आश्रित निश्चिन्त रहते हैं।
सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब–अर्थ स्पष्ट है।
संकल्प विकल्प करना–सोच-विचार में पड़ना।
सठिया जाना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
सत्तू बाँधकर पीछा करना–बुरी तरह से परेशान करना।
सच्चे का बोल बाला, झूठे का मुंह काला–सच्चा सर्वत्र पूजित होता है, झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।
सदा की नींद सोना–मृत्यु को प्राप्त करना।
सदा कागज की नाव नहीं बहती–छल सर्वदा फलीभूत नहीं होता।
सनक सवार होना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
सन्नाटे में आ जाना–मूक होना, डर जाना।
सब धान बाईस पसेरी–भले-बुरे को समान जानना।
सब गुड़ गोबर हो जाना–किया-कराया काम बिगड़ जाना।
सब रामायण सुन गये सीता किसका नाम–

सब समझकर भी अनजान बनना।
सब्ज बाग दिखलाना–झूठी आशा दिखलाना
सब शकल लंगूर की एक दुम की कसर है–बदसूरत मनुष्य के लिये प्रयोग होता है।
सफेद झूठ–ऐसा झूठ जिसमें सच्चाई का लेशमात्र भी न हो।
सफाई देना–निर्दोष सिद्ध होने का उद्योग।
सर करना–जीतना, विजय पाना।
सांप को भी दूध पिलाना–दुष्ट के साथ उपकार करना।
सांप छछूंदर की गति होना–द्विविधा में पड़ना।
सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे–काम बन जाय और कोई हानि भी न हो।
सांस पूरे होना–मृत्यु होना।
सांस तक न लेना–चुप रह जाना।
साई देना–किसी काम के लिये कुछ पेशगी देना।
साढ़ेसाती आना–अभाग्य का समय आना।
सात-पांच करना–छल-कपट करना।
साये से भागना–बड़ा कायर होना।
सारे जमाने की बातें सुनना–दुनिया में बुरा कहा जाना।
सिक्का जमना–प्रभाव फैलना।
सिक्का जमाना–धाक बैठाना।
सिर उठाकर चलना–अभिमान दिखाना।
सिर आंखों पर बैठाना–अत्यधिक आदर करना।
सितारा चमकना–भाग्यवान् होना।
सिर उठाना–उपद्रव खड़ा करना।
सिंहासन डिगना–भयभीत होना।
सिटपिटा जाना–घबड़ा उठना।
सितम ढाना–बड़ा क्लेश देना।
सिर ऊंचा होना–इज्जत होना।
सिर काटना–बड़ी तकलीफ देना।
सिर चढ़ाना–ढीठ करना।
सिर झुकाना–प्रतिष्ठा करना।
सिर देना–बलिदान करना।
सिर धुनना–पछताना।
सिर पटक देना–बड़ा उद्योग करना।
सिर पकड़कर रोना–बहुत पश्चात्ताप करना
सिर पर आना–पास आना।
सिर पर मौत आना–मृत्यु पास होना।
सिर पर हाथ रखना–सहायक होना।
सिर पर खड़ा होना–बहुत पास आना।
सिर पर भूत सवार होना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
सिर पर खून सवार होना–हत्या करने के लिये उतारू होना।
सिर पर कोई न होना–अनाथ होना।
सिर गरम होना (फिर जाना)–पागल होना।
सिर पर से तिनके उतार लेना–थोड़ा उपकार करना।
सिर पर लेना–अपने जिम्मे में लेना।
सिर पर आ पहुंचना–नजदीक आ जाना।
सिर होना–व्यग्र होना।
सिर मारना–बड़ा उद्योग करना।
सिर मौर बनाना–अधिक प्रतिष्ठा करना।
सिरहाने का सांप–पास का शत्रु।
सिर हिलाना–अस्वीकार करना।
सीधा बनाना–गर्व हटाना।
सीधी नजर से देखना–शिष्टता का व्यवहार करना।
सीधे मुंह बात न करना–घमंड दिखलाना।

सुई की नोक से निकालना–बड़ी तकलीफ देना।

सुर्खाब का पर लगाना–विशिष्टता होना।

सुरमा बना डालना–बहुत महीन पीसना।

सुहाग लुट जाना–विधवा होना।

सूखकर काँटा हो जाना–बड़ा दुर्बल होना।

सूखा जवाब देना–बिना कुछ दिये टाल देना।

सूरज धूल डालने से नहीं छिपता–नीचों की दुष्टता से भले आदमियों का गुण नहीं छिपता।

ह

हँस खेलकर मारना–प्रेम दिखलाते हुए कष्ट देना।

हक्का बक्का रह जाना–अचरज में पड़ना।

हजम करना–हर लेना।

हजामत बना देना–ठग लेना।

हजारों टाँकी सहकर महादेव बनते हैं–कष्ट बिना उठाये महत्त्व नहीं मिलता।

हड़बड़ा उठना–घबड़ा जाना।

हड़प लेना–ठग लेना।

हथियार रख देना–अधीन हो जाना।

Authenticated Administrative Phraseology of Words & Terms.

प्रामाणिक शासन-शब्दावली

जनतंत्र की केन्द्रीय तथा प्रादेशिक शासन-व्यवस्था में प्रयुक्त आँग्ल पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी अर्थ

A

Abandonment—त्याग, तर्क करना।
Abandonment of holdings—जोतों को छोड़ देना, जोतों का अधिकार त्याग देना।
Abate—कमी करना, दूर करना, हटाना, उठाना, कम करना, शांत करना।
Abatement—कमी, न्यूनीकरण, घटाव, कटौती, घटाया जाना, घटना।
Abatement of Land Revenue—मालगुजारी का घटना या घटाया जाना, तखफीफ़ मालगुजारी।
Abatement of rent—लगान में कमी।
Abatement of Suit—वादान्तकरण, वादसमाप्ति।
Abbreviated—संक्षिप्त, संक्षिप्त किया गया।
Abbreviation—संक्षेप, संकेताक्षर।
Abdominal—उदर सम्बन्धी, उदरक, औदरीय।
Abdominal bandage—उदरपट्टिका।
Abduction—अपहरण, भगा ले जाना।
Abet—दुरुत्साहित करना।
Abetment—दुरुत्साहन।
Abeyance—आस्थगन, अनिश्चय, लटकन्त।
Abide—टिकाना, जारी रहना।
Abide by—पाबन्द रहना, पाबन्दी करना, पालन करना।
Abide by rules—नियमों का पालन करना।
Ablution—तीर्थ-स्नान।
Abnormal—असामान्य, असाधारण।
Abolition—उन्मूलन, समाप्ति।
Abolition of post—पद का अन्त करना, पद का तोड़ देना।
Above noted—ऊपर लिखा हुआ।
Above par—अंकित मूल्य से ऊपर, अधिक मूल्य पर।
Above standard—प्रमाण से ऊपर, माप से ऊपर।
Abpashi Nahar—(Canal Irrigation) नहर की सिंचाई।
Abroad—विदेश में।
Abrogate—भेंट देना, उठा देना।
Abscond—भाग जाना, फरार होना, लापता होना।
Absconder—फरार, भगोड़ा।
Absconding—फरार, भागा हुआ।
Absence—अनुपस्थिति, गैरहाजिरी।
Absentee—अनुपस्थित व्यक्ति।
Absentee statement—अनुपस्थिति

विवरण-पत्र, गैरहाजिरी का नकशा।
Absolute decree—अप्रतिबद्ध डिगरी।
Absolute order—अबाधित आज्ञा।
Absorption (of temporary hands into permanent vacancies)—खतना, खपा लेना, खपत, अन्तर्भूत करना, अन्तर्भाव (अस्थायी कर्मचारियों का स्थायी रिक्त स्थानों में)।
Abstract—उपसंक्षेप, अमूर्त, गोशवारा।
Abstract book—उपसंक्षेप पुस्तक।
Abstract budget—उपसंक्षिप्त बजट।
Abstract of cost—लागत का उपसंक्षेप
Abstract of stock issues—दिये गये सामान का उपसंक्षेप।
Abstract statement—संक्षिप्त विवरण
Abstract table—उपसंक्षेप सारणी।
Abundant—प्रभूत, प्रचुर, अधिक।
Abutment—मेहराब का पाया, तोरणाधार।
Academic—शास्त्रीय, विद्या-विषयक, आविविद्य (रघु०)।
Academy—विद्याभ्यास, विद्यापरिषद्।
Accede—सम्मिलन, अभिवर्धन, पदारोहण, पद ग्रहण करना, मान लेना।
Accede to—स्वीकार करना, मान लेना।
Acceleration—वेगवृद्धि।
Acceptance—स्वीकार, स्वीकृति, ग्रहण, अंगीकृति, अंगीकार, मंजूरी, मानना।
Acceptance (as of a bill)—सकारा।
Acceptance for registration—रजिस्ट्री के लिए स्वीकृति, पंजीयन के लिए स्वीकृति।
Accepted assets—स्वीकृत निकासी।
Access—पहुँच, प्रवेश।
Accessory—सहायक वस्तु, उपसाधन, उपवस्तु।
Accident—दुर्घटना, आकस्मिक घटना।
Accidental injury—आकस्मिक चोट, आकस्मिक आघात।
Accident register—दुर्घटना पंजी।
Accident report—दुर्घटना रिपोर्ट।
Accommodate—स्थान देना, अनुकूल बनाना।
Accommodation—स्थान, कमरा, आराम की चीजें, मेल, अनुकूलता, हाथ-उधार।
Accommodation work—निवास निर्माण कार्य।
Accompanied by—समेत, के साथ।
Accompaniments—संगामी।
Accompanying—साथ का, साथ लगा हुआ।
Accomplice—सहापराधी, अपराधसंगी।
Accomplish—संपन्न करना।
Accord—एकमत्य, आनुकल्य, रुचि, प्रदान, समान होना, एक स्वर।
Accordingly—इस प्रकार, इसलिए।
Accord sanction—स्वीकृति देना।
Account—लेखा, गणन, हिसाब।
Account, Appropriation—विनियोग लेखा।
Account, Detailed—सविस्तार लेखा।
Accountant—लेखापाल, गाणनिक।
Accountant Clerk—लेखा, लेखक, गणना लेखक, लेखा क्लर्क।
Accountant General—महालेखापाल।
Accounting & disposal of Government Estates—राजकीय सम्पत्ति का ब्योरा और उनका विक्रय।
Accounts Department—लेखा विभाग
Accounts Officer—गणनाधिकारी, लेखाधिकारी।

Accounts Supervisor—लेखा पर्यवेक्षक ।

Accounts were below the standard of efficiency and had rather deteriorated—लेखाजात प्रगुणता के स्तर से गिरे हुए थे तथा पहिले से भी खराब थे ।

Accoutrement—सज्जा, आकल्प ।

Accrual increment—संभूत वेतन-वृद्धि

Accrue—संभूत होना ।

Accumulation—संचयन ।

Accuracy—विशुद्धता ।

Accurate—यथार्थ, सही, ठीक, विशुद्ध ।

Accurately—ठीक-ठीक, वास्तविक ।

Accusation—दोषारोपण, दोष-स्थापन, अभियोग ।

Accused—अभियुक्त ।

Acidity—तेजाब, खट्टापन ।

Acknowledge—स्वीकार करना, प्राप्ति-सूचना भेजना ।

Acknowledgment—स्वीकृति, प्राप्ति-स्वीकार, स्वीकरण, मान लेना ।

Acknowledgement of consideration made before a registering officer—प्रतिफल का स्वीकरण जो पंजीयक अधिकारी के सामने किया जाय ।

Acknowledgement due—जवाबी रजिस्टरी, पावनी, पावती ।

Acknowledgement of liability—दायित्व स्वीकरण ।

"A" Class allowance—"अ" श्रेणी का भत्ता ।

A copy of the court's order passed in the marginal note of a case—उपान्तर अंकित मुकदमे में अदालत का जो आदेश हुआ है उसकी एक नकल या प्रतिलिपि ।

Acoustics—ध्वनिशास्त्र ।

Acquaintance—परिचय ।

Acquiescence—मौन सहमति ।

Acquire—प्राप्त करना, अधिगमन करना, लब्ध करना ।

Acquisition—अधिगमन, प्राप्ति ।

Acquisition of land—भूमि-प्राप्ति ।

Acquisition or leasing—प्राप्ति वा पट्टे ।

Acquisition register—अधिगमन पंजी ।

Acquit—(as distinguished from discharge) दोष मोचन ।

Acquittal—दोष-मुक्ति ।

Acquittance roll—निष्क्रियवर्ती, वेतन चिठ्ठा, काब्जुल वसूल ।

Acquitted—दोषमुक्त, संशुद्ध ।

Acreage—एकड़ों में क्षेत्रफल ।

Act—विधान, अधिनियम, कानून, कार्य ।

Acting—कार्यवाह, कार्यवाहन ।

Acting allowance—कार्यवाहन भत्ता ।

Acting appointment—कार्यवाह नियुक्ति ।

Actinomycosis—अंशुर बकीम (रोग) ।

Action—कार्यवाही, काम, कार्य ।

Actionable wrong—कार्यवाही योग्य अपकार ।

Active service—सक्रिय नौकरी सक्रिय भृत्या ।

Activities—गतिविधि, काम ।

Activity—काम, कार्य, कार्यशीलता, सक्रियता, कार्य-परायणता ।

Actual—वास्तविक ।

Actuals—वास्तविक आँकड़े ।

Actual service—वास्तविक सेवा।
Actual service (as of summons)—वास्तविक निष्पादन।
Actual travelling allowance—वास्तविक यात्रिक भत्ता।
Actual travelling expenses—वास्तविक यात्रिक भत्ता।
Acute angle—न्यून कोण।
Adaptation—अनुकरण, अनुसरण।
Addendum—जोड़पत्र, क्षेप, क्षेपक।
Addition—परिवर्धन, योग, जोड़।
Addition and alteration—बढ़ाव और बदलाव, वृद्धि और परिवर्तन, परिवर्धन और परिवर्तन।
Additional—अतिरिक्त, अधिक, अपर, उपधिक।
Additional Assistant Research Officer—संयुक्त, सहायक, अन्वेषण अधिकारी, अडिशनल असिस्टेन्ट रिसर्च अफसर।
Additional Deputy Secretary—संयुक्त प्रतिमंत्री, एडिशनल डिप्युटी सेक्रेटरी।
Additional District Magistrate—अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट, अतिरिक्त जिला दण्डनायक।
Additional entry—अतिरिक्त प्रविष्टि।
Additional fees—अतिरिक्त शुल्क।
Additional grant—अतिरिक्त, अनुदान।
Additional Judge—अतिरिक्त जज, अपर जज।
Additional pay—अतिरिक्त वेतन।
Additional plea—अतिरिक्त आश्रय।
Additional police—अतिरिक्त पुलिस
Additional Police-tax—अतिरिक्त पुलिस-कर।
Additional remuneration of extra work—अतिरिक्त काम के लिए अधिक पारिश्रमिक।
Address—स्थिति, पता, संबोधन, संभाषण।
Addressed to—को संबोधित, के पते से।
Address to be presented to His Excellency the Governor—महामान्य राज्यपाल महोदय को मानपत्र देना।
Adduce—उपस्थित करना, प्रस्तुत करना, लाना।
Addemption of legacy—पत्ररिक्थ का समालोप।
Adequate—पर्याप्त, काफी।
Adhere to—लगे रहना।
Adhering to—दर कायम रहते हुए।
Adhesion—चिपकाव, चिपक, लग्नशीलता।
Adhesive—चिपकना।
Adhesive stamps—चिपकनेवाले स्टाम्प, श्लेष्य स्टाम्प, श्लेष्यमुद्रांक (मुद्रांक)। for stamps in forms I.C.G.
Ad Hoc—तदर्थ, एड हाक।
Ad Hoc Committee—तदर्थ समिति।
Adjacent—पार्श्ववर्ती, आसन्न, समीपस्थ, सटा हुआ।
Adjective Law—गौण विधि।
Adjournment—स्थगन।
Adjournment motion—स्थगन प्रस्ताव।
Adjudge—निर्णय करना।
Adjudication—न्यायिक निर्णय, निर्णय।

Adjustment—समाधान, ठीक बिठाना, समीकरण।
Adjustment of central transaction—केन्द्रीय लेनदेनों का तसफिया।
Adjutant—एडजुटेन्ट।
Administer oath—शपथ दिलाना।
Administration—प्रशासन।
Administration, Letter of—प्रशासन पत्र, प्रबन्धाधिकारपत्र।
Administration Board—प्रशासन बोर्ड।
Administration of execution—निष्पादन का स्वीकार किया जाना।
Administration of judgment—न्याय प्रशासन।
Administration report—प्रशासन विवरण, प्रशासन प्रतिवेदन।
Administration suit—रिक्थ प्रबन्ध वाद।
Administrative—प्रशासकीय, इंतजामी।
Administrative account—प्रशासकीय लेखा।
Administrative approval—प्रशासकीय अनुमोदन।
Administrative authority—प्रशासकीय अधिकारी।
Administrative Board—प्रशासकीय परिषद।
Administrative Branch—प्रशासन शाखा।
Administrative charge—प्रशासकीय कार्यभार।
Administrative control—प्रशासकीय नियंत्रण।
Administrative department—प्रशासकीय विभाग।
Administrative policy— प्रशासकीय नीति, इन्तजामी पालिसी।
Administrative quarters—बड़े अफसरों के बँगले।
Administrative report—प्रशासन रिपोर्ट।
Administrative sanction of Government—सरकार की प्रशासकीय स्वीकृति।
Administrator—प्रशासक, प्रबंधक, रिक्थसाधक।
Administrator General—महाप्रशासक।
Administratrix— प्रशासिका, रिक्थप्रबन्धिका।
Admissibility in evidence—साक्ष्य ग्राह्यता, साक्ष्य में मान्यता।
Admissibility of expenditure—व्यय की ग्राह्यता।
Admissibility of leave— छुट्टी का मिल सकना, छुट्टी की नियमानुकूलता।
Admissible— ग्राह्य, उपादेय।
Admission— प्रवेश, अंगीकार, स्वीकरण, प्रतिपत्ति, ग्रहण, मान लेना।
Admission Board— प्रवेश परिषद्।
Admission Card— प्रवेशपत्रक।
Admission of College to privileges of— के विशेषाधिकारियों के लिए कालेजों का स्वीकृत किया जाना।
Admission of instrument—करणपत्रों का ग्राह्य किया जाना।
Admission of students—छात्रों का प्रवेश, विद्यार्थी प्रवेश।
Admission Register—प्रवेशपंजी, रजिस्टर दाखिला।

Admit—प्रवेश करना, भर्ती करना।
Admitted to hearing—सुनवाई के लिये स्वीकृत।
Admonitions—डाँट-फटकार, लेताड़।
Adolescent—अल्पवयस्क, नाबालिग।
Adopt—गोद लेना, ग्रहण करना, मान लेना, दत्तक ग्रहणाधिकार दत्तक ग्रहण या गोद लेने का अधिकार।
Adopted, The motion was—प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।
Adoption—दत्तक ग्रहण, गोद लेना।
Adoption deed—दत्तकपत्र, गोदनामा
Adult Education—प्रौढ़ शिक्षा।
Adult Franchise—प्रौढ़मताधिकार।
Adulteration—हीन मिलावट।
Adult School—प्रौढ़ पाठशाला।
Adult Women School—प्रौढ़ महिला पाठशाला।
Adumberate—छायांकित, छायामात्र, दिखाया हुआ।
Ad valorem—मूल्यानुसार, यथामूल्य।
Ad valorem scale—क्रमसूची मूल्यानुसार।
Advance—अग्रिम, पेशगी, उन्नति।
Advance increment-अगाऊवेतनवृद्धि
Advance payment—पेशगी भुगतान, अगाऊ भुगतान, अग्रिम भुगतान।
dvances, Repayable—अग्रऋण, प्रतिशोध्य।
Advantage—सुविधा, लाभ, बढ़ती।
Adversary—प्रतिद्वन्द्वी।
Adverse—विपरीत।
Adverse possession—विरुद्धाधिकार, कब्जा मुखालिफाना।
Adverting to—पर ध्यान देते हुए।
Advertise—विज्ञापन करना।
Advertisement—विज्ञापन, इश्तहार।
Advice—सूचना, मंत्रणा, परामर्श।
Advice of credit transfer—नामे संक्रम सूचना।
Advice of debit transfer—जमा संक्रम सूचना।
Advisable—उचित, मुनासिब, समुचित।
Advisory—परामर्शदात्री, सलाहकार।
Advisory Committee—सलाहकार समिति, मंत्रणा समिति, परामर्शदात्री समिति।
Advisory Officer—सलाहकार अफसर, मंत्रणा अधिकारी।
Advocate—अधिवक्ता, वकील।
Adovocate General—महाधिवक्ता।
Aerial—हवाई।
Aerial lines—हवाई लाइनें, हवाई तार।
Aerodrome—हवाई अड्डा।
A fee in cash—नकद फीस।
A few showers occurred in the east U. P.—उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में कुछ हलके छींटे पड़े।
Affair—कार्य, कारोबार, घटना।
Affect—प्रभाव डालना, प्रभावित करना।
Affected—प्रभावित, (रोग) ग्रसित, ग्रस्त।
Affidavit—शपथपत्र, हलफनामा।
Affiliation—सम्बन्ध, सम्बद्धता।
Affinity—बन्धुता, रासायनिक आकर्षण, कशिश।
Affirm—प्रतिज्ञा करना, बहाल रखना, पक्का करके कहना।
Affirmation—प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञान, अभिसुपुष्टि।
Affirmative-स्वीकारात्मक, निश्चयात्मक।
Affix—अन्त में लगाना, जोड़ना।
Afforest—जंगल लगाना।

Afforestation—वनरोपण ।
Affray—दंगा, झगड़ा-लड़ाई ।
Aforesaid—उपर्युक्त ।
Afrah—अफरा (रोग) ।
Afternoon—तीसरे पहर, अपराह्न ।
Against—विरुद्ध ।
Age—वयस्, अवस्था ।
Agelimit—वयस्सीमा, वयस् प्रतिबन्ध, उम्र की कैद ।
Agency—अभिकर्तृत्व, आढ़त ।
Agency (Central India)–मध्य-भारत एजेंसी ।
Agency Police—एजेंसी पुलिस ।
Agenda—कार्यावली ।
Agenda, Item on the—कार्यावली का प्रकरण ।
Agent—अभिकर्ता प्रतिनिधि, गुमाश्ता ।
Age-entry—वयस् का लिखा होना, वयस् प्रविष्टि, उम्र का इन्दराज ।
Aggregate—समस्त, पूर्ण योग, सकल, कुल, सब, तमाम, समूह, योग, जोड़, सम्पूर्ण ।
Aggregate Assessment Statement एकत्रित जमाबन्दी का विवरणपत्र ।
Aggregating—कुल मिलाकर, सब मिलाकर ।
Aggressor—अग्रधर्षक, आक्रामक ।
Aggrieved—पीड़ित ।
Agitate—आन्दोलन करना ।
Agitation—आन्दोलन, हलचल ।
Agree—सहमत होना ।
Agree upon—सहमत रजामन्द, तैयार ।
Agreement—नियमपत्र, संविदा, परिपणन
Agreement (Contract deed)—नियमपत्र, संविद् पत्र ।
Agreement for service—सेवा नियम पत्र, सेवा का इकरारनामा ।
Agreement to lease—पट्टा देने का इकरारनामा या नियमपत्र ।
Agricultural—कृषि-विषयक, खेती का
Agricultural implements—कृषि-उपकरण, खेती के औजार ।
Agricultural income—कृषि-आय ।
Agricultural Inspector—कृषि-निरीक्षक, खती इन्सपेक्टर ।
Agricultural lease—कृषि पट्टा ।
Agricultural Machinery—कृषि यन्त्र, खेती की मशीनें ।
Agricultural purposes—कृषि कीं उपयोगिताएँ, खेतिहर के प्रयोजनीय ।
Agricultural Supervison—कृषि पर्यवेक्षक ।
Agriculturist—खेतिहर, कृषक ।
Agriculturists Loan Act—कृषक ऋण एक्ट ।
Ahkambahi (Order book)—आज्ञा पुस्तक ।
Aided—सहायताप्राप्त ।
Aided or unaided—सहायता पानेवाला या सहायता न पानेवाला ।
Aide-de-camp—परिधिस्थ ।
Aide-de-camp-waiting—परिचारी परिधिस्थ ।
Aided school—एडेड स्कूल, सहायता-प्राप्त स्कूल, सहायताप्राप्त पाठशाला ।
Aid, Grant in—सहायक अनुदान ।
Air-bed cushions-बिस्तरेके हवाभरेगद्दे
Aircraft—विमान ।
Air guns—वायु-प्रेरित बन्दूक ।
Alcove—कोलकी, कुंज, गुफा ।
Airmindedness–वायुयान-यात्राभिरुचि
Air Transport-वायुयान द्वारा परिवहन ।
Alias—उपनाम । Alias (Law) दूसरा ।

आदेश-पत्र।
Alibi—अन्यत्रता, अन्यत्र उपस्थिति।
Alien—अन्यदेशी, परदेशी।
Alienation--अलग करना, हस्तान्तरण करना, बचना, स्वत्वार्पण करना।
Aliens Branch—विदेशी शाखा।
Alignment—पंक्तिकरण, प्रस्तर, सफ, पंगत, सड़क या रेलवे का नकशा।
Alimony—भार्याभृति, निर्वाह व्यय, खाना-कपड़ा।
Alimony (pendentilite)—विचार-कालिक, भार्याभृति।
Allegation-अभियोग, आरोप, इलजाम।
Allegiance—निष्ठा, भक्ति, राजनिष्ठा।
Allegiance, Oath of—विधान, निष्ठा, शपथ।
Alliance—मेल, संधि, मैत्री।
Allied—सजातीय।
All India Radio—अखिल भारतीय रेडियो।
Allocation—नियत करना, बँटवारा, विभाजन।
Allocation of funds—रुपयों का वँटवारा।
Allopathic dispensary—एलोपैथिक औषधालय।
Allopathy—एलोपैथी।
Allot—देना, निर्दिष्ट करना, दिष्ट करना
Allotment—दिष्टि, निर्दिष्ट भाग दिया जाना, निर्दिष्ट धनराशि, बटवारा, बँटनी।
Allotment of funds— धनदिष्टि।
Allotment of houses—मकानों का दिया जाना।
Allotment of land—भूमि का दिया जाना, भूमि दिष्टि।
Allotment of residence—गृह दिष्टि मकान का दिया जाना।
Allow—अनुज्ञा करना, इजाजत देना।
Allowance—भत्ता।
Allowance and Honoraria—भत्ते और मानदेय।
Allowance, Superannuation-अधिवार्षिक भत्ता, बुढ़ौती भत्ता।
Allowance to an ex-proprietor—साकितुलमिल्कियत असामी (tenant) को भत्ता।
Allowance to Patwaries and Kanungos--पटवारियों और कानूनगो को भत्ता।
Allowance (Travelling, conveyance, Compensatory)—भत्ता (यात्रिक, सवारी, प्रतिकर)।
Allowed—स्वीकृत, अनुज्ञप्त।
Allusive—संकेतभाषी।
Alluvial—कछार, नदमट।
Alluvial accretion—कछार वृद्धि।
Alluvial Mahal—कछार महाल, नदमट महाल।
Alluvion—कछारी, नदमुक्त भूमि, कछार।
Almirah—अलमारी।
Alphabetical order—वर्ण-क्रम।
Alter—दिया जाना, बदलना, दिष्टि।
Alteration—फेरफार, अदल-बदल, बारी-बारी, हेराफेरी, आपस में उलटा-पलटा।
Altercation—लड़ाई-झगड़ा।
Alternative—विकल्प, पक्ष, वैकल्पिक।
A.M. पूर्वाह्न।
Amal daramad—अमल दरामद।
Amalgamation—एकीकरण, मिलाव।
Amalgamation of functions—

कृत्यों का सम्मिश्रण ।
Amani—आमानी ।
Ambiguous—संदिग्ध, अस्पष्ट, द्वयर्थक, गोल-माल, जूमानी ।
Ambulance—रोगियों की गाड़ी, अस्पताल की गाड़ी ।
Amend—संशोधित करना, संशोधन करना ।
Amended from time to time—समय-समय पर संशोधित ।
Amendment—संशोधन ।
Amendment Act—संशोधक विधान, संशोधक ऐक्ट ।
Amenities—सुविधायें ।
Amin—अमीन ।
Ammunition—युद्धोपकरण, गोला-बारूद ।
Ammunition Pouch—रसद (गोली, बारूद) की थैली ।
Amnesty—राज-क्षमा ।
Amongst—में ।
Amortization (of debts)—ऋण-परिशोध ।
Amount—धनराशि, राशि, रकम ।
Amount estimated for recovery—परिग्रहणार्थ कूती हुई धनराशि ।
Ampere—एमपियर ।
Amphistomes—द्विमुखी कृमि ।
Amplification—विस्तार ।
Anachronism—तारीख की गलती, काल-व्यतिक्रम ।
Analogous—एकरूप, सदृश, के डौल का, साक्षीकृत, तस्दीक किया ।
Analysis—विश्लेषण ।
Analysis at Pharmacological Department—औषधिशास्त्र विभाग द्वारा विश्लेषण ।
Analysis of rate—महसूलों का विश्लेषण ।
Analyst—विश्लेषक ।
Ancestral—पैतृक ।
Ancestral property—पैतृक सम्पत्ति ।
Anchor—लंगर ।
Anchor bolt—लंगर का बल्ला ।
An equivalent—बराबर का ।
Angle of inclination—झुकाव कोण ।
Animal Husbandry—पशुपालन ।
Animal Husbandry Department—पशुपालन विभाग ।
An impressed stamp—ठप्पा किया स्टाम्प ।
Ankle Putty—टखना पर बाँधने की पट्टी ।
Annexed—नत्थी किया हुआ ।
Annexure—नत्थी ।
Annotated—टीका-सहित ।
Announce—घोषणा करना, ख्यापन करना, ऐलान करना ।
Announcement—घोषणा ।
Annual—वार्षिक, सालाना ।
Annual accounts—वार्षिक हिसाब ।
Annual Administration Report—वार्षिक प्रशासन विवरण, शासन प्रबन्ध की वार्षिक रिपोर्ट ।
Annual Administrative Report—वार्षिक प्रशासकीय रिपोर्ट ।
Annual entry—वार्षिक प्रविष्टि ।
Annual entry in character roll—चरित्रवर्ति में वार्षिक प्रविष्टि, अमालनामे में सालाना इन्दराज ।

Annual increment—वार्षिक वृद्धि।
Annual indents—वार्षिक माँग पत्र।
Annual memorandum—वार्षिक स्मृतिपत्र।
Annual repair estimate—वार्षिक मरम्मत का तखमीना।
Annual repairs—वार्षिक मरम्मत।
Annual repairs to roads, buildings & culverts—सड़कों, इमारतों और पुलियों की वार्षिक मरम्मत।
Annual reports—वार्षिक रिपोर्ट, सालाना रिपोर्ट, सांवत्सरिक विवरण।
Annual reports on establishment—स्थापना की वार्षिक रिपोर्ट।
Annual review—वार्षिक सिंहावलोकन, वार्षिक सारलेख।
Annual statement—वार्षिक विवरण, सालाना नकशा।
Annuity—वार्षिकी, वार्षिक वृत्ति, सालियाना, वार्षिक।
Annuity bound—वार्षिक वृत्ति, प्रतिज्ञापत्र।
Annulled—मंसूख किया हुआ, निरर्थक किया हुआ, रद्द किया हुआ।
Annulling—अभिशून्यन।
Annulment of settlement—भू-व्यवस्था की अस्वीकृति।
Anomalous—नियम विरुद्ध, अनैयमिक।
Anomaly—अविधि, अनियम, बेजाब्तगी।
Anonymous—अनामक, गुमनाम, नाम-रहित।
Anonymous petitions—अनामक अभ्यर्थनायें।
Answer book—कापी परीक्षा की कापी, इम्तहान की कापी, उत्तर पुस्तक।
Ante—पूर्व।
Antecedent debt—पूर्ववर्ती ऋण।
Antedate—पिछली तारीख का।
Anthrax—बिसहरिया।
Anti—विनाशक, उन्मूलक।
Anticipated (as of income and expenditure.)—प्रत्याशित, पूर्व-अनुमानित।
Anticipated excess—प्रत्याशित व्यय-वृद्धि।
Anticipated expenses & savings—प्रत्याशित व्यय और बचत।
Anticipated saving—प्रत्याशित बचत।
Anticipation—प्रत्याशा।
Anticipatory—प्रत्याशित।
Anticipatory pension—प्रत्याशित पेंशन, प्रत्याशित निवृत्ति-वेतन।
Anti-corruption—भ्रष्टाचार-विनाशक।
Antidote—विषमार।
Anti - inflationary — मुद्रास्फीति रोधक।
Anti-Malaria measures—मलेरिया-प्रतिरोधक कार्य।
Antiquities—प्राचीन चिह्न, प्राचीन अवशेष।
Antiquity—प्राचीन काल।
Anti-rabic apparatus—जलातंक-नाशक यंत्र, बावले कुत्ते आदि काटने का इलाज।
Anti-rabic treatment—अलर्क विष-चिकित्सा।
Anti-rabic treatment centres -

अलर्क विष चिकित्सा केन्द्र ।

Antiseptic fluid—पूतिनाशक द्रव्य, कीड़े मारने का रस, सड़न रोक रस।

Apathy—उदासीनता ।

Apathy or indifference on the part of the Officers was conspicuous—अधिकारियों की उपेक्षा या उदासीनता स्पष्ट थी।

Aperture—सूराख, छेद।

Apex—सिरा, चोटी, नोक, शिखर।

Apology—क्षमा-याचना, क्षमा-प्रार्थना, माफी माँगना।

Apparatus—यन्त्रजाल, यन्त्र ।

Apparatus (Physical)—यंत्र कलाप (भौतिक) ।

Apparatus (when taken as a whole)—यंत्रजाल ।

Apparatus(when in relation to a particular experiment)—साधित्र।

Apparent—प्रव्यक्त, साफ, स्पष्ट, प्रत्यक्ष

Appeal—पुनर्न्यायार्थना, अपील।

Appeal clerk—अपील क्लर्क ।

Appeal does not lie to him—उनके यहाँ अपील नहीं हो सकती या नहीं की जा सकती।

Appeals against assessment of Municipal taxes—म्यूनिसिपल करों के निर्धारण के प्रति अपील।

Appeals against the order of—की आज्ञा की अपील, की आज्ञा के प्रति अपील, की आज्ञा के प्रति पुनर्न्यायार्थना।

Appellant—अपील करनेवाला, पुनर्न्यायार्थी।

Appear—उपस्थित होना, दिखाई देना।

Appearance—उपस्थिति, मौजूदगी, हाजिरी।

Appearance slip—हाजिरी अदालत। का परचा, न्यायालय उपस्थिति पत्रक।

Appeasement—संराधन।

Appellant—अपीलान्ट, पुनर्न्यायप्रार्थी।

Appellate authority—अपील सुनने• वाला अधिकारी।

Appellate court—अपील न्यायालय।

Appellate jurisdiction—पुनर्न्याय - र्थना सुनने का अधिकार।

Appellate powers—अपील सुनने का अधिकार।

Appellation—पदवी, नाम, उपपद, विशेषण।

Appended—अनुलग्न, संयुक्त, नत्थी किया हुआ।

Appendices—नत्थियाँ।

Appendix to budget estimates—बजट तखमीनों के परिशिष्ट।

Appendix—परिशिष्ट, तालिका, क्रोड़पत्र।

Appertaining to—से सम्बन्धित, से सम्बद्ध, से संसक्त।

Appliances—प्रयोजनीय यंत्र।

Applicability—प्रयोगार्हता, प्रयोज्यता

Applicable—लागू।

Applicant—प्रार्थी।

Application—प्रार्थनापत्र।

Application for alienation—हस्तान्तरण का प्रार्थनापत्र।

Apply—लागू होना, लागू करना, उपयोग करना।

Appointment—नियुक्ति।

Appointment of Commission—कमीशन की नियुक्ति।

Appointment Department—नियुक्ति विभाग।

Appointment of power—प्रवि•

कार के निष्पादन में नियुक्ति।
Appointment, Power of—नियोजन अधिकार।
Apportionment—बाँट।
Appraisement—मूल्य निर्धारण।
Appreciable—आगण्य।
Appreciably—गुणज्ञतापूर्वक।
Appreciation—अविमूल्यन, कीमत बढ़ाना, मूल्य बढ़ाना।
Apprehended—सञ्चित बन्धन।
Apprehension—समझ, डर।
Apprentice—शिक्ष्यमाण, उम्मीदवार।
Apprentice Line Inspectors—शिक्ष्यमाण श्रेणी इंस्पेक्टर।
Apprentices and probationers—शिक्ष्यमाण और परीक्ष्यमाण।
Apprentice Supervisors—उम्मीदवार पर्यवेक्षक।
Appropriate-उपयुक्त,ठीक,पारग, क्षम
Appropriate charge—उचित प्रभार
Appropriate class—उपयुक्त वर्ग।
Appropriate stamp prescribed or indicated—नियत किया हुआ या बताया हुआ स्टाम्प, उचित स्टाम्प।
Appropriation—पर्यादान,विनियोग।
Appropriation Account—पर्यादान लेखा।
Appropriation Accounts—पर्यादान लेख।
Approval—अनुमोदन, स्वीकृति।
Approved—अनुमोदित, स्वीकृत।
Approved candidate—स्वीकृत उम्मीदवार।
Approved contractors—अनुमतिप्राप्त ठेकेदार, मंजूरशुदा ठेकेदार।
Approved projects—स्वीकृत योजनायें, मंजूरशुदा योजनायें।
Approved service—अनुमोदित सेवा, अनुमोदित भृत्या।
Approver—राजसाक्षी, सरकारी गवाह
Approximate—उपसन्न, सन्निकट।
Approximate area—आसन्न क्षत्रफल
Approximate date—आसन्न दिनांक।
Apron—चोगा, उपरिपरिधान।
Aqueduct—जल-नियंत्रक पुल।
Arable—खेती योग्य, कृषि योग्य।
Arbitrary—मनमानी, अतंत्र।
Arbitration—विवाचन, पंचनिर्णय।
Arbitrator—मध्यस्थ, पंच।
Arboriculture—वृक्षारोपण विद्या।
Arc—चाप, कमान।
Arcade— छत्ता, महराबदार गली।
Arch—महराब।
Archaeological Department—पुरातत्त्व विभाग।
Archaeological Finds—प्राचीन काल की पाई हुई वस्तुयें।
Architect—स्थपति।
Architecture—वास्तु विद्या।
Archway—छत्ता।
Area—क्षेत्र, क्षेत्रफल।
Area comb—क्षेत्र अलगावट।
Area commanded—सेवित क्षेत्र।
Area statement—मिलान खसरा।
Areastatistics—क्षेत्र सम्बन्धी आँकड़े
Area (Supply)—सप्लाई का क्षेत्र।
A reference to the Provincial Return—प्रांतीय नकशे या विवरण-पत्र का हवाला।
Arena—अखाड़ा, तमाशाघर।
Argument—वितर्क, युक्ति, तर्क, दलील, बहस

Arithmetic mean—समान्तर मध्यक
Armament—शस्त्रसज्जित सैन्य, तोप चढ़े हुए रणपोत।
Armed guard—शस्त्री रक्षिगण, हथियारबन्द गारद।
Armed police—सशस्त्र पुलिस।
Armourer—शस्त्र-निर्माता, आयुध-कार (रक्षक)।
Armoury—हथियारघर, शस्त्रागार।
Arms—आयुध, अस्त्र-शस्त्र।
Arms Act & Rules—शस्त्रास्त्र की धारा तथा नियम।
Army (Reservist)—पृष्ठ सैनिक, पुठवार, धृत सैनिक।
Arrangement—विन्यास, क्रमबद्धता, प्रबन्ध, व्यवस्था।
Arrangement of files—फाइलों का विन्यास, फाइलों का प्रबन्ध।
Arrangementsheets—व्यवस्थाफलक
Arrear claims— अवशिष्ट के प्राप्य, बकाया के मुतालबे।
Arrear of maintenance—निर्वाह धन का अवशेष, गूजारे का बकाया।
Arrears—अवशिष्ट, पिछड़ा हिसाब।
Arrears or pay of pension—वेतन या पेंशन का अवशिष्ट भाग या बकाया।
Arrest—गिरफ्तारी, पकड़, पकड़ना।
Arrows—सूजा।
Arsenal—शस्त्रागार, सिलहखाना।
Arson—गृहदाह।
Art—कला, आर्ट।
Arterial—धमनी-संबंधी।
Arterial drainage—धमनी जाल-रूप जलोत्सारण।
Artery forceps—धमनी संदंशिका।
Art-gallery—कलादीर्घा, आर्टगैलरी।
Articles—वस्तुएँ, पदार्थ, चीजें, धारा, अधिकरण।
Articles of Association—संघ के आधार नियम, संस्था विधान।
Articles of Civil Service Regulations— सिविल सर्विस रेग्यूलेशन्स का एक नियम।
Artificial— कृत्रिम, कृतक।
Artisan— कारीगर, दस्तका, रशिल्पकार
Artist—कलाकार।
Arts College—साहित्यादि विद्यालय, आर्ट्स कालेज।
As adapted—जैसा संशोधित करके अनुकूल बनाया गया।
Asbestos—अदाह।
As carriers—वाहक की भाँति।
Ascertain-निश्चय करना, मालूम करना
As compared with—की अपेक्षा, की तुलना में, जैसा कि मिलान किया गया।
As early as possible—यथा संभावित शीघ्र।
Aseptic—अपूतिकर।
Aseptic operation ward—अकोथ शल्यकर्म गृह।
Aseptic ward—अकोथ वार्ड।
Ashman—राखिया।
As hissa fulan fulan—अमुक-अमुक के हिस्से से, अमुक-अमुक के अंश से।
Asked for therein—उससे माँगा गया।
Asking leave—अनुमति माँगना।
As much as possible—जितना अधिक हो सके।
As per detail—जैसा ब्योरे में लिखा है, ब्योरे के अनुसार।
Asphalt—डामर।
As proposed—यथाप्रस्ताव।

As provided under chapter rules of the court—जैसा कि न्यायालय या अदालत नियमों के परिच्छेद में दिया गया है।
As regards—के संबंध में, दृष्टि में रखते हुए।
As required—यथा अपेक्षित।
Assailant—आक्रमणकारी, हमलावर।
Assault—भला-बुरा कहना, टूट पड़ना।
Assembly—सभा, जुटाव।
Assembly, Constituent—संविधान सभा।
Assembly, Legislative-विधान सभा
Assembly resolution-सभा प्रस्ताव।
Assent—स्वीकृति, सम्मति, अनुमनन, रजामन्दी, अनुमति।
Assess—आँकना, जाँचना, कर निर्धारित करना।
Assessment—आँक, कर निर्धारण, निर्धारण, कूत, मालगुजारी।
Assessment remark—कैफियत जमाबन्दी।
Assessment statement—कर-निर्धारण विवरणपत्र।
Assessor—पार्षद्य, पारिषद, असेसर।
Assets—सम्पत्ति पावना, परिसम्पत्।
Assets and liabilities—परिसम्पत् और देनदारी, पावने और देनदारी।
Assign—अभिहस्तांकित करना, नाम लिखना।
Assignee—अभिहस्तांकिती, जिसके नाम हस्तान्तरण किया जाय।
Assignment—अभिहस्तांकन, बेची, सुपुर्दगी।
Assistant Accountant- सहायक लेखापाल।
Assistant Auditor—सहायक लेखा-परीक्षक।
Assistant Commandant—सहायक कमांडेंट।
Assistant Director of Agriculture—सहायक कृषि-संचालक।
Assistant Director of Public Health—सहायक स्वास्थ्य-संचालक।
Assistant Draftsman—सहायक नक्शा-नवीस, सहायक मानचित्रकार।
Assistant Engineer—सहायक वास्तुक, सहायक इंजीनियर, असिस्टेंट इंजीनियर।
Assistant Inspector General—सहायक इंस्पेक्टर जनरल।
Assistant Inspectress—सहायक निरीक्षिका, सहायक इंस्पेक्टरनी।
Assistant Line Inspectors—सहायक लाइन इंस्पेक्टर।
Assistant Master सहायक अध्यापक।
Assistant Midwife—सहायक शिक्षित दाई।
Assistant Mycologist—सहायक कवकशास्त्रज्ञ।
Assistant Paddy Specialist—सहायक धान विशेषज्ञ।
Assistant Professor—सहायक प्राध्यापक।
Assistant Record Keeper Patwari Record-room—महाफिजखाना कागजाते पटवारी का, नायब महाफिज दफ्तर।
Assistant Reference Clerk—सहायक निर्देश क्लर्क, सहायक हवाली क्लर्क।
Assistant Registrar Kanungo—

सहायक रजिस्ट्रार कानूनगो, नायब रजिस्ट्रार कानूनगो।
Assistant ResearchOfficer–सहायक आविष्कार अधिकारी।
Assistant Resident Engineer—सहायक आवासिक इंजीनियर।
AssistantSecretary–सहायक सचिव, असिस्टेंट सेक्रेटरी।
Assistant Storekeeper—सहायक भांडागारिक, सहायक स्टोर कीपर।
Assistant Superintendent—सहायक अधीक्षक।
Asst. Supt. of Police—सहायक पुलिस अधीक्षक (सुपरिन्टेंडेंट)।
Assistant Teacher–सहायक अध्यापक
Association—संघ।
As soon as—ज्योंही कि।
Assumed rent—माना हुआ लगान।
Assumption—मानी हुई बात,कल्पना, धारणा।
Assumption area—कल्पित क्षेत्रफल।
Assumption of charge—कार्यभार ग्रहण करना।
Assumption of charge of duties-कार्यभार या कार्य ग्रहण करना।
Assurance—आश्वासन।
A stamped and addressed envelope—टिकट लगा और पता लिखा हुआ लिफाफा।
Asterisk—तारा चिह्न, तारे का निशान।
As usual—साधारणरीत्या, हस्बमामूल।
As well as—भी।
At a discount—बट्टे पर, बट्टे से।
At an early date—शीघ्र।
Athletic—खेलकूद सम्बन्धी, व्यायाम-विषयक।
At Home—जलपान।
At once—तुरन्त, सद्य।
At random—बे सिर-पैर।
At a premium—बढ़ती पर,वढ़ती से।
Attached Estates—कुड़की की हुई रियासतें, अनुलग्न रियासतें, कुर्क की हुई संपत्ति।
Attached to or with (attached with P.S. to H.C.M.)—साथ अनुलग्न (प्रधान मंत्री के वैयक्तिक सहायक के साथ अनुलग्न)।
Attachment—कुड़की, कुर्की, कुड़क करना (न्या० वि०)।
Attachment of salary—वेतन की कुड़की।
Attain—प्राप्त करना, पाना।
Attempt—प्रयत्न, प्रयास।
Attendance—उपस्थिति।
Attendance Grant—उपस्थिति अनुदान।
Attendance Register—उपस्थिति रजिस्टर, उपस्थिति पंजिका।
Attendant—परिचारक।
Attention—अवधान, ध्यान।
Attest—प्रमाणित करना, साक्षीकृत या तस्दीक करना।
Attestation—साक्षीकरण, तस्दीक।
Attested—प्रमाणित,साक्षीकृत, तस्दीक किया हुआ।
Attested Copy—यथार्थ प्रतिलिपि।
At the instance of—के कहने पर।
At the latest—अधिक से अधिक तक।
Attesting witness—हाशिये का गवाह, उपान्त साक्षी, प्रमाणकर्ता साक्षी।
Attitude—भाव, वृत अवस्था।
Attorney—अभिकर्ता,प्रतिहस्तक,मुख्तार

At your earliest convenience—यथाशीघ्र ।
Auction—घोष विक्रय, नीलाम ।
Audit—आडिट, हिसाब की जाँच ।
Audit and Inspection Note—लेखा परीक्षा तथा निरीक्षण टिप्पणी, आडिट तथा निरीक्षण नोट ।
Audited accounts—जाँचे हुए लेखे, जांचे हुए हिसाब, आडिट किये हुए लेखे या हिसाब ।
Audit certificate—लेखा परीक्षा प्रमाणपत्र ।
Audit intimation—लेखापरीक्षा सूचना ।
Audit note—लेखापरीक्षा टीप, लेखा परीक्षा टिप्पणी ।
Audit objections—लेखा परीक्षा आपत्तियाँ, आडिट की आपत्तियाँ ।
Audit Officer—लेखापरीक्षा-अधिकारी
Auditor—लेखापरीक्षक ।
Audit report—लेखापरीक्षा प्रतिवेदन, आडिट रिपोर्ट ।
Audit requisition—लेखापरीक्षा अपेक्षण, आडिट अपेक्षण ।
Auditorium—सभा-भवन ।
Auger— बरमा ।
Aural education—कर्ण-शिक्षा, श्रवण-शिक्षा ।
Auriscope—कर्णवीक्षण यंत्र, कर्णवीक्ष ।
Authentic—प्राप्त, विश्वस्त, प्रामाणिक सच्चा, असली ।
Authenticated—प्रमाणीकृत ।
Authentication—प्रमाणीकरण ।
Authentication of Bills—विधेयकों का प्रमाणीकरण ।
Authentication of powers of attorney—प्रतिनिधिपत्र का प्रमाणीकरण या तस्दीक ।
Author—ग्रंथकार ।
Authorised—अधिकृत, अनुज्ञात ।
Authorised agent—साधिकार अभिकर्ता, अधिकृत अभिकर्ता ।
Authorised capital—अधिकृत पूंजी ।
Authorities—प्राधिकारीगण, प्राधिकारीवर्ग ।
Authorities to adopt—दत्तक ग्रहण के अधिकारपत्र, गोद लेने के अधिकारपत्र ।
Authority—प्राधिकारी, अधिकारी, सत्ता अधिकार ।
Authority affording technical sanction to estimate—तखमीने की जाब्ते की स्वीकृति देनेवाले प्राधिकारी ।
Authority, Disbursing—वितरण प्राधिकारी ।
Authority (vested in)–(में निहित) अधिकार ।
Authorization—आदेश, अनुज्ञा, इजाजत ।
Authorize—अधिकार देना, अधिकृत करना ।
Authorized agent—अधिकृत एजेंट, प्राधिकृत एजेंट, अधिकृत अभिकर्ता, प्राधिकृत अभिकर्ता, अधिकारप्राप्त एजेंट ।
Authorized discharge—स्वीकृत निकासी, मंजूरशुदा निकासी ।
Automatically—स्वयं, आपसे आप, आप ही, स्वतः ।
Automatic gates—आपचल फाटक, स्वचल फाटक ।
Automobile—आत्मवह ।
Auxilliary Nursing Service—सहायक उपचार सेवा या भृत्या ।

Avail—काम में लाना, लाभ उठाना।
Available— प्राप्य, ग्राह्य।
Avenue—पहुँच, मार्ग, रौस, रविश।
Average—माध्यम, औसत।
Average anna condition—आनों में फसल की हालत।
Average cost—औसत लागत।
Average temperature of day and night—दिन और रात का औसत तापमान।
Average pay—श्रेणिक वेतन, औसत वेतन।
Average salary—माध्यम वेतन, औसत वेतन।
Avian Tuberculin Test—पक्षियों की यक्ष्मा परीक्षा।
Aviation—उड्डयन, विमानचालन।
Avoid—टालना, बचाना, दूर रहना।
Await—प्रतीक्षा करना, स्थगित करना।
Await or suspend—प्रतीक्षा करना या स्थगित करना।
Award—पंच निर्णय देना, पारितोषिक।
Axis—अक्ष, धुरी।
Axis of a circle or sphere—वृत्त या गोल का अक्ष।
Axis of a cone—शंकु-अक्ष।
Axis of a cylinder—बेलन का अक्ष।
Axis of rotation—घुमाव-अक्ष।
Axles—धुरे।
Ayes—हाँ पक्ष, हाँ वाले।

B

Back ground—पृष्ठभूमि, पिछवाड़ा, पीछे की भूमि।
Bacteria-जीवाणु,कीटाणु,शाकाणु(रघु०)
Bacteriological— जीवाणु - विज्ञान-विषयक।
Bacteriological Examination—जीवाणु-शास्त्र-सम्बन्धी परीक्षण।
Badastur—यथापूर्वक।
Bad debts—अशोध्य ऋण।
Bad faith (in law)—बुरा भाव।
Badges—बिल्ला, बैज, परिचायक।
Baggage allowance—सामान-भत्ता।
Bail (Surety)—प्रतिभू, प्रतिभूति, जामिन, जमानत।
Bailable—प्रतिभाव्य, काबिल - जमानत (जमानत के योग्य)।
Bail bonds—प्रतिभूपत्र।
Bailiff—कुड़क अमीन।
Bailment—निक्षेपण।
Balance—शेष, बाकी, संतुलन, तराजू।
Balance sheet—पक्का चिट्ठा, लेन-देन का चिट्ठा, स्थिति-विवरण, आँकड़ा।
Balance (Cash)—रोकड़ बाकी।
Balance, Unspent—अव्ययित शेष।
Balance(Opening and Closing)—शेष (आरंभिक तथा अंतिम)।
Balcony—बारजा, बरामदा।
Ballast—गिट्टी।
Balled Ammunition—गोली।
Ballot—गुप्तमत, गूढ़मत, मतपत्र, शलाका।
Ballot box—शलाका पेटी।
Balustrade—कठघरा, जँगला, बाड़ा।
Bamboo measuring rod—गट्ठा।
Ban—प्रतिबंध, रोक।
Band—बैंड, पट्टी, बंधन।
Bandit—लुटेरा।
Baydolier—बंडोलिया, कारतूस रखने की खानेदार पट्टी।
Banjar—ऊसर।
Bank—तट, बैंक, कोठी, धनागार, अधिकोष

Bank, Canal—नहर की पटरी ।
Bank draft—बैंक की हुंडी, बैंक ड्राफ्ट ।
Banker—आधिकोषिक, महाजन ।
Bankrupt—नष्टनिधि, दिवालिया ।
Bankruptcy—दिवाला ।
Banquet hall—भोज-भवन ।
Bar—अभिभाषक संघ, अर्गल, परिघि, रुकावट, रोक ।
Bar Association—अभिभाषक संघ ।
Bar-at-law—विधिवक्ता, बैरिस्टर ।
Barbed wire—काँटेदार तार ।
Bare—केवल, नग्न ।
Bar-fetters—डंडा-बेड़ी ।
Barge—बोझा ढोनेवाली नाव (Cargo boat);—बजड़ा(Pleasure boat)।
Bark—छाल ।
Barn—खलिहान ।
Barometer—वायुभार-मापक ।
Barrack—वारक, बारिक ।
Barred by limitation—अवधिबाधित
Barrage—बाँध ।
Barren—ऊसर ।
Barret—बैरेट टोपी ।
Barrister—बैरिस्तर, विधिवक्ता ।
Barrow—हाथगाड़ी, ठेला ।
Based—आधारित ।
Base line—आधार रेखा ।
Basement—नींव ।
Base period prices—आधारकाल मूल्य ।
Base plate—आधारपट्टिका ।
Basic—मौलिक, मूलभूत (बुनियादी) ।
Basic pay—मूल वेतन ।
Basic pension—मूल निवृत्ति वेतन ।
Basin—चिलमची ।
Basis—आधार ।
Bastard—जारज, कुपूत, खोटा ।
Batai-nisfi—अधबटाई, अधिया ।
Batch—टुकड़ी, दस्ता, जत्था ।
Bath—स्नान ।
Bathing—स्नान करना, नहाना ।
Bath tub—स्नान-कुंड ।
Baton—डंडा ।
Battalion— बटालियन ।
Batten—डंडा, न्यायदंड ।
Batter—ढहाना, गिराना, तोड़ना, चकनाचूर करना ।
Bay (division of roof)—खंड ।
Bayonets—संगीन ।
Bay window—निकासा ।
Bazaria Tabadila—हस्तांतरण द्वारा
Beam—धरणी, धरन ।
Bearer—वाहक, बैरा ।
Bearing (direction)—दिशा रुख, दिक् स्थिति ।
Bearing (post)—बैरंग ।
Beast—पशु ।
Beat—गश्त ।
Beat (*v*)—मारना पीटना ।
Beat (Patrolling)—गश्त, हलका, इलाका ।
Beat of the gong—घंट-घड़ियाल की चोट ।
Bed—रोगिशय्या, खाट ।
Bed Head Ticket—रोगिशय्या टिकट ।
Bed Head Ticket frame— रोगिशय्या टिकट-पट्ट ।
Bed pan—शय्या-पात्र ।
Bedding— बिस्तरा ।
Bed level—तह का स्तर ।
Bed of river—नदी की तलहटी ।

Bed plate—तल-पट्टिका।
Bed-stand—खाट।
Bee Organizer—मधुमक्षी संगठनकर्ता
Beg—भिक्षा माँगना, प्रार्थना करना।
Beginning—आरंभ।
Behalf of—ओर से।
Behaviour—बरतावा, बरताव, व्यवहार।
Belief—विश्वास।
Bell—घंटी।
Bellows—भस्त्रिका, भाथी।
Belong to—सम्बन्वित होना।
Belowpar—अंकित मूल्य से कम मूल्य पर।
Belt—पेटी।
Bench—न्याय सभा, न्यायासन, व्यवहारासन, अधिकरण (बेंच, अदालत)।
Bench mark—स्तर चिह्न, स्तरांक।
Bench of High Court Judges—न्यायाधीश गण।
Bench of Honorary Magistrates अवैतनिक न्यायाधीश का आसन।
Bench of Magistrates—बेंच मैजिस्ट्रेट, बेंच अधिकरणिक वर्ग।
Benches, Official—मंत्रिवर्ग, मंत्रीगण।
Benches, Treasury—मंत्रिवर्ग, मंत्रीगण।
Bend—मोड़।
Bending movement—मोड़नी प्रवृत्ति।
Beneficial interest—हिताधिकार, लाभदायक स्वार्थ।
Benefit—उपकार, उपकृति, लाभ।
Benevolent Medical Trust—परहितकारी चिकित्सा-प्रन्यास।
Benevolent trust—हितकारी निधि।
Bequeath—वसीयत करना।
Bequest—रिक्थ, उत्तरदान, संकल्प, वसीयत, वसीयतनामा, हिब्बा।
Berth—बर्थ, ढाल, नौशय्या।
Besides—अलावा, अतिरिक्त।
Between—बीच, मध्य।
Beyond time—समय के पश्चात्।
Bia (Grain)—बीज।
Bias—पक्षपात, एकांगी दृष्टिकोण।
Bib cock—टोंटी।
Bid—बोली बोलना, दाम लगाना, आज्ञा देना।
Bidder—बोली बोलनेवाला।
Biennial—द्विवार्षिक, दोसाला।
Bifurcation—दो भागों में बँट जाना।
Bill—विपत्र, विधयक, (कानून, Law) विध्यालेख, हुंडी, बिल, पर्चा।
Bill of exchange—हुंडी।
Bill of lading—वहन-पत्र (भा०सं०) बिल्टी, पोतगत वस्तु का बीजक।
Bill of quantities—परिमाण बिल।
Binder—बाँधनेवाला, बन्धनी।
Binding—बाध्यकारी, पट्ठा, जिल्द।
Binding material—जोड़ने या चिपकाने की वस्तु।
Bit, Bit Head, Bit Reins—लगाम, दहाना, कजलगाम।
Bitumen—राल।
Bituminous cement—राल मिश्रित सीमेंट।
Bi-weekly report—अर्धसाप्ताहिक विवरण (रिपोर्ट)।
Black quarter—लंगड़िया।
Black-market—चोर बाजार।
Blacksmith—लोहार।
Blank—सादा, कोरा, खाली।
Blank books—कोरे रजिस्टर।

Blanket—कम्बल ।
Blanket-coat—कम्बल कोट ।
Blasting—बारूद से उड़ा देना ।
Blaze—दीप्ति, लपट, लपटें उठना ।
Bleach—मसाले से सफेद करना ।
Blight—तुषार, सोख्त ।
Blind Relief Scheme—अन्ध-साहाय्य योजना ।
Blinds (windows)—परदा, झिलमिली ।
Block—उपरोध, ठप्पा, कुन्दा, गृहसमूह ।
Block Kanker—कंकर ब्लाक ।
Blood Pressure Instrument—रक्तभार यंत्र, रक्त निपीड़ यंत्र ।
Blood Transfusion Scheme—रक्त संक्रामण योजना ।
Blotter—सोख्ता ।
Blouse—ब्लाउज ।
Blow—बजाना ।
Bludgeons—सोंटा, डंडा ।
Blue Fringe—नीली झालर ।
Blue Turban Cap—नीला कुलाह ।
Blue vitriol—नीला थोथा, तूतिया ।
Blunder—बड़ी भूल, भूलन, गलती करना ।
Board—परिषद्, पट्ट, तख्ता, पाट, भोजन, खाना-पीना ।
Board of Indian Medicine—भारतीय भेषज-परिषद् ।
Board of Revenue—माल बोर्ड ।
Boat—नाव ।
Boatman—मल्लाह ।
Bodily infirmity—शारीरिक दुर्बलता
Bogey—डिब्बा, बोगी ।
Boiler—भबका ।
Boiler-house-attendant—बायलर-गृह-परिचर ।
Boiling point—खौलाक ।
Bolt—अर्गल, सिटकिनी, चटखनी ।
Bonafide—निर्व्याज, सचमुच का, वास्तविक, असली, प्रामाणिक, सद्भाव-पूर्ण, विश्वस्त ।
Bond—बांड, तमस्सुक, बंध ।
Bond of indemnity—प्रतिपूरक बांड ।
Bonds—प्रतिज्ञापत्र, आबंध, तमस्सुक ।
Bond stress—जुड़ने की शक्ति ।
Bonus—लाभांश (बोनस) ।
Book—पुस्त, पुस्तक, बही ।
Book (v)—बुक करना ।
Book(Adjustment)-पुस्त (समाधान)।
Book debts—पुस्त-ऋण ।
Booking—बुकिङ्ग ।
Booking charges—मालभाड़ा, सामान भाड़ा, टाँकने या दर्ज कराने का खर्च ।
Book-measurement—पुस्तक में लिखी हुई नाप ।
Book-post—पुस्त-प्रेष, बुकपोस्ट ।
Book scale of reference—उद्धरण के लिय पुस्तकीय दरें ।
Book Service—सेवा-पुस्त ।
Book Transfers—पुस्त संक्रम, एक खाते दूसरे खाते में डालना ।
Book Value—पुस्तकीय मूल्य ।
Borer—बोरिंग करनेवाला, नल लगाने-वाला, नल लगाने का यंत्र, वेधन यंत्र ।
Boaring—वेधन, कूपछेदन, नल लगाना ।
Boring (holes)—छेदना, छेदन ।
Borrower—ऋणकर्त्ता ।
Botany—वनस्पति शास्त्र ।
Bottle—बोतल ।
Bottle-neck—संकीर्ण निर्गम मार्ग ।
Bottom—तली, पेंदी ।

Bottomary bond—जलयान (जहाज) के मास्टर का प्रतिज्ञापत्र, बटमरी बांड।
Boulders—महाशिला।
Boundary—सीमा, हद।
Boundary Wall—चहारदीवारी, घेरा।
Bowl—प्याला।
Box—संदूक, पेटी।
Box wood—बक्स की लकड़ी।
Brace—पिस्तौल की पेटी, परतला।
Braces—गैलिस।
Brackets—कोष्ठक।
Brake speed—रुद्ध गति।
Branch—शाखा।
Branch depots—ब्रांच डिपो, शाखा कोठार।
Branch dispensary—शाखा औषधालय।
Branching off—शाखायें फूटना।
Branding—दागना।
Brasso—धातुमार्जक मसाला, ब्रासो।
Brass scale—पीतल का पैमाना।
Breach—दरार, फट, तोड़।
Breach of Contract—संविद्‌भंग।
Breach of Peace—शान्तिभंग।
Breach of Prison-discipline—जेल-अनुशासन का भंग।
Breach of Rule—नियम का तोड़ना, नियम भंजन, नियम-भंग, नियम-उल्लंघन, कानून तोड़ना।
Breach of Trust—खयानत, विश्वास-भंग, विश्वासघात।
Breaches of Canals—नहर-भंग।
Breaches of Law—विधि -भंग, कानून-शिकनियाँ।
Breadth—चौड़ाई।
Breeches—विरजिस।
Break down—असफल हो जाना, बैठ जाना, ठप हो जाना, टूट जाना।
Breaking out—प्रारम्भ होना।
Break of service—नौकरी का क्रम भंग।
Break water—लहरतोड़।
Breassummer—सरदल, लम्बा लिंटल।
Breast wall—आवक्ष-भित्ति, छाती तक की दीवार।
Breeding of cattle—पशु-संवर्धन।
Brick—ईंट।
Brick-work—ईंटों का काम।
Bridle—लगाम।
Bridle road—घुड़सवारों के लिये सड़क।
Bridge—पुल।
Bridge, Combined Road and Rail—रेल और सड़क का सम्मिलित पुल
Bridgehead ways and waterways—सड़क का पुल तथा पानी का पुल।
Bridoon reins—कजलगाम, रिसाले की लगाम।
Bring to notice—ध्यान में लाना।
Broadcast—परिसारण, ब्राडकास्ट।
Broadcast rice—छींटा हुआ धान।
Brought forward—अग्रनीत।
Brought into effect—कार्यान्वित किया गया।
Brush—ब्रुश।
Buck ammunition—छर्रा।
Bucket—डोल, बालटी।
Buckle—बकसुआ, बकलस, मुड़वा।
Budget—आय-व्यय, चिट्ठा, बजट।
Budget allotment—बजट में नियत किया गया।

Budget Department—आय-व्ययक विभाग ।
Budget Estimates—बजट आगणन, आय-व्ययक आगणन ।
Budget Estimation—आय-व्ययक आगणन, बजट आगणन ।
Budget Expenditure—बजट व्यय।
Budget Grant— बजट अनुदान ।
Budget Head—बजट शीर्षक ।
Budgetting—रुपया बजट किया जाना।
Budget, Memorandum explanatory of the—आय-व्ययक की संक्षिप्त व्याख्या ।
Budget provision—बजट में व्यवस्था।
Budget session—बजट अधिवेशन ।
Bugle—बिगल, बिगुल ।
Bugler—बिगुल बजानेवाला, बिगुलर ।
Building—भवन, इमारत ।
Building and Road Branch—भवन और सड़क विभाग ।
Buildings Department— भवन-निर्माण विभाग ।
Bulb—बल्ब, कन्द ।
Bulk—डीलडौल, थोक, भूयोभाग, महाकार ।
Bulk Head—तख्तों की आड़, तख्तों की मिट्टी रोक दीवार ।
Bulk supply— अधिकांश प्रेषित ।
Bullet—गोली ।
Bullet Proof—गोली का असर जिस पर न हो, गोली-कवच ।
Bulletin—बुलेटिन ।
Bulletin section—पत्रिका उप-विभाग ।
Bullion—सोना-चांदी ।
Bully—गुंडा ।
Bundle—पूल ।
Bundle lifter—पूलोत्थापक, बस्ता उठानेवाला ।
Bunds—बंद ।
Bungalow, Inspection—डाक बँगला ।
Burden of proof— प्रमाण-भार ।
Bureau—कार्यपीठ, ब्यूरो ।
Burglar alarms—चोर घंटी ।
Burglary—सेंध लगाना, नकबजनी ।
Burial—गाड़ना, दफन करना ।
Business—कार्य, व्यापार, धन्धा, काम, व्यवहार ।
Bus-service—बस सर्विस ।
Bus-stand—बसों का अड्डा ।
Bus station—बस संस्थान ।
Busy—अभिनियुक्त ।
Butler—खानसामा ।
Butter like—मक्खन जैसा ।
Butt hinge—ठोकरदार चूल, टांकरदार कब्जा ।
Button stick —बटन का फर्मा ।
Buttress—पुस्ता ।
Buy—क्रय करना, मोल लेना ।
Bye-laws—उपनियम ।
By Order —आज्ञा से ।
By Order of the Court—न्यायालय की आज्ञा से ।
Bye-products—उपोत्पाद, गौणोत्पाद, गौण उत्पादित वस्तुए ।
By return of post—लौटती डाक से ।
By virtue of—से ।

C

Cabinet—मंत्रिमंडल ।
Cabinet room—मंत्रिमण्डल कोष्ठ ।
Cable—संदाम, केबिल, तार ।

Cable Crossing—तारकाट, केबिलों की परस्पर काट, केबिलकाट।
Cable Jointer—तार जोड़।
Cadet—बालवीर, कैडेट, सेना छात्र।
Cadre—मूल रचना।
Cadre of Indian Service of Engineers—भारतीय इंजीनियरी सरविस की मूल रचना।
Cadre of U.P. Service of Engineers—उत्तर प्रदेशीय इंजीनियरी सरविस की मूल रचना।
Cadre questions—मूल रचना-संबंधी प्रश्न।
Calamity—आपदा, विपत्ति।
Calculate—गणना करना, जोड़ना, हिसाब लगाना।
Calculating Machine—गणना यन्त्र।
Calculation—गणना, विगणन।
Calculators—गणनाकार।
Calendar—कैलेंडर, तिथिपत्री।
Calendar month—पत्री मास, कैलेंडर मास।
Calendar year—पत्रीवर्ष,कैलेंडरवर्ष।
Calibre—छिद्र व्यास, शक्ति, क्षमता।
Call Book—दर्शन पुस्त, कॉल बुक, मुलाकातियों का रजिस्टर।
Calling for the record—कागजात तलब करना।
Call in question—आपत्ति करना, एतराज करना।
Cambro—कमानदार उभार, कैम्बर।
Campaigns—मुहिम, आन्दोलन।
Camp Assistant—शिविर सहायक, निवेश सहायक।
Camp Clerk—निवेश लेखक, शिविर लेखक, शिविर क्लर्क।
Camp equipage—निवेश संभार।
Camp equipment—निवेश सज्जा।
Camp Patrol—पड़ाव का पहरेदार।
Camps—निवेश, कैम्प, शिविर।
Canal Act—नहर का कानून, केनाल ऐक्ट।
Canal and Forest Department of Provincial Government—प्रान्तीय सरकार का नहर तथा जंगलात विभाग।
Canal dues—कुल्या प्राप्य।
Canal p'oduce—नहर की पैदावार।
Cancel—विलोपित करना, रद्द करना।
Cancellation—विलोपन, मंसूखी, विलीयन, रद्द करना, मंसूख करना, निरसन।
Cancellation Deed—निरसन-पत्र।
Cancelling Officer—रद्द या खारिज करनेवाले अधिकारी।
Cancelled Stamps—रद्द किये हुए स्टाम्प या टिकट।
Candid—साफ, खरा, ऋजु, निष्कपट, स्पष्टवादी।
Candidate—कार्यार्थी, पदार्थी, परीक्षार्थी, उम्मीदवार।
Candidates—उम्मीदवार, प्रार्थी।
Caning—बेंत लगाना।
Canking—कांकिंग, जोड़।
Canopy—वितान, वितानक, सायबान, शामियाना, मंडप, अठखम्भा, चाँदनी।
Cantilever—छज्जा की गार्डन प्रग्रीव।
Cantonment—छावनी।
Cantonment Act—छावनी कानून।
Cantonment Agency—छावनी एजंसी, छावनी अभिकर्तृत्व।
Canvas shoe—किरमिच का जूता।

Canvas—राय माँगना ।
Canvassing—राय माँगना, मत-याचना, मत-संग्रह-कार्य, अपने पक्ष में राय पैदा करना ।
Capability—सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता ।
Capable—समर्थ, योग्य ।
Capacity—क्षमता, पेटा, अमाव ।
Capillaries—केशिकाएँ ।
Capillary attraction—केशाल-आकर्षण ।
Capital—पूंजी ।
Capital and Revenue Accounts—पूंजी और राजस्व लेखे ।
Capitalized—पूंजीकृत ।
Capital outlay—पूंजी लागत ।
Capital sentence—प्राणदंड ।
Capital sentence Register—प्राण-दंड पंजी ।
Capital value—पूंजी मूल्य ।
Capitation charges—प्रति-व्यक्ति-प्रभार ।
Cap of a Well—कुएँ का चौखटा ।
Capture—पकड़ना ।
Carbine bucket—कड़ाबीन आधार ।
Carbon—प्रांगार, कार्बन ।
Carboncopy — प्रांगार - प्रतिलिपि, कार्बन प्रतिलिपि ।
Card board—दफ्ती ।
Card diet—पत्रकाहार ।
Care—संरक्षा (Protection); प्रणिधी (Attention); अवेक्षा (Regard, Attention).
Career—घुड़दौड़ का मैदान, दौर, जीवन-क्रम, जीवन-चर्या ।
Careful—सावधान ।
Careless—असावधान. प्रमद्वर ।
Care of—मार्फत, द्वारा ।
Cargo—नौभार, जहाज की लेप या भरत
Carpenter—बढ़ई, खाती ।
Carriage of Government money—सरकारी रुपये का ले जाया जाना, सरकारी रुपये का ढोना ।
Carriage of tools and plant—औजारों और स्थिर यंत्रों की ढुलाई ।
Cartage—ढुलाई ।
Cartridge—कारतूस ।
Case—मुकदमा, प्रकरण, व्यवहार, न्याय, अर्थ, अक्ष, वाद ।
Case work—प्रकरण-सम्बन्धी कार्य, मुकदमा-सम्बन्धी कार्य ।
Casement—झरोखा, खिड़की, गवाक्ष, वातायन ।
Cash—रोकड़, नगद, नकदी ।
Cash Book—रोकड़ बही ।
Cash Chest—कैश बाक्स, नगदी बकस ।
Cashier—रोकपाल, रोकड़िया ।
Cash memo—रोकपत्र, नगदी पुरजा ।
Cash outlay—नगद लागत ।
Cash rents—नगदी लगान ।
Casting vote—निर्णायक मत ।
Cast iron—ढला लोहा, कच्चा लोहा ।
Castration—बधिया करना, आख्ता करना ।
Casual—आकस्मिक ।
Casual leave—आकस्मिक छुट्टी ।
Casual leave register—आकस्मिक छुट्टी का रजिस्टर ।
Casual vacancies-आकस्मिक रिक्तियां
Catalogue—सूची, सूचीपत्र, पुस्तक-सूची
Catalogue of Register Books—रजिस्टरों की सूची ।
Catchment—पोषक क्षेत्र ।

Catchment area—जलपोषक क्षेत्र।
Category—वर्ग, श्रेणी, मद।
Catheters—मूत्र-शलाका।
Cattle breeding farm—पशुओं की नसलकशी का फार्म।
Cattle killers—पशुवध यंत्र।
Cattle pound—काँजी हाउस, काँजी हौद, मवेशीखाना।
Cattle Priroplasmosis of Red water—लाल मूत्र रोग।
Cattle Theft Police—पशुहरण पुलिस, मवेशी चोरी पुलिस।
Cattle Trespass Act—पशु अतिक्रम अधिनियम।
Cause—हेतु, कारण, वाद, मुकदमा, नालिश, कार्य कराना।
Cause List—वाद-सूची, मुकदमों की सूची।
Cause of Action—वादकारण।
Caution—प्रतिभाव्य, जमानत, सावधानी, चेतावनी, सचेत करना, सावधान करना, कान खोलना।
Cautionary—प्राक्प्रबोधक, चेतावनी रूप।
Caution money—प्रतिभूत, धारण, जमानत।
Cautious—सचेत, जागरूक, सावधान, चौकस।
Cave—गुफा, कन्दरा, खोह।
Caveat—इत्तलानामा, उज्रदारी, सावधानी।
Cease—समाप्त होना, रुकना, बंद होना।
Ceased—समाप्त, खत्म हुआ,अन्त हुआ।
Ceiling—भीतरी छत।
Celebrate—उत्सव मनाना।
Celebration of Literacy Week—साक्षरता-सप्ताह मनाना।
Cell—कोठरी।
Cellular—कोष्ठीय।
Cement—सीमेंट, बज्रचूर्ण, बज्रलेप
Cemetries—कब्रिस्तान।
Censor—दोष वेचक।
Censorship—दोष वेचन।
Censure—निन्दा।
Census—जन-गणना, मर्दुमशुमारी।
Centage charges—सैकड़े पर खर्चा, सौ पर खर्चा।
Central—केन्द्रीय।
Central areas—केन्द्रीय क्षेत्र।
Central Board of Waqfs—वक्फ केन्द्रीय बोर्ड।
Central Committee of Food Standards—खाद्य-प्रमापों की केन्द्रीय समिति।
Central depot—केन्द्रीय कोठार।
Central Excise and Salt—केन्द्रीय उत्पादकर और नमक।
Central Government—केन्द्रीय सरकार।
Centralization—केन्द्रीयकरण।
Centralize—केन्द्रीयकरण, एकतन्त्रीकरण।
Central record office—केन्द्रीय अभिलेखालय, केन्द्रीय मुहाफिजखाना।
Central record room—केन्द्रीय अभिलेखागार, मरकजी मुहाफिजखाना।
Central Revenue Stamps—केन्द्रीय राजस्व स्टाम्प या मुद्रांक।
Central Road Development Fund—केन्द्रीय सड़क-विकास-कोष।
Central Section—केन्द्रीय उपविभाग, केन्दीय विभाग।

Central Stamp Store—केन्द्रीय स्टाम्प भंडार, केन्द्रीय मुद्रांक-भण्डार।
Centre of gravity—गुरुत्व-केन्द्र।
Centrifugal—केन्द्रविमुख, केन्द्रापग।
Centrifugal mistris—सेंट्रिफ्यूगल मिस्त्री।
Centrifugal pump—सेंट्रिफ्यूगल पंप।
Centripetal—केन्द्राभिमुख।
Century—शतक, शताब्दी।
Cereal—अनाज, धान्य।
Cereal rust—अनाज का घुन।
Ceremonial—आचार, शिष्टाचार, चाल, विधि-बद्ध, शिष्टाचारी।
Ceremony—उत्सव, रीति, रसम।
Certain—पक्का, अचूक,अटल, निश्चित, कोई, किसी।
Certainty—अटलता, निश्चय।
Certificate—प्रमाण-पत्र।
Certificate, Medical—चिकित्सकीय प्रमाणपत्र।
Certificate of fitness—आरोग्यता प्रमाणपत्र।
Certificate of registration—रजिस्टरी का प्रमाण-लेख।
Certificate of Sales—विक्रय प्रमाण-पत्र।
Certification—प्रमाणीकरण।
Certification (by Governor)—राज्यपाल द्वारा प्रमाणन।
Certified—प्रमाणित।
Certified copy—प्रमाणित प्रतिलिपि।
Certified extract—प्रमाणित अवतरण, प्रमाणित उद्धरण, तस्दीक किया इन्तखाब।
Certify—प्रमाणित करना।
Cessation—विरति, समाप्ति, विराम।
Cesses—उपकर, महसूल, अबवाब।
Cestui Que Trust—वह व्यक्ति जिस के लिये निक्षेप (trust) किया जाय।
Ceteries Parilus—अन्य बातें पूर्ववत् रहते हुए, अन्य बातें यथापूर्व रहते हुए।
Chah Shikasta (Broken Well)—टूटा हुआ कुआँ।
Chain—शृंखला, लड़ी, जंजीर, जरीब।
Chain and arrows—जरीब और तीर।
Chair—पीठिका।
Chair (President)—अध्यक्ष।
Chairman—सभापति।
Chairman, Improvement Trust—अध्यक्ष नगर-सुधार प्रन्यास।
Chairman, Panel of—सभापति तालिका।
Chalan—चालान।
Challenge—चुनौती।
Chamber—वेश्म।
Chancellor—अधिपति।
Channel—प्रणाली, प्रणाल, प्रणालिका, मार्ग।
Chods—अव्यवस्था, अस्तव्यस्तता, गोलमाल।
Chaplain—पादरी।
Chapter—परिच्छेद, अध्याय।
Character—चरित्र, गुण, धर्म, प्रकृति, स्वभाव, सदाचार।
Characteristic—लक्षण।
Character of rainfall—वर्षा का प्रकार या दशा।
Character roll—चरित्रवर्ति, आमाल-नामा, चरित्र-लेखा।
Charcoal—लकड़ी का कोयला।
Charge—खर्चा प्रभार (budget); कार्य-भार (administration); संर-

क्षण (custody)।
Chargeable—कर-योग्य।
Chargeable under—में खर्च पड़ने योग्य, में व्ययनीय।
Charge certificate—कार्यभार प्रमाण-पत्र।
Charged (expenditure)—प्रभूत (व्यय)।
Charge of Office—पदभार, पद का चार्ज।
Charges—व्यय।
Charges, Establishment—संस्थापन व्यय।
Charges, Extraordinary—असाधारण प्रभार, असाधारण व्यय।
Charge Sheet—अभियोग फलक, दोषण फलक, फर्द इलजाम, चार्ज शीट।
Charitable—धर्मार्थ, खैराती।
Charitable Endowment Trust—धर्मार्थ-वृत्तिदान, धर्मस्व-प्रन्यास, धर्मार्थ वृत्तिधन ट्रस्ट, धर्मादाय अग्रहार प्रन्यास।
Charity donation—धर्मार्थ दान।
Chart—चार्ट।
Charted High Court—अधिकार-पत्रित उच्च न्यायालय।
Charter Party—जहाज का किरायानामा (भाटक-पत्र), जहाजी इकरारनामा।
Charts-Bed level at Bridge, guarry road—पुल के नीचे की सड़क के स्तर का चार्ट।
Chaufer—कोर मारना।
Chaupal—चौपाल।
Chausala—चौसाला।
Check—जाँचना।
Check date—जाँच की तारीख, पड़ताल की तारीख।
Checking of accounts—हिसाब की जाँच, गणन-परीक्षा।
Check measurement—मापों की पड़ताल, मापों की जाँच, नापों की जाँच।
Check nut—रोक ढिबरी।
Check of discount—बट्टे की जाँच-पड़ताल।
Check of store—आगार भांड की पड़ताल, भंडार वस्तुओं की पड़ताल, भंडारों की पड़ताल।
Checks against fraud—धोखादेही से बचने के लिये रोकथाम।
Chemical—रासायनिक।
Chemical Examiner—रासायनिक परीक्षक।
Chemical Fertilizer—रासायनिक खाद।
Chemical Subordinate—रासायनिक अधीनस्थ।
Chemistry—रसायन शास्त्र।
Cheque—चेक, धनादेश।
Chest—वक्ष, उर, छाती, सीना, बड़ा मजबूत बक्स।
Chicken diet—कुक्कुटशावाहार, चींगाहार।
Chief—मुख्य।
Chief Agricultural Engineer—मुख्य कृषि इंजीनियर।
Chief Controlling Revenue Authority—मुख्य नियन्त्रक राजस्व प्राधिकारी।
Chief Court—मुख्य न्यायालय।
Chief Engineer—प्रधान वास्तुक, चीफ इंजीनियर।

Chief Evacuee Welfare Officer—प्रधान निष्क्रान्तजन कल्याण अधिकारी ।
Chief Inspector Indigenous Dispensaries—देशी औषधालयों के मुख्य निरीक्षक ।
Chief Inspector of Offices—कार्यालयों के प्रधान निरीक्षक ।
Chief Inspector of Stamps—स्टाम्प प्रधान निरीक्षक ।
Chief Judge—मुख्य न्यायाधीश ।
Chief Justice—मुख्य न्यायाधीश ।
Chief Secretary—मुख्य सचिव ।
Chimney—चिमनी, धुआँ का निकाला ।
Chisel dressed—छेनी से हमवार किया हुआ ।
Choice—विकल्प, वरण, पसन्द, उत्तम ।
Cholera—हैजा, विषूचिका ।
Chord—जीवा ।
Chowkidar—चौकीदार ।
Chronological—कालक्रमानुसार ।
Chronological order—ऐतिहासिक क्रम ।
Chronology—कालनिर्णयशास्त्र ।
Cinema—सिनेमा, चलचित्र ।
C. I. D.—गुप्त वार्ता-विभाग, खुफिया पुलिस ।
Cinematograph Act—सिनिमेटोग्राफ ऐक्ट ।
Circle—हल्का, सर्किल ।
Circle—वृत्त, चक्र, चक्कर, दायरा ।
Circle (Eastern Circle)—चक्र (पूर्वी चक्र) ।
Circle Inspector—हलका इन्सपेक्टर, हलका-निरीक्षक ।
Circles, Division and Sub-divisions and Sections—सर्किल, डिवीजन, सबडिवीजन, सेक्शन ।
Circle rate—चक्र-दर ।
Circuit—सरकिट, घेरा ।
Circuit House—गोल घेर, सर्किट हाउस, लाट साहब की कोठी ।
Circular—परिपत्र, गश्ती चिट्ठी ।
Circular of Order—गश्ती आज्ञा ।
Circular of the Board of Revenue in Department VII—सप्तम विभाग में बोर्ड माल की गश्ती चिट्ठियां ।
Circulate—घुमाना ।
Circulating Capital—परिचल पूंजी ।
Circuation—घुमाव, चलन ।
Circumlocation—घुमा - फिराकर कहना, बसनाल ।
Circumstance—परिस्थिति ।
Circumstances and Property Tax—स्थिति तथा संपत्ति-कर ।
Circumstances, Unavoidable—अनिवार्य परिस्थिति ।
Circumstantial—परिस्थिति अनुमेय ।
Circumstantial evidence—घटनात्मक साक्ष्य ।
Cistern—हौज, हौदी, टंकी ।
Citation—दृष्टान्त, समन, उपस्थिति के लिए सफीना, नजीर का हवाला देना ।
Citizen—नागरिक, राष्ट्रिक ।
City allowance—नगर-भत्ता, सिटी-भत्ता ।
Civil—जानपद, व्यवहार (as Civil Court)—लौकिक as (marriage,)
Civil Administration—जानपद प्रशासन, असैनिक प्रशासन ।
Civil Aviation—जानपद उड्डयन
Civil Aviation Department—

जानपद उड़ान विभाग, जानपद विमान विभाग, सिविल एविएशन डिपार्टमेन्ट ।
Civil Court—व्यवहार - न्यायालय, व्यवहारालय, दिवानी ।
Civil death—देशत्याग, वैधानिक मृत्यु, राजद्रोह के कारण स्वत्वों का छीन लिया जाना, संन्यास ।
Civil defence—जानपद प्रतिरक्षा ।
Civil employ—सिविल नौकरी, जानपद नौकरी ।
Civil employee—असैनिक कर्मचारी ।
Civil Engineer—जानपद वास्तुक, सिविल इंजीनियर ।
Civil Judge—व्यवहाराधीश, सिविल जज ।
Civil Police—सिविल पुलिस ।
Civil Procedure—व्यवहार-विधि ।
Civil Procedure Code—व्यवहार-विधि-संग्रह ।
Civil Surgeon—जानपद शल्यवैद्य, सिविलसर्जन ।
Civil Service—सिविल सरविस, मुल्की नौकरी, जानपद भृत्या ।
Civil Service Regulation—सिविल सरविस आनियम, जानपद भृत्या आनियम ।
Civil Works—असैनिक निर्माणकार्य, जानपद निर्माणकार्य ।
Claim—माँग, दावा, मुतालबा ।
Claimant—अधियाचक दावेदार ।
Claims—माँगें, दावे ।
Claims (e. g. arrears)—अधियाचन, माँग (अवशेष की) ।
Claims Inadmissible—अग्राह्य दावे, अग्राह्य अधियाचन ।
Claims of Contractors—ठेकेदारों की माँगें, ठेकेदारों के अधियाचन या दावे ।
Clamp—पकड़नी, पत्तर जड़ना या लगाना, सिकंजा, लोहे की पट्टी ।
Clarification—स्पष्टीकरण, विशदीकरण ।
Clarify—स्पष्ट करना ।
Class—वर्ग, श्रेणी, क्लास, कक्षा ।
Classification—वर्गीकरण ।
Classification and Control of Appeal Rules—अपील के नियमों का वर्गीकरण तथा नियन्त्रण ।
Classified—वर्गीकृत ।
Classified abstracts—वर्गीकृत उपसंक्षेप ।
Classified list of works—निर्माण-कार्यों की वर्गीकृत सूची ।
Clause—वाक्यखंड ।
Clause, Sub—उपधारा ।
Cleaning losses—सफाई से हानि, फटकन ।
Cleaning materials set—सफाई करने का सेट, सफाई सेट ।
Cleaning Register—सफाई का रजिस्टर ।
Cleanliness—शोध, सफाई ।
Clearing agents—चेक, चुकाई एजेंट, क्लीयरिंग एजेंट ।
Clearing Office—चेक के भुगतान का कार्यालय ।
Clear vacancy—स्पष्ट रिक्त स्थान ।
Clemency—राजदया ।
Clergy—पादरी ।
Clerical—लेखकीय
Clerical staff—लेखकवर्ग, क्लर्की अमला ।
Clerk—लिपिक, लेखक, क्लर्क ।
Clerk, Head—मुख्य लेखक, बड़े बाबू ।

Clever—चतुर, पटु, विदग्ध।
Client—मुवक्किल।
Climate—जलवायु।
Clinical—रोग-विषयक।
Clinical Assistant—चिकित्सा-शिक्षा-सहायक।
Clinical Thermometers—चिकित्सकीय तापमापक यंत्र।
Clinics—चिकित्सा-शिक्षालय।
Clip—काटना, कतरना।
Clipping—छेनी लगाना, टुकड़ा काटना, कतरन, रेजगी।
Clock winder—घड़ी की चाबी देने-वाला।
Close—समीप, निकट, बन्द करना।
Closet—कोठरी, कमरा, तहखाना, आला, ताक, अलमारी।
Closing—अंतिम
Closing balance—अंतिम शेष।
Closing stock—अंतिम स्टाक।
Closure—विवादान्तक प्रस्ताव, बन्द। होना।
Closure report—समापन रिपोर्ट।
Closures—समापन, समाप्ति, अंत।
Cloth godown—वस्त्र-भाण्डार, वस्त्र-गोदाम।
Cloud—बादल।
Clumsy—भद्दा।
Clustery—गुच्छेदार।
Co-accused—सह-अभियुक्त।
Coagulate—जमाना, जमना।
Coagulation—जमाव, आतंचन।
Coaltar—तारकोल।
Coarse—मोटा, मोटा-झोटा।
Coat of arms—कुल-चिह्न।
Coat of paint—रंग या रोगन का लेप।
Coccidiosis—बदरार्णव रोग।
Cock (bib)—टोंटी।
Cock-stop—टोंटी बढ़िया किस्म की।
Code—संहिता, संग्रह, कोड।
Code number—संकेतांक।
Code of Civil Procedure—व्यवहार-विधि-संग्रह, जाब्ता दीवानी।
Code-word—संकेत शब्द।
Codicil—क्रोड़पत्र रिक्थपत्र-पूरक।
Co-efficient—गुणक, वारद्योतक।
Coercion—अनुचित दबाव।
Cofferdam—नींव खोदने के लिये पानी रोक दीवार।
Cognate—सजातीय, सगोत्र, एक ही कुल से संबंधित।
Cognizable—हस्तक्षेप्य, अनुसंधेय (काबिल दस्तन्दाजी पुलिस), अभिज्ञेय।
Cognizable (offence)—पुलिस द्वारा हस्तक्षेप्य, अनुसंधेय।
Cognizance—संज्ञान, हस्तक्षेप (दस्तन्दाजी), विचाराधिकार।
Co-heir—सहोत्तराधिकारी, अंशी अंशहारी।
Cohesion—लगाव, सटाव, संलाग।
Coin—टंक, मुद्रा, सिक्का, नाणक।
Coinage—टंकन, सिक्का गढ़ना।
Collaboration—सहयोग, साथ मिल-कर काम करना।
Collapse—अवसाद, संकोच, शक्तिपात।
Collate—तुलना करना, जाँच करना।
Collateral—सहवर्ती, सपिंड (as re-lations)।
Collateral agreement—अतिरिक्त नियमपत्र।
Collateral kinsmen—सगोत्र, सपिंड समानोदक।

Collateral security—सहवर्ती प्रतिभूति, अतिरिक्त प्रतिभूति, जमानत मजीद।
Collation—परीक्षण, तुलना, संशोधन, जाँच या तुलना के लिये इकट्ठा करना, दो भोजनों के बीच का जलपान।
Colleague—सहकारी।
Collecting Government—समाहरणकारी सरकार, इकट्ठा करनेवाली सरकार।
Collection—समाहरण, संग्रह, उगाही।
Collective—सामहिक।
Collective fine—सामूहिक जुर्माना।
Collective responsibility—सम्मिलित उत्तरदायित्व।
Collector—कलेक्टर, समाहर्ता।
College—विद्यालय, कालिज।
Collide—टकराना।
Collision—टक्कर, (रेल का) टकराना, लड़ जाना।
Colonial Prisoners—औपनिवेशिक बन्दी।
Colonial Service—उपनिवेशी सेवा।
Colonies—उपनिवेश, बस्तियाँ।
Colonization—उपनिवेशन।
Colony—उपनिवेश।
Column—स्तम्भ, खम्भा।
Combating disease—रोग का मुकाबला करना।
Combination of Posts—पदों का एकीकरण, पदों का मिलाया जाना।
Combine—मिलाना, एक करना।
Combustion—दहन, जलना।
Combustion Chamber Mistri—दहनागारमिस्त्री।
Comma—अर्धविराम।
Commandant—कमांडेंट, समादेशक।
Commemoration Volume—स्मारक ग्रंथ।
Commence—आरम्भ करना, शुरू करना।
Commencement—आरम्भ।
Commencement and Transitory—आरम्भ और क्षणिक।
Commencement of Act—ऐक्ट का आरम्भ, अधिनियम का आरम्भ।
Commend—प्रशंसा करना, सराहना, सिफारिश करना, सौंपना, प्रस्तुत करना।
Comment—आलोचना, टीका।
Commentary—भाष्य, टीका।
Comments—टिप्पणी, टीका-सम्बन्धी।
Commercial—वाणिज्य-सम्बन्धी।
Commercial Department—वाणिज्य विभाग।
Commercial Formaline—तिजारती एलकोहाल।
Commercial Operations—वाणिज्य-कार्य, वाणिज्य-सम्बन्धी कार्य।
Commission—वर्तन आयोग दस्तूरी, कमीशन।
Commissioner—आयुक्त, कमिश्नर, नियुक्ताधिकारी, (Examination of witness by) द्वारा साक्षियों का परीक्षण।
Commission of inquiry—जाँच-आयोग, जाँच कमीशन।
Commissioner of Revenue—माल कमिश्नर।
Commit—वचनबद्ध होना, सौंपना, सुपुर्द करना, सेशन सौंपना, सेशन सुपुर्द करना, हवालात में देना, समर्पित करना।
Commitment—वचनबद्धता, सौंपा जाना, समर्पण, सौंपना, कारागार भेजना।
Committal—सुपुर्दगी, सेशन को

समर्पण, सौंप।
Committed expenditure प्रतिश्रुतव्यय
Committee—समिति।
Committee of Course in Military Science-युद्ध-विद्या-पाठ्य-क्रम-समिति।
Committee reporting—समिति का विवरण लिखना।
Commode—कमोड।
Commodity—पण्य वस्तु, विक्रय वस्तु।
Common—साधारण, सामान्य।
Common Contingent Charges—सामान्य प्रासंगिक व्यय।
Communal harmony साम्प्रदायिक मेल
Communal hatred—साम्प्रदायिक घृणा, फिर्कराना नफरत।
Communally disturbed area—साम्प्रदायिक उपद्रव-क्षेत्र।
Communal riots—साम्प्रदायिक दंगे।
Communicate—सूचित करना, पत्र-व्यवहार करना।
Communication—यातायात, आवा-जाई, रास्ता, पत्र-व्यवहार, लिखा-पढ़ी, खत-किताबत, बोल-चाल।
Communique—विज्ञप्ति।
Communist—साम्यवादी, कम्यूनिस्ट।
Commute—बदलना, हलका करना।
Commutation—अन्तर्वर्तन, परिवर्तन, लब्वादेश, एकराशिकरण, बदलाव, हलका करना, लघुकरण।
Commutation of Leave—छुट्टी का अन्तर्वर्तन।
Commutation of Pension—पेंशन का संराशिकरण।
Commutation of rent—लगान का रूपान्तर।
Commuted Value—संराशि।
Commuted value of pension—निवृत्ति-वेतन का रूपान्तरित मूल्य, पेंशन की संराशि।
Companies, such as in Railway Companies—कम्पनी।
Company—समवाय, कम्पनी।
Comparative—तुलनात्मक।
Comparative Statement—तुलनात्मक विवरण, तुलनात्मक नकशा।
Compartment—डिब्बा।
Compass—कुतुबनुमा, परकाल।
Compassionate Allowance—दयामूलक भत्ता।
Compassionate Fund—अनुग्रहकोष, दयामूलक निधि।
Compassionate Gratuity—दयामूलक सेवोपहार, अनुग्रह-धन।
Compensation—प्रतिकर, क्षतिपूर्ति, मुआवजा।
Compensation leave—प्रतिकर छुट्टी।
Compensatory—प्रतिकर।
Compensatory Allowance—प्रतिकर भत्ता।
Compete—प्रतियोगिता करना, मुकाबिला करना, होड़ करना।
Competence—स्पर्धा, स्पर्धन।
Competency—योग्यता।
Competent—सुयोग्य, समर्थ, क्षम, शक्त।
Competent authority—समर्थ, प्राधिकारी, शक्त अधिकारी।
Competent Court—समर्थ न्यायालय।
Competitive examination—प्रतियोगिता-परीक्षा।
Compilation—संकलन-संग्रह।
Compile—संग्रह करना, संकलित करना।
Compilation of Statistic—

आंकड़ों का संकलन ।
Compiled—संग्रह किया, संग्रह किया हुआ, संकलित ।
Complainant—परिवादी, अभियोग ।
Complaint—परिवाद, शिकायत, फरयाद, परिदेवना ।
Complementary—संपूरक, पूरक ।
Complete—पूर्ण, पूरा करना ।
Completion—पूर्ति, समाप्ति, समापन।
Completion certificate—समापन प्रमाणपत्र ।
Completion Plans—समापन मानचित्र (नकशे) ।
Completion of Courses—कोर्सों की समाप्ति ।
Complex Mahal—शामलाती महाल, साझे का महाल ।
Compliance—आज्ञापालन, अनुवर्तन ।
Compliance report—अनुवर्तन प्रतिवेदन, अनुवर्तन रिपोर्ट ।
Complicity—सहकारिता, पाप सहायता, साजिश ।
Compliment-अभिनन्दन, स्तुति, प्रशंसा।
Comply—अनुवर्तन करना, पालन करना, मानना ।
Component parts—अंग, अवयव ।
Composit Slab—मसाले की शिला ।
Composition—संधि, समझौता, राजीनामा ।
Composition, Deed of—राज़ीनामा, समझौता-पत्र ।
Compost—मिलवा खाद ।
Compound—संयुक्त यौगिक, (Chemistry)- अहाता, मिलाना, निबटारा करना, राजीनामा करना ।
ompoundable offences— समाधेय अपराध, राजीनामे योग्य अपराध ।
Compounder—मिश्रक, कंपाउंडर ।
Compounding (of an offence)—किसी अपराध का समाधान (राजीनामा) कर लेना ।
Comprehensive—व्यापक ।
Compression—संपीडन, संपीड, खिचाव, खींच ।
Comprising—सम्मिलित करते हुए ।
Compromise—मेल-मिलाप समझौता, समझौता करना, जोखों में डालना ।
(as of reputation).
Compulsion—अनिवार्यता, विवशता, मजबूरी, जोर, बलात्कार ।
Compulsory—अनिवार्य ।
Compulsory Primary Education Mannual—अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षासार संग्रह ।
Compulsory registration—अनिवार्य पंजीयन, अनिवार्य रजिस्टरी ।
Compulsory retirement—अनिवार्य निवृत्ति ।
Compute-हिसाब लगाना, गणना करना।
Computation—गणना ।
Computation of Fees—शुल्क-गणना।
Computed—गणना किया हुआ ।
Computer—गणनाकार, संगणक ।
Computing—गणना ।
Concave—गहरा (Context will differentiate it from deep)
Conceal—पिहित करना, छिपाना ।
Concentration Camp—काराशिविर, कारा कैम्प ।
Concentric—संकेन्द्र ।
Concern—सम्बन्ध, चिन्ता, कारोबार, कोठी, व्यापारिक संस्था, सम्बन्ध रखना ।

Concession—सुविधा, स्वीकृति, रियायत, प्रदान, त्याग ।
Concisely—संक्षेपतः, संक्षिप्त रूप से ।
Conclude—समाप्त करना, परिणाम निकालना ।
Conclusion—अंत, समाप्ति, उपसंहार, परिणाम ।
Concrete work—कंकरीट का काम ।
Concur—एकमत होना ।
Concurrence—सहमति ।
Concurrent—संगामी, (going together), समकालिक । (as concurrent sentence), एकमत, संयुक्त, समान ।
Concurrent judgment—एकमत निर्णय, संमत निर्णय, संयुक्त निर्णय ।
Concurrent jurisdiction—समान सीमाधिकार ।
Concurrent offences—लगातार किये अपराध ।
Concurrent sentences—संयुक्त दंड, एकसाथ चलनेवाले दण्ड ।
Condemn—निन्दा करना, दण्ड देना, अपराधी ठहराना ।
Condemned—दण्डित ।
Condemned prisoner—फाँसी का कैदी, मृत्युदंड-बंदी ।
Condenser attendant—कन्डेन्सर परिचर ।
Condiment—खान का मसाला ।
Condition—प्रतिबन्ध, उपाधि, शर्त, स्थिति, दशा ।
Condition of qualifying service—सेवा की योग्यकारी शर्त या उपाधि ।
Conditional—सप्रतिबन्ध, औपाधिक, शर्तिया ।
Conditional legacy—रिक्थदाय, सोपाधिक दाय ।
Conditional long-term settlement—सोपाधिक दीर्घकालीन भू-व्यवस्था (बन्दोबस्त) ।
Conditionally allow—शर्त के साथ अनुमति देना ।
Conditional order—औपाधिक आदेश, सप्रतिबन्ध आज्ञा ।
Conditional sale—सोपाधिक विक्रय ।
Conditions of service—नौकरी की शत ।
Condonation—क्षमा ।
Condonation of shortage in attendance—उपस्थिति की कमी की मुआफी ।
Condone—क्षमा करना, घ्यान न देना ।
Conduct—आचरण, बर्ताव, व्यवहार, चाल-चलन ।
Conduction—संवाहन ।
Conductor—नेता, नायक ।
Conductors—वाहक ।
Conduit—नाली, पाइप, पटी हुई नाली, नल, बम्बा, पटरी, प्रणाली ।
Cone—शंकु ।
Confederacy—प्रसंधि, राजसंधि ।
Confer—प्रदान करना, देना (as to confer a title), परामर्श करना, राय लेना, मत लेना, बातचीत करना ।
Conference—सम्मेलन, परामर्श ।
Conferment of powers—अधिकार प्रदान ।
Confess—विख्यापन करना, अपराध स्वीकार करना ।
Confession—अपराध स्वीकार, इकबाल ।

Confidence—विश्वास, भरोसा, विश्राम।
Confidential—गोपनीय, गोप्य।
Confidential box—गोपनीय बक्स।
Confidential report—गोप्य प्रतिवेदन।
Configuration—रूप-रेखा, परिलेख, सापेक्ष स्थिति, बाहरी आकार।
Confirm—पुष्टि करना, दृढ़ करना, पक्का करना, तय करना।
Confirmation—पुष्टीकरण, दृढ़ीकरण, दृढ़ीकार, पक्का किया जाना, मुस्तकिली।
Confiscate—समहरण करनां, जब्त करना।
Confiscated weapon—जब्त किए हुए हथियार।
Confiscations—जब्ती,राजसात्करण।
Conformity—अनुरूपता, अनुकूलता, समानता, मेल।
Confused—गड़बड़, घबड़ाया हुआ, संशयात्मक।
Confused—क्रमभंग, व्यग्रता, गड़बड़ी अस्त-व्यस्तता, घबराहट।
Congress Party—कांग्रेस दल, कांग्रेस पक्ष।
Conic section—शांकव काट।
Conjecture—अनुमान, अंदाजा।
Conjugal rights—वैवाहिक अधिकार।
Connexion (Connection)—सम्बन्ध।
Connive—उपेक्षा करना, चश्मपोशी करना, आँख फेरना।
Connivance—अक्षिसंकोच, गजनिमीलिका, आँख बचाना, चश्मपोशी।
Consanguinity—सपिण्डता।
Conscientious—सच्चा,सदसद्विवेकी।
Conscription—जबरिया भरती, अनिवार्य भरतो।
Consecutive—निरंतर, लगातार—number of entries in books to commence and terminate with calendar year—पंचांग वर्ष पर समाप्त होने या उससे आरम्भ होनेवाले रजिस्टरों में प्रविष्टियों की लगातार क्रम-संख्यायें।
Consent—सहमति, स्वीकृति।
Consequence—परिणाम, फल।
Consequential—पारिणामिक।
Consequential relief—परिणामी उपशम।
Conservancy animals—मैला ढोनेवाले पशु।
Conservancy Tax—मैलवाहन-कर।
Conservation—परिक्षण बनाये रखना।
Consider—विचार करना, समझना।
Consideration—विचार,ध्यान,आस्था, आदर, मान, प्रतिफल।
Consideration—प्रतिफल, Denial of receipt of—प्रतिफल पाने से इन्कार करना।
Consign—सौंपना, भेजना।
Consignment—सौंपपत्र, समर्पण, सौंपना, सुपुर्दगी, सौंप, भेजा या सौंपा हुआ माल।
Consignor—भेजनेवाला।
Consist—सम्मिलित होना,अनुकूल होना।
Consistent—संगत, गाढ़ा।
Consists of—में शामिल है।
Consolidate—जमाना, ठोस करना, एक करना, एकीकरण, एकचक्र करना, बाँधना, चकबन्दी करना।
Consolidated—एकीकृत।

Consolidated bills and consolidated statement—एकीकृत बिल और एकीकृत विवरणपत्र ।
Consolidated debt —एकीकृत ऋण ।
Consolidated forecast—एकीकृत पूर्वानुमान ।
Consolidated pay—एकीकृत वेतन ।
Consolidation—एकीकरण, समेकन, सपिण्डन चकबन्दी ।
Consolidation Amin—अमीन चकबन्दी ।
Consolidation of holdings—चकबन्दी ।
Consolidation Officer—चकबन्दी अधिकारी ।
Consolidator—चकबन्दी कर्ता ।
Conspiracy—षड्यंत्र, साजिश ।
Constable—सिपाही, रक्षी, तिलंगा कान्स्टेबिल ।
Constant—सतत, स्थिर, एकसा, बराबर, अचल ।
Constituencies—निर्वाचन क्षेत्र ।
Constitute—निर्माण करना, स्थापित करना, नियुक्त करना, संविहित करना, संविहित होना, बनाना ।
Constitution—संविधान ।
Constitution of Services—सेवा-विधान ।
Constitution Order—विधान आज्ञा ।
Construction—निर्माण, रचना ।
Constructive Trust—अनुमानसिद्ध प्रन्यास ।
Consult—संमंत्रण करना, परामर्श करना ।
Consultation—परामर्श, मंत्रणा, सलाह ।
Consumable—खाने-खरचने योग्य ।
Consumer—उपभोक्ता ।
Contact—सम्पर्क, संपर्क करना ।
Contagious disease—छूत की बीमारी, संक्रामक रोग ।
Contain—धारण करना, रखना, अँटना, सम्मिलित करना ।
Containing—रखते हुए ।
Contemplated—सोचा गया, ख्याल किया गया ।
Contemporary—समकालीन ।
Contempt-अवहेलना, अपमान, मानहानि ।
Contention—विवाद ।
Contents—विषयसूची, अन्तर्वस्तुएँ, अन्तर्लेख ।
Contested—विवादात्मक ।
Context—प्रसंग ।
Contiguity—समीपता, मेल, लगाव ।
Contiguous—मिला हूआ, समीपस्थ, लगा हुआ ।
Contingencies—संभाव्य व्यय, प्रासंगिक व्यय, संभावना ।
Contingency—संभावना, संयोग, प्रासंगिक व्यय ।
Contingency table—संभावना सारणी
Contingent—प्रासंगिक ।
Contingent charges—प्रासंगिक व्यय, आकस्मिक व्यय ।
Contingent expenditure—प्रासंगिक व्यय-भार ।
Contingent legacy—सापेक्ष रिक्थ ।
Contingent, Reserve (for leave training, casualty)—आकस्मिक धृतदल, छुट्टी ।
Continuance—जारी रहना ।
Continuation—अनुबंध, सिलसिला जारी रहना ।

Continued—अनुबद्ध, अनुवृत, सिलसिला जारी।

Continuous active service—लगातार सक्रिय नौकरी, अविरत सक्रिय भृत्या, लगातार सक्रिय सेवा।

Contour—परिवेश।

Contraband—विनिषिद्ध।

Contract—संविदा, संविद, ठेका, मआहदा, नियत (adj.)।

Contract allowances—नियत भत्ते।

Contract of sale—विक्रय, नियमबद्ध विक्रय, विक्रय संविद।

Contractual relation—संविद जनित संबंध।

Contradict—विरुद्ध कहना, बात काटना; (-ion)—विरुद्धता।

Contradistinction—विभेद।

Contrary—विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध, उल्टा।

Contrast—व्यतिरेक, अन्तर, भेद।

Contravene—भंग करना।

Contravention—उल्लंघन, तोड़ना, विरुद्धता, विरोध, प्रतिकूलता।

Contribution—अंशदान, चन्दा।

Contribution for leave and pension—छुट्टी और पेंशन के लिये अंशदान।

Control—नियंत्रण, नियंत्रण करना, कंट्रोल।

Control and Appeal Rules—नियंत्रण और अपील के नियम।

Control clock—नियंत्रक घड़ी।

Control flume—नियंत्रक फ्लूमनाली।

Control of meeting—सभा का नियमन, सभा का नियंत्रण।

Control rate—कन्ट्रोल भाव।

Controller of Stamps—स्टाम्प नियंत्रक, मुद्रांक नियंत्रक।

Controlling Officer—नियंत्रण अधिकारी (कंट्रोल अफसर), नियंत्रक अधिकारी।

Control watch—नियंत्रक घड़ी।

Controversial—विवादास्पद।

Controversy—विवाद, झगड़ा, बहस-मुबाहसा।

Convalescent—बीमारी से अच्छा हुआ, रोगमुक्त।

Convene—बुलाना, इकट्ठा करना या होना।

Convener—संयोजक।

Convenience—सुविधा, सुख, आराम।

Conventionally—रिवाजी तौर पर, प्रथानुसार।

Conversant—परिचित, वाकिफ।

Conversation—बातचीत।

Conversing—बातचीत करते हुए।

Conversion—पलट, श्रम-परिवर्तन, बदला जाना, पलटा जाना।

Conversion table—रूपान्तरण सारणी

Convert—रूपान्तरित करना।

Convey—पहुँचाना, ले जाना, समर्पण करना, हस्तांतरित करना।

Conveyance—सम्पत्ति हस्तांतरण, हस्तान्तरणपत्र।

Conveyance allowance—सवारी भत्ता।

Conveyance charges—यान-व्यय।

Conveyancer—स्वत्वांतरपत्र-कर्ता।

Convict—आधर्षित, कैदी।

Convicting—सजा देनेवाले, दंड देनेवाले।

Convicting Court—सजा देनेवाली अदालत।

Conviction—विश्वास, सजा, आधर्षण, कैद ।
Co-operate—साथ देना, मिलकर काम करना, सहयोग करना ।
Co-operation—सहकार्य, सहयोग, सहकारिता ।
Co-operative—सहकारी ।
Co-operative Department—सहकारी विभाग ।
Co-operative Societies—सहकारी समितियाँ ।
Co-opt—सम्मिलित करना, कोआप्ट करना ।
Co-option—सम्मिलित किया जाना ।
Co-ordinate—एकीकृत करना, मिलकर काम करना; समवर्गीय (*adj.*)
Co-ordination—सहयोग,एकीकरण ।
Co-owner—स्वामी,मालिक,स्वत्वसाझी ।
Coparcener—अंशी, भागीदार ।
Co-partner—सहभागी, साझीदार ।
Coppice—जंगल ।
Copy—प्रति, प्रतिलिपि, नकल ।
Copy, Advance—अग्रप्रति ।
Copy forwarded to—प्रतिलिपि भेजी गई ।
Copyists—प्रतिलिपिक, नकलनवीस ।
Copy of extract—उद्धरण की प्रतिलिपि ।
Copyright—प्रकाशनाधिकार ।
Copy Stamped Papers—प्रतिलिपि मुद्रित पत्र ।
Corbel—भारधारक बढ़ावा ।
Co-relation—सह सम्बन्ध ।
Co-respondent—सहोत्तरवादी ।
Cornice—सीका,कगार,कंगनी,कारनिस ।
Coronation—राजतिलक, राज्याभिषेक, ताजपोशी ।
Coroner—अपमृत्यु मीमांसक ।
Corporal—शारीरिक ।
Corporal armourer—कारपोरल आर्मरर, कारपोरल आयुधकार ।
Corporal Instructor—व्यायाम शिक्षक
Corporal Punishment—शारीरिक दंड ।
Corporation—निगम, कारपोरेशन ।
Corpus—संग्रह, संपति ।
Corpuscles—अणु-कण ।
Corrected proof—शोधित प्रूफ ।
Correction—शोधन, शुद्धि, दुरुस्ती ।
Correction and Addition Slips—शोधन तथा जोड़ पर्चियाँ ।
Correction fluid—शोधन रस ।
Correction Slip—शुद्धिपर्ची ।
Correspondence—पत्रव्यवहार ।
Correspondence resting with—तक का पत्र-व्यवहार ।
Corresponding—समवर्ती, सहगामी, जवाबी ।
Corresponding Time—पिछले साल के इन्हीं दिनों ।
Corrigenda—शुद्धिपत्र ।
Corrigendum—शुद्धिपत्र ।
Corroborate—समर्थन करना, दृढ़ीकार करना ।
Corrosive sublimater—रसकपूर ।
Corrugated—नालीदार ।
Corrupt—दूषित, भ्रष्ट, भ्रष्ट करना, बिगाड़ना ।
Corruption—भ्रष्टाचार, दुष्टि ।
Corrupt practice—भ्रष्ट कर्म ।
Co-sharer—सहभागी, अंशी ।
Cost—परिव्यय,लागतमूल्य,खर्चा, व्यय ।

Cost of Living Index Number—निर्वाह व्यय देशनांक।
Cost of propulsion—प्रणोद व्यय।
Cost realized—वसूल लागत।
Co-tenent—सह-कृषक,खाता शरीक।
Cotton balls—कपास का गूल।
Council House—सभाभवन, कौंसिल हाउस।
Council of Ministers—मंत्रिपरिषद्।
Council of Physical Culture—शारीरिक शिक्षा परिषद्।
Council of State—राज्य परिषद्।
Council Session–परिषद् का अधिवेशन
Council question—परिषद् प्रश्न।
Counting of Service for—के लिये नौकरी का जोड़ना।
Counsel—मंत्रणा, सलाह, वकील।
Count—गिनना, जोड़ना, अभियोग, charge (in an indictment)
Counter affidavit—प्रतिशपथ पत्र।
Counter-balance—प्रतितोलित करना, काट करना, तुल्य भार करना, बराबर करना, प्रतिसंतुलित करना।
Counter-claim—मुकाबिल दावा।
Counterfeit—कूट, जाली।
Counterfeit coin—जाली सिक्का।
Counter-foil—प्रतिपर्ण।
Counterpart—प्रतिरूप, प्रतिपर्ण,प्रतिमूर्ति, उतारा, प्रतिलिपि, मुसन्ना, तद्रूप, मेल, जोड़, जवाब।
Counter-signature—प्रतिहस्ताक्षर।
Countersigned—प्रतिहस्ताक्षर करना, तस्दीकी दस्तखत करना।
Country—देहात, ग्राम्य।
Country wood—देसी लकड़ी।
Coupe—दो आदमियों के बैठने के लियै चार पहिये की गाड़ी, कूपे।
Couple—युगल, द्वय, मिथुन, जोड़ा, द्वन्द्व (math.)
Coupon—कूपन।
Course—गति, मार्ग, प्रक्रम, (procedure) घुड़दौड़ का मैदान, दौर (Regular succession), धारा, बहाव (Course of a river), जीवन-क्रम (Career), रद्दा (Course of bricks)।
Course of Submission—उपस्थापन क्रम।
Course of Study—पाठ्यक्रम, पाठचर्या, कोर्स।
Court—न्यायालय, अधिकरण, अदालत, चौक, आँगन, चाहना, माँगना।
Court-District Judge—जिला न्यायाधीश का न्यायालय।
Courteous—अनुयायी, मिलनसार।
Court fee—न्याय शुल्क, कोर्ट फीस।
Court Fee Act—न्याय शुल्क विधान, कानून रसूम अदालत।
Court Fee Label—न्याय शुल्क चिप्पी।
Court Martial—फौजी अदालत, सनिक न्यायालय।
Court of law—न्यायालय।
Court of Probate—इच्छापत्र प्रमाणीकरण न्यायालय, अदालत प्रोबेट।
Court of Small Causes—लघुवाद न्यायालय, अदालत खफीफा।
Court of Wards—प्रतिपालक अधिकरण, कोरट, कोर्ट आफ वार्ड्स।
Covenant—संविदा।
Cover—व्यवहार, आकार।
Covering form—गाभिन फार्म।
Covering returns–गाभिन विवरणपत्र।
Crab—केकड़ा, कर्क।

Cradle—पालना, झूला।
Craft—शिल्प, व्यवसाय, धंधा।
Crank—घुमाने का हत्ता।
Create a right—अधिकार पैदा करना।
Creation of a post—जगह का कायम किया जाना, पदस्थापन, पद-स्थापना।
Creative—रचनात्मक, पैदा करनेवाला, पैदा करनेवाली।
Credentials—विश्वासपत्र, सनद, मुख्तारनामा।
Credit—जमा, साख, ऋण, उधार।
Credit advice—जमा की सूचना।
Credit notes—जमा की चिट्ठियाँ, समाकलन पत्र।
Credit revenue—ऋण राजस्व।
Creditor—उत्तमण, ऋणदाता, धनी।
Cremation—शवदाह, दाहसंस्कार।
Cremery—संतानिकालय, मक्खन मलाई शाला।
Crest—शिखर।
Crime Police—अपराध रोधन पुलिस।
Crime Records Officer—अपराध अभिलेख अधिकारी।
Crime reports—अपराध रपटें।
Criminal—अपराधी, दण्ड्य, आपराधिक।
Criminal Intelligence Gazette—खुफिया विभाग का गजट।
Criminal Investigation Department (C. I. D.)—खुफिया विभाग, गुप्तचर विभाग।
Criminal mental patient—मस्तिष्क रोगी, अपराधी।
Criminal offence (Stamp Law)—दण्ड्य अपराध (स्टाम्प कानून)।
Crisis—संकट, संकट-काल।
Criticise—समालोचना करना, आलोचना करना।
Crockery—चीनी के बरतन।
Crop—शस्य, कृषिफल, फसल।
Crop and Season Report—शस्य तथा ऋतु विवरण।
Crop failure—फसल का खराब होना, फसल का बिगड़ जाना।
Crops—फसलें।
Cross-appeal—क्रास अपील।
Cross bar fetters—कैंची-डण्डा-बेड़ी।
Cross-examination—प्रति परीक्षा. प्रत्यनुयोग, जिरह।
Crossing of efficiency bar—प्रगुणता अर्गल का पार करना।
Cross-objection—प्रत्यापत्ति, प्रत्याक्षेप।
Cross reinforcement—चौड़ाई में लोहबलन।
Cross-Section—अनुप्रस्थ छेद, व्यत्यस्त छेद।
Crown—सरकार।
Crown counsel—सरकारी वकील।
Crown debt—राज ऋण।
Crown of an arch—तोरण शीर्ष, मेहराब का शीर्ष।
Cruelty towards animals—जानवरों के प्रति निर्दयता।
Cube—घन।
Cube root—घनमूल।
Cubic—घन।
Cubic feet—घन फुट।
Culinary—पाक विषयक, रसोई का, बावर्चीखाने का।
Culpable—दंडनीय, अपराध।
Culpable homicide not amounting to murder—अपराध नरहत्या जो कतल के दर्जे तक न पहुँची हो।

Cultivate—खेती करना।
Cultivation—कृषिकर्म, जोत, खेती।
Cultivators—किसान, कृषक।
Culturable—कृषि योग्य।
Culture—कर्षण, काश्त।
Culture medium—पोषक माध्यम, संवर्धन माध्यम।
Culvert—पुलिआ।
Cumbersome—कष्टकर, क्लेशप्रद।
Cum Testamento Annexo—संलग्न इच्छापत्र-सहित।
Cumulative legacy—संचयी रिक्थ-दाय।
Cup board—बरतनों को रखनें की अलमारी।
Curator (Museum)—संग्रहालय प्रबन्धकर्त्ता।
Currency—मुद्रा प्रचलन।
Currency expansion—मुद्रा-प्रसार।
Current—प्रचलित, वर्तमान धारा।
Current account—चालू खाता।
Current duties—वर्तमान कर्त्तव्य। (Duty function) (कृत्य कार्य) चालू कर्त्तव्य।
Curriculum—पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों की सूची।
Curtain wall—परदे की दीवार।
Curtail-संक्षेप करना,कम करना,घटाना।
Curtness—रुखाई।
Curve—वक्र।
Cushion—गद्दी, परिस्तोम।
Custodian—संरक्षक।
Custodian Trustee—संरक्षक प्रन्यासी
Custody—संरक्षण, हिरासत।
Custody of—हिरासत,संरक्षण,अधिकार
Custody of stamps—स्टाम्प का संरक्षण
Custody of wills—रिक्थपत्रों का संरक्षण।
Custom—रूढ़ि,आचार, रीति, रिवाज।
Customary—रिवाजी, रूढ़।
Custom Bond—बहिःशुल्क का प्रतिज्ञा-पत्र।
Custom Officer—बहिःशुल्क अधिकारी
Cut—कटौती।
Cutaneous—चर्मीय।
Cut motion—कटौती प्रस्ताव।
Cut motion form—कटौती प्रस्ताव का प्रपत्र।
Cut out—कट आउट, कटौट।
Cutting—काट, तराश, तीखा, चुभता हुआ।
Cut, Token—प्रतीक कटौती।
Cut, Water—पुल का जलकट।
Cycle—साइकिल, पैरगाड़ी, चक्र, दौर।
Cycle allowance—साइकिल भत्ता।
Cycle stretcher—पहियदार वितत डोली।
Cyclostyle—साइक्लोस्टाइल करना।
Cypher—शून्य, गूढ़ाक्षर।
Cypress—यदि धर्मदान का मौलिक उद्देश्य नष्ट हो जाय तो उस सम्पत्ति को उसी प्रकार के किसी और काम में लगाना, सिप्रे नियम।
Cyste—कोष्ठ।

D

D B.B.L. guns—दुनली कारतूसी बन्दूक।
Dacoity—डाका, डकैती।
Dafedar—दफेदार।
Daftaris—दपतरी।
Dagger—कटार।
Daily—प्रतिदिन, दैनिक, दैन।

Daily allowance—दैनिक भत्ता, आह्निक भत्ता।
Daily labour return—दैनिक भृति का चिट्ठा।
Dairy—दुग्धशाला।
Dairy Jamadar—दुग्धशाला का जमादार।
Dairyman—दुग्धशाला कर्मचारी।
Dak—डाक।
Dak bungalow—डाक बँगला।
Dak bungalow establishment—डाक बँगले के कर्मचारी।
Damage—क्षति, उपघात, हानि, हानि पहुँचाना। Damaged stamp—बरबाद हुए स्टाम्प।
Damages—क्षति, हरजाना।
Damages suit—क्षति पूर्ति का वाद।
Damp—आर्द्र, गीला।
Danger—भय, संकट, खतरा।
Dangerous—भयानक, विषम, भयावह, भयजनक।
Darinda—दरिंदा, फाड़ खानेवाला।
Dark room—तमोमय कोष्ठ।
Data—सामग्री, विगत दी हुई बात।
Date—दिनांक, तारीख।
Dated—दिनांकित, बतारीख।
Date of birth—जन्म-दिवस, जन्म-दिनांक।
Date of institution—प्रवेशकीय तिथि।
Day Scholar—अनावासिक छात्र।
Day School—दोपहर का स्कूल, दैनिक स्कूल।
Dead account—मृत लेखा, डूबन्त खाता।
Deal—व्यवहार परिमाण, भाग, सौदा, चीड़ या देवदार का तख्ता।
Dealer—व्यापारी।
Deal thoroughly—पूर्ण रूप से करना।
Dean—डीन, शाखाध्यक्ष।
Dearness—महँगाई।
Dearness allowance—महँगी का भत्ता, महँगाई का भत्ता।
Dear Sir—प्रिय महाशय।
Death duty—मृत्युकर।
Debar—वंचित करना, रोकना।
Debate, Limitation on debate—वाद-विवाद, विवाद पर प्रतिबन्ध।
Debates—वाद-विवाद।
Debenture—ऋणपत्र।
Debentures—दीर्घकालीन ऋणपत्र, गैर सरकारी ऋणपत्र।
Debit—विकलन, नामे, विकलित करना, नामे लिखना।
Debitable—विकलनीय, नामे लिखने योग्य।
Debit advice—नामे पड़ने की सूचना।
Debited—विकलित।
Debit entry—विकलन प्रविष्टि।
Debit side—विकलन पार्श्व।
De Bonis Non—अव्यवस्थित रिक्थ।
Debt—ऋण।
Debtor—ऋणी, कर्जदार।
Decay—क्षय होना, बिगड़ना, मट्टी होना।
Deceased—मृत, स्वर्गीय।
Decentralization Committee—विकेन्द्रीकरण समिति।
Decided on—जब निश्चय किया गया।
Decimal fraction—दशमलव भिन्न।
Decision—निश्चय, निर्णय, फैसला।
Declarant—घोषणाकर्ता।

Declaration—घोषणा ।
Declaration form—वक्तव्य पत्र ।
Declaration of trust—प्रन्यास घोषणा ।
Declaratory—अधिकारघोषक, घोषणात्मक ।
Declaratory decree—अधिकार-घोषक न्याय-पत्र, डिगरी इस्तकरार हक ।
Declare—घोषणा करना ।
Decline—पतन, गिरना, अस्वीकार करना, घटना, कम होना ।
Decontrol—नियंत्रण उठाना, कन्ट्रोल तोड़ना ।
Decorations—सैनिक भूषा चिह्न ।
Decrease—घटना, कम होना, कमी ।
Decree—न्यायपत्र, डिगरी, निर्णयपत्र ।
Decree, Absolute—अंतिम डिगरी ।
Decree for judicial seperation—जुडिशिअल विच्छेद की डिग्री ।
Decree-holder—न्यायपत्रग्राही, निर्णय-पत्रग्राही, डिगरीदार ।
Decree-nisi—सप्रतिबन्ध न्यायपत्र, सोपाधिक न्यायपत्र, शर्तिया डिगरी, प्रतिबन्धित डिक्री ।
Decree-writer—डिग्री-लेखक, न्यायपत्र-लेखक ।
Decretal—डिगरी का, न्यायपत्र-सम्बन्धी
Deduct—कम करना, घटाना ।
Deduction—कमी, अनुमान ।
Deductions—कटौतियाँ, मिनहाई ।
Deed—करणपत्र, काम, करण ।
Deed of agreement—इकरारनामा, नियमपत्र ।
Deed of exchange—परिवर्त्तनपत्र ।
Deed of gift—दानपत्र, करणपत्र ।
Deed of lease—ठीका, पट्टा ।
Deem—विचार करना, समझना, सोचना ।
Deemed—समझा ।
Deface—मिटाना, कुरूप करना ।
Defacto—वस्तुतः, कार्यरूपेण, वास्तविक, दर असल ।
Defalcation—व्यवहरण, हड़पना, खयानत ।
Defamation—मानहानि ।
Default—दोष, कमी, चूक, अभाव, अपराध, अनुपस्थिति ।
Defaulter—अनुपस्थिति, दोषी, नादिहन्द, अशोधक, बाकीदार ।
Defect—त्रुटि, कमी, दोष, कसर, बुराई, ऐब, हीनता, न्यूनता ।
Defective—सदोष, दोषयुक्त, त्रुटिपूर्ण, हीन ।
Defence—प्रतिरक्षा, सफाई, उत्तर (law) बचाव ।
Defence Department—देशरक्षा विभाग ।
Defence Savings Provident Fund—देशरक्षार्थ संचित सहायक कोष ।
Defence witness—उत्तरवाद साक्षी ।
Defendant—प्रतिवादी ।
Defer—आस्थगित करना, स्थगित करना, टालना ।
Deferred—आस्थगित ।
Deferred pay—आस्थगित वेतन ।
Deficiency—अल्पता, हीनता, न्यूनता, कमी ।
Deficiency in embezzlement—गबन, धन में कमी ।
Deficiently stamped—न्यून स्टाम्प-युक्त ।
Define—परिभाषा करना ।

Definite share—निश्चित भाग।
Deficit—घाटा, घटी, कमी।
Deficit grant—घटी पूरक अनुदान।
Define—परिभाषा करना, सीमित करना, ठीक ठीक रूप बताना।
Definite—निश्चित, स्पष्ट, ठीक।
Definition—परिभाषा।
Defraud—हक मारना या दबाना, ठग लेना, धोखे से प्राप्त करना।
Defy—सामना करना, ललकारना।
Degeneration—अधःपतन, स्वभाव-च्युति।
Degrade—अपकृष्ट करना, पद से गिराना, पदावनति करना।
Degree—उपाधि, डिग्री, पदवी, अंश, मात्रा।
Degree College—महाविद्यालय, उपाधि महाविद्यालय, डिग्री कालेज।
Dejure—विधानानुकूल, नियमानुकूल, कानूनेन्, नियमानुसार, न्यायतः।
Delayed and inadequate disposal of audit notes and objection statement defeats the object of audit—लेखा-परीक्षा टिप्पणियों की विलम्ब से की गई और अपर्याप्त कार्यान्विति से लेखा-परीक्षा का मूल उद्देश्य जाता रहता है।
Delayed remittances and withholding of Collections tantamounts to temporary misappropriation—रुपया विलम्ब से भेजना तथा वसूल रुपयों का रोक रखना तत्कालीन अपहरण है।
Delegation—प्रत्यायुक्ति, शिष्टमंडल, प्रतिनिधि-मण्डल।
Delegation of powers—अधिकारों का सौंपा जाना।
Delete—अपमार्जित करना, निकाल देना, मिटा देना।
Deliberate- विचारपूर्वक, विचारपूर्वक किया हुआ।
Delicate—मृदुल, सुकुमार, कोमल, सूक्ष्म।
Deligacy—प्रतिनिधिक।
Delinquency—कर्म बहिर्मुखता, अपराधन।
Delinquent—अपराधी, दोषी, कर्त्तव्य-रहित।
Deliver—सौंपना, पकड़ना, देना, सुपुर्द करना, छोड़ना (माल का), मुक्त करना।
Delivery—समर्पण, दे देना, सौंप।
Delivery (such as in delivery of goods) छुड़ाई, छुड़ाना, जैसे माल छुड़ाई, माल छुड़ाना।
Demand—माँग।
Demand and collection—मांग और उगाही।
Demand, Supplementary—अनुपूरक माँग।
Demarcation—हदबन्दी, मेंड़, डाँड़ा।
Demarcated—सीमांकित।
Demean—लज्जित करना।
Demeanour—व्यवहार, भंगी, भाव।
Demi-official— अर्ध सरकारी।
Demise—मरण, मृत्यु, भूमि-हस्तांतरण।
Demised—पट्टे पर दी गई भूमि।
Demodectic Scabies—खुजली।
Demonstration—प्रदर्शन, निदर्शन।
Demonstration farm—प्रदर्शन फार्म।
Demonstrate—प्रदर्शन करना, सिद्ध

करना, दिखाना।
Demonstrator—प्रदर्शक।
Demurrage—विलम्ब दंड देना, हर-जाना, विलम्ब शुल्क।
Denaturalized—स्वभाव विकृत।
Denial—प्रत्याख्यान, इन्कार।
Denomination—निष्पादन से अस्वीकृति।
Denomination-नाम,सम्प्रदाय,मूल्यांक, मूल्यनाम, अभिधान।
Denominator—हर (गणित)।
De Novo—नये सिरे से।
Density—घनत्व।
Dental O. P.D.—दन्त बहिरंग विभाग।
Dental Room—दन्त चिकित्सा कोष्ठ।
Deny—प्रत्याख्यान करना इन्कार करना।
Department—विभाग।
Departmental—वैभागिक।
Departmental cognizance—वैभागिक हस्तक्षेप।
Departmental Inquiry—विभागीय अन्वेषण,विभागीय जाँच, वैभागिक जाँच।
Departmental proceedings—विभागीय कार्यवाही,वैभागिक काररवाई।
Departure—प्रस्थान।
Departure from normal–सामान्य अवस्था से हटा हुआ होना, सामान्य से भिन्न।
Depend—अवलंबित होना।
Dependent—आश्रित।
Deplete—रिक्त करना, कम करना, खाली करना।
Depletion—रिक्तता, रिक्तीकरण, शून्यता।
Deporatation—देश-निर्वासन, देश-निकाला।
Deposit—जमा करना, निक्षेप करना, उपनिधान करना, उपनिधि, निक्षेप, जमा, आधान, उपनिधान।
Deposit a file—नस्ती को न्यस्त करना, दाखिल करना, जमा करना।
Deposition—सशपथ कथन, साक्षी का बयान, साक्ष्य, इजहार, राज्यच्युति।
Depositor—निक्षेपक, उपनिधाता।
Deposit Slip—जमा पर्ची।
Depot—आगार,भाण्डार,डीपो,गोदाम।
Deprecate—अनुशोच करना, विपरीत प्रार्थना करना।
Depreciation—अवमुल्यन।
Depressed classes—दलितवर्ग,दलित जातियाँ, दलित श्रेणी।
Deprive—वंचित करना,महरूम करना।
Deputation—प्रतिनियुक्ति, डेपूटेशन, प्रतिनिधि-मंडल।
Deputation allowance—डेपुटेशन भत्ता, प्रतिनियुक्तिक भत्ता।
Depute—प्रतिनियुक्त करना, प्रतिनिधि बनाकर भेजना, प्रतिनिधि भेजना।
Deputation—प्रतिनिधिमण्डल।
Deputy—प्रति।
Deputy Commissioner—सहायक प्रत्यायुक्त।
Deputy Director of Agriculture —प्रति कृषि संचालक।
Deputy Director of Education—प्रति शिक्षा संचालक।
Deputy Director of Gardens—प्रति उद्यान संचालक।
Deputy Director of Regions—डिप्टी डाइरेक्टर आफ रीजन्स।

Deputy Inspector of Schools—पाठशालाओं के प्रति निरीक्षक ।
Deputy Hydro-electric Engineer—डिप्टी जल-विद्युत् इंजीनियर ।
Deputy President—उपप्रधान ।
Deputy Revenue Engineer—प्रति राजस्व इंजीनियर ।
Deputy Revenue Officer—डिप्टी माल अफसर ।
Deputy Secretary—प्रति सचिव ।
Deputy Transport Commissioner—प्रति वाहन आयुक्त ।
Derailment—पटरी से उतर जाना ।
Derelict—परित्यक्त, त्यागा हुआ, धार बदलने से नदी द्वारा त्यक्त भूमि ।
Dereliction—प्रमाद ।
De-requisitioning—अधियाचन हटा लेना ।
Derive—प्राप्त करना, परिणाम निकालना ।
Derogate—आंशिक निष्प्रभाव करना, अमर्यादित करना ।
Derogatory—लाघवकारक, अंशत: निष्प्रभावकारी ।
Descendants—सन्तान, वंशधर ।
Descent—वंश, जन्मकुल, संतति, उद्भव औलाद, उत्तराधिकार ।
Describe—वर्णन करना, बयान करना ।
Description—वर्णन ।
Description of executants—निष्पादकों का विवरण ।
Descriptive roll—वर्णन वत्ति ।
Descriptor—वर्णनकर्त्ता ।
Desert—छोड़ देना, परित्याग, त्यजन, रेगिस्तान, मरुस्थल, मरुभूमि ।
Deserters—दलत्यागी ।
Deserve—योग्य होना, अधिकार रखना ।
Desiccators—शोषयिता, सोख्ता ।
Design—रूपांकन, नकशा ।
Designate—मनोनीत, नियुक्त ।
Designation—पदनाम, अभिधान, पदवी ।
Desire—अभिलाषा, मनोरथ, इच्छा ।
Desired—इच्छित, वांछित, इष्ट, अभिलषित ।
Deson tort—स्वयं अपने अकृत्य से ।
Despatch—प्रेषण, आवश्यक चिट्ठी, डाक, प्रेषित करना, संप्रेषित करना, चालान करना, भेजना, शीघ्रता ।
Despatcher—संप्रेषक ।
Despite—प्रतिरोध, अप्रीति, द्वेष ।
Destination—गंतव्य स्थान, लक्ष्य, ठिकाना ।
Destitute—कंगाल, हीन ।
Destroy—नष्ट करना ।
Destruction—नाश, विनाश, विघटन ।
Destruction of records—अभिलेखों का नष्ट करना ।
Detached—अलग ।
Detail—विवरण, ब्यौरा ।
Detailed bills—ब्यौरेवार पुर्जे ।
Detailed estimate—सविस्तर आगणन, विस्तृत अनुमान, ब्यौरेवार तखमीना ।
Detailed list—सविस्तर सूची ।
Detailed report—विस्तृत विवरण ।
Detain—रोक रखना, रोकना, अवरुद्ध करना, नजरबन्द करना ।
Detained students—परीक्षा से रोके गये छात्र ।
Detect—पता लगाना, ताड़ना, पकड़ना ।
Detection—अन्वेषण करना, पता

लगाना, सुराग, खोज, पकड़ ।
Detective—खुफिया जासूस ।
Detention—अवरोधन, अवरोध, नजरबन्दी, रोका जाना, परीक्षा से रोक लेना ।
Detention allowance—अवरोधजन्य भत्ता ।
Detenu—अवरुद्ध, नजरबन्द ।
Deterioration—अवनति, खोट, खराबी, कमी, बिगाड़ ।
Determination—संकल्प, निश्चय, निर्णय, निर्धारण, सिवाना ठहराना ।
Determination of rent—लगान निर्धारण ।
Determine—निश्चित करना, संकल्प करना, निर्णय करना ।
Deterrent disciplinary action is called for—भयात् रोधक अनुशासनात्मक कार्यवाही की आवश्यकता है।
Develop—विकसित करना या होना, खुलना, खिलना, पूर्णता को प्राप्त होना ।
Developing—वर्धन ।
Development—विकास,उभार,सुधार ।
Development Board-विकासपरिषद्।
Development Commissioner—विकास आयुक्त ।
Development Co-ordination—विकास सहयोग ।
Development Minister—विकास मंत्री ।
Development Scheme—विकास योजना ।
Deviation—विचलन, हटाव ।
Deviate—विमागण, रास्ते से हटना ।
Devolution—इन्तकाल हक, अधिकारान्तरण, उत्तराधिकरण ।
Devolve—उतरना ।
Diagnosis—निदान, रोग निदान ।
Diagnostic set—निदानयंत्र कुलक ।
Diagrammatical representation—प्रतिनिधित्व का चित्र द्वारा दिखलाया जाना ।
Diameter—व्यास ।
Diamond drife foreman—हीरक बरमा फोरमैन ।
Diarised—दैनंदिनी पर उल्लिखित ।
Diarrhoea-अतिसार, पतला दस्त आना ।
Diary—दैनंदिनी डायरी, रोजनामचा ।
Diary Copy Book—डायरी की नकलप्रति ।
Diathermy Treatment Room—अति तापन चिकित्सा कोष्ठ ।
Dictionary—कोष ।
Dictum—सिद्धान्त, विधि, नियम, आदेश, वचन, सम्मति प्रकट करना ।
Dietary—आहारीय ।
Diet card—आहार पत्रक ।
Dieted—भोजन-प्राप्त ।
Diet money—भोजन-मूल्य ।
Diet register—आहार पंजी ।
Differ—असम्मत होना, भिन्न होगा ।
Difference—मतभेद, अंतर, भिन्नता ।
Difference of opinion—मतभेद ।
Different—भिन्न ।
Differential—सापेक्ष विशेषक, भिन्नक, अवच्छेदक, भदीय ।
Differentiate—भेद परखना ।
Difficult—दुष्कर, कठिन ।
D.I.G. Police (Deputy Inspector General Police)—आरक्षा के प्रति महा अधीक्षक, पुलिस के डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल ।

Digamy—द्वितीय विवाह।
Digest—क्रमित संग्रह, संक्षिप्त संग्रह।
Dignity—प्रतिष्ठा, गौरव, अनुभाव, शान, पदमान।
Digress—विषयान्तर ग्रहण।
Dilatory—विलम्बकारी।
Dilatory tactics—विलम्बकारीयुक्तियाँ
Diluvian—नदानीत मिट्टी, नदी या बाढ़ से लाई गई मिट्टी।
Dinner party—सहभोज।
Diploma—उपाधिपत्र, सनद, डिप्लोमा, पदक, प्रमाणपत्र।
Diploma of Public Health Course—जनस्वास्थ्य पाठ्यक्रम का उपाधिपत्र।
Diplomacy—चातुरीपूर्ण राजनीति संचालन।
Direct—आदेश देना, संचालन, करना, प्रत्यक्ष, सीधा, साक्षात्।
Direct charges—प्रत्यक्ष व्यय।
Direct collection—अव्यवहित समाहरण, सीधी वसूली।
Directed—आदिष्ट, देशित।
Directed to say—कहने के लिये देशित किया गया।
Direct Expression—स्पष्टार्थ कथन।
Direction—दिशा, निर्देश, निदेश, देशना, हिदायत।
Directly—प्रत्यक्षतः, सीधे।
Director—संचालक।
Directorate—संचालक कार्यालय।
Director General—महासंचालक।
Director General of Commercial Intelligence and Statistics—वाणिज्य संबंधी जानकारी और आंकड़ों के प्रधान संचालक।
Director, Main Sugar Cane Research Station—मुख्य गन्ना अनुसंधान संस्थान के संचालक।
Director of Agriculture—कृषि संचालक।
Director of Education—शिक्षा संचालक।
Director of Health Services—स्वास्थ्य सेवा संचालक।
Director of Jail Industries—कारागार उद्योग संचालक।
Director of Medical and Health Services—चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सेवा संचालक।
Director of Public Health—सार्वजनिक स्वास्थ्य संचालक।
Direct (tax)—प्रत्यक्ष (कर)।
Direct to—को प्रेष्य।
Disability—असामर्थ्य, असमर्थता, अयोग्यता, बेबसी।
Disability leave—असमर्थता-छुट्टी।
Disadvantage—असुविधा, हानि।
Disagree—असहमत होना।
Disallow—अस्वीकृत करना, अनुमति न देना।
Disallowed—अस्वीकृत।
Disappear—लोप होना, तिरोभूत होना, अदृश्य होना।
Disappearance—लोप, गायब।
Disappoint—निराश करना।
Disapproval—असम्मति, अननुमोदन अस्वीकृत।
Disarm—निःशस्त्र करना, हथियार रखवा लेना।
Disburse—वितरण करना, व्यय करना, भुगतान करना।

Disbursement—वितरण, भुगतावा।
Disbursing—भुगतावकारी।
Disbursing Officer—भुगताव-कर्त्ता अधिकारी।
Disc—बिम्ब, थाली, टिकिया।
Discharge—कार्यत्यक्त करना, नौकरी से छुट्टी देना, अभियोगमुक्त करना, अभियोगमुक्ति, उन्मोच (as in विद्युन्मोचन-discharge of electricity), पालन। (as in कार्य-पालन), कार्यभारच्युति।
Discharge Certificate—विमुक्ति प्रमाणपत्र।
Discharged Prisoners' Aid Society—मुक्त बन्दी सहायक समिति।
Disciplinary action—अनुशासनीय विधान।
Disciplinary Proceedings—अनुशासन सम्बन्धी कार्यवाही, अनुशासक कार्यवाही।
Discipline—अनुशासन, विनयन।
Disclaimer—दावा छोड़ना, अधिकारिकता त्याग, दावा उठा लेना, दावे से मुकरना।
Disclose—प्रकट करना, खोलना, बता देना।
Disconnect—संबंध तोड़ देना।
Disconnection—संबंध विच्छेद, कनेक्शन कट जाना।
Discontent—असंतोष।
Discount—भुनाना, पूर्व प्रापण करना, (discount a bill), अपहार, बट्टा, कटौती, मिनहाई, कमी।
Discover—आविष्कार करना।
Discrepancies—त्रुटियाँ, दोष, कमी।
Discrepancy—अशुद्धि, अंतर, कमी, असंगति, भिन्नता, भेद, वैकल्य (im perfection), विषयान्तरण।
Discrepancy memo—कमी का स्मृतिपत्र।
Discretion—विवेक।
Discretional registration—इच्छाधीन रजिस्टरी।
Discretionary—विवेकाधीन, तमीजी।
Discretionary grant—विवेकाधीन अनुदान।
Discuss—वाद-विवाद करना।
Discussion-वाद-विवाद,उत्तर-प्रत्युत्तर।
Disembark—नाव पर से उतरना, उतारना।
Disembarkation—जहाज से उतारना या उतरना।
Disembarking—उतरना, उतारना (जहाज या नाव से)।
Disenter—कब्र में से निकालना।
Disgrace—कलंक, अपकीर्ति, अपमान, पतभंग, निरादर।
Disguise—छद्मवेष, वेषान्तर।
Dishonest—वंचक,असत्यशील, अनृजु, असरल।
Dishonour—अनादरण,अनादर करना।
Disinfectant—रोगाणुनाशक,कीटाणुनाशक।
Disinfection—विसंक्रमण, कीटाणुनाशन।
Dislocation—अस्थि विचलन।
Disloyal—राजद्रोही, निष्ठाहीन, भक्तिहीन।
Dismantle—तोड़ना, गिराना।
Dismantlement—इमारत को तोड़ना, ढाना।
Dismiss—पदच्युत करना।

Dismissal—कार्यच्युति।
Dismissal from service—नौकरी से कार्यच्युत करना, नौकरी से बर्खास्त करना।
Dismissed in default—अनुपस्थिति में खारिज।
Dismissed summarily—क्षिप्रता से खारिज।
Disobedience—आज्ञोल्लंघन, अवज्ञा, आज्ञाभंग, आज्ञा न मानना, नाफरमानी।
Disorder—अव्यवस्था, अस्तव्यस्तता, उपद्रव, रोग।
Dispensary—औषधालय।
Dispensary room—औषधालय कोष्ठ।
Dispense with—छुड़ाना, अलग करना।
Dispense with services—नौकरी से छुड़ाना।
Dispensing—औषध वितरण।
Dispensing room—औषध वितरण कोष्ठ।
Displaced—विस्थापित।
Disposal—अधिकार, निबटारा, विक्रय, निर्वर्तन।
Disposal Directorate—निबटारा डाइरेक्टोरेट।
Disposed of cases—निर्वर्तित प्रकरण।
Dispose of—बेच डालना, निबटाना।
Disposition—प्रकृति, स्वभाव, विन्यास, अभिरुचि, हस्तांतरण (संपत्ति का)।
Dispossess—अधिकार-रहित करना, बेदखल करना।
Disputable Claims—विवादास्पद दावे।
Dispute—विवाद, झगड़ा।
Disqualification—अनर्हता, अयोग्यता, निर्योग्यता, अनधिकारिता।
Disqualify—अनर्ह ठहराना, अयोग्य ठहराना।
Disregard—उपेक्षा करना, ध्यान न देना।
Dissent—विमति।
Dissolution—विलयन, भंग, नाश, ध्वंस।
Dissolution of a board—परिषद् का भंग किया जाना।
Dissolution of partnership—साझा भंगपत्र, भागिता भंगपत्र।
Dissolve—भंग करना, नाश करना, विघटित करना, घुलना, घोलना।
Dissolving—भंग करना।
Distemper—चिड़चिड़ाहट।
Distinct—स्पष्ट, भिन्न।
Distinctive—विशिष्ट, विशेषक।
Distinction—वैशिष्ट्य, विशिष्टता, विभेद।
Distinct matters—विभिन्न, विषय, विविध विषय।
Distinguish—पहिचानना, भेद करना।
Distinguishing letter—विशेषक अक्षर, विभेदक अक्षर।
Distrain—कुड़की करना।
Distraint—कुड़की।
Distress warrant—कुड़की अधिपत्र, कुड़की का वारंट, अभिहरण वारंट।
Distribute—वितरण करना, बाँटना।
Distribution—बँटवारा, बाँट, वितरण।
Distribution main—वितरण का मुख्य पाइप।
Distribution of assessment—बँटवारा जमाबन्दी।
Distribution of power—शक्ति का वितरण।

Distribution of rectified spirit as a propellent—प्रेरिका के रूप में शोधित स्पिरिट का वितरण।
Distribution of spare parts—फुटकर पुरजों का वितरण।
District—जिला।
District Adult Education Committee-जिला प्रौढ़ शिक्षा समिति।
District and Sessions Judge—जिला और दौरा जज।
District Board—जिला वोर्ड, जिला परिषद्।
District Executive Force—जिला पुलिस।
District Field Instructor—जिला क्षेत्र शिक्षक।
District fund—जिला कोष।
District grain account—जिला अन्नराशि लेखा।
District Hospital—जिला अस्पताल।
District Inspector of Schools—स्कूलों के जिला निरीक्षक, पाठशालाओं के जिला निरीक्षक।
District Intelligence Staff—जिला खुफिया पुलिस विभाग।
District judge—जिला जज।
District Magistrate—जिला अधिकरणिक, जिला मजिस्ट्रेट।
District Medical Officer of Health—स्वास्थ्य के जिला चिकित्सा अधिकारी।
District Municipal Board—जिला म्युनिसिपल बोर्ड।
District Organiser-जिला आयोजक।
District Red Cross—जिला रेडक्रास।
District Sailors' Soldiers' and Airmen's Board—नाविकों,सैनिकों तथा उड़ाकों की जिला परिषद्।
District Statement—जिला नकशा या ब्यौरा।
District Waqf Committee—जिला वक्फ समिति।
Disturb—बाधा डालना, क्षुब्ध करना, छेड़ना, ध्यान बटाना।
Disturbance—उपद्रव, दंगा।
Disturbed—उपद्रवग्रस्त।
Diversion—मोड़, मनबहलाव, खेल, बँटाना, विचलन, हटना, हट जाना।
Diversity factor—भेद गुणक।
Divest—अधिकारहीन करना।
Divide—विभाजित करना, विभक्त करना।
Dividend—लाभांश, मुनाफा।
Divisible—विभाज्य।
Divisional—प्रादेशिक।
Divisional Canal Officer—नहर प्रदेश के अधिकारी।
Divisional Head Clerk-डिविजनल हेडक्लर्क।
Divisional Superintendent of Agriculture—प्रादेशिक कृषि अधीक्षक।
Divisions of holdings-जोतों का बटवारा।
Divorce—विवाह-विच्छेद, तलाक।
D. O. (Demi-Official)—अर्धसरकारी, अर्धराजकीय, अर्धशासकीय।
Docket—डाकेट।
Docket form—डाकेट फार्म।
Docketing—संक्षिप्तकरण।
Document—लेख्य, लेखपत्र, दस्तावेज।
Documentary—लिखित, लेख्यात्मक

दस्तावेजी, कागजी।
Documentary evidence—लिखित प्रमाण, लेख्यात्मक प्रमाण।
Dofasli area—दुफस्ली क्षेत्रफल।
D.O. letter—अर्ध सरकारी पत्र।
Domestic—गृह्य, घरेलू।
Domestic purpose—घरेलू काम के निमित्त।
Domestic Science—गृहविज्ञान, घरेलू विज्ञान, गृह-विद्या।
Domicile—निवासी होना, स्थायी निवास, स्थायी निवासस्थान, स्थायी निवास करना।
Dominion—अधिराज्य।
Donatis Mortio Causa—मरणाशंकात् प्रदान।
Donation—दान।
Donee—देयी, दानग्रहीता।
Donee of authority to adopt—गोद लेने का अधिकार पानेवाला।
Donkey stallion—बीज खर।
Donor—दाता, दान-दाता, दानकर्त्ता।
Door—द्वार।
Dormant—सुप्त।
Dormant claim—गुप्ताधिकार।
Dormant partner—अकर्मण्य साक्षी।
Dotted lines—बिन्दी रेखाएँ, बिन्दुमय रेखाएँ।
Double entry system-दोहरी प्रविष्टि पद्धति।
Double lock—दोहरा ताला।
Double shift system—द्विपारी प्रथा।
Doubt—संशय, सन्देह।
Doubtful entry—संदिग्ध प्रवेश, संशयात्मक प्रवेश।
Douche can—डूश पात्र।
Dourine Act—औपदंशिक नियम।
Dowery—दहेज देना।
Dower—स्त्रीधन, दहेज, यौतुक।
Dower debt—दहेज, स्त्री धन संबंधी ऋण, मेहर (मुस्लिम)।
Dowery—यौतुक, दहेज।
Draft—आलेख।
Draft amendment—शोधन का पाण्डुलेख।
Drafter—मसौदा बनानेवाला, पांडु लेखक।
Draft for approval—स्वीकृति के लिए आलेख या पाण्डुलेख, मंजूरी के लिए मसौदा
Draft letter—पत्र का पाण्डुलेख।
Draftsman—मानचित्रकार,नक्शानवीस।
Draft will be taken into consideration-पांडुलेख पर विचार किया जायगा।
Drainage—जलोत्सारण, जलनिकास व्यवस्था।
Draught—आकर्षण, खिचाव, घूंट, हुण्डी, खाका, नकशा, पाण्डुलेख, हवा का झोंका, एक खेल।
Drawee—हुण्डी का भुगतान करनेवाला।
Drawer—आहर्ता, हुण्डी करनेवाला, दराज, लेखीवाला।
Drawing—रेखाचित्र।
Drawing establishment—रेखाचित्र स्थापन।
Drawing Officer—रुपया निकालनेवाला अधिकारी।
Drawing room—बैठक।
Drawn—निकाली गई, ली गई।
Draw sheets— पलंगपोश।
Dress—वैभागिक वेष।
Dresser—मरहम-पट्टी कर्ता।
Dressing—व्रणोपचार, मरहम-पट्टी।

Dressing drum-पट्टीआदिरखनेका डब्बा
Dress Regulations-वेषविभाग नियम।
Drift—बहाव, बौछार, झोंका, बरमा, झुकाव, बहा लाना।
Drill—योग्या, ड्रिल, कवायद, चुस्त, चौकन्ना, सतर्क।
Driver—चालक, ड्राइवर।
Driving licence - चालन अनुज्ञापत्र, मोटर चलाने का लाइसेन्स।
Drought—अनावृष्टि, सूखा।
Drug—भेषज।
Dryage—सूखा।
Dry Autoclave—शुष्क निपीड़ पत्रक।
Dry weather prevailed thereafter till the end of the month-उसके पश्चात् मास के अन्त तक अनावृष्टि रही।
Dual—द्विक, दोहरा।
Due—देय, प्राप्य, शेष।
Due disposal of cases—प्रकरणों तथा वादों का उचित निर्वर्तन।
Due notice—नियमित सूचना, उचित सूनना।
Dues—दातव्य (to be given),प्राप्तव्य (if to be received)।
Duly—यथावत्।
Duly approved—विधिवत् स्वीकृत, बाजाब्ता मंजूर।
Duly stamped—विहित स्टाम्प युक्त।
Duplicate-प्रति,दोहरा,प्रतिलिपि,मुसन्ना।
Duplicate copy दूसरी कापी, द्वितीय प्रति, मुसन्ना, उतारा, दूसरा परत।
Duplicate will—द्वितीय इच्छापत्र।
Durability—चिरस्थायिता।
Duranti Absentia Administrator—अनुपस्थिति में प्रशासक।
Duration—कालावधि, अवधि, स्थिति-काल, समय।
Duration of absence—अनुपस्थिति के दिन।
Duress—दबाव, धमकी, बंधन में रख स्वीकार कराना।
During—में।
Dust proof—धूल रोक।
Duty—कर्त्तव्य, कार्य, कृत्य, बलि (task), शुल्क।
Duty allowance—कर्त्तव्य भत्ता।
Duty on conveyance—सम्पत्ति हस्तान्तरण पर शुल्क।
Duty on counterpart or duplicate—प्रतिलिपि या प्रतिरूप पर शुल्क।
Duty room—कार्य नियोजन कोष्ठ।
Dying—मरण।
Dying declaration-मरणासन्न कथन, मृत्युकालीन वक्तव्य,मरणासन्नीन प्रवचन।
Dysentry—रक्तातिसार।

E

Each—प्रत्येक।
Early—शीघ्र, जल्दी।
Early Kharif Crop—अगौती खरीफ की फसल।
Earmark—के लिये अलग रखना, निर्दिष्ट करना।
Earn—कमाना।
Earned—अर्जित।
Earned leave—अर्जित छुट्टी।
Earned leave on average pay—औसत वेतन पर अर्जित छुट्टी।
Earned leave on full pay—पूरे वेतन पर अर्जित छुट्टी।
Earned leave on half average pay on medical certificate—चिकित्सक के प्रमाणपत्र द्वारा आधे

औसत वेतन पर अर्जित छुट्टी।
Earnest—सच्चा ।
Earnest money—बयाना ।
Earth-work—मिट्टी का काम ।
Ease—सरलता ।
Easement—सुखाधिकार ।
Easement of light—प्रकाश का सुखाधिकार ।
Easement, Suit of-सुखाधिकारका वाद
Easily—सरलतापूर्वक ।
Easy—सरल ।
East coast fever—पूर्व तटीय ज्वर।
Eaves—अलौती, ओलाती, आला ।
Ebony—आबनूस ।
Eccentric—उत्केन्द्र ।
Ecclesiastical—गिरजा सम्बन्धी ।
Ecclesiastical establishment—गिरजा विभाग स्थापना।
Economics—अर्थशास्त्र ।
Economics and Statistics Dept.—अर्थशास्त्र तथा संख्याशास्त्र विभाग।
Economy—अर्थव्यवस्था, अर्थनीति, मितव्ययिता।
Ectozo—बहिर्परजीवी।
Edition—संस्करण।
Editor—सम्पादक।
Education—शिक्षा।
Educational—शिक्षा सम्बन्धी ।
Educational Code-शिक्षा विधिसंग्रह।
Education Psychology— शिक्षा सम्बन्धी मनोविज्ञान ।
Education Deptt.-शिक्षा विभाग।
Edueation Expansion Department—शिक्षा प्रसार विभाग।
Education Expansion Officer—शिक्षा प्रसार अधिकारी।
Effect—प्रभाव करना, निष्पादन करना, पूरा करना।
Effect of enactments—अधिनियमों का प्रभाव।
Effect of registration—रजिस्टरी का प्रभाव ।
Effective—प्रभावकारी,प्रभावक,प्रभावी।
Effective capacity-वास्तविक क्षमता।
Effects—रिक्थ, सामान, माल-असबाब।
Efficiency—प्रगुणता, कार्य-क्षमता।
Efficiency bar—प्रगुणता, अर्गलकार्यक्षमता, अर्गल ।
Efficient—प्रगुण, कार्यक्षम ।
Effluent- बहता हुआ ।
Egress—निष्कास, निकास, अपसार, निकलने का रास्ता।
Ejectment—निष्कासन, बेदखली, निर्मुक्ति ।
Ejectments and relinquishments—अधिकार वंचित ।
Elastic garters—रबड़दार गेटिस ।
Elect—निर्वाचित करना, चुनना ।
Elected members-निर्वाचित सदस्य।
Election—निर्वाचन (चुनाव)।
Election campaign—चुनाव आन्दोलन।
Election petition-निर्वाचन (चुनाव) के विरुद्ध प्रार्थनापत्र, चुनाव अपील।
Election to retain his old or revised scale of pay—अपना पुराना या नया वेतन-क्रम रखने की छूट।
Electoral Constituency— निर्वाचन-क्षेत्र ।
Electoral Roll—निर्वाचक नामावली।
Electors—निर्वाचकगण।
Electrical and Mechanical Assis-

tant of Tube-wells & Irrigation Works—यांत्रिक और विद्युत् सहायक-बिजली के कुएँ और सिंचाई के निर्माण कार्य।
Electrical contractors—विद्युत् के ठेकेदार।
Electrical equipment—विद्युत् सज्जा।
Electrical installation—विद्युत् प्रतिष्ठापन।
Electrical merchants—विद्युत्पण्य-वणिज।
Electrical shocks—बिजली के धक्के।
Electrical Superintendent—विद्युत् अधीक्षक, बिजली अधीक्षक।
Electrical Supervisors—विद्युत् पर्यवेक्षक।
Electrical Supply Administration—विद्युत्चालित प्रशासन।
Electrician—वैद्युतिक।
Electrician's pay-वैद्युतिक का वेतन।
Electric Inspector—विद्युत् निरीक्षक।
Electric installation—बिजली लगाना।
Electric switches—बिजली के बटन, विद्युत्-पिंजा।
Electricity—विद्युत्, बिजली।
Electrification—विद्युतन।
Elegance—सुन्दरता।
Elementary—प्रारम्भिक।
Elementary knowledge—प्राथमिक ज्ञान।
Elementary Psychology—प्राथमिक मनोविज्ञान।
Elementary Rules—आरम्भिक नियम।
Elevation—ऊंचाई।
Eligible—पात्र, योग्य, लिखे जा सकने योग्य।
Eligibility—पात्रता, योग्यता, लिये जा सकने की योग्यता।
Eliminate—निकाल बाहर करना, दूर करना।
Elimination—निकालना, निकाल बाहर करना, बाहर करना, दूर करना।
Ellipse—दीर्घवृत्त।
Elliptic and curved figure—दीर्घवृत्त क्षेत्र, वक्र क्षेत्र।
Eloquent—वाग्मी, वाग्मितामय।
Elucidate—विशदीकरण।
Embankment—पंकार,बंध,बाँध,पुश्ता, किनारे का बंध, तटबन्ध, पुश्ताबन्दी।
Embarkation—प्रारम्भ करना, कदम रखना।
Embarking—जहाज पर चढ़ना या चढ़ाना, पाँव रखना।
Embarrass—द्विविधा में डालना, तंग करना, परेशान करना, हैरान करना।
Embarrassment—आकुलता,परेशानी।
Embezzle—छलहरण करना, गबन करना।
Embezzlement—छलहरण, गबन, अपहार।
Emergency—संकट,संकटकाल,आपात, विपत्ति, आकस्मिक आवश्यकता।
Emergency cases and duty—संकट प्रकरण तथा कर्तव्य।
Emergency provisions—संकट-कालीन आदेश।
Emergency ward—संकट कक्ष।
Emergent—आत्ययिक, आकस्मिक, अति आवश्यक, अचानक।

Emergent Contingent Grant—अत्यावश्यक प्रासंगिक अनुदान।
Emergent Indent—अत्यावश्यक माँग पत्र, आत्ययिक माँग पत्र।
Eminent—प्रमुख, उपम, वृन्दारक।
Emoluments—परिलाभ।
Emphasis—जोर।
Employee—नियोज्य, नियुक्त, नौकर।
Employers' Association—नियोक्ता संघ।
Employment—सेवायुक्ति, व्यवसाय-युक्ति, काम-धंधा, नौकरी, व्यापार।
Employment Bureau—कार्य-नियोजनालय।
Empower—अधिकार देना।
Empowered—अधिकारप्राप्त, अधिकृत।
Empty—रिक्त, खाली।
Emulsion—दूधा, दूधिया दवा।
Enact—विधि बनाना, अधिनियम बनाना, कानून बनाना।
Enactment—अधिनियम, विधायन, कानून, विधिकरण, विधि निर्माण।
Enamelling—शीशे या चीनी का रोगन करना, तामचीनी का काम, मीनाकारी।
Encamera trial—गुप्त-अक्ष-विचार।
Encamp—डेरा डालना, पड़ाव डालना, ठहरना, कैम्प करना।
Encamping ground—निवेश भूमि, पड़ाव भमि, निवेश-स्थल।
Encampment—निवेश, डेरा, पड़ाव, शिविर, छावनी, तम्बू, लश्कर।
Encash—भुनाना, सकारना, हुंडी का भुगतान देना।
Encashment—भुनाना।
Encasing—कोशस्थीकरण, आवेष्टित करना।
Enclose—बन्द करना।
Enclosed herewith—इसके साथ प्रेषित।
Enclosure—साथ बन्द कागज, अन्तर्गत पत्र।
Enclosures—सहावृत, साथ के पत्र, बाड़ा।
Encourage—प्रोत्साहन देना, उत्साहित करना।
Encroachment—अत्यधिकार, भूमि दबा लेना, भूमि चढ़ा लेना।
Encumbered—ऋणग्रस्त, भाराक्रांत।
Ending—समाप्त, समाप्त होनेवाला।
Ending with—से समाप्त होनेवाला।
Endless—अनन्त।
Endorse—पृष्ठांकित करना, हस्ताक्षर करना, बेंची करना।
Endorsed—पृष्ठांकित, पृष्ठलिखित।
Endorsement—पृष्ठांकन, पृष्ठलेख, बेचान, सही करना, बेची लिखना, हस्ताक्षर, सकार।
Endowment—धर्मस्व, अग्रहारदान।
Enema pan—वस्तिक्रिया पात्र, अनीमा पात्र।
Energy—शक्ति।
Enforce—लागू करना, प्रचलित करना।
Enforcement—विकृत करना, बिगाड़ना।
Enforcing appearance—उपस्थिति के लिये बाध्य करना।
Enfranchise—मताधिकार देना।
Engage—लगाये रखना, लगाना, नौकर रखना, अभिनियुक्त (busy) रखना, लड़ाई करना।
Engagement—संश्रव।

Engagement list—समयदान सूची।
Engineer—वासुक,इंजिनियर, यंत्रकार।
Engineer, Electrical—विद्युत् वासुक।
Engineer, Mechanical—वासुक।
Engineer Student—इंजिनियर छात्र।
Engraving—नक्काशी, खुदाई, कलमकारी।
Enhance—बढ़ाना।
Enhancement—वृद्धि, इजाफा,बढ़ाया जाना।
Enjoyment—उपभोग।
Enlarge—विस्तार करना, बढ़ाना।
Enough—पर्याप्त।
Enquire—पूछ-ताछ करना।
Enquiry—जांच, अनुसंधान, परिप्रश्न, पूछताछ।
Enquiry section—अनुसंधान उपविभाग।
Enrolment—नामांकन, भरती, नाम चढ़ाना।
Enrolment of Pleaders—अभिभाषकों का भरती किया जाना या भरती होना।
Ensuing—आगामी, आनेवाला, होनेवाला।
Entangle—फँसाना,उलझाना, बुझाना, लपेटना।
Enter—प्रवेश करना।
Enterities—आन्त्र प्रदाह।
Enterprise—व्यवसाय।
Entertain—ले लेना (जैसे प्रार्थनापत्र ले लेना), आतिथ्य करना, मनोरंजन करना, सत्कार करना, खिलाना,पिलाना, सुनाई करना, स्वीकृत करना।
Entertainment—मनोरंजन, आमोद।
Entertainment andBetting Tax-मनोरंजन और पणन्-कर।
Entertainment of staff—कर्मचारी वर्ग का नौकर रक्खा जाना।
Entertainment Tax Stamps—आमोदकर मुद्रांक।
Enthusiasm—उत्साह, अभिनिवेश, लगन, अत्यनुराग।
Entire—संपूर्ण, अविकल, सकल।
Entitle—अधिकारी करना।
Entitle to-अधिकारीहोना,हकदारहोना।
Entitled—अधिकारी।
Entitled to—का अधिकारी।
Entomology—कीट-विद्या।
Entry—प्रविष्टि।
Enumerate—गिनना।
Enumeration—गणना।
Envelope—आवेष्टन, निवेष्ट,लिफाफा।
Environment—परिस्थिति, परिसर, पड़ोस।
Epidemic—महामारी, मरक।
Epidemic Assistants—महामारी निरोध सहायक।
Epidemic Duty—महामारी-संबंधी कतव्य।
Epidemic Officer—महामारी-अधिकारी।
Epidemic Regulation—महामारी विनियम।
Epidemic Store Department—महामारी भांडारवस्तु विभाग।
Epidemiology Branch—महामारी चिकित्सा-विज्ञान-शाखा।
Epidiascope—जादू की लालटेन।
Epizootic—पशुओं का व्यापक संक्रामक रोग।

Epizootic lymphangitis—संक्रामक लसीका गृह-प्रदाह।
Equal—समान, सम, तुल्य।
Equality—समानता, साम्य, तुल्यता।
Equation—समीकरण।
Equilibrium—समतोल, साम्य।
Equivalent—बराबर, तुल्य, समान, समूल्य।
Equip—सज्जित करना, सजाना।
Equipment—सामान, सज्जा।
Equipmentfor HygienePublicity Bureau—आरोग्यशास्त्रसंबंधी प्रकाशन विभाग के लिए सज्जा।
Equipment table—सज्जा-सूची।
Equitable—न्याय्य, धर्म्यं, न्यायोचित।
Equitable assets—न्यायपूर्ण निर्धारित परिसम्पत्।
Equitable charge—न्यायोचित भार
Equitable mortgage—न्यायोचित बन्धक।
Equity—निष्पक्षता, समता, राम-न्याय, न्याय्यता, सच्चा दावा।
Equity of redemption—बन्धकमोचन की न्याय्यता, विमोचन की न्याय्यता।
Eradicate—निर्मूल करना, मिटाना, उखाड़ना।
Eraser—रबड़, इरेजर।
Erasing—मिटाना, छीलना।
Erasures—काट-कूट, खरोंच।
Erect—बनाना, चिनना, सीधा, खड़ा।
Erected—बनाया गया।
Erection—भवन, मकान, ऊँचाई।
Erosion—कटाव, छीलन, रगड़, काट।
Err—भूलना, चूकना, भूल करना, भटकना, बहकना।
Errata list—अशुद्धि-सूची।
Erratic—अनिश्चित।
Erroneous—भ्रान्तिमूलक, भ्रान्त, गलत।
Erroneous entry—अशुद्ध प्रविष्टि।
Error—भ्रान्ति, भूल, चूक, त्रुटि, अशुद्धि।
Escape—बचकर भाग जाना, निकल भागना, उपाय, चारा।
Escaped—भाग गया।
Escapee—भागा हुआ, भग्गू।
Escheat—उत्तराधिकारी न होने से राज्य-सत्ता द्वारा लिया जानेवाला धन, जब्त होना, अधिकारी होना।
Escort—मार्ग-रक्षक।
Especial—विशेष।
Espouse—पत्नी, ब्याहता, पति (if a man)।
Esquire—कुँवर साहब।
Essential—सारभूत, आवश्यक।
Essential services—परमावश्यक सेवायें।
Established—प्रतिष्ठित, स्थापित।
Establishing—सिद्ध करना।
Establishment—स्थापना, कर्मचारीवर्ग
Establishment Order Book—स्थापना आज्ञा-पंजी।
Estate—संपदा, सम्पत्ति, रियासत, भू-सम्पत्ति।
Estate duty—भूसम्पत्ति-कर।
Estimate—आगणन, तखमीना।
Estimated—आँकी हुई।
Estimated yield of current year—चालू वर्ष की आँकी हुई उपज।
Estimated market value—आगणित पण-मूल्य।
Estimates and plants—आगणन और मानचित्र।

Estopped—उत्तररोध।
Estoppel—प्रतिरोध।
Etc.—आदि, इत्यादि।
Etiquette—सभ्याचार, शिष्टाचार।
Evacuee Welfare Officer -निष्क्रान्त-जनकल्याण-अधिकारी।
Evasion -टालना, सकपट बचा लेना।
Evasion of registration—सकपट रजिस्टरी बचा लेना।
Event—घटना।
Every possible—प्रत्येक सम्भव।
Eviction—निष्कासन, न्यायालय की आज्ञा से निष्कासन।
Evidence—साक्ष्य, गवाही, शहादत।
Evident—स्पष्ट।
Evil—बुरा बुराई।
Evolution—उद्विकास।
Exact—ठीक, यथार्थ, बलात् लेना।
Exact nature—ठीक-ठीक स्वरूप।
Exaggeration—अतिशयोक्ति।
Examination—परीक्षा, अनुयोग।
Examination charges—परीक्षाव्यय।
Examination Committee—परीक्षा समिति।
Examination for certificate in Military Science—युद्ध - विद्या प्रमाणपत्र के लिये परीक्षा।
Examination-in-chief—पूर्व अनुयोग, मुख्य परीक्षा।
Examination in Indian Music (Diploma)—भारतीय संगीत की (डिप्लोमा) परीक्षा।
Examination of papers—पत्र-परीक्षा, पत्रों की जाँच।
Examination Room—रोगी परीक्षा-कोष्ट।
Examine—परीक्षा लेना, जाँचना।
Examiner—परीक्षक, जाँचकर्ता।
Examiner of questioned documents—संदिग्ध लेख-पत्रों के परीक्षक।
Example—उदाहरण निदर्शन (Illustration)।
Ex-cadre posts—मूल-रचना-बाह्य पद
Exceed—अधिक होना, बढ़ जाना।
Exceeding—अति, बढ़ा हुआ।
Excellency, His-महामान्य, महामहिम
Excellent—उत्तम।
Except—अतिरिक्त, बिना, सिवा।
Excepting isolated thunder storms—इक्के-दुक्के गरज तूफानों को छोड़कर।
Exception—अपवाद, छूट, आक्षेप, आपत्ति।
Exceptional—असाधारण, अपूर्व, अपवादात्मक, असामान्य।
Exceptional case—असाधारण अवस्था।
Exceptional circumstances—विशेष या असाधारण परिस्थितियाँ।
Exceptions—अपवाद।
Except where otherwiseprovided—जहाँ अन्यथा व्यवस्था की गई हो।
Excess—अधिक, अधिकता, आधिक्य, बढ़ती, अतिरेक, ज्यादती।
Excess and savings—अधिक व्यय और बचत।
Excess grant—अधिक अनुदान।
Excessive—अत्यधिक, अतिमात्र।
Excessive use—अतिशय प्रयोग।
Excess over the scale—वेतन-क्रम के ऊपर बढ़ती।
Excess of the sanctioned allot-

ment—स्वीकृत दिष्टि से अधिक।
Exchange—विनिमय, अदला-बदली, अदला-बदली करना।
Exchange compensation allowance—विनिमय क्षतिपूरक भत्ता।
Exchange deed—विनिमय-पत्र।
Exchange, Instrument of—विनिमय करण-पत्र।
Exchequer—राजकोष।
Excise—उत्पादकर, चुंगी, आबकारी।
Excise department—उत्पादकर विभाग, आबकारी विभाग।
Exclude—अपवर्तित करना, छोड़ना, अलग करना, निकाल देना।
Exclusion—अलग किया जाना, निकाल दिया जाना।
Exclusive—निषेधक,केवल,एकान्तिक, छोड़कर, अतिरिक्त।
Exclusively—केवल।
Excreta—पाखाना, विष्ठा, पुरीष, मल, मैला, गू।
Excuse—क्षमा करना, बहाना।
Executable—निर्वर्तन योग्य।
Execute (*v.*)—करना, पूरा करना, निष्पादन करना, निर्वाहण करना, तामील करना, फाँसी देना।
Executed document—लिखा-पढ़ा गया लेखपत्र।
Executant—निष्पादक।
Execution—निष्पादन (as of a deed), इजरा करना (as of a decree), तामील करना (as of a warrant)।
Execution, Denial of—निष्पादन से इन्कार करना।
Executioner—जल्लाद, वधिक, फाँसी देनेवाला, निष्पादनकर्त्ता।
Execution of a decree—डिग्री का निष्पादन।
Execution of deeds—लेख्यकरण, दस्तावेज लिखना, दस्तावेज़ करना।
Execution of warrant—अधिपत्र की तामील।
Execution of work—निर्माण कार्यों का किया जाना।
Execution proceeding—निष्पादन कार्यवाही।
Executive—कार्यकारी, अधिशासी, कार्यकारिणी, निर्वाही।
Executive Authority—कार्यकारिणी सत्ताधिकारी।
Executive Authority of Government—सरकार का अधिशासी प्राधिकार।
Executive committee—कार्यसमिति, कार्यकारिणी या प्रबन्धकारिणी समिति।
Executive Council of the University—विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद्।
Executive Engineer—कार्यकारी वास्तुक, कार्यकारी इंजीनियर।
Executive Functions of Government—सरकार के अधिशासी कार्य।
Executive Officer—कार्यकारी अधिकारी।
Executive Order—अधिशासी आज्ञा।
Executive Service—कार्यकारी सेवा, अधिशासी भृत्या।
Executor—रिक्थसाधक, निर्वतंक।
Executrix—रिक्थसाधिका।
Exemplary—अनुकरणीय, दार्ष्टान्तिक
Exemplification—उदाहृत करना।

Exempt—मुक्त करना, बरी करना, अनिबद्ध, बरी, मुक्त ।
Exemption—मुक्ति, माफी, छुटकारा ।
Exercise—प्रयोग, अभ्यास, व्यायाम, कसरत, प्रयोग करना ।
Ex-gratia—अनुग्रह धन ।
Ex-gratia payment—अनुग्रह रूप-प्रदान ।
Ex-gratia relief—अनुग्रह रूप सहायता ।
Exhaust—खाली कर देना, निर्बल कर देना, खींच लेना,खतम कर डालना,तली ।
Exhibit—प्रदर्शित वस्तु ।
Exhibition—प्रदर्शन,प्रदर्शनी,नुमाइश ।
Exhibits—प्रदर्शित वस्तुयें ।
Exist—विद्यमान होना, अस्तित्व होना, जीवित रहना, रहना ।
Existing—वर्तमान ।
Ex-Officio—पदेन, पदकारणात्, पद-के नाते ।
Ex-Officio Sub-Registrars—पद-कारणात् उप-पंजीयक ।
Ex-Officio-vendors—पदेन विक्रेता ।
Exoneration—दोषशुद्धि, छुटकारा, दोष-मुक्ति ।
Expand—बढ़ना या बढ़ाना, फैलाना, विस्तृत करना ।
Expanded metal—धातु की जाली ।
Expansion—प्रसार, विस्तार, फैलाव ।
Expansion joint—बढ़ाव-संगत जोड़, विस्तार-संगत संधि ।
Ex-parte—एकपक्षीय, एकतरफा ।
Expectoration—कफ-निस्सारण,निष्ठ्यूति, थूक, खखार ।
Expediency—आवश्यकता, औचित्य ।
Expedient—उचित, उपयुक्त, योग्य, उपाय, साधन, उपक्रम, चारा ।
Expedite—शीघ्रता करना ।
Expedition fee—शीघ्रता-शुल्क ।
Expel—निकाल बाहर करना ।
Expenditure—व्यय, खर्च ।
Expense voucher—खर्च का पुर्जा, व्यय-प्रमाणक ।
Expensive—बहुव्यय,महँगा, बहुमूल्य ।
Experience—अनुभव ।
Experiment—प्रयोग, प्रयोग करना ।
Experimental—प्रयोगात्मक, परीक्षार्थ किया जानेवाला ।
Expert—विशेषज्ञ, दक्ष ।
Expiration—अन्त,मौत, समाप्त होना ।
Expire—समाप्त होना, बीत जाना, मत्यु होना ।
Expiring demand—गत माँग ।
Expiry—समाप्ति, अंत ।
Expiry of leave—छुट्टी की समाप्ति ।
Explain—व्याख्या करना, स्पष्ट करना, जवाब देना, सफाई देना, समझाना ।
Explanation—व्याख्या, स्पष्टीकरण, उत्तर, जवाब, सफाई ।
Explanation of fluctuations—उतार-चढ़ाव का कारण, कमी-बेशी की व्याख्या ।
Explanatory clause—व्याख्यात्मक वाक्य खंड ।
Explanatory memo—व्याख्यात्मक स्मृति टीप ।
Explanatory memorandum—व्याख्यात्मक स्मृतिपत्र ।
Explanatory supplements—व्याख्यात्मक अनुपूरक ।
Expletive—आलंकारिक, भरती कारी ।
Explicit—व्यक्त, स्पष्ट ।

Explode—फटना, भक से उड़ जाना, विस्फोट होना।
Exploit—उपयोग करना, पराक्रम।
Exploitation—उपयोग, अनुचित उपयोग, शोषण, पूर्ण उपयोग।
Explore—खोज करना, ढूंढ़ना।
Explosion—विस्फोट, धड़ाका, धमाका।
Explosive—विस्फोटक, विस्फोटक पदार्थ।
Explosive Act—विस्फोटक पदार्थ विधान।
Export—निर्यात।
Ex-post facto—(Retrospective) पश्चाद्दर्शी।
Exposure—खुला रखना,हवा-धूप लगना।
Express—व्यक्त, स्पष्ट, शीघ्र, आशु, तूफानगाड़ी, व्यक्त करना।
Express—आशुग,जंघाकारिक(a runner)।
Express delivery—आशुपत्र, तुरन्त सुपुर्दगी, शीघ्रार्पण।
Expression—वर्णन, कथन, उच्चारण, बोली, भाव, चेष्टा, व्यक्त करना, चेहरा।
Express telegram—आशु तार, जरूरी तार।
Ex-proprietary—गतस्वामित्व, साकितुलमिलकियत।
Expropriietary,Occupancy, Hereditary tenants—गत स्वामित्व कृषक, आभोग कृषक, पारंपर्य कृषक (साकितुलमिल्कियत असामी, दखीलकार, मौरूसी असामी)।
Ex-proprietary tenant—गतस्वामित्व कृषक।
Expulsion—निष्कासन।
Expunge—काट डालना, कलम करना।
Ex-soldiers—भूतपूर्व सैनिक।
Ex-student—भूतपूर्व छात्र।
Ex-teacher—भूतपूर्व अध्यापक।
Ex-tenant—भूतपूर्व असामी।
Extend—बढ़ाना।
Extension—वृद्धि, बढ़ाव, विस्तार, फैलाव।
Extension of leave—छुट्टी विस्तार।
Extension of load—भार-वृद्धि।
Extension of post—पदकाल-वृद्धि।
Extension of time—समय का बढ़ाना (दुर्घटना इत्यादि की अवस्था में उपस्थित होने के लिये समय का बढ़ाना)।
Extensive—विस्तृत।
Extent—विस्तार, हद, दर्जा।
Extent of act—विधान का विस्तार।
Extent of jurisdiction—अधिकारक्षेत्र का विस्तार।
External—बाह्य, बाहरी।
Extinction—लोप।
Extinguish—बुझाना, मिटाना।
Extinguish and Extinction of right—अधिकार की समाप्ति और लोप।
Extinguisher, Fire—अग्निप्रशामक।
Extortion—बलात् ग्रहण, बलादादान, बलात् वसूली।
Extra—अतिरिक्त, जायद।
Extra cost—अतिरिक्त लागत।
Extract—निष्कर्षण, सार, संक्षेप, अवतरण, उद्धरण।
Extracts—उद्धरण, अवतरण।
Extra curriculum activities—पाठान्तर कार्य।
Extradition—विदेशी अपराधी का प्रत्यर्पण, उदर्पण, प्रत्यर्पण।

Extrados—गुम्बद या मेहराब का ऊपर का पृष्ठ।
Extra Municipal—नगरपालिका के बाहर।
Extramural—भित्तिबाह्य, जेल के बाहर का।
Extraneous—बाहरी।
Extraneous duties—अतिरिक्त कर्त्तव्य
Extraordinarily—असाधारण रूप से।
Extraordinary—असाधारण।
Extraordinary leave—असाधारण छुट्टी।
Extraordinary leave without pay—बिना वेतन की असाधारण छुट्टी।
Extraordinary pass—असाधारण पास
Extraordinary pension—असाधारण निवृत्ति-वेतन।
Extra staff—अतिरिक्त कर्मचारीवर्ग।
Extra-statutory—कानून के बाहर का, विधि-बाह्य।
Extreme—अंतिम, दूरतम, बाह्य, अति तीव्र।
Extremely—अत्यधिक।
Extremist—गरम दलवाला, उग्रवादी।
Exudation—स्राव।
Eye & hook—तुकमा और हुंक, छेद और हुक।
Eye-drops, Ear-drops, Nasal-drops—अक्षिड्रप्स (आँख की दवा) कर्णड्रप्स, नासिका-ड्रप्स।
Eye, Ear, Nose and Throat Department—अक्षि, कर्ण, नासिका तथा कंठ विभाग।
Eye O. P. O.—अक्षि बहिरंग विभाग।
Eye Specialist—अक्षि रोग-विशेषज्ञ, अक्षि-विशेषज्ञ।
Eye ward—अक्षिकक्ष।
Eye witness—प्रत्यक्षी।

F

Fabric—बनावट, वस्त्र, पार्चा, कपड़ा।
Fabricate—जाल रचना, मामला बनाना
Fabrication—मिथ्या रचना, कल्पना, छल रचना।
Face—मुख्य, चेहरा, आकृति, मुंह चपटा करना।
Face value—अंकित मूल्य।
Face value ticket—अंकित मूल्य टिकट।
Facilitate—सुगम करना, सुधार करना, सरल बनाना।
Facility—सुविधा।
Facsimile—अनुलिपि।
Fact—तथ्य।
Factitious—कृत्रिम, अनैसर्गिक, बनावटी, रूढ़िबद्ध, असहज।
Factor—गुणक, गुणनखण्ड, कारक, कारिन्दा, गुमाश्ता, अढ़तिया।
Factory—निर्माणशाला, कारखाना, कर्मशाला।
Factual—वास्तविक, तात्त्विक।
Factum—तथ्य, सचाई।
Faculty—अधिकार, वैयक्तिक गुण, कार्यशक्ति, मनःशक्ति, शाखा (Edu-)।
Faculty (Arts)—साहित्यादि शाखा।
Faculty (Education)—शिक्षा-शाखा
Faculty (Law)—विधि-शाखा।
Faculty (Medicine)—चिकित्सा-शाखा।
Faculty (Science)—विज्ञान-शाखा।
Fade—मुर्झाना।
Faecal discharges—मलत्याग।
Faeces—मल, विष्ठा।

Failed—असफल।
Failure—असफलता, असिद्धि, कम होना या न होना (as of rains)।
Faint—फीका।
Faint compliment—हल्की प्रशंसा।
Fair—उचित, न्याययुक्त, सुन्दर, स्पष्ट, स्वच्छ, साफ, मेला।
Fair average quality—उचित माध्य प्रकार, उचित औसत किस्त।
Fair copy—विशुद्ध प्रतिलिपि, साफ प्रतिलिपि, साफ कापी।
Fairly—यथान्याय, धर्मेण, न्याय से, बिना भेद-भाव।
Fair letter—परिष्कृत पत्र।
Fairs—मेले।
Faithfully—निष्ठापूर्वक, भक्त्या, निष्ठया।
Falange—अग्रीव।
Fall—प्रपात।
Fallacy—भ्रांति, भ्रम, भुलावा, हेत्वाभास, अपसिद्धांत।
Fallow—पड़ती।
False—असत्य, मिथ्या, कृत्रिम, जाली, बनावटी, झूठा, खोटा।
False entries—झूठ इन्दराज।
False personation—छद्म व्यक्तिता।
Familiar—सुपरिचित, सुज्ञात।
Familiarise—परिचित करना।
Family—परिवार, कुटुम्ब।
Family arrangement—पारिवारिक व्यवस्थापन।
Family budget—पारिवारिक आय-व्ययक।
Family Pension—परिवार-पेन्शन।
Famine Code—दुर्भिक्ष-संहिता।
Famine duty—दुर्भिक्ष ड्यूटी, दुर्भिक्ष कर्त्तव्य।
Famine expenditure—दुष्काल-सम्बन्धी व्यय।
Famine programme—दुर्भिक्ष-कार्यक्रम।
Famine project—दुर्भिक्ष-योजना।
Famine relief—दुर्भिक्ष सहायता।
Fan, Ceiling—छत का पंखा।
Fan, Exhaust—रिक्तकर पंखा।
Fan, Light—हलका पंखा, डाट के ऊपर का रोशनदान।
Fan, Table—मेज का पंखा।
Farar—फरार, भगा हुआ।
Farcy—जहरबाद।
Fard Durusti-had-jat Khewat—हद-प्रदर्शक केवट का शुद्धि-पत्र।
Fardi-Baghat—बागों की सूची।
Fardi-Chahat—कूप-सूची।
Fardi-Qawala—निर्देश-सूची।
Fardi-Tanaza—विवाद-सूची।
Fard Mashkuki Mashkuka—कटे हटे और संदिग्ध इंदराजों की सूची।
Fard Todajat wa Sarhaddajat Khatauni—तोदों और सरहदों की सूची, द्विभाजक और त्रिभाजक सीमा-चिह्नों की सूची।
Fare-Ferry—भाड़ा घाट।
Far-fetched—असहज, दूरादानीत।
Farming—खेती, कृषिकर्म।
Farrash—फर्राश।
Far-reaching—व्यापक, गहरा, दूर-तक असर रखनेवाला।
Farthermost—दूरतम, सबसे दूर।
Fast—तेज, तीव्र।
Fasten—बाँधना।
Fastening—बाँधना।

Fatigue cap—किश्ती टोपी।
Fatigue duty—दलेल।
Fault—दोष, अपराध, कमी।
Fault finding—दोषान्वेषण, दोष निकालना।
Fault of style—शैली की त्रुटि।
Faulty—दोषपूर्ण, सदोष।
Favour—अनुग्रह, प्रसाद, कृपा, पक्ष, अनुकूल होना, अनुग्रह करना, पक्ष करना।
Favourable—अनुकूल, माफिक।
Favourably—सानुकूल।
Favour of acknowledgement—प्राप्ति-स्वीकार, अनुग्रह।
Federal—संघीय।
Federal Court—संघ न्यायालय, फेडरल कोर्ट।
Federal Railway Authority—संघीय रेलवे प्राधिकारी।
Federation—संघ।
Fee—शुल्क, फीस।
Fee certificate—शुल्क प्रमाणपत्र।
Fee, Simple—साधारण शुल्क।
Feeder—पोषक।
Feeder channel—पोषक नाली या धारा
Feeder Roads—पोषक सड़कें।
Feeder wells—पोषक कूप।
Feeding cup—पोषण प्याला (रोगियों को) दूध पिलाने का प्याला।
Feed-pump attendant—फीड पम्प परिचारक।
Fees—फीस, शुल्क।
Fees (Admission)—प्रवेशशुल्क।
Fees (Atheletic)—खेल कसरत-सम्बन्धी शुल्क।
Fees (Boarding House)—छात्रावास शुल्क।
Fees Book—फीस रजिस्टर।
Fees (Conveyance)—यान शुल्क।
Fees (Delegacy)—डेलीगेसी शुल्क।
Fees (Examination)—परीक्षा शुल्क।
Fees (Games)—खेल-शुल्क।
Fees (Hostel)—छात्रावास-शुल्क।
Fees (Ink)—मसी-शुल्क।
Fees (Laboratory)-प्रयोगशाला-शुल्क
Fees (Library)—पुस्तकालय-शुल्क।
Fees (Medical)—चिकित्सा-शुल्क।
Fees (Membership)—सदस्यता-शुल्क।
Fees (Music)—संगीत-शुल्क।
Fees (Readmission)—पुनः प्रवेश-शुल्क।
Fees (Recreation)—मनोरंजन-शुल्क।
Fees (Retotalling)—पुनर्योग-शुल्क।
Fees (Scrutiny)—सूक्ष्मपरीक्षा-शुल्क।
Felling (Timber)—वृक्षों का गिराना।
Fellowship—पारिषद्यता।
Felt—नमदा, जमड़ी, ऊन जमाना, नमदा बनाना, अनुभव किया।
Female—महिला, जनाना।
Female Nurse Sick-room—उपचारिका-आतुरालय।
Female ward—महिला कक्ष।
Feminine style—स्त्रियोचित शैली।
Fence—प्राकार, घेरा, चहारदीवारी, बाड़, वाड़ा, कठघरा, रोकना, आवेष्टित करना, घेरना।
Fence, Gates of bars—बाड़ा, सलाखों के फाटक।
Fencing—पटाबाजी, बनैती, पटा, घेरा।
Fenestra—गवाक्ष, झरोखा।
Ferries—घाट।
Ferro-boy—फेरो बॉय।
Ferro gallic—फेरो गैलिक।

Ferro paper—फेरो कागज।
Ferro prussiate—फेरो प्रूशियेट।
Ferrotype apparatus machine—फरोटाइप साधन-सज्जा मशीन।
Ferrotyper—नक्शा छापनेवाला।
Ferrule—छल्ला, शामी।
Fertiliser—खाद।
Fertilizer controller—खाद-नियंत्रक।
Fetters—बेड़ी।
Few—कुछ, कम।
Fibrin—रक्त तंतु।
Fictitious—अतथ्य।
Fiduciary—न्यासधारी, न्यास-संबंधी, अमानती।
Fiduciary estate—विश्वासाश्रित संपत्ति, अमानती हकीयत।
Field—खेत, मैदान।
Field Book—खसरा, पैमायशवालों की किताब।
Fieldman—फील्डमैन।
Figure—अंक, आकार।
Figure—आकार, आकृति, अंक।
Figurehead—सामने की तस्वीर, नामधारी शासक।
File—मुकदमा दायर करना, मिसिल मुकदमा।
File—दाखिल दफ्तर करना, मिसिल में नत्थी करना।
File—नत्थी, नस्ती, फाइल।
File a suit—मुकदमा दायर करना।
File board—नस्ती-पट, नत्थी बोर्ड।
File book—नस्ती-पुस्तक।
File book of circulars—गश्ती चिट्ठियों की फाइल।
File cover—नस्ती आवरक।
File register—नस्ती पंजी।
Filing of documents—मुकदमे में कागजात दाखिल करना।
Filled in—भरा गया।
Fillet—फीता, कोनाभरी गोलाई।
Filling—भराई।
Film—फिल्म।
Film Advisory Committee—फिल्म-परामर्श-दात्री समिति।
Final—अन्तिम।
Final bell—आखिरी घंटी, अन्तिम घंटी।
Finality—पूर्णाता, अंतिमता।
Finally disposed of—(decided) अंतिम रूप से निबटाया गया, अंतिम रूप से निर्णीत।
Final payment—अन्तिम भुगतान।
Final Statement of excesses and savings—अधिक व्यय और बचत का अन्तिम विवरण।
Final settlement report—अन्तिम बन्दोबस्त रिपोर्ट।
Finance—अर्थ, वित्त, वित्तपोषित करना।
Finance Committee—अर्थ-समिति।
Finance Department (Accounts)—वित्त-विभाग (लेखा)।
Finance Department (General)—वित्त-विभाग (सामान्य)।
Finance Department (Miscellaneous)—वित्त-विभाग (विविध)।
Finance Department (Supply)—वित्त-विभाग (पूर्ति)।
Finances—आर्थिक स्थिति।
Financial—वित्तीय।
Financial Hand-book—अर्थ-पुस्तक।
Financial irregularities—वित्तीय अनियमितता, वित्तीय अनियम।

Financial position is precarious and drifting towards bankruptcy—आर्थिक स्थिति डावांडोल है और दिवालियापन की ओर जा रही है।
Financial power-आर्थिक अधिकार।
Financial year—वित्तीय वर्ष, आर्थिक वर्ष।
Finding—निर्णय, तजवीज।
Finding in issues remitted—बड़ी अदालत द्वारा छोटी अदालत को भेजे हुए विवादग्रस्त विषयों पर तजवीजें।
Fine—अर्थदण्ड, जुर्माना।
Fine line—बारीक रेखा, सूक्ष्म रेखा।
Finger-print—अंगुलि-छाप, अंगुष्ठ छाप।
Finger Print Bureau—अंगुलिछाप ब्यूरो।
Finger stalls—अंगुलित्राण।
Finial—शिखर, कलश।
Fire—अग्नि, उत्साह, क्रोध, तोपों की बाढ़, गोली चलाना, नौकरी से छुड़ाना।
Fire-alarm—आग लगने की एलार्मघंटी।
Fire-brick—अग्नि-इष्टिका।
Fire brigade—आग बुझानी टुकड़ी, दमकल।
Fire drill—अग्नि-शमन-योग्या, आग बुझाने की कवायद।
Fire-extinguisher—अग्नि-प्रशामक (if a man), अग्नि-शमित्र (if an instrument)
Fire-hydrant—आग बुझाने का बंबा।
Fire-line—अग्निनिरोध केन्द्र।
Firemen—आग बुझानेवाले।
Fire order—गोली चलाने की आज्ञा।
Fire-place—अंतिका, अतिश्रयणी, अंगीठी, चूल्हा, चुल्लि।
Fire-proof— अदाह्य, आगरोक; अग्निसह, न जलनेवाला।
Fire - proof safe—अग्नि-सुरक्षित तिजोरी।
Fire service—दमकल भृत्या।
Fire Station Second Officer—दमकल स्टेशन का अफसर दोयम।
Fire-wood—ईंधन, ईंधन की लकड़ी, इध्म, जलावन।
Fireworks—आतिशबाजी।
Firm—अटल, अचल, महाजनी कोठी; साझे की दुकान, सार्थ, फर्म।
First—प्रथम।
First-aid—प्रथमोपचार, प्रारम्भिक चिकित्सा।
First appeal from Order—आज्ञा की पहली अपील।
First application—प्रथम प्रार्थनापत्र।
First floor—नीचे की मंजिल।
First hand—प्रत्यक्ष, प्रथम।
First Information Report—प्रारम्भिक सूचना रपट, रपट इब्तदाई।
First Offender— कवारा अपराधी।
First Offenders Probation Act—प्रथम वार अपराधी परीक्षण विधान।
Fiscal—राजस्व-विषयक।
Fisheries—मीनक्षेत्र।
Fishery—मत्स्यपालन, मत्स्य स्थान।
Fish ladder—मत्स्यारोह सीढ़ी।
Fish-plate—मत्स्य-पट्टिका, रेल की पटरियों को जोड़नेवाली प्लेट।
Fit—योग्य, उचित, ठीक, सुधारना, सँवारना, ठीक करना।
Fitness—योग्यता, उपयुक्तता, स्वस्थता, (as in fitness certificate)।
Fitness certificate-स्वास्थ्यप्रमाणपत्र

स्वस्थता का प्रमाणपत्र।
Fitness for further advancement—अधिक उन्नति के लिये योग्यता।
Fitter—सुधारनेवाला।
Fix—स्थिर करना, निश्चय करना, कड़ा होना।
Fix a date—दिनांक निश्चित करना, तिथि स्थिर करना।
Fixation—स्थिरीकरण, स्थापन।
Fixation of pay—वेतन का स्थिर करना, वेतन-निर्धारण।
Fixed—स्थिर, निश्चित।
Fixed capital—स्थिर पूंजी।
Fixed deposit—नियतकालिक उपनिधान, सावधिक उपनिधान, स्थिर जमा, मियादी जमा।
Fixed for hearing—सुनवाई या समाअत के लिये नियत की गई।
Fixed point duty—एकस्थानीय चौराहा ड्यूटी।
Fixed rate tenant—निश्चित दर कृषक, निश्चित दर असामी।
Fixtures-दृढ़स्थित वस्तुएँ, स्थावर द्रव्य व सम्पत्ति,स्थावर सम्पति से संयोजित द्रव्य
Flag—झंडी।
Flag— "A"—झंडी 'क'।
Flag-staff—झंडे का डंडा, पताका डंडा।
Flake—पापड़, फाहा, गाला।
Flame—ज्वाला, लपट, लौ, जलना, लपट उठना, बलना।
Flannel—फलालैन।
Flask stand—फ्लास्क स्टैंड।
Flat—चपटा।
Flat charge—समान प्रभार।
Flat rate—एक भाव।
Flawless—निर्दोष।
Fleas—पिस्सू।
Flit pump—फ्लिट पिचकारी।
Float—डोंगा, बेड़ा।
Floatation—आरंभ करना, निकालना।
Floatation debt—अल्पकाल ऋण।
Floating Capital-चल-पूंजी, हेतुधन, साधारण व्यय।
Flogging—कोड़ा लगाना, बेंत लगाना।
Floods—बाढ़, सैलाब।
Flood relief-बाढ़-पीड़ितों की सहायता
Floors—फर्श, मंजिल।
Flora—उद्भिज्जात, वनस्पति-समूह, औषधि-समूह।
Florescence—फूलने की ऋतु, वसन्त-बहार।
Flow and Lift Irrigation—बहाव और उठान की सिंचाई।
Flow Irrigation—बहाव की सिंचाई।
Fluctuate-उतरना-चढ़ना,घटना-बढ़ना।
Fluctuation—चढ़ाव-उतार, घट-बढ़, उच्चावचन।
Flukes—विद्धपत्रा कृमि।
Flume—कृत्रिम खुली नाली।
Flush—एकदम से बहना, उद्धावन।
Flush latrine—फ्लश का पखाना, धवनी शौचालय।
Fluvial action—नदी का बहाव।
Flying club—उड्डयन-मंडल, उड्डयन क्लब।
Fly leaf—निरंक-पत्र।
Fly proof—मक्खी रोक।
Focus—नाभि।
Fodder—चारा।
Folding chair—तुड़वाँ कुर्सी।
Folio—पर्ण।
Follow—अनुसरण करना।

Following—निम्नलिखित, नीचे लिखे, बाद के, अनुयायीगण।
Fomenting—उद्दीपन, उसकाना, भड़काना, सुलगाना।
Food and Civil Supplies Deptt.–खाद्य तथा रसद विभाग।
Food distribution parade—खाना बटनी परेड।
Foolscap—फुलिसकेप।
Foot—फुट।
Foot and mouth disease—मुंह खुर का रोग।
Foot-path—पगडंडी।
Footing—पांव रखने की जगह, नींव, बुनियाद।
Forage-cap—फौजी टोपी, फारेज टोपी।
For approval—मंजूरी के लिये।
Forbid–निषेध करना, रोकना, मना करना।
Force—बल, शक्ति, बाध्य करना।
Force majeure—वरिष्ठ शक्ति, बड़ी ताकत।
For consideration—विचारार्थ।
For Deputy Secretary—प्रतिसचिव के लिये।
For disposal—निपटारे के लिये।
Forecast—पूर्वानुमान, पूर्वनिरूपण।
Forecast of cost—मूल्य का पूर्वानुमान, लागत का पूर्वानुमान।
Forecast of stamps—स्टाम्पों का पूर्वानुमान, मुद्रकों का पूर्वानुमान।
Fore-closure—अधिकार - समाप्ति, बन्धन-मोचन, रोकना, बन्द करना, बन्धक छुड़ाने का अधिकार समाप्त करना।
Fore-closure of mortgage—बंधक मोक्षण प्रतिरोध।
Fore-cover—उपरलाच्छद।
Fore-end(of the string)-अगला सिरा
Forego—त्यागना, छोड़ना।
Foregoing—पूर्वगत।
Foregone—पूर्वज्ञात, पहले से जाना हुआ
Foreign—विदेशी, पारदेशिक।
Foreign articles in rectum—गुदा में विजातीय पदार्थ।
Foreign currencies—विदेशी मुद्रायें, विदेशी चल-मुद्रायें।
Foreigner—पारराष्ट्रिक, विदेशी लोग।
Foreign Law—विदेशी कानून।
Foreign Service—पारदेशिक भृत्या, वैदेशिक सेवा, पारदेशिक सेवा।
Foreman—फोरमैन।
Foreman of Jury—जरी का पंच।
Foremost—अग्रतम, प्रमुख, प्रधान, श्रेष्ठ, सबसे अगला।
Forenoon—दोपहर से पहले, पूर्वाह्ण।
Forensic–न्यायालय-सम्बन्धी, अदालती।
Foresee—आग से देखना, पेशबीनी करना।
Forest—वन, जंगल।
Forester—वनाधिकृत, अफसर जंगलात, वनवासी।
Forestry—वनविद्या।
Foreword–प्राक्कथन, भूमिका, प्रस्तावना
For favour of disposal—निर्वर्तनार्थ
For favour of opinion—सम्मति के लिए।
Forfeit—अपहृत करना, जब्त करना।
Forfeiture—जब्ती, हरण।
Forge-निर्माण करना, भट्ठी, लोहा करना।
Forged—जाली, कूट।
For general information—सर्वसाधारण की सूचना के लिये।

Forgery-कूटकर्म,जालसाजी,कूट-रचना

Forgive—क्षमा करना।

For guidance-पथप्रदर्शन के लिए।

For information-सूचनार्थ।

Fork—खाना खाने का काँटा, दो शाखा।

Form—रूपपत्र, फार्म, रूप।

Formal—यथारीति, यथानियम, यथा-रूप,यथाचार,यथाकार,यथावेश,उपरिक

Formaldehyde—फर्मेल्डीहाइड, एक प्रकार का अल्कोहल।

Formalities—उपचार।

Formality—नैयमिकता, उपरिकता, उपचार।

Formally—यथारीति।

Formal order—यथानियम आज्ञा, बाजाब्ता हुक्म।

Formal sanction-यथानियम स्वीकृति, बाजाब्ता मंजूरी।

Forma pauperis-अकिंचन रूप, अकिंचनता की मद में।

Formation—रचना, बनावट।

Former—पहिला, पूर्व का।

Form of oath or affirmation—शपथ या सत्योक्ति का रूप।

Form of question—प्रश्न का रूप।

Forms—फारम, रूपपत्र।

Forms and stationery—रूपपत्र और लेखन-सामग्री।

Forms, Stock book of—फार्मों की स्टाक बुक, रूपपत्रों की संचय पुस्तक।

Form, Standard—प्रामाणिक फार्म।

Form, Tender—टेंडर का फार्म, निविदा फार्म।

Formula—सूत्र, गुर, फारमूला।

Formulate—सूत्र रूप में कहना, स्पष्ट रूप में कहना।

For necessary action—आवश्यक कार्यवाही के लिये।

Forthcoming—आगामी, आनेवाला।

For the preparation of the estimate of cost—लागत का तखमीना बनाने के लिये।

Forthwith—तुरंत, झटपट।

Fortnight—पक्ष, पन्द्रही।

Fortnightly पाक्षिक, हर पन्द्रहवें दिन।

Fortnightly statement—पाक्षिक विवरण।

Forum—निर्णयाधिकार प्राप्त न्यायालय या पंचायत, चौक, चबूतरा, बाजार।

Forward—अग्रेप्रेषित करना, आगे भेजना, अग्रस्थ, अग्रग।

Forwarded—अग्रेप्रेषित, आगे बढ़ाया।

Forwarded for disposal—निर्वर्तनार्थ अग्रेप्रेषित।

Forward estimates—अगाऊ तखमीने

Forwarding—अग्रप्रेषण।

Forwarding note—अग्रचालन नोट।

Foundry—संघानी, ढलाईघर।

Fountain—सोता, फुहारा।

Fourteen Years Rule—चौदह वर्ष-वाला नियम, चौदहसाला नियम।

Fowl cholera—चिड़ियों का रक्तदोष।

Fowlers—फाउलरीय।

Fowlers bed—टूटवाली शय्या, फाउलरीय शय्या।

Fraction—भिन्न, भाग।

Fracture—अस्थिभंग।

Fracture bed—अस्थिभंग-शय्या।

Fracture ward—अस्थिभंग-कक्ष।

Frame—ढाँचा, चौखट, घेरा बनाना।

Framing of issues—तनकीह कायम

करना, विवाद-प्रश्नों का स्थिर करना।
Franchise—मताधिकार।
Fraud—छल, धोखा, कपट, कैतव।
Fraudulent—धोखे का, कपटी।
Free—स्वतंत्र, निःशुल्क।
Free board—मुफ्त खाना, निःशुल्कभोजन
Free, Freeship—फीस माफ, निः-शुल्क।
Free hold—माफी, माफी अधिकार।
Free of charge—अदेय भार,बिना खर्चा
Free of rent—बिना किराये।
Free passage—निःशुल्क यात्रा।
Freight—भाड़ा।
Frequency—वारंवारता, प्रायिकता।
Frequent बार-बार का, बार-बार जाना, आया-जाया करना।
Fresh—अभिनव, ताजा, नया।
Fret work—जालीदार काम।
Friction—रगड़, घर्षण।
Friefe—कारनिस से नीचे दीवार का सजावटी भाग।
Fringe—किनारा।
Frivolous—निराधार, ओछा, बालिश।
Frog—गुंठी, घुंडी, सुम के बीच का भाग।
Frog—ईंट का गडढा जहाँ कुछ अक्षर बने रहते हैं, रेल की कैंची।
From—से, प्रेषक।
From time to time—समय-समय पर
From whom—किससे प्राप्त।
Frontispiece—तस्वीर जो पुस्तक के आदि में लगाई जाती है, मुखचित्र।
Frost—तुषार, पाला।
Fruit Utilization and Marketing Officer—फलोपयोग तथा क्रय-विक्रय अधिकारी।
Fruit upon trees—वृक्षों के फल।
Fuel allowance—ईंधन भत्ता।
Fuel for Transport Vehicles—वाहन-विभाग की गाड़ियों के लिए पेट्रोल।
Fugitive—पलायित, फरारी।
Fugitive offender—भागा हुआ अपराधी, पलायित अपराधी।
Fulcrum- -टक, सहारा, आलंब।
Fulfil—पूरा करना।
Full—पूर्ण, पूरा, भरा हुआ।
Full age—पूर्ण वयस्।
Full bench case—पूर्णजज-समुदाय योग्य मुकद्दमा।
Full diet—पूर्णाहार, पूरी खुराक।
Full diet rice—पूर्णाहार चावल।
Full particulars—पूरा ब्योरा, सारा हाल।
Full supply level—सप्लाईका स्तर।
Full-fledged nationalisation—पूर्ण राष्ट्रीयकरण।
Fully—पूर्णतया।
Function—कृत्य,कार्य,पद,कर्तव्य,काम।
Functions & duties—कृत्य और कतव्य, कार्य और कर्तव्य।
Functus Officio—समाप्ताधिकार।
Fund—पूँजी में जमा करना, सरकार को ऋण देना, धन, कोष, निधि।
Fundamental—मौलिक।
Fundamental Guide Book—मौलिक पथप्रदर्शिनी पुस्तक।
Fundamental rules—मौलिक नियम आधार-भूत नियम।
Fund, Provident—प्राविडेंट फंड, पूर्वोपायी कोष।
Funeral expenses—क्रिया-कर्म व्यय।
Furlong—फर्लांग।

Furlough—फरलो।
Furnish—समायुक्त करना, उपस्कृत करना, परिकल्पित करना(to provide) सजाना, देना।
Furnish security—जमानत दाखिल करना।
Furniture—उपस्कर, फर्नीचर, सामान।
Further—आगे, और अधिक दूर तक, अग्रिम।
Further action—और आगे की कार्यवाही।
Further charge—अधिक भार।
Further information—और अधिक जानकारी।
Fuses—फ्यूज, दहनवर्तियाँ।
Futile—व्यर्थ।
Future—भविष्य, भावी, भाव्य, भवितव्य।
Future estate—भविष्य भूसम्पत्ति।

G

Gable—पाँखें, पंखे का तिकोना।
Gain—लाभ।
Gaiters—गटर, लेगिंग।
Gallery—दीर्घा, गैलरी।
Galli Pots—मर्तबान, मलहम पात्र।
Gallows—वधस्थान, फाँसी का तख्ता।
Galvanized—जस्त चढ़ी।
Galvanized wire—कलईदार तार।
Gambling-जुआ, द्यूत।
Game Laws-शिकार-सम्बन्धी कानून, आखट-सम्बन्धी कानून।
Games—खेल।
Games fee—खेल की फीस।
Gang—दल, गिरोह।
Gang case—गैंग केस।
Gang huts—श्रमिक समूह के झोपड़े।
Garrage—गराज,मोटरघर, मोटरखाना।
Gardener—आरामिक, माली।
Garden Overseer—उद्यान-अवेक्षक, बाग ओवरसियर, उद्यान ओवरसियर।
Garden party—गार्डन पार्टी, उद्यान-भोज।
Garnishee—ऋणी का ऋणी।
Gas hand-grenades—गैस के हथगोले
Gate—फाटक।
Gate book—फाटक-पंजी,फाटक-बही।
Gate keeper—फाटक-पाल।
Gather—एकत्र करना।
Gauge—गाज, पैमाना।
Gauge—झीना, गाँज, पट्टी का झीना कपड़ा!
Gazette—गजट, राजपत्र।
Gazetted establishment—राजपत्रित स्थापना, गजटेड स्थापना।
Gazette, Extraordinary—असाधारण गजट।
Gazetted Officers—राजपत्रित अधिकारी, गजटेड अफसर।
Gazetted Service—राजपत्रित सेवा, राजपत्रित भृत्या।
Gear switch—गियर स्विच।
General—सामान्य, साधारण,प्रधान।
General Administration Report-सामान्य प्रशासन-विवरण-लेख।
General Administration (including Ecclesiastical)Department सामान्य प्रशासन-विभाग (धार्मिकसहित)
General and special powers of attorney—सामान्य और विशेष प्रतिनिधि-पत्र।
General application-व्यापक प्रयोग।
General Election—सामान्यनिर्वाचन,

आम चुनाव, बड़ा चुनाव।
General letter—सामान्य चिट्ठी।
Generalizationसामान्यकरण,सामान्यन
Generally—सामान्यतः, साधारणतया, प्रायशः, साधारणतः।
General Manager—महाप्रबन्धक, जनरल मैनेजर, प्रधान व्यवस्थापक।
General nursing—सामान्य उपचार।
General power—सामान्य अधिकार।
General provident fund—सरकारी पूर्वोपायी कोष।
General Rules—सामान्य नियम।
General Rules, Civil—दीवानी के सामान्य नियम।
General Rules, Criminal—फौजदारी के सामान्य नियम।
General Science—सामान्य विज्ञान।
General sequence—सामान्य तारतम्य, सामान्य अनुक्रम।
General stamp—सामान्य स्टाम्प।
Generating station—विद्युत्-उत्पादन संस्थान, बिजली पदा करने का स्टेशन।
General store room—सामान्य कोष्ठागार।
General wards—सामान्य कक्ष, सामान्य वार्ड।
Generation of energy—उत्पादन (शक्ति का)।
Generator—जनक, जनित्र।
Gentlemen of the jury—सभ्यगण।
Genuine—वास्तविक, सच्चा।
Genuineness—यथार्थता, सचाई, असलियत।
Geological Survey—भूगर्भ-परीक्षण, भूगर्भ-अनुदर्शन, भूगर्भ विषयक जाँच।
Geologist—भूगर्भ-शास्त्रज्ञ, भूगर्भशास्त्री
Geometric mean—ज्यामितिक मध्यक गुणोत्तर मध्यक।
Germination—अंकुरित होना, अंकुर फूटना, जमना, उद्भेदन।
Germs—बीमारी के कीड़े, रोगाणु।
G. G. O.—गवर्नर जनरल की आज्ञा।
G. I.—भारत सरकार।
Gift—दान, प्रदेय, प्रदान, उपहार।
Gift deed—प्रदानपत्र, हिबानामा।
Gift of movable property—चल सम्पत्ति का दान।
Girder—गाटर, गडरा।
Girth—वस्त्रा, कक्ष्या, परिधि, घेरा, तंग, परिणाह।
Gist—सार, निष्कर्ष, तात्पर्य।
Given under my hand and seal of the court—मेरे हस्ताक्षर और अदालत की मोहर से दिया गया।
Glanders—बदकनार।
Glanders and Farcy Act—बदकनार तथा जहरबाद कानून का अधिनियम।
Glass—शीशा, काँच।
Glazed—शीशा लगा हुआ, घुटा हुआ, चमकता हुआ।
Glossary—शब्दावली, शब्दकोष।
Gloves—हस्तत्राण, दस्ताने।
Gloy—गोंद, लेई।
Glue—सरेस।
G. O. (Government Order)—सरकारी आज्ञा, राजाज्ञा।
Gold cherrons—सुनहले बिल्ले।
Gold lace—सुनहला फीता।
Gold faith—नेकनीयती, सद्भाव।
Good behaviour—अच्छा चलन, नेकचलनी, सदाचरण।

Goods—माल, भांडक, बिक्री का सामान
Goods and chattels—भाण्डक और अटाला, माल-असबाब।
Goods train—मालगाड़ी।
Good will—सद्भाव, ख्याति, साख।
Gorait—गुड़त, गुड़इत।
Govern—शासन करना, हुकूमत करना।
Governance—शासन।
Governed—शासित, नियंत्रित, अधीन।
Governed by clause—अमुक धारा के अधीन।
Governed by rule—नियम द्वारा व्यवस्थित।
Governing Body—प्रबन्ध-मंडल।
Governing Transport and Traffic on the roads—सड़कों पर वाहन तथा यातायात की व्यवस्था।
Government—सरकार।
Government advocate—सरकारी अधिवक्ता, राज-अधिवक्ता, सरकारी वकील।
Government affairs—राजकाज, राजकार्य, सरकारी काम।
Government appeal—सरकारी अपील, गवर्नमेन्ट अपील।
Government buildings—सरकारी भवन, सरकारी इमारतें।
Government Central Workshop—सरकारी केन्द्रीय शिल्पशाला, राजकीय केन्द्रीय कर्मशाला।
Government House—राजभवन, गवर्नमेण्ट हाउस।
Government of India Act—भारत सरकार अधिनियम, भारत सरकार विधान, गवर्नमेण्ट आफ इंडिया एक्ट।
Government of India Extraordinary Gazette—भारत सरकार का असाधारण राजपत्र।
Government of India Gazette—भारत सरकार का राजपत्र।
Government of India Provisional Constitution Order, 1947—भारत सरकार की अस्थायी विधान-आज्ञा, १९४७।
Government Order—राजाज्ञा, राजकीय आज्ञा, सरकारी आज्ञा।
Government Pleader—सरकारी अभिभाषक, राज-अभिभाषक।
Government Promissory Notes—सरकारी प्रामिसरी नोट।
Government Railway Police—गवर्नमेण्ट रेलवे पुलिस, सरकारी रेलवे पुलिस, जी० आर० पी०।
Government Resolution—सरकारी निश्चय, राज-निश्चय।
Government Security—सरकारी ऋणपत्र।
Government Servants—राजपुरुष, राज सेवक, सरकारी नौकर, राजकर्मचारी।
Government Servants Conduct Rules—राजसेवक व्यवहार नियमावली
Government studbull—सरकारी साँड़।
Governor—राज्यपाल, गवर्नर।
Governor acting with his Ministers—मंत्रिमंडल गवर्नर।
Governor-General—गवर्नर जनरल।
Governor-General in Council—सपरिषद् गवर्नर जनरल।
Governor's Secretary—राज्यपाल के सचिव।

Governor's Secretary's Office—राज्यपाल के सचिव का कार्यालय।
Gown—चोगा, गाउन।
G.P. Fund—राजकीय, पूर्वोपायी कोष।
Grace, Day of—अनुग्रह-दिवस।
Grace marks—कृपांक, रियायती नम्बर।
Gradation list—कोटिक्रम-सूची।
Grade—कोटि, ग्रेड।
Graded—कोटिबद्ध।
Grade examination—कोटि-परीक्षण।
Graded Pathologist—कोटिगत रोगशास्त्रज्ञ।
Grade promotion—कोटि-वृद्धि।
Grades—कोटियाँ, ग्रेड।
Grades of schools—स्कूलों के ग्रेड, स्कूलों की कोटियाँ।
Gradient—ढाल, उतार-चढ़ाव की दर, सड़क का ढालुवां भाग।
Grading—कोटिकरण।
Gradual—आनुक्रमिक, शनैः पातुक।
Graduation—उपाधि प्राप्ति, स्नातक हो जाना।
Grain godown—अन्न-गोदाम, गल्ला-गोदाम।
Grain products—अन्न से बने हुए पदार्थ, अन्नोत्पादित पदार्थ।
Grain store—अन्न स्टोर, अन्न-कोष्ठागार।
Grand total—पूर्ण योग, कुल जोड़।
Granite—सख्त पत्थर।
Grant—अनुदान, स्वीकार करना।
Grant an interview—संदर्शन स्वीकृत करना, मुलाकात मंजूर करना।
Grant, Attendance—उपस्थिति अनुदान।
Grant, Boarding—छात्रावास-अनुदान।
Grant, Building—भवन-अनुदान।
Grant, Cadet—केडट अनुदान, बालवीर।
Grant, Fixed—स्थिर अनुदान।
Grant, Furniture and equipment—उपस्कर और सज्जा के लिये अनुदान।
Grant-in-aid—सहायक अनुदान।
Grant, Interim—अन्तर्कालीन अनुदान।
Grant, Maintenance—अनुपालन-अनुदान।
Grant of gratuity—ग्रेचुटी की मंजूरी, अनग्रह-धन का अनुदान।
Grant of leave—छुट्टी का मंजूर होना, छुट्टी का स्वीकृत होना।
Grant, Ordinary—साधारण अनुदान
Grant, Preliminary—प्रारम्भिक अनुदान।
Grants equivalent to—के सममूल्य अनुदान, के बराबर अनुदान।
Grants, Recurring and Non-recurring—आवर्ती तथा अनावर्ती अनुदान।
Grant, Special—विशेष अनुदान।
Grant, Staff—कर्मचारियों को रखने के लिये अनुदान।
Grant, Supplementary—कर्मचारिवर्ग-अनुदान, अनुपूरक अनुदान।
Graph—ग्राफ, बिन्दुरेखा।
Graph-paper—बिन्दुरेखा-पत्र।
Grateful—आभारी, कृतज्ञ, अनुगृहीत।
Gratification—परितोषण, तुष्टि।
Gratings—जाली, सलाखें, झंझरी।

Gratitude—एहसान, कृतज्ञता ।
Gratuity—ग्रेचुटी, अनुग्रह-धन, सेवोपहार ।
Graves—गर्त, कब्र, गोर, बजड़ी, कंकड़, पत्थर के टुकड़े ।
Gravity—गुरुत्व ।
Gravity canals—ढालचालित नहरें ।
Gravity of directions—निदेशों की गंभीरता ।
Grease free—चर्बीरहित, स्नेहमुक्त ।
Greaser—ग्रीज लगानेवाला, ग्रीजर ।
Great coat—बरान कोट, ओवर कोट ।
Grid—जाल ताल, जाल ।
Griddle—तवा ।
Grievance—कष्ट, विपत्ति, शिकायत ।
Grievous hurt—घोर उपघात, कड़ी चोट, गहरी चोट, जरब शदीद ।
Grind stone—सान, चक्की, जाँता, सिल ।
Grit—कंकड़, कंकड़ी, संगरेजा, बजरी ।
Gross area—सकल क्षेत्रफल, कुल रकबा ।
Gross assets—कच्ची निकासी ।
Gross commanded area—सकल अधिक्षेत्र ।
Gross income—सकल आय ।
Gross negligence—अत्यधिक उपेक्षा, भारी लापरवाही, भारी प्रमाद ।
Gross receipt and expenditure—सकल आय और व्यय ।
Gross salary—सकल वेतन ।
Ground—आधार, भूमि, कारण ।
Ground floor—पहिली मंजिल ।
Ground of appeal—पुनर्न्याय प्रार्थना कारण, अपील का आधार ।
Ground rent—भू-भाटक ।
Grounds—मैदान ।
Grounds of appeal—अपील के आधार ।
Ground water supplies—पाताल जल-पुंज ।
Group—समुदाय, समूह, गुट्ट ।
Group leader—टोली-नायक, ग्रूप लीडर ।
Group of minor heads—लघुशीर्षक-समुदाय ।
Growth—वृद्धि, बढ़वार ।
Groyne—जलतोड़ ।
Guarantee—प्रत्याभूति, विश्वास दिलाना
Guarantee letter—गारन्टी पत्र, सुरक्षा-पत्र, प्रत्याभूति-पत्र ।
Guarantor—प्रत्याभू ।
Guard—प्रहरी, गार्ड, पहरेदार ।
Guard Book—गार्ड बुक, पहरे का रोजनामचा ।
Guardian—संरक्षक, सरपरस्त ।
Guardian-ad-litem—प्रतिवादार्थ नियुक्त संरक्षक ।
Guardianship—संरक्षता ।
Guards and escorts—गारद और कमान ।
Guidance—पथप्रदर्शन, प्रणोति, मार्गदर्शन ।
Guide—पथ-प्रदर्शन करना, पथ-प्रदर्शक ।
Guilt-edged—सुनहरी, परम ।
Guilty—दोषप्राप्त, दोषी, अपराधी ।
Gul culvert—गूल की पुलिया ।
Guls—गूल ।
Gum—एक प्रकार की गोंद ।
Gun barrel—बन्दूक की नली ।
Gusset plate—जोड़नेवाली या बाँधनेवाली प्लेट ।
Gutter—नाली, मोरी ।
Gymnasium—व्यायामशाला ।

H

Habeas Corpus—वैयक्तिक, स्वतंत्रता-नियम, वैयक्तिक स्वतंत्रता-शासनपत्र, बन्दी-उपस्थापन ।
Habitation—वासस्थान, मकान ।
Habitual—आभ्यासिक, दुबारा । (Special jail term).
Hackney Carriage Act—भाड़े की गाड़ियों का अधिनियम ।
Haemorrhagic Septecaemia—घुरंखा, गलघोटू ।
Hairpin—संगमोड़ ।
Hajj pilgrim—हजयात्री ।
Hajj pilgrimage—हजयात्रा ।
Half-blood—सौतेला, दूसरी माँ या बाप से ।
Half-diet—आर्ध-आहार, आधी खूराक ।
Half-fee—अर्धशुल्क, अर्ध फीस ।
Half-margin—अर्धोपान्त, अर्ध-उपान्त ।
Half yearly—अर्धवार्षिक, षट्मासिक, छमाही ।
Half-yearly balance—छमाही शेष ।
Half-yearly register of stock—सामान का छमाही रजिस्टर ।
Hall—शाला, गोल कमरा, बड़ा कमरा ।
Halt—पड़ाव, टिकाव, रुकने का स्थान, मुकाम ।
Halting allowance—विराम-भत्ता, रुकने का भत्ता ।
Hammer—घन ।
Hammerman—घनमार, घन मारनेवाला ।
Hand-book—पुस्तिका ।
Hand-craft—हस्तशिल्प, दस्तकारी, शिल्पकारी, शिल्पकर्म ।
Hand cuffs—हथकड़ी ।
Handicap—बाधा, रुकावट, अवरोध ।
Handling of animals—पशु-प्रबन्ध ।
Handrail—पकड़ने का सीढ़ी का डंडा ।
Hand rcceipt—दस्ती रसीद ।
Hangar (Airship)—हवाई जहाज रखने का स्थान ।
Haq-i-chaharum—चौथाई का हक ।
Harbour—पोताश्रय, बन्दरगाह, नावाश्रय, स्थान देना, आश्रय देना या पाना, छिपाना ।
Harmonic mean—हरात्मक मध्यक ।
Harmony—मेल ऐक्य, एकतान, तालमेल, ताल स्वर का मेल, तराना ।
Harness—बग्घी का साज ।
Harvest—शस्यलाव, फसल ।
Harvesting—फसल काटना ।
Hasp—कुन्दा, कब्जा ।
Hatchery—अंडे बैठाने की जगह, हैचरी ।
Hath chitta—हथचिट्ठ ।
Haunch of arch—डाट का पुट्ठा ।
Haversake—पिट्ठू ।
Hay—सूखी घास ।
Head—शीर्षक ।
Head assistant—मुख्य सहायक, प्रधान सहायक ।
Head Clerk—प्रधान्न लेखक, मुख्य लेखक, मुख्य क्लर्क, बड़े बाबू, हेड क्लर्क ।
Head collar—हेड कालर ।
Head constable—बड़ा नायक, हेड कान्स्टेबुल ।
Head dress—शिरस्क, टोपी, टोप, पगड़ी ।
Head fireman—मुख्य अग्निपाल, मुख्य फायरमैन ।
Heading—शीर्षक, सुरखीं ।
Headline—शीर्ष पंक्ति ।

Head, Major—बृहत् (बड़ा) शीर्षक।
Head master—प्रधानाध्यापक, हेड मास्टर।
Head, Minor—लघु शीर्षक।
Head mistress—मुख्य मिस्त्री।
Head mistress—प्रधानाध्यापिका।
Head munshi—बड़े मुंशी, मुख्य मुंशी।
Head of account—लेखा शीर्षक, लेखे का शीर्षक।
Head of department—विभागाध्यक्ष।
Head Quarter—मुख्यालय, मुख्य स्थान, सदर मुकाम।
Head regulator—शीर्षस्तर नियामक।
Head rope—शिर रज्जु।
Heads of offices—कार्यालयों के अध्यक्ष, कार्यालयाध्यक्ष।
Heads of revenue—राजस्व शीर्षक।
Headway—प्रगति।
Headway under bridge, navigation channels—नौतार्य, नहरों के पुल के नीचे का स्थान।
Head works—उद्गम कार्यजात।
Health—स्वास्थ्य।
HealthCertificate—स्वास्थ्यप्रमाणपत्र
Health visitor—स्वास्थ्य निरीक्षक।
Hearing—सुनवाई।
Hearsay—श्रुताश्रुता, सुनी-सुनाई बात, अफवाह।
Heater—तापक।
Heating—गरम करना।
Heat stroke—लू।
Heel tile—एड़ी जोड़ा।
Height—ऊँचाई।
Heir—उत्तराधिकारी।
Heir-at-law—वैधानिक रिक्थी, वैधानिक उत्तराधिकारी।
Heirless—अरिक्थी, अदायाद, अदायिक, बिना उत्तराधिकारी का।
Heirloom—जंगम रिक्थ।
Helmet—लोहे का टोप।
Helminthic—कृमि-संबंधी।
Help—सहायता।
Henceforth—अतःपरम्, अब से आगे।
Herbarium—वनस्पति संग्रहालय।
Hereafter—इसके पश्चात्, इसके आगे।
Hereby—अनन, इसके द्वारा, इससे।
Hereditament—दाययोग्य सम्पत्ति, पितृप्राप्य संपत्ति।
Hereditary—पैतृक, मौरूसी, पारंपरीण, वंशानुक्रमेण, आनुवंशिक, पुश्तैनी।
Hereditary and Probationary—मौरूसी और उम्मेदवार सुपुर्दार।
Herein—यहाँ।
Hereinafter—इसके बाद, नीचे, इससे आगे।
Herewith—इसके साथ।
Her Excellency—महामान्या।
Hessian cloth—टाट।
Heterogeneous data—विजातीय सामग्री, बेमेल सामग्री।
Hexagon—षट्कोण, षड्भुज।
High—उच्च, ऊँचा।
High Commissioner—उच्चायुक्त, हाई कमिश्नर।
High Commissioner for India—भारत के उच्च आयुक्त।
High Court—उच्च न्यायालय, हाईकोर्ट।
High Court of Judicature—हाईकोर्ट।
Higher authority—उच्च प्राधिकारी।

High flood level—महाप्लव स्तर चिह्न, बड़ी बाढ़ का स्तर चिह्न।
Highhandedness—अत्याचार,ज्यादती
High Pressure steam—उच्च निपीड़ वाष्प।
High pressure sterilizer—उच्चतम निपीड़ जीवाणुहा।
High School Examination—हाईस्कूल परीक्षा।
High speed—तीव्रगति।
High tension—अधिक तनाव, विशेष वैमनस्य, बड़े वोल्टेज।
High-way—राजमार्ग।
High-way bill--राजमार्ग विधेयक।
Highway code—राजमार्ग नियम संग्रह।
Hill allowance—पहाड़ का भत्ता।
Hill exodus—पर्वत-यात्रा, पहाड़ पर जाना।
Hill recess—(राजकीय अधिकारियों के लिए) पहाड़ पर जाकर कार्य करने की अवधि।
Hind Flying Club—हिन्द उड्डयन मंडल।
Hinge—चूल, कब्जा।
Hip rafter—शीर्षशहतीर।
Hire—किराया, भाड़ा।
Hire, Deed of-किराये का नियमपत्र।
Hire purchase—भाड़ा-क्रयन।
His Excellency—महामान्य,महामहिम
History—इतिहास।
History sheet—वृत्तफलक, अपराध वृत्त, चरित्र वृत्त।
History ticket—वृत्त पत्रक।
Hoard—संचय करना, जोड़ना, संचय।
Hoe—कस्सी।
Holder—धारक, गृहीता।
Holding cost—रोक रखने की लागत।
Holding of a tenant—असामी की जोत।
Holdings—जोतें, खाते।
Holdings area—जोतों का क्षेत्रफल, जोतों का रकबा।
Hold up—होल्ड अप।
Holiday—छुट्टी।
Holiday, Public—सार्वजनिक छुट्टी, सरकारी छुट्टी।
Hollow—खोखला।
Holograph-पूर्णतः स्वलिखित लेखपत्र।
Home Department (Criminal)—गृहविभाग (फौजदारी)।
Home Department (Jails)—गृहविभाग (कारागार)।
Home Department (Police)—गृहविभाग (पुलिस)।
Home Secretary—गृह सचिव।
Homicide—नरहत्या।
Homoeopathy—होम्योपैथी।
Homogeneous—सजातीय, एकजाति, इकसार, एकसा, तुल्य, समांग।
Honest—सत्यशील, शुद्धशील, शुचि, ऋजु, शुद्ध, सच्चा।
Honey—मधु, मकरंद, क्षौद्र, पुष्पसार।
Honey-comb work-जालीदार काम।
Honoraria—मानदेय।
Honorarium—मानदेय।
Honorific prefixes—नाम के पहले सम्मानसूचक उपाधि।
Honour—आदर, सम्मान, आदर करना, हुंडी सकारना।
Honourable Member—माननीय सदस्य।

Honorary—अवैतनिक, अधीष्ट।
Honorary duty—अवैतनिक कार्य, अवैतनिक कर्त्तव्य।
Honorary Medical Officer—अवैतनिक चिकित्साधिकारी।
Honorary Physician—अवैतनिक भिषक्।
Honorary Surgeon— अवैतनिक शल्यक।
Hon'ble (Honourable)—माननीय।
Hon'ble Minister—माननीय मंत्री।
Hon'ble Minister of Agriculture—माननीय कृषिमंत्री।
Hon'ble Minister of Communications—माननीय यातायात मंत्री।
Hon'ble Minister of Developement and Industries—विकास तथा उद्योग के माननीय मंत्री।
Hon'ble Minister of Education and Labour—माननीय शिक्षा तथा श्रम मंत्री।
Hon'ble Minister of Excise, Jails and Registration—आबकारी, कारागार तथा पंजीयन के माननीय मंत्री।
Hon'ble Minister of Finance and Information—वित्त तथा सूचना के माननीय मंत्री।
Hon'ble Minister of Local Self-Government—माननीय स्वशासन मंत्री।
Hon'ble Minister of Police and Transport—पुलिस तथा वाहन के माननीय मंत्री।
Hon'ble Minister of Public Health and Civil Supplies—जनस्वास्थ्य तथा रसद के माननीय मंत्री।
Hon'ble Minister of Revenue & Forest—माननीय माल तथा वनमंत्री।
Hon'ble Premier—माननीय मुख्य मंत्री।
Honours courses—आनर्स पाठयक्रम।
Hood—छतरी, टप, ओढ़ना, टोपी।
Hook-काँटा, कुन्दा।
Hoop iron—लोहे का पत्तर।
Hope—आशा।
Horse allowance—घोड़े का भत्ता।
Horse flies—अश्वमक्षिका, अश्वनीला।
Horse power—अश्वशक्ति।
Horse stallion-बीजाश्व, वृषणाश्व, घुड़साँड़।
Horticultural Overseer—औद्योगिक अवेक्षक।
Hose pipe—चमड़े या रबड़ का नल, हौज नल।
Hose tops—होजटाप।
Hospital—चिकित्सालय, अस्पताल, शफाखाना, आतुरालय।
Hospital attendant—चिकित्सालय परिचर।
Hospital equipment-चिकित्सालय सज्जा, अस्पताल का साज-सामान।
Hospital leave—अस्पताली छुट्टी।
Hospital requisities-चिकित्सालय की आवश्यक वस्तुयें।
Hostel—छात्रावास।
Hostel fees—छात्रावास शुल्क।
Hotchpotch — विभाजनार्थ विविध संपत्ति मिश्रण।
Hot water bag—गरम पानी की थैली।
Hot water bottle—गरम पानी की बोतल।

House—घर, सदन—(House of Legislature), सभा।
Household—कुटुम्ब, गृह्य।
Household supplies—गृहसामग्री, घरेलू सामान।
House-keeper—गृहरक्षक, गृहपाल।
House, Leader of the—सभानेता, सदन के नेता।
House Physician—अंतरंग भिषक्।
House rent—मकान का किराया।
House rent allowance—मकान के किराये का भत्ता, मकान किराया भत्ता।
House-scavenging— गृहमलवाहन, घरों का मैला साफ करना।
However—तथापि, तो भी।
Huge—अतिमात्र (as huge expenditure)बृहत्काय(as huge elephant), बहुत बड़ा।
Humane killer—सुगम वध्र यंत्र।
Humble—नम्र, विनीत।
Humbly—नम्रतया।
Hundi-stamp-हुंडी स्टाम्प,हुंडी मुद्रांक।
Hunger strike—भूख हड़ताल।
Hurry-त्वरा, जल्दी, जल्दबाजी, हड़बड़ी।
Hydel colony—जल-बिजली बस्ती, वारिविद्युत् बस्ती।
Hydel commercial engineer—जल-विद्युत्-वाणिज्य इंजीनियर।
Hydrant—पानी का नल या बम्बा।
Hydraulic—जलशक्ति संबधी, जलशक्ति चालित, जलचालित, जल।
Hydro—जल, पानी।
Hydro-electric—जल-बिजली, वारिविद्युत्, जल-विद्युत्।
Hydro-electric engineer—जलबिजली इंजीनियर।
Hydro-electric grid—जलविद्युत्-तारजाल, जलबिजली-तारजाल।
Hydrologic data—जलविद्या सम्बन्धी दी हुई बातें।
Hygiene-आरोग्य शास्त्र, स्वास्थ्यशास्त्र
Hyperbola—अतिपरवलय, मूढिक।
Hypotenuse—कर्ण (गणित)।
Hypothecate—बन्धक करना, गिरवीं रखना।
Hypothecation—आड़,सादा किफालत
Hypothesis—कल्पना, प्रतिज्ञा (गणित)

I

I am directed to—मुझे आदेश हुआ है कि।
I am directed to enquire—मुझे अनुसंधान करने का निर्देश हुआ है।
I am to add-मुझे यह भी लिखना है कि
I. A. S. (Indian Administrative Service)—भारतीय प्रशासन सेवा।
I beg to say—मेरा निवेदन है।
Ibid—उसी स्थान पर।
Ice-bag—बर्फ की थैली।
Ice box—बर्फ का बुक्स।
Ice cap—हिमशिरस्क, हिमटोपी, बर्फ की टोपी।
I.C.S. (Indian Civil Service)—भारतीय जानपद सेवा।
Idea-भावना,ख्याल,अभिप्राय,विचार,राय
Ideal—आदर्श।
Identical—अभिन्न, अनन्य, एक, एक-सा, पूर्णतया एक, एक ही।
Identification—अभिज्ञान, पहिचान, सायुज्य, शिनाख्त।
Identification card—अभिज्ञानपत्रक, पहचान पत्रक।
Identify—अभिज्ञान करना, पहिचान

करना, शिनाख्त करना।
Identity—पहचान, शिनाख्त।
Identity card—पहिचान पत्रक।
Idiocy—मूढ़ता, जाड़्य, पागलपन, खब्त।
Idiot—मूर्ख, विकलमति, खब्ती, मूढ़, सिड़ी, अबुद्ध।
Ignorance—अज्ञान, अज्ञता, अविद्या।
Ignore—उपेक्षा करना।
Ihave the honour to—भवन्निष्ठ।
Ihave the honour to Say—सेवा में निवेदन है कि।
Ill—व्याधित, अस्वस्थ, रुग्ण, बीमार, दुष्ट
Illegal—अवैध, अस्मार्त, अवैधिक, गैरकानूनी।
Illegal gratification—उपप्रदान, घूस।
Illegible—अस्पष्ट वर्ण, दुर्वाच्य।
Illegible Copy—न पढ़ी जा सकने योग्य प्रतिलिपि, दुर्वाचनीय।
Illegitimacy—जारजता, जारजात्य, वजात्य, दोगलापन।
Illicit—अधर्म्य, आज्ञाविरुद्ध, निषिद्ध, अवैध, अगम्य, अनुचित, नियमविरुद्ध, गैरकानूनी।
Illicit intercourse—अगम्य गमन।
Illustrate—उदाहृत करना, उदाहरण देकर समझाना।
Illustration-उदाहरण, निदर्शन, दृष्टान्त, स्पष्टीकरण, चित्र, पुस्तस्थ चित्र, मिसाल।
Image—प्रतिबिम्ब, प्रतिछाया, शक्ल।
Imaginary—काल्पनिक, वितथ, अवास्तविक।
Imbursement—भुगतान।
Immaterial—महत्त्वहीन, तुच्छ, लघ्वर्थ, निरर्थक, स्तरहीन, अमूर्त, अभौतिक।
Immediate—तात्कालिक, तत्काल, तुरंत, अनंतरित (as immediate officer), फौरन।
Immediate charge—तात्कालिक कार्यभार, निकटतम कार्यभार।
Immense—अपरिमित, बहुत बड़ा, अति मात्र।
Immerse—डुबोना, बोरना।
Imminent—प्रत्यासन्न, सिर पर खड़ा।
Immoderate to large defect—मध्यम से लेकर अधिक कमी के साथ।
Immoral—अनैतिक, बदइखलाक।
Immoral contracts-अनैतिक उपसंवाद
Immorality—दुश्चरित, विशीलता, पाप, बदकारी।
Immoral traffic—स्त्रियों का भगाना और बचना, अनैतिक पण।
Immovable—अचल।
Immovable property-अचलसम्पत्ति।
Immunity—उन्मुक्ति।
Impartible—अविभाज्य, अबँटनीय, न देने योग्य।
Impeachment—प्राभियोग।
Imperial Service—राष्ट्रीय सेवा, राष्ट्रीय भृत्या।
Imperial Statement—केन्द्रीय विवरण-पत्र।
Impersonation—दूसरा व्यक्ति बनना, छद्मव्यक्तिता।
Impervious—अप्रवेशनीय, अप्रवेश्य।
Implement—कार्यान्वित करना, कार्य में परिणत करना, उपकरण, औजार।
Implications—परिणाम, फल, गर्भितार्थ
Implicit—पूर्ण (as implicit faith), अस्पष्ट (as functions), उपलक्षित, ध्वनित, गर्भित।
Implied—गर्भित, उपलक्षित, छिपा, निहित।

Implied contract—गर्भित संविद्, सुपुर्दगी में।
Import—आयात।
Important—महत्त्वपूर्ण, गुर्वर्थ, जरूरी।
Imported—बाहर से मँगाई गई वस्तु।
Imposition-आरोप, आरोपण लगाना, लगाया जाना, थोप, थोपना, आरोप लगना, कर बाँधना, दबाव।
Impotence—नपुंसकता, दुर्बलता,क्लैब्य; क्लीबता।
Impound—न्यायालय द्वारा लेख्यों का अधिकार में लिया जाना, जब्त करना, निरोध करना, बाड़े में बन्द करना, काँजी हाउस में बन्द करना।
Impounded documents—जब्त किये हुए लेखपत्र।
Impracticable—अव्यवहार्य, अव्यावहारिक।
Impress—प्रभाव डालना, छाप, मोहर, छाप लगाना, मोहर करना, चित्त में बैठा देना, बेगार में पकड़ना।
Impressed—मुद्रांकित।
Impressions—छाप।
Impressment—बेगार, बेगार में पकड़ना।
Imprest—पेशगी, अग्रधन, अगाऊ धन।
Imprisonment—कारावास, बन्धन, कैद, जेल।
Improved—उन्नत, सुधारा हुआ।
Improvement—सुधार, उन्नति।
Improvement Trust—सुधारमंडल, सुधार प्रन्यास।
Improvise—आवश्यकता पर तुरन्त प्रबन्ध कर लेना।
In accordance with—के अनुसार।
Inadequacy—अयोग्यता, अपर्याप्ति, असामर्थ्य, न्यूनता।
Inadequate—अपर्याप्त।
In addition to strength—कर्मचारी संख्या के अतिरिक्त।
Inadmissible—अग्राह्य।
Inadvertently—भूलसे, असावधानी से
In anticipation of—की प्रत्याशा में, की उम्मीद में।
In anticipation of sanction—स्वीकृति की प्रत्याशा में, स्वीकृति की उम्मीद में।
Inaugural—प्रतिष्ठापनिक।
In camera—गुप्त, कक्षस्थ, जज के प्राइवेट कमरे में।
Incapable—अयोग्य, असमर्थ।
Incarcerate—कैद करना, जेल में बन्द करना, जेल करना।
In case of—के संबंध में, के मामले में।
Inch—इंच।
Incharge—कार्यवाह, कार्याधिकृत, कार्यभारी, इंचार्ज।
Incidence—आपात, करापात।
Incidence of tax—करापात।
Incident—घटना, संयोग, वृत्तान्त, आनुषंगिक।
Incidental charges—आनुषंगिक व्यय, आपातिक व्यय।
Incision—चीरा।
Incline—ढाल, ढलुवाँ स्थान, चढ़ाव-उतार, झुकना, इच्छा होना, रुचि होना।
Inclined—झुका।
Inclusion—समावेश,सम्मिलित करना।
Inclusive-लेकर,मिलाकर,शामिलकरके
Income—आय, आमदनी।
Incommensurate-असमान,अतुल्यमान।
Income tax—आयकर।

Incompetence- अयोग्यता ।
Incompetent—अक्षम, अयोग्य ।
Incomplete—अपूर्ण ।
In compliance with—के पालनार्थ, पालन करते हुए ।
In conformity with—के अनुरूप, के अनुगुण ।
In connection with—के सम्बन्ध में।
In consequence—के फलस्वरूप, परिणामस्वरूप ।
Inconsistent—असंगत ।
In continuation of—के सिलसिलेमें ।
Inconvenience—असुविधा ।
Incorporate—निगमन करना, निगमीकरण, सम्मिलित करना ।
Incorporation—सम्मिलित करना, प्रारम्भण ।
Increase—बढ़ाना, वृद्धि, बढ़ती ।
Increment—वेतन-वृद्धि ।
Incubation period—अंडा फूटने की अवधि ।
Incumbency—पदधारण, ओहदेदारी, पदधारणकाल ।
Incumbent—पदधारक ।
Incumbrance—ऋणभार ।
Incur—अपने ऊपर लेना, उठाना, कर लेना ।
Indebtedness—ऋणग्रस्तता ।
Indecent to mention—उल्लेख करना अनुपयुक्त या अशालीन ।
Indeed—वस्तुत:, सचमुच ।
In default of—न देने के कारण, न अदा करने के कारण ।
Indefeasible—अक्षय ।
Indefinite—अनिश्चित ।
Indemnify—टोटा भरना, डांड़ देना ।
Indemnity—क्षतिपूरण, हानिपूरण ।
Indemnity bond—क्षतिपूरक प्रतिज्ञापत्र ।
Indent—माँगपत्र, माँग, माँगना ।
Indents,Supplementary—अनुपूरक माँगपत्र ।
Indenture—नियमपत्र, दो व्यक्तियों के बीच लिखित संविद् ।
Independent--स्वतंत्र, स्वाधीन, आजाद ।
Independent Party—स्वतंत्र दल ।
Index—अनुक्रमणिका ।
Index-number—देशनांक ।
Indian Air Force—भारतीय नभ सेना
Indian and Colonial Divorce—भारतीय और उपनिवेशिक विवाह-विच्छेद
Indian Arms Act—भारतीय शस्त्र विधान ।
Indian Army Act—भारतीय सेना विधान ।
Indian Civil Service—भारतीय जानपद भृत्या ।
Indian Divorce Act—भारतीय तलाक विधान, भारतीय विवाह-विच्छेद विधान ।
Indian etiquette-भारतीय शिष्टाचार
Indian Evidence Act—भारतीय साक्ष्य विधान, कानून शहादत ।
Indian Independence Act 1947—भारतीय स्वातंत्र्य अधिनियम, १९४७ ।
Indian Medical Association—भारतीय भेषज संघ ।
Indian Penal Code—भारतीय दण्डविधान, दण्ड-विधिसंग्रह, भारतीय दंड संहिता ।
Indian Research Fund Asso-

ciation—भारतीय गवेषणा निधि संघ।
Indian Store Department—भारतीय भण्डार वस्तु विभाग, भारतीय भाण्डागार विभाग।
Indian Succession Act—भारतीय उत्तराधिकार विधान।
Indian Territorial Force—भारतीय प्रदेशी सेना।
Indication—संकेत, लक्षण, चिह्न, सूचना, सूचन।
Indifferent—खराब।
Indigent—गरीब, निर्धन, कंगाल, अकिञ्चन।
Indigent patients—निर्धन रोगी।
Indigenous—देशी।
Indirect—अप्रत्यक्ष।
Indirect collection—अप्रत्यक्ष समाहरण, अप्रत्यक्ष वसूली।
Indirectly—अप्रत्यक्षतः, अप्रत्यक्ष रूप से।
Indirect (tax)—अप्रत्यक्ष (कर)।
Indiscipline — अनुशासनहीनता, अविनय।
Indiscriminate—अविवेकपूर्ण, अंधाधुंध, अविवेकी।
In dispute—विवादास्पद, विवादग्रस्त।
Individual—व्यक्ति, व्यक्तिगत।
Individual Judgment—वैयक्तिक निर्णय।
Indivisible transactions—अविभाज्य लेन-देन, अविभाज्य व्यवहार।
Indolence—सुस्ती, काहिली, आलस्य।
Indoor—अंतर्वासी, अंतरंग।
Indoor diary—अन्तर्वासी रोगी दैनन्दिनी, अन्तर्दैनन्दिनी।
Indoor games—घर के भीतर खेले जानेवाले खेल, गृहान्तरे क्रीड़ा, गृहान्तरे खेल।
Indoor patients—भरती रोगी।
Induce—प्रेरित करना, लालच देना, प्रलोभन देना।
Induction—इंडक्शन, प्रभाव उत्पादन।
In due course—यथासमय।
Indulge—आदत डालना।
In duplicate—दुहरी, दुहरा।
Industrialist—उद्योगपति।
Industrialize—औद्योगीकरण, उद्योग विकासन।
Industrial Prices—औद्योगिक मूल्य।
Industrial statistics—औद्योगिक आगणन, औद्योगिक आँकड़े।
Industries Department—उद्योग विभाग।
Industrious—परिश्रमी।
Industry—उद्योग।
Ineffective—प्रभावहीन, निरर्थक, बेकार, बेअसर।
Inefficiency—अप्रगुणता, कार्य-अकुशलता, अकार्यक्षमता।
Inefficient—अप्रगुण।
Inertia—जड़ता।
Inevitable—अपरिहार्य।
Inevitable payments—अपरिहार्य भुगतान।
Inexact—अयथातथ, अशुद्ध, ठीक नहीं
In exercise of the Powers conferred by—द्वारा दिये गये अधिकारों को प्रयोग में लाते हुए, द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए।
Inexperience—अनुभवहीनता।
In fact—वस्तुत, वास्तव में।
Infant—शिशु।

Infanticide—शिशुवध, बालहत्या।
Infantile Leishmaniasis—बच्चों का कालाजार।
Infantry—पैदल सेना, पदाति।
Infantry training—पैदल सेना की ट्रेनिंग, पैदल सेना शिक्षण।
Infection—रोग संक्रमण, छूत, उड़नी बीमारी, खिलाफ कानून काम करने से माल का जब्त होना।
Infectious disease block—संक्रामक रोग ब्लाक।
Infectious jaundice of the dog or canine—कुत्ते का संक्रामक पांडु रोग।
Inferior—अवर।
Inferior servant—छोटे दरजे का नौकर, निम्न कर्मचारी।
Inferior servants establishment—अवर सेवक स्थापना।
Inferior service—अवर सेना, अवर भृत्या।
Infestation—उपद्रव, बाधा।
Infinitesimal—अत्यन्त छोटा, अति लघु अति सूक्ष्म।
Infirmary—आतुरालय, रुग्णालय।
Infirm gang—अशक्त गैंग।
Infirmity—कमजोरी, असमर्थता।
Inflammable—भकजल, जल उठनेवाला, झट से जल उठनेवाला।
Inflation—मुद्रास्फीति।
Inflict—लगाना, आमद करना।
Influence—प्रभाव, प्रभाव डालना, प्रभावित करना।
Informal—अरीतिक, अविधिक।
Information Department—सूचना विभाग।
Infra—अधः, निम्न, नीचे।
Infra Red Ray Treatment Room—पाररक्त रश्मि चिकित्सा कोष्ठ।
Infringe—भंग करना, तोड़ना, न मानना, उल्लंघन करना।
Infringement—उल्लंघन, भंग, तोड़ना, भंजन, तोड़ा जाना, भंग होना, भंग करना।
In furtherance of a common cause—सार्वजनिक हित की उन्नति के लिए।
Ingredient—जुज, अंश, अंग, घटक, द्रव्य।
Ingress—प्रवेश, आगम द्वार, प्रवेश द्वार।
Inherent—स्वभावगत, सहज, रूढ़, अन्तर्निहित।
Inherit—पैतृक संपत्ति के रूप में पाना, बपौती में पाना।
Inheritance—दाय, रिक्थ।
Initial—आरंभिक, आद्यक्षर करना, छोटा हस्ताक्षर करना।
Initial pay—आरम्भिक वेतन।
Initials—आद्याक्षर, छोटे हस्ताक्षर।
Injection—सुई लगाना, पिचकारी देना
Injection tray—सुई लगाने की तश्तरी।
Injunction—निषेधाज्ञा, निषेधादेश, आदेश।
Injured stamp—खराब स्टाम्प, क्षत स्टाम्प, क्षत मुद्रांक।
Injury—क्षति, चोट।
Injury report—चोट रिपोर्ट, आघात रिपोर्ट।
Injury to records—कागजात का नुकसान।
Injustice—अन्याय।
Ink—मसि, स्याही।

Inlets—प्रवेश द्वार।
In lieu of—के बदले, के स्थान पर।
Inmate—आवासी, रहनेवाला, रहैया।
In moderate excess—कुछ वाजिबी से अधिक।
Inner—आंतरिक, भीतरी, अन्दर का।
In obedience—आज्ञापालन करते हुए।
Inoculation—टीका, टीका लगाना।
Inopportune—अनवसर, असमयोचित, अकालिक, अयोग्य।
In order—नियमानुकूल, ठीक।
In partial modifications-आंशिक संशोधन करते हुए।
In-Patient Department—अन्तर्वासी रोगी विभाग।
In proper form—उचित रूप में।
In pursuit of—अनुशीलन।
Inquest—अदालती तहकीकात,अपमृत्यु विचारण, न्यायिक-विचारण, मृत्यु के कारण के संबंध में जूरी की राय।
Inquire—पूछ-ताछ करना,जाँच करना।
Inquiry—जाँच।
Insane—विक्षिप्त,पागल,उन्मत्त,उन्मादी।
Insanity—विक्षिप्तता, पागलपन, उन्माद, वातुलता।
Inscription—शिलालेख।
Insect Collector—कीट समाहर्ता।
Insemination—गर्भाधान।
Insert—अन्तन्यस्त करना, बैठाना, भरना, निविष्ट करना।
Insertion—अन्तर्न्यास,बीच में रखना।
Insignificant—तुच्छ,महत्वहीन,क्षुद्र।
Insist—आग्रह करना,हठ करना,जोरदेना
Insolvency—दिवाला।
Insolvent—दिवालिया।
Insolvent estates-दिवालिया रियासतें

Inspection—निरीक्षण।
Inspection House—डाक बँगला।
Inspection note—निरीक्षण टीप।
Inspection of files—नस्तियों का निरीक्षण, फाइलों का निरीक्षण।
Inspection of treasuries—खजानों का मुआयना या निरीक्षण, कोषागारों का निरीक्षण।
Inspection report—निरीक्षण विवरण, निरीक्षण लेख, मुआयना रिपोर्ट, निरीक्षण रिपोर्ट।
Inspectorate—निरीक्षक वर्ग, निरीक्षण कार्यालय, निरीक्षणाधिकार।
Inspectorate of Government Offices—सरकारी कार्यालयों का निरीक्षक वर्ग।
Inspectorate of Stamps—स्टाम्प निरीक्षणाधिकारी।
Inspector General—महानिरीक्षक।
Inspector General of Civil Hospitals—जानपद अस्पतालों के महानिरीक्षक।
Inspector General of Police—आरक्षा के महानिरीक्षक, पुलिस के इन्सपेक्टर जनरल।
Inspector General of Prisons—जेलों के इन्सपेक्टर जनरल, महाकारानिरीक्षक।
Inspector (e.g. Octroi, Waterworks, Sanitary, Public Works)—निरीक्षक (चुंगी, जलकल, सफाई, सार्वजनिक कार्य)।
Inspector of Government Offices—सरकारी कार्यालयों के निरीक्षक।
Inspector of Jail Buildings—कारागृह निरीक्षक, जेल की इमारतों

के इन्सपेक्टर, जेल भवनों के निरीक्षक।
Inspector of Schools—पाठशाला निरीक्षक, स्कूलों के इन्सपेक्टर।
Inspectress—निरीक्षिका, इन्सपेक्टरनी।
Inspite of—के होते हुए, के बावजूद।
Instal—प्रतिष्ठापित करना।
Installation—प्रतिष्ठापन, आरोपण, आसनासीन।
Instalment—किस्त।
Instance—उदाहरण, दृष्टान्त।
Instant—क्षण।
Instant attention—तत्काल ध्यान।
Instigate—भड़काना, अपोत्तेजित करना, उभाड़ना।
Institute—ज्ञानमंदिर, ज्ञानालय, इंस्टीट्यूट।
Institution—संस्था।
Instruct—शिक्षा देना, सिखाना।
Instruction—शिक्षा, सीख, अनुशिष्टि, हिदायत।
Instructions—निदेश, अनुदेश, देशना।
Instructor—शिक्षक, इन्सट्रक्टर।
Instruments—करणपत्र, लेख्य।
Insubordination—अविनय, अवज्ञा।
Insufficiency—अपर्याप्ति।
In supersession of—अकारथ करते हुए
In supersession of Inspection—निरीक्षण को अकारथ करते हुए।
Insurance—बीमा।
Insurance cover—बीमा लिफाफा।
Intact—अक्षुण्ण।
Intangible property—अमूर्त संपत्ति।
Integrity—सत्यशीलता, सत्यनिष्ठा, समग्रता, पूर्णतया, साकल्य, अवैकल्य।
Integrity certificate—सत्यशीलता प्रमाणपत्र।
Intelligence—प्रज्ञा, बुद्धि, बुद्धि समाचार, गुप्त वार्ता।
Intelligence test—बुद्धि-परीक्षा।
Intelligent—प्रज्ञ, प्रज्ञावान्, समझदार, बुद्धिमान्।
Intend—विचार करना, अभिप्राय रखना, इरादा रखना।
Intensity—प्रगाढ़ता, गाढ़ापन।
Intention—अभिप्राय, भाव, आकूत।
Inter-alia—बहुत से कारणों में से दूसरी बातों के बीच में, दूसरी बातों के मध्य में।
Intercourse—आपस का व्यवहार, संसर्ग, राहरीत मेल-मिलाप, बोलचाल, रावरसम, आवा-जाई।
Interest—बुद्धि, ब्याज, हित, स्वार्थ, अभिरुचि, दिलचस्पी।
Interest-bearing securities—ब्याजी सरकारी हुंडियाँ।
Interest of Public Service—सार्वजनिक सेवा हित।
Interim—अन्तरिम, अन्तर्वर्त्ती, मध्यवर्ती, अंतरीय, बीच के समय की।
Interim cost of living index—अंतरिम निर्वाह व्यय देशनांक।
Interim order—अन्तर्कालीन आज्ञा।
Interim relief—मध्यकालीन सहायता।
Interlineation-अंतर्पंक्तिलेख, पंक्तियों के बीच लिखना, निष्पादित होने के उपरांत किसी लेखपत्र में किसी बात का लिखना
Interlocutory—मध्यवर्ती, अन्तरिम।
Intermediary—बिचौंदिया, बिचौंदी, अन्तर का, स्थायी।
Intermediate—बीच का, मध्यवर्ती, व्यवधायक, माध्यमिक, अन्तःस्थायी।
IntermediateCollege—इंटरमीडिएट कालेज।

Intermediate forecast—बीच का पूर्वानुमान।
Intermittent cultivation—अतिरिक्त खेती।
Internal security—आन्तरिक सुरक्षा।
International—अन्तरराष्ट्रीय।
Interpleader—निक्षेपधारी द्वारा वाद का निक्षेप दावेदारों में जिसको दिया जाय
Interpellation—प्रश्नोत्तर।
Interpolation—आन्तरगणन।
Interpret—अर्थ करना, प्रभाषण करना, व्याख्या करना।
Interpretation—व्याख्या, अर्थनिरूपण, प्रभाषण।
Inter-provincial—अन्तःप्रान्तीय, अन्तर्प्रान्तीय।
Interrogate—प्रच्छना करना, प्रश्न करना, पूछताछ करना।
Interrogation—प्रच्छना।
Interrogatories—लिखित प्रश्न, साक्ष्य के निमित्त कमीशन द्वारा प्रेषित बन्द पत्र, कमीशन गवाह् से पूछने के लिये लिखित प्रतिप्रश्न।
Interrogatory—प्रश्नात्मक।
Interrupt—रोकना, बाधा डालना।
Interruption—बाधा।
Inter-university—अन्तर्विश्वविद्यालय।
Interval—अवकाश, अन्तराल, वकफा।
Intervener—हस्तक्षेपकर्ता।
Intervening—व्यवसायी, बीच का।
Intervention—हस्तक्षेप, अवधान, माध्यस्थ्य।
Interview—संदर्शन, भेंट, मुलाकात।
Intestate, testamentary, and matrimonial—बिना वसीयत मृत, वसीयत संबंधी और वैवाहिक।
Intestate—अकृतेच्छापत्र, बिना इच्छापत्र किये जो मर जाय।
Intestinal and other parasites—अँतड़ियों के तथा दूसरे पारजीवी।
Intestinal contents—आँतों का अंतर्द्रव्य।
In the alternative—विकल्प करके।
In the circumstances—इस परिस्थिति में।
Intimate—गाढ़, गहरा, गाढ़ा, दिली, जिगरी सूचना देना, जताना, आगाह करना।
Intimation—सूचना।
Intimation Book—सूचना पुस्तक।
Intimidation—तजना, भय, भीषा, धमकी, भय दिखाना।
In token of—के प्रतीक स्वरूप।
In toto—विल्कुल, पूर्णतया।
Intoxicating drug—मादक द्रव्य।
Intramural—भित्ति भीतर, जेल के भीतर का।
Intra vires—अधिकारान्तर्गत।
Intrigue—षड्यंत्र, कपट प्रबन्ध, कूट युक्ति, साजिश।
Introduce—पुरःस्थापन करना, प्रस्तुत करना, परिचय करना, आरंभ करना।
Introduction—पुरःस्थापन (as of a bill) प्रस्तावना (as of a book), जारी करना।
Intrusion—धृष्टागम, अनधिकार प्रवेश।
Invalid—अवध, अमान्य, बीमार, रोगी, अशक्त, रोगातुर, रुग्ण, दुर्बल, रोग से निर्बल, बिमरिहा।
Invalidate—अवैध करना, रद्द करना, बलहीन करना, अशक्त करना।
Invalid certificate—अशक्तता प्रमाणपत्र।

Invalid pension—निवृत्ति वेतन, अशक्तता वेतन, असमर्थता की पेंशन।
Invariably—सदैव, नित्य, सदा, बराबर, बिला नागा।
Inventory—सूची, फेहरिस्त।
Inverse—उलटा।
Investigation—अनुसंधान, अन्वेषण, जाँच, मार्गणा (by police), विचारणा (by court)।
Investigation of claims—दावों के संबंध में जाँच।
Investment—लागत, लगा हुआ रुपया, रुपय का लगाना, विनियोग।
Investment figures—लगाई पूंजी के आँकड़े, लगी पूंजी के आँकड़े।
Invidious—द्वेषजनक।
In view of—को ध्यान में रखते हुए, को दृष्टि में रखते हुए।
Invitation—निमंत्रणपत्र, निमंत्रण, बुलावा।
Invite attention to—ध्यान दिलाना।
Invoice—बीजक।
Invoice Register—बीजक पंजी।
Involve—फँसाना, लपेटना, उलझाना, रखना, सम्मिलित करना या होना, अर्थ होना।
Involving—को लपेटते हुए, के लपेटे में, को लेते हुए।
Ipso facto—स्वत: सिद्ध, अपने आप।
Irksome—थकाऊ, कठिन, दु:खद, भारी, अप्रिय, नागवार।
Irrecoverable—अप्रत्युपलभ्य, वसूल न होने के योग्य, नाकाबिल वसूल।
Irrecoverable rent—अप्रत्युपलभ्य लगान, न वसूल हो सकने योग्य लगान।
Irregular—अनियमित, अवैध, अनियमी, नियम-विरुद्ध।
Irregularity—अनियम, अनियमितता।
Irrelevant—अप्रासंगिक, अप्रास्ताविक, असंगत, संदर्भविरुद्ध।
Irrespective—अनपेक्षक, अनाश्रित, बिना लिहाज।
Irrespective of—बिना इस बात के विचार के।
Irresponsible—अनुत्तरदायी, गैर-जिम्मेवार।
Irrigation—सिंचाई, भूसिंचन।
Irrigation branch—सिंचाई शाखा।
Irrigation department—सिंचाई विभाग।
Irrigator stand—जलप्रवाहक यंत्र का स्थान।
Isolated plots—एकल खेत।
Isolation—अलग रखना।
Isometric—चित्रसम।
Issue—विवाद-विषय, विवाद प्रश्न, विवेचनीय प्रश्न, निर्गमन, निर्गत करना, जारी करना।
Issue of commission—कमीशन का जारी करना, नियुक्ति अधिकारी का जारी करना।
Issue price—जारी करते समय का मूल्य, निर्गम मूल्य।
Issues involved—अन्तर्हित प्रश्न, अन्तर्हित विवादास्पद विषय।
Item—मद।
Iteration—पिष्टपेषण, बार-बार दुहराना।
Itinerating—गस्ती, सफरी।

J

Jackarch—कम गोलाई की मेहराब।
Jacket—जाकेट, मिरजई, कमरी।
Jagir, Sanad of—जागीर की सनद।

Jail—कारागार, बंदीगृह, जेल, कारा, बन्धनागार।
Jails & convict settlements—कारागार तथा बन्दी बस्तियाँ।
Jail, Central—केन्द्रीय कारागृह।
Jail charge—काराभार।
Jailor—जेलर, काराध्यक्ष।
Jailor (Deputy)—सहकारीकाराध्यक्ष
Jail, District—जिला कारागृह।
Jail Premises—कारागृह का अहाता, कारोपान्त।
Jamadars—जमादार।
Jambas—छिद्रपक्ष, सूराख की बगल।
Jamabandi—जमाबन्दी।
Jeeps—जीपें, एक प्रकार की मोटरगाड़ी।
Jeopardy—भय, जानजोखों, अन्देशा।
Jerk—झटका।
Jet—संगमूसा, फौवारा, नाल, टोंटी, आगे को निकला हुआ पाट।
Jetty—इमारत का आगे को निकला हुआ भाग, जलयान का आँगन।
Jinspher rent—जिन्सफेर लगान।
Job—कोंचना, भोंकना, छोटा और अस्थायी काम, छपाई का फुटकर काम, क्रय-विक्रय करना।
Johne's disease—जोन रोग।
Joinery—लकड़ी के जोड़ों का काम।
Joining—जोड़, गाँठ।
Joining report—कार्यग्रहण सूचना।
Joining time—कार्यग्रहण अवधि।
Joint—संयुक्त, युक्त, जोड़, गाँठ, पोरी, रेल की सड़क की कैंची।
Joint account—संयुक्त गणन, संयुक्त लेखा।
Joint and several—संयुक्त तथा अलग-अलग।
Joint Committee—युक्त समिति।
Joint Director of Agriculture—संयुक्त कृषि संचालक।
Joint family property—अविभक्त पारिवारिक संपत्ति।
Joint holding—अविभक्त जोत।
Joint Stock Company—संयुक्त पूंजी प्रमंडल, ज्वाइन्ट स्टाक कंपनी।
Joint tenancy—संयुक्त जोत।
Joist—गाटर, कड़ी, धरणी।
Journal—पत्रिका, खाता, लेखा।
Journey—यात्रा।
Judge—न्यायाधीश, जज।
Judged creditor—निर्णीत उत्तमर्ण।
Judgement—निर्णय, फैसला।
Judgment-debtor—निर्णीत ऋणी।
Judgment writer—निर्णय लेखक।
Judge Small Cause Court—अल्पवाद न्यायालय के न्यायाधीश।
Judicature—न्यायाधिकार, न्यायाधिकरण।
Judicial—न्यायिक, अदालती।
Judicial Authority—न्यायिक प्राधिकारी।
Judicial (Civil) Department—न्याय विभाग (दीवानी)।
Judicial Commissioner—न्यायिक आयुक्त।
Judicial Committee of Privy Council—प्रिवी कौंसिल की न्यायिक समिति।
Judicial notice—न्यायिक अवगम, न्यायालय द्वारा किसी बात को स्वयं विचार में लेना।
Judicial proceeding—न्यायिक कार्यवाही।

Judicial separation—न्यायिक पार्थक्य, न्यायिक विवाह-विच्छेद, न्यायालय द्वारा विवाह-विच्छेद ।
Judiciary—न्यायाधिकारी वर्ग ।
Judicial investigation—न्यायिक विचारण ।
Judicial trustee—न्यायिक प्रन्यासी ।
Jug—झंझर, जग ।
Jumble—एक में सटाकर ।
Junior—कनिष्ठ ।
Junior electrician—कनिष्ठवैद्युतिक ।
Junior grade clerk—कनिष्ठ श्रेणी के लेखक ।
Junior meter repairers and testers—मीटर के सहकारी (छोटे) मरम्मत और जाँच करनेवाले ।
Junior staff nurse—कनिष्ठ स्थापनोपचारिका, कनिष्ठ प्रधानोपचारिका, कनिष्ठ अधिष्ठान उपचारिका ।
Junior sub-station attendant—कनिष्ठ उपसंस्थान परिचर ।
Junction—संगम, जंकशन ।
Jurisdiction—क्षेत्राधिकार, अधिक्षेत्र, अधिकार-क्षत्र, विचाराधिकार ।
Jurisdictional purposes—अधिकारक्षेत्रीय प्रयोजन ।
Jurisdictional value—अधिकार-क्षेत्रीय मूल्य ।
Jurisprudence—व्यवहारशास्त्र ।
Jury—सभ्यगण, सभासद, जूरी (न्यायाधीश को न्याय में सहायता देनेवाले चुने हुए व्यक्ति) ।
Just—उचित, यथार्थ, ठीक, न्याय्य, अपक्षपाती, न्यायी ।
Justice—न्यायाधिकारी ।
Justice of Peace—शांति अधिकरणिक
Justification—औचित्य, पुष्टि, समर्थन, उत्तर (law) ।
Justify—औचित्य सिद्ध करना, निर्दोष सिद्ध करना, युक्ति से सिद्ध करना ।
Juvenile—लड़कों की, किशोर ।
Juvenile offender—अल्पवयस्क अपराधी ।

K

Kaidak—कैदक ।
Kala-azar—कालजार ।
Kankut Tikur—कनकूत टिकर ।
Kanungo—कानूनगो ।
Kanungo competitive examination—कानूनगो प्रतियोगिता परीक्षा ।
Kazi—काजी ।
Keen—उत्सुक, तीव्र, तेजित, निशात, परिवेदना, विलाप, शोक ।
Keenest critic—तीव्रतम आलोचक ।
Keep—अनुपालन करना, रक्षा करना, रखना, पूरा करना, उपजीवन ।
Keepers—पालक ।
Keeping—संरक्षण, पालन ।
Keep the peace—शान्ति पालन करना, शान्ति रखना ।
Keep with—नत्थी कीजिये ।
Keep with file—फाइल में रखिये ।
Kettle—केटली, देगची, पतीली ।
Key—कुंजी, ताली ।
Key-sentence—मुख्य वाक्य ।
Key-stone—मेहराब के बीच का पत्थर या डाट ।
Kham—कच्चा ।
Khasra—खसरा ।
Khasra Kankut—कनकत का खसरा ।
Khasra statement-खसरा विवरण-पत्र ।

Kharif—खरीफ ।
Kharif jinswar—खरीफ जिसवार।
Khata—खाता ।
Khewat—खेवट ।
Khewat chausala malikan—भूस्वामियों की चौसाला खेवट ।
Khewat chausala matahatdaran—मातहतदारान की चौसाला खेवट ।
Khewat chausala pukhtadaran—पुख्तेदारान की चौसाला खेवट ।
Khudkasht—खुदकाश्त ।
Kiask—मकान का आगे निकला डिब्बेदार भाग ।
Kidnap—अपहरण करना ।
Kidnapper—अपहर्ता, अपहारक, भगानेवाला ।
Kidnapping—अपहरण ।
Kidney shaped—गुर्दाकार ।
Kidney-tray—गुर्दाकार कूंडी ।
Kilowatts—किलोवाट ।
Kind—प्रकार, दयालु, कृपालु ।
Kind of leave—छुट्टी का प्रकार ।
Kindly acknowledge receipt—कृपया पाने की सूचना दें, कृपया रसीद से सूचित कीजिये ।
King's Post—खड़ा खम्भा ।
King's Police Medal—किंग्स पुलिस मेडल ।
Kink—लपेट ।
Kit—यात्रा का सामान, खुर्जी, सामान का झोला ।
Kitbag—किट का थैला, सिपाही के समान का थैला ।
Kitchen—पाकागार, रसोईघर ।
Kitchen mate—पाचिका ।
Knicker—नौकर, निकर, घुटन्ना ।
Knicker-bockers—पतलून ।
Knight—नाइट ।
Knob—गाँठ, गुमड़ी, लट्टू ।
Knot—गाँठ, गिरह, कोस ।
Knowledge—ज्ञान, बोध, अवगति ।
Kudal—कुदाल ।

L

Label—नामपत्र,चिप्पी, नामपत्र लगाना।
Laboratory—प्रयोगशाला ।
Laboratory and Field Attendant. प्रयोगशाला तथा फील्ड कर्मचारी परिचर ।
Laboratory Assistant—प्रयोगशाला सहायक ।
Laboratory Attendant—प्रयोग-शाला परिचर ।
Laborious—परिश्रमी ।
Labour—श्रम,श्रमिकगण, श्रमिक वर्ग ।
Labour, Hard—कड़ा परिश्रम, सख्त मशक्कत ।
Labouring—श्रम करते हुए ।
Lacerate—काटना, चीरना ।
Lack—न्यूनता,अभाव, कमी, कमी होना, न होना ।
Lack of proper sense of civicduty and party politics is mainly responsible for the deterioration of municipal administration which has its adverse effect on accounts also—नगर सभा का प्रबन्ध बिगड़ जाने का उत्तरदायित्व, नागरिक कर्तव्य की उचित भावना की कमी और पार्टीबन्दी पर है जिनका बुरा प्रभाव लेखाजात पर भी पड़ा है ।
Ladies party—महिला पार्टी ।
Lady Principal—प्रधान आचार्याणी ।

Laid on the table, Bills to be—मेज पर रखे जाने के लिए विधेयक।
Lake—झील।
Lambardar—नम्बरदार।
Lance bucket—बल्लम आधार।
Land—भूमि।
Land acquisition—भूमि प्राप्ति, भूमि अधिगमन।
Land Acquisition Act—भूमि प्राप्ति अधिनियम।
Land Acquisition Officer—भूमि प्राप्ति अधिकारी।
Land held rent-free—निर्भाटक-भूमि, माफी की जमीन।
Land property—भू-सम्पत्ति।
Land holder—जमींदार, क्षेत्रपति, भूस्वामी।
Land improvement loans—भूमि सुधारार्थ ऋण।
Landing grounds—अवतरण भूमि, वायुयान उतारने के मैदान।
Landlord—भूस्वामी,क्षेत्रपति,जमींदार।
Land Record Clerk—भूअभिलेख लेखक, क्लर्क कागजात देही।
Land Record Department—भू लेखा विभाग।
Land Record Manual—मैनुअल कागजात देही, भूअभिलेख सार संग्रह।
Land Record—मालगुजारी कागजात देही, भूमिकर भूलेखा।
Land revenue—भू-राजस्व, भूमि-राजस्व, मालगुजारी।
Land Revenue Act—एक्ट माल-गुजारी, भूराजस्व अधिनियम।
Landsurvey—भूमापन, पैमाइश।
Land tax—भूमिकर।
Lane—गली।
Language—भाषा।
Lantern—लालटेन।
Lapse—दोष,चूक,कसूर,अतिपत्ति, व्यप-गमन,रुपये का सरकार को लौट जाना।
Lapsed—कालातीत, समाप्त।
Lapsed demise—व्यपगत हस्तान्तरण।
Lapses—चूकें, गलतियाँ।
Larder—खाद्य सामग्री, भंडार।
Large—विशाल, बड़ा।
Large, Remain at—अबंधित रहना।
Last—अंतिम,पिछला,बना रहना,ठहरना, काम रहना।
Last pay certificate—अंतिम वेतन प्रमाणपत्र।
Latch—किवाड़ बन्द करने की बिलाई, अर्गल या सिटकनी।
Late—विलंबित, समयातीत, दीर्घसूत्र, स्वर्गीय, भूतपूर्व।
Late Kharif Crops—पिछेती खरीफ की फसल।
Late Mr... (deceased)—स्वर्गीय।
Latent—अव्यक्त, गूढ़, अदृष्ट, गुप्त।
Latent ambiguity—गुप्त संदिग्धता, गर्भित संदिग्धता।
Later—बाद का उत्तर।
Latest—सबसे बाद का।
Lathe—खराद।
Latitude—अक्षांश, स्वतंत्रता, चौड़ाई।
Latter—अपर,अपरोक्त, उत्तर, दूसरा, पिछला, बाद का।
Lattice—लकड़ी या लोहे की फली, झिलमिली।
Lavatory—संडास, पाखाना।
Law—विधि,न्याय,व्यवस्था,कानून धर्म।
Law and course of law—विधि

और विधि प्रक्रम।
Law and order—शांति और व्यवस्था।
Lawful—विधि अनुकूल।
Lawful assembly—विधि अनुकूल सभा
Lawful custody—विधि अनुकूल संरक्षण, विधि अनुसार हिरासत।
Lawful exercise of powers—अधिकारों का विधि अनुकूल प्रयोग।
Lawn—लान, घास का तख्ता।
Law Officers—सरकारी पैरवी अफसर।
Law of succession—उत्तराधिकार विधान।
Law report—विधि दृष्टान्त।
Law suits—मुकदमे।
Lawyer—विधिज्ञ, वकील।
Lay—रखना, आगे रखना, लगाना।
Lay down—लिटाना, पेश करना, त्यागना।
Lay out—समाहिति, लगाना।
Layout plan—नकशा।
Lead—राँगा, गोली।
Lead— मार्ग दिखलाना, रास्ता दिखाना, नेतृत्व करना, आगे चलना।
Leader of opposition—प्रतिपक्षी नेता, विरोध पक्ष का नेता।
Leading—प्रमुख।
Leading cases—उदाहरण, दृष्टान्त।
Leading fireman—प्रमुख फायरमैन।
Leaflet—पर्चा।
Leakage—चूना, टपकना, रहस्य का प्रकट होना।
Leakage of papers—पर्चों का मालूम होना।
Leap year—३६६ दिन का वर्ष (जो प्रत्येक चौथे वर्ष होता है) लौंद का वर्ष।
Lease—पट्टा।
Lease Deed—पट्टा।
Lease-hold—पट्टाधिकार,पट्टे की भूमि।
Lease of Government building, etc.—सरकारी इमारतों का पट्टा।
Lease of land—जमीन का पट्टा।
Lease, sub-leases—पट्टे, जैली पट्टे तथा उपपट्टे।
Leave—छुट्टी, अनुमति।
Leave account—छुट्टी लेखा।
Leave and deputation salary—छुट्टी तथा प्रतिनियुक्ति वेतन।
Leave application—छुट्टी का प्रार्थनापत्र।
Leave application of scholars छात्रों के छुट्टी के प्रार्थनापत्र।
Leave, Casual—आकस्मिक छुट्टी।
Leave, Disability—असमर्थता की छुट्टी।
Leave due—वाजिब छुट्टी।
Leave, Earned—अर्जित छुट्टी।
Leave, Ex-India—भारत से बाहर जाने के लिये छुट्टी।
Leave, Extraordinary—असाधारण छुट्टी।
Leave, Hospital—अस्पताली छुट्टी।
Leave, Maternity—प्रसूति छुट्टी।
Leave (Not due)—छुट्टी वाजिब नहीं।
Leave on average allowances—माध्य भत्तों पर छुट्टी!
Leave on average pay—औसत वेतन पर छुट्टी।
Leave on full allowances—पूरे भत्तों पर छुट्टी।
Leave on full pay—पूरे वेतन पर छुट्टी।

Leave on half allowances—आधे भत्तों पर छुट्टी।
Leave on medical certificate—चिकित्सकीय प्रमाणपत्र पर छुट्टी।
Leave (on private affairs)—निजी कार्यार्थ छुट्टी।
Leave on quarter average pay—चौथाई औसत वेतन पर छुट्टी।
Leave partly on full allowances and partly on half allowances—अंशतः पूरे और अंशतः आधे भत्तों पर छुट्टी।
Leave preparatory to retirement—निवृत्तिपूर्व छुट्टी।
Leave, Previlege—रियायती छुट्टी।
Leave, Quarantine—स्पर्शवर्जन छुट्टी
Leave (Recess)—विश्राम छुट्टी।
Leave reserve—छुट्टी रिजर्व,छुट्टी धृत।
Leave sálary—छुट्टी वेतन।
Leave, study—अध्ययन छुट्टी।
Leaves of door—द्वारपट।
Leaving certificate—(शिक्षालय) छोड़ने का सार्टिफिकेट।
Lecturer and assistant Lecturer-व्याख्याता तथा सहायक व्याख्याता।
Ledger—खाता, प्रपंजी, खाता बही।
Leeches—रक्तपा, जोंक।
Leeward—निवान बाड़ा।
Left—वाम, सव्य, बायाँ, छोड़ दिया, चले गये।
Leftist—वामपक्षीय, गरम दल का।
Legacy—पत्ररिक्थ, इच्छा-पत्र द्वारा प्रदान।
Legacy duty—रिक्थ दाय शुल्क।
Legal—वैध, वैधिक, विधिक, स्मार्त, कानूनी।
Legal advisor—कानूनी सलाहकार या मशीर।
Legal assets—विधिक परिसम्पत्।
Legal documents—विधिक लेख्य।
Legal enactment—विधिक विधायन।
Legal estate—वैधिक सम्पत्ति, वैधानिक सम्पत्ति।
Legal Expenses—न्यायव्यय,कानूनी खर्चा।
Legal grounds—विधिक कारण।
Legality—वैधता।
Legal Practitioner—वकालत पेशा, अभिभाषक।
Legal Practitioners' Act—व्यवहारोपजीवी विधान।
Legal Practitioners' Certificate Stamps—कानूनपेशाओं के सर्टिफिकेट के स्टाम्प।
Legal Proceedings—कानूनी कार्यवाहियाँ।
Legal profession—वकालत, अभिभावक वृत्ति।
Legal Remembrancer—रिक्थभोग, प्राप्त रिक्थ, रिक्थी विधिबोधक।
Legatee—गेटर लेमिंग, पैर में पहनने का चमड़े का खोल।
Legislate—कानून बनाना, विधि बनाना।
Legislation—विधान, कानून।
Legislative—विधायिनी, विधायी, विधान (विधाने सभा)।
Legislative assembly—विधानसभा
Legislative council—विधान परिषद्।
Legislative department—विधान-विभाग।

Legislative enactments—विधायी नियम।
Legislature—विधान मंडल।
Legitimate—न्यायसंगत, जायज, उचित।
Legitimation—न्यायीकरण और सत्ता के अधिकार का प्रदान किया जाना।
Legitimate dues—जायज मुतालबा, न्यायोचित प्राप्य।
Legitimate duty—न्याय्य कर्त्तव्य।
Leishmaniasis—कालाज़ार।
Leper—कोढ़ी, कुष्ठी।
Leper asylum—कुष्ठ चिकित्सालय, कुष्ठिगृह, कोढ़ियों का अस्पताल।
Leper colony—कोढ़ियों की बस्ती।
Leper relief—कुष्ठ सहायता।
Lessee—पट्टाग्राही, पट्टेदार।
Lessor—पट्टाप्रदाता, पट्टा करनेवाला।
Less supply—कम सप्लाई, कम पूर्ति।
Let—अनुमति देना, किराये पर उठाना।
Lettered slip—अक्षरांकित पर्चा।
Letter, Forwarding—प्रेषणपत्र।
Letter of administration—प्रबन्धाधिकार पत्र।
Letter of allotment of shares in any Company—किसी कम्पनी में अंशदिष्टि का पत्र।
Letter of attorney—अभिकर्ता-पत्र, प्रतिनिधि-पत्र, मुख्तारनामा।
Letter of credit—विश्वासपत्र, साखपत्र
Letter of license—अनुज्ञप्ति पत्र।
Letters patent—अधिकार-दानपत्र, सनद, फरमान, परवाना।
Letters patent appeal—राजदया अपील।
Letting—जमीनों का उठाना।
Level—स्तर, चपटा गुनिया।
Level books—समथल माप पुस्तिका।
Level crossing, Specifications for—रेल के भाटक के लिये विवरण।
Level (instruments)—लेवेल।
Levelling Staff—स्तरमापक गज, स्तरमापक दंड।
Lever arm—लिवर का भुज।
Leviable—लगाये जाने योग्य।
Levied—लगाया हुआ।
Levy—समाहरण, उगाहना, कर लगाना, भरती करना, लगाना।
Lex Fori—स्थानीय विधान, मुकामी कानून।
Lex Loci—स्थानीय विधि या विधान।
Liabilities—देय धन, देय, देयता, ऋण, देनदारी, दायित्व।
Liability—उत्तरदायित्व, देनदारी, जिम्मेदारी।
Liability of a person to a tax—किसी व्यक्ति का करदायित्व।
Liable—उत्तरदायी, मुस्तौजिब, के योग्य।
Liable to—उत्तरदायी, भागी, के योग्य, जिम्मेदार।
Liable to disqualification—अयोग्य ठहराये जा सकने योग्य।
Liasion Officer—मेल अधिकारी।
Libel—अपमानलेख, निन्दालेख।
Liberal and wide spread—अच्छी और व्यापक।
Liberal rain—अच्छी वर्षा।
Librarian—पुस्तकालयाध्यक्ष।
Library—पुस्तकालय, ग्रन्थालय।
Library department—पुस्तकालय विभाग।
Lice—यूका, जूं।

Licence—अनुज्ञापत्र, लाइसेन्स ।
Licensee—लैसंसी ।
Licence fee—लाइसेंस शुल्क ।
Licence, Revocation of—अनुज्ञप्ति खंडन ।
Licenced—लैसंस लगा हुआ ।
Licensed stamp vendor—लाइसेन्स-दार स्टाम्प विक्रेता, लाइसेन्सदार स्टाम्प फरोश ।
Licensed vendors—लाइसेन्स प्राप्त विक्रेता ।
License-holder—अनुज्ञाग्राही, लाइसेन्सदार ।
Licensing authorities—अनुज्ञापत्र दायक प्राधिकारीगण ।
Lien—ग्रहणाधिकार, पदाधिकार ।
Lien, Suspended—स्थगित ग्रहणाधिकार ।
Lien, suspension or termination or revival of—ग्रहणाधिकार का स्थगन, समापन या पुनर्जीवन ।
Lieu of—के बदले ।
Lieu of, In—के बदले, के स्थान पर ।
Life annuity—आजीवन वार्षिक वृत्ति, आमरण वार्षिक वृत्ति ।
Life assurance—जीवन बीमा ।
Life convict—आजीवन कैदी ।
Life insurance policy, Duty of—जीवन बीमे की पालिसी पर शुल्क ।
Life licence—आजीवन अनुज्ञा-पत्र ।
Life preservers—प्राणरक्षक हवा मरी कुर्ती, मुट्ठीदार बेंत प्राणरक्षक ।
Life sentence—आजीवन कैद ।
Life estate—आजीवन भू सम्पत्ति ।
Life tenure—उम्र पट्टा, आजीवन पट्टा ।
Lift—लिफ्ट ।
Lift irrigation—ढेकुल से सिंचाई, उठान सिंचाई ।
Light—हलका, लघु, उजाला, रोशनी ।
Light diet—स्वल्पाहार, हल्का भोजन ।
Lightning Contractors—तडित संवाहक, बिजली कण्डक्टर ।
Likelihood—संभावना ।
Likely—संभावना है ।
Likely to be affected—जिस पर प्रभाव पड़ने की संभावना हो ।
Lime—चूना ।
Limestone—चूने का पत्थर ।
Limit—अवधि, मर्यादा, सीमा, नियंत्रण, प्रतिबन्ध ।
Limit and limitation of right—अधिकार की सीमा और अवधि ।
Limitatation—अवधि, अवधिता, प्रतिबन्ध, उपाधि, मियाद ।
Limited administration—सीमित रिक्थ प्रबन्ध ।
Limited company—सीमित प्रमंडल, लिमिटेड कंपनी ।
Limited executor—सीमित अधिकार का रिक्थसाधक ।
Limited liability—सीमित देय ।
Limited owner—सीमित स्वामी ।
Line—रेखा, सतर ।
Lineal descendants list—वंशक्रमानुगत संतति ।
Lineal descent—वंशक्रमिक उत्तराधिकार ।
Linear—लकीरी ।
Line Inspector—लाइन निरीक्षक ।
Line men—लाइन मेन ।
Linen—वसन ।
Linen store-room—वसन कोष्ठागार ।

Line of regression-प्रतीपगमन रेखा।
Line supervisor—लाइन पर्यवेक्षक।
Linger—देर लगाना, हिचकिचाना, दुःख या बीमारी में पड़े रहना।
Link—सम्बन्ध, लगाव, जोड़ना, मिलाना, जंजीर की कड़ी।
Linking—शृंखलीकरण।
Lintel—लिनटल, पटौटन।
Liquidation—अपाकरण, निस्तारण, भरपाई, चुकौता, दिवाला, अवसायन।
Liquidation of debt-ऋण निस्तारण।
Lis Pendeus—वादमध्य, वादमध्ये, दौरान मुकद्दमा।
List—सूची।
Listed—सूचीगत, प्रश्नगत (question listed for the 1st day)।
Listed candidate—सूचीगत उम्मेदवार।
Listed posts—सूचीगत पद।
List of business—कार्यसूची।
List of callers-मिलनेवालों की सूची।
Listing of cases—मुकदमों को सूचीगत करना।
List of delinquencies—कर्तव्यहीनताओं की सूची, त्रुटियों की सूची।
Lists—सूचियाँ।
Literate—साक्षर, शिक्षित, पढ़ा-लिखा।
Literature—साहित्य।
Litigant—विवादी, व्यवहारी।
Litigation—विवाद, मुकदमेबाजी।
Liver—यकृत्, जिगर।
Liveries and uniforms—गणवेष, भृत्यवेष।
Livery—वर्दी।
Livestock—पशुधन।
Livestock product—पशुधनजन्य पदार्थ।
Living (wage)—निर्वाहभृति, गुजरानभृति।
Load—लाद, बोझा, बंदूक या पिस्तौल में गोली भरना।
Loaded—भरा हुआ, लदा हुआ।
Loading—लदान, गोली भरना।
Loamy—चिकनी मिट्टीवाली पोतनी।
Loan—ऋण, कर्ज, उधार।
Loans and advances—ऋण और अग्रग्रहण।
Lobby—सभाकक्ष, लाबी, दालान, बरामदा, डेवढ़ी।
Local—स्थानीय, स्थानिक, मुकामी।
Local allowance—स्थानीय भत्ता।
Local Authorities Loans Act—स्थानीय सत्ता ऋण अधिनियम।
Local board—स्थानीय बोर्ड।
Local bodies—स्थानीय निकाय, स्वशासन संस्था।
Local breeds—स्थानीय नस्लें।
Local cesses—स्थानीय कर, अबवाव।
Local custom—स्थानीय रिवाज, दस्तूर-देही।
Local depots—स्थानीय डिपो।
Local enquiries—स्थानीय जाँच।
Local fund—स्थानीय कोष।
Local Fund Audit Department—स्थानीय कोष लेखापरीक्षा विभाग, लोकल फंड आडिट विभाग।
Local Government—स्थानीय सरकार, स्थानीय शासन।
Local head—स्थानीय प्रमुख।
Locality—आसपास, पास-पड़ोस।
Local limit—स्थानीय सीमा।
Local management—स्थानीय प्रबंध।

Local rate—स्थानीय कर।
Local Rates Act—स्थानीय कर अधिनियम।
Local Self-Government—स्थानीय स्वशासन।
Local Self-Government Department—स्थानीय स्वशासन विभाग।
Local thunder showers were experienced all over the province—सारे प्रान्त में बिजली की गरज के साथ स्थानिक वर्षा हुई।
Location—अवस्थिति, स्थान, स्थान-निर्धारण, स्थाननिरूपण।
Lock—ताला।
Lock (Canal)—ताला (नहर)।
Locking up—बन्द करना कैदियों को ताले में बन्द करना।
Lock-ups—हवालात।
Locomotive—चलता, चलानेवाली।
Locum tenens—प्रतिहस्त,प्रति-पुरुष।
Locus standi—न्यायालय के समक्ष उपस्थित होने और सुने जाने का अधिकार, स्थितिस्थान, हस्तक्षेपाधिकार, स्थानाधिकार।
Locust—टिड्डी।
Log—जहाज चाल नाप, लट्ठा।
Logarithm—दिन पंजी, छेदा।
Log book—रोजनामचा।
Log sheets—रोजनामचे के पन्ने।
Log table—छेदा सारणी।
Loiter—सुस्ती में समय काटना, देर लगाना।
Long term—दीर्घकाल, दीर्घकालीन।
Longitude—लम्बान, देशान्तर।
Longitudinal section—लम्बानी काट।
Look—देखना, निगाह डालना।
Loop hole—सूराख, रोशनदान, भागने की जगह।
Loose—ढीला।
Loose cotton—खुली हुई रुई।
Lorry—लारी।
Lorry coolie—लारी कुली।
Lorry driver—लारी चालक।
Loss—हानि, घाटा, घटी।
Loss of seniority—ज्येष्ठता की हानि।
Loud speakers—ध्वनिविस्तारक,भोंपू।
Lounge—आराम करना, आराम कुर्सी, टालमटोल करना।
Louver—झिलमिली।
Low diet—अल्पाहार, कम खूराक।
Lower—निचला।
Lower court—छोटी अदालत, छोटा न्यायालय।
Lower division assistant—अधस्तन श्रेणी सहायक।
Lower grade clerk—लोअर ग्रेड क्लर्क, निम्न श्रेणी क्लर्क।
Lower subordinate—अधस्तन अधीनस्थ।
Lowest value in the month—मास का न्यूनतम भाव या मूल्य।
Low tension—न्यून तनाव, कम वोल्टज।
Lubricate—चिकनाना, तेल देना।
Lubricator—तेल देनेवाला, तेल देने का यंत्र।
Luggage—असबाब।
Lump—पिंड, इकट्ठा।
Lump cash rent—एकराशि नकद लगान।

Lump sum—पिंडराशि, इकट्ठी रकम, एकमुश्त रकम।
Lump sum contract—एकराशि ठेका
Lunch party—अपराह्न भोज।
Lunatic—उन्मत्त, वातुल, पागल, बावला, विक्षिप्त।
Luxury (good writing is a luxury)—सजावट।
Lymphatic glands—लसीका ग्रन्थि।

M

Machine—मशीन, यन्त्र।
Machinery—यंत्रजात, मशीनें, मशीनरी।
Machinery annual-list—मशीनों की वार्षिक सूची।
Mackintosh sheeting—रबड़ की चादर, बरसाती।
Madam—आर्या, भवती।
Magazine (rifle, gun)—शस्त्रागार, मैगजीन, बारूदखाना।
Magazines—सामयिक पत्रिकाएँ।
Magistrate—आधिकारिक, दंडनायक, मजिस्ट्रेट, अधिकरणिक।
Magnetic needle—चुम्बकी सुई।
Magniloquence—शब्दाडम्बरता।
Magnitude—परिमाण, आकार, महत्त्व, गौरव, डीलडौल, लम्बाई-चौड़ाई।
Mahals—महाल, मुहल्ला।
Mahfuz—सुरक्षित।
Mahfuz entry—सुरक्षित प्रविष्टि, महफूज इन्दराज।
Mahogany—महोगनी (एक प्रकार की लकड़ी), तुन।
Maintainभरण-पोषण करना, बनाये रखना
Maintenance—अनुपालन, रखरखाव।
Maintenance and repairs—रखरखाव और मरम्मत।
Maintenance and repairs of camp equipment—निवेश सज्जा का रखरखाव और मरम्मत।
Maintenance Inspector—रखरखाव निरीक्षक।
Maintenance of boundary and survey marks—सीमाद्योतक तथा भूमाप चिह्नों का रखरखाव या संरक्षण।
Maintenance Officer—रखरखाव अधिकारी।
Maintenance of Public Order Act—सार्वजनिक शांतिरक्षा का अधिनियम।
Maintenance of Records—अभिलेख अनुपालन, अभिलेखों का रखना।
Maintenance, Suit for—रोटी कपड़े का दावा, जीवननिर्वाह वाद।
Main wall—डंडा (jail ward), बाहरी दीवार, चहारदीवारी।
Main wall duty—डंडे की नौकरी, डंडे की ड्यूटी।
Major—वयस्क, व्यवहारप्राप्त, बड़ा, मेजर
Major head—बड़ा शीर्षक, दीर्घ शीर्षक।
Majority—वयस्कता, बहुमत, बहुसंख्या।
Major-work - portion—महत्त्वपूर्ण कार्य का एक भाग।
Major works-बड़े काम, बड़े निर्माणकार्य।
Make over—सुपुर्द करना, सौंपना, हवाले करना।
Making up deficit duty—कमी शुल्क को पूर्ण करना।
Malafide—दुर्भाव से, बदनीयती से।
Malaria operation—मलेरिया कार्य।
Maleable-काट छाँटकर बढ़ाये जाने योग्य
Male nurse—उपचारक।
Male nurse sickroom—उपचारक आतुरालय।

Male training—पुरुष उपशिक्षा।
Male Line—बाप की तरफ से, पितृवंश।
Mali—माली।
Malik-Adana—मालिक अदना।
Malkhanas—मालखाना, गोदाम।
Mal-practice-दुष्कर्म,अपकर्म,कदाचार।
Mammary abscess—स्तन विद्रधि, स्तन स्फोट, थनों का फोड़ा।
Manadi—मनादी।
Management—प्रबंध, व्यवस्था।
Management and accounts of Government properties (government estates)—सरकारी सम्पत्ति का प्रबंध और हिसाब।
Manager—प्रबंधक, व्यवस्थापक।
Manager's return—प्रबन्धक का विवरणपत्र।
Mandate—आज्ञा, आदेश, शासन।
Mandatory—आदेशात्मक।
Manhole—मैनहोल, आदमी के घुसने योग्य रास्ता।
Manifesto—घोषणापत्र।
Manner—ढंग, प्रकार।
Manoeuvre, Field, Firing and Artillery Practice Act—युद्धाभ्यास, चाँदमारी गोलाबारी अभ्यास का विधान
Mansion—महल, भवन, गढ़ी।
Mantel (piece)—अँगीठी के ऊपर की कगार या पटरी।
Manual—सारसंग्रह, हाथ का।
Manual (Books)—सारसंग्रह।
Manual (of government orders) सरकारी आज्ञाओं का सारसंग्रह।
Manual of orders—आज्ञा सारसंग्रह।
Manufacture—निर्माण, बनाना, तैयार करना।
Manufacturingprocess-निर्माण-क्रिया
Manure-खाद,खाद देना,उपजाऊ बनाना।
Manure pit—खाद का गड्ढा।
Manuscript—(*adj*) हस्तलिखित, (*n*) हस्तलेख, पाण्डुलिपि, पांडुलेख।
Map—नकशा, मानचित्र।
Maps correction—मानचित्र शोधन, नकशे की दुरुस्ती।
Mappist-नकशाबनानेवाला,मानचित्रकार
Marble—संगमरमर।
March—अभियान, कूच करना, चलना।
March in file—पंक्ति में मार्च करना, पंक्ति में अभिनिर्याण करना।
Marfat—मार्फत, द्वारा।
Margin—उपान्त, पालि, हाशिया, पार्श्व।
Marginalउपान्तका,औपान्तिक,हाशियेका
Marginal adjustment—औपान्तिक समाधान।
Marginal heading—हाशिये की सुर्खी, उपान्त शीर्षक, पार्श्व शीर्षक।
Marginally noted—उपान्तलिखित, उपान्तांकित।
Marine Officer—समुद्रीय अधिकारी।
Marine policies—समुद्री पालिसी, सामुद्रिक नीति।
Mark—चिह्नित करना, निर्दिष्ट करना, निशान लगाना, चिह्न।
Mark(v-)—निशान लगाना, चिह्नलगाना-दागना, गोदना, ध्यान करना।
Market—मंडी, बाजार, विपणि।
Marketable security-बेच सकने योग्य सेक्यूरिटी,क्रय विक्रय योग्य सरकारी हुण्डी
Market dues- बाजार की उगाही।
Market fees- हाट-शुल्क।
Market price- बाजार भाव।
Market rate- बाजार भाव, आपणिक।

Marketrights to recover—उगाही का अधिकार।
Market value—बाजार मूल्य।
Marriagecertificateवैवाहिकप्रमाणपत्र
Marriage, Dissolution of-विवाहभंग
Marriage, Nullity of—विवाह का मोघीकरण, विवाह रद्द करना।
Married women's property—विवाहित स्त्री का धन।
Marsh— दलदल, पंक, कीचड़।
Marshal Law— सैनिक कानून, फौजी कानून, मार्शल ला।
Marshalling—विन्यस्त करना, क्रमबद्ध करना, तरतीब देना।
Martial rights—सैनिक अधिकार।
Masculine style—पुरुषोचित शैली।
Mask—मुखावरण।
Mason—राज।
Masonry— ईंट-पत्थर का काम, मैमारी, राजगीरी।
Masonry pillars or mounds—पक्के खम्भे या तोदे।
Masonry work—ईंट-पत्थर का काम ईंट-चूने का काम।
Mass—पिंड, राशि, ढेर।
Master of ship—पोतपति, पोताध्यक्ष, जहाज मास्टर।
Master, Security Printing, India—सरकारी हुण्डियों के मुद्रण अध्यक्ष, भारत।
Match—समानबल, तुल्य सामर्थ्य, अग्नि-शलाका, दियासलाई, द्वन्द्व, विवाह योग्य, मैच
Match excise vandrols—दियासलाई के उत्पादक बन्दरोला।
Mate—मेट।
Material—सामग्री, सामान, भौतिक, मूर्त, वास्तविक, आवश्यक, सारभूत, गुर्वर्थ।
Material change—मुख्य परिवर्तन।
Materialexhibit-महत्वपूर्णप्रदर्शितवस्तु
Material injustice-वास्तविक अन्याय, अच्छा खासा अन्याय।
Materials—पदार्थ, सामग्री, सामान।
Maternity, and Child Welfare Advisory Committee-प्रसूति तथा शिशु-कल्याण संबंधी परामर्श समिति।
Maternity and Child Welfare Centre—प्रसूति तथा शिशुकल्याण केन्द्र
Maternity centre—प्रसूति केन्द्र।
Maternity hospital—प्रसूति-चिकित्सालय, जच्चा-बच्चा का दवाखाना।
Maternity leave— प्रसूति छुट्टी, प्रसवकालीन छुट्टी।
Mathematicalandsurveying Instruments-गणितऔरभूमापसंबंधीउपकरण
Matrimonial clerk—विवाहविषयक क्लर्क या लेखक।
Matrimonial reader—विवाहविषयक पेशकार।
Matron—उपचार-निरीक्षिका, मातृका, मैटरन।
Matron, Assistant—सहायक उपचार निरीक्षिका, सहायक मातृका।
Matron's office—उपचार-निरीक्षिका का कार्यालय, मातृका का कार्यालय।
Matter—पदार्थ, प्रकृति, वस्तु, विषय, मामला, द्रव्य।
Mattress—चटाई।
Mattress covers—गद्दों के लिहाफ।
Mattresses, Assorted— विभिन्न नाप के गद्दे।
Mattresses, Babies—बच्चों के गद्दे।
Mature — परिपक्व, पूरा, तैयार, निस्तारोन्मुख, प्रौढ़।

Maturity—परिपक्वता, प्रौढ़ता, वयस्कता, परिपाक (किसी हुण्डी इत्यादि का)।
Mauza— मौजा, ग्राम।
Mauza register—मौजा रजिस्टर, ग्राम रजिस्टर।
Maximum — अधिकतम, अधिक से अधिक, सबसे अधिक, ज्यादा से ज्यादा।
Maximum & minimum salary—अधिकतम और न्यूनतम वेतन।
Maximum demand indicatory—अधिकतम माँग सूचक।
Maximum temperature—अधिकतम तापमान।
M. B. B. S.—चिकित्सा तथा शल्य कर्म स्नातक, चिकित्सा-स्नातक, एम० बी० बी० एस०।
Meagre—स्वल्प, अल्प।
Meal—खाना, खुराक।
Mean—मध्यक, माध्य, औसत।
Mean cloud amount was slightly below normal—औसत बादलमान सामान्य से कुछ ही कम था।
Mean daily range of temperature—दैनिक तापमान का औसत उतार-चढ़ाव।
Mean direction of wind—वायु की सामान्य दिशा।
Mean of month—महीने का औसत।
Mean temperature—सामान्य औसत तापमान।
Mean velocity at 8 a. m. (I. S. T.)—भारतीय प्रामाणिक समयानुसार आठ बजे प्रातः का औसत वेग।
Measure—परिमाण, माप, नाप, मात्रा, मान, नापना, नपना।
Measure glass—मापक गिलास, औषधि-मापक काँचपात्र।
Measuring glass—नाप का गिलास, माप यंत्र।
Measurement—माप, परिमाण, नाप, रकबाबन्दी, पैमाइश।
Measurement book—माप-पुस्तक।
Measures—उपाय, कार्रवाई।
Measures taken—प्रत्युपाय किये, कार्रवाई की गई।
Mechanic—शिल्पी, शिल्पकार, मिस्त्री, कारीगर मशीन का काम जाननेवाला।
Mechanical—यांत्रिक।
Mechanical assistant—यांत्रिक सहायक।
Mechanical draftsman—यांत्रिक मानचित्रकार, यांत्रिक नकशानवीस।
Mechanical engineer—मैकेनिकल इंजीनियर, यान्त्रिक इंजीनियर।
Mechanical equipment—यंत्रसज्जा।
Mechanically propelled—यंत्र द्वारा चालित, यंत्र-चालित।
Mechanics—शिल्पशास्त्र, यंत्रविद्या, यंत्रशास्त्र।
Mechanised travelling dispensary—यंत्रसज्जित चल-चिकित्सालय।
Median—मध्यम।
Medical—चिकित्सा, चिकित्सकीय, चिकित्सा-सम्बन्धी, डाक्टरी।
Medical board—मेडिकल बोर्ड।
Medical certificate—चिकित्सकीय प्रमाणपत्र, चिकित्सा-प्रमाणपत्र, डाक्टरी प्रमाणपत्र।
Medical certificate of fitness—कार्यसमर्थता का चिकित्सकीय पत्र।
Medical council—चिकित्सा परिषद्।

Medical department—चिकित्सा विभाग।
Medical examination—स्वास्थ्य-परीक्षा, डाक्टरी परीक्षा।
Medical expenses—चिकित्सा व्यय।
Medical leave—डाक्टरी छुट्टी।
Medical licentiate—चिकित्सा सानुज्ञ
Medical manual—चिकित्सा विभाग नियमसार-संग्रह।
Medical Officer—चिकित्सा अधिकारी, मेडिकल आफिसर, डाक्टर।
Medical-Officer-incharge—कार्याविकृत चिकित्साधिकारी।
Medical Officer of Health—स्वास्थ्य-चिकित्सा अधिकारी, स्वास्थ्य अधिकारी, सफाई के डाक्टर।
Medical opinion—चिकित्सकों की राय
Medical personnel—चिकित्सा कर्मचारीवर्ग।
Medical practitioner—चिकित्सक, डाक्टर।
Medical registration—चिकित्सक पंजीयन।
Medical report—डाक्टर की रिपोर्ट।
Medical treatment—चिकित्सा।
Medicinal—औषधीय, भैषज्य, व्याधिशमक, रोगघ्न।
Medicinal godown-औषधि भाण्डार।
Medicines—औषधियाँ।
Medico legal case—विधिक चिकित्सा विषय, विधिक चिकित्सा का मामला।
Medium—माध्यम।
Meet (the charges)—आरोप का उत्तर देना, खर्चा करना।
Meeting—अधिवेशन, बैठक, सभा।
Member—सदस्य, मेम्बर।

Member (roof)—अंग, इमारती ढाँचे का अंग।
Membership—सदस्यता।
Members of the Committee of Courses in Agriculture—कृषि विज्ञान पाठ्यक्रम समिति के सदस्य।
Members of the Commitee of Courses in Art—कला (आर्ट) पाठ्यक्रम समिति के सदस्य।
Members of the Committee of Courses in Biology—जीवविज्ञान पाठ्यक्रम समिति के सदस्य।
Members of the Committee of Courses in Chemistry—रसायन-शास्त्र पाठ्यक्रम समिति के सदस्य।
Members of the Committee of Courses in Logic—तर्कशास्त्र पाठ्यक्रम समिति के सदस्य।
Members of the Committee of Courses in Mathematics—गणित पाठ्यक्रम समिति के सदस्य।
Members of the Committee of Courses in Modern European Languages—आधुनिक योरपीय भाषा-पाठ्यक्रम समिति के सदस्य।
Members of the Committee of Courses in Physics—भौतिक विज्ञान पाठ्यक्रम समिति के सदस्य।
Memo—स्मृतिपत्र।
Memo of appearance—उपस्थिति का स्मृतिपत्र।
Memo of cost—याददाश्त खर्च, व्यय-स्मरणपत्र।
Memoranda—स्मृतिपत्र।
Memorandum—स्मृतिपत्र, स्मृतिलेख, ज्ञापन।

Memorandum of agreement—यादवाश्त इकरारनामा, इकरारनामे का नियमपत्र या स्मृतिपत्र।
Memorandum of appeal—अपील का स्मृतिपत्र।
Memorandum of Association of a Company—कंपनी का संघ नियम, कम्पनी का याददाश्त शराकत, कंपनी का विधानपत्र।
Memorandum of evidence—साक्ष्य का प्रमाणपत्र, साक्ष्य का संक्षिप्त विवरण।
Memorandum of Impressed labels plus and minus—छापदार लेबिलों का धन या ऋण का स्मृतिपत्र।
Memorandum of securities—सरकारी हुण्डियों का स्मृतिपत्र या संक्षिप्त विवरण।
Memorial—मेमोरियल, विनतिपत्र, स्मारक।
Memorialist—विनतिकर्ता, विनतिपत्र लिखनेवाला।
Menial—निम्न।
Men of influence—प्रभावशील व्यक्ति, बाअसर आदमी।
Mensuration—मसाहत, क्षेत्रमिति।
Mental—मानसिक, मनोमय, दिमागी, मस्तिष्क संबंधी।
Mental aberration-सिर का फिर जाना, दिमाग चल जाना, बदहवासी, दिमाग का खलल।
Mental defect—मस्तिष्क दोष, दिमागी खराबी।
Mental hospital—पागलखाना, मानसिक रोग चिकित्सालय, मस्तिष्क रोग चिकित्सालय।
Mental patient—मस्तिष्क रोगी।
Mention—उल्लेख, जिक्र।
Merchanting—सौदागरी करना।
Mercy petition—दयाप्रार्थना, रहम की दरख्वास्त।
Merge—मिलना, मिलाना, डुबाना।
Merger—समावेश।
Merit—गुण, योग्यता।
Merit (of a case)—(मामले की) असलियत (मामले की) यथार्थ बातें।
Mesh—फैला जाल जो कंकरीट को अधिक मजबूत करने के काम आता है, जाल या जाली का छेद।
Mesne profits—अपलाभ, अनधिकार भोग द्वारा लाभ।
Mess—रसोई, चौका।
Message—संदेश।
Message, Original—मूल-संदेश।
Mess allowance—भोजनालय भत्ता।
Mess jackets—मेस जाकेट।
Mess manager—पाकशाला प्रबन्धक।
Mess supervisor—भोजनालय पर्यवेक्षक।
Metalled roads—पक्की सड़कें।
Metallic—धातु की, धातु का।
Metalling of roads—सड़कों को पक्का करना।
Metal work—धातु का काम।
Metallic tapes—लोहे का फीता।
Meteorological department—अन्तरिक्ष-विज्ञान-विभाग।
Meteorological observatories—अंतरिक्ष विज्ञान मानमन्दिरं, वेधशाला।
Meter—मापक।
Meter readers—मीटर रीडर, मीटर वाचक।

Method—ढंग, प्रकार, विधि।
Methodical—यथारीति।
Method of preparation—तैयारी का ढंग।
Methylated spirit—प्रोदलीयत प्रासव, मिथाल मिली हुई स्प्रिट।
Metropolitan pattern — राजधानी का नमूना।
Mezzanine—बीच की मंजिल का फर्श।
Microscope—अणुवीक्षण यंत्र, अणुवीक्ष।
Microscopical examination—अणुवीक्ष-परीक्षा, सूक्ष्मदर्शकीय परीक्षा।
Middle school—मिडिल स्कूल।
Mid-wife—दाई, शिक्षित दाई।
Mid-wifery—दाई-कर्म, दाईगिरी, दाईपना।
Might—प्राबल्य, शक्ति, बल, जोर।
Migration—विश्वविद्यालयान्तरण।
Migration certificate—विश्वविद्यालयान्तरण प्रमाणपत्र।
Milan Khasra—मिलान खसरा।
Mild—मुलायम, हल्का, धीमा, मन्दा, मीठा, कोमल।
Mile—मील।
Mileage—मील भत्ता, मील संख्या।
Mileage allowance—मील भत्ता।
Military—सेना, फौज, लश्कर, सैनिक, फौजी।
Military encamping grounds—सैनिक पड़ाव।
Military, naval & air force—सैनिक, नाविक और नभ सेनाएँ।
Military officer—सैनिक अधिकारी, फौजी अफसर।
Military prisoner—सैनिक बन्दी, मिलिटरी का कैदी।
Military service—सैनिक सेवा, सैनिक भृत्या।
Military stores—युद्ध सम्बन्धी सामान, सैनिक कोष्ठागार, सैनिक सामग्री
Milkiat sarkar—मिलकियत सरकार, सरकारी सम्पत्ति।
Milk zones—दूध के इलाके, दूध प्राप्त करने के क्षेत्र।
Mill—मिल।
Milling—सिक्के के किनारे धारी बनाना
Mine—आकर, खानि, खान।
Mineral—खनिज, आकरी, आकरज।
Minerals—खनिज पदार्थ।
Miniature—लघुचित्र, सूक्ष्माकृति, छोटा नकशा।
Minimum—न्यूनतम, कमसे कम, सबसे कम
Minimum qualification—न्यूनतम योग्यता, कम से कम योग्यता।
Minimum working balance—न्यूनतम कर्मवाहक शेष, न्यूनतम कामचलाऊ शेष।
Minister—मंत्री।
Minister for Communication—यातायात मंत्री।
Ministerial—लेखकवर्गीय, क्लर्कवर्गीय
Ministerial Establishment and Menial—लेखकवर्गीय स्थापनाएँ, परिचारक स्थापनाएँ।
Ministerial servants—लेखकवर्गीय सेवक।
Ministerial service—लेखकवर्गीय सेवा।
Ministerial staff—लेखकवर्गीय कर्मचारी वर्ग।
Minister-in-charge — कार्यभारी सचिव, कार्यभारी मंत्री।

Minister of Agriculture—कृषि मंत्री
Minister of Developement—विकास मंत्री।
Minister of Excise—आबकारी मंत्री
Minister of Finance—अर्थ या वित्त मंत्री।
Minister of Food—खाद्य मंत्री।
Minister of Public Health—जनस्वास्थ्य मंत्री।
Minister of Public Works Department—निर्माण मंत्री।
Minister of Revenue—मालमंत्री।
Ministry—मंत्रिमण्डल, मिनिस्ट्री।
Minjumala numbers—मिन्जुमला नम्बर।
Minor—अल्पवयस्क, क्षुद्र, तुच्छ, अप्रधान, गौण, अप्राप्तव्यवहार, छोटा, नाबालिग।
Minor estimates— छोटे तख़मीने।
Minor Head-छोटा शीर्षक, लघु शीर्षक
Minor operation theatre—साधारण शल्यकर्म गृह, साधारण शल्य-क्रिया गृह।
Minor surgery—साधारण शल्यकर्म।
Minor under the guardianship of—की संरक्षता में अल्पवयस्क।
Minor work—लघु कार्य, छोटे काम, छोटे निर्माण-कार्य।
Minute Book—कार्यवाही का रजिस्टर
Minutes—संक्षिप्त कार्यवाही।
Minutes of a meeting—अधिवेशन का वृत्तसार।
Misappropriation—दुरुपयोग, अपाहरण, गबन, खा जाना, तसर्रुफ बेजा।
Misbehaviour—अविनय, दुर्व्यवहार।
Miscalculation—भ्रांत गणना, हिसाब लगाने में भूल।
Miscarriage—गर्भपात, दुश्चरित्र।
Miscarriage of Justice—न्याय विफलता, इन्साफ में खलल वाक होना, न्याय की हत्या, न्याय का अन्याय।
Miscellaneous—विविध, प्रकीर्ण, फुटकर।
Miscellaneous expenditure—विविध व्यय।
Miscellaneous godown—विविध भाण्डार।
Miscellaneous section—विविध उपविभाग।
Miscellaneous subordinate posts-विविध अधीनस्थ नौकरियाँ, विविध अधीनस्थ स्थान।
Mischievous—दुष्ट, खोटा, शरारती।
Misconduct—दुराचरण, दुराचार, बुरा चलन।
Misdescription—अशुद्ध वर्णन।
Misjoinder—दुस्संयोजन।
Misil band—मिसिलबन्द।
Misplace—कुठौर रखना।
Misprint—मुद्रण-अशुद्धि।
Mispresentation—मृषावर्णन, मिथ्याख्यापन।
Missing—अविद्यमान, गुम, गायब, खोया हुआ।
Mistake-भ्रम, भ्रान्ति, भूल, गलती, त्रुटि।
Mistress—अध्यापिका।
Mistri—मिस्त्री।
Misuse—दुरुपयोग।
Misused stamps—दुरुपयोग किये हुए स्टाम्प।
Mitigate—कम करना, शमन करना।
Mitigation—कमी, न्यूनीकरण, शमन।
Mix—मिलाना।

Mixer—मिश्रक, मिलानेवाला।
Mixture—मिश्रण, मिलाव।
M. L. A.—एम० एल० ए०, सदस्य विधान सभा, स० वि० स०।
M. L. C.—एम० एल० सी०, सदस्य विधान परिषद्, स० वि० प०।
Mob—भीड़।
Mobile dispensary—चल चिकित्सालय, चल औषधालय।
Mobile squads—चलदल।
Mobile traffic squads—यातायात नियंत्रण का गश्ती दस्ता।
Mode—रीति, ढंग।
Model rules—प्रतिमान नियम।
Moderate (question paper)—(प्रश्न पत्र का) मंदीकरण करना।
Moderate defect—साधारण दोष।
Moderate to large excess—साधारण से उच्चतम स्तर तक।
Moderation (question paper)—मंदीकरण।
Moderator (question paper)—मंदीकार।
Modification—संशोधन, परिवर्तन, सुधार, परिष्कार।
Modified grant—संशोधित अनुदान।
Modify—परिवर्तन करना, संशोधन करना।
Modulus—माप।
Moharrirs—मोर्हरिर, लेखक।
Moharrir-ziledari—मोर्हरिर जिलेदारी।
Moiety fees—अल्प शुल्क।
Moisture—नमी, तरी, आर्द्रता।
Molasses— शीरा।
Moment, Bending—झुकन-प्रवृत्ति।
Moment of inertia—जड़ता-प्रवृत्ति।
Momentum—झोंक।
Monetary—आर्थिक।
Monetary allotment—रुपया दिया जाना, आर्थिक दिष्टि, अर्थ निदेशन।
Money—रुपया-पैसा, मुद्रा।
Money order—धनप्रेष, मनीआर्डर।
Monopoly—एकाधिकार, इजारा।
Monsoon—वर्षावात, प्रावृष, वर्षाऋतु, बरसाती हवा, मानसून।
Monsoon damage—वर्षा द्वारा टूट-फूट, वर्षा से हानि।
Monsoon and drops—मानसून और फसलें।
Month—मास, महीना।
Month in which to be accounted for—महीना जिसमें हिसाब डाला जाय।
Monthly—मासिक, माहवारी।
Monthly abstract—मासिक सारांश, मासिक उपसंक्षेप।
Monthly account—मासिक लेखा।
Monthly returns—मासिक विवरण-पत्र, माहवारी नकशा।
Moral—नैतिक।
Moral turpitude—अनैतिक आचार, पर्यन्तिका, नैतिक हीनता, नैतिक पतन।
Moram spreading—मोरम फैलाना।
Morbid materials—विकृतिकारक पदार्थ, खराब माद्दा।
Morbid specimens—रोगीले नमूने, रुग्ण नमूने।
Mortality—मृत्यु।
Mortgage—बंधक, रेहन।
Mortgage bond—बंधकपत्र।
Mortgage deed—बन्धकपत्र।

Mortgaged property, Reconveyance of—बन्धक की हुई सम्पत्ति की वापसी।
Mortgagee— बन्धकग्राही।
Mortgagee's cultivation—बन्धकग्राही की खती या जोत।
Mortgagor—बन्धककर्ता।
Mortmain Acts—ऐसे भूमि संबंधी अधिनियम जो हस्तान्तरित न किये जा सकें।
Mortuary—शवरक्षणालय, मृतकगृह, चीरघर।
Most—सर्वाधिक, सबसे अधिक।
Most respectfully—सादर।
Most urgent—अत्यावश्यक, अत्यात्यिक।
Motion—प्रस्ताव।
Motion, Formal—यथानियम प्रस्ताव।
Motor—मोटर, वहित्र।
Motor (engine)—मोटर।
Motorcar—मोटरगाड़ी।
Motor cycle allowance—मोटर साइकिल भंत्ता।
Motor transport section—मोटर वाहन उपविभाग।
Motor Vehicle Rules-मोटरगाड़ियों संबंधी नियमावली।
Motor Vehicle Act—मोटरगाड़ी-अधिनियम।
Mould—साँचा।
Moulding—साँचा बनाना, सजाना, झुकाना।
Mount a guard—अश्वारोहण।
Mounted linemen—सवार लाइनमेन, आरोही लाइनमेन।
Mounted police—घुड़सवार पूलिस।
Movable—चल।
Movable property—चल सम्पत्ति।
Move—हटना, चलना, खिसकना, क्रमण, चाल।
Movement—आन्दोलन, गति, चाल, गमन, हरकत।
Mr. (mister)— श्री।
Muafidars—माफीदार।
Much—अधिक, बहुत।
Mucous membrane — श्लैष्मिक झिल्ली।
Mudmortar—गारा।
Mufti—साधारण वेष, मुफ्ती, सादी पोशाक।
Mug—मग, हत्थेदार बेलनी, प्याला।
Mukhia— मुखिया, अग्रणी।
Mukhtar—मुख्तार।
Mule—खच्चर।
Mull—नरम करना, सुस्त करना, कम हिम्मत करना।
Multifarious—बहुविधि, बहुप्रकार, अनेक विधि।
Multifarious suit—अनेकार्थवाद।
Multiple—बहुगुण, बहुविध, गुना, अपवर्त्य।
Municipal Board—नगरसभा, नगरपालिका।
Municipal finance and Taxation—नगर वित्त तथा कर।
Municipality—नगरसभा, नगरपालिका।
Municipal Medical Officer of Health—नगर स्वास्थ्य चिकित्साधिकारी।
Munsarim—मुंसरिम।
Munshi—मुंशी।

Munsif—मुंसिफ।
Murder—हत्या, वध, खून।
Museum—अजायबघर, आश्चर्यजनक वस्तु संग्रहालय।
Music—संगीत।
Musket—बंदूक।
Musketry—बंदूकें, बन्दूक विद्या, बन्दूकची सिपाही वर्ग।
Musketry Course—बन्दूक विद्या का पाठ्यक्रम।
Musket's sling—मसकेट का स्लिंग या तस्मा।
Muster—हाजिरी, गिनती, उपस्थिति।
Muster roll—उपस्थितिवर्ति, नामावली पंजी।
Mutation—नामान्तकरण, दाखिल खारिज।
Mutatis Mutandis—आवश्यक परिवर्तनों सहित।
Mutawaffi (deceased)—मुतवफ्फी, मृत।
Mute—मूक।
Mutiny—बलवा, गदर, विद्रोह, विप्लव, दंगा-फसाद।
Mutual—पारस्परिक, आपस की, एक दूसरे की।
Mutual Testaments—पारस्परिक इच्छापत्र।
Mutwalli—मुतवल्ली, उत्तराधिकारी।
Muzzle—थूथन।
My lord—धर्ममूर्ति, न्यायमूर्ति, धर्मावतार।
Myself—मैं, स्वयं।

N

Nabaligh—अल्पवयस्क।
N. B.—विशेष सूचना।
Naib Tahasildar—सहकारी तहसीलदार।
Naik—नायक।
Naik girls—नायक लड़कियाँ।
Nail—कँटिया, कील।
Nail brush—नखमार्जनी, नखकूर्चिका।
Name—नाम, प्रसिद्धि, नाम लेना।
Name card—नामपत्रक।
Name token—नाम निमित्त।
Naqsha—मानचित्र, नकशा।
Narration—वर्णन।
Narrative—वृत्तांत।
Narrative of the case—मामले का वर्णन या वृत्तान्त।
Narrow—संकीर्ण, तंग।
Nation—राष्ट्र, कौम।
National—राष्ट्रीय, कौमी।
National economy—राष्ट्रीय मितव्ययिता।
Nationalization—राष्ट्रीयकरण।
Native Converts Marriage Dissolution Act—ईसाइयों का विवाह विच्छेद विधान।
Native of India—भारतवासी।
Natural—नैसर्गिक,स्वाभाविक,प्राकृतिक।
Natural causes—प्राकृतिक कारण।
Natural child—अनौरस।
Naturalization—देशीकरण, परदेशी को देशी के अधिकार देना।
Natural life—स्वाभाविक जीवन।
Natural losses—स्वाभाविक हानियाँ।
Natural person—एकल व्यक्ति।
Nature—स्वभाव, प्रकृति, गुण, प्रकार, ईश्वरीय।
Nature of the case—मुकद्दमे का प्रकार।

Nature of the claim—दावे का प्रकार।
Nature of Vacancy—रिक्ति का प्रकार।
Navigable channels—नाव्य नहरें।
Navigation—नौवाहन, नौचालन, नाविकविद्या।
Nayar Dam Project Division—नायर बाँध योजना डिवीजन।
Nazir—नाजिर।
Nazul—नजूल।
Nazul Land Rules—नजूल भूमि के नियम।
Nearly—लगभग।
Nearest—निकटतम, सबसे समीप का।
Neat—स्वच्छ, साफ, सुभग, शुद्ध।
Necessaries—आवश्यक वस्तुएँ।
Necessarily—अवश्य ही, अवश्य करके।
Necessary—आवश्यक, अनिवार्य, अपरिहार्य, अवश्य कार्य, अवश्यंभावी।
Necessary action—आवश्यक कार्यवाही।
Necessitate—विवश करना, आवश्यक बनाना।
Necessity—आवश्यकता, अवश्यता, अपरिहार्यता, भवितव्यता, जरूरत।
Need—आवश्यकता, न्यूनता, निर्धनता, दैन्य।
Needed, Is—आवश्यकता है।
Negative—नकारात्मक, ऋणात्मक, ऋण, नास्ति।
Neglect—उपेक्षा, अवक्रिया, परिलोप, अनादर, अवगणना, अविधान, ध्यान न देना।
Negligence—उपेक्षा, असावधानी, प्रमाद, अनवधान, लापरवाही।
Negotiable—विनिमयसाध्य, क्रय-विक्रय योग्य।
Negotiable Instrument-विनिमयसाध्य साखपत्र, क्रय-विक्रय योग्य साखपत्र।
Negotiable Instrument Act—विनिमयसाध्य हुंडी विधान।
Negotiation—क्रय-विक्रय, सौदा, समझौते की बातचीत।
Neighbourhood—पड़ोस।
Net—शुद्ध, निरा, ले देकर जो बचे या रहे।
Net assets—पक्की निकासी, वास्तविक सम्पत्ति।
Net emoluments—शुद्ध परिलाभ।
Net imports—शुद्ध आयात।
Net income—शुद्ध आमदनी।
Net pay due—शुद्ध प्राप्य वेतन।
Net profit—शुद्ध लाभ।
Neutral—तटस्थ, उदासीन।
Neutral axis—क्लीवाक्ष।
New expenditure—नवीन व्यय, नूतन व्यय।
New fallow—नई परती।
News—संवाद, समाचार।
Never—कभी नहीं।
Nevertheless—तथापि, तिसपर भी।
New service—नई नौकरी।
Next—अनंतरित, अगला।
Next friend—निकटतम मित्र।
Next-of-kin—निकटतम बांधव, निकटतम-सम्बन्धी।
Nickel—निकल, कलई।
Night charge—रात्रिक अधिकार।
Night duty—रात की नौकरी।
Night duty squad—रात की नौकरी का स्काड।
Night duty watch—रात की नौकरी का पहरा।

Night round—रात की गश्त, रात का फेरा।
Nightsoil—विष्ठा, मैला, पैखाना।
Night watchman—पहरेदार।
Nil— कुछ नहीं, किंचित्।
Nipple—पाइप का छोटा टुकड़ा।
No-confidence—अविश्वास।
Nocturnal flight—रात की उड़ान।
Noes—ना पक्ष, ना वाले।
Nomenclature—शब्दावली, नाम-पद्धति
Nomenclature of roads—सड़कों का नामकरण।
Nominal—नाम मात्र, नाम मात्र का।
Nominal revenue—नाम मात्र भू-राजस्व, नाम मात्र मालगुजारी।
Nominal roll—नाम सूची।
Nominate—नामजद करना।
Nominated—नामनिर्दिष्ट, मनोनीत।
Nomination—नामनिर्देशन, मनोनयन, नामजदगी, मनोनीत करना।
Nomination of reporters—संवाददाताओं का मनोनीत किया जाना।
Nomination paper—नामनिर्देशपत्र।
Nominee—मनोनीत व्यक्ति, निर्दिष्टनामा
Non-agricultural land—बिना जोती बोई भूमि।
Non-alluvial mahals—ऐसे महाल जो कछार न हों, अकछेर महाल, अनदमट महाल।
Non-bailable—अप्रतिभाव्य।
Noncognizable—अहस्तक्षेप्य।
Non-commissioned Officer—अनायुक्त अधिकारी।
Non-compliance—पालन न करना।
Non contract—अनियत।
Non-contract contingent bill—अनियत प्रासंगिक बिल (पुर्जा)।
Non-dieted—भोजन न पानेवाले।
Non-domicile parties Rules (Indian) अकृतावास-पक्ष-सम्बन्धी नियम (भारतीय)।
Non-food crops—अखाद्य फसलें।
Non-gazetted—अराजपत्रित।
Non-gazetted establishment—अराजपत्रित स्थापना।
Non-gazetted officer—अराजपत्रित अधिकारी।
Non-government—शासनेतर, गैर-सरकारी।
Non-industrial consumer—अनौद्योगिक उपभोक्ता।
Non-judicial stamp—न्यायेतर ठप्पा।
Non labouring—अपरिश्रमी, मेहनत न करनेवाला।
Non-license—बिना लाइसेंस का।
Non-occupancy—गैरदखिलकारी।
Non-Official—गैरसरकारी।
Non-pensionable post—बिना पेंशन की नौकरी।
Non-porous—असोख।
Non postal stamp-गरडाकखानाटिकट
Non-recurring—अनावर्ती, अनावर्त्तक।
Non-recurring expenditure—अनावर्ती व्यय।
Non-reserved posts—असुरक्षित पद।
Non-residential—अनावासिक, न रहनेवाला।
Non-residential buildings—अनावासिक भवन।
Non-scheduled—अपरिगणित।
Non-technical—साधारण, अविशिष्ट विषयक।

Non-testamentary-असंवंधितइच्छापत्र
Non-vegetarian—मांस, मांसाहारी, आमिषभोजी।
Non-vegetarian diet—मांसाहार, आमिष-भोजन।
Normal—सामान्य, नियमबद्ध, वैधिक, यथाक्रम, यथादर्श।
Normally—सामान्यतया, सामान्यत:।
Normal School—नार्मल स्कूल।
Normal time—साधारण अवधि।
No., Serial No. (letter)—संख्या, क्रम संख्या, क्रमांक।
North Indian Ferries Act—उत्तर भारतीय घाट विधान।
Notarial act—लेख्य प्रमाणक का कार्य।
Notary—लेख्यप्रमाणक, लेख्यप्रमाण, अधिकारी।
Notary, public—लेख्य प्रमाणक।
Not available—अप्राप्य।
Notch—दाँता, खोंचा, मोखा।
Note—टिप्पणी, टीप, नोट, रुक्का।
Note Book—टिप्पणी पुस्त, नोट बुक, स्मृति पुस्तिका।
Noted—टीप किया गया, लिख लिया गया।
Noted below—निम्नांकित।
Note for Financial Committee—वित्त परिषदीय स्मृतिपत्र।
Note form—टिप्पणी चिट।
Noter—टिप्पणीक।
Noter and drafter—टिप्पणी लेखक और पांडु लेखक।
Notes and orders—टिप्पणियाँ और आज्ञायें।
Notes cover—टिप्पणी बंध।
Notes sheet—टिप्पणी फलक।
Notice—सूचना, नोटिस, विज्ञप्ति।
Notice board—सूचना पट्ट, नोटिस बोर्ड।
Notice is hereby given—इसके द्वारा सूचना दी जाती है।
Notice of completion of work—कार्य पूरा करने की सूचना।
Notice of demand—माँग सूचना।
Notice of ejectment—बेदखली की सूचना।
Notice of motion—प्रस्ताव की सूचना।
Notice to file suit—नालिश दायर करने की सूचना।
Notice writer—सूचना लेखक।
Notification—विज्ञप्ति, अधिसूचना।
Notification of acquisition of Land—भूमिप्राप्ति-सम्बन्धी विज्ञप्ति समिति के लिये नोट।
Notified Area—अधिसूचित क्षेत्र, विज्ञप्त क्षेत्र, नोटीफाइड एरिया।
Notify—विज्ञप्त करना, सूचित करना।
Noting—टिप्पणी।
Not negotiable—अविनिमयसाध्य, क्रय-विक्रय के अयोग्य।
Notorious—कुख्यात, अपकीर्तित, अपकीर्तिमान्, बदनाम।
Not quoted—उद्धृत नहीं किया, भाव नहीं दिया।
Notwithstanding—तथापि, होते हुए भी।
Nozzle—नाक, टोंटी, किसी वस्तु का निकला हुआ भाग।
Nucleus—केन्द्रीय भाग, बीज, गुठली।
Nuisance—कंटक, क्लेश, कष्ट का कारण
Null and void—निष्प्रभाव और निरर्थक।

Nullify—निरर्थ करना, शून्य करना, निष्प्रभाव करना।
Nullity of marriage—विवाह का अभिशून्यन, विवाह का निष्प्रभाव किया जाना।
Number—संख्या, गिनना।
Numbering of chapters—परिच्छेदों पर संख्याक्रम डालना।
Numbers of pier—खम्भों की संख्या।
Numerable—गणनीय, गिनने योग्य।
Numerator—अंश।
Numerical—संख्यात्मक।
Numerous—बहुत से ।
Numismatic—आणकशास्त्र सम्बन्धी।
Nuncupative will—मौखिक वसीयत जो दो साक्षियों के सामने की गई हो और तत्पश्चात् लिखित में आई हो।
Nurse—उपचारिका।
Nursery—पौधघर, वृक्षरोपणी।
Nurses staff—उपचारिका वर्ग।
Nursing orderly—उपचार परिचर, उपचार अर्दली।
Nursing (scheme) उपचार योजना।
Nursing service—उपचार सेवा, उपचार भृत्या।
Nut—सुपारी, ढेबरी, आगल।
Nutrition institute—पुष्क संस्था, पुष्क ज्ञानालय।
Nutritional status—पौष्कीय स्तर।

O

Oar—डांड़, चप्पू।
Oath—शपथ, हलफ।
Oath of allegiance—राज्यनिष्ठा शपथ।
Obedience—आज्ञापालन, अनुवर्तन।
Obediently—आज्ञाकारी।
Obey—आज्ञापालन करना।
Object—वस्तु, द्रव्य, प्रयोजन, उद्देश्य, आपत्ति करना, विरोध करना।
Objection—आपत्ति, अवक्षेप, आक्षेप, विरोध, एतराज।
Objectionable—आपत्तिजनक, सदोष, अवक्षेप्य, काबिल एतराज।
Objectionstatement—आपत्ति कथनपत्र, अवक्षेप विवरणपत्र, उज्रनामा।
Objects and reasons—उद्देश्य और कारण।
Obligation—देय, दायित्व, ऋण, अनुग्रह, आभार, कर्तव्य।
Obligation of residence—आबाद रहने की कैद, निवास प्रतिबन्ध।
Obligatory—अपरिहार्य, आवश्यक, अवैकल्पिक।
Oblique—तिर्यक्, आड़ी।
Oblong—आयताकार, आयत।
Obnoxious—कुत्सित, अप्रीतिकर, अति अनभावना।
Obscure—अस्पष्ट, अप्रसिद्ध, गुप्त, पोशीदा।
Observation—विचार, अभ्युक्ति, अवरोक।
Observe—अवलोकन करना, देखना, मत प्रकट करना, ध्यान देना, कहना, मनाना (जैसे छुट्टी मनाना)।
Obsolete Plants—निष्प्रयोग स्थिर यंत्र, पुरानी चाल के स्थिर यंत्र।
Obstacle—रुकावट।
Obstruction—अवरोध, अड़ंगा, रुकावट।
Obtain—प्राप्त करना।
Obtuse angle—अधिककोण।
Occasion—अवसर, समय, प्रसंग, हेतु, कारण, कारण होना, उठाना, पैदा करना।

Occasional—कदाचनिक,कभी-कभी का
Occasional assessment of land revenue—यदा-कदा जमाबन्दी।
Occasional check— कभी-कभी की पड़ताल।
Occupancy— भूभुक्ति, दखीलकारी, दखीलकारी भोगाधिकार।
Occupancy tenant— दखीलकार, असामी, दखीलकार काश्तकार, भोक्ता कृषक।
Occupancy tenants on whom rights of Occupancy—दखीलकार काश्तकार, जिन पर दखीलकारी के अधिकार प्रदान किए गए।
Occupancy tenants of Government estates other than Nazuls—नजूल के अतिरिक्त दूसरी सरकारी रियासतों के दखीलकार असामी।
Occupancy tenants under Act—विधान के अधीन दखीलकार असामी।
Occupant—आभोक्ता।
Occupation—व्यवसाय, वृत्ति, धंधा, पेशा, भुक्ति, भोग।
Occupier—मकान में रहनेवाला।
Occupier of land without the consent of the Zamindars—जमींदार की स्वीकृति बिना भूमि पर अधिकार करनेवाला किसान।
Occupiers rate—किरायेदार की दर।
Occupy—घेरना, कब्जा करना, दखल करना।
Occur—घटित होना, मन में आना।
Occurrence—घटना, वाकया।
Octagon—अठभुज, अठकोन, अष्टभुज।
Octennial—अठसाला।
Octennial settlement—अष्टवार्षिक भूव्यवस्था।
Octennium—वर्षाष्टक।
Octroi— चुंगी।
Octroi duty—चुंगीकर।
Odd—विषम।
Of Current year's crop—चालू वर्ष की फसल का।
Off—दूर, दूर का, परे, अलग, निकला हुआ, बढ़ा हुआ।
Off duty—छुट्टी पर, काम पर नहीं, काम के समय से अलग का।
Offence—अपराध, जुर्म।
Offensive trade—घृणोत्पादक व्यवसाय
Offer—पेश करना, देना, प्रस्ताव, अर्पण, दाममोल, उपदान, उपहार।
Office—कार्यालय, पद।
Office begs to submit that—कार्यालय का निवेदन है कि।
Office box— कार्यालय बकस।
Office copy—कार्यालय प्रतिलिपि।
Office letter—कार्यालय पत्र।
Office memo—कार्यालय स्मृतिपत्र।
Office memorandum—कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय स्मृतिपत्र।
Office mate—कार्यालय के साथी।
Office order—कार्यालय आज्ञा।
Officer—कार्याधिकारी, अधिकारी,अफसर, हाकिम।
Officer-in-charge—अधिकृत अधिकारी, कार्यभारी अधिकारी।
Officer on special duty—विशेष अधिकारी, विशेष कार्याधिकारी।
Officers, training class in land records and survey—कागजात देही और भूमाप के आफिसरों का ट्रेनिंग क्लास।

Office superintendent—कार्यालय अधीक्षक।
Office to note—कार्यालय नोट करे।
Official—शासकीय, आधिकारिक, सरकारी, पदाधिकारी, कर्मचारी, अहलकार।
Official assignee—राजकीय हस्तांकिती, सरकारी अभिहस्तांकिती।
Official liquidator— अपाकरणाधिकारी।
Official receiver—सरकारी प्रतिग्राहक, सरकारी प्रतिगृहीता, सरकारी रिसीवर, सम्पत्ति का सरकारी प्रबन्धकर्त्ता।
Official referee—राजकीय मध्यस्थ, सरकारी पंच।
Official trustee—राजकीय प्रन्यासी, सरकारी प्रन्यासी, सरकारी ट्रस्टी।
Officiate—एवजी, स्थानापन्न होना।
Officiating—स्थानापन्न, एवजी।
Officiating appointment—स्थानापन्न नियुक्ति।
Off season—ऋतुबाह्य, बेमौसम।
Offset piece—गोनिया।
Of normal nature—सामान्य ढंग का, साधारण प्रकार का।
Of previous year's crop—पिछले वर्ष की फसल का।
Oil cake—खली।
Oil engine driver—तेल इंजन चालक, तेल इंजन ड्राइवर।
Oilers—तेलिया, तेल देनेवाला।
Old—प्राचीन, जीर्ण, वृद्ध, बूढ़ा।
Old fallow—पुरानी परती।
Olympics—ओलिम्पिक्स।
Omission—परिलोप, अवक्रिया, भूल-चूक, न करना।
Omit—चूकना, भूल जाना, छोड़ना, छोड़ देना, बिसारना।
Omitted—छोड़ा हुआ।
On average pay—औसत वेतन पर।
On behalf of—की ओर से।
Once—एक बार।
On deputation—प्रतिनियुक्ति पर।
On duty—काम पर।
On Probation—परीक्षण पर।
On service—कार्यार्थ।
On special duty—विशेष कार्यार्थ।
On the examination of—की जाँच करने पर।
Onus—भार, दायित्व।
Ooze—चूना, छनना, टपकना, झिरना, रसाव, झिराव, बहाव, कीचड़, पंक, चहला।
O. P. D. operation theatre—बहिरंग शल्यकर्म गृह।
Open contract—खुला संविद्।
Opening—उद्घाटन, प्रारम्भ, मुंह, छेद, सम्मति, राय।
Opening balance—आरंभिक शेष।
Operate—लागू होना, काम करना।
Operation fee—शल्यकर्म शुल्क, चीरा शुल्क।
Operation table—शल्यकर्म पटल, चीरे की मेज।
Operation towel clips—शल्यकर्म की तौलिया के क्लिप।
Operative—सप्रभाव।
Operator (of transport vehicles)-चालक, आपरेटर (वाहन यानों के)।
Ophthalmic outdoor—बहिरंग रोगी नेत्र विभाग।
Opinion—मत, राय।

Opinion thereon—उस विषय में सम्मति।
Opium department—अफीम विभाग
Opportunity—अवसर, मौका।
Oppose—विरोध करना, प्रतिरोध करना, रोकना।
Opposite party—विपक्ष, प्रतिपक्ष, फरीक, मुखालिफ।
Opposition—विरोध, विरोधपक्ष, प्रतिपक्ष।
Optical square—आप्टिकल स्क्वायर या राइट ऐंगिल।
Option—विकल्प, मर्जी, रुचि।
Oral—मौखिक, जबानी।
Oral leases—मौखिक पट्टे, जबानी पट्टे।
Orbit—कक्ष, ग्रहपथ।
Orchard—फलों का बाग।
Order—आज्ञा, आदेश, हुक्म, क्रम, व्यवस्था।
Orderly—व्यवस्थित, अर्दली।
Order file—आर्डर फाइल, आज्ञानस्ती।
Orderly peon—अर्दली।
Order sheet—आज्ञा फलक।
Ordinance—अध्यादेश, आर्डिनेंस।
Ordinary—साधारण, सामान्य।
Ordinary grant—साधारण अनुदान।
Ordinary pension—साधारण पेन्शन।
Ordinate—कोटि।
Ordinance—लड़ाई के हथियार, बड़ी तोपें, तोपखाना, गोला बारूद।
Ore—कच्ची धातु।
Organised—संगठित।
Organiser—संगठनकर्ता।
Organization—संघटन, संस्था।
Organs—अंग।
Oriental—पूर्वी।
Orientation—स्थिति निर्धारण, स्थिति निश्चयन।
Origin—मूल, आरंभ, उद्भव, निकास।
Original—मूल, मौलिक, असली।
Original authority—मूल प्राधिकारी, मूल अधिकार।
Original work—मूल निर्माणकार्य, नया काम।
Originating (bills)—प्रारंभ होनेवाला, विधेयकों का आरंभ करना।
Ornamental work—बेल-बूटा, विभूषक कार्य, सजावट का काम।
Orphan—अनाथ।
Orphanages—अनाथालय।
Osrabandi—ओसराबन्दी।
Ostensible—प्रकट, प्रत्यक्ष, कृत्रिम, खुला।
Other irregularities—दूसरी अनियमतायें, दूसरे अनियम।
Other non-contract contingencies—अन्य अनियत प्रासंगिक व्यय।
Other operators—दूसरे चालक।
Otherwise—अन्यथा।
Ounce—आउन्स।
Outbreak—फैलना (रोग का), फूट निकलना, शुरू होना।
Outdoor—बहिरंग, बहिर्वासी, बाहरी, बाहर का, बाह्य।
Outdoor department—बहिरंग विभाग, बहिर्वासी विभाग।
Outdoor registers and tickets—बहिरंग पंजी तथा टिकट।
Outdoor patients—बिना भरती हुए रोगी, बहिर्वासी रोगी।
Outfit allowance—यात्रिक सामग्री भत्ता, सफर सामान भत्ता।

Outlaw—अपराधी, इश्तहारी।
Outlay—लागत।
Outline—स्थूल वर्णन, बाहरी रेखा, खाका, ढाँचा।
Outpatient department—बहिरंग विभाग, बहिर्वासी विभाग।
Outpost—चौकी।
Output—निकासी, पैदावार, प्रदा।
Outrage—अत्याचार, बलात्कार।
Outset—आरम्भ।
Outside—बाहर की ओर, बाहर का।
Outskirts villages—किनारे के गाँव, पार्श्ववर्ती गाँव।
Outstanding—देय, प्रदत्त, अशोधित, अनिस्तीर्ण, अप्राप्त, अप्राप्य, वाजिब, गैरवसूल, बाकी।
Outstanding accounts—खड़ा लेखा।
Outstanding balance—खड़ा शेष, खड़ी बाकी।
Outstanding debts—बाकी।
Outstanding loan—अप्राप्त ऋण, पड़ा हुआ ऋण।
Outturn—निकासी, पैदावार, उत्पाद।
Oval—वर्तुलाकार जीव, अंडाकार जीव।
Oven—चूल्हा, तन्दूर।
Over—ऊपर, समाप्त।
Overbid—अधिक दाम लगाना।
Overcharges—अधिक व्यय, अधिक आदान।
Overcrowding—अधिक भीड़, बहुत भीड़ होना, दरगुजर करना।
Overdraw—प्राप्य से अधिक निकाल लेना, प्राप्य से अधिक की हुण्डी करना।
Over-estimate—अत्यागणन, अत्यागणित करना, अधिक आँकना।
Overhauling—जीर्णोद्धार, कायापलट, मरम्मत, जाँच, जाँच के लिए पलटना।
Overhead—उपरि।
Overleaf—पत्र की दूसरी ओर।
Overlook—उपेक्षा करना, ध्यान न देना।
Overpayments—अधिक भुगतान।
Overrule—प्रत्यादेश करना, रद्द करना।
Overseas pay—समुद्रवारिक वेतन, समुद्र पार का वेतन।
Overseer—अवेक्षक, अधिकर्मकर, ओवरसीयर।
Oversight—अनवधान, भूल।
Overstay—छुट्टी पर अधिक रह जाना, अधिक रहना।
Overstay on leave—छुट्टी पर ज्यादा रुक जाना।
Overtime payment—समय के बाद के काम का भुगतान, समयोत्तर काम का भुगतान।
Overturn—उलट देना, पलटना।
Overwriting—अक्षरों पर लिखना।
Owe—आभारी होना, ऋणी होना, कर्जदार होना।
Ownership—स्वामित्व, स्वत्व, मिलकियत।
Owner's rate—मालिक की दर।
Oxygen bottle—ओषजन बोतल।
Oxygen cylinder—ओषजन बेलन।

P

Package—बंडल, पुलिदा।
Packet—पैकेट।
Packet post—पैकेट डाक।
Paddy-extension Officer—धानप्रसार अधिकारी।
Paid apprentice—वैतनिक शिक्ष्यमाण।
Paid up capital—प्राप्त पूंजी।
Paint—रंग, रोगन।

Painter—रंगसाज, चित्रकार।
Paint measure—लेप मापक।
Pair of compasses—परकार।
Pamphlets—पर्चे, पुस्तिका, पैम्फ्लेट।
Pan—कढ़ाई।
Panel—तालिका, दिलहा, सम्यगण सूची।
Panel of chairman—अध्यक्ष तालिका
Pane of glass—शीशे का टुकड़ा।
Panic—समुद्वेग, आतंक, विद्रव, भगदड़।
Pantographer—प्रतिलिपिक यंत्र, नक्शों को छोटा-बड़ा करनेवाला पत्र।
Pantry—खाद्य कोष्ठ।
Paper book—पत्र पुस्तक, मुकदमे के कागजात।
Paper under consideration—विचाराधीन कागज या पत्र।
Paper-weight—पत्र-भार, पेपर-वेट।
Par—समता, सम।
Para—पैरा, अनुच्छेद।
Parabola—शिखामूलिक, परलय।
Parade—परेड, योग्या, कवायद।
Paragraph—अनुच्छेद।
Parallel—समानान्तर, सदृश, उसी प्रकार का।
Parallelogram—समानन्तर चतुर्भुज।
Parapets—मुंडेरा, छाती तक ऊँची दीवाल।
Paraphernalia—सामान, असबाब।
Paraphrases—टीका, गद्य को पद्य बनाना, अन्वय।
Parasites—परजीवी।
Parasitic nodules—परजीविक ग्रन्थिका।
Parcel—पोट्टलिका।
Parcha Abpasi—पर्चा आबपाशी, पर्चा सिंचाई।
Pardon—क्षमा।
Pargana—परगना।
Parity—समानता।
Park—उद्यान, चौक।
Parking places—गाड़ी खड़ी करने के स्थान।
Parliamentary Secretary—सभा सचिव, पार्लमिन्टरी सेक्रेटरी।
Parlour—बैठक, बातचीत का कमरा।
P. A. to Director of Public Health—स्वास्थ्य संचालक के वैयक्तिक सहायक।
Parole—पैरोल, संगर, वचन।
Parole evidence—मौखिक साक्ष्य।
Part—भाग, हिस्सा, अंग, खंड, अवयव, अलग होना।
Partal—पड़ताल।
Part heard—सुना भाग।
Partial—आंशिक, पक्षपाती।
Partial allotment—आंशिकरूप से दिया जाना।
Partially excluded areas—अंशतः अलग किये क्षेत्र, अंशतः बाह्यकृत क्षेत्र।
Partial sampling—आंशिक निदर्शन।
Particular—विशेष, सविशेष, विशिष्ट।
Particular points—विशष बातें।
Particulars—विवरण, ब्योरा।
Partition—बँटवारा।
Partly—भागशः, अंशतः, कुछ।
Partnership—भागिता, साझा।
Partnership, Dissolution of—भागिता-भंग, साझेदारी का टूटना।
Part-performance—आंशिक पूर्त्ति।
Part-time—अंशकालिक।
Part-time appointment—अंशकालिक नियुक्ति।

Part-time servants—अंशकालिक सेवक।
Part transaction—पिछला लेन-देन, पिछला व्यवहार।
Party—पक्ष, दल।
Party in power—अधिकार-सम्पन्न दल
Party to the suit—फरीक मुकद्दमा।
Pass—व्यतीत करना, बिताना, गुजारना, पास करना, पास, प्रवेशपत्र, दर्रा।
Passage—पास होना, पारण, संयात्रा, मार्ग, रास्ता।
Pass book—पास बुक, ग्राहक पुस्तिका।
Passenger train—सवारी गाड़ी।
Passive trust—समाप्तकार्य प्रन्यास।
Pass on—आगे बढ़ाना।
Passport—पासपोर्ट, राहीदार की चिट्ठी, परिपत्री।
Past—अतीत, गत, भूतकाल, व्यतीत, बीता हुआ।
Paste allowance—लेई का भत्ता।
Pasturiser—चरवाह।
Patch repairs—थोप चेप मरम्मत, थगलीदार मरम्मत।
Patent—एकस्व।
Patent medicines—पेटेन्ट दवाइयाँ, एकस्व भषज।
Path—पथ, मार्ग।
Pathological examination—रोग-शास्त्र-विषयक परीक्षा।
Pathological fee—रोगविज्ञान शुल्क
Pathological laboratory—रोग-विज्ञान प्रयोगशाला।
Pathologist—रोगशास्त्रज्ञ, रोगवैज्ञानिक।
Pathological specimens—रोग-विषयक नमूने।

Pathology—रोगशास्त्र।
Pathology Department—रोग विज्ञान विभाग।
Patri dressing—नहर की पटरी की दरेसी।
Patrol—पतरौल, गश्त, गश्त लगाना।
Patrolling—गश्त लगाना।
Patron—संरक्षक।
Pattern—नमूना, छाप।
Pattidari ghair mukammal—अपूर्ण पट्टीदारी।
Pattidari mukammal—पूर्ण पट्टीदारी।
Patwari records—कागजात पटवारी।
Patwari register—पटवारी का रजिस्टर।
Paucity—अल्पता, कमी, विरलता।
Pauper—अकिंचन।
Pauper appeals—अकिंचन अपील।
Pauper suits—अकिंचन वाद।
Pavement—फर्श, छज्जा।
Pawn or Pledge—गिरवी, आधि।
Pay—वेतन।
Payable—देय, देनी।
Pay and allowance—वेतन और भत्ता।
Payable revenue—देय भूराजस्व, देय मालगुजारी।
Pay-bill—वेतन चिट्ठा, चिट्ठा।
Payee—प्राप्तिकर्ता, पानेवाला।
Payment—भुगतान, अदायगी।
Payment, non-payment—भुगतान, भुगतान न करना या होना।
Payment order—भुगतान आदेश, भुगतानाज्ञा।
Payments and presents—भुगतान और उपहार।

Pay of establishment—स्थापना का वेतन।
Pay of officers—अधिकारियों का वेतन।
Pay, Personal—वैयक्तिक वेतन।
Pay, Progressive—बढ़ती वेतन, वर्धमान वेतन।
Pay, Special—विशेष वेतन।
Pay, Substantive—मूल वेतन।
Pay, Technical—विशेष विषयक वेतन।
Pay, Time scale—कालानुक्रम वेतन।
Pawn—निक्षेप।
Pawnee—निक्षेपग्राही, निक्षेपधर्ता।
Pavillions—बठकखाना।
Peace Propaganda—शान्ति-प्रचार।
Pebble—कंकड़, संगरेजा, छान, रोड़ी।
Peculiar—अनोखा, असाधारण, असामान्य, विशिष्ट।
Peculiarity—विलक्षणता, अनोखापन।
Pecuniary—आर्थिक।
Pecuniary loss—आर्थिक हानि।
Pedagogy—शिक्षण विज्ञान।
Pedigree—वंशावली, वंश, कुल, कुलीन, अभिजात।
Pedestal—खम्भे की कुर्सी, पाये की कुरसी, चौकी।
Pedestrian—पैदल चलनेवाला, पीठक, पादक।
Peel—छीलना।
Peg—खूंटी।
Penal—दण्ड विषयक।
Penalty—दंड, शास्ति।
Pend—पड़ा रहना, लटका रहना।
Pendant—लटकन, झूमकन।
Pendent—लंबित।
Pendentelite—विचारकाल।
Pendency—लम्बमानता, विचाराधीनता।
Pending—विचाराधीन, लम्बमान, पड़ा हुआ, लटका हुआ।
Pending cases—विचाराधीन प्रकरण।
Pending disposal of—मुकद्दमा फैसला होते तक।
Pending travelling allowance bills—रुकी हुई यात्रिक भत्ता बिल।
Penetration—भेदन।
Penalogy—दंड शास्त्र।
Pension—निवृत्तिवेतन, पेन्शन।
Pensionable—निवृत्तिवेतनान्त, पेंशनी।
Pensioner—निवृत्तिवेतनी, पेंशनभोगी, पेंशनग्राही।
Pensionable post—पेंशनी नौकरी।
Pensionable service—पेन्शनी नौकरी।
Pensionary charges—पेंशन सम्बन्धी व्यय।
Pension, Commutation of—पेंशन का संराशिकरण।
Pension paper—पेंशन पत्र।
Pension Payment orders—पेंशन भुगतान आज्ञा।
Peon—चपरासी।
Peon Book—पिअन बुक।
Per annum—प्रतिवर्ष।
Per capita consumption—प्रतिव्यक्ति उपभोग, प्रति व्यक्ति खपत।
Per capita income-प्रतिव्यक्ति आय।
Percent—प्रतिशत।
Percentage—प्रतिशतता, प्रतिशत।
Percentage (charges)—प्रतिशतता व्यय।

Percentage, Increase and decrease—प्रतिशत, बढ़ती या कमी का।
Per contra (credit)—अन्य पार्श्व जमा।
Perennial—बारहमासिया, सतत; निरंतर।
Perfect—पूर्ण।
Perfection—पूर्णता।
Perforator—वेधनी।
Perform—पूरा करना, करना।
Performance of additional duties—अतिरिक्त कर्त्तव्यों का पालन कराना या करना।
Perhaps—कदाचित्, स्यात्, शायद।
Perimeter—पारिमाप, चौफेरी।
Period—समय, अवधि, काल, कालावधि, घंटा (class hour)।
Periodic—नियतकालिक, सामयिक, आवर्तिक, मियादी।
Periodical—सामयिक, नियतकालिक पत्रिका।
Periodical inspection—सामयिक निरीक्षण।
Periodically—नियतकाल से।
Periodical payment—सामयिक भुगतान।
Periodical review—सामयिक सिंहावलोकन।
Period of limitation—अवधि का काल।
Perjury—झूठी गवाही।
Permanent—स्थायी।
Permanent advance—स्थायी अग्रधन, स्थायी पेशगी।
Permanent judge—स्थायी न्यायाधीश।
Permanent lessee—स्थायी पट्टेदार।
Permanently—स्थायी रूप से।
Permanently settled—स्थायी बन्दोबस्ती।
Permanent man—स्थायी व्यक्ति
Permanent out-let—स्थायी निकास, पानी निकलने का स्थायी मार्ग।
Permanent settlement—स्थायी भू-व्यवस्था।
Permanent tenure holder—हकदार, कब्जा, स्थायी भू-व्यवस्थाकारी।
Permanganated—परमैनगनेट मिला हुआ।
Permanganate of potash—लाल दवा, कुएँ की दवा।
Permissible limit—अनुज्ञेय अवधि।
Permission—अनुज्ञा, अनुमति।
Permissive—अनुज्ञेय।
Permit—अनुमतिपत्र, परमिट, अनुमति देना।
Perpetrate—अपराध या बुरा काम करना।
Perpetual—सार्वकालिक, निरन्तर, सतत, दवामी।
Perpetuity—निरंतरता, सातत्य।
Perpetual allowance—शाश्वत भत्ते।
Perpetuate—जीवित रखना, कायम रखना।
Persian script—फारसी लिपि।
Personal—व्यक्तिगत, वैयक्तिक, निजी।
Personal allowance—वैयक्तिक भत्ता।
Personal appearance—व्यक्तिगत उपस्थिति।
Personal appearance, Official exempt from—व्यक्तिगत उपस्थिति से मुक्त पदाधिकारी।

ersonal assistant—वैयक्तिक सहायक।
Personal assistant to the Director of agriculture—कृषि संचालक के वैयक्तिक सहायक।
Personal chattels—व्यक्तिगत चल संपत्ति।
Personal file—वैयक्तिक फाइल।
Personal immorality—व्यक्तिगत अनैतिकता, व्यक्तिगत दुश्चरित्र।
Personality—व्यक्तित्व।
Personal law—स्वधर्म शास्त्र।
Personally—स्वयं, अपने आप।
Personal pay—वैयक्तिक वेतन।
Personal Property—स्वयं उपार्जित संपत्ति, माल-असबाब।
Personal remark—वैयक्तिक आक्षेप।
Personal representative-प्रतिनिधि।
Personal right—व्यक्तिगत अधिकार, स्वरक्षा अधिकार।
Personal staff of H. E. the Governor—महामान्य राज्यपाल का वैयक्तिक कर्मचारी वर्ग।
Personation—छद्म व्यक्तिता, छद्मकारिता।
Personal, Claiming—दावेदार व्यक्ति।
Personal, Executing—निष्पादन करनेवाला व्यक्ति।
Personnel—व्यक्तिसमूह, सेविवर्ग।
Perspective—दृश्य, दृष्टि संबंधी।
Persuade—प्रेरित करना, तैयार करना, प्रवृत्त करना।
Pertain—संबंध रखना।
Perusal—अधीति, सुवाचन।
Peruse—पढ़ना, अवलोकन करना।
Petition—अनुरोधपत्र, अभ्यर्थनापत्र।
Petitioner—अभ्यर्थी।
Petition officer—अभ्यर्थना अधिकारी
Petition respecting offence—अपराध सम्बन्धी प्रार्थनापत्र।
Petition writer—अभ्यर्थना लेखक।
Petrol—पेटरौल।
Petrol coupons—पेट्रौल कूपन, मार्तेल पर्णिका।
Petroleum—पेट्रौल।
Petty—क्षुद्र, छोटा।
Petty and electrical works—छोटे तथा विद्युत् निर्माण कार्य।
Petty contingent expenditure—क्षुद्र प्रासंगिक व्यय।
Petty establishment—लघुस्थापना।
Petty estimates—छोटे-मोटे तखमीने।
Petty expenses—क्षुद्र व्यय।
Petty works—क्षुद्र निर्माण कार्य, छोटे-मोटे काम।
Pharmacopoeia—ओषधि तत्त्व शास्त्र ओषधि संग्रह, भेषज संस्कारग्रंथ।
Phone—दूरभाष, फोन, दूरभाष करना, फोन करना।
Physical assets—भौतिक सम्पत्ति।
Physical fitness certificate—स्वस्थता प्रमाणपत्र।
Physically fit—शरीर से योग्य।
Physical training-शारीरिक विज्ञान।
Pieceable—टुकड़ किये जाने योग्य।
Piecework—ठेके का काम।
Piecework agreement—ठेके के काम का इकरारनामा।
Pier—पील पाया, पाया, खम्भा, निकसवाँ घाट, पानी में बना हुआ चबूतरा।
Pile foundation—भूमि-प्रविष्ट खम्भ

पर रक्खी नींव या बुनियाद।
Pilgrim—तीर्थयात्री ।
Pilgrim pass—तीर्थयात्री पास ।
Pilgrim route—तीर्थमार्ग ।
Pillar—खम्भा,पाया,स्तम्भ,ओटा,स्थूण।
Pillow-slip—गिलाफ ।
Pilots—विमानचालक, नियामक।
Pilot scheme—पाइलट स्कीम, नभ-पथदर्शक योजना ।
Pin-cushion—आलपीन की गद्दी ।
Pioneer—अगुआ, अग्रगामी. रास्ता साफ करनेवाला ।
Piper cubes—पाइपर क्यूब ।
Piroplasmosis—संक्रामक पैत्तिक ज्वर
Pistols—पिस्तौल ।
Pitch—राल,अंत,सीमा, आखिर, स्तर।
Pitched—जमी हुई ।
Pitching of bricks-ईंटों के चट्टे लगाना
Pivot—चूल या खूंटी, जिस पर कोई चीज घूमे।
Place—स्थान, रखना ।
Placed below—नीचे लिखे या रक्खे।
Place of presentation for registration—रजिस्टरी करने के लिये प्रस्तुत करने का स्थान ।
Place of trial—विचार-स्थान, अभियोग-विचार स्थान ।
Plague—प्लेग ।
Plain clothes police—खुफिया पुलिस
Plaint—वाद, वादपत्र, अर्जीदावा ।
Plaintiff—वादी ।
Plan—योजना, उपाय, संविधा, मानचित्र, नकशा ।
Plane mensuration—समतल भूमि।
Plane table—तख्ता मुसत्ता,समथर पट्ट
Planning—योजना, प्लैनिंग ।
Plans and estimates—संविधायें तथा आगणन ।
Plant—पौधा, पौधा लगाना, स्थिरयंत्र।
Plant & machinery—स्थिरयंत्र और मशीनें ।
Plantation, Roadside—सड़क के किनारे में बाग बगीचे या खेती ।
Plant pathology—वनस्पति रोग-निदान शास्त्र ।
Plaster—पलस्तर,अस्तरकारी का मसाला
Plaster fee—प्रलेप शुल्क, पलस्तरफीस
Plastic—बनाने या ढालने योग्य रूपधारी साँचे, साँचे में ढला हुआ प्लास्टिक।
Plate number—पट्टिका संख्या ।
Plate polish—प्लेट पालिश ।
Platoon—प्लैटून ।
Platoon commander-प्लैटून कमांडर
Plausible—जाहिर में सच्चा, दिखावटी
Playground—खेल का मैदान ।
Pleader—अभिभाषक ।
Pleading—पक्ष निवेदन ।
Please—कृपया, प्रसन्न करना ।
Please quote—कृपया उद्धृत कीजिए ।
Please report—कृपया रिपोर्ट कीजिए।
Pledge—गिरवीं, गिरवीं की हुई वस्तु।
Plintharea—भवन संवृत क्षेत्र, क्षेत्र जितने पर मकान बना हो ।
Plot—भूमिखण्ड, जमीन का टुकड़ा, किता।
Plug—प्लग ।
Plumb—सम्बक, राज का साहुल ।
Plus and minus memo—धन और ऋण का स्मृतिपत्र ।
Ply—झुकना, मुड़ना,तह करना, परिश्रम से काम करना, लगा रखना, कदम उठाना,

जल्दी करना, दो पत्तनों के बीच बराबर आना-जाना, तह, मोड़ ।
Pocket register—जबी रजिस्टर ।
Point—नोक, बिन्दु, विषय,संकेत करना, बताना, जताना, टीप करना ।
Pointing masonry—ईंटों या पत्थरों पर टीप करना ।
Point of order—व्यवस्था प्रश्न ।
Poison—विष ।
Police—पुलिस ।
Police band—पुलिस का बाजा ।
Police cases—पुलिस रोगी, पुलिस प्रकरण, आरक्षकीय प्रकरण ।
Police department—पुलिस विभाग।
Police diary—पुलिस की दिन पंजी ।
Police force—पुलिस दल ।
Police guard—पुलिस गारद ।
Police office manual-पुलिस कार्यालय सारसंग्रह ।
Police recruits—पुलिस रंगरूट ।
Police regulations—पुलिस संहिता, पुलिस के कायदे कानून की किताब ।
Police stations—थाने ।
Police training school—पुलिस ट्रेनिंग स्कूल ।
Police ward—पुलिस वार्ड ।
Policy—नीति,युक्ति,राजनीति,शासननीति ।
Policy of assurance—बीमा ।
Political sufferer-राजनैतिक पीड़ित।
Poled deed—एकपक्षीय लेख, दस्तावेज एकतरफा ।
Polling booth—निर्वाचन स्थल, वोट देने का स्थल ।
Polling officer—निर्वाचन अधिकारी ।
Polling station—निर्वाचन अधिष्ठान।
Polygamy—बहुपत्नीकत्व ।
Polygon—बहुभुज ।
Pony breeding—टट्टुओं की नस्लकशी ।
Pool—पोखर, तलैया, वितरणार्थ कोष, इकट्ठा करना ।
Popular—लोकप्रिय, जनोचित, लौकिक, लोकारूढ़, सामान्य ।
Popularize—लोकप्रिय बनाना ।
Population—आबादी, जनसंख्या ।
Porous—सोखना, सोखनी, छिदहा, सोखनेवाला ।
Port—रास्ता ।
Portable—हल्का, सुवाहनीय ।
Porter—भारिक, कुली ।
Portfolio —मंत्रिपद, बस्ता ।
Portions there of—उसके भाग ।
Porto.ficer—बन्दर अधिकारी ।
Position—चित्र, तस्वीर, मूरत ।
Position—स्थान, स्थिति, पद, प्रतिष्ठा।
Positive—धनात्मक, निश्चित ।
Possession—भोग, अधिकार, वेषण, मुक्ति, दखल, कब्जा ।
Possessory title—भोगात्मक स्वत्वाधिकार, भोगात्मक स्वामित्व ।
Possibly—संभवतः, कदाचित् ।
Post—पद, डाक ।
Postage stamps—डाक के टिकट ।
Postal life insurance premium—पोस्टल जीवन बीमा की किस्त ।
Postal notice—डाक नोटिस ।
Postdated—उत्तरतिथीय ।
Posterior—पश्च ।
Posters—विज्ञापन-पत्र, पोस्टर ।
Post-graduate—स्नातकोत्तर, पोस्टग्रेजुएट ।
Post-graduate Course—स्नातको-

तर पाठ्यक्रम ।
Post and Telegraph Department डाक और तार विभाग ।
Posting-नियुक्ति,तैनाती,स्थापित करना।
Posting of account—लेखारोपण, लेखाप्रवेशन ।
Postings and transfers—तैनाती और बदली ।
Postmaster—पोस्टमास्टर,डाकमुंशी ।
Postmortem—मरणोत्तर ।
Postmortem Examination—शव परीक्षा ।
Postnatal—जन्मोत्तर, जन्म के बाद ।
Post office—डाकघर ।
Postpone—स्थगित करना ।
Postponed—स्थगित ।
Postponement—स्थगन, स्थगित करना, मुल्तवी करना ।
Postscript—अनुलेख ।
Post-slump—मंदी के बाद का ।
Posts, Permanent—स्थायी पद, नौकरी स्थायी ।
Posts, Temporary—अस्थायी पद, अस्थायी नौकरी ।
Posture—मुद्रा, आसन, बैठक,ढंग,भाव ।
Postwar—युद्धोत्तर ।
Postwar planning and development—युद्धोत्तर अनुसंधान और विकास।
Postwar schemes—युद्धोत्तर योजनाएँ।
Potash—पोटाश ।
Potassium permanganate—लाल दवा, कुआँ की लाल दवा ।
Pouch—थैला ।
Pound—काँजीहाउस,पौंड,आटा माँड़ना ।
Poundage—प्रति पौंड कर, काँजीहाउस का महसूल ।
Powder—बुकनी ।
Power—शक्ति, बिजली ।
Power House Superintendent—बिजलीघर अधीक्षक ।
Power of attorney—अभिकर्तापत्र, प्रतिनिधिपत्र, मुख्तारनामा ।
Power of authority—मुख्तारनामा, प्रतिनिधिपत्र ।
Power of owner-मालिक का अधिकार।
Powers, Exercise of—अधिकारों का काम में लाना, अधिकारों का प्रयोग ।
Powers to reduce or remit fees—शुल्क कम करने या माफ करने का अधिकार ।
Power, Vested—सम्प्राप्त अधिकार ।
Practicable—सुकर, साध्य, शक्य, करणीय ।
Practicability—करणीयता,साध्यता, शक्यता ।
Practical—व्यावहारिक,व्यवहार-विषयक,व्यवहारसिद्ध,व्यवहार्य,अभ्यासप्राप्त।
Practical experience—व्यावहारिक अनुभव, प्रत्यक्ष अनुभव ।
Practically—व्यवहारतः, व्यवहार-दृष्टि से ।
Practice—अभ्यास, व्यवहार, रीति, क्रिया, पद्धति, अनुष्ठान, अभ्यासक्रम ।
Practise—अभ्यास करना, व्यवसाय करना ।
Practising school—अभ्यास स्कूल ।
Practitioner, Medical—चिकित्सक
Prayer—प्रार्थना ।
Preamble—प्रस्तावना ।
Pre-audit—लेखा परीक्षा पूर्व ।
Precaution—पूर्वोपाय, पूर्वावधान एहतियात ।

Precede—पहिले होना, पहिले आना।
Precedence—आदिता, पूर्वता।
Precedent—पूर्व दृष्टान्त, पूर्वभावी।
Pre-censor—पूर्वदोष-वेचन।
Pre-censorship—पूर्वदोष-वेचन।
Precept—आदेश, लिखित आदेशपत्र, हुक्मनामा, परवाना।
Precinct—अहाता, सीमा, मेंड़, इलाका का पास-पड़ोस।
Precis—संक्षिप्ति।
Precise—सुतथ्य, यथार्थतम, ठीक, सामञ्जस्यपूर्ण।
Precision—यथार्थमात्रता।
Preclude—रोकना।
Predecessor—पूर्वाधिकारी।
Predecessor-in-title—स्वत्वाधिकार पूर्ववर्ती।
Predisposing—पूर्वस्थित।
Pre-emption-पूर्वक्रयाधिकार,हकशफा।
Preface—प्रस्तावना।
Prefer—अधिमान देना, अधिक पसन्द करना, दायर करना।
Preferable—श्रेष्ठतर, अधिमान्य।
Preferably—अच्छा तो हो कि।
Preference—अधिमान, पूर्वाधिकार, तरजीह।
Preference shares—पूर्वाधिकार, अंश, रियायती हिस्से।
Prefix—उपसर्ग आदि में जोड़ना।
Prejudice—पक्षपात,विपरीत, प्रभाव।
Prejudicial—प्रतिकूल, हानिकारक, प्रतिफल, प्रभावकारी।
Preliminary—प्राथमिक, प्रारंभिक, निर्धारित, विहित।
Preliminary estimate—प्रारंभिक आगणन।
Preliminary objection—प्रारम्भिक आपत्ति।
Preliminary report of prosecution—प्रारम्भिक रिपोर्ट।
Preliminary statement of excesses and savings—अधिक व्ययों और बचतों का प्रारम्भिक विवरणपत्र या नकशा।
Premature—समय से पहले, कच्चा।
Premature release—समय से पहले रिहाई।
Premia—प्रीमिया।
Premier—प्रधान मंत्री।
Premises—भूगृहादि, गृहोपान्त, पक्ष, प्रतिज्ञा (logic)।
Premium—बीमे की किस्त, वृद्धि, वास्तविक मूल्य पर वृद्धि, बढ़ती, अग्रधन, पट्टा, दाता को नजर।
Preparatory—प्रथम, पहला, प्रारंभिक, प्राथमिक, प्रावेशिक।
Preparatory to retirement—निवृत्ति पूर्व, पूर्व की, निवृत्ति के पूर्व की।
Preparation of fair letters—परिष्कृत पत्रों को तैयार करना।
Prepare—तैयार करना।
Preponderance—प्रबलता, प्रधानता, भाराधिक्य।
Prepopular—पूर्व सफलक।
Prerogative—परमाधिकार।
Prescribe—विहित करना, विनिर्दिष्ट करना।
Prescribed—विहित, निर्धारित।
Prescribed form—नियत फारम।
Prescribed minimum expenditure—नियत न्यूनतम व्यय।

Prescribing the form—रूप निर्धारण करते हुए ।
Prescription—अंगनिदेश, नुस्खा ।
Presence—उपस्थिति ।
Present—उपस्थित, वर्तमान, उपस्थित करना, प्रस्तुत करना, पेश करना ।
Presentation—उपस्थापन या प्रस्तुत करना, प्रस्तुति ।
Presentation by unauthorized person–अनधिकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुति।
Presentation of documents—लेख-पत्रों की प्रस्तुति ।
Presented—प्रस्तुत ।
Presented by—द्वारा प्रस्तुत, द्वारा उपस्थित, द्वारा उपस्थापित ।
Preservative—रोक रखनेवाला, कायम रखनेवाला, अंडपालक ।
Presidency town—महाप्रान्त, महानगर ।
Presidency Postmaster—प्रेजीडेन्सी पोस्टमास्टर ।
President—सभापति, प्रधान ।
Presiding—अध्यासीन ।
Presiding Officer—अधिष्ठाता ।
Prestige—प्रतिष्ठा, मान, गौरव ।
Presume—अनुमान करना, मान लेना ।
Presumption—अनुमान, कल्पना, अहंकार ।
Presumptive heir—आनुमानिक उत्तराधिकारी ।
Presumptive pay—आनुमानिक वेतन ।
Pretence—बहाना, बनावट ।
Pretender—छाद्मिक, झूठा वादा करनेवाला ।
Prevailing—सार्व, प्रचलित, प्रबल, अभिभावी ।
Prevalence—प्राधान्य, प्राबल्य, प्रचार, प्रसार, प्रचलन ।
Prevalent—प्रचलित, फली हुई, सार्व, चलती ।
Prevent—रोकना ।
Prevention—निवारण, निरोध, रोकथाम ।
Prevention of adulteration—मिलावट की रोक ।
Prevention of Bribery and Corruption Act—घूसखोरी तथा भ्रष्टाचार निवारक कानून ।
Preventive—निरोधक, निवारक, प्रतिबन्धक, रोग-निवारक ।
Preventive inoculation—निवारक टीका ।
Preventive measure—निवारणात्मक उपाय ।
Previous—प्राक्तन, पहले का, पूर्व ।
Previous sanction—पूर्व स्वीकृति ।
Price section—मूल्य उपविभाग ।
Prima facie—आपातत:,प्रथमावलोक, ऊपर से देखने में ।
Primarily—मूलत:, मुख्यत:, मुख्यश:, प्रथमत: ।
Primary—प्रारंभिक, प्राथमिक ।
Primary health units—प्राथमिक स्वास्थ्य एकक ।
Primary school—प्रारम्भिक पाठशाला ।
Primary unit—प्राथमिक इकाई, प्राथमिक एकक ।
Primary units of appropriation–पर्यादान की प्राथमिक इकाइयाँ ।

Primary units of expenditure—व्यय की प्राथमिक इकाइयाँ।
Prime Minister—प्रधान मंत्री।
Prime mover—प्रधान प्रेरक।
Primogeniture—अग्रजाधिकार।
Principal—प्रधान, मुख्य, प्रधानाचार्य, मूलधन।
Principal, Agricultural College-कृषि महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, कृषि कालेज के प्रिन्सिपल।
Principal rafter—मुख्य धरणी।
Principle—सिद्धान्त, मूल, हेतु, कारण।
Printer—मुद्रक।
Printing—मुद्रण, छपाई।
Prior—पूर्वकालीन, पूर्व।
Priority—आदिता, पूर्वता, प्राथमिकता, पूर्वकालीनता।
Priority slip—आदिता पुर्जी।
Prismatic compass—प्रिजिमदार कुतुबनुमा।
Prisoner—बन्दी, कैदी।
Prisoner ledger-कारागार खाताबही।
Prison offences—जल के अपराध।
Prison van—कैदी गाड़ी।
Private—वैयक्तिक, अशासकीय, निजी।
Private candidate—प्राइवेट परीक्षार्थी।
Private person—गैर सरकारी व्यक्ति
Private practitioner—अशासकीय चिकित्सक।
Private secretary—निजी सेक्रेटरी, प्राइवेट सेक्रटरी।
Private wards—वैयक्तिक कक्ष।
Privilege—विशेषाधिकार।
Privilege leave—रियायती छुट्टी।
Privy—शौचालय, पाखाना।
Privy Council—प्रीवी कौंसिल।
Prize—पुरस्कार, पारितोषिक।
Probability—संभाविति, संभावना।
Probable—संभाव्य।
Probable cost—संभाव्य लागत।
Probate—इच्छा-पत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि, इच्छापत्र प्रमाण।
Probate court—इच्छापत्र प्रतिलिपि न्यायालय, प्रोबेट न्यायालय।
Probate duty—इच्छापत्र प्रतिलिपि शुल्क।
Probation—परीक्षण, नये अभ्यास का काल।
Probationary period—परीक्षाकाल, परीक्षण काल।
Probationer—परीक्ष्यमाण।
Probationer nurse— परीक्ष्यमाण उपचारिका।
Problem—समस्या।
Procedure—कार्यविधि, प्रक्रम।
Proceedings—कार्यवाही, कार्रवाई।
Proceeds—आय, आमदनी।
Process—आदेशपत्र, हुक्मनामा, विधा।
Process fees—आह्वान शुल्क, तलबाना।
Processing of milk—दुग्धोत्पादन पद्धति।
Procession—जलूस, सवारी।
Process of cleaning—सफाई की क्रिया।
Process server—हुक्मनामे को तामील करनेवाला।
Proclamation—उद्घोषणा, ऐलान।
Procure—वसूल करना, प्राप्त करना।
Procuress—कुटनी, दूती।
Produce—उपज, पैदावार।

Production—उत्पादन, पैदावार।
Products—उत्पाद, उत्पादित वस्तुयें।
Productive capital-उत्पादक पूंजी।
Profession—व्यवसाय वृत्ति, पेशा।
Professional—व्यावसायिक।
Professional college—व्यावसायिक विद्यालय।
Professional knowledge—व्यावसायिक ज्ञान।
Professional skill—व्यावसायिक प्रवीणता।
Professor—प्राध्यापक, प्रोफेसर।
Proficiency—प्रवीणता।
Proficients—प्रवीण।
Profit and loss account—लाभ और हानि का लेखा।
Pro forma—नियमानुरूप।
Pro forma account—दर्शनार्थ लेखा, नियमानुसार लेखा, यथारीति लेखा।
Pro forma defendant—गौण प्रतिवादी, क्रमिक प्रतिवादी।
Pro forma respondent—गौण उत्तरवादी, क्रमिक उत्तरवादी।
Programme—कार्यक्रम, प्रोग्राम।
Programme of funds—किस्तों में ऋण लेने का प्रोग्राम।
Progress—उन्नति, प्रगति।
Progressive total—वर्धमान योग।
Progressive decline—उत्तरोत्तर गिरावट या कमी।
Progressive party-प्रगतिशील दल।
Progressive pay—वर्धमान वेतन।
Progress report—प्रगति रिपोर्ट।
Progress statement-प्रगतिविवरणपत्र
Prohibit—निषेध करना, प्रतिषेध करना, मना करना, रोकना।
Prohibited bores—निषिद्ध बोर।
Prohibition—मद्यनिषेध, नशाबंदी।
Prohibition articles—निषिद्ध वस्तुयें।
Prohibitory—निषेधक।
Project—योजना, परियोजना।
Projection—प्रक्षेपण, निकासी।
Prominence—प्रमुखता, प्राधान्य; व्यक्तता, प्रलम्बता।
Prominent—प्रमुख प्रधान।
Promise—प्रतिश्रव, प्रतिज्ञा, वचन, वचन देना, प्रतिश्रुत होना।
Promissory note (s)—वचनपत्र, रुक्का।
Promotion—पदोन्नति, उन्नति, वेतन, वृद्धि, तरक्की।
Prompt—तत्पर।
Promulgated with—सहित प्रचारित किया गया।
Promulgation—प्रचारण।
Pronote—रुक्का।
Pronote-server—आदेश-पत्र वाहक।
Pronounce—सुनाना, उच्चारण करना।
Proof—प्रमाण, उपपत्ति, सिद्धि।
Proof in duplicate—प्रूफ दो प्रतियों में।
Proofs (from press)—मुद्रण-फलक, प्रूफ।
Propaganda—प्रचार।
Propaganda of safety-first and rule of road—सुरक्षा प्रथम तथा सड़क नियम का प्रचार।
Propagate—प्रचार करना, प्रसार करना।
Proper—उचित, यथोचित, सम्यक, ठीक।
Proper channel—उचित मार्ग।
Property—सम्पत्ति, जायदाद।

Property registers (Movable and immovable)—संपत्ति पंजी (चल और अचल)।
Proportion—अनुपात।
Proportional representation—अनुपाती प्रतिनिधान।
Proportionate—अनुपाती, आनुपातिक, विभागशः।
Proportionate pension—आनुपातिक निवृत्ति वेतन, आनुपातिक पेंशन।
Proposal—प्रस्ताव।
Propose—प्रस्ताव करना, तजवीज करना
Proposed estimate—प्रस्तावित तखमीना, प्रस्तावित आगणन।
Proposition—प्रस्ताव, प्रस्थापना।
Proposition statement—प्रस्तावित विवरण-पत्र।
Proprietary cultivation—काश्त-मालिकाना।
Proprietary right—मालिकाना अधिकार, भू-अधिकार।
Proprietor—मालिक, स्वामी।
Proprietor, Super—प्रवर स्वामी मालिक आला।
Proprietor, Under—अनुस्वामी, मातहतदार।
Propulsion charges—चालन व्यय।
Pro-rata—अनुपाततः, भागानुसार, हिस्से रसीदी।
Proscribe—निषेध करना, निषिद्ध ठहराना, जब्त करना।
Proscribed literature—निषिद्ध साहित्य, जब्त साहित्य।
Prosecuting Inspector—कोर्ट इन्सपेक्टर, अभियोग निरीक्षक।
Prosecution—अभियोगपक्ष, अभियोग लगाना, मुकदमा चलाना।
Prospectus—नियमावली।
Prostitution—वेश्यावृत्ति, वेश्यागमन
Protect—शरण देना, रक्षा करना।
Protected monuments—अभिरक्षित अस्मारक।
Protection—रक्षा, रक्षण, आश्रय, शरण।
Protection—रक्षा।
Protector of emigrants—उत्प्रवासी संरक्षक।
Protest—विरोध वचन, विरोध प्रकट करना।
Protest of bill or note—हुंडी या रुक्का के न सकारने का विरोधपत्र।
Provide—देना, व्यवस्था करना।
Provided—यदि, अथ, पर, बशर्ते कि।
Provided by the rule—नियम द्वारा व्यवस्थित किया गया।
Provided that—यदि, किन्तु, साथ ही।
Provident fund—पूर्वोपायी कोष, प्राविडेंट फंड।
Province—प्रांत, प्रदेश, जनपद।
Provinces of Agra and Avadh—आगरा व अवध का प्रान्त।
Provincial—प्रान्तीय।
Provincial Armed Constabulary-प्रान्तीय सशस्त्र रक्षिवर्ग।
Provincial Civil Service—प्रान्तीय जानपद सेवा।
Provincial Government—प्रान्तीय सरकार।
Provincial Grain Account—प्रान्तीय अन्न लेखा।
Provincial Hygiene Institute—प्रान्तीय आरोग्यशास्त्र संस्था।
Provincialization—प्रान्तीयकरण।

Provincialization of certain posts under local bodies—स्थानीय निकायों के अधीन कुछ पदों का प्रान्तीयकरण।
Provincial Medical Service—प्रान्तीय चिकित्सा भृत्या, प्रान्तीय चिकित्सा सेवा।
Provincial return—प्रान्तीय नकशा।
Provincial revenues—प्रान्तीय राजस्व।
Provincial Transport Authority-प्रान्तीय वाहन अधिकारी।
Provincial Transport Board—प्रान्तीय वाहन परिषद्।
Proving a will—इच्छापत्र को सिद्ध करना या प्रामाणित करना, वसीयतनामे को तसदीक करना या साबित करना।
Provision—आदेश, व्यवस्था।
Provisional—अस्थायी,अचिरकालिक, सामयिक, औपाधिक।
Provisional appointment—अस्थायी नौकरी।
Provisional list—अस्थायी सूची।
Provisional substantive—अस्थायी मूल।
Provisions-संभार,अन्न-सामग्री,भक्ष्यजात
Provisions(Law)—आदेश, खाने-पीने का सामान।
Provisions of Act—अधिनियम के आदेश।
Provisions of Sections—धाराओं के आदेश।
Provisions of the Waqf Act—वक्फ एक्ट के आदेश।
Proviso—प्रतिबन्धात्मक वाक्यखंड।
Proxy—प्रतिहस्त, प्रतिहस्तक पत्र।
Pseudonymous communications—झूठे नाम से चिट्ठियाँ।
P.T.O.—कृपया पन्ना उलटिये।
Public—जनता, सार्वजनिक, राजकीय, लोक।
Public Accounts Committee—सार्वजनिक लेखा समिति।
Public affairs—सार्वजनिक मामले।
Public Analyst to Government—सरकार के सार्वजनिक विश्लेषक।
Publication—प्रकाशन।
Public conveyance—किराये की गाड़ी, भाड़ की गाड़ी।
Public debt—सार्वजनिक ऋण, सरकारी कर्ज।
Public finance—सार्वजनिक वित्त।
Public health—जनस्वास्थ्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य।
Public Health and Veterinary Department—सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग और पशु-चिकित्सा विभाग।
Public interest—सार्वजनिक हित।
Publicity—प्रख्यापन, प्रचार,प्रकाशता।
Publicity officer—प्रकाशता अधिकारी।
Public nuisance—सार्वजनिक कंटक।
Public officers—सार्वजनिक अधिकारी।
Public purpose—सार्वजनिक प्रयोजन, सार्वजनिक काय।
Public safety—सार्वजनिक सुरक्षा, जन सुरक्षा।
Public safety order—सार्वजनिक, सुरक्षा आज्ञा।
Public servant—सार्वजनिक सेवक, जन सेवक।

Public service—सार्वजनिक सेवा।
Public Service Commission—सार्वजनिक सेवा आयोग, जानपद सेवा आयोग, पब्लिक सर्विस कमीशन।
Public Service Committee—सार्वजनिक सेवा समिति।
Public trustee—सार्वजनिक प्रन्यासी।
Public utility—सार्वजनिक उपयोगिता
Public works—सार्वजनिक निर्माणकार्य
Public Works Department—सार्वजनिक निर्माण विभाग।
Publisher—प्रकाशक।
P. U. C.—विचाराधीन पत्र।
Puisne judge—अवर न्यायाधीश।
Puisne mortgage—निम्नस्थ बन्धकग्राही।
Pukhtadar—पुख्तादार।
Pull through—पुल (कपड़ा, रस्सी जिससे बन्दूक आदि हथियार साफ किये जाते हैं)।
Pump attendant—पम्प परिचर।
Pump engineer—पंप इंजीनियर।
Pumping plant—उदञ्चन स्थिरयंत्र, पंपिंग प्लांट।
Pumping sets—पंपिंग सेट।
Pumping station—पंपिंग स्टेशन, उदंच संस्थान।
Punching—छद करना।
Punching and cancellation of court fee stamps—न्याय शुल्क स्टाम्प को छद देना या खारिज करना।
Punctual—समयनिष्ठ, समय-पालक, सामयिक।
Punishable—दंडनीय, दण्ड योग्य।
Punishment—दण्ड, सजा।
Punitive charges—दंडात्मक देयभार, दंडात्मक मुतालबा।
Punitive rates—दण्डात्मक दर।
Purchase—क्रय, खरीद, क्रय करना, खरीदना।
Purchase of government vehicles—राजकीय गाड़ियों का क्रय।
Purchases—क्रय, खरीददारी।
Purchasing centre—क्रय केन्द्र।
Purchase of type-writers—टाइप मशीनों की खरीददारी या क्रय।
Pure—शुद्ध।
Pursue—अनुसरण, अनुधावन, पीछा करना, अनुसरण करना।
Purview—अधिकार-सीमा, कानून का मंशा विस्तार।
Putative father—नामनिहाद बाप।
Putrefaction—कूपन, सड़न।
Put up—प्रस्तुत करना।
P. W. (Prosecution witness)—अभियोग साक्षी।
Pyramid—स्तूप।

Q

Qabuliat—कबूलियत, स्वीकारोक्ति।
Quadrangle—चतुष्कोण, चौकोना।
Quadrant—पाद, चतुर्थांश, तुरीय।
Quadratic equation—वर्गसमीकरण।
Quadrennial—चतुर्वर्षीय।
Quardrennial repairs—चौबरसी मरम्मत, चतुर्वार्षिक मरम्मत।
Quardruplicate—चौहरी, चतुर्थका।
Qualification—अधिकारिता, योग्यता, अर्हता।
Qualified—योग्य, योग्यता प्राप्त अधिकारी, अर्ह।
Qualified property—परिमित सम्पत्ति, सप्रतिबन्ध संपत्ति।

Qualify—अधिकारिता या योग्यता प्राप्त करना, योग्य बनना, अर्ह बनना।
Qualify test—योग्यता प्रदायी परीक्षा।
Qualifying for pension—पेंशन के लिये योग्य होना।
Quality—गुण, प्रकार, वर्ग, लक्षण,श्रेणी।
Quaratine—स्पर्शवर्जन, निरोधा, कलातीना।
Quarantine Leave—स्पर्शवर्जन छुट्टी।
Quantity—परिमाण, मात्रा, राशि, इयत्ता।
Quarter— मकान, चौथाई।
Quarterly—त्रैमासिक।
Quarterly reports—त्रैमासिक विवरण।
Quarterly statement—त्रैमासिक विवरण-पत्र।
Quarter master—क्वार्टर मास्टर।
Quarter master corporal—क्वार्टर मास्टर कारपोरल।
Quarter master sergeant—क्वार्टर मास्टर सर्जेन्ट।
Quarry charts—पत्थर की खान सम्बन्धी मानचित्र।
Quash—रद्द करना, खण्डन करना, लोप करना, निरर्थक करना, निष्प्रभाव करना।
Quasi judicial—अर्धन्यायिक।
Quasipermanent—अर्धस्थायी।
Query—पृष्टि।
Question—प्रश्न, प्रश्न करना।
Question before the House is—सभा के सामने प्रश्न यह है कि।
Questionnaire—प्रश्नावली।
Questionnaire for Inspection Office—निरीक्षक कार्यालय के लिये प्रश्नावली।
Question of policy—नीति का प्रश्न।
Question paper—प्रश्नपत्र।
Question, Supplementary—अनुपूरक प्रश्न।
Quick—क्षिप्र, शीघ्र, द्रुत, तेज, फुर्तीला।
Quinquennial—पंचवार्षिक, पंचसाला
Quit—त्यागना, छोड़ देना, भुगतान करना, भारमुक्त या अभियोगमुक्त करना, दोषमुक्त करना।
Quorum—कार्यवाह संख्या, कोरम।
Quotation—उद्धरण, अवतरण, भाव।
Quoted—उद्धृत, भाव दिया गया।

R

Rabi—रबी।
Rabies—जलातंक रोग।
Rack—कटघरा, टाँड।
Racks—रैक।
Radial gates—फिरकनी फाटक।
Radical Socialist Party—अतिवादी समाजवादी दल, रेडिकल सोशलिस्ट पार्टी।
Radio—रेडियो, आकाशवाणी।
Radio logical—तेजोद्गरण विज्ञानीय।
Radio logist—तेजोद्गरण वैज्ञानिक।
Radio talks—रेडियो वार्ता।
Radius—अर्धव्यास।
Rafter—कड़ी, धरणी।
Raid—छापा, धावा, छापा मारना, धावा करना।
Rail—रेल की पटरी।
Railhead—रेलशीर्ष।
Rail road co-ordination scheme-रेल सड़क सहयोग योजना, रेल सड़क मेल योजना।
Railing of horses—घोड़ोंका कठघरा।

Railway—रेलवे।
Railway administration—रेलवे प्रशासन ।
Railway approach road—रेल तक पहुँचने की सड़क।
Railway crossing—रेलवे चतुष्पथ, रेल का फाटक।
Railway feeder road—रेलवे पोषक सड़क।
Railway prosecution police—रेलवे रक्षा पुलिस।
Railway receipt—बिल्टी।
Railway runner—रेल हरकारा।
Rainfall—वर्षा।
Rainguage—जलमापक, वर्षामान, वर्षामापक।
Raise an alarm—हल्ला मचाना।
Rake—घास बटोरने का यंत्र।
Ramp—ढलुवाँ मार्ग।
Random—अव्यवस्था, उद्देश्यरहित, जहाँ-तहाँ का।
Random sampling—बिना व्यवस्था निदर्शन।
Range—क्षेत्र, दूरी, परास।
Range, Training Centre—शिक्षण केन्द्र का क्षेत्र।
Rank—श्रेणी, पदवीवर्ग, पद, पंक्ति, वर्गीकृत करना, क्रम से रखना, अत्यधिक, बहुत उपजाऊ, स्थूल, उग्रगन्ध, निरा अशिष्ट।
Rank and file—साधारण सैनिक वर्ग।
Rankers—सिपाहियों की श्रेणी।
Ransom—मोचनमूल्य, उद्धारमूल्य, छटौती।
Rapid—वेगयुक्त, शीघ्र, तीव्र, तेज, जवन।
Rate—भाव, दर, उपशुल्क।
Rateable—शुल्कार्ह, उपशुल्क योग्य।
Rate-analysis of road metal—सड़क के कंकड़ का दर-विश्लेषण।
Rate of exchange—विनिमय-दर।
Rate of pay—वेतन-दर।
Rates—दरें, भाव।
Rather—वस्तुतः, प्रीत्या, कामतः, अधिक चाव से, ज्यादा शौक से।
Ratify—सत्यापन करना, सत्यंकार करना।
Ration—अन्न व्यवस्था, उपयोगी पदार्थों की वितरण व्यवस्था, वितरण व्यवस्था।
Ration card—राशन कार्ड।
Raw—कच्चा, अनुभव-रहित।
Raw material—कच्चा माल।
Reach—पहुँच, गोचर, पहुँचना।
Re-action—प्रतिक्रिया।
Re-admission—पुनः प्रवेश।
Ready—उद्यत, उन्मुख, तैयार, सज्ज, सज्जीभूत, पटु।
Re-affirm—पुनः पुनः पुष्ट करना, पुनः प्रतिज्ञा करना।
Reafforestation—पुनः जंगल लगाना।
Real—वास्तविक, यथार्थ।
Real and personal property—यथार्थ तथा स्वयं उपार्जित संपत्ति।
Realization—वसूली, उगाही, अनुभव करना
Realization, Charitable—धर्मार्थ चन्दा।
Realizing—अनुभव करते हुए, वसूल करते हुए।
Reapprehend—फिर से पकड़ना।
Re-appropriation—पुनः पर्यादान।
Re-appropriation of funds—धन का पुनः पर्यादान।

Re-appropriation of saving—बचत का पुन: पर्यादान, बचत का पुनर्विनियोग।
Rearmament—पुन: शस्त्रीकरण।
Rearrange—फिर लगाना।
Reasonable—उचित, न्याय्य, उपपन्न, योग्य, युक्त।
Reassessment—पुन: कर निर्धारण।
Rebate—अवहार, कमी, छूट।
Rebuttal-प्रतिवादी के साक्ष्य के प्रतिवादी द्वारा साक्ष्य।
Recall from leave—छुट्टी से वापस बुलाना।
Recapture—फिर से पकड़ना, पुन: विजित करना।
Recast—पुन: ढलाई करना।
Receipt—प्राप्ति, आय, प्राप्तिपत्र, पहुँच, रसीद।
Receipt book—रसीद बही।
Receipt book for fees and fines-शुल्क तथा अर्थदंड की प्राप्ति पुस्तिका।
Receipt preservation and disposal of records—अभिलेखों की प्राप्ति, परिरक्षा और निर्वतन।
Receipt register keeper—प्राप्ति पंजीपाल।
Receipts (counter foil & outer-foil)—रसीदें (प्रतिपर्ण तथा बहिःपर्ण)।
Receive—प्राप्त करना, पाना, स्वागत करना।
Receiver—प्रतिग्राहक, रिसीवर।
Receive the Hon'ble Minister—माननीय मंत्री (सचिव) का स्वागत या सत्कार करना।
Recent—सद्यस्क, नया, हाल का।
Recent date—हाल की तारीख।
Receptacle—भाजन, आधान, परिधान।
Reception—स्वागत, सत्कार।
Recess—अवकाश, ताखा, आला।
Recess leave—विश्राम, छुट्टी।
Reciprocal arrangement—परस्पर व्यवस्था, परस्परानुवर्ती व्यवस्था।
Recital—आख्यान, लेख्य में उसके करने के कारणों का वर्णन।
Recipient—पानेवाला, आदाता।
Reciprocity—पारस्परिकता।
Reclamation—पुनरुद्धार।
Reclamation deptt—पुनरुद्धार विभाग।
Recognisable—पहचानने योग्य।
Recognise—मानना, पहिचानना, मान्यता प्रदान करना।
Recognised agent—मान्यता प्राप्त अभिकर्ता।
Recognised schools—मान्यताप्राप्त पाठशालायें, मान्यताप्राप्त स्कूल।
Recognition—अभिज्ञान, मान्यता, पहचान, स्वीकार, स्वीकृति, प्रतिपत्ति।
Recognizances—मुचलके।
Recollect—स्मरण करना।
Recollection—स्मरण।
Recommend—अभिस्ताव करना, सिफारिश करना।
Recommendation — अभिस्ताव, सिफारिश।
Recommendations—योग्यता की प्रशंसा करना।
Recommitment—पुनस्समर्पण, समिति में पुन: विचार के लिये प्रेषित करना।
Reconcile—मेल बिठाना, मैत्रीकरण, मिलाना, विप्रतिपत्ति-समाधान, असंगति को ठीक करना।

Remand case—प्रत्यावर्तित विवाद।
Remanded—हवालात को लौटाया हुआ,उच्च न्यायालय से नीचेवाले न्यायालय में लौटाया हुआ मुकदमा।
Remark—विशेष,विशेष कथन,अभ्युक्ति, कहना।
Remedy—उपाय, प्रतिविधि, उपचार।
Reminder—अनुस्मारक, स्मारकपत्र, स्मारक,स्मरणपत्रक (if card)।
Reminder card—स्मारक कार्ड।
Reminder form—अनुस्मारक फार्म।
Remission—छूट।
Remission of fine—अर्थदंड का छोड़ा जाना।
Remit—विप्रेषित करना, रुपया भेजना, हुंडी करना, छूट देना, छोड़ना, घटाना, क्षमा करना,माफ करना,लौटाना,फेरना।
Remittance-हुंडी द्वारा भेजा गया रुपया
Remittances—विप्रेषित धनराशियाँ, हुंडी किया हुआ रुपया।
Remittance transactions—विप्रेषण व्यवहार।
Remittance transfer receipts—हुंडी द्वारा संक्रम से प्राप्तियाँ।
Remnant—अवशेष।
Remodel—नया रूप देना।
Remounts—नये घोड़े।
Removal—हटाया जाना।
Remunerate—पारिश्रमिक देना।
Remuneration—पारिश्रमिक।
Remuneration of Registering Officers—रजिस्ट्री करनेवाले अधिकारियों का पारिश्रमिक।
Rendered necessary—आवश्यक कर दिया।
Rendering—उल्था,प्रतिपादन करना।
Renew—फिर से नया करना, पुनः चालू करना।
Renewal—नवीकरण, पुनः नया करना।
Renewal of lease—पट्टे का नवीकरण।
Renewal of portions of miles—मीलों के टुकड़ों का नवीकरण।
Renovation—पुनर्नवीकरण।
Rent—किराया, लगान।
Rental demands—लगान की माँग।
Rental value—मालियत जमाबन्दी।
Rental value of land—भूमि का लगानी मूल्य।
Rent assessment data—लगान निर्धारण दत्ता।
Rent-free quarter—बे किराये का निवासस्थान।
Rent-free residential buildings—निर्भाट मकान, निर्भाट आवासिक भवन।
Rent statement—भाटक विवरणपत्र, किराया विवरण।
Reorganization—पुनः संगठन, पुनर्व्यवस्था।
Repairs—प्रतिसंस्कार, मरम्मत।
Repatriate—स्वदेश पुनरागमन।
Repay—ऋण चुकाना,निस्तारण करना।
Repayable—परिशोध्य,भुगतान योग्य, लौटाने योग्य, चुकाने योग्य।
Repayment—चुकाना, भुगतान, परिशोधन।
Repayment order—परिशोधन आदेश
Repeal—प्रार्थना अस्वीकृति।
Repealed—विखंडित।
Repeal of Act-अधिनियम का विखंडन, अधिनियम का रद्द किया जाना।
Repeat—आवृत्ति करना, दोहराना, फिर से कहना।

Replace—प्रतिस्थापित करना, बदलना।
Replacement—प्रतिस्थापन ।
Replenished—भरपूर किया।
Replica—प्रतिरूप, प्रतिलिपि।
Replication—प्रत्युत्तर।
Replied to—उत्तर दिया गया।
Report—प्रतिवेदन,रपट,रिपोर्ट,विवरण।
Reporter-प्रतिवेदक,संवाददाता,रिपोर्टर, विवरण लेनेवाला।
Reporting allowance-प्रतिवेदन भत्ता
Report of occurrence—घटना की सूचना।
Report of Officer-अधिकारी की सूचना
Repose Angle of—विश्राम कोण।
Represent—आवेदन करना, निवेदन करना, प्रतिनिधित्व करना।
Representation—आवेदनपत्र,आवेदन, प्रतिनिधित्व।
Representative-अभिकर्त्ता, प्रतिनिधि।
Representative fraction—नमूना।
Reprimand—झिड़कना, निन्दा करना।
Reproduce—ठीक वैसा ही कह देना, फिर पैदा करना।
Republic—जनतंत्रीय।
Republication—पुनः प्रकाशन।
Republication of will-प्रथम इच्छा-पत्र को रद्द करके दूसरा इच्छापत्र लिखना।
Repudiation—प्रत्याख्यान, अस्वीकृत करना, त्यागना।
Repugnant—प्रतिकूल, अरुचिकर।
Reputation—ख्याति।
Reputed owner—प्रत्यक्ष स्वामी,भोग-कारणात् स्वामी।
Request—प्रार्थना,यांचा,याचना,विनति, प्रार्थना करना।
Required—अपेक्षित, माँगा गया, आज्ञा किया गया, चाहा गया।
Requiring—आदेश देते हुए, अपेक्षण करते हुए।
Requirement—आवश्यकता, अपेक्षण, माँग, आज्ञा (as of land)।
Requirement of Law—विधि अपेक्षित बातें।
Requisite—आवश्यक, अहार्य, आवश्यक वस्तु।
Requisition—अभियाचन,तलब करना, अपेक्षण।
Requisitioner—अपेक्षक।
Requisitioning authority—अपेक्षक अधिकारी।
Requisition slip—अपेक्षण पत्र।
Re-registration—पुनः पंजीयन।
Re-roofing—फिर से छत लगाना।
Rescind—अपखंडन करना, रद्द करना।
Rescuehome—रक्षागृह, तोरणगृह।
Rescue Officer—तारणाधिकारी।
Research—खोज,अनुसंधान, गवेषणा।
Research Assistant-गवेषणा सहायक, अनुसंधान सहायक।
Research Institute—गवेषणालय।
Research Officer—अन्वेषण अधिकारी।
Reserve—रक्षित, रिजर्व।
Reserve duty—रक्षित कार्य।
Reserve (funds)—रक्षित कोष।
Reservation—रक्षित करना, रक्षण, धृत करना।
Reservists—धृतदल, रक्षिगण।
Reserve Inspector—धृत निरीक्षक।
Reserve lines-जिलापुलिस, रक्षित केन्द्र।
Reservoir—जलाशय, सागर।
Re-settlement—फिर से बसाना।
Residence-आवास,निवास,निवासस्थान

Residence of students—विद्यार्थी निवास।
Resident engineer—आवासिक इंजीनियर।
Residential building—आवासिक भवन।
Residential quarter—निवासगृह।
Residue—परिशेषण।
Resign—पदत्याग करना, इस्तीफा देना, छोड़ देना।
Resignation—त्यागपत्र।
Resignation from public service-सार्वजनिक नौकरी से त्यागपत्र देना।
Resist—विरोध करना।
Resistance—प्रतिरोध,विरोध, प्रतिबन्ध
Res-judicata—प्राङ्न्याय।
Resolution—प्रस्ताव, संकल्प।
Resources—साधन,संसाधन,धन-दौलत
Respectfully—आदरपूर्वक।
Respectively—क्रमात्, क्रमशः।
Respondent—उत्तरवादी।
Respondent and Co-respondent—उत्तरवादी और सहोत्तरवादी।
Respondentia bond—पोतबन्धक लेखपत्र।
Responsible—उत्तरदायी।
Responsibility—उत्तरदायित्व।
Resting with—से अंत होनेवाले।
Restitution-वापसी,लौटाव,पुनःस्थापना
Restore—प्रतिदान करना, लौटाना, पुनःस्थापित करना, सुधारना।
Restrain from doing-करने से रोकना
Restraint by court—न्यायालय द्वारा रोक।
Rest house-- डाक बँगला।
Restrict—सीमित करना, रोकना,रोक लगाना, प्रतिबन्ध लगाना, प्रतिबन्धित करना।
Restriction—प्रतिबन्ध, रोक।
Restriction and control—प्रतिबंध और नियंत्रण।
Result—फल।
Resume-प्रत्यादान करना,पुनर्ग्रहण करना
Resumption—पुनर्ग्रहण, प्रत्यादान।
Resumption of practice—व्यवसाय का पुनरारंभ।
Resurvey—पुनःभूमापन,फिर से पड़ताल
Retabled—पुनः सारणीकृत।
Retailers—फुटकर बेचनवाले।
Retail prices—फुटकर भाव।
Retail selling price—फुटकर बिक्री भाव।
Retail supply—फुटकर सप्लाई।
Retain—अधिकार में रखना, रख रहना।
Retainers—आयुधपाल, सहचर।
Retard—रोकना।
Retardation—वेगक्षय।
Retention (of an employee)—नियोज्य का प्रतिधारण करना।
Retention of lieu—ग्रहणाधिकार का रखना।
Retire—निवृत्त होना, रिटायर होना।
Retired personnel—निवृत्ति प्राप्त मनुष्यवर्ग।
Retirement—निवृत्ति, पेंशन पा जाना।
Re-totalling of marks—प्राप्तांक का पुनः योग करना।
Retractors—वियोजक यंत्र।
Retransfer-पुनःसंक्रमण,पुनःस्थानान्तरण
Retrench—घटाना,कम करना,छाँटना।
Retrenchment—छँटनी।
Retrograde—पीछे को, उलटा,वक्र।

Retrospective—पश्चाद्दर्शी।
Retrospective effect—पूर्व प्रभाव।
Return-लौटाना, लाभ,वापसी,अदायगी।
Returning Officer—निर्वाचनाध्यक्ष।
Return of major and minor works—बड़े और छोटे निर्माणकार्यों का विवरण लेख।
Return requested—वापसी की प्रार्थना है।
Returns—विवरणपत्र, नकशे।
Revenue—राजस्व, माल।
Revenue accounts—राजस्व लेखा।
Revenue department-माल विभाग।
Revenue administration—माल प्रशासन।
Revenue administration report-माल विभाग की कार्यवाही।
Revenue defaulter—राजस्व का ऋणकर्ता।
Revenue-fee tenures—भू-राजस्व मुक्त जोतें।
Revenue jurisdiction—राजस्व अधिकार क्षेत्र।
Revenue paying mahals—राजस्व देनवाले महाल।
Revenue reserve fund—राजस्व सुरक्षित कोष।
Revenue stamp—माल के स्टाम्प।
Revered—सम्मानित, नम्य।
Reverse—उल्टा, विपरीत।
Reversion—प्रत्यावर्तन, लौटना।
Reversioner—उत्तराधिकारी।
Reversioner, Release by Hindu-हिन्दू उत्तरभोगी द्वारा मोचन या त्याग।
Reversion to landlord—भूस्वामी को लौटाना।
Revert—वापस आना या भेजना।
Revetted-जोड़ा हुआ, रिपीट किया हुआ।
Review—सारलेख, सिंहावलोकन,पुनरावलोकन।
Review application—पुनरवलोकन प्रार्थना पत्र।
Review of judgement—निर्णय का पुनर्निरीक्षण।
Revise-पुनर्विचार करना, संशोधन करना
Revised—संशोधित, दोहराया।
Revised estimates—संशोधित आगणन, संशोधित तखमीन।
Revised figures—संशोधित आंकड़े।
Revised manual—संशोधित सारसंग्रह।
Revised scale—संशोधित वेतनक्रम।
Revising Boards—संशोधक बोर्ड।
Revising Officer—संशोधन अधिकारी
Revision—दोहराव, संशोधन, निगरानी
Revision of rent—भाटक संशोधन, लगान संशोधन।
Revisional jurisdiction—निगरानी का न्यायाधिकार।
Revision of scale—वेतनक्रम का संशोधन।
Revision of sentence sheet—दंडफलक का संशोधन।
Revival—पुनर्जीवन।
Revive—पुनर्जीवित करना।
Revoke—निरस्त करना।
Revolver holster—रिवाल्वर का खोल।
Revolvers—रिवाल्वर।
Reward—पारितोषिक, इनाम।
Rewards to Kanungos—कानूनगो का पारितोषिक।

Rewiring—फिर से तार लगाना।
Re-written—पुनः लिखित।
Rex—राजा।
Rhyhtmic exercises—समयक्रमबद्ध व्यायाम।
Rib—पसली।
Rib of an arch—डाट या महराब का पार्श्व।
Rice paper—टाइप कागज, राइस पेपर।
Rifles—राइफल।
Right—ठीक, उचित, दाहिना।
Right of pre-emption—पूर्वक्रयाधिकार।
Right reverend—परम पूज्य।
Rights—अधिकार, स्वत्व।
Rights, Instruments creating—स्वत्व पैदा करनेवाले करणपत्र।
Rigidity—दृढ़ता, कड़ापन, अनम्यता।
Rinderpest—बेदन, पौंकना।
Ringworm—दान, दद्रु।
Riot—दंगा।
Riot sufferers—दंगा-पीड़ित।
Risk—जोखिम, जोखों, डर।
Rival tenants—प्रतिद्वन्द्वी कृषक।
Riverine traffic—नद्य यातायात।
River conservancy—नदी रक्षण, नदी की सफाई।
River police—नदी पुलिस।
Road—सड़क।
Road accidents—सड़क दुर्घटना।
Road permits—सड़क का आज्ञापत्र, सड़क का परमिट।
Road roller—सड़क कूटने का इंजन।
Road users—सड़क प्रयोक्ता, सड़क पर चलनेवाले।
Roadways—यानमार्ग, रोडवेज।
Robbery—बटमारी।
Roll—वर्ति।
Roll call—उपस्थिति की सूचना।
Rolled steel—पीड़ित इस्पात।
Roller bandage—पट्टी लपेट बेलन।
Roman script—रोमन लिपि।
Room—कमरा, आगार, कोष्ठ।
Root—जड़, मूल।
Rosaries—मालायें।
Roster—पारी पारी से कार्य करनेवालों की सूची।
Rosters of duties—ड्यूटी की पंजिका।
Rot—गलना, सड़ना।
Rotten—दूषित, निःसत्व, सड़ा हुआ, गला हुआ।
Rough—खुरदुरा, असम, अपरिष्कृत, कच्चा, भद्दा।
Rough estimate of costs—लागत का मोटा तखमीना।
Roughly—मोटे तौर पर, स्थूलतः, बेढंगे तरीके से, अशिष्टता से।
Round—गोल चारों ओर।
Round about expression—घुमा फिराकर कहना।
Round worms—मलसर्प।
Route—मार्ग, रास्ता।
Routine—नित्यक्रम, दिनचर्य्या।
Routine action—सामान्य कार्रवाई।
Routine clerk—सामान्य लेखक।
Routine note—सामान्य टिप्पणी।
Royal Sanitary Institute—राजकीय स्वच्छता संस्था।
Royalty—राजस्व, ग्रंथकर्ता का राजस्व।
Roznamcha-navis—दिनपंजी लेखक
Rubber cap—रबर की टोपी।

Rubber catheters—रबर की मूत्र-शलाका।
Rub—नियम, शासन, शासन करना।
Rule of proportion—समानुपात नियम।
Ruling—व्यवस्था, न्याय, दृष्टान्त, न्याय व्यवस्था।
Ru'e; Fundamental—मौलिक नियम,।
Rules Instructor—नियम शिक्षक।
Rules-of court—न्यायालय के नियम।
Rules of Medical attendance on government servants—सरकारी कर्मचारीगण के चिकित्सा सम्बन्धी नियम।
Rules ,Subsidiary—सहायक नियम।
Rules were followed more in their breach than in observance—नियमों का अनुसरण पालन करने से अधिक तोड़ने में किया गया।
Runner—हरकारा, धावक।
Running bill—चलता बिल।
Running statement—चलता विवरण।
Run its course—अपना समय लेना।
Run-off—भाग जाना, ढाल।
Rupture—फटाव, फट जाना।
Rural—ग्राम्य, देहाती।
Rural areas—ग्रामीण क्षेत्र।
Rural Development Association—ग्राम सुधार संघ।
Rural Development Department—ग्राम सुधार विभाग।
Rural Development Dispensary—ग्राम सुधार औषधालय।
Rural Development Fixed Allopathic Dispensary—ग्राम-सुधार के अंग्रेजी दवाखाने, ग्राम सुधार के स्थिर एलोपैथिक औषधालय।
Rural Development Medicine Chest—ग्रामसुधार की दवाइयों का बक्सा।
Rural Development Libraries—ग्रामसुधार पुस्तकालय।
Rural dispensary—ग्राम औषधालय।
Rural libraries—ग्राम पुस्तकालय।
Rural outposts —ग्राम्य चौकियाँ।
Rural Travelling Dispensary—ग्राम चल औषधालय।
Rust—जंग, मोर्चा, मंडूर।
Rusty—जंग लगा हुआ, मोर्चा लगा हुआ।
Rusticate—निस्सादित करना।
Rustication—निस्सादन।

S

Sack—थैला, बोरा।
Sadar Quanungo—सदर कानूनगो
Saddle—काठी, पर्याण।
Saddlery—जीनसाजी, जीनसंबंधी।
Saddlery allowance—काठीभत्ता।
Safe—सुरक्षित, अरिष्ट, अभय, तिजोरी।
Safe custody—सुरक्षित संरक्षण।
Safeguard—बचाव, एहतियात, रक्षा करना।
Safety factor—अरिष्ट गुणक।
Safety pin—सेफ्टी पिन।
Sag—झुकाव, झुकन, झुकना।
Salary—वेतन।
Sale—बिक्री, विक्रय।
Saleable—विक्रेय, बिक्री योग्य, बेचने योग्य, बिकने योग्य।
Saleable forms—विक्रय योग्य रूपपत्र।

Sale agreement for—विक्रय के लिए इकरारनामा।
Sale certificate—विक्रय प्रमाणपत्र।
Sale Deed—विक्रय-पत्र, बैनामा।
Sale Proposal—बिक्री का प्रस्ताव।
Sales—बिक्री, विक्रय।
Salient—मुख्य, स्पष्ट, व्यक्त, उभरा हुआ, निकला हुआ।
Saline irrigator—लवण जलप्रवाहक।
Saloon—सैलून गाड़ी, बैठक, दीवानखाना।
Salvage—तारण।
Same—वही, अभिन्न, अनन्य।
Sample—न्यादर्श, नमूना, बानगी।
Sampling—निदर्शन।
Sanatorium—स्वास्थ्य-संस्थान, स्वास्थ्यशाला, क्षयरोगि-स्वास्थ्यशाला।
Sanction—स्वीकृति, अनुज्ञा, मंजूरी, स्वीकृत करना, मंजूर करना।
Sanctioned cadre—अनुज्ञात मूल-रचना।
Sanctioned estimate—स्वीकृत तखमीना, स्वीकृत आगणन।
Sanctioned rent statement—स्वीकृत भाटक विवरणपत्र।
Sanction to estimate—तखमीने की स्वीकृति, तखमीने की मंजूरी।
Sanction to prosecute—मुकदमा या अभियोग चलाने की स्वीकृति।
Sanctuary—पवित्र स्थान, शरणस्थान।
Sanitary—सफाई संबंधी, आरोग्य विषयक, आरोग्यकर, आरोग्यरक्षक।
Sanitary arrangement—सफाई की व्यवस्था।
Sanitary Inspector—स्वास्थ्य निरीक्षक।
Sanitary Inspector, Pilgrim route—तीर्थ मार्गों के स्वच्छता निरीक्षक।
Sanitation—आरोग्यरक्षण, आरोग्यरक्षा, सफाई, स्वच्छता, आरोग्य व्यवस्था।
Sapurdari rights—सपुर्दारी अधिकार।
Sash—किवाड़ के शीशे का चौखटा।
Sash and banner—मान चिह्न।
Satchel—खलीता।
Satisfaction—तुष्टि, तृप्ति, संतोष, भुगतान, निस्तार, हानिपूरण।
Satisfactorily—संतोषजनक रूप से।
Satisfactory—संतोषकर, संतोषजनक।
Saturated aqueous solution—संतृप्त जलीय घोल।
Saving—बचत।
Savings Bank—सेविंग बैंक।
Sawai—सवाई।
Sayar—सायर।
Sayar and malikana dues—सायर और जमींदार संबंधी मुतालबे।
Scabbard—मियान।
Scabies—खुजली, खाज।
Scaffold—फाँसी का तख्ता।
Scaffolding—पाड़, मचान, बाँस, बल्ली।
Scale—क्रम, पैमाना, सीढ़ी, सोपान, तराजू का पलड़ा, सीढ़ी पर लगातार चढ़ना, नापना।
Scale of fees—फीस की शरह।
Scale of Pay—वेतनक्रम।
Scale prescribed—निर्धारित वेतनक्रम, विहित वेतनक्रम।
Scalpel—शस्त्रिका।
Scantling—छोटा टुकड़ा, काटा हुआ छोटा टुकड़ा।
Scanty rain—अल्पवृष्टि।

Scarbotic—खुजीला, खारिशी।
Scarcity—विरलता, दुर्लभता, कमी, दुर्भिक्ष, दुष्काल, प्रयाम।
Scarify—दाँतेदार यंत्र से सड़क खोदना।
Scattered thunder showers—जहाँ-तहाँ कड़क के साथ बूंदें पड़ना।
Scene of outbreaks—रोग फैलने का स्थल।
Schedule—अनुसूची।
Scheduled—परिगणित।
Schedule of new demands—नई मांगों की अनुसूची।
Schedule of rates—दर अनुसूची।
Scheme—योजना।
Scholarships—छात्रवृत्ति, वजीफा।
Scholars' register—छात्र रजिस्टर।
School clerk—स्कूल क्लर्क, पाठशाला लेखक।
Scope—विस्तार, क्षेत्र, विषय, अभिप्राय, उद्देश्य, गुंजायश।
Scienee—विज्ञान।
Scientific appliances-वैज्ञानिक यंत्र।
Scientific efficiency—वैज्ञानिक प्रगुणता।
Scientific Research committee-वज्ञानिक खोज समिति।
Scored out—काट दिया गया।
Scouring—जल वेग से मिट्टी की कटाई।
Scout—स्काउट।
Scraping—अपोद्घर्षण, छीलना, खुरचना।
Scraps—छीलना,खुरचना,खुरचा,रगड़।
Screen—चित्रपट, परदा, यवनिका।
Screening—क्षरश्मि द्वारा प्रतिबिम्ब लेना।
Screening room—चित्रग्रहण कोष्ठ।
Script—लिपि, लिखत।
Scrutiny—सूक्ष्मपरीक्षा,सुपरीक्षा,जांच।
Scrutiny of records—अभिलेखों की सूक्ष्म परीक्षा, अभिलेखों की सुपरीक्षा, अभिलेख-परिनिरीक्षण, कागजात की छान-बीन।
Scullery—रसोई के बर्तनों का स्थान, कूड़ा डालने का स्थान।
Sculpture—मूर्तिकर्म, रूपकर्म, मूर्ति-कला, संगतराशी, कन्दाकारी।
Scum—मैल जो ऊपर उठ आवे।
Seal—मुद्रा, नाममुद्रा, मुहर।
Sealed—मुहरबन्द।
Sealed samples—मुहरबन्द नमूने।
Search—तलाश, खोज।
Search and Grant of copies—तलाश और प्रतिलिपियों की स्वीकृति।
Searching posts—तलाशी की चौकियाँ
Seasonal—आर्तव, मौसमी।
Season conditions—मौसम की हालत या अवस्था।
Seasonal consumers—मौसमी उपभोक्ता।
Seasonal fever—फसली बुखार, ऋतुज्वर।
Seasonal load—मौसमी भार।
Seat of outbreak—शुरू होने का स्थान।
Secant—छेदिका, छदनी।
Seclusion—एकान्त, अलहदगी, अलग किया जाना।
Second Agricultural Engineer—द्वितीय कृषि इंजीनियर।
Second appeal—द्वितीय अपील।
Secondary education—माध्यमिक शिक्षा।

Set aside—खारिज करना।
Set aside an order—आज्ञा को रद्द करना।
Set at liberty—मुक्त कर देना, छोड देना, रिहा करना।
Set off—घटोतरी, मिनहाई, मुजराई, रकम मुजराई, दीवार का चीरा, कसका।
Settlement—भू-व्यवस्था, बन्दोबस्त।
Settlement Manual—भूव्यवस्था सार संग्रह।
Settler—उपनिवेशी, बसनेवाला।
Settling of cultivators—कृषकों का बसाना।
Several—अनेक, कई।
Severalty—सम्पत्ति का अलग पूर्णाधिकार।
Severe—कड़ा, तीक्ष्ण।
Sewage—मोरी का गंदा पानी, मोरी की गंदगी।
Sewage disposal—कीच-कच्चर का हटाया जाना।
Sewer—मोरी, गंदा नाला।
Sex—स्त्री पुरुष भेद, काम भावना।
Sex-perversity-अप्राकृतिक कामवासना
Sextant—षष्ठक।
Sexual—काम-विषयक, मैथुन-विषयक।
Shade—रंगवान, रंगमान।
Shaft—दंड, धुरा, खुरंग।
Shallow—कम गहरा, उथला, छिछला, हलका, ओछा, ऊपरी।
Shank—डंडी, दस्ता, बारंग।
Shape—आकार।
Share—भाग, अंश, हिस्सा बांटना, हिस्सा करना, भागी होना, शरीक होना।
Share warrant—शेयर वारन्ट, अंशाधिपत्र।
Sharp curve—तंग मोड़।
Shear—पिचक, पिचकना।
She-buffaloes—भैंसें।
Sheet—चादर, फलक।
Shelf—आलमारी, तख्ता।
Shelter—छाया, आश्रय, शरण, आश्रय देना।
Shoot—अंकुर, कोंपल, नई टहनी, उगना, अंकुरित होना, दौड़ना, गोली या तीर आदि से मारना।
Shoot at sight—देखते ही गोली मारना।
Shia sub-committee—शिया उपसमिति।
Shift—पारी, हट जाना।
Shingle—छोटी-छोटी कंकड़ी, मकान पाटने का कड़ी का तख्ता।
Shipping orders—जहाज से माल भेजने की आज्ञा।
Shirt—कमीज।
Shock—चोट, सदमा, धक्का।
Shoeing—तली से ढकना, जूते पहिनाना, नाल लगाना।
Shortage—अल्पता, कमी, तोड़ा।
Short draw—थोड़ा थोड़ा करके निकालना।
Shorthand—आशुलिपि, शार्टहैंड।
Shorts—घुटन्ना, नेकर।
Short-term—अल्पावधि, अल्पकालिक।
Short-term loan—अल्पकालिक ऋण।
Short-term settlement—अल्पकालीन भू-व्यवस्था।
Short title—संक्षिप्त नाम।
Shot—मार, फेंक, गोली या छर्रा, गोली मारने की क्रिया।
Shoulders badge—स्कन्ध बिल्ला, कंधे का बिल्ला।

Show—दिखाना, प्रदर्शन, दिखावा, बहाना, तमाशा।
Shutters—शटर, झिलमिल, किवाड़।
Siaha—सियाहा।
Sick attendant—रोगियों का परिचर।
Sick leave—रुग्णता की छुट्टी, बीमारी की छुट्टी।
Side headings—पार्श्वशीर्ष।
Side racks—बगली रैक।
Siding, such as in railway sidings—पार्श्व, ठोकर।
Sieve—छलनी, चलनी, छानना, सूक्ष्म परीक्षा करना।
Sieve-test—छलनी परीक्षा।
Sight rule—शिस्त, साइट रूल।
Sights—बन्दूक में निशाना साधने की।
Sign—चिह्न, निशान, हस्ताक्षर करना।
Signature—हस्ताक्षर।
Sign-board—परिचय-पट्ट।
Signet—राजमुद्रा।
Significant—सार्थ, अर्थपूर्ण, गुर्वर्थक, महत्त्वपूर्ण, सूचक।
Signification—व्यक्त करना, बताना, अर्थ, तात्पर्य।
Silt—मिट्टी, रेत, कीचड़, चहला, रेत या मिट्टी जिसे पानी ने छोड़ दिया हो।
Silver chevrons—रुपहले बिल्ले।
Similar—सम, समान, सदृश, सजातीय।
Simple—सरल, सीधा-सादा, सादा।
Simple fee—साधारण शुल्क।
Simple imprisonment—साधारण कारावास, सादी सजा।
Simple trust—साधारण निक्षेप, सादा अमानत।
Simplification—सरल करना।
Simultaneous—एककालिक, एक साथ के, यौगपादिक।
Simultaneously—एक साथ, उसी समय, साथ साथ।
Since—यतः, क्योंकि, चूंकि, उस समय से, बाद में।
Sincerely—सच्चाई से।
Sine die—अनियतकाल पर्यन्त, अनियत तिथि पर्यन्त, अनिश्चित रूप से।
Single lock—इकहरा ताला।
Single transferable vote—एकक संक्राम्यमत, योग्य मत।
Sink—डूबना, डुबाना, चौबच्चा, निर्गम पात्र, मलकूप, नाली, बदरी।
Sinking funds—ऋण परिशोध कोष।
Sir—श्रीमान्।
Sire—प्रजनक।
Sir-holder—सीरदार।
Sir-malikan—स्वामी की सीर, सीर मालिकान।
Sister—महोपचारिका।
Sister-in-charge—कार्याधिकृता महोपचारिका।
Sister's duty room—महोपचारिका कार्यस्थान।
Sister tutor—उपचार शिक्षिका।
Site—आस्थान।
Site plan—आस्थान मानचित्र।
Sitting of the Council—परिषद् की बैठक।
Situated—स्थित।
Situation—स्थिति, स्थान, पद, दिशा।
Six weeks prior notice—छः सप्ताह पूर्व सूचना।
Sizarship—फीसमाफी, साहजरी।
Skeleton form—खाका, ढाँचा, ढाँचे के रूप में।

Sketch—परिलेख,खाका, नकशा।
Skewness—विषमता, वैषम्य।
Skid—गाड़ी का फिसलकर चलना।
Skill—कौशल, कुशलता, प्रवीणता।
Skilled labour—प्रवीण श्रम।
Skin—चमड़ी, खाल, लोहे की ढली वस्तुओं पर लोहे की सख्त तह।
Skin department—चर्मरोग विभाग।
Skirting—नीचे का किनारा।
Sky light—रोशनदान।
Slab—पत्थर की शिला।
Slack—शिथिल, मन्द, ढीला होना, अकारता का समय, कोयले का चूरा।
Slate—स्लेट।
Slaughter-house—वधशाला, कसाईखाना, बूचड़खाना, कस्साबा।
Slide—फिसलना।
Sliding scale—चढ़ता-उतरता क्रम, सूपक्रम।
Slight to moderate defect—थोड़ी से लेकर मध्यम कमी तक।
Sling—झोल, गलपट्टी।
Slip—खिसकना, रपटना, पर्ची।
Slip book—पर्चीपुस्त, पर्चीबही।
Slipper—ढाल।
Slippers—स्लीपर।
Slip shod—लापरवाह, चलता।
Slogan—नारा।
Slope—ढाल।
Slow—मन्द, आलसी, सुस्त, मन्दता, मन्दता से, गति मन्द करना।
Sluice gates—पानी के फाटक।
Small Causes Court—लघुवाद न्यायालय, अदालत खफीफा।
Small millets—ज्वार, बाजरा।
Small saving scheme—छोटी बचत योजना।
Smear preparations-अंज रचनाएँ, थप
Smears of blood—रक्तांज।
Smooth—चिकना।
Smuggle—चोरी से ले जाना, चौर्यानयन, चौर्यपणन।
Smuggling—चौर्यपणन, चौर्यनयन, महसूल चोरी, छिपाकर महसूली माल ले जाना।
Smuggling of goods with the connivance of the octroi staff—चुंगीवालों की आँखबची से माल को चोरी से लाना।
Snow—बरफ, हिम।
Soaring prices—ऊँचे चढ़े भाव।
Social and economic progress—सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति।
Socialist party—समाजवादी दल।
Social service—समाज सेवा।
Socket—कूप।
Sohawal—सोहावल।
Soil—मिट्टी, भूमि, दूषित करना, मैला करना।
Soil classification—भूमि वर्गीकरण।
Soil classifier—भूमि वर्गीकारक।
Soils—मिट्टियों के प्रकार, किस्म जमीन।
Sole executor—एकमात्र निर्वर्तक।
Solemn affirmation—गंभीर प्रतिज्ञान, गंभीर सत्योक्ति।
Solicit—प्रार्थना करना, विनती करना।
Solicitor—वकील।
Solid— ठोस।
Soiling coat—तली की तह, तली की कोटिंग।
Solitary cell—तनहाई की कोठरी,

एकत्र कोष्ठ।
Solitary confinement—तनहाई, एकत्र निरोध।
Solution—घोल, सुलझान।
Solve—हल करना, सुलझाना।
Sort—छाँटना, वर्गों में अलग करना, भेद, प्रकार।
Sorting—छाँटना।
Source—मूलस्थान, उद्भव, उद्गम, प्रभव, निकास।
Sowars—आरोही, सवार।
Space—दूरी, अंतर, बीच, आकाश, रिताई, गुंजाइश, स्थान, जगह।
Span—मेहराब की चौड़ाई, बित्ता।
Spare—फालतू, अतिरिक्त।
Spare copy—अतिरिक्त प्रतिलिपि।
Spare parts—अतिरिक्त अवयव या पुंज।
Sparingly—किफायत से भी कम।
Spears and Spearheads—बल्लम और भाले।
Special audit—विशेष लेखा परीक्षा, विशेष गणन परीक्षा।
Special armed constabulary—विशेष सशस्त्र रक्षि वर्ग।
Special branch—विशेष शाखा, स्पेशल ब्रांच।
Specialist—विशेषज्ञ।
Special car park-pass—मोटर खड़ी करने का विशेष पास।
Special Constables—विशेष सिपाही, विशेष रक्षी।
Special disability leave—असमर्थता की विशेष छुट्टी।
Special enquiries—विशेष जांच।
Specialist branch—विशेष की शाखा।
Special manager—विशेष प्रबन्धक।
Special medical treatment—विशिष्ट काय चिकित्सा।
Special messenger—विशेष दूत, विशष संदेशहर।
Special reason—विशेष कारण।
Special resolution—विशेष प्रस्ताव।
Special trains—स्पेशल ट्रेन।
Special trust—विशेष निक्षेप।
Special ward—विशेष कक्ष।
Species—जाति, वर्ग, प्रकार।
Specific—निश्चित, नियत, विशिष्ट, विशेष, निर्दिष्ट।
Specific area—विशिष्ट क्षेत्र।
Specification—विशेष लक्षण, विशेष वर्णन, ब्योरा।
Specific device—विशिष्ट युक्ति।
Specific legacy—विशिष्ट पत्ररिक्थ, विशिष्ट इच्छापत्र द्वारा प्रदान।
Specific performance—निर्दिष्ट प्रतिज्ञापूर्ति, विशेष कृति, तामील खास।
Specific privilege—विशिष्ट विशेषाधिकार।
Specific relief—विशेष दादरसी विधान।
Specified below—नीचे दिया गया, निम्ननिर्दिष्ट।
Specific performance—विशिष्ट अनुष्ठान।
Specify—निर्दिष्ट करना।
Speculative reference—अनुमानित अभ्युद्देश, कयासी हवाला।
Speech—भाषण, व्याख्यान।
Speed—चाल, रफ्तार, गति, तेजी।
Spelling—हिज्जे, अक्षरौटी, अक्षरविन्यास।

Sphere—गोला।
Sphere—मंडल, अविकारक्षेत्र।
Spike—काँटा, कील, मेख, तेज नोक।
Spill-away—जल निर्गमन मार्ग।
Spiral—पेचदार, कुन्तल।
Spirit—प्रासव, स्प्रिट।
Spirit lamp—प्रासव दीप, स्प्रिट लैम्प।
Spiritous preparations—मद्यात्मक रचनाएँ, मद्यसार द्वारा बनी हुई वस्तुएँ।
Spirochaetosis—सर्पिल, केशाररोग।
Spittoons—थूकदान, पीकदान।
Splash—छींटा डालना, छपछप करना।
Spleen—प्लीहा, तिल्ली।
Spleenic tissue—प्लीहा तंतु।
Splint—अस्थि संधान पट्टी, खपच्ची, काष्ठ पट्ट।
Splinter—छिपटी, खपाची, टुकड़ा, किरच।
Sponsor—धर्मपिता, धर्ममाता।
Spoon diet—चम्मच भर खूराक।
Sports—आखेट, खेल।
Spot—चिह्न, स्थान, कलंक, धब्बा, चित्ती, तिल, एक प्रकार का कबूतर, चिह्नित करना, धब्बा लगाना।
Spray—समुद्र का फेन, पानी की फुआर, टहनी, संटी।
Spread—फैलना।
Spring—चश्मा, स्रोत, सोता।
Spring level—स्रोत स्तर।
Sprinkle—छिड़कना, बखेरना, छींटा देना।
Squr—एड़, ठोकर, काँटा।
Spurs—काँटे।
Spuad—दस्ता, टुकड़ी।
Squad Commander—स्क्वाडकमांडर।
Squared paper—वर्गांकित पत्र।
Square roots—वर्गमूल।
Squat—पलथी मारकर बैठना, किसी भूमि पर बिना अधिकार बस जाना।
Squeeze—निचोड़ना, दबाव, निचोड़।
Stab—छुरा मारना।
Stability—स्थिरता।
Stabilization—स्थिरीकरण।
Stabilization fund—स्थिरीकरण कोष।
Stabilize—स्थिर करना।
Stable—अस्तबल, गोष्ठ, स्थायी, ठहराऊ।
Stable gear—सामान अस्तबल।
Stack—गरी, टाल, ढेर, अम्बार, चिमनी।
Staff—कर्मचारीवर्ग, अमला।
Staff Sergeant—स्टाफ सार्जेन्ट।
Stage—दर्जा, अवस्था, मंच, मचान, चबूतरा।
Stages of the Bill—विधेयक की अवस्थायें।
Staggering—विस्मयकारी, आगे-पीछे करना, डगमगाना।
Stains—रंजन द्रव्य, राग, धब्बे।
Staircase—जीना, सीढ़ी।
Stallion—घुड़साँड़।
Stamp defalcations—स्टाम्प व्यवहरण, स्टाम्प का गबन।
Stamp Duty—मुद्रांक शुल्क, स्टाम्प शुल्क।
Stamped—मुहर लगी हुई।
Stamp vendors—स्टाम्प विक्रेता।
Stand—अड्डा, स्टैन्ड।
Standard—स्तर, प्रमाप, दर्जा, प्रामाणिक।
Standard design—प्रामाणिक विवरण, प्रामाणिक नकशा।
Standard of saleable forms—विक्रय योग्य रूप-पत्रों का प्रमाप।

Standard of work—काम का स्तर।
Standard rent—प्रामाणिक भाटक।
Standing counsel—स्थायी वकील।
Standing Order—स्थायी आज्ञा, स्थायी आदेश।
Staple crops—मुख्य फसल।
Starred question—तारांकित प्रश्न।
State—राज्य, दशा, स्थिति, अवस्था, हालत, कहना, बतलाना।
State hospital—राजकीय अस्पताल।
State Medical Faculty—राजकीय चिकित्सा विज्ञानशाला।
Statement—विवरण, वक्तव्य, वर्णन, कथन, बयान, विवरणपत्र, प्रतिज्ञार्थ।
Statement of claim—वादपत्र में वादी का बयान।
Statement of expenditure—व्यय-विवरण, व्ययविवरणपत्र।
Statement of holdings and rentals—लगान, जोत व लगान के प्रकार का ब्योरा।
State Tube-well Development Officer–राज्य नलकूप वर्धन अधिकारी
Stationary—स्थिर।
Stationery—लेखन-सामग्री, कागज, कलम-दवात।
Stationery and printing—लेखन-सामग्री तथा मुद्रण।
Stationed—संस्थापित।
Station Officer–स्टेशन आफिसर, बड़े दारोगा, बड़े थानेदार।
Statistician—अंकशास्त्री,अंकशास्त्रज्ञ, संख्या-शास्त्रज्ञ।
Statistical tables—संख्या शास्त्रीय सारणियाँ।
Statistics-अंकशास्त्र,संख्याशास्त्र, आँकड़े
Statue—प्रतिमा, मूर्ति।
Status—प्रास्थिति, पदवी, पद, रुतबा, हैसियत।
Status quo—यथास्ति, यथापूर्व, ज्यों का त्यों, पूर्व दशा।
Statute—व्यवस्था, कानून, व्यवस्थान।
Statutes—लेखबद्ध कानून,व्यवस्थापन।
Statutory—वैधानिक, कानूनी।
Statutory declaration—वैधिककथन
Statutory responsibility—कानूनी जिम्मेदारी, वैधानिक उत्तरदायित्व।
Stave—पाये, पटरी।
Stay—स्थगन।
Stay of suit—वाद स्थगन।
Steady—स्थिर, दृढ़, निश्चल, सतत।
Steady decline in income—आय में लगातार कमी।
Steady trend—स्थिर प्रवृत्ति।
Steam—भाप, वाष्प।
Stem—तना, डंठल, जहाज का सिरा या आगा।
Stencil—निकृन्त।
Stencilling—स्टेन्सिल करना।
Stencilled—कटा हुआ।
Steno-cum asst-clerk—संकेतलिपिक तथा सहायक क्लर्क, संकेत लिपिक तथा सहायक लेखक।
Stenographer—आशुलिपिक, शीघ्र-लिपिक, स्टैनो।
Step—पद, पदक्षेप, कदम।
Step-mother—सौतेली माँ, विमाता।
Steps—सीढ़ी के डंडे, जीने की सीढ़ियाँ।
Step up—स्थापित करना,आरंभ करना।
Stereotyped—न बदलनेवाला, एक ही ढर्रे का, पुराने ढंग का।
Sterile—जीवाणु-रहित, अजीवाणुक,

हतजीवाणु, वधिया, बाँझ, कीटाणु-रहित।
Sterilized—जीवाणु-रहित, हतजीवाणु।
Sterilizer room—जीवाणुहा कोष्ठ।
Sterilizers-जीवाणुहा,जीवाणुनाशकयंत्र
Sterling pension—पौंड पेंशन।
Stet—प्रूफशुद्धि का एक संकेत।
Stethoscope—उरवीक्ष।
Steward—खानसामा,कारिन्दा,दीवान, गुमाश्ता।
Stimulus—प्रोत्साहन, प्रोत्साहन।
Stipend—छात्रवेतन, वेतन।
Stipendiary—वैतनिक, वेतनी।
Stipendiary students—छात्रवृत्ति पानेवाले विद्यार्थी।
Stipulated terms—ठहरी हुई शर्तें।
Stipulation—प्रतिबन्ध, करार, शर्त, समय, संविद्।
Stirrup—रकाब।
Stock—सामग्री, सामान, अंशपूंजी, राष्ट्र-ऋण, स्कन्ध, सरकारी हुण्डी, स्टाक।
Stock-broker—सट्टे का दलाल, सरकारी हुंडियों का दलाल।
Stock-exchange—स्कन्ध चत्वर,स्कन्ध विपणि, स्टाक एक्सचेंज।
Stock-taking—सामान की जाँच, सामान गिनती, सामान की या माल की सूची।
Stomach and its contents—आमाशय तथा अंतर्द्रव्य।
Stomach tube—आमाशय नलिका।
Stool—पीठिका, स्टूल।
Stool report book—पुरीष विवरण पुस्तक।
Stoppage—ठहरना, विराम, रुकना।
Stopping of increment—वेतन-वृद्धि को रोक देना।
Stop watches—स्टाप घड़ियाँ।
Storage—भांडागार, भाटक संग्रह, माल भरना, संचयन।
Storeman—भांडारिक।
Stores purchase department—भाण्डार वस्तु क्रय विभाग।
Storm—तूफान, आँधी।
Straggle—भटकते फिरना।
Straggler-त्यक्तपथ,भटकते फिरनेवाला।
Straight—सरल, सीधा, ऋजु।
Strain—आतान।
Strange—अद्‍भुत, अनोखा, विचित्र, अपरिचित।
Strangles—कंठ सम्पीड।
Strap—तस्मा, सिकड़ियों के जोड़ने की लोहे की पट्टिका।
Stratum—तह, स्तर।
Stream gauging observation—प्रवाहमान ईक्षण।
Strength—शक्ति, बल।
Stress—प्रत्यास्थ बल।
Stretch—फैलाव।
Stretcher—वितत डोली, अवस्तार, स्ट्रेचर।
Strict—नियमनिष्ठ, अशिथिल, सीधा और पतला।
Stricture—निन्दा, अधिक्षेप, आकुंचन।
String—डोरी, रस्सी।
Stripes—बिल्ला।
Strips—काड़े, धारियाँ।
Strong room—दृढ़कोष्ठ।
Structural difficulties-भवननिर्माण सम्बन्धी कठिनाइयाँ।
Strut—रोक, दबने से रोकनेवाला स्तम्भ।
Stud—दोनों ओर से पेंच कसा जानेवाला कावला।

Stud bucks—बीज छग।
Stud-bulls—सरकारी साँड़।
Student Engineer—विद्यार्थीवास्तुक।
Stud-rams—बीजाज।
Study leave—अध्ययन छुट्टी।
Stuffy—दमघुट्ट, घमसान, बन्द हवा का।
Style—शैली, प्रकार, ढंग, लेखन-शैली।
Sub-assistant Surgeon—उपसहायक शालाकी, उपसहायक शल्य-चिकित्सक।
Sub-charge—उपकार्याधिकृत, अधीनस्थ कार्यभार।
Sub-charge incharge—उपकार्याधिकृत-अधिकृत।
Sub-clause—उपधारा।
Sub-committee—उपसमिति।
Sub-deputy inspector of schools-पाठशालाओं के उपप्रतिनिरीक्षक।
Sub-Divisional officer—हाकिम परगना।
Subduct—घटाना, निकाल ले जाना, प्रोबेट का वापस लेना।
Sub-head—उपशीर्षक।
Sub-Inspector—सब-इन्सपेक्टर, थानेदार, दारोगा।
Subject—विषय, वस्तु।
Sub-maillary—अधोहू।
Submerged area—जलमग्न क्षेत्र, पानी में डूबा क्षेत्र।
Submergence—डूबा हुआ रहना।
Submission—उपस्थापन, निवेदन, अधीनी, पेशी।
Submit—उपस्थित करना, प्रस्तुत करना, निवेदन करना, उपस्थापित करना, अधीन होना, अधीनस्थ।
Submitted—प्रस्तुत, पेश किया गया।
Subordinate—अधीनस्थ।
Subordinate agricultural service—अधीनस्थ कृषि सेवा।
Subordinate public health service—अधीनस्थ सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा, अधीनस्थ सार्वजनिक स्वास्थ्य भृत्या।
Subordinate service—अधीनस्थ सेवा।
Sub-paragraphs—उप-अनुच्छेद।
Subpoena—उपस्थिति आदेश जिसकी अवज्ञा में दण्ड दिया जा सकता है, सफीना।
Sub-proprietor—अदना मालिक, छोटा मालिक, उपस्वामी।
Subrogation—प्रतिस्थापन, एक उत्तमर्ण के स्थान पर दूसरा स्थापित करना।
Sub-rule—उपनियम, अधीन नियम।
Subscribing witness—हस्ताक्षर करनेवाला साक्षी, दस्तखती गवाह।
Subscription—अभिदान, चन्दा।
Sub-section—उपधारा।
Subsequent—उत्तरकालीन, बाद का, पश्चाद्वर्ती।
Subsequent appointment—पश्चाद्वर्ती नियुक्ति, बाद की नियुक्ति।
Sub-settlement—उपभूव्यवस्था।
Subsidiary book—सहायक पुस्तक।
Subsidiary leave—सहायक छुट्टी।
Subsidiary report—सहायक विवरण
Subsidiary rules—सहायक नियम।
Subsidiary subsidy—सहायक राजसहायता।
Subsidize—अर्थसाहाय्य-पोपित करना, अर्थसहायता से पोषित करना।
Subsidized dispensary—राजसहायताप्राप्त औषधालय।
Subsidized practitioner—राजसहायता प्राप्त चिकित्सक।

Subsidy—राजसहायता ।
Subsistence allowance—निर्वाह भत्ता ।
Subs stence grant–निर्वाहाथ अनुदान।
Sub-soil—नीचे की मिट्टी ।
Substantial—गुर्वर्थक, सारभूत, सारवत्, वास्तविक, स्थूल ।
Substantial damage–सारभूत क्षति ।
SubstantialService—सारभूत निष्पादन, सारभूत तामील ।
Substantiate—प्रमाणित करना, सिद्ध करना ।
Substantive—मूल ।
Substantive appointment post—मूलनियुक्तिवाला पद, मूलनियुक्तिवाली नौकरी ।
Substantive pay—मूल वेतन ।
Substantive post—मूल पद ।
Substitute—स्थानापन्न, एवजी ।
Substitution application–प्रतिस्थानी बनने के लिये प्रार्थनापत्र ।
S ıbstract—घटाव ।
Sub-tenancy—शिकमीदार ।
Subvention—आर्थिक सहायता ।
Subversive—विध्वंसक,उलट देनेवाला ।
Subvert—लौटा देना, उलट देना ।
Succession—उत्तराधिकार, अनुक्रम, दासाधिकार, पश्चाद्वर्ती होना ।
Sucession certificate–उत्तराधिकार प्रमाणपत्र, विधान ।
Succession duty–उत्तराधिकार शुल्क ।
Successor–उत्तराधिकारी, दासाधिकारी, पश्चात्गामी, पश्चाद्वर्ती ।
Suction—चूषन ।
Sudden—आकस्मिक, अचिन्तितपूर्व, माद्यस्क, अकाण्ड ।
Sufference—अनुज्ञा, अनुमति ।
Sufficient—पर्याप्त, काफी ।
Sufficiently—पर्याप्त रूप से, काफी तौर पर ।
Suffix—प्रत्यय, बाद में जोड़ना, बाद में लगाना ।
Sugarcane seed—गन्ने के बीज ।
Suggestion—उपक्षप, आगुण, सुझाव ।
Suicidal—आत्महत्यात्मक ।
Suicide—आत्महत्या, आत्मघात ।
Suit—वाद, अक्ष, मुकद्दमा, नालिश, दावा, इस्तगासा ।
Suitable—उपयुक्त, अनुकूल, ठीक ।
Suits, Civil—दीवानी के मुकदमे ।
Suits for guardianship—संरक्षतावाद
Suits Valuation Act—वाद मूल्यन विधान, नालिशों की मालियत का कानून।
Sullage farm—वह फार्म जिसमें शहर की मोरियों की गन्दी कीचड़ का उपयोग खाद के रूप में किया जाता हो, गन्दे कीचड़ का फार्म ।
Sum—धनराशि ।
Summarily—सरसरी तौर पर ।
Summary–सारांश, संक्षिप्त, संक्षप ।
Summary decision—सरसरी निर्णय ।
Summary dismissal—सरसरी पदच्युति, सरसरी बरखास्तगी, सरसरी कार्यवाही द्वारा बरखास्त किया जाना ।
Summary judgment–सरसरी निर्णय ।
Summary proceedings—सरसरी कार्यवाही ।
Summary punish nent—सरसरी निर्णय द्वारा दंड ।
Summer vacation–गर्मियों की छुटियाँ, ग्रीष्मावकाश ।
Summoning of members—सदस्यों

का आह्वान।
Summons—आह्वानपत्र, समन।
Sundry—प्रकीर्ण, विविध।
Sun-stroke—लू, लू लगना।
Superannuation—बुढ़ौती, बुढ़ापा, वृद्धावस्था, पचपनसाला।
Superannuation, Date of—पचपनसाला की तारीख।
Superficial—ऊपरी, बाहरी।
Superfluous—अतिरिक्त, फालतू।
Superintendence—अधीक्षण, देखभाल।
Superintendence of ferries—घाटों की देखभाल, घाटों का अधीक्षण।
Superintendent—अधीक्षक।
Superintendent Government Vaccine Depot—अधीक्षक सरकारी मसूरीलस, सरकारी मसूरीलस भंडार के अधीक्षक।
Superintendent of gardens—उद्यान अधीक्षक, आराम अधीक्षक।
Superintendent of nursing services—उपचार सेवाधीक्षिका।
Superintendent of stamps—स्टाम्प अधीक्षक।
Superintendent printing & stationery—अधीक्षक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री।
Superintending—अधीक्षक, अधीक्षण।
Superintending engineer—अधीक्षक वास्तुक, अधीक्षक इंजीनियर।
Superior—ज्येष्ठ, प्रवर, वरिष्ठ, बढ़िया, बड़ा।
Superior class convict—उच्च श्रेणी का कैदी।
Superior classification—उच्च वर्गीकरण।
Superior Proprietor—मालिक आला, बड़ा मालिक, स्वामी।
Supersede—अकारथ करना, अवक्रमण करना, जब्त करना।
Supersession—उल्लंघन, विलंघन, अकारथ करना, रद्द करना।
Supersession of board—बोर्ड को कार्यच्युत करना, बोर्ड को अवक्रांत करना, बोर्ड को मुअत्तल करना।
Superstitious uses—मूर्ख श्रद्धापूर्ण प्रयोग।
Super-tax—अधिकर।
Supervision—पर्यवेक्षण, देख-भाल, देख-रेख।
Supplementary—अनुपूरक।
Supplementary demand—अनुपूरक माँग।
Supplementary estimate—अनुपूरक आगणन, अनुपूरक तखमीना।
Supplies—सामान, रसद।
Supplies of water—पानी के जरिये।
Supply—पूर्ति, पहुँचान, पहुँचाना, सप्लाई, देना, समायुक्त करना, माल की भरती करना।
Supply and distribution of stamps—स्टाम्प की सप्लाई और बाँटा जाना।
Support—आधार, आश्रय, पालन-पोषण, उप-स्तम्भ, सहायता।
Suppress—दबाना।
Suppression—दमन, दबाया जाना, निरोध।
Suppurating lesions—मवाद पड़ा हुआ घाव।
Suppurative lungs—पूयित फेफड़े, मवाद पड़े फेफड़े, पूयित फुसफुस।

Supra—स्टाक की जाँच की रिपोर्ट।
Surcharges—अभिभार।
Sureties—प्रतिभू।
Surety—प्रतिभू, जामिन, जमानतदार।
Surface—सतह, स्तर, तल।
Surgeon—सरजन, शल्य-चिकित्सक।
Surgical—शल्य कर्म-सम्बन्धी, शल्य-क्रिया-विषयक, शल्यशास्त्र-विषयक।
Surgical and medical wards—शल्य कर्म तथा कायचिकित्सा विभाग।
Surgical dressing—व्रणोपचार।
Surgical dressing room—व्रणोपचार-गृह।
Surgical instrument—शल्यकर्मयंत्र।
Surgical side—शल्य कर्म विभाग।
Surname—कुल-नाम, अल्ल।
Surplus—अतिरेक, बचत।
Surprise—अचम्भा, आश्चर्य।
Surprise visit—आकस्मिक निरीक्षण।
Surra—तिवरसा रोग।
Surra centre—तिवरसा केन्द्र।
Surrender—त्यागना, छोड़ना, त्याग, समर्पण, इस्फाती, दस्ताबरदारी।
Surrender of lease—पट्टे का इस्तीफा, पट्टे का त्याग।
Surveillance—निगरानी।
Survey Instruments—पैमाइश के औजार, भूमाप यंत्र।
Survey of India—भारतीय भूमाप।
Surveys and Settelement—पैमाइश और बन्दोबस्त, भूमाप और भू-व्यवस्था।
Surviving that—उसके उत्तरजीवी।
Suspect-शंका करना,संदेह करना,संदिग्ध
Suspected—शंकित।
Suspense account—उचन्त खाता, उचन्त लेखा।
Suspense transaction—उचंत लेन-देन।
Suspend—प्रलंबित करना, मुअत्तल करना, स्थगित करना।
Suspension—प्रलंबन, स्थगन, निलंबन, मुअत्तली।
Suspension followed by reinstatement with retrospective effect—प्रलम्बन के पश्चात् पूर्वप्रभाव सहित पुनःस्थापन।
Suspension of licences—लाइसेन्स की मुअत्तली या स्थगन।
Suspicious—शंकितचित्त, शंकित, शक्की।
Swabs—मुखमार्जनी, रोगी की जीभ साफ करने का स्पंज, साफी।
Swab strick—फुरैरी की सींक।
Swamp—दलदल।
Sway—प्रभुत्व, हुकूमत।
Sweeper—मेहतर, भंगी, संमार्जक।
Sweeping—कूड़ा-करकट।
Swing— झूला, झोटा, झूप।
Switch—बिजली का बटन।
Switch board— स्विच बोर्ड, पिंजा-पट्ट।
Swordknot— असिग्रन्थि, सोर्डनाट।
Symptoms—लक्षण।
Syndicate—सिंडीकेट।
Syphon—निनाल, साइफन।
Syringe—पिचकारी।
System—पद्धति, प्रथा, प्रणाली, रीति, ढंग।
Systematic—क्रमबद्ध, व्यवस्थित, ढंग का, बाकायदा।
Systematical—क्रमानुसारी।

T

Tabadila—तबादला, ट्रान्सफर, अदला-बदली।
T. A. (Travelling allowance)—यात्रिक भत्ता, सफर भत्ता।
T. A. Bill—यात्रिक भत्ते का बिल।
Table—सारिणी, तालिका, टेबुल, मेज, नकशा।
Tabled—उपस्थापित।
Tabled questions—विचारार्थ प्रस्तुत प्रश्न, उपस्थापित प्रश्न।
Table for converting pies etc.—पाई आदि बदलने की सारिणी।
Table of contents—विषय-सूची।
Table of Rates of advalorem fees on institution of suits,—वादस्थापन पर मूल्यानुसार शुल्क की दरों की सारिणी।
Table Plans for luncheon or dinner—अपराह्ण या मध्याह्न भोज के लिए टेबिल लगाने की योजना।
Tablet—तख्ती, पत्या, पत्थर, नामपट्टी, टिकिया।
Tabular—सारिणीबद्ध, तालिकाबद्ध।
Tabulate—सारिणीबद्ध करना, सारिणीकरण, सारिणीयन।
Tabulation—सारणीयन, सारिणीकरण
Tack—बिरंजी, कील, पाल की रस्सी, बाँधना, जोड़ना, गाँठना।
Tact—युक्ति, चतुराई, होशियारी।
Tact and ability—युक्ति और योग्यता।
Tag—ताग, टग, बांधने का फीता।
Tahasildars—तहसीलदार।
Tahsil-seal—तहसील की मुहर।
Tail estate—सप्रतिबन्ध स्वामित्व।
Tail of canal—नहर का अन्तिम भाग।
Taking execution proceedings—इजरा की कारराई करना।
Talbana not aid—तलबाना अदा नहीं किया गया।
Talent—बुद्धिवैभव।
Tall—ऊँचा।
Tallow—पीह, पिछली, चरबी, चरबी लगाना, चिकना करना।
Tamper with the evidence-साक्ष्य को बिगाड़ना।
Tenement—घर, मकान का हिस्सा, भवन-भाग।
Tangent—छूनी, स्पर्शी, टोंटी, स्पर्शरेखा।
Tap—टाट, टेपी, ढिबरी की चूड़ीकाटने का सुम्बा।
Tape worms—मोवा पट्ट कृमि।
Taqavi advance—तकावी अग्रऋण।
Tar—शल, कितरान, घूस।
Target—लक्ष्य, निशाना, चाँद।
Tarpulin—तिरपाल, मल्लाही टोपी।
Tariff—भांडक शुल्क, पण्य शुल्क।
Task—दिया हुआ काम, परिश्रम।
Tax—कर, टैक्स।
Taxable—करदेय, कर योग्य।
Taxation—करारोपण, करभार, कर कर लगाना।
Taxing Judge—कर-धारक जज।
T. B. Clinic—क्षयरोग चकित्सालय।
T.B.Sanatorium—क्षयरोग चिकित्सा की स्वास्थ्यशाला।
Teacher— अध्यापक।
Teaching staff—अध्यापक वर्ग।
Tea party—चायपार्टी, टी पार्टी।
Tearsmoke squad—अश्रुधूम टुकड़ी।
Technical—विशेष विषयक, व्याव-

सायिक, प्रावैधिक (as Technical defect), प्रौद्योगिक (as Technical education) पारिभाषिक (as words)
Technical assistant–विशेष विषयक सहायक।
Technical branch—प्रावधिक शाखा, विशष विषयक शाखा।
Technical duties—विशेष विषयक कर्तव्य।
Technical Inspector—टेकनिकल इंसपेक्टर, विशेष विषयक निरीक्षक।
Technical knowledge–शिल्प विषयक ज्ञान, प्रौद्योगिक ज्ञान, शिल्प विशेष-विषयक ज्ञान।
Technical Officer, Central Research Institute—विशेष विषयक अधिकारी, केन्द्रीय गवेषणालय।
Technical pay—विशेष विषयक वेतन।
Technical qualification—विशेष विषयक योग्यता।
Technical reason—जाब्ता सम्बन्धी कारण, प्रावैधिक कारण।
Technical sanction – प्रावैधिक स्वीकृति, बाजाब्ता मंजूरी।
Technical staff—विशेष विषयक कर्मचारीवर्ग।
Technicians—कला वैज्ञानिक।
Technique—प्रविधि, विशेष प्रकार।
Tehbazari—तहबाजारी।
Telegram—तार।
Telegraph office—तारघर।
Telephone—टेलीफोन, दूरभाष।
Telephone connections—टेलीफोन कनेक्शन।
Telephone Munshis—टेलीफोन मुंशी।
Telescope—दूरवीक्ष, दूरवीक्षण यंत्र, दूरबीन।
Temper–लोहे या फौलाद को आब देना, मुलायम करना, लोहे का कड़ापन और लचक, लोहे की आबदारी, आब, दम। (State of a metal as to its hardness)
Temperately (written)—मर्यादा-पूर्वक।
Temperature—तापमान।
Temperature chart—ताप रेखाचित्र।
Temperature chart frame—ताप रेखाचित्र पट्ट।
Tempered with—गड़बड़ करना, तोड़ना।
Temporarily—अस्थायी रूप से।
Temporary—अस्थायी।
Temporary acquisition of land—भूमि की अस्थायी प्राप्ति।
Temporary appointment—अस्थायी नौकरी।
Temporary candidate—अस्थायी उम्मीदवार।
Temporary establishment-अस्थायी स्थापना।
Temporary outlet—अस्थायी निर्गम द्वार, अस्थायी नाली।
Temporary regulation—अस्थायी विनियम।
Temporary staff—अस्थायी कर्मचारी वर्ग।
Temporary settlement—अस्थायी भूव्यवस्था।
Tenancy—कब्जा आराजी, भूमि अधिकार, किरायेदारी।
Tenament—अचल संपत्ति, स्थायी संपत्ति, गृह, मकान।

Tenant—कृषक, किसान, भाटकी, असामी, किरायेदार।
Tenant at will—कच्चा कृषक, कच्चा काश्तकार, कच्चा असामी।
Tenant for years—नियतावधि कृषक।
Tenant holding on special terms in Avadh—अवध में विशेष शर्तों पर भूमि पाये हुए असामी।
Tenant-in-chief—असली काश्तकार।
Tendency—प्रवृत्ति।
Tender—निविदा, टेण्डर देना, पेश करना।
Tender form—निविदा पत्र।
Tender form rates—निविदा फार्म रेट।
Tensible—तन्य।
Tension—तनाव, कसान।
Tent—तम्बू, डेरा।
Tentative proposal—अनैष्ठिक प्रस्ताव।
Tenure—भूधारण, भू-भोग प्रकार, भूमि अधिकार प्रणाली, मिल्कियत जमीन।
Tenure in perpetuity—पट्टा इस्तमरारी।
Tenure in severalty—पट्टीदारी।
Tenure of post—पद की अवधि।
Tenure post—आवधिक पद।
Term—अवधि, कार्यकाल, शर्त, कौल-करार।
Terminal—सावधि, आवधिक, मियादी, सीमांत।
Terminal charges—सीमांत कर, सीमान्त महसूल।
Terminal examination—आवधिक परीक्षा।
Terminal report—आवधिक विवरण।
Termination—समाप्ति, अंत।
Terminology—शब्दावली।
Terminus or terminal station—अंत का स्टेशन।
Term of office members—सदस्यों का कार्यकाल।
Term of sentence—दण्ड की अवधि।
Terms—शर्तें, उपाधियाँ।
Terms and conditions—शर्तें और पाबन्दियाँ, उपाधि और प्रतिबंध।
Terrace—चबूतरा, बरामदा, उसारा, चपटी छत, घरों की पंक्ति।
Territorial—प्रादेशिक।
Territorial application—प्रादेशिक ढंग लागू होना, प्रादेशिक विनियोग।
Territorialdivision—प्रादेशिक भाग या डिवीजन।
Test—परीक्षा, जाँच।
Testamentary—इच्छा-पत्र सम्बन्धी।
Test Audit—परखलेखा, परीक्षण, परख, आडिट।
Testament—इच्छापत्र, वसीयतनामा।
Testamentary causes—इच्छापत्र सम्बन्धी वाद, वसीयत सम्बन्धी मुकद्दमे।
Testamentary guardian—इच्छानुसार संरक्षक।
Testate—वह व्यक्ति जो इच्छापत्र लिखने के बाद मरा हो।
Testator—इच्छापत्रकर्त्ता।
Testatrix—इच्छापत्रकर्त्री।
Testatum—लेखपत्र का वह भाग जिसके बाद के भाग से लेखपत्र कार्यान्वित होताहो।
Tested entries—जाँचे हुए इन्दराज।
Testimony—साक्ष्य, शहादत।
Testing of drivers—चालकों की परीक्षा।

Test of Khatauni—खतौनी की जाँच।
Tetanus—धनुर्वात, धनुष-कंप।
Tetanus smears—धनुर्वातिज।
Text Book—पाठ्य पुस्तक।
Textile—वयन सम्बन्धी, बुनने का।
Thatch—फूस, छत।
Theatre—नाट्यशाला, थियेटर।
Theatre, Orthopaedic—अस्थि-विकृति निवारण शल्यकर्म गृह।
The Character of season—मौसम का लक्षण या प्रकार।
The Court has been pleased to order—अदालत ने आज्ञा की है।
Theft—चोरी, चोरी का माल।
The Indian Railway Act, 1890 (Act IX of 1890)—१८९० ई० का भारतीय रेलवे ऐक्ट (१८९० का नवाँ ऐक्ट)
Thekas—ठेके।
Thekedars—ठेकेदार।
Then Monsoon once again advanced—तब मानसून एक बार फिर चला।
Theodolite—थियोडोलाइट, पैमाइश में प्रयुक्त दूरबीन विशेष।
Theodolite Survey–थियोडोलाइट द्वारा पैमाइश या भूनाप।
Theorem—प्रमेय साध्य, सिद्धांत।
Theoretically—सिद्धांततः।
Theory—सिद्धांत।
The out-turn in terms of cane—गन्ने के रूप में उपज।
The rainfall organisation—वर्षा विभाग।
Thereby—उससे।
Therewith—उसके साथ, उससे।
Thermometer—तापमापक थर्मामीटर
The total rainfall for the season reckoned from—से लेकर मौसम की पूरी वर्षा।
Thok—थोक।
Thorax—वक्षःस्थल।
Thormos flask—थरमस, एक प्रकार का बर्तन जिसमें कोई भी वस्तु निश्चित अवधि तक गर्म या ठण्डी रह सकती है।
Thorough—पूर्ण, पूरा।
Thorough bred—शुद्ध या असली नस्ल के।
Though—यद्यपि।
Threat—धमकी।
Through—द्वारा।
Through-booking—थ्रू टिकट देना।
Throughout—सर्वत्र, प्रत्येक भाग में।
Through proper channel—यथोचित प्रणाली से।
Through traffic—थ्रू यातायात, अबाध यातायात।
Thumb—अंगुष्ठ, अँगूठा।
Thumb-impression—अँगूठे का निशान, अंगुष्ठचिह्न।
Ticket—टिकट।
Ticks—किलनी।
Tied up—बँधा, बांधा।
Tiles—खपड़ैल, खपड़।
Timber—बिसार, इमारती लकड़ी।
Time barred—समय सार्गल, काल तिरोहित।
Time-barred decree—समय सार्गल डिगरी, मियाद निकली हुई डिगरी।
Time-keeper–टाइमकीपर, समयलेखक
Time-scale—कालक्रम।
Time-scale of pay—वेतन का

कालक्रम।
Time-table—समयसारणी, समय विभाग, समय विभाग-पत्र।
Tindal—टिंडैल ।
Tissue—महीन कागज या कपड़ा।
Tissues—तन्तु।
Title—आगम,स्वत्वाधिकार,पद,आवरण।
Title deeds-स्वत्वाधिकारपत्र,आगमपत्र।
Title holder—उपाधिवान्, उपाधिधारी
Title to leave—छुट्टी का अधिकार।
To—को, सेवा में।
To be recouped from time to time—समय-समय पर पूरा किया जाय।
To break journey—यात्रा विराम।
To bring to the knowledge—अवगत करना, विदित कराना।
To create a post—जगह कायम करना, पदस्थापन।
Today—आज ।
To defend the case—मुकदमे की पैरवी करना।
To ensure—पक्का निश्चय करना, इत्मीनान करना।
Toe wall—अंगुष्ठ भित्ति।
To execute a work—काम को करना
To execute decree—डिगरी को इजरा करना।
To express regret-खेद प्रकट करना।
To forward—चलता करना, प्रेषित करना।
To gazette an appointment—नियुक्ति को वार्तायित करना, नियुक्ति को गजट करना।
Together—एक साथ, साथ-साथ, मिलकर।
To invite attention—ध्यान आकर्षित करना।
Token cut—प्रतीक कटौती।
Toll tax—मार्गशुल्क, मार्गकर।
To move an amendment—संशोधन उपस्थित करना।
Ton—टन।
Tongs—संदेश, चिमटा।
Tongue depresser—जिह्वा पीड़क, जीभ-दबानी ।
Tonnage—टनों में तौल ।
Tools—उपकरण, औजार।
Tools and machinery—उपकरण तथा यंत्र।
Tools and plants—उपकरण और स्थिर यंत्र।
Top—चोटी, शिखर, ऊपर का सिरा।
To pass an order—आज्ञा देना।
Top Case—ऊपर का मामला।
Topic—विषय, प्रचलित वार्ता, प्रकरण।
Topographical maps—पृष्ठ-विवरण संबंधी नकशे या मानचित्र।
Topography—पृष्ठ-विवरण।
To press, pressing for—जोर देना, के लिए जोर देना।
Top secret—गूढ़तम रहस्य, सबसे बड़ा रहस्य।
To quote—उद्धृत करना।
Torch—टार्च, चोरबत्ती।
To refer to—का हवाला देना, से पूछना, को निर्णयार्थ भेजना।
Torrent—तीव्र धारा, तेज धारा।
Torsion—मरोड़, ऐंठन ।
Tort—अनुचित कार्य, अपकार, हानि, क्षति।
Torture—यातना।
To serve notice on—पर नोटिस

तामील करना।
Total—योग, संपूर्ण, पूरा जोड़।
Totalemoluments—सम्पूर्ण परिलाभ
Totalling register—योगपंजी।
Totally—अशेषेण, पूरी तरह।
Tour—यात्रा, दौरा।
Tour allowance—दौरा का भत्ता।
Tour contingent bill—दौरा प्रासंगिक बिल।
Tour Programme—दौरे का कार्यक्रम।
Towards—की ओर, के सम्बन्ध में।
Towel—तौलिया।
Town Area—टाउन एरिया।
Town Improvement Trust—नगर सुधार प्रन्यास।
Town Planning—नगर योजना।
Town Planning Expert—नगर अनुसंधान विशेषज्ञ, नगर योजना विशेषज्ञ।
Tracer—ट्रेसर, नकल करनेवाला, टूटनेवाला।
Tracings—अक्स उतारना, अनुरेखण।
Tract—किता, भूमिखण्ड।
Traction—खिंचाव, लुढ़कनी, रगड़। (Rolling friction as of carriage wheels)—
Tractor—ट्रेक्टर, कर्षित्र।
Tract register—खित्ता रजिस्टर।
Trade—व्यापार, व्यवसाय, पणन, वाणिज्य।
Trade mark—व्यापार चिह्न, मार्का, ट्रेडमार्क।
Trade pay (wireless)—व्यवसाय वेतन (बेतार का तार)
Trade Union—श्रमिक संघ, मजदूर संघ।
Tradition—परम्परा।
Traditional—पारम्परीण।
Traffic—आमदरफ्त, आना-जाना, यातायात।
Traffic census—यातायात सम्बन्धी गिनती।
Traffic Inspector—यातायात निरीक्षक, ट्राफिक इंस्पेक्टर, चौराहा पुलिस इंस्पेक्टर।
Traffic in women and children—औरतों और बच्चों के बेचने का प्रयास।
Traffic Managers—यातायात प्रबन्धक
Traffic Police—ट्राफिक पुलिस, चौराहा पुलिस।
Traffic surveys—यातायात परिमाप।
Trailor— ट्रेलर, मोटर गाड़ी के पीछे बाँधी जानवाली बोझा गाड़ी।
Trailor pump—ठेला पर जानेवाला यंत्र।
Train—ट्रेन, रेलगाड़ी, कतार, पंक्ति, आपस में दाँतेदार पहियों की (gears) पंक्ति।
Trained—शिक्षित, सीखे हुए।
Trainee—शिक्षार्थी।
Training—उपशिक्षा, शिक्षण, ट्रेनिंग।
Training certificate — शिक्षण प्रमाणपत्र।
Training college—उपशिक्षा विद्यालय, ट्रेनिंग कालेज।
Training institutions—शिक्षण संस्थाएँ।
Training of pilots—विमान-चालकों का शिक्षण, नियामकों का शिक्षण।
Training works—सधाई निर्माण-कार्य।
Tram—ट्राम।
Tram-way—ट्राम वे।

Tranquility—शांति, प्रशाम ।
Tr nsaction—व्यवहार, लेन-देन ।
Transcription—प्रतिलेखन, नकल ।
Transfer–स्थानान्तरण,ब्रदली, तबादला, संक्रम, हस्तांतरण ।
Transfer charges—हस्तांतरण व्यय ।
Transfer debit (or credit)—नाम या जमा में संक्रम ।
Transfer. Duty of–हस्तांतरण शुल्क ।
Transferee—बयदार, क्रेता, खरीदार ।
Transfer entry—संक्रम प्रविष्टि ।
Transferer—विक्रेता, हस्तांतरणकारी ।
Transfer of charge—कार्यभार-परिवर्तन ।
Transfer of control—नियंत्रण का परिवर्तन ।
Transfer of lease—पट्टे का हस्तांतरण ।
Transfer of Property Act, 1882 —सम्पत्ति हस्तांतरण एक्ट, १८८२ ।
Transfer of rights—स्वत्वों का हस्तांतरण ।
Transfer of shares—शेयर का हस्तांतरण, अंश हस्तांतरण ।
Transfer of sites–आस्थान परिवर्तन, मौका बदलना ।
Transfer statement—नकशा इंतकाल, हस्तांतरण विवरण ।
Transformation—रूपांतर ।
Transformer—रूप परिवर्तक ।
Transhipment—माल को एक जगह से उतार कर दूसरी जगह लादना, नावन्तरण ।
Transit—संक्रम, मार्ग ।
Transit charges—राह का खर्चा, संक्रम व्यय ।
Transition curve—संक्रमण-वक्र ।
Transit losses—लाने ले जाने में हानियाँ, बारबरदारी में हानियाँ ।
Transist pass—संक्रम पास, मार्ग का पास ।
Transitory—क्षणिक ।
Translation—अनुवाद, भाषांतर ।
Translation charge—अनुवाद-व्यय ।
Translation Deptt.—अनुवाद विभाग ।
Transliteration—अक्षरांतरण, दूसरी भाषा के अक्षरों में लिखना ।
Transmission—पारेषण, भेजना, दाय हस्तांतरण अधिकार ।
Transmit—पारेषित करना, भेजना ।
Transmitted—पारेषित, भेजा ।
Transpire—खुलना, घटित होना ।
Transplantation—रोपाई करना, पौधों को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाना ।
Transplanted rice—रोपा हुआ धान ।
Transport—वाहन, ढुलाई ।
Transportation for life—आजीवन निर्वासन, कालापानी ।
Transport Commissioner—वाहन आयुक्त ।
Transport Deptt.—वाहन विभाग ।
Transport facilities—वाहन सुविधायें ।
Transverse—अनुप्रस्थ, चौड़ानी ।
Trapezium—असमलम्ब चतुर्भुज ।
Trapezoid—असमलम्ब चतुर्भुज ।
Travel Agent or Shipping Agent—यात्रा एजेंट या जहाजी एजेंट ।
Travelling Allowance Rules—यात्रिक भत्ते के नियम ।
Travelling Eye Hospital—चलता-

फिरता नेत्र-चिकित्सालय, आँखो का चलता-फिरता चिकित्सालय।
Traverse—रोक, प्रतिबन्ध, प्रतिपक्ष द्वारा आरोप का प्रतीकार करना, खंडन करना।
Tray cloth—तश्तरी ढकने का कपड़ा।
Tread of steps—सीढ़ी।
Treason—राजद्रोह।
Treasurer (honorary)—कोषाध्यक्ष (अवैतनिक)।
Treasure vault—खजाना का तहखाना।
Treasury—कोषागार, खजाना।
Treasury bills—ट्रेजरी बिल, सरकार द्वारा जारी की हुई हुण्डी।
Treasury Defadar—खजाने का दफादार।
Treasury Officer—हाकिम खजाना, कोषागार का अधिकारी।
Treasury strong room—कोषागार दृढ़ कोष्ठ।
Treatment—व्यवहार, उपचार, इलाज।
Tremor—कँपकँपी, थरथरी।
Trench—खाई।
Trespassers—अतिक्रमी, अनधिकार-प्रवेशक।
Trial—विचार, परीक्षण, मुकदमा।
Trial clerk—विचार क्लर्क या लेखक।
Triangular—त्रिकोणी, तीन कोने की।
Triangular bandage—त्रिभुजाकार बंधन, त्रिभुजाकार पट्टी।
Tribunal—व्यवहारासन, अधिकरण, न्यायाधिकरण।
Tribunal court—मध्यस्थ मण्डल, पंच मण्डल।
Trijunction mark—सिहद्दा।
Triphined—अस्थि भेदन।
Triplicate—तिहरा, तृतीयक, तीन प्रतियाँ करना।
Triplicate chalans—तिहरे चालान।
Tripod—त्रिपाद।
Trolly—ठिलिया, ट्राली, रेल का ठेला।
Troops—फौजी दस्ते।
Tropical disease—उष्ण कटिबन्ध का रोग।
Trousers (slacks)—पतलून (स्लैक)।
Truck—ठेला, ट्रक।
True Copy—यथार्थ प्रतिलिपि सच्ची प्रतिलिपि।
Truly—तत्त्वतः, वस्तुतः, सचमुच, दृढ़निष्ठया, ईमानदारी से।
Trumpeters—बिगुलवाले।
Trunk call—ट्रंक काल, शहर के बाहर से टेलीफोन द्वारा बात करना।
Trunk-road—ट्रंक रोड, प्रकांड सड़क।
Trust—निक्षेप, प्रन्यास, अमानत।
Trust corporation—प्रन्यास, निगम।
Trust, Declaration of—प्रन्यास घोषणा।
Trustee—प्रन्यासी, अमीन।
Trust endowment—प्रन्यास वृत्ति दान, ट्रस्ट एंडाउमेण्ट।
Trust instrument—प्रन्यास लेख्य।
Trust property—प्रन्यास सम्पत्ति।
Trust, Revoltion of—प्रन्यास खण्डन
Trypanosomiasis—वेधनांगीय परजीवी रोग।
Tube—नली, नल।
Tuberculin test—यक्ष्मा परीक्षा।
Tuberculosis—क्षयरोग, तपेदिक।
Tube stand—नली स्थान।
Tube-well—नलकूप, बिजली का

कुआँ, ट्यूब वेल ।
Tube-well operators—विद्युत् कूप चालक ।
Tube-wells—विद्युत् कूप, बिजली के कुएँ ।
Tukhm Sokkht—तुख्म सोख्त ।
Tumours—अर्बुद, फोड़े ।
Tunic—कुरती, कोट ।
Tunnel—सुरंग ।
Turbine driver—टर्बाइन ड्राइवर, परिवर्त चालक ।
Turbine mistri—टर्बाइन मिस्त्री, परिवर्त मिस्त्री ।
Turners—टर्नर, खरादी ।
Turner-welders—टर्नर वेल्डर, खरादी संघाता ।
Turn over—पूर्ण बिक्री, पलटाव ।
Turpitude-अधमताई,गिरावट, दीनता
Turret—बुर्जी, परिभ्रमी ।
Tution fee—पढ़ाई की फीस ।
Tutorial—ट्यूटोरियल,शिक्षा सम्बन्धी ।
Twice—दुबारा ।
Type—प्रकार,नमूना, प्रतिरूप, निदर्शन, मुद्र, मुद्राक्षर ।
Type Coolie—टाइप कुली ।
Typed—टाइप किया हुआ, मुद्रलिखित।
Type design—प्रामाणिक टाइप का डिजाइन ।
Typewriter-मुद्रलेखन यंत्र, टाइपराइटर
Typewriter Mechanic—टाइपराइटर का यांत्रिक ।
Typewriting—मुद्रलेखन ।
Typical—द्योतक, लाक्षणिक, आदर्श, स्वाभाविक ।
Typist—मुद्रलेखक, टाइपिस्ट ।

U

Ugly—अशोभनीय, भद्दा ।
Ulterior—अव्यक्त, गूढ़, दूरतर, पारस्थित, पाय ।
Ultimate—अन्तिम, परम, मौलिक ।
Ultimately—अन्ततः, अन्ते ।
Ultra-violet ray treatment room-पारनीललोहित रश्मि चिकित्सा कोष्ठ ।
Ultra-violet treatment—पारजम्बु रश्मि-चिकित्सा ।
Ultra vires—अधिकार से बाहर, अधिकारबाह्य, शक्तिपरस्तात् ।
Unable—अक्षम, असमर्थ ।
Unacceptable—अस्वीकार्य ।
Unadjusted—असमाहित, ठीक न किया हुआ ।
Unanimous—सर्वसम्मत, एकमत ।
Unauthorised—अननुज्ञात, अनधिकृत, बिना अधिकार प्राप्त ।
Unauthorised expenditure—अननुज्ञात व्यय, अस्वीकृत व्यय, अप्राप्तस्वीकृति व्यय ।
Unavoidable—अपरिहार्य, अनिवार्य, अवश्यंभावी, अहार्य ।
Unavoidable circumstances—अपरिहार्य स्थिति ।
Unaware—अनवधान, अनभिज्ञ ।
Uncashed cheque—बिना भुनाया चेक ।
Uncertainty—अनिश्चितता ।
Uncertified film—अप्रमाणित फिल्म ।
Uncertified Supervisors-अप्रमाणित पर्यवेक्षक ।
Unclaimed—अस्वामिक, लावारिस ।
Unclaimed articles—अस्वामिक

वस्तुएँ, लावारिस सामान।
Unclaimed documents—बेदावा दस्तावेज, अस्वामिक लेखपत्र।
Unclassified—अवर्गीकृत।
Unclassified item—अवर्गीकृत मद।
Unconditional—अप्रतिबन्ध, अनौपाधिक, बिना शर्त।
Unconditional long-term settlement—अप्रतिबंधित दीर्घकालीन भू-व्यवस्था।
Uncultivated land—अकृष्ट भूमि, गैरमजरुआ।
Uncurrent coins—अप्रचलित मुद्रा, अप्रचलित सिक्के।
Under—नीचे, अधीन, से कम।
Under cover of—की ओट में, की आड़ में।
Undergo—भुगतना, झलना, सहना, उठाना।
Under graduate—अनुस्नातक।
Under ground—गुप्त, जमीन के नीचे, भूम्यस्तन, आन्तर्भौम।
Under-head—शीर्षक के अधीन या अन्तर्गत।
Undermentioned — निम्नलिखित, निम्नवर्णित, नीचे कहा गया, नीचे बताया गया।
Under proprietor—मालिक अदना।
Under Secretary—अनुसचिव।
Under section—धारा के अधीन।
Under Service paid over—सरकारी टिकट द्वारा।
Undersigned—अधोहस्ताक्षरी, अधोहस्ताक्षरकर्ता।
Understand—समझना।
Undertaking—समारंभ, व्यवसाय, कारोबार, उद्यम, वचन।
Under the auspices of—के तत्वावधान में।
Under the guardianship of—की संरक्षता में।
Under trial—विचाराधीन, हवालाती।
Under trial prisoner—विचाराधीन बन्दी, हवालाती।
Underwriter—बीमा करनेवाला।
Undesirable—अवांछनीय, अप्रिय, अनिष्ट, अनुचित।
Undeveloped—अविकसित, अनुन्नत।
Undoubtedy—निःसन्देह।
Undue—अनुचित।
Unemployment—वृत्तिहीनता, बेरोजगारी।
Unequal—अतुल्य, असमान, बेजोड़, छोटे-बड़े।
Unequivocal—स्पष्ट, संदेह-रहित।
Unexpended—अव्ययित।
Unexpired—बिना बीता, शेष।
Unfair—अनुचित, कपटपूर्ण।
Unfit—अयोग्य, अनुपयुक्त।
Unfounded debt—अल्पकालीन ऋण।
Unhealthiness—अस्वास्थ्य।
Unification — एकीकरण, मिलाना, मिलकर एक होना।
Uniform—समान, इकसार, गणवेश, वर्दी।
Uniform allowance—वर्दी भत्ता।
Uniformity—एकरूपता।
Uniform Procedure—समान कार्यविधि, इकसार विधि।
Unimportant—महत्वहीन।
Union—संघ, यूनियन।
Union fee—संघ शुल्क।

Unique—अपूर्व, अनुपम, अनोखा, अद्वितीय, निराला, बेजोड़ ।
Unirrigated—न सींचा गया ।
Unit—एकक, इकाई ।
United front—संयुक्त मोर्चा ।
United Provinces Educational Service Rules—युक्त प्रान्तीय शिक्षक नियमावली ।
United Provinces Land Revenue Act—युक्त प्रान्तीय मालगुजारी कानून।
United Provinces Tenancy Act-युक्त प्रान्तीय काश्तकारी कानून ।
Universal—व्यापक, सार्वजनिक ।
Universal application—व्यापक प्रयोग ।
Universe (out of which a sample is drawn)—समग्र ।
University—विश्वविद्यालय ।
University Grants Committee—विश्वविद्यालय अनुदान समिति ।
Unjust—अनुचित, अन्यायपूर्ण ।
Unlawful—अवैध, अवैधिक, गैरकानूनी ।
Unlawful assembly—अवैध समुदाय ।
Unless—यदि न, जब तक कि न ।
Unlikely—असंभाव्य, अघटनीय, अनहोनी ।
Unlocking—ताला खोलना ।
Unmetalled road—कच्ची सड़क ।
Unnatural—अस्वाभाविक, अप्राकृतिक ।
Unnatural offence—अप्राकृतिक । अपराध ।
Unobjectionable—अनापत्तिजनक ।
Unofficial—अनाधिकारिक ।
Unofficial letter—अनाधिकारिकपत्र।
Unofficial bodies—अनाधिकारिक संस्थाएँ ।
Unofficial register—अनाधिकारिक पंजी ।
Unpaid—बेचुका, अनचुका, खड़ा, गैरवसूल।
Unpalatable—अस्वादिष्ठ ।
Unproductive capital—अनुत्पादक पूंजी ।
Unproductive works—अनुत्पादक निर्माणकार्य ।
Unreasonable—अनुपपन्न, बुद्धि असंगत ।
Unrecorded cases—बिना दर्ज मामले ।
Unregistered—बे रजिस्टरी ।
Unregistered memo—बिना रजिस्टर किया हुआ स्मृतिपत्र ।
Unreliable—अविश्वसनीय ।
Unrestricted power—अप्रतिबन्ध अधिकार ।
Unsatisfactory—असंतोषप्रद, असंतोषजनक ।
Unserviceable—निकम्मा, नाकारा।
Unskilled—अप्रवीण ।
Unsound—अस्वस्थ, रोगी ।
Unsound mind—विकृत मस्तिष्क ।
Unsurveyed areas—अमापित क्षेत्र, गैर पैमायशी क्षेत्र ।
Untested candidate—असूचीगत उम्मीदवार ।
Unused loose revenue stamps—अप्रयुक्त अबद्ध माल के टिकट।
Unusually—असामान्य रूप से ।
Unusual occurrence—असाधारण घटना ।

Unwholesome—अस्वास्थ्यकर।

U. P. Board of Revenue Act, 1922—१९२२ ई० का युक्त प्रान्तीय माल बोर्ड कानून।

U.P. Encumbered Estate Act—युक्त प्रान्तीय ऋणग्रस्त संपत्ति अधिनियम।

U. P. Gazette—उत्तर प्रदेशीय राजपत्र, उत्तर प्रदेशीय गजट।

Uphold—पुष्टि करना, समर्थन करना, बहाल रखना, कायम रखना।

Upholster—परदा, गलीचा आदि से घर सजाना।

Up keep—धारण, रख-रखाव।

U. P. Land Revenue (Amendment) Act of 1932—१९३२ का युक्त प्रान्तीय मालगुजारी संशोधन कानून।

Uplift—उत्थान।

Upper class—उच्च वर्ग।

Upper grade clerk—अपर ग्रेड क्लर्क, उच्च श्रणी लेखक।

Upper Primary Class—अपर प्राइमरी कक्षा।

Upper Subordinate Service (Supervisors)—उच्च अधीनस्थ सर्विस (पर्यवेक्षक)।

U. P. Public Health Service—उत्तर प्रदेशीय स्वास्थ्य सेवा, उत्तर प्रदेशीय स्वास्थ्य भृत्या।

U.P. Regulation of Agricultural Credit Act—युक्त प्रान्तीय कृषि ऋण नियमन अधिनियम।

Upstream—बहाव के ऊपर।

U.P. Tenancy Rent & Revenue—उत्तर प्रदेशीय काश्तकारी लगान और मालगुजारी।

Up-to-date—आतिथि, आज की तारीख तक।

Urban—शहरी, नागरिक।

Urban outpost—नगर चौकी।

Urgency—अविलम्ब्यता आत्ययिकता।

Urgent—अत्यावश्यक, आत्ययिक, अविलम्ब्य।

Urgent copies—अत्यावश्यक प्रतिलिपियाँ।

Urgent slip—अत्यावश्यक पर्ची।

Urinal—मूत्रालय, पेशाबखाना।

Urine—मूत्र।

Urine blood—मूत्र रक्त।

Usage—व्यवहार, प्रयोग, रूढ़ि दस्तूर।

Use—उपयोग, उपभुक्ति, काम में लाना, उपयोग करना, बरतना।

Useful—उपयोगी, काम का।

Usefulness—उपयोगिता।

Useless—व्यर्थ, निरुपयोग, निरर्थक बेकार।

User—उपभोक्ता, उपयोगकर्ता, प्रयोगाधिकारी।

Uses—प्रयोग।

Usual—प्रायिक, सामान्य, साधारण।

Usual legatee—असामान्य रिक्थी, असाधारण रिक्थभोगी।

Usufruct—भोगलाभ।

Usufructnary mortgagee—भोगबंधक।

Usurious—अनुचित ब्याजी, कौसीद।

Usury—अनुचित ब्याज, कुसीद, कुसीदपथ।

Utilization—उपयोग।

Utilization certificate—उपयोग-

करण प्रमाण-पत्र ।
Utmost—परम ।
Uttar Pradesh Agricultural Service Class I and II—उत्तर-प्रदेशीय कृषि सेवा, प्रथम श्रेणी और द्वितीय श्रेणी ।
Uttar Pradesh Setvice of Engineers, Class I (Hydel)—उत्तर प्रदेशीय इंजीनियर सर्विस श्रणी १ (जल-बिजली) ।
Uttar Pradesh Service of Engineers Class II, Irrigation Branch—उत्तर प्रदेशीय इंजीनियर सर्विस श्रेणी २, सिंचाई शाखा ।

V

Vacancy—रिक्त स्थान, रिक्ति ।
Vacant—रिक्त, खाली ।
Vacant possession—रिक्त भोग ।
Vacant succession—रिक्त उत्तराधिकार ।
Vacation—अवकाश, दीर्घावकाश ।
Vacation Department—अवकाश-विभाग ।
Vaccinal lymph—वैक्सीन लसीका ।
Vaccination—टीका ।
Vaccination Act—टीका अधिनियम ।
Vaccinator—टीकेवाला ।
Vaccine—मसूरीलस, टीका द्रव्य ।
Vaccine Depot—वैक्सीन डिपो ।
Vacuum—रिक्त, शून्य, वायुशून्य ।
Vagabond—खल, शठ, धूर्त, आवारा गर्द
Vagrancy—आवारागर्दी, आहिंडन ।
Vagrant—व्यवसायहीनास्थानी, आवारागर्द ।
Vague—अस्पष्ट, अनिश्चित ।
Vagueness—अस्पष्टता, अनिश्चितता ।
Vakalatnama-अभिभाषक-पत्र, वकालतनामा ।
Valid—मान्य, वैध, जायज ।
Validate—वैध बनाना ।
Validation—वैधकरण ।
Validation of Act—अधिनियम की वैधता, ऐक्ट की वैधता ।
Validity—वैधता, जायज होना ।
Validity of certificate or endorsement—प्रमाणपत्र या पृष्ठ-लेख की वैधता या मान्यता ।
Valley rafter—घाटी कड़ी ।
Valuable—मूल्यवान्, कीमती ।
Valuation—मूल्यन, मालियत ।
Valuation Act—मूल्यन विधान ।
Valuation for duty—चुंगी या शुल्क के लिये मूल्यन ।
Value—मूल्य, कीमत ।
Valve—अभिद्वार ।
Van—पंखा, सूप ।
Vapour—भाप, वाष्प ।
Variation—अन्तर, विभिन्नता, भेद, रूपान्तर, विभेद, घट-बढ़, विचरण ।
Varied—विविध, भिन्न, नाना प्रकार के ।
Variety—प्रकार, भेद, विभिन्नता, विभेद ।
Various—विविध, नानाविध, विभिन्न ।
Varnish—चमकदार रोगन ।
Vary—भिन्न होना, भिन्न राय रखना, बदल जाना, बेमेल होना ।
Vast—बहुत बड़ा ।
Vault—गुम्बज महराबदार छत ।
Vegetarian—शाकाहारी ।
Vegetarian diet—शाकाहार ।
Vegetation—पादपजात, हरियाली ।
Vehicle—सवारी, यान, वाहन ।
Velocity—वेग, गति ।

Vendee—क्रेता, क्रयिक, खरीदार ।
Vendor—विक्रेता, बेचनेवाला ।
Venereal—रतिज ।
Venereal Department—रतिज रोग विभाग ।
Venereal Diseases clinic—रतिज रोग चिकित्सालय ।
Veneriologist—रतिजरोग चिकित्सक।
Venetian Blind—झिलमिली ।
Ventilate—खोलना, प्रकट करना, प्रकाश में लाना, वायुमय करना ।
Ventilation—हवा तथा प्रकाश देना ।
Ventricle—हृदय संपुट ।
Venture—साहस करना, जोखों में पड़ना, जुरंत करना, जोखों, खतरा ।
Venue—स्थान, विचार-स्थान, वह न्यायालय जहाँ दावा दायर हो।
Veracity—सत्यता, सच्चाई ।
Verandah—बरामदा ।
Verbal—मौखिक, शाब्दिक ।
Verbally—वाचा, शब्दशः ।
Verbatim—शब्दशः ।
Verdict—निर्णय, साम्यनिर्णय, पंचायती निर्णय ।
Verge—सीमा, किनारा, काष्ठा, हद, दंड, स्तम्भ, झुकना, ढुलना, पटरी की घास, रौस के किनारे की घास ।
Verification—प्रमाणीकरण, सत्यापन, जाँच-पड़ताल ।
Verification of accounts—लेखा पड़ताल ।
Verification of stock of stamps —स्टाम्प के संचय की जाँच-पड़ताल ।
Verify—प्रमाणित करना, तसदीक करना, जाँच-पड़ताल करना ।
Vernacular final—वर्नाक्यूलर फाइनल
Vernier—पैमाना ।
Versus—प्रति, बनाम ।
Vertex—शीर्ष ।
Vertical—खड़ी, खड़ा भूखंड ।
Very severe—अति तीव्र, दुःसह ।
Vest—प्राप्त होना, अधिकार देना, अधिकारयुक्त करना, हक देना, पहुँचना ।
Vested—संप्राप्त, लगाया हुआ ।
Vested interest—प्राप्त अधिकार ।
Vested possession—प्राप्त भोग, प्राप्त भुक्ति, प्राप्त किया हुआ कब्जा ।
Vested remainder—अधिकार जो किसी विशेष अधिकार के समाप्त होने के बाद किसी निर्दिष्ट व्यक्ति को प्राप्त हो ।
Vestibule—डेवढ़ी, बरोठा, दहलीज ।
Vesting—प्रदान करना ।
Vesting order—अधिकार दान आदेश, निधायी आदेश, किसी विक्षिप्त के स्वत्व को किसी की अमानत में रखने का आदेश ।
Veteran—अखाड़िया, ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध, पक्का, अनुभवी ।
Veterinary—पशु चिकित्सा ।
Veterinary Assistant Surgeon—पशु चिकित्सा सहायक सर्जन ।
Veterinary Service—पशु चिकित्सा सेवा ।
Veto—अभिषेध, विशेषाधिकार द्वारा नामंजूर करना ।
Vetting—ठीक करना ।
Vexatious action—दुःखदायी वाद, कष्ट पहुँचाने के लिय वाद या नालिश ।
Via—रास्ते से, द्वारा ।
Viaduct—ऊँचा पुल, सेतु ।
Vibration—कम्पन, थरथरी, लहराव ।
Vice—स्थान में, बदले में ।
Vice-Chancellor—उप-कुलपति ।

Viceroy—राज्यपाल ।
Vice Versa—विपर्ययेण, उल्टा ।
Vicinity—पड़ोस, अड़ोस-पड़ोस ।
Vide—देखिये ।
Viglance—जागरण, चौकसी, खबरदारी।
Vigorous—ओजस्वी ।
Village—ग्राम ।
Village Chaukidar-ग्राम का चौकीदार
Village Crime—हिंसात्मक अपराध ।
Village Defence Societies—ग्राम रक्षा समितियाँ ।
Village Headman—मुखिया ।
Vindicative damages—दण्डात्मक हर्जा ।
Violate—उल्लंघन करना, तोड़ना, न मानना, भंग करना ।
Violation—अतिक्रम, पालन न करना ।
Violation of duties—कर्त्तव्य पालन न करना ।
Violation of rules—नियमों का भंग करना ।
Violence—हिंसा ।
Violent—मारपीट करनेवाला ।
Virulent—अति उग्र,प्रचंड,तेज,विषैला ।
Virous—जहरीला माद्दा ।
Visas—दृष्टांक,पासपोर्ट पर पृष्ठांकन ।
Viscera—आँतें ।
Viscosity—संलग्नशीलता,लसलसाहट ।
Vision—चित्तसृष्टि, दृष्टि, दृश्य, कल्पना, स्वप्न, आभास ।
Visit—समाय, अभ्यागम, अभ्यागमन, निरीक्षण, दर्शन, भेंट, मुलाकात, मिलना ।
Visitation—भेंट, आगम, ईश्वर-कृपा ।
Visitor's book—संदर्शनार्थी पंजी ।
Visitor's gallery—दर्शक दीर्घा ।
Visitor's shed—दर्शनार्थी शाला ।
Visual Signalling Section—द्राष्टिक संकेत उपविभाग ।
Vital—जीवनावश्यक, जीवनविषयक, जीवनमरण सम्बन्धी ।
Vital statistics—जन्ममरण सम्बन्धी आँकड़े ।
Vitiate—बिगाड़ना, भ्रष्ट करना।
Viva voce—मौखिक, जबानी ।
Viz—अर्थात् ।
Vocation—व्यवसाय, काम-धंधा ।
Vocational—व्यावसायिक, काम धंधा सम्बन्धी ।
Vocational staff—व्यावसायिक कर्मचारीवर्ग ।
Void—निष्प्रभाव, शून्य, रीता ।
Voidable—निष्प्रभावकरणीय, निष्प्रभाव किये जाने योग्य, अधिशून्यनयोग्य ।
Void and Voidable—निष्प्रभाव तथा निष्प्रभाव योग्य ।
Volatile— वाष्पशील, उड़नशील ।
Volley—बौछार ।
Voltage—वोल्टेज ।
Volume—परिमाण, आयतन, घनफल, खण्ड, पुस्तक ।
Volume of water—पानी का परिमाण ।
Voluntary—स्वेच्छिक, आभिकामिक, अपनी इच्छा से ।
Voluntary confession—स्वेच्छाकृत स्वीकारोक्ति ।
Voluntary contribution—स्वेच्छा पूर्ण चंदे ।
Voluntary conveyance—स्वेच्छाकृत हस्तांतरण ।
Voluntary organization—

ऐच्छिक संघटन।
Voluntary settlement—स्वेच्छाकृत व्यवस्थापन, स्वेच्छाकृत निपटारा।
Volunteer—स्वयंसेवक।
Vomici of lungs—फुप्फुस कोटर।
Votable—मतापेक्षी, मतदेय।
Vote—मत, वोट।
Voted—मतदेय।
Voter—मतदाता।
Vouch—साक्षी होना, नत्थी करना,
Vouchers—प्रमाणक खर्चा का परचा।
Voyage—संयात्रा, जलयात्रा।
Vulgar Fraction-बटा बनाई हुई भिन्न।
Vulnerable—चोट पहुँचने योग्य।

W

Wage—मजदूरी, भृति।
Wage earner—मजदूरी पानेवाला।
Wage earning scheme—भृति अजन योजना।
Wages—मजदूरी,मजूरी,भृति, उजरत।
Wagon—गाड़ी, वैगन।
Waist—कमर।
Waist coat—बण्डी, वासकट।
Waiting list—प्रतीक्षक सूची।
Waiting room—प्रतीक्षालय।
Waive—त्याग करना, छोड़ना।
Waive of recovery—वसूली छोड़ देना।
Waiving of recovery—वसूली का छोड़ दिया जाना, वसूली छोड़ देना।
Walking stick guns-बन्दूकदारछड़ी।
Waqf—वक्फ।
Waqf Commissioner—वक्फ कमिश्नर।
War concession leave—युद्ध अनुग्रह छुट्टी।
War-costs surcharge—युद्धकालीन लागत सम्बन्धी अधिभार।
Ward—कक्ष, वार्ड, चौकी, नगरभाग।
Ward—रक्ष्य बालक, अप्राप्त व्यवहार, वह व्यक्ति जिसकी संपत्ति प्रतिपालकाधिकरण के अधीन हो।
Ward-boy—कक्ष-कुमार।
Warden—संरक्षक, रक्षक।
Warder—द्वारपाल, वार्डर।
Warder-intramural—जेल के भीतर का वार्डर, अन्तर्भित्ति वार्डर।
Warder, Reserve—रिजर्व वार्डर।
Ward, Eye—अक्षिकक्ष।
Ward ,Heat Stroke—तापाघात कक्ष।
Ward lockers—रोगियों के लिए छोटी आलमारी।
Ward Master—कक्षपति।
Ward ,Medical—कायचिकित्सा कक्ष।
Ward,Ordinance—अध्यादेश कक्ष।
Ward, Paying—देय कक्ष, सशुल्क कक्ष
Ward, Private—वैयक्तिक कक्ष।
Ward, Special—विशेष कक्ष।
Ward, Surgical—शल्यकर्म कक्ष।
Warning—चेतावनी।
Wardrobe—तोशाख़ाना, वस्त्रागार, कपड़ों की आलमारी, कपड़े, पोशाक।
Warehouse—गोदाम।
Warehousing of arms—हथियारों को मालघर में रखना।
Warm—चेतावनी देना।
Warned—चेतावनी दी गयी।
Warning, Formal—बाजाब्ता,चेतावनी देना, यथानियम चेतावनी।
Warp—ताना,तानी,लकड़ी का मुड़ना।
Warrant—अधिपत्र,अधिकारपत्र,वारंट।
Warrant for goods—माल वारण्ट, माल अधिपत्र।

Warrant of appointment-नियुक्ति अधिपत्र ।
Warrant of arrest—आसेध अधिपत्र, गिरफ्तारी का वारंट ।
Warrant of commitment—सुपुर्दगी का अधिपत्र ।
Warrant Officer—वारंट अधिकारी, अधिपत्र अधिकारी ।
Warrant of precedence—पूर्वता अधिपत्र ।
Warrantor—उत्तरदायी, वह व्यक्ति जो किसी बात की जिम्मेदारी करे ।
Warrants—अधिपत्र ।
Warranty—विश्वासदान लेख्य, अधिकार प्रत्याभूति, वचन, प्रतिज्ञा ।
War Service Reservations—युद्ध सेवा-रक्षण ।
Washer—वाशर ।
Washing gang supervisor—धुलाई गैंग सुपरवाइजर ।
Waste—नष्ट करना, उजाड़ना, अपव्यय करना, बंजर, परती, निजोत ।
Wastage—खराब जाना, बेकार जाना, बरबाद होना, कूड़ा-करकट ।
Wastage of water—पानी की बरबादी ।
Waste land—बंजर ।
Watch—निगाह रखना,पहरा देना,घड़ी ।
Watch and Ward—पहरा, रक्षा ।
Watch and Ward (Police)—चौकी, पुलिस ।
Watches—पहरे, घड़ियाँ ।
Watchman—पहरेदार, प्रहरी ।
Water basin—तसला, चिलमची ।
Water bottle—पानी की बोतल ।
Water carrier—सक्का, भिश्ती ।
Water close—पाखाना, संडास, जल-व्यवस्था सहित फ्लश का पाखाना ।
Water connections—जल का सम्बन्ध
Water courses—पानी की नालियाँ ।
Watering charges—सिंचाई व्यय ।
Water-logged Area — चोये का क्षेत्र ।
Water-logged land—चोये की भूमि, वह भूमि जहाँ चोया आ जाय ।
Water-marked paper—वाटर मार्क कागज ।
Water pipe, Gag pipes, Telegraph line—पानी के नल, गैस के नल, टेलीग्राफ लाइन ।
Water power—जलशक्ति ।
Water-proof—बरसाती ।
Water-proof sheeting cradle—मोमजामा का झूला या पालना ।
Water raising—पानी उठाना ।
Water rate—पानी का महसूल ।
Water Regulation Establishment—जलव्यवस्था स्थापना ।
Water supply-जलाय, जल-व्यवस्था
Water tax—जल कर ।
Water ways—जल मार्ग ।
Water works—जलकल,जलकल गृह ।
Wave—लहर, तरंग, हिलाना ।
Wavy—लहरदार, लहरी ।
Ways and means estimate—उपाय और साधन सम्बन्धी तखमीन ।
Wax—मोम ।
Weapons—आयुध, शस्त्र, हथियार ।
Wear and tear—टूट-फूट ।
Weather report—मौसम की रिपोर्ट ।
Wedge—फन्नी ।
Weeding—निर्दान, निराई ।

Weeding of records—अभिलेखों का निर्दान, अभिलेखों की छँटाई ।
Weeder—निर्दाता ।
Weeding lable—निर्दान चिप्पी ।
Weeding list—निर्दान सूची, अलग करने की सूची ।
Weeding slip—छँटाई पर्ची,निर्दानपर्ची ।
Weed out—निकालना, खारिज करना ।
Weekly—साप्ताहिक ।
Weekly list—साप्ताहिक सूची ।
Weeviling—घुन लगना ।
Weigh—भार, बोझ ।
Weighing machine—मान-यंत्र, तौलने की मशीन ।
Weighment—बोझ, भारमान ।
Weir—पानी रोकने का बाँध, पाट बन्ध, ऊँचा करने के लिए बाँध ।
Weld—पिघलाकर जोड़ना ।
Welders—वेल्डर, संघाता ।
Welding—पिघलाकर जोड़ना ।
Welfare—कुशल, कल्याण, भलाई ।
Welfare activities—हितकर कार्य ।
Welfare centre—कल्याण केन्द्र ।
Well-boring-कूप-वेधन,कुएँ की बोरिंग ।
Well borings, Operations Division—कूप-वेधन-क्रिया शाखा ।
Well Engineer—कूप इंजीनियर ।
Well in time—काफी पहले ।
Well-sinking—कुआँ गलाना ।
Western circle—पश्चिमी चक्र ।
Wharf—पक्का घाट, जहाज का माल चढ़ाने उतारने का चबूतरा ।
Wharries—माल उतारने-चढ़ाने के चबूतरे ।
Whatsoever—जो कुछ भी ।
Whenever— जब कभी ।
Whereas—जब कि, चूंकि ।
Whereabouts—पता, ठिकाना, स्थान ।
While—जब, जब कि, जिस समय, काल, समय, अरसा, समय खोना, समय बिताना ।
Whip—प्रतोद ।
Whipping—कोड़े मारना, कोड़े लगाना ।
Whistle—सीटी ।
White chevron—सफेद विल्ले ।
White vest—सफेद वासकट ।
Whole—सम्पूर्ण, सारा, सब ।
Whole period—सम्पूर्ण अवधि ।
Wholesale prices—थोक भाव ।
Wholesome—स्वास्थ्यकर ।
Whole-time servant-पूर्णकालिकसेवक
Wholly—पूर्णतया, पूरे तौर से ।
Wide—विस्तीर्ण, चौड़ा ।
Wilful absence from duty—जान-बूझकर ड्यूटी से गैरहाजिर या अनुपस्थित होना ।
Will—इच्छापत्र ।
Wills—वसीयत, रिक्थपत्र ।
Wind—हवा, बयार, तेज हवा ।
Winders—लपेटनेवाला, वेष्टक ।
Winding up—समेटना, बन्द करना ।
Winding up of an estate—किसी संपत्ति का बोरिया बिस्तर लपेटना ।
Wing—पक्ष, भुजा (of building) ।
Wireless—बेतार का तार ।
Wireless apparatus—बेतार के तार सम्बन्धी यंत्रजात, बेतार के तार सम्बन्धी उपकरण, वायरलेस यंत्रजात ।
Wireless operator—वायरलेस आपरेटर, बेतार तार चालक ।
Wireless Telegraphy Section—बेतार तार उपविभाग ।

Wireman—वायरमैन ।
Wisdom—प्रज्ञा,ज्ञान,बुद्धिमानी,समझदारी
Wise—चतुर,बुद्धिमान्,प्रज्ञ,अठगाँठकुम्मेद
Withdrawal—प्रत्याहार,वापसी,निकालना, पीछे हटना ।
Withdrawal and repayment—रुपये का निकालना और भुगतान या प्रतिशोधन ।
Withdrawal of members from the House—सभा से सदस्यों का प्रत्याहार ।
Withdrawal of motion—प्रस्ताव-प्रत्याहार, प्रस्ताव का लौटाना ।
Withdrawn—वापस लिया हुआ ।
Withhold—रोक रखना, रोक लेना ।
Withholding on efficiency bar—प्रगुणता अर्गल या कार्यक्षमतार्गल पर रोक लगाना ।
Without fail—निश्चित रूप से ।
Without prejudice—बिना विपरीत प्रभाव डाले ।
With reference to—के संबंध में ।
With reference to your—आपके संबंध में ।
With restrospective effect—पूर्व प्रभाव सहित ।
With the remark—इस अभ्युक्ति से कि, इस कथन से कि ।
Without prejudice—बिना प्रतिकूल प्रभाव ।
Without recourse to me-बिना मेरे ।
Without reserve—साफ-साफ,स्पष्टतया, बिना कुछ मन में रखे ।
With reference—के सम्बन्ध में ।
With the concurrence of—की सहमति से ।

Witness—साक्षी ।
Witness shed—साक्षिशाला ।
Women Medical Officer—चिकित्साधिकारिणी, डाक्टरनी ।
Women police—महिला पुलिस ।
Women Service—महिला भृत्या ।
Wooden—काष्ठमय, लकड़ी का ।
Wooden angular—काष्ठमय कोनेदार।
Wooden guttered—काष्ठमय नालीदार
Wordy—शब्दाडम्बरमय ।
Workable—करने योग्य ।
Work accounts—निर्माण कार्य लेखा ।
Work charged establishment—विशेष कार्य ।
Work house—दीनागार,मोहताजखाना।
Working agreement—कार्यकरण, नियमपत्र, काम करने के इकरारनामे ।
Working capital—कर्मवाहक पूँजी ।
Working committee—कार्य समिति, कार्यकारिणी समिति ।
Working dress—दफ्तरी पोशाक, कार्यालय वेश ।
Working days-काम केदिन,कार्य-दिवस।
Working of local bodies—स्थानीय संस्थाओं का काम ।
Working order—ठीक-ठीक अवस्था ।
Working plan—कार्य-योजना ।
Workman—कर्मकार,कारीगर,मजदूर।
Workmen's Compensation Fund—श्रमिकों का प्रतिकर कोष ।
Work Orders—निर्माण कार्यादेश ।
Works—निर्माण कार्य ।
Works abstract—निर्माण कार्यों का गोशवारा, निर्माण कार्य उपसंक्षेप ।
Works accounts—निर्माण कार्य और लेखाजात ।

Works and Convenience—निर्माण-कार्य और सुविधाएँ।
Works of Collection—तहसील वसूल, वसूली का काम।
Works expenditure—निर्माण कार्यों पर व्यय, निर्माण कार्य व्यय।
Workshop—कर्मशाला, शिल्पशाला, कारखाना।
Workshop Foreman—कर्मशाला अधिकर्मिक।
Works Manager—निर्माण कार्य प्रबन्धक।
Works outlay-निर्माण कार्यों पर लागत
Worth analysing—विश्लेषण योग्य।
Wrench—रिंच।
Writ—मुद्रांकित आदेशपत्र, हस्ताक्षरित आदेशपत्र।
Write off-बट्टेखाते में डालना, अपलेखन।
Write off losses—हानि की रकमों को बट्टखाते डालना।
Writing—लेखन, लेख।
Written authority-लिखित अधिकार
Written examination of Complaints—शिकायतों की लिखित जाँच।
Written instrument—लिखित दस्तावेज, करण पत्र।
Written off—बट्टेखाते डाला हुआ।
Written statement—लिखित उत्तर।
Wrong—दूषणीय, अयथार्थ, अशुद्ध।

X

X-ray—क्षररश्मि।
X-ray department—क्षररश्मि विभाग एक्सरे विभाग।
X-ray room—क्षररश्मि कोष्ठ, क्षररश्मि विभाग
X-ray training—क्षररश्मि शिक्षण।

Y

Yearly—वार्षिक।
Yield—उपज, देना, छोड़ना, मान लेना।
Young Men's Christian Association—नवयुवक क्रिश्चियनसंघ
Young Women's Christian Association—नवयुवती क्रिश्चियन संघ।
Yours—आपका।
Yours faithfully—भवन्निष्ठ।
Yours sincerely—भवदीय, सद्भावी।

Z

Zabti rent (cash value of grain rent)—जब्ती लगान।
Zaid—अतिरिक्त फसल, जायद।
Zaid Jinswar—जायद जिंसवार।
Zamima (Supplementary memo) जमीमा, अनुपूरक मापने।
Zamindari mushturrika—साझे की जमींदारी।
Zamindari tracts—जमींदारी खिते।
Zamindari Wahid—अकेले की जमींदारी।
Zarpeshgi lease—जरपेशगी पट्टे।
Zeal—उत्साह, जोश।
Zerab (covered with water)—जलाच्छादित।
Zero—शून्य।
Ziledar—जिलेदार।
Ziledari Chaprasi—जिलेदारी चपरासी।
Zone—क्षेत्र, चक्र, कटिबन्ध।
Zoology—प्राणिशास्त्र।